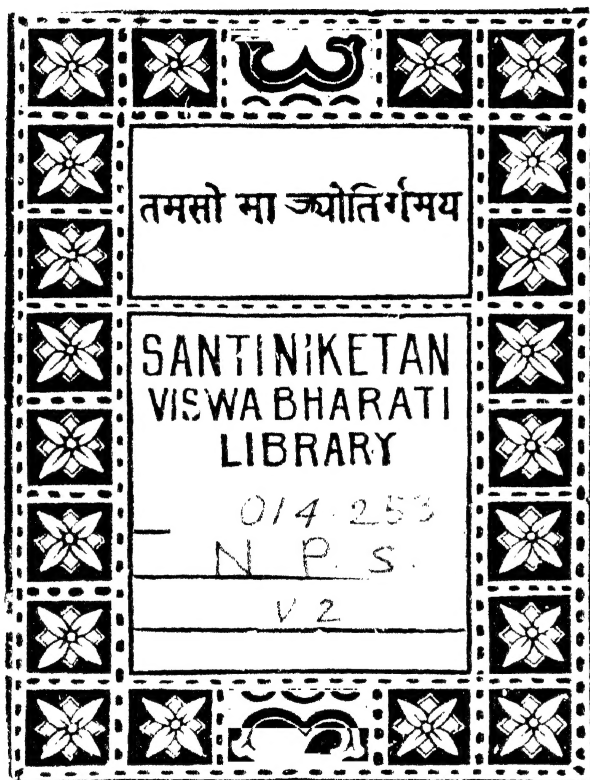


तमसो मा ज्योतिर्गमय
SANTINIKETAN
VISWA BHARATI
LIBRARY
014.253
N.P.S.
V 2

The Twelfth Report on the Search

OF

Hindi Manuscripts

FOR THE YEARS

1923, 1924 and 1925

BY

The Late Rai Bahadur DR. HIRALAL, B.A., D.Litt., M.R.A.S.

VOLUME II

Prepared under the auspices of and published by the Nagari Pracharini Sabha, Benares, under the patronage of the Government of the United Provinces



ALLAHABAD:
SUPERINTENDENT, PRINTING AND STATIONERY, UNITED PROVINCES, INDIA
1944.

TABLE OF CONTENTS

No. 252(a) Śivapurāṇa Pūrvārdha by **Mahānanda Vājpeyī** of Dālamau (Rāe Bareli). Substance—Foreign blue paper. Leaves—720. Size—12½ × 8 inches. Lines per page—28. Extent—18,900 Anushṭup Ślokas. Appearance Old. Character Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1927 or A. D. 1870. Place of deposit—ṭhākura Naunihāla Siṁha, Sengara Kāṇṭhā, District Unao (U. P.).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ ॐ श्रीगौरी शंकरायनमः ॥ श्री गुरु चरण कमलाभ्यांनमः ॥ अथ शिवपुराण भाषा लिख्यते ॥ यस्मायाऽखिल कर्म साधन करो जन्मादि यद्विश्वतस्संबंधे तद तीर्थे वित्स्वलक्षण स्तैनैच्युता याखिलं । यद्वेदंमनसा सदादि पुरुषो यत्सत्यतो दृश्यते । मिथ्या भूतमयी दमश्च जगद्वंदे-तमोशं शिवं ॥ १ ॥ वामांगे यस्य गौरी विलसति रवि विध्वग्नि नेत्रं ललाटे । शैलेरेखा भूति शुभ्रं शिरसि शुभकरी जन्हुकन्याऽधहंत्री ॥ यत्कण्ठे क्ष्वेड मुग्रं सकल निजपात देहं महेशं ॥ कर्पूरानंद दंतं स्वजन सुखकरं पश्यतां प्राण मीडे ॥ २ ॥ कामान् पूरयितुं चकल्प कुरुहं मे शत्रु नाशी शनि । विद्या वर्द्धन वव जोवमपरं संवंदनीयं सुरैः ॥ नाना भूषण भूषितं सुखकरं शर्वा विभुं सर्वदं । त्वत्कादेव गणं परं न शरणं यामोन्य था नो गति ॥ ३ वंदे विधि हरी देवौ सर्गो वन सुरुपिणैा ॥ यत्कृपा तो निजां तस्यं पश्यंन्ति पुरषा शिवं ॥ ४

End.—इमि शिव नुति करि सव मुनि देवा । कीन्हेंउ बहुविधि प्रभु की सेवा ॥ भे प्रसन्न शिव तिनकी नुति सुनि । दीन्हें तिन कहं वर वर हित गुनि ॥ शिव निज पुर गे सब सुर तेई । लहि वरगे निज घर तेहि सेई ॥ काशी जनहु गये निज धामा । सेइ शिवहि लहि परम सकामा ॥ तहं थित रह शिव लिंगहु सोई । तेहि सेवत इत उत सुख होई ॥ कंदुकेश सोइ लिंग वखाना । जेहि सेवत मति पद निर्वाना ॥ इमि शिव चरत कहा हम गाई । सव विधि सब कैा पर सुख दाई ॥ जो यहि चरितहिं सुनहि सुनावै । सो इत उत परमानंद पावै ॥ युद्ध खंड यह हम मुनि वरणा । शिव जस गुंफित सव सुख करणा ॥ यहि पढ़ि विनसहि सब पापा । व्यापहि कबहुं न त्रिविधहु तापा ॥ लहहिं सकल सुखइत उत भूरी । अविछुन रहहि सुसंपति पुरी ॥ कवहुं न दुष्ट सतावहि ताही । लहहि मुक्ति जग जन्महि नाहीं ॥ इति श्री शिवपुराणे श्री शिवविलासे ब्रह्मानारद संवादे पंचम खंडे विदलोत्पला सुर वध शिव चरित्र वर्णनो नाम षट् पंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५६ ॥ इति श्री पंचम खंड समाप्तम् शुभमस्तु ॥ लिखितो पं० गणेश प्रसाद शुक्ल ॥ संवत् १९२७ विक्रमी ॥

Subject.—प्रथम खंड शिव महिमा नौमषार में सौनकादि का सूत से कलि में कल्याण मार्ग पूछना, सूत का कलि दशा वर्णन, शंभु का प्रताप वर्णन, विधि नारद संवाद शिवसमाधि, मदन जारन उल्लेख और नारद का मोह मद खंडन, शीलवत राजा की कन्या के विवाह में असफलता तथा शिवगण और विष्णु को श्राप देना। शिव का निर्गुण सगुण रूप व महिमा, शिव शोभा वर्णन, विराट रूप कथन, शक्ति वर्णन, शिव-शक्ति विचार व सृष्टि रचना, ब्रह्मा की कमल से उत्पत्ति, विष्णु को शिवा के वाम अंग से उत्पत्ति तथा शिव द्वारा नाम करण व कार्य वर्णन, विष्णु और ब्रह्मा संवाद, तेज समूह का प्रकट होना, विष्णु और ब्रह्मा का नीचे ऊपर क्रमशः उसका अंत लेने को जाना, ब्रह्मा का हंस रूप से तथा विष्णु का वाराह रूप से खोज करना, १००० दिव्य वर्ष तक उसका अन्त न मिला तब दोनों का लौटना और आकाशवाणी के द्वारा तप करने को कहना, पुनः शब्द से अ, उ, म, की उत्पत्ति, उन्हीं से वेद का होना, तथा भिन्न भिन्न सृष्टि का पैदा करना। शिव स्वरूप वर्णन, शिव का ब्रह्मा व विष्णु से सृष्टि उत्पादन करने को कहना, लिंग पूजन का आदेश करना और सृष्टि संचालन को कहना, ब्रह्मा का ऋषियों को पैदा करना, सात स्वर्ग की रचना, शिव का ब्रह्मा के यहां अवतार लेना, शिव स्तुति करना, शिव के ११ नामः (मन्यु, मनुमहिन, महान शिव, ऋतुध्वज, उग्र, रेत, भव, काल, वामा, धृत, व्रत) रुद्राणी के ११ नाम (धी, धृति, उशना, उमा, नियुत सपि, इला, अंब, इरावति, भवानी, सुधा, सुदीक्षा) वीर भद्र सेनानी का वर्णन, अन्य रचना वर्णन। राक्षस, त्रिजग आदि योनियों का उत्पादन, आश्रमादि वर्णन, शब्द ब्रह्म का निरूपण, मानसिक व दैहिक सृष्टि वर्णन, स्त्री उत्पादनार्थ ब्रह्मा का तप करना, अर्द्धनारीश्वर के रूप में दर्शन देना, स्तुति वर्णन, सतीरूप होने का वरदान देना, मैथुनी सृष्टि का होना, मनु का तप करना, शिव का वरदान देना, मनु के दो पुत्र व ३ कन्या होना, प्रियव्रत व उत्तानपाद पुत्र हुए जिनसे ऋषभ और ध्रुव भक्त हुए, कन्याओं व उनकी सन्तानों का वर्णन, लोकों का वर्णन, विष्णु रमा का वर्णन, विष्णु का शिव स्तुति करना, स्वामि कार्तिक व उनके लोक का वर्णन, शक्ति लोक का वर्णन, शिवा स्तुति वर्णन, दंपति धर्म वर्णन, शिव का कैलाश पर आना, द्रुपदपुरी व कम्पिला का वर्णन, यज्ञदत्त का वर्णन, यज्ञदत्त के पुत्र गुणनिधि की उत्पत्ति, गुणनिधि का कुसंग में बिगड़ना, विवाह होना, धन लुटा देना, शिव मंदिर में जाना, लौटते हुए भय से भागना व मारा जाना, शिव गणों का यमदूतों से छुड़ा कर लेजाना, दीपदान का फल, वैश्रवन भक्त की कथा, अलकापति का तप कर वरदान पाना, तथा शिव का कैलास वास का वचन देना, सब देवों का कैलास आना व शिव से मिलना, गणपति की सेना का

वर्णन, शिव गणों का वर्णन, अलकापति का शिवार्चन करना, शिव का पुरी सजाने की आज्ञा देना, विष्णु व ब्रह्मा का स्तुति करना, वेदों का स्तुति करना, शिव का कुवेर को कैलास से बिदा करना।

द्वितीय खंड।

शिव तथा गणेश की वंदना, ब्रह्मा का वाणी कन्या आसक्ति वर्णन, अत्रि, मरीच, वशिष्ट आदि की उत्पत्ति, ब्रह्मा का काम को श्राप देना, शिव का समाधान करना, रति-मदन विवाह वर्णन, ब्रह्मा-दक्ष संवाद, शिव के विवाहार्थ काम को भेजना व उसका असफल लौटना, ब्रह्मा को विष्णु का समझाना, शिव महिमा वर्णन, देवी स्तुति वर्णन व वरदान पाना, दक्ष का तप करना, नारद का दक्ष पुत्रों को तप करने भेजना व दक्ष का श्राप देना, शिव का दक्ष गृह में आना, वीरिणि का गर्भ धारण करना, शिवा की स्तुति करना, ब्रह्मा हरि आदि देवताओं की उत्पत्ति होना, सती व दक्ष संवाद, सती का तप करना, भिन्न भिन्न ऋतुओं में अलग अलग प्रकार का तप करना, नंदादि व्रत करना, देवताओं का कैलास जाना, शिव स्तुति करना, विवाह के लिये प्रार्थना करना, शिव जी का स्वीकार करना, सती-शिव संवाद, ब्रह्मा से शिव का सती के व्याह की तय्यारी करने को कहना, शिव-सती विवाह वर्णन, ब्रह्मा का सती को देख कर विकार होना व शिव का क्रोधित होकर मारने को उद्यत होना, देवताओं का स्तुति कर शांत करना, ब्रह्मा के शुक्र से मेघ संवर्तक आवर्तक, पुष्कर और अभिधा द्रोण का उत्पन्न होना, सती समेत शिव जी का विदा होना, शिव जी से सब देवों का विदा होना, सती का शिव से परमतत्व जानने की अभिलाषा करना, भक्ति व ज्ञान की समानता वर्णन, भक्ति अगुण-सगुण वर्णन, सेवा विधि व अर्चन विधि वर्णन, भक्ति के अंग व उपांग वर्णन, शैव का सनमानादि करना, अहिंसा कथन, उपासना के पंच अंग (स्तोत्र, कवच, सहस्रनाम, पटल व पद्धति वर्णन) दक्ष की सभा में सब देवों का शिव सहित जाना, शिव के प्रणाम न करने पर उनका क्रुद्ध होना, शाप व दुर्वचन कहना, नंदी का दुर्वचन कहने वालों को शाप देना, शिव का निज स्थान पर आना, शिव सती का दंडक वन जाना, राम को सीता के विरह में देख कर शिव का प्रणाम करना, सती का आश्चर्य करना व परीक्षा करना, राम शिव संवाद, राम का शिव की स्तुति करना, भद्रायुष आदि के उद्धार का वर्णन, सती को राम का यथार्थ ज्ञान होना और लज्जित तथा दुःखित होना, दक्ष का यज्ञ करना, सब देवताओं का न्योते जाना, शिव जी को न बुलाना, शिवा का ज्ञात करना, यज्ञस्थल में शिव को न देख कर दधीचि का ज्ञात करना, दक्ष का दुर्वचन कहना, विप्र वर्ग का यज्ञ से चले जाना, शिवा का यज्ञ में जाना, शिव का अपमान जान कर देह भस्म कर देना, शिव गणों का यज्ञ विध्वंस करना, भृगु

का दक्ष करना, शिव का वीरभद्र को भेजना, यज्ञ नष्ट करना, सुरेन्द्र, वरुण आदि देवताओं का यज्ञ रक्षार्थ युद्ध करना और हारना, विष्णु का युद्ध करना, वीरभद्र के थंभन मंत्र को न संभाल सकना, ब्रह्मा का विष्णु को दधीच का शाप समझाना व विष्णु का निजलोक को जाना, वीरभद्र का यज्ञ पुरुष का शिर काट कर कुंड में डाल देना, यज्ञ सामग्री नष्ट भ्रष्ट कर देना व गंगा में फेंक देना, दधीचि का ब्रह्मपुत्र से युद्ध वर्णन, शिव वरदान से मृत्युंजय को प्राप्त होना, शुक्र देवता का आशिर्वाद व शिक्षा देना। राजा क्षुव को दधीचि का लात मारना, क्षुव का विष्णु की आराधना करना, विष्णु का समझाना व सहायता करने का वचन देना, विष्णु का दधीचि के पास छल करके जाना, दधीचि का योगबल से जानना और भर्त्सना करना। चक्र को निष्फल कर देना। ब्रह्मा का सब को समझाना व क्षमा याचना करवाना, शिव भक्ति व कैलास की शोभा का वर्णन, देव प्रार्थना और शिव सानुकूल सांत्वना वर्णन, शिवजी का दक्ष यज्ञ में सब देव व मुनियों के साथ जाना, दक्ष का जीवित होना और शिव स्तुति करना, सब देवों व ऋषियों का भी शिव स्तुति करना, ब्रह्मा का सब को शिव प्रताप समझाना, शिव का भृगु को वर देना, यज्ञ का पूर्ण होना, ज्वाला देवी का स्थान व प्रताप वर्णन, सती के भस्मांग गिरने से उक्त तीर्थ का होना, सती के लिये शिव का शोक विह्वल हो जाना, सती के अंग से देवकूट, उड्डियान, काश्यप, कामच्छा, जालंधर, कामरूप, वागीश्वरी का उत्पन्न होना, सती का पार्वती के रूप में मैनाक के यहां जन्म लेना, शिव शक्ति महिमा वर्णन।

तृतीय खंड।

शिव स्तुति नारद वंदना, ब्रह्मा का हिमाचल वर्णन, मयना से विवाह वर्णन, दक्ष कन्या मयना, स्वधा, कलावती व धन्वा का वर्णन, सनतकुमार का दक्ष कन्याओं से संवाद, श्राप व वर देना, मयना के पार्वती का होना, धन्वा का जनक के साथ ब्याह होना, कलावती का द्वापर में राधा रूप होने का वर्णन, शिवा-सुर संवाद और हिमाचल से देवताओं का तप कर के शिवा के अवतार का वर मांगने को कहना, शिव वियोग वर्णन, मयना का तप वर्णन व देवी का वर देना, मयना का सौ बलवान गुणशील पुत्रों की आकांक्षा करना व भवानी का जन्म होना, दारुक वन का वर्णन, मुनि तियों की काम वासना बढ़ना और उनका शिव से लिपट जाना, मुनियों का श्राप देना कि शिव लिंग खंडित हो जाय, पुनः मुनियों का दुखित होना, ब्रह्मा व विष्णु का चिंतन करना और सबके साथ शिवजी के पास जाना, शिव का समाधान करना, लिंग पूजन से पुनः प्राप्ति बताना, पूजन का विधान होना, शिव का समाधि लेना फिर जाग्रत होने पर

श्रम बूंद भूमि पर गिरना, बुंद से बालक का होना, भूमि का स्त्री रूप से पालन करना, भौमनाम होना, पृथ्वी का अतायी नाम पड़ना, भौम का तप करना, शिव का वर देना व मंगल ग्रह होना, हिम गिरि के तप से मयना के गर्भ में पार्वती का आना, देवताओं का स्तुति करना, पार्वती का जन्म होना, गिरि की शोभा अनुपम होना, पार्वती की बाललीला, विद्याध्ययन व प्रौढ़ावस्था में सौंदर्य, मैना व हिमिगिरि का विवाह चिंतन करना, देवताओं का आगमन व विवाह की इच्छा करना, विष्णु का भी आगमन, पार्वती के स्वयंवर में आना, मंचों पर यथा स्थान बैठना, पर्वत, समुद्र, नदी आदि का भी नर रूप में उपस्थित होना, सखी का सब देवों व राजाओं के समीप जयमाल लेकर गिरिजा को लेजाना और सब का वर्णन करना, विष्णु के भी समीप जाना, अन्त में शिव के गले में माला पहिनाना, शिव का बाल रूप होना, सब देवों का क्रोध करना व थंभन होना, हरि, ब्रह्मा, शक्रादि का स्तुति करना, बरात की तय्यारी, अगवानी आदि, शिव-शिवा विवाह वर्णन, पुरोहित का पार्वती के लिये वर खोजना, सब लोकों में जाना, अंत में शिव के पास जाना व विवाह स्थिर करना, विष्णु व पार्वती के कथन से पुरोहित का शिव के पास जाना और तिलक करना, नाई का अप्रसन्न होना, हिमांचल द्विज संवाद व संतोष वर्णन, शिवा-शिव विवाह की तय्यारी, लग्न भेजने आदि का वर्णन, बरात की तय्यारी, वृद्ध रूप सिहादि भूत प्रेत का आना, सब का दुःखित होना, पार्वती का विजया सखी को समझाना, हिमगिरि का विषाद वर्णन, पार्वती का शिव के पास विनय पत्रिका भेजना, शिव की महिमा वर्णन, शक्ति परिचय, भोजन समय शुक्र-शनि शक्ति वर्णन, हिमाचल असमंजस वर्णन, पुरोहित का गिरिजा कथन वर्णन, माता का संतोष होना, शिवा-शिव लीला व सती वर्णन, अवधूत रूप का कारण कथन, सब का शिव का प्रताप जानना व स्तुति करना, शिव की बरात का वर्णन, इन्द्र, विष्णु, ब्रह्मा सब का समाज वर्णन, अगवानी, जेवनार आदि क्रियाओं का वर्णन, गिरि मयना का कन्यादान देना, विवाह मंगल होना और कैलास गमन, ऋषियों से हिमिगिरि का कन्या के लक्षण ज्ञात करना, गिरिजा के शुभ लक्षणों व महेश से विवाह का उल्लेख करना, मैना-हिमिगिरि को बाल लीला से आनन्द प्राप्त होना, गिरिजा का तप के लिये स्वप्न देखना। गिरीश का शिव की सेवा में जाना, शिव का विवाह निषेध, अन्त में गौरी को स्वीकार करना, गौरी का तप करना, शिव का अखंड समाधि में होना, इन्द्र का कामदेव को शिव की समाधि जगाने को भेजना और उसका भस्म होना, दिति से ४९ पवनों की उत्पत्ति, इन्द्र का ४९ खंड करना, हिरण्याक्ष व हिरण्यकश्यप कथा, दिति का फिर तप करना व कश्यप से वीर पुत्र होने का वर मांगना, वज्राङ्ग

को उत्पत्ति व इन्द्र को ताड़न देना, उसका तप कर राक्षस भाव त्याग का वर मांगना, वज्रांग की स्त्री का इन्द्र वैर शोधन की आकांक्षा करना, तप कर वर पाना, तारक का जन्म होना व तप करना, शिव का अजेय रहने का वर देना, तारक का असुर दल संघटित करना, कुंभ, कुंजभ, महिष, कुंजर, कालनेमि, निमिमेष, कथन, आदि १० वीरों को एकत्र करना, तारक, नमुचि आदि का देवताओं से युद्ध करना व जीतना, विष्णु का देवताओं को समझाना व तारक की सेवा करने को कहना, तारक का तीनों लोक का राज्य करना, दुखी हो कर देवों का ब्रह्मलोक में जाना, असुरों का देवों पर अत्याचार वर्णन, ब्रह्मा का उपाय बतलाना कि शिव पुत्र इसे मारेगा, इन्द्र का कामदेव को शिव के समीप भेजना, काम प्रताप वर्णन, शिव को वाण मारना व नेत्र खोल कर क्रोध युक्त देखने से काम का भस्म होना, रति का विलाप वर्णन, देवों का शिव स्तुति करना। रति को अतनु पति देना और पार्वती से शिव विवाह वर्णन व नारद का तप करने को कहना, पार्वती का तप के लिये माता पिता से आज्ञा लेना व समाधान करना, शिवा का उग्र तप प्राणायाम आदि करना, भूतों का बाधा पहुंचाना, गिरि वंश का भाग्य वर्णन, वन में सब का स्वाभाविक वैर त्याग वर्णन, देवताओं का शिव समीप जाना व प्रार्थना करना, शिवा से विवाह करने को कहना। विष्णु का शिव प्रशंसा वर्णन कि समय समय पर उन्होंने गौतम इन्द्र आदि के दुःखों को दूर किया और राक्षसों का वध किया, देवों को विदा करना और सप्त ऋषियों को बुलाना और पार्वती की परीक्षा लेने भेजना, सप्त ऋषि पार्वती संवाद, शिवा का दृढ़ व्रत रहना, शिव का द्विज रूप में शिवा की परीक्षा लेना, विष्णु की प्रशंसा कर विवाह करने को कहना, पार्वती का दृढ़ व्रत रहना, शिव का साक्षात् रूप होना और शिवा को वर देना, देवताओं का शिवा की स्तुति करना व गृह को आना। शिव का हिमगिरि के द्वार पर जाकर शिवा को भिक्षा मांगना, उनके क्रुद्ध होने पर अपने रूप में विष्णु, ब्रह्मा, गणपति, शिव आदि रूप दिखलाना, देवों का बृहस्पति को हिमगिरि के समीप शिव निन्दार्थ भेजना व गुरु का समझाना, शिव का वैष्णव रूप में हिम शैल पर जाना, शिव निंदा व विष्णु प्रशंसा वर्णन, हिमगिरि का संभ्रम करना, शिव का सप्त ऋषियों को बुलाना, उनका स्तुति करना, शिव का तारक के वध का वर्णन करना, कुंभज स्त्री व अरुंधती का मैना से संवाद व शिव गुण वर्णन, ऋषियों का हिमगिरि को समझाना, सब देव, ऋषि, ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्रादि को निमंत्रण देना व सब का आगमन, शिव गणों का तय्यारी करना, विष्टंभ, कंदुक, पिप्पल आदि का ससैन्य भारी तय्यारी करना। पिंगलाक्षादि का वर्णन, बरात की तय्यारी, हिमगिरि का

निर्मंत्रण, नगर सजावट, गौरि पूजनादि वर्णन, बरात, अगवानी, हिमगिरि को राजमद होना, तब शिव का ब्रह्मा विष्णु से भिन्न भिन्न मंडल बना कर चलने को कहना, मंडल के विषय में मयना का नारद से ज्ञात करना और उनका प्रत्येक मंडल का वर्णन करना, सब देवों का भिन्न भिन्न वर्णन, शिव सेना देख कर मयना को मोह होना, व दुखित होना, ब्रह्मा का समझाना, हिमगिरि का भी समझाना, सब का शिव स्तुति करना, पार्वती का भी शिव वन्दना करना, विष्णु का मयना को समझाना, सब बरात में शिव की स्तुति गान व प्रभाव देख पड़ना, बरात का द्वार पर आना, मयना का आरती करना व शिव महिमा वर्णन, जनवासे का वर्णन, अनेक प्रकार की जेवनार का वर्णन, शुभासन व चरण प्रक्षालन, विष्णु आदि समेत वर्णन, चढ़ावा वर्णन व विवाह आगमन, मंडप शोभा वर्णन, शाखोचार वर्णन, गिरि का शिव से गोत्र ज्ञात करना, संभ्रम होना, शिव की नाद से उत्पत्ति का वर्णन, कन्यादान होना, ध्रुवदर्शन, परिछन, मंगल, विनती आदि वर्णन, सरस्वती, लक्ष्मी, सावित्री, सखी, लोपामुद्रा, अरुन्धती, अहल्या, तुलसी, रोहिणी, शतरूपा का शिव से हास्य करना, शिव का समझाना, रति का विनय करना, काम को प्रगट करना, शिव-शिवा वर्णन, शिव का जनवासे में आना, हिमगिरि का शिव से अपनी त्रुटियों के लिये निवेदन करना, देवताओं का हिमगिरि की प्रशंसा करना, कलेवा वर्णन, गाली वर्णन, चौथे दिन सर्वाहुति करना, संस्रव प्राशन करना, गिरिजा के सिर अभिषेक करना, लहकौरि करवाना, कंकन उतारना, पांचवें दिन विदा मांगना और सानंद बिदा करना, व प्रेम से विह्वल हो जाना, वरतौनी होना, गिरिजा को बिदा करना, मयना का विह्वल चित्त गिरिजा को बिदा करना व उपदेश देना, नारि धर्म वर्णन, पतिव्रत भेद वर्णन, गिरिजा का प्रेम सहित विदा होना, शिव का कैलास जाना, व देवताओं का गृह प्रवेश कराना, आनन्द मनाना, शिव से बिदा हो कर शिव स्तुति कर के निज घर को जाना।

चतुर्थ खंड।

शिव के पास विष्णु आदि का जाना, शिव का सुरत में निरत रहना, देवों का स्तुति करना, शुचि का शिव वीर्य को कपोत रूप में ग्रहण करना, पार्वती का देवों को बांझ रहने से शाप देना, अग्नि को भी श्राप देना, देवों को गर्भ रहना व घबड़ाना, शिव स्तुति करना व रेतस को उलटवा देना, अग्नि से भी निकलवा देना, ऋषि पत्नी अग्नि तपने को गयीं, अरुंधती ने मना किया पर कृत्तिका के अंग से स्पर्श हो गया, उसने हिमगिरि में छोड़ा, फिर अमरनदी में डाला गया, देव नदी ने किनारे पर सरपत में डाल दिया, गिरिजा के कुचों में दूध का आ आना, विश्वामित्र का बालक के समीप जाना, वालक का ऋषि से कर्म करने

को कहना, विश्वामित्र का ब्रह्मपुत्र न होने से निषेध करना, पुनः पुत्र मानना, कुमार को अग्नि का सांग देना, कुमार का पर्वत में मारना और उसका फट जाना व बहुत से दैत्यों का मरना, शैल के कथन पर इन्द्र का बालक को मारने के लिये उद्यत होना, एक दिव्य पुरुष का रक्षा करना, इन्द्र के वज्र मारने पर भी बालक को चोट न आना, इन्द्र का शिवा की स्तुति करना, कृत्तिका का उस पुत्र को लेने की इच्छा करना, बालक ने स्वयं षट्मुख कहा और वाद मिटाया, कुमार का इन्द्र के यहां जाना, इन्द्र का ज्ञात करना, तेज देख कर सभा का भयभीत होना, देवों का कात्तिक को गिरीश पर ले जाना, शिव-शिवा प्यार वर्णन, देवों की स्तुति, विष्णु का शिव से आज्ञा दिलाना, कुमार को तारक मारने के लिये, ब्रह्मा का स्वामिकार्तिक का निवास बनवाना, देवों का माला इत्यादि देना, नारद का अश्वमेध करना, वरुण का कार्तिक को बकरा भेंट करना, नारद का यज्ञ के लिये पकड़ना, अज का खुल जाना और सातों द्वीपों को जीतना, नारद का कार्तिक की शरण जाना, और उनका अज को पकड़ कर ला देना, पुत्रार्थ झगड़ने पर कात्तिक का माताओं को समाधान करना, विधि-हरि हर को सांत्वना देना, तारक का देवों पर चढ़ाई करना, नारद का समझाना, नारद का इन्द्र को समझाना, दोनों ओर युद्ध की तय्यारी होना, युद्ध वर्णन, मुचुकंद तारक युद्ध वर्णन, वीरभद्र युद्ध वर्णन, असुरों का हारना, तारक वीरभद्र युद्ध वर्णन, कार्तिक का युद्ध के लिये सन्नद्ध होना, कात्तिक तारक युद्ध वर्णन, तारक का मारा जाना, देवताओं का कात्तिक की स्तुति करना, बाण दैत्य का क्रौंच पर्वत में उपद्रव करना और युद्ध क्षेत्र से भाग जाना स्वामिकार्तिक द्वारा बाण का ससैन्य वध वर्णन। क्रौंच का स्तुति करना। त्रिलिंग की स्थापना करना, युद्ध से भाग कर प्रलंब का १० करोड़ साथियों सहित शेष लोक में विध्वंस करना, शेष पुत्र कुमुद का स्वामिकार्तिक की शरण आना, सांग द्वारा उसका वध करना, सब का स्तुति गान करना, कार्तिक का विमान पर चढ़ कर कैलास जाना और ब्रह्मा विष्णु इन्द्रादि का वाहनों पर चढ़ कर साथ साथ चलना, शिव शिवा का कुमार को प्यार करना और देवों का स्तुति करना, गिरिपति का दानादि देना और सब देवों का विदा होना, स्कंद उत्पत्ति का पुनः वर्णन, शिवा को क्रोधित देख सान्त्वना देना, पार्वती का पुत्र की याचना करना, शिव का गणपति पूजन बतलाना, गणपति महिमा वर्णन, गणेश को मोटा देख चन्द्र का उपहास करना, गणेश का शाप देना, मोक्षार्थ चतुर्थी व्रत वर्णन, चौथ चन्द्रमा दोष निवारणार्थ द्वितीया दर्शन वर्णन, पार्वती का व्रत करना, शिव का प्रसन्न हो विहार स्थल निर्माण करना, गणपति का द्विज रूप में आना, पुत्र वर देना और स्वयं बाल रूप में शिवा के पलंग

पर आना, शिव-शिवा का उत्सव मनाना, विष्णु आदि देवी देवताओं का आशिर्वाद देना, शनि का आगमन, कर्म महिमा वर्णन, निज स्त्री (चित्ररथ की कन्या) की कथा व श्राप वर्णन, शनिर्दृष्टि से गणेश का शिर छिन्न हो जाना, सब देवों आदि का विलाप करना, शिव के कहने से विष्णु का उत्तर ओर जाकर गज शिशु का शिर लाना, शिव का प्रणव मंत्र से बच्चे को जिलाना सब का आशीष देना, शिवा का शनि को श्राप देना, रवि कश्यप का शिवा पर क्रोध करना, हरि का समझाना, गणेश नाम रख कर सब देवों का बालक को भेंट देना, पृथ्वी का चूहा देना, गणेश स्तोत्र वर्णन, कल्प भेद से गणेश की दूसरी कथा का वर्णन, शिवा के स्नान करते समय नंदी का द्वारपाल होना, शिव का जाना, शिवा का लज्जित होना, फिर मैल का पुतला बना जीवदान दे द्वारपाल करना, शिव का आगमन, द्वारपाल का रोकना, शिव गण और गणेश युद्ध वर्णन, शिवगणों का भागना, शिव का ब्राह्मण को समझाने भेजना और गणेश का न मानना व युद्ध में देवों को हराना, विष्णु-गणेश युद्ध व विष्णु का हारना, शिव का त्रिशूल से शिर काटना, सब देवों का स्तुति करना, शिवा का काल शक्तियों द्वारा देवों का नाश कराना व देवों का शिवा से प्रार्थना करना, शिव का गज शिर लाकर जिलाना और शिवा को शान्त करना, शिव का आशीष देना, गणेश का शिव को प्रणाम करना, सब देवों का शिव की स्तुति करना, कुमार गणपति में श्रेष्टता वर्णन, पृथ्वी के प्रदक्षिणार्थ दोनों को भेजना, पूर्व आने वाले का व्याह व सम्मान करने को कहना, गणपति का चिन्ता करना और माता पिता की पूजा कर प्रदक्षिणा देना, माता पिता पूजन महिमा वर्णन, शिव जी ने गणेश का विवाह किया और श्रेष्ट माना, गणेश के दो पुत्र क्षेम व लाभ का होना, गणेश पूजन महिमा व पूर्णिमा दर्शन महिमा वर्णन।

पंचम खंड।

शिवादि स्तुति, तड़ितमाली, तारकाक्ष, कमलाक्ष राक्षसों का तप वर्णन, ब्रह्मा का वर देना, नगर रचना, विमानादि से पूरित होना और तीनों का अलग अलग राज करना, उनका आनन्द व वैभव वर्णन, देवताओं का क्लेश पाना और त्रिपुर नाश की प्रार्थना करना, ब्रह्मा विष्णु और शिव के पास जाना, सब का शिव पूजन करना, सब गणों का त्रिपुर में जाना और शिवार्चन देख लौट आना, विष्णु का एक गण उत्पादन करना और उसे भिक्षा दे कर्मवाद परक सिद्धान्त समझा त्रिपुर में प्रचारार्थ भेजना और नास्तिकता फैलाना, नारद का शिष्य होना जिसे देख त्रिपुरासुर भी मोहित हो गया व प्रतिज्ञा कर शिष्य बन गया, वंचाक मत त्याग एक मत होने को कहना, जीव दया का प्रचार करना, चार दानों का

मुख्य बताना। रोगी को औषधि, भयभीत को अभय, भूखे को अन्न और विद्यार्थी को विद्या देना, शिवार्चन छुड़ाना, वेद मार्ग पर चलाना, देवार्चन आदि का छूटना, जैन मत का प्रचार होना, ब्रह्मा विष्णु संवाद वर्णन, जैन मत उत्पत्ति व त्रिपुर मोह वर्णन, शिव का पुत्र को देख आनंद मानना, शिव का कुंभोदर को भेजना। देवताओं का भयभीत होना, विष्णु का समझाना और शिव आराधना करने को कहना, शिवार्चन होना, और त्रिपुर नाशन की विनय करना, शिव का अमृत कूप पीने के लिये हरि को वत्स रूप और ब्रह्मा को गौ बना कर भेजना और अमृत कूप पीना। शिव गण, नंदी, गणेश, कुमार का प्रगट होना और शिव शासन बतलाना तथा देवों से उत्तम रथ तैयार करने को कहना, विश्वकर्मा का रथ व शस्त्रादि तय्यार करना, विष्णु का शिव से रथ पर चढ़ने को प्रार्थना करना, शिव का गणेश से प्यार करना व पूजना, प्रस्थान व विष्णु ब्रह्मादि का साथ चलना, शिव का नाद करना, त्रिपुर का एक साथ होना, देवों का प्रसन्न होना व शिव से त्रिपुर विनाश की प्रार्थना करना, शिव का बाण छोड़ना और त्रिपुर का विनाश होना, ब्रह्मा-विष्णु आदि देवों का स्तुति करना, शिव का शान्त होना, अरिहन्त का शिष्यों सहित आना और शिव को प्रणाम कर छल के पाप मोचन की प्रार्थना करना, शिव का कलि में प्रभाव दिखाने को कहना, मय का प्रार्थना करना और शिव का तलातल में रहने को कहना, कश्यप की स्त्री दनु से दानवों की उत्पत्ति, मयदानव का तप वर्णन, शिव का प्रसन्न होना, मय की स्तुति, शिव का वर देना, सुर-असुर को समान भाव से मानना, अपनी भक्ति रखने को कहना, विश्वकर्मा की उपाधि देना, जालंधर कथा वर्णन, शिव का भीम रूप धारण करना, हरि का शिव से ज्ञात करना, इन्द्र का भी ज्ञात करना, ब्रह्मा का ज्ञात करना, उत्तर न देने पर इन्द्र का क्रोध करना, वज्र मारना, शिव कंठ नीला होना और वज्र का जल कर भस्म होना, रुद्र का अग्नि रूप होना, इन्द्रादि का भयभीत होना, बृहस्पति का प्रार्थना कर क्रोध शांत कराना, शिव-तेज को दूर फेंक देना जिससे जालंधर की उत्पत्ति होना, बालक के रुदन से सब का भयभीत होना, सिंधु का ब्रह्मा को पुत्र देना। जालंधर का तप करना और कालनेमि की कन्या वृन्दा से विवाह करना। उसका प्रताप वर्णन, जालंधर के यहां राहु का आना, शुक्र से छिन्न शिर कथा ज्ञात करना, शुक्र का समुद्र मंथन कथा वर्णन, शिव का विष को पान करना, उत्तम रत्न हरि ने लिये, सुरा राक्षसों को दी, छल से अमृत देवों को पिलाया, राहु देवों के बीच में जा बैठा, अमृत पी लिया, परन्तु विष्णु ने शिर छिन्न कर दिया, जालंधर का इन्द्र के पास रत्न लेने को दूत भेजना और इन्द्र का पुरा राक्षस व पहाड़ों के पंख तोड़ने आदि की कथा कहना, विष्णु द्वारा शंखासुर का

बध, दूत का जालंधर प्रताप वर्णन, इन्द्र का न मानना, जालंधर का सुरपुर पर चढ़ाई करना, मरे देवों को वृहस्पति का दिव्यौषधि द्वारा जिलाना, मृत राक्षसों को शुक्र का जिलाना, देवताओं का हारना व जालंधर विजय वर्णन, देवों का विष्णु को शरण जाना, स्तुति वर्णन, विष्णु का युद्ध के लिये प्रस्तुत होना, लक्ष्मी का भाई का पक्ष ले मना करना, विष्णु-जालंधर युद्ध वर्णन, गरुड़ का घायल होना, विष्णु का युद्ध से प्रसन्न हो जालंधर को वर देना, उस के निज घर में विष्णु लक्ष्मी निवास होने की इच्छा करना, देवों से सब रत्नों का लेना, प्रजा का प्रीति से पालन करना, देवों का शिव स्तुति करना, शिव का आकाश वाणी द्वारा अभय वर देना, नारद जालंधर संवाद, शिवा को लेने के लिये शिव के पास राहु को भेजना, शिव का क्रोध करना व एक गण का उत्पन्न होना, दूत का भयभीत हो भागना, शिव का छुड़ाना, जालंधर का शिव पर चढ़ाई करना, वृंदा का समझाना, देवों का शिव से चढ़ाई का वर्णन करना, शिव का निज अंश होने से त्रिशूल से न मारने को कहना, देवों का निज तेज देना व शिव का शस्त्र बनाना, जालंधर का शैल समीप जाना, शिव का भी ससैन्य उतरना, शिव जालंधर युद्ध वर्णन, शुक्र का मृत राक्षसों को जीवित करना, देवों का शिवा से वर्णन करना, रुद्र का कृत्या उत्पन्न करना, शुक्र को चुरा कर ले जाना, असुरों का संहार होना, शुंभ, निशुंभ, कालनेमि आदि का युद्ध करना, नंदी, कुमार व गणेश का प्रबल युद्ध करना; असुर दल का विकल होना, वीरभद्र का असुर सेना नाश करना। शुंभादि का घायल होना। जालंधर शिव युद्ध वर्णन, नंदी का असुरों को मारना, जालंधर का शुंभादि को संग्रह करना, शिव का जालंधर के रथ ध्वजादि खंडित करना, उसका माया करना शिव का मोहित होना, जालंधर का शिव रूप में गिरिजा के पास जाना व जड़ होना, शिवा का अन्तर्धान होना, शिवा का हरि को उसके पुर में भेजना, शिव का मोह दूर होना, वृन्दा का पति मृत्यु का स्वप्न देखना, हरि का जाना, वृन्दा का बन में जाना व दो राक्षसों का देखना, भयभीत होना, तपसी के कंठ से लिपट जाना, मुनि का क्रोध करना, राक्षसों को भगाना, दो बन्दरों का आना, वृन्दा के सामने जालंधर का बध कर डालना, वृन्दा का रुदन करना, तपसी का जीवित करना, वृन्दा व जालंधर संयोग होना, एक बार विष्णु रूप रखना और वृन्दा का तप भंग होना और श्राप देना, विष्णु का समझाना, शिव महिमा वर्णन करना, राक्षसों का माया करना, गिरिजा को शुंभ निशुंभ का मारना व तंग करना, शिव का श्राप देना कि गिरिजा के हाथ से तुम्हारा बध होगा, जालंधर शिव युद्ध वर्णन, नंदी का भागना, शिव का चक्र से जालंधर का बध करना, देवों का स्तुति करना, सौमिनि, विमर्षण, चन्द्रसेन, आदि के उद्धार

का वर्णन, वृन्दा को देख विष्णु को मोह होना, देवों का स्तुति करना, त्रिभव रूप को देख कर विष्णु का मोहित होना, विष्णु का शिव आराधना करना व तप में लीन होना, प्रसन्न हो कर शिव का विष्णु को चक्र सुदर्शन देना व उसकी महिमा का वर्णन, कश्यप की स्त्री दनु से विप्रचित्त का होना, उससे वृषधर की उत्पत्ति, उसका तप करना व प्रबल पुत्र मांगना, शंखचूड़ की उत्पत्ति, उसका तप करना व ब्रह्मा का वर देना, तुलसी का तप करना, शंखचूड़ संवाद व विवाह, देव-दानव युद्ध, देवताओं का पराजय, चन्द्रचूड़ का राज्य करना, चन्द्रचूड़ के पूर्व जन्म की कथा, राधा के श्राप से सुदामा का राक्षस होना, गोलोक वर्णन, सुदामा का राधिका को रोकने के कारण श्राप देना, विवाह वर्णन, वैकुंठ वर्णन व महेश महिमा कथन, कैलाश में देवों का जाना, शिव से शंखचूड़ को मारने की प्रार्थना करना, शिव का प्रसन्न हो बचन देना, शिव का पुष्पदन्त को शंखचूड़ के पास समझाने को भेजना, काल की महिमा का वर्णन, पुष्पदन्त का लौटना, रुद्र का युद्ध की तैयारी व ससैन्य प्रस्थान, वीरभद्र, नंदी, भृंगी आदि का चलना। भूत प्रेत सेना का विस्तृत विवरण, शंखचूड़ का युद्धार्थ गमन व दूत का शिव समीप भेजना, दूत शिव संवाद, शिव का समझाना, दूत का असुरों के संहारकारी पूर्व वर्णन कहना, देव दानव युद्ध, वृषपर्वा इन्द्र, गोश्रुति गणेश, कालविक जलेश, कालकेय कुबेर, विप्रचित्त, दिनेश, राहु क्षपेश, काक्ष कुज, शुक्र वृहस्पति, मय विश्वकर्मा, वर्चस वसु, दीप्तिमान अश्वनीकुमार युद्ध, वीरभद्र, नंदी, गणेश आदि का युद्ध में प्रवृत्त होना, शंखचूड़ से युद्ध होना, देवों को निर्बल जान तेज देकर कुमार को भेजना व सौ अक्षौहिणी सेना का नष्ट करना, शंखचूड़ कुमार युद्ध वर्णन, चन्द्रचूड़ वीरभद्र युद्ध, शिव का संताप प्रकट करना, पुनः युद्ध होना, काली का गर्जन करना, शंखचूड़-कुमार युद्ध वर्णन, गरुडास्त्रादि चालन, शंखचूड़ का चक्र मारना, काली का रक्षा करना, काली-शंखचूड़ का युद्ध, आकाशवाणी का होना व काली से युद्ध निषेध, शिव द्वारा मृत्यु वर्णन, शिव शंखचूड़ युद्ध वर्णन, शूल का मारना, चन्द्रचूड़ का हृदय फटना व उससे एक पुरुष का निकलना व उसका सिर काटना, काली का असुर सैन्य भक्षण करना, जोगिनी का रण में फैलना व असुर सेना नष्ट होना, देवों का प्रसन्नता प्रकट करना, शंखचूड़ का माया करना, माहेश्वरास्त्र से शिव का नष्ट करना, आकाश-वाणी होना कि कृष्ण कवच व सती स्त्री के कारण इसका नाश नहीं होता, शिव का हरि को बुलाना और उन्हें कवच मांगने को ब्राह्मण रूप में भेजना व उससे मांग लाना, शंखचूड़ रूप से उसकी स्त्री का सतभंग करना, शिव का त्रिशूल से शंखचूड़ का बध करना, देवों का स्तुति करना व उसका सुदामा रूप में

गोलोक को जाना, विष्णु का तुलसी छलन कथा वर्णन, विष्णु का शाप से शालिग्राम रूप में होना, तुलसी का पतिव्रत भंग करना, विष्णु का समाधान करना, अंधक कथा, दिति का तप कर कश्यप से वर लेना, अंधक की उत्पत्ति, देवों का भयभीत होना व तप कर देवों को हराना, रत्नादि लेना, कश्यप का दैत्यों को समझाना व अंधक का शिव भक्ति व उग्र तप करना, देवों का शिव स्तुति करना व बर देने को अंधक को कहना, उसका शिव विन अवध्य बर मांगना, अंधक का देवों को विजय करना व रत्न अप्सरादि लेना, देवों का विष्णु से निवेदन करना, विष्णु का चक्र चलाना, शिव का रक्षा करना, विष्णु का शिव स्तुति करना, शिव का समझाना, विष्णु का अंधक से वर मांगने को कहना, उसका शंकर भक्ति रहित होना और सब लोकों पर राज्य करना, देव-मुनि का दुःख पर विचार करना और मुनियों को शिव के पास भेजना, शिव स्तुति वर्णन, शिव का मंदार माला दे अंधक के यहां नारद को भेजना, नारद से माला की महिमा सुन कर युद्धार्थ अंधक का गमन, शैल का बाग की रक्षा करना, गणेश अंधक युद्ध, शुक्र का पकड़ ले जाना, देव दानव युद्ध, दैत्यों का प्रमथ को भयभीत करना, शिव का रथ पर चढ़ कर युद्धार्थ गमन, दैत्यों के यहां शुक्र को भेजना। असुर शिव युद्ध व त्रिशूल से अंधक को मारना, अंधक को ज्ञान होना, स्तुति करना व गणों में सम्मिलित करना, वाणासुर की उत्पत्ति का वर्णन, शिव भक्ति व तप से वरदान पाना व विजय करना, शिव विहार वर्णन, अप्सराओं का शिव गण व उषा का शिवा रूप में आना, शिव का जानना और स्वप्न में पति मिलने को कहना। वाण का युद्धार्थ शिव से कहना व शिव का कृष्ण से होने का वर्णन कर ध्वजा चिन्ह देना, उषा का स्वप्न देखना, चित्रलेखा का अनिरुद्ध को लाना व उषा-अनिरुद्ध विहार वर्णन, द्वारपाल का वाण से कहना, अनिरुद्ध से राक्षसों का युद्ध व बहुतों को मारना, वाण का पकड़ना व मारने को उद्यत होना, अनिरुद्ध का भर्त्सना करना, आकाशवाणी होना, नारद का कृष्ण को सूचना देना, कृष्ण का ससैन्य वाण पर चढ़ाई करना, शिव का वाण की सहायता करना, शिवकृष्ण युद्ध वर्णन, हरि-वाण युद्ध वर्णन, कृष्ण का शिव स्मरण कर वाणासुर की ४ भुजा छोड़ शेष काट डालना, कृष्ण का शिव स्तुति करना, शिव का कृष्ण और वाण से संधि कराना, शिव का वाण को गणपति की पदवी देना, वाण का स्तुति करना, महिषासुर वध होने पर उसके पुत्र गजासुर का दुखित होना व घोर तप करना, देवों का भयभीत हो ब्रह्मा के पास जाना, ब्रह्मा का गजासुर को बर देना, गजासुर का देव ब्राह्मणों को दुःख देना, देवों का शिव से प्रार्थना करना, शिव का युद्धार्थ सन्नद्ध होना व गजासुर बध वर्णन, गजासुर का

शिव स्तुति करना व इष्टगंधि वर पाना, मोक्ष होना, दुंदुभि निह्रादि का देव मुनियों पर अत्याचार करना, काशी में द्विजों को सताना, शिव का उसे वध करना।

Note.—शिवपुराण का महानंद वाजपेयी ने भाषावद्ध छन्दों में अनुवाद किया है। इसके दो भाग हैं। पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध। इस पूर्वार्द्ध भाग में ५ खंड और २१९ अध्याय हैं। इसकी भूमिका ठाकुर शिवसिंह सेंगर ने अपने हाथ से लिखी है और उसमें उनका हस्ताक्षर भी है। भूमिका में रचयिता का नाम महानंद वाजपेयी लिखा है जो लखनऊ निवासी थे। सं० १९२६ से १०५ वर्ष पूर्व उनका देहान्त हुआ जैसा कि ठाकुर साहब ने उल्लेख किया है। ठाकुर साहब ने संशोधन करने का भी उल्लेख किया है जो शायद अन्य किसी प्रति में किया होगा। इसमें कोई चिन्ह संशोधन का नहीं है। ग्रंथ शिवपुराण बड़ा और काव्य रचना अच्छी है। काव्य रचना में भी महानंद का नाम आया है तथा कहीं कहीं खंड की समाप्ति पर भी दिया है। सेंगर जी को यह ग्रंथ सं० १९२६ में मिला था और प्रतिलिपि सं० १९२७ में करवायी थी। कांथा का भी वर्णन किया था। उनके पितादि का भी परिचय है। उन्होंने स्वयं वर्णन किया हैः—

श्री वाजपेयि गुन गण निधान। विख्यात महानंद सब जहान॥
तिन्ह भाषा कीन्ही शिवऽस्मृति। दोहा चौपाई छंद वृत्ति॥

रोला छंद—वास भो कैलाश में नहि ग्रन्थ कीन्ह प्रकाश। विस्तार छत्तिस सहस भाषा ग्रंथ है मतिरास॥ यदपि चौबिस सहस हैं शिव कौ पुराण अनूप। तदपि भाषा ह्वै गयौ छत्तीस सहस स्वरूप॥ उन्नीस सौ छब्बीस संम्वत में लह्यौ हम ग्रंथ। हित सर्व जनकौ ठानि कै करि दीन सलिल सुपंथ॥ अर्थात् उर्दू प्रथम उत्था छापि दीन्हौ याहि। जो चहै लेवै ग्रंथ कौं तिन काहि दुर्लभ नाहि॥ पुनः भाषा ग्रंथ में लखि छिद्र छुद्र अनेक। सुद्ध कीन्हौ तिन्हहि जिय में धारि भूरि विवेक॥ षंड ग्यारह संहिता है सप्त यामे आम। कथा जाकी जान्हवी सम देत मुक्ति ललाम॥ लखनऊ ते कोस दस दक्षिन बसै एक ग्राम। महावीर विराजहीं जहं कहत कांथा नाम॥ वंश श्रृंगीशान्ता जहं उर्वीपति साज। धर्मधर क्षत्री विराजें विधा से द्विजराज॥ करत रक्षा जनन की जहं शूलपाणि महेश। मम पिता हैं तहं भूमिपति रनजीत सिंह नरेश॥ धर्मकर्त्ता शत्रुहर्त्ता शास्त्रवेत्ता दानि। प्रजाभर्त्ता दयाधर्ता विजय जश की खानि॥ रिपु भय वनचारी सुखारी मित्र जाके सर्व। संग्राम में जिन शत्रु कौ सब दूरि डार्यौ गर्व॥ मार्तण्ड द्वितीय लौं है प्रगट तेज अखंड। अनल से प्रज्वलित है भुजदंड चंड प्रचंड॥ यदपि सेवक भृत्य गन बहु रहत निस दिन पास। तदपि शिव पर पुष्प

शैलुष दूरि अर्चत खास ॥ श्रवन वेद पुरान कौ अस्मरन गौरी कन्त । रज त्यागि सत्यहि धरत निस दिन मनहुं योगी संत ॥ भक्ति भूसुर बृंद को गोविद पद रति श्रोज । गाय गाय सुनावहीं जस गाथ वंदी रोज ॥

कवित्त—मनसब दिलो ते लखनऊ ते खैरखाही लंदन ते खुल्नत विसाति विना सकसे । भारभुज दंडन संभारे भुव मंडल कें जाको धाक धाई धराधीश धकाधक से ॥ हांक सुने हालत हरोफ नाकदम होत कहै विश्वनाथ श्ररि गिरै आके मकसे । कहांलैां सराही तेरे उरको उमाहो भूप रनजीत सिंह तेरे पातसाही नकसे ॥ १ ॥ देवन श्रदेव भूत भैरवादि वचि जात वचि जात जक्ष कूष्माण्ड को कटक ते । वचि जात हूलहू त्रिशूलहू से वचि जात वचि जात सरप शूल मूल की सपट ते ॥ वचि जात श्राधि व्याधि घान हू से वचि जात वचि जात वर व्याल व्याघ्र को दपट तें ॥ वचि जात यमसों जमाति जोरि जमन को वचत न श्ररि रनजीत को झपट ते ॥ २ ॥

भुजङ्ग प्रयातः—प्रजा जासु फूली फली सुख भरी सी । मनो पाय रितु राज कानन हरी सी ॥ विराजै जहां शास्त्री शुक्ल वैनी । गुरू देव मम स्वर्ग की है नशेनी ॥ श्रभयजीव हैं है न रोगादि भीता । सुधा से लसैं मिश्र श्रीराम सीता ॥ बड़े ज्योतिषी राज मंत्री बली हैं । मनो भाष्यकर गर्ग से मंगली हैं ॥ महाराज श्रीमान से मान पायो । रह्यो मान वाके न जो मान लायो ॥ त्रिपाठी गणिकलाल मोहन विराजै । जको देखि जेहि ज्योतिषी को समाजै ॥ गणित जासु को ब्रह्म लिपि लों सही है । मनो देह मानुष्य धातैं गही है ॥ ज्वलित ज्वाल जनु शेष दूजो विराजै । पुराणज्ञ श्री ईश्वरी शुक्ल भ्राजै ॥ पठे सर्व इतिहास श्ररु श्रायुर्वेदै । लहे युक्ति सों काव्य कोशादि भेदैं ॥ दिलो मित्र सब के श्रमी सो कला मैं । सिधानाथ भोला गहे युग्म वामैं ॥ पठैं संस्कृत श्रारवी फारसी हैं । सबै इल्म श्रंगरेज की श्रारसी है । रह्यो शेष जासों न विद्याश श्रंगा । श्रवस्थी हैं श्रभिधान विख्यात गंगा ॥

रोला—सर्व मन रंजन विभंजन दुःख सज्जन मित्र ।
दुष्ट दल गंजन गुणालय सर्व गुन को चित्र ॥
गर्वहर हरभक्त श्री गुरु वक्स मेरे भ्रात ।
मूर्तिमान त्रिदेव लैां है धरे मानुज गात ॥
ज्येष्ट श्रेष्ट दयाल मम भ्राता सहोदर तात ।
महीपति है नाम मानो मही रवि दरशात ॥
नाम मम शिव सिंह है शिवचरण रज को खोज ।
भद्रायु लो सुख लहत निसुदिन पाय दिल को मैाज ॥

(पन्ना ३२) ग्रोर कपिला तहि ग्राधाना । जाहि लखि होत बहुत सुखनासना ॥
कपिलाश्रम जहं अघ गण हारो । लषतहि मुनिवर सब सुखकारो ।
तहं इक विप्र भयो मखकर्ता । सोम याजि कुल भव कुल भर्ता ॥
दोक्षित सो परि पूरण कामा । यज्ञदत्त शुभ तहि कर नामा ॥
मख विद्या महं परम प्रवीना । राजमान्य बहु धन नहिं दीना ॥

छंद—कछु काल बोते सु मुनि तिन के भयहु सुत शुभ कालहो ।
सब कोन जातक कर्म द्विज वर यज्ञदत्त स्ववालहो ॥
ग्ररु नाम घरेहु विचारि गुण निधि ग्रोर चूड़ाकर्म हो ॥
उपनयन कोन्हेउ निगम संमत दोन दान सुधर्म हो ॥

No. 252(*b*). Śivapurāṇa (Uttarārdha) by Mahānanda Vājapeyī of Dālamaū (Rāe Bareli). Substance—Foreign blue paper. Leaves—688. Size—12½ × 8 inches. Lines per page—32. Extent—17,200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nagari. Date of manuscript—Saṁvat 1928 or A. D. 1871. Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Siṁha Seṅgara, Kāṇṭhā, District Unao.

Beginning.—श्रो गणेशायनमः ॥ श्री गौरीशंकरायनमः ॥ श्री गुरुचरण कमलाभ्यां नमः ॥

बंदे देवमुमापतिं गुणगतिं विष्णुग्रादि देवस्तुतं । मायाधोश मनोशमाकृतिकरं मायापरं शंकरं । दीनोद्धार विहार कारमनिशं माया विदां मानदं । ब्रह्मज्ञान विशारदं पशुपतिं भक्तप्रियं सत्क्रियम् ॥ १ ॥ वंदे महानंद विदां महेशीं दुर्गासु दुर्गति हरां भवानीम् । दीनोद्धरात्ताक् निमार्ति संदां भक्तप्रियां स्कंदप्रसूं सुरूपाम् ॥ २ वंदे स्कंदं च हेरंब विष्णु ब्रह्माणमेव च । ग्रन्यान् शिवजनान् वंदे स्वकृतेः पूर्ति हेतवे ॥ ३ ॥

दोहा—विनवहु गिरिजा शंभु पद षण्मुख गणपति पाद ।
हरि विधि मुख सुर मुनि सकल वंदहु नशहिं विवाद ॥ ४

सूतउवाच—सुनि ग्रंधकासुर नाश मंदर शैलगत शिव चरित हो । मुनिनाथ नारद घात सो तब ठानि उर शंका कहो ॥ हे तात विधि सुनि ग्रंधकासुर नाश मम शंका भयो । सोइ पूछहुं सविवेक भाषहु हरहु शंका जो जयो ॥

दोहा—कवहि गयो शिव मंदराचलहि त्यागि कैलाश ।
सोइ कहहु शिव चरित हो मोहि सुनवे की ग्राश ॥

End.—आइ गये तव सुभग विमाना। लेन स्तुति ते दैनिक नाना॥ तब भे दंपति दिव्य सुदेहा। चढ़ि विमान विलसे सुसनेहा॥ दिव्य भोग संयुक्त बनाइ। शिव मंदिर गे गण गति पाई॥ शिवगण तेहि कर नायक भयऊ। रहेहु मुदित नित दुख नसि गयऊ॥ सोइ शारदा सखि गिरिजा का। भै प्रमुदितहु शुभाकृति जाकी॥ यह हम कहेउ पुण्य आख्याना। पढ़त सुनत कहं सुखद बखाना॥ हिय भुक्तिद उत मुक्ति दया है। सब विधि नाशत ह दुखदा है॥ यहि ते बाढ़त बहु आयुर्बल। रोग न रहत लसत तन अबकल॥ सुर संपति धन धान्य विवर्द्धन। यह आख्यान सुमंगल साधन॥ त्रिय गन को सौभाग्य बढ़ावन। संतति प्रद बहु चेत जुड़ावन॥ उमा महेश्वर संज्ञक यह व्रत। यहि ठाने सुख उपजत अविरत॥ यह मुनिवर व्रतराज कहावत। यहि कीन्हे जन सब सुख पावत। यह व्रत हवहि शिवा शिव प्यारा। यहि कीन्हे सब नसत विकारा॥ यहि व्रत की महिमा सर्वोपरि। होति शिवा शिव रति यहि व्रत करि॥

इति श्री वाजपेयि, वंशोद्भव श्री ठाकुर प्रसादात्मज श्री रामहानंद विरचिते भाषा श्री शिवपुराणे शिव विवेव दशमखंडे ब्रह्म नारद संवादे उमा महेश्वर व्रत्त माहात्म्य वर्णनोनाम चतुर्विंशोऽध्याय॥ २४॥ सम्पूर्णम् शुभं भूयात्॥ चैत्र शुक्ल १४ लिख्यते॥ ललित किशोर वाजपेयिना॥ राम राम शिव शिव राम इति

Subject.—पद्मखंड—शिव का काशी जाना और सब देवों का भी पहुंचना व शिव दर्शनादि व मणिकर्णिका स्नान करना। शिव—विश्वेश संवाद वर्णन, शिव का काशी निवास व शासन वर्णन। गिरिजा का अन्नपूर्णा रूप में निवास। भैरव महिमा व विधि का पंचम शिर काटने का उल्लेख वर्णन व कपाल मोचन तीर्थ वर्णन। आनंद वन का वर्णन व हरिकेश को तप करते देखना। उसे दंडपाणि बनाना और वरदेना। विघ्न से गुह व अगस्त्य का काशी से चले जाना, वश्य धनंजय का दंडपाणि का शासन मानना। रत्नभद्र पुत्र हरिकेश का चरित्र वर्णन जो यक्ष मुनि और धनी था। वैभव वर्णन, शिव भक्ति कथन।

दुर्ग असुर का वर्णन, शिवा के मारने से दुर्गानाम होना। दिवोदास कथा वर्णन, स्वायंभुव वंश में रिपुञ्जय का होना। काशी में तप करना, अकाल से धर्मलोप होना। ब्रह्मा का रिपुञ्जय से राज्य करने को कहना व वचन लेना कि देव व नाग क्षिति पर न आवें।

मंदर गिरि का तप वर्णन, शिव का जाना और निज मूर्ति पर लिंग स्थापन करना, शिव का मंदराचल में निवास करना। अन्य देवों का भी जाना, रिपुंजय का काशी में राज्य करना। देवों का विघ्न करना और अग्नि को कार्य

करने से निषेध करना। राजा का संतोष देना और दिवोदास का शान्ति पूर्वक राज्य करना। दिवोदास प्रभाव वर्णन। देवों का ब्रह्मा के पास पास उनका विष्णु के और विष्णु का सब के साथ शंकर के पास जाना।

शिव का योगिनी गण को काशी में विघ्नार्थ भेजना व उनका श्रमफल होना। सूर्य्य को विघ्नार्थ भेजना, काशी का प्रभाव वर्णन। १२ सूर्य्यों का चरित्र वर्णन और उनकी महिमा। काशी निवास वर्णन, कोई विघ्न न मिलना। शिव का ब्रह्मा को भेजना और राजा को यज्ञ करने को कहना। ब्रह्मेश्वर लिंग स्थापन कराना व ठहरना। शिव का दुखित होना शंकुकर्ण महाकाल गणों को भेजना। उनका भी न टिकना। अन्य बहुत से गणों का भेजना व काशी का बसना। गणेश को भेजना और माया करना। विप्र रूप से सब को संतुष्ट करना। रानी लीलावती का विप्र को बुलाना और भविष्य ज्ञात करना, राजा का भयद कारण ज्ञात करना। गणेश का कारण बता कुछ दिन पीछे एक द्विज मिलने को कहना व राजा को छलना। गणेश का विलमना, विष्णु को भेजना, विष्णु के स्नान स्थान व पादोदक तीर्थ होना, आदि केशव, क्षीराब्धि, कृतिका किय, शंखतीर्थ, अरि तीर्थ, गदा पद्मतीर्थ, रमा, गरुड़, नारद, प्रहलाद तीर्थ वर्णन। गणेश का विज्ञानोपदेश देना। राजा को निर्वेद होना और विप्र-राजा संवाद वर्णन। रणञ्जय का राजत्याग का निश्चय और पुत्र स्त्री आदि को बुलाना और विमान पर बैठ कर शिवपुर को जाना।

ज्येष्ठ पुत्र को राज देना। गणेश और विष्णु का कृतकार्य्य होना, गरुड़ को शिवजी के पास संदेशार्थ भेजना, शिव का काशी को प्रस्थान। हरि आदि का सादर लेना व स्तुति वर्णन। सब देवों से अंशरूप में टिकने को काशी में कहना। शिव जी का दिव्य रथ पर काशी में प्रवेश वर्णन। जैगीषव्य योगी का समाधि वर्णन, गण भेज कर पास बुलाना। गुहा का वर्णन व शिव का वरदान देना।

काशी से सुमेरु पर शिव के जाने पर ब्राह्मणों का सन्यस्त व्रत लेना और काशी के सम्पूर्ण तीर्थों में भ्रमण करना, शिवजी के लौट आने पर ब्राह्मणों का स्तुति करना और शिव का प्रसन्न होना, वर देना और बहुत संतोष प्रकट करना। विश्वकर्मा का विश्वेश्वर भवन निर्माण वर्णन, उसका ऐश्वर्य कथन, मयना का हिमालय से पार्वती से मिलने की इच्छा प्रगट करना। हिमालय का अपार सम्पत्ति व सामिग्री लेकर जाना, काशी की सम्पत्ति देख कर चकित होना। हिम का विधि समीप ठहरना, वरुणातट प्रासाद निर्माण, शिव-शिवा गमन। हिम का शिव स्थापन करना और लौट जाना; शिव-शिवा का वर देना, अनादि लिंग तीर्थ वर्णन जिसका शैलेश्वर रत्नेश्वर हुआ। त्रिलोचनादि तीर्थ वर्णन, शिव का

अभिषेक वर्णन, देव स्तुति कथन। शिव का विष्णु आदि को भक्ति वर देना, महानंद विप्र की कथा, चाण्डाल दान लेना, तिरस्कार होना, ठगों का घेरना, छल से ठगों को मारना, उनका कुक्कुट होना और शिव भक्ति में रत हो मुक्त होना और कुक्कुट मंडप तीर्थ होना, घंटा रव होना, नंदी, शिव, गणप का जाना, शृंगार मंडप में विश्वनाथ लिंग स्थापन करना वेदादि का स्तुति करना।

खंड सप्तम।

शिव वंदना, ब्रह्मा का १०० अवतार कथा वर्णन। निराकार स्वरूप वर्णन। रुद्र, ब्रह्मा के पुत्र, चार शिष्यों के साथ शिव की उत्पत्ति, वामदेव अघोर स्वरूप, ईशान, वसु, सूर्य, चन्द्र, अर्द्धनारीश्वर, योगाचार्यता, श्वेत तारदमन, होत्र कंकण, जैगीष, ऋषभ, भृंगी, अत्रि, वालि, गौतम, वेदशिर, धेनुकर्ण, दारुक, लांगुलि, त्रिशूली, नंदी और भैरव रूप होना। वीरभद्र, शरभ, हर, महाकाल के दशरूप व दश देवी पति होना। एकादश रुद्ररूप, गृहपति, वृषेश्वर, पिप्पला, अवधूत, हनुमान, शंभु, वैश्य, द्विजेश, भिल्ल उद्धारार्थ शंकररूप, हंस हो (नल-दमयंती को मिलाया) सत्यरथ के पुत्र को जिलाना। पार्वती परीक्षार्थ (जटिलरूप) साधू, अश्वत्थामा, किरात, गोरक्ष, शंकराचार्य, मिहिरमित आदि रूप वर्णन।

सौमिनि रूप से शवरों का उद्धार करना, भद्रायुध का अभिमान तोड़ना, भस्मासुर व कालनेमि वध कर्ता। शिव के अन्य कार्यों का उल्लेख, महिमा वर्णन। भूत प्रेतादि का प्रभाव। कैलाश वर्णन। लोहित शिशु व सुनंदादि ४ शिष्यों का वर्णन, कल्परक्त, वामदेव व विरजादि ४ पुत्र उत्पन्न करना। तत्पुरुष रूप होना, अघोर रूप धारण करना, पंचम ईशान रूप का वर्णन। इन सब रूपों ने सृष्टि उत्पादानार्थ ब्रह्मा को सहायता दी। अष्टावतारवर्णन शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपाल, ईशान और महादेव का वर्णन। स्थान-क्रमशः—पृथ्वी, जल, अनल, पवन, नभ, क्षेत्रज्ञ, सूर्य, शशि, कार्य-उत्पादन, नारीश्वरावतार वर्णन, मैथुनी सृष्टि कारण, ब्रह्मा का स्तुति करना। शंकर, विजगीष, श्वेतादि, विशोकादि, लोकाक्षि आदि २८ अवतारों का वर्णन, व्यास आदि का ज्ञान देने व योग सिखाने तथा सविता मंत्र देने के लिये दिवोदास व विजगीष तप वर्णन व शिव का काशी छोड़ सुमेरुगिरि पर जाना, देवों को विदा करना, योगिनी आदि को भेजने का वर्णन, दिवोदास का शिवपुर गमन।

दधिवाहन रूप से व्यास को पुराण रचनार्थ ज्ञान देना। कपिल व आसुर रूप से ज्ञान विस्तार करना। ऋषभावतार से ४ शिष्यों के साथ व्यास को ज्ञान देना। ऋषभ चरित्र वर्णन, भद्रायुष नृप का उद्धार करना आदि। भृंग का अवतार ले भृगु को सहायता देना। भृंग के ४ पुत्रों का वर्णन। तप रूप से व्यास को कलियुग का मार्ग बतलाना। १२वें द्वापर में भरद्वाज को अत्रि रूप से रचनार्थ सहायता

देना। वालि व गौतम रूप से श्रुति रचना में व्यास के सहायक होना। वेद शिर से व्यास को बोध देना, हिमगिरि मैना को समझाना। गोकर्ण रूप से धनंजय को सहायता देना। गुहावासी अवतार से व्यास को सहायता देना।

अठारहें द्वापर से २७वें तक १० अवतार वर्णन। शिखंडी, जटामाली, अट्ट-हास दारुक, लांगली महाकाय, शूली, दंडी मुंडीश्वर, सहिष्णु सोमशर्मावतार वर्णन, प्रत्येक के चार चार पुत्र हो कर भिन्न भिन्न द्वापर में भिन्न भिन्न व्यास को सहायता देना। २८वें द्वापर में शिव अवतार में व्यास को सहायता देना। कृष्णावतार से द्वापर में राक्षसों का वध करना, फिर कृष्ण द्वैपायन व्यास का शिवाराधना करना, शंकर का अवतार ले मृत देह को जीवित करना व श्रुतिमार्ग व योग प्रतिपादन करना। नंदिकेश्वर जन्म वर्णन—शिलाद का तप करना, इन्द्र से अयोनिज अमर पुत्र मांगना, फिर तप करना और शिव का नंदी नाम से जन्म लेना। नदी आदि प्रवाहित होना। नंदी का तप करना और शिव गण होना। स्कंध का मुनियों से भैरव कथा कहना, देवों का ब्रह्मा से सब से बड़ा देव (ब्रह्मा) का ज्ञात करना, विष्णु ब्रह्मा का विवाद होना और निज को परमेश मानना, ऋग्वादि वेदों से ज्ञात करना और उनका भिन्न भिन्न रूप में शिव का परमेश वर्णन करना। शिव का मोह दूर करना। देव समाज में ज्योति रूप प्रगट होना व पुरुष की उत्पत्ति और शिव से आदेश मांगना। काल भैरव नाम देना और दुष्ट पद्मभव को शिक्षा देना तथा काशी का कोतवाल बनाना। ब्रह्मा का शिव की निन्दा करना और काल भैरव का पंचम शिर काटना, भैरव का ब्रह्म दोष निवारणार्थ कापालिक व्रत करना, शिव का वर देना, हत्या (भयंकर कन्या) की उत्पत्ति और काशी जाने पर भैरव से हत्या को दूर होने को कहना। भैरव का सब लोकों व तीर्थों में जाना। भैरव-विष्णु संवाद और काशी का वर्णन व काशी आना और हत्या छूटना।

वीरभद्रावतार वर्णन—दक्ष यज्ञ में सती के भस्म होने पर गणों का यज्ञ बिगाड़ना, भृगु का रक्षा करना, गणों का मारा जाना, शिव का १ बाल से वीरभद्र को उत्पन्न करना, उसका सैकड़ों गणों के साथ मख विध्वंस करना, विष्णु आदि से युद्ध होना, विष्णु-वीरभद्र युद्ध वर्णन, विष्णु का चक्र चलाना, वीरभद्र का थम्भन करना। ब्रह्मा का विष्णु को समझाना। भृगु की डाढ़ी उखाड़ना, धर्म, प्रजापति, कश्यप आदि को लात मारना, यज्ञ का मृगरूप में भागना, वीरभद्र का शिर काटना, दक्ष का शिर भी कुंड में होम देना। यज्ञ विध्वंस वर्णन।

देवों का स्तुति करना। शिव का प्रसन्न होना वीरभद्र को आशीष देना, यज्ञ पूर्ण होना। प्रहलाद की भक्ति और हिरण्यकश्यप का विरोध वर्णन, विष्णु का नृसिंह अवतार लेना। हिरण्यकश्यप का वध करना। नृसिंह का क्रोध

करना, देवों का भयभीत हो शिव को स्मरण करना। शिव का वीरभद्र को बुलाना और नृसिंह को शांति करने को भेजना। नृसिंह वीरभद्र संवाद। शिव का शरभ अवतार ले नृसिंह तेज हरण। नृसिंह का शिव जी की स्तुति करना और शिव का प्रसन्न होना।

यक्षावतार वर्णन—समुद्र मंथन पर देवों को अभिमान होना यक्ष रूप से शिव का देवों के बीच में जाना और तृण तोड़ने को कहना, न टूटने पर आकाश वाणी होना और देवों का शिव प्रभाव विदित होने पर स्तुति करना।

शिव के दशावतार का वर्णन काल, तार भुवनेश, विद्येश भैरव, छिन्न मस्तक धूमावत, बगलामुख, मातंग, कमलरूप धारण करना और शिवा के भी साथ साथ इन्हीं नाम से दस रूप होना।

रुद्र के ११ अवतार का वर्णन—देवों पर विपत्ति पड़ने पर कश्यप का तप करना और शंभु का उनके यहां ११ रुद्र रूप में अवतार लेना। देवों का स्तुति करना जिनके नाम – कपाली, पिंगल, भीम, विरूपाक्ष, विलोहित, शास्ता, अजपाद, अहिर्बुध्न, शंभु, भव, रुद्र ये ११ रुद्र हुए। असुरों को मार कर देवों को सुख देना।

दुर्वासावतार—अत्रि का तप करने जाना त्रिदेव का जाना और पुत्र लाभ का वर देना; दत्तात्रेय का अवतार होना, दुर्वासा शिव के अवतार हुए। बहुतों को परीक्षा करना और सुमार्ग पर लाना। अम्बरीष की परीक्षा वर्णन। राम व पांचाली की परीक्षा वर्णन। राम की परीक्षा काल से बातचीत करते समय लक्ष्मण के द्वारपाल होने पर किसी के भीतर आने का निषेध वर्णन और दुर्वासा के पहुंचने पर शाप देने का भय से लक्ष्मण को भेजना और उनका देहत्याग वर्णन। कृष्ण को पायस शरीर में लगवा कर नग्न हो स्त्री सहित दुर्वासा के पास पहुंचने को कहना, दुर्वासा का प्रसन्न हो वर देना। मुनि का स्नान करना व कौपीन नष्ट होने से जल में रहना, पांडव स्त्री का स्नान करने आना और अंचल फाड़ कर फेंक देना जिसे पहन कर दुर्वासा का निकलना और वर देना। दुर्वासा का कुरूप हो स्नान करना, तीन गंधर्व कन्याओं का वहां जाना और हंसना तथा दुर्वासा का शाप देना कि चाण्डाल कन्या बनो, स्तुति करने पर मलमास में पूजन से उद्धार होने का कथन।

गृहपति वर्णन– नर्मदा तट पर नर्मपुर नगर में विश्वानर मुनि शिव भक्त था। उसकी स्त्री शुचि का पति से शिव समान पुत्र मांगना। विश्वानर का काशी तपार्थ जाना और घोर तप करना। वीरेश्वर के मार्ग में शिव लिंग में शिशु रूप में प्रकट होना और विप्र से प्रेम वचन कहना और प्रसन्न हो वर देना, विश्वानर का

स्तुति करना, शिव का शुचिष्मती के गर्भ से जन्म लेना, देवों का स्तुति करना व बालक का पालन तथा विद्याभ्यास करना। नारद का दिखाना तो १ वर्ष के भीतर गाज पड़ने का कहना। गृहपति का माता-पिता को संतोष दे मृत्युंजय जाप करना। इन्द्र का वर देने जाना, उस का मना करना और इन्द्र का मारने को उद्यत होना, शिव का रक्षा करना, वर देना, दिक्पाल को दूसरा गृहपति वर्णन।

वृषभावतार—१४ रत्नों का वर्णन। देवासुर संग्राम वर्णन, हरि का नारि को देख मोहना और उनके बहुत से पुत्र उत्पन्न करना, उनका उपद्रव करना और लोगों को सताना, वृषभ रूप में शिव का कुतल में जाना और हरि पुत्रों का युद्ध को सन्नद्ध होना, शृंगों से उनको मारना, विष्णु से युद्ध होना और विष्णु का हारना तथा स्तुति करना।

पिप्पलाद अवतार वर्णन—दधीचि का हरि को जीतना, सुर सहित हरि को शाप देना। सुवर्चा का देवों को शाप देना। उससे पिप्पलाद का जन्म। वृत्रासुर से देवों के हारने पर दधीचि के पास जाने को कहना, वज्र के लिये अस्थि लाने को उस वज्र से वृत्र का मारा जाना। सुवर्चा के सती होने से आकाश वाणी द्वारा रोका जाना और शिव का पिप्पलाद रूप में उसके गर्भ से अवतार लेना। देवों का स्तुति करना, तीर्थ जाते पिप्पलाद को पद्मा का मिलना, उसके पिता से कह कर विवाह करना। पद्मा के पास धर्म का परीक्षार्थ आना। पिप्पलाद की निंदा करना, पद्मा का शाप देना, धर्म का निज रूप में स्तुति करना, चार चरणों का युगों में विभाग वर्णन। पिप्पलाद का १० पुत्र उत्पन्न करना। शनि पीड़ा से दुखित होना व तप से शांति हो जाना।

महेशावतार वर्णन—शिव विहार, भैरव का गिरिजा को कुभाव से देखना, शिवा का शाप देना, शिवा को भी भैरव का शाप देना। इन्द्र का सगण शिव के समीप जाना। अवधूत रूप में शिव का इन्द्र से बातचीत करना। इन्द्र का वज्र मारना व उसका जलना। देवों का भयभीत हो स्तुति करना, बृहस्पति का आशीष दे वर देना। जीव नाम होना।

हनुमत अवतार वर्णन—राम की सहायता करना, सीता खोज, लंकादहन, सेतुबंध, सजीवन लाना, अहिरावण बध। सनकादि का विष्णु लोक जाना, जय विजय के रोकने पर राक्षस होने का शाप देना। जय विजय के तीन जन्मों का वर्णन। राम चरित्र वर्णन। अगस्त्य—राम संवाद, शिव महिमा वर्णन व माया का उल्लेख। शिव भक्ति से राम का कृतार्थ होना। राम का तप करना, शिव का परीक्षा लेना व शिव राघव संवाद व प्रसन्न हो वर देना, सब देवों का आना। प्रभंजन-अंजना संवाद, हनुमान जन्म, बाल चरित्र

वर्णन। बाल रवि भक्षण, इन्द्र का वज्र मांगना, रुद्र कोप होना व देवों का शांत करना, हनुमत को वर देना। बाल समय में ध्रुव आदि को जाना, आकाश में उछलना, ऋषियों का उपद्रव देख बल भूलने का शाप देना व राम के मिलने पर शाप मोचन होना, विद्या पठन व वालि सुग्रीव से मिलना व राम को सहायता देना।

वैश्यनाथावतार—महानंदा वैश्या का वर्णन, शिव भक्त होना, वैश्यनाथ महादेव का अवतार होना। महानंदा वैश्यनाथ संवाद वर्णन, रत्न कंकण के लेने की इच्छा करने पर वैश्यनाथ का देना और शिव लिंग देना। कुक्कुट का अग्नि में भस्म होना जिस पर वैश्या का अपार प्रेम था, वैश्यनाथ-वैश्या विहार वर्णन व अन्तर्धान होना। वैश्या को शिव पुर देना।

द्विजनाथावतार वर्णन—सुप्रताप राजा का वर्णन, ऋषभ प्रसाद पाना, उसकी चन्द्रांगद राजा से कीर्तिमाली कन्या की उत्पत्ति, भद्रायुष से विवाह होना। शिव-शिवा का द्विज रूप में उसके पास जाना और बाघ से रक्षा करने को कहना, राजा का बाण चलाना पर कुछ असर न होना। द्विज की स्त्री को खा जाना। द्विज का राजा पर क्रोध करना, राजा का दुखित होना। ब्राह्मण से जो चाहे मांगने को कहना, उसका स्त्री मांगना, राजा का देना, शिव का प्रगट होना। भद्रायुष को वर देना। पार्षद बनाना।

यतिनाथ अवतार वर्णन—आहुक-आहुकी भिल्ल भिल्लनि वर्णन। भिल्ल के जाने पर शिव का यति रूप में भिल्लनि के पास जाना। वहां ठहरना। घर छोटा होने पर भिल्ल का बाहर रहना और हिंसक जंतु द्वारा मारा जाना। भिल्लनि का सती होने के लिये चिता रचना, उसका शीतल होना, शिव का प्रगट होना, और वर देना व निज हंस रूप से नल दमयन्ती का संयोग कराने की प्रतिज्ञा करना जोकि भिल्ल के अवतार थे।

कृष्ण दर्शन अवतार वर्णन—नभग का गुरुकुल पढ़ना और भाइयों का दाय भाग न देना। ज्ञात करने पर पिता के देने का उल्लेख करना। पिता मनु के पास नभग का जाना, पिता का शिव आराधना करने को कहना। आंगिरस के यज्ञ में जाना व दो सूक्त कर्म कथन करना, यज्ञ का पूर्ण होना और बहुत धन देना और शिव का कृष्ण दर्शन नाम से उसके पास परीक्षार्थ आना। शिव का उस द्रव्य को अपना बतलाना। दोनों का विवाद होना और उसके पिता मनु को पंच बनाना। मनु का शिव का माल बतलाना और उनको विनती करने को कहना। नभग का प्रार्थना करना और शिव का उसे राजा बनाना व धन देना।

भिक्षुनाथ अवतार वर्णन—एक विदर्भ देश में ससरथ राजा का होना। शाल्व राजाओं का उसे रोकना। युद्ध होना व हारना, उसकी गर्भवती स्त्री का

भाग जाना। एक ताल पर पहुंचना। रानी के पुत्र होना व ताल में जल पीने जाना व ग्राह का भक्षण करना, शिव का भिक्षु रूप में पहुंचना। द्विज स्त्री का आना व पुत्र लेना। शिव का उसको पालने का आदेश करना। स्त्री का पुत्र के विषय में ज्ञात करना, शिव का कथन करना। शिव व्रत भंग करने से सत्यरथ का राज जाने का वर्णन। उसका पोषण वर्णन व स्वर्ण घट का पाना। नाम शुचि व्रत रहना। शिव भक्त होना। राज पाना।

निर्झरेश्वर अवतार वर्णन। व्याघ्रपाद मुनि के पुत्र उपमन्यु का शिव भक्त होना। उपमन्यु को दूध का लोभ होना व मां से मांगना। जननी का कर्महीन होने का वर्णन, उपमन्यु को ज्ञान होना, उग्र तप करना। ब्रह्मा विष्णु कथन से शिव का वरदान देना। इन्द्र का शिव निंदा करना, और समझाना, व क्रोध कर भस्म डालना। सुरेश्वर रूप से शिव का वर देना व प्रसन्न होना।

जटिलावतार अवतार वर्णन—गिरिजा का तप करना, पितु आज्ञा से शिव विवाहार्थ और शिव का विप्र रूप से गिरिजा के पास जटाधारी हो कर जाना व शिव निंदा करना, शिवा का असन्तुष्ट होना व दर्शन देना।

नर्तक नट अवतार वर्णन—हिम चल के समीप नर्तकी बन कर जाना और विवाह में सुनाच जान प्रसन्न होना व हिमेश में उसे भड़काना, तब सप्त ऋषि को समझाने को भेजना। द्रोणाचार्य के तप से प्रसन्न हो कर शिव का वर देना, अश्वत्थामा अवतार लेकर पुत्र होना, वाण सच लेन में दक्षता प्राप्त, पांडव पुत्र वध व अर्जुन का पकड़ना। अर्जुन का तप करके पाशुपतास्त्र पाना। परीक्षित को गर्भ में नाश करने को अश्वत्थामा का वाण भेजना, कृष्ण का रक्षा करना। द्रौणी को शरण में भेजना।

किरातावतार अर्जुन का वाण लेने के लिये तप करने जाना। पांडव कौरव द्रोह वर्णन। लाक्षा गृह, जूप, सभा आदि का वर्णन। पांडव वनवास वर्णन। शिव का अर्जुन से किरात रूप में शूकर के शिकार करने पर युद्ध करना व अन्त में प्रसन्न हो कर पाशुपति अस्त्र देना।

१२ ज्योतिर्लिंग अवतार वर्णन—सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकाल, परमेश, केदार, भीमशंकर, विश्वेश्वर, त्र्यंबक, वैद्यनाथ, रामेश्वर, नागेश, घुसृणेश्वर अवतारों का वर्णन।

गुजरात में दक्ष को शाप देने से मोचनार्थ सोमनाथ को स्थापन करना, चन्द्र कुंडतीर्थ का वर्णन, मल्लिकार्जुन—श्रीगिरि में, महाकाल—उज्जैन में दूषण राक्षस मारने के लिये। परमेश—विन्ध्याचल में प्रणवस्थल ओंकारेश्वर में प्रणव व परमेश्वर वर्णन। केदार—हिमालय के केदारनाथ में नर नारायण रूप धारण

करना। भीम शंकर—भोम के मारने के कारण लिंग स्थापन होना, वहीं महानंद का स्थान था। (कम्पिला में) विश्वेश्वर—काशी में। त्र्यंबक—गौतम के यहां अवतार रूप गौतमी तट पर लिंग रूप में स्थापन। वैद्यनाथ—विहार में। नागेश—दारुक वन में स्थापन। रामेश्वर—सेतुबंध पर राम ने स्थापना की। देव गिरि में घुस्मेश्वर शिव का लिंग है। सुधर्मा द्विज घुस्मा स्त्री का पुत्र शिव भक्त था, उसे सौतेली मा ने मारा जिसे जिलाने से व उसके लिंग स्थापन से घुस्मेश्वर नाथ नाम हुआ।

अष्टम खंड।

१२ लिंगों का वर्णन—आसाम में भीम शंकर (डाकिनी थल में) महोसागर पर सोमेश्वर, रुद्र भडौच में, शुचि मति दुग्धेश, कर्दमेश ताज में, भूतेश, भीमेश्वर, लोकनाथ, त्रिनयन, बैजनाथ, व्याघ्रेश, भूतेश्वर ये १२ उपलिंग हैं। अन्य पूर्व के शिवों के नाम वर्णन। चारो युगों के शिव स्थापन का वर्णन। चित्रकूट स्थान वर्णन। मत्त गयेन्द्र शिव वर्णन। चित्रकूट चारों दिशाओं में शिव स्थापन, चित्रकूट में अत्रीशा, कालिंजर में नीलकंठ, संकर्षण गिरि में कोटीश्वर, तुंगारण्य में पशुपति का स्थापन हुआ। अत्रि के तप से सब तीर्थों का आना व जल लाना। शिव का वर देना व शिव स्थापन होना। अत्रीश्वर महेश महिमा वर्णन। नर्मदा किनारे के सब शैल शिव हैं, वहां के शिवों का वर्णन। नंदिकेश्वर महादेव का वर्णन।

नीमसार में राम का लिंग स्थापन। हनुमान का रेवा तट पर शिव स्थापन करना और ब्रह्महत्या से छूटना। ब्रह्मा-विष्णु को मोह होना व अपने को सर्वोपरि मानना, शिव को तुच्छ समझना। ब्रह्मा-विष्णु के आगे ज्वाला प्रगट होना, लिंग रूप से अनादि जोति का फैलना। सब का शिव लिंग की पूजा करना, किसी को उसका आदि अंत न मिलना। दोनों का अनेक देवो आदिका दिखाना और गर्व दूर होना। पृष्ट २९०—३१९ तक।

द्रुपदपुरी में द्विजेश व कालेश्वर शिव स्थापन, पश्चिम ओर के शिव लिंगों का वर्णन व महाबलेश्वर शिव वर्णन, मथुरा में गोपेश्वर का कथन, द्वारकेश्वर स्थापन और गोकरण में महाबलेश्वर स्थापन होना। इक्ष्वाकु वंशी नृप को एक राक्षस द्वारा छलना और राक्षसी कर्म करना व द्विज वध से वंशनाश होना, महाबल शिव के पूजन से हत्या का दूर होना।

महाबल शिव महिमा वर्णन—उत्तर में ललिता देवी का ललितेश्वर महादेव का स्थापित करना रावण का शिर चढ़ाना व वरदान पाना। २ शिव लिंग पाना, मार्ग में मूत्र वेग होना, ग्वाला को मूर्ति देना, दो घड़ी लेने की प्रतिज्ञा कर पृथ्वी पर रखने से अतल लोक को जाना और फिर रावण से न उठना। चन्द्रमाल शिव महिमा वर्णन—पृ० ३२०—३३४।

उत्तर दिशा में पंच प्रयाग दक्षेश्वर लिंग नीलेश्वर, भद्रेश्वर, शंकर, होत्रेश्वर, चन्द्रेश्वर, अग्नीश्वर, लक्ष्मणनाथ तीर्थ में लक्ष्मण का क्षय नष्ट होने का वर्णन। शिव का लिंग रूप कारण वर्णन। सती शोक विछोह में मदनोत्कंठा वर्णन। गिरिजा के अंगों के पड़ने से तीर्थ बनना। हिरण्याक्ष पुत्र अंधक वध ने बड़ा तप किया था। फिर वर पा देवों को कष्ट दिया तब मारा गया व गण बनाया गया। वहीं अंधकेश्वर शिव लिंग स्थापित हुआ। दधीचि के पुत्रों का शिवव्रत भंग करने से शिव का शाप देना, दधीचि का तप करना और शाप छुड़ाना। बटुक होने का वर देना और विजयी बनाना। प्रजापति यज्ञ में भद्रक राजा की ध्वजा का गिरना, बटु का उसके भोज में उपस्थित होना और उनकी महिमा का बखान करना।

ज्योतिर्लिंग की कथा—दक्ष के पुत्रों को नारद का वैराग्य दिलाना। तब शाप देना और ६० कन्या उत्पादन करना, २७ कन्याओं से चन्द्र का विवाह होना। एक से प्यार करने और शेष को न चाहने से दक्ष को क्षयी होने का श्राप देना। चन्द्र विनय पर ब्रह्मा का प्रभासक्षेत्र (गुजरात) में ज्योतिर्लिंग की आराधना करना व सोमेश्वर कथा कहना।

मल्लिकार्जुन कथा—षट्मुख का परिक्रमा कर लौटना। पर गणेश को प्रमुख बनाने से रुष्ट होना व मल्लिकार्जुन में जाना। सब देवों का उन्हें मनाना। शिवशिवा का जाना। सब देवों का शिवलिंग को स्थापित करना।

महाकाल—उज्जैन में एक ब्राह्मण के ४ पुत्र शिव भक्त थे, एक दूषण नामक राक्षस का दुख देना व तप करना। उसे वर देना। अंत में उसे नष्ट करना।

महाकाल स्थापन वर्णन। चन्द्रसेन की शिव भक्ति वर्णन व लिंग स्थापन करना, गोपी सुत की इच्छा पूर्ण करने का वर्णन। नर्मदा महिमा वर्णन, विंध्य का मद वर्णन व शिव का दूर करना, अमरेश्वर शिव स्थापन, शिव शोभा वर्णन। केदारनाथ में नरनारायण का तप करना, शिव स्थापन। बद्रीवन वर्णन, कृष्ण का तप वर्णन तथा वर लेना। पृ० ३३५—३७३ तक।

भीम शंकर लिंग वर्णन—सह्यपर्वत पर भीम का निवास जो विराध राक्षस का पुत्र था जिसे राम ने मारा था, उसकी माता का रावण की कथा वर्णन करना जिसे पुष्कसी ने उससे कहा था। भीम का बदला लेने को तप करना, शिव स्थापन करना, ब्रह्मा का वरदान देना, भीम का देवों व विष्णु से युद्ध करना और विष्णु का हार कर लौटना, भीम को देवों का कष्ट देना भीम का शिव की भक्ति करना और शिव से युद्ध करके भस्म होना। उस भस्म से औषधियों की उत्पत्ति, देव स्तुति वर्णन, भीम शंकर का स्थापन, विश्वेश्वर लिंग वर्णन, शिव

ब्रह्मा विवाद वर्णन और ज्योतिर्लिंग रूप में उत्पत्ति, काशी में शिव स्थापन, शिव शिर हिलने से कर्णी गिरने पर मणिकर्णि तीर्थ होना, प्रलय में सब डूबना व काशी को त्रिशूल पर रक्षा करना, शिव का मुख्य स्थान काशी मानना, पतिव्रता का शिव दर्शन से अद्भुत फल प्राप्ति वर्णन। पृ० ३७४—४०० तक।

शिव कृपण संवाद वर्णन, शिव भक्ति वर्णन व विश्वेश्वर महिमा कथन व काशी के अनेक शिव लिंगों का वर्णन, ब्रह्मदत्त को फल प्राप्त होना। त्र्यंबकेश्वर माहात्म्य वर्णन, गौतम का तप कथन व वरुण की आराधना करना, जल अक्षय-भंडार मांगना, निज स्थान के लिये और वर पाना।

शिव महिमा लिंग स्थापन—गौतम को मद होना व शिव का दूर करना गणेश का उपदेश देना, शिव गंगा आविर्भाव वर्णन। त्र्यंबकेश्वर माहात्म्य वर्णन। पृ० ४०१—४२१ तक।

वैद्यनाथ माहात्म्य वर्णन—रावण का तप करना, दो शिवलिंग स्थापनार्थ लेना, मद होने पर लिंगों का ग्वाल के हाथ से पाताल जाना और रावण से न उठना व मद-चूर्ण करना, फिर शिव स्तुति करने पर उठ जाना, रावण का अत्याचार वर्णन, देवों का दुख व निवेदन, राम का जन्म वर्णन, विवाह आदि व शिव कृपा से रावण बध वर्णन पृ० ४२२—४३२ तक।

नागेश लिंग वर्णन—दारुका राक्षसो का तप वर्णन, भवानी का वर देना, उसका देवों को कष्ट देना, उर्व मुनि का शाप देना। वैश्यपति की प्रार्थना पर शिव का उद्यत होना। वीरसेन का वर्णन, रामेश्वर वर्णन, स्थापन, माहात्म्य आदि कथन।

घुस्मेश्वर स्थापन, माहात्म्य वर्णन। घुस्मा का तप भक्ति व पुत्र बध वर्णन, शिव का उसको रक्षा करने का वर्णन। पृ० ४३३—४४७ तक।

नवम खंड

शिव ब्रह्मांड रूप वर्णन व सप्त विवरण वर्णन। सुतलादि तीन लोक वर्णन, बलि पूर्व जन्म वर्णन, इन्द्राणी का क्रोध कथन व चिन्तामणि आदि का ऋषियों का पाना। तलातलादि पाताल तक वर्णन, उन लोकों में शिव प्रताप वर्णन। लोकों का विस्तार आदि वर्णन, नरक गति वर्णन। सप्त द्वीप वर्णन। भूगोल व जंबूद्वीप वर्णन। ब्रह्मराक्षस सद्गति वर्णन। चिता भस्म धारण फल, शबर, क्षत्रिय सद्गति वर्णन। भस्म माहात्म व भद्रायुष चरित्र वर्णन। दशार्ण देश के वज्रबाहु राजा की अनेक रानी थीं, बड़ी रानी के पुत्र होना व बहुत दुखित हो रोना, राजा का रानी व पुत्र को निकाल देना, पुत्र की मृत्यु, ऋषभ

का उसकी रक्षा करना, भद्रायुष का जीवित होना, शिव आराधना व तप करना। पृ० ४४८—४९३ तक।

रुद्राक्ष महिमा वर्णन। त्रिपुंड व भस्म प्रताप कथन। श्रवण कीर्तन और मनन महिमा वर्णन, शिव का अन्य देवों से उत्तम होने का वर्णन। हरि-विधि विवाद वर्णन शिव अनुग्रह विवाद निवारण वर्णन पृ० ४९४—५२४ तक।

दशम खंड।

शिव नाम महिमा वर्णन, सोमिनि व इन्द्रद्युम्न की कथा का वर्णन जिसने शिव नाम जप कर भुक्ति—मुक्ति पायी। असंचित्त सार्थक नाम उज्जैन के ब्राह्मण की अधोगति का शिव नाम से दूर होना। पंचाक्षर 'नमः शिवाय' की महिमा वर्णन, भस्म के तीन भेद, भस्म धारण महिमा वर्णन व विधि तथा रुद्राक्ष विभूति कथन, भस्म लगाने से ब्रह्मराक्षस की सद्गति होने का वर्णन। भूलोक वर्णन व शिव आराधना कथन। पृ० ५२५—५५८ तक।

भुवलोक में भूत प्रेत निवास व शिव आराधना वर्णन। विद्याधर आदि का कथन, रविलोक वर्णन। चन्द्र का शिव आराधना वर्णन, अत्रि आदि का कथन, नक्षत्रों का वर्णन। पंच ग्रह, शुक्र, बुध, बृहस्पति, शनि और मंगल ग्रह वर्णन। सप्त ऋषि का ऋषिलोक में आराधना वर्णन। ध्रुवलोक का वर्णन। महर्लोक व सत्यलोक का वर्णन। चतुर्दश मन्वंतर चरित्र वर्णन व शिव आराधन वर्णन। मनुवंश वर्णन, सूर्य के २ पुत्र व कन्या होना, सावर्णि का तप वर्णन। अश्विनी-कुमार उत्पत्ति वर्णन। मनुवंश के मित्रावसु का वर्णन, सामवंश कथन, सगरवंश वर्णन, गंगा उत्पत्ति, भगीरथ आदि का तप आदि वर्णन, रघुवंश वर्णन। पितृलोक वर्णन. उनका माहात्म्य वर्णन, विभ्राज वर्णन। शिव भक्ति व स्तुति तथा महिमा वर्णन पृ० ५५९—६१० तक।

एकादश खंड।

शिवरात्रि व्रत माहात्म्य वर्णन तथा शिवरात्रि व्रत विधि और उद्यापन का वर्णन। मृग-व्याध संवाद और मृग का शिव आराधना वर्णन, व्याध को ज्ञान होना व शिवरात्रि व्रत माहात्म्य कथन। शिवरात्रि व्रत से चाण्डालिनी की सद्गति का वर्णन। मित्र सहराजा और मदयंती रानी की कथा का वर्णन और शिवरात्रि व्रत का प्रभाव दिखलाना तथा सद्गति का वर्णन। शिवरात्रि व्रत से विमर्ष की सद्गति का वर्णन। पृ० ६११—६२८ तक।

प्रदोष माहात्म वर्णन, चन्द्रसेन व श्रीकर का व्रत करने से उद्धार। चन्द्रसेन-श्रीकर प्रभाव वर्णन। प्रदोष व्रत से, सत्यरथ के पुत्र धर्मगुप्त का जन्म। धर्मगुप्त के व्रत से सुख वर्णन। प्रतिमास के प्रदोष की विधि का वर्णन।

एकादशी माहात्म वर्णन । अष्टमी शिवव्रत माहात्म वर्णन । भैरवाष्टमी व प्रणव वाक्य प्रभाव वर्णन तथा विधि कथन । सोमवार व्रत वर्णन व विधान कथन । सीमंतिनी विवाह—वैधव्य वर्णन ।

चंद्रांगद की कथा, तक्षक कथा । इन्द्रसेन व उसके पुत्र चन्द्रांगद का वर्णन । उसकी प्रिया का प्रभाव । शारदा व्रत व उमा महेश्वर माहात्म्य । उमा माहेश्वर व्रत । स्तुति और प्रभाव कथन । पृ० ६२९—६८८ तक ।

No. 253. Rahasalīlā by Mahīpati. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—9×4 inches. Lines per page—16. Extent—252 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1810 or A.D. 1753. Date of Manuscript—Saṁvat 1910 or A.D. 1853. Place of deposit—Ṭhākura Balabhadra Siṁha, Vansa kā Purawā, P. O. Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रहस्य मंडल लिष्यते ॥ श्री कृष्ण रहस्य लीला लिष्यते ॥ गणनायक गौरी सुवन विघन हरन भगवान ह्वै प्रसन्न पुरवहु सकल तुम्ह सरवज्ञ सुजान ॥ वानी ठकुरायनी जननि जन पर होहु दयाल । चरित कहैा जदुनाथ के दीजै बुद्धि विसाल ॥ ललिता मातु प्रसन्न ह्वै दीजिय सब सुष मोहिं । मन क्रम वचन विनीत ह्वै महीपति जांचत तोहि ॥ सिवा सहित सिव ध्याइये चरण कमल सिर नाइ । अभिमत फल सुभ तुरत ही संकर देत अघाइ ॥ मारुत सुत रघुवीर प्रिय तुम सम धन्य न कोइ । ह्वै प्रसन्न वर दीजिये ज्यहि ते सब सिद्धि होइ ॥ तुम कृपाल संकट हरन करन सकल सुषखानि । महिपत सेवक तोर है महाराज वरदानि ॥ रामदुलारे राम प्रिय राम दूत सुषकंद । महिपत सुमिरत तोहि अब दीजिय परमानंद । निर्गुण ब्रह्म सगुण भयो जदुवंसिन कुल आइ । सो प्रभु चरित विचित्र किय निज मति वरनैा ताहि ॥

End—तैं तो सषी निरलज भई मन मोहन को चकई सी फिराई । तोहि कहा उनकी अब मीठि में केतो कहो बहुरौ फिरि आई । माहि अवै करि जानि परो कछु दीन्ह स्याम तुमको पहनाई ॥ सिंह के वीच जे स्यार परे तिनहूं अपनी पति जानि गंवाई ॥ सुन्दर स्याम के है रटना अब राधे जी राधे जी कंठ लगाई । तोहि बिना कछु नीक न लागै ज्यों वहु भोजन लोन बिनाई । हैं जो बेहाल परे नन्दलाल मिलैा तिनको चलिके सुषदाई । कैसी कठोर भई कब ते अब ऐसी कहैा व्रषभान दोहाई ॥ मानिनि मान तजी उठि कै सुनि दूति की बाति अजैा सोहाई । मंजन कै

तन पोष कसो अभरि भूषन षोरि षचाई। कंचन थार संवारि के आरति ले जो चली पति को रिझवाई॥ माधो मिले मुसकाइ मनोहर हेत सो राधे को कंठ लगाई। करि कोड़ा गोपाल राधे सो पूछत भये कोन्हेउ बहुत बेहाल कहिय सो सुष दानिय॥ कौन सी बात कहो हम सुन्दरि जा पर मान कियो तुम एतो। देषि बैठि रहे तुम्हरो अब सेरि सो राधिका आवै अनंद बढ़ै तो॥ देषि विलंब सषो पठई बेर तीन्हक दीन्ह घुमाइ तिन्है तो। वात हिए की सबै कहिए मन मे जो चाउ भरो होइ जेतो॥ सुने राधिका के वचन कृष्ण रहे अरुगाइ। षेल हांसी में हारि के ओरै वात चलाइ॥ मास मासे शुक्लपक्षे तिथौ ६ रविवासरे शुभ संवत १८१० रहस लोला समाप्त महीपति जन पोथी लिषा॥

Subject—इस रहस्य मंडली में श्री कृष्ण राधिका प्रति हास्य विलास का वर्णन है अर्थात् दानलीला, मानलीला आदि।

No. 254—Avatāragītā by Mādhavadāsa. Substance—Old foreign paper. Leaves—41. Size—$7\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—42. Extent—1,155 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Saṁvat 1898 or A.D. 1841. Place of deposit—Paṇḍita Ayōdhyā Prasāda Miśra, Kaṭaila Chilavaliā, Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ अवतार गीता लिष्यते॥ सालग-राम चरित्र छंद॥ हे लंबोदर विनायकं सिद्धि दायकं। सुख प्रदयाकं दंतदंती वदन वरनंत वेद वंदारिक सदा सुख कंद गिरिजानंद मम मति मंद तुम करुणा धनी मोहि देहु बुद्धि विसाल वरनु राम कल कीरति घनी वंदौं मुकुंद पदारविंद मुनिंद मन मधुकर करे॥ मंदाकिनी मकरंद चललाम संतत शिरधरे॥ जं चरन पंकज परस पावन उपल ते प्रमदा करी। जलजात संत सुजान कर भव सिंधु विनु श्रम गहतरी॥ गुण षेन मर्दन मैन शंकर शूलपाणि त्रिशूल हा॥ जगदंबिका पति जक्त पति योगीश पति निर्जर महा॥ शशि भाल व्याल कृपाल माल विभूत अंग सुहावनी॥ मोहि देहु मत अवदात वरनौं राम कीरति पावनी॥ करि दाह सत गुरु वचन पावक दोष दुख दारिद हिए। अज्ञान तिमिर नशाइ चरण सरोज रज अंजन दिए॥

End—छंद—करिहैं अनेक प्रकार चरित उदार सुनि सुनि जग तरै। तुम वशहु अव मम धाम तन तजि सकल सुख निधि पग परै॥ मन होहु सालिक राम शरिता गंडकी मह जाइकै। तुम जगत तुलसी विटप होइ पुनि वसहु मम शिर आइके॥ जे संत पूजहि मोहि तोहि समेत अघ अवगुन मरे॥ ते जाइहैं वैकुंठ

मानहु कोटि जप तप मख करै ॥ यहि सुनित बृंदा जब रिपु पावक मई तुलसी आइकै। प्रभु भये सालिगराम सब जग तरै पद परिक्षा नाएकै ॥ दो०—योह इतिहास कहै सुनै छल तजि माधैादाश। विन प्रयास भव निधि तरै करै विष्णु पुरवास ॥ ५६ इति श्री अवतार गीता प्रथम खंडे माधैादास विरचितं सालिग-राम चरित्रे शिव जलंधर संग्राम वर्णनो नाम अष्टमोऽध्याय श्री कृष्णराधाय नमः ॥

Subject—मंगला चरण व कवि परिचय पृ० १ से ६ तक—
ब्रह्म व जीव का वर्णन अद्वैत वाद के रूप में-पृ० ६ से १२
जीव गति व भगवद्भजन से मोक्ष उपाय व नरकादि का वर्णन पृ० १३—१६
भगवान के चैाबोस अवतारों का वर्णन पृ० १६ से २२ तक
शालिगराम चरित्र व केशव अंग वर्णन, बृंदा की कथा पृ० २२ से २५ तक
देव व दानव युद्ध वर्णन व शक्र का जलंधर से हारना, रुद्र व जलंधर का युद्ध वर्णन—पृ० २६ से ३७ तक

विष्णु का देवताओं की रक्षा करना व बृंदा को वरदान देना। बृंदा का श्राप देना—पृ० ३७ से ४० तक इति

No. 255. Kavitta by Mādhava Prasāda of Teḍā (Unāo). Substance—Foolscap paper. Leaves—2. Size—7 × 4¾ inches. Lines per page—32. Extent—32 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍīta Vāṇībhūshaṇajī, Rāo Bareli.

Beginning—माधवप्रसाद के कवित्त ॥ गणेश ॥

नाम लेत जाको काम पूरन सकल होत गोत जुरैं सिद्धिन के टरत न टारे ते।
सिंधु की तरंगन सी बुद्धि की तरंगैं उठैं सुख को समूह सूझै सदन सिहारे ते ॥
माधव कहत महामंगल में राखैं सदा पारवती नंदन की वानि यहै वारे ते।
दहत कलेस लेस रहत न दारिद को मदन कदन सुत वदन निहारे ते ॥ १
प्रथम मनावै जाको चार वेद गावैं ताको तीनि लोक ताको है पताको जस वेष को।
कल्पतरु कामधेनु कामना बिहारिन को वालक उमा को सुखदायक महेश को ॥
चारु चंद भाल सोहै चन्दन विशाल माधो सरवस दायक सहायक सुरेस को।
वर वरदाता विद्या बुद्धि को विधाता शोभा सिद्धि को सदन सद वदन गनेश को ॥२
सिद्धि निद्धि दानी चारि वेदन वखानी तुही शंभु ठकुरानी गहे कठिन कृपानी है।
जोहै निराधार ताके तैं ही है अधार एक मही में उदार तोसी दूसरी न जानी है ॥
काली कमला तू माधो वानी विमला है सोस तारापति तारा तैं ही सारदा सयानी है।
दादि सुनि लीजै मोसों नैन करि दीजै सुनि पाथरु पसीजै तूतो आदि महरानी है ॥ ३

End—अजव अनोखे अनिआरे वड़े वाँके नए नीके नोकदार कर कहर करेरे हैं। पै न बादशाह के सिपाही सूर वीर दोऊ सामना परे ते किए घायल घनेरे हैं॥ माधो मखबूल खूबसूरत सकलदार देखि नंदनन्द ब्रजचंद भए चेरे हैं। कलमा कतल कर पढ़ जाहिल जहूर भए माहिल मजेदार मारू नैन तेरे हैं॥ ७
रसके उकोवे ए नुकोले नैन तेरे वीर तीखे विन अंजन हैं गंजन सरोज के। मोन मनमोचन सकोचन की सोम मानो सहज सिकारी भारी खंजन की फौज के। माधो मनमोहन के मोहन को मोहनी ए कुटुंब कुरंग पै लेवैया मनोरोज के। अेाज से भरे हैं दोऊ मोज के करनवारे नायब हैं नेह के मुसाहिव मनोज के॥ ८

Subject—गणेश वर्णन के २ छंद
शक्ति के २ छंद
वसंत के २ ,,
मारू नैन के २ ,,

Note—माधवप्रसाद—जाति के ब्राह्मण सुवंस के वंशज, टेढ़ा जिला उन्नाव के निवासी थे। मनसाराम, संगमलाल, शंभुनाथ और माधवप्रसाद सुवंश शुक्ल के वंशज थे। सुवंश और शंभुनाथ का कविता-काल ज्ञात हो चुका है परन्तु मनसाराम, संगमलाल और माधव प्रसाद का कविता-काल मालूम नहीं हुआ। माधवप्रसाद के केवल ८ छंद प्राप्त हुए।

No. 256. Devīcharita Saroja by Mādhava Siṁha Kachhavāhā, Rājā of Amethī. Substance—Foreign paper. Leaves—64. Size—12×6 inches. Lines per page—48. Extent—1,920 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṁvat 1918 or A.D. 1861. Date of Manuscript—Saṁvat 1934 or A.D. 1877. Place of deposit—Ṭhākura Digvijaya Siṁha, Tālukedāra, Village Dikaulia, Post Office Biswā, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ देवी चरित्र सरोज लिख्यते॥ श्री गणेशायनमः॥ मूल कवित्त॥ कंजन ज्यों विरचे सुवास के वरन औ विचित्र चित्त रापे गनेस भाव भारे की॥ रसना रसिक छितपाल हिये भूषन अनूपरूप वस्तु भाषे प्रकृति विचारे की। सकति सुसंग अंग लछना हमेस धुनि इच्छिति सुमन रीति पूरे प्रीति वारे की। चाहें ठीक ठाठन ठिकाने वारो ठौर ताहि आठौ भुजा चाहैं छाहैं चार भुजावारे की॥ कवि मंगला चरन करे है। सो मंगला चरन तीनि रीति को एक नमस्कारात्मक। (२) आशीर्वादात्मक तीसरो वस्तु निर्देसात्मक॥ सो वस्तु निर्देस्तमक कवि मंगलाचरन करै है॥ श्री गणेश जू को

कै कंज जोहै सुगंधत दवतदास के हृदय में वरन जो है अक्षर सो विरचे हैं ॥ अर्थांसअनुप्रास श्रौ परमार्थजुक्त श्रौ विचित्र जे गन हैं ते चित में राषे हैं ॥ अर्थ अगनादिक अरु भारे भाल की रास विभावादिक राषे हैं

End—छप्पै ॥ भूप जाय निज गेह नेह जुत वीर बुलाये । सबकर कर सनमान देश पुन सुवस वसाये ॥ शत्रु अत्र धर जीति मोत अति पोषन कीने ॥ जो जेहि लायक देश भेष तिनके तस चीने ॥ पाले पवित्र वहु पुत्र पुन अंतकाल सुरपुर गयो यह चरित देववारो विमल सब सलोकन लोकन छयो ॥ कवित ॥ वसु लिखि वह्न ग्रह रद गनेश साल जेठ सुदो दशमी छितिज वार जान कर ॥ पूरण पुरान युक्ति जुक्ति के समेत रच्यों देवो को चरित्र पूरभूर भक्ति मांगवर ॥ कछ कुल अमल अमेठी राजथान आय काशी में प्रकाश कीनो चीनो महादेव धर ॥ माधैा सिंह महीपाल वाल अंविका को सुष साल मान चाल भूर भजन प्रभाव वर ॥ सोरठा ॥ विगरो यामें होय जो कविताई सो सुकवि दोष न एको जोय अपनो जानि सुधारियो । इति श्री कच्छ कुल कमल कलश माधैा सिंह महीप विरचिते देवी चरित सरोजे देवो महात्मे मेधरिषि सुरथ नरेश समाधि वैश्य संवाद अभय वरदान भवति सोपाय राजा वणिक अहे गमननो नामः प्रसंग संपूर्ण शुभ संवत ॥ १८३४ शाके १७९९

Subject—इस पुस्तक में प्रथम देवी की महिमा पुनः श्रृंगार नख शिख वर्णन कर माहात्म कथा, सुरथ वैश्य संवाद विस्तार सहित वर्णन की गई है ।

No. 257. Ekādaśī Vrata Kathā by Mādhava Rāma. Substance—Country-made paper. Leaves—11. Size—8 × 5 inches. Lines per page—18. Extent—87 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Delapidated. Character—Kāithi and Nāgarī. Date of Manuscript—Saṁvat 1907 or A.D. 1850. Place of deposit—Paṇḍita Sudarśana Pāṭhaka, Purā Gaṅgādhara, Village Ṭikariā, Post Office Gorigañj (Sultānpur).

Beginning—श्री गणेशायनमः श्री गुरुवेनमोनमः श्री हनुमते नमस्ते ॥ रामसोरठा राम । देहे मोहि वरदान गैारी सुत भव भय हरन । माधो मति अज्ञान एकादशी वरनन करै ॥ दोहा ॥ पुनि वंदैा तिपुरारि पद ससि सेषर विकराल । पंचानन दस वाहु जुत मोपर होहु कृपाल ॥

प्रश्न करी भगवान सों धर्मपुत्र हरषाइ ॥ एकादसी चरित कहैा मोहि समुझाई ॥

End—सुनहि जे नर अरु नारि जान अजान निदान अति व्रत फल दायक चारि माधव तिन कह देत है माधैा दास सुजान अग्निहोत्र कुलमो

भयो संस्कृत मत सो जान भाषा प्रकटो हरी कथा ॥ इति श्रीमद अग्निहोत्री माधवराम विरचितायां एकादसो व्रत कथा समाप्तं सुभमस्तु ॥ दोहा ॥ सुकुल पक्ष वैसाख को षष्टी तिथि गुरुवार एकादसो उत्तम कथा पूरन भै सुखसार संवत १९०७ साके १७७१ सन् १२५७ को साल मा

Subject—एकादशी व्रत की कथा।

No. 258. Madhō Rāma kī Kuṇḍalī by Madhō Rāma. Substance—Country-made paper. Leaves—90. Size—$8\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—28. Extent—1,260 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—1880 Saṁvat or A.D. 1823. Place of deposit—Lālā Tulasī Rāmaji Srivāstava, Rae Barelī.

Beginning—श्री गनेसायनमः श्री सरसुतेनमः श्री परमगुन्नेनमः अथा लिष्यते माधैा राम कुंडली।

सोरठा—करैा गजानन ध्यान जा महिमा जग जगमगी। होत बुध्य वल ग्यान संपत सहिति सरीर सुष १।

दोहा—जाके सुमिरे होत है निर्गुन ते गुनमान
ऐसे छव गजवदन को करैा नित्य ही ध्यान २
है गनेस दायक अधिक देव गुठमति मोर
दया करैा चित लायकै हेरो मेरी वोर ३
धन गिरज सिवनंद तुम जिहि पूजत सुरसंत
होत कामना सिध्य है वेद पुरान भनंत ४
माधैा गनपत ध्याइ कै ल्यावो मन चित सुध्य
वै सब कारज करन है देन हार वल बुध्य ५
हैा अबूझ बूझो नहीं तुम लग मेरी दैार
गन नाइक वर देन कैा कलमै हो सिर मैार ६

End—सांगीत—भज रघुनंदन सहित जनक तन अलष निरंजन है भव भंजन जन हित कारन देह धरी जिन अधम उधारन पतितन पावन नाथ अनाथ न स्वामी त्रभुवन संकर के मन वसत निसैा दिन लंका दाहन असुर सघारन हरन भार महि सुरन उवारन कीन्ह महारन रावन सो तिन त्रिय गैातम तारन विपत विदारन काली नाथन कंस निकंदन संतन के प्रिय तेन भजैा किन दीनन चंद गरीब निवाजनि निरधन के धन सत्र बिनासन ते सुमरे तन जात पाप छिन माधैा गन सुष जपत गजानन कहत वेद गुन सेस सहस फन सुफल न जीवन हर के

भजन विन । प्रभावती भजले मन राम नाम रघुपत रघुराई । दीन के दयाल ग्रैसे गनका गत पाई । रैदास सदन सौरी कुल कौन कुछ बडाई । सुमरे ते राम नाम कीरत जग छाई वानासुर रावन कंस कीन्हो ग्ररताई ग्रंतकाल तिनहु साजोज्य मुक्त पाई । जन लघुता मन भाई प्रहलाद ध्रवनाई तिहि भक्ति वछल द्वारे वल ठाढे जदुराई । जिन साचो लगन माधौ हर पदन सौ लगाई तिन पाई प्रभुताई हर नाम सो वडाई । १ राम राम राम

Subject—१—२ गणेश स्तुति ग्रैार चित्र

देवी „ „ „ पार्वती जी की स्तुति गंगा स्तुति, इंद्र स्तुति ग्रैार चित्र, चंद्र स्तुति ग्रैार चित्र, जमुना स्तुति ग्रैार चित्र, तुलसा जी की स्तुति ग्रैार चित्र; महादेव की वंदना ग्रैार चित्र, महावीर-स्तुति ग्रैार चित्र, गुरु वंदना । सीताराम की स्तुति ग्रैार निर्माण संवत, सूर्य देव स्तुति ग्रैार चित्र, धर्मराज स्तुति ग्रैार चित्र; चित्र प्रयाग राज्य का ग्रैार स्तुति, चित्रगुप्त की स्तुति ग्रैार चित्र, ब्रह्मा जी का चित्र, नर्मदा स्तुति ग्रैार चित्र, ग्रयोध्या की स्तुति ग्रैार चित्र, मथुरा जी की स्तुति ग्रैार चित्र, द्वारका जी की स्तुति, काशी जी की वंदना; जगन्नाथ की वंदना; शेष जी की वंदना, चित्रकूट की वंदना, काल्पी की वंदना ग्रैार कवि का ग्रपना निवास स्थान का परिचय, विष्णु की वंदना; राम लक्ष्मण का विश्वामित्र के साथ वर्णन, मत्स्य ग्रवतार का चित्र, कच्छप ग्रवतार का वर्णन, शूकर ग्रवतार का वर्णन, हिरण्यकश्यप ग्रैार प्रह्लाद का वर्णन, बलि बावन का वर्णन, परसुराम का वर्णन ग्रैार चित्र, रावण ग्रैार राम का वर्णन, जैन ग्रवतार का वर्णन, श्री कृष्ण ग्रवतार का वर्णन, निष्कलंक ग्रवतार का वर्णन, तीर्थों की महिमा वर्णन, राम कृष्ण के ग्रवतारों की महिमा, मथुरा जी की वंदना; ग्रंत में राम में भक्ति रखने के लिए ग्राग्रह ग्रैार राम भजन की महिमा का वर्णन ।

Note—निर्माण संवत ग्रैार निर्माण कारण ।

No. 259—Hari Rādhā Vilāsa by Māna. Substance—Country-made paper. Leaves—42. Size—7 × 6 inches. Lines per page—11. Extent—210 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—1822 Saṃvat or 1765 A.D. Place of deposit—Ṭhākura Yadunātha Bābū Siṃhajī, Hariharapura, Post Office Chirwaliā, District Bahraich.

Beginning—नमो लसति पुरी ग्रति चारू । दिन दिन सुख के सदन को ग्रनत मनो दुवारू ॥ ५ ता हरि हरपुर नगर को कुसल सिंह भो भूप । जा सूर्त

संपति सो सुचित कोनो राज अनूप ॥ श्री कुसलेस नरेस के प्रगट भये सुत चारि । चारयौ भैयन की जगति जग जाहिर तरवारि ॥ छंद हरिगोत-कुसलेस के सुत चारि देह धरे मनो फल चारि हैं । सबु जोतवे कों जगतु नर रूपो किधों तरवारि हैं । वे राम लछिन पुनि भरत सत्रुघन चारों श्रोतरे । कै चरन चारयो धरम के नर वरन के मिस उदगरे ॥८

End—हरि राधा के भेद को के कवि पावै पार । सकल जगत के तरन को भयो श्राइ अवतार ॥ रूपसिंह महिपाल के जय कारन कवि मान । सो कोनो ग्रन्थ वह लखि जानि है सुजान । इति श्री हरिराधा विलास ग्रंथ संम्पुरनं भवतु मितो सावन सुदी सतमी ७ गुरौ संवत् १८२२ ॥

Subject— राजवंश वर्णन—२-५ पृष्ठ

सखा का राधिका वर्णन कृष्ण से व्रज में गोपियें का वर्णन ६-१२

गोसाइन का वर्णन, राधिका का भेष बदल कर जाना कृष्ण मिलन श्रार लैाट कर सब के साथ जाना तथा संयोग होना, १३-१८

रहस लीला करना, मथुरा गमन व्रज में ऊधो को भेजना ऊधो व गोपी संवाद व उनका लैाटना १९-२९

व्रजवासियें का कुरुक्षेत्र जाना श्रार कृष्ण का सपरिषद् वहां श्राकर उनसे मिलना सत्यभामा राधा संवाद श्रार सबका लैाटना—३०—४२ इति ।

Note—मान कवि हरिहरपुर (वहराइच) नरेश रूपसिंह रैकुवार क्षत्री के श्राश्रित थे यह जाति के ब्राह्मण थे श्रार बैसवारे के रहने वाले थे सं० १८२२ में वर्तमान थे, मिश्रबंधु बिनोद में इनका लिखा एक कृष्ण कल्लोल नामक ग्रन्थ बताया गया है । जिसका दूसरा नाम कृष्ण खन्ड भाषा है ।

No. 260. Vartamāna Chaubīsī Pāṭha by Manraṅgalāla of Kanauja. Substance—Country-made paper. Leaves—201. Size—$9\frac{1}{2}$ × 6 inches. Lines per page—11. Extent—2,311 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of composition—Saṃvat 1887 or A.D. 1830. Date of Manuscript—Saṃvat 1959 or A.D. 1902. Place of deposit—Śrī Jaina Maṇḍira (Baḍā), Bārābaṅkī (Oudh).

Beginning—श्रों नमः सिद्धेभ्यः । अथ बर्तमान चतुर्विंशति जिन पूजा लिख्यते ॥ दोहा ॥ अलख लखत सब जगत के, रखवारे रिषि नाथ । नाभि नदन पद पदम छबि, तिन्हैं नवाऊं माथ ॥ १ ॥ सिद्धारथ कुल गगन के, पूरण निर्मल

चंद । असला प्राची दिगन ने, सूरज तिमिर निकंद ॥ २ अकलंकित अंकित धरम, भरम भजावन हार । परम शेष वाईस जिन, नमहुं करम क्षय कार ॥ ३ ॥ तुमसे तुमही जगत में, उपमा काको देउं । ज्ञान कला दीजै तनिक, पद पूजन करि लेउं ॥ ४ वर्तमान ए चौवीस सो करुणालय जिन देव । तिनको पूजन करत हो रहत न भव की ठेव । ५ तुम जैन पाल तुम जैन ईस । तुम जैन पती विसुवाहि वीस । तुम जयन पूज्य तुम जयन अंग । तुम जैनात्मा जीतो अनंग । ६ तुम अक्ष जीत तुम जीत काम । तुम जीत लोभ आनंद धाम । तुम रागञ्जित तुमजीत द्वेष । जित शत्रुनाथ निर ग्रंथ भेष ॥ ७ ॥

End—इंद्र थके गणधर थके अरु भुजगेस थकंत । जस वरनत जिन वरतनो नर किम पार लहंत ॥ १८ ॥ सो मैं मंद धिया कछु पिंगल को अधिकार । ना जानौं जिन भक्ति बस कीन्हों यह निरधार ॥ १९ ॥ भूल कहों अक्षर अमिल अर्थ अनर्थ जो कोय । ताहि सुधारौ चतुर जन तुम उपगारी होय । २० ॥ नाक बिना बुधिना चतुर ना व्याकरण पढ़ंत । अलप मती मुझ जानिके क्षमौ सकल मतिमंत ॥ २१ ॥

× × × ×

विषम स्थल सम होय शत्रु मित्रता विचारै । सुत अरथो सुत लहै निरधनी भरै भँडारै ॥ २२ ॥ रोगी होय अरोग्य सोग को भूमि विदारै । नीच कुली कुल लहै कुरुपी रूप सम्हारै ॥ २३ ॥ मन बच काय जो यह पाठ पढ़ै सुणावै सुनै नित । मनरंग लाल ता पुरुष कों देखि इन्द्र होवै चकित ॥ २४ ॥

× × × ×

इति श्री वर्तमान चतुर्विंशति जिन पूजन संपूर्णम् । लिखतं रामदयाल श्रावग पल्लोवार कन्नौज मितो मगसर सुदी ५ सम्वत् १९५९ ॥ लिखयित लाल लखपत राय के पुत्र कनहीलाल जैनी अगरवाल बारहबंकी नवाबगंज ॥

Subject—(१) पृ० १ से पृ० १० तक—समुच्चय पूजा तथा प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ पूज्य का विधान तथा मंत्रादि वर्णन ।

(२) पृ० ११ से पृ० १८ तक—अजितनाथ द्वितीय तीर्थंकर की पूजा ।

(३) पृ० १९ से पृष्ठ ६४ तक—संभवनाथ अभिनन्दन नाथ, सुमतिनाथ, पद्म-प्रभु पूजा तथा चन्द्रप्रभु पूजा वर्णन ।

(४) पृ० ६५ से १०० तक—पुष्पदंत पूजा, शीतलनाथ पूजा, श्रेयांशनाथ पूजा, वासु पूज्य पूजा ।

(५) पृ० १०१ से पृ० १५० तक—विमलनाथ पूजा, अनंतनाथ पूजा, धर्मनाथ पूजा, कंथनाथ पूजा, अरहनाथ पूजा, तथा मल्लिनाथ पूजा ।

(६) पृ० १५१ से पृ० १९२ तक—मुनि सुब्रतनाथ पूजा, नाभिनाथ पूजा, नेमिनाथ पूजा, तथा पार्श्वनाथ पूजा।

(७) पृ० १९३ से पृ० २०१ तक—महावीर स्वामी, अंतिम तीर्थंकर की पूजा का वर्णन।

ग्रंथकार का परिचय—अंतरवेद माहशुभ देश। सुबस बसै अति आनंद भेस। तामें कनवज नगर विख्यात। तामें वसैं लोग बहु ज्ञात ॥ १ ॥

सो जानों सुभ थान हमार। तहाँ श्रावगी पल्लीवार। वसै इक्ष्वाक वंशतिन तना। कासिव गोत्र महा सोहना। २ ॥ गिरागक्ष धारी सब लोग। वलात्कार गण का संजाेग। मूलसंघ धारी गुणवास। दिन अंबर धारी के दास ॥ ३ ॥

× × × ×

तेहि ठाँव वसत हुलासी राय। अगरैया गोत्री सुखदाय। अल्ल गोत्र जानौं यह लोय। कासिव गोत्र ठठ को होय। नंदन जुगल भये तिन तने। अग्रज लाल कनौजी गने। अनुज नाम गोविंद परसाद। निशदिन करत रहत अहलाद। तीन कनौजीलाल के नाम देवकी नारि। दया मई मूरति मनो विधना करी विचार। ता कुक्षा में उपजे तीन। पुत्र सदा जिन पद लवलीन। प्रथम पुत्र मनरंग कहाव। दूसर नाम केसरी पाव। आनंद घन तीसर कह कहै। निशदिन जैन परायन रहै। इन बहुत मां मनरंगलाल। जेष्ठ पढ़ै भाषा की चाल।

पाठ के बनाने का हेतु—

अब सुनहु पाठ को बनवन हेतु। तेहि नगर मांहि आनंद समेत। एक वसत सेठ ख़ुशाल चंद। गोपालदास तिनके सुतय ॥ × × × ×

तिन हम सों कही बात बुझाय। कोजे कछू जाकर पाप जाय। सुनकर तिनकी बानी रसाल। चित धारि बढ़त आनंद जाल। जिन वर्तमान चैावीस सार। तिन पायन को पूजा विचार। कीन्हो मैं नाना छन्दन ल्याय। आनंद सहित गुण गाय गाय।

निर्माण काल :—

संवत विक्रम राय को एक सहस सत आठ। और सतासी अधिक मैं पूरण भो यह पाठ ॥ मगसिर महिना चंद्रपक्ष तिथि दसमी गुरुवार। पढ़ौ पढ़ायो अविकल जो पावो मनपार ॥ इति।

Note—ग्रंथकर्त्ता कन्नौज निवासी मनरंग लाल कश्यप गोत्रीय, अगरैया वैश्य लाला कन्नौजी लाल का पुत्र था।

No. 261. Bahulā Vyāghra Samvāda by Māna (Simha) of Pawāra. Substance—Country-made paper. Leaves—19. Size—8½ × 5 inches. Lines per page—16. Extent—288 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1835 or A.D. 1778. Place of deposit—Paṇḍita Rām avatāra, Village Nogahān, Post Office Shahmau (Rae Bareli).

Beginning—पृष्ठ १३ से प्रारम्भ ।

बहु विधि गोपिन्ह सषिन्ह सिषावा, बहुला हृदै बोध नहिं आवा । गोपी सषी भेटि तब गाइ । बार बार उन वक्ष लगाइ । चली धेनु तब व्याघ्र समीपा देषत सब पुर दुषित महीपा । गोपन्ह गहे वक्ष रुष पाइ । गिर गिरि परत विकल अफदाइ । बहुला हुंकरि हुंकरि तब हेरै । सहत सोक अति सत्य न फेरै । छंद ॥ छिति बरुन अगिनि अकास मारुत सुरन्ह नावत माथ है । मम पुत्र रछहु सकल दिगपति जानि निपटि अनाथ है ॥ कैस बैठ चिंता करहु भक्षहु व्याघ्र ते बहुलै कहा । एह देषि अद्भुत अतुल मृगपति परम चक्रित होइ रहा ॥ दोहा ॥ सत्य कीन्ह तुम्ह सपत देह प्रान भय त्यागि । धन्य धन्य धरमात्मा व्याघ्र वदत अनुरागि । एह अपूर्व कैातुक तुम्ह कीन्हा । भएउ क्रतारथ मै तोहि चीन्हा । धन्य भूमि सो राज्य भवानी । सत्यवादिनी जह कल्यानी ।

End—भीषम एह इतिहास सुनावा । भूप युधिष्ठिर सुनि सुष पावा । बारहिं बार पितामह वंदे । मिटे नाथ मम पातक मंदे । पावन परम कहेहु व्रत एहू । जासु कहे विनु सुष संदेहू । मान सिंह कवि द्विज अभिलाषा । देषि संसक्रत कीन्हे भाषा ॥ दोहा ॥ कान्ह वंस कवि सिंह है नगर पवारे वास । छत्री छिति-पति भूप कुल आदिनाथ के दास । इति श्री भविष्योतर पुराने बहुला व्याघ्र संवादे इतिहास कथने सिंह विरचित भाषानुवंध सुभमस्तु ॥ संवत ॥ १८३५ भाद्रे मासे सिते पक्षे दुतिया रवि वासरे ॥ लिषिते रूप विप्रेन कासये ग्राम वासिनः पर्गना कठवारस्थ अष्ट ग्रामस्य माजरा । दक्षिणे सोभिते दुर्ग उत्तरे तु जला-श्रितः ॥ १ ॥ राम राम राम राम राम राम राम राम राम ।

Subject—गोपियों का सखियों का समझाना, धेनु का व्याघ्र के पास जाना और सबों का दुखित होना । बहुला का सत्य पर दृढ़ रहना और विनती कर व्याघ्र से क्षमा मांगना । व्याघ्र का अपना मुनि श्राप वर्णन, धेनु क्षीर महिमा व्याघ्र का गंधर्व रूप होना और परिक्रमा करके अपने लोक में चले जाना । बहुला का अपने घर जाना । भीष्म का बहुला गुण वर्णन, युधिष्ठिर का भीष्म से सत्य धर्म पूछना, गणेश चैाथ पूजन विधि, कवि की गणेश स्तुति, बहुला स्तुति ।

गो सिंह सम्वाद पढ़ने से संतान बुद्धि निरोग्यता ग्रैार धन धान्य की वृद्धि का होना । क्षेत्र में पढ़ने से ध्यान सिद्धि, गोष्टो में पढ़ने से गो ग्रैार दुग्ध की वृद्धि, गृह में पढ़ने से बालक की वृद्धि, युधिष्ठिर का भीष्म की वंदना करना ग्रैार कवि परिचय ।

No. 262. Śriñgāra Latikā by Māna Siṁha (Dvija Deva) of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—102. Size—6 × 4 inches. Lines per page—28. Extent—3,570 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rajā Lālatā Baksha Siṁhajī Tālukedāra, Nilagāon, Post Office Nilagāon, District Sitāpur.

Beginning—श्री गणेशायनमः वसंत ग्रागम वर्णन ॥ ग्राजु सुष सोवत सलोनो सजो सेज पै घरीक निसि बाकी रही पीछले पहर को । भड़कन लागो पैान दछिन ग्रलछ चारु चांदनो चहुंघा फिरि ग्राई निसि करको । दिज देवकी सैां मोहिने कहू न जानि परयो पलट गई धो कवै सुषमा नगर को ॥ ग्रैार मैन गति जति रैनि की सु ग्रैारै भई रति मति ग्रैारै भई नरकी ॥ ग्रवतरण प्रथम जाग्रति ग्ररु स्वप्न को संधि मैं जो भयो हाल है ताहि कहि वसंत के प्रथम ग्रागम मैं कछु कछु ललित भये पैान ग्ररु चांदनो तथा कछु कछु बाढ़े मनो विकार को कहै है ॥ टोका ग्राजु सुष ॥ पद १ ॥ ग्राजु सलोनो कहै ग्राछो साजो जो सेज है तापै सोवत पीछले पहर को एक घरी निसि बाकी रहि गई तो ॥ पद २ ॥ ताही समय दछिन को जो पैान है सो ग्रलछ ह्वै भड़कन लागो कहै डोलिवे लागो तुरंत ही वसंत को ग्रागम है ताते ग्रलछ कह्यो तैसेई निसि कर कहै । चंद को चांदनी षिलि गई सोवन समैं कछु नाहि जानि परत हतो ॥ पै न जानि परयौ कि कब कैान सो घरी का समैं मैं नगर को सुषमा कहां परम सोभा लटि गई । रैनि की जाति कहै डोर कछु ग्रैारै ह्वै गयो ग्ररु मैन की कहै काम की गति हू कछु ग्रैारै ह्वै गई ॥

End—चित चाहि ग्रबूझ कहै कितने छबि छीनी गयंदन की टटकी । कवि केते कहैं निज बुद्धि उदै यहि सोषी मरालन की मटकी । द्विज देव जी ग्रैसे कुतर्कन मै सब की मति योंही फिरै भटको । वह मंद चलै किन भोरी भटू मग लाखन की ग्रंषियां ग्रटकी ॥ (टोका) ग्रब चलिवो वरनै है ॥ टोका ॥ चित चाहि ॥ १ पद वाकी मंद गति देषि कितने ग्रबूझ कहे हैं । कि यहि गयंदनि को कहै है हाथिन की छबि छीनि लीन्ही है ॥ २ पद ग्ररु केते कवि ग्रापनी बुद्धि के उदै सों कहे हैं कि यह मरालन का कहै हैं हंसन की सोषी है ग्रर्थ मरालन की गति यहि सोषी है ॥ ३ पद ॥ ऐसेई कुतरकन में सिगरे कविन

को मति योंहो भटको फिरे हैं ॥ जो कहो इनको गति नाहिं सोषो तौ अति ललित मंदताई याको गति मों कहां सो आई। तापै कहै है वह भट्ट मंद कैसे नाहिं चलै वाके पगन मै तो लाषन को आंषैं अटकी हैं। आषिन के भार सों वाके पग मंद उठेई चहैं। यासो व्यंजित भयो कि ऐसो जग मैं कैान है जो राधा जू के चरन को ध्यान मैं नाहि देषो करै है ॥

Subject—इस पुस्तक में कवि द्विजदेव की कविता श्रृंगार रस टीका की गई है इसमें वसंत आदि ऋतुओं का वर्णन है श्रृंगार रस वर्णन है।

No. 263—Śālihotra, by Māna Siṁha. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—$10\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—10. Extent—180 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Saṃvat 1905 or A.D. 1848. Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Siṁha, Kanṭha (Unao).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भाषा शालिहोत्र संग्रह लिख्यते ॥ चो० ॥ हर्र वहेरो आवरो आनै। जेठी मधु फिर वैद वखानै। दुइ दुइ पैसा भर सब लीजै कूटि पीटि कपसाँ सब कीजै ॥ वासी पानी दीजै सानि। सात रोज लों कही वखानि ॥ दोहा ॥ इतनी इतनी दीजिये सात रोज लैां प्रात। तुरतै लोहू मूतिबो मिटै कही मुनि वात ॥ अन्य चोपाई ॥ हरड़ ईंदोरिन पीपर लीजै। दुइ दुइ पैसा भर इक कीजे। कूटि पीटि पानी में सानै। देहि भोर उठि वैद वखानै ॥

End—ब्रह्म विष्णु शिव आदि दै जितने दृश्य शरीर। नासहि को धावत सवै ज्यों बड़वानल नीर ॥ जित लै जैहै वासना तित ह्वैहै मन लीन। जन्म कहै कैसे करै जीव वापुरो दीन। युक्ति पुरी दरवार के चार चतुर प्रतिहार। साधन को सत्संग अरु सम संतोष विचार। जब तव काछुह तुम रच्यो कज्जल कलित अपार तामह पैठि जु नीसरै अकलंकित सो साध ॥ भूलि गयो रूप निज विधि तन सैां गयो। लोभ मद काम वस मोह जब ही भयो ॥

Subject—लोहू मूतने की दवा, कांवरि की दवा, सूतिका इलाज, जष चिकित्सा, सकरोट, मसाने की दवा, वेली, रसवेलि और सुख वल्ली की दवा। पृ० १—६ तक

निरोध की दवा, पेट फूलने की दवा, कुरकुरी, चांदनी, वमनी व मृगी, बिद्रधि, वदषम भरे की दवा, अने की दवा, गिरे की दवा, पृ० ७—१२

तेज करने की दवा, जोगी खेल गोगिरे की दवा, बरसात की दवा, मसा की, फूलो की दवा, वत्तासा चूर्ण अन्त में फुटकर कविता पृ० १३—१८

No. 264—Śikhara Māhātmya by Māna Sudhāsāgara. Substance—Country-made paper. Leaves—285. Size—$11\frac{1}{2}$ × $7\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—13. Extent—3,705 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—1914 Saṁvat or 1857 A.D. Place of deposit—Śrī Jaina Mandira (Baḍā), Bārābankī (Oudh).

Beginning—ओं नमः सिद्धं ॥ श्री वीतराग जी सदा सहाय। अथ शिषर महातम ग्रंथ लिख्यते मनसा सागर कृत ॥ छप्पै छन्द ॥

श्री संसेवित चरण कमल जुग सब सुख लायक। श्री शिवलोक विलोक ज्ञानमय होत सुनायक ॥ अनमित सुख उद्योत कर्म वैरी घन घायक। ज्ञान भाण प्रकास जासु पद सब सुख दायक ॥ ऐसे महंत अरि हंत जिन सेवहु निसदिन भाव सैां। पावैा प्रमान अविचल सदन वीतराग गुण चाव सैां ॥ १ ॥ दोहरा-अर्हंत प्रभु को सुमिर कैं, सिद्ध चरण चित लाय। अष्ट कर्म मल त्यागि कैं, अष्ट महा गुण पाय ॥ २ ॥ सवैया—ज्ञानावर्नी कर्म के गये ते सब ज्ञान होत दर्सना वरणि गये षट द्रव्य पेखिये। वेदनी के नासै निरावाध गुण होत सार मोहनी के नासै सुद्ध चारित्र विसेषिये ॥ आपु कर्म नासै आवागाहन सुथिर होय नामक कर्म नाशे ते आमूरतीक देखिये। गोतकर्म नासे तें अगुर लघु गुन होत अंतराय नासैते अनंत विर्ज लेखिये ॥ ३ ॥ दोहरा—पंचाचार क्रिया धरैं गुण षट तीस प्रमान। सो आचारज नमन तै, पावै पद निरवान ॥ ४ ॥

End—सवैया—एक जिन राज शिव थान मन वच काय भाव से ती वंदै तेई सिव पद लहै है। सिषिर सुमेर सीस जिन सिव पद लह्यो और हू असंख्य मुनि सुस्वभाव गहे हैं। ऐसो क्षेत्र नरक तिर्यंचगति कौन नासै जाइ तेई जीव जे अचल पद जहे हैं। ताते इह जानि भव्य चित में विचारि अब सिखिर कैं वंद्य निज भव सुधार लीजे हैं। दोहरा। सिखिर महागिरि वंदिये जब लैां घट में प्रान। नर भव को इहलाह है जानि सुधो मग आणि। सिखिर महातम चरित वर पूरन भयो रसाल। हिरदै हरष वहु धारि कैं लिखो सु मुन्नूलाल ॥ एक सहस नव सतक में चैादह अधिक प्रमान। ज्येष्ठ शुक्ल तेरसि सुदिन शुक्रवार शुभ जान। अपने पढ़ने अर्थ कें सिखिर महातम ग्रंथ। पढ़त सुनत आनँद वढ़ै सुख पावै अति संथ। श्लोकन गिनतो अनै मैं लिखियो यह जान। दोय सहस अरु एक शत वत्तिस अधिक प्रमान ॥ इति श्री काष्ठासंघे लोह चार्य विरचिते सिषिर महातम ग्रंथ मन शुद्ध सागरेता भाषा वर्णनं संध्यायः ॥ शिखिर महातम ग्रंथ समाप्तं ॥ लिखितं मुन्नूलाल श्रावक सोहनलाल पैात्र खुश्यालचंद तस्य पुत्र, मुन्नूलाल

आपने पढ़न अर्थ लिखितं ॥ गजाधर लाल वेलाहरे वाले इन्द्रजीत के बेटे तिनकी पोथी पर देखि के लिखा । मनसा—सागर कृत ॥ श्री वीतराग जी सदा सहाय ॥

Subject—प्रथम पीठिकाधिकार, मंगलाचरण, जिनादि वन्दनाएं, आग्रह के षट्दोषों का वर्णन, त्रेपन क्रिया, सभा वर्णन, समोसरन वर्णन । तीर्थ माहात्म्य, कूटनाम, कुलकर नाम, स्वप्ननाम, स्वप्नफल, लैाकांतिक स्तुति, प्रथम तीर्थंकर का सर्व सिद्धकूट ऊपर मोक्ष गमन । सिद्धकूट द्वितीय तीर्थंकर का मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूट दत्त धवलोपरि संभव जिन मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूट आनंद नामोपरि अभिनंदन जिन मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूटौ विचलोपरि सुमतिनाथ मोक्ष वर्णन । सिद्धकूट महनो पर पद्म प्रभु के मोक्ष प्राप्त वर्णन । सिद्धकूट प्रभासो परि सुपार्श्वनाथ मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूट ललित कूंभोपरि चंद्रप्रभ मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धिकूट सुप्रभास पर पुष्पदंत जिन मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धिकूट विद्युतनामो पर शीतल जिन मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धिकूट सांकुलो नामोपरि श्रेयांस नाथ जिनके मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धिकूट मंदायस्थो परि वसुपूज्य जिन मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धिकूट कुन भंजनोपरि विमलनाथ मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धिकूट स्वयंभू पर अनंतनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूट दत्तवर धर्मनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूट प्रभासोपरि शांतिनाथ मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूट ध्यान धरोपरि कुंमनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन । नाटक नामकूट पर अरहनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन । संवलकूट पर मल्लिनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन । मुनि सुव्रत चरित्र वर्णन । प्रभवकूट पर नेमिनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन । प्रकाश कूट पर नेमनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन । प्रभवकूट पर पार्श्वनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन । श्रीमहावीर स्वामी चरित्र वर्णन । शिखिर महागिरि की वन्दना का आदेश ।

No. 265—Śriṅgāra Karitta? by Maṇḍana. Substance—Foolscap paper. Leaves—8. Size—$8\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—32. Extent—192 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍitā Kamalākāntā, Jimāso, District Rae Bareli.

Beginning—मानि सवै मनुहारि वधू मुसक्याइ हंसैं अंगिया न उतारै । मंडन डोरि के छोरत हौं रिस के मिस ह्वै अंगुरी गहि डारै । लाल करैं अपनो मन भायो चुरी खनकैं जब हाथनि झारैं । कोकिल सी कुहकै वहकै ससकै सतराइ झुकै झिझकारै ॥ वातनि हौं कछु आजु सहेलिनु स्याम को रूप अमोलिक आंक्यो । ऐतें में मंडन वागो वनाइ कहूं ते अटा चढ़ि आपुन झांको । उलहे सब अंग दुरावति प्यारी रहै न हियो हटक्यो अरु हांक्यो । उभै के हाथ उतै अंगिराति जंभाति इतै मुख चाहति ढांक्यो ॥

End.—एरी मेरो कैाल की कलो सी विकसति जब घूघरो बनाइ कै तूं डोरी सों कसति है। उघरत लसत विराजि रहै यांही छवि मंडन जराय की फुंदी सो बहसति है। सोरो ठैार जानि मेरे जान कामदेव जू को प्यारो एतो निसि जानि जाही में वसति है। ऐसी कछू मोडी तेरी ठोडी है दहारि सी जु कबहूक पैठि दीठि नीठि निकसति है॥ जैान अंग देष्यो सो ता गढ़ि सो धरो है माई पैज पुरवनहार मंडन की साध को॥ चरग घरग दीसै ऊपर को धर नीचैं धर सो रच्यो है मनमथ के सराध को॥ मंडन सुकवि तेई उपमा विचारि कहैं जिनको भरोसो मति अगम अगाध को। छाती में उंचाई गरुआई लै ले आई सब छाटि छाटि कियो तेरो लांक टांक आधको। करी ही की सूंडि सी कहत अन देपे कवि एक कहै कदलि के रूपए है जोरे के। एक कहै हाथ की हथेरो को उतारि जैसी मेरे जान जानिए सुजान पन थैारे के॥ मंडन कहत है कै सरोके उमड़ि गए भोरे है × × × मनमथ गोरे के। हैां पै कहैां मेरी प्यारो तेरी जांघ देष करि सोन षंभा हैं दोऊ रति के हिंडोरे के।

Subject.—गर्विता, लज्जावती, प्रेम गर्विता, प्रेम खंडिता और रूप गर्विता का उदाहरण। माननी मुग्धा, विरहिनी, मानिनी, और पतिव्रता का उदाहरण। पतिव्रता का मान वर्णन, सोभाग्यवती का वर्णन, शील वर्णन, मुख रूप वर्णन। आंख और भैांह की शोभा वर्णन, अभिमान वर्णन, जोग वर्णन। मोह वर्णन, दानवीर वर्णन, कीर्ति वर्णन, दयावीर वर्णन। करुणा रस वर्णन, वीर रस वर्णन, वीभत्सरस वर्णन, रैाद्ररस वर्णन। हास्य रस वर्णन, भयानक रस वर्णन, शांति रस वर्णन। कुच वर्णन, अज्ञात यैावना का वर्णन, लंक वर्णन, जंघा वर्णन।

No. 266. Baitāla Pachīsī, by Manikaṇṭha of Āzampur. Substance—Country-made paper. Leaves—59. Size—$9 \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—20. Extent—1,500 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1782 or A.D. 1725. Date of Manuscript—Samvat 1894 or A.D. 1837. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhingā, Bahraich.

Beginning.—श्री गणेशायनमः॥ अथ पोथी वैतालपचीसी लिख्यते॥ गैारी गिरि गनपति गिरिस गुरु पद पंकज रेनु। विनय सीस धरि होत सब कारज सिद्धि सुखेन॥ चोपैया छंद॥ है आजमपुर विदित ग्राम। सुख संपति आनन्द धाम॥ भूमि तिलक सम अति उदार। वेद विदित वाढ़े अचार। जहां चारि वर्न निज धर्म धारि। रथ नेमि चलत जो पथ विचारि। जप जोग जज्ञ नित

करत दान। नित ही सुनत घर घर पुरान ॥ दोहा ॥ अगरवार के गोत सुभ तेहि पुर वसै अनेक। गर्गवंश घर एक है विदित धर्म को टेक ॥ २ धर्म धुरंधर सोल सुत भए भवानी साहु। मुदित जगहि लखि हित सदा अरि उर उपजत दाह ॥ ३ ॥ तिनके सुत तहं तीन भे लहुरे निरतन लाल। रूप काम सम काम तरु दाता दीन दयाल ॥ ४

End.—दो०—साति सोल के रुधिर को पिवत त्रिपित बैताल। उन दीन्हों वसु सिद्ध तव पाइ हरष भुपाल। इति श्री गर्गवंस अवतंस नीरतनलाल कृतो वेताल पचीसी ग्रंथे पंचविसोध्याय ॥ २५ संमत १८९४ समै पोषमासे कृष्णपक्षे त्रयोदसो गुरुवासरे समाप्तम ॥

दो०—पुर वढ़ावनो अतिरुचिर उदवंतसींघ जहं भूप। तहां वसत सेवक अतिथि सुख जुत परम अनूप। यह दसखत सोई लिख्यो सुमिरि राम सुख मूल। उत्तर दिसि गोमति निकट सई दक्षिने कूल ॥ श्रीराम इति

Subject.—कविवंश वर्णन

राजा का जोगी से मिलन राजभय और वेश्याओं का भेजना, योग भंग होना, राजा से बातचीत, विक्रम का तेलिया को मारना, योगी का कर्म

तेली की लाश का कथा कहना, पद्मावती की कथा वर्णन

मंदरावती की कथा

वोरवल की कथा

सुरसुंदरी कन्या की कथा

श्रीदत्त और जैश्री की कथा

हरिदास की कथा, रजक की कथा, त्रिभुवन मंदगी की कथा, वीरमदेव की कथा, सोमदत्त की कथा, सुकुमारियों की कथा, वल्लभदेव की कथा, लावण्यवती की कथा, सुशोभिनी की कथा, शशिप्रभा की कथा, जीमूत वाहन की कथा, उन्मादिनी की कथा, विप्रगुनाकर की कथा, धनवती का कथा, रूपसेन राजा और विप्रकन्या की कथा, रूपमंजरी की कथा, ब्राह्मण के चार पुत्रों और विप्रनारायण की कथा, हरिदत्त की कथा, चंद्रावती की कथा।

No. 267. Chhanda Chhappani, by Mani Rāma Miśra. Substance—Country-made paper. Leaves—30. Size—8 × 5 inches. Lines per page—17. Extent—220 Anushṭup Ślokas. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1829 or A.D. 1872. Place of deposit—Rāmadeoji Brahma Bhaṭṭa, Village Nunara, Mauzā Lamhā, District Sultānpore (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ छन्द छप्पनी लिख्यते मिश्र मनोराम कृत । छन्द मालती सवैया । कै परनाम फनीसुर कौं गन आठ सरूप लगो लहि गाऊं ।

मगन तीनि गुरु (ऽऽऽ) लघुनग्गन (।।।) भग्गन आदि ग० ऽ।।० पे लघु ०ऽऽ० लांऊ ॥

जग्गन बीच गु० ।ऽ।० रग्गन लोकहि ०ऽ।ऽ० सग्गन गो० ।।ऽ० लघु तग्गन ०ऽऽ।० पाऊं ।

चारि भले मनिराम भयो मन ४ औ रस तो ४ नहिनी कवताउ ॥ १ ॥

अथ मगनादि रूप वाम देवता फल कथनं । छन्द गंगोदक अवाँ कवलो ॥ यथा ॥ तीनि गो मो धरा श्री मनोराम ला आंद यो अंबुद वृद्धि कैा मानियै । बीच लारो सुनै वह्नि है मोच को अंत जोसो वयारी भ्रमं जानियै ॥ अंत लैां तो सु आकास सूने फलै मध्यगा जोरवी रोग को दानियै ॥ आदि गो भो शशी कीर्ति को देइला तीनि वोनाग आनंद को थानियें ।

End.—द१स आ८ठ सै उन२९तीस फागुन मास तेरस चंद को । कहि छन्द को यह छप्पनी कवि थप्पनी आनन्द को ॥ इति श्री अंबारानी मिश्र कात्यायनी इक्षाराम तनय मनोरामवर्न कला विरचिता छन्द छप्पनी समाप्ता शुभ मस्तु ॥ लिषितं दुवे शालिग्राम ।

Subject.—(१) पृ० १ से पृ० ५ तक-गण भेद, गण फलाफल तथा देवता, गुरु लघु लक्षण, गुरु लघु संज्ञा छंदोभंग, दग्धाक्षर

(२) पृ० ६ से पृ० २४ तक—वर्णवृत्त वर्णन ।

(३) पृ० २४ से पृ० ३० तक—मात्रावृत वर्णन ।

No. 268. Śālihotra, by Mani Rāma Śukla. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—10 × 6 inches. Lines per page—44. Extent—495 Anushṭup Ślokas. Appearance old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1935 or A.D. 1878. Place of deposit—Mannū Miśra, Village Nilagāon, Post Office Nilāgaon, District Sītāpur (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शालहोत्र लिष्यते ॥ दो० । जै जै जै जग नयन रवि करैा कमल के बंधु । करी कह केसरी करुना मूरति सिंधु ॥ १ ॥ विनती मैं कर जोरि कै करैां परैां सिर नाइ । बसैा सदा मम हृदय मह बानी

होहु सहाइ । २ विघन विदारन विपति के संपति के सुष दाय । मनोराम विनतो करै चरन कमल सिर नाइ । पढ़त हृदय मह ज्ञान घन सुनत होत चित मोद । मनोराम कछु करत है भाषा वाजि विनोद । अथादौ तुरंग नाम उपलछन माह ॥ सवैया ॥ जेहि अस्व के बीच ललाट के ऊपर भंवरी बराबरि जानि वहावहु । ताकह मेढ़नि सिंगी कहैं घर षायहु तौ जब राज नसावहु । कीरति हानि करै कुल ध्वंस नहीं कवहू जुरि जंग धसावहु । पूछै कोऊ कवहूं कबि ते मनोराम तहीं ततकाल वतावहु ॥ जो वाजो के होत है परी चरन में दोइ । अपने स्वामी को करै नाश प्रान को सोइ ।

End.—अथ तुरंगानांगति वरनन । दोहा ॥ आवू जंगला जानिए टांघन औरौ गुढ़ । आवू तुरंगी जानिए जुंगला ताजो उढ़ । पाखतो टांघन कहो गुढ़ जराई होइ । देसो दुगला जानिए संकर बरनो सोइ । चौ० । पचर संकर वरनो जानु । तैसो गोरो गदहा मानि । दो० । प्रथम चाल सहगाम जो तेज गाम है जुक्त । गाम गाम है तोसरो मढ़वालू अति मुक्त । पविया पंचई जानिये पर गा छठई होइ । रव को सतई कहत हैं जानत है सब कोइ ॥ जवन देस के नाम ये चालु कहो ये सात । सालिहोत्र ते समुझि कै ओर कहत हो पात । प्रथम मयूरी नाकुश, दूजो तैतिरि तीनि । चौथो कहत कुरंग को पंचई कहत है चौनि । उष्ट्री मेषा क्षाग की छठहो सतहो होइ । और मंडूको कहत गति अहि को जानौ सोइ । गति येती वरनन करो सालहोत्र मति पाइ । अति आदर कवि जन करें मनोराम गुन गाय । साल्हिहोत्रानुमते शुक्र मनोराम कृते एकादश विनोद ११ समाप्तम् शुभमस्तु श्री संवत १९३५ शाके ॥ शाके १८०० आषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ सप्तम् शनि वासरे लिषितम् भोलानाथ पंडित ॥

Subject.—घोड़ों के भेद, उनके लक्षण और रोगों की औषधियां ।

No. 269. Saguna Parikshā, by Mani Rāma of Kāṇṭhā. Substance—Country-made paper. Leaves—124. Size—6 × 4½ inches. Lines per page—10. Extent—400 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Kaithī. Date of Composition—Samvat 1814 or A.D. 1757. Date of Manuscript—Samvat 1814 or A.D. 1757. Place of deposit—Paṇḍita Yaśodānandana Tiwārī, Kāṇṭhā, District Unāo.

Beginning.—को चाह करो अई ॥ को मेरा सुत पै है । अथव आगो पनी वपरी चलै जो पुरव वतो ॥ सनीचर के घरै बुधवार आवै ॥ सुभ होइ ॥ तौ भलो खबर लै आवै कोई ॥ कोतन्हे के वेट होई ॥ जीव लाभु है ॥ रांगु टोपरा जो

घिगरै तैानन्हे के वेट मरै ॥ की गत घरी सुनीऐ। की नन्हे की फोरी म्रादी म्रावे। वोगरै तो कैाउनो जारिक जुना कारैा ॥ × × ×

End.—पंछी मोदास वोलई। देघान दास वोलई। १ म्रकाल वरव हाई। १ लभकुर न लहाई। २—लछमी म्रागम वतकहा। २ म्ररथ हनाक होइ। ३ मोस्टन भोजन लया ३ ककल वुध होइ। ४— चीत उपजावै। म्रसम्रो मालप होइ। ने इस्त्री कोने वोलई। म्रगरें वो कोने वोले। १—मोत्रा दरमन होइ १ मनुषी यागाक देखे। २ सुख संतोख होइ २ चोर म्रागिनि भई ३ पहुने म्रावई ३ राज पूर रद होइ। ४ म्ररथल मवारक हइ। ४ घर म्रगोना मइ। × ×

Subject.—ज्योतिष पर ग्रहों के संयोग से फल तथा शकुन परीक्षा।

No. 270. Saundarya Laharī, by Maniyāra Siṁha of Kāśī. Substance—Country-made paper. Leaves—46. Size—9½ × 5 inches. Lines per page—9. Extent—466. Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1843 or A.D. 1786. Place of Deposit—Ṭhakura Naunihāla Siṁha Seṅgara, Village Kāṇṭhā, District Unāo.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मंगलार्थं गणपतिम् प्रार्थयेत्। जीत्यैा जो त्रिपुर को म्ररपहर हरा हरा गर्व म्रवंदान वदराज को। छलो वलि वलो हलो म्रनुज कमल कलो प्रभव प्रभाव भो विभव भव साज को ॥ सिं मनियार महि मंडन म्रसेस सेस सोस धरयो कह्यो सिद्धि सिद्ध मुक्ति काज को। पायो देवता नर म्रभीष्ट वरदान मुद मंगल विधान ध्यान गणाधिराज को ॥ १

मंगलार्थं भवानी शंकरो वंदे—शिवे शिवजोति की उदोति की करनि होति तेरी कृपा दृष्टि सृष्टि रचना रचाय जाय। तो विनु सो सुमत्र गुमतं रहित यातें म्रैार कहां होत तातें वातें न कहाय जाय। मनियार तोहि जपि प्रभो पालना प्रलय करत त्रिदेव भेव तेरो न जनाय जाय। पुन्य कौन नति मति मेरे मंद म्रति म्रंव के सकै प्रनति कैसे गुन गति गाय जाय ॥ २

म्रथ श्री भवानीचरण रेणुका वर्णयति—तेरे पद पंकज पराग राजै राजेश्वरी वेद वंदनीय विरुदावली बढ़ी रहै। जाकी किनुकाइ पाइ धाता ने धरत्रि कियो जामैं लोक लोकनि की रचना कढ़ी रहै ॥ मनियार ताहि विष्णु सेवै सर्व पोषत सों होस है कै सदा सोस सहस मढ़ी रहै। सोई सुरासुर के सिरोमनि सदाशिव कैं भसम के रूप है सरीरनि बढो रहै ॥ ३

End.—म्रथ श्री भवानी संवोधनामे वर्णयति—निधे निधि सदने जे नित्य स्मित वदने निरवधि गुन जे नीत निर्मल निधाने हैं। निःप्रपंचे निजानंद निर्भरे

निरामये जै निरज नयनिनि तिनि राधात ग्याने हैं ॥ मनियार निर्गत वचन निगमय निगमा गमामि भिवंदते निखिल सिद्धि दाने हैं । नित्ये निरात के निराकारे निर्विकल्प जैति निश्चल निशंके निष्कलंके निष्प्रमाने हैं । १०१

अथ श्री भवानी विनती कृत्वा स्तुति अर्पयति—जैसे वारि दीप दीप दीप को प्रकास कर भासकर मंडल की आरती ठनत है । वरखे अनंद अमी बुंद चहूं चंद ताहि अंजुलि जलनि अर्थ रचना गनत हैं ॥ सिंह मनियार अंबरासि ते निकासि वारि वाहि अरपत निज भावना भनत हैं । तैसे जग जननी तिहारो वचनन हूं तें वचन रचन की वड़ाई वरनत है ॥ १०२ ॥

अथ पुस्तकं पूर्णगति—रुद्रनैन सहित समुद्र वसु चन्द्रजुत संवत सुहात सुद्ध सर्व सुख खानी को ।

जेठ तिथि पूरन संपूरन दिनेस दिन महिमा वखानी सर्व सिद्धि फलदानी को ॥
सामसिंह सुत मनियार सिंह नाम कासी नगर निवासी विश्वनाथ राजधानी को ।
कामना कलपतरु फरो भरो वैभव ते ग्रंथ अवतरो श्री भवानी राज रानी को ॥१०३॥

इति श्री मनियार सिंह विरचितायां सौंदर्य लहरी टीकायां कवित्त निबंधे भाषायां संपूर्णम् ॥ शुभ मस्तु ॥ शिव भवानी दोहरा—सुंदरता लहरी भरो सकल सुखन की खानि । पढ़त सुनत तरिहैं सदा श्री विद्या वरदानि ॥ १

श्री गोविन्दाय नमो नमः ॥ इति ॥

Subject.—

गणपति वन्दना, भवानी शंकरौ वंदना, भवानी चरण रेणु वर्णन, चतुर्वर्ग फल साधनार्थ भवानी वर्णन, सब देवताओं के फलार्थ चरण वंदना, मोहार्थे भवानी वंदना, कृपादृष्टि वर्णन, ध्यान वर्णन—छंद १ से ७ तक ।

मंदिर भवानी का वर्णन, अव्यक्त ध्यान रूपक वर्णन, कुंडली निरूपा ध्यान, चक्रोद्धारं जंत्रराज वर्णन, सौंदर्य वर्णन, कृपाकटाक्ष वर्णन, मातृका न्यास कला भेद वर्णन, सरस्वती रूप वर्णन, ललिता स्वरूपा ध्यान, कविता प्रदानार्थ ध्यान वर्णन, छंद ८ से १७ तक ।

निर्वाण, गणिका वशीकरण ध्यान, अर्धनारीश्वर, सर्पादि विष निवारणार्थ ध्यान, परमोदारता वर्णन, योग गम्य ध्यान, और प्रभाव वर्णन छंद १८—२४ तक भवानी चरण पीठ पूजा वर्णन, महा प्रलय समय में एकांतस्थली वर्णन, कर्म भक्ति भावे पूजा विधान, चरण कमल में भ्रमर रूप मन का निवेदन, भवानी अखंड सौभाग्य वर्णन, वैभव वर्णन, तंत्रराज प्रभाव कथन, मंत्र धारण कथन, भवानी शंकर एक रूप वर्णन छंद २५—३४ तक ।

जगदात्मा रूप वर्णन, आयां चक्रे भवानी शंकर वर्णन, विशुद्ध चक्रे देह में वर्णन, अनाहत चक्र में सब देह के भीतर दोनों का ध्यान, स्वाधिष्यान चक्र में वर्णन, मनिपुर चक्र देह में वर्णन, मूलाधारे चक्र देह में वर्णन, षट चक्र भवानी शिख नख ध्यान वर्णन। छंद ३५—४२ तक।

केश पाश वर्णन, मांग, अलकों का अग्र भाग, ललाट, भैांहें, नेत्र, और तीनों नेत्रों का वर्णन छंद ४३ से ५१ तक।

द्वैनेत्र वर्णन, फिर नेत्रों का विस्तृत वर्णन, भवानी की कृपा दृष्टि वर्णन, दृष्टि वर्णन, कर्ण भूषण वर्णन, दोनों कानों का वर्णन, नासिका और ओष्ठों का वर्णन छं० ५२—६२ तक।

दाँत वर्णन, महाप्रसाद वर्णन, वाणी चिबुक, ग्रीवा, कंठरेखा बाहु चतुष्ठय, करायभाग और स्तन मंडल का वर्णन, क्षीर धारा का वर्णन, त्रिवली वर्णन, रोमावलि, नाभि मंडल, कटि प्रदेश, नितंब, युगल उरु, जंघ व दोनों चरणारविंद का वर्णन, छंद ६३ से ८५ तक।

नमस्कारार्थ चरणारविंद वर्णन, पद पीठ वर्णन, चरण नख वर्णन, चरणोदक कथन, भवानी की गति वर्णन, समस्त नखशिख ध्यान वर्णन, पर्यंक वर्णन, पान पात्र वर्णन, ध्यान वर्णन, प्रभाव वर्णन, पतिव्रत वर्णन छंद ८६ से ९८ तक।

सर्वोपर तुरीय रूप वर्णन, भजन फल वर्णन, नाम संबोधन फल, स्तुति वर्णन, पुस्तक संपूर्ण रचयिता का स्थान, संवत, वंश परिचय वर्णन शिव भवानी का दोहा वर्णन छंद ९९—१०४ तक इति।

No. 271. Dharma Parīkshā, by Manōhara Dāsa Khaṇḍelawāla of Dharmapura. Substance—Country-made paper. Leaves—220. Size—$13\frac{1}{2} \times 6\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—11. Extent—3,327 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Charactėr—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1705 or A.D. 1748. Date of Manuscript—Samvat 1870 or A.D. 1813. Place of deposit—Śrī Jaina Mandira (Baḍā), Bārābanki (Oudh).

Beginning.—ओं नमः सिद्धेभ्यः। अथ धर्म-परीक्षा भाषा मनोहरदास कृत लिख्यते॥ सोरठा॥ प्रणमो अरिहंत देव। गुरनि ग्रंथ दया धरम। भव दधि तारण एव॥ अवर सकल मिथ्यात भणि॥ १। अरिहंत देव स्वरूप, जो नर जानि रुमण धरै॥ सो नर मुक्ति अनूप॥ वैर वेगि पंडित कहै॥ २। गुरनि ग्रंथ महंत। जो नरपद पंकज नमै। सो नर करम दहंत॥ मन वच क्रम संसै नहीं॥३॥ जीव दया धर्म सार। और धर्म दुर्गति धरण। यह विन करनी छार। विविधि विवध पर सो करै॥४।

दोहरा ॥ देव गुर सुधर्म वन्दिके जिन उपदेश कहंत । पढ़त सुनत उपजै सुवुधि । अनुक्रम मुक्ति लहंत ॥ ५ ॥ होनहार कारन मिल्यो । हीरामनि उपदेश । कारन विना न भव्य जन काज न है लवलेश ॥ ६ ॥ पंच सकल प्रेरक भये जानहुं मन वच काय । सत्य पुरुष अज्ञा भई श्री जिनराज सहाय । × ×

End.—ज्ञानिवंत वही कुलवंत वही सीलवंत वही वृतधारी हो वही के वचन सुमति है । वही धनधारी वही तपसी विवेक कारी वही भवतारी वही जगत को पति है ॥ वही ब्रह्मचारी वही कीरति को अधिकारी वही सत वही शुद्धमती है । वाकी बराबरि न कोऊ है जगत माहिं ताको उर निरमल सुभग समकित है । ५८ ॥ सकल सभा धर्म सुन्यो विचार । मन में सुख पायो अधिकार ॥ पवन वेगि सुधि करके हिया । श्रावक के वृत मन वच लिया ॥ ५९ ॥ भयो हर्ष अति अंगन मांहि । कहै मनोहर मन वच काय ॥ पवन वेगि जिन मारग भयो । छांड्यो मिथ्या समकित लयो ॥ ६० ॥ भकहि लागे शुभ वचन अभव्या नहीं सुहाइ । मूंगन सींझे कोउ हू सो मन कास जलाय ॥ ६१ ॥ रार सोखहू कहत हैं सो तुम कीजे याद । अंत फुरेगो माहिली ऊपर सव वादि ॥ ६२ ॥ सोरठा ॥ घरषट उगन हजार । वांभग छांड़ि मिथ्यात्व को । भये सरावग सार मन वच काया शुद्ध करि ॥ ६२ × ×

इति श्री धर्मपरोक्षा भाषा मनोहर दास खंडेलवाल कृतं सम्पूर्ण ॥ छंद संख्या ३३०० मिती श्रावन वदी ७ संवत १८७० पोथी लिखी जवाहिर सोभाचंद के बेटे ॥

Subject.—पृ० १ से पृ० १२ तक—मंगलाचरण तथा वन्दनाएं ग्रंथ निर्माण काल—सत्रह सै पंचोत्तरै, पैाष दसै गुरुवार । शुभ वेला ग्रह शुभ लगन कियैा महूरतसार ।

कवि वंशादि परिचय :—

कविता मनोहर खंडेलवाल सोनी जाति मूल संगी मूल जाको सांगानेर वास है । करम के उदैते धामपुर वसन भयो सबसों मिलाप पुनि सज्जन को दास है । व्याकरण छंद अलंकार कछु जाने नांहि भाषा में निपुन तुच्छ वुद्धि को प्रकाश है । वाईं दाहनी न कछु समझे संतोष लिये जिनकी दोही ईजा एक जिनजी की आस है । सज्जन तथा दुर्जन के लक्षण । मुनीश्वर धर्म वर्णन । वैजयंती नगरी की शुभ शोभा का वर्णन । विद्याधर के वैभवादि के वर्णन के साथ उसके सुत्रोपत्ति । प्रियापुरी नगरी के राजा पवनवेग के द्युति कारि का होना, पवनवेग का वन में जाना और वहां पर मनोवेग से मुलाकात होना । दोनों मित्रों में पवनवेग का मिथ्याती होना और मनोवेग का उसको सुमार्ग में लाने का उद्योग । पवनवेग का कारण वश अपने घर जाना और विलम्ब हो जाना । मनोवेग का अढ़ाई द्वीप में जिन पूजा करना ।

(२) पृ० १३ से पृ० २६ तक—कथा में जीव संबंधी वादानुवाद सुखदुख-विवेचन। जैन धर्म संबंधी अनेक सिद्धांतो का वर्णन। सम्यक् दृष्टि तथा मिथ्याती का भेद निरूपण, प्रीति का वर्णन, अनेक प्रकार के धर्मोपदेश सुनकर मनोवेग का अपने मित्र के संबंध में भव्याभव्य का विचार कराना, मुनि द्वारा उसको परितोष देना और बताना कि यदि तू पुष्पपुर (पटने) में जाकर उसे धर्मोपदेश करेगा तो उसे सम्यक् ज्ञान प्राप्त होगा। मनोवेग का अपने घर जाना।

(३) पृ० २७ से पृ० ३६ तक—दोनों मित्रों का सम्मेलन तथा पटना पहुंचना, पटने की शोभा और वशिष्ठ वाल्मीकि के अनुयायियों की सभा, मनोवेग का अपने वहुमूल्य मणियों के मुकुट पर तृण और कंटक रख कर वाद सभा में पहुंच जाना और वहां रक्खे हुए ढोल को बड़े जोर के साथ बजा देना और सिंहासनारूढ़ हो कर निश्चिन्त बैठना। ब्राह्मणों का आश्चर्य विप्रों का सिंहासन पर बैठने का निषेध और मनोवेग का उतर पड़ना।

(४) पृ० ३७ से पृ० ५२ तक—ब्राह्मणों से वाद करते हुए मनोवेग 'षोडष मुट्ठी न्याय' की व्याख्या करना, उसकी न्याय संबंधी कुछ उक्तियां। मनुष्य और तिर्यंच का भेद। मूर्ख निन्दन, दस प्रकार के मूर्खों की व्याख्या के लिये दश कथाएं। रक्त पुरुष की कथा, मायाविनी स्त्री का चरित्र चित्रण और कामी पुरुष की दशा का दिग्दर्शन।

(५) पृ० ५३ से पृ० ५७ तक—दुष्ट पुरुष की कथा दुष्ट चित्त मनुष्यों की पराई सम्पति न देख सकने वाली कुबुद्धि और हित वचन को छोड़ कर विपरीतता को ग्रहण करने वाले दुष्टों की दशा।

(६) पृ० ५८ से पृ० ६४ तक—मूढ़ पुरुष की कथा।

(७) पृ० ६५ से पृ० ६६ तक—क्षुद्र ग्राही मूढ़ की कथा।

(८) पृ० ६७ से पृ० ८० तक—पित्त दूषित मूढ़ पुरुष की कथा, आम्र मूढ़ की कथा, क्षीर मूढ़ की कथा।

(९) पृ० ८१ से पृ० १०२ तक—अगुरु मूढ़ की कथा, चन्दन त्यागी मूढ़ की कथा, चार मूर्खों की कथा। चारों मूर्खों की अन्तर्गत कथाएं।

(१०) पृ० १०३ से पृ० ११० तक—ब्राह्मणों का मनोवेग की बातों की अवहेलना करना, पुनः उसका पुंडरीक की कथा सुना कर एक दोष से सब गुण नष्ट होने का कथन करना, राम कृष्णादि अवतारों में दोषोद्भावना, ब्राह्मणों का हार मान लेना और निर्दोष देव के खोजने का अभिवचन देना। इस प्रकार पवनवेग का लौकिक सामान्य देव को विचार पूर्वक सुना कर संशय दूर करने के लिये छः कालों का यथा क्रम वर्णन सुनाना। बलि की सच्ची कथा

सुनाना। हिन्दू पुराणों का पूर्व विरोध से भरे हुए बताना, अन्य स्थान में व्याधा का रूप धारण कर के और अपने मित्र को मार्जार का स्वरूप देकर ब्राह्मणों से विवाद करना, और वस्तु का सत्यार्थ स्वरूप कथन करने का विचार प्रगट करना।

(११) पृ० १११ से पृ० १२७ तक—ब्राह्मणों को मंडप कौशिक नाम के तपस्वी की कथा, उस तपस्वी का एक विधवा स्त्री से विवाह करके उससे एक अनन्य रूपा पुत्री उत्पन्न कर सपत्नीक तीर्थ पर्य्यटन को जाना और त्रिदेव, इंद्रादि अन्य देवता तथा मनुष्यादि में किसी का भी विश्वास न करके यमदेव को सौंप कर चला जाना, यम का उस कन्या में अनुरक्त होना, पुनः अग्नि का भी उस पर मोहित होना, यम का छाया को अपने उदर में धारण करना और एक दिन संयोग वश यम के स्नान जाते समय पवन के साथ सम्भोग कर के छाया का उसे उदरस्थ कर लेना, ब्रह्मादि द्वारा अग्नि की खोज, पवन का उद्योग।

(१२) पृ० १२८ से पृ० १३६ तक—पुराणों में से हो दोषों की कल्पना कर ब्राह्मणों को उन पर अश्रद्धा कराना, जिन धर्मानुसार रुद्रादि वर्णन मनोवेग का नग्न मुनि का रूप धारण करके तीसरी पाठशाला में जाना, ब्राह्मणों का विवाद के लिये उपस्थित होना मनोवेग की प्रस्तावना।

(१३) पृ० १३७ से पृ० १५० तक—अर्जुन के गांडीव धनुष द्वारा पाताल छेद कर दश कोटि सेना सहित फणींद्र का निकाल लेना, कुम्भज का समुद्र शोषण, राम का सीता को खोजना इत्यादि को असंभव और तुच्छ बता कर वैष्णव धर्म का खंडन किया जाना, समस्त पुराणों का पूर्वापर विरोधों से भरा हुआ बतलाना।

(१४) पृ० १५१ से पृ० १५६ तक—मनोवेग का ऋषि वेष धारण कर अन्य वादशालाओं में जाना। पनस आलिंगन से पनश फल की उत्पति और उसी से एक सौ पांडवों का उत्पन्न होना, सुभद्रा को चक्राव्यूह संबंधी कथा। 'यम' नामा मुनि को लंगोटी का तालाव में धोना और उसके मल की बुन्द पीने पर मेढकी के गर्भ स्थिति की कथा, उस वालिका का भी पिता की लंगोटी के वीर्य गर्भ रहना, इन बातों से पुराणों में अनर्गल बातें दिखाना, व्यासोत्पत्ति रघुराजा की कन्या के गर्भ स्थापन की कथा।

(१५) पृ० १५७ से पृ० १८० तक—वैदिक ब्राह्मणों को निरुत्तर कर, जैन मतानुसार कर्ण राजा की उत्पत्ति की सच्ची कथा सुनाना, पांचवे द्वार से पटना में प्रवेश कर मनोवेग का अन्य वाद-शाला में पहुंचना, रामायण संबंधी कुछ आक्षेप, राक्षस और वानर वंशों की मीमांसा छठवें द्वार से प्रवेश कर अन्य वाद-

शाला में 'दधिमुख' वर्णन तथा रावण द्वारा अंगद के किये गये दो टुकड़ों का हनुमान द्वारा जोड़ा जाना, इत्यादि कथाओं को असंभव सिद्ध करना।

(१६) पृ० १८१ से १८८ तक—वेदों के अपौरुषेय होन में संदेह, यज्ञ का निषेध, दीक्षादि अन्य कार्य्यों का निषेध, श्राद्ध इत्यादि पर आक्षेप।

(१७) पृ० १८९ से पृ० २०२ तक—अन्यमतों की दुष्टता श्रवण कर उनके प्रचार का कारण पवनवेग द्वारा पूछा जाना (छहो कालों के इतिहास का सूक्ष्म वर्णन)।

(१८) पृ० २०३ से पृ० २०५ तक—दोनों मित्रों का जिनमति नामा मुनि के पास बैठना, और मुनि का स्वयं उसका परिचय दे देना, तथा उसके मिथ्यात्व दूर हो जाने का कथन करना।

(१९) पृ० २०७ से पृ० २१० तक—मुनि द्वारा श्रावकाचार में पांच अणु व्रत, तीन गुण व्रत, चार शिक्षा व्रत इस प्रकार बारह व्रतों के ग्रहण का वर्णन।

(२०) पृ० २११ से पृ० २१७ तक—द्वादश व्रतों के अतिरिक्त और भी कई प्रकार के नियम श्रावकों को भक्ति पूर्वक पालने का आदेश तथा वर्णन, ग्यारह प्रतिमाओं का वर्णन, सम्यक्त की विशदता का वर्णन, पवनवेग के जैनव्रत धारण से मनोवेग का प्रसन्न होना।

(२१) पृ० २१८ से पृ० २२० तक—ब्राह्मणों का श्रावक होजाना, मूलग्रंथ-कार का परिचयः—

मुनि अभिमत गति जान सहंस कृत पूरव कही। यामें बुद्धि प्रमान भाषा कीनी जोरिकें। काल—विक्रम राजा कूं भये सत अधिक सुहजार। वरष तवै यह संसकृत भई कथा सुभ सार।

ग्रंथकार के निवास स्थान तथा वहां के निवासियों के विषय में कुछ कथनः—देस दादुरो परबत तनो। तहां धामपुर सोभा भनो। × × × तहां सरावग नीके सुखी। करम उदै काई है दुखी॥ × × × तिन मधि परचै दरवि आसू जेठो साह। लेहि धन लाह॥

दुर्जन कोई धरिन धरै। करमन तैं सोई विधिकरै।

घनी वात को करै बढ़ाइ। नगर सेठि है मन वच काइ।

दोहा—जेठ मल्ल सुत विधोचंद दाता दीन दयाल।
सज्जन भगता गुण अधिक दुर्जण छातो माल॥

× × × ×

बनारसी जेठ मति सागर प्रथो प्रसिद्ध कोटिन को धनी। ताको पाप उदै आयो थो। सदन सो निकसि अजोध्या को गमन कियो अजोध्या के सेठि बहु उद्यम करायो थो॥ अपनी बराबरि करि नाना भांति सेतो दैकरि बड़ाई निज थानक बनायो थो। असे हम अरव साह सबै निज वाह दै कै कहै मनोहर हम पुन्य जोग पायो थो॥

दो०—सो तो पहुंचै सुभगती वाजे सुभग वजाय। विधोचंद सुख भोगवै धर्म ध्यान चित लाइ॥

हीरामनि उपदेश ते भयो शास्त्र शुभ सार। दुष्ट लोग कोऊ मति हसो हिरदै धरिजु विकार॥ रावत सालि वाहण आगरे को बुधिवंत हिरदै सरल तिन ज्ञान रस पोयो है। जगदत्त मिश्र गैाड हिसार को वासी सुभ विद्यावल जग में सार जस लीयो है। वेगराज पंडित ब्राह्मण मांहि जोतिष को पाठी सरस्वती वर दियो है। इतने सहायक भए दोही जिन राज जू की तव ते विचार करि भाषा बुद्धि कियो है।

Note.—यह 'धर्म परीक्षा' नामक ग्रंथ सोनी जाति के खंडेलवाल वैश्य 'मनोहर दास जी की रचना है। यह मूल निवासी सांगानेर के थे और पीछे धामपुर में आकर रहने लगे और वहीं उन्होंने इस ग्रंथ की रचना की। यह मुख्य ग्रंथ संस्कृत में है और उसके रचयिता हैं मुनि 'अमित गति' इसकी रचना उन्होंने (विक्रम राजा हूं के भए सत अधिक सुहजार) १००७ वि० में की। कहा जाता है कि इस अनुवाद के अतिरिक्त इस ग्रंथ के तीन अनुवाद और भी हुए हैं—एक गद्यानुवाद जयपुर के चैाधरी प्रसन्नालाल जी ने किया है, एक मराठी में श्रीकृष्ण नन्दराव जोशी ने किया है। और तीसरा गद्यानुवाद पन्नालाल जी वाकलीवाल ने प्रचलित गद्य में किया है—इन महाशय ने भूमिका में प्रस्तुत ग्रंथ के संबंध में अपनी सम्मति दी है कि इसमें मनोहर दास जी ने अनुवाद करने में पूर्ण स्वतंत्रता से कार्य्य लिया है और कहीं कहीं अपनी ओर से भी घटा बढ़ा दिया है। ग्रंथ के अन्त में अनुवादक ने अपने मित्रों तथा सहायकों की भी एक सूची उपस्थित की है। जो यथा स्थान उद्धृत कर दी गई हैं। कविता साधारण श्रेणी की है। पन्नालाल जी वाकलीवाल ने मूल संस्कृत ग्रंथ का निर्माण काल—१०७० वि० वताया है—जो हो, इस ग्रंथ के अन्तिम पृष्ठ पर दिये हुए पद्यांश से तो १००७ ही प्रगट होता है। सम्वत् १८७० वि० में शोभालालात्मज 'जवाहर' नाम के किसी व्यक्ति ने इसे लिखा है। इति

No. 272(*a*) Jñāna Mañjarī, by Manōhara Dāsa Nīrañjanī. Substance—Country-made paper. Leaves—22. Size—13 × 7½

inches. Lines per page—17. Extent—413 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1716 or A.D. 1659 Place of deposit—Ṭhakura Naunihala Simha Seṅgara, Kāṇṭha, Unāo.

Beginning.—श्री परमगुरुभ्योनमः अथ ज्ञान मंजरी लिख्यते। दोहा। आत्म के अज्ञान ते सबै उपजे जाय। ज्ञान भये ते लीन सब नमस्कार तेहि मान ॥ १ ॥ कवित्त ॥ प्रथम मुकत कहि दूसरै मुमुछ्छ सोई। तीसरो विषई चौथो पामर विचारो है। चार पुरुष संसार माझ कहै निरधार बंधन मुकत डार मुकत तो न्यारो है। बंधन ते छूट्यो चाहै मुकत को जो उमा है। सोई तौ मुमुछी आहै मोछ निरधारो है॥ भोग विषै सुष चाहै सोई तो विषई कहा है पामर सो पेट भरि मेढरा पियारो है॥ २॥ प्रश्न दोहा॥ वेद आमना कौन परि हम सो कहि सो भाष। यथा अर्थ है वेद को गोप कछू जिन राष॥ ३॥ उत्तर॥ वेद सबै त्रैकांड है कर्म उपासना ज्ञान। मुकत परि कोउ कांड नहिं सोहै ब्रह्म-मान ॥ ४॥ विषई परि नहिं आमना। भोग को साधन नाहिं। नासवंत सब भोग है। झूठे सुषता माहि। तात्पर्य सब वेद को एक मोक्ष परि जानु। भोग है लोक प्रलोक के तापरि नाहि वषान।

End.—गमाभ्र यो जो जिय ॥ ९५ ॥ संवत सत्रह से मही वर्ष सोरहे माहि। वैसाख मासे शुक्ल पक्ष तिथि पूनो है ताहि॥ ९६॥ सोरठा॥ भाषा ग्रंथ कहि यह सबै वैषरी वाक है। परापश्यंति जेह मधिमा पीछे पाइय। ९७॥ कवित्त॥ अपौरुषी वानी वेद। अद्वैत है ब्रह्म जामे। द्वैत तामे भेद नाही। एक रूप सब है॥ ताके है स्वरूप परापश्यंति है मध्यमा सो। वैषरी अनन्त रूप चारि वेद जब है॥ तामे है सो काम तीन कर्म उपमना सोई॥ ज्ञान कांडनी जो जान औरग को तब है। रिषि वानी लिये ज्ञान तेई तो अहै प्रमान ज्ञान लिये ना वानी भेद कहो कब है॥ ९८॥ दोहा॥ त्वं पद देव त्रिज कारिष॥ नर किनर सब जान तत पद ईश्वर देव सब। त्वंतत्तत् त्वंमभान॥ ९॥ मनोहरदास निरंजनी॥ सो स्वामी सो दास स्वामी दास भयो एक सो महाकाश घटा काश॥ १४२० ॥ इति श्री ज्ञानमंजरी नाम भाषा ग्रंथ कथनं। पूर्ण समाप्तम ॥ शुभं ॥

Subject.—वेदांत विषयक कर्म, उपासना, ज्ञान तीनो का वर्णन पृ॰ १

उत्तम मुक्षु, मध्यम मुक्षु मंद मुक्षु का वर्णन-पृ॰ २

ज्ञानी की श्रेष्ठता का वर्णन पृ॰ २—३

आत्मा की नित्यता, विविध वासनाओं का त्याग और उसकी अनित्यता का वर्णन प्रकृति वाक्य और वेदांत वाक्य का वर्णन अहंब्रह्म, तत्वमसि वाक्य का वर्णन पृ॰ ४—५

प्रकृति साख्य का वर्णन, जीव, ब्रह्म के एकत्व से मोक्ष का वर्णन, वैराग्य, विवेक षट संपत्ति और मोक्ष की इच्छा को साधना का वर्णन पृ० ५—६

अभ्यास का महत्व और उसका वर्णन, अभ्यास का दृष्टांत, अरावता का दृष्टांत, अर्थवाद उतपत्ति, सिद्धान्त, संप्रज्ञात समाधि, असंप्रज्ञात समाधि, समाधि के षट भेद पृ० ६—१७

विकल्प अविकल्प भेद, हृदय के तीन प्रकार, बाहर के तीन प्रकार पृ० १७-१९

समाधि का फल, वृत्ति का वर्णन, तीन प्रकार की वृत्तियां। अजहत जहत और जहत अजहत लक्षण का वर्णन। पृ० १९—२३

No. 272(*b*) Jñāna Vachana Chūrṇikā, by Manōhara Dāsa Nirañjanī. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—13 × 6½ inches. Lines per page—17. Extent—488 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhakura Naunihāla Siṁha Seṅgara, Kāṇṭhā, Unāo.

Beginning.—अथ ज्ञान वचन चूर्णिका लिष्यते ॥ दोहा ॥ रवि गुर दोय सम तुल्य पूज्य है तम अज्ञान करै दूरि। जग उर में प्रकास करि वंदन को निज-मूरि ॥ १ ॥ जीवेश्वर चैतन्य में कहिए हैं द्वैनाम ॥ सर्वग्यता अल्पग्यपुनि संसारी सुख धाम ॥ २ ॥ कर्म सहित पुनि रहित है सहित कर्म कह्यो जीव। संसारी ताते भयो रहित भयो सोई सीव ॥ ३ ॥ जीवेश्वर द्वै जगत में प्रगट कहै सब कोय। वाह्य दृष्टि विवेक विन अंतर दृष्टि न होय ॥ ४ ॥ वचनका। एक चैतन्य में अज्ञानी वास्तव मानै। जीव ईश्वर द्वै ज्ञानी उपाधि भेद ते मानै। जीव ईश्वर एक चैतन्य में द्वै ॥ दोहा ॥ उपाधि भेदते लघु दीर्घ। लघु दीर्घ मुख भास। दृष्टांत, चक्षु प्रतिबिंब दरपन महि मुख चैतन्य एक प्रकास ॥ ५ ॥ माया दर्पन सम भई। अविद्या चक्षुसाम जोय। चैतन्य मुख सम एक ज्यो भेद भास नहि होय ॥ ६ ॥ जीवेश्वर द्वैभास है माया अविद्या भेद भेद भास के बाधते। चैतन्य एक कहै वेद ॥ ७ ॥ एक मेवाद्वितीयं ब्रह्मेति श्रुतेः एक अनंत अपार है पूर्ण सुधा समुद्र ब्रह्म कह्यो ... इ आत्मा रह्यो न जननी उद्र।

End.—कर्ण नाहीं ॥ वध्य ज्ञान कैा अधिकरण अंतःकर्ण है। स्वरूप ज्ञान अधिष्ठान सर्व को है। ता स्वरूप ज्ञान कैा कोउ अधिष्ठान नाहीं। ताही तै विद्या अविद्या कैा प्रकाशी है। सो जीवन मुक्ति कैा स्वरूप है ॥ ताते स्वरूप में ज्ञांन अज्ञान दोउ नाही इति ॥ अरु विद्या ज्ञान कैा अध्यकर्ण अरु अविद्या अज्ञान कैा अध्यकर्ण है सु एक अंतःकर्ण मांही मिल्यौ है चैतन्यता कैं जीव कहिये सु

अंतःकर्ण अज्ञान कौ कार्य है। सोई अज्ञान स्वरूप अज्ञानी कहिये॥ सु जाकौ स्वरूप कौ अज्ञान है ताही कौ विद्या ज्ञानवान चाही जै। इति॥ स्वरूप है सो विद्या अविद्या कौ विरोधी नाही॥ सुब्रह्म कहिये। अरु अज्ञान तैं अतौपहत क हये अज्ञान तै उपहत जीव कहिये॥ सो जीव अज्ञानी। सो जीव अनौपहतता जानि वै के ज्ञानी।

Subject.—गुरु की वंदना, ईश्वर और जीव का भेद, ईश्वर और जीव की एकता, अनिर्वचनीयता, शक्ति के विशेषण और उसके दृष्टांत, उत्पत्ति (माया का तीनों शक्तियों के साथ मिलने से), जीव का त्रिगुणात्मक होना, कार्य प्रवेश से स्थायित्व, संक्लेश से संहार, ईश्वर कारण उपाधि जगत के करने का पृ० १—३

क्रियमाण कर्म का रूप, नित्य, नैमित्यिक और काम्य कर्म, प्रायश्चित्त कर्म निषिद्ध कर्म, उपासना, संचित प्रारब्ध और क्रियमाण तीन कर्म निष्काम कर्म वर्णन। पृ० ३—४

अष्टांग योग आसन, षणांग योग से ज्ञान और मुक्ति, पुण्य अपुण्य मिश्रित तीन कर्म जरायुज में चार प्रकार की प्रकृति अंडज उद्भिज में ईश्वरत्त्व पृ० ४—६

विद्या ज्ञान की उत्पत्ति, ईश्वरता की सिद्धि, कारण अविद्या, कार्य उपाधि, विद्या अविद्या का वर्णन - पृ० ६—९

ज्ञान की उत्पत्ति, कार्य और कारण की वाध्यता और विशेषण, उत्पत्ति काल कार्य प्रवेश पृ० ९—१२

सत और असत, विवर्तवादी, आरंभवाद, परिणामवाद, संघातवाद, पंचख्यात, आत्मख्यात असाधारणभूत अपंची कृत कार्य, समष्टिवाद, विष्णु, शिव तैजस प्रज्ञात पृ० १२—१६

कार्य कारण उपाधि, ज्ञानी को जीवन मुक्ति चिदाभास, जीवाभास, देहकृते अभ्यास की निर्विवर्त्ति दृष्टांत आदि पृ० १७—२०

No. 272(*c*) Vedânta Bhâshâ, by Manohara Dâsa Nirañjanî. Substance—Country-made paper. Leaves—22. Size—13 × 6½ inches. Lines per page—17. Extent—538 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nâgarî. Date of Composition—Samvat 1777 or A. D. 1720. Place of deposit—Ṭhakura Naunihâla Simha Seṅgara Kāṇṭhā, District Unāo.

Beginning.—सच्चिदानंदायनमः॥ श्री गुरुभ्योनमः॥ कर्त्ता ग्रंथ करिवे में निर्विघ्न सुष चाहेहै॥ दोहा॥ मंगल दे मोहि देव गणेस। मंगल दे मोहि सरस्वती॥

मंगल दे मोहि देव महेस ॥ मंगल दे मोहि पारवती ॥ ग्रंथ को प्रयोजन अरु विषय कहिए है । चौपाई । आत्मलाभ ते ओगण न कोई । यह भाषत है मुनि सब सोई । लाभ अर्थ कवि करै बषांण । आत्म को ईश्वर कर जांण ॥ २ ॥ प्रश्नद्वारा ग्रंथ को अधिकारी दिषाइए है । प्रश्न शिष्य मनहि संसैयों आय । आत्म ईश्वर भिन्न सुभाय । आत्म अज्ञ ईश्वर सर्वज्ञ । कैसे एक है अज्ञ अरु तज्ञ । नियंता जग कर्त्ता है ईश । जीव अकर्त्ता सदा अनीश । क्यों आत्म परमात्म एक सो हमको कहि देउ विवेक ॥ ४ ॥ वचन का यह साल्हकी विषय त्रिपे जीवेश्वर को भेद अर्थ ग्रहण करिके आसंका करी सिष्यने । ताको लक्ष्यार्थ करिके समाधान करिवे को उत्तर देते हैं गुरु उत्तर ॥ चौपाई ॥ समाधान करै गुरु देव । चैतन्य एक अखंड अभेव । महावाक्य तहां करै बषाण । आत्म को परमात्म जाण । वाक्य अर्थ अनुभव तहां होइ । जा अनुभव में नाहीं दोइ ।

End.—मनोहर दास निरंजनी करो सुभाषा सार । थोरो सो विस्तार नहिं अर्थ सबै विस्तार ॥ ८५ सगुन करी कवीस्वरो कविन कछु नहिं सोय । जाको बुद्धि विसाल है समझै ज्ञानो होय ॥ ८६ ॥ साधन कहिए है । कवित्त ॥ बार बार बूझै मन अर्थ सूझै सबै याके । मुमुक्षु होइ सोई पावै गुर गमते । निंदा स्तुति तजे मानरू बड़ाई छोरि कपट लंपट मागे चितै पयै समते ॥ विवेक वैराग्य दोय सम दम और सोय उपरति तितिक्षा सुस्रधा में रमते । समाधान मोक्ष में न और कछु समाधान ध्यान धरै रैन दिन राषै मन तमते ॥ दोहा ॥ संवत सत्तरासै महि सोरह वरष वीतीत । व्यूष सत्रहैमहि करी षट मास जाहि वितीत ॥ ८७ ॥ आसौज बद है चतुरदसी कृष्णपक्ष अतिवार । भाषा पूरन सब भई मान एक कृतकार ॥ ८८ ॥ २८८ ॥ इति श्री वेदांत महावाक्य भाषानाम ग्रंथ कथिते मनोहर दास निरंजनो । संपूरण समाप्तम । श्रीरास्तु शुभम् श्रीपरमगुरुभ्येनमः ।

Subject.—वंदना, ग्रंथ का प्रयोजन और विषय ग्रंथ का अधिकारी, शिष्य का प्रश्न और गुरु कृत उत्तर वर्णन किया गया है ।

वेदान्त विषय बहुत स्पष्ट रूप से छंदो वद्ध कर के समझाया है. ग्रंथ क्लिष्ट जान पड़ता है । बीच बीच में वेदांत के सूत्र दे कर उसका वाच्यार्थ स्पष्ट किया गया है ।

No. 273. Kavitta by Manasā Rāma of Ṭeḍā, District Unao. Substance—Foolscap paper. Leaves—6. Size—7 × 4¾ inches. Lines per page—32. Extent—96 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Bāmābhūshaṇaji Śukla, Rae Barelī.

Beginning.—अथ मनसा राम के कवित्त ॥
माछे मोर पच्छन के मुकुट धरे है सीस काछे कछनी को किए नीको भेष नट को ।
चंद सो वदन चारु चन्दन की दोन्हे खौरि तैसो उर गुंजन को हार चारु चटको ।
"मनसा" सुनत मंजु बांसुरी सबद मेरो दौरो मन जातरो रहै न नेक हटको ।
हेरत हिये को हरि लेत हरि भांतिन सों वीर कहु को है वो अहीर पीतपट को ॥ १
नीरद नवीन स्याम तन अभिराम तापै बीजुरी सी छाजै छबि अंबर जरद की ।
सहज श्रृंगार गरे गुंजन को हार तैसो सुखमा अपार बढ़ी चारु गो गरद की ।
इंदु मुख मनसा गुविंद अरविंद नैन कीन्हो गति मंद मंद गति सों दुरद की ।
मंद मंद हंसि कै अनंद हो सों नन्द नन्द हद रद कीन्ही चन्द चंद्रिका सरद की ॥ २

End.—साजि गज बद्दल मद्दल जुरत जब जोतबे परद्दल चढ़त अवधेस है ।
छलकत छोर निधि थलकत जल थल हलकत स्वरग सकात अलकेस है ॥
सुंडन उछोर भारे घन से पुकारे कारे होत दिगदंतिन के मनसा कलेस है ।
मसकत मही मूल कसकत कोलकुल धसकत धराधर ससकत शेष है ॥ २१
बेनि की नागरी नेवेली अलबेली भागी कंचन की वेली सी सहेली कोऊ संग ना ।
महाराज राम जू के डर ते डरानी बिल्लानी जिन्हैं धावत में पावत तुरंग ना ।
परे बिछुआन कतरे जे पग छाल बड़े मनसा विलोकि तिन्हैं को को भयो दंग ना ।
मानो कंज खंडन की पाखुरी अखंडन में अंडन समेत बैठी हंसन की अंगना ॥ २२

Subject.—कृष्ण भगवान के ३ कवित्त, कुब्जा के २, देवीजी के ३, चंडिका के २, राधिका के नैन के २, हरतालिका वतावली पर २, नायिका वर्णन के २, श्रृंगार रस के ३, होली का १ और वीर रस के २.

No. 274. Nānā Artha Nava Saṅgrahāvali by Mātādīna Śukla. Substance—Country-made paper. Leaves—170. Size—8×6 inches. Lines per page—24. Extent—1,400 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1899 or A. D. 1842. Date of Manuscript—Samvat 1931 or A. D. 1847. Place of deposit—Ṭhākura Dīgvijaya Simha, Tālukedāra, Village Dikaulia, Post Office Biswān, District Sītāpur.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ संग्रहावली कवित्व लिख्यते ॥ शान्त रसः ॥ बालवादो करै वादि सदा पितु मातु तऊ भरै गोदन माहीं । क्रूर कसूर करै पशुभूरि तजै । तऊ पालक पालिबो नाहीं । है रघुनाथ तिहारे हो हाथ अनाथ हैं दीन कहीं केहि पाहीं ॥ मैं जड़ता वशि तोहि तज्यो तजि मोहि बराबरि होहु

वृथाहीं ॥ १ ॥ पाहन ते तौ कठोर नहीं शवरो गुह ते कहु कौन कुजातो । बानर गोध निशाचर तें जग में नहिं प्रान कोऊ जड़ जाती । देषि महेतु दया इनपै तजि साधन बैठि रहौ दिन राती । दोन अनाथ तजौ रघुनाथ तौ तो सम को विसवास को घाती ॥ छन भंगुर अंग अभंग सरे तिय संग अनंग के रंग भरे । करि जंग तुरंग मतंग हरे रन जोति धरे धन धाम धरे ॥ फिरि अंत असंग निहंग मरे हित के न कछू उपकार सरे । नहिं जानकी नाह को नेह करे जग मो जनम्यों जन नाहक रे ॥

End.—अथ मात्रोदिष्टः ॥ पृष्ट रूपकलामत्र पूर्व युग्मांकमुल्लिखेत । लघूनाम परिप्राज्ञो गुरुणांचाप्य पर्यधः ॥ गुरूणामुपरिन्यस्तैरंकैर्न्येनान्विचक्षणः कुर्य्यादन्त्याक्षरान्ताङ्कान शेषे संख्यां विनिर्दिशेत् ॥ अथ मात्रामेरुः ऊर्द्धादधेस्तलं लेख्यं कोष्ट युगभद्वयन्तः प्रियुमग्मश्च चतुर्युग्म यावत्स्वेष्ट क्रमाद्बुधैः ॥ कोष्टेषु विषमे ब्राद्य वेकैमाहितः शिरोऽङ्कं तच्छिरोऽङ्काभ्यां मध्ये सर्वमपूरयेत एकः सर्व लघुर्भेदस्त्वेकधादि गगा परे इति मात्रोदिष्ट विधिः ॥ ग्रह ९ ग्रहे ९ भ ८ भू १ युक्ते वर्ष पौष सिते तरे पक्षे कुहु तिथौ सूर्ये निर्म्मिता वृत्त दीपिका ममादौ मंगल श्लोके एकैकाक्षर कान्तरात वाचवोयं क्रमान्नाम जातिर्द्दशोपि भाषया । इति मातृदत्त कृतावृत्त दीपिका शुभमस्त्वग्रे संपूर्णम् मिती द्वेजा आषाढ़ बदि ७ चंद संवत १९३१ मुर्लीधर नागर ब्राह्मण शुभं भूयात ।

Subject.—पृष्ठ १ से ३७ तक भिन्न भिन्न प्रकार के कवित्त और सवैयों का संग्रह । ३८ स ७० तक रामायण माला में राम कथा का संक्षिप्त वर्णन । पृ० ७१ से ७६ तक रामाष्टक । पृष्ठ ७७ से ९० तक ज्ञान के दोहे । पृष्ठ ९० से १०६ तक नायिका भेद वर्णन । पृष्ठ १०७ से १३० तक तिथि पक्ष का वर्णन । पृष्ठ १३१ से १७० तक पिंगल संस्कृत ।

No. 275. Angrezjanga by Mathureśa Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—15. Size—8 × 5 inches. Lines per page—38. Extent—285 Anuhṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1915 or A. D. 1858. Date of Manuscript—Samvat 1942 or A. D. 1885. Place of deposit—Bhaiyā Hanumāna Simha, Village Vardahā, Post Office Khairi Ghāṭ, District Baharāich (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ संग्राम महाराज बलभद्र सिंह जी बहादुर का लिष्यते ॥ दोहा ॥ गनपति गौरी शंभु पद, वंदत हौं सिर नाइ । श्री बलभद्र महीप को वरणौ विजय बनाइ ॥ श्रीपाल महाराज के सुत भे श्री

बलभद्र । जुद्ध विषै ऐसो भयो मानो गेरहो रुद्र । बहरायच श्रौ वापसी बैसवारे के राज । श्राये सजि सजि सैन सब बादसाह के काज ॥ श्री हरिदत्त नरेश की बैांड़ी बेगम वास । हुकुम श्राप श्राए सबै बादसाह के पास ॥ लरत लरत श्रंगरेज सों हटे हजूरी फौज । छूटि गयो गढ़ लषनैा मिटी मान की मैाज । सो श्रब ऐसो कीजिये दीजै थान कराय । हुकुम हमारो मानि के सोई करो उपाय ।

End.—सालि श्रह वालि रैकवार भे प्रसिद्धि बड़े रैका ते श्राय करो उत्तर को जोर है । हरि हरिदेव तरवार को प्रकास कीन्हो कीन्हो जमादारी सबै जोरि इकठैार है । रैकवार वंश में सो भूप तैा श्रनेक भए भारी भारी युद्ध करै सब सो मरोर है कहैं मथुरेस इन सब सों श्रधिक भयो राजा बलभद्र सिंह कीन्हों जग जोर है । दोहा । साहब के श्रस वचन सुनि सुनि वलभद्र रिसान । भाजि गये सब भ्रपटि वो हम करि है मैदान ॥ हमरे कुल में ना भई कबहूं ऐसी बात । पांव न टारै षेत सों करि है बड़ो श्रघात । छत्रिन को यह धर्म है धरैं न पाछू पांव । श्रत्र धरैं हम समर में जगत धरावै नांव ॥ इति श्री महाराजा बलभद्र सिंह चहलारी के श्रंग्रज जंग नाम वर्णन समाप्तः । लिषा विष्णुदत्त पाठक संवत १९४२ कातिक मासे शुक्ल पछे रविवासरे ॥

Subject.—इस ग्रंथ में गदर के समय महाराजा बलभद्रसिंह तथा श्रन्य राजाश्रों का ब्रिटिश गवर्नमेण्ट से युद्ध करना श्रोर लखनऊ के नवाब की सहायता करना जिसमें राजा चरदा, बैाड़ी हरदत्त सिंह चहलारी व श्रकैाना रेहुश्रा रैकवार राजाश्रों श्रादि की वीरता का वर्णन है । निर्माण काल का दोहा—संवत से उनईस है वर्ष पन्द्रह परमान । जूझि गयो श्रीपाल सुत श्रंग्रेजों मैदान ॥

No. 276 (*a*). Lalita-lalāma by Matirāma. Substance—Country-made paper. Leaves—70. Size—9 × 7 inches. Lines per page—17. Extent—800 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1870 or A. D. 1813. Place of deposit—Paṇḍita Sukhanandanaji Vājapeyi Kutub Nagara, Sītāpur.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ श्रथ ललित ललाम लिख्यते ॥

दोहा—सुखद साधु जन कैां सदा गज मुख दानि उदार । सेवनीय सब जगत को जग माया सुकुमार ॥ १ कवि मतिराम गणेश कैां सुमिरत सुख सरसात । श्रैान पैान लागै विघन तून तून उड़िजात ॥ २ मद रस मत्त मलिंद गन गान मुदित गननाथ । सुमिरत कवि मतिराम के ऋद्धि सिद्धि निधि हाथ ॥ ३ ॥सवैया॥ सिद्धि बधू कच मंडल के मतिराम मनो मुकुता गन सोहै । पारवती के पयोधर

के पय जोति जगै अति उज्जल योहै ॥ ईस के सीस ससी सुर सिंधु अमी जुत पावन पाय विमोहै। साधुन कैा सुबसी करतार करो मृग के कर मोकर सोहै ॥ ४ ॥

End.—रुचिर अल्प भूषण इते रचि जानत मतिराम। ताको वाणी जगत में विलसै अति अभिराम ॥ ३९२ छप्पय—जब लग कच्छप सेस सहस मुख धरनि भार धर। जब लगि आठैा दिसनि दिग्ध सोभित दिग्गज वर। जब लगि कवि मतिराम सकल सागर महिमंडल। [अनिल अनल जब लग्गि जोति मंडल पाखंडल।] नृप सत्रुसाल नंदन नवल भावसिंह भूपाल मनि। जग चिरंजीव तव लगि सुखद कहत सकल संसार धनि ॥ ३९३। दोहा कंठ करै सो सभनि में सोभै अति अभिराम। सकल सार संसार हित कविता ललित ललाम ॥ ३९४। इति श्री मतिराम बिरचिते ललित ललाम अलंकार समाप्तः ॥

दोहा—संवत नय मुनि वसु शशी इनकैा करैा विचार। जेठ सुदी चैादस भला सूरज सुत को वार। १८७० ज्येष्ठ सुदी १४ ॥

यो देखैा सोई लिख्यैा यथा योग्य व्यवहार। अक्षर चूके होइ तो सो तुम लेहु सम्हार ॥ टीकाराम के पढ़िवे कैां ॥ इति ॥

Subject.—अलंकारों का सोदाहरण वर्णन।

No. 276 (*b*). Lalita-lalāma by Matirāma of Banapura (Cawnpore). Substance—Country-made paper. Leaves—75. Size—8 × 6 inches. Lines per page—20. Extent—800 Anushṭup Śokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1934 or A. D. 1877. Place of deposit—Paṇḍita Kṛishṇa Bihāri Miśra, Editor, Mādhurī, Lucknow.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥

दोहा ॥ सुखद साधु जन कैां सदा गज मुख दानि उदार। वर्ननीय सब जगत कैां जग माया सुकुमार ॥ १। कवि मतिराम गनेस कैां सुमिरत सुख दरसात। श्रैान पैान लागे विघन तूल तूल दुरिजात ॥ २ मदरम मत्त मलिंद गन नाम मुदित गननाथ। सुमिरत कवि मतिराम के रिद्धि सिद्धि निधि हाथ ॥ ३

End.—छप्पय—जब लगि कच्छप कोल राखि सिर धरनि भार धरि। जब लगि आठैा दिसनि यहो सोभित दिग्गज वर ॥ जब लगि कवि मतिराम सकल सागर महि मंडल। अनल अनिल जब लागि जोति मंडल आषंडल ॥ नृप सत्रुसाल नंदन नवल भावसिंह भूपाल मनि। जग चिरंजीव तब लगि रहैं यों कहत सकल

संसार धनि ॥ ३९८ दोहा—कंठ करै सो सभानि में सोहै श्रुति अभिराम। सकल नियम संसार हित कविता ललित ललाम ॥ ३९९ इति श्री कवि मतिराम त्रिपाठी कृत ललित ललाम ग्रंथ अलंकार समाप्त शुभं भूयात् ॥ भाद्र कृष्ण प्रतिपदायां भृगौ संवत १९३४ लिषितमिदं पुस्तकं बलदेव मिश्रेण ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ इति

No. 276 (*c*). Lalita-lalāma by Matirāma of Banapura (Cawnpore). Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—9½ × 5½ inches. Lines per page—16. Extent—800 Anushṭup Ślokas. Incomeplete Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bhagīratha Prasāda Dīkshita, Village Maī, Post Office Beteśwara, District Āgrā.

Beginning.—श्री गणेशायनमः अथ अलंकार ग्रंथ ललित ललाम लिख्यते ॥

दोहा ॥ तामें प्रतिबिंबित मनो संपति जुत सुर लोक। घर घर नर नारी लसैं दिव्य रूप के ओक ॥ चन्द्र मुखन के भैांह जुगकुटिल कठोर उरोज। बाननि सों मनकों जहां मारत एक मनोज ॥ २ जहां चित्त चोरी करै मधुर वदन मुसिक्यानि। रूप ठगत हैं दर्शन कोंग्रार न दूजो जानि ॥ ३ ता नगरी कैा प्रभु बड़ौ हाड़ा सुरजन राउ। रच्यैा एक सब गुननि कैां वर विरंचि समुदाय ॥

End.—जब लगि कच्छप कोल सहस मुख धरनि भार धर। जब लगि आठैां दिसनि दिपि सोहत दिग्गजवर। जब लगि कवि मतिराम सगिर सागर महि मंडल। अनिल अनल जब लगि जोति मंडल आखंडल। नृप सत्रुसाल नंदन नवल भावसिंह भूपाल मनि। जग चिरंजीव तव लगि सुखित कहत सकल संसार धनि ॥ ३६३। कंठ करै सो सबनि में सोभै अति अभिराम। सकल भयो संसार हित कविता ललित ललाम। ३६४ इति मति कृत ललित ललाम अलंकार ग्रंथ समाप्तः शुभं भूयात् ॥

No. 276 (*d*). Matirāma Satasaī by Matirāma of Banapura (Cawnpore). Substance—Country-made paper. Leaves—114. Size—9½ × 5½ inches. Lines per page—18. Extent—719 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bhagīratha Prasāda Dīkshita, Maī, Bateśwara, Āgrā.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मतिराम कृत सतसैया लिख्यते ॥ मो मन तम तोमंहि हरैा राधा कैा मुखचंद। बढ़ै जाहि लषि सिंधु लैां नंद नंदन आनंद ॥ १ ॥

मंजु गुंज के हार उर मुकुट मोर पर पुंज ।
कुंज विहारी विहारिये मेरेई मन कुंज ॥ २ ॥
रतिनायक सायक सुमन सब जग जीतन वार ।
कुवलय दल सुकुमार तन मन कुमार जय मार ॥ ३ ॥
राधा मोहनलाल को जाहि न भावत नेह ।
परियो मुठी हजार दस ताकी आँखिन खेह ॥ ४ ॥

End.—भोगनाथ नरनाथ को रीझयो खीझ अनूप ।
होत भिखारी भूप हैं भूप भिखारी रूप ॥ ७०१ ॥
मुरलीधर गिरिधरन प्रभु पीताम्बर घनश्याम ।
बकी विदारन कंस अरि चीरहरन अभिराम ॥ ७०२ ॥
पीत झगुलिया पहिरते लाल लकुटिया हाथ ।
धूलि भरे खेलत रहे व्रजवासिन्ह व्रजनाथ ॥ ७०३ ॥
तिरछी चितवनि श्याम की लसति राधिका ओर ।
भोगनाथ कों दीजिये यह मन सुख बरजोर ॥ ७०४
मेरे मति में राम हैं कवि मेरे मतिराम ।
चित मेरा आराम में चित मेरे आराम ॥ ७०५ ॥
इति मतिराम कृत सतसैया समाप्तः ॥

Subject.—विविध विषय के ७०५ दोहे का संग्रह ।

No. 276 (*e*). Barawā Nāyikā-bheda by Matirāma. Substance—Country-made paper. Leaves—34. Size—10 × 4 inches. Lines per page—6. Extent—204 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1904 or A. D. 1847. Place of deposit—Paṇḍita Krishṇa Bihārī Miśra, 318 Mīrjān Lane, Lucknow.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नायका भेद बरवा छंद दोहा लिख्यते ॥ कवित कहा दोहा कहा तुलै न छप्पै छंद । विरचो यही विचारि कै यह बरवा रसकंद ॥ १ ॥ बेधक अनियारो बड़ो समुझे चतुर सुजान । सुनत जात चित चाव पै यह बरवै के बान ॥ २ ॥ मंगलाचरण बरवा बंदैा देवि सरदवा पद कर जोरि । बरनत काव्य बरैवा लगै न खोरि ॥ ३ ॥ स्वकीया लक्षन दोहा—लाजवती निसुदिन पगी निज पति के अनुराग । कहत स्वकीया सील में ताकै पति बड़ भाग ॥ ४ ॥ उदाहरन बरवा—रहत नैन के कोरवा चितवनि छाय । चलत न पगु पैजनिया मगु ठहराय ॥ ५ ॥

End.—शिक्षा करन—थके बैठि गैाडवरिश्रा मोड़हुं पाइ।
पथत न पेख गगमिग्रा विजन डोलाइ ॥ १६३ ॥
उपालंभ—चुप ह्वै रहेसि संदेसवा सुनि मुसुकाय।
पिय निज हाथ बिरवना दीन्ह पठाय ॥ १६४ ॥
परिहास - विहंसत भोंह चढ़ाए धनुष मनोज।
लावत उर अपठनवा पेठि उरोज ॥ १६५ ॥

दोहा—लक्षन दोहा जानिए उदाहरन बरवान।
दूनों के संग्रह भए रस सिंगार भ्रिय मान ॥ १६६ ॥
यह नवीन संग्रह सुनै जो देखै चित देइ।
बिबिधि नायका नायकनि जानि भली बिधि लेइ ॥ १६७ ॥
इति श्री नायकादि भेद संपूर्णम् सम्बत् १९०४ जे० शुभम् ॥

Subject.—मंगलाचरण, स्वकीया, मुग्धा, अज्ञात यैावना, ज्ञात यैावना, नवोढ़ा, विश्रब्ध नवोढ़ा, मध्या, प्रौढ़ा, परकीया, ऊढ़ा, क्रिया विदग्धा, बचन विदग्धा, लक्षिता, अनुशयना वर्णन पृ० १—९ तक।

गुप्ता, मुदिता, कुलटा, सामान्या, अन्य संभोग दुःखिता, प्रेम गर्विता, रूप गर्विता, प्रोषित पतिका, खंडिता, कलहंतरिता, विप्रलब्धा, उत्कंठिता वर्णन पृ० १०—१९ तक।

वासक सेज्जा, स्वाधीन पतिका, अभिसारिका, प्रवत्स्यत्पतिका, आगत पतिका, उत्तमा, मध्यमा, अधमा, नायका सभेद, अनुकूल, दक्षिण, धृष्ट, शठ, उपपति, बैसिक, प्रोषित नायक, बचन चतुर, क्रिया चतुर, दर्शन, मंडन, शिक्षा, उपालंभादि वर्णन पृ० २०—३४ तक।

276 (*f*). Rasaraja by Mātirāma. Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—10 × 6½ inches. Lines per page—10. Extent—938 Anuṣṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1780 or A. D. 1723. Place of deposit—Paṇḍita Śasi Śekhar Śukla Kañjahī, Village Śivalālarāma, Paṇḍita-kā-purwā (Itauñjā Pachhima), Post Office Gaurīgañja, District Sultānpur.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रसराज ग्रंथ लिख्यते ॥ दोहा ॥ होतु नायका नायकहि आलंबित शृंगार ॥ ताते बरनो नायका नायक मति अनुसार ॥ १ ॥ अथ नायका लक्षनं ॥ दोहा ॥ उपजतु जाहि बिलोकि कै चित्त बीच रस भाउ ॥ ताहि बषानत नायिका जे प्रबीन कबिराउ ॥ २ ॥ उदाहरनं ॥ सवैया ॥

कुंदन को रंग फीको लगै झलकै ऐसो अंगान चारु गाराई ॥ आंखिन को अलसानि चितौनि मैं मंजु विलासन की सरसाई ॥ को विन मोल विकात नहीं मतिराम लहै मुसक्यानि मिठाई ॥ ज्यौ ज्यौं निहारिए नेरे ह्वै नैननि त्यौं त्यौं खरी निकसे सो निकाई ॥ ३ ॥ दोहा ॥ रंध्र जाल मग ह्वै कढ्यौ तिय तन दीपति पुंज। झिझिया कैसों घट भयो दिनहो में वन कुंज ॥ ४ ॥ तरुन अरुन एडोन के किरिनि समूह उदोत ॥ वेनो मंडल मुकुर के पुंज गुंज रुचि होत ॥

End.—जड़ता लक्षनं ॥ उतकंठा ते होत है अचल चित्त अरु अंग । तासों जड़ता कहत है कवि कोविद रसरंग ॥ ४०५ ॥ उदाहरनं ॥ सुधेव सुवासु रहै रंगरागते उदास भूलि गई सुरत सकल पान पान की । कवि मतिराम एक अनमिष नैन बूझे कहति न बात औार सुनति न आन की ॥ थोरी सी हंसनि मांह गोरो ऐसो डारि करि भोरी करो गोरो ते किशोरी व्रषभान को । तबते निहारो वह भई ह पषान कैसी जबते निहारो रुचि मोर के पषान की ॥ ४०६ ॥ दोहा ॥ अनमिष लोचन बाल यह यातो नंद कुमार ॥ मोचु गई जरि बीच ही विरह अनल की झार ॥ ४०७ ॥ समुझि समझि सब रीझि हैं, सज्जन सुकवि समाज ॥ रसकनि के रस को कियो भयो सकल रसराज ॥ ४०८ ॥ इति श्री मतिराम कृत रसराज समाप्तं शुभ मस्तु ॥

Subject.—नायिका भेद वर्णन ।

No. 276 (*g*). Rasarāja by Matirāma. Substance—New paper. Leaves—50. Size—9 × 7 inches. Lines per page—24. Extent—900 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1896 or A. D. 1839 Place of deposit—Paṇḍitā Raghunātha Prasāda Chaube, Eṭāwah.

Beginning.—ध्यावै सुरासर सिद्ध समाज महेशहिं आदि महामुनि ज्ञानी । योग में यंत्र में मंत्र में तंत्र मे गावैं सदा क्रुति शेष भवानी ॥ संकट भाजत आनन को द्युति सुंदर दंड उदंड सो जानी । ध्याय सदा पदपंकज को मतिराम तबै रसराज वखानी ॥ १५ दोहा ॥ श्री गुरुचरण मनाइ कै गणपति को उर ध्याइ । रसिक हेत रसराज किय सुकाबन को सुखदाइ ॥ २ कवितार्थ जानैं नहीं कछुक भयो सम्बोध । भूल्यो भ्रम ते जो कछुक सुकवि पढ़ेंगे शोध ॥ ३ ॥ वरणि नायका नायकनि रच्यो ग्रंथ मतिराम । लीला राधा रवन की सुंदर यश अभिराम, ॥ ४

End.—दोहा ॥ देखि परै नहिं दूबरो सुनिये श्याम सुजान । जानि परै परियंक में अंग आंच अनुमान ॥ २१ जड़ता लक्षण ॥ दोहा ॥ उत्कंठादिक ते जो ह्वै पचल चित्त अरु अंग । तासो जड़ता कहत हैं जे प्रवीण रसरंग ॥ २२ उदाहरण—कवित्त—सूंघैन सुवास रहै रंग रागते उदास भूल गई सुरति सकल खान पान कौ । कवि मतिराम इकटक अनमिष नैन बूझे न कहत बात अरु समझे न आन को ॥ थोरी सी हंसनि ओट गोरी ऐसी डारि ठग बौरी करी गोरी तैं किशोरी वृषभान को ॥ तब ते विहारी वह है भई बखान कैसी जब ते निहारी रुचि मोर के पखान की ॥ २३ ॥ दोहा ॥ अनमिष लोचन बाल के याते नंदकुमार । मोव गई जरि बोच ही विरहानल की झार ॥ २४ ॥ समुझ समुझ सब रीझिहै सज्जन सुकवि समाज । रसिकन के रस को कियो नयो ग्रंथ रसराज ॥ २५ ॥ इति श्री रसराज ग्रंथ समाप्तः ॥ सम्वत् १८९६

No. 276 (*h*). Rasarāja by Matirāma of Banapura. Substance—Country-made paper. Leaves—168. Size-8 × 5 inches. Lines per page—12. Extent—756 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—Panḍitā Kṛishnā Bihārī Miśra, Sītāpur, Gandhaulī, Sidhaulī.

No. 276 (*i*). Rasarāja by Matirāma. Substance—Country-made paper. Leaves—32. Size—15 × 6 inches. Lines per page—24. Extent—860 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1909 or A. D. 1852. Place of deposit—Lālā Bhāgawata Prasāda, Village Sadhuwāpur, Post Office Sisaiya, District Bahrāich.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ राधा कृष्णायनमः ॥ अथ रसराज लिष्यते ॥ श्लोक ॥ श्री कृष्ण मुरलीधरं गिरिधर पृथ्वीधरं सुंदरं ॥ विधु दशा सुवर्ण पोति वशानं वृन्दावने क्रीडनं ॥ कालिन्द्री तट गायन मुनिवर गोपी मनोरंजनं ॥ श्री राधा वल्लभं ललितं वन्दे सदा सुन्दरम् ॥

No. 276 (*j*). Rasarāja by Matirāma. Substance—Country-made paper. Leaves—51. Size—7 × 6½ inches. Lines per page—26. Extent—1,989 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—

Ṭhākura Basanta Siṁha, Village Udawā, Post Office Shāhmau, District Rao Bareli.

Beginning.—पृष्ट २ से प्रारम्भ। पति प्रीति सोहाई। तेरे सुसील सुभाय भट्ट कुल नागिन को कुल कानि सिषाई। तेही मनो पति देवता के गुन गौरि सवै गुन गौरि पठाई ॥ १२ ॥ दोहा ॥ जानत सौति अनीति है जानत सषी सुनीति। गुरजन जानत लाज है प्रीतम जानत प्रीति ॥ १३ ॥ त्रिविधि सकिया वरनिये प्रथमहि मुग्धानाम। मध्या पुान प्रौढ़ा गनै बरनत कवि मतिराम ॥ १४ ॥ मुग्धा लक्षन वर्णन ॥ २ ॥ अभिनव योवन आगमन जाके तन में होइ। तासो मुग्धा कहत हैं कवि कोविद सब कोइ ॥ १५ ॥ जथा ॥ नेक मंद मधुर कपोल मुसकान लागे नेक मंद गमन गईंदनि को चाल भो। रंच ऊंचो अंचल ऊरोजन के अंकुरनि बंक डोठि नैन जुग नेसुक विसाल भो ॥ मतिराम सुकवि रसीले कछु बैन भये वदन सिंगार रस वेलिय × × वाल भो ॥ वाला तन जोबन रसालि उलहत हाल सौतिन के साल भो निहाल नंदलाल भो ॥

No. 277. Antariyā ki Kathā by Meḍaīlāla Awasthi. Substance—Country-made paper. Leaves—17. Size—7 × 4 inches. Lines per page—12. Extent—153 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1905, or A. D. 1848 Place of deposit—Paṇḍita Tribhuwanadatta, Village Fakharpur, Post Office Baharāich.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अंतरिया कथा लिष्यते ॥ सोरठा ॥ गणपति कृपा निधान, बुद्धि रासि शुभ गुण सदन ॥ देहु मोहि वरदान कथा अंतरिया की कहैां ॥ १ ॥ उमा शंभु संवाद, परम रुचिर मंगल भवन, जेहि सुनि मिटै विषाद, दोष अंतरिया ना रहै ॥ २ ॥ दोहा ॥ संभु भवानी सरस्वती, उर गौरि माइ प्रसाद, दोष निवारन जगत हित कहव सकल संवाद ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ परम रम्य गिरवर कैलासा ॥ सदा जहां सिव उमा नेवासा। सिद्धि परसिद्ध तप हित मुनि देवा। करै जोग जप तप हित सेवा ॥ षटमुख आदि संभु गन जेते ॥ हरिपद सेवत प्रेम समेते ॥ विपिन वाग मानस अति सोहै। वरनै छवि अस कवि जग को है ॥

End.—इति श्री मेड़ई लाल अवस्थी विरचितायां उमा महेस संवादे भै रैां निमित प्रसादे कथा अंतारी समातम शुभमामस्तु सवण मास कृश्न पछे तिथो

चौदँमियां मनिवमरे श्री संमेतु १९०५ लेषाक दोनदयाल कयेस्थ बमि सहिपुर ग्रमे नाई ग्राताटे तस्यौग्रात्मज बषतावर लाल लिषाते जा प्रति देषा सो लिषा मम दोषो नाहि शुभ मस्तु राधा कृश्न की जे रामचन्द्र सावामी की जै ॥ राम राम राम राम राम राम राम ।

Subject.—अंतरिया यानी अतरा (इकतरा) रोग को कथा का वर्णन । इसमें महादेव पारवती का संवाद है । एक व्यापारी बनिज का गया था उसकी स्त्री घर पर थी । उस व्यापारी का भेष बना कर एक प्रेत उसके घर में आकर रहने लगा । जब वह व्यापारी घर आया, ता अपने रूप का मनुष्य देख कर दुखी हुआ, स्त्री भी घबड़ाई, अंत में राजा के यहां न्याय के लिये गये । राजा भी न्याय न कर सका । तब न्याय के लिये गड़रिया बुलाया, उसने कहा कि चमड़े के छेद होकर जा मसक में घुस जावे वही स्वामी है । प्रेत तुरंत ही घुस गया और गड़रिया ने उसे बंद कर दिया । मुख्य स्वामी अपनी स्त्री का लेकर घर चला गया ।

No. 278. Megha-prakāśa Jyotish by Megha Munī of Phaguwārā (Punjab). Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—$8\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches Lines per page—40. Extent—870 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1817 or A. D. 1760. Date of Manuscript—Samvat 1895 or A. D. 1838. Place of deposit—Bābā Bhāgawatadāsa, Village and Post Office Jarwal, District Baharāich (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मेघमाला लिष्यते ॥ दाेहा ॥ परम पुरुष घट घट रम्यो ज्योति रूप भगवान । सकल रिद्धि सुख देत प्रभु नमत मेघ धरि ध्यान ॥ वाहन जाको हंसासित अार सिंह सिव तीय । सिवा भवानी सारदा सकल एक नहिं बीय ॥ चरनन मो युग तासु के आगम वानी दाह । तिस प्रसाद इस ग्रंथ का रचौं सकल सुख थाह ॥ चौ० ॥ गुरु समान जग में नहिं कोई । मूरख पंडित करता सोई ॥ जिमि दीपक मंदिर तिमि नासे । गुरु ज्ञान अज्ञान विनासे ॥ षटपट छंद ॥ सकल वस्तु को भेद ज्ञान अज्ञान बतावत । नरक स्वर्ग की वात अार शिव पद दिखरावत ॥ ब्रह्मा विष्णु महेस ताहि गति कोइ न जानत । सो लहि है परसाद जु गुरु के वचन पिछानत ॥ तीन लोक ब्रह्मा रच्यो मृत्यु स्वर्ग पाताल कवि सो गुरु की कृपा दिसै वंदत मेघ त्रिय काल कवि ॥ दोहा ॥ ज्योतिष ग्रंथ अपार मग जानत इक जगदीश । मानव सुर जानत नहीं । ताते मोमति कीश ॥

End.—सांवल छंद ॥ मुनि शशि वसु को जान महो संवत इहु परषति कातिक शुदि गुरुवार मान पंचम तिथि भाषत ॥ उत्तराषाढ़ नक्षत्र दिवस में एकवि को जति। सो घटि अक्षर होइ ताहि कवि सुधि करि लीजति ॥ लीलावती छंद ॥ ए देश जलंदर शोभै सुन्दर नाम द्वावा ठौर कहियो। शुभदान पुन्य की ठौर यहो है मानौ सुर पुर आन रह्यो पंडित नर। सो मै कवि ते भारी गीत बजित्र रंग सियो गृह गृह मंगलचार जु होवहि तामेपुर इक इहु बसियो। सकल रिद्ध कर सोभ है फगुवारा शुभ धाम। तहां मेघ कविता करो पञ्चो विधि मन आन। चूहड़मल ये चैाधरो फगुवारे को राइ। चतुर सैन्य करि सोभ है जिमि उड़गन शशि थाइ। सब कविता सो वेनती कहत मेघ कर जोर। करौ सुद्धि इस ग्रंथ की अधिक कह्यो जिहि ठौर। बालक हठ ज्यों बात को पंडित करत विचार। कहो अशुद्धिहि होइ कछु लीजौ कवित सुधार ॥ गोता छंद ॥ कर सरब छंद मिलाइ इकठा कहो संख्या यासकी। द्वात्रिस अक्षर के हिसाबै आठ सै उनचास की। इन्द्र छुन्द षट सत अरु उनीसै कहो कवि इहु भास को सजानु संख्या टोऊ जातै मेघ माल विलास की ॥ दे।० ॥ कविजन कविता को सदा छिन छिन होइ अानंद। बसौ ग्रंथ जग चिर लगै जैां लैा रवि थिति चंद ॥ इति श्री मेघ प्रकाश मुनि मेघराज विरचिते सगुन नाम चतुर्थोध्याय ॥ ४ ॥ लिषितं मिश्र गुलजारो पटियाले मध्ये पोथी ज्वाला गिरि योग्यः सं० १८९५ आश्विन शुक्ल तृतीया भृगुवासरे समाप्तम् ॥

Subject.—परमात्मा की महिमा गुरु की महिमा, ग्रंथ रचने का कारण कातिक मास, दिवाली, अगहन, पूष मास, माघ मास का फल, माघ, पूरन मास का फल, माघ वदी नैामो का फल, फालगुन मास का फल, होली विचार चैत्र मास का फल, चेत्र बदी पड़वा का फल, वैसाख मास का फल, जेठ मास का फल, जेठ वदी पड़वा का फल, आसाढ़ मास फल, आसाढ़ मास में कल्लो रोहनो का विचार, आषाढ़ पूर्णिमा का फल आषाढ़ सुदी पूनम को ध्वजा की पवन का विचार, सावन, भादो मास का फल, ग्रह नक्षत्र वर्षा लक्षण, चार थंभ समय का विचार, रोहणी चक्र, ग्रह राशि फल, मूसल जोग, पंगला जोग, मृत्यु जोग, ग्रह उदै फल, शुक्र उदय फल, शुक्र चन्द्र फल, पूस मास संक्रांति का फल, कर्क संक्रांति का फल, मोन संक्रांति का फल, संक्रांति सातो बैठी ठाढ़ी का फल, संक्रांति वर्षा का फल, मास क्षय का फल, तेरह दिन के पाख का फल, पक्ष क्षय का फल, तिथि क्षय का फल, तिथि अधिक का फल, अधिक मास का फल, एक मास में पंचवार का फल, रवि शशि कुंडल पारवा का फल, दुकाल लक्षण, चन्द्रमा उदय का फल, चन्द्र चढ़े के रंग का फल, मंडलों का फल वायव्य मंडल का फल, वारुण मंडल का फल, महेन्द्र मंडल

का फल, चारो मंडल के फल, संक्रांति समय मंडल मध्य शशि का फल, समय के राजा का फल, मंत्री का फल, ग्रहण विचार, भू कंपन लक्षण, ग्रह वक्र अतीचार फल, ग्रहराशि विचार, गोल योग, वर्षा कुयोग, अर्घकांड, अर्थ संक्रांति कांड, वृहस्पति कांड, शनि विचार, नक्षत्र शनि कूर्म चक्र विचार पारसी मतांत मुहर्रम के गुरें का विचार, वर्ष दिन बरते तिसका फल (इंगलिश में)। रविवारे गुरेर का फल, सोमवार, मंगलवार, बुध, गुरुवासरे, शुकवारे, शनिवारे गुरेर का फल, राशि स्वामी फल ग्रह स्थिति, उत्पात फल सगुन अध्याय, वर्षा लक्षण, इन्द्र धनुष का फल, छींक सगुन, अंग स्फुरण सगुन, रासभ वाक फल, जंबू वाक फल, दक्षिण फल, शिवा वाक दिन प्रथम जाम फल, किरलो सगुन का वर्णन, सातवार का फल, अंग फल, कविराज मेघ मुनि के ग्राम आदि का वर्णन।

No. 279(*a*). Vyādhināśa Vaidyaka by Meharwānadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—60. Size—15 × 5 inches. Lines per page—18. Extent—1,140 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written Prose and verse. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1906 or A. D. 1849. Place of deposit—Kumāra Bachchā Sāheb Raīs, Gudhuāpur, Post Office Chilwāriyā, District Baharaich (Oudh).

Beginning.—श्रीमते रामानुजायनमः अथ वैद्यक व्याधि नास नाम ग्रंथ लिष्यते ॥ दोहा ॥ श्री गुरु परमानंद प्रभु चरण कमल मन लाइ। मेहरवान दास प्रेरक परम परमातमहि मनाय। रक्षा मय सो जग रच्यो त्रिगुन भयो विस्तार कम काल माया विवस करि राष्यो संसार ॥ सतगुरु वैद मिले विनु कोइ न होत अरोग व्याधि असाधि वचै कबहु हानि लाभ भय सोग ॥ त्रिगुण त्रिदोष लग्यो जगत भिषक मिले गुरु जाहि। नाम रसाइन औषधी निरुजभ यो-निर्वाहि ॥ मंत्र जंत्र गुन गान प्रभु प्रगस्यो जीवन हेत ताहि विधि औषद जगी पावत होत सचेत ॥ दैहिक दैविक भौतिकौ लगो ताप त्रय जीव। मेहरवान दास भगवान विन सुमिरन विपति अतीव। संचित प्रारब्धक करम क्रिया मान ये तीन। दुष सुष भोगवत जीव यह देह संग कतकोन ॥ आदि व्याधि लागी जगत जव जाको जाहत। मेहरवान दास संसे मिटै मिले गुरु करि-त। आदि व्यथा है मानसी व्याधि सरीर संजोग। सुमिरन ते मन दुष नसै औषधि ते तन रोग ॥

End.—अथ दसमूल नाम कथन। उभय गुषरू, पाड़री अरनी स्वरन नाम विथवन वेलि कुम्हरि सैानावली मूल दस ठाम। पंचलोन नाम ॥ सांभरि षारो

बिडकहैा सेधा सोचर सोई, लवन पांच ये सांच हैं चर दोये के होइ ॥ अथ कदरा देषै के विधि। बड़े सवेरे घरो भरि रात्रि जब बाकी रहै तब रोगी का एक वासन में मुतावै सो मूत जब घाम होइ तब घाम में धरै तब तेल में सींक बोरि के एक बूंद छोड़ै। जो तेल ऊपर रहै तो रोगी साध्य जानैा जो बूंद डूब जाय तो रोगी मरै। धनुही कार मूत्र बढ़ै तैा मूत्र दोष जानिये छत्रकार होय तैा दीर्घ जीवी। मूत छूटि कै कई बूंद होई तो बूंद गिनके मरे के दिन बताइ देउ। पीत वर्ण पित रोग सित वर्ण कफ रोग। कृष्ण वरण वात रोग, निला रंग त्रिदोष गंध आवै रोगी मरै निर्मल नीर सम मूतै रोग विमुक्ता जानैा ॥ साध्य असाध विचार। एक चोढ़े वासन में जल भरै घाम में धरै रोगी को सूर्ज दिषावै सूर्ज संपूर्ण देषै तो रोगी साध्य सूर्ज न देष परै तैा रोगी मरै सूर्ज के बीच छेद बतावै रोगी अठयें दिन मरै संपूर्ण सूर्य प्रकास देषै तैा दान देइ बैद को खुस करै रोगी अच्छा होय।

इति श्री व्याधि नास नाम ग्रंथ मेहरवान दास कत संग्रह समाप्तं ॥ लिषतं रघुवर सषा मिर्जापूर निवासी संवत १९०६ श्री राम जी की जै ॥

Subject.—नाड़ी परीक्षा, तैाल प्रमाण, धातु शोधन मारण उपधातु शोधन आदि, ज्वर चिकित्सा क्वाथ आदि का वर्णन, रसों का भली प्रकार वर्णन चूर्ण गोली तैल आदि, घृतादि औषधियों का संग्रह करना उनकी पहिचान, आदि का वर्णन

No. 279 (*b*). Vyādhināśa by Paṇḍita Meharwānadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—121. Size—$8\frac{3}{4} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—8. Extent—1,320 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1851 or A.D. 1794. Date of manuscript—1248 Hijri or A.D. 1870. Place of deposit—Rājya-pustakālaya, Bhingārāja, District Baharaīch.

Note.—विशेष No. 279 (*a*) में लिखा गया है।

No. 280. Kavitta Saṅgraha by Mōhana kavī. Substance—Country-made paper. Leaves—6. Size—$9\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—22. Extent—60 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Badarīnātha Bhaṭṭa, Lucknow University, Lucknow.

Beginning.—अथ कवित्त मोहन के लिख्यते ॥

उससि उसामति है औ सवै अवासु दहै वैरिन कौ वासु दहै परीये। मानतिन सौंहनि तनैनो कै कै भौहनि झुकति भांर भौंहनि हीं कैसे कै उबारियै॥ नैननि लगनि हिरदै को हो लगनि तन विरह अगिनि सिलगत अति जरीये। देषे निरमोहो ते विशेष सब तोहि पिये तेरे हिए नाहीं पै परखैया हो मरीयै॥

End.—जियराई जानत है नियरो रहत तन छिन छिन हियरो दरस दुष दाहिये। पेम लपटाए वेन नैननि हो समझै अलि नैनन सुनै जो वार कोटि अवगाहिये। तुम कह्यो हिरदे सु हम कहौ परगट लाइन न नेह के निडरि नेकु ताहिए॥ इकटक चाहत हैं याते न प्रगट होहि चाहको चाहनो मुख चाहे हू न चाहिए॥ इति।

Subject.—१७ शृंगार के कवित्तों का संग्रह।

No. 281. Kapota—lilā by Mōhanadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—$8\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—9. Extent—51 Anushṭup Ślokas. Appearance—Ordinary. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1833 or A.D. 1776. Place of deposit—Paṇḍita Śitala Prasāda, Village Fatehpur, District Bārābanki (Oudh).

Beginning.—श्री मतेरामानुजाय नमः॥ उद्धारावतो एकांत निवासा। हरि कौ पूछे उद्धव दासा। ज्ञान विचार विवेक सुनावौ। मेरे मन कौ तिमिर नसावौ। कौन पुरुष कैसी तेरी माया। कहौ कृपा करि त्रिभुवन राया। कैसो विधि प्राणी सुष पावै। काल व्याल भय दूरि बसावै॥ २॥ श्री भगवान कहै निज ज्ञाना। तत्त्व उपदेश सुनो दैकाना। सकल चराचर मो मै लेखा। मोते भिन्न कछू नहि देखा॥

End.—सब परिहरि हरिसों रुचि कीनो। ताते मैं इनको बुधि लीनो। ज्यों सब नरपति त्यागेउ राजा। करि हरि भजन समारे काजा। अब मैं ज्ञान कह्यो नाना विधि। निज मन को सौपों अपनी अपनी निधि। श्री भगवान जू बोले वाणी। उद्धव को अंतरगत जानी। जो इह लीला सुनै अरु गावै। ज्ञान विराग भक्ति उपजावै। शेष महेश पार नहि पावै। मोहनदास यथा मति गावै। इति श्री दत्तात्रेय कपोतलीला मोहनदास कृत संपूर्ण॥

Subject.—उद्धव का ईश्वर से प्रश्न, पुरुष कौन है, माया क्या है, और मनुष्य सुख कैसे पा सकता है। ईश्वर का उत्तर, संपूर्ण संसार मुझ में है, जो अनन्य भाव से मेरी सेवा करै वह संसार से तर जावे। यदु का एक मुनि को देख कर शंका उपस्थित करना कि आप को संसार से विरक्ति कैसे हो गई, मुनि का अपने चौबोस

गुरू करने का कथन और उनको गुरु बनाने का कारण। उनको अपने गुरुओं के नाम इस प्रकार बताना (१) अवनि, (२) मारुत, (३) जल, (४) ४ अग्नि, (५) आकाश, (६) शशि, (७) रवि, (८) कपोत, (कपोत कपोती का प्रेम व्यवहार, दोनों का घर बनाना, सुत उत्पन्न होना, उसकी बोली से प्रसन्न होना, बालक को भोजन के लिये कुछ लेने को जाने पर बालक का जाल में फंसना कपोतिनी का भी स्वयं फंस जाना, कपोत का भी फंस जाना) (९) अजगर, (१०) सागर, (११) भृंग, (१२) कुरंग, (१३) मतंग, (१४) पतंग, (१५) मीन, (१६) मधु मक्खी, (१७) पिंगलानारी, (१८) कुररी पक्षी, (१९) कुमारी की चूड़ी, (२०) बालक, (२१) भृंगी, (२२) सर, (२३) भुजंगम और (२४) सब सरकारों को देख कर चरण कमल से पृथक् न होना। उपसंहार में अपनी ईश्वर भक्ति का यही कारण बताना।

No. 282(*a*). Ganeśa Chauthi kī Kathā by Motilāla. Substance—Country-made paper. Leaves—50. Size—$7\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—10. Extent—390 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Ordinary. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1862 or A. D. 1805. Place of deposit—Paṇḍita Bhawānī Bakśa, Village Utārā, Post office Musāfirkhānā, District Sultānpur.

Beginning.—पृष्ठ २—कृपा सिंधु उर अंतर जामी × × × × छल कीन्हो जिरजोधन राजा॥ जीति लीहउ मोहि राजि समाजा। अनुज समेत जुबती सग लाए॥ कानन फिरहु दुहु दुख पाए॥ तेहि ते प्रभु विनवउ कर जोरी॥ केहि विधि पाइ राजि बहोरी॥ कृष्ण कहा सुनि वचन नरेसा॥ तुव हित लागि कहौं उपदेसा॥ पूजहु गणपति कह चितु लाइ॥ जेहि पूजे संकट संकट मिटि जाइ॥

End.—गज वदन चरित्रं वोछुण दंतं मुनि रंजन वरनत संतं। गणपति वरदायक सब सुषलायक सुर मुनिभायक भानु जुतं। सबही सुषकारी जग उपकारी। सिद्धि सुधारी शिव नंदा। जे व्रत मन लावहि हरिपद पावहि सुनत महामन सुषकंदा। गणपति उर दीजै सब सुष कीजे सुनहु धर्म सुत भूपा। तन मन सुख सातसो वरदाता गणपति का जे ध्यावहि सो नर परहि भव कूपा। दो०। गणपति का व्रत जे करहि ध्यान धरहि चित लाइ। ताके सर्व मनोरथ पुरवहि श्री जदुराइ। ५२ इति श्री वेदव्यास वानी मोतीलाल भाषा कृतं गणेश चौथिनी कथा समाप्तं शुभ मस्तु संवतु १८६२ सन् १२१३ कार शुक्ल पक्ष १५ लिषियत वरवेहा लिया जो देषा सो लिषा।

Subject.—(१) पृ० १ से २ तक--धर्मराज का कृष्ण से वन से घर शीघ्र पहुंचने के निमित्त साधन पूछना

(२) पृष्ठ ३ से ४ तक—गणेश महिमा। पृ० ५ से १३ तक—उमा के घर नारद आगमन, उमा से नारद का कथन कि शिव मुंडमाल क्यों धारण किये हैं। जब उमा न बता सकी तो शिव से पूछने के लिये कथन। शिव के आने पर उमा का उनसे उक्त शंका करना। शिव का बताना कि यह तुम्हारे उन मुंडों की माला है जब तुम्हारा शरीरपात होता है। शिवा का कथन कि आपके अनेक जन्म क्यों नहीं, शिव कथन कि बीजमंत्र जानने के कारण। शिवा का भी बीज-मंत्र पूछना सब जीवों का भगाना, १२ वर्ष तक बीज मंत्र कथन, अंडे से तोते का श्रवण, पार्वती का सो जाना शिव जी का जान कर शुक के पीछे धाना। उसका व्यासाश्रम में जाना, शुकाचार्य्य का जन्म।

(३) पृ० १४ से २६ तक—शिव का उमा को निकाल देना, षडनन के पास पहुंचना तपस्या के लिये माता से प्रार्थना, गणेशोत्पत्ति।

(४) शिव गणेश युद्ध, गणेश शिरच्छेदन, उमा की प्रार्थना पर हाथी का सिर लगाना गणेश का बुद्धिमान सिद्ध होना।

(५) पृ० २७ से ४४ तक—गणेश पूजन करने वालों का इतिहास।

(६) पृ० ४५ से ५० तक गणपति पूजन विधि।

No. 282(*b*). Ganeśa Kathā by Motīlāla. Substance—Country-made paper. Leaves—13. Size—18 × 5 inches. Lines per page—24. Extent—450 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1910 or A. D. 1853. Date of Manuscript—Samvat 1940 or A. D. 1883. Place of deposit—Ṭhākura Chhatra Siṁha, Kaṭailā, Post Office Fakharpur, District Baharāich (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः अथ गणेश कथा लिष्यते ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ दोहा—बंदि चरण रवि दिज हरि हर गिरि मनुलाइ। सैल सुता सुत की कथा कहो सुनों मनुलाइ ॥ रामकृष्ण भ्रातन सहित सिय रुकुमिनि तिय धाम। बुद्धि वढावै सकल मिलि पुनि पुनि करौं प्रनाम ॥ कथा कहैं गण-नाथ की पार उतार वलवीर। बुद्धि हीन निज जानि कै सुमिरैा तनै समीर। राज्यो वाच। एक समै वूभत भये हरिहि जुधिष्ठिर राइ आनि महा संकट परे केहि उपाय ते जाइ। चैापाई ॥ सुनहु कृष्ण देवन के देवा। निगम शेष विधि पायैा

न भेवा ऐसे प्रभु तुम दीनदयाला। सदा करहु दासन प्रतिपाला॥ विपति हमारी विलोकहु स्वामी। कृपासिंधु तुम अंतरजामी छल कीन्हें जिरजोधन राजा। जीति लियो महि राज समाजा॥

End.—घृत सो होम करै चित लाई। ताको बुद्धि होय अधिकाई॥ मास असाढ़ चैाथ अंधियारी। कंवल फूल कर लेइ विचारी। सर्पिक सहित होम चित लावै सो नर मन वांछित फल पावै। सावन कृष्ण चैाथि अब आवै। कुसुम सिहोरे केर मंगावै। सबलिहु सहित नैघृत सो मोहा। देव दैत्य ताके वसि होही। दोहा। इहि विधि वारह मास करि कह्यो भूप समुझाई। विधि सो पूजहु गण पती सब संकट मिटि जाइ। चैापाई—यह सुनि धर्म तनय सिर नाये। हरि पद को रज नयन लगाये। एहि विधि कह्यो कृष्ण वृत रीति। तेहि विधि राजै कीन्ही प्रीति॥ गणपति की महिमा अपारा। मारि सत्रु कीन्हें बैषारा। सुख सो राज महीपत कीन्हा। गणपति की दाया लिषि लीन्हा। जो गणपति को वृत चित लावै। रिद्धि सिद्धि अणमादिक पावै। नारी पुरुष करै व्रत जोई। सर्व सिद्धि फल पावै सोई। जो यह कथा सुनै अरु गावै। ताके काल निकट नहिं आवै। गणनायक की कथा यह संस्कृत मध्य भुआल। जथा बुद्धि भाषा रची पंडित मोतीलाल। इति श्री मोतीलाल पंडित विरचितायां गणेश कथा समाप्तम् संवत १९१० कातिक वदी ११ गणेश कथा लिष्यते देवीदीन गुजवली सुभ गुरुवासे।

Subject.—गणेश की कथा

No. 282(*c*). Gaṇeśa Purāṇā Bhāshā by Motīlāla. Substance—Country-made paper. Leaves—19. Size—8 × 5 inches. Lines per page—22. Extent—318 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1893 Samvat or 1836 A.D. Place of deposit—Ṭhākura Maheśa Siṁha, Village Kohali Bichaī Singh kā Puravā, Post Office Kesargañja, District Baharāich.

Beginning.—श्री गणेशायनमः अथ पोथी गणेश पुराण प्रारंभः॥ दोहा॥ एक रदन गज वदन को पगु वंदो कर जोरी। कृपा करहु सिव संकर बुद्धि बढ़ै जेहि मोरि॥ व्यास आदि कवि पुंगवा नारद आदी मुनीसा। दिनकर ब्रह्मा सेस गुरु सब कहं नावो सीसा॥ चैा०। राजा जुधीष्ठिर उवाच। सुनैा स्वामी तुम मदन गोपाला। सदा करैा संतन प्रतिपाला। विपति हमारी विलोकहु स्वामी। कृपासिंधु उर अंतरजामी छल कीन्ही जुरजोधन राजा। जीती लीन्हीं मोर राज समाजा॥ बन निकारि दीन्ह दुषदाई। कानन फिरैां दुसह दुख पाई। तेहि तो

प्रभु विनवौं कर जोरो। केहि विधि पावौं राज बहोरी। कृष्ण कहा सुनु बचन नरेसा। तुम हित लागि कहौं उपदेसा। पुजो गनपति मन चित लाई। जेहि पूजे सब दुख मिटि जाई। विघन हरन है जाकर नामा। तेहि पूजै पइहै। विश्रामा

End.—मास असाढ़ चैाथि जब आवै। कमल फूल कर लेइ मंगावै। सुगति समेत होम जो करई। सो प्रानो पुनि देह न धरई। सावन चैाथी भुष जब आवै। कुसुर सेहरुआ कर मगावै। ब्राह्मण वाली होम घृत करई। दानैा देव ताके वस होई। दोहा० यहि विधि वारमास को कहैा भूप समभाइ। विधि सो पूजै गनपतो सकल कष्ट मिटि जाय। चैा० ॥ मुनि कै धर्म तनय सिर नावा। धन्य गोपाल यह कथा सुनावा। जो विधि कृष्ण कहा व्रत जेती। तेहि विधि सो नृप कोन्ह प्रतोती। गनपति भई जो कथा अपारा मारे जो सत्रु लगो नहिं वारा॥ सुष समेत राज तव कीन्हा। गनपति की दाया लषि लीन्हा। गनपति केरी वात चित आई। जो मनसा करु सो फल पाई। सिद्धि रिद्धि संपति धन अपारा। धरनि धाम सुत संपतिदारा। नारी पुरुष करै व्रत कोई। सकल सिद्धि फल पावै सोई। जो यह कथा सुनै औ गावै। अंतकाल सुर पुर पहुंचावै। गनपत की कथा यह संस्कृत मध्य विसाल जथा बुधि भाषा रचेउ जड़ मति मोतीलाल। इति गणेश पुराण सम्पूर्णम। लिषतं प्रताप सिंह ठाकुर संवत १८९३ ॥

Subject.—पृष्ठ १ से १९ तक वंदना, पार्वती शंभु संवाद। एक समय धर्मराज का राज्य जाता रहा। उन्होंने श्री कृष्ण भगवान से अपना राज्य प्राप्त करने का उपाय पूछा, तो भगवान ने बताया कि गणेश जी की मन कम वचन से पूजा करो। उदाहरण रूप से कहा है कि एक वार शिव जी अपने दोनें पुत्रों को लेकर श्री विष्णु की सभा को गए वहां इंद्रादि ३३ कोटि देवता बैठे थे, भगवान ने दोनें पुत्रों को बुला कर दे मोदक दिखाये और कहा कि जो पृथ्वी की परिक्रमा पहिले कर आवेगा वह लड्डू पावेगा, एक पुत्र रथ पर बैठ गया और गणपति जी ने भगवान की परिक्रमा कर मोदक मांगे अतः उन्ही को मोदक मिले। इसी १२ मास की पूजा पृथक् पृथक् वर्णित है। अंत में पूजा का फल कवि का नाम और लिखने वाले का संवत आदि है।

No. 282(*d*). Gaṇeśa Māhātmya Vrata by Mōtīlāla. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size 8 × 4 inches. Lines per page—16. Extent—400 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1903 or A. D. 1846. Place of deposit—Ṭhākura Madhōrāma, Village Nautalā, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning.—श्रीगणेशायनमः दोहा ॥ सुमिरन करि गणेस को गुरु चरनन सिर नाइ । सोकल चौथि की महिमा कहौ सुनहु चित लाइ । दोहा राम कृष्ण भ्रातन सहित सिय रुकिमिन धिय धाम । बुधि वढ़ावहु सकल मिलि पुनि पुनि करौं प्रनाम ॥ कथा कहौं गननाथ को पार उतारौ वोर । बुधि हीन निज जानि के सुमिरौ तनय समीर । युधिष्टरौ वाच । एक समय पूछत भये हरिहि युधिष्ठिर राइ । आइ महा संकट परा जाइ सो कहिय उपाइ । सुनहु कृष्ण देवन के देवा । निगम सेष विधिपावें न भेवा ॥ असे प्रभु तुम दीन दयाला । सदा करौ संतन प्रतिपाला ॥ विपति हमारि विलोकहु स्वामी । कृपा सिंधु उर अंतर जामी । छल कीन्हो दुरजोधन राजा । जीति लिये मोहि राज समाजा ॥ अनुज समेत जुवति संग लाए । कानन फिरौ दुसह दुख पाये ॥ तेहिते प्रभु विनवौं कर जोरी । केहि विधि पाइये राज वहोरो ॥ श्री कृष्णो वाच । कृष्ण कहा सुनहु वचन नरेसा । तव हित लागि कहौं उपदेसा । पूजहु गनपति कहं चित लाई । जेहि पूजे सब दुष मिटि जाई ॥

End.—यहि विधि वारह मास के पवन आहि समुदाइ । विधि से पूजै गनपतो सकल व्याधि मिटि जाइ । यह सुनि धर्म तनै सिर नावा । धन्य कृष्ण यह कथा सुनावा । यहि विधि कृष्ण कहा सो रीती । तेहि विधि राजा कीन्ह अति प्रीती । गणपति को भइ कृपा अपारा । मारि सत्रु कीन्हेउ षंकारा । सुष सो राज मही पर कीन्हा । गणपति की महिमा लिषि दीन्हा । जो गणपति को व्रत चित लावै । मन वांछित नर सो फल पावे । रिधि सिधि धन धेनु अपारा । धरनि धाम सुत संपति दारा । जो यह कथा सुनै अरु गावै । अंतकाल सुरपुर सुष पावै ॥ दोहा ॥ गन नायक की कथा यह संस्कृत मध्य विसाल । जथा बुद्धि भाषा रचित जड़ मति मोतीलाल । इति श्री गणेस पुराणे श्री कृष्ण युधिष्ठिर संवाद गणेस महात्म व्रत कथा समाप्त ॥ शुभ मस्तु । संवत १९०३ सन १२५४ फसली कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे तिथि पंचमी वार सनिवार दस्खत भागीरथ मुकाम चौषड़िया पोथी रघुवर नाथ के श्री राम श्री जानुकी सहाई गणेस जी सहाइ । श्री राम श्री राम ॥

No. 283(*a*). Prarthanā by Mōtīrāma of Kaṭaila. Substance—Country-made paper. Leaves—3. Size—$9\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—16. Extent—25 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Gajādhara Maharāja, Village Nakaṭī, Post Office Chulwāriā, District Baharāich (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः

सवैया। गणिका गज गोध अजामिल भीर सघन रैदास धना कुवरी। द्रुपदी भर दुल्ल कपोत मृगो गजराज को वार न देर करी॥ जन मोतीराम कहै हरि सों हरि हो कहं तै सब को सुधरी। तव तो तुम देर करी न हरी अब काहे को देर करो हो हरी॥ १ प्रहलाद को वार पिता सुत सों लखि वैर तुरंत भये नृहरो। व्रज वासिन केरि पुकार सुनी नष धारि गोवर्धन दुख हरी॥ अघ वत्स वकासुर चोंच धरी नृप कंस को मृत्यु न देर करी। तव तैा तुम देर करो न हरी अब काहे को देर करो हो हरी॥ अर्जुन के प्रभु सार्थी भए दुर्योधन सैन्य संघार करी॥ मथुरा मगधाधिप गांठि लिए क्षण एक में सैन्य संघार करी॥ द्विज दीन सुदामा को विपति हरी वलि सूनुक वाहुक वृंद करी। तब तैा तुम देर करी न हरी अब काहे को देर करो हो हरी॥

End.—सिव चापक खंण्ड करी क्षण में मिथिलाधिप को तनया यैां वरी। भृगुराज को मान हरी नृहरी सब भूपन को सिर नम्र करी। कपि वालि को प्राण हरो छल सो षरदूषण को शत खंड करी। तब तैा तुम देर करी न हरो अब काहे को देर करो हो हरी॥ वलि भूप की भूमि हरी सगरी प्रभु वामन रूप तुरंत धरी। नष सो उकराइक भेद करी सब लोक कृतर्पित करी सुरसरी। महि छोरि कै इन्द्रहिं दीन हरी उठि भोरहिं दर्शन को भगरी तब तैा तुम देर.......॥ बुध संकर नाथ को नास भयो वसुरंध्र कवित्त के जन्म भये से सब शत्रुन नाश करै पढ़वै हरिणी कृत संत सहाय पढ़े से बंधुआ सब छूटि गये घर को जन मोतीराम की टेर किएते॥ आठो सिद्धि नवो निधि पावत आठ कवित्त के पाठ किएते। इति श्री भट्टाचार्य मोतीराम नन्द रामात्मज चैन राम पुत्र मोतीराम कृत प्रार्थना संकट मोचन सम्पूर्णम्॥

Subject.—विष्णु की स्तुति।

No. 283(*b*). Rāmāshṭaka by Paṇḍita Mōtīrāma Miśra. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—$5\frac{1}{4} \times 4$ inches. Lines per page—12. Extent—25 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1894 or A. D. 1837. Date of Manuscript—Samvat 1925 or A. D. 1868. Place of deposit—Paṇḍita Gokarṇa Nātha, Village Kudai, Post Office Fakarpur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः हेराम राघव रमेश्वरदोन बन्धो। लक्ष्मीपते दशरथात्मज सत्य संध। श्री लक्ष्मणादि भरतादिक सेवितांघ्रे। सीता-पते मपि निधे कृपा कटाक्षम॥ १॥ हे गधि सुतु मख रक्षण ताड़कारि मारीच मर्दन

सुवाहु विनासि वाहो । पाषाण तारण विदारण राक्षसांना सीतापते मपि निधेहि कृपा कटाक्षम ॥ अनंट कंद जन कारन जानकोस प्रोच्चंग्ड शंभु धनुः मर्द्दन मूषतोस्म । श्री जमदग्न्य मद भंजन हृष्ट जाते सीतापते मपि कृपा कटाक्षम ।

End.—आरूढ़ पुष्पक सुपुष्प वृष्टे त्रलोक । मंगल सुभंग नाय कीर्ते । संप्राप्त कोसल सुकोसल राज्य तीते । सीतापते मपि निधे कृपा कटाक्षम् श्री नन्द नंन्दन पद पव पुण्डरीकं निर्धन्म रन्द मधु तुंदिनमात्रसेन रामाष्टक विरचितं वत्मादरेण श्री यैाक्तिकेन कविना कवि नायकेन । इति श्री महाचार्य नन्दरामात्मज चंदन राम पुत्र मोतीराम विरचिता रामाष्टकं सम्पूर्णम् शुभमस्तु ॥

No. 284(*c*). Padmāvata by Malika Muhammad Jāyasī of Jāyas, District Rae Bareli. Substance—Country-made paper. Leaves—318. Size—$12\frac{1}{2} \times 6$ inches. Lines per page—11. Extent—4,770 Anushṭup Ślokas. Appearance—Good. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1858 or A.D. 1801. Place of deposit—Mahanta Guru Prasāda, Hargaon, Post Office Parvatapur, District Sultānpur (Oudh).

Beginning.—कीन्हेसि पुरुष एक निरमला । नाम मुहम्मद पूरन कला ॥ प्रथम जोति विधि तेहि के साजी । उनहीं प्रथम सृष्टि उपराजी । दीपक लेसि जगत कहं दीना । भानिरमल जगमारग चीन्हा । जो न सुहोत पुरुष उजियारा । सूझि न परत पंथ अंधियारा । श्रौर फिर अमल सुमारग लिषा । भय धरमी जिन पारसा सिषा । जिन नहि लीन्ह जनम वर नांऊं । तिनकहं दीन्ह नरक महं ठांऊं । मति वसीठ दीन दोइ कीन्हा । दोउ जग तरत नाम वहि लीन्हा ॥ दोहा ॥ गुन श्रौगुन विधि पूछि हैं हुइ है लेषा जोष । आगे जे विनवातिहि पावा गति मोष ॥ चैापाई ॥ चारिमति जो महमट ठांऊं । चारिहु के जग निरमल नाऊं । अवावक्र सादीक सयाने । पहिले दीन पंथ के माने । दूजे उमर ख़िताब सुहाये । भा जग अदल दीन जो आये । श्रौ उसमान भय पंडित गुनी । लिषा पुरान जो आयत सुनी । चैाथे अली सेर वरियारू । कांपे धरती सरग पतारू । चारों एक मते इकवाता । एक श्रौ एक संघाता । वचन एक एकन सुना जो सांचा । भा परिमान दुश्रो जग बांचा ॥ दो० ॥ जो पुरान विधि पठवा सोइ पढ़त ग्रंथ । श्रौर जो आवत भूले, सो सुनि पावत पंथ । सेरन साह दिली सुलतानू । चारिहु ंड तपै जस भानू । प्रस वहछाज छात्र अरु पाटू । सब राजन भुंइधरा लिलाटू । जती सूर श्रौ षांड़े सूरा । श्रौर बलिहीन मति सब विधि पूरा । सूर अबर जो नैाषड़ भाए । सावव दीप वोनइ वनए । जहं लगि राजवर्ग बल लीन्हा । इस कंदर जुल

करन जु कीन्हा। हाथ सुलेमां केरि अंगुठी। जग को चीन्ह दीन्ह तेहि मूंठी। भुंइ पहार लहि सृष्टि संवारी। अस वर साह पुहिम पतिभारी। देहि असीस महम्मद जुग जुग भूजहुराज। पातसाह तुम जग के जग तुम्हार मुहवाज। वरनहु सूर पुहुम पतिराजा। भूमिन सहै भार जो साजा। × × सय्यद असरफ पीर पियारा। जिन मोहि दीन्ह पंथ उजियारा × × × एक नयन कवि मुहमद गुनी। सो कवि मोहै जो कवि सुनी। × × चारि मीत कवि महमद पाये। जोरि मिताई सिर पहुंचाई। मलिक इसफ़ बड़ पंडित ग्यानी। पहिले भेद बात उन जानी। पुनि सिलार काजी महिमाहां। खड्ग दान ऊभ नित वाहा। मियां सलोने सिंह समानि। वीर खेत रन खरग जुझारे। सेष वड़े बड़ सिद्ध सढाना। करिअदेश सिद्ध बड़ माना। जाइस नगर धर्म अस्थानू। तव वासह कवि कीन्ह बखानू। कै..............

End.—एक पुरुष को एकहि थानू। एक चांद एकहि पुनि भानू। जो सब कर पर पुरुष अहई। एक ते एक रूप जा पुनि ताहीं। अह अह दीपक लेहु ग्यागा। नाहीं तेल जरु अभिमाना। पांचहुं मिलि के नाचहुं ताहां। आइ पुरान पूर्वतम जाहां। जन्म मरन परहि जेहि बाता। वहि के रंग रहसि जो आता। नाहित जन्म जन्म पछिताहू। रहटिघरी अस फिरि फिरि जाहू। वास पाइ यह वाजनि भूलहु। करि करि कवधि देहिं जन फूलहु ॥ दोहा ॥ सुष संवाद जनि भूलहू हुइ है अन्त के कार। नाहीं तो पछिताइ हैं यहि पांचों करि छार। इति श्री पद्मावत कथा मलिक मुहम्मद कृत सम्पूरन शुभ मस्तु—जा इदं पुस्तकं पृष्टातादृष्यं लिषि मया जदि शुद्धं शुद्धा वा मम दोषो न दीयते सम्बत १८५८ चैत्रमासे कृष्णपक्षे पंचमायाम् गुरु वासरे पद्मावत ग्रंथ सम्पूर्ण शुभमस्तु।

Subject.—(१) पृ० १ से २४ तक—जन्म खंड। (२) पृष्ठ २५—२८ तक सरोवर खंड। (३) पृ० २९ से ३२ सुवा खंड। (४) पृ० ३३ से ४८ तक श्रंगार खण्ड। (५) पृ० ४९ से ६० तक जोगी खंड। (६) पृ० ६१ से ६४ तक पयान खंड। (७) पृ० ६५ से ६६ तक गजपति खंड। (८) पृ० ६६ से ८६ तक वसंत खंड। (९) पृ० ८७ से ९६ तक सैना खंड ।। (१०) पृ० ९६ से १०२ तक वसीठ खंड। (११) पृ० १०३ से १३० तक विवाह खंड। (१२) धैाराहर खंड पृ० १३० से १३६ तक। (१३) पृ० १३७—१५६ तक वारह मास पदुम। वारह मासा—१५६ से १६० तक—(१५) पृ० १६१ १७८ तक—जोगिनी चक्र खंड। १६० से २०८ राघैा चेतन खंड। (१७) पृ० २०८ से ३१८ तक सम्पूर्ण युद्धादि वर्णन सहित पृ० ३१८ तक

No. 284(*b*). Padamāvatī Kathā by Muhammad. Substance—Country-made paper. Leaves—160. Size—11½ × 7

inches. Lines per page—40. Extent—5,600 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript —1275 Fasalī or 1858 A. D. Place of deposit—Kunja Bihārī, Bihatā, Rae Bareli.

Beginning.—श्री गणेशायनमः अथ पोथी पदुमावती लिष्यते ।

चैापाई ॥ सवरो आदि एक करतारू—जेइ जिउदीन्ह कीन्ह संसारू कीन्हिसि पृथवी जाति प्रगासू—कीन्हिसि नव पर्वत केलासू कीन्हिसि अगिनि पवन जल षेहा—कीन्हिसि वहु तरंग श्रो रेहा कीन्हिसि धरनी सरग पतारू— कीन्हिसि वरन वरन श्रोतारू कीन्हिसि स्याम सेत ब्रह्मंडा—कीन्ह भुवन चैादह नव षंडा कीन्हिसि दिन दिनकर ससि राती—कीन्हिसि नषत तराइन पांती कीन्हिसि धूप सीत अर छाहा—कीन्हिसि मेघ वीज जेहि मांहां कीन्ह सवै अस जाहिकर दुसरेह छाजै काह पहिले टइउ नांउलै कथा करैा परगाह ॥

End.—एक पुरुष के एकै धानू—एक चांद एकै पुनि भानू जो सव कर पर पुरष आही—एकते करु पूजा पुनि ताही अहमह दीपक लेसहु ध्याना— नाही तेल जाउ अभिमाना पांचहु मिलि कै नाचहुं ताहां—आइ पुरान पुरष तम जाहां जनम मरन परै जेहि वाता—वहि के रंग रहसि जो राता नाहि तो जन्म जन्म पछिताहू—रह रह धरो अस फिरि फिरि जाहू वास पाइ इहु वाजनि भूलहु—करि करि कवध देहि जनि फूलहु सुष संवाद जलि भूलहू हो इहि अंत वेकार—नाहीं तो पछिताउ है । यहि पांचो करु छार । इति श्री कथा पदुमावती सपूर्णम् सुभ मितो भादैां वदो १३ सन १२७५ साल ।

No. 285. Bhāwara-gīta by Mukunda. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—11 × 5 inches. Lines per page—9. Extent—190 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1906 or A. D. 1849. Date of Manuscript—Samvat 1906 or A.D. 1849. Place of deposit—Paṇḍita Rāmaprapanna Mālavīya Vaidya, Sultānpur (Oudh).

Beginning.—ऊधो कैा उपदेश सुनहु व्रजनागरी । रूप सील लावन्य सवै गुन आगरी ॥ प्रेम सुधा रस रूपनी, उपजावत सुख पुंज । सुंदर स्याम विला(सि)नी नव वृंदावन कुंज ॥ सुनैा व्रज नागरी ॥ १ ॥ कहैा स्याम संदेस एक मैं तुम पै लायैा । कहन समैं संकेत कहूं श्रासरहि (न) पायैा ॥ सोचत ही मन में रह्यो कव पाऊं एक ठांउं । दै संदेस नंदलाल कैा वहुरि मधुपुरी जाउं ॥ सुनैा व्रज

नागरी ॥ २ ॥ सुनत स्याम के नाम ग्राम ग्रह की सुधि भूली। भरि आनन्द रस हृदै प्रेम बेली द्रग फूली ॥ पुलकि रोम सब अङ्ग भये भरि आये जल नैन। कंठ छुटे गद्गद गिरा बोले जात न बैन ॥ ३ ॥ विवस्था प्रेम की ॥

End.—सुनत सखा के बैन नैन भरि आये दोऊ। बिवस प्रेम आवेस रही नाहिन सुधि कोऊ ॥ रोम रोम प्रति गोपिका ह्वै गई सामरे गात। कल्प तरोवर सामरो ब्रज वनिता भई पात ॥ उलहि सब अंग अंग ते ॥ ७३ ॥ है सचेत कहि भलैं सखा पठयो सुधि लावन औगुन हमरे आनि तहां ते लगे दिखावन ॥ मो मैं उन में अंतराय एको छिन भर नहिं। ज्यों देखो मो मांझ वे त्यों मैं उनहो मांहि ॥ तरंग वारि ज्यों ॥ ७४ ॥ गोपी आय दिखाय एक करि कै बनमाली। ऊधा को भर्म निवारि व्यामोह को जाली ॥ अपनौ रूप दिखाय कै लीनौ बहुरि दुराय। जन मुकुंद पावन भयो सो यह लीला गाय ॥ प्रेम रस पुंजनी ॥ ७५ ॥ इति श्री भवर गीत संपूर्णम् ॥ संवत् १९०६ ॥ मिति क्वार वदि ॥ ६ ॥

Subject.—(१) पृ० १—८ तक—उद्धव तथा वृज वनिताओं के प्रश्नोत्तर-उद्धव का जोग तथा निराकार वर्णन, सखियों का प्रेम ॥

(२) पृ० ९—१२ तक—गोपिकाओं का ध्यानावस्थित होकर उन्माद की सी दशा दिखाना और कृष्ण को उपालम्भ देना।

(३) पृ० १३—१६ तक—एक भ्रमर आगमन, उससे गोपियों का उलाहना देना और डाट डपट करना।

(४) पृ० १७—२० तक—गोपियों का एक दम मिल कर रुदन करना, ऊधव का प्रेम में निमग्न होना तथा जाकर कृष्ण को समझाना। कृष्ण के प्रेम पूरित नेत्रों से अश्रु निकलना। ऊधव को गोपियों का तथा अपना एक रूप दिखा कर कृष्ण का भ्रम निवारण करना। ग्रंथ समाप्ति ॥

No. 286. Raghunātha Śataka by Paṇḍita Munnālāla. Substance—Country-made paper. Leaves—34. Size—9 × 6½ inches. Lines per page—16. Extent—580 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1931 or A.D. 1874. Place of deposit—Paṇḍita Rāmajiyāwanā Lāla, Village Daulatapura, Post Office Bilaharā, (Bārā Bankī).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ श्री आनन्द कंद रघुनन्दनाय नमः ॥ दोहा ॥ विधि हरि हर जाको सदा जपत रहत हैं नाम। बसहु निरंतर मोहि में सिया सहित सो राम ॥ १ ॥ सिया रमन के चरन हैं करन सकल मुद मूल।

कंज वरन असरन सरन सुषमा भरे अतूल ॥ २ ॥ ए मेरे मन मधुप तू तौ तिहि से करु प्रेम। सो कर हित सब लोक में जो चाहत निज छेम ॥ ३ ॥ सरनागत वत्सल नहीं ऐसो नायक और। ताते रघुनायकहि भजु सुखदायक सिर मैार ॥४॥ समाधान कवि कृत ललित लछिमन शतक निहारि। ताहि सोधि मुद्रित कियैा परम विचित्र विचारि ॥ ५ ॥ भई लालसा चित्त में ऐसेई अभिराम। करहु शतक रघुनाथ को रसकनि कों सुखधाम ॥ ६ जिन्हैं सुनत रघुनाथ में उपजै पावन प्रीति। सत कवित्त ऐसे धरें तामें सुगम सुरीति ॥ ७ ॥ तब कवित्त सत कविन के लै द्विज मुन्नालाल। करत शतक रघुनाथ को सुखदायक सब काल ॥ ८ ॥

End.—अथ सवैया—गृह काजहि में पगिबो अतिही यह तोन भले जनको मगु है। सुत दारिन में भरिबो अति नेह भुजंगम पै धरिबो पग है ॥ हनुमान कहै भव सागर के तरिबे को या मेरी कही डगहै। अपनो करु राम सिया वर को अपनो न कोऊ सपनो जग है ॥ ५ ॥ सत संगति को करिके मन ते दुर बुद्धि के भाव भगावने हैं। गुरु जे उपदेश कियो तिनकैा कहुं बैठि इकंत जगावने हैं ॥ हनुमान जिते कहैं बैन तिते छल छन्दन के नहि गावने हैं। विषयादिक सों रति में न चहौं रघुवीर में प्रेम लगावने हैं ॥ ६ ॥ या जग जीवन को है यहै फल जो छल छांड़ि भजे रघुराई। सोधिकै संतत संतन हूं पदमाकर वात यहै ठहराई ॥ कै रहै होनी प्रयास विना अनहोनो न कै सकै काेटि उपाई ॥ जो विधि भाल में लोक लिखी सु बढ़ाई वढ़ै न घटै हू घटाई ॥ ७ ॥

वैस विसासिन जाति वही उमहो छिन ही छिन गंग की धार सो।
त्यों पदमाकर पेखनियां अजहूं न भजै दसरत्थ कुमार सो ॥
वार पके थके अंग सबै मढ़ि माच गरेही परी इरि हार सो।
देखै दशा किन आपनी तू अब हाथ के कंकन कों कहा आरसो ॥ ८ ॥

× × × ×

× × × ×

इति श्री हरनाथात्मज पंडित मन्नालाल कृत रघुनाथ शतक संग्रह समाप्त पैाष कृष्ण दशम्या १० शनै संवत् १९३१।

Subject.—(१) पृ० १–१६ तक—मंगलाचरण, ग्रंथ निर्माण हेतु तथा उद्देश, रामजन्म, राम बाल क्रीड़ा, मृगया वर्णन, धनुष यज्ञ, जनकपुर की स्त्रियों के मुख से राम की सुंदरताइ तथा उनके सभी भाइयों की शरीर सुषमा का वर्णन—राजकुमारों के वस्त्राभूषण तथा अंगरागादि का वर्णन। धनुष भंग के समय राम की छवि का वर्णन।

(२) पृ० १७—३४ तक—रावण से धनुष न हट सकने का कथन, धनुष भंग होने का वर्णन। राम द्वारा की गई कुछ यश-वार्ताओं का वर्णन। राम की विविध कवियों द्वारा गाई हुई विरुदावली ॥

No. 287. Jñānachandrōdaya (Dōhā Vishṇupada) by Śrī Murlīdhara Jaduvaṁśī of Barasānā. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—6½ × 3½ inches. Lines per page—5. Extent—66 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—1812 Saṁvat or 1755 A.D. Place of deposit—Paṇḍita Lakshaman Prasādajī, Village Bhiyā Mau, Post Office Haidargarah, District Barabankī.

Beginning.—श्री लाड़ली जी सहाय। अथ बरसाने के विष्णु पद और दोहा लिख्यंते। क्षीर समुद वैकुंठ में वेद कहत निज धाम। सो मै देख्यो जाइ कै बरसाने विश्राम ॥ १ ॥ राग सारठी-विष्णु पद। परवत पर राजत श्री ठकुरानी। नंद नंदन ललितादिक वनिता दरसन रहत लुभानी ॥ निदत सरदचंद मुख शोभा रतिहू रहत लजानी। नेक कोर की कृपा कीजिये मुरली करत बखानी ॥ २ ॥

End.—अथ ठाकुर ठकुरानी को सेज पर उठि बैठिबो वर्णन ॥ राग विभास ॥ विष्णु पद ॥ आजु दोउ शोभित हैं अलसाने ॥ कमल नैन पर मुकुलित देखियतु भ्रमर रहत भ्रमसाने ॥ काक पक्ष विगलित अलकावलि करि नहिं सकत पयाने ॥ मुरलीधर मुखशोभा ऊपर भयो विभास हरखाने ॥ २० ॥ अथ प्रात वर्णन। विष्णु पद ॥ प्रात समय राधा हरि राजत ॥ घूंघट में मन मथ मनु बैठ्यो बान कटाक्षन साजत ॥ चंचल चारु नैन ता भीतर युगल मीन लखि लाजत ॥ मुरलीराग विभास अलाप्यो मंद मंद धुनि बाजत २२ ॥ अथ विष्णु पद औ दोहा वर्णन ॥ दोहा ॥ प्रेम द्विविंशति २२ भानु पठि चित्त में होत प्रकाश। रीझि समुझि नर कहत हो अघ तम होत विनाश ॥ २३ ॥ इति श्री ग्राम बरसाने वासी यदुवंशावतंश श्री मुरलीधर विरचितायां ज्ञान चन्द्रोदय दोहा विष्णु पद समाप्तं शुभ मस्तु ॥ अक्षि चन्द्र वसु चन्द्र १८१२ पुनि संवत्सर परिमान ॥ एकादशी कुजवार को कीन्हों प्रेम बखान ॥ २४ ॥

Subject.—(१) पृ० १—बरसाने की प्रशंसा और लाड़िली जी की बन्दना। (२) पृ० २ से पृ० ३ तक—कुंवरि लड़ैती के बरसाने का वर्णन। (३) पृ० ४—संकेत से कदम खंडी और पाडर खंडी में होकर गहवर में आना—सखी का मनोरथ वर्णन। (४) पृ० ५—अथ लाल को ललिता में सखी

भाव का लीला हाव वर्णन। (५) पृ० ६—७ तक—पूर्वाराग से लेकर विभास तक ठाकुर और ठकुरानी अकेले गहवर वन को गये तहां सखियों के जाने का वर्णन। (६) पृ० ७—९ तक—गहवर से राधा हरि के मंदिर के आने का वर्णन। (७) पृ० ९—१० तक—वरसाने की आरती का वर्णन। (८) पृ० ११—१३ तक—भगवान के मंदिर में सुशोभित होने का वर्णन। (९) पृ० १३—१४ तक—लाड़िली की प्रीति का वर्णन। (१०) पृ० १४—१५ तक—लाल, लाड़िली का शयन वर्णन। (११) पृ० १६—१७ तक—सखी ठाकुर के उठाने का वर्णन। (१२) पृ० १७—१८ तक—प्रभात वर्णन। (१३) पृ० १९—२० तक—दोहा विष्णु पद।

No. 288(*a*). Nakha-śikha by Muralīdhara Miśrā of Āgrā. Substance—Country-made paper. Leaves—16. Size—$8\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—26. Extent—200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1902 or A.D. 1845. Place of deposit—Paṇḍita Badarinātha Bhaṭṭa, Professor, Lucknow University.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नष शिष लिख्यते ॥ कोटि कोटि दामिन की दुति देखि वारि पति संवराई वारियत कोटि घन घोर को। जटित जराइ टीको सोहतु लिलाट नीको तैसे चारु चन्द्रिका विराजै माथे मोर को ॥ तिहू लोक आभा अंग अंगनि जगमगाति मुरलीधर तैसिये चितौनि चित चोर को ॥ कुंज के सदन सुख सरस वरसावत हैं वलि वलि जैये ऐसे जुगल किसोर को ॥ १ ॥

तीन लोक ठाकुर सदा दूलह नंद कुमार।
दुलहिन रानी राधिका नष शिष ओप अपार ॥ २ ॥
व्याप रहो सब जगत में जिनको जुगल स्वरूप।
वृन्दावन क्रीड़ा करत सदा सनातन रूप ॥ ३ ॥

End.—धन्य भाग व्रज के जहां लीयो दुहिनि अवतार।
जगत कृतारथ कों कियो जिनिके प्रेम प्रकार ॥ ६० ॥
यह नष सिष पोथी रची मुरलीधर सुख कारि।
भूल्यो होंहु जहां कछु लीजो सुकवि सुधारि ॥ ६१ ॥

इति श्री मिश्र मुरलीधर विरचिते नष शिष संपूर्णम् ॥ संवत् १९०२ कार्तिक कृष्ण १३ भोमवार शुभम् भवतु लिषतं गोविंद राम पठनार्थम् ॥ शुभं ॥

Subject.—छं० १—७ तक सुंदरता वर्णन—छंद ८—१३ अंगुली भू वर्णन। पड़ी, पिंडुरी, जंघा, नितंब, कटि वर्णन ॥ छं० १४—२७ तक पीठ, उदर,

उरोज, कंचुकी, कर, कुच, मेंहदीयुत कर भुज, ग्रीव, चिबुक, ढोड़ी तिल, कपोल वर्णन। छं० २८—४१ तक—कपोल, अधर, दशन, रसना, मुसक्यान, मुख, नासिका, नथ, नेत्र, वरुनी वर्णन, छं०—४२—५२ भृकुटी, भाल, श्रवण, केश, मांग, चंदन, पाटी, बेनी, सर्वांग, भूषण, छं० ५३—६१ तक। शृंगार रस चेष्टा, सहज शृंगार, स्वरूप, ऐश्वर्य—

No. 288(*b*). Piṅgala Pīyūsha by Muralidharā Miśrā of Āgrā. Substance—Country-made paper. Leaves—80. Size—$8\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—26. Extent—1,040 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1813 or A.D. 1756. Date of Manuscript—Samvat 1903 or A.D. 1846. Place of deposit—Paṇḍita Badarīnātha Bhaṭṭa, Professor, Lucknow University.

Beginning.—श्री गणेशायनमः॥ दोहा॥

रघुवर पद पंकज सुमिरि गनपति के गुन गाइ।
कह्यो चहत पिंगल कछू सेसी कौ मत पाइ॥ १॥

मत्त वरन के छंद कौं सोहत सिंधु अपार।
धन्नि सेस जिन पैरि कै पायौ याकौ पार॥ २॥

बड़े बड़े सत्कविन के सुनि सुनि विविध विचार।
मुरलीधर छंदनि रचत अपनी मति अनुसार॥ ३॥

विविध भांति के छंद ते गुरु लघुही ते होत।
यातें लक्षन दुहुनि के पहिले करत उद्दोत॥ ४॥

वक्र रेखतें गुरु लखौ सूधी ते लघु जानि।
इनिके कहतु स्वरूप अब पिंगल कौ मतु मानि॥ ५॥

End.—विधि ससि वसु ससि मैं लषौ संवत पौष सुमास।
शुक्लपक्ष नवमी गुरौ कीनौं ग्रंथ प्रकाश॥ ८५॥

बहुत करी मैं चाकरी अब सेवतु रघुनाथ।
वेई सुध सब लेत हैं पालत सब के साथ॥ ८६

यह पियूष पिंगल रच्यौ कृपा पाइ रघुनाथ।
लीजौ सुकवि सुधारि कैं कहतु जोरि कैं हाथ॥ ८७

इति श्री मिश्र मुरलीधर विरचितं पिंगल पियूष ग्रंथ समाप्तं॥ संवत १९०३॥ कार्तिक कृष्ण नवमी ९ शुक्र वासरे लिषी गोविंद राम शुभमस्तु॥

Subject.—पृ० १-८ तक छंद की प्रशंसा, मात्रा, गण वर्णन, प्रस्तार विधि, गणमैत्री, मेरु, मर्कटी, पताका आदि वर्णन—पृ० ९—१७ गाहू, गाहा, गाहा भेद, विगाहा, गाहिनी, साहिनी, दोहा, रोला, सभेद, कुंद, चौपैया, उल्लाला,—पृ० १८—३४ छप्पय भेद, गंगनाग आदि, मद, मधुभार आदि पृ० ३५—७८ तक, वर्णवृत्त, चूड़ामनि, चित्रपदा, मानवक, दीपक माला आदि तक-वंश वर्णन, संवत् आदि पृ० ७९—८० तक ।

No. 288(*o*). Rasa Saṅgraha by Muralīdhara Miśra. Substance—Country-made paper. Leaves—56. Size—$8\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{4}$ inches. Lines per page—20. Extent—1,120 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1819 or A.D. 1762. Date of Manuscript—Samvat 1865 or A.D. 1808. Place of deposit—Ṭhakura Jadunātha Baksha Siṁhajī, Hariharapura, District Bahazāich.

Beginning —श्री गणेशायनमः ॥ अथ रस संग्रह लिष्यते ॥ सवैया ॥ संकर के सब लाइक हैा सुख दायक हैा सुमिरैा गुन तेरे । कीजै कृपा करिकै इतनो बुधिवानो में होहि विलास घनेरे । विघ्न विनासन हैा तुमहीं मुरलीधर काजकरैा बहुतेरे । चाहत हैं रस ग्रंथ रच्यैा गणनायक होहु सहायक मेरे ॥ १ ॥

दोहा ॥ पहिले मैं नव रसनि के राखे कवित बनाइ ।
तिनकैा अब संग्रह करतु गनपति सीस नवाइ ॥
रस कहियतु है ब्रह्म को व्यापि रहैा सब ठौर ।
नैा प्रकार सो जानियो कहत सुकवि सिर मैार ॥
प्रथम नाम सिंगार है दूजो हास गनाइ ।
तीजो करुना कहत हैं चैाथो रुद्र सुभाइ ॥
पुनि है वीर सु पांचयो, षट वीभत्स बखान ।
भय को सतयों समुझियो अठयों अद्भुत मान ॥ ५ ॥

End.—नैाहू रस के कवित को समुझि हिए समुदाय ।
रस संग्रह या ग्रंथ कैा धरयो नाम कविराय ॥ ३३ ॥
जो कोऊ या ग्रंथ कैां पढ़ै सुनै चितलाइ ।
ताके मन में रस झलक झलकत है कछु आइ ॥ ३४ ॥
नृप वसु ससि अंकनि लखैा संवत फागुन मास ।
असित पक्ष दसमी रवैा कीनो ग्रंथ प्रकास ॥ ३५ ॥

इति श्री मिश्र मुरलीधर विरचिते रस संग्रह ग्रंथे सतै सो सर्ग संपूर्णम् चैत्र मासे कृष्ण पक्षे तिथौ एकादस्यां सोम वासरे संवत् १८६२ ॥ लिषि जिउराखन सुक्ल शुभं भूयात् ॥

Subject.—पृ० १—६ तक गणेशवन्दना, ग्रंथ निर्माण, रस वर्णन, शृंगार वर्णन, हेली, लीला वर्णन।

पृ० ७—८ तक विवाह समय वर्णन। तीज त्योहारो, दिवारी, वसंत, होरी, चांदनी आशिर्वादादि, संयोग शृंगार

पृ० ९—२२ तक वियोग शृंगार, पूर्वानुराग, उपालंभ, मान, रसाभास, धीरा, धीराधीरा, सखीकर्म कथन, हास्य, दूतीकर्म, करुण विरह, उत्कंठिता, कलहंतरिता, वासकसज्जा, दशा, अभिलाष, स्मृति, गुण, उद्वेग, प्रलाप उन्माद, व्याधि, जड़ता, पाती, संदेस, वात्सल्य।

पृ० २३—२४ तक हास्य रस कथन, स्वनिष्ट लक्षणादि, परनिष्ट।

पृ० २५—२६ तक करुणा रस कथन, स्वनिष्ट पर निष्ट कथन।

पृ० २७—२९ तक रौद्र रस।

पृ० ३०—३२ तक वीर रस वर्णन, युद्धवीर, दानवीर, कीर्ति वर्णन, जस, दशरथ दान, दयावीर

पृ० ३३—३४ तक भीभत्स रस वर्णन।

पृ० ३५—३६ तक भयानक रस वर्णन पृ० ३७-३८, तक अद्भुतरस वर्णन।

पृ० ३९—५६ तक शांतरस, स्तुति वर्णन, जमुना, मथुरा, शिव, गंगा, अयोध्या भवानी, सूर्य, काशी, सरयू, रचना वर्णन।

No. 288(*d*). Rasa Saṅgraha by Muralidhara Miśra. Substance—Country-made paper. Leaves—33. Size—13 × 6 inches. Lines per page—12. Extent—1,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1820 or 1763 A.D. Date of Manuscript—Samvat 1893 or A.D. 1836. Place of deposit—Mahārāja Rājendra Bahādur Siṁha Bhingarāja, Bahrāich (Oudh).

Note.—शेष सब No. 288 (*c*) के अनुसार है।

No. 289(*a*). Ashṭayāma by Nābhā Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—175. Size—$\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—7. Extent—941 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—

Samvat 1890 or A.D. 1833. Place of deposit—Lālā Rāmādhīna Vaidya, Bārābankī.

Beginning.—श्री जानकी वल्लभायनमः ॥ सोरठा ॥ राम कृपा का रूप वंदो श्री अग्रपद ॥ जिनको सुजस अनूप दशधा सम्पति धनद जिमि ॥ १ ॥ दोहा ॥ सिय पिय के। अन्हिक चरित कहत सुकवि सकुचात । तहं ममर्मति अति अगम लषि छिन छिन अधिक म्कात ॥ २ ॥ नित्य श्री नृप मंडली अवधि अखंड विहार ॥ ज्येहि संवत चहुंओर नित प्रभुके सब अवतार ॥ ३ ॥ जानकि वल्लभ लाल कै। जीवनधन यहि धाम ॥ द्वादस रस लीला अमित गुन समूह विश्राम ॥ ४ ॥ कहुं प्रगट ऐश्वर्य्य अति कहुं संयोग वियोग ॥ जुगल संधि माधुर्ज रति नित्य दिव्य सुख भोग ॥ ५ ॥ सज्जन उर प्रेरित गिरा रघुवर आज्ञा दीन ॥ सोवल मन अवलम्ब लहि वचन शोश धरि लीन ॥ ६ ॥

End.—(बरवा) सषि सुषमा सुष सागर सुंदर सोइ । राम कुंवर अनुहरिया लषेउ न कोइ ॥ १ ॥ मंद मंद मुष विहसनि मधुर सुवोल ॥ राम कुंवर चितवनियां लीन्हेउ मोल ॥ २ ॥ विनु देषें दोउ अषियां अति अकुलांहि । तलफत मोर जियरवा निकसत नांहिं ॥ ३ ॥ हा रघुनंदन चंदन सीतल अंग ॥ विकल वाल विरहिनियां विन पिय संग ॥ ४ ॥ सषिमन मोहन सोहन जोहन जोग ॥ छोहन जियत जियरवा भामिन भोग ॥ ५ ॥ ललित अंग सुष आभांह नाभहि देहु ॥ पोतमलाल पियरवा यह जसु लेहु ॥ ६ ॥ × × × × × × × × ×

सखि हम राम कुंअर कहं तन मन दीन ॥ सुर नर मुनि सब देखत हंसि हंसि लीन ॥ १२ ॥ संवत् १८९० ॥ मिति अषाढ़ शुक्ल द्वितीयायां ॥ बुध वासरे समाप्तं ॥ दोहा ॥ श्री अग्र अगर सागर सुमनि नाभा अलि रसलीन । अष्टजाम सियराम गुन जलधि कोन मन मोन ॥

Subject.—(१) पृ० १—१९ तक—गुरु वन्दना प्रस्तावना, कवि का नाम निर्देश—सोरठा ॥ नाभा श्री गुरुदाम सहचर अग्र कृपाल के। । विहरत सकल विलास, जगत विदित सिय सहचरा ॥ सीता जी की वन्दना, अवध की शोभा का वर्णन, उसके वैभव का वर्णन, चार दरवाजें का वर्णन, साकेत की सीमा, द्वादश वन वर्णन, वने। की शोभा, नगर के तीन ओर सरयू का वरणन, परिखा तथा कोट की शोभा, सिंह पैाराादि शोभा, सिंह पैार के हाथी घोड़े इत्यादि का वर्णन, गान वर्णन, कोट के भीतर के पांच चैाकों का वर्णन, रानियों के महलों की शोभा, राज पुत्रा तथा उनकी स्त्रियों के निवास भवनों का वर्णन ।

(२) पृ० २०—४० तक—रानियों के समाज में तिरहुत से आये हुए पत्र का सानन्द पाठ । चार दंड रजनी अवशेष रहने पर वन्दीगणादि का आगमन । राम

को सखियों का गागा कर जगाना, राम के पलंगादि की शोभा, जल पात्रों का वर्णन, सखियों का गजग तथा गंधादि पदार्थ लाना, स्नानागार इत्यादि की शोभा—एक अन्तरंग का जा कर राम को जगाना, जगने पर रति चिन्हों को मिटा कर प्रगट होना। नित्य कृत्य से निश्चिन्त हो स्नान करना, हास्य विलास पश्चात् महलों से चल देना।

(३) पृ० ४१—५६ तक—आर्तों को दान देना। सखियों का आरती उतारना, सखाओं का मिलन, नगर वासिनियों का अटारियों पर चढ़ कर राम की शोभा देखना। सब भ्रातादि के साथ राम का बैठना, उधर श्री सीता जी के यहां सम्पूर्ण सखियों का आगमन, परस्पर का प्रेम व्यवहार। प्रातःकाल की आरती। सखियों का अपनी इच्छानुसार राम के अंगों को देख कर संतुष्ट रहना, स्नान को गमन।

(४) पृ० ५७—६६ तक—प्रत्येक राजकुमार का अपने अपने स्नान के स्थानों में जा कर स्नान करना, सखियों की केलि, स्नान पश्चात् मुनियों का आशिर्वाद देना, दान इत्यादि, महलों को जाना।

(५) पृ० ६७—७० तक—महलों में आकर सखियों द्वारा शृंगार। सबेरे के भोजन का वर्णन। सखियों का गान। एक याम गत लख कर अंतःपुर के द्वार पर कुछ क्षण व्यतीत करना।

(६) पृ० ७०—९१ तक—भोजन—नाना प्रकार के पूरी पकवान तथा अचारादि का वर्णन, दम्पति का भोजनों के साथ साथ हास विलास, चन्द्रकला का तिरहुत के पत्र का वर्णन करना, सखियों का भोजन, पानों की बीड़ी परस्पर खिलाना। राम का शयन करने के लिये जाना। नाना भांति के वाद्यादि सहित गान, सोना, सखियों की परस्पर की केलि, राम का उठना।

(७) पृ० ९२—१३३ तक—राम सभा गमन। पिता का माता, मंत्रियों इत्यादि के साथ व्यवहार के विषय में पूछना, खेलने की आज्ञा पाकर जाना, शिकार का वर्णन, अवध की वीथिकाओं में राम के शुभागमन पर स्वागत, वाग में जाकर फलादि पदार्थ भोजन, लक्ष्मणादि का घोड़ों को फेरना, घूमते घामते सिंह द्वार पर आगमन, वहां से सभों को विदा करना, सब माताओं से मिलना, पतंग उड़ाना, संध्या समझ सबको विदा कर संध्या वंदन करना।

(८) पृ० १३४—१५५ तक—सीता के यहां गुरु नारियों का आगमन, सीता का उनकी सुश्रूषा करना, सीता का सासुओं के पास जाना, लौटते समय बीच में पड़ने वाले स्थानों की तथा वाग की शोभा का वर्णन, ऋतुओं का वर्णन।

रस मंजरी द्वारा दम्पति का श्रृंगार। अर्द्धरात्रि पश्चात केलि वर्णन। द्वादश हाव वर्णन। नृत्यशाला का वर्णन।

(९) पृ० १५६—१७० तक—हिंडोले का वर्णन। सोने के लिये पलंग का सजाया जाना। अंग आभरणादि का संभाला जाना। परदा डाल देना। सखियों का गान। गुरु का परिचय।

(१) श्री अग्रदेव गुरु कृपातें वाढ़ो नवरस बेलि। चढ़ो लहैं तो लाल छवि फूलो नवल सुकेलि॥

कोल कुंज की शोभा—

(२) श्री अग्रदेव करुना करी सिय पद नेह बढ़ाय × × × ×

ग्रंथ समाप्ति।

(१०) पृ० १७१—१७२ तक—अग्रसुमति का वंश।

(११) पृ० १७३—१७५ तक—उपसंहार।

Note—गुरु वंश वर्णन।

श्री रामनंद रघुनाथ ज्यों कियो सेतु विस्तार। तेहि चढ़ि नर भव सिंधु तरि पहुंचहिं हरि दरबार। तासु शिष्य अष्टांग विद नाम अनंतानंद। ज्ञान भक्ति वैराग्य निधि गुरुकुल कैरव चंद।

चो०—श्री कृष्णदास अवतार सुहावन। तेहि के अग्र सुमति जग पावन॥ तेहि के विमल विनोदी जानैा॥ तेहिते ध्यान दास सनमानों॥ चरनदास मंगल गुनखानी॥ सिय पद वाल कृष्ण रति मानी॥ श्रीसुषरामदास तेहि केरे॥ रसिक राम सेवक प्रभु केरे॥ केसव कुंज सिया वर दासा॥ श्री जानकी शरण सिय आसा॥ सहजराम सियराम हजूरी। जुगल चरण रति मति अति पूरी॥ अग्र सुमति को वंस उदारा॥ अली भाव रति जुगल विहारा॥ जानकि वल्लभ टेकलाल की॥ जै जै जै सिय विदित वालकी॥

No. 289(*b*). Bhaktamāla by Nārāyaṇadāsa (Nabhādāsa). Substance—Country-made paper. Leaves—60. Size—14 × 7 inches. Lines per page—24. Extent—1,620 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1916 or A.D. 1859. Place of deposit—Paṇḍita Sarjūprasāda, Village Mahru, Post Office Matera, District Bahrāich (Oudh).

Beginning.—अथ मूल भक्तमाल नारायण दास कृत लिष्यते ॥ दोहा ॥ भक्त भक्ति भगवंत गुरु चतुरनाम वपु एक। इनके पद वंदन करत नासै विघन अनेक ॥ मंगल आदि विचारि कै वस्तुन और अनूप। हरिजन को जस गावते हरिजन मंगल रूप ॥ सब संतन निरनै कियो मति श्रुति पुरान इतिहास। भजिवे को दोऊ सुघर है कै हरि हरि के दास ॥ श्री गुरु अग्रदेव आज्ञा दई भक्तन को जस गाव। भवसागर के तरन को नाहिन आन उपाव ॥ छप्पै ॥ जय जय मीन वराह कमठ नरहरि वलि वावन परसराम रघुवीर कृष्ण कोरति जगपावन ॥ वुध कलंकी व्यास प्रथु हरि हंस मन्वंतर। जग्य रिषभ भयग्रीव ध्रुव वरदैन धनंवतर ॥ वद्री पति हत कपिलदेव सनकादि करुना करौ। चौवोस रूप लोला रुचिर श्री अग्रदास यह उरधरौ ॥ चरन चिन्ह रघुवीर के संतन सदा सहाइका अंकुस अंवर कुलिस कमल जव ध्वजा धेनु पद। संष चक्र स्वास्तिक जंवुफल कलस सुधाह्रद ॥ अर्धचन्द्र षटकोन मीनविंदु उर्धरेषा ॥ अष्टकोन त्रयकोन इन्द्र धनुष पुरुष विसेषा ॥ सीता पति पद नित वसत एते मंगल दायका। चरन्ह चिन्ह रघुवीर के संतन सदा सहायका।

End.—फल अस्तुति साषी ॥ पादप पेड़हि सींचते पावै अंग अंग पोष। पूरुव जात्यो वरनते सब मानियो संतोष ॥ भक्त जिते भूलोक में कथे कौन पै जाय। समुद्रपान श्रद्धा करै कहा तिरिया पेट समाय ॥ श्री मूरति सब वैष्णव लघु दीरघ गुनन अगाधु ॥ आगे पाछे वरनते जिन मानौ अपराध ॥ फलको सोभा लाभतरु सोभा फल होय गुरु सिष्य को कोरति में अचरज नाही कोय ॥ चारजुगन में भक्त जे तिनको पद को धूरि सर्वसु सिर धरि रापिहौं मेरो जोवन मूरि ॥ जग कोरति मंगल उदै तीनो ताप नसाय। हरि जन कौ गुन वरनते हरि हृदय अटल वसाय ॥ हरिजन को गुन वरनते जो करै असूया आय यहां उदार बाढ़ै विथा अरु परलोक नसाय ॥ भक्तदास संग्रह करै कथन श्रवन अनुमोद सो प्रभु को प्यारो पुत्र ज्यों बैठे हरि को गोद ॥ अच्यूत कुल जस एक वेर हूं जाको मति अनुरागो। उनको भक्ति भजन सुकृत को निश्चय होय विभागो ॥ भक्त दास जिन जिन कथो तिनको जूठनि पाय। मो मति सारू अक्षर द्वै कोनो सिलो वनाय ॥ काहूं को वल जोग जज्ञ कुल करनी को आस भक्त नाम माला अगर उर वस्यो नरायनदास ॥ इति श्री भक्तमाल मूल श्री नरायनदास कृत समाप्त इति श्री मूल भक्तमाल नारायनदास कृत लिष्यते अयोध्याप्रसाद महरू ग्राम संवत १९१६ अमावस्या वैसाष मासे कृष्ण पक्षे रविवासरे।

Subject.—नाभादास कृत मूल भक्तमाल का छंदानुवाद

No. 289(c). Rāmacharitra by Narāyanadāsa (Nābhādāsa). Substance—Country-made paper. Leaves—21. Size—15 × 4

inches. Lines per page—20. Extent—472 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character--Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1914 or A.D. 1587. Place of deposit—Ṭhākura Jagadeva Simha, Village Gujauli, Post Office Bauni, District Bahraich (Oudh).

Beginning.—वहु अति कोमल विछे गलोचा सुमनन को रचना विच वोचा ॥ कहुं कंचन की चौकी धरो । श्री सरजु जल झारी भारी ॥ रतन जड़ित वहुधरे कटोरा । वहु मेवा जुत स्वाद न थोरा ॥ पान दान वो न ते भारे । अगनित भांति सुरभि पय धरे ॥ पुनि ताहो पाछे परदा डारे । तहं नूतन सोष ईठि सवारे ॥ प्रेम अवर नव सु मंजरी पुनिताह तीस सहचरी ॥ तीन पीछे व्यालन वहुराजे । निज निज सो लिये सब आजे ॥ कोई ताम्वल लिये कोई भारी । कोई सुमनन सिगार सवांरी रंग रंग के जगरा लीन्हे पीतम मग चितवत चित दीन्हे ॥ अंतहपुर की धुनि सुनि पाई । निज निज थल तिन सेज बनाई ॥ कोइ एक समै प्रभाती लिये सुगंध अनेकन भांती ॥

End.—चौपाई ॥ जाय पलंग वैठे रंग भीने । सैन करन को टिशि रुष कीन्हे ॥ पौढ़ेलाल हृघापद लालत । रस मंजरी चवर सिर ढारत ॥ रस मंजरी चरण तव लागी । सोय अस शिर धरि अनुरागी ॥

॥ दोहा ॥ जव लगो दमपति सैन करि परदा दीन्ह झुकाय । निज निज यह अली सकल भीने सब्य सुनाई ॥ यहि विधि प्रभु अनेक चरित कीन्हो जथा मति गाइ । चक क्षमा कीजो सज्जन सुनिये प्रीति लगाइ ॥ इति श्री राम चरित्र नारायणदाश कृत सुभ समास कातिक मासे कृष्ण पक्षीत अमावस विच धारा संमत १९१४ ग्राम गुजवलि लिषिते देविदीन मुसदी समस्त ॥

Subject.—श्री रामचन्द्र और सीता जी का प्रेम व्यवहार ।

No. 290. Iśkachamana by Nāgara (Sāmanta Simha). Substance—Country-made paper. Leaves--9. Size—6 × 5 inches. Lines per page—14. Extent—55 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character--Nāgarī. Date of Manuscript --Samvat 1812 or A. D. 1785. Place of deposit--Ṭhākura Naunihāla Simha Kānthā, Unao

Beginning.—श्री इष्ट देवजी ॥ दोहा ।

इश्क उसी की झलक है ज्यौं सूरज की धूप ॥
जहां इश्क तहं आप है कादर नादर रूप ॥ १ ॥

कहूं किया नहिं इश्क का इस्तामाल सँवार ।
सो साहब सो इश्क वह क्या करि सकै गँवार ॥ २ ॥
सरमिंदा होई इश्क सें सैा देवे सब कोइ ।
निंदा सह दंनि सहै सोइ चुनिंदा होइ ॥ ३ ॥
दुनियादार फकीर क्या है सब जितनी जात ।
विगर इश्क मस्ती अरे सब की खिस्ती बात ॥ ४ ॥
सादे जे प्याले सवै जद्यपि धन्न अपार ।
इश्क अमल मस्ती लिये सो हस्ती असवार ॥ ५ ॥
सब मजहब सब अमल अरु सबै ऐश के स्वाद ।
श्रोर इश्क के असर विनु ए स्वहो वरवाद ॥ ६ ॥

End.—खलक न मानै एक भी अवस किये वकवाद ।
खूब कमावे इश्क का तब कछु पावे स्वाद ॥ ३९ ॥
मज़ा अजब है हुसन का रखै चशम ज़ुवान ।
इश्क चमन रक्खे साई आवादान सुजान ॥ ४० ॥
चश्मों के चश्मा भरै झरना आवै फिराक ।
इश्क चमन तव सब्ज रहै दिल जमीन हो पाक ॥ ४१ ॥
इश्क चमन आवाद अरु इश्क चमन का गांव ।
नागर घर महवूब के इश्क चमन में आव ॥ ४२ ॥
जिगर चश्म जारी जहां नित लोहू को कीच ।
नागर आशिक लुट रहे इश्क चमन के वीच ॥ ४३ ॥
चलै तेग नागर हरफ इश्क तेज की धार ।
श्रोर कटै नहिं धार सें कटै करै रिझवार ॥ ४४ ॥

इति श्री इश्क चमनना दोहरा संपूर्णम ॥ लिषितं गवेशो शंकरेण स्वयं पठनार्थम् मुकाम खिरपाई मिति दुति चैत्र सुदि २ सोमें संवत् १८४२ मारु ॥ इति ॥

Subject.—इश्क सम्बन्धी पद्य ।

No. 291. Nāgarīdāsajī kī bānī by Nāgarīdāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—24. Size—8 × 7 inches. Lines per page—44. Extent—924 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābu Śyāma Kumāra Nigama, Rae Bareli.

Beginning.—श्री राधा रसिक विहारी जी ॥ अथ श्री नागरीदास जी की वानी लिख्यते ॥ दोहा ॥ चरण कमल रज हेयहीं मन वच क्रम यह आस ।

अपनो सर्वस जानि वलि जाइ नागरीदास ॥ १ ॥ लै कर[वो] कोपीन कामरो कुंजनि कूल विलासि । तब मिलहि मोत मन मुदित विहारो विहारिनि दासि षवासि ॥ २ ॥ अति निरपेक्ष संगु संग्रह अनन्य आन गति नाहि । श्री विहारोदासि उपासि सुष संग बैठि महल मन मांहि ॥ ३ ॥ नित्य विहारि सार सव का अति दुर्लभ अगम अपार । अनन्य धर्म संधि समझे विनु माया कठिन किवार ॥ ४ ॥ यह उपदेश उपाइ श्री विहारोदासि कृपा तें जानै । नित्य सिद्ध विनु नागरोदास कहा कोऊ पहिचानै ॥ ५ ॥ गुन धनहीन सुदोन प्रेम उर राषउ गुन गंभोर । श्री नागरीदास यों वस्तु छिपावत ज्यों गूदर में हीरा ॥ ६ ॥ हीरा का ललचात लिवासी परचैां पंजी न मर्मी । श्री नागरोदास विहारै चाहत विनु अनन्य धन धर्मी ॥ ७ ॥

End—सवैया ॥ वजावत वीन प्रवीन पिया । मानो नृतत है दस चंद नष दुति ह्वै कर काम प्रकास किया । चक चोंधि रहे हरि हेरि मनो तान तरंग के रंग जिया ॥ दासि श्री नागरी के गहि पाय रिझाय रसिक सु अंक लिया ॥ अति कोक कला गुन गांन सुजान वजावत वीन प्रवीन पिया ॥ ५ ॥

प्रानन के प्रान मेरे नेंननि के तारे हो । सहज सनेह निजु धन धरि उर अंतर अपने प्रान राषि रषवारे हो । अलक पलक जिन अंतर अपने सुनहु सुजान मुष जोवत निहारे हो । अतिही व्याकुल कित काहे कौं कुंवर तुम तन मन मेरे अति प्रीतम पियारे हो ॥ दासि श्री नागरी हित तुहो प्रिया मांन चित प्रानन के प्रान मेरे नेंननि के तारे हो ॥ इति श्री नागरीदास जी को सवैया ॥ संपूरण ॥ इति श्री नागरीदास जी की वानी संपूरण ।

Subject—पृ० १ राधाकृष्ण स्तुति । पृ० २ गुरुवंदना और स्तुति ॥ पृ० ३ नागरोदास जी की साखी । पृ० ४ विहारिनदास के प्रति नागरोदास की भक्ति वर्णन । पृ० ५-१० सिद्धान्त के कवित्त वर्णन । पृ० ११-१५ राधाकृष्ण रहस्य वर्णन पृ० १६—२०—राधाकृष्ण का विश्राम वर्णन । पृ० २१—२४—राधाकृष्ण शोभा और भक्ति के पद वर्णन ।

No. 292(*a*) Vaidya Manotsava by Nainasukha of Sarhind. Substance—Country-made paper. Leaves—70. Size—9½ × 4½ inches. Lines per page—10. Extent—437 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1649 or A. D. 1592. Date of manuscript—Samvat 1825 or A. D. 1768. Place of deposit—Paṇḍita Dewaki Nandana, Village Rawariyā, Post Office Alīgañja Bāzār, Sultānpur.

Beginning—श्री सद्गुरुभ्योनमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः। श्री वीतरागाय नमः ॥ श्रीरस्तु ॥ अथ वैद्य मनोत्सव लिख्यते दोहा ॥ शिव सुतपद प्रणमैं सदा। रिधि सिधि नित देइ। कुमति विनासन सुमति करि मंगल सर्व करेइ ॥१॥ अलष अमूरति अलष गति। किन हिन पायो पार। जोर जुगल कर कवि कहै, देहि देव मति सार ॥२॥ और ग्रंथ सब मथिकै। रचौज भाषा आनि दिषायो प्रगटि कर औषध रोग निदान ॥ ३ ॥ ममममति अल्प जु कहत हैं, कवि मति परम अगाध, सुगम चिकित्सा थित रचित षिमौ सवे अपराध ॥ ४ वैद्य मनोत्सव नाम धरि। देषि ग्रंथ सु प्रकाश। केसराज हन नैनसुष। भाषा कियो विलास ॥ ५ ॥ प्रथम नसा लक्षन कहौं, देषि ग्रंथि मति सोइ। पुनि आनौ अनुभाव ही जैसो ममममति होइ ॥६॥

End—केशराज सुत नैनसुष कियो अमृत को कंद। सुभ नगरी सरिहंद में अकबर शाह नरिंद ॥ अंकवेद रस मेदिनी सुकल पक्ष मधुमास-तिथि द्वितीया भृगुवार सुनि पुहुपचन्द्र प्रसुकास ॥ मात्रा अंग सुवेद्य पुनि कह्यो अल्प मति सोय। कवि जन सवै सुधारियो होन जहां कहं होय ॥ वैद्य महोत्सव ग्रंथ मह कह्यो सकल निज आनि। दुषकन्द पुनि सुष करन आनंदि परम निदान ॥ अथ सोरठ ॥ कीयो षर्गाट दधि मंथि, औषध रोग निदान पूनि, सकल सुधा कर ग्रंथि; करगौ समापित आदि अंत ॥ इति श्री नयनसुष विरचिते वैद्य मनोत्सवे ग्रंथि विद्या विनोदे समाप्तम सम्वत् १८२५ माघ कृष्णाष्टम्याम् लेषक पाठक जो जयतु ॥

Subject—पृ० १—७ तक—वैद्य मनोत्सवनाम धरि देषि ग्रंथ सुप्रकास। केसराज तन नयनसुख भाषा कियो विलास ॥ प्रथम उद्देश्य, नाड़ी परीक्षा, वात, पित्त, कफ निदान साध्यासाध्य लक्षण, काल चक्र। पृ० ८—२४ तक द्वितीय उद्देश्य—ज्वर, सन्निपात, अतिसार, संग्रहणी रोग प्रतिकार। पृ० २५—३१ तृतीय उद्देश—रस, भगंदर, गुल्म, आमवात कृमिरोग प्रतिकार। पृ० ३१—३५ चतुर्थ उद्देश्य—कासादिस्वास, कास मंदाग्नि विसूचिका रोग प्रतिकार पृ० ३५-४४ पंचमोद्देश-कुरठ प्रमेहमूत्र, कृपमूत्र, चेराधन, अस्सरी कुंडू पामाव चर्विकालूत वीयन्हारु वा सस्त्रघात प्रतिकार पृ० ४४-५६ षष्टमोध्याय-सिर रोगादि प्रतीकार पृ० ५७—७० सप्तमोध्याय—वगल गंधादि प्रतिकार

No. 292(*b*). Vaidya Manotsava by Nainasukha of Sarhind. Substance—Country-made paper. Leaves—94. Lines per page—8. Extent—658 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1649 or A. D. 1592. Date of manuscript—Samvat 1827 or A. D. 1770. Place of deposit—Paṇḍita Kūvarapālajī, Village Taramai, Post Office Śikohābād, District Mainpurī.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः ॥ श्री गुरुभ्योनमः वैद्यमनोत्सव लिष्यते ॥ शिव सुत पद प्रणवैां सदा। रिद्धि सिद्धि नित देह ॥ कुमति बिनाशन सुमति कर मंगल मुदित करेह ॥ १ ॥ अलष अमूरति अलष गति नाहिन पायैा पार। जोरि युगल कर कवि कहै देहु देहु मति सार ॥ २ ॥ वैद्यक ग्रंथ सब मथन कै रच्यैा सुभाषा आन। अर्थ दिखायैा प्रगट कर ओषध रोग निदान ॥ ३ ॥ मम मति अलप सु कहत हैं कवि मति परम अगाध। सुगम चिकित्सा चतुर चित छिमैां सबै अपराध ॥ ४ ॥ वैद्य मनोत्सव नाम धरि देखि ग्रंथ सुप्रकाश। केशवराय सुत नैनसुख श्रावक धर्म निवास ॥५॥ प्रथम नसा लक्षन कहैां देखि ग्रंथ मति सोइ। पुनि आनैां अनभाव हाे जैसो मम मत होय ॥ ६ ॥

End—बगल गंध कै उपाय ॥ मोथा वेल हरोत को वीज अंवलो पाइ। लेप करै नर नीर सों बगल गंध सुपराय ॥ ४६ ॥ मुख दुर्गंधता कहु गुटका ॥ वेल काथ ऐलाइची जावित्री तजु लेय। गजकेसरि अरु जायफल ये ओषधि सम देय ॥ ४७ ॥ गोली करहु मघोर सों सैन समै मुख धार। आनन की दुर्गंधता नास होइ ततकार ॥ ४८ ॥ दुर्गंधता कहु लेप ॥ गजकेसर पन्ही जड़ पाइ ॥ सिरस पत्र अरु लोद मिलाइ। जलसो मर्दन कोजै गात। अति दुर्गंधता छिन महिं जात ॥ ४९ ॥ सिर की दुर्गन्धता कै लेप ॥ चन्दन माथ चमावतो छल्हो रासु कचूर। जल सो पावहु सोस महं होइ दुर्गंधता दूर ॥ ५० ॥ परमत ग्रंथ समुद्र सम मम मत खोज अपार। ओषधि रत्न सुते गृहो किये प्रगट संसार ॥ ५१ ॥ वैद्य मनुत्सव ग्रंथ महं कह्यो सकल निजु ग्यान। दुख कंदन पुन सुष करन आनंद परम निधान ॥ ५१ ॥ × × × ×

मात्रा अंक सु छंद पुनि कह्यो अल्प मत सोइ। गुन जन सबै संवारियहु हीन जहां कछु होइ ॥ ५५ ॥ सोरठा ॥ कियैा प्रगट दय मंथ ओषधि रोग निदान पुनि। सकल सुधा सम ग्रंथ कह्यो सुप्र आद अंत ॥ इति श्री केशवदास पुत्रेन नैनसुख विरचिते वैद्य मनोत्सव स्त्री पुरुष रोग सम्पूरणम्। लिखा कालिका दयाल ने सोमवार के दिन कातिक वदी ५ संवत १८२७ वि० ॥

Subject——(१) पृ० १—१२ तक—प्रथम अध्याय।

मंगलाचरण, गणेशादि वंदना, प्रस्तावना, ग्रंथकार के धर्मादि विषय का अति सूक्ष्म परिचयः—

वैद्यमनोत्सव नामधरि, देखि ग्रंथ सुप्रकास।
केशवराय सुत नैनसुख, श्रावक धर्म निवास ॥

नाड़ो परोक्षा, दूतादि शुभाशुभ लक्षण, शकुन, मुख परोक्षा, वात, पित और कफ का निदान, इन्हों तीनों के लक्षण, इन तीनों का उपचार, काल ज्ञान साध्यासाध्य लक्षण, काल ज्ञान तथा काल चक्र।

(२) पृ० १३—३२ तक—द्वितीयोध्याय।

पित्तज्वर लक्षण, कफज्वर लक्षण, वायु ज्वर लक्षण, काल ज्ञान तथा मलज्वर लक्षण, अजीर्णज्वर लक्षण, पेदज्वर लक्षण काल ज्ञानत लघु सुदर्शन चूर्ण, इष्टज्वर लक्षण, काल ज्ञानात कालज्वर लक्षणं, ज्वर पर पक्कनाम दशा, ज्वर विमुक्त के लक्षण षोडषांग चूर्ण, रस मंजरी मतात महाजरांकुश। शीतज्वर का ज्वरांकुश, अंजनज्वर, पित्तज्वर का प्रतीकार, पित्तदाघज्वर का चूर्ण, काल ज्ञानात कफज्वर का चूर्ण, वायज्वर का चूर्ण, वृंद संघारात मल्लज्वर का क्राथ, काल ज्ञानात रसज्वर का चूर्ण, काल ज्ञानात पेदज्वर का लक्षण, काल ज्ञानात इष्टज्वर का चूर्ण, वायु पित कफ का चूर्ण, शीतज्वर का चूर्ण, विषमज्वर का चूर्ण, बंद संग्रात त्रिदोष स्वांस कास का क्राथ, चतुर्थज्वर की धूनी, अवलेह, सारंग धरात ज्वर की औषधि, लघु लाक्षादि तैल, आनंद भैरव रस, सन्नपात का चिन्तामणि रस, कनक सुन्दरी रस, अष्टदशांग क्राथ, सन्नपात का नास, उसी का अंजन, त्रिकंटकादि क्राथ, उसकी औषधि, अतिसार लीलावती, वृद्धगंगाधर चूर्ण, लघुगंगाधर चूर्ण, अतिसार का लेप नागरादि क्राथ, रक्त अतिसार का क्राथ, अतिसार का गुटका, दमांतसार का चूर्ण, संग्रहणी रोग चिकित्सा, धानपंचक क्राथ, संग्रहणी वायु-शूल का चूर्ण, अरुचिशूल संग्रहणी क्राथ।

(३) पृ० ३२-४२ तक—तृतीय अध्याय।

अर्शरोग चिकित्सा रंग धरात सूरणि वटिका, ववासीर का चूर्ण, ख़ूनी ववासीर की औषधि, रक्त बवासीर की औषधि, ववासीर का चूर्ण, अन्य भगंदर रोग प्रतिकार, भगंदर का लेप, भगंदर की औषधि, गुल्मरोग प्रतीकार, काष्टोदर की औषधि, उदर के सर्व रोगों की औषधि, आमवाद का चूर्ण, सर्व शोथ का क्राथ, क्रमिरोग प्रतिकार, क्रमि का चूर्ण, शूल रोग प्रतीकार, शूल का हिंगाष्टक चूर्ण, शूल के लिये पंचसम चूर्ण, तुंबरादि चूर्ण, अन्य चूर्ण शूल पर, पांडु रोग, कमलवाय का उपचार, इसी रोग का अवलेह, कमलवायु की पोटली, इसी रोग का अंजन तथा औषधि, क्षय रोग का प्रतीकार, क्षय रोग का चूर्ण।

(४) पृ० ४३—४८ तक—चौथा अध्याय।

हिचकी रोग प्रतीकार, हिचकी का मनोरमा धूनी, क्षय रोग प्रतीकार, क्षय रोग का अवलेह, स्वांस रोग प्रतीकार, स्वांस का चूर्ण, कास रोग प्रतीकार गोली पंधनी, गोली षंड खांसी की, बटी षंद की, बड़ी कफ खंड की, मंदाग्निरोग प्रतीकार, मंदाग्नि का चूर्ण, क्षुंधाकरण गुटका, मंदाग्नि की, गज-केसर चूर्ण विशूचिका रोग प्रतीकार, सूची वल्ली उपाय।

(५) पृ० ४८—६१ तक—पंचमोध्याय।

कुरंगवाय प्रतीकार, अंडरोग चूर्ण, औषधि, अंड वृद्ध को हित उपदेशात् उपाय, लेप, प्रमेह प्रतीकार, प्रमेह का चूर्ण, तथा औषधि, मूत्रकृच्छ प्रतीकार, एलादि क्वाथ, मूत्रकृच्छ का चूर्ण, मूत्रशोधन प्रतीकार, मूत्ररोध का क्वाथ, चूर्ण पथरी रोग प्रतीकार, पथरी का क्वाथ, मृगी रोग प्रतीकार, पुष्परादि क्वाथ, मृगी का नास, ब्राह्मी घृत, कुष्ट रोग प्रतीकार कुष्ट का चूर्ण, लघु मंजिष्टादि क्वाथ. श्वेत कुष्ट लेप, श्वेत दाग का अन्य लेप, औषधि वृन्द संग्रह से, कंडू का चूर्ण, लेप पांव का लेप पाम दादु, लेप शंमादि कंडू का, लेप लूत का थिभ रोग प्रतीकार, लेप, नहरू प्रतीकार, शस्त्रघात का दारू।

(६) पृ० ६२—८० तक—षष्टमोध्याय।

वायु का चूर्ण, गुटका, त्रिपुर भैरों रस, वायु पीड़ा का, लघु विषगर्भ तैल अकड़ वायु का प्रयत्न, त्रियोदशांग गुगल, पित्त का प्रतिकार, दाध विथा प्रतिकार, छर्दि रोग प्रतीकार चूर्ण, लेप, कफ रोग प्रतीकार, कफ का चूर्ण, गंडमाल रोग प्रतिकार, गंडमाला की औषधि, कचनार गुगल, मुखरोग प्रतीकार, दंत पीड़ा रक्त प्रवाह की औषधि, कीट पीड़ा दंत रक्त की औषधि, मुख पाक औषधि, मुखकी ली की औषधि, छाँई की औषधि, लेप, नासिका रोग प्रतिकार, पीनस रोग की गुटका, पीनस का नास, नेत्र रोग प्रतीकार, नेत्र पीड़ा का रगड़ा, नेत्र पीड़ा का अंजन, रात्रि अंध का, अंजन रतौंध का अंजन, पड़वाल की औषधि, सबल वायु का अंजन, सबलवाय का रगड़ा, खोरा वायु का अंजन, औषधि कर्ण रोग की, कर्ण शूल पूर्व दुख पीड़ा की औषधि, सिर रोग प्रतिकार वात सिर्वर्त का लेप, कफ सिर्वर्त का लेप, पित्त सिर्वर्त का लेप, लेप त्रिदोष सिरवर्त का आधा सीसी का लेप नास, और जंत्र, ऊलका नास, केश वढ़ने की औषधि, सिर काकस की औषधि, इन्द्रलुप्त का उपाय, केशकल्प लिख्यते।

(७) पृ० ८१—९४ तक—सप्तमोध्याय।

स्त्री रोग प्रतिकार औषधि, पुहुप होने की औषधि, योनि शुद्ध होने की औषधि, गर्भ होने की औषधि, पुनश्च गर्भ धारिणी औषधि, कष्टी स्त्री का उपाय, पुनश्च गर्भ जाता हो उसकी औषधि, भगसंकोचन प्रतिकार, भग संकोचन औषधियां, इसकी गोली, योनि दुर्गंध विनाश, कुच कठिन करने की औषधि, औषधि थड़ होने की, पुनश्च, बाल रोग चिकित्सा, बालक का अवलेह, बालक अतीसार का क्वाथ, बालक की गुदा पके की औषधि, पुरुष चिकित्सा, लिंग स्थूल का लेप, वृंद स्थूल का लेप, वृंद स्थूल का लेप, ठंडे का लेप, स्थंभन विधि, पुनश्च, मदन प्रकाश चूर्ण, काम

विलास गुटका, धातु वृद्धि का गुटका, दुर्गन्धता हरण औषध, दुर्गंधिता हरण औषधि, बगलगंध का उपाय, मुख दुर्गंध की औषधि, लेप, सिर की दुर्गंध का लेप ॥

ग्रंथकार का सूक्ष्म परिचय—केशवराज सुत नैनसुख कह्यो ग्रन्थ अभिकंद। शुभनगरी सिह वंद मँह, अकबर साह नरिंद ॥ ग्रंथ निर्माण कालः— अंकवेद रस मेदनी (१६४९) शुक्लपक्ष शुचिमास। तिथि द्वितीया भृगुवार पुनि पुष चंद सुप्रगास।

No. 292(*c*). Vaidya Manotsava by Nainasukha. Substance—Country-made paper. Leaves—50. Size—10 × 6 inches. Lines per page—20. Extent—1,000 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1846 or A. D. 1789. Place of deposit—Ṭhakura Basanta Siṁha, Village Urab, Post Office Śāhamau, District Rāo Barelī.

Beginning—(पृष्ट ३ से प्रारम्भ)—भोर एक सादू षाइ कफ मिटै ॥ इच्छाभेदी रस ॥ पारोटंक २॥ सुहागा टंक २॥ गंधक टंक २॥ मिरचै टंक २॥ जैपाल टंक १० आक के रस षरलै ताते पानी सो देइ ॥ अजमोदादि चूर्न ॥

End—अथ संन्निपात नाम जानिवो। संधिकः सांतिकश्चैवाः गुरुदाइ चित्त विस्रमै ॥ सीतांगः तंद्रका प्रोका कंठ कुविजश्च कनिका ॥ विष्याते भग्न नेत्रश्च रक्तस्तटीवी प्रलापकः। जिभकश्चेतु भिन्यासो सन्यपातः त्रयोदसः ॥ १३ ॥ टीका ॥ पीर अफर दाह सूल पेट कफु मलु षसै जगै वहुत पसीना आवै जीभ सुषै तरुया सूषै जीभ पै काटे होइ, गरोह कै ॥ जथा प्रति तथा लिष्यंते मम दोषो न दीयते ॥ वैशाष मासे शुक्ले पछे तिथैा दुतियायां चंद्रवासरे पोथी लिषितं पाडे मंसारामु नग्र उसहित ॥ परगने वदाउ ॥ पठनार्थे सुषलाल सिंघ वैश भाले सुरतान नगर डोह संवतु १८४६ सनि फसली ११९६ हरर गुन। ग्रीष्मे तुल्य गुडाश सैधवजुतां मेघावनिध्यं वरे। शर्करया शरद्विमल मा सुष्य तुषारागये। पिपल्या शिशिरे वसंत समये क्षैाद्रेण संजोज्यनां राजन प्राप्य हरीत की मिदं गदानश्यं तितेसभवः

ग्रीष्म	वर्षा	सरद	हेमंत	सिसरे	वसंत समये
दाष	सेंधोनोन	षाडकेंसं	सोंठि	पीपरि	सहत सो

Note—पं० केशवदास के पुत्र नैनसुख कृत वैद्यमनोत्सव नामक पुस्तक अपूर्ण है पृ० १, २, ८, ९, १०, ११, १६, १७, १८, १९, २०, २३, २४, २५, २७, २८, २९, ३१—३६ ३९—४३, ४८ नहीं है। देखने में पुस्तक पुरानी जान पड़ती है।

No. 292(*d*). Vaidya Manotsava by Nainasukha. Substance—Country-made paper. Leaves—9. Size—$10\frac{1}{2} \times 8$ inches. Lines per page—46. Extent—275 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1914 or A. D. 1857. Place of deposit—Ṭhakura Jagadmbikā Prasad Siṁha, Gudawāpur, Post Office Chilwaliyā, District Baharāich.

Beginning—श्री रामायनमः॥ वंदों लम्बोदर चरन करहु सिद्धि सब काज। केसोराज सुत नैनसुख भाषा करो समाज॥ १॥ औषध रत्न सुते महे प्रगटि किये संसार। वैद्यमनोत्सव जगत में औषधि है निजसार॥ २॥

अथ ज्वराधिकार :—मोथा, सोंठि चिरायता पीत पापरा जानि। केरवार गिलोय पिप्पलो ये सम पीसहु आनि॥ ३॥ यह चूरन प्रशस्त करि जलसों पीजे प्रात॥ अनल पित कफ दोषत्रय होइ सर्वज्वर घात॥ ४॥

End—अथ तोल संज्ञा॥ जवा चारि रत्ती है विमल चारि गुंज को वहि। आठ गुंज मासा कहा सुनो तोल को गहि॥ मासे चारि टंक तू जानि। षट मासे तू गइ बखानि। कर्ष एक मासे दस होइ। कर्ष चारि पल जानहु सोइ॥ १६१॥

इति श्री वैद्यमनोत्सवेन उन समुद्देसः सम्पूर्ण त्रै ष्यतेम पंड कातिक मासे कृष्ण पक्षे त्रयोदस्यां गुरुवासरे संवत १९१४ साके १७७९ पोस्तक प्रति भय उमाराव सिंह नकल प्रति द्वितीया लीषते भैरोंप्रसाद ग्रामें गुदुवापुर सुभमस्तु॥ राम॥ राम॥

No. 292(*e*). Vaidya Śāstra by Nainasukha. Substance—Country-made paper. Leaves—66. Size—$11 \times 5\frac{1}{3}$ inches. Lines per page—32. Extent—1,188 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1894 or A. D. 1837. Place of deposit—Bhaiyā Mahipāla Siṁha, Rais, Payāgapur, Post Office Payāgpur, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ वैद्यशास्त्र लिष्यते॥ दोहा॥ त्रियासंग अरु बीजना सीरे सलिल स्नान। भोजन मधु रस गंधिता करत कोप तहं

हानि ॥ तप्त उदक अरु दव्यं पुनि मर्दन तेल शरीर । सुरापानि सेके दहन इन्हते जाइ सरीर ॥ अथ साध्य लक्षन ॥ सोरठा ॥ होइ त्रिषा जस हीन कर पद नाभी तपत हो । सुमृदु सरना परवीन । सुभ लक्षन ताके कहैं ॥ इन्द्री अंगु नागि ॥ ३० नचो ६० निधि ९ नारिय १२० नमीक १५०, स्वासा उर्धद्धि दुवाह मिलाइ कै गावत । आदि अकास समीर सिषी अपकुंभनि भिन्न व भिन्न वतावत ॥ मेदनि ते पुनि नोचहि धावत भांति हो मेधै तिनि ठामनि में लव छावत ॥ हो कमले कदले नन धापदु ९०० मैनन रासि ७१,२०० दिनैा निसि पावत ॥ ६४ ॥

End—जो वाज का जोंको लागी होइ ताका श्रोषधि जो कैसेहुन मोच होइ ॥ पिअरी गाइ का दूध श्रो आधा पानी मेरै कै देइ तो अच्छा होइ । श्रोर जो जानवर दुलतो काढत होइ ताका श्रोषधि पिअरी गाइ का दूध पानी मिलाइ के तांवा वोरि देइ दैके चलता होइ चाहो कि जब आधा तांवा पचवै तबहो चलै न दुलतो काढै ॥ जो जानवर कुरोच का वांधो तो गाइ क मसका ताजा पानी से धोइ कै जेहि माठा न लाग रहै तेहि से तावा वोरि कै देइ तो पर अच्छे आवहि श्रोर सिताव पर झारै कै जुगति वरे का छाता गाइ के घोड में श्रांटि के छाता निकासि डारै वही घोड में तावा वोरि कै देइ तो पर सिताव झरै ॥ इति श्री नयनसुखेन बिरचिते वेद शास्त्र सम्पूर्णम् । मार्ग सुदी १ संवत १८९४ ॥

Subject—पृ० १—६६ तक श्रोषधियों श्रोर रोगों के लक्षण तथा भस्म आदि बनाने की रीति श्रोर रोग परीक्षा आदि का वर्णन है ।

No. 293(*a*). Japajī by Guru Nanakajī Mahārāja of Tilamadī Nanakānā (Punjab). Substance—Country-made paper. Leaves—21. Size—$6\frac{1}{4} \times 4$ inches. Lines per page—7. Extent—160 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1820 or A. D. 1763. Place of deposit—Śrī Mahanta Nānak Prakāśa, Baḍī Saṅgati, Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ सति गुरु प्रसाद सति नाम कर्ता पुरुपु निरभो निरवैर अकाल मूरति अजूनी से भंगुर परसाद जप । आदि सचु जुगादि सचु । है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥ १ सोचै सोचिन होवई जेला चीलष वार । चुपै चुपन होवई जे लाभ रहालि वतार । भुषिया भुषन उतरी जेवनापुरी आभार । सहस सिआण पालष होहि ता एक न चलै नालि ॥ किव सचिआरा होइ पे किव कूडै तुटै पालि । हुकमि रजाई चलना नानक लिखिआ नालि । २

End—ग्रमर तवेला मचुनाउं जपु जपो करि ग्रसनाण। हितु करि जपु को जे पड़ै सो दरजै पावै माण ॥ जनम मरण भव कटिए जो जपु संग लावै धियाण। जियो तियों करि जपु को पड़ै ग्रौसर जीत निदाण। जो मनसा मन में धरै सो पूरण करै भगवाण। ग्रहिनिसि जपु जप तारि है दास नानक दोजै नाम दान। गुरु नानक निरंकारी। जिन सगलो कला धारी। डंडौत ग्रनेक वार सर्व कला समर्थ ॥ डोलंते राखैा प्रभु नानक देकर हत्थ ॥ इति जप संपूरणं शुभम् ॥

Subject—पृ० १—६ तक ईश्वर सत्य है उसी की ग्राज्ञा मानना चाहिये वह निर्गुणादि गुण वाला है, उसका जप पाप नाशक है, वह दुख को दूर करता है।

पृ० ७—११ तक ईश्वर के विशेषण, जप का फल ग्रौर ज्ञान की मुख्यता।

पृ० १२—१७ तक परमात्मा ग्रनन्त है ग्रौर चेतन्यमय है इन्द्रादि उसी की प्रशंसा करते हैं ग्रौर वह सब का रचयिता है।

पृ० १२—१७ तक जप की महिमा

No. 293 (*b*). Jñāna Swarodaya by Nānaka Dāsa (Ranajīta) of Tilamadī. Substance—Country-made paper. Leaves—16. Size—12 × 5 inches. Lines per page—18. Extent—324 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1908 or A.D. 1851. Place of deposit—Ṭhakura Balbhadra Siṁhajī, Raīsa of Vansapurawā, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः परसोतम परमात्मा पूरण विस्वा वीस। ग्रादि पुरुष ग्रविचल तुही तोहि नवावों सीस ॥ क्षर ऊं सो कहत हैं ग्रक्षर सोहं जानि। निह ग्रक्षर स्वांसा भई तू ताको मन ग्रानि ॥ राति दिन सुरति लगावो। ग्रापा ग्रापु बिसारो ग्रह सीस नवावो ॥ नानिक मथि के कहत है ग्रगम निगम को सीस। यही वचन विज्ञान को मानो विस्वा वीस ॥ ऊं सो काया भई सोहं सोहं मन होइ। निह ग्रछर स्वासा भई कहि नानक मलि जोइ ॥ पेंचि मनु ग्रतह राखैा। ग्रछर एक दुविद्ध ग्रनन भाषैा ॥ डार पात फल फूल मूल सो सबै निहारैा। जब दरसे एकाएक भेष पा सबै बिसारैा ॥ स्वासा ते सोहंग भयो सोहं ते उंकार। ऊं सो रा रा भयो साधू करैा विचार ॥

End—भंवर गुफा त्रिकुटी नहीं ना ग्रक्षर की जाप। नानिक दास समाज ते ब्रह्म ग्रषंडित ग्राप ॥ भेद स्वरोदय बहुत है सुछम दियो बताय। ताको समुझि

विचारि के रहै सुरति लै लाय। धरनि टरै गिरवर टरै टरै ससी अरु भानु। वचन स्वरोदय ना टरै कहि नानक परमान ॥ गुरु दाया अरु राम की साधु दया सो जानि। नानिक दास रंजोत है कहै सरोदय ज्ञान ॥ तिलावड़ी मेरा जन्म है नाम नानिका कहायो। काल्हू को सुत जानि जाति वेदी पहिचानो। वाल अवस्था माहि बहुरि में भूलो लायो। कृपा करी जगदीस नाम नानिका धरायो। जोग जुगति हरि भगति करि ब्रह्म ज्ञान की ढीठ। लहो·······राम मनोरथ सत्य है हृदय भक्ती जो होई। इति श्री शुभ संवत १९०८ पोथी लिखा महीपतसिंह कंजामऊ निवासी सरजू तीर कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे अष्टमयाम सुक्रवासरे शुभ संवत १९०८ साके १७७२ राम। पोस्तक लिपत आनंदित अति भायो संसाएं सकल केस दुरि बहायो ॥ श्रीराम लछिमन सुषधाम ॥

Subject—स्वरोदय का वर्णन।

No. 293(*c*). Sukhamani by Guru Nānakajī of the Panjāb. Substance—Country-made paper. Leaves—150. Size—6 × 5 inches. Lines per page—12. Extent—900 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṁvat 1860 or A.D. 1803. Place of deposit—Paṇḍita Lallu Prasāda Dīkshita, Village Mai, Post Office Baṭeśwara, District Āgrā.

Beginning—·······मन कामै भुलाई ॥ अमृत नाम हिर्दै माहि शमाई ॥ प्रभु ली वशै साधु की रशन। नानक सनकाद दशनु दशन ॥ प्रभु कैां शिमिरहि शे धनवंते। प्रभु कैां शिमिरहि से पतिवंते ॥ प्रभु के शिमरहि शे सन परवान। प्रभु कैां शिमरहि शे पुरखु प्रधान। प्रभु का शिमरहि सेवे मुह तासे। प्रभु कैा शिमरहि शे शव के रासे। प्रभु का शिमरहि शे शुखवासी। प्रभु कैा शिमरहि शे शदा अविनाशी ॥ प्रभु शिमरन ते लागे लिन आप दयाला। नानक जनकी मगहिर वाला। प्रभु का शिमरहि शे पर उपकारी। प्रभु का शिमरहि तिन सदा बलिहारी।

End—धुर करम पाआतु धूलिन के शेना महरि के लागे कहै नानक शुबहु आतित घर अनहद वाजे। आनंद शुनों वड़ भगिव शकल मनोरथ पूरे। पारब्रह्म प्रभु पाआ उतरे शकल व शूरे। दुख रोग शंताप उतरिआ शुनि शापी वानी ॥ शंत शाजन भये शर से पूर गुरते जानी। कहदं पुनीत शुनिदे पवित्र शत गुर रैहा भरिपूरे। विनिवंत नानक गुरु चरन लागे वाजै अनहद तूरे ॥ आनंद सुनो बड़ भागिआ शकल मनोरथ पूरे ॥ शंवत १८६० माशोतमे भाद्र वदी १४ भौमवाशरे

लिषि ग्रंथ सुषमनो शोदस संपूरन ॥ मनशाराम मिश्र राम जो सहाय वाबे नानक वकशि लेने ॥

Subject—ईश्वर का स्वरूप, निराकार उपासना तथा भक्ति का वर्णन।

No. 293(*d*). Sukhamani by Nānaka Guru. Substance—Foolscap paper. Leaves—18. Size—7 × 4½ inches. Lines per page—28. Extent—189 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Gokula Prasāda, Rātapura, District Rāe Barelī.

Beginning—पृष्ठ २ से प्रारंभ

नीन ग्रावै ॥ काषो येकै दरसु तुम्हारे । नानक उन संग मोहि उधारो ॥ १ सुषमनो सुष ग्रमृत प्रभु नाम । भगत जना के मन विस्राम ॥ रहाव प्रभु कै सुमिरन गरभ ना वसै ॥ प्रभु कै सुमिरन दष जन नसै ॥ प्रभु कै सुमिरन कालु पर हरै ॥ प्रभु कै सुमिरन दुसमन टरै ॥ प्रभु सुमिरन कछु विघन न लागै । प्रभु के सुमिरन यन दिनु जागै ॥ प्रभु कै सुमिरन भव ना व्यापै । प्रभु कै सुमिरन दूष ना संतापै ॥ प्रभु कै सुमिरन साधु कै संग । सरवनि धान नानक हरि रंग ॥

End—ग्रष्टपदी ।

जेहि प्रसाद छत्तिस ग्रमृत षाय । तिस ठाकुर को राषु मन माहि ॥ जेहि प्रसाद सुगंध तन लावै । तिसके सुमिरन परम गति पावै । जेहि प्रसाद वसहि सुष मंदिर । तिसै ध्याइये सदा मन ग्रंदर । जेहि प्रसाद ग्रह संग सुष वसना ॥ ग्राठ पहर सुमिरैा तिस रसना ॥ जेहि प्रसाद रंग रस भोग ॥ नानक सदा ध्याइये ध्यावन जोग ॥ जेहि प्रसाद पाट परंवर ग्रढ़ावै ॥ तिसै त्यागि कित ग्रोर लैा भावै । जेहि प्रसाद सुष सेज सोइ जे ॥ मन ग्राठ पहर ताका जस गवजे ॥ जेहि प्रसाद तुझै सुष को मानै ॥ मुष ताको जस रसना वषानै ॥ जेहि प्रसाद तेरो रहित धर्म ॥ मन सदा ध्याइये केवल पार ब्रह्म ॥ प्रभु जो जपत दरगहि मान पावै ॥ नानक पति सेती घर जावै ॥ २ जेहि प्रसाद ग्ररोग्य कंचन देहो ॥ लिव लावो तिसु राम सनेहो ॥ जेहि प्रसाद तेरा ग्रोला रहत ॥ मन मुष पावो हरि····

No. 293(*e*). Sākhi Jñāna Kāṇḍa by Guru Nanakaji of Tilamadī (Panjāb). Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—11 × 5½ inches. Lines per page—20. Extent—180 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Gurumukhī. Place of deposit—Paṇḍita Dhīraja Rāmaji Pujāri, Baḍī Sangati, Baharāich.

Beginning—साखी ज्ञान काण्ड महला १ ॥

तव संगत श्रीगुरु बावे नानक जी पास बीनती कीनी। गरीब निवाज सच्चे पादशाह भगता के अराधने और संसार के अराधने का जो अन्तर है सो कृपा करके समझाइये जो ॥ और संसार के अराधने और भगता के अराधने कर जो परमेसुर आधीन होता है सो कारण क्या और संसार का आराधना मानता है कि नहीं जो ॥ और देव देवी के स्थान की पूजा जो करते हैं तिनकी कौन गति है ॥
जो। ज्यों है त्यों समझाइये जो। तब गुरु बावे नानक बोल्या सुनो संगति अष्ट सिद्धि जो है सो कामना की देने हारी है। सो श्री ठाकुर जी दर्वातियों के हवाले कीती है। श्री महादेव देवी ने आदि लेके सो कामना के निमित्त संसारी जियाइन की पूजा करते हैं।

End—सिर विच रखनी लिख कर मरनी की गति कही न जाय। जे त्रेईदा ताप होई ता सो दरदी पींडी अद्धी लिख कर गल विच पाइनी जो किसी नो अतीसार होइ तां मुंडा संतोष जी पींड़ी लिख कर पियाउनी ॥

जो किसी दिवान पास जावे ता यह पींडी लिख कर जनम सतगुरु सत पुरुष यहां पाडी सिर विच रक्खे। जो स्त्री अड़ी होवे ता यह लिख कर देवो। काहे रे मन चितवहु उद्यम जा हर हर जिउ पड़िया यहां पौड़ी लिख कर लक नाल बंधनी ॥ तुरत छूट जाय ऐसे गुण मुझ में हैं दूसरे अंग। एक तो जप जो है गुरु का तिसकों जपे नित प्रति ध्यान करिकै प्रीति करिकै नेम के साथ ॥ और दूसरे तप करै तो क्या तप करै कामना को त्याग करिके तप करै ॥ कामना का त्याग करै और इन्द्रियों को जीतै ॥ तीसरे हैं। मैं इंद्रियां जो हैं दस तिनके प्रकृत है बुद्धि तिस को जीतै अज्ञानता तिसको ज्ञान के खडग कर प्रहारता रहै और ब्रह्मज्ञान के विषे हो मै आहुति। ज्ञान काण्ड सम्पूर्ण भया।

Subject—पृ० १ ईश्वर व देव देवी की पूजा में भेद, पृ० २ ईश्वर प्राप्ति के मार्ग, पृ० ३ धर्मराज व जीव की वार्ता, पृ० ४ नारद व धर्म संवाद, पृ० ५ से ७ तक लंगड़े व अंधे के मिलन की कथा, पृ० ८ पींडी का विचार तथा फल।

No. 293(*f*). Satanāma by Nānaka of the Panjāb. Substance—Country-made paper. Leaves—12. Size—8 × 6 inches. Lines per page—16. Extent—200 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance.—Old. Character—Nāgarī Kaithī. Place of deposit—Bābu Amīra Chand Ḍākar, Manager, V. D. Gupta and Company, Chowk Bāzār, Baharāich.

Beginning—दोहा। सब सांचा पु नामक धरो चरन पर सीस। नानक तुम गुर देव जी पूरन विस्वावीस ॥ आचारज जीवन जनम मरवो साचो जान। नानक औसर जात है हर सो नाहि पहचान। जाग सरे आजगपगा ज संग दानं प्रान। राम तजो जग सो रचो नानक नहचौ हान। झूठा नाता जगत का झूठ है धरावास। यह जग झूठा देख कै नानक भये उदास ॥ जब लग चावल धान मैं हुव लग उपजे आय ॥ जग छिलके कंड तज करा मुकत रूप हुई नाए।

End—कारा जीत कवल कली बोच भवरा लो मइ। गरजं घना घोरा घमंड घट वराओ जब आप्रीत देखा ओ हाइ। केतीक सुर जड़गे तहां आव सरा सिर अति रहे ध्यान लगाइ ॥ भूषन भवन विचित्र सोहावन भारी पीतांवर वेनु वजाइ। को कौन क वह सुनता जग मोहात, हार जडात वहु भारो लइ। संत समाज देखो जवते सुरालोक चले प्रभु को गुन गाई। केतोक कुरव वसे जग मैं भगवंत वाना कै अंत नासाइ ॥

Subject—संसार की अनन्यता, सत्य की महिमा, नाम महिमा, सांसारिक ईश्वर की महत्ता आदि पर फुटकर दोहे।

No. 293(*g*). Santa Sumirinī (Nāl) by Nānaka Guru. Substance—Foolscap paper. Leaves—16. Size—7 × 4½ inches. Lines per page—15. Extent—150 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Jugalakiśora, Devanandapura, District Rāe Bareli.

Beginning—सत्यनाम नाम करता पुरुष निरभव निरवैर अकाल मूरति आजूनी सै भंगु गुर प्रसाद जप ॥ १ ॥ आद सच्चु जुगपद सचु है भी ॥ सचु नानक होसी भी। सच्चु सोचै सोच न होवई जेसोची लखवार। चुपै चुप्प न होवई जो लाय रहा लिवतार ॥

भुप्यां भुप्य न उत्तरी जे वना पुरिआं भार। सहस सयाण पूत लप्य होहीं एक न चल्लै नाल ॥ क्यो सचियारा होव वई क्यो कूडे तुहैपाल। हुकुम रजाई चल्लणा नानक लिखियां नाल ॥ १ हुकुमो होवन आकार हुकुम न कहिआ जाई। हुकुमो होव न जीयां हुकुम मिलै वड़ि आई ॥ हुकुमो उत्तिम नीच हुकुमी लिखि दुःख सुष पाई ॥ एक ना हुकुम मिलै बकसीस एक हुकुमी सदा भवाइए ॥ हुकुमै अंदर सब को बाहेर हुकुम न कोय। नानक हुकुमै जा बुझै ताहै मैं कहै न कोय ॥ २ ॥

End—जतु पहारा धीरज सुनियारु। अहेरण मंत वेद हथियारु। भोपल्ला अगिनी तच ताष। भांडा भाव अमृतु ततु धाल। घणी वे सब सांची टकसाल। जिनको न दर करम तिवकार ॥ नानक दरी न दर निहाल ॥ ३८ श्लोक ॥

पवण गुरू पाणी पिता माता धरती महंत । दोशु राति दुइदाई दाया षेलै सरबस सकल जगतु । चंगिया पिया बुड़ियां पियां वाचै धरमह दूर । करमी आपु आपुणी केनेड़े के दूर । जिन्नी नामधि आइयां गये मशक्कति घाल ॥ नानक ते मुष उज्जले केती छुट्टी नाल ॥ ३९ ॥

Subject—सत्यनाम की स्तुति, सत्य की महिमा, प्रभु का हुक्म ही सर्वोपरि है । उसके गुण अकथनीय हैं । गुणवान के प्रति नानक की श्रद्धा, गुरू महिमा, गुरु से ही सर्व पदार्थ तथा ईश्वर का अनुभव प्राप्त करना, दोष पाप नाशक वाणी का सुनना ही उचित है, भक्तों की वाणी से सब पदार्थ प्राप्त हो सकते हैं, निरंजन नाम महिमा, पंच का महत्व, निराकार महिमा, अनेक मत-मतांतर और अनेक ग्रंथों द्वारा अनेक भांति की भक्ति मार्ग का वर्णन, प्रभु कुदरत जानने में सबों की असमर्थता, प्राणीमात्र की अलग मति है और प्रभु के जानने के सब अलग अलग उपाय रचते हैं परन्तु सच्चे प्रेम से कोई भी उस पर बलिहारी नहीं जाता, कर्म की प्रधानता, जीव का विचार, प्रभु का बड़प्पन, प्रभु ही सब बादशाहों का बादशाह है जो प्रभु के बड़प्पन को जानता है वही बड़ा है, प्रभु का अनेक प्रकार से गुण गान होना संसार का रचना, मन को वशीभूत करने से जय प्राप्ति ईश और प्रकृति की सत्यता, ऊंच और नीच का अभेद वर्णन, पंचतत्व से सृष्टि की रचना, देवी देवताओं का खंडन और केवल सच्चिदानन्द ही की सत्यता का वर्णन, प्रभु के अनेक रूप और करुणा का वर्णन केवल पंचतत्व का ही संसार में सब खेल है । जिसने प्रभु से ध्यान लगाया उसी का होना सफल है ।

No. 204(*a*). Anekārtha Bhāshā by Nanda Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—10×5 inches. Lines per page—13. Extent—420 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1812 or A.D. 1755. Place of deposit—Paṇḍita Deokinandanajī, Village Khaniā, Post Office Aligañja Bazār (Sultānpur.)

Beginning—श्रीगणेशायनमः । दोहा । सु प्रभु जोति माया जगत कारन करन अभेव । विघ्न हरन प्रभु सुभ करन नमो नमो गुरुदेव ॥ १ ॥ एकै वस्तु अनेक है जग जगमगात जगधाम । जों कंचन ते किंकिनो कंकन कुंडल काम ॥ २ ॥ उचरि सकत संसकृति नहि प्रकृत्त समरत्थ ॥ तिन लगि नंद सुमति जथा भाषने कत्थ ॥ ३ ॥ सुर्भीनाम ॥ सुरभी चंदन सुरभी मृग सुरभी बहुरि वसंत ॥ सुरभि

चरावत वन सुनै जे। जग करता कन्त ॥ ५ ॥ मधुनाम। मधु वसंत मधु चैत नभ मधु मदिरा मकरंद। मधु जल मधु पय मधु सुदा मधुसूदन ॥ गोविंद ॥ ६ ॥ कलिनाम। कल कलेस कलि सूरिवा कलि निचंग संग्राम ॥ कलि कलियुग तहं ग्रैार नहिं केवल केस्व नाम ॥ ७ ॥ धनंजैनाम। ग्रगिनि धनंजै कवि कहत पवन धनंजे ग्राहि। ग्रर्जुन वहुरि धनंजइ कृष्ण सारथी जाहि ॥ ८ ॥

End—कालंदी नाम। जम ग्रनुजा रवि जा जमी कोस्न स्यामला ग्राप ॥ यह जमुना सम समद फिरि ग्रावत तुग्र परलाप ॥ २४७ ॥ तरंग नाम। भग तरंग कल्लोल पुनि विचो उमि सुभाइ। लहरि हथ्थ पसार जनु जमुना पकरति पाइ ॥ २४८ ॥ उपकंठ नाम फूल पुलिन उपकंठ पुनि निकट रैांग्र ग्ररवास तीरतो चलिजाइ वनि ग्रव ग्राथे पिय पास ॥ २४९ ॥ वेतनाम। वेत्र प्रवोद लरथो ग्र ग्रघ पुष्क वानोर ॥ वंजुल मंजुल कुंज तर वैठे हैं वलवीर ॥ २५० ॥ कोकिला नाम। परभृत कलरव रक्त ईगषिक धुनित हरस पुंज ॥ जानो पिय ग्रारत निरखि तोहि हेरति वलि कूंज। २५१। इंद्रीनाम। गो भकी कप्पर करन गुन इंद्रव जो रसु षाइ। जो राधा माधव मिले परम प्रेम रसुपाइ ॥ २५२ ॥ माला नाम। माला श्रक श्रव गुनवती इह जु नाम को दाम। जु नर कंठ करि हैं सुन रहे हैं छवि को धाम ॥ २५३ ॥ जुगुल नाम जम लग जुगुल जुगद्विद द्वै उभय मिथुन विवि वोय। जुगलकिसोर वसहु सदा नंददास के होय ॥ २५४ ॥ इति श्री नंददास कृत नाम माला समाप्त ॥ का० शु० ११ भृ० केसरी दुवे हित ग्रापने लिपेत् ॥ १ संवत १८१२ ॥

Subject—पृष्ठ १ से २८ तक—भिन्न शब्दों के ग्रनेकार्थ, विष्णुनाम, सुभर्गी, मधु, कलि, धनंजै, मन, ग्रर्जुन, पत्र, पत्री, वरहो, धाम, हस्ती, सदन, सुवर्ण, रूपा, सुक्त, कांति, मयूर, किरण सिद्धि, निधि, मुक्ति, राजा, इन्द्र, देवता, सेवक, दासी, ग्रन्तःकर्ण, ग्रंजन, हीरा, मंगल, शुक्र, माता, नमस्कार, पैकारि, सेज, उसेसा, कुसुम, केश, लिलाट, नेत्र, वंशी, श्रवण, रदन, वृहस्पति, मुख, कर, ग्रीव, किंकिनी, नूपुर, भ्रमर, सुक, दर्पण, वीणा, तांबूल, समय, जल, चरण, हरिद्रा, राधा, वचन छेम, नाम, लुवती, क्रोध सुंदर, पर्जुन, युधिष्ठिर, गंगा, दीर्घ, शरीर, कमल, चन्द्रमा, काम, भ्रमर, दामिनी, सैन्य, मित्र, लता, प्रीतम, पुत्र, मनुष्य, योगेश्वर, वेद, शेष, धर्म कुवेर, वरुण, दुर्गा, गणेश, धूर्त, कुरंग, पाप, पाषाण, नैाका, रुधिर, राक्षस, महादेव, सूर्य्य, मिथ्या, निकट, चंदन, मीन सागर, वानर, वलभद्र, पृथ्वी, वाण, ग्रग्नि, मुग्ध, ग्रभिज्ञ, ग्रपराध, प्रेम, पर्वत, सर्प, वन, राक्षस, संध्या, विष, पपीहा, रात्रि, ग्राकाश, संग्राम, नख, ग्रल्प, मकरी, माग पत्र, पवन, दिशा, पिता, विवाह, मदिरा, स्वभाव, ग्रंधकार, वृक्ष,

पत्र, पवन, ध्वनि, अतिसय, मह, अल्प, दुख, अर्धरात्रि, वज्र, लज्जा, चरण आण, अटारो, मकर, चांदनो, वीथिनो, वसंत, विहंग, पोपल, पाटल, अंब, माधुक, दाड़िम, केदली, श्रोफल, तमाल, कदम, किसुको, वहेरा, नारि सुपारी, कवाछ, मिरिच, पोपरि, हरैं, सोंठ, पद्मारो, दाष, केसरि, राजवल्लि, चंवेलो, पाहरिया, जुहो, गंजा, लवंग, केतुको, इलायची, सरोवर, नागलता, माधवो, कालिंदो, तरंग, उपकंठ, वेत, कोकिला, इन्द्री, माला ग्रोर जुगुल शब्दों के अनेकार्थ हैं।

No. 294(*b*). Anekārtha Mañjarī by Nanda Dāsa of Mathurā. Substance—Country-made paper. Leaves—24. Size—$7\frac{1}{4} \times 5$ inches. Lines per page—14. Extent—378 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1898 or A. D. 1841. Place of deposit—Ṭhākura Yadu Nātha Baksha Siṁhaji, Raīs, Hariharapura.

Beginning—श्रीगणेशायनमः। अथ अनेकार्थ लिख्यते ॥

दोहा ॥ जो प्रभु मंगल जक्तमय कारण करन अभेव। विघ्न हरन सब सुख करन नमो नमो तेहि देव। १ एके वस्तु अनेक हैं जगमगात जग धाम। जिमि कंचन ते किंकिनो कंकन कुंडल नाम ॥ २ उचरि सकत न संस्कृत ग्रोर नहि समुझि समर्थ। तिन हित नंद सुमति जथा भाषा अनेका अर्थ ॥ ३ ॥

End—इति श्री नंददास विरचिते नाम माला समाप्त सुभमस्तु कार मासे सुक्र पक्षे तिथो १४ संमत १८९८ सन १२४९ हस्ताक्षरे सेष महबूब जो प्रति देखी तैसी लिखो।

No. 294(*c*). Anekārtha by Nanda Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—12. Size—9×5 inches. Lines per page—40. Extent—210 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Satyanārāyaṇa, Kaṭhagar, Rāe Barelī.

Beginning—श्री राधा कृष्णायनमः

जो प्रभु मंगल जगत मय कारण करण अभेव। विघन हरन सब सुख करन नमो नमो तेहि देव ॥ १ ॥ एकै वस्तु अनेक ह्वै जगमगात जग धाम। ज्यों कंचन तें किंकिनो कंकन कुंडल नाम ॥ २ उचर सकत नहिं संस्कृत प्राकृत विन समरत्थ। तिन हित नंद सुमत यथा कह्यो अनेका अर्थ ॥ ३ शब्द एक नाना अरथ मोतिन की सो दाम जो नर करि है कंठ सो ह्वै हैं रस को धाम ॥ ४।

End—गुरु शब्द—गुरु गरिष्ट गुरु विरहस्पति गुरु जो बहुत गुण जाहि। सुखदाता माता पिता ए सगरे गुरु श्राहि ॥ ४४ नंदन शब्द नंदन चंदन कों कहत नंदन कहिये तात। नंदन वन पुनि इंद्र के नंद नंदन विख्यात। ४५ केतुकी शब्द ॥ केतुकी नभ केतुकी कुसुम केतुकी सूर्य चंद। केतुकी कहत मनोज कों केतुकी वहुरों छंद। ४६ अनिमिष शब्द-अनिमिख कहिये देवता अनिमिख मी कहंत। अनिमिख काल कराल यह जाको कछु न अंत ॥ ४७ कृष्णा शब्द-कृष्णा कालिंदी नदी कृष्णा पीपरि होय। कृष्णा वहुरों द्रौपदी हरि राखे पट गोय ॥ ४८ स्नेह शब्द-तेल स्नेह स्नेह घृत वहुरों प्रेम स्नेह। सो निज चरनन गिरधरन नंददास को देह ॥ ४९ जा यह अर्थ अनेका पढ़य सुनय नर कोय। ताहि अनेका अर्थ है पुनि परमारथ होय ॥ ५० इति श्री अनेका अर्थ संपूरण।

No. 294(*d*). Anekārtha Nāmamālā by Nanda Dāsa of Vṛindāvana. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—8 × 5 inches. Lines per page—8. Extent—50 Anushṭup Slokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Yadu Nātha Baksha Simha, Hariharapura, Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः श्री गुरुचरणाभ्यांनमः

एक रदन गज वदन जु दोजे बुद्धि उदार। गजातेपा रस ग्रंथ को बनत न लगै वार ॥ १ जो प्रभु मंगल जक्त मय कारन करन अभेव। विघ्न हरन सभ सुभ करन नमो नमो तेहि देव। २ एकै वस्तु अनेक है जगमगात जग धाम। जिमि कंचन तें किंकिनी कंकन कुंडल नाम। ३ कह्यो जात नहिं संस्कृत औ समुझन सम हत्थ। तिन्ह हित नंद सुमति जथा भाषानेकाउत्थ ॥ ४

End—पतंग नाम। तरनि पतंग पतंग षग पावक वहुरि पतंग। सवज रंग पतंग है हरि येकै नव रंग। २६। पलनाम। पल आमिष को कहत कवि पद उनजास पल होइ। पल जो पल कह रिधि च परै गोपिन्ह जुग सत सोइ। २७ दल नाम। दल कहियो नृप..........

No. 294(*e*). Mānamañjarī by Nanda Dāsa of Mathurā (Muttra.) Substance—Country-made paper. Leaves—39. Size —$8\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—9. Extent—515 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—San 1237 Hijarī or A. D. 1859. Place of deposit—Rāja Pustakālaya Bhingā Rāja, Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ । मानमंजरी नाम संज्ञा जुक्त नन्ददास कृत लिख्यते ॥ दोहा ॥ जो प्रभु जोति मय जगत कारन करन अभेव । अशुभ हरन सभ शुभ करन नमो नमो सो देव ॥ १ येकै वस्तु अनेक है जग मगात जग धाम । जिमि कंचन ते किंकिनी कंकन कुंडल नाम ॥ २ तं नमामिहं परम गुरु कृष्ण कमल दल नैन । जग करता तारन जगत गोकुल जाको ऐन ॥ ३

End—माला नाम—माला अक अज गुनवती माल्य नाम की दाम । जो नर करिहैं कंठ यह ह्वै है गुन के धाम ॥ ४०१ जुगलनाम । दुंदुभि जुग्म विवि द्वंद द्वै मिथुन उभै जम बोय । जुगलकिसोर सदा बसहिं नंददास कहोय । ४०२

इति श्री मानमंजरी पुस्तके नाम संज्ञा जुक्ते श्रीकृष्ण जू राधा जू मान वर्णन कवि नंददास विरचिते प्रेम पुस्तके समाप्त शुभं मस्तु मि० भादौ शुदि १४ सन् १२३७ दसखत प्राग कुरमी के पाठार्थ अपने वास्ते ।

Subject—प्रार्थना १—६ छन्द तक, कृष्ण नाम ७—९, मान नाम १०, सखी ११, बुद्धि १२, सरस्वती १३, शीघ्र १४—१५, धाम १६-१७, सुवर्ण १८-२०, रूप—२१, उज्वल २२, शोभा—२३, दीप्ति—२४, किरण २५, मयूर २६—२७, सिंह २८—२९, अश्व ३०, हस्ती ३१—३२, सिद्धि ३३—३४, निधि ३५-३६, युक्ति ३७—३८, मनोरथ ३९, राजा ४०, इंद्र ४१—४६, देवता ४७—५०, अमृत ५१, सेवक ५२, दासी ५३, अंतःकरण ५४, अंजन ५५, हीरा ५६, मुक्ता ५७, मंगल ५८, वृहस्पति, ५९-६०, शुक्र ६१, लक्ष्मी ६२—६३, माता ६४, नमस्कार ६५, सोटी ६६, वैनी ७५, पुत्री ६७, शय्या ६८, वालिस्ति ६९, पुष्प ७०, केस ७१, मस्तक ७२—७३, नेत्र ७४, श्रवन ७६, अधर ७७, सिर ७८, दशन ७९, टोढी ८०, वदन ८१, ग्रीवा ८२, श्यामता ८३, कर ८४, उरोज ८५, किंकिनी ८६, नाभि ८७, पंक्ति ८८, नूपुर ८९, वस्त्र ९०, शुक ९१, दर्पण ९२, वीणा ९३, नाद ९४, ताम्बूल ९५, उर ९६, उदर ९७, समय ९८, जल ९९—१०२, चरन १०३, हरिद्रा १०४, कुटिल १०५—६, भृकुटी १०७, क्षेम १०८, नभ १०९, युवती ११०—११, क्रोध ११२, राधा ११३—११५, ब्रह्मा ११६—११९, सुंदरता १२२, अर्जुन १२५, युधिष्ठिर १२६, गंगा १२९, दीरघ १३२, कमल १३७, कौंई १३८, कौआ १३९, चंद्र १४३, कंदर्प १४६, भ्रमर १४८, मेघ १५०, दामिनी १५२, सेना १५४, प्रिया १५५, लता १५६, प्रीतम १५७, पुत्र १५८, मनुष्य १५९, मनोहर १६०, जोगी १६१, वेद १६२, शेष १६३, धर्मराज १६४—६६, कुवेर १६९, वरुण १७०, दुर्गा १७३, गणेश १७६, धूर्त १७८, कुरंग १८२, पाषाण १८३, नाव १८४, रुधिर १८५, राक्षस १८८, धूरि १८९, महादेव १९५, सूर्य्य २०१, मिथ्या २०३ निन्दा २०५, चंदन २०७, मीन २११, सागर २१४, वादर २१६, बलिभद्र २१९, उदासीन २२०, पृथ्वी २२५,

धनुष २२६, तरकस २२७, तोर २३०, अग्नि २३५, अग्नि कणा २३७, मूर्ख २३८ विज्ञ २३९, अपराध २४०, प्रेम २४१, परवत २४४, भुजंग २४९, पोड़ा २५०, वाटिका २५२, वन २५३, असुर २५५, संध्या २५६, विष २५८, द्रव्य २५९ गणिका २६१, पतिव्रत। २६२, चातक २६३, रजनी २६६, आकाश २६९, नीच २७०, युद्ध २७४, नग्न २७५, सूक्ष्म २७६, मकरी २७७, मारग २८०, कृपा २८१, खड्ग २८३, दिशा २८५, नदी २८८, पिता २८९, विवाह २९०, मदिरा, २९३, स्वभाव २९५, अंधकार २९६, वक्ष २९९, पल्लव ३००, पत्र ३०२, पवन ३०५, ध्वनि ३०७, आज्ञा ३०८, यति ३०९, समूह ३१०—३१६, अल्प ३१७, दुःख ३१९, रात्रि ३२०, वज्र ३२२, लज्जा ३२३, पनही ३२४, लघुभ्राता ३२५, महल ३२६, चांदनी ३२७, वीथी ३२८, उपवन ३२९, वसंत ३३०, खग ३३४, पोपट—३३५, आरक्त ३३६, पाडर ३३८, आम्र, ३४०, महुआ ३४१, चंपक ३४२, दाड़िम ३४३, कदली ३४४, बेल ३४५, तमाल ३४६, कदंब ३४७, किंशुक ३४९, बहेड़ा ३५०, नारियल ३५१, सुपारी ३५२, केवाछ ३५५, मरिच ३५६, पोपर ३५९, हरै ३६१, सोंठ ३६२, मूंगा ३६३, चकरंद ३६४, दाख ३६७, केशर ३६९, जुही ३७८, चमेली ३७३, सजीवनि ३७५, मालती ३७७, दुपहरिया ३७९, गुंजा ३८१, केतकी ३८२, लवंग ३८३, माधवी ३८४, इलायची ३८५, पान ३८६, सरवर ३८८, वरगद ३९०, जमुना ३९१, तरंग ३९२, उपकंद ३९४, कस्तूरी ३९५, कपूर ३९६, बेंत ३९७, कोपल ३९८, इन्द्री ४००, माला ४०१ युगल ४०२ इति,

No. 294(*f*). Nāma Mālā by Nanda Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—44. Size—$7\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—10. Extent—385 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1853 or A. D. 1796. Place of deposit—Lālā Mahāvīra Prasāda, Village and Post Office Gauriganñja, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ नाम माला लिख्यते ॥ दोहा ॥ तं नमामि पद परम गुर कृष्ण कमल दल नयन ॥ जग कारण करुणा रवन गोकुल जाके अयन ॥ नाम रूप गुन भेद कह सो प्रगटत सब ठैार ॥ ताविन तत्व जो आन कछु कहै सो अति बड़ बैार ॥ समुझि सकत नहिं संसक्रत जानो चाहत नाम ॥ तिन लग नंद सुमति जथा रचत नाम की दाम ॥ ३ ॥ गुंथन नाना नाम को अमरकोस के भाइ ॥ मानवती के मान पर मिलै अर्थ सब आइ ॥ ४ ॥ छाती नाम । वत्स वक्ष उर पीय के निरखि आपना भाइ ॥ ताते बढ़ी गुमान अति अवर तोय के भाइ ॥ ५ ॥

End—माला नाम। माला श्रज स्रग गुनवती यह जु नाम की दाम ॥ जो नर कारिहैं कंठ जग हुइ है छवि को धाम ॥ २५१ ॥ इति श्री नाम माला नंददास कृत समाप्तम्। संवत १८५३ श्रावण शुक्लपक्षे तु भैामि नंदन संज्ञ के गंगा विष्णु मिश्रेन लिषित्वा। बांचि सुषो रहैा मित्र तुम पुस्तक लिषो बनाइ ॥ यह असोस हमरो फलै श्री गोपाल सहाय ॥ १ ॥ श्रीमते रामानुजायनमः

Subject—अनेक नाम—छाती, मान, सखी, प्रज्ञा, वागीश, शीघ्र, धाम, कंचन, रूप, उज्ज्वल, शोभा, किरण, मयूर, सिंह, अश्व, हस्ती' अष्टसिद्धि, सिद्धि मोक्ष, राजा, इन्द्र, देवता, अमृत, भृत्य, अंतर्धान, अंजन, दासी, हीरा, मंगल, शुक्र, माता, वृहस्पति, मुक्ता, लक्ष्मी, नमस्कार, निःश्रेणी, सुता, शय्या, कुसुम, उसोसी, मुख, अलक, मस्तक, वक्र, लोचन, कर्ण, कर, वंशी, अधर, दशन, स्यामता, ग्रीव, उरोज, रोमराजी, छुद्रघंटिका, तर्कस, नूपुर, वसन, मान, दर्पण, वीणा, शुक, नीर, भय, हरिद्रा, क्रोध, समय, कुशल, नाम, स्त्री, ब्रह्मा, दीर्घ, अर्जुन, गंगा, शरीर, कमल, चन्द्रमा, मनोज, मेघ, विद्वलता, सेना, धनुष, मधुव्रत, प्रिया, वल्ली, प्रीतम, पुत्र, नर, वेद, ईश्वर, योगेश्वर, धर्मराज, कुवेर, वरुण, शेष, विघ्नेश, जन्म, वंचक, मृग, पाप, पाषाण, नैाका, रुधिर, राक्षस, धूरि, महादेव, सूर्य, अनृत, निकर, चंदन, मीन, सागर, मर्कट, संकरवर्ण, पृथ्वी, रस, अग्नि, अज्ञ, अपराध, पर्वत, भुजंग, पीड़ा, वन, सुरु, संध्या, विष, मनोहर, सुन्दर, धन, गणिका, पतिव्रता, पार्वती, कृपा, चोर, वर्ष, खड्ग, रजनी, आकाश, नख, संग्राम, सूक्ष्म, मकरी, मार्ग, दिशा, नंदी, वृक्ष, पत्र, पवन, दुःख, लज्जा, वज्र, पिता, मदिरा, स्वभाव, समूह, अति, आज्ञा, घोरे, पदत्राणि, उच्च, धाम, मकर, चांदनी, वीथी, अंधकार, वाग, वसंत, विहंगम, अरुण, पाडर, आम्र, चंपक, मधुप, दाड़िम, कदली, वेला, माल, कदंब, किंशुक, वहेरा, सुपारी, नारियल, केवांछ, मरिच, पीपरि, हर्रे, सोंठि, विद्रुम, दाख, केसरि, स्वर्ण जूथिका, मालती, सजीवनी, कुंद, खंद्रक, गुंजाफल, केतकी, लवंग, माधवी, नागलता, वट, सरोवर, कालिन्दी, तरंग, तीर, वेत, कोकिला, शब्द, इन्द्री, जुगल, रसनाम श्रोर मालानाम।

No. 294(*g*). Nāma Mālā by Nanda Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—21. Size—9 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—661 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1863 or A. D. 1806. Place of deposit—Paṇḍita Śiva Prasāda, Village Dhemani, Post Office Sisaiyā, District Bahaṛāich.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नाम माला लिष्यते । प्रनमामि परमं गुरं कृष्ण कमल दल नयन । जग कारन करुना जव गोकुल जाको अयन । नामरूप गुन भेदि कै प्रगट जो सब हो ठौर । ता विन तत्त्व जो आन कछु रचै सा अति वड़ बौर । उचरति सकित न संस्कृत जानो चाहत नाम तिन हित नंद सुमति यथा रचत नाम के दाम ॥ ग्रंथन नाना नाम को अमरकोष के भाइ । मानवती के भाइ पर मिले अर्थ सब आइ । वत्स वछ उर पीय तन निरषति अपनी झांइ । याके बाढ़े मान यह आनति जाके आइ ॥ स्यामदर्प अंकार मद गर्व समै अभिमान ॥ मान राधिका कुंवरि को सब को करु कल्यान ॥ वैशासंधी चो सषी हितू सहचरी आहि । अली कुंवर नंदलाल की चली मनावन ताहि ॥ हस्ती नाम । हस्ती दंती दुरद दुप पती वारन व्याल । कुंजर इमि कुंभी करति, वैरमजात उडाल ॥ सिधुर नेकै नाम हरि गज समाज मातंग । पति गयंद झूमत रहत राजन नाना रंग ।

End—इलायची के नाम । चन्द्रकन्यका निःकुटी त्रकुछट पुलकोन वेलि । इत येलो पग परति वलि यह रंचक मुष मेलि ॥ माधवी के नाम । वासंती पुद्रक सोइ अति मुक्ता फल नाउं । इत मधवी कहि पां परति तनिक चितै बलि जाऊं ॥ नागवेलि के नाम । तांबुल अहिवल्लरी द्विज पानो को वेलि । सरस भई तुव दरस ते बलि रंचक मुष मेलि ॥ सरोवर के नाम । ह्रद पुष्कर कासार सर सरसी ताल तड़ाग । यह देषो वलि मान सर फूल्यो तुव अनुराग ॥ वट के नाम । जटी कपर्दी रक्तफल वह पदघ्न अन्य ग्रोध । यह वंसोवट देषि वलि सव सषि नर वधि रांध । जुगुल नाम । जमल जुग्म जम द्वंद द्वै उभय मिथिन विवि वोय । जुगुलकिसोर सदा बसो नंददास के होय ॥ माला नाम ॥ माला श्रकु श्रज गुनवती यह जु नाम की दाम । जो नर कंठ करिहै सुघर होइ है छवि को धाम । कल्पवृक्ष के नाम । हरि चंदन मंदार पुनि पारिजात संताण । कल्पवृक्ष कहि देवतरु पुंसिपंच इत जाणि ॥ इति श्री नंददास कृत नाम माला सम्पूर्णम् संवत १८६३ माघे ।

No. 294(*h*). Nāma Mālā by Nanda Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—10 × 6½ inches. Lines per page—20. Extent—360 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1918 or A. D. 1861. Place of deposit—Paṇḍita Sidhinātha Vājapeyi-Keli, Rāe Barelī.

Beginning—नाममाला । श्री गणेशायनमः । जयति जयति श्री वृषभान नंदनी नंद की लाड़िली श्री वृंदावन कुंज विहारी ।

तन्नमामि पर परम गुरु कृष्ण कमल दल नयन। जग कारण करुणा करन गोकुल जिनको श्रैन ॥ नाम रूप गुण भेद करि सो प्रगटत सब ठैार। ताविन तत्त्व जो श्रान कछु कहै सो ग्रति मति वैार ॥ समुझि सकत नहिं संस्कृत जानो चाहत नाम। तिन हित नंद सुमति यथा रचत नाम की दाम ॥ ग्रंथत नाना नाम को ग्रमरकोश के भाय। मानवती के मान पर मिले ग्रर्थ सब ग्राय ॥ छाती के नाम। वत्स वच्छ उर पोय के निरषि ग्रापनो छाय। ताते उपज्यो मान हिय ग्रान तिया के भाय ॥ मान के नाम। ग्रहंकार मद दर्प पुनि गर्वस्मय ग्रभिमान। मान राधिका कुंवरि को सब को कर कल्यान।

No. 294(*i*). Nāma Mālā by Nanda Dāsa Substance—Country-made paper. Leaves—53. Size—5 × 4 inches. Lines per page—17. Extent—424 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1928 or A. D. 1870. Place of deposit—Ṭhakura Dalajīta Siṁha, Village Zālimapurawā, Post Office Kesargañja, District Bahrāich (Oudh).

No. 294(*j*). Nāmā Mālā by Nanda Dāsa of Gokula. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—8 × 4½ inches. Lines per page—35. Extent—400 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābū Padma Baksha Siṁha, Lavedapur, Bhinagā Rāj, Bahrāich.

No. 295. Kokaśāstra by Nandakeśwara Paṇḍita of Paṭnā. Substance—New paper. Leaves—198. Size—9½ × 7½ inches. Lines per page—17. Extent—1,262 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Written in Prose and Verse. Character—Kaithī. Date of Composition—Samvat 1675 or A. D. 1618. Place of deposit—Paṇḍita Rāma Prapanna Mālavīya Vaidya, Sultānpur (Oudh.)

Beginning—श्री सीताराम जी सहाए नम्हा। श्री गनेस जीव सहाए नम्हा। श्री पोथी कोकसासत्र। वरनो गनपती वाघोनो वीनासा। जेहो सुमीरत गतो मतो प्रगासा ॥ सभ दिन वंदो सरोसती माता। वरनैा शंकर सीधी वुधी दाता ॥ वंदो हरी ब्रह्मा के पाया। जगत व्यापिता जाकर माया।

स्वग ग्रोतु पतालहि देवा। दस द्रीगपाल करही जे सेवा॥ वंदै पांइ सुज गन तारा। वंदै गनपतो जोती अपारा॥ दोहा (खंडित) सभ पंडीत के वेदी के बहु वोधी × × × ×। काम सास्त्र कछु भाख्यैाः × × × ×॥ वंदै कोस्न पछ रवोवारा। तेही दिन वोधी कथा अनुसारा॥ तोथी तीरोदसी हम होत पावा॥ हस्त नछत्र हमही मन लावा॥ सोधी जोग फर उपमा होइ। ऐही वोधी कथा सोधी पै होइ॥ साह सलेम जगत सुलताना। तेही पाछे पटना नीज थाना॥ दोहा॥ सोरह सै पचहतरः हम जो गीना दह दोसः। मन दफतर म हम देखा एक हजार वतीसः॥ चैापाई॥ नंदकेसवर पंडीत ऐक भैउ। पहोले गरंथ के उन कहेउ॥ गुनीक पुत्र कवी अतो माना॥ काम कलारस सभ उन जाना॥ उन्ह के मते ग्रंथ हम देखा। कोछु छंनछेत्र वोचारो वोसेखा॥ कामकला कछु वरनो सोइ। सुनत रसाल रसिक वस होइ॥ रसीक कवी नवो नरनाहा। कामकला रती रस अैागाहा॥ दोहा॥ बहुत ग्रंथ बोचारी तेः होपे बहुत दोन खेयः। बाल बैाध के कारनेः कोउ कथा छनछेपः॥ चैापाई॥ कामते तुमै कहैा बोचारो। लछन पुरुख जातो ग्रोवारो॥ सहसा प्रोगा वोरखम तुरंगा पावही नागर रसीक सुरंगा। पहिले कहैां ससा का लछन। कामकला प्रम वोछन॥ रतीरस रसोक तरुनी मन हरइ। गावत पठत वोसु वम करइ॥ सत्य वचन दाता गुनवंता। सुख सव रूप अपीक घनवंता॥ दोहा॥ षष्ट अंगुरो सरीस सुइ अंह सकल प्रवानः। वरनो ऐक पदुमिनी केः जाने रसिक सुजान॥

End—इलाज प्रमेव वो सुजाक का॥

ग्राम का टीकोरा, वो तालमखाना वो तज वो मेदा वो माजूफलः वो कुवार-कागुनी (माल) वो वरमडंडो ग्रैा सभ बराबर ले सवुल छटाक दाल-चोनो पइसा भर, मुसलो सोग्राह पावः सतावर ग्राधपाव चोजको ग्राचका मकर करावै साभरः वो चैाल चुरुग्रा पैसा भरः इन सभो को जुदा जुदा पोसे साथ तीनो सेर कर तरी मिलावै वीच बखत सुवाह के एक तरह थो भर गाइका दवा साथ खाइः वो पानी ताजा साथ खाएः वो जब तक के खाए तव तक नजदोक ग्रैारत के न जाएः वो तुरसो वो खटा वादो से परहेज करे जलदो से ग्राराम हैाए। दुसरा दवा। रस कपूर ग्राठ मासाः करन फल सताइस रद जाएफल इगारह इस तरह सब दवाइ।

Subject—(१) पद्यात्म देवादि वन्दना, ग्रन्थ निर्माण काल ग्रैार लेखक तथा उसके ग्रभिभावक का नाम निर्देश पृ० १—२। (२) पुरुष तथा स्त्री जाति के लक्षण, वसोकरण मंत्र सहित पृ० ३—२० तक। (३) काम निवास स्थान तिथियों के हिसाब से, मर्दन, चुंबन, नखक्षत तथा ग्रालिंगन विधि २१ पृ० ३४

पृ० तक-(४) आसन तथा गंध पदार्थादि वर्णन, मुख शोभा तथा कामोद्दीपक अन्य इच्छित कार्य्यों के साधन, पुष्टाङ्ग, विधि, स्थम्भनादि विधि। पृ० ३५—५५ तक—(५) तावीज, उबटन, तिलक अंजन, मोहनी, गहन का, वसकरना, गर्भ पलटन, गर्भ रहना, पुत्र होने इत्यादि का साधारण वर्णन, पृ० ५६—६५ तक। (६) मोहक जंत्र, समुद्र कल गुण पृ० ६६—७२ तक। (७) बांझ की हिकायत, सात प्रकार की बांझों के लक्षण, बांझपन विनाश के उपाय। तावीज, दर्द के इलाज, अन्य इलाज, सिर पीड़ा का तावीज, खांसी का इलाज, दाद का इलाज, पृ० ७३—८५ तक। (८) सगुनौती पृ० ८६—९० तक। (९) पुष्टादि की औषधियां, तांबा, रांगादि मारने की विधि और नाना प्रकार के मन्त्र हैं पुस्तक के अन्त तक अर्थात् ९१ पृ० से लेकर १९८ तक कितनीही प्रकार की औषधियों का वर्णन।

No. 296. Bāraha Māsā Rādhā Krishṇa by Nandalāla. Substance—Country-made paper. Leaves—24. Size—8 × 6 inches. Lines per page—28. Extent—336 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Ṭhākura Jairāma Siṁha, Mirzāpura, Post Office Mahamūdābād, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ राधा कृष्ण का बारहमासा लिष्यते॥ अति सुमुष सुषदंत येकै कपिल वहु गुन नायकं॥ जग करन सब दुष हरन सुष करनं दायकं॥ विघन हरन बिग्यान दायक सुर सहायक विकट अति लंबोदरं। करिवर वदन सुष सदन वहु गुन भाल ससिवर सुन्दरं॥ धूमे ध्वज त्रिसूल करि रिपु मथने सकल नसायकं। भुज चारि अद्भुत रूप सोहै विवुध पति सब लायकं॥ यह विनय मेरी सुनु विनायक देहु वुधिवर दायकं। नंदलाल तुमरी सरन आयो सुमति सहायकं॥ दोहा॥ द्वादस नाम गनेस के सुनें महा सुष होइ। सुफल करै मन कामना जो सुमिरै नर कोइ॥ सुमिरि भवानी संकरहिं श्री गुरु चरन मनाइ। वारहमासा कहत हौं मोको होउ सहाइ॥ सारंग पानि सनेह वस सदा रहै अनुकूल॥ विन कारन जो जगत में ताहि न कवहूं भूल॥ जदुपति औ गोपी विरह सो सब कहौं वषानि॥ मिलि है सव कहं आनि प्रभु। वात लेहु पहिचानि॥

End—छंद॥ समुझाइ सब मृदु बात कहि पितु मातु की विनती करी। भये पुरक लोचन नीर वरषे॥ मनहु सावन की झरी॥ सुनु मातु मैं नहि उरिन

तुम सों जन्म कोटिन हों धरों । अब जाउ तुम ब्रज लोग लैकै कर जोरि तव पायन परों ॥ तव कहति जसुमति सुनैा जदुपति एक वर मोहि दीजिये ॥ यह मधु मूरति वसै उर महं नाम निसु दिन लीजिये ॥ तव आय पितु के चरन परसे जोरि कर पुनि पुनि कह्यो । प्रतिपालि हमहि प्रवीन कीनो सुजस तुम्हरो होइ रहो ॥ तुमरो अनुग्रह राय पायो भयो मैं त्रिभुवन धनी । करति दाया रहैा मोपर कहैा यह जदुकुल मनी ॥ पितु विदा तुम मम हीन आयो वेगि आयुसु दीजिये । गहि चरन हरि के नंद वोले तात यह सुनि लीजिये ॥ अन जानि मैं नहि चरन परसे भूलि तव माया रह्यो । चरित अगम अपार तुमरो पार कवने लह्यो ॥ जाहु घरहिं कृपाल मेरे सुरति जनि विसराइयो । कारे सुरति कवहूं आइ ब्रज मंह फेरि दरस दिषाइयो ॥ दोहा ॥ वार वार मिलि भेंटि कै विदा भये गोपाल । प्रभु पहुंचे द्वारावती गोकुल आये ग्वाल ॥ इति श्री वारहमासा राधाकृष्ण संवाद नंद जू को संवाद सम्पूरन समाप्तः ॥ इति श्री कातिक मासे शुक्ल पछे तिथैा अष्टम्यांम चन्द्रवासरे संवत १९२१ दसषत मोहनलाल गोधनी के ।

Subject—श्रीकृष्ण और राधिका का प्रेम, श्रीकृष्ण का गोपियों को छोड़ मथुरा जाना, वहां से द्वारका जाना, गोपियों का विवाह फिर तीर्थ स्नान हेत श्रीकृष्ण का द्वारका से आना, इधर ब्रजवनिता समेत नंद यशोदा जी का भी जाना, वहां श्रीकृष्ण से राधिका का गोपियों को साथ ले कर मिलना और नंद यशोदा का श्रीकृष्ण जी से मिलना आदि ।

No. 297(*a*). Hitōpadeśa Bhāshā by Nārāyaṇa. Substance—Country-made paper. Leaves—58. Size—$10\frac{1}{4} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—19. Extent—1,275 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1877 or A. D. 1820. Place of deposit—Bābū Padma Baksha Siṁha, Lavedpur (Bahrāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सुहृदभेद कथा लिख्यते ॥ दोहा ॥ दिल दयाल कवि कोविदनि मति प्रसाद सुखदानि । द्विरद माथ गननाथ के चरन सरन जिय जानि ॥ १ ॥ चो० ॥ राजपुत्र वोल्यैा इमि फेरी । मित्र लाभ माख्यैा द्विज टेरी । सुहृद भेद को कहैां कहानी । जाते राजनीति पहिचानी ॥ दोहा ॥ वृषभराज मृगराज कैा कहू वंध्यो अति प्यार । दगावाज दंभी लुवुध सुख तोरयो एक स्यार ॥ २ ॥ चो० ॥ राजपुत्र वोले यह कैसी विष्णु सर्म भाषी है जैसी ॥ है दक्षिन दिसि जग अभिरामा । नगरी एक सुवरना नामा ॥

End—विष्णु शर्मोवाच ॥ जे देवन्ह के आछे ओका । ते सारस को दोन्हे लोका ॥ विद्याधरो अप्सरा साथा । चवर डोलावत अपने हाथा ॥ जे कृतज्ञ भरता के भक्ता । सदा रहे प्रभु सो अनुरक्ता ॥ सूर समर को नीके मांडे । स्वामि हेत जीवित को छाड़ै ॥ ते नर होत स्वर्ग के गामी । सुजस सकल पावै जग नामी ॥ मारि जाइ शत्रुन सो सूरा । मुष पर नेकु रहै पै नूरा ॥ कातर बोलन आपन भाषैसो । अमरावति को रस चाखै ॥ ग्रैार सकल सुख तुम कह होई । विग्रह करै न पावै कोई ॥ नीति मंत्र रिपु मारे जाही । वन वन फिरै मूल फल खाहीं ॥

इति श्री हितोपदेश विग्रहो नाम तृतीय कथा समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥ सम्बत १८७७ ॥

इति ।

Subject—सुहृद भेद, पृ० १-२४ तक । विग्रह, पृ० २५-५८ तक ।

No. 297(*b*). Hitōpadeśa (Rājanīti) by Nārāyaṇa. Substance—Country-made paper. Leaves—232. Size—6 × 4 inches. Lines per page—16. Extent—2,704 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1924 or A.D. 1867. Place of deposit—Ṭhākura Digvijaya Siṁha, Tālukedāra, Village Dikauliyā, Post Office Biswā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ हितूपदेश लिष्यते ॥ दोहा ॥ सिद्धि साधु के काज मे सो हरु करौ कृपालु गंग फेन को लोक सी सिर ससि कला विसाल ॥ १ ॥ सुनी सहित उपदेस दृत बचन रचनानि वेदन को वानो लहै राजनीति पहिचानि ॥ अजर अमर के हेत ते विद्या धनहि बढ़ाव । मीचु मनो चाेटी गहे देत विलंब न लाव ॥ विद्याधन सब धनन ते संत कहत सरदार । मोल बड़ो ना घटत घर किये न पैइये मार ॥ विद्या देत विनीत करि विनै बड़ाई देत । बड़े भये धन पाइये दान भोग धन हेत ॥ शास्त्र सस्त्र विद्याद्व विध धन ग्रैार धर्म न जाइ । थिरधाई पहिले हंसी दूजी सदा सोहाइ ॥ दारुन नृपति समुद्र सम विद्या नदी समान ॥ छै पहुंचावै नीचहू लाभ भाग परमान ॥ विद्यानदी नदीस नृप मीचहु मिलवै हाल । दारुन नृपति दया करै होइ जो भाग कृपाल ॥ प्रथमहि वाको नाम जो धरै न घट में आनि । बाल कथा छल कहत हों राजनीति पहिचानि ॥

End—दोनों गये आपने राजा । सुष सो करत आपनो काजा ॥ विष्णुशर्म बालन सो कही । आयसु करौ सुनै जो चही ॥ राजपुत्र बोले जिय जानो । विश्नुशर्म को आदर मानो ॥ द्विज वर जो राजन को चहो । सोई कथा आप

यह कहो ॥ दूजो भयो जन्म अवतारा । सुनिये राज अंग व्योहारा ॥ गयो बहोरि फेरि अव भयो । सुष समूह पायो दुष गयो ॥ विश्नुशर्मे तव दई असोसा । संधि करो शुभ घरी महोसा ॥ विपति दूरि साधन को जाई । दानन की रति सदा सोहाई ॥ नीति नई नारो लैा जगै । चुंवन करै मित्र सुष लगै ॥ मंत्री मंत्र सदा मन धरै । महाराज सुष आपुहिं करै ॥ दोहा ॥ जौलैां गिरि गैारोस की बहत जात नित नेत । जैा लैां लक्ष्मि मुराधिर प्रगट धरत अै मेत ॥ जैा लैां सुर गुर संग करि फिरि सूरज अै चंद । तैा लैा नारायन कथा सुनै सो मनहि अनंद ॥ हित छल वहु यामें अहै भूपन की वरनोति अरु उपाव वल वुद्धि की त्रिय चरित्र रस रोति ॥ मंत्र भेद सुदेस के जोर व फोर व संधि अरु अनेक गुन भेद हैं याहि कथा सो वंधि ॥ इति श्री हितूपदेश नारायन कृत समप्तम् ॥ श्री संवत १९२४ माघ मासे कृष्णपक्षे तिथैा ४ ससि दिन लिष्यते वलदेव पंडित पैदापूर ग्राम निवासते ॥

No. 297(*c*). Hitōpadeśa Bhāshā by Nārāyaṇa. Substance—Country-made paper. Leaves--41. Size—13 × 5 inches. Lines per page--12. Extent--600 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance--Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1927 or A.D. 1870. Place of deposit—Ṭhākura Dalajīta Siṁha, Village Jālimasiṁha kā purwā, Post Office Keśargañja, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्रीमते रामनुजायनमः अथ राजनोति हितोपदेश भाषा लिष्यते ॥ दोहा ॥ सिद्धि काज साधु में सो हरु करै कृपाल । गंगा केतु कि लीक सिसिर ससि काल विलास ॥ सुनिहुत उपदेस यह देत वचन रचनानि देवन्ह की वानी । लहे राजनीति पहिचानि । अजर अमर की भांति सो विद्याधनहिं वढ़ाव । मीचु मनो झोठी गहे देत न वार लगाउ ॥

End—राजकुमार कथा सुनि वोले । एकहि वार सहस मुख षोले ॥ आनंद बड़ो हमारे भयो । उनको साथ छूटि नहिं गयो । कुशल भांति अपने घर आयो हमरे मन आनंद बढ़ायो ॥ विश्वशर्मा उवाच ॥ राजकुमार एक सुनिये वाता । जो हों तुम्हें असोसत गाता ॥ पावे साधु मोत सव लै कोय । लक्ष्मोवंत देस निज होय ॥ भूपति सब भूमिहिं प्रतिपालै । धर्महिं धरै न डोलै हालै । अर्द्धचन्द्र चूड़ामणि जाके । सो कल्याण करै प्रभु ताके । इति श्री हितोपदेस प्रथम कथा मित्र लाभ समाप्तं । सुभ मस्तु । समै नाम माघ मासे शुक्ल पक्षे तिथैा नैामो रविवारे संवत १९२७ दसखत दलजीत सिंह के ।

No. 297(*d*). Hitōpadeśa by Nārāyaṇa. Substance—Country-made paper. Leaves—48. Size—13 × 6 inches. Lines per page—16. Extent—960 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Mahīpati Siṁha, Bhairampur, Rāe Barelī.

Beginning—पृष्ट २ से।

दारुन नृपति समुद्र सो विद्यानदी समान। लै पहुँचावै नीचहूं लाभ भाग परमान॥ विद्यानदी नदीस नृप नीचहु मिलवै हाल दारुन दानि दया करै होइ जो भाग कपाल॥ प्रथमहि वाका नाम जो भरो नये घट डारि। बाल कथ छल कहत हैा राजनीति सब झारि॥ मित्र लाभ फिरि सुहृद को भेद श्रो विग्रह संधि पंचतत्व सों ग्रंथ पढ़ि चारि कथा में बंधि॥

End—रोग सोक संताप यह घरी पहर को संग। तातन कारन कैान नर करै पाप परसंग॥ चल जल में ससि बिंब ज्यों त्यों मन तन में प्रान समुझि इहै मन श्रापने कैान करै कल्यान॥

तातै मेरे मन यह श्राई। तोसों बात कहों मन भाई॥
सत्य ये कहै भेदहजार। मत्यहि को दीजै फिरि भार॥
जैा लो गैारि गिरीस को बढ़त जात नित नेह।
जो लो लछि मुरारि उर लागि तड़ित जो मेह॥
जैा लो सुर घर कनक गिरि फिर सूरज श्ररु चंद।
तैा लो नारायन कथा सुनै सुजान श्रनंद॥
इति हितोपदेश भाषा नारायण कवि कृत समाप्तः॥

No. 298. Gopīsāgara by Nārāyaṇadāsa. Substance—New paper. Leaves—38. Size—7½ × 4½ inches. Lines per page—48. Extent—1,140 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1898 or A. D. 1841. Place of deposit—Paṇḍita Ajodhyā Prasāda Miśra, Kaṭail, Post Office Chilwaliyā, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ श्री सरस्वती मातु जी सहाई॥ श्रथ गोपी सागर कथाः लिख्यते॥दोहा॥ विघ्न विनासन भव हरन बुद्धि होत परगास। सुमिरण करै गणेश को होइ शत्रु को नाश॥ चैापाई—श्रीगुरु श्रीगुरु श्रीगुरु देहु। जिनके मरम न जाने केहु॥ जब उद्धव गोकुल कहं श्राये। गोपिन कह यह कथा सुनाये॥

कुशल सिंह मूरख अज्ञानो । सो चरित्र भाषा रशसानो ॥ गुरु प्रसाद कहैा कछु जानो । नाहीं तैा पशु हैा अज्ञानी ॥ दुसरे साधु संगति बुद्धि पाई । सो कहा नीति राघव गुमाई ॥ दोहा ॥ गोपिन आगे उद्धव कथा जो कीन्ह बखान । गुरु दाया ते भाखेउं हम पशु वा अज्ञान ॥

End—श्रवण संदेसा सुना हरि चित दाया प्रभु कीन्ह । नारायन दास प्रभु चरण कमल तन मन प्रीति दीन्ह ॥ चैा०—गोपी सागर संपूर्ण भयऊ । कहत सुनत पातक सब गयऊ ॥ संत असंत सुनहि प्रापति होई । मोक्ष मुक्ति तेहि प्रापति होई ॥ गुरु की दया भवोंषि स्वासा । तब एक कथा कीन परगासा ॥ दुसरे साधु संगति बुधि पाई विष गैा उतरि सुरति चित आई ॥ नहि तैा मैं पशु वा अज्ञानो । कत पाउं वरशा अमृत बानो ॥ अधम करम कछु धरम न आही । भू के भार भंज जेहां बज मांहो ॥ दोहा ॥ गुरु दयाल भव कहा हम अधम जिय जाति । अगम कथा हरि सुरस की नीति की है ए ख्याति ॥ २२५

इति श्री पोथी गोपी सागर कथा सम्पूर्ण समाप्त । जो देखा सो लिखा मम दोषो न दीयते ॥ मिती पूष छोंद मास शुक्ल पक्ष तिथि ६ षष्ट संवत १८९८ वि० लिखा देवीदीन छावनी कर्नाल रजमटि ९ वाशर शोम्वार॥ राम राम ॥

Subject—स्तुति, कृष्ण का उद्धव के वृज में भेजना, उनका यशोदा और गोपियों से मिलन, (पृ० १—३) । व्यास अगस्त और नारद सम्वाद, उद्धव का गोपी के समझाना मारकण्डेय की कथा कहना, गंगा किनारे ऋषियों का एकत्र होना और अगस्त्य द्वारा मारकण्डेय का प्रलय में कृष्ण का सहायक होना, शृंगी ऋषि के ब्रह्म का वर्णज, ध्रुव के विष्णु स्वरूप का वर्णन, गोपियों का विरह वर्णन और उद्धव के धिक्कारना, कृष्ण का बाल चरित्र, उद्धव के द्वारा कवि का कविता की प्रशंसा करना—(पृ० ४—१० तक) । उद्धव का प्रह्लाद चरित्र वर्णन, एकादशी कथा वर्णन, प्रह्लाद का इन्द्र होना और इन्द्र की परीक्षा लेना (पृ०—११—२२ तक) । द्विज की कथा, तुलसी माला का प्रभाव, विष्णु दर्शन और उनका गरुड़ पर सवार होकर लोकों में भ्रमण करना, लक्ष्मी का मोह और विष्णु का निवारण, नरक वर्णन, नाम महिमा, गोवत्स कथा, शिव से कृष्ण भक्ति की अधिक महत्ता (पृ० २३—३१ तक) । केवट की कथा, शिव महिमा, शिव का शक्ति से विवाद, गोपियों का उद्धव से विरह वर्णन, (पृ० ३२—३६ तक) । उद्धव का विदा होना और मथुरा गमन, कृष्ण का प्रेम वर्णन (पृ० ३६—३८) ।

No. 299. Anurāga Rasa by Nārāyaṇa Swāmī. Substance —Country-made paper. Leaves—8. Size—12 × 5 inches.

Lines per page--48. Extent--180 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character--Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1936 or A. D. 1879. Place of deposit—Rāma Śaṅkara Vājpeyi, Village Bahori kā Vājpeyi kā Purwā, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः ॥ अथ अनुराग रस लिष्यते श्री नारायण स्वामी कृत लिष्यते ॥ श्री वृन्दावन चन्द्र मध्ये ॥ अथ गुरु वंदना ॥ श्री गुरुचरण सरोज रज वंदैां वारंवार । नारायण भवसिंधु हित जे नौका सुष सार ॥ कृपा करै मा दोन पै हरै तिमिरि अज्ञान । नारायण अनुराग रस निज मति करू बषान ॥ अथ श्री राधा गोपाल वंदना ॥ श्री राधा गोपाल पग कर प्रणाम उर धार ॥ वरणों कछु अनुराग रस यथा बुद्धि अनुसार ॥ दयासिंधु अति सुष सदन सदा रहै अनुकूल । नाथ न आनै हृदय में मो पामर की भूल । श्री वृन्दावन वंदना ॥ धनि वृन्दावन बनधाम है धनि वृन्दावन नाम । धनि वृन्दावन रसिक जन धनि श्री राधा श्याम ॥ जे वृन्दावन वास करि शाक पात नित षात । तिन के भागन को निरषि ब्रह्मादिक ललचात ॥ हम न भये ब्रज में प्रगट यही रही मन आस । नित प्रति निरषति जुगुल छवि करि वृन्दावन वास ॥ चेतावनी पुनि गुण दोष लक्षण ॥ बहुत गई थोरी रही नारायण अब चेत । काल चिरैया चुग रही निश दिन आयुष खेत ॥ नारायण सुष भोग में तूं लंपट दिन रैन । अंत समय आयो निकट देषि खोलि के नैन ॥ धन योवन यों जायगो जा विधि उड़त कपूर । नारायण गोपाल भजि क्यों चाटै जग धूरि ॥

End—नारायण जाको हियो विंध्यो श्याम दृग बान । जग के भावै जीव तो है वह मृतक समान ॥ सुख संपति, धन धाम की ताहि न मन में आस । नारायण जाके हिये निश दिन प्रेम प्रकाश ॥ नारायण जाके हिये प्रीति लगी घनश्याम ॥ जाति पांति कुल सों गये रहे न काहू काम ॥ नारायण तब जानिए लगन लगी यहि काल जित जित में दृष्टी परै दीषै मोहनलाल ॥ नारायण वृजचंद के रूप पयोनिधि मांहि डूबत बहुतै एक जन उछरत रको नाहिं । परा भक्ति अरु ज्ञान में तनक नहीं कछु भेद । नारायण सुष प्रेम है कहैं संत अरु वेद ॥ परा भक्ति याको कहैं जित तित श्याम देषात ॥ नारायन सो ज्ञान है पूरण ब्रह्म लषात ॥ नंदलाल दशरथ कुंवर उभय एक सरकार । नारायण जे दो कहैं ते नर विना विचार ॥ जो घायल हरि दृगन के परे प्रेम के खेत । नारायण सुनि श्याम गुण एक संग रो देत ॥ नारायण सब एक है रंग रूप तिल रेख उनके दृग गंभीर हैं इनके चपल विशेख ॥ नारायण या बात सों अधिक और नहिं बात । रसिकन

को सतसंग नित युगल ध्यान दिन रात ॥ गुण मंदिर सुन्दर युगल मंगल मोद निधान। नारायण निज चरण रति यह दीजै वरदान ॥ इति श्री अनुराग रस नारायण स्वामी कृत सम्पूर्णम् ॥ संवत १९३६ लिखा कालिका प्रसाद ॥

Subject—गुरु वंदना, श्री राधागोपाल वंदना, श्री वृंदावन वंदना, चेतावनी, गुण दोष लक्षण, संत लक्षण, कृपा निधान की शोभा, प्रेम लक्षण का वर्णन।

No. 300(*a*). Sudāmā Charitra by Narottamadāsa. Substance--Country-made paper. Leaves--26. Size—6 × 5 inches. Lines per page--16. Extent--200 Anushṭup Ślokas. Appearance--Old. Character--Nāgarī. Date of manuscript--Samvat 1842 or A. D. 1785. Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Siṁha, Post Office Kānthā, District Unāo.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री इष्टदेव तासु प्रसन्नास्तु ॥ सोरठा—गणपति कृपा निधान विद्या बुद्धि विवेक जुत देहु मोहि वरदान प्रेम सहित हरि गुण कहैं ॥ १ ॥ हरि चरित्र वहु भाइ सेस महेस न कहि सकै ॥ प्रीति सहित चित लाइ सुनो सुदामा की कथा ॥ २ ॥ दोहा ॥ विप्र सुदामा वसत है सदा आपने ग्राम। भिक्षा करि भोजन करै हिए जपै हरि नाम ॥ ३ ॥ ताकी घरनी पतिव्रता गहै वेद की रीति। सुवुधि सुसील सुलज्ज अति पति सेवा सों प्रीति ॥ ४ ॥

End—कवित्त—कहूं सुपनेहू सुवरन के महल हुते पैारि मनि मंडित कलस कव धरते। नगन जडित कहां सिंहासन वैठिवे कें कव ये खवास खरे मोपै चैार ढरते ॥ देखि राजा सामां निज वामा सों सुदामा कह्यौ कव ये भंडार रतनन भार भरते। जो पै पतिव्रत तूं न देती उपदेश कहुं एती कृपा द्वारिकेस मों पै कव करते ॥ ७५ ॥ दोहा—विप्र सुदामा की कथा कहै सुनै चितु लाइ। ताकैां श्री जदुराइ जू सव दिन रहै सहाइ ॥ ७६ ॥ इति श्री नरोत्तम कृत सुदामा चरित्र संपूर्णम् लिखितं गवेणी शंकर ने स्वयं पठनार्थ श्री राधानगर खिपाइ मध्ये स्व प्रत्यं ॥

इति।

Subject—गणेश वंदना। सुदामा की दशा का वर्णन, सुदामा श्रौर उनकी स्त्री का संवाद, स्त्री का सुदामा से द्वारिका जाने को कहना, सुदामा का भिक्षा में संतोष मानने को कहना, (छं० १—९ तक)।

दीनता की हीनता वर्णन, भिक्षा मांगना निर्दोष कथन, वर्ण धर्म कथन, स्त्री का निज दुर्दशा वर्णन, शीतादि के कारण कष्ट वर्णन, सुदामा का फिर निषेध करना, स्त्री का कृष्ण की उदारता वर्णन, प्रह्लाद द्रौपदी आदि का उदाहरण देना। (छं० १०—१८)।

सुदामा का द्वारिका जाना स्वीकार करना, स्त्री का कृष्ण बंधुत्व की सुधि दिलाना, सुदामा का कृष्ण को भेट देने के लिये कुछ मांगना, स्त्री का भेंट के लिये तंदुल मांग लाना और सुदामा को प्रस्थान करना, सोते में गोमती तीर पर पहुंचना, द्वारावती में पहुंचना, पूछने पर एक व्यक्ति का कृष्ण पौरि पर पहुंचाना, नगर देख अचंभित होना (छं० १९—३१)।

द्वारपाल का सुदामा की दशा का वर्णन, कृष्ण का सुन कर जाना, प्रेम भाव से मिलना, आदर करना, चरण धोना, स्नानादि कराना, भेंट मांगना, कृष्ण जी का चावल भेंट का भोग लगाना, रुक्मिणी की तीसरी मुठी पर रोकना, सुदामा का भोजन करना—(छं० ३२—५३ तक)।

सात दिन निवास करना, कृष्ण का संपति देना और सुदामा से न कहना। महल आदि बन जाना, सुदामा का मन में कृष्ण प्रेम, आदर से कृष्ण का विदा करना, सुदामा का नगर में आना और झोंपड़ी न जान कर दुखित होना, स्त्री का ले जाना, कृष्ण महिमा वर्णन, सुदामा का प्रसन्न होना, कृष्ण सुदामा की मित्रता, कृष्ण महिमा कथन। (छं० ५४—७६ तक)।

No. 300(*b*). Sudāmācharitra by Narottamadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—26. Size—6 × 5 inches. Lines per page—24. Extent—312 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1912 or A. D. 1855. Place of deposit—Paṇḍita Saryū Prasādajī, Village Maharu, Post Office Materā, District Baharāich (Oudh).

Note—Other details as in no. 300(*a*).

No. 301(*a*). Jñānasarovara by Bābā Nawaladāsa of Dhanesā. Substance—Country-made paper. Leaves—326. Size—8 × 4½ inches. Lines per page—9. Extent—2,916 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1818 or A. D. 1761.

Place of deposit—Lālā Mahavira Prasāda, Village and Post Office Gauriganja, District Sultānpur.

Beginning—सम्बत् अठारह सै अठारह, माघ पूरनमासिया। संक्रांति सुन्दर जानि कै रवि माणि कथा प्रकासिया॥ निरमल सरोवर ज्ञान की असनान श्रोता जो करै, तरि जाइ पाप अगाह से, सुष मूल सागर मैं परै। ज्ञान सरोवर ज्ञान में ज्ञानी करत विचार॥ हिल मिल बांचत सुनत नर उतरत भवजल पार॥ पश्चिम दिस है अवध से नवल रहे रटिनाम। ढासन जोजन पांच पर ग्राम घनेसा नाम॥ सो०—अब कछु दोष न मोर। मै वाजन वाजंस तुम। गावौं प्रभु गुन तोर। प्रभु मोहि कल्लक वानी भयौ॥

End—दोहा—यह सब चरित पुरान के ज्ञान खानि अघहानि। दास नवल श्रोंता तरै सुनै जो निश्चय मानि॥ तरै फरै फिरि नहिं भरै श्रोता वक्ता होइ। दास नवल सोइ पाइहै ओर न पावहि कोइ॥ २५८॥ सोरठा॥ धन्य जन्म तिन्ह केर। श्रोता वक्ता जक्त के। तिन्है न भवजल फेर। जे जस ज्ञान प्रमान करि॥ इति श्री ऊधव माधव संवादे ज्ञान सरोवर भाषा कृते समाप्तम्॥

Subject—(१) प्रथम अध्याय पृ० १८—ज्ञानकांड ऊधव माधव संवाद। (२) दूसरा अ० पृ० २०—संत स्वभावादि। (३) तीसरा अ० पृ० ५२—(१) एक भक्त हंस की कथा ओर (२) योग भोग समता। (४) चतुर्थ अ० पृ० ६८—(१) दुर्वासा द्वारा द्रुपद सुता परीक्षा। (२) बालयती की कथा। (५) पंचम अध्याय पृ० ८८-ईश्वर के नामों में रामनाम की श्रेष्ठता। (६) षष्टम अध्याय-पृ० ११०-चन्द्रोदय राजा की कथा, कन्यादान की श्रेष्टता, पातिव्रत्य माहातम्य, कबूतर की कथा, भावी की प्रवलता, (७) सप्तम अध्याय, पृ० १३०-ब्राह्मण माहात्म्य तथा नाम की महिमा। (८) अष्टम अध्याय-पृ० १५६ कुन्तल नृप की कथा, कर्मानुसार जीवोत्पति तथा यमपुरी वर्णन। (९) नवम अध्याय—पृ० १७४—रामचन्द्रजी का वाल चरित्र।

(१०) दशम अध्याय —२००, काकभुशुंड की कथा। रामचन्द्र जी का वाल चरित्र। (११) एकादश अध्याय—पृ० २३०-(१) विभीषण हनुमान संवाद, मालादि वृथा कथन केवल रामनाम ही प्रधान, (२) अर्जुन, पवनसुत संवाद, कृष्ण राम की एकता।(१२) द्वादश अध्याय —पृ० २५४-भक्त मृग की रक्षा ईश्वर द्वारा मन्दोदरी उत्पत्ति। (१३) त्रयोदश अध्याय—२७६ हरिश्चन्द्र की कथा। (१४) चतुर्दश अध्याय—पृ० २९६ हरिश्चन्द्र की कथा (१५) पंचदश अध्याय—३२६—एकादशी उत्पत्ति।

No. 301(*b*). Ratna Jñāna by Bābā Nawaladāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—128. Size—15 × 6 inches. Lines per page—12. Extent—2,500 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1838 or A. D. 1781. Date of manuscript—Samvat 1852 or A. D. 1795. Place of deposit—Mahanta Guruprasādajī, Hargāon, Post Office Parbatapura, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः। सुमिरहुं प्रथम गणेश गोसाई। जो त्रिभुवन हित करत सहाई॥ रिधि सिधि बुधि वकसत नहिं बारा। अमित अपतन पार उतारा॥ अति बड़ि लंबोदर प्रभुताई॥ जासु उदर सब जगत समाई॥ जिन कर अगम अनंत प्रभावा॥ सुर मुनिवर कोउ मरम न पावा॥ जय जग वदन सदन बुधि ग्याना। जेहू कर शिव अति करत वखाना॥ तुम त्रिभुवन पति गनपति नामा॥ सुमिरत तुमहिं सकल सिद्धि कामा॥ मैं मति रहित नाम नहिं जाना। होइ प्रसन्न पिउ पुरुष पुराना॥ दोहा॥ कुमति हरण सिद्धि बुधि करन, सरन सम्हारनहार। दास नवल मतिमंद कहै कीजै भवजल पार॥ सोरठा॥ सत गुरु सांचे राम, सतदिन कर भ्रमतम हरन। हृदय करिय विश्राम, जग जीवन जग तारनैा॥..। संवत अठारह सो अड़तीसा। कहियत नाइ भक्त पदसीसा॥ माघ मास सुभ पूरन मासो। कृपा समुझि हरि परित प्रकासो॥

End—हिन्दु तुरकन भयो लराई। सो हमसन कछु बरनि न जाई॥ प्रथमहिं करि मयदान अपारा। जूझे तुरुक भये क्षय कारा॥ पुनि फिरि धरि गढ़ कोन लड़ाई। द्वादश दिवस कविहि कहिं गाई॥ तव तुरकनि चंद उर मारा। कीन्ह कविन सोइ जस विस्तारा॥ हिन्दू कह्यो मिट्यो हिन्दुवानो॥ कुवरय कोन देस तुरकानो॥ दोहा॥ लोन अमल कर देश महं तुरुक रहा सब छाइ॥ जूझे राना देश के को सब सकत गनाइ॥ २४३॥ इति श्री माधैा रत्न ज्ञान नवलदास कृत समाप्त सुभ मस्तु, जादृशं पुस्तकं दृष्टा ता दृशं लिषितं मया यदि शुद्धं अशुद्धं वा ममदोषो न दीयते॥ सम्वत १८५२ चैत्र मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदश्यां गुरुवासरे रत्नज्ञान समाप्तम् सुभम् भूयाद श्री जानुकी वल्लभोजति॥

Subject—प्रह्लाद, माधवानल इत्यादि भक्तों के उदाहरणों के साथ ज्ञानोपदेश।

No. 301(*c*). Sukhasāgara Kathā by Bābā Nawaladāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—200. Size—7 × 6 inches. Lines per page—12. Extent—1,800 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1817 or A. D. 1760. Date of manuscript—Samvat 1890 or A. D. 1833. Place of deposit—Lālā Mahāvīra Prasāda Paṭwārī, Village Sarāi Khīmā, Post Office Rāmanagara, District Sultānpur.

Beginning—श्री गनेसाइनमः ॥ दे।० गुर गनपति सिव सक्ति सुर वंदैां रमा रमेस ॥ दास नवल हरि चरित रत करहु कृपा उपदेस ॥ सुख सागर सत जल विमल कलिमल दमन प्रमान, दास नवल अस्नान करु होइ सदां कल्यान ॥ बार बार बलि बलि गुरु चरना । दास नवल के संकट हरना ॥ भे सनाथ 'दूलन' खेमा । चेला अमित नाम के छेमा ॥ दे।० संवत् अठारह से सत्रह यह मैं कहैा बषानि । जेठ मास × × × वंदैां चार मुक्ति श्रुति चारो । पुनिवंदैां गिरिराज कुमारी । धर्मराज पद गहैां तुम्हारे । जे सब न्याव विचारन हारे ॥ वंदैां सुरन समेत सुरेसू । वंदैां जल थल कमठ जो सेसू ॥ वंदैां पवन सहित हनुमाना ॥ पर्म भक्ति निसुदिन जिन्ह जाना ॥ × × ×

End—अति हरि चरित अगुढ़, को समरथ पारहि लयैा । दासनवल मति मूढ़, नरतन प्रेम प्रतीत विन ॥ कहत जुगल करि जोर, श्रोता वक्ता मित्र मम । दह लीजिये जोरि, मोहि भरोसा अहै बड़ ॥ मोहिन लायहु पोरि, बाजन बाजत नाथ कर ॥ सो बाजन मति मोर, जानै वहै बजावनो ॥ पाप हरनि पावन करनि श्रोता लेहु नहाइ ॥ सुषसागर भाषा क्रिते मैं यकदसमोध्यायः ॥ इति श्री नवल दास कृत सुकसागर कथा संपूरन समाप्त ससै नाम जेठ मासे कृष्ण पक्षे गुरु वासरे संवंत १८९० सन १२९० क० × × × ×

Subject—(१) प्रथम अध्याय । पृ० १—४ तक—ग्रंथ निर्माण कारण तथा समय (२) पृ० ४—७ तक—वंदनाएं—(३) द्वितीय अध्याय । पृ० ८—२१ तक—उमा को शिव से मैालि माला विषक शंका, शिव का समाधान करना, नाम का प्रभाव, शुक जन्मादि—(४) तृतीय अध्याय—पृ० २२—३३ तक—शुक व्यास आश्रम गमन । (५) तृतीय चतुर्थ और पंचम अध्याय पृ० ३४—६३ तक—शुक का जन्म, दर्शन इत्यादि वन गमन, शुक व्यास संवाद, शुक भजन—अ० ४, ५, ६ (६) सप्तम अध्याय—पृ० ६४—७३ तक—व्यास विलाप, राम दर्शन, विनय । (७) अष्टम अ० । पृ० ७४—८२ तक—शुक को

ईश्वर का उपदेश (८) नवम से त्रयोदश अध्याय पृ० ८३—१२१ तक—इन्द्र भय, शुक तपस्या भंग उपाय, रंभा का उद्योग भंग, नारदादि का काम मोहित होने का वर्णन। व्यास से शुकदेव गुरु उपदेश लेना तक। (९) चतुर्दश अध्याय। पृ० १२२—१३० तक—शुक का पिता से नाम उपदेश इच्छा, पिता का जनकपुर भेजना, उनका जाना, जनक का अपमान करके बारंबार उनके निकलवा देना तथा उनका फिर आजाना और दीन बचन कथन करना, सेवकों को इस अपमान का कारण समझा कर जनक का एक कटोरे में शुक को जल देकर यह कथन करना कि यदि एक बूंद भी जल गिरे तो दर्शन न पावोगे। (१०) पृ० १३१—२०० तक—नाम माहात्म्य वर्णन। कृष्णार्जुन संवाद वर्णन, चन्द्रहास इत्यादि वर्णन, माता के पास शुक का आना, पिता का विवाह हेत उपदेश, उनका भक्ति वर मांग कर विदा होना।

No. 301 (*d*). Śrimad Bhāgavata Purāṇa by Nawaladāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—646. Size—14 × 5½ inches. Lines per page—11. Extent—8,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Kaithī. Date of manuscript—Samvat 1831 or A. D. 1774. Place of deposit—Mahanta Guruprasāda, Hargāon, Post Office Parbatapur, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ सोरठा॥ सत गुरु सांचे राम तुम सुकृति सत दरस प्रभु। हृदय करिय विश्राम जग जीवन जगतारनो॥ बरनैा सतगुरु रूप, दिन कर तम दुष दावनो। स्याम कमल जिमि रूप ताकर दाम सुहावनो, सेतहु ते जो सेत, ताहि माहि अति सेत छवि, पुलि पुरान कहि देत, अगम अगोचर गगन रह॥ वारिज वारिहि मांहि आसानाक पतंग के। सतगुर गुर पदहिं दै विशेष अमल उदै पंचक भवन॥ ५॥ बास में कारह नाक तहं सतगुरु, सत मन तिलक। वह सत सुमिरन पाक, सो जग जीवन जक्त प्रभु॥ दोहा॥ जग जीवन जगमगत हैं गगन महल महं वास, तेसत गुरु जग विदित प्रभु। दास नवल करु वास॥ हेरि भुवन दस चारि तो रीझे सुर सिधि मुनि, करत विचारि विचारि। जे गनपति गुन ग्यान घर॥ ८॥ भक्ति ज्ञान गुन दान शीलवंत सिन्धुर बदन। जै जै नव निधि जानि, करुणा सागर बुधि सदन॥ ९॥

End—प्रभु अस कहि निज वपु थल थापा। दरस हरत जग त्रिविधि कुतापा॥ छंद॥ थल थापि निज वपु निज वचन हरि हरषि बैकुंठहि गये। सुखदेव बरणत समुझि सब सुनि सुजन सब कारज भये। तरि गये परीछित राइ भाइ

समेत, जिन श्रवनहिं सुना। कृति सुनहिं जगत प्रतीति कर जनु भ्रमर मन अमृत सुना। तिहुं लोक घट घट बसत प्रभु परबोध दरसन सरगुना। अति सहज पावन अघ नसावन करत हित को उन रमन॥ दरसन अतिहित बोध करत जो नर मन लाइ। दास नवल परतीत करु, सकल दूरि दुष जाइ। सोरठा॥ चरित समुद्र अैागाह, दस नवल कछु पार नहिं, धन्य धन्य नरनाह जिन हित मुनि कछु प्रगट कलि॥ इति श्री हरि चरित्रे दशन स्कंधे महापुराणे श्री भागवते परायण कांडे हरि वैकुंठ गमन वर्णनो नाम उन्तीसवां अध्याय समाप्तम् संवत् १८३१॥

Subject—(१) पृ० १-२३० तक-आदि कांड (जन्म कांड)। (१—३०)-स्तुति वर्णन प्रथम अध्या० द्वि० अ० तृतीय। श्रीपति गर्भ वासन। चतुर्थ अध्याय—पृ० ४० कंस वृथा प्रवोध। पंचम अध्याय पृ० ५२ तक तृणावंत व्याख्यान छठां पृ० ६०—गोरस क्रीड़ा। सातवां पृ० ७०—श्याम सत्य स्वरूप वर्णन। आठवां अध्याउ-८० यमलार्जुन वृक्ष उद्धार। नवां अ०—९० बाल क्रीड़ा। दसवां अ० १०४। ग्यारहवां अ० ।११४। बारहवां अ०। १२४। तेरहवां अ० १४० ब्रह्मास्तुति। चैादहवां अ० १५० कालो साच विमोचन। पन्द्रहवां अ० १६४ गोपी विरह। सोलहवां अ० १६४-नन्दागमन, ग्वाल हर्ष। सत्रहवां अ० १८४ गंधर्व शोच विमोचन। अठारहवां अ० १९४, जमुना प्रवेश। उन्नीसवां अ०, २०२। वीसवां अ० २१४ व ६ मुनि प्रवोध। इक्कीसवां अ०, २२२ कंस विध्वंस। बाईसवां अ०, २३० भक्त चरित्र वर्णन। (२) मध्यकांड २३१ से ३१७ तक। प्र० अ० २४३—कृष्ण स्तुति गुरु दक्षिणा हेत। द्वि० अ० २५१ गोकुल तृ० अ० २६३—अक्रूर हस्तिनापुर गमन। च० अ० २७३—जरासिंधु समर। गमन। पं० अ० २८३—गोमत सिखर समर। षष्ट अ० २९१ रुक्मिणी शृंगार छवि वर्णन। सप्तम अ० २९९ रुक्मिणी गिरजा महल गमन। अष्टम अ० ३०७ रुक्मिणी विवाह नवम अ० ३१७ सतगुरु विधि संवाद।

(३) पारायण कांड—३१८—६४६ तक

अ० अ० ३२८। द्वि० अ० ३३: रति प्रवोध। ३५० तृ० अ० मनमथ आगमन। चतुर्थ अ० ३५८ जामवंत समर। पंचम अ० ३६८। षष्ट अ० ३८० जामवंत उद्धार। सप्तम अ० ३९० सतधन्वा समर। अष्टम अ० ३९८ यमुना कृष्ण विवाह। नवम अ० ४१०। दशम अ० ४२२ कृष्ण द्वारावती आगमन नर्कासर निपातन। एकादश अ० ४३४ भद्रनट वज्र प्रसन्न करना। ४४८ द्वादश रुक्म बंधन त्रयो० अ० ४६४ बलि विनय। चतुर्दश अ० ४७८ बाणासुर वरदान। पंचदश अ० ४९२ अनरुद्ध समर। षष्टदश अ० ५०० नारद आगमन। सप्तदश अ० ५:८ बाणासुर समर। अष्टदश अ० ५१८ उषा अनिरुद्ध विवाह।

उन्नीसवां ग्र० ५३०—राजा नृग उद्धार । नंद यशोदा प्रबोध.......... । बीसवां अध्याय ५४० शांबु विवाह । इक्कीसवां ग्र० ५५० पांडव निमंत्रण, प्रभु ग्रागमन । बाईसवां ग्रध्याय ५६० शिशुपाल वध । तेईसवां ग्रध्याय ५७४ पांडव राजसूय यज्ञ, नारद व्यास सतसंग वर्णन । चैाबीसवां ग्र० ५८६ । पच्चीसवां ग्र० ६०४ द्रोपदी स्वयंवर छब्बीसवां ग्र० ६१८ सुदामा चरित्र । सत्ताईसवां ग्र०, ६२६ षट वालक उद्धार । ग्रट्ठाईसवां ग्र० ६३६ दसवालक ग्रागमन, विप्र प्रबोध । उन्तीसवां ग्र० ६४६ हरिवैकुंठ गमन ।

No. 302. Basanta Rājajyotisha by Paṇḍita Nemadhara. Substance—Country-made paper. Leaves -75. Size—11 × 5½ inches. Lines per page—36. Extent—1,350 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṁvat 1801 or A. D. 1744. Date of manuscript—Saṁvat 1907 or A. D. 1850. Place of deposit—Bhaiyā Mahipāla Siṁha, Rais, Payāgapura, Post Office Payāgapura, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ सुमिरै़ा ग्रादि गणेश की पुनि प्रनवों सिरनाइ । जाको कोर कटाक्ष से ग्रद्भुत दुति ह्वै जाइ ॥ दोहा ॥ एक रदन दारिद हरन इन्दु विराजत सोस । चारि पदारथ देत हैं निति षमा वकसोस ॥ लम्बोदर ग्रसरण सरण दुषभंजन सुषसार । मदन कदन सुत गज वदन गणनायक सुभकार ॥ सोरठा ॥ मंगल रूप ग्रपार सुषदायक घायक विघन । दाया दृष्टि निहार । करै़ा क्रिपा मोतन ग्रमित ॥ छंद ॥ एक रदन छवि छाजै इन्दु भाल पै विराजै माल पुहुप उर साजै सदा काटत कलेस हैं ॥ दीनन को रच्छपाल सोभित कंज कार सवाल दयावंत कृपा ग्राल गुन वुधि को धनेस है ॥ लंबोदर कला निधान सुष सागर ज्ञान दान गैारी जी को जीव प्रान नित गावत ग्रहेश है ।

End—पूजा विधान स्वपन ॥ दोहा ॥ ग्रसुभ दरसै सुपन को भय प्रगटै वहुतासु ताको पूजा विधि कहो करै ग्रमंगल नास ॥ पूजा विधि ग्रव कहत हैां जाहि कटै सव पाप गायत्री के सहस दस प्रथम करावै जाप प्रथम करावै जाप सहस ग्राहुति पूनि कीजै कै विप्रन को वोलि करै लक्ष मंत्र मृत्यंजे । घृत सुरभी को ग्रान ग्रछन चंदन पुनि पूजा ॥ छंद गीत ॥ पुनि गऊदान विधान ते व्रह्म भोज इच्छा कीजिये तव दक्षिणा एक एक मोहर कै पुरट मासा दीजिये । जेहि शक्ति ना कछु होइ वृतमान दान वताइये । यह ग्रंथ न पारस वोच पंडित नेमधर इम गाइये । नेमधर पंडित विचार ग्रंथ वनाइ जानियो भाषा करि वुध नेम सुन पंडित

सुष मानिये । कहो सुमति अनुसार कवि कोविद मोपर करि किपा सुदास विचार जेहि भाषा आदर लहै । शुभ पोथी जगमह विदित सम्वत ताको जान अष्टादस प्रतम तापर एक वषान । मधु मासे तिथि पूर्णमा भा पूरन इतिहास ससि दिन सुभ स्थान सो परमेसुरो निवास । मंगल उपजै मोदप्रद सुष को करै प्रकास रघुपति नाम प्रताप ते दिन प्रति होत हुलास ॥ लिषा संवत १९०७ वैसाख मासे शुक्ल पक्षे अमावस्यां शुक्र वासरे मुन्नू शुकुल रामानुज दास के दास ।

Subject—पृ० १—७५ तक—विचार अधिक मास, विचार दर्शन षंजन, विचार नातक, मनुष्य धेनु आदि पशु, विचार छींक, विचार छिपकली, गिर-गिट, विचार वानी काक, विचार हाक और रोदन सियार, विचार मातम पुरसो, विचार दर्शन नीलकंठ, विचार दर्शन चन्द्रमा चौथि, विचार कूप हम्माम के बनाने का । विचार ममाषो पीपर आदि वृक्ष, विचार नहर व हौज व तड़ाग बनाने का । विचार परयंक विधान विचार शयन करण, विचार उसीसे का, विचार स्वास, विचार शयन करण, वर्षा ऋतु और वंधन पिरोजा, विचार श्रवण को विचार सूर्य्यग्रहण और चन्द्रग्रहण, विचार तुलादान, छायादान, भूषन आदि का धारण, स्त्रियों का क्षौर सर्प दर्शन, नक्षत्र तारादि, अंग फरकन, ग्रह दानादि, शुक्र अस्त, दीप बुझावन, पुरुष स्त्री कुम्हड़ा काटन, आयु मनुष्य, वृक्ष रोपन पुरुष स्त्री, गुन दोष तिथि गुन दोष नक्षत्र, भद्रा गुन दोष, चन्द्रमा घातिक, चन्द्रमा यात्रा समय, चन्द्रमा घटि तिथि व नक्षत्र योग, स्वासा समय, वास रवि आदि नक्षत्र, दिन रोगी स्नान, यात्रा विचार, विचार नक्षत्र, तिथि, वार, तारा वाहन, रवि आदि, परिघंड चक्र सूर्य्य, चन्द्र उत्तरायन, दक्षिणायन, शुक्रास्त, यात्रा चारो वरन, तारोख मनहूस, विचार योग यात्रा, पूजा विधान यात्रा, नास दिशा सूल गुन वाहन समय यात्रा त्यागन वस्तु विचार नकल मकान, विचार पत्रा, विचार सगुन, विचार जल वृष्टि यात्रा समय, विचार स्वर यात्रा समय, विचार गृह प्रवेश, विचार द्वादश रास विचार नौ रोज विचार गुर्रा मोहर्रम, विचार सूर्य्य चन्द्रमा मंडल, विचार स्वप्न आदि के विचार का वर्णन है । अंत में तिथि आदि रचयिता लेखक के लिखे हैं ।

No. 303. Śakuntalā Nāṭaka by Newāja of Āgrā. Substance—Country-made paper. Leaves—56. Size—$8\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—16. Extent—896 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1963 or A. D. 1906. Place of deposit—Bābū Padmabaksha, Simha, Tālukedāra, Lavedpur (Bahrāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शकुन्तला नाटक लिख्यते ॥ कवित्त ॥ राखत न सूरज ससी को परवाहि नित.......फुल्लित रहत येक वानी के। ग्रानहू किये ते देत ज्ञान मकरंद वास.......कहैया जिनकी कहानी के ॥ कैसे ग्रैार पानी के सरोज सरि करै सीचै.......जै शिव सीस सुरसरि पानी के। सिद्धि की सुगंध पाइ मेरे मन मधुकर.......करन पद पंकज भवानी के ॥ १ ॥ दोहा—नवल फिदाई खान को नंद मुसलेखान। फरुख सेर कों दै फतै भयो व ग्राजम खान ॥ २ ॥ वखत विलंद महावली ग्राजम खान ग्रमीर। ज्ञाता ज्ञाता सूरमां साचैा सुन्दर धीर ॥ ३ ॥ देखि सूम साहेब सकल जस जगत उठि ग्राइ। हिम्मत ग्राजम खान के हिय में रही समाइ ॥ ४ ॥

End—कवित्त—ऐसे नेवाज कवीश्वर पाइ सकुन्तला नाटक को करो भासा। सो विगरी वहु कालकों पाइ जहां तहां याके भये पद नासा ॥ सोधि के सुद्ध कोर येहि कां दुरगा प्रसाद सो बुद्धि विलासा। याहि जो लै पढ़ि है सुनि है तिनके घर होइ है ग्रानंद वासा ॥ १ ॥ दोहा। याके पढ़िवे ते कवैां होत न सजन वियोग। विछुरेहू वहु काल को पावै वेगि संजोग ॥ २ ॥

इति श्री सुधा तरंगि न्यास सकुन्तला नाटक कथा प्रसंगे चतुर्थ स्तरंग ॥ ४ ॥ दोहा ॥ ग्रादो जैपुर देस कं ग्रव काशी में धाम। है दुर्गा प्रसाद पुनि यहि साधक कैा नाम ॥ समाप्त ॥ शुभम् ॥ माघ शुक्ल १ प्रारंभे फागुन कृष्ण १३ रवि वासरे संपूर्णम् ॥ संवत १९६३ शके १८२८ सन् १३१४ फसली ॥ ६ रविदत्त सिंह ॥

Subject—भवानी स्तुति, ग्राजमखां वर्णन, शकुन्तला वनाने का विधान वर्णन—पृ० १—२ तक। विश्वामित्र का तप करना, मेनका ग्रप्सरा का ग्राना, शकुन्तला की उत्पति, कण्व का पालन करना, ग्रनुसूया, प्रियम्वदा ग्रैार शकुन्तला की क्रीड़ा, राजा दुष्यन्त का शिकार खेलने के लिए ग्राना ग्रैार मिलन वर्णन। पृ० २—१५ तक। तीनो सखियों का हास्य रस वर्णन, पुनः दुष्यन्त व शकुन्तला मिलन वर्णन। पृ० १६—२५ तक। शकुन्तला को दुर्वासा का श्राप, कण्व का शकुन्तला को उपदेश ग्रैार दुष्यन्त के यहां भेजना, ग्रंगूठी का खोजना, दुष्यन्त का शकुन्तला को ग्रहण करने से इन्कार करना। पृ २६—४२ तक। दुष्यन्त को शकुन्तला की याद ग्राना ग्रैार विरह व्यथित होना। इन्द्र की सहायता के लिये जाना, लैाटते समय पुत्र भरत ग्रैार शकुन्तला से भेंट ग्रैार साथ लाना। संशोधनकर्त्ता का निवेदन वर्णन। पृ० ४३—५६ तक इति।

No. 304(*a*). Śālihotra by Nidhāna Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—21. Size—$12\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches.

Lines per page—12. Extent—480 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1800 or A. D. 1743. Date of manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1343. Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Siṁha, Seṅgara, Kānthā, Unāo.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ विघन हरन सब सुख करन लंबोदर वर दानि । करहु कृपा दीजे सुमति कहैं जोरि युग पानि ॥ १ ॥ संवत दस वसु से जहां उत्तर जानै भान । सालहोत्र भाषा रची नूतन सुकवि निधान ॥ शुक्लपक्ष तिथि पंचमी सहित सुभग बुधवार । माधव मास पुनीत अति भयो ग्रंथ अवतार ॥ ३ ॥ अथ राज्य वर्णन ॥ दोहा । सैयद है समरत्थ महि मंडन बृद्धि निधान । अकबर अली सभा अली विद्या विदित विधान ॥ ४ ॥ एक दिना सब कविन सों दीन्हों यह फुरमाय । सालिहोत्र जो संस्कृत भाषा देहु सुनाय ॥ षटपदी—सरद जहां जग जानि सुजस भुव बीच समथ्यैा । बली मुतिजा षान दान करि थल रथ थप्पैा । फिरि सैयद महमूद खींचि तरवार बरी करी । मुकति धरनि दै पत्र को नेस सवाव धरि । पुरुमसु सैद साषा सघन दादुल्ला षां सुमन हुव । दैत सकल मन कामना अलि अरवर फल प्रगट तुव ॥

End—तें छप्पय—तेज वात अति प्रवल होइ शुभ सील सुलक्षन । अति-चंचल गतिचारु सारु सुभ सुमति विचक्षन ॥ कहे चलै रहिजाइ दोक दिन चारि अंग । आनन तिलक विसाल भूषन सोभा संग ॥ अति सीतल मान सुभ अंग सरस ऐसे नृप वाजी चढ़त । भेजीति सकल खल दलन कें तिनको जस दिन दिन बढ़त ॥ २१ ॥ अधर एक श्रवन एक तीन श्रवन सासु के । हीन दंत अधिक दंत तीन अंड तासु के ॥ एक अंड युग्म जीभि दंड पीठि पेषिये । ताहि भूल के न लेहु वाजि जो विशेषिये ॥ २२ ॥ दोहा ॥ सालिहोत्र जो नकुल वर रच्यैा सकल सिर मैार । ताते जाने वाजिके गुन औगुन सब ठैार ॥ २३ ॥ मैं प्रबंध कीन्हैां कछू पाण्डव मत अनुसार । मोमति अति लघु जानि के लीजै सुकवि विचार ॥ २५ ॥ इति श्री सुकवि निधान कृतौ भाषा सालिहोत्र चतुर्दशोध्याय ॥ १४ संवत् १९०० ॥

Subject—प्रार्थना, राजवर्णन, अश्व की श्रेष्टता वर्णन । पृ० १—२ तक । अश्व के हींसने आदि के लक्षन तथा शुभ चिह्न—पृ० २—४ । भैांरी का चिह्न वर्णन । पृ० ५—६ । अश्व स्वरूप वर्णन, रर्मादि वर्णन, असाध्य रोग लक्षण, धातु परीक्षा । पृ० ७—१० । रुधिर का जांच वर्णन और आहारादि वर्णन पृ० ११—१३ । नासु विधि और पिंडाधिकार वर्णन और दवाई । पृ० १४—१७ घृत विधान, क्वाथ विधान, उदर कृमि, गैाड़ो वारुनो, आदि की दवा पृ० १८—२१ ।

No. 304(*b*). Śalihotra by Nidhāna Dīkshita. Substance—Country-made paper. Leaves—71. Size—7 × 4½ inches. Lines per page—12. Extent—583 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1916 or A. D. 1859. Place of deposit—Bhaiyā Mahipāla Siṁha, Raīsa, Payagpur, Post Office Payāgpur, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः । अथ सालिहोत्र लिष्यते । दोहा । पांडव पति कुल कमल रवि धरम तात धरमज्ञ । सत्य सिंधु धीरज धुरी जैत जुधिष्टर सज्ञ ॥ १ ॥ भीमसेन अर्जुन अनुज रुह सहदेव सुजान नकुल सकुल भूषन सकल तुरंग तंत्र गुरज्ञान ॥ २ ॥ ग्रंथ देषि सब मुनिन के कीन्हो नकुल विचार । सालिहोत्र संछेप सो रच्यो चारु लहिसार ॥ ३ ॥ अथ नराच छंद ॥ सपच्छ चारि हय सबै तुरंग चारु अंग सो । अकास पंथ में फिरै सो किन्नरादि संग सो ॥ सची सजोग वाहने विचारि के तहां कहैा मुनीस सालिहोत्र सो सबै भलो मतो लहैा ॥ ४ ॥ दोहा ॥ मुनि ताको दुरलभ नहीं स्वरग उरग नरलोक । रथ वाहन कीन्हे तुरी । चले वेगि दिन क्षेक ॥ नेक न डोलै चलत हू दसन दीह को साल जाहि देषि छोभित सदा एरावत दिकपाल ॥ ६ ॥ लहि सासन सुरराज को वाजी किए विपक्ष । मुनि तिन्ह को वरनन कियो दोष अदोष अलक्ष ॥ ७ ॥

End—छंद हीरा ॥ अधर एक श्रवन एक तीनि श्रवन जासुके हीन दंत अधिक दंत तीनि अंड तासुके । एक अंड जुग्म जोभ दंड पीठि पेषिये । ताहि भूलि के न लेहु वाजि जो विसेषिये । दोहा ॥ सालिहोत्र जो नकुल वर रच्यैा सकल सिर मैार । ताते जाने वाजिके गुन अेागुन सब ठैार ॥ याको मनो विचारि के कीन्हो सबै प्रमान । सालिहोत्र पूरन रच्यो दीक्षित सुकवि निधान ॥ मैं प्रबंध कीन्हो कछू पंडव मत अनुसारि । सो मति अति लघु जानवी लीजो सुकवि विचारि ॥ इति श्री नकुल मत भाषा सालिहोत्र नाम चतुर्थ दसोध्यायः इति श्री सालिहोत्र सम्पूर्णम् शुभ मस्तु अश्विनि मासे कृष्णपक्षे अकादस्यां तिथैा शुक्रवासरे संवत १९१६ शाके १७८१ सन् १२६७ श्रीराम श्रीराम ॥

No. 305. Bhāgvata Daśama skandha by Nihāladāsa of Mirzāpur. Substance—Country-made paper. Leaves—241. Size—13 × 9½ inches. Lines per page—15. Extent—9,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Gurumukhī. Date of manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—Mahanta Rādhākrishna, Baḍī Saṅgat, Bahrāich.

Beginning—रामजी ॥ रामजी सहाइ ॥ ॐ सति गुरु प्रसाद ॥ रामजी सहाइ ॥ रामजी ॥ अथ श्री भागवत दशमस्कंध लिष्यते ॥ दोहरा ॥ दो मत घट मे परसपर बोलत एक समान । एक गावत गुन श्याम के एक बरजे सुरज्ञान ॥ सुनहु सखी मत जस कहै चुपकरि जाहुन बोल । निपट दीन तू दुबरी वह प्रभु वड़े अतोल ॥ कौन कोट मतहोन तूं छिन छिन भूलनहार सेस न पावैं पार को जाके वदन हजार ॥ चारवेद ब्रह्मा रटे थक्यो न पायो अन्त । और विवेकी थक परे अति अपार भगवंत ॥ सागर ते चोटी कहै केहि विधि उतरूं पार । अति असंख लहरैं उठ भूले प्रवल बयारि ॥ तूं चोटी हरि जस अमिट किनूं न पायो पार । जप निस दिन हरनाम को यहि विधि हिरदै धार ॥ दूजो मत बोलो तब सुनो सखी एक बात । रहै न हरिजस कहुंगो हृदै न प्रेम समात ॥

End—दान देउ जग साजन हार । तुम सो तन वढ़ै पियार । जग की संगति ते छूटि काय । कृपा करो हे केशोराय । निपट चरन की देहु निवास । नित पग पूजै तुम्हरो दास ॥ पूजै सदा वनाय वनाय । गावै पढ़ै न नेक अघाय ॥ दृष्टि अगोचर होउ न श्याम । पूरन करो हमारो काम । अन्तरजामी जो कर करतार । मानहुं सेवक करी पुकार । ऐसो कृपा कृपानिधि करो । सबै बात तन मन ते हरौ ॥ अंतर बाहिर तुमहीं बसौ । अंत समय तुम हमसें रसौ ॥ जै जै जै करुणा भंडार । जन निहाल पग पर बलिहार ॥ १९१ ॥ इति श्री भागवते दशमस्कंधे महापुराणे नवे अध्याय सम्पूर्णम् समाप्तम सम्वत १९०० दसम लिखी साहब दास ने ॥

Subject—भागवत दशमस्कंध का भाषानुवाद ।

No. 306. Śāntarasa Vedānta by Nipaṭa Nirañjana. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—14 × 7 inches. Lines per page—11. Extent—350 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhakūra Naunihāla Siṁha, Kānthā, Unāo.

Beginning—अथ निपट निरंजन को ग्रंथ लिष्यते शान्तरस वेदान्त ॥ श्री गणेशायनमः ॥ श्री सरस्वतैनमः सवैया ॥ जे उपजे ते विचारे परज्ञान ह्वै परज्ञा निरधार समानो । पै प्रज्ञान भयो प्रज्ञानो महा प्रज्ञान सु प्रज्ञान जानो ॥ ज्ञान निपट्ट निरंजन ज्ञानी न ज्ञान घने परज्ञान की वानी ॥ सो सरवज्ञ न सरवज्ञ सनी विज्ञान मोले तो विलै विज्ञानी ॥ १ ॥ मनहरन छंद ॥ मनन नमन मनोरथ की न उतपन मन गत नाहीं उन मन मनसा दुरी ॥ वाचा को न लेस वाच्यारथ

के न परवेस वचन के बोध पै न वाचकता है पुरो। निपट निरंजन सुमैान है मैानी कोऊ महामुनि नाहिन मुनि सरता का पुरो ॥

बुधि के गनेस सुधि लेवे कों विधाता जैसें चातुरो कैावा वानी थंभन अफीम सो। जोग काजें रुद्र औ वियोग काजें रामचन्द्र भोग कें कन्हैया सब रोगन के नीम सो ॥ निपट निरंजन ए विजया विज्ञान दाने वलिमान लेवे के अतोम सो ध्यान लागिवे को ध्रुव जागिवे को गोरख ज्यों सोइवे को कुंभकरन भोजन को भीम सो ९४ ॥ तुमने पड़ोछे देव तो ताखानो नहिं वूड़िये तोशू तुम्हे तरसो। अपराध अवश्य धरै अमने अपराध विना अभया फरसो ॥ मलिनाइहि शेतैा निपट्ट निरंजन ठाकुरताई यांतो ठरशों। प्रथमैं कि—

Subject—ज्ञान की विशेषता, संसार की असारता, आत्मनिर्भरता वर्णन—पृ० १—४ तक। मनुष्य जन्म की महत्ता, ईश्वर की निरंजनता, मन की चंचलता, देह धर्म, भोग की निस्सारता वर्णन पृ० ५—१४। आत्मा ओर परमात्मा की एकता ईश्वर की सर्व व्यापकता, संसार की माया। संस्कृत ग्रंथों की कठिनता, ज्ञान की महत्ता वर्णन—१४-२४। संसार से छूटने का उपाय ओर विजय की प्रशंसा, पृ० २५—२७ तक।

No. 307(*a*). Jagat Vinōda by Padamākara. Substance—Country-made paper. Leaves—66. Size—9 × 6 inches. Lines per page—40. Extent—1,980 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṁvat 1921 or A.D. 1864. Place of deposit—Rājā Ramanāthabaksha Siṁha Pustakālaya, Parseni Rāja, Post Office Parseni, District Sītāpur.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ जगतविनोद लिष्यते दोहा ॥ सिद्धि सदन सुन्दर वदन नंद नदन मुद मूल ॥ रसिक सिरोमणि सांवरे सदा रहैा अनुकूल ॥ जय जय सक्ति सिला मई जय जय गढ़ आमेर। जय जय पुर सुर पुर सहस जो जाहिर चहुंफेर ॥ जय जग जाहिर जगतपति जगत सिंह नरनाह। श्री प्रताप नंदनवली। रविवंसो कछवाह ॥ जगत सिंह नरनाह के समुझि सवन के ईस। कवि पदमाकर देत है कवित बनाइ असीस ॥ कवित्त ॥ छत्रिन के छत्र छत्र धारिन के छत्रपति छाजत छटान छिति छेम के छवैया है। ॥ कहै पदमाकर प्रभा के प्रभाकर दया के दरिआव हिन्दे हद के रषैआ है। ॥ जागत जगत सिंह साहिवो सवाई सो श्री प्रताप नृप नंद कुलचंद रघुरैया है। ॥ आछे रहैा राज राज राजन के महाराज कच्छ कुल कलस हमारे तैा कन्हैया है। ॥

End—प्रथ सांत रस के दोहा ॥ सुरस सांत निरवेद है जाको थाई भाव । सत संगत गुरु तपोवन मृतक समान विभाव ॥ प्रथम रोमांचादिक तहां भाषत कवि अनुभाव । धृति मति हरषादिक कहे सुभ संचारी भाव ॥ सुद्ध सुकुल रंग देवता नारायन है जान । ताको कहत उदाहरन सुनहु सुमति दै कान ॥ दंडक सवैया ॥ बैठी सदा सत संगहि मैं विष मानि विषै रस कोनी सदाहीं त्यौं पदुमाकर झूठ जितो जग जानि सुज्ञानहि के अवगाहीं । नाक की नोक मैं दोठि दिये नित चाहै न चोज कहूं चित चाहीं संतत संत सिरोमनि है धन है धन वे जन वे परवाहो ॥ दोहा ॥ नभ वितान रवि ससि दिया फल भष सलिल प्रवाह ॥ अवनि सेज पंखा पवन अब न कछू परवाह ॥ अवहित तै विरकत रहत कछु न दोस के त्रास । विहित करत सुनि हित समुझि सिसु हित जे हरिदास ॥ जगत सिह नृप हुकुम ते पदुमाकर लहि मोद रसिकन के वस करन को कीन्हें जगत विनोद ॥ इति श्री कूर्म वंसावतंस श्री मन्महाराजाधिराज राजा राजइन्द्र श्री सवाई महाराज जगतसिंह ग्याम मथुरा स्थान मोहनलाल भट्टात्मज कवि पदमाकर विरचिते जगत विनोद नामक काव्य सम्पूर्णम् सुभमस्तु लेषक गंगासिंह वैस परगने वैसवारे के औड़िया खेड़ा ग्राम संवत १९३१ तिथौ अठयाम रविवासरे फागुन मासे शुक्ल पक्षे ॥

Subject—रस निरूपण तथा नायक नायिका भेद उदाहरण सहित ।

No. 307(*b*). Jagat Vinoda by Padamākāra. Substance—Country-made paper. Leaves—78. Size—7½ × 6 inches. Lines per page—28. Extent—1,065 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1940 or A. D. 1883. Place of deposit—Bābū Nārāyaṇadayāla, Rāe Barelī.

Note—Details as in no. 307(*a*).

No. 307(*c*). Jagat Vinōda by Padamākara. Substance—Country-made paper. Leaves—27. Size—9 × 6 inches. Lines per page—24. Extent—1,000 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhingā Rāja, Bahrāich.

Note—Details as in no. 307(*a*).

No. 307(*d*). Jagat Vinoda by Padamākara. Substance—Country-made paper. Leaves—124. Size—10½ × 6½ inches.

Lines per page—19. Extent—1,326 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāma Nātha Lāla (Sumana), Kāśī.

Note—Details as in no. 307(*a*).

No. 307(*e*). Padamābharaṇa by Padamākara. Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—10 × 6 inches. Lines per page 44. Extent—220 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṁvat 1935 or A. D. 1878. Place of deposit—Ṭhākura Rāma Siṁha, Village Rāma Kola, Post Office Sītāpur, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पद्माभरण लिष्यते ॥ राधा राधावर सुमिरि देषि कवितन को पंथ। कवि पदमाकर करत हैं पद्माभरण सुग्रंथ ॥ शब्दहुं ते कहुं अर्थते कहुं दुहुं तै उर आनि। अभिप्राइ जिहि भांति जहं अलंकार सो मानि ॥ अलंकार इक थलहि मैं समुझि परै जु अनेक। अभिप्राय कवि को जहां वहीं मुष्यगन एक ॥ जा विधि एकै महलमें वहु मंदिर इक मान जो नृप के मन में रुचै गनियत वहै प्रधान ॥ वरनन कोजतु जाहि को सु उपमेय चितु लाइ। जाको समता दीजिए सो उपमान गनाइ ॥ सम अर्थहि जे पद कहत ते सब वाचक देषि। इक सोवर्ण अवर्ण मैं धर्म धर्म सो लेषि ॥ अथ उपमालंकार ॥ उपमेयहु उपमान को इक सम धरमु जु होइ। उपमा वाचक पद मिलै उपमा कहिये सोइ ॥ उपमा नरुवाचक धरम उपमेयहु जो कोइ। ये चारिहु पर सिद्धि जहं पूरन उपमा सोइ ॥ सुभग सुधाधर तुल्य मुष मधुर सुधा से वयन। कुच कठोर श्रीफल सदृस अरुण कमल से नयन ॥

End—अर्थालंकार को संसृष्ट॥ वाकै नामहि को सुनत होत सैात मुष मंद ॥ चक्र चकोर कीजै सुषो लषि राधा मुष चंद ॥ त्रिविधि संकर ॥ अलि ये उड़गन अगिन कन अंक धूम अवधार मानो आवत दहन ससि लै निज संग दवार ॥ विहारी ॥ लष वढ़ई वल करि थके करै न कुवत कुठार। आल वाल उर झालरी षरी प्रेम तरु डार ॥ संदेहुत संकर भाषा भरणे ॥ यों भूलत कोऊ कछू राषैा हिये समान। भजैा मधुप तजि पद मनहि जान होत गत भान ॥ विहारी यथा ॥ कहो हमारी चित धरैा तजैा लाल सब वात नैनन को सुषदेत यह इंदु विवं सरसात सम प्रधान संकर भाषाभरणे ॥ विमल प्रभा निज ससि तजी मनैा वारुनी पाय यह कारी निसि अंक मिस राषी अंक लगाई ॥ पुनः

यथा विहारी ॥ उर लीन्हे अति चटपटो सुनि मुरली धुनि धाइ। हों हुलसी निकसी सुतौ गयो हूलसी लाइ ॥ इति समृष्टि संकर। राधा माधव कृपा लहि लषि सुकविन के पंथ कवि पदमाकर ने कियो पदुमाभरण सुग्रंथ ॥ इति श्री कवि पदुमाकर विरचितायां पदुमाभरण संपूर्णम् भाद्र मासे शुक्ल पक्षे तिथौ षष्टम्यांम सोमवासरे श्री संवत १९३५ श्री ठाकुर हेमंचल सिंह लिखो दरवारी लाल कायस्थ चुनहट वाले ॥

Subject—काव्य अलंकार।

No. 308. Upākhyāna Vīveka by Pahalawānadāsa of Bhikhīpur. Substance—New paper. Leaves—25. Size— × inches. Lines per page—12. Extent—300 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Persian. Place of deposit—Munshī Bindeshwarī Prasāda, clerk, Registration Department, Bārābankī.

Beginning—का तजि भजन श्रोर सोइ जाना। द्विज भेंगे कूकुर सन्माना ॥ भीति पूजि यह दुनियां मरी। छूंछ कुआ पत कौरन भरी ॥ राम छांड़ि कहु केहि की सुधरी। चलै कितक दिन जलकी छुपरी ॥ जो आवा सो वेगई चला। भजन विना सुरति कहत न भला ॥ नरतन पाइ ज्ञान नहि पाई। पाथर पड़ा जो मूड़ मुड़ाई ॥ पांच पचीस रात दिन खटका। सरग ते गिरा खजूरन अटका। चेत चेतका गाफ़िल अरे। मैं मैं कहत देश सब मरे ॥ अस जन जानि झूठ कछु अहा। सत्य वचन सतगुरु कर कहा ॥ जन्म पदारथ वादै खोई। वहता पानी हाथ न धोई ॥

दोहा—सत संगत में बैठ जा। होइ जैहे मन सोझ।
सात पांच की लाकड़ी। एक जनै का वोझ ॥

End—आदि अंत रामहिं ते ख़ैर। वसि दरियाव मगर ते वैर ॥

दोहा—अबहूं झूठा लीन्ह्यो कर। आगे अब है गाढ़ ॥
बुढ़ि है कैान परोजन। चोर भुसैले ठाढ़ ॥

सत गुरु सिद्धरा कर वांधा जो अव सत आन। पहलवान दास जाने है सत गुरु परम सुजान ॥ नाम अनन्त अनन्त गुन, कीन्हों सोमति अनुहार। श्रोता वक्ता सजन जन, चोरै लूटन हार ॥ गुरु प्रसाद गुरु कीरत गुन, गुरु सुमिरन गुरु ध्यान। पहलवान दास गुरु वन्दना करे। सदा रहे कल्यान ॥

× × × × × ×

Subject—(१) पृ० १—२५ तक—नाम माहात्म्य, भजन करने का आदेश, भजन न करने वालों को निन्दा, भजन न करने से मनुष्य को हानि। भजन संबंधो अन्य उपदेश।

No. 309. Śrīpāla-charitra by Paramalla of Agrā. Substance—Country-made paper. Leaves—350. Size—11 × 3½ inches. Lines per page—11. Extent—3,146 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1651 or A. D. 1594. Date of manuscript—Samvat 1926 or A. D. 1869. Place of deposit—Śri Jaina Mandira (Baḍā), Bārābankī (Oudh).

Beginning—श्रों नमः सिद्धेभ्यो ॥ श्रों श्री जिनायनमः ॥ श्रों श्री गणाधिपतेनमः ॥ अथ श्रीपाल चरित्र भाषा लिष्यते ॥ चैापाई ॥ प्रथमहि लीजै श्रोंमकार ॥ जो भव दुःख विनासन हार ॥ सिद्धि चक्र विधि केवल ऋद्धि ॥ गुन अनंत जाके फल सिद्धि ॥ १ ॥ प्रणवों परम सिद्धि गुरु सोइ ॥ भव्य संग जो मंगल होइ ॥ सिद्धि पुरी जाको सुभ थान ॥ सिद्धि पुरी आनन्द निधान ॥ २ ॥ प्रगट ज्योति त्रिभुवन में आहि ॥ अलष देव कोई लखै न ताहि ॥ अंजन रहित निरंजन मान। होन बुद्धि को सकै बखानि ॥ ३ ॥ जय जिनंद आदि सुरदेव। सुन नर करत पद पंकज सेव ॥ जै अजिते सुरगुनहि निधान ॥ मान रहित मिथ्या तम भान ॥४॥ जय जिन संभव हरन विकार ॥ सुमिरत अभय दान दातार ॥ जय अभिनंदन आदन वीर ॥ गुण गरिष्ट भव भंजन भीर ॥ ५ ॥

End—श्लोक—उग्रं गोप गिरं च दुर्गम गढ़े रत्ना वरंर्भूषितं ॥ जं धोरं कृत मध्वरं मद गलं पाषान ऐरावतं ॥ तन्मध्ये श्रीमान सिंघधि पतं भूलोक संवछितं ॥ तं द्राज्यं सुरनाथ तुल्य गर्वितं तत्केन सं वसयते ॥ ३३ ॥ विद्वन्मंडल पूजिता च विसदो नामेन चन्द्र नयं। तत्पुत्रो गुरु राम दासं विपलो भोक्तापि भोग्यं सदा ॥ तत्सुनो कुल दीपकस्तु प्रगटे नाम्नास कर्णो भिया ॥ तत्पुत्रो परि मल्ल धर्म सदनो ग्रंथं इदं क्रोयते ॥ ३४ ॥ चैापाई ॥ गोवर गुरु गिरि उत्तम थान ॥ सूर वीरता राजा मान। तासुत है चंदन चैाधारी ॥ कोरति सब जग में विस्तारी ॥ ३५ ॥ जाति वरैया गुन गंभीर ॥ अति प्रताप कुल रंजन धोर ॥ ता सुत राम दास परवान ता सुत कुल मंडल गंभीर ॥ वसै आगरे परमल धोर ॥ ताको बुद्धि न उन आन ॥ तिन कोनो चैापाई वखान ॥ ३७ ॥ होइ अशुद्ध जहां पद होन ॥ ताहि संभारो कवि मति लोन ॥ बारंबार जपो करजोरी ॥ बुधजन मोहि देहु मति खोरी ॥ ३८ ॥

इति श्रीपाल चरित्र समाप्तम् श्री संवत् १९२५ सावन शुक्ल १४ वार रवि दिने लिषितं ॥ लाला जी के पुत्र हींगलाल के प्रति से उतारी धनपतिराइ श्रावक गोपालचंद के पुत्र पैंतपुर के अपने पठन के हेत संवत् विक्रमादित्ये १९२६ वैसाख मासे कृष्ण पक्षे तिथौ ॥

Subject—पृ० १—६ तक—पंच परमेष्टी की स्तुति (अरहंत सिध, आचार्य्य, उपाध्याय और सर्व साधु की स्तुति) (२) पृ० ६—२६ तक—ग्रंथारंभ, सरस्वती वन्दना, उसके गुणानुवाद के साथ। अति सूक्ष्म (ग्रंथ विवर्णित विषय संबंधी) सूची, ग्रंथ निर्माणकालः—संवत् सोलह से उनचास मास असाढयो मासो भास। वर्षा ऋितु की कड़ै वढ़ाइ। दिवस अढ़ाई पहुंचो आइ॥ पक्ष उजारें आठैं जानि। शुक्रवार आगे परवानि॥ कवि परमल्ल शुद्ध कर चित्त। आरंभ्यैा श्रीपाल चरित्त॥ राजा का वंश वर्णन :—

वबर वादसाह है भयो॥ तासुत साह हिमांयूं भयैा॥ तासुत अकबर शाह प्रवीन॥ सो तपु तप्यो मनहुं सो भोन॥ × × × × ताके राज कथा यह करी॥ कवि परमल्ल कथा विस्तरी॥ भरत क्षेत्र का वर्णन, राजा अरिमर्दन तथा रानी कुंदप्रभा का वर्णन। श्रीपाल के जन्म का वर्णन। रानी को स्वप्न दिखलाई पड़ना, राजा का फल स्वरूप यशस्वी पुत्र होने का कथन, गर्भ की दशा का वर्णन। वालकोत्पत्ति आनन्द प्रकाश ब्राह्मणादि वेद पठन पाठन वर्णन, दान वर्णन। आठ वर्ष की अवस्था में उसे गुरु के पास भेजे जाने का वर्णन। अनेक विद्या पढ़ जाने का कथन। जल में तैरना सीखना। इस वालक का नाम निमितो द्वारा श्रीपाल रखा गया, उसी को राजतिलक प्राप्त होना। राजा का देहान्त। पुत्र का माता को समझाना, श्रीपाल का अपने पराक्रम से चक्रवर्ती होना।

(३) पृ० २७—३७ तक—पूर्व संस्कार के कारण राजा को कुष्ट होना, उसके सहवासियों की भी यही दुर्दशा होना, दुर्गंध का सब ओर फैलना, नगर वासियों का दुःख, श्रीपाल का वीरदमन को राज्य देकर उद्यान को चला जाना, सात सो साथियों का जो कुष्टी थे, साथ जाना—प्रथम सन्धि समाप्त हुई।

(४) पृ० ३८—५९ तक—मालव देशान्तरगत उज्जैन नगरी के राजा पहुपाल की पुत्री मैना सुन्दरी का वर्णन—राजा की दो पुत्रियों का वर्णन, छोटी मैना सुन्दरी का गुणज्ञा होना, वड़ी सुर सुन्दरी का शिवगुरु (कुगुरु) के साथ विद्याध्यन को जाना, छोटी का जैन चैत्यालय जाना, जैन मुनि से उसका अठारहों विद्या पढ़ जाना, कैाशाम्बीपुर के राजा के साथ उसकी बड़ी बेटी का

विवाह होना, छोटी बेटी से राजा का विवाह संबंध में वार्तालाप, मैना सुन्दरी का लज्जित होना, पिता के साथ कर्म के संबंध में विवाद होना, राजा का क्रोधित होना, पुत्री को निकाल देना, पुरुजन—जिन्होने उसे देखा—के मुख से उसका शृंगार वर्णन, कन्या का अपनी माता के पास पहुंचना, जैन धर्मानुसार सम्पूर्ण नित्य कृत्य करना। द्वितीय संधि। समाप्त

(५) पृ० ६०—९१ तक—राजा का शिकार को जंगल में जाना, कुष्टी श्रीपाल से उसकी भेंट, उसको मित्र मान मिलना, मंत्रियों की घृणा, उससे राजा का पूछना कि मांगे। क्या मांगते हे।? उसका पुत्री मांगना, राजा का प्रथम क्रोधित होना परन्तु फिर रज़ामन्द हो जाना, मंत्रियों का विरोध, राजा का कर्म परीक्षा करना और लड़की से पुनः पूछना, उसका कर्म पर दृढ़ विश्वास दिखाना, राजा का उसी कुष्टी के साथ विवाह करना, विधिवत विवाह होना, लोगों का दिल्लगी करना, राजा का हठ पर मनही मन लज्जित होना, धन धान्य देकर विदा करना, श्रीपाल का पत्नी से पृथक रहने का कथन, उसका निषेध और पति के सौंदर्य का वर्णन करना, जन्म पर्य्यन्त सेवा करने का वचन देना, कर्म पर दोषारोपण और उसकी प्रवलता का कथन, दोनो का दिव्य वस्त्र धारण कर जिनराज की पूजा करके पति के कुष्ट दूर होने की प्रार्थना, अरहंत की पूजा विधिवत करने पर उसका कुष्ट दूर होना, भूप का मकरध्वज के समान रूप हो जाना—तृतीय संधि समाप्त हुई।

(६) पृ० ९३—१२६ तक—श्रीपाल की माता का विकल चित्त होकर जिनेन्द्र से पुत्र संबंधी—विनीत भाव से उन्हें पूज कर प्रश्न करना, जिनेन्द्र का हाल कथन करना, माता का जाकर अपने पुत्र के महल को देख कर किसी से पूछना उससे संपूर्ण समाचार श्रवण कर वहां पहुंचना, पुत्र और माता के तथा सास और वहू के मिलन का अनुपम कथन, पुत्री से उसके माता पिता के मिलने का वर्णन, उससे पूर्व भली भांति निश्चित करके उनकी और भी सेवा करना, धन धान्य देना, जिस प्रकार वह अच्छा हुआ उसका सम्पूर्ण समाचार जानना, एक दिन श्रीपाल का वहां से कहीं जाने का विचार करना, उसकी स्त्री की आपत्ति, माता का प्रलाप, अंत में दोनो का संतोष, उसका समय निर्दिष्ट कर के उसी समय आ जाने का वचन, मार्ग के संबंध में सजग रहने का माता द्वारा उपदेश, श्रीपाल का गमन, विद्याधर से उसका मिलाप, विद्याधर से मंत्र न सिद्ध होता था, उसका उपाय श्रीपाल द्वारा वताया जाना, इस उपकार के प्रत्युपकार स्वरूप विद्याधर का श्रीपाल को जलतारिणी और शत्रु निवारिणी दो विद्यायें देना। चतुर्थ संधि समाप्त।

(७) पृ० १२७—१५६ तक—श्रीपाल का चलकर एक निर्जन स्थान में पहुंचना। कौशाम्बी के धवल सेठ का जहाज लाद कर चलना और एक स्थान पर अटक जाना, सेठ का शहर में जाकर विद्वान से उसका कारण पूछना, उसका कथन कि एक बलि लेगा तब चलेगा, राजा से सेठ का बलि मांगना, राजा द्वारा बलि की खोज को सिपाहियों का जाना, श्रीपाल का पकड़ा जाना, सेठ तथा श्रीपाल का वार्तालाप, श्रीपाल के छूते ही जहाज का चल देना और सेठ का उनका बड़ा सम्मान कर अपने द्रव्य का दशवां अंश देकर पुत्रवत उनको मानना और साथ ले चलना। धवल सेठ को मार्ग में चोरों का मिलना और उनका सेठ जी को पकड़ लेना, श्रीपाल का चोरों को बांधना और अपने धर्म पिता से दंड विधान पूछना, उनका दया करके उन्हें छुड़ा देना चोरों द्वारा श्रीपाल को सात जहाज रत्नों का देना और उसका उपकार मानना। पंचमसंधि समाप्त हुई।

(८) पृ० १५७ से २५५ तक—हंसद्वीप का वर्णन। (वहां के राजा) कनककेतु की स्त्री कंचन माता के दो पुत्र चित्र विचित्र तथा रैन मंजूषा नाम तीसरी पुत्री का वर्णन। इस पुत्री के संबंध में राजा का मुनि से प्रश्न कि मेरी पुत्री का विवाह किससे होगा, ज्ञान द्वीप मुनि का कथन कि जो सहस्र कूटन चैत्यालय के फाटक को हाथ से खोल देगा उसी के साथ होगा। कालान्तर में श्रीपाल का वहां पहुंच कर उस कृत्य को कर राजकन्या का पाना, रैन मंजूषा को लेकर श्रीपाल का अपने सेठ के साथ चल देना, सेठ का रैन मंजूषा पर मोहित होकर श्रीपाल को समुद्र में गिरा देना और रैन मंजूषा को तरह तरह के प्रलोभन देकर वशीभूत करने का प्रयत्न करना। रैन मंजूषा के प्रस्ताव अस्वीकार करने पर बलात्कार की चेष्टा, रैन मंजूषा का ईश्वर से प्रार्थना करना, चार देवियों का प्रगट होकर सेठ को दंड देना, अन्य महाजनों की प्रार्थना पर रैन मंजूषा का धवल सेठ को छुड़ा देना, श्रीपाल का तैरते हुए कुंकुम द्वीप में पहुंचना, वहां के राजा की पुत्री गुणमाला के साथ—जिसके संबंध में मुनि ने बताया था कि जो पुरुष समुद्र तैर कर आवेगा उसी के साथ तेरी पुत्री का विवाह होगा—विवाह होना। सेठ का भी उसी नगर में पहुंचना राजा को भेंट देने को जाना, वहां पर श्रीपाल को देखकर चिन्तित होना, श्रीपाल का कुछ न कहना। धवल सेठ का भांड़ों द्वारा तमाशा करा के उसे भांड़ों का लड़का सिद्ध कर के मरवाने की आज्ञा दिलवाना गुणमाता का अपने पति से वास्तविक समाचार जानने की प्रार्थना, उसका उसके जहाज पर भेज कर इस संबंध में रैनमंजूषा से वार्तालाप करने को कहना, रैनमंजूषा के पास जहाज पर पहुंच कर गुणमाता का शुद्ध समाचार जानने के लिये अपने

पिता के पास ले आना, राजा का शुद्ध समाचार जान कर उसको छोड़ना, सेठ को राजा का बुलाना और फांसी की आज्ञा देना। श्रीपाल का दया कर उसको छुड़ा देना, तिस पर भी उसका हृदय फट कर मर जाना और श्रीपाल का सेठानी को समझाना, सेठानी का कहना कि उस पापात्मा के देहावसान होना ठीक ही हुआ। इस पर सेठानी को उसके घर पहुंचा देना।

(९) पृ० २५६—८९ तक—मुनिराज की भविष्यवाणी के अनुसार श्रीपाल का विवाह कुंडलपुर के राजा मकरकेतु की पुत्री चित्ररेखा के साथ होना। तत्पश्चात् कंचनपुर के राजा वज्रसेन की (९००) पुत्रियों से उनका विवाह होना। कुंकुमपट के राजा यशसेन की सोरह सौ पुत्रियों के साथ उनका विवाह होना—इनमें प्रधान आठ को दी हुई ग्रंथ में प्रस्तुत आठ प्रश्नों के पूर्ण करने पर विवाह सम्बन्ध होना—अन्य बहुत सी स्त्रियों से विवाह करके कुंकुमद्वीप में लौट कर आना। अपनी सम्पूर्ण स्त्रियों को सब स्थानों से लेकर अपनी प्रथम स्त्री मैना सुंदरी से किये हुए वचन को पूर्ण करने के लिये उज्जैनी को लौटना, स्त्रियों को इस लिये मार्ग में छोड़ कर कि उनकी अवधि का अंतिम दिन है यदि वे न पहुंचेंगे तो उनकी पूर्व स्त्री तपस्विनी हो जायगी अकेले ही घर पर रात्रि के अन्तिम पहर में पहुंचना और अपनी स्त्री का माता से दीक्षा करा आज्ञा मांगते हुए पाना। इनके प्रबोध पर और पहुंचने की प्रसन्नता पर उसका रुक जाना और प्रातः सब स्त्रियों को बुला लेना और मैना सुंदरी को सब से प्रथम पटरानी पद देना। भोग विलास करना।

(१०) मैना सुंदरी का अपने पति से कथन कि आप मेरे पिता को कंधे पर कुल्हाड़ी तथा कंबल ओढ़ कर अत्यंत दीन दशा से बुलाइये जिससे वह कर्म के फल को समझे और अपने आग्रह को छोड़े। इस पर उसके पति का विरोध, पत्नी का पुनः धर्म की दृष्टि से ऐसा करने का अनुरोध, इस बात को अबकी बार मान कर राजा के पास उसी प्राकर आने की आज्ञा दूत के द्वारा भिजवाना और उसका भयभीत होकर उसी दशा में आना। दम्पति का उसके पैरों पर गिर कर कर्म का प्रभाव कथन करना। राजा का लज्जित होना, आशिर्वाद देकर और कर्म के प्रभाव को समझ कर राजा का अपने नगर को लौटना। जैन धर्म को स्वीकार करना, श्रीपाल का सुख भोग करना—अष्टम प्रभाव समाप्त

(११) पृ० २९०—३११ श्रीपाल का आदर पूर्वक मैना सुन्दरी के पिता द्वारा अपनी राजधानी में बुला ले जाना, प्रजा की ओर से उसका हार्दिक स्वागत, कुछ दिवस पश्चात् उसका राजा से अपनी जन्म भूमि तथा पैतृक राज्य के उपयोग की अभिलाषा प्रकट करना, राजा का कथन कि आपको यदि राज्य

को ही इच्छा है तो मेरे राज्य को लीजिये और मुझे अपनी सेवा की आज्ञा दीजिये। जामात्र का श्वसुर को धन्यवाद देकर उचित कारण बताते हुए अपने प्रस्ताव की स्वीकृति के लिये पुनः आग्रह करना। प्रस्ताव का स्वीकृत होना, श्रीपाल का गमन, उसकी सेना की बड़ाई, कई राजाओं को वशीभूत करने के पश्चात् उसका चम्पावती में पहुंच नगर को घेर लेना, नगर निवासियों की चिन्ता, दूत का भेजा जाना और उसका राजा वीर दमन को समझाना, उसका न मानना, दूत द्वारा श्रीपाल के वैभव का कथन, उसको श्रवण कर वीरपाल का क्रोध, युद्धारंभ, दोनो ओर के योद्धाओं का विध्वंस, मंत्रियों की सम्मति से युगल नृपतियों का मल्ल युद्ध, श्रीपाल की विजय, वीर दमन का उसे राज्य सौंप कर स्वयं जैन धर्म को दीक्षा लेकर वन को चला जाना। नवम् प्रभाव समाप्त।

(१२) पृ० ३१२—३५० तक—श्रीपाल को राज्य व्यवस्था का वर्णन। उसकी स्त्री मैना मुन्दरी से एक पुत्र—जिसका नाम धन्यपाल रक्खा गया। इसके बारह सहस्र एक सौ आठ पुत्रों के होने का कथन। राजा का बहुत दिनो तक राज्य का आनन्द उठाना, प्रजा को सब भांति से सुखी रखते हुए राज काज निर्वाह करना, राजा द्वारा विद्याधर तथा वनदेव का सत्कार किया जाना, एक मुनीश्वर का आना, राजा द्वारा उसका सत्कार किया जाना, और उसका जप तपादि की प्रशंसा के साथ ही साथ कर्म की प्रधानता का कथन करना, राजा का आदर पूर्वक अपने पूर्व कर्मों के संबंध में यथा—मैं कुष्टी क्यों हुआ? पानी में क्यों डूबा, इत्यादि—कुछ प्रश्न करना, मुनि का उसके पूर्व जन्म का संपूर्ण समाचार और उसमें किये गये कर्मों के अनुसार दुःख सुख होने का वर्णन सकारण समझा दिया। राजा का दीक्षित होकर वन को जाना, पुत्र को राज्य देना, उसका अपने को असमर्थ बतलाने पर कुछ उपदेश देकर आज्ञा मानने के लिये वाध्य करना, उसका राज्य स्वीकार कर लेना, राजा का वन गमन, रानियों इत्यादि का भी दीक्षित होना।

(१३) मुनिराज से भेंट होना, राजा का उनसे उपदेश सुनने की अभिलाषा प्रकट करना, उनका उपदेश देना, उपवास, दान, इत्यादि की प्रशंसा करना, राजा का तप करना, श्रीपाल का केवल ज्ञान या मुक्ति को जाना। कवि का कुछ वर्णन। ग्रंथ समाप्तिः।

No. 310(*a*). Dadhilīlā by Parmānanda Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—7 × 4½ inches. Lines per page—22. Extent—55 Anushṭup Ślokās. Appear-

ance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Śiva Nārāyaṇa Lāla, District Rāe Bareli.

Beginning—ॐ ॥ श्री गणेशाय नमोनमः ॥ अथ दधिलीला लीषते ॥

वीषभान सुता सुकुंमारी । दधी बेचन चली व्रज नारी ॥
जह जुड कदम की छाही । बैठे प्रभु तेही मगु माही ॥
सषी गेंदुरी षेलत आई । तव कीस्न जो मुरली बजाई ॥
दधी बेचन चली ब्रजवाला । जहां बीच मीले नंद के लाला ॥
दे दे री गुजरी दधी दाना । गही अंचल रोके ही ना ॥

End—चौपाई ॥ जब देन लगी हसी दाना । तब अती इतरानेउ कान्हा ॥
प्रभु मवन साधि के बैठेये । जोगी मुनी जंगम जैसे ॥

केतीक जुगती अनेक मनावै । प्रभु नेक न चीत डोलावै
तव राधे नीकट चली आई । सुनी लीजै वीनय गोसाई ॥
हम दासी अइनी तुम्हारी । तुम चरन सरन वनवारी ॥
धनी जीवन जनम हमारो । जब पावा दरस तुम्हारो ॥
यकी बैठी वयारी डोलावै । यक बीरी षेली षोआवै ॥
जो चाहीये सो वरु लीजै । प्रभु कीपा आपनी कीजै ॥
हरी देषो गुजरी रती मानी । हंसी बोले सारंग पानी ॥

छंद ॥ हंसी बोले सारंग पानी सुंदरी मानी रती रसा भै रही ।
करी केली कुंज कलोल कान्हा सहस रंग रस भरी रही ॥
कर्त क्रीड़ा मदन मोहन कवन लोचन राजही ।
दास परमानंद सोभा सुनत कलामल भाजही ॥ इती श्री

दधीलीला संपुरणं ॥ समाप्तम् ॥ श्री क्रीष्णु सहाई लीला ।

Subject—श्री कृष्णजी को दधिलीला ।

No. 310(*b*). Dānalīlā by Dāsa Parmānanda. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—6 × 4 inches. Lines per page—18. Extent—110 Anushṭup Ślokās. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1899 or A. D. 1842. Place of deposit—Paṇḍita Śatrughnajī, Village Sikandarpur, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ दानलीला लिष्यते ॥ दोहा ॥ एक समै राधे जी बैठी सषियन साथ । बेढ़ा प्रेम उमगोहियो सुमिरि नाम ब्रजनाथ चलो सषी तहं जाइये जहं बैठे ब्रजराज गोरस बेचन प्रेम रस एक पंथ दे। काज ॥ चै।० करि मंजन श्रैार श्रंगारा । पहिरे मुक्तन कौ हारा ॥ छवि बेंदो भाल विराजै दसन दुति दामिनि राजै ॥ मटुकी दधि से भरवाई । सषियां संग लीन लेवाई ॥

No. 311. Ushācharitra by Paraśu Rāma. Substance—Country-made paper. Leaves—114. Size—5 × 4 inches. Lines per page—10. Extent—962 Anushṭup Ślokās. Appearance—Old (letters spoiled by rain). Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1825 or A. D. 1768. Place of deposit—Paṇḍita Bhavānī Baksha, Village Ulārā, Post Office Musāphirakhānā, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—राम स्वस्ति श्री गणेशायनमः ॥ अथ लिषतं उषा चरित्र ॥ चैापाही ॥ कश्च कवल लोचन सुषकारी ॥ अवधि भूप ईसर अेातारी ॥ जाको नाम सुनत अघ जाहीं ॥ सो प्रभु वस सदा घट माहि ॥ घट घट वसै लषै नाहिं कोई । जल थल वसै सदा गोस्माईं ॥ जाको आदि अंत नहिं जानी ॥ पंडित पढ़त गुन गन वषानी ॥ प्रेम प्रीति निज सुष के दाता ॥ चहुंजुग येके कार विधाता ॥ दोहरा ॥ त्रभुवन पति नागर नवल ॥ जुगल कीसोर कोसोर । तिंहि की जुगत अपार है । कवि वरनुक वठो ॥

End—परसराम कि विनती जो श्रवण श्रुन लेह ॥ प्रभु दयाल कृपा करै प्रभु इतने फलेह ॥ इति श्री उषाचिरीत्र समापितं ॥ संपुरणं ॥ मिति मार्गसीर वदि ६ बुधवार लिषतं नंदन दास संवत् १८२५ ॥

Subject—(१) पृष्ठ १ से २ तक—वन्दन व कृष्ण महिमा । (२) पृष्ठ ३ से १४ तक-कृष्ण रुक्मिणी विवाह । अनरुद्ध जन्म, स्वप्न में १२ वर्ष की कन्या का देखना । नख शिख । वाणासुर की पुत्री उषा का श्रैार अनरुद्ध का वियोगावस्था में मनस्ताप, (३) पृ० १५ से ४० तक—चित्ररेखा का उषा को समझाना, अनेकों चित्र बनाना, अनरुद्ध को उषा का पहिचानना, सखी का कुंवर को लाने के लिये आज्ञा मांगना द्वारिका में अनेकों प्रयत्नों द्वारा भी प्रवेश न पाना, नारद मिलन, नारद का गोधूलि समय में प्रवेश करने के लिये कहना नगर में जाना दरवाजे पर सखी का मिलना चित्ररेखा की माया जिससे उसे कोई न देखे, कुंवर की विरह दशा, कुंवर से वार्तालाप, उनका साथ लाना, उषा से मिलाना, प्रेमी तथा प्रेयसी का प्रेम वार्तालाप । (४) पृ० ४१ से ६० तक—कृष्ण के यहां अनरुद्ध के

गायब हो जाने के कारण चिंता वाणसुर को रानी का सब हाल जान कर अपने पति के बताना, उषा का गृह घेरा जाना, अनरुद्ध का युद्ध करना, उन का नाग फांस फांसा जाना। (५) पृ० ६१ से पृ० ११४ तक—अनरुद्ध का राजा से अभिमान युक्त बातें कहना रानी का उसे कन्या देने के निमित्त राजा से प्रार्थना करना, नारद आगमन, अनरुद्ध का उनसे कृष्ण के लिये, संदेश भेजना दूतो का राजा के निकट संदेश ले जाना, दूत का कुंवर से मिलना, दूत का लैाट कर कृष्ण से सब वृत्तांत कहना, कृष्ण का क्रोध करना, दोनों दलों का युद्ध, हरहरि मिलाप, वाणसुर का कृष्णराम के निमंत्रित करना, वाणासुर के पुत्री का विदा करना, द्वारिकापुरी आना, बधाई।

No. 312(*a*). Rāma Kalevā by Parvata Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—48. Size—6 × 4 inches. Lines per page—22. Extent—660 Anushṭup Ślokās. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1916 or A. D. 1859. Place of deposit—Paṇḍita Gayā Prasāda, Village Naipālapur, Post Office Sītāpur, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः। अथ श्री रामकलेवा रहस्य लिष्यते॥ रागिनी काफी। सुनिये रहस सिया सुष पानि। प्रातकाल रवि उदित भए सति नैावा जनक पठायो। चारो कुंवर राइ दसरथ के तुरत वोलि ले आयो॥ आतुर नैावा गा जनवासे नृप दसरथ के ठाईं। चारिउ कुंवर महां कैासलवर चले कलेवा षाईं॥ सुनि नृप सषा अनुज जुत रामहिं आतुर लियो उर लाईं। जाउ सकल मिलि षान कलेवा पठये जनक वोलाईं। पितु अनुसासन पाइ कृपा-निधि चलिभे चारिउ भाईं। सम वे राजकुमार छवीले ते सव चले लिवाईं॥ कोउ स्यंदन कोउ गज कोउ तुरंग आप रुचिर सुषपाला। अनुजन सहित लसत रघुनंदन कोटि मदन मद घाला॥ स्यंदनादि सह भ्राजत अद्भुति परम विचित्रित कीन्हे। जगमगात सव जरित जरायन दिनकर परत न चीन्हे। गो मुषादि दुंदुभी वजावत कलित पांडव सुरनाईं॥ आवत जानि राम को सषियन गली सुगंध सिंचाईं। येकै चढ़ी अटारिन देषै येकै सुमग दुवारा। येकै जुवति झरोषन झांकैं दरसन आस अपारा॥

End—को वहु श्रुति सरवज्ञ कहै को सतानंद ते पायो कोऊ कहै परम कैातुकी नारद तिन यह भेद वतायो॥ नपित कथा सुनि भूप कैातुकी आतुर तिन्है वोलायो॥ चित्त चिन्ह ततकाल मिटै नहिं यद्यपि धोइ छुटायो॥ रचना देषि नृप

हंसे सभा सब मुनि सव सकल बराती ॥ मच्यो हास्य आनंद कुलाहल समुझि परै नहिं वाता । यहि प्रकार आनंद दुहू दिसि परम विलास सोहावा ॥ सज्जन समुझि लेहु अपने मन जथा स्वमति मैं गावा ॥ जस मम हृदय प्रेरणा करि अरु जस मम मतिह लषायो । परवत दास संत पद रज सिर राषि चरित यह गायो । दोहा । जे सुनिहैं करि प्रीति यह जे कहिहै करि भाउ । तिनका राम विलास यह करिहै तुरत पसाउ ॥ सीताराम रहस्य यह भक्त रसिक सुष मूल । ध्यान यह मन करिहै जेई तिन दंपति अनुकूल ॥ भक्ति हास्य शृंगार रस त्रय रस मिश्रित स्वाद । जे पढ़ हैं जनिहैं तेई सिय रघुवोर प्रसाद । कहैं सुनै जे व्याह यह सावधान करि भाउ । सांति होई सवों असुभ दिन दिन मंगल चाउ । इति श्रो रामचंद्र कलेवा रहस्य परम विलास परवत दास कृते सम्पूर्णम् । संवत १९१६ श्रावण मासे शुक्ल पक्षे तिथैा दशमयाम चंद्रवासरे लेष्य कृष्णकुमार त्रिपाठी महमदपुर के लिषतं शिव शिव

Subject—राम व्याह में राम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न इत्यादि का कलेवा करने के लिए जनक महल में जाना और वहां लक्ष्मीनिधि और सिद्धि सरहज से हास्य विलास के प्रश्नोत्तर ।

No. 312(*b*). Rāma Kalevā by Parvatadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—27. Size—12 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—432 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1939 or A. D. 1882. Place of deposit—Ṭhākura Śrīprakāśa Simhaji, Raīsa, Hariharpur, Post Office Chilawariā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ रागिन काफी । परवतदास कृत ॥ प्रातकाल रबि उदित भए सत नैावा जनक पठावो । चारों कुंवर राय दसरथ कें तुरत बोलि लै आवो । आतुर नैावा गा जनवासे नृप दसरथ कं ठाइं । चारिउ कुंवर महां कैासल वर चले कलेवा षाई । सुनि नृप सषा अनुज जुत रामहिं लियो उर आतुर लाई । जाव सकल मिलि षान कलेवा पठयो जनक बोलाई ॥

End—तेहि विधि कहेउ भरत रिपुसूदन भाइ भक्ति बिसेषी । सो सुनि सषीं रहीं पुतरी सी लषनादिक मुष देषी । जो जो कहव करहु स्वै आरत तव जुड़ायगी छाती । नतु लहंगा पहिराइ छांड़हैं हम अवला मद माती । सषा सकल कर जोरि सषिन ते कहि अधीन मृदु वानी । राम सिया के दास पुत्र करि छाड़हु प्रान सयानी । इति श्री परवतदास कृत राम कलेवा समाप्त लिषा सो रंगनाथ संवत १९३९

No. 312(*c*). Shaṭ Rahasya by Parvatadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—29. Size—9 × 7 inches. Lines per page—32. Extent—580 Anushṭup Ślokās. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1912 or A. D. 1855. Place of deposit—Paṇḍita Śiva Nārāyaṇa Vājapeyī, Vājapeyī kā Purawā, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजाय नमः। अथ षट रहस्य लिष्यते ॥ प्रथम ज्योति रहस्य ॥ लाल इन देवी के लागै पाये। कर जोरे पद जोरि लाड़िले विनय कर सिर नाये ये हमरी कुल पूजि भवानी तुम्है उचित यहं आये। परमानंद होय दोनो दिसि इनके पूज्य पुजाये ॥ नहिं रीझे जप तप संयम ना कछु गाये वजाये। केवल विनै मात्र कर जोरत द्रवती सरल सुभाये। सर्वा विघ्न प्रसान्त मोद प्रद कहति हवनि सत भाये। वेगि पांय पर दीन भाव धरि करि हैं क्रोध विलावाये। प्रभु हंसि कह कैसी है देवी वैठी वदन दुराये। क्रोध प्रसन्न जानि कस परि है विना स्वरूप लषाये। ई हमरो ग्रह गोचर माया द्रवहि न अंग दिषाये। दूर रहो जनि छुवेहु धोषेहु हो तुम विना नहाये। वरवस राम गह्यो घूंघट पट हमरी पदप चोराये। इन देविन के भाग्य सराहो द्रौपद लेत चढ़ाये। हमका काह ठगो मृगनैनी तुम्है ठगन हम आये। जन पर्वत मुसकाय कहत भई लालन पढ़े पढ़ाये ॥

End—विहाग—हे दशरथ की पुतहू ह्यां कछु नेग हमारा ॥ मैं तुम्हरे पुरषन कै वंदिन विदित सकल संसारा ॥ जबते वशिष्ट पुरोहित भे तब तें मैं लीन्ह भटाई। केवल तुम्हरे हेत लाड़िली मैं यह वृत्ति उठाई। यह इक्ष्वाक वंश मम मेरा अन्य भीष नहिं षाऊं। तेहि पर अवसि अवध गादी तजि और कहूं नहिं जाऊं ॥ पिता तुम्हार वहुत कछु दीन्हों गाउ वहुत कछु पावा। तुम सिद्ध रही संपदा पाई अव ग्रह कानन आवा ॥ और और के और नेग हैं हम एकै यहु पावैं। फिरि कवहूं न जाहिं काहू के घर वैठे गुन गावैं। व्याहि प्रथम आवै जव दुलहिन हमैं नेग दै दासुन। तव भोगै सज्यादिक सैाषिन पूंछि लेव निज सासुन। सुनि परिहास अनर्गल अक्षर घूंघट विच मुसकानी। मनहु चार विधु झंपे अरुन घन उपर प्रभा थहरानी ॥ तव तीन्यू रानी हंसि वोली सत्य कहै यह भाटिनि ॥ जो मागै सो देव प्रीति जुत यह हमारि कुल पाटिनि। अव मैं पाइ चुकोउं ठकुरैन्यू जो हमका इन चीन्हा ॥ सुन्दर वदन सुकोमल नैनन मोहि चितै हंसि दीन्हा ॥ अब चहिहो तव मांगि लेहों मैं मोर कहुं नहिं जाई। जस जस इनको वृद्धि होयगी तस वर वढ़ी सवाई ॥ सदा अचल अहिवात रहै अरु होई पुर धुर धारी। प्राण ते अधिक पतिन का प्यारी होइ असीस हमारी। जन परवत जा परम उपासक रसमाधुर्जहि

जाना रहसि ध्यान ते जनित पाय सुष होइ परम गल्ल ताना इति श्री चतुर भगनी रहस्य समाप्त षट रहस्य संपूर्ण सुभ मस्तु ।

Subject—श्री राम जी का देवियों के पैर लगने के लिये सखियों का कहना, बत्ती मिलाना, लहकौरि खिलाना, कलेवा करना, ज्योनार, सखियों श्रोर राम का संवाद, हास्य विलास, राम गुढ़ वचन, भरत शत्रुहन लक्ष्मण का सखियों से संवाद, उर्मिला, मांडवी श्रादि चारों बहिनों का संवाद, सारिका संवाद, जनक राम संवाद, चतुर भगिनी व भाटिनि संवाद श्रादि ।

No. 312(*d*). Shaṭ Rahasya by Parvata Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—30. Size—12 × 6 inches. Lines per page—24. Extent—750 Anushṭup Ślokās. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1903 or A. D. 1848. Place of deposit—Ṭhakūra Jagapala Simha, Village Bīrapur, Parganā Akonā, District Bahrāich (Oudh).

Note—Details as in no. 312(*c*).

No. 312(*f*). Shaṭ Chatura Bhaginī Rahasya by Parvata Dāsa. Substance--Country-made paper. Size—15 × 6 inches. Lines per page—24. Extent—750 Anushṭup Ślokās. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1911 or A.D. 1854. Place of deposit—Paṇḍita Lalatā Prasāda, Village Pāṇḍita Puravā, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Note—Details as in no. 312 (*c*).

No. 313. Śālihotra by Pāṭhaka Dāsa Dwija of Rukama Nagara. Substance—Country-made paper. Leaves—30. Size—12 × 5 inches. Lines for page—12. Extent—360 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1831 or A.D. 1774. Date of manuscript—Samvat 1879 or A.D. 1822. Place of deposit—Ṭhakura Naunihāla Simha, Seṅgara, Kānthā, Unāo.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्रथ सालिहोत्र लिष्यते ॥ दोहा ॥ गनपति गिरिजा ईस कैां प्रथमहि बन्दैां पाइ । भाषैां लक्षन तुरग के मोहि पर होहु सहाय ॥ सुमिरि राम के जलज पद विधि वंदों कर जोरि । दीरघ पक्ष तुम्हार

प्रभु बुद्धि अल्प मति मोरि। अस्वारिपि के सुवन इक सालिहोत्र तेहि नाम। तिनके चरन कमल जुग लाला करै प्रनाम। ऋषि कीन्हैं आरंभ मख होम धूम रही छाइ। लाग्यौ लोचन रिषय के सलिल वुंद परे आय। वाम नेत्र ते अस्वनी दाहिने भयो तुरंग। भष्यो रिषि सो सुवन है को कहै प्रसंग।

End—अथ चासनो॥ सुरभी दूध सेर दस लीजै। टांक दोइ·······म तेहि दीजै। खीर करै गुर संघै बात। अस्वा बहुत पुष्ट होइ जात। ४ अथ सालहोत्र समाप्तं संपूरनं शुभ मस्तु। मिति पैाष सुदि शनिवार १ पुस्तक लिखी सुखनंद सुकुल समाप्तं संवत १८७९॥ राम रचयिता—लाला पाठकदास द्विज हकुमनगर में वास। भाषा कीन्हो अश्व हित सब कवि जन के दास। चन्द्राम वसु चन्द्र लिषि संवतसर परिमान। शुक्रमास वदि तीज को कीन्हे अश्व बखान। पूरव····ति देखि कै भाषा कीन्हीं येह। चूक होइ सो पूजिये जानि दास पै नेह। इति।

Subject—अश्व उत्पत्ति वर्णन, दाँत लक्षण, शुभाशुभ विचार, पृ० १—५

अंग लक्षण रंग व भैांरी लक्षण, अशुभ सफेदो, अंजनी लक्षण, गोप, केस, घाटी, अमूसली, कलमुखी, थनी, स्याम तालू लक्षण, पृ० ६—१०

असनशूल, बदशूल, मूत्र वदशूल गद व प्रशूल, लक्षण व उपाय, अन्यशूल वर्णन, पृ० ११—१६

ज्वर, वायु, नश्तर, लक्षण व उपाय, कनाग व प्रमेह, उपाय, पृ० १७—२८

मूत्र रोग उपाय, जोगिरावर्यगिरा उपाय, गर्मी, पित्त, मुत्रकपाली, घोड़े के लिये रस वर्णन, जनुवार, छीवर, पोछि लगे को उपाय, पारीसो, फूली, मेढुकी, सर्परि तरवा तुछहारी, मिसुचा सूनी वर्णन पृ०—२३—३० तक

No. 314(*a*). Jñānayōga Tattvasāra by Patita Dāsa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—72. Size—5 × 3 inches. Lines per page—18. Extent—900 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A.D. 1864. Place of deposit—Śrī Krishṇajī, Village Sakhuāpur, Post Office Bahrāich, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः दोहा। पतितदास कृत वहु विधि लिष्यों विचारि विचारि। बूझि संभारै अर्थ को सो है गुरू हमार। ज्ञान जोग उत्पति सब पालन अरु सत सार। इन्द्र देव स्थान गुण चारों पद के उबार। ग्यानी कोविद सब मिलि मथि लियो सारासार। भक्ति ध्यान अरु त्याग यहु कूर

कर्म गेरि भार । सो० मन मद वृच्छ अपार ठोकर बहुत बचाइयो । मानो कहो हमार । सत्य शब्द गहि लीजियो ॥ दो० सत गुरु मों पर कृपा करि दियो योग तत्त्वसार । पतितदास जम जानि कै जग में कियो पसार ॥ चो० दास पतित अति मन बुधि हीना । प्रभु रघुवर मोहि आयसु दीन्हा । सुभ सुन्दर संयम मंगबाई । तन मन धन हरि शरण लगाई । जाकर गुणानवाद अवगाहा । चारैा जुग कोइ पाव न थाहा । पहिले सुमिरैां श्री गुण ईशा । जो मोहि विद्या दियोपदेशा । संकर सुवन भवानी के नंदन । गणपति देवनाथ जग बन्दन ।

End—लिख वह मैं लिष हारो कागद कलम सिरान । ऐंचि पैचि कथनी करी नामै पर ठहराना ॥ चैा० ॥ पति वह कहैां कहां लैां गाई । याही में मैं अर्थ सुनाई । शहर लखनऊ बस्ती भारी । जन्म भूमि ता जाम्य हमारी । नाम चकैाली ग्राम हमारा । भयो जन्म अघ हेत गंवरा । रमत रमत रसूलपुर आई । तहां मिल्यो गुरु देव गोसाईं । दास पतित सम रस जिभावा । गुरु दयाल निज दास बनावा । दीन्ह जोग सब तत्व लषाई । भर्म त्यागि निज रूप देषाई । गोंडा में गिरधर पुर गाऊं । नीत धर्म कोई जानत नहि भाऊ । रामदत्त पांड़ेन में भयऊ । कुल के धर्म नेति चलि गयऊ । हेतु ताहि तहं वास हमारा । करहु जोग तब तजि ब्योवहारा । ताकै वंश भयो अविवेकी । तजि सुभ पंथ कुमारग टेकी । देखि अनीति तजेऊ वह देसा । अवध में आय कीन्ह परवेसा । दो०—पतित की मन गहिना मिले भागे पवन समान । मन इन्द्री वस कीजियो हरि सों करि पहिचान । अंक ऊपर बिन्दी बढ़े बढ़त बढ़ि जाय । तरै अंक बिगरै नहि जीव पोज मिटि जाय । एकै प्राणायाम में कटैं कोटि अपराध । जप नाद जो नाम सम रहै नहीं भव बाध । सो०—कटैं कोटि अपराध, यहि विधि सुमिरन जो करै । दास पतित निज साध छूटि जाय भव दाप सब ॥ चतुराई में भूलिकै नाम न सुमिरन कीन्ह । दास पतित गति को कहै । जन्म अकारथ लीन । तवसार यह जोग है आतम सार विचार । पढ़ै सुनै जो नेम सो होवे सकल उबार ॥ इति श्री ग्यान जोग तत्वसार सायन । श्री स्वामी पतितनंद कृत सम्पूरन । शुभमस्तु । लिषा शिवानंद संवत् १९२१ विजय दशमी ।

Subject—श्री गणपति की स्तुति, गुरु की महिमा, प्राणायाम द्वारा ईश्वराराधन आदि अन्त में ग्रन्थकर्त्ता की जन्मभूमि आदि का वृत्तांत ।

No. 314(*b*). Mahavīra Kawacha by Patita Dāsa. Substance - Country-made paper. Leaves—5. Size—8 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—85 Anushṭup Ślokās. Appear-

ance--New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1948 or A. D. 1891. Place of deposit—Paṇḍita Rāmāvatāra, Village Paṇḍita Purawā, Post Office Risiā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः। श्रीमहावीरायेनमः। ॐ हनुमन्ताय नमः। चैा०। जय महावीर धीर बलवंता। जासु चरन सेवैं सब संता। बली बीर तुम हो हनुमाना। तुव गुन गावै चतुर सुजाना। सदा तुम्हारो जै हनुमंता। जापर कृपा करैं भगवंता। विन तुव क्रिपा पार नहिं होवै। तुम्हरो ग्रास सबै कोई जोवै। राम पियारे सिया दुलारे। दास पतित का काहे विसार। संकर सको केसरी नंदन। दास भानि काटो भव बंधन। तुम विन ग्रवर कोइ नहिं स्वामी। तू उदार उर ग्रंतरजामी। ग्रंजनि कुमार पवनसुत नायक। राम के दूत लषन के ग्रायक॥ सुनहु न नाथ ग्रर्ज कस मोरो। दास पति भाषैं कर जोरो। संकट हर मंगल के दाता। जो सुमिरे तुव नाम विधाता। हैां मैं कुटिल ग्रधम ग्रभिमानी। भाव भक्ति नेकहु नहि जानी। तुम प्रभु जानहु सब घट केरो। काहे न सुनो नाथ ग्रब मोरो। ग्रब कहावों तुम्हरो दासा। तजि के काम जगत को ग्रासा। दो०। हम पतित तुम समरथ नाथ कहैां कर जोरि। ग्राई सरन मत त्यागहु देहु मोंहि जनि पोरि।

End—जब रघुनन्दन ग्राग्या कीन्हा। लै मुद्रिका सीय का दीन्हा। दधि नाघत भयऊ रूप ग्रकासा। राछस मारि दैयत करि नासा। सों पैारुष कहं गयऊ तुम्हारा। सुनो न स्वामी बहुत पुकारा। ग्रब मोरि लाज राषि प्रभु लीजे। जनके काज हरषि हिय कीजै। एक वार नित पाठ पुकारै। वैरी दुसमन ये सब हारै। दुइ वार जो नित लावै सेवा। रोग छुड़ावै हनुमत देवा। बहु विधि रक्षा करै कृपाला। छूटि जाय दुष सब जंजाला। त्रितावार करै नित पूजा। जप तप ध्यान ग्रैार नहिं दूजा। सांझ सबेरे ग्रैाभ ध्यान। हित से सुमिरे निभैं हनुमान। ग्रैार जहां लै सपेरे भाई। दिन प्रति, प्रीति करै मन लाई। सो महिमा सकैां न गाई। जेहि देषे जमदूत डेराई। ताको पाठ करो नित भाई। करि विसवास पाठ करै कोई। चारि वरन में जो कोई होई। कांपे जम के दूत सब, जम की कहा बसाय। दास पतित गोहराय कहैं जेहि महावीर सहाय। कवि विसवास पुकारै पाठ नेम नित कोई। रोग दोष सब नासै ग्रनगिनतिन सुष होई। इति श्री महावीर कंवच मंत्र ग्रस्तुति दास पतित वरनन जो पढ़ै सुनै ग्रै पढ़ावै। संका निकट ताहि नहिं ग्रावै। दः रामग्रैातार कुरसहा वाले ने लिषा जो प्रति देषा सो लिषा मम दोष नहीं श्री संवत १९४८ क्वांर मासे कृष्ण पक्षे तिथैा ६ षष्ट॥ दः रामग्रैातार समासम् राम राम राम राम राम।

Subject—हनुमान जी की महिमा।

No. 314(*c*). Nakshatra Rāśhi Charaṇa Kuṇḍali phalāphala Jyotisha by Patita Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—32. Size—10 × 6 inches. Lines per page—60. Extent—1,620 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1940 or A. D. 1882. Place of deposit—Ṭhakūra Digavijai Siṁha, Taluqedāra, Village Dikaulia, Post Office Biswā, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पोथी नक्षत्र राशि चरण कुंडली फलाफल ज्योतिष लिष्यते ॥ दे।० ॥ इन गंधर्व शारदा सरस्वती सब देव मनाय। नवो नाथ सिद्धि चोरासी रिषि मुनि से भिक्षा पाइ। श्री गुरु व्यास जी सुषदेव वालमीक सिर नाइ। भृगु आदि कालिदास तप गुण मो पर होहु सहाइ। सोरठा ॥ हैां गुण बुद्धि ग्यान से हीन, करैा कृपा पावों वर यह। अक्षर अर्थ वनै प्रवीन ग्रंथ लिष्यो जीवन सुष हित ॥ चै।० ॥ दास पतित अज्ञान गंवारा। भक्ति भाव न भजन विचारा। गुण ज्ञानी से अरजिय मोरी। लेउ वनाय भूल सब जोरी। अब नक्षत्र फल कहि थोरो गाई। देउ गुण वरणे ग्रंथ सरसाई। चूचे चोला अश्वनी अथ पुनिः अश्वनी नैां देवता अक्षर आकारो वैस्य जाती हेमता अश्व स्यामा याही में भयउ पचास। घड़ी के उर्ध विष नाड़ी आयो तब जात्रा करै माष लै षाई। सर्व ओर जाय सुष सुभ पाई।

End—अमृत सर्व अमृत बरसाई। चिंता सोच के सब रोग बहाई। दिन सत वीसही में गाई। लक्ष्मी हू वस्त्र सिधि कराई। मूसले कार्य देर दरसावे। अवसि तो हानि ही कार करावै। देव ससी सवी सें इष्ट भेंटी। रोदनं चिंता भर्म सोच लपेटी। श्वगद योगे सर्व बहुत दुष दाई। जलदिहि हानि दुष व्याधि रोषाई। मतंगे श्री अंत ही मिलाई। विसहे दिन काज सिधि प्रगटाई। राक्षेस सो पीड़ा उपजावे। दिन सत्ताईस अफलावै। चार जोग में फल थोरो लाई विद्या वानी लाभ सिधि गनाई ॥ स्थिर जोगे सब सिद्धि ही देई। दिन माठि अश्व लाभं कार्य्येंही। पशू लाभे भला वतावत। वृद्धि अति भले ढेर देषावत। दिन अरसठ में वहु अदराई। आनंद जोग सब के फल ये गाई। दे।०। दास पतित मति याही सूक्षिम सोई गाई। चूक हमारी माफ कै सवैया या लेव बनाई। इति श्री नक्षत्र राशि चरण कुंडली फला ज्योतिष ग्रंथ संपूर्ण समाप्तं सुभमस्तु लिषतं गैारीशंकर भट्ट पैदापुर निवासी संवत १९४० ॥ इति श्री ग्रंथ समाप्तं ॥

Subject—ज्योतिष ।

No. 314(*d*). Śarīra-bhoga-sāra Gītā by Patita Dāsa of Ayōdhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—6 × 5 inches. Lines per page—24. Extent—120 Anushṭup Ślokās. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript-Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Lāla Gaṅgā Dīna Bihārī Lāla, Village Ghulāmalī Purā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ सरीर भोगसार गोता पतितदास कृत लिष्यते ॥ दो० ॥ सत संगो को विनय गुरु भेश दस समाज । जोग भोग सुष दुष के त्याग मरन सिरताज ॥ सारठा ॥ दास पतित कहि बैन धन्य धन्य गुरु ग्यान को गहे सकल सुष चैन सूक्ष्म कहैा करि गुप्त वहु । दास पतित का लेष यह साधन करत विचार । यहि मति जो गहि अमल करि तेहि राषै करतार ॥ विना प्रेम साधन किए होत नहीं वैराग । चाह मान मद विन तजे । किमि आवै अनुराग ॥ भक्ति विना अनुराग नहि ॥ विन अनुराग न त्याग ॥ त्याग विना निर्द्वन्द नहिं तै। कहि का वैराग । पूर्व कमाई भई जो घर त्यागे कस मान ॥ दास पतित सतगुर कृपा तजि कर गुमान ॥ कोश द्रव्य परिवार वहु लागै जहर समान ॥ गुरु वानी रट लग रही तन मन ओर न ध्यान ॥ सतसंग विद्या ज्ञान कछु परमहंस धरि रीति । षान पान अस्नान तजि अवधि मिलन की प्रीति ।

End—समै समै को जून को जो त्याग संग वनि आय । कीजे नहिं सन्देह कछु दास पतित मत पाय ॥सारठा॥ झीन मे है अस्थूल, अस्थूल में झीन दिषावही ॥ वड़ो अहै यह भूल सूझे तै। प्रभु की कृपा ॥ चो० ॥ गिरधरपुर का अस अहवाला । कहैा विचार विवेक सवाला ॥ जहां विवेक राज व्रतधारी । तहं वह जागी जोग संभारी ॥ राउ अधर्मी देस विचारी ॥ तंह वा सुप संगे गुण भारी ॥ जंह नृप देस अधर्मी दोऊ ॥ ग्यानी तहां न सपने कोऊ ॥ मूरष संग उपजे दुख नाना ॥ ग्यानी संग सुष सर्वस जाना ॥ तुलसीदास दीन परमाना । और अनेकों ग्रंथ बषाना ॥ जाग विरोध भेद बड़ होई ॥ वनै न एक कहेउ सव कोई ॥ भेद सोई तहं वा दिषराना ॥ लषि न परै कोउ अपन विराना ॥ वरन विवेक रहित भे देसा । नरनारी भए क्रूर कुवेसा ॥ उच्च कर्म गहि चोर चमारा । उतम सव विधि गहे विकारा ॥ (यहां से आगे पृष्ट कोरे हैं इस कारण अपूर्ण है) ।

Subject—ज्ञान वैराग्य ।

No. 315(*a*). Haridāsajī ke Padan kī Ṭīkā by Pītāmbaradāsa of Brindābana. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—8×7 inches. Lines per page—40. Extent—540 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābū Śyāmakumāra Nigama, Rāe Bareli.

Beginning—श्री विहारी जी ॥ अथ श्रीमत् पीतांवर दास जी टीका श्रीमत् श्रीस्वामी हरिदास जी के पदन को लिष्यते ॥ दोहा ॥ नमो नमो जय रसिक पद मम हिय करहु निवास। दुर्गम पद सुल्लभ करो श्री स्वामी हरि-दास ॥ १ ॥ चैापाई श्रीहरि दासी करि आराधि। श्री विपुल विहारिनि दासी साधि ॥ श्री सरस नरहरी के पद वंद। श्री रसिक कृपा सूं लहि रस कंद ॥ २ ॥ दोहा ॥ निनित श्री हरिदास करि कठिन रसिक रस देस। संसै षंडन को करै हियरै विना प्रवेस ॥ ३ ॥ चैापाई ॥ श्री गुरु के पद अतिसै गूढ़। समुझत नाहि नमो मतिमूढ़ अहो ॥ कहै को अतिसै प्रौढ़ संत रसिक सव ध्यानी रूढ़ ॥ ४ ॥ अति अकुलाति समझना परै समझ विनाना कार्य सरै ॥ सुनत कहत रस हियरो डरै इह संसै का निर्नय करै ॥ ५ ॥ दोहा ॥ नमो नमो जय हंस सनक नारद वंदु। श्री निंवादित्य प्रकास भाव रसिका आनंदु ॥

End—झूलत डोल निकुंजवर दुतिय ओर नववाल राधे रहत न हसति अति प्रिया प्रान प्रतिपाल ॥ १०७ ॥ पद ॥ श्रीकुंज विहारी झूलत डोल ॥ दुतिय ओर श्री रसिक स्वामिनी दोऊ मिलि करत कलोल ॥ मंद मंद झूलहु वाल त्यों त्यों हास्य करत अति पिय इति वोल ॥ श्री हरिदास कहत री प्यारी राषि लेहु पति गहत कपाल ॥ ७ ॥ ६ ॥ राग नट ॥ दोहा ॥ रूप सघन वन डोलतें निकसे विव सुकुवार। तन मन घन ज्यों दामिनी सकल सुषन कैा सार ॥१०८॥ पद डोल सघन वनतें जुग आये। तन में तन मन में मन विलसत घन दामिनि उपमा छविछाये ॥ प्रीतम नित वरिषा रति चाहत मोरि चातकी पिक रट लाये ॥ श्री हरि दासि। निरषि कित उपमा कुंज विहारी अपने पाये ॥ १०८ ॥ इति श्री अनन्य नृपति श्री स्वामी हरिदास जूके पदन के अर्थ संछेप मात्र लिषितं पीतंवर दासस्य विरचित। श्री विहारिनि विहारी जू जयति ॥

Subject—पृ० १—श्री हरिदास जी तथा अन्य गुरुजन वंदना, सेज वर्णन, रूप वर्णन, आखों का सुख वर्णन। पृ० २—श्री कृष्ण के वदन की शोभा वर्णन, नूपुर ध्वनि वर्णन। पृ० ३—श्री कृष्ण के कौतुक वर्णन, श्री कृष्ण का मान वर्णन, श्री कृष्ण का गान वर्णन। पृ० ४—सखियों की विनय श्री कृष्ण प्रति, श्री राधा का मान वर्णन। पृ० ५—राधा का यौवन वर्णन

राजा का वशीकरन वर्णन, युगल छवि वर्णन। पृ० ६—युगल क्रीड़ा वर्णन, मुख शोभा वर्णन, नैन बाण वर्णन, युगल प्रेम वर्णन। पृ० ७—श्रीकृष्ण का यश वर्णन, श्री राधा की कृपा का वर्णन। पृ० ८—राधा का कंठ स्वर वर्णन, युगल प्रताप वर्णन, युगल हिंडोरा झूलन वर्णन। पृ० ९—राधा की चूनरी का वर्णन, चूड़ी का वर्णन। पृ० १०—श्री कृष्ण की मुरली की ध्वनि वर्णन, श्री कृष्ण चरण शोभा वर्णन। पृ० ११—राधा का कस्तूरी लेपन वर्णन, श्री कृष्ण का राधा से मान न करने का वचन लेना, १२—श्रीकृष्ण की दानलीला का वर्णन। नैन कटाक्ष वर्णन। पृ० १३—राधा की चतुरता वर्णन, युगल गान वर्णन। पृ० १४—श्री कृष्ण का राधा को मनाना। पृ० १५—श्री कृष्ण का राधा की वेनी गूंथना वर्णन। राधा कृष्ण का शतरंज खेलना वर्णन। पृ० १६—प्रातः काल उठने पर छवि वर्णन, युगल रति वर्णन, पावस का वर्णन। पृ० १७—रास वर्णन, वसंत वर्णन, सहचरि का युगल स्वरूप देखना वर्णन। पृ० १८—राधा की शोभा को श्री कृष्ण का देखना वर्णन, हिंडोरा झूलना वर्णन, वन भ्रमण और पावस का वर्णन। समाप्ति।

No. 315(*b*). Pitāmbara dāsa kī Bānī by Pītāmbara dāsa of Brindābana. Substance—Country-made paper. Leaves 64 Size—8 × 7 inches. Lines per page—38. Extent—1,672 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nagarī. Place of deposit—Babu Śyāmakumāra Nigama, Rae Bareli.

Beginning—श्री विहारी जी॥ अथ गुरु परंपराय नामावली लिष्यते॥ दोहा॥ श्री गुरु घर पर परम पद विधि हरि सिव सनकादि। सेवत सहचरि भाय नित नित्य विहार अनादि॥ १ दिव्य धाम वृंदा विपिन दिव्य गौर तन स्याम। दिव्य केलि क्रीड़त सदा दिव्य उपासिक वाम॥ २ स्वयं प्रकास वृंदावन धाम सनत कुमार जानि निहकाम। महल टहलनी धर्म दृढ़ायो। सो नारद वड़ भागन पायौ॥ ३ आचारज नारद वपु धारौ। पंचरात्र करि मत विस्तारौ॥ तामें गुरु पद राधा स्याम दिव्य रूपतन वन अभिराम॥ ४ सोमत श्री निवादित गह्यौ श्री निवासनें सोई लह्यौ विश्वाचारज जो मत धारौ पुरुषोत्तम विलास विस्तारौ स्वरूपाचारज बड़े जुज्ञाता श्री माधव करि मत विख्याता आचारज बलभद्र प्रचंड पद्माचारज पावन पंड॥ ६ स्यामाचारज सब के स्वामी आचारज गोपाल सुधामी प्रगट कृपाल कृपा आचारज देवाचारज मत के आरज॥ ७ तिनके श्री ब्रजभूषन स्वामी श्री ब्रजजीवन तिनके भए नामी श्री जनार्दन बैरागी भूय श्री जनार्दन वंशीधर बंशीधर रूप॥ ८ श्री हरिवल्लभ भूधरदेव श्री मुकुंद

के गुरु हरि सेव श्री ललितमान तिनके पट राजैं कन्हरदेव बहु संत समाज ॥ ९ वामदेव भए तिनकी गादी सुरति भान जीते बहु वादी पितांवर राजै तिहि ठौर चिंतामनि संतन सिर मौर ॥ १० जुगलकिशोर जुगल रस भीनौ दामोदर हरि अपनें कीनौं कमल नयन तिनके मति धीर गोवर्द्धन तउ भये गंभीर ॥ ११

End—श्री पीतांवरदास ग्रास इक रसिक उपासी ।
अविलोकत रस सार विहार सु सुष को रासी ॥
महामूढ़ते अंध जीव तम जहां प्रकास्यौं ।
दयौ प्रेमरस हृदै रसिक जन अद्भुत भास्यौं ।
श्री हरिदास कुल विपुल विहारिनि मुष कमल ।
श्री रसिक सिरोमनि कृपा अति भान उदै रस कौ अमल ॥ ३

सवैया—प्रेम के मोद को मूरति सूरति आनंद में नित्य आनंददैना । श्री हरिदास के वंश उजागर आगर रूप महा मृदु वैंना ॥ लाडिली लाल लड़ावत भावत गावत रंग सुरंग को सैना ॥ पीव कहै प्रिये पाऊ पितांवर प्रिया कहै पिय है निजु नैंना ॥ ४ इति श्री स्वामी पितांवर दास जूको प्रसंसा संपूर्णम् ।

Subject—पृ० १—गुरु परंपरा नामावली । पृ० २—गुरु मंगल वंदना । पृ० ३—१५—सिद्धान्त के पद । पृ० १६—२० परम उज्ज्वल शृंगार रस के पद । पृ० २१—२५ हिंडोला वर्णन । पृ० २६—वसंत वर्णन । पृ० २७—३० व्रज होली वर्णन । पृ० ३१—३४ मांझ वर्णन । पृ० ३५—३९—सिद्धान्त की साखी (राधा वल्लभी संप्रदाय) पृ० ४०—शृंगार रस की साखी (रा० व०) पृ० ४१—स्वामी हरिदास जी की वधाई । पृ० ४२—विट्ठल जी का समुदाय वर्णन । पृ० ४२—४४ विट्ठल विपुल जी की वधाई ॥ पृ० ४५—विहारीदास जी की बधाई । पृ० ४६—सरसदास जी की बधाई ॥ पृ० ४७—४८—नरहरिदास जी की बधाई । पृ० ४९—रसिकदास जी की बधाई । पृ० ५०—श्री रसिक विहारिनि नव मंदिर में विराजे उस समय की वधाई । पृ० ५१—५४ स्वामी नरसिंह देव जी की प्रसंसा । पृ० ५५—५७—श्री कृष्ण की भक्तजनों द्वारा स्तुति । पृ० ५८—६३—स्वामी रसिक दास जी की वंदना । पृ० ६४—पीताम्बर दास जी की प्रसंशा वर्णन ।

No. 315(*c*). Samaya Prabandha by Pitāmbardāsa of Brindābana. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—8 × 7 inches. Lines per page—38. Extent—475 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of

manuscript—Samvat 1801 or A. D. 1744. Place of deposit—Bābu Śyāmkumāra Nigama, Rāe Bareli.

Beginning—श्री विहारिनि विहारी जू जयति ॥ चैापाई ॥ नमो नमो महा मंगल धाम । वृन्दा विपिन सुषद विश्राम जैति प्रिया अति उत्तम ठाम (श्री) रसिक सिरोमनि तन अभिराम ॥ १ नमो जयति जमुना निजु अंगी नमो सहचरी प्रान सुरंगी महा मंगल जै श्री हरिदासि । (श्री) वोठुल विपुल विहारनि पासि ॥ २ पुनि प्रनाम श्री सरस सहेली । (श्री) नरहरि रसि प्रेम की वेली ॥ धाम स्वामिनी मुरति भनै । (श्री) रसिक विहारनि प्रगट वषानै ॥ ३ ॥ वारंवार वंदन करूं धरूं रसिक होय ध्यान । अगम अगोचर अलष हे प्रगटे रसिक सुजान ॥ ४ अति दुर्लभि दृरि ते दृरि । ते प्रगटे प्रभु निकरि हजूरि ॥ (श्री) रसिक सिरोमनि तिनहि लषावें । निजु संगीते दरसन पावें ॥ ५ ॥ सोरटा ॥ (श्री) कुल अति विस्तार ध्यान करत वहु दिन चहै । तैा हू मिलत न पार नांउ लेत जेते निकट ॥ ६ ॥ निकट वृत्ति एते रहै इन कैा मेरे ध्यान गरीबदास गोविद जै वल्लभ श्री भगवान ॥ ७ ॥

End—सहचरि के भागनि सुषो रुष लै चलत सुभाय । दंपति संपति सुष सरस छिन छिन प्रति दुलराय ॥ ९६ यहै ग्रंथ हिय ग्रंथ नसावै श्री गुरु कैां सुष निश्चै पावै लंपट सठ के हिये न आवै सत संगति मिलि निभैं गावै ॥ ९७ श्री हरिदासि विपुल सिरनावै विहारिन दासी दिन दुलरावै । सरस नरहरी सुष दरसावै श्री रसिक कृपा पोतांवर पावै ॥ ९८ समय प्रवंध ग्रंथ को नाव । कर विचार तासु वलि जाव है अविरुद्ध सुद्ध यह लहै चरण रसिक पोतांवर गहै ॥ २९९ विषै रहित रस रसिक उपासी तिनकी मति या मत मय भासी नीरस श्रवन सुनत नहिं आवै रसिकन के हिय रस उपजावै ॥ ३०० रसिक कृपा पद जुग कमल मूरति जुगल किशोर पीतांवर के प्रान सुष रसिक राय सिर मोर ॥ ३०१ ॥ इति श्री समय प्रवंध संपूर्ण ॥ दोहा ॥ विपन नित्य नवकुंज में सहचरि के सुषहेत । (श्री) जुगल विहारी क्रीड हो रसिक प्रियाहि समेत नवनिकुंज एकांत सुष कथा श्रवन मनमाद जा जा उपजत भाव रस रसिका नंद विनोद ॥ २ प्रथम वास्य (श्री) हरिदासि के पीछे विपुल विहार श्री गुर नागरि सरस जू (श्री) नरहरि रसिक अधार ॥ ३ धाम स्वामिनी सहचरी लयो निरंतर स्वाद बिनु जानें मत कीजियो गूढ़ ग्रंथ विवाद ॥ ४ संमत सहचरि मिलि कियो अष्टादस मत एक । दुतीया मंगल लाड़िली भजियों सुघर विवेक ॥ ५ श्री वृन्दावन कंज में (श्री) रसिक विहारी पासि । पीतांवर की प्रीति सों लिषतं सो व्रज दासि ॥ ६ ॥ इति श्री ॥

Subject—पृ० १—बृन्दावन, श्री कृष्ण, यमुना और हरिदास जी तथा अन्य गुरुओं की स्तुति वंदना। गोविंद दास को वंदना और अन्य भक्तों की वंदना। पृ० २—गुरु महिमा वर्णन। सत्यता की महिमा। पृ० ३—विषय भोग की निंदा। पृ० ४—वैराग्य के लक्षण। सतसंग महिमा। पृ० ५—भक्ति की महिमा। पृ० ६—श्री कृष्ण का पावस में हिंडोला झूलना। पृ० ७—१०—गुरु उपदेश से ज्ञान की प्राप्ति और उसके अनुसार प्रेम से श्री कृष्ण की प्राप्ति वर्णन। संध्या समय आरती का वर्णन। पृ० ११—दीपमालिका की शोभा का वर्णन। राधाकृष्ण का प्रेम वर्णन। पृ० १२—प्रात समय शिष्य को गुरु वंदना का उपदेश। स्नान श्रृंगार करने का उपदेश। गान करके श्री कृष्ण को रिझाने का उपदेश। भोजन कराने का उपदेश। पोढ़ाने का उपदेश। पृ० १३—पतिव्रता स्त्री की भांति श्री कृष्ण की पति समान सेवा करने का वर्णन। १४—शरद ऋतु में श्री कृष्ण का रास वर्णन। १५—राधा का नख शिख वर्णन। १६—राधाकृष्ण की केलि का वर्णन। प्रातःकाल की मंगल आरती। पृ० १७—१९—वसंत ऋतु में वृन्दावन शोभा और श्री कृष्ण राधा तथा अन्य सहेलियों के साथ रहस्य वर्णन। २०—ग्रंथ की प्रशंसा उसका नाम और समाप्ति। निर्माण संवत और प्रतिलिपि कर्ता का नाम वर्णन।

No. 316(*a*). Bhramaragīta by Prāgana kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—54. Size—6 × 4½ inches. Lines per page—13. Extent—521 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1886 or A. D. 1829. Place of deposit—Paṇḍita Śivadānī Lāla Miśra, Village Muhammadpur Khālā, District Bārābankī (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भँवरगीत लिष्यते ॥ सिष निजु गाढ़ै कै गहियो पालागन दोऊ भैया की मैया सो कहियो ॥ हम हैं तिम्हारे पय कै पोषे सुरति करति रहियो ॥ जोग संदेस सुनाइ त्रियन की प्रीति रीति लहियो ॥ कहियो न कछु कटुक उनसो तुम कहैं सो सब सहियो ॥ सीतल वचन सोचियैा रसहौ दहो न फिरि दहियो ॥ देषि दसा उनकी हम को तुम दोष दियैा चाहियो ॥ प्रागनि बृजवासिन के हिय को प्रेम सिंधु थहियो ॥ १ ॥ राग आसावरी ॥ आयसु दीन्हे सषा सुजानहिं स्यंदन चढे सिधारे बृज को सुधि रावरे आनहि केैम है जसुदा जननी जिन पालि किये परको मोहि अछत वैतोत होहिं जो पर पूतन आयोन ॥ गहियो पाइ नंदबाबा के

कहियो यहै संदेसो जो तम कियो महाकृत हम को गनन सकल गुन सो समाधान कीजो गोपिन को दीजो निर्मल ज्ञान ॥ कहियो जोग जुगति सों प्रागन तृकुटी संजम ध्यान ॥ २ ॥

End—ऊधैां तोसो कहै निरंतर निज भक्तन मों रहतु हैां वेदातीत कोऊ नहिं जानत यहै हमारै मतु है हैां निरलोप निरंजन निर्गुन कारन ते वपु धारैां ॥ कर्म रहित अपनी इच्छा ते प्रगटतु हैां जुगचारो ॥ देह अदेह तकत है मेरी जानि दृष्टि करि कोइ ॥ त्यागै देह वहुरि नहिं पावै जन्म जगत में सोइ ॥ यह मत है देवनि को दुर्लभ गुप्त हिये मैं राषि ॥ प्रागनि तोसैां वहुरि कहैां गो देउ यकादस साषि ॥ ५३ ॥

इति श्री प्रागन कृत भ्रवर गीत समाप्त सुभ मस्तु संवत १८८६ ॥ फाल्गुन मासे कृष्ण पच्छे पंचम्यां सुक वासरे ॥ राम राम राम राम राम राम

Subject—(१) पृ० १—५ तक—उद्धव का कृष्ण जी का संदेशा लेकर व्रज को जाना, अपनी माता यशोदा तथा नंद को अभिवादन कथन पर्यंत गोपियों की खबर मंगाना, ऊधों का सिधारना, वृज में पहुंचना, गोधन का दैाड़ कर आना, जसोदा द्वारा उद्धव का सत्कार और श्याम की सुधि पूछना, नन्द वावा का से आना, नंद का भी दोनों पुत्रों की प्रसन्नता का समाचार पूछना और उपालम्भ सुनाना (२) पृ० ६-१० तक—उद्धव का कृष्ण द्वारा माता पिता को भेजा हुआ संदेश तद्वत् सुना देना, उन दोनों का कारे शब्दों से ही समाधान न होना और राति भर इसी चर्चा में बिता देना। प्रातःकाल होते ही माता का उद्धव से कथन कि जरा वृषभान के घर चल कर गोपियों का समाधान ते। कर आइये। उद्धव का गमन, गोपियों का मार्ग में ही मिल जाना, गोपियों द्वारा इनका नामादि पूछा जाना, उद्धव का नामादि बताना, गोपियों का प्रसन्न और प्रेम गद्गद होकर अवधि तक जीवन रखने की बात कहना, उद्धव का असमंजस, (३) पृ० ११—४४ तक—गोपियों की उक्तियों को सुन कर मन में उद्धव का कथन कि "हरि को चुनैाती है, वही आकर इन से जीतें"। गोपियों का कथन कि "हमारे व्रज का ते। मार्ग ही पृथक है—हमें ते। कृष्ण के दो गुण, (१) उनकी सांवली त्रिभंगी मूरत और (२) उनकी चारु मुरलिका पसंद है और वही मूर्ति हमारे नेत्रों में बसी हुई है। कृष्ण कृत अनेक चरित्र सुना कर गोपियों का प्रेम में मुग्ध हो जाना, उद्धव का गोपियों द्वारा योग का खंडन सुनना और प्रेम का पाठ पढ़ कर मथुरा को लैाटना। मार्ग में चिन्तित होना कि आज्ञा तीन दिन की थी और लैाटता छः मास में हूं। (४) पृ० ४१—५४ तक—कृष्ण के पास उद्धव का पहुंचना, कृष्ण का उद्धव आगमन सुन कर किसी आदमी द्वारा

बुला भेजना, उसके पहुंचने के प्रथम ही दूसरे को भेजना उद्धव का आगमन, कृष्ण का माता पिता तथा गोपियों का समाचार पूछना, उद्धव का सब समाचार सुनाना, गोपियों का संवाद सुनाते सुनाते उनका मूर्छित होकर गिरना, कृष्ण का उनको सचेत करना और प्रेमवारि बरसाना, उद्धव की स्तुत ब्रज में जाने के लिये करना, कृष्ण का ब्रजवासियों का और अपना साम्य प्रदर्शित करना, कृष्ण द्वारा उद्धव को समझाया जाना, अपने में ही गोपियों को बता कर उन्हें वेदों की ऋचाएँ प्रमाणित करना। ग्रंथ समाप्ति।

No. 316(*b*). Bhramaragīta by Prāgana. Substance—Country-made paper. Leaves—25. Size—$6\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—18. Extent—250 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1905 or A. D. 1848. Place of deposit—Raj Pustakalaya, Bhinaga (Bahraich).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ लिख्यते भ्रमरगीत राग बिलावल॥ आयसु दीन्हो सखा सुजान नहि। स्यंदन चढ़ो सिधारैः ब्रज वै सिद्धि रावरे आनहि॥ कैसे हैं जसुदा जननी जिन्ह पालि कियो परवीन। मोहि आकुल अब होति होइगी पर पूतन्ह आधीन॥ गहियो पांय नन्द बाबा के कहियो यह संदेसा। जो तुम कियो महा कृत हम सों गनि न सकत गुन सेसा॥ समाधान कीजेहु गोपिन्ह कर दीजेहु निर्मल ज्ञान। कहियो जोग जोगनि सो प्रागनि त्रिकुटा संजम ध्यान॥ १॥ मिष निजु गाढ़े करि गहियो। पालागन दोऊ भैया को मैया सों कहियो॥ हम हैं तिहरे पय के पाये सुरति करति रहियो॥ योग संदेस सुनाइ त्रियन को प्रीति नीति लहियो॥

End—ऊधो सो हों कहत निरंतर निज भगतन में रहतु हैं। वेद अतीत ताको सुत को यहै हमारो मतु है॥ हों निर्लेप निरंजन निरगुन कारन ता वपुधारैा॥ कर्म रहित में अपनी इच्छा प्रगटतु हों जुग चारो॥ देह अदेह तको मति कोऊ ज्ञान दृष्टि कों कोऊ॥ छांडे देह बहुरि नहिं पै हैं जनमत जग में सोऊ॥ यह मत हैं देवन कों दुर्लभ गुप्त हिय में राखो। प्रागनि ता सों फेरि मिलोंगो दये एकादश साखो॥

इति श्री प्रागनि कृत भ्रमरगीत समाप्तः॥

बरवै कातिक शुक्ल एकादसि मंगलवार। बारह सै अरु छप्पन सन तब आर॥ सुभ मस्तु लिख्यते अर्जुन सिंह हाड़ा पठनार्थ पाड़े नैपाल राम के॥ इति।

No. 316(c). Bhramara gíta by Prāgana. Substance—Country-made paper. Leaves—45. Size—6½ × 5 inches. Lines per page—14. Extent—350 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1269 Fasli or 1852 A. D. Place of deposit—Śrī Ṭhākura Guruprasāda Siṁhajī Bisen, Guṭhawā, District Bāhrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ कृष्णा ना च गते नितान्त मधुना मृद् भक्षिता स्वेक्षया । सत्यं कृष्ण क एव माह मुशलो मिथ्यांव पश्याननम् ॥ व्या· दहोति विदारिते च वदने दृष्टा समस्तं जगत् ॥ माता तत्र जगाम विस्मय पदं पायोत्सवः केशवः ॥ १ ॥

No. 316(d). Bhāwaragita by Prāgana. Substance—Country-made paper. Leaves—25. Size—8 × 4 inches. Lines per page—16. Extent—300 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṁvat 1893 or A. D. 1836. Place of deposit—Ṭhākura Śiva Prasāda Siṁha, Village Kaṭailā, Post Office Fakharpur, District Bahrāich (Oudh).

No. 316(e). Bhramaragīta by Prāgana. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—9½ × 5½ inches. Lines per page—32. Extent—252 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī Date of manuscript—Saṁvat 1949 or A. D. 18?2. Place of deposit—Paṇḍita Kedāra Nātha, Uttarapārā, Rāe Barelī.

Beginning—प्रथम के पृष्ट नहीं हैं ।

राषत हो कुसुमन पर कुलिसन विहित विचारत नाहिं ॥
यक तो हम पर विरह व्यापि भो प्रागनि अगम असूझ ।
सो मूदत हो जोग जंत्र दै वाउ तुम्हारो बूझ ॥ १८ ॥
मधुकर यह विपरीत कहत हो ।
हो तुम चतुर चतुर मथुरा पुर चतुर समाज रहत हो ।
दीपक वरै वारि कै नाये बुझै अनल घृत धार ।
तव कबहूं वृज की जुवतिन सों परै जोग बूत पार ॥

जोगी जोग त्यागि रस भुगवै भोगी भस्म लगावै ।
तब हमहूं जोगिनी वेष धरि अलष निरंजन ध्यावै ॥
निबहै नहि निर्गुण नारिन सों सुनैा मतैा मत सोका ।
देषो सुनी कहूं यह प्राननि चलत नोर विन नैाका ॥ १९ ॥

No. 317. Rāmāyaṇa Nāṭaka by Prāṇachanda Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—9 × 7 inches. Lines per page—32. Extent—2,880 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Nāgarī Prachāriṇī Sabhā, Bahrāich (Oudh).

Beginning—

लंका देखि पवन सुत आवहु । जियत जानकी आनि सुनावहु ॥
तेहि पाछे हम रचहिं उपाई । श्रो करिहै सुग्रीव सहाई ॥
लंका दानो अति बल वोरा । क्रोध निवारि कियेहु चित धोरा ॥
आपनि रक्ष्या कियेहु संभारो । वाद वेवाद करेहु जनि भारो ॥

दोहा—सीता सों अस भाखेहु मन जनि होहु अधोर ।
आवउ राम सयन रचि औ लछिमन रनधोर ॥ १३३ ॥

औ अस कहेउ पंज हम लोन्हा । रावन वध्या प्रतिज्ञा कीन्हा ॥
यह निति प्रान रहै घट माहो । नत तुव मिलन कहां हम काहां ॥
तुम बिनु अस हों भयो वियोगो । परम तत्व जस चितवे जोगो ॥
सोभा तजि गे आठो अंगा । मनि गवाई जस फिरै भुअंगा ॥
अंधरे लकुटो मनहु विसारो । औ ढूढत फिरि हाथ पसारो ॥
धनिक गरुअ कै सव जग जाना । धनहि गये तृन तुल्य समाना ॥

End—हांक्यो रथ आगे कहा धनुक हाथ लै वान ।
सनमुख रहै न बांदर देखिअ काल समान ॥ ३३०

आइ गयो कपि दल सव पेलो । जेमि मंछ सिंधु कर केलो ॥
तव सुग्रीव टौन रन हांका । क्रोधवंत ह्वै रावन ताका ॥
रावन कीन्ह सो दिढ़ कै ठाना । कपि के हृदय लाग संधाना ॥
अंगद हृदै लाग जब वाना । भेदहु बोस बान हनुमाना ॥
आठ वान मारेसि जमवन्ता । औ मारेसि नलनील तुरंता ॥
तव रघुपति कहं मारै ताका । आगे दोन्ह भभोछन हांका ॥
देखि भिभोछन दैत रिसाना । काल समान लोन्ह कर वाना ॥
मार्यैा वान दइत परचंडा । लछमन काटि कोन्ह सतखंडा ॥

निफलबान भो दइत रिसाना । ब्रह्मक दत्त लीन्ह कर बाना ॥
तीक्षन बान आउ परचंडा । सो रघुनाथ कीन्ह सतखंडा ॥

दोहा ॥ जूझ भयेउ दूनहु दलन बरनत बरनि न जाय ।
प्रलैकाल जल बुन्हरे घन गरजै घहराइ ॥ ३३१ ॥

वर्षहि बुंदवान चहुंओारा । चमकि षर्ग जनु बीजक जोरा ॥

Subject—हनुमान जी का सीता जी के खोजने के लिए समुद्रतट पर जाना और समुद्र का दोनों सिरों पर पहाड़ तयार कर देना, लंका निरोक्षण, सीता रावण संवाद । दोहा । १३२—१५३ तक । सीता हनुमान संवाद, और उनका अशोक वाटिका उजाड़ कर, लंकादहन कर लैाट आना । दे।० १५३-१७३ तक । हनूमान राम संवाद, विभीषण रावण संवाद, विभीषण का राम की शरण जाना, सेतुबंध वर्णन । दे।० १७४—१९७ तक । सुकसारन का सेतु निरीक्षण, अंगद रावण संवाद, दे।०—१९२—२९२ मंत्री और रावण संवाद, मंदादरी और रावण संवाद, वानरों की चढ़ाई, रावण का गुप्तचरों को राम की सेना की दशा देखने को भेजना, दोनो सेनाओं का युद्धारम्भ और मेघनाद का राम की सेना को नागफांस में बांधना । दे।० २९३—३१४ तक । इन्द्रादि का घबड़ा कर रावण की शरण जाना । गरुड़ का आना और नागफांस का काटना, प्रशस्त और नीलयुद्ध और प्रशस्त का मारा जाना । दे।०—३१५—३२५ तक । मंदादरी रावण संवाद, महोदर अकंपन और कुंभकर्ण का युद्ध करना, लक्ष्मण को शक्ति लगना, राम का विलाप और हनुमान का औषधि लाना, फिर युद्ध होना और रावण का घालय होना, दे।०—३३६—३५१ तक । कुंभकर्ण और राम युद्ध वर्णन । दे। ३५२—४०० तक, हनुमान द्वारा त्रिशिरा, अकंपनादि वध, लक्ष्मण द्वारा अतिकाय वध, मेघनाद का सब को मूर्छित करना, मेघनाद वध दे।० ४०१—४२३ तक । अहिरावण वध । दे।०—४२४—४५१ ॥ तक दोनो सेनाओं का युद्ध । दे।० ४५२—४५८ दोहे तक ।

अपूर्ण ।

No. 318. Añjira Rāsa by Prāṇanātha. Substance-Country-made paper. Leaves—452. Size—11 × 9½ inches. Lines per page—27. Extent—24,080 Anushṭup Ślokas. Appearance—Clean. Written partly in verse and mostly in prose. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1751 or A. D. 1694. Place of deposit—Amiruddaulah Public Library, Kaisarbāgh, Lucknow.

Beginning—निज नाम श्री कृष्ण जी ॥ अनाद अक्षरातीत ॥ सो तो अब जाहिर भये सब विधि वतन सहीत ॥ १ श्री देवचन्द जी सत छे ॥ सदां सव सुखना दातार ॥ वीन तड़ी ए कवल्ल मा भुज अगनानी, अविधार ॥ १ ॥ बाणी बाला जीतणी अलगी जे संसार । निराकार नेपारथी ॥ ते पारने वली पार ॥ अंग उतकंठा उपनी मारे करवो एह विचार ॥ ए बाणी मथी माहे थी तेवोछे सरव सार ॥१॥ इनसार माहे कै मन सुख ॥ तेह निरने करूं निरधार ॥ ए सुख देउ साथ ने ॥ नोह अंगना नार ॥ ज्यारे ते सुख अंगमा आवसे ॥ त्यारे छूटी जाए विकार ॥ आयो आनन्द अखंड घर तणो । श्री अक्षरातीत भरतार ॥ ५ ॥ श्री श्री राम श्री किताव अंजोर की लिखी है ॥ जो बानी प्रवोध पुरी हवसा में उतरी है सो सुरू ॥

Middle—हरद्वार ठाये रे उठाये तपसी तीरथ ॥ गै। वध कै औ विघन ॥ ऐसा जुलम हुआ जग में जाहिर ॥ जग में जाहिर ॥ तो भी कमर न बांधी किन ॥ सुर ने केहे लापरे सेवा करें असुर की ॥ ज्यें। दारू बाए उड़ावे देह ॥ हिन्दू ना मेरे सिन्यातिन को होए खड़ी ॥ एसा कुलोए कीया के हेर ॥ १४ ॥ प्रभु प्रत मारे गज पाउ बांध के ॥ घसीट के खंडित कराए ॥ करम बांदीं ताकी करके तापर मलक चलाए ॥ १५ ॥ असुरें लगायो रे हिन्दू पर जेजिया ॥ वाको मिले खान पान जो गरीब न दे सके जोजिया ॥ ताए मार करे मुसलमान ॥ सास्त्रों आवरदा कही कलयुग की ॥ चार लाख बतीस हजार ॥ काटे दिन पावें लिखा यांते सास्त्रों ॥ सो पाइए ग्रन्थ के विचार ॥ १७ ॥ सोलेसै लगेरे साका साल वाहन का ॥ संवत सत्र मे पंतीस बेठाने साकोर विजोयाभिनंदका ॥ यू कहे सास्त्र ग्रैार जोतीस ॥ १८ ॥ (पन्ना १४२)

कलजुगे चेत अंत के सब कोए ॥ लोक बनावे अजहर अंत ॥ अरथ अंदर का कोई ना पावे ॥ बारे अरथ वाहिर के ले डूबत ॥ ए बात सुनी रे बुंदेले छत्रसाल ने ॥ आगे आये खड़ा ले तरवार ॥ सेवाने लईरे सारो सिर खेंच के ॥ साईपकीया सिन्धापती सिरदार ॥

End—ए गत साहिबे छत्रसाल सों कही ॥ घर ईमाम विलंदी कुता को दई ॥ ९-॥२३। ५२५ ॥ नोमो आगे अरफा ईट कही । ले दसमो आगू सब लीला भई ॥ मजले सव आपार हीमध्य ॥ सो कहे कुरान विवेक कै विधि ॥ ए आपारहो बीच बड़ो विस्तार ॥ प्रगटे बिलंद सब सिरदार ॥ सब न्यामतें सिफतें दई सितार ॥ उतरी यां आए तें उस्तेवार ॥ छिप्यां था बुजुरक वखत ॥ जाहिर हुआ रोज दिखाए क्यामत ॥

आपारहो सुख ले चले सिरदार ॥ पीछे बारैं में जलेव बदकार ॥ जिन पाई राह रोज क्यामत सो उठे फजर के नूर वखत फजर पीछे जब आया दिन तब

तो तोबा तोबा हुई तन तन ॥ तब तो दरवाजे मंद के गया । पीछे तो नफा काहू को ना भया ॥ सब जले जलबा अजाजोल जो ए उठाया असराफील ॥ एक सूरें उड़ा सके दोए ॥ दूसरे तेरे में काइम कीए ॥ यूं क्यामत हुई जाहिर दिन ॥ महमदे कण उयत रासन है ॥

६ । २४ ॥ ५३१

Subject—इस ग्रन्थ में निम्नलिखित पुस्तकें सम्मिलित हैं :—

१—श्री रासलीला किताब अंजोर	पन्ना	१ से २४ तक	छन्द	९१२
२—श्री प्रकास (हिन्दुस्तानी जंबूर)	,,	२४ से ५७ ,,	,,	११८४
३—षट ऋतु	,,	५७ से ६१ ,,	,,	१७७
४—बारामासी	,,	६१ मे ६४ ,,	,,	५३
५—श्री कलस (तौरेत)	,,	६४ मे ८१ ,,	,,	७६९
६—श्री सनंधे	,,	८२ से १२३ ,,	,,	१६०३
७—श्री कीर्तन (पुरानी बानी)	,,	१२४ से १८० ,,	,,	२०६८
८—किताब खुलासा की	,,	१८१ से २०७ ,,	,,	१०१९
९—श्री खिलवत (गैब की सूरत)	,,	२०८ से २३६ ,,	,,	१०७४
१०—श्री परिकमा बड़ी (अर्स की)	,,	२३६ से २९९ ,,	,,	२४८०
११—आठो सागर	,,	३०० से ३२९ ,,	,,	११२८
१२—बड़ा सिंगार	,,	३२९ से ३८७ ,,	,,	२२१०
१३—सिंधी बानी	,,	३८७ से ४०१ ,,	,,	५०४
१४—मारफत सागर	,,	४०२ से ४२७ ,,	,,	१०३४
१५—छोटा कयामत नामा	,,	४२७ से ४३४ ,,	,,	२१७
१६—बड़ा कयामत नामा	,,	४३४ से ४४७ ,,	,,	५३१

विशेष विवरण के लिये इस रिपोर्ट के पृ० ४ से ९ तक देखो ।

No 319 (*a*). Vaidyadarpaṇa by Prāṇanātha. Substance—Country-made paper. Leaves—315. Size—$13\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{4}$ inches. Lines per page—20. Extent—7,875 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1898 or A. D. 1941. Place of deposit—Paṇḍita Śivarāma Śāstrī, Kharagapur Kusha, District Rāe Barelī.

Beginning—श्री गणेशायनमः नमस्कृत्य गणेशानं महेशानं महेश्वरीं ॥ वैद्य दर्पन भाषण्ये वैद्यानां हित काम्यया । चित्रानुभूता ये योगा ये च सद्वैद्य संमताः ॥ तएवात्र निगंद्येते न तरै वैद्य दर्पणे ॥ स्वर्णाद्या धातवो येस्युः तथा

तदुप धातवः रसाश्चो परसाश्चैव जावंता जगतीतले ॥ रत्नानि चोपरत्नानि 'वषाण्युप विषा निध ॥ शोधनं मारणं तेषां वक्ष्याम्यादौ समासतः ॥ तैलपाक विधिश्चैव तथा तौस प्रमानकं ॥ युक्तायुक्त विवेकानि खंडे प्रथम ए यहि ॥ तदुतरं ज्व रादोनां कथयामि चिकित्सितं ॥ तत्र धातूनां संख्या माह ॥ स्वर्ण रौप्यं च ताम्रं च रंगं यसद मेव च ॥ शिशं लैाहं च सप्तैते धातवः कथिता बुधैः ॥ अथ सप्त धातूनां शोधणां ॥ तैले तक्रे च गोमूत्रे कांजि के च कुलस्थके ॥ त्रिधा त्रिधा विशुद्धिः स्यात्स्वर्णादीनां समासतः ॥ केचि द्वदंति रंभाया मूलवारिणि सप्तया । शुद्धं तिधातवाः सर्वे तप्त तप्त विपेचनात् ॥ टीका ॥ एक तोले सुवर्ण के पत्र कंटकावेधी आठ पत्र करै ॥ एही भांति रुप के ॥ एही भांति तावें के ॥ और लोहे के टुकरे कै लेइ ॥ सो आगि मां धौकि धौकि बुझावै वार तीनि प्रथम तिल के तेल मा फेरि माठा मा फिरि गोमूत्र मा फेरि कांजी मा ॥ फेरि कुरथी के काढ़ा याके चित केला के पानी मा बुधावै सात वार तौ सातौ धातु इ शुद्ध होइ ॥

End—न कुर्य्यात्पंच कर्माणि रक्त श्रावात दाहनम् ॥ पाचनं स्निहनं स्वेदं वमन शोधनं क्रमात् ॥ इति श्री पारानाथ कृते वैद्यदर्पनो नाम ग्रन्थ समाप्तः शुभ मस्तु ॥ सम्बत १८९८ ज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्षे तिथौ द्वितिय यङ्क भृगवासरे ॥ जस प्रति देष तसि लिष मम देष्पो न दियते ॥

Subject—पृ० १—सप्त धातु संख्या, सप्त धातु शोधन, सप्तधातु मारण । पृ० २—सप्तधातु पृथक पृथक मारण, स्वर्णगुण, रौप्य मारण । पृ० ३—ताम्र मारण । वंग मारण, रांग को निरुथ भस्म क्रिया । पृ० ५—जस्ता मारण, सीसा मारण, पृ० ६—लोहा मारण । पृ० ७—स्वपमाग्निसार की क्रिया । पृ० ८—लोह कीट शोधन मारण । पृ० ९—मंडूर करण । सप्त उपधातु नाम शोधन, पृ० १०—कांस पीतल मारण, स्वर्ण माक्षिक, रौप्य माक्षिक शोधन, स्वर्णमाक्षिक मारण, पृ० ११—तूतिया शोधन । पृ० १२—सेंदुर शोधन, शिलाजीत शोधन, खपरिया शोधन । पृ० १३—पारद शोधन, ईंगुर से पारा निकालने की क्रिया, पृ० १४—षड्गुण गंधक जारन विधि, पौरा की पीठी बनाने की क्रिया, पारद मारण, पृ० १५—रसकपूर की क्रिया, पृ० १६—परसानाम शोधन मारण, गंधक उत्पत्ति शोधन । पृ० १७—गंधक अर्क पातन, हिंगुल शोधन, मारण, पृ० १८—हरताल शोधन मारण । पृ० १९—हरताल का सत्त पातन विधि । पृ० २०—२३ तक—मैनशिल शोधन मारण । अभ्रक शोधन मारण, पृ० २४—अभ्रक से पारा निकालने की क्रिया, चन्द्रोदय की क्रिया, अभ्रक सत्त पातन विधि । पृ० २५—कैसुआ का सत्त निकालने की विधि । पृ० २६—सब सत्त निकालने की विधि, सत्त मारण, वराटी शोधन, रत्नोपरत्न शोधन । पृ० २७—वज्र शोधन, मारण, मूंगा

मोती मारण, वैक्रांत शोधन, विषोप विष शोधन मारण, सुमिल शोधन। पृ० २८—धतूरा शोधन, कुचिला शोधन, अफीम शोधन, उपविष शोधन, जमालगोटा शोधन, नख शोधन। हींग कपूर शोधन, घृत शोधन, पृ० २९—पुराना घृत माह। पुराना गुड़ माह, तैल शोधन, तैल द्रव्य पाक विधि, तैल मोम निर्णय। पृ० ३०—तैलपाकेस्त्रष्टौ मूत्र निर्णय, देशव्यवस्था माह। पृ० ३१—परिभाषा तौल प्रमाण युक्तायुक्त विचार। पृ०—३२—भैषज्य काल माह, जोगनी गण, गजपुट प्रमाण, मध्य पुट, लघु पुट माह, पृ० ३३—यंत्र प्रकार वर्णन। अग्निक्रम वर्णन। भावनाक्रम वर्णन, सृक्त बनाने की क्रिया, कांजी कलहंस कांजी वर्णन। पृ० ३४—सरबत क्रिया, पृ० ३५—पंचामृत वर्णन, त्रिक्षार वर्णन, क्षारार्क वर्णन, पंचलवण त्रिलवण वर्णन, त्रिजात चातुर्ज्जात वर्णन, पंचपल्लव, पंचवल्कल, पंचकषाय वर्णन, दशमूल, पंच अम्ल वर्णन। मूल पंचाल पंचक वर्णन, पृ० ३५—हीनवीर्य्य की औषधि, हीनवीर्य सेंदूर रस, नाग सेंदूर महा सेंदूर। पृ० ३६—स्वर्ण सेंदूर चन्द्रोदय, मकरध्वज रस, पृ० ३७—महाचन्द्रोदय, पृ० ३८—खगेश्वरी गुटिका, पृ० ३९—मृत वज्रस्य गुण। पृ० ४०—वज्रेश्वरी रस, पृ० ४०—वज्रधार रस पृ० ४१ हीनवीर्य कामदेव वटी। पृ० ४२—कामदेव रस। पृ० ४३—पूर्ण चन्द्रोदय रस, पृ० ४४—अनंग सुंदरी वटी, मदन मंजरी वटी, पृ० ४५—कामदेव चूर्ण। पृ० ४६ ४७ ४८ हीन वीर्यपाक। प्रथम खंड समाप्त।

पृ० ४९—नाड़ी, मूत्र परीक्षा, पृ० ५०—साध्यासाध्य लक्षण। पृ० ५१—५९ सर्व ज्वर सामान्य चिकित्सा। पृ० ६०—७४ तक। विशेष ज्वर चिकित्सा, वात, पित्त, कफ व्याधि चिकित्सा, पृ० ७५—८४ तक। त्रिदोष सन्यपात चिकित्सा। पृ० ८५—८९ तक, विषमज्वर चिकित्सा। पृ० ९०—९६ तक, जीर्णज्वर चिकित्सा। पृ० ९७ आगंतुक रोग चिकित्सा। पृ० ९८ भूतज्वर चिकित्सा। पृ० ९९—१०९ तक, अतीसार चिकित्सा, पृ० ११०—११३ तक, संग्रहणी रोग चिकित्सा। पृ० ११४—१२० तक, अर्शरोग चिकित्सा। पृ० १२१—१२३ तक, मंदाग्निरोग। चिकित्सा, पृ० १२४—१२५ तक, भस्मक रोग चिकित्सा। अजीर्ण रोग चिकित्सा। पृ० १२६—१२८ तक, विशूचिका रोग चिकित्सा। पृ० १२९ कृमिरोग चिकित्सा। पृ० १३० पांडुरोग चिकित्सा। पृ० १३१ कमलारोग चि०। पृ० १३२—१३५ तक, शोथ रोग चिकित्सा। पृ० १३६ मेदरोग चिकित्सा। पृ० १३७—१४० तक, कृशाङ्ग पुष्टि करण। पृ० १४१—१४५ तक, रक्तपित्त रोग चिकित्सा। पृ० १४६—१५१ तक, राजरोग चिकित्सा, पृ० १५२—१५३ तक। राजरोग भेद वर्णन। कासरोग चिकित्सा, पृ० १५४ स्वासरोग चिकित्सा, पृ० १५५ हिचकी रोग चिकित्सा। पृ० १५६—१५७ तक। स्वरभंग चिकित्सा, पृ० १५८ अरुचि रोग चिकित्सा।

पृ० १५९ क्षयीरोग चिकित्सा। पृ० १६०—१६१ तक, तृषा रोग चिकित्सा, पृ० १६२ मूर्छा रोग चिकित्सा। पृ० १६३ भ्रमरोग चिकित्सा, तन्द्रारोग चिकित्सा, निद्रादाह रोग चिकित्सा। पृ० १६४—१६७ तक, उन्माद रोग चिकित्सा। पृ० १६८ मृगीरोग चिकित्सा। पृ० १६९—१८० तक, वात व्याधिरोग चिकित्सा। पृ० १८१—१८५ तक। कंपरोग, चिकित्सा। पृ० १८६ आमवात चिकित्सा। पृ० १८७—१८८ तक। कफरोग चिकित्सा। पृ० १८९ पित्तरोग चिकित्सा। पृ० १९० अम्लपित्त रोग चिकित्सा। पृ० १९१ रक्तपित्त रोग चिकित्सा, पृ० १९२—१९५ तक। शूलरोग चिकित्सा। पृ० १९६ उदावर्त रोग चिकित्सा। पृ० १९७ गुल्मरोग चिकित्सा। पृ० १९८ उदररोग चिकित्सा। पृ० १९९ कूष्मांड तार। पृ० २०० प्लीह रोग चिकित्सा, पृ० २०१ जलोदर चिकित्सा। पृ० २०२ अष्टवृद्धरोग चिकित्सा। पृ० २०३ नागार्जुन हरीत। पृ० २०४ हृदिरोग चिकित्सा। पृ० २०५-२१२ तक। मूत्र कृच्छ, मूत्राघात, स्मरी और प्रमेह चि०। पृ० २१३ कुरंड रोग चिकित्सा। पृ० २१४ अंत्र वृद्धि रोग चिकित्सा। पृ० २१५—२१६ तक, गंडमाला रोग, चिकित्सा। पृ० २१७ ग्रंथि रोग चिकित्सा। पृ० २१८ अर्बुद रोग चि०, पृ० २१९—श्लीपद रोग चि०। पृ० २२० विद्रिध रोग चिकित्सा। पृ० २२१ सर्वव्रण पारदादि घृत। पृ० २२२ सर्व फोड़ों की औषधि, शिर के फोड़ों, गर्मी वल्मीक रोग चिकित्सा, पृ० २२३—२२४ तक। भगंदर रोग चि०, पृ० २२५ शिश्न व्रण चि०। पृ० २२६ भग्न व्रण चिकित्सा, पृ० २२७ अग्नि से जलने की चिकित्सा। पृ० २२८-२३२ तक। बलात गर्मी की चिकित्सा। पृ० २३३—२३४ सूक रोग चि०। पृ० २३५ लिंगार्श प्रभृति नाम शुक्र दोष वर्णन। पृ० २३६ शीत पित रोग चि०, पृ० २३७ उदर्द रोग चिकित्सा, विपादिका, विचर्चिका रोग चिकित्सा। पृ० २३८ पैर कुष्ट रोग चिकित्सा। पृ० २३९ बहिरी की दवा। पृ० २४० कुष्ट लक्षण चर्म रोग चिकित्सा। पृ० २४१ कपाल कुष्ट चिकित्सा। पृ० २४२ सर्व कुष्ट लक्षण चिकित्सा। पृ० २४३—२५३ तक मांसगत कुष्ट चिकित्सा। पृ० २५४-२५५ तक। चित्र रोग चिकित्सा। पृ० २५६ विसर्प रोग चिकित्सा। पृ० २२७ विस्फोट रोग चिकित्सा। पृ० २५७ विस्फोट रोग चि०। पृ० २५८ मसूरिका रोग चिकित्सा, मुख रोग, गल रोग चि०। पृ० २५९ दंड पीडा चिकित्सा। मुखपाक रोग चि०। पृ० २६० गले की दाह रोग चि०। पृ० २६१ उपजिह्वा चिकित्सा, झांई रोग चिकित्सा। पृ० २६२ नासा रोग चिकित्सा। पृ० २६३ प्रतिस्याय रोग चिकित्सा। पृ० २६४—२६७ नासा, नेत्र रोग चिकित्सा। पृ० २६८ तिमिर रोग चिकित्सा, सनपात रोग चिकित्सा, पृ० २६९—२७० तक। नेत्र परिवार रोग चि०। कर्ण रोग चिकित्सा। पृ० २७१ ग्रीवा रोग

चिकित्सा। पृ० २७२, कर्ण कीट चिकित्सा। पृ० २७३—२७५ तक। शिररोग चिकित्सा। पृ० २७६ गंडारोग चि०, मरंपिका रोग चि०। पृ० २७७—इन्द्रि लुप्त रोग चि०। पलित रोग चि०। पृ० २७८-२८१ तक, प्रसूत रोग चि०, लक्षण। पृ० २८३ प्रदररोग चि०, पृ० २८४ सोमरोग चि०, पृ० २८५ स्तनपाक रोग चि०। पृ० २८६ स्तन दृढ़ी करन औषधि। पृ० २८७ योनिकामद चि०। पुष्प रोग चि०। पृ० २८८ गर्भपात चि०, गर्भस्थिति चि०। पृ० २८९ शुष्क गर्भ चि०,। गर्भ निरोध, दग्ध, नष्ट चि०। पृ० २९० जन्म वंध्या, काक वंध्या, मृत वत्सा को चिकित्सा। पृ० २९१ रोमनाशन औ पधियां। पृ० २९२—२९६ तक, वाल रोग चिकित्सा। पृ० २९७—३०० तक। पूतना विधान वर्णन, पृ० ३०१ विप चिकित्सा, पृ० ३०२ उपविष चिकित्सा, सर्व विप पर औषधि। पृ० ३०३—३०६ तक। मद्यविकार चिकित्सा, सर्व विप चिकित्सा। पृ० ३०७ कनखजूर विप चिकित्सा। पृ० ३०८ मम्मा, मक्षिका, म्वान, शृगाल, व्याघ्र काटे की चिकित्सा। पृ० ३०९—३११ वाजी करण औषधियां। पृ० ३१२—स्थूल करण चिकित्सा। पृ० ३१३—स्त्री द्रावन विधि। पृ० ३१३—३१५ तक। वमन, विरेचन, श्रावविधि समाप्त।

No. 319(*b*). Vaidyadarpaṇa by Prāṇanātha Bhaṭṭa. Substance—Country-made paper. Leaves—168. Size—$8\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—28. Extent—2,940 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Ishvari Nātha Vaidya, Uttarpārā, Rae Bareli.

Note—शेष विवरण नं० ३१९ (अ) के अनुसार।

No. 320. Kalakī Avatāra by Prāṇanātha Trivedī. Substance—Country-made paper. Leaves—80. Size—10×5 inches. Lines per page—16. Extent—1,280 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṁvat 1760 (1762 ?) or A.D. 1703 (1765 ?). Place of deposit—Paṇḍita Bhagavatī Prasādājī, Village Thailiyā, Post Office Khairighāṭ, District Bahraich (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः॥ अथ कलकी अवतार कथायां॥ दोहा॥ एक रदन करिवर वदन सिद्धि सदन सिवलाल। विघन विनासन विरद सिर मूषासन गुन माल॥ वारक वारन वदन कोह सूझत ज्ञान त्रिकाल। जैसे

दीपक देहरी भीतर अजिर सुकाल ॥ छंद जल हरन ॥ भवानि विंधवासिनी उदंड पाप नासिनी सुबुद्धि सिद्धि को भरै ॥ करै महीप रंकते प्रमान मेरु पंकते हरै कि नास संकते कटाछते बहू ठरै ॥ जपै निसंक नाम को बढ़ै विनोदधाम को पुजै समस्त काम को अगाध सिंधु हू तरै ॥ महागुमान गंजिनी विसाल सोक भंजिनी नमामि प्रान रंजिनी कृपाल पाहि किंकरै ॥ छंद ॥ भवानि तेज तारिनी अनंत रूप कारनी महा विमोह दारिनी धरे कृपान पानि मैं ॥ प्रचंद रूप चंडका अदेव वृन्द षंडिका त्रिकाल भेद मंडिका सुसिद्धि रिद्धि षान मैं करालरूप कालिका अनेक रोग दालिका विसाल मोद आलिका दयाल मोक्ष दानि मैं ॥ अभंग राति हंस सो विजै विभूति अंस सो सरोज जा प्रसंस सो नमामि प्रान जानि मैं ॥

End—बजत जोर महा भट भारे । परत मुंड करि रुंड निनारे ॥
हरि सनमुष बाजत करि रोषू । कटत जात षल पावत मोषू ॥

दोहा—कटत कटक झाड़त मद हरि सनमुष मिटि जात ।
जथा न आवत अवनि लौ तारे गिरत विभात ॥

दोहा—रवि विरंच षल लोह मम पावक मिलि असिवान ।
जाय बतावत बात लषि जल सरूप भगवान ॥
सालि समर महा बलवाना । निज प्रभु सासन चलत सुजाना ॥
आइ गयो संमर मनि वोरा । बरषे वीर विसिष घन घोरा ॥
गहि बाल निकर षल बाजे । संभरेस के हरि सम गाजे ॥
केवल सालिम षान उवारो । अपर सीस काटे महि डारो ॥
भट काटि साहि दिन मानि के भगवान सेष निमेष मैं कहि
बहुरि सालिम षान तट हरि चरित अलष अलेषि मैं ॥
साली मन तजु विन काज तनु तोहि राषि हैं केसव कहो
षल कुल विनासन ता सहित तू सो निकट सगरो सहो ॥ अपूर्ण ॥

Subject—कलकी अवतार को कथा । देवों को प्रार्थना । म्लेच्छ और कलकी भगवान का युद्ध ।

No. 321(*a*). Vyaṅgārtha Kaumudī by Pratāpa. Substance Country-made paper. Leaves—86. Size—11½ × 5½ inches. Lines per page—7. Extent 600—Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1916 or A.D. 1857. Place of deposit—Paṇḍita Rāmadeo Brahma Bhaṭṭa, Village Nunarā, Mauza Lāmbā, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—कौमुदी १ ॥ श्री गणेशायनमः ॥ अथ व्यंग्यार्थ कौमुदी लिष्यते ॥ दोहा ॥ गणपति गिरा मनाइ कै सुमिरि गुरुन के पांइ ॥ कवित रीति कछु करतु हों व्यंग अर्थ चितलाइ ॥ १ ॥ वाचक लक्षक व्यंज को सक तीन विधि मान ॥ वाच लक्ष अरु व्यंग तहं अर्थ त्रिविधि पहिचान ॥ इनके लक्षन लक्षि वहु रस ग्रंथन ठहराइ ॥ ताते ह्यां वरने नहीं वढ़े ग्रंथ समुदाइ ॥ जहं शब्द ही महं अर्थ को होइ जो अधिक प्रवृत्ति ॥ चमत्कार अतिशय जहां जानि व्यंजना वृत्ति ॥ व्यंग्य जीव है कवित में शब्द अर्थ गनि अंग ॥ सोई उत्तम काव्य है वरनै व्यंग्य प्रसंग ॥ करि कवितन सो वीनती सुकवि प्रताप सहेत ॥ की व्यंगार्थ कौमुदी व्यंग्य जानिवे हेत ॥ सूचनिका ॥ कही व्यंगते नाइ कर पुनि लक्षना विचारि । ता पीछे वरनन करौं अलंकार निरधार ॥ व्यंजना लक्षण ॥ यथा :— वाचक के सन्मुख रहै अंतर औरै अर्थ ॥ चमत्कार निकरै जहां कही सो व्यंग समर्थ ॥ तिय कटाक्ष लो व्यंजना कहत सकल कविराइ ॥ जहां शब्द ते अर्थ बहु अधिक अधिक दरसाइ ॥

End—अथ धृष्ट नायक-यथा-रितुराज के आगम लोग सवै सोगनै गरुवे वड़ भागन में ॥ इनके मत लैकै मलंद सदा चित आइ कै गुंजत आंगन में ॥ जिनके शुचि सुन्दर बोल सुनै मन होहि नहीं अनुरागन में ॥ कत कोकिल कीर किये विधि ने सपि बोलैं वृथा वन वागन में । व्यंग्य-नाइका को उक्ति कोकिल वन में बोलत है यह वृथा झूठे वचन वोलत है, ए भंवर समान हैं तितही आंगन में आइ के खरे रहत हैं सो यह विधि नायक की धृष्टता जाहिर करो ताते धृष्ट नायक । नायक की निन्दा तिय कहै तहां धृष्ट नायक कवि कहैं । कोकिल उपमान के वर्णन ते गैाणी साध्यावसान अलंकार । कोकिल की निन्दा से नायक की निन्दा निकसो ताते व्याज निन्दा अथवा कोकिल को वर्णन प्रस्तुत ताते नायक की निन्दा प्रस्तुत प्रशंसा अलंकार ॥ दोहा ॥ सखि दूती दरसन दशा हाव भाव वहु और । याते नहिं वरणन करै, वरनै कवि सव ठौर ॥ व्यंग्य अर्थ अतिशय कठिन को कहि पावै पार । मम्मट मत कछु समुझि चित कीन्हों मति अनुसार यह व्यंग्यार्थ कौमुदी पढ़ै गुनै चितलाइ । ताको मत साहित्य को कछुक पंथ दरसाइ ॥ इति ॥

Subject—वंदना, वाचकादि का लक्षण, नायिका भेद, शक्ति लक्षणादि वर्णन, अलंकार । नायिकादि भेदों के साथ ही साथ व्यंग्यादि का वर्णन ।

No. 321(*b*). Vyaṅgārtha Kaumudī by Pratāpa Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—17. Size—12 × 8 inches. Lines per page—70. Extent—814 Anushṭup Ślokas. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of

manuscript—Samvat 1935 or A. D. 1878. Place of deposit—Ṭhākura Tribhuvana Siṁha, Village Saidapur, Post Office Nīlagām, Tahsīl Sidhauli, District Sītāpur.

End.—इति व्यंग्यार्थ कौमुदी प्रताप कृत सम्पूर्णम् ॥ अश्विन मासे कृष्णपक्षे तिथौ परिवायां गुरुवासरे श्री संवत १९३५ यह पुस्तक श्री ठाकुर हेमचल सिंह साहेब हेत लिषी दरबारीलाल कायस्थ निवासी चिनहुट ॥

No. 321(*c*). Vyaṅgārtha Kaumudī by Pratāpa Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—40. Size—8 × 6 inches. Lines per page—40. Extent—800 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1882 or A. D. 1825. Place of deposit—Ṭhakura Lāyaka Siṁha, Village Bhagawānpur, Post Office Biswā̃, District Sītāpur (Oudh).

End—प्रसंसा ॥ अथ दोहा ॥ सांष दूती दरसन दसा हाव भाव वहु और याते नहिं वरनन करे वरनै कवि सब ठौर ॥ व्यंग अर्थ अतिसै कठिन को कहि पावै पार ॥ मम्मट मत कछु समुझि चित कीन्हों मति अनुसार ॥ यह व्यंग्यार्थ कौमुदी पढ़े सुनै चितलाय । ताको मत साहित्य को कछुक अर्थ दरसाय ॥ संवत ससि वसु वसु सुद्रै गनि अषाढ़ को मास किय व्यंग्यारथ कौमुदी सुकवि प्रताप प्रकास ॥ विगरो देत सुधारि जे ते गनि सुकवि सुजान । वनी विगारत जे मुषनि ते कवि अधम समान ॥ इति श्री व्यंग्यार्थ कौमुदी समाप्तं ॥ श्री संवत १९५४ मार्ग शुक्ल प्रतिपदायां गुरुवासरे लिषितं मिदं पुस्तकं वल्देव मिश्रेण वौना भागो वासस्थाने श्री राधा कृष्णमनमः श्री राधावल्लभो जयति राम रामायनमः ॥

No. 321(*d*). Vyaṅgārtha Kaumudī by Pratāpa Kavi. Substance—New paper. Leaves—16. Size—$7\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—28. Extent—168 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābū Padma Bakhsha Siṁhaji, Lavedapur, District Baharāich.

Beginning—अनखानी रहै आठौ जाम वरन सनातन बराई आनि भरती । रचि रचि वचन अलोक वहु भांतिन के करि करि अनख पिया को मन भरती ॥ कहैं परताप कैसे वसिए निकासिवे को भौन सुष चाहिए तऊ न नेक टरती ॥ निज निज मंदिर में सांझ ते सवेरे पोय मेरे केलि मंदिर में दीपक न

धरतो ॥ ३१ ॥ अपरंच ॥ सरस सुगंधनि सों अंगनि सिचावै करपूर मय वातिनि सों दीप उजियारतो । रचि रचि वानिक बनाय रोम रोसन की हौंसन परोसिन के जानि जिय जारतो ॥ कहै परताप अति चतुर चवाइनो ए चरचि चवाइनी के चोजनि विचारतो । रेज करि सौतिनि मजेज सों निकेत मांझ परपति हेज सेज सांझ ते संवारतो ॥ ३२ ॥

End—अथ धृष्ट नायक यथा ॥ ऋतुराज से आगम लोग सवै सो गनैं गहए वद भागन में । इनको मतलैकें मलिंद सदा नित आइ कें गुंजत आगन में ॥ जिनके सुचि सुंदर बोल सुनै मन होहि नहीं अनुरागन में । कत कोयल कूक किए विधि ने सखी बोलै वृथा वन वागन में ॥ ७८ ॥

दाेहा ॥
सखि दूती दरसन दसा हाव भाव वहु ओर ।
याते ना वर्णन कियो वरने कवि सब ठार ॥ ७९ ॥
विज्ञ अर्थ अतिसे कठिन को क.................. ।

No. 322(*a*). Amrita Sāgara by Mahārājā Sawāī Pratāpa Siṁha. Substance—Country-made paper. Leaves—248. Size—10 × 6 inches. Lines per page—48. Extent—8,928 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Himmata Siṁha, Mohallā Baḍā Kuwā̃, Rāe Barelī.

Beginning—पृ० ६० से प्रारम्भ ।

शस्त्र प्रहार से उपजो जो तृषा ताका जतन बकरा का रुधिर पीने से शस्त्र प्रहार की तृषा जाय १६ × अथवा बकरे के शोरबे मे सहत मिलाय खाय तो शस्त्र प्रहार की तृषा जाय १७ अथवा खीर में मिश्री मिलाय के खाय तो यह तृषा जाय १८ की ।

End—अथ इन छओं ऋतु में वायु पित्त कफ का संचय प्रकोप और शीत लिखते ग्रीष्म ऋतु में वायु का संचय वर्षा ऋतु में वाय का कोप × × ऋतु में वाय की शांति १ वर्षा ऋतु में पित्त की शांति × × × वसंत ऋतु में कफ का कोप.......तप में वाय पित्त कफ के प्र........में होय है और ये विना सम.......थवा वायु के कोप करने का............र यह विना समय हल की ।

Subject—पृ० ६०—६२ तक तृषा, मूर्छा, मोह भ्रम तन्द्रा की उत्पत्ति लक्षण जतन । पृ० ६३—७२ तक मदात्यय, उन्माद और मृगी उ० ल० ज० । पृ० ७३—८६ तक वात व्याधि का सर्व रोग शिरोग्रह, अल्प केशी, जंभाई अनुग्रह,

जिह्वास्तंभ, ह्रैले बोलै, गुंगापन, जोभ का रस ज्ञान, त्वचा शून्य, छर्दि रोग, वाहुक रोग, उर्द्ध बात रोग, अध्यमान रोग, प्रत्याध्यमान रोग, बातष्ठोला, प्रति तूनो रोग, खोड़ा पांगुला रोग, खल्लो रोग, अंतरा याम रोग, पक्षाघात रोग, निद्रा नाशक रोग। पृ० ८७—९१ तक—ऊरुस्तंभ आम बात पित्त कफ व्याधि रोगों के भेद उत्पत्ति लक्षण जतन। पृ० ९२—९८ तक बात रक्त शूल परिणाम अन्नद्रव जरन पित्त को उत्पत्ति लक्षण यत्न निरूपण। पृ० ९९—१०८ तक—हृद्रोग को उत्पत्ति लक्षण यत्न। पृ० १०९-१२२ मूत्र कृच्छ मूत्राघात, अस्मरो शर्करा, प्रमेह के भेद ल० उ० यत्न। पृ० १२३—१२७ तक मेद रोग, कार्श्य रोग, क्षोण रोग के भेद उ० ल० यत्न। पृष्ट १२८—१३४ शोथ रोग, अंभवृद्धि, अन्त्र-वृद्धि, गलगंड, कंठमाला अपचि ग्रंथि अर्बुद रोग के भेद उत्पत्ति ल० यत्न। पृ० १३५—१४८ तक—श्लोपद, विद्रधि, व्रण, शोथ, शरीर व्रण, वाय पित्त कफादिकों का आगंतुक व्रण शस्त्रादिकों का अग्निदग्ध व्रण ग्रंथि भग्न नाड़ो व्रण के भेद उ० ल० यत्न। पृ० १४९—१६१ तक भगंदर, उपदंश, लिंगर्श का रोग, कोढ़ के भेद उत्पत्ति ल० य०। पृ० १६२—१७२ शोत पित्त उदर्श कोढ़ उत्कोढ़, अमल पित्त, विसर्पवा, वाला बोदरी भागो रोगों के भेद उ० ल० यत्न। पृ० १७३—२१०—क्षुद्ररोग मस्तक रोग, नेत्र रोग कान, नाक मुख ओंठ, मसूढ़े, दांत जोभ तालू गला कंठ इन सब के रोग और भेद उत्पत्ति लक्षण यत्न। पृ० २११—२१५—स्थावर जंगम विष मात्र के भेद उत्पत्ति लक्षण यत्न। पृष्ट २१६—२२४ तक प्रदर रोग भेद उत्पत्ति लक्षण यत्न। पृ० २२५—२३२ तक वालकों के रोग भेद उ० ल० य० पृ० २३३—२३५ नपुंसकपने के दूर करने के ल० य०। पृ० २३६—२३९—पुष्टाई के यत्न पृ० २४०—२४८ तक सब आम्सवों को विधि शिलाजोत शोधन विधि स्नेह विधि स्वेद विधि वस्ति कर्म हुक्के का आदि धूमपान को विधि, रुधिर छुड़ाने को विधि। छः ऋतु वर्णन।

No. 322(*b*). Bharatharī Śataka by Sawāi Pratāpa Simha of Jaipur. Substance—Country-made paper. Leaves—116. Size—9 × 5 inches. Lines per page—9. Extent—650 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1908 or A. D. 1851. Place of deposit—Paṇḍita Badarīnātha Bhaṭṭa, Lucknow University, Lucknow.

Beginning—श्रो गणेशायनमः॥ अथ भरथरो मत नोति मंजरो लिख्यते छप्पय॥ जाको मेरे चाह वह है मोसों विरक्त मन। पुरुष और सों प्रोति पुरुष वह चहत और धन॥ मेरे कृत पर रीझि रहो कोई इक और हो। यह विचित्र

गति देखि चित ज्यों तजत न ठैारहो ॥ सब भांति राज पत्नी सुधिक जार पुरुष कौं परम धिक । धिक काम याहि धिक मोहि धिक ग्रब ब्रजनिधि कैा सरन इक ॥ १ ॥ दोहा ॥ सुख करि मूढ़ रिझाइये ग्रति सुख पंडित लोग । ग्रर्ध दग्ध जड़ जोव कहं विधिहु न रिझवन जाग ॥ २ ॥ छप्पय-निकसत वारु तेल जतन करि काढ़त कोऊ । मृग तृष्णा कौ नीर पिये प्यासो है सोऊ ॥ लहत ससा कौं शृंग ग्राह मुख ते मणि काढ़त । होत जलधि के पार लहरि वाको तव वाढ़त ॥ रिस भरे सर्प कैां पुहुप ज्यौं ग्रपने सिर पर धरि सकत । हठ भरे महा सठ नरन कौं कोऊ वस नहिं कर सकत ॥ ३ ॥

End—छिन में वालक होत होत छिनही में जोवन । छिनही में धन होत होत छिनहो में निरधन ॥ होत छिनक में वृद्ध देह जर्जरता पावत । नट ज्यौं पल्टत ग्रंग स्वांग नित नये बनावत ॥ यह जोव नाच नाना नचत निचलैा रहत न एक दम । करिकैं कनात संसार की कैातुक निरखत रहत जम ॥ ९९ ॥ वहु भोगन कैा संग तहां इन रोगन कैा डर । धनहू को डर भूप ग्रग्नि ग्ररु त्यैांही तस्कर ॥ सेवा में भय स्वामि समर में सत्रुन कैा भय, कुलहू में भय नारि देह कौं काल करत क्षय ॥ ग्रभिमान डरत ग्रपमान सैां गुन डरपत सुनि षल सब्द । रूप गिरत परत भय सैां भरे ग्रभय एक वैराग्य पद ॥ १०० । दोहा ॥ करी भर्तरीसतक पर भाषा भली प्रताप । नीति मांहि रस गाष में वीतराग प्रभु ग्राप ॥ १ ॥ इति श्री मन्महाराजाधिराज श्री सवायी प्रताप सिंघ जी देव विरचितायां भर्थरी सत संपूर्णम् शुभं ॥ यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृसं लिषितं मया यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषं न दीयते ॥ लिखितं ब्राह्मण हरिदेव ॥ लिषायतं फैाजदार जी साहब श्री ब्रजवल्लभ जी मिति भाद्रपद वदी १३ संवत् १९०८ ॥ श्री राम जी ।

Subject—नीति पृ० १--२१ तक, शृंगार पृ० २१-३७ तक, वैराग्य पृ० ३७—५८ तक ।

No. 323(*a*). Bhaktarasa-bodhinī (Bhaktamāla kī Ṭīkā) by Priyādāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—164. Size—8 × 6 inches. Lines per page—28. Extent—4,602 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1867 or A. D. 1810. Place of deposit—Ṭhākura Lachhiman Siṁha, Village Saidapur, Post Office Bhaṇḍihā Prānt, Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री गुरु गाविन्दो जयति ॥ श्री भक्त-माल लिष्यते भक्त रस वोधिनी टीका ॥ स्वयंगत टीका करता को मंगलाचरन

तथा यशा निरूपन ॥ कवित्त ॥ महाप्रभु कृश्न चेतन मनहरनजू के चरन को ध्यान में नाम मुष गाइये ॥ ताही समै नाभाजू के आज्ञा दई लै धारो टीका विस्तार भक्तमाल वो सुनाइये । कीजिये कविता छंद वंद अति प्यारी लगै जगै जगै मही कहों वानीयवग माइये । जानै निज मति अपै सुन्यो भागवत सुक द्रुमनि प्रवेस कोयो ऐसेई कहाइये ॥ टीका को स्वरूप वर्णन ॥ स्वकविताई सुषदाई लगै निपट सुहाई ग्रैार सचाई पुनरुक्त मिटाई है । अक्षर मधुरताई अनुप्रास जमकाई अति छवि छाई मोद भरी लगो हैं ॥ काव्य की बड़ाई निज मुषन भलाई होत नामा जू कहाई ताते प्रौढ़ कै सुनाई है ॥ हृदै सरसाई जो पै सुनिये सदाई यह भक्ति रसवोधनो सुनाय ढिग गाई है ।

End—रामानंद के अनंत नंद सदा प्रगटे पूरनचंद ॥ जाके कृश्नदास अधिकारी सब कोउ जानै दूधा धारी ॥ ताको अग्र आगरों प्रेमु लै नाभा यों सुमिरन को नेमु ॥ अग्र के सोष विनोद दिपाई । ताते दास अनंतही गाइ ॥ ताही प्रसाद परचै भाषा । सुनौ संतजन सांची साषा ॥ ऐ परचै कहै जो कोई । तासु सर्व सुष पावै सोई ॥ बकता श्रोता पावे मुष । नासै काम कर्म का दुष ॥ भगत की रीति लै सोजो भाई । जीवन भुगत सदा सुषदाई ॥ इतनो कथा कहै पोपा की ॥ जानै बुध संपति दोपा की तीरथ कोटि करै अस्नाना जहां तहां विधि सो देवै दाना ॥ जोग जग्य जप तप धर्म जेते । हरि की कथा नहि पूजै तेते । अर्ध नामते भयो पारा साधू संत कहत विस्तारा ॥ एह मुक्ति की राह वताई । हरि की कथा सबहिं सुषदाई । सुर नर मुनि ब्रह्मादिक गावैं पारब्रह्म को अंत न पावैं ॥ पोपा के गुन गाय सुनावे । सो वैकुंठ लोक निज पावे ॥ जो साधू जन गावैं कोई निहचै सव सुष पावैं सोई ॥ नरनारी गावैं जो कोई । भक्त मुक्त संसो नहि होई ॥ पोपा के गुन गावहों सुनहि जो संत सुजाण । अर्थ धर्म काम मोक्षापद ताहि देइ भगवाना ॥ इति भक्तमाल समाप्तं संपूर्णम् संवत १८६७ भाद्रावासुदो २ भृगुवासरे ॥

Subject—भक्तों की महिमा, ग्रैार उनके नाम तथा नगर सहित वर्णन ।

No. 323(*b*). Bhaktarasa-bodhinī (Bhaktamāla kī Ṭīkā) by Priyādāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—113. Size—14 × 8 inches. Lines per page—26. Extent—3,673 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1769 or A. D. 1712. Date of manuscript—Samvat 1918 or A.D. 1861. Place of deposit—Paṇḍita Sarju Prasāda, Village Maharū, Post Office Metarā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—टीका करता को मंगलाचरन । अग्य निरूपणम् कवित्त ॥ महाप्रभु कृष्ण चैतन्य मनहरन जू के चरनन को ध्यान मेरे नाम रूप गाइये । ताही समै नाभा जू ने अज्ञा दई लेहि धरि टीका विस्तार भक्तिमाल की सुनाइये ॥ कीजिये कवित बंद छन्द अति प्यारो लगै जगै जग माहि वानी वीर माइये ॥ जानै निज मति असे सुन्यो भागवत सुक द्रुमोन प्रवेस कियो असेही कहाइये ॥ १ ॥ टीका को नाम स्वरूप वर्णन ॥ रचि कविताई सुषदाई लगै निपट सुहाई औ सचाई पुनरुक्त लै मिटाई है । अक्षर मधुरताई अनुमास जमकाई अति छवि छाई मोह झाग लगाई है ॥ काव्य की बड़ाई निज मुषन भलाई होत नाभाजू कहाई ताते प्रौढ़ कै सुनाइये ॥ हृदय सरसाई जो पै सुनिये सहाय यह भक्तरस बोधनी सुनाम टीका गाइ है ॥ भक्ति स्वरूप ॥ श्रद्धाइ फुलेल औ उवटनो श्रवण कथा मैल अभिमान अंगनि छुटाइये । मन वसुनीर अन्हवाइ अंग छाइ स्यान वनि वसत पन सौधो लै लगाइये ॥ अभरन नाम हरि साधु सेवा करनफूल मानसी सुनथ संग अंजन बनाइये ॥ भक्ति महारानी को सिंगार चाह वीरी चारु रहैं जो निहारि लहै लाल प्यारो गाइये ॥

End—कीनो भक्तिमाल सुर साल नाभा स्वामी जू ने जिये जीव जात जग जन मान पोहनी । भक्ति रस बोधनी सु टीका मति सोधनी है वाचत कहत अर्थ लागै अति सोहनी ॥ जो पै प्रेमलछ वाकी चाह अवगाह पालि मिटै उरदाह नेक नैनन हू जोहनी ॥ टीका और मूलनाम भूलिजात सुनै जब रसिक अनन्य मुष होत विस्वा मोहनी । नाभाजू को अभिलाष पूरन लै कियौ मैतो ताकी साषि प्रथम सुनाई नीके गाइ कै भक्ति विस्वास जाके ताही सो प्रकास कीजै भोजै रंग हियो लीजै संतनि लड़ाइ कै ॥ नारायन दास सुषरासि भक्तिमाल लैके प्रियादास दास उर वसो रहो छाय कै । संवत प्रसिद्ध दस सात सत उन्है तरा फाल्गुण मास वदि सप्तमी विताय कै अगिनि जरावो लैके जल में बुड़ावो भावै भूलिये चढ़ावो घोरि गरल पिवयवो ॥ विछू करवावो कोटि सापन पठावो हाथी आगे डरवावो इति भीति उपजायवो । सिंह पै षवावो चाहो भूमि गड़वावो तीषी अगिनि विधवावो मोहि दुष नहि पायवो । सजजन प्रान कान्ह वाम यह कठिन कारो भक्ति सो विमुष ताको मुषन दिषायवो ॥ इति श्री प्रिया दास जू कृत भक्ति माल टीका भक्ति रसबोधनी समाप्त सुभ चैत्र मासे कृष्ण पक्षे तिथौ अमास्या सौम वासे संवत १९१८ लीला भवन लिष्यते जानकी सरन अयोध्या मद्दे रामकोट ॥

No. 323(c). Bhaktarasa-bodhinī (Bhakta māla kī Ṭikā) by Priyādāsa. Substance—New paper. Leaves—137. Size—$11\frac{1}{2}\times$ 6 inches. Extent—3,425 Anushṭup Ślokas. Appearance—

New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1769 or A.D. 1712. Date of manuscript—Samvat 1937 or A.D. 1880. Place of deposit—Vidyārathi Jōgendra, Christian College, Lucknow.

Note—आदि अंत No. 323 (*b*) के अनुसार

No. 323(*d*). Bhaktarasa-bōdhinī by Priyādāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—300. Size 12 × 6 inches. Lines per page—12. Extent—3,265 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1769 or A. D. 1712. Date of manuscript—Samvat 1877 or A. D. 1820. Place of deposit—Thakura Viśvanātha Siṁha, Tāluqedār, Village Agaresar, Post Office Tirsaṇḍi, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री रामचन्द्रायनमः अथ भक्तिमाल टीका सहित लिषते। कवित्त छप छंदः ॥ टीका को मंगलाचरन। अथ आक्षे निरूपन। महाप्रभु कृष्ण चैतन्य मन हरन जू को चरन को ध्यान मेरे नाम मुष गाइये। ताहि समै नाभाजू ने आज्ञा दई लई धारि टीका विसतारि भक्तिमाल की सुनाइयै। कीजिये कवित्त बंद छंद अति प्यारो लगै जगै जगमाहि कहि वानि विरमाइये। जानो निज मति ऐपै सुन्यौ भगवत सक दुमति प्रवेस कियो ऐसेहि कहाइये॥ १ ॥ टीका को नाम रूप वर्णन। रचि कविताई सुषदाई लगै निपट सुहाई औ साचाई पुनरुक्त लै मीटाई है। अक्षर मधुरताई अनुप्रास जमा काई अति छवि छाई मोद झरी सी लगाई है। काव्य की वड़ाई निज मुषन भलाई होत नाभाजू कहाई ताते प्रौढ कै सुनाई हैं। रुहै सरसाई जो पै सुनिये सदाइ यह भक्ति रस वोधनी सुनाम टीका गाई है। २ ॥

End—फल स्तुति साषी। पादप पेड़हि सींचिये पावै अंग अंग पोष। पूर्वजा ज्यों वरन ते सब मानियो संतोष ॥ २०३ ॥ भक्त जितै भूलोक मैं कथै कौन पै जाय। समुद्र पान श्रद्धा करै कहा चिरैया पेट समाय ॥ २०४ ॥ श्री मूरत सब वैष्णव लघु दीरघ गुनिन अगाध। आगे पाछे वरनते जिनि मानो अपराध ॥ २०५ ॥ × × × काहु के वल जोग जज्ञ कुल करनी को आस ॥ भक्त ॥ नाम माला अगर उर वसौ नरायन दास ॥ २१४ ॥ इति श्री भक्तमाल श्री नारायन दास जी कृत मूल समाप्तः ॥ नाभाजू को अभिलाष पूरन लै कियो मै तो ताको साषी प्रथम सुनाई नीके गाइकै। भक्ति विस्वास जाके ताही सो प्रकास कीजै

मोजै रंग हियो लीजै संतनि लड़ाइ कै ॥ संवत प्रसिद्ध सात सत उन्हत्तरि फाल्गुन मास । वदि सप्तमी बिताइकै नारायनदास सुपराशि भक्ति माल लैकै प्रियादास दास उर बसौ रहा छाय कै ॥ ६२७ × इति भक्तिमाल भक्ति रसबोधनी टीक संपूर्ण शुभ मस्तु ॥ श्रीरस्तु । लिषतं रामसुष ब्राह्मण संवत ॥ १८७७ ॥ अस्वन सुदि ॥ २ ॥ रविवासरे ।

No. 324. Ānanda Sāgara by Pūraṇapratāpajī of Jamālapura, Parganā Hisāra (Punjab). Substance Country-made paper. Leaves—28. Size—8 × 5 inches. Lines per page—11. Extent—231 Anushṭūp Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1824 or A. D. 1767. Place of deposit—Paṇḍita Śambhū Dayāla, Teacher, Vāzidapur, District Bārā Bankī.

Beginning—गुरु महिमा वर्णन लिख्यते ॥ दोहरा ॥ अघमोचन अरु तिमि हरन दाता भेव अभेव । परनम करु वाहि सकल जै जै श्री सुखदेव ॥ १ ॥ चौपाई ॥ नमो नमो सत गुरु अविनाशी । चरण दास पूरण परगासी । भगवत धर्म पुनीत अपारा ताहि सुनत नासै भ्रम भारा । कलऊ सतजुग कर दरसायो । भक्ति अपार बाज फैलायो । महिमा अगम अपार तुम्हारी । गुन गावत मम रसना हारी ॥ निरालंब निरलिप्त निरारे । नाम रूप किरपा तै न्यारे । तुम किरपा निरभै पद पायो । पाय तिमिर ज्ञान प्रगटायो । निरविकार अब गत दरसायो । दिव्य दृष्टि दे भर्म मिटायो । काग हंस गत दोऊ ठाई । जीव ब्रह्म की गांसि मिटाई ॥ २ ॥ दोहरा ॥ स्वात पलट मोती भयो वह गये विषम कलाप । चरण दास सतगुरु मिले हुवो पूरन परताप । ३ ॥ छप्पै । निराकार आकार एक पर ब्रह्म कहायो । वाकी लीला दुहू जास को भेद बतायो । उहाँ रूप को तेज सुतो यह ब्रह्म कहायो । वही भयो आकार सकल ब्रह्मंड रचायो । आदि पुरुष वातें भयो प्रकृति रूप उपजाय । पूरन प्रताप चरणदास ने दोनों यों समुझाय ॥ ४ ॥

End—दोहा—या जग मैं नहि काम जो मोह दरसत है नाहि । सकल चाह मम रूप है मैं सब चाहन माहि ॥ ७५ ॥ तैं विवेक मंत्री सुने ताको मानो भे । अब हमरे मंत्री सुनो भै होवै सब छै ॥ ७६ ॥ चौपाई—पहले मंत्री हमरो नागो । जापै तीछन नैन कटारो ॥ ताने घायल करे सब जोधा । कहा सूरमा औ कह बोदा । और एक बात तोहि समझाऊं । ताकूं जग में खोलि दिखाऊं । विमल स्वरूप नारि हो कोई । छवि उत्तम अति वाकी होई । काहू के मन वह जो भावै ॥ तन मन से वह आगि लगावै । वाकी अगिन नाशा विन बुझै । जब वह मिलै तभी

दुख तजै । जीव जंतु तो हेत बताऊं । नारो तिनके संग दरसाऊं । सो बंधुग्रा मेरे तुम जानो । पूरन प्रताप सांच पहिचानो ॥ ७७ ॥ दोहरा—ग्रब मंत्री सुन मोह के, क्रोध लोभ ग्रन मान । दिंभ भूठ ग्ररु गर्व हरि, मत्सर ग्रति बलवान । ७८ चोपाई—तब हम सब इकठे हो चढ़ैं । निहचै जान न हमसूं लड़ैं ।

Subject—(१) पृ० १ से ४ तक—गुरु महिमा ।

(२) पृ० ५ से ७ तक—विनती तथा ग्रंथ प्रतिज्ञा ग्रोर ग्रंथ चतुष्टय संबंधी कुछ बात चीत ।

(३) पृ० ८ से ८ तक —कवि वंश परिचय :—

रामचन्द्र जू के भये पुत्र सु बालमुकंद ।
पूरन प्रताप तिनको भयो कृपा करी नंदनंद ॥
चरनदास गुरुदेव धरयो कर ताके ऊपर ।
है जमालपुर नाम ठाम निज उत्तम भूपर ॥
सो हिसार को परगनो खत्री दानो जानचितु ।
रच्यो ग्रंथ ग्रति प्रीति सों मथुरा मांहि वसंत रितु ॥

ग्रंथ निर्माण कालः—

ठारह से संवत कहे, वीस चारि ग्रोर जान ।
ग्रानंद सागर नाम जिहि षट तरंग पहिचान ॥

(४) पृ० ९ से पृ० २८ तक—प्रथम तरंग, राजाकोत्ति, व्रह्म के ग्रागे नट नटी काम ग्रोर विवेक का स्वांग खेलना, निर्गुण स्वरूप, ग्रवतार वर्णन, भक्त सहायक रूप, ग्राकाशवाणी वर्णन, विवेकादि वर्णन । ग्रंथ समाप्ति ।

No. 325(*a*). Jaimini Aśwamedha by Purushottama Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—21. Size—18 × 6 inches. Lines per page—16. Extent—483 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṁvat 1890 or A. D. 1833. Place of deposit—Ṭhakura Dalajīta Siṁha, Village Zālimasiṁha kā Purawā, Post Office Kesargañja, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः पुरुषोत्तम जन चात्रिक राम कथा जलपान ग्रवरहि काहि न लेपत तव श्री भगवान ॥ चलेउ तुरंगम वाजन वाजा । पहुंचा जहां हंसध्वज राजा । पुरि चंडिका निर्मल देसा । चारिउ वरण मनोहर भेषा । तात जननि जस वाला पाला ॥ तैसे नृपति देस प्रतिपाला । होम जग्य नित दान पुराणा । राम छांड़ि नहिं जानहि ग्राना । घर घर राज मंदिर ग्रस लेषा । नारि

सकल पद्मिनी बिसेषा। रोगी दुखी न देखिय लोगा। मनहि न देई इन्द्रासन भोगा। तहां तुरंगम पहुंचा जाई। दूतन नृप सन बात जनाई। अस हय देस कबहुं नहिं आवा। चन्द्र बिमल तन अधिक सुहावा। कंचन पाठ लिखित कछु माला। अति सुन्दर गज मोतिन माला। नृप तिन कंठ लै आये तुरंगा। बाचिन पत्र पंथ हैं संगा। राजहि कहा कहां तुम पावा। देषब हरि जिय करब बधावा।

End—सौंपि पंथ कहं आप सिधाये। जहां युधिष्ठिर तहं हरि आवा। राजा कर संतोष करावा। समाचार प्रभु सबहिं सुनावा। हंसाध्वज औ अर्जुन बीरा। आये सबै नगर रणधीरा। राजहि सब सन कहा बुझाई। जो रोवै तेहि राम दुहाई। सब मिलि करहु पंथ कै सेवा। कर गहि सौंपि गये हरि देवा। कुंअर युद्ध सबही मरण भावा। सुरथ सुधन्वा हरिपद पावा। राजा वचन सुनत रनिवासा। गयो शोक जिय भयो हुलासा। सब बीरन के चरण पषारा। होइ लाग अमृत जेवनारा। भाव भक्ति सब हो का कीना। हरि आज्ञा सिर ऊपर लीना। धन गज पुर कंह दीन्ह पठाई। दिन पांच लगि भे पहुनाई। कहौ वाहि को जीतै पारा जेहि के कृष्ण सदा रखवारा। तस वियोग नृपत बिसारा अर्जुन मनहि आनंद। कहत दास पुरुषोतम सुनत कटै दुखफंद। इति श्री महाभारते अश्वमेध की पर्वणो चंडिकापुरी विजयनो नाम एक विंशतमोध्याय।

Subject—घोड़ा का चंदिकापुरी में पहुंचना वहां के राजा हंसाध्वज का अश्व को पकड़वाना फिर अर्जुन और सुधन्वा आदि का युद्ध होना पश्चात श्री कृष्ण का अपनी लीला से मेल मिलाप करा देना राजा का सब सेना समेत अर्जुन आदि को पहुनाई करना और भेंट आदि देना इत्यादि केवल एक अध्याय।

No. 325(*b*). Sudhanwā Kathā by Purushottma. Substance—Country-made paper. Leaves—32. Size—7 × 5¼ inches. Lines per page—13. Extent—442 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṁvat 1887 or A.D. 1830. Place of deposit—Ṭhākura Jadunātha Baksha Siṁha, Hariharpur, Village Chilandiā, Tahsīl Kesargañja, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ सुधन्वा कथा लिख्यते॥ दोहा। गणनायक के चरन चरन सिद्धि बंदों बारहि बार। कर जोरे विनती करौं...... अनुसार। चौ० ॥ चला तुरंगम बाजन बाजा।

नोट—शेष No. 325 (*a*) के अनुसार।

Subject—प्रार्थना, सुधन्वा को पीड़ा, सुधन्वा पांडव युद्ध सुधन्वा वध सुरथ युद्ध, शिव विष्णु युद्ध, सुरथ वध, हंसध्वज का कृष्ण से मिलन, सब का जीवित होना।

No. 325(c). Sudhanwā Kathā by Purushottama. Substance Country-made paper. Leaves-37. Size—7½ × 6 inches. Lines per page—16. Extent—444 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1259 Fasli or A. D. 1842. Place of deposit—Nāgeswara, Vaishya, Mathura Bāzār, Post Office Khāsa, District Bahaīāich.

No. 326(a). Dūshaṇa Bhūshaṇa by Raghunātha Bandījana of Kāśī. Substance—Country-made paper. Leaves—15. Size—7½ inches. Lines per page—20. Extent—300 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nagarī. Place of deposit—Mahārājā Rājendra Bahādur Siṁha of Bhinagā, Bahrāich.

Beginning - श्री गणेशायनमः ॥ अथ दूषण भूषण लिख्यते ।

दोहा । अलंकार सब काव्य के कहे शास्त्र परिमान । अब दूषन गुन लच्छन सब कहियतु है सुखदान । १ । ज्यों मनुष्य के देह में है मूर्खादिक दोष । त्यों श्रुति कटु कहँ आदि है करत काव्य में पोष ॥ २ अथ दूषन वर्णन दोहा दूषन सहित कवित्त सों होत सुरस की हानि । तातें वर्नन कीजियतु इन्हे लेहु पहिचानि । ३ दोष लक्षण-शब्द अर्थ मिलि चित्त को सुख डारत हैं खोइ । श्रुति कटु आदि कवित्त में दूषन कहियतु सोइ ॥ ४ दूषन नाम । श्रुति कटु अरु संस्कार हत अप्रयुक्त असमर्थ । निहितार्थ अनुचित अरथ वरनौ और निरर्थ । ५ विविध भेद अस तोल के सुकविन दिये बताय । ब्रीड़ा एक जुगुप्सा एक अमंगल आय । ६

End- कारज लक्षण ॥ प्रस्तुत के व्यापार तें कारज को फल आस । तासों कारज कहत हैं सकल सुमति के ग्राम । १२ । उदाहरण—घन घटा गज तापै विज्ज के छटा निसान गरज नगारे भारे बाजत अचैन हैं । देखि रघुनाथ को दुहाई न खबर तोहि जुगनून जागे जायगो जगाई ऐन है । कोकिला कलापी झिल्ली दादुर पपीहा सोर इन्हें मति बूझे और सुभट के बैन हैं । तेरो मान कोट ताके तोरे कौन खोट घेरि हल्ला कियो चाहत मोहल्ला लेत मैन है ॥ १३ ॥ इति लक्षण श्रीकवि रघुनाथ बंदी जन कासी वासी विरचिते जगत मोहने अल्पाक्षरादि लक्षण वर्णने लघुमंत्रः ॥

Subject—दूषण वर्णन, दोष लक्षण, दूषण नाम, पद दूषण, वाक्य दोष, अर्थ दोष, श्रुति कटु, संस्कारहत, अप्रयुक्त, असमर्थ, निहितार्थ, अनुचित, निरार्थ, अश्लील, अमंगल, ग्लान, अवाचक १—३ पृष्ठ

संदेह, निकाय, क्लिष्ट, ग्रामोण, अविमृष्ट, विरुद्ध मति ४—५ पृष्ठ

न्यून पद, अधिक पद, कथित पद पतत्प्रकर्ष, प्रसिद्ध हत, अभवन पुनरात्त लक्षण, क्रमभंग, स्थान स्थेयपद, ५—७ पृष्ठ

अपुष्ट, कष्ट, व्याहत, पुनरुक्त, दुक्रम, ग्रामोण, निरहेत, अयुक्त, संप्रदाय विरुद्ध, शास्त्र विरुद्ध, अष्टा विकित, सहचर भिन्न, चाह युत ८—९ पृष्ठ

अविशेष, नेम अनेम, त्यक्त पुनः स्वोकृत, विधि अनुवाद, अर्थदोष, अश्लील निवारण, पुनरुक्त निवारण, १०—११

गुण वर्णन, मधुर, ओज, प्रमाद, संगति, अभिमान, हेत, प्रतिपेद, मिथ्याध्व वासित सिद्धि युक्ति, कारज १२—१५ पृष्ठ

No. 326(*b*). Jagata Mohana by Raghunātha Bandījana of Kāśī. Substance-Country-made paper. Leaves—204. Size-$10\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—12. Extent—3,213 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1911 or A.D. 1854. Place of deposit—Chhedī Lala Brahmabhaṭṭa, Village Holapur, Post Office Haidargaḍh, District Bārā Banki (Oudh).

Beginning—वरन वृत्त के छन्द को इनते रचना होत। नागरज को पाइ मत कहे सुमति के पोत। ११ ॥ म य र स त ज भ न आदि दे इनको क्रम लखि लेउ। छिति जल अगिनो वाइ नभ रवि ससि पुनि इन देउ ॥ १२ ॥ मगन नगन सो मित्र हैं यगन भगन है भृत्त। रगन सगन अरिम्र तगन जगन उदासी कृत्त ॥ १३ ॥ मगन तोन गुरु तीन लघु नगन यगन लहु आदि। भगन आदि गुरु कहत हैं पिंगल मत निरवादि ॥ १४ ॥ रगन मध्य लघु मध्य गुरु जगन कहत बुधिवंत। सगन अन्त गुरु कहत हैं कहत तगन लघु अंत ॥ १५ प्रस्तार विधि ॥ पहिले गुरु के निग्ध लघु फिरि विधि ऊपर पांति। उबरै ऊपर दोजिये गुरु लघु रचि इहि भांति ॥ १६ ॥ पर पुरुष दोउ इष्ट हैं मित्र भ्रित सुख दान। उदासोन ते भृत्य सुभ सम मते परमान। १७ ॥ उदासोन अरि ये दोऊ असुभ ग्रंथ को देत। आदि मानुपो कवित के एन धरै करि हेत ॥ १८ ॥

End—दोहा ॥ दोइ नगन फिरि रगन जेतिक वाढ़त जाइ। दंडक को यह भेद है त्यों त्यों नाम वताइ ॥ ५१८ ॥ सात रगन को चंडवृष्टि अर्ण आठ को

जानि । अर्थ वाख्य नव रगन को दस को व्याल बखानि ॥ ५१९ ॥ ग्यारह को जीमूत कहि द्वादस लिला कर भाखि । तेरह को उद्दाम कहि चौदह को सख भाखि ॥ ५२० ॥ पन्द्रह को आराम कहि सोरह को संग्राम । विदित नाम फनपति कहै सत्रह को सुराम ॥ ५२१ ॥ बैकुंठ अठारह रगन को कहत सवै मति धाम । रगन उनइस को कहत सात कंठ यह नाम ॥ ५२३ ॥ वोस रगन को सार कहि एकइस को विस्तार ॥ बाइस को विस्तार है तेइस को संहार ॥ ५२४ ॥ चौबिस को नीहार कहि पचीस मंदार । छब्बिस को केदार हैं सत्ताइस साधार ॥ ५२५ ॥ सत्कार अट्ठइस रगन को आनतिस को संसकार ॥ सस कहै गरुड़ लहै छंदन के विस्तार ॥ ५२६ ॥ तोस रगन माकुंद है इकतिस को गोविन्द । बत्तिस को संदोह यह भाख्यो नांउ फनिंद ॥ ५२७ ॥ दोइ नगन गन तीन से तेतिस रगन बखान । सस कहै खगपति लहै दंडक को परमान । ५२८ × × × शुद्ध छंद के बरन को जो करता कवि होत । सुख सम्पति दिन दिन करत कवि के छन्द उदोत । ५३९ इति—श्री कवि रघुनाथ बंदीजन काशी विरचितं जगत मोहन ने छंद शास्त्र मात्रा वृत्त, वर्णवृत्त, मालावृत्त, दंडक, षष्टमोजामें चतुर्थ लघु मंत्रः ४ ॥ शुभमस्तु

अष्टो के सोरह वर्ण संख्या भेद विचार—ब्रह्मरूपा, गजतुरग, वानिनी, आवगती, सुचित्र, चपला, पंचचामर, ललिता, जपानंद, चित्रकला, स्रग्माला, मंगल अंगना, कोमल, लतिका, वर विलसित, मदनललितका, चकिता, गरुड़ मारुत, गंगाधर, लक्ष्मी पति, अचल धृति, सर्व लघु उदाहरण, अति अष्टी, पृथ्वी, वंसपत्र, मनहारिणी, मंदाक्रांता, करिहरि, कांता, चित्रलेखा भाराक्रांता, हारिणी, पद्मा, मालाधर, वसुधरा, धृति (१८ वर्ण), लघु धृति, नंदन, मुक्तामाला, वाचाल, कुसुमित लता, हरिणप्लुतलता लक्षण, अश्वगति, देवेस, देवमुनि शार्दूल, चपल, मणिमाला, पंकज, वक्र, शिववक्र, सिंहघोर, हरिनिपग, शार्दूललिलित, मनहार, ललित पदा, कमलपदा, कमलधरा, श्रीकेश, मंजरी, केलीचंद्र, हरनी प्रिया, रसकोश, रस रासि, अतिधृति (१९ वर्ण), मेघस्फुरित, छाया, चमर विमल पुष्पदास, विंद, मकरंदिका, मणिमंजरी, समुद्र, तरल लोला, भूपति मालती वायुवेग, शशिकला, शंभू शशिधर सुरसा, तुला, कृति (२० वर्ण) वंदनी, गुंजिका, चित्रवृत, लोकराय, शोभा सुलक्षण, मत्तइभिक्रीड़ित ब्रह्मचार, कोमलता, उज्जलमुद्र, पुट, गतागत, चित्रमाल मुनिशेषर

Subject—(१) पृ० १ पृ० ५ तक—गणागण भेद वर्ण, द्विगण विचार, प्रस्तारविधि शुभाशुभवर्ण देवता आदि का वर्णन है ।

(२) पृ० ६ से पृ० १६ तक—आर्य्या प्रकरण । छन्दों के लक्षण :—विपुला, जघन पथ्य, चपलागाहू, आर्य्या गाहू, विग्गाहा, उगाहा, परजाय, गीती, उपगीती,

आर्या गीती, आर्या गीती गीती, आर्याउद गीतीगीती, गाहिनी, सिंघिन, षेधा, गाथा, विगाथा, अवगाथा, उपगाथा, मालगाथा, बैताली, उपछंदसिका, अपातालिका, दधिनेर्गतिका, दाछिनेर्गतिकापरीति, दछिनेतिका तृतीय भेद उदीच वृत्ति, द्वितीय तथा तृतीय उदीची भेद, प्राचवृत्ति, द्वितीय प्राच्य, वृत्ति, तृतीय प्राच्य वृत्ति, प्रवर्तक, द्वितीय, तृतीय, प्रवर्त्तक, वैतालिक, श्रीप छन्दसिक, अपतालिक, अपरातिका, परांतिक, द्वितीय परांतिक, तृतीय परांतिक प्रवृतक परांतिप, द्वितीय परांतिक, तृतीय प्रवर्तक परांतिका, इति वैताली समाप्त ।

(३) पृ० १७ से ५३ तक—प्रथ वक्र लक्षण, पथ्या वक्र, विपरीतादि वक्र, चपला वक्र जुगम विपुला, सैतवी विपुला, भा विपुला, साता विपुला, मा विपुला, चरनाकुलक, उपचित्रा चित्रा, विश्लोक, वन वासिनी, मात्रा समक लक्षण, द्विघृत, दुखंड समाज, प्रथम अनंत, उत्तरदल माला, खंता लक्षण, अनंग क्रीड़ा, रुचिरा, दुधरा समाज, चरना, अभिजात, ह्रस्ववर्ष, चुलिआला, सोरठा, पंचा, नंदा, वरहंसा, अषाढ़, श्रवणसुधा, सुधा, चंवोला, गमक, रसवाम, कांता, मधुहार, दीपक, अहीर, उकछा, दमहांकिल, हरिमुख, करी, जेकरी, पझलिया, अरिल्ल, सतास, मतील, रताल, गंधान, करिल्ल लघुदीपक, पवगम, मदन दीपक, महादीपक, निसानील, हीर छंद, रोला, काव्य, गगनंग, रामगीती, हरगीती, अनुगीती, मन्दगीती, दीव, उल्लाला, मरहट्टा, चौपैया, लघुपद्मावती, सवैया, घत्ता, घत्तानंद, द्वितीय घत्तानंद, त्रिभंगी, पदुमावती, दंडक, जनहरना, दुर्मिला, लीलावती, वरवीर, वीरवान, पंचवदन, झूलना, मनहरन, मदनहरन, छप्पय, कुंडलिया, रडडाभेद, नंदारडडालक्षण, राडसेन, चारुसेन, भद्रा, तालंकिन, मोहनी, द्वितीय मोहनी, राजकुंडनी, घनाक्षरी, द्वितीय यति, चतुर्थ यति चरना घनाक्षरी ॥ इति मात्रा स्थान

(४) पृ० ५४ से पृ० ६ तक—नाम रूर्व गुर सर्व लघु पर्यंत गाथा, दोहा, छप्पं, मंत्र ।

(५) पृ० ५७ से ८२ तक—वर्णवृत्त, श्रीछंद लक्षण, मुखा सार छंद, मध्या भेद, ताली सोनारी, समा मनोग्या, मृगी प्रिया, प्रवर सेना, मृगेन्द्र, हृदमंदिर, द्विग कमल, वर्त्मपरजापधारी, गिरा क्रीड़ा, ऋद्धि, सुमता, सुगती, सुमुही, मधु, वल्ली, पद्म, कंदली, जति, प्रतिष्ठा, समोहा, पंक्ति, हारी, सती, त्रिपता, नंदा ममती, गायत्री, सुमती, विजोहा, शशिवदन, मंथानक, मुकुला, तनमध्या, सुमती, उष्णिक, प्रथम गंधर्वी, हरिना परिपाप, सगुन विलास, सुजस प्रकाश, करहंच, मदलेखा, सताकुमारलतिका, हंसमाला, भ्रमर माल, कलिका, चित्रा, श्रुति, उष्णिक, अनुष्टुप, विद्युन्माला, मलिका, वितान, कमल, मानव क्रीड़ा, चित्रपदा, हंस तरुण, नाराचिका, केतुमाला, क्षमा, मालती सुंदरी, रूपमाला, मुग्धविलास,

पाइता, अमल कमल, भुजंग शशि भृता, भद्रकाय, बृहती, उत्सुक, अच्युता सुगला, महती, सुवमा

सुलक्षण, पंक्ति, योगो, मयूरशालिनी, संयोगी, रुक्मावती, मुक्तादीपक-माला, वक्ता, उपस्थिता, मनरंगा, बंधुकाय, अमृतगती, समुपस्थित, मौक्तिकी, पद्मिनी, मुसुमा, सुविरती, मालता, अमृतगती, सुमुखी, चपला, त्रोटक, मोटक, ग्राही, अच्युरतसखा, दोधक, सुमती, मौक्तिकमाला, उपस्थिता, सैनिक, भद्रिका, वृता,

(६) पृ० १८३ से पृ० ८६ तक—स्वागता, भ्रमर विलासिता, सुश्री, माया, शालिनी, वंधुपासुमुखी, अंगमाला, सदा उपस्थिता वरमति, उपचित्रा, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा। इति प्रस्तार विधि।

उपजाति चतुर्दशनाम तथा उदाहरण कीर्ति, वानी, माला, माला, हंसी, माया, जाया, वाला, भद्रा, भद्रा प्रेमारामा, ऋद्धि, बुद्धि, जगती भेद—विद्याधर, चंद्रवर्ण, सुवंशा, इंद्रवंसिका, कांत। जलधरमाला, मौक्तिक दाम, तोटक, मोदक, कमलविलासिनी, द्रुतविलंबित, कुसुमविचित्रा, भुजंगप्रयात, स्त्राविणी, गनोवली, प्रियंवदा, मणिमाला, ललिता, चोटिका, प्रमिता, पुंडरीक, महेन्द्रवंशा, वंशाद्विका, पतिश्रुति, श्रुति, जलधार माला, नवमालिनी, मालती, गौरी, ललित, सुचित, द्रुतपदस्थिता, प्रहर्षिणी, रुचिरा, माया, मंजुभाषिणी, मंजुलक्षण, चंद्रलेखा, रुचिमोदक, रुचिलक्षण, नलिन लक्षण, निकुंड, नेमा, मनकनिका, विद्युल्लता, कौमुदी, तारक, कंद, पंकावलि, मृगेन्द्र, चंडाल, कलहंस, मानिगण, देवीपद, सकारी, गौरीधर, वनलता, अनंदा, सुरवर्त्तक, अलाला, रम्या, लक्ष्मी, असंबाधा, बाधा, अपराजिता, पहर्नकलिका, वसंततलितिका, इंद्रवदना, लोला, अलोला, कल्लोला, मध्यक्षमा, कुमारी, प्रमदा, उपचित्रा, वासिती, सामंत, नंदी, लक्ष्मी, भद्र, उचित, सुचित, चक्रपद, राजरमणी, मंजरी, चंद्रमाली, वसंत सुदर्शन, मणि कटक, दरदुर, कविउक्ता, सारंगिक, मंडुकी, तुन चामर लक्षण पंचानन, वित्तराज, निशुपाल, भ्रमरालसी, चन्द्रप्रभा, अरविंदक, मणिभूषण, ऋषभ, अमलिनी, मालिनी, चन्द्रलेखा, प्रभद्रकेश, पलाल, शुकमाला, सुदर्शन,

अतिकृति (२१ वर्ण) स्रग्धरा, मुनिवरा, चित्रलतिका, कविोत, वन मंजरी, ललित तुरग पद्म सद्म, ललितविक्रम, गति कंद, महेश्वरी, नरिंद, आकृति, भद्रा, कला, मदिरा, महा श्रग्धरा, वनहंस, मदनसा-हंसी, केकनी, प्रदीपा, अमी प्रकाशमहाफल, विकृति (२३ वर्ण) वाजी वाहन, हंसगति, तारंगमालिका, कालिका, सखीसुधा, कामकला, शारदा, मुंदरी, वागीश्वरी, कान्ता, मत्तकरी, अग्नि, सवगामी, दीपक संस्कृति ॥ २४ ॥

(७) पृ० १८७ से पृ० १९० तक—सुतन्वी, द्रुमिला, किरीटो, हंसपदा, मदनश्रावक, वैकुंठ धाम, लवंगलता, कुमार घनाघन, भुजंगी, अति क्रांत, (२५) चंदिर कौचपदा, चंदिर, विशदपद, सुरेश्वर, अरविंदमुखी, कला कुशला, पला लक्षण, भारव्य लक्ष्मी पति, देव देवा, उत्कृति, (२६) भुजंग, विजृंभित, वाह, ऊर्म्मिलिनी, बनलतिका, मकरंद, मौक्तिक, किशोर, रत्नकांची।

(८) पृ० १९१ से अंत तक—विकसितकुसुमा, कर, ललिता, त्रिभंगी, सिरोरत्न साल्हर, मनि निकर, सुहित, भावविलास, ललितवित, कणिका, इन्द्रगन, लहरिका, विहारी, मनिवर ललित, चित्रमय, लीलावती, मालवृति सम्पूर्ण, अथ दंडक, अनो उदाहरण, अर्ण वख्या, दंडक विभेद लक्षण शुद्ध छन्द वर्णन को बड़ाई। ग्रन्थ समाप्ति।

No 326(c). Jagata Vimohana by Raghunātha Bandījana of Kāśī. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—11 × 5¾ inches. Lines per page—10. Extent—280 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhinagā, District Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः प्रभु को आसिरवाद दै हरष भरी यह प्रीति। प्रभु आग लाग्यो कहन राजनीति की रीति॥ १

कैान देश है को समै को वैरी को मित्त।
यह विचार सब दिन करै होत भोर ही नित्त। २
सहसा काम न कछु करै करै तो करै विचार।
सो सगरे आसर परे जीतै सकै न हार॥ ३
साम दाम अरु भेद जुध हैं ये चारि उपाय।
अति अडोल कै चित्त मैं राखै सब दिन छाइ। ४
प्रति पालै कुल को धरम पालै द्विज अरु दीन।
कृपा सहित तिनसों मिलै आवैं जे परवीन। ५
बिथा सुनै जन दीन की आपु श्रवन मन लाय।
वाको करै सहाय सुभ करिकै चारि उपाय॥ ६

End—त्यागिवों त्यागवे जोग परै अरु संग्रह जोग तजो नहिं जाई। प्रीति प्रतीति की भीति यही कछु रीति सनातन की चलि आई। पाहन पूरित देखि मराल चलै तजि मानस हीर राई। सो प्रगट्यो मुकता किन आपने हंस चुगै चलि दूरि ते आई। १। मानस सइबे जोग सदा तुम सेव हंसन को समुदाई। जो हम दूरि बसे विधि के वस सो कछु भेद कह्यो नहि जाई। पाहन कंठ फंसे

कबहूं वह सोचि सदा अब लौं डरपाई। सो प्रकटै मुकता किन आपने हंस चुगैं चांज दूरते आई। २। चैन नहीं पल एक तजे नित मानस होत मराल कौ प्यारो। पीनस जोग वियोग तें षीनता होत सदा जिय माह विचारो। दानि सिरोमन है मुकता हल आश्रित को विपदा हटि टारो। सेइवो हंसनि को जो चहौ तुम पाहन आपने दूरि निवारो। राम राम राम—इति

Subject—पृष्ठ १ से १३ तक राजनीति वर्णन, पृ० १४ से २४ न्याय वर्णन, पृ० २५ से २८ महाराज मानसिंह और द्विजदेव के कवित्त।

No. 926(*d*). Kāvya Kalādhara by Raghunātha Bandījana of Kāśī. Substance—Country-made paper. Leaves—131. Size—$8\frac{1}{2} \times 44$ inches. Lines per page—10. Extent—2,600 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Mahārājā Rājendra Prasāda Siṁha, Bhinagā Rāja, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ श्री सीतारामाभ्यांनमः॥ कवित्त॥ अरथ धरम काम मोक्ष कहै रघुनाथ चारिदा पदारथ सहज ही में लहिए। रिधि सिधि बुधि को विरिध होत दिन दिन विद्या और बल वेवसाव जेतो चहिये। संतति बढ़ति जग कीरति पढ़त मुख पानिप चढ़त चारु मोह महा गहिये। तरन के सुत को विसाति है न कछू जहां गुर के चरन की सरन जाइ रहिये॥ १ दोहा। प्रथम मंगलाचरन में गुरु को कीन्हों ध्यान। अब कीजत श्री कृष्ण को करता सब कल्यान। २ कवित्त अन्हाइ के आइ खरो भयो तीर त्यौं फैलो समीर सुगंधन मे च्वै। गाइ न जात निकाई सरूप को पूरो प्रकास मही नभ को छ्वै। और कहां सौं कहौं रघुनाथ विलोक विलोकनि वामन को वै। इन्द्र सो आज गोविन्द वन्यो री रह्यौ सिगरो अंग आंखि मई ह्वै। ३ काछ कछे पट पीत को सुन्दर सीस धरे पगिया रंग रातो। हार गरे विच गुंजन को जुलफैं छुटी छोर सो छै हरो छातो। खेलत ग्वालन सों रघुनाथ ज्यौं डोलै गऊन में री उतपातो। त्यौं रंग सांवरो होतो न ईठ तो काहू को दीठि कहूं लग जातो। ४

End—चकित हाव के लक्षण—आगे पिय के भीत तें जहं मन भ्रम ह्वै जाय। चकित हाव तासों कहत सकल कविन के राय। उदाहरण—देत दोहनी तोय कर गहत गही हरि आइ। चौंकि छांड़ि कर सों दई यक टक रही लगाइ। केलि हाव के लक्षण-जहं तिय खेलै पीय संग केलि हाव सो जानु। कहे हाव भरतादि इमि कवि कुल बुद्धि निधानु। उदाहरण—घनस्यामै घनस्याम है राधा दामिनि रूप। चढ़े हिंडोले झूलत पावस किए अनूप। बोधक हाव लक्षण-

गुप्त भेद करि जाव जहं करै क्रिया मन मांह। बोधक तामें कहत हैं सकल कविन के नाह। उदाहरण—लै श्री फल कल भ्रौत कर तियहि देखायो स्याम। भानु चिम्न ससिबुंद दै रही मौन ह्वै वाम। इति श्री कवि रघुनाथ बंदो जन कासी वासी विरचिते काव्य कलाधरे हाव वर्ननं षोड्सो मयूष ग्रंथ काव्य कलाधर समाप्त शुभ मस्तु दस्तखत श्री भैया कालीप्रसाद सिंह

Subject—१—५ पृष्ठ वन्दना, राजवंश वर्णन, काशी वर्णन,

पृ० ६—३० रस वर्णन, दूती वर्णन, आलम्बन, उद्दीपन, ज्येष्ठा, कनिष्ठा, मुग्धा, मध्या प्रौढ़ादि वर्णन,

पृ० ३१—५२ नायका भेद, मुग्धा मध्या प्रौढ़ा भेद, क्रिया विदग्धा, वचन विदग्धा, ज्ञात यौवना, सुरत आदि वर्णन,

पृ० ५३—६६ गर्विता वर्णन, खंडिता, अन्य संभोग दुखिता, मानस भेद वर्णन, स्वकीया धीरा, अधीरा, वर्णन,

पृ० ६७—७३ परकीया, धीरा अधीरा, मुग्धा मध्या प्रौढ़ा वर्णन, सामान्या वर्णन उपेक्षा अन्य संभोग दुखिता वर्णन

पृ० ७४—९४ मुग्धा स्वाधीन पतिका, सामान्या, अभिलाष, प्रोषित पतिका, चिन्ता, प्रलापादि व्याधि, उद्वेग, उन्माद, जड़ता, आगत पतिका,

पृ० ९५—१०० अनुकूल, दक्षिण, शठ धृष्ट वैसिक, धीर, ललित, धीरोदात्त,

पृ० १०१—१३१ रोसव, क्रियावचन, लक्षिता, विदग्ध नायिका भेद वर्णन, भाव, अनुभाव, सभेद, हाव वर्णन सभेद।

No. 326(e). Rasika Mohana by Raghunātha of Kāśi. Substance Country-made paper. Leaves -81. Size -8 × 4½ inches. Lines per page—16. Extent—960 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1796 or A. D. 1739. Place of deposit—Babu Padma Baksha Simha, Tāluqedār, Lavedapur, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः। विसेश्वरो वीजतं॥ गनपतेनमः॥

दोहा—सुफल होत मन कामना मिटत विघन के दुंद। गुन सरसत बरसत हरष सुमिरत लाल मुकुंद॥ १॥ कवित्त—अरथ धरम काम मोक्ष कहै कवि रघुनाथ चारिए पदारथ सःज ही में लहिए। रिधि सिद्धि बुद्धि की विरिधि होत दिन दिन विद्या आर वल वेवसाव जेतो चहिए। संतति वढत जग कीरति पढत

मुख पानिप चढ़त चह मोह मद्दा गहिए। तग्न के सुत को बसाति है न कछु गुरु के चग्न को मग्न जहं रहिए। २ दोहा—प्रथम मंगलाचग्न में गुरु को कीन्हों ध्यान। अब कोजत श्री कृ ग के करना मब कल्यान। ३ कवित्त-न्हाइ कें अंग खरो भगो तोर मो फैलो समीर सुगंधनि में व्वै। गाइ न जानो निकाई मरूप को पूगो प्रकास मही नभ को छ्वै। और कहां लैां कहौं रघुनाथ विलोकि विलोकनि बामनि को छ्वै। इंदु मो आज गोविन्द वन्यो रो रह्यौ सिगरौ अंग आंखि मई ह्वै। ४

End—प्रहर्षन लच्छन—उत्कंठा जो अर्थ है विना जतन जो सिद्धि। सुकवि प्रहर्षन कहत हैं अलंकार में रिद्धि। १७१। उदाहरन—बासर बाम के तोरथ को रघुनाथ सुनै परवो लखि भारो। गांउ के लोगन संग सवो सिगरो परिवार लै सासु सिधारो। आपु अकेली रही दुलही कहिए अब भाग को बात कहागो। जोब को भावतो देवर जो घर में रह्यौ जो घर को रखवारो। २४६ द्वितीय प्रहर्षन लच्छन—जहं मन वांछित अर्थ सो अधिक परापति होइ। द्वितीय प्रहर्षन कहत हैं बुद्धिमान सब कोइ। १७२ उदाहरन—आज अन्हात में देखैा कहूं मन में महरेटो को रूप वसायो। प्रेम पगे अति आतु रह्यो घर चातुर एक वसीठ पठायो। हे रघुनाथ कहा कहिए मनमोहन कू मनमोहन पायै ा। बातें लगायैा मषा लषिको उतसैा मिलिबे को संदेसोई आयो।

त्रितीय प्रहर्षन॥ जतन करत जहं सिद्धि को लाभ होइ साच्छात्। कहत प्रहर्षन तोसरो भेद सुमति अवदात। १७३

Subject—पृ० १ से ७ तक—प्रार्थना, शृंगार वर्णन, विषय अलंकार वर्णन, राजा व कवि का वर्णन,

पृ० ८ से १६ तक—उपमा, अनन्वय, उपमानोपमेय, प्रतोप, रूपक, परिनामालंकार वर्णन,

पृ० १७ से ३३ तक—उल्लेख, स्मरण, भ्रान्ति, सन्देह, अपन्हुति, उत्प्रेक्षा, अपन्हुति, अतिशयोक्ति वर्णन,

पृ० ३४ से ४२ तक—तुल्य योगिता, दोपक, प्रतिवस्तूपमा, दृष्टान्त, पदार्थावृत्ति, निदर्शना, व्यतिरेक, सहोक्ति वर्णन,

पृ० ४३ से ५३ विनोक्ति, समासोक्ति, परिकर, परिकरांकुर, श्लेष, अप्रस्तुतप्रशंसा, प्रस्तुतांकुर, पर्यायोक्ति, व्याजोक्ति, आक्षेप वर्णन,

पृ० ५४ से ६५ तक—विरोधाभास, विभावना, विशेषोक्ति, असंभव, असंगत, विषम, सम, विचित्र, अधिक वर्णन,

पृ० ६६ से ८१ तक—सूक्ष्म, अन्योन्या, विशेषोक्ति, व्याघात, कारमाला, एकावली, मालादीपक, सार कमिक, पर्याय, परवृत, परिसंख्या, विकल्प, समुच्चय, कारकदीपक, समाधि, प्रत्यनीक, काव्यार्थापत्ति, काव्यलिंग, अर्थान्तर न्यास, विकस्वर, प्रौढ़ोक्ति, संभावना, मिथ्याध्यवसित, ललित और प्रहर्षण का वर्णन।

No. 326(*f*). Rasika Mohana by Raghunātha of Kāśī. Substance—Country-made paper. Leaves--42. Size--12 × 6 inches. Lines per page—48. Extent--1,260 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character--Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1803 or A.D. 1746. Date of manuscript--Samvat 1834 or A.D. 1777. Place of deposit--Ṭhakūra Digvijaya Siṁha, Tāluqedār, Village Dikaulia, Post Office Bisawq, District Sītāpur.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ रसिक मोहन ग्रंथ लिष्यते॥ दोहा॥ विघन हरन दुरमति दरन करन सकल कल्यान। शिव शुभ श्री गणनाथ को सब सुषदायक ध्यान। श्री गुरुदेव मुकुंद की लहि कै कृपा सहाइ। करिबे की पाई सकति ग्रंथनि को समुदाइ। ब्रह्मा को सुत मानसिक गौतम परम प्रसिद्ध। ताके कुल को दुमि सिर प्रगट भयो तप सिद्धि। वेद कंठ चारो करे अट्ठारहो पुरान उपनिषधौ अरु शास्त्र सब औ सब कला निधान। बरनि कहां लगि कीजिये करामाति समुदाइ। धोती लिये अकास में जाकी सुरवन वाय। कुल में कोट मिश्र के उपजे संसाराम। जापै रापत निज कृपा आपु राम सुष-धाम। कवित। आजु महि मंडल में कहै कवि रघुनाथ जेते राजपूत राज पदवी धरत हैं। आपनी सभा में आपु आपने मुसाहेब सों बैठे आठो जाम ऐसो भांति उचरत हैं॥ वषत विलंद ऐसो कौन पहमी पै भूप गौतम गुमानी के जो समता करत हैं। चाहैं जोई राम सोई करै संसाराम आजु चाहैं संसाराम सोई रामजू करत हैं।

End—हेतु अलंकार लच्छन। हेतु सहित जहं बरनिये हेतुवान गहि रीति। हेतु अलंकृत सुकवि सब तहां कहैं गहि प्रीति। उदाहरण। महत महातिम की पंचकोशी जात्रा कहै रघुनाथ मुनि मुनि बचन महासी के। हरष पागे अनुरागे बड़भागे लोग नगर बसैया सबै जोग भोग निर्भय विलासी के। गुंदसे तागुन में फिरत ग्राम पास भये मालाकार युवा वृद्ध बालाबाल काशी के॥ अपरं॥ परम असंक लंकपति मेरो विनै सुनै पूर पारावार कोप हारिन भए भयो। आवत वसंत ज्यों ज्यों वन उपवन सब रघुनाथ हरो भयो फूलि कै करो भयो। करिबे जो है सो अब कीजै मंत्रि मंत्रिन सो नगर वसैयन के वास को दूरो भयो। तोछिन विपति के हरैया राम ताके आगे उबराइये छन भभीछन परो भयो। इति

श्री रघुनाथ बंदोजन काशो वासो विरचिते काव्य रसिक मोहने उपमादिक अलंकार वरननं संपूरनम। किसो रसिक मोहन सुभग ग्रंथ सुकवि रघुनाथ। बिच बिच काशो नृपति के कहे विशद गुन गाथ। अलंकार लछन सहित लछ सहित सुविचार। करि कवित्त रसिकन लिये दये सुकल निरधारि। इति॥

No. 327(*a*). Mānasadīpikā by Raghunāthadāsa Vaishṇava. Substance—Country-made paper. Leaves—118. Size—16 × 12 inches Lines per page—44. Extent—6,490 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṃvat 1909 or A.D. 1852. Place of deposit—Paṇḍita Rāma Śhankara Vājapeyī, Village Bahorikā Vājapeyī kā Purawā, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ मानसदीपिका संकावलो लिख्यते॥ तत्रादो मंगलाचरणम्। दोहा। परशुधरनि संपति भरन अब हर हरन गनेश। विघन हरन मंगलकरन रापहु शरन हमेश॥ एक रदन करिवर वदन सिद्धि सदन मुद दानि। मदन कदन नंदन जपहु जगवंदन जिय जानि। सिंदुर सह सिंधुर वदन रदन विशद दुति भांति। ईश्वर कवि कवि वो निरपि रवि पवि छवि दवि जाति॥ अथ संक्षेप तो राजवंश वर्णन॥ हरिपद छंद॥ परम तपस्वी तेजस्वी वर किट्टू मिश्र उजागर। हुते वेद वद वंदनीय शुभ सत्य सुयश के सागर॥ गोतम गोत्र सुपात्र पोपिपद पंकज में सिर धरिकै। दये ग्रामवसु विंशति जिनको नृपवनार छल करिकै॥ क्यो छल कियो कैान थल कैसे कैान लह्यो फल भारो। वहुरि मिश्र जू को प्रभाव अरु वंशावलो सुधारो॥ यह सब कथा कहां लगि कथिये सुनहु सुजन सुषदानो॥ काशिराज चंद्रिका ग्रंथ में सह विस्तार बषानो॥

End—नाम प्रताप सदोदित जागा। जाके उर कलि को तम भागा। बाढ़त देव चरन अनुरागा। जाको जस श्रुति गावा वहुत जन्म इत्यादि लिखि आये। जोव कै जन्म नाहो होत। या चारि अवस्था में जन्मरूप भेद पाया जाता है॥ जैसे वाल वृद्ध इत्यादि॥ कोई केवल लड़िका देषे होइ फेरि दूसरो अवस्था में जो देषे सो नहि पहिचानैगा ग्रोर जन्म संस्कार का नाम है ग्रोर चारो जुग का जो भेद करते हैं सो प्रमान तो समान जानव। याहो ते धर्मन में विरोध भासै है जैसे सामान ग्रोर विसेस सो सब मतन में सामान्य विसिष्ट पायो जात है ग्रोर विसिष्ट में अनेक विरुद्ध देषा परे है जैसे मांस भच्छ में विंध के दक्षिन वासोन कों आज्ञा उत्तर वासो पतित होत है हनन धातु तो जोव में चरितार्थ नाहीं होत

जैसे घट मढ़ आकास का नाम पावत है याही ते जीव व्यापक जान्यो जात है और जन्म सूक्ष्म स्थूल सरीर करके बहुत भासत हैं जैसे चौरासी लक्ष योनि जन्म परमित कियो सो संसार और काल को धर्मनि को मुख्य जानिवो साम आयो। दो० । मान जुक्त मानस सुषद संका रहित उदार बोध रहित निज मोहवस संका करत अपार ॥ मानस मान अनेक जुत मानो मन गम नाहिं मम साहस संकावली छमव साधु महि माहिं ॥ इति सप्त कांड संकावली संक्षेप शुभ मस्तु ॥ लिखत नन्दकिशोर ॥

Subject—तुलसीकृत रामायण सातों कांडो पर संक्षेप से शंका का समाधान और अंत में कठिन शब्दों का कोष।

No. 327(*b*). Mānasadīpikā by Raghunāthadāsa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—115. Size—$13\frac{1}{2} \times 7\frac{1}{3}$ inches. Lines per page—32. Extent—4,600 Anushṭup Ślokas. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṃvat 1914 or A.D. 1857. Place of deposit—Bhaiyā Jadunātha Siṃha Raīsa, Rahuā, Post Office Bauṇḍi, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—No. 327 (*a*) के अनुसार।

End—गुहने विचार कियो कि वैर भाव ते जातु हैं याते ज्ञाति लोगन को बोलाइ कै कहत भयो भरत ते संग्राम करि चांदनी की नाई जस ते चौदहां भुवन सपेद करि हों ॥ वहां सगुनियन कह्यौ है कि रारि न ह्वै है भरतजू रामचंद को मनावने जातु हैं तव गुह भरतादि ते मिलि परमानंद पायो। अरु कौशिल्यादि मातु असीस देय सत लाख वर्ष जोवे को भाव कि किरति जुग जुग रहो ॥ अरु निषादहिं लागु निषाद के कांधे पर हाथ धरे भरत जू गंगा तट पहुंचे स्नान सव सो कृत विस्तार वरषे छंद श्रो कासो पितु को आज्ञा पाइ धो। गजराज कथनिसम मेल मेलाइ चौपाई सरल अरथ आपर की थोरो। सहित प्रभाव सांत रस वोरो दूर देस टरसावन वारो अंग कसम विधु विमल तमारो ॥ इति श्री जानकी पति पदारविंद मकरंद मिलिंदाय मान मानस रघुनाथदास कृत मानस दीपिका या विश्राम अंग सप्तम प्रकाशः ॥ ७ ॥

No. 328(*a*). Harināma Sumiranī by Raghūnathadāsa Rama Sanehī of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—26. Size—12 × 5 inches. Lines per page—40. Extent—780 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—

Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Rāma-Śaṅkara Vajapeyi, Village Bahorīkā, Vājapeyī kā Purawā, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री महाराज महंत रघुनाथदास रामसनेही कृत हरिनाम सुमिरनी ग्रंथ लिष्यते ॥ दोहा ॥ राम नाम को वंदना करौं प्रथम सिर नाय जासु कृपाते सिद्धि सब भये सुषद समुदाय ॥ श्री गुरु देवादास के चरण कमल धरि माथ । श्री हरिनाम सुमिरनी वरनत जन रघुनाथ ॥ कुंडलिया ॥ प्रथम जो हरि भक्त न करो वैष्णौ पंथ प्रकाश । सोई पकरो रघुनाथ के श्री गुरु देवादास ॥ श्री गुरु देवादास वास रह्यो अतिथ गंज में विप्र वपुष मद त्यागि भये अच्युत अरज में । रंज परे नर बहुत होत त्यागी पुर मृत में । फिरकत सोई सुष परइ तजै जो विभाके पंथ में प्रथमहि रामप्रसाद के रहे सिष्य में सिष्य । रामसनेही संत मिलि राम नाम दियो लिष्य । राम नाम दियो लिष्य नाम परभाउ दिढ़ायो रहत वढ्यो विस्वास वस्तु सव ताते पायो । ताते तिन्हे रघुनाथ गिन्यो सतगुर संश्रित में । दत्तात्रै को रीति रहनि निज तजी न प्रथमै ॥

End—दोहा—सिफत करै कोई षांड़ को धरै न मुष अभिराम । लहै स्वाद रघुनाथ किमि तिमि सुमिरन विन राम ॥ संकेतन परिहांस युत अस्तोमन हेलन्त जपे नाम रघुनाथ सोउ दलै पाय अमितस ॥ सोई ग्यानी ध्यानी सोई दाता सुर सुजान । अति पवित्र रघुनाथ सोइ जो सुमिरे भगवान ॥ सठ असिष्य विष पाठ को तिन्हे न कहिये येह । राम उपासिक सो कहो जो सुनि उर धरि लेह ॥ श्री हरिनाम सुमीरनी मधि कछु हरिका ध्यान । वरनत जन रघुनाथ निज उक्ति सहित अनुमान ॥ दीर्घ कुंडला छंद ॥ सीस स्याम गिरि श्रंग सम मुकुट सरिस द्रुम दिव्य । मेचक कच उतरे मनहुं अहि के छौना सिष्य ॥ अहि के छौन सिष्य चन्द्रमुष अमृत हेता । सिषि सम कुंडलीत रवि रहे मग सकुचि सचेता ॥ सहित प्रीति रघुनाथ देत मनि मनहुं अंकोरा अरुण फूल जुत कियो किधौं उर प्रभु वोरा ॥ प्रभु के लोचन चपल मनहुं जुग षंज न लरहीं । वीच घ्रान सुक सफन वैठ जनु धर हरि करहीं ॥ विवाधर कर लोभ रह्यो तकि तेहि दिसि धोरा । किधो सुक्त सनि भौम भनत कछु उड़पति तीरा ॥ कमल कोस मुष मध्य रसन जुत दसन सोहावे । जनु वज्रन जुत तड़ित परत तलपि जव मुसक्यावै ॥

Subject—राम नाम की महिमा और राम जी के रूप का उपमा सहित वर्णन ।

No. 328(b). Dohā Kavittaādi by Raghunāthadāsa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—54.

Size—7½ × 3½ inches. Lines per page—14. Extent—380 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1949 or A.D. 1892. Place of deposit—Bhaiyā Ṭhākura Jadunātha Siṁha, Raīsa of Rehuā, Post Office Baunḍī, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री रामो जयतिः अथ श्री रघुनाथ दास जी कृत दोहा कवित्त आदि लिष्यते ॥ उों तन मन ते रघुनाथ जन जानि लेहि रे नीच मोच रहो मड़राय शिर राम रहहि हिय वोच ॥ १ ॥ अस सहजे वनि जात जस छंद प्रवंध कवित । तस न रहत रघुनाथ कश रामचरन वश चित्त ॥ २ ॥ मन हमार रस एक अस रहत रोज पर रोज । पद सरोज रघुनाथ जन जप तप और न प्रोज ॥ ३ ॥ जप तप संजम नेम व्रत जोग जाग वैराग । फल सव कर रघुनाथ भल रामचरन अनुराग ॥ ४ ॥ जन रघुनाथ हमार मन रहि रहि अति अकुलाय । पाय हाथ ऐसेहु जनम राम भजन विन जाय ॥ ५ ॥ राम नाम रसना रसनि फसति अपन करि लेति छन छन जन रघुनाथ मन महत राम सन हेत ॥ ६ ॥

End—कलिकाल कराल में आठो जाम रहे पलते मन वो दहि रे । सिया राम कथा न जहां व तहां है सव शास्त्रन में वकवादहि रे । रघुनाथ निरंतर काहे न लेत हो राम के नाम को स्वादहि रे ॥ कोसन जात पयादोइ पांव विना पद् त्राण लिए सिर मोटें । रामकृपा गजवाजि अनेक खड़े अव द्वार पगारन लोटें । द्वारहु होत न दंत खड़े सवते अव आय के पायन लोटें ॥ जन रघुनाथ गरीवन संग करी त्यों करो दशरथ के ढोटें ॥ सीय राम कथा को कहा करै रहें अपरें अपरें कछु और न भाषै जो जौनु कहै सो तौनु कहै तौनु उठाय धरै सव तारवें सोवत जागत के अपनेम अहहि रघुनाथ महहिं अभिलाषे ॥ अवलोकत आठो जाम रहें करुना कर राम कृपाल को आवें ॥ इति श्री श्री महाराज रघुनाथदास जी कृत दोहा कवित्त सम्पूर्ण लिखा संवत १०४२ जानकी शरण ग्राम मुजावलि ॥ इति ॥

Subject—राम भक्ति सम्बन्धी दोहे और कवित्त

No. 329. Karichikitsā by Raghunātha Siṁha. Substance—Country made paper. Leaves—40. Size—8 × 6 inches. Lines per page—36. Extent—720 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1883 or A. D. 1828. Date of manuscript—Samvat 1920 or A. D. 1863. Place of deposit—Paṇḍita Janārdana, Village Bhiṭaurā, Post Office Biswā, District Sītāpura (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ करी की चिकित्सा लिष्यते ॥ दो० ॥ गणपति गुर गंगा गिरा गोविंद के पद ध्याय। कहौं चिकित्सा करी की चैागुन चाउ चढ़ाइ ॥ गुन वसु वसु ससि भाद्र सित चतुर्दसी रविवार। करी चिकित्सा ग्रंथ को भयो तवहि औतार ॥ प्रथम जाति औ भेद कहि लच्छन रूप विचार। रुज निदान ओषद सवै कहैा नकुल अनुसार ॥ चैा० ॥ प्रथम जाति वंगाला जानैा। पेदा वारद तहां वषानैा। भातू गाछ आदि मे कहिये। औ सोलोत दूसरा लहिये ॥ चित काल्हन तोमरो जानो पत्रक चैाथ कुक्षसर मानैा ॥ मोरंग छठो सातवां ढाका। चौता नाम आठवां भाषा ॥ नव वारंका माटा जानि। औतिपाल दसरावां मनि मानि। कंदद्ध लाग रहो आला। है वर है। माहो वंगाला ॥ दोहा ॥ मलेवार घनागिरो पंगु औ सोलान। कोह मेदिया जानिये दूगला कंद वषानि ॥ कहेउ नील नाम वहुरि औ गजपाल सो गाथ। लै गज होय प्रधान मत वरनत है रघुनाथ। द्वादश वगाला विषे औपट दछिन जानि। कहो अठारह जाति ये ग्रंथन को मत मान ॥

End—हथिनो को भूष की दवा हरिगीता छंद ॥ कुटकी षपदनि हींग हीरा जुनु सूती का लहैा ॥ औ वाड़ पुंभा फून मिर्च सांवरी इन्द्रजव कहैा ॥ छाछि औरासार गंधक पाव पाव यती गनो असगंध नगौरी गुर मुली मो पाव ये द्वै द्वै भनैा ॥ दोहा ॥ येक सेर जल खारि गुड़ डारि कराह चढ़ाइ। तामें आटा उर्द को आधु सेर चुरवाय। फिरि सव औषद पोस कै डारि कराह उतारु। गोलो मासे सात की करि वरतन मे धारु ॥ हथिनी को यह नित्तहो निन्ने मुषहि षवाव। भूष वढ़ै औ वलवढ़े रहै चढ़ाये चाव। हरि गीता छंद ॥ वत्तीस पहिले दूसरे छात्र्ठि तिजे चैावन गिनैा। चोंतीस चैाथे मे कहै यकतालिसे पंचये भनैा ॥ वनचास छठयें सातयें चोवन अठै पत्तालिसो वंतालिसो नवये प्रकासो छंद हो सुष जानिसा ॥ दोहा ॥ रिषि ससि विधि मुष छंद है नवप्रकास गुन गाथ करी चिकित्सा ग्रंथ मे हरषि किय रघुनाथ ॥ इति श्री रघुनाथ सिंह कृते करी चिकित्सा ग्रंथ हाथा के दंत का राग वच्चा के औ भूष करन पुष्टि करन ग्रंथ समाप्तः संवत १९२० लिषतं गनेस पंडित कृष्ण पक्षे तिथा नवम्यां शनिवासरे समाप्तं ॥

Subject—हाथियों के राग और उनकी औषधियां।

No. 330(*a*). Rukmiṇi Pariṇaya by Mahārāja Raghurāja Siṁha of Rewah. Substance—Country-made paper. Leaves—314. Size—$13\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—60. Extent—3,533 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—

Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1907 or A. D. 1850. Date of manuscript—Samvat 1910 or A. D. 1853. Place of deposit—Mahārāja Bhagawān Baksha Simha of Amethi, Post Office Rāmanagar, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री रुक्मिणी वल्लभो विजयतेतराम् ॥ सोरठा ॥ जय केसव कमनाय चेदिय मागध मद मथन ॥ जय रुक्मिनी सु पीय जदुकुल कुमुद मयंक जय ॥ १ ॥ पंगु चढ़ै गिरि श्रंग, जासु कृपा मूकहु वदहिं । श्री मुख पंकज भृंग, सो माधव रक्षक रहैं ॥ २ ॥ वसहिं रमा उर जासु वागीसा मुष में रहैं ॥ ध्यावत पूजहिं आस जदुपति होंहि प्रसन्न सो ॥ ३ ॥ छप्पय ॥ विघन हरन सुष करन दुष छरन ताप अरि । वन्दौं श्री गननाथ जोरि जुग हाथ माथ धरि । वन्दौं सरसुति सुमति देन कुलि कुमति विनासनि ॥ जगत जननि जन कृपा करनि परब्रह्म प्रकासनि ॥ अेा वन्दौं वारम्वार मैं पद पंकज सुषदेव के ॥ जेहि मुष निर्गत हरि चरित सब दुष काट्यो नर देव के ॥ ४ ॥ दुषित जगत के जननि लषि प्रगट्यो करन उधार ॥ श्री मुकुंद हरि गुर चरन वन्दौं वारहिवार ॥ ५ ॥ जासु कृपा पालहु मोह सम पायो परम विवेक ॥ हरि गुरु पितु विशनाथ पद वन्दौं वार अनेक ॥ ६ ॥ जो जग प्रगट पुरान वहु रच्यो करन जन पूत । व्यासरूप हरि को सदा वन्दन करौं अकूत ॥ ७ ॥ मम गति नहिं ग्रंथन रचन पै कछु मति अनुसार ॥ वरन्यो रुकमिन परिनयो लहि गुरु कृपा अपार ॥ ८ ॥ सोरठा ॥ हरन हेत भुविभार प्रगट्यो हरि वसुदेव गृह ॥ कीन्हैा चरित अपार गाइ गाइ जेहि जन तरत ॥ ९ ॥ × × × × ×

End—व्यास हिय आल वाल बोये बीज नारद जी ब्रह्म तत्व रूप पोध बाढ़ो यों सुहायो है ॥ अगम निगम शुद्ध संहिता पुरान पत्र द्वादश प्रशाषन ते फैलि क्षिति छवि छायो है ॥ भाषे रघुराज ज्ञान जाग आदि फूल फूल प्रेम फल पाके पुनि पक्षिव लुभायो है ॥ कामना पुजावन को हरि के मिलावन को जीवन को कल्पतरु भागवत भायो है ॥ २ ॥ चारिहु वेद पुरानन को मत संहिता अेा षट शास्त्रन आसै ॥ ग्यान अेा भक्ति विरागहु जोग जिते शुभ साधन को श्रुत भासै ॥ भाषत है रघुराज द्रुतै सिगरे उर आवत है अनयासै ॥ श्री मद भागवतै सुनते भगवान करैं हियरे हटि वासै ॥ मूढ़ विहाल परे जगजाल डस्यो कलिकाल भुजङ्ग कराले ॥ व्यापि विषे विषगो प्रतिरोम थके गुनि पाकरि ओषधि जाले ॥ भाषत है रघुराज सुनो न चले कछु जंत्रनि मंत्र न माले ॥ गारुड़ी भागवतै सुनते उतरै विष बीसविसे ततकालै ॥ सोरठा ॥ मैं निजमत अनुसार रुक्मिन परिनय को करो सज्जन करि सुविचार समुझि सुषित हुइ हैं सदा ॥ दोहा ॥ अति संक्षेपत भागवत जो मैं कियो उचार ॥ कहहिं सुनै समुझइ जु कोउ तेहि नहि

यह संसार ॥ सोरठा ॥ उनईस सै। अरु सात भादौं सित गुरु सतमी ॥ रच्यो ग्रंथ अवदात, रुक्मिन परिनय नाम जिहि ॥ इति श्री मन्महाराज कुमार श्री युवराज बाबू साहब रघुराज सिहजू देव कृत रुक्मिणी परिणय संक्षेप भागवत वर्णनो नाम एक विशोध्याय ॥ समाप्त ॥ मिती कुआर सुदी ६ संवत् १९१० ॥

Subject—(१) पृ० १—१८ तक—प्रथम अध्याय। जरासिंध से युद्ध करने के पश्चात् कृष्ण का मथुरा निवास। (२) पृ० १९—३२ तक—द्वितीय अध्याय—कालयवन वध, और द्वारिका प्रवेश। (३) पृ० ३३—४८ तक—तृतीय अध्याय—द्वारावती वर्णन। (४) पृ० ४९—६१ तक—चतुर्थ अध्याय—वलभद्र प्रणय। (५) पृ० ५२—७१ तक—पंचम अध्याय। रुक्मिणी विवाह मंत्रणा। नारद गमन। (६) पृ० ७२—८३ तक—षष्टमध्याय—कृष्ण गुणरूप चरित्र वर्णन। (७) पृ० ८४—९४ तक सप्तमोध्याय—रुक्मिणी द्वारा कृष्ण के पास विप्र का संदेशा देकर भेजना तथा उसके द्वारा अपनी स्थिति समझाना। (८) पृ० ९५—१०४ तक—अष्टमोध्याय रुक्मिणी नखशिख—(९) पृ० १०५—११९ तक—नवमोध्याय—कृष्ण का कुंडनपुर आगमन। (१०) पृ० १२०—१३८ तक—दशमोध्याय—कुंडनपुर वलदेवागमन—(११) पृ० १३९—१५७ तक—एकादश अध्याय—रुक्मिणी हरण। (१२) पृ० १५८—१७० तक—द्वादश अध्याय—संकुल युद्ध वर्णन। (१३) पृ० १७१—१९२ तक—त्रयोदश अध्याय—द्वंदयुद्ध वर्णन। (१४) पृ० १९२—२०७ तक—चतुर्दश अ०—वलभद्र विजय वर्णन। (१५) पृ० २०८—२३१ तक—पंचदश अ०—कृष्ण विजय वर्णन। (१६) पृ० २३२—२४७ तक—षोड़स अ०—द्वारका गमन, रुक्मिणी विवाह वर्णन—(१७) पृ० २४८—२५८ तक—सप्तदश अ०—प्रथम रास वर्णन—(१८) पृ० २५९—२६९ तक—अष्टादश० महारास वर्णन। (१९) पृ० २७०—२९० तक—एकोनविंशत अ० षट्ऋतु वर्णन। (२०) पृ० २९१—३०० तक—बीसवां अ०—रुक्मिणी परिहास। (२१) पृ० ३०१—३१४ तक—इक्कीसवां अध्याय—संक्षेप भागवत वर्णन।

No. 330(*b*). Raghurāja Siṁha kī Padāvalī by Rāja Raghurāja Siṁha. Substance—Country-made paper. Leaves—50. Size—12×6 inches. Lines per page—12. Extent—825 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rājā Bhagawān Baksha Siṁha, State Amethī, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ लिख्यते हजूर कृत पदावली ॥ होरी ॥ मोहत जोहत जोग भयोरी खेलत होरी ॥ वरिसाने वारी एकरि लई

वाको बीच सांकरो खोरो ॥ चलो नहि कछु बरजोरो ॥ झीनि पात पट सारी साजो दामिनि रचो मुकुट सिर छोरा ॥ ऐंचि बुलाक नाक नथ दीनो मारग रचो सिर सेंदुर घोरो ॥ मल्यो रूप सुंदरि तोरो ॥ खैचि काछनी विरचि कंचुकी पहिरायो घाघरो बड़ोरो ॥ मुदर कंठ गुलूबंद गरो करि के मुकत मालको चोरो ॥ दुहुं दिशि दै दै हथोरो ॥ श्री वृषभान दुलारी के ढिग ल्याय करी अस विनय निहोरो । ठकुराइन यह दीनहि नवल देहु दया कर निज कर छोरो ॥ करो नहि अब बरजोरो ॥ ४ ॥ वेद पुरान विज्ञान विरति तप मेरो मन सिगरो विसरोरो ॥ श्री रघुराज सकल जग को छवि वारहु वाहि वहोरि वहोरो ॥ सांवरो नंदको छोरो ॥ ५ ॥

End—अवलोको साँघ भूपति भवनम् ॥ चारु कुमार जनित सुष शालित सघन नगर नर गमनम् ॥ लसित पताक कनक तोरन पट शीतल सुरभि सुपवनम्। श्री रघुराज दान कृत मोदन महिसुर कारित हवनम् ॥ १२३ ॥

छैलन छाह छुअन नहि पैहै लीजै गारिन जोरो ॥ श्री रघुराज आज बलदाऊ आये पैलन होरा ॥ अब फागुन बीत्यो जात आली कैसे करों । मूढ़ मायके के मोहि रोकत क्यों कोरके निकरों ॥ श्री रघुराज कहों कहये तो मैं तोरि पैयां परों ॥ ल्याइ गुलाल लाल करतें लुकि मैं उर मांहि धरों ॥

Subject—विविध गीतों में राधाकृष्ण सम्बन्धो होलो आदि लोलाओं का वर्णन ।

No. 331. Manasambodha by Raghuvaṁśavallabhadeva. Substance—Country-made paper. Leaves—114. Size—6½ × 5 inches. Lines per page—22. Extent—1,881 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṁvat 1912 or A.D. 1855. Date of manuscript—Saṁvat 1912 or A.D. 1855. Place of deposit—Lala Lakshmī Narayaṇa Marwari, Rāe Bareli.

Beginning—श्री सीतारामौ जयति अथ श्री मन संबोध लिष्यते दोहा ॥ वंदौ श्री गुरुपद परस सीयराम हिय ध्याइ प्रेम भक्ति अनन्य व्रत परमानंद अधिकाइ ॥ १ ॥

श्री गुरुदेव वशिष्ट जू तुम सब विधि समरथ्थ ।
पुरवहु रुचि लघुवाल लघि सिष वहुयरि सिर हथ्थ । २ ॥
वंदौ श्री मद्भरत पद नाम सत्य करु आप ।
राम भक्ति दै पाल मोहि हरहु जगत संताप ॥ ३ ॥

नाम लेत अरि होत छै वढ़त प्रताप अषंड ।
वंदो श्री रिपुदवन पद दलु मम सत्रु प्रचंड । ४

End—जो पदार्थ मनचाह जेहि करै रेष सोइ ध्यान ।
लहै सकल फल वांछि जो साधन क्रम ले मान । ३६
रेषरंग उतपत्ति सब साधन परम जथार्थ ।
स्वारथ मनदायक सुषद प्रेमभक्ति परमार्थ ३७ ॥
सीयराम पद ध्यान यह कह कछु मनहित सोध ।
संत मतो सद मत निरषि जो ध्यावै लहवोध ३८ ॥
मन रंजन गंजन भर्महि भंजन जगत विकार ।
सुहृद नेमवर प्रेमदा जीवन प्रान अधार ३९
द्रग ससि पंड सु ब्रह्म भो फागुन सित रविवार ।
दशमी तिथि प्रथमो पहर रच्यो ध्यान पद सार १४० ।

इति श्री मन संवोध चरन चिन्ह रंग उत्पत्ति वरननो दशमो विलासः

Subject—पृ० १—११ तक । गुरु पद वंदना और सीताराम की स्तुति । वशिष्ट सहित चारो भाइयों का प्रताप वर्णन । पवनसुत की स्तुति महिमा, शंभु शिवा पद वंदना, मन को शिक्षा, मनुष्य तन की महत्ता और राम भक्ति की मन को शिक्षा । प्रथम विलास में ११६ दोहों में मन बोधार्थ, मनोपदेश, (सीताराम की भक्ति से प्रेम वर्णन) पृ० ११—१२ तक द्वितीय विलास में ११६ दोहों में राम नाम अर्थ वर्णन । पृ० २२—३९ तक तृतीय विलास में १७७ दोहों में राम लक्ष्मण का नख सिख रूप श्रृंगार वर्णन और ग्रंथकर्ता की विनय । पृ० ३९—५६ चतुर्थ विलास में १९१ दोहों में लीला गुण संक्षेप से वर्णन । पृ० ५७—७० तक—पंचम विलास में १४१ दोहों में परम धाम की प्राप्ति और अखंड स्थिता का वर्णन, गुण लक्षण नाम, प्रपन्नत्व गुण । पृ० ७१ से ८१ तक प्रयति निष्ठनत्व गुण निर्भरत्व गुण, उपाय सूक्ष्मत्व, परतंत्रत्वगुण, अपाकृतत्व गुण, एकांतकत्व, नित्यरंगित्व गुण, परमैकांतकत्व संवंधज्ञातत्व, शेषभूतत्व गुण, शेषब्रह्म परत्व गुण, मुमुक्षुत्व गुण, परकाष्टा गुण, उपायादि स्वरूप बोधत्व, आत्मारामात्व, कृपालत्व, अकृत द्रोहत्व गुण, तितिक्षत्व गुण, सत्य सारत्व गुण, समत्व गुण, सर्वोपकारत्व, निर्दंभत्व गुण, अकामत्व गुण, अमानित्व, अकिंचनत्व, अनीहत्व, अमित भोक्तत्व, अस्थिरत्व, मच्छरनत्व, अप्रमत्व, गंभीरत्व, धीरजत्व, कल्पत्व गुण, करुना गुण, मित्रत्व गुण, अमानित्व मुदुत्वनता, षष्ठ विलास में ११८ दोहों में संतगुण महिमा वर्णन । पृ० ८२ ९२ तक आठवें विलास में ११५ दोहों में ब्रह्म और जीव सजाति वर्णन । पृ० ९३—१०२ तक नवम विलास में १४१ दोहों में अर्जी

पृ० १०३—११४ तक चरण रेखा वर्णन, स्वस्तिक, अर्द्ध अंघ्रि, अष्टकोण, महालक्ष्मी रेख, छत्र रेख, मुसलरेख, हलांघ्रि, सर्परेख, वानांघ्रि, नभरेख, कमल अंघ्रि, स्यंदनांघ्रि, वज्ररेख, जवरेख, कल्पवृक्ष, अंकुस रेख, ध्वजरेख, मुकुट रेख, चक्ररेख, दंडरेख, नररेख, चमररेख, सिंहासन रेख, जवमाल रेख, मीनांघ्रि, प्रथी रेख, गोपदरेख, सुधाकुंड रेख, त्रिवली रेख, पूर्णचन्द्र रेख, अर्धचन्द्र, सक्तिरेख, बिंदुरेखा, जंबूफल, पताका, संखरेखा, षट्कोण, गदारेख, जीवात्मा रेख, वीनरेख, वेनुअंघ्रि, धनुषरेख, तूनरेख, सरजूरेख, हंसरेख, चन्द्रकांघ्रि, दसमें विलास में १४० दोहों में चरण चिन्ह वर्णन।

No. 332. Śighrabodha by Raghuvaradāsa of Ayōdhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—42. Size—12 × 6 inches. Lines per page—26. Extent—1,092 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1911 or A. D. 1854. Date of manuscript—Samvat 1937 or A. D. 1880. Place of deposit—Ṭhākura Śiva Pratāpa Siṁha, Kablā, Post Office Jailā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ जेहि को भासा जगत सब भासि सहेउ रस एक। तिन्हके पद वन्दन करौं नासत विघन अनेक ॥ १ ॥ रोहणी तीनो उत्तरा रेवती मूल विचारि। स्वाती मृगसिर मघा अरु अनुराधा उरधारि ॥ २ ॥ हस्त सहित ये नषत सब ग्यारह मंगल मूल। समे विवाहे के कहे जाति सबै अनुकूल ॥ ३ ॥ इति विवाह ॥ माघ मास में धनवती फागुन सुभगा होइ। वैसाषे अरु जेठ में पति को क्षय है सोइ ॥ ४ ॥ कहि असाढ़ कुल वृद्धि सो अन्य मास नहिं लीन। मार्गशीर्ष इच्छा सहित कोइ आचार्य मत कीन। इति विवाह मास ॥ अमावस रिक्ता तिथी वेलावार विचारि ॥ जन्मभंग गंडात पुनि क्रूरवार निरधारि ॥ ६ ॥ जतन सहित परित्याग करि कहिगे पंडित लोग। नव सब कारज के मिले सुन्दर यह संजोग ॥ ७ ॥ नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णा तिथि यह जानि। तीनि वृत्त यहि क्रमहि से प्रतिपद ते पहिचानि ॥ ८ ॥

End—वर्ष अढ़ाई शनि कह बढ़ै बढ़ै राहु औ केतु। ग्रह भुक्ति ये कहि गये पंडित जानन हेत ॥ सूर्य चंद्र एकत्र करि जो संख्या गनि ठीक पीठ देवक्ष श्री कहत हस्त चारि मृत्यु नीक ॥ बाहु आठ सुख प्रद कहे गर्भ पाच सुष नाश। भुज दो भोग विचित्र कहि चरण दोय हैं त्रास ॥ चूल्ही चक्र विचित्र यह वरन्यो रघुवर दास निज बुधवल करतव्य नहिं गर्ग उक्ति प्रकाश। ज्योतिष वक्ता विदुष जन तिन सो कहौ बहोरि चूक चपलता मेटि कै देव दोष नहिं मोर ॥ नीच जात

अरु नीच मति कलयुग विनसत संग। नहि विद्या अभ्यास कछु जेहि ते होइ उमंग॥ क्कार मास तिथि द्वादशी शुक्र पक्ष सुख कंद १९११ संवत्सर कहै जन रघुवर आनंद ॥

इति श्री रघुवरदास विरचिते शीघ्रबोध भाषायां रघुवर मनोरमाख्यं चतुर्थ प्रकरण समाप्त शुभम् ॥ राम राम राम राम राम श्री हनुमान जी की जय॥ श्री श्री श्री श्री श्री।

Subject—ज्योतिष ग्रह आदि के शुभ अशुभ लक्षण।

No. 333(*a*). Dharamarāja Gītā by Raghuvaradasa of Mirzāpur, District Bahrāich. Substance—Country-made paper. Leaves—7. Size—10 × 6 inches. Lines per page—24. Extent—170 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1903 or A.D. 1846. Place of deposit—Biṭṭhaladāsa Mahanta, Mirzāpur, Post Office District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री रामचन्द्रायनमः ॥ अथ धरमराज गीता लिष्यते ॥ सोरठा ॥ गुरुपद पंकज धूरि वंदन जो चितधारि करै। लहै सुमंगल भूरि रघुवर दास विचारि कह ॥ चो० ॥ वन्दैा गुरु गनेस गडुरासन। वन्दैा सारद कुबुधि विनासन। वन्दैा देवजक्ष अरु अहिपति हरहु कुमति अति देहु सुमति सति ॥ वंदैा सिवसंग उमा विन्यासिनि। जेहि सुमिरे मति होति सुश्रासिनि ॥ वंदैा कागभुसुंडि उदासी। रहत सदा उत्तर दिसिवासी ॥ बालमीक नारद घट जोनो। सुक सनकादि व्यास विधि छोनो। वंदैा संत चरन अघमोचन। जेहि रज परसत होत सुलोचन ॥ मात पिता कर वंदन करहूं। तव प्रसाद भवसागर तरहूं ॥ जहं लगि अपर होहि जग ज्ञानी। सव कहं वंदत वचन प्रमानी ॥ दोहा ॥ वंदैा ससि उड़गन विमल भानु सहित कर जोर तव प्रताप महिमा सुजस हरै तिमिर मति मोरि ॥

End—लोह सम पुनि गिरत काटत गड़त अति अधिकाइ। दीर्घ चोंच पंछी यक आइ नेत्र लिहिसि काढ़ि आइ। कहत अव तुम सुनहु मूरष कीन्ह तुम्हरे आइ ॥ साधु कह जो आपि काढ़े साई नेत्र कढ़ि जाइ रवरवा एक महानर्क है तेहि पर ले गये घिराय। रैारव तव कहत वातें सुनैा हो जमराइ। ये पापी वड़ पाप कीन्हों मोमे नाहि समाय। कारिके मुद्ध डारु याको कहत हों सिरनाइ। अग्नि कुंड महं सोधि ताको ततलेल नहवाइ। रैारव में डारु दीन्हेसि कोइ न भयो सहाइ। सोस निकसत गीध ठोकहिं जन उपल मारहि धाइ। अति कठिन क्रम

करान यासे तब जांत किर्हान गनाइ ॥ ठाल मारति संतजन कोउ सुनत मूरष नाहि जोव घाहो महा पापा कहन पतिआइ । दोहा ॥ या विधि जमपुर को कथा कहेउ सुनेउ कविराइ राम भजहि ते बचहि गे मंगल गुरु मोहि बनाउ ॥ जोजन रघुवर नाम को जपै सदा हिय लाइ रघुवर ते मंगल कहेउ ते जमते वचिजाइ ॥ इति श्री धरमराज गीता रघुवर दास समाप्तम संवत् १९०३ ॥

Subject—पापियों का दंड और धर्मात्माओं का आनंद प्राप्त होने का वर्णन । उदाहरण दिया है कि एक पापो की स्त्री पतिव्रता थी पति की आज्ञा पालन अपना धर्म समझती थी, उसका पापी पति पाप कर्म करता और वह उसकी आज्ञा मान कर उसमें सम्मिलित होती रही जब पापी का यमराज लेने आये तो पतिव्रता स्त्री के सन्मुख उस पापी का न ले जा सके । पतिव्रत धर्म को मुख्य बताया है ।

No. 333(*b*). Guruparamparā by Raghuvaradāsa of Mirzāpur, District Bahraich. Substance—Country-made paper. Leaves—5. Size—7 × 4 inches. Lines per page—24. Extent—40 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1907 or A. D. 1850. Date of manuscript—Samvat 1928 or A.D. 1871. Place of deposit—Mahanta Biṭṭhaladāsa, Village Mirzāpur, Pāhī Sūrjapur, Post Office Bahrāich, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—ॐ श्रीरामायनमः ॥ ऊं सुन्य सून्य के महासून्य महासून्य के मूल प्रकृति । मूल प्रकृति के बीज ओंकार । बीज ओंकार के महातत्व । महातत्व के आदिमूल । आदिमूल के । नारायण । नारायण के महालक्ष्मी । महालक्ष्मी के इच्छा स्वरूप । इच्छा स्वरूप के भुभु जुग सयनं । भुभु जुग सयनं के । उजास मुनि । उजास मुनि के जात मुनि । जात मुनि के लोक मुनि । लोक मुनि के प्रगट मुनि । प्रगट मुनि के गंभीर मुनि । गंभीर मुनि के द्रग मुनि । द्रग मुनि के अचल मुनि । अचल मुनि के प्रकास मुनि । प्रकास मुनि के नारद मुनि । नारद मुनि के कष्ट मुनि । कष्ट मुनि के जामुन मुनि । जामुनि मुनि के हरिनाथ । हरिनाथ मुनि के पुंडरीकक्ष पुंडरीकक्ष के कृपाल मुनि कृपाल मुनि के गोपाल मुनि । गोपाल मुनि के रत मुनि । रत मुनि के धोजे मुनि । धोजे मुनि के संतोष मुनि । संतोष मुनि के दया मुनि । दया मुनि के तुलसी मुनि ॥

End—आचार्य । स्राव आचार्यों के गमासुर । गमासुर के द्वारा नंद । द्वारा नंद के सुतानंद । सुतानंद के अचुतानंद । अचुतानंद के सचिदानंद ।

सच्चिदानंद के पूरनानंद । पूरनानन्द के दयानन्द । दयानन्द के श्रयानन्द । श्रयानन्द के हरियानन्द । हरियानन्द के द्रियानन्द । द्रियानन्द जो के राघवानंद । राघवानंद जी के रामानन्द । रामानंद के अनन्तानंद । अनन्तानन्द के कृष्णदास कोहारी । कृष्णदास कोहारी के टोला जो महाराज टोला जो महाराज के अंगद परमानन्द दास जी । अंगद परमानन्द दास जी के गंगाधर रामदास.जो भागोरत दास जी भागोरत दास जी के पेमदास । पेमदास जो रामदास जी राम दास के छवोलदास छवोलदास के गोवर्धन दास । गोवर्धन दास जो के जानकी दास जानकी दास के सजराम दास । सजराम दास जी के वावा जो मंगलदास । वावा जो मंगलदास के वावा जी रघुवरदास । वावा जी रघुवरदास जी के वावा रघुवर दास मिर्जापुर निवासी लिखा विट्ठल दास संवत १०२८ में । प्रकाश किया रघुवरदास हरि मंदिरे मिर्जापुर संवत १९०5 ॥

Subject—रामानुज संप्रदाय के गुरुओं का वर्णन ।

No. 333(*c*). Krishṇacharitāmṛita Gītā by Raghuvaradāsa of Mirzāpur, District Baharāich. Substance—Country-made paper. Leaves—29. Size—15 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—406 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṃvat 1890 or A. D. 1833. Date of manuscript—Saṃvat 1907 or A. D. 1850. Place of deposit—Mahanta Biṭṭhaladāsa, Village Mirzāpur, Pāhī Sūrjapur, Post Office Bahrāich, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः छंद गजल पटपदी ॥ वचा मानो या न मानो कृष्ण नाम है सच्चा ॥ वेद और पुरान शास्त्र ग्रंथ में जच्चा । कुंडल किरीट मुक्तमाल सुभग सोहै । चटक मटक चाल देषि मेरो मन मोहै ॥ कुवरो के यार वन छोड़ि दोनो गोपिका ॥ रघुवर हरि नाम रटो राति दिवस ज्यों पिका ॥ १ ॥ वचा वेद की यह वात कृष्ण रूप है सच्चा । पूतना लगाइ गोद कहो मेरा वच्चा । कपट भक्ति कीन्ही हरि दीन्हो फल अैसा । जाचि मरे जोगी मुक्ति पावै नहीं तैसा ॥ राधिका के बड़ी प्रोति छोड़ि दीन्हो कुल में । कुवरो है नोच जाति वसी कृष्ण दिल में ॥ २ ॥ वचा देषिये विचारि कृष्ण नाम है पलोता । करौं दल भस्म भए अर्जुन ने जीता ॥ कृष्ण कृष्ण रटति भई गोपिका । पुनोता कृष्ण चरण प्रोति नहीं काह पठत गीता । भनक भनक भागे दधि षाए वोरनियां रघुवर के हिए लुके संतन सुष दनियां ॥ ३ ॥

End—हरे कृष्ण कहो कृष्ण जेते वृन्दावन वासी । ऊधो प्रनाम कीन्ह सब के सुषद रासी। हाथ जोरि विदा मांगि मधुवन मै जैहैं। महाराज कृष्ण जो ते जथा हाल कहिहैं ॥ मेरे कछु कहिवे मैं भेद नहीं जानियो । कृष्णचन्द्र मालिक है हिए आपु गनियो ॥ नैनन में नीर भरे नन्द विदी कीन्हीं। रघुवर सखा परम मधुर जसुदा लै लीन्हीं ॥ ३३ ॥ हरे कृष्ण कहो कृष्ण ऊधैा मधुवन में । पहुंचे देषे कृष्णचन्द्र सषा हिए में । अति सकुच बूझो कुसलता पिता मातु मेरी कैसी । गोपी सब प्रेम रूप कहैा कुसल जैसी ॥ ऊधो षट मास तुम्हे विन्दावन वोती । मेरे हिए सोच होइ पावे अधिक भीती ॥ मधुकर के नैन में नीर ढरकि आवा । रघुवर सषा जोग ध्यान मोरा मैहो पाया ॥ ३४ ॥ हरे कृष्ण कहो कृष्ण ऊधो रोइ रोइ वोले । गोपी सब दास आस मिलि हो न जोले ॥ हाइ लाल हाइ लाल प्यारे कहि लैाटें । देषे षट मास नित्य लगे मोहि चोटें ॥ आप की वताय वान ज्ञान वहुत भाषा । वे समुझै न कोई वात स्याम रूप चाषा ॥ भक्ति को स्वरूप सवै प्रेम धार द्रवो । रघुवर सषा ऊधैा सराहत है पूर्वो ॥ ३६ ॥ इति श्री कृष्ण चरितामृत गीता रघुवर सषा विरंचित समाप्तः ।

Subject—जन्म से लेकर अंत तक कृष्ण का चरित्र ।

No. 333(*d*). Śrikrishṇacharitāmrita Kuṇḍī by Raghuvara Sakhā of Mirzāpur (Bahrāich.) Substance—Country-made paper. Leaves—44. Size—14 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—802 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1900 or A. D. 1843. Date of manuscript—Samvat 1905 or A.D. 1848. Place of deposit—Mahanta Biṭṭhaladāsa, Village Mirzāpur, Post Office Bahrāich, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः ॥ राग जै धुनि ॥ जै जै गुरु देव तिहारो सरना ॥ दोन्हो संष चक्र गरे तुलसी को माला प्रभु ऊर्द्ध पुंड श्री तिलक मस्तक पे धरना । जम की त्रास छूटि गई सुनत श्रवन द्वै सुमंत्र हिए में वसाइ दीन हरि चरना ॥ वेदहु पुरान शास्त्र सव को वात सुनी मैने राम रूप गुरु मेरो शिष्य तरना ॥ पाहि पाहि रघुवर सषा सरन स्वामी तेरे हूजिये दयाल नेक नजरि फेरना ॥ धरा गुरु वानो धरै नहि धीर वसुमति गई सरन विधिना के पाहि पाहि हरिए मेरी पीर कालनेमि करि अंस कंस षल प्रवल पातकी अधम सरीर ॥ चारि वदन ले सकल देव संग छीर समुद्र तरगान गंभीर । सद्ध रूप में कहा महाप्रभु गोकुल जन्म होइ वनो अभीर । जमुना तट वृन्दावन वासी वहुतक सुरन दुष हरी सरीर । रघुवर सषा गोलाक निवासी देवकी गर्भ वसे वलवीर ॥

End—कहन लागे ऊधौ गरभरि आयो। जोग संदेस रावरे भेजे राधे सुनित रिसायो। हाहाकार कोन हति उर सषियन रुदन मचायो वसि षट मास कहो मैं बहु विधि उलटि सो ज्ञान लषायो॥ लै उपदेस राधिका जी को मैं इति फिरि चलि आयो सुमिरन भजन वसो उर मूरति एक टक पलक न लायो। स्वासन सबे उठें हरि हरि धुनि लालन किन विलमायो। मातु पिता अति दुखित तुम्हारे नैन मलीन वतायो। रघुवर सषा असित सव व्रज जन आवन आस जिआयो॥ १४०। सुनते हाल विकल भै लाल॥ हा राधा राधा प्रिय लाड़िल कंपित गात गिरे ततकाल। मुरछित होत अचेत छिने एक मगन भए हिमवन वेहाल। धारि धीरज कह हमैं राधिका तन दुइ प्रान एक कर ख्याल। तुम जनि विलग जानियो ऊधो मो राधे हिय वसे वेसाल। जो राधे को सषी सकल मिलि रास थलो जिन रचो इसाल। ते सव लीन होइगी मोमें ऊधो कछु कवितन ते काल। नन्द जसोधा कीन्ह तपस्या सो पूरण कीनो वनिपाल। रघुवर सषा अनंदित गाथा प्रेम लक्षण कर यह ताल॥ कृष्ण चरितामृत कुंडी रघुवर सषा विरंचति प्रेमधार सागर संपूर्ण संवत् १९०५ लिषी रंगनाथ।

No. 333(*e*). Vaidyaka Chittahulāsa by Raghuvaradāsa of Mirzāpur, District Bahrāich. Substance—Country-made paper. Leaves—124. Size—14 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—1,860 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1902 or A. D. 1845. Date of manuscript—Samvat 1905 or A. D. 1848. Place of deposit—Ṭhakura Biṭṭhaladāsa Mahanta, Village Mirzāpur, Post Office Bahrāich, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ वैदक चित्त हुलास लिष्यते॥ दोहा॥ नमस्कार गुर देव जी तुव पद मुझे भरोस। जापद हिय में ध्याय के लह्यो ग्यान को कोस॥ १॥ सरस्वती पद व्यास के भयऊ अनेक सुजान। वाणी मातु विचित्र करु सद ग्रंथन परमान॥ रघुवर दास विचारि कहै यह वैद्यक ग्रंथ हुलास। जाके पढ़वैया अधिक जगमें करै विलास। देषि देषि वहु ग्रंथ श्लोक अनेक सुजास। सो भाषा या हुलास है मुनि मानैा विश्वास॥ पित्त कहैं अरु कफ कहैा वहुरि कहैं जूवात। तीनो के लक्षण सुनो सद ग्रंथन विष्यात॥ पित्तज्वर के लक्षण॥ दोहा॥ कटुक वदन कृत प्यास अति भ्रम मुर्छा प्रलाप। पित्त कोप ते जानिए आवत नर को ताप॥ अथ अश्लेष्मा ज्वर के लक्षण॥ मुष मोठा निद्रा नहीं कास स्वांस अति होय। तृपति कहूं नहि अरुचि अति कफज्वर लक्षण सोय॥

End—महा कल्पादि चूर्ण । इंगुर सोधा १।, सिलाजीत सुद्द १।, पारा मारा १।, सोना मारो १।, सीसा मारा १।, रांगा मारा १।, तांबेश्वर पुराना १।, लोहा मारा १।, चन्द्र गुलाबी १।, मरी चांदी १।, तीनि छार, जवाषार, साजीषार, सोहागा भुना सुद्ध, जुगछार, इमली की मुरच, राषी लट जीरा, की राषी छार षार चार चार तोला, सेंधी सोंच रसा षरोटांगा ये पटु पाचें चार चार तोले लेइ मट्टी के पात्र में करि दिया धरि के कपरौटी करै गजपुट भस्म करै। सोंठि मिरच पीपरि चार चार तोला सब चूर्ण इक दिल कर षरल में घोटै कपड़ छान करै जमीरी नीबू का रस गारो कपड़ छान लेइ जाना मरि मृगांक १ भाग ना तो चारि चारि अंस अंस अधिक गुन करै। मट्टी की कराही में चूर्ण घोरै चूल्हे पर धर आंच देइ। मंद मंद करछुली काठ की चलावै जब रस सूखै तब निकारि के षरल करै मिट्टी के पात में नीबू रस घोटे मंद आंच दे चुरवै इसी तरह २१ बार चुरवै ता पीछे चना को ओस माघ फागुन की लेवै चूर्ण कराही में घोरि मंद आंच देवै इसी प्रकार सात भावना देइ चूरन जरने न पावै तब सिद्धि होइ। दुइ रत्ती चूरन दुइ रत्ती लोन भोजन किए पर षाइ भोजन पचै। इति समाप्त शुभ मस्तु॥

Subject—वैद्यक। हर प्रकार के रोग, उन के लक्षण औ औषधियों का वर्णन तथा धातुओं के भस्म बनाने की रीति।

No. 353(*f*). Vaidyaka Sadā by Raghuvaradāsa of Mirzāpur, (Bahrāich.) Substance—Country-made paper. Leaves—7. Size—15×6 inches. Lines per page—12. Extent—84 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1901 or A. D. 1844. Place of deposit—Mahanta Biṭṭhaladāsa, Village Mirzāpur, Post Office Bahrāich, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री रामायनमः॥ अथ वैद्यक सदा लिष्यते। (एक) वैद्यराज श्री चित्रकूट के काशी के पढ़ने वाले द्रावड़ देश तोतादर नगरी (श्रीगुरु) महाराज के धर्मसाले। साधु संत जहं बहुत विराजै पान पान आनंद करै राजा राव बहुत से चेले धन दै दै भंडार भरै॥ (जे) विष्णु कांची में जन्म हुआ श्री रामानुज सब कोउ कहै॥ साधु भक्त को जर उनहिन ते वेद सास्त्र सब सत्य लहै॥ तिनके वंस उजागर जन्मे नाम व्यंकटाचार्य अहै तिनके चेले चेले हैं रघुवर दास कहैं सो कहैं कथा पुरान बहुत से जानै ज्ञानाज्ञान विचार करैं परमहंस की विर्ति गहे हैं दरसन ते दुख दूर करै॥ जो दुषिया दुष अपन वषानै

तिनको तस उपदेस करै । धरमसोल को वात वषानै दुष हरैं सुष भूरि भरै ॥ वेद वड़े ज्ञानी बड़ै कविता टोना जादू दूरि करै । रोगी दोषी भूत संतापो संमष वेठत जाय जरै ।

End—लाक्षादि तेल ॥ षजुरो फुरिया दूरि वहावै ॥ सिर को दरद तुरत मिटि जावै ॥ गरमी षाई धुनि मिटि जावै । गिरत गर्भ नारी थम जावै । सबन वात को दुख यह मेटै । विसफोटक ज्वर तुरत झपटै ॥ वालक को उदवेग मिटावै यह लाक्षादि तेल वतावै ॥ मस्तक पोर मिटावै भैया ॥ होय अनंद रामगुन गैया ॥ रघुवरदास का सच्चा खेल यह षड़विन्द नाम है तेल ॥ सोढ मिटाव वादो जावै तन दुति आवै नारि सुहावै ॥ गरमी मेटै तेलहि भेटै ॥ रघुवर दास कहै सुनु भैया सुगंधराज यह तेल वनैया ॥ भग संकोचन हे यरे भाई लिंग वढ़ावन दवा वताई ॥ स्त्री के कुच ढोले होए ये ताको पुष्ट करेंगे गोय ॥ रागी होय राग भल गावै गंधर्वी धुनि तान उठावै विद्या पढ़ै अधिक अधिकाई । वालक मूरष रहै न पाई सरस्वतो घर तेल वनावो वालक मूरष वेद पढ़ावो ॥ स्त्री कहै वेद को वातै सरस्वती चूरन के षातै रघुवर दास साधु सो भया अनभोतिक जो वात वतैया ॥ संग करै सेवा मन लावै मनकी मनसा पूर करावै साधु गुरु अरु वैद्यक विद्या है गुनदायक लायक सद्या ॥ इति श्री रघुवरदास विरचित वैद्यक मदा सम्पूर्ण ॥ संवत १९०१ ॥

Subject—कुछ औषधियों का वर्णन यथा लाक्षादि तेल, शंख द्रव चूर्ण, मिरचादि तेल, सुगंधराज तेल, सरस्वती घर तेल जो विद्या वर्धक है इत्यादि । एक एक औषधि कई रोगों में काम आ सकता है ।

No. 334. Śrī Rāma Ākheṭa Kavitta by Raghuvaraśaraṇa. Substance—New paper. Leaves—5. Size—5 × 3½ inches. Lines per page—24. Extent—120 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bajaraṅgī Siṁha, Station Rupa Mau, District Rāe Barelī.

Beginning—श्री मत्सीताराम चरणं शरणं प्रपद्ये ॥ कवित्त ॥ केशरि सों भोनो अंग अंगरो ललित सोहो झुलत दुसाले छोर मुक्ता मुगाथ के । वनमाला सुन्दर सुभाल मै तिलक रेख धनु शर विचित्र लोन्हें सखा सब साथ के ॥ नयन अरुणारे घुघुरारे केश कानन मै मुख सुखमा को सुख हरत रतिनाथ के ॥ देषिये सवोरो मुख वोरो खात भ्राजत है राजत हरीरो पाग सोस रघुनाथ के ॥ १ ॥ भद्र मृगमाते संग ऐरावत जोरजंग महापद्म अंजन अनंत गजराज हों । पोकि पोकि धावै मानै अंकुशन जोर वारे मद मतवारे प्यारे पोलवान साजहों ॥ जलज

अमारी भारी झालरि झकोरनि में मनिमै विचित्र अंग अंग अति भ्राजहीं। घंट घहराने कहराने चले भूमि भूमि रघुवंशी लाल के गयंद गन गाजहीं ॥ २४। केसर की षोर भालें बीरन सो मुख लालें सोहैं सीस पाग लालें लालें जरतारी के। भृगुटी विशाल वांकी हेरन रसाले हाले कुंडल उदंड मार्तंड दुतिकारी के॥ कर करवालें वंधी पोठन पर ठाले सोहैं ललित दुसाले उरमाले मोल भारी के। लषि लषि वार वार सषन समेत राम मगन विलोक छैल भरत असवारी के ॥ ३ ॥

End—ललित लाड़ायो हरि गुमरन जात कहो समर सकत जा मंद मंद चाल सों। हरित हमेल लसे जटित जवाहिर के रत्न मणि मंजरी मरोर मणिमाल सों ॥ चूमि चुचकारे अकुलात वायू मंडल को चित उरझानो सो छबीलो छवि जाल सों। वांग के उठाये राग रंग अंग अंग माषे मन मै मरोर राषें लघुवंसो लाल सों। २१ ॥ कर्म कीच काले भाले भाग को न लेस कहू कुमति कराले वाले कर तव पान है। केते घर घाल ते निराले साध सज्जन तें लोक वंद टाले जाले जानत जहांन है ॥ मन के मगाले ताले काम मग मीनन के करहित पाले वाले वल्लभ न आन है। छोड़ि रामलाल फिरें करत कसाले साले सव मतवाले मतवाले की समान है ॥ २२ ॥ इति श्री रघुवर सरन जु कृत श्री रामजु के सिकारी कवित्त ॥ श्री सीताराम सीताराम ॥

Subject—आखेट समय श्री राम जी की शोभा का वर्णन, उनके हाथियों का वर्णन, राम भरत की सवारी, अस्त्र शस्त्र सुसज्जित आखेट समय की शोभा का वर्णन, अश्व का वर्णन, लक्ष्मणजी की सवारी का वर्णन, शत्रुघ्न की सवारी का वर्णन, निमिवंश शिरोमणि की सवारी का वर्णन, शिकारी जानवरों का वर्णन, तिरहुत राज के राजाओं का वर्णन, देश देश के अन्य घोड़ों का वर्णन, राम समाज देखने के लिये सखियों की भीड़ का सरयू तट पर खड़े रहना घोड़ों की क़िस्म और रंगों का वर्णन, घोड़ों की गति का वर्णन, और उनकी सजावट व गहनों का वर्णन, राम जी की शोभा का वर्णन।

No. 335(*a*). Chikitsāmṛitārṇava by Ṭhakura Raghuvara Siṁha of Alipura (Daraunā). Substance—Country-made paper. Leaves—402. Size—9 × 8 inches. Lines per page—40. Extent—17,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṁvat 1890 or A. D. 1833. Date of manuscript—Saṁvat 1910 or A. D. 1853. Place of deposit—Ṭhākura Pratapa Siṁha, Umarava Siṁha, Village Alīpur, Jaitapur Bāzār, Post Office and District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ चिकित्सा मृतार्णव लिष्यते ॥ सोरठा ॥ गोरि सुवन गणपाल चरण कमल रज शीस धरि। हूजिय नाथ दयाल ज्ञान ग्रैन गुण राशि शुभ ॥ हरिगीतिका ॥ एक रदन करिवर वदन शुष के शदन दुःख विनाशनं। पुनि ईश सुत गणईश शीशनि शीशप्रमे प्रकाशनं। रिद्धि सिद्धि कारक कुमति हारक जोपि भजमन लाइ कै ॥ हरि विघ्न कारक ग्रंथ के करूं ग्रंथ पूरण ग्राइके। अथ दुमिला छंद ॥ गणपति श्री गिरजा सुवन सकल गुणन के रिद्धि। ग्रमित तेज तुव ग्रंग में सब विधि ज्ञान प्रसिद्ध ॥ सिद्धिद्ध ज्ञानहि कथत्थ कविजन मत्थत्थ नमितहि हत्थत्थ जुरिकरि मग्गराजस जेहि दिग्गगतम तेहि पत्थत्थ खल ॥

End—ग्रंथ ग्रंजन सवल वायु तिमिरि धुंध ग्रादि ॥ हरिगीतिका छंद। सिरस वोज सुचारि सुरमा स्वेत तोला दोइ सो। खंधारी सुरमा सोम् प्रथ के लेइ तोला दोइ सो ॥ चषनाहि तंदुल शुद्ध तुत्थहि मैन शोपी की गहै। प्रतेक मासे एक सो पुनि पत्र शीश कराइये। पुनि काटि सूक्ष्म सुखरिल धरि सो ग्रम्ल तिपतीं लाइवे। गहि स्वरस सो महि विधि जब शीश सव गलि जावई ॥ दोहा ॥ पुनि सव भेषज एक करि मर्दन करि दिन दोय। वटी वांधि सुखवाइ सो वासी जल घिस लेइ। ग्रंजन कीजे दृगण सें धुंध तिमिर सव लाइ। विथा दूरि दुति दृगण की सीमा समसो प्रगटाहि ॥ इति श्री मन्महाराज कलह वंशावतावस जयसिंहात्मज रघुवर सिंह भाषा विरचिते चिकित्सामृतार्णव नामा ग्रायुर्वेद सम्पूर्ण शुभम् ॥ संवत १९१० राम राम राम राम राम ॥

Subject—ग्रैाषधियें का वर्णन तथा यह रोगें की उत्पत्ति के कारण ग्रैार उनकी ग्रैाषधियां बनाने की विधि ग्रैार ग्रनुपान चीर फाड़ का कार्य भी भली भांति समझाया गया है।

No. 335(*l*). Tulasīcharitra by Raghuvara Siṁha of Alīpur, District Bahrāich. Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—12 × 6 inches. Lines per page—36. Extent—2,016 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1910 or A. D. 1853. Date of manuscript—Samvat 1955 or A. D. 1898 Place of deposit—Ṭhakura Haraśaraṇa Siṁha, Village Sarāya Ali, Post Office Kesargañja, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः श्री तुलसी चरित्र प्रारंभा ॥ श्लोक ॥ महेशं रमेशं गणेशं दिनेशं निशेशं दिगेशं गुरुं मारुतं च ॥ सुभक्त्या प्रणम्याथ भाषा सुरम्या रचेहं यथा धां तथा मोद दातास्मा ॥ १ ॥ अथ प्रदुःख प्रहर्त्री सरस्वती बुद्धि प्रदां कल्मष नाशिनीश माग्य आपःसुभित्य सुखदां विधात्रीतान्तौ मिमूर्द्धा शभबुद्धि हेतवे । तुलसी चरित्रं वहुवृत्ति युक्तं भक्तिप्रदं कल्मषदोष नाशकं आयुष्प्रहंसर्वर संनिभिष्टं मिष्यान्ते सवास्ति गुरु प्रमादात ॥ तुलसीदास नमस्कृत्य रामाख्यं कारितं पुरः द्विज वंशावतंशेन भक्तानां भूषणं सदा ॥ सोरठा ॥ वारण मुष गणपाल सुमिर सिद्ध प्रगटावते गौरी सुवन कृपाल कृपा दृष्टि की कार करि ॥ भुजंगप्रयात छंद ॥ नमो वक्र तुंडे कहंतं गणेशं नमो मोह मज्जना नाशं दिनेशं नमो सृद्धि बुद्धि पती ईश जातं नमो कृष्ण पिगाक्ष बुद्धि प्रदातं ॥ ६ ॥

End—इति श्री कलहंस वंसावतंस जयसिहात्मज रघुवर सिंह विरचिते भाषायां तुलसी चरितामृते नाम षोष्ट षष्टमो चरित्र समाप्तम ॥ रोला छंद ॥ अधिक अवश्वनिपच्छ कृष्णहिं तिथि षष्टोजान वार वुद्ध उदार भाषत अक्षरोहिणी भान ॥ व्यतिपात सुयोग जानो करणते तिल होय । लग्न वृश्चिक उदय तेहि छिन दिन पहर गत सोइ । कहो वत्सर सम्मुझिये अव वात वात विचार ॥ वहुरि गो विधु एक करिकै मानि १९५५ बुद्धि उदार ॥ वसत वैांडी पास गुजवलि विदित है सव तोर ॥ वसत ब्राह्मण अेार क्षत्री सकल सो मति धोर ॥ वैांडी रजधानी पूरब वसत गुजैाली पास ॥ विजै वहादुर सिंह नृप रजधानी प्रकाश कलहंस वंस अवतंस मैं रघुवर सिंह उदार तिनको सीताराम मम पहुंचै वारहिवार ॥ सोरठा ॥ जगवंत सिंह यह नाम जिनकी आज्ञा पाइ कै तुलसी चरित ललाम पाठार्थे तिनके लिषा पढ़ै गुणे मन लाइ भक्ति करै सियराम की मुद मंगल सरसाइ सीताराम प्रतापते ॥ दोहा ॥ लिखि रघुवर पूरन किया तुलसी चरित उदार । कृपा करत तिन पर सवै कवि पंडित सरदार ॥

Subject—मंगलाचरण गणेशादि वंदना । मारुत सुत मिलन, शिवदर्शन, विंध्याचल राजनक राजा की सुता सुतभा । मुरारीदास से विदा । हरियानंदन संत, रामघाट मचान, द्विज दरिद्री को महानता प्रगट करना, सरयू स्नान, नाभा आगमन, दकन देश (दक्षिण,) चतुर्दश चरित्र नन्दलाल आदि का । श्री गुसाईं जी का कुल जीवन चरित्र छंद, सोरठा, सवैया, कवित्त आदि में वर्णन किया गया है ।

No. 336. Indrajāla by Rājārāma. Substance—Country-made paper. Leaves—42. Size—13 × 8 inches. Lines per page—16. Extent—210 Anushṭup Ślokas. Incomplete.

Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Kaithī. Place of deposit—Paṇḍita Bhawānī Baksha, Village Dalarā, Post Office Musāfirkhānā, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—पृ० १—दोहा—कुमती मोतो प्रबोंद को नेउन को श्रो आत्माराम। सुमती साला सुनो कें ता गुरु के प्रनाम॥ एक देवस प्रजोस करो राजाराम ने वस इंदजाल भाषा करो यौखद रोगनो दवा।

पृष्ट ४—हावल वाभ्फ कैः—एक दोना हाजारातो सालेमान पेगंमरा तास्वत के ऊपर तव एक अवोरातो वाभ्फने आऐ कै अरज को अको पैगंमरा खोऐ साबा-हेव हमरे लड़िका नाहो होता है सो इसका कंत्र साबव है सो हमको बाताग्रो तव पगरमर सहेव बोले को हमको मलुमा ऐह नाही है तुम बेंएठो तो हम परीयों को बुलाए के पुछेएगे जेएसा होऐगा तेऐसा मालु मालुम होएगा।

End—कुसुम के फूल सुखा लेवे तोला एक १ वाहेरा लैकै तोला एक, आनार कली लेवे तोला एक १, सभा दवा के पोसो कै पानी के साथ नासा लेइ दोना ७ तो नाक सो लहु बंद होए जाए खट मोठा पिलावेऐ राह॥

Subject—नं० १—३ तक—नाड़ी परोक्षा (२) पृ० ४—१६ तक—बांभ होने के कारण, निक्षत, औषधि तथा जंत्र। (३) पृ० १७—२६ तक—दवा समुंद फल को। (४) पृ० २७—२८ तक—दवाई ज्वर को। (५) पृ० २८—४२ तक—भूख को दवा तथा अन्य कई प्रकार की औषधियां॥

Note—इस पुस्तक के अन्त के पृष्ट नष्ट भ्रष्ट हो जाने के कारण सन् सम्वत् का कुछ भी पता नहीं चलता, किन्तु पुस्तक के काग़ज़ अक्षरों की बनावट इत्यादि से यह पुस्तक अठारहवीं शताब्दी से पीछे की लिखी हुई प्रतीत नहीं होती। बांभ के लक्षण तथा औषधियां प्रायः सुलतानपुर में पं० रामप्रपन्न मालवीय जी के यहां से प्राप्त हुई "काकशास्त्र" नामक पुस्तक से ही मिलती जुलती हैं। ज्ञात होता है कि पुस्तक का बहुत सा भाग नष्ट हो गया है—पुस्तक का बृहदंश गद्य में है, कहीं कहीं दो एक दोहे भी लिखे गये हैं।

No. 337(*a*). Rāmavinōda Bhāshā by Rāmachandra Jainī. Substance—Country-made paper. Leaves—73. Size—10 × 4 inches. Lines per page—40. Extent—1,460 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1809 or A. D. 1752. Place of deposit—Ṭhākura Pratāpa Siṁha, Alīpur Daraunā, Post Office Jaitpura Bāzār, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री रामविनोद पुरुष लक्षण कथ्यते ॥ श्री धन्यन्तरि वरण जुग प्रथमहि धरि आनंद। रोगनसन सुभकरन सब जन सो सब सुखकंद ॥ विविधि सस्त्र को देषि कै सुगम करहु अधिकार रामविनोद जो ग्रंथ यह सकल जीव अधिकार ॥ अथ पुरुष लक्षन कत्थते ॥ दोहा ॥ चतुरवदन सुभ लक्षन सुन्दर रूप सुजान वैद बोलवे जो आवे मिश्र वचन प्रमान ॥ दोइ पुषे संग बंद के सगुन आग परभाइ। एक पुरुष संगै चलै वैद बोलावे जाइ लक्षन इस विधि ल करहु चिकित्सा जाइ ॥ अथ सुभ गुन कथ्यते ॥ चो० ॥ कन्या अष्ट वर्ष परमान। वृषभा जारि हस्थी परधान, मीन ऊराम दधिया के धोना। विप्र तिलक मुषबोले बैना।

End—अवष को उर्कोलि कै पते चकवण के दूध मो भेवे तेहि पीछे अटा को चूकी डारि देइ। पाछे एक माटी को दुइ घरिये के बीच धरि देइ घरिया बंद के कै फूकि देइ ॥ अवष जब बेजनी रंग आवै तब जानिये कि सुधा है ॥ नाहिन ता दूसरि दफा फेरि अेस करे। द्वितीय प्रकारै तृतीय प्रकारै सिद्धि होइ ॥ इति श्रीराम विनोद बैद्यक शास्त्र सम्पूर्ण जेठ मास सुकुल पक्षे तिथौ हरि वासरे संवत १८०९ सन् १२५९ जस पत्रा दृषा तस लिषा ममदोष न द्वियेते ॥ सुध असुधि बुधिजन लेहि विचारि। जगंनाथ हरिचरन चित धरि बैदक लिषा बाचारि। सीताराम हनैामान स्वामी सहाइ सदै रहो राम राम।

Subject No. 337 (*b*) में देखो।

No. 337(*b*). Rāmavinōda by Rāmachandra (Padmarāga Śishya). Substance—Country-made paper. Leaves—212. Size—10 × 6½ inches. Lines per page—16. Extent—3,014 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nagarī. Date of manuscript—Samvat 1859 or A. D. 1802. Place of deposit—Lālā Rāmadhīna Vaidya, Nawabgañja, District Bārā Bañki.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रामविनोद भाषा लिष्यते ॥ दे।० ॥ सिद्धि बुद्धि लाइक सकल गैारी पुत्र गणेश। विघ्न विनासन सुषकरन हृषेधारि प्रणमेस ॥ श्री धन्यंतर चरण जुग प्रणमेधरि आनन्द ॥ रोग नसै जा नाम सो सब जन को सुषकंद ॥ विविध शास्त्र को देषि कर सुगम करैा अधिकार ॥ रामविनोदहि ग्रंथ इह सकल जीव सुषकार ॥ चतुर विचक्षन देषि नर सुंदर रूप सुजान ॥ वेद बोलावन आवही मिष्ट वचन कहि बानि ॥ फल वस्त्रादिक लेइ कर धरै जो वैद्य हजूर। रिक्त पानि नहिं जाइये दल गोरी तजि दूरि ॥

End—अथ मान प्रमान लिष्यते ॥ जुगुत मान जाने विना कवहूं द्रव्य प्रमान । ता कारन यहु जो जान कहु मते अनुमान ॥ चौपाई ॥ जालंतरि गति दीस भान ॥ तिसमें सूक्ष्म रासु पिछान ॥ तिनका बषराती समाजान । ग्यानी सास्त्र कहैा प्रमान ॥ तिनु परिमानु का वंसी नाम ॥ षटवंसी इक मरी का नाम ॥ षटु मराचो कराइ कराइ । त्रिहु राइ इक रूपे पथाय ॥ दोहा ॥ कुडव अंजल इक नाम ॥ दोनु कुडवे ससरावक है ॥ सरावक मानि कसाम ॥ दोइ सराव के कहो अस्थ लै ॥ अंजली टंक चोसठी कहाइ ॥ सरावक आव वोस सोथाइ ॥ दोसांत षट पन प्रस्थ जगास ॥ आढ़क सहस एक चोवोस ॥ चिहु आवक द्रोन प्रमान । दो सूप की दोनी इह भाषी ॥ चिहु द्रोणी इक षारी टाोप ॥ द्वग सहस्र पल द्रोनो-नुपरि ॥ इतनो भार मान पुनि चित धरि ॥ शत पथ सथा तुल प्रान ॥ रामविनोद कियो वषान ॥ सोरठा ॥ द्रोण मनक को चार दोमन कहिये सूप को ॥ षारा सोन्न मन भार ॥ सेर एकतालिस द्रोण भनि ॥ गाषहु तारा जेहु ॥ षारा परजंत लगिननु चउगुण गिनलेहु ॥ जथांतर तथा विधि ॥ रामानतनो परमान ॥ सारंगधर मारियो कहो जाश अनुमान ॥ रामविनोद विनोद सो ॥ इति श्री रामविनोद समाप्त ॥ सवत १८५९ कातिक मास कृष्ण पक्षे दसमी तिथो वार गुरुवार लिष्यतं रूपचंद पांडे ॥ कासिव गोत्रे कलवार पाथम लाला पूर्णमल तस्य पुत्र नंदलाल ने लिषवाइ × × × ×

Subject—(१) प्रथम उद्देश्य—पृ० १—५ तक । पृष्ट संख्या—विवरण ।

गणेश वन्दना, धन्वंतरि वंदना, वैद्य को बुलाने की विधि । नाड़ी चेष्टा लक्षण, असाध्य लक्षण । मूत्र परीक्षा, पित्त कफ वायु के उत्पत्ति का कारण और निदान, ज्वरों के नाम और लक्षण, पित्तज्वर, पेदज्वर । वायुज्वर, कालज्वर, सीतज्वर, रक्तताप लक्षण, कामज्वर, ज्वर प्रमाण ।

(२) द्वितीय उद्देश्य—पृ० ६ पृ० २३ तक—

सर्वज्वर, पाचन, अजीर्ण, आहार-जीपत्त, पेद, वायु, इष्टिक, कफ, रक्त, शकाहिक, द्वितिय, तृतिय, नित्य, ज्वर, चतुर्थ ज्वर, सीतज्वर, जीर्णज्वर, विषम-ज्वर, हारिद्रक ज्वर, प्रमुखादि उपाय, चूर्ण उपाय, गुटिका, धूरी अंजन अवलेह, क्वाथ प्रमुख ।

(३) तृतीय उद्देश्य—पृ० २४—५३ तक ।

द्वितीय अधिकार, वात पित्त, कफ प्रमुखादि निदान, उपाय, वायु, कफ, लक्षण, वायु कफ उपाय, तरह सन्निपात, उतपत्ति, उनके नाम, तेरह सनपात की परम आयु, लक्षण, औषधि, उपाय. क्वाथ, गोली अंजन, चूर्ण औषध उपाय लेप

प्रमुषादि सर्वांत्रदोष, औषधि, धनुष वात, मृगीवात, चौरासी वात का क्वाथ मुधौरा लक्षण, औषध, उपाय, मंत्र, सर्वविधि, वूंधि, सुदर्शन चूर्ण।

(४) चतुर्थ उद्देश्य—पृ० ५४—९२ तक।

अतिसार निदान, लक्षण, वात पित वायु कफ श्लेषमा, आम, अतिसार निवाही, सर्व अतीसार चिकित्सा, ग्रहणी रोग निदान, लक्षण, चिकित्सा, अजीर्ण लक्षण, उपाय, क्रमि का लक्षण, औषधि, रकत, छर्द, चिकित्सा, रकत मुख नासा, रुधिर पड़ता हो, रक्त श्रवै उसका उपाय, राज यक्ष्मा का लक्षण औषधि, कास लक्षण, उपाय, स्वांस निदान, लक्षण, उपाय हिक्का उपाय, स्वर भेद लक्षण, उपाय, अरुचि उपाय, छर्दि लक्षण, औषध उपाय, वात पित्त कफ छर्दि तृष्णा लक्षण उपाय, छयो के उपाय, मूर्च्छा निदान, उपाय, मद, विभ्रम उपाय, दाहन, उपाय, उन्माद निदान, अपस्मार उपाय, बंध कोष्ट।

(५) पंचम उद्देश्य—पृ० ९३—१३९ तक।

वायु उत्पत्ति, लक्षण, उपाय, औषधि, अंगहीन, कटि शूल, वायु उपाय, मस्तक, भ्रम, पीड़ा, अकड़ी, वायु की कटि शूल संधान, उदर पीड़ा, उर्द्धवातु, कंथन वायु, वायु गति, पुनः वात रक्त निदान, पुनः सुपतः मंडल कष्ट उपाय, गलित कुष्ट उपाय, स्वेत मंडल उपाय, कुष्ट उपाय, नर स्थंभनु उपाय, आमवात निदान लक्षण, उपाय, पुनः, शूल निदान, वायु शूल उपाय, पित्त शूल, वायु गुल्म निदान लक्षण, उपाय मूत्रकृच्छ निदान, लक्षण, पुनः रिंदै रोग निदान लक्षण, उपाय, पथरी, सुजाक, सर्व प्रमेह, निदान लक्षण उपाय, मेदा, लक्षण, उपाय, वातोदर, पित्तोदर, कफोदर निदान, उपाय, पुनः सोफोदर, लक्षण, उपाय, प्लीहा को उपाय, वातु साज, पित्त साज का उपाय, कफसाज निदान उपाय, त्रिदोष साज उपाय, जलोदर, कठोदर, सोफोदर उपाय, उदर विनमास चिहट का उपाय, उदग्रह आडा का उपाय, कोढीः नागर विसकंट उपाय पुनः कंडु को उपाय, विस्फोटक वरुड़ी विसर्प श्रीपद उपाय पुनः छिद्र का उपाय, गंडमाला का उपाय, भूतदंभ का उपाय, अगरो उपाय, पिनास उपाय, कर्ण रोग, कर्ण पीड़ा का इलाज, सूर्य वात का उपाय—

(६) षष्ठ उद्देश्य—पृ० १४०—१७५ तक—

मृगी का उपाय, जानु या डमरू का उपाय, हड की स्वान प्रतिकार, सर्प विष उपाय, वृश्चिक विष उपाय, शास्त्र घातोपाय, मेहन उपाय, बालक अतीसार चिकित्सा, नाल पीड़ा का उपाय, अंडवृद्धि का उपाय, घाव फोड़ा, पाका, उसका उपाय पुनः वंध का गुटिका, निद्रा आने का प्रतिकार, मुख दुरगंध का उपाय, दंतारी मसी औषधि, केश कल्प उपाय, केश वर्द्धन उपाय, केश होने का उपाय,

अग्निदग्ध का जल्प का उपाय, नारायण तैल, विषगर्भ तैल, वृद्धि विषगर्भ तैल, आछादि तैल, मिरचादि तैल, छार तैलादिकार रोमनास उपाय, कल्यान घृताधिकार, त्रिफलादि घृत, अमलादि घृत, मुंठी पाक, सुपारी पाक, नालेर पाक, गुवरु पाक, मूसली पाक, असगंध पाक, लहसन पाक, चन्द्रहास रस, सर्वरोग निवारण ।

(७) सप्तम उद्देश्य—पृ० १७६—२०७ तक—

मदनमोद कामेश्वर गुटका, काम कौतूहल गुटिका, प्रस्तरोधं थंभ गुटिका पुनवल वंधेज कौ वलवीर नाम गुटका, सिंह वाहिनी गुटका, धातु क्षीण का उपाय, नामर्दी का उपाय ,गतवीर्य सवीर्य गुटका, हस्तकर्म का उपाय, वीर्य वंधेज का लेप, स्थंभन का लेप, लिंग दृढ़ करण लेप, लिंग पीड़ा का उपाय, भग संकोचन उपाय, कुछ विलाइथ नेला स्त्री पुष्प आने का उपाय, ऋतुगम माइन उपाय, संतान उपाय, गर्भ रहने का उपाय ।

ग्रंथ समाप्त ।

(८) अष्टम उद्देश्य पृ० २०८—२१२ तक ।

नाड़ी परीक्षा ।

No. 338. Punyāsrava Kathā by Rāmachandra (Keshavānanda Deva Muni ke Śishya). Substance—Country-made paper. Leaves—470. Size—$14\frac{1}{2} \times 7\frac{1}{2}$ inches. Extent—11,780 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1792 or A. D. 1735. Date of manuscript—Samvat 1914 or A. D. 1857. Place of deposit—Śrī Jaina Mandira (Baḍā), Bārā Bankī (Oudh).

Beginning—श्री वीतरागायनमः ॥ अथ पुण्याश्रव कथा कोश भाषा लिष्यते ॥ श्री वीरंजिनमानम्य वस्तु तत्त्व प्रकासकं । वक्षे कथा मयं ग्रंथं पुण्याश्रव विधानकं ॥ १ ॥ दोहा-वर्धमान जिन वंद्य कै तत्त्व प्रकासन सार । पुन्याश्रव भाषा करूं भव्य जीवन हितकार ॥ २ ॥ सुभजीवन को हित चहत करत आत्मा काज । सो गुरु मम हिरदै वसैा तारन तरन जिहाज ॥ ३ ॥ सोरठा ॥ प्रनमोसादर माय स्यादवाद लक्षन सहित । जिहि सेवत अघ जाहिं धर्म ध्यान वाढ़ै अधिक ॥ ४ ॥ प्रथमहि पुजा की कथा कहो अष्ट विधि जोय । ताके सुनत सुज्ञान कूं जिन पूजा रुचि होय । एक दर्ष जिन पुजिया मालिन सुता अपान । प्रथम स्वर्ग हरि की प्रिया भई पुन्य परवान ॥ ६ ॥ सकल वात ताको कहूं पूरव उक्त प्रमान । हिये हरष उपजै अधिक सुनैा भव्य धरि कान ॥ ७ ॥

End—ध्यान अनल पर ज्वाल घातिया कर्म काठ सब वाला । केवल ज्ञान उपाय भविक परमोध गये सिव साला । निराकार निरंजन पद धर अष्ट महागुन लाधा ॥ बाधा रहित कहत नहिं आवै आतमोक सुष साधा ॥ ६५ ॥ कवित्त छंद—इम उन अगिनि ल्याव भनेटो पराधीन उर धरउ कंत । एक अकुलता तिह चित्त सेतो दान दियो मनिवर इह भंत ॥ गिरसे गिर जिन धर्म अधिष्टा देवी है विभल हो अनंत ॥ जो स्वाधीन दान दै नित प्रति नहि अंचभ सुरराज लहंत ॥ ६६ ॥ सोरठा छंद ॥ पाचन देवो दान अरु दुषद छुधत जियत ॥ दया बुध हिय आन ॥ दोनै जोग निगम भना ॥ ६७ ॥ चैापाई ॥ ऐसा जानि मानि जिनवान ॥ दया ठान आन उर आन ॥ दीजै दान कृपनता भान ॥ उत्तम मध्यम जघन्य निदान ॥ ६८ ॥ दोहरा छंद ॥ दान तना अधिकार यह ॥ पूरन भया सुजान ॥ चहु विधि कीजै सक्त मम ॥ भैावह करै कल्यान ॥ ६९ ॥ इति श्री पुन्याश्रव विधाने ग्रंथकर्ता केशवनंद दिव्य मुनि सिक्ष्या रामचंद्र विरचिते दान अधिकार समाप्तम् ।

Subject—(१) पृ० १—८४ तक—प्रथम अधिकार । देव पूजन की आवश्यकता और उसका महत्त्व । आठ व्यक्तियों की पूजा करके उत्तम फल पाने के उदाहरण स्वरूप आठ कथाओं का संग्रह ।

(१) माली को पुत्रियों का स्वर्ग प्राप्ति करने की कथा । (२) पीतांकर का एक राजा को देव पूजन करते हुए हर्ष मान कर उसका अनुमोदन करने के फल स्वरूप यक्ष होना । (३) नागदत्त का मेंड़क हो जाना और एक मुनि के आदेश से उसकी रानी वरदत्ता का उसे ले आना और समवशरण आगमन समय उसकी पूजा करने पर उसका बैकुंठ धाम पाना । (४) भरत नृप चरित्र कथन अर्थात् भूषण वैश्य के पुत्र के प्रभाव से भरत नृप होना । (५) रत्नशेखर चक्रवर्ती की कथा, पूजा के प्रभाव । (६) धनदत्त ग्वाल की कथा, जिन पद पर कमल चढ़ाने के प्रभाव से मर कर भूपाल होने का कथन । (७) वज्रदंत चक्रवर्ती की कथा । (८) श्रेणिक की कथा ।

(२) ८५—पृ० १२८ तक—दूसरा अधिकार ।

नमस्कार मंत्रो की महिमा संबंधी ७ कथायें ।

(१) सुग्रीराय की कथा । (२) बंदर अमान भवधरि निर्वाण प्राप्ति कथा । (३) चारुदत्त सेठ की कथा । (४) धनिंद तथा पद्मावती की कथा । एक नाग नागिनि के कान में नमोकार मंत्र पड़ने के प्रभाव से उनका धनिंद तथा पद्मावत होने का कथन । (५) हथिनी की कथा, ओंकार के प्रभाव से उसका सीता होना । (६) नमोकार के उच्चारण करने से एक चोर का सुर पदवी पाना । (७) एक पद्म ग्वाला का नमोकार उच्चारण द्वारा कामदेव की पदवी पाना ।

(३) पृ० १२९—पृ० २०६ तक—तीसरा अधिकार। श्रुति श्रव फल संबंधी ७ कथायें।

(१) आगम कथन मन से सुनने के कारण सुर सुख पाये हुए वाल राजा की कथा। (२) भा मंडल का आगम श्रवण करने के कारण चक्री समान हो जाना। (३) आगम के श्रवण से जमराजा का मुनि पद ग्रहण, (४) एक चंडाली का श्रुति श्रवण करने के उपलक्ष्य में चौथे जन्म में सुखमाल होकर स्वर्गपद पाना। (५) भीमकवली की कथा। (६) चंडाल कूकरी की कथा (७) सुकौशल की कथा।

(४) पृ० २०६—२४४ तक—चौथा अधिकार। शीलाधिकार गुण वर्णन संबंधी कथायें।

(१) मेघेश्वर के शील की कथा। (२) कुमेर प्रिय शील की कथा। (३) सीता के शील की कथा। (४) प्रभावती के शील की कथा। (५) वज्रदत्त की कथा। (६) नीली वाई सेठि पुत्री के शील की कथा। (७) चंडाल के शील की कथा।

(५) पृ० २४५—३४५ तक—पांचवां अधिकार। उपवास संबंधी ७ कथाओं का वर्णन।

(१) नागकुमार, (२) भविष्यदत्त, (३) अशोक रोहिनी, (४) नंदमित्र (५) जामवती कृष्ण पटरानी। (६) ललित घटा (७) और अर्जुन चंडाल की कथाओं द्वारा वृत महात्म्य समझाना।

(६) पृ० ३४६ से ४६७ तक—छठां अधिकार। दान कथा संबंधी कथायें।

(१) शान्तिनाथ की कथा—एक जन्म में दान करने के प्रभाव से वारह जन्म तक सुख पाने और अन्त में तीर्थंकर पद पर पहुंचने की कथा। (२) जयकुमार तथा सुलोचना की कथा—दान के प्रभाव से ऋषभ के कैवल्य ज्ञान होने के समय जयकुमार का गणधर पद पाना और सुलोचना को स्त्री लिङ्ग छेदन कर सुर पद पाना। (३) वज्र जंघ नृप की कथा। (४) सुकेत राय की कथा (५) आरम्भक द्विज की कथाः—दान के प्रभाव से मंडलीक पदवी पाना। (६) नल नील की कथा। (७) लौ अंकुश की कथा। (८) दशरथ राजा की कथा। (९) भा मंडल की दूसरी कथा। (१०) सुसीमा—कृष्ण पटरानी की कथा। (११) कृष्ण की पटरानी गंधारी भव की कथा। (१२) गौरी रानी-श्रीकृष्ण की पटरानी की कथा। (१३) श्रीकृष्ण की पद्मावती नाम धारिणी, पटरानी की कथा। (१४) धन्यकुमार का चरित्र वर्णन। (१५) सोमशर्मा की स्त्री अग्निला की कथा।

Note—ग्रंथ निर्माणोद्देशादि ।

आचारज जिय धरि अभिलाष । कीन्हो तास संस्कृत भाष ॥ तासु वचनिका रूप सुधारि । दौलतिराम कथा बुध सारि ॥ तासें भाव सिंह निज छन्द । आरंभ कियो चैापाई बंद ॥ शील अधिकार ताई उन जोर । भेजि दियैा लिखना हम ओर । भलो कथा लषि के हम लिखो । तेते काल सिंह वह भष्यो ॥ भैरोंदास पुन्य परकास । देखा ग्रंथ अधूरा पास ॥ मोसैां भना संपूरन करैा । आरत कछु न मन में धरैा ॥ मैं भाषा भाखूं सुख मान । जो कर लगै पुराण पुरान । तब उन कछुक समै में खोज । मोपै भेज दिया लहि चोज ॥ दोहरा—हूं थो कर्म संयोग से, पर सेवा में लीन । जा छिन थिरता चित गहो, वित जुत रचना कीन ॥ ग्रंथ वड़ौ मोमति तनुक ऐसा वना नियोग । हंस निवार सुधारियो, विनऊं पंडित लोग ॥ ग्रंथ निर्माण काल :—एक हजार सात सो वानवे मानिये । चैत सुदी द्वितीया दिन नीका मानिये ॥ तादिन पूरन कीन ग्रंथ जियराजने । मंगल करैा सकल समाज ने ॥

No. 339(*a*). Charaṇa Chinha by Rāmacharaṇa. Substance—Country-made paper. Leaves—14. Size—12 × 4 inches. Lines per page—18. Extent—252 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character--Nāgarī. Date of manuscript—Saṁvat 1910 or A. D. 1853. Place of deposit—Ṭhākura Adita Siṁha, Village Saraiyā Alī (Mevāsiṁha), Post Office Kaisargañj, District Bahrāich (Oudh.)

Beginning—श्रीरामानुजायनमः ॥ चंचरी छंद ॥ रामचरन्ह चिन्ह चिन्तु सव विधि सव सुष साजै । रघुवर के चरन कमल अंकन जुत निरषु अमल धारे पद चिन्ह राम संतन हित काजै ॥ रामचरण दाहिन स्वे सीतापद वाम चिन्ह विश चारि स्वास्ति काष्ट कोणश्री विराजै ॥ हल मूशल सर्पवान अम्वराप्ट पंचजान वज्र जव उर्द्ध रेष कल्प विर्छ छाजै । अंकुश ध्वज मुकुट चक्र सिंहासन दंड चमर छत्र पुरुष माल जव दक्षिण पद भ्राजै ॥ गोपद छिति घट पताक जंबुफल अर्ध इन्दु शेष षटकोण लगदाजि विन्दुराजै ॥ सरजू शक्ति शुधा कुंड त्रिवली मीन पूरचन्द वीन वेनु धनुष तून हंश चन्द्रिकाजै ॥ सीयराम चरनैा शुभ चिन्ह अष्ट चालीस नित चिन्तत शिवनारद शनकादिक अहिराजै रामचरण ध्यान करत गोपद इव जक्त निरत विर्ति ज्ञान भक्ति भरत सजत संत समाजै ॥ १ ॥

End—चंचरीक छंद ॥ सीयराम चरण चिन्ह जिन्ह जिन्ह संतन मन भाई । जेते सव चिन्ह लसत जानकी के नयन वसत जासको कटाक्ष विनु न मिलत प्रभु

गोसाईं ॥ निगमागम विधि महेश नारद शुक सनक शेष रामचरण चिन्ह सदा नेति नेति गाईं ॥ छोड़ि सोय रामचरण जांचत औ और सरन गुंजा को गहत मूढ़ पारस विहाई ॥ दंपति पद पद्मरूप होइ रहु चित अलि अनूप वक पाषंड रहु विवेक कह शनाई ॥ अति उदार कहत तोहि दासो निज जानि मोहि जानकी विहार नेक चरण शरण लाई ॥ रामचरण मनवरोर मानत नहिं कहा मोर मारतु मोहिं विनु गुनाह जानकी दोहाई ॥ ५७ ॥ रामचरण सब अंक गुन एक साधे फल होइ। चित्रकूट चित में कसै जागि रहै कि सोय ॥ चित्रकूट चित अंक प्रभु लषत प्रेम को वाढ़ि। रामचरण तेहि संत को भक्ति गोद लिये ठाढ़ि ॥ इति श्री चरण चिन्ह सम्पूर्ण शुभ मस्तु लिख्यते रघुवर शरण पाठार्थं महावलो के शुभ ॥

Subject—राम के चरणों की महिमा।

No. 339(*b*). Drishṭānta Bodhikā by Rāmacharaṇa Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—21. Size—12 × 6 inches. Lines per page—16. Extent—336 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character--Nāgarī. Date of manuscript--Samvat 1895 or A. D. 1838. Place of deposit—Santāna Murau, Village Airiyā, Post Office Pīparī, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः ॥ दोहा ॥ रामचरण दृष्टांत विनु मन न लहै श्रुतबोध। सहज वात को बात एक कहैं ग्रंथ सत सोध ॥ रामचरण श्रीराम को वंदत सब सुख पाय ॥ जैसे सींचे मूलको डारपात हरियाय ॥ रामचरण प्रभुरूप वहु राम भजे सब तुष्ट। यथ असन मुखमें लिए। हाथ पाव सब पुष्ट ॥ रामनाम सुमिरत सकल राम मंत्र फल सोध। रामचरण जिन रतनते सकल दृष्टि को वोध ॥ रामरूप थिर ह्वै लषत ब्रह्मजीव लषिआय। रामचरण रवि लषत ही मंडल धाम सुभाय ॥ रामचरण रवि प्रभा ते रविं मूरति लषि जाय। तिमि निजरूप प्रकास से रामरूप दर्साय ॥ रामचरण सतसंग विनु नहिं जवाहिरो होय ॥ तन मन वचन विलाय नहिं रहत सदा सतसंग ॥ रामचरण फल एक में जथ छूट जल गंग ॥ रामचरण संतसंग में परा रहै नहिं जाय। कवहुंक जौं सुरसरि वढ़ै जो जल लेय मिलाय ॥ रामचरण संतन परसि तीनिताप मिटि जाय। जिमि मलया तनु परसते विष भुजंग सितलाइ ॥

End—रामचरण जिय सकुचि वड़ि चहत मिलौ रघुराय। जिमि विभिचारिन पति निकट पग पग चलत डेराय ॥ रामचरण जग पांच दैय चलु आगे हरि आनु। रामचंद्र की चंद्रिका निज स्वरूप पहिचान ॥ निज स्वरूप पर रूप लषि पग पग

चलत अनंद ॥ रामचन्द्र तब द्रवहिं प्रभु देषिचंद मनिचंद ॥ जगत तजे प्रभु भजे विनु मिटहि न जिय को पीर । रामचरण विनु धनुष के तजे लगे किमि तोर ॥ रामचरण जगवासना तव लगि सुद्धि न होय ज्यों मद्द के घट भरे कछु पावन किहि विधि होय ॥ लोकलाज अभिमान सुख तब लगि हृदय न राम । रामचरण नृप क्यों वसै जहां मलीन लघुधाम ॥ लोक मान की अगिनि में धर्म कर्म जरि जाय । रामचंद रघुनंद की करुना नारि बुझाइ ॥ अस करुना करिहो कवहुं रामचरण पर राम । तव स्वरूप जल मीनमय मरों विछोहत नाम । यह दृष्टांत सत बोधिक सतक विरह को अंग । रामचरण तेहि समझ रहु राम न छोड़िहिं संग ॥ इति श्री दृष्टांत बोधिक विरह अंग वरननोनाम पंचमो सतक । माघकृष्ण पक्ष तिथौ चतुर्दस्याम मंगल वासरे संवत १८९५ दसखत रामप्रसाद मुराऊ ग्राम वासी दहाय का पुरवा ॥

Subject—रामकृष्ण आदि की महिमा पर दृष्टान्त । पृ० १ से ५ तक विवेक लक्षण, पृ० ६—९ तक वैराग्य लक्षण, मर्यादा लक्षण, पृ० १०—१२ तक—शरण लक्षण, निश्चल, दया, सत्य, उद्दार, ऐश्वर्य, यश, १३—१७ तक रामनाम लक्षण, १८—२१ तक, विरह के लक्षण ।

No. 339(*c*). Drishṭānta Bodhikā by Rāmacharaṇa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—14. Size—$6\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—34. Extent—300 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1904 or A.D. 1847. Place of deposit—Śrī Mahanta Bābā Rāmacharaṇadāsa, Chandra Bhawana, Payāgapur, District Bahrāich (Oudh).

Note—Details as in No. 339 (*b*).

No. 339(*d*). Padāvalī by Rāmacharaṇa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—27. Size—$12\frac{3}{4} \times 6$ inches. Lines per page—20. Extent—1,485 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Nāgarī Prachāriṇi Sabhā, Kāśī.

Beginning—श्री अवध सरजू सीतारामाभ्यांनमः । श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ बाल विभूषन नील तन जग अधार कछु हाथ । रामचरन सोइ उर वसै वालरूप रघुनाथ ॥ १ ॥ महिसुर भारत देषि प्रभु कहौ विधिहि दै वोध । अव मरिहौं अवतार लै कीन्हेसि संत विरोध ॥ २ ॥ सत स्वरूप दशरथ अवध तहं अैहौं निज-रूप । रामचरन जय जय कहत गय निज भवन अनूप ॥ ३ ॥ राम राम ॥ हरिप्रिया

छंद ॥ राग रामकली ताल यकताला ॥ दसरथ चितत नित सदोनं । छिप्र गवन गुर भवन विलंवित नमित असोवं वोल्यो गुर परवीन जै जै राम लला ॥ १ ॥ विधि हरि वंदन चंदन सिव सुष कंद ॥ निगमदक्ष मुनि रक्षि गक्ष महि दुष्ट निकंद ॥ सोइ सुत तव कुन चंद जै जै राम लला ॥ २ ॥ गुर नृप गक्षति सुक्षित रंग बनाइ—धिष्ट जननं सद स्वजनसु शृंगो विधिहि वोलाइ ॥ सुत हित जज्ञ कराइ जै जै राम लला ॥ ३ ॥

End—रघुनंदन की यह वानि परी ॥ गलिय चलत मुसुकात छवोलो नयन के वान ते प्रानहरी । जहं देषैा तहं षड़ोइ रहतु है मैं सषो लोक की लाज डरी । रामचरण सषि निरषु नयन भरि काज लाज सब भार परी ॥ राग श्री ताल चैाताला धूपद ॥ परम पुरुष परमेस्वर परब्रह्म परेस शुंदर अति श्री सीता रवन देषो नयन को फल सिव के हृदय वासनानि सब विधि शुजान सुष छवि भवन सुकसन कहतु मत ध्याइ जेहि सवे नित पाय पद्म जोति इंद्रो दोइ भवन असे रघुवर के चरण परे रहय ते सकल गुन निधि रामचरण दुपदवन पुस्तक पदवली समात पोथि लिषी श्री सीताराम राम पुस्तक पदावली शृंगार श्री गोसांई रामचरण किते ॥

Subject—श्री रामचन्द्रजो के भक्ति विषयक स्फुट छंद ॥

No. 339(*e*). Bālakāṇḍa Rāmāyaṇa para Ṭīkā by Rāmacharaṇadāsa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—1,562. Size—$13\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—11. Extent—19,525 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1877 or A. D. 1820. Date of manuscript—Samvat 1917 or A. D. 1860. Place of deposit—Tālukedāra Balabhadra Siṁha Seṅgara, Village Kānthā, Post Office Kānthā, District Unāo.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ विधेशा खण्ड पूर्ण नियत रसमयं सच्चिदानंदं सत्यं । कल्यानांऽनंत दिव्यात्मक गुण विलसत्सर्वतो भिन्न रूपं ॥ जोवानांमा नियंता रमति गुण मयाऽचितय शक्ति परेशं । रामं कैशोर मूर्तिं विपुर गुणनिधि जानकोशं भजेम ॥ १ कृत्वा वै गुरू वंदनां त्रिमत मप्या लक्ष्यवेद स्मृति पैाराणं स्वधिया यथार्थ भणितं चा वैक्ष्य वै संहितां ॥ जोव ब्रह्ममयं त्रिकांड रचितं जिज्ञासु वोधोपगं ॥ सारं प्राप्य तपोऽभिराम चरणो वेदांत चूडामणिम् ॥ दोहा—बंदैा श्रोकर जानको रघुनंदन सुखदानि । रामचरण समसमाज युग सर्व सुमंगल खानि ॥ ३ ॥

End—मर संतन कौ मनहंस जहां मुकुता गुणराम चुनै सुखसो । कवि कोविद को विसरामथलो सब शास्त्र सुमंगल मय सुखमो ॥ रघुवीर स्वरूप सदा दरसो सुख कौ सुखमो दुख को दुखसो ॥ जगजाल कौ राम चरणण असी रघुवीर कथा तुलसी उरवसो ॥ ४ ॥ सव को मत एक करो तुलसी सियाराम स्वरूप में आनि धरो ॥ तेहि ग्रंथ को अर्थ कियो मति जो यह सिंधु सुधा रस भूरि भरो ॥ मर मानस राम चरित्र तहां गुण कीरति दिव्य उठै लहरी । सियराम समोपहि वास करै जोइ रामचरण स्नान करो ॥ ५ ॥ दोहा—अवधपूरी पूरण भयो सुभग जानकी घाट । रामचरण शुभ तिलक कृत सत समाज को ठाठ ॥ ६ संवत अष्टादस सुभग सत्तरि अहै सपाख । १८७७ । रामचरण रितुराज तिथि पंच शुक्ल बैसाख ॥ ७ ॥ इति श्री रामचरित्र मानसे सकल कलि विध्वंसने बालकांडे श्री सीताराम विवाह श्री अयोध्या विश्राम परम उत्साहो परमानंद त्रैलोक्य मंगल वर्णनं नाम सप्तपंचासत सारंगः ॥ बालकांड समाप्त रामचरण तिल कृत मूल तिलक की संख्या १९२० ॥ श्री मन्नृपति विक्रमादित्य राज्ये गताका १९१७ मार्ग शुक्ल पंचम्यां लिखित मिदं पुस्तका चिंतामणि ॥

Subject—रामचन्द्र की बाल्य अवस्था, सीता जी के साथ विवाह होने तक।

No. 339(*f*) Rāmāyaṇa Ayodhyā Kāṇḍa para Ṭīkā by Rāmacharaṇadāsa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—696. Size—14 × 7 inches. Lines per page—12. Extent—10,440 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1881 or A. D. 1824. Date of manuscript—Samvat 1923 or A. D. 1866. Place of deposit—Tālukedāra Ṭhākura Balbhadra Siṁha Seṅgara, Village Kānthā, Post Office Kānthā, District Unāo.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री सीतारामाभ्यां नमः ॥ घनाक्षरी कवित्त ॥ तुलसीकृत मेघ स्वाति जोग धर्म ज्ञान सालि प्रेमनीर चातक मयूर चित्त मन हैं । कामधेनु दिव्य सोपि दुग्ध भाव प्रीति स्वाद तोष पुष्ट जीव वत्स देव रामजन हैं । धर्मिन्ह कों धर्म सिद्धि जोगिन्ह को जोग सिद्धि ज्ञानन्ह कों ज्ञान सिद्धि भक्त भक्तिधन हैं । रामचरण श्री मद्रामायण श्री राम ऐन रामनाम लोना श्री रामसोय तन हैं ॥ १ ॥ क्षीर सिंधु अवध कांड पूरण पै भरत भाव सेस विज्ञान विष्णु रमा रामनाम है । विरह अथाह स्वरूप इंदु प्रेम सुधा राम रूप चिन्तामणि भक्ति धेनु काम है । भरत को जोग वैराग्य ज्ञान ध्यान तप आदि गुन

दिव्य भूरि जलचर को धाम है। रामचरन सरनागत सोय मोतो कृपा राम आरत तरंगै सोच उमगै सुदाम है। २ ॥

End—भरत भजन रवि उदै लोक त्रय भुवन चारि दस। मोह अविधा निसा नास जागि जीव एक रस। काम क्रोध मद लोभ चार निश्चर गति नासो। ज्ञान जोग वैराग्य धर्म सर कमल प्रकासो। श्रीराम खराऊं राजते पूरन नीति अनीति गई। श्रीरामचरन अद्यापि लखु राम चरन जेहि प्रीति भई ॥ २ ॥

इति श्रीरामचरित मानसे सकल कलिकलुष विध्वंसने श्री अयोध्या कांडे भरत के अवधि वैराग्य विवेक षट संपति षट सरनागत भाव भक्ति अखण्ड एक रस वर्नन नाम एकोनत्रिंशति स्तरंग ॥ २९ ॥

दोहा—असी एक सन आठ दस संवत सावन पूर्व। अवधकांड को तिलक भो रामचरन रति रूर ॥ ३० ॥ संवत १९२३ सिसिर रितौ मासोत्तम फागुन कृष्ण अष्टम्यां बुधवासरे लिखित मिदं पुस्तकं मातादीन पांडे अस्थान जोगा। पठनार्थं गुरुप्रसाद राम त्रिवेदी ॥ स्वार्थं वा प्रमार्थं वा ॥ श्रीराम ॥

Subject—रामविवाह पश्चात् युवराज पद देने के समारोह से लेकर चित्रकूट में निवास और भरत का मनाने जाना और निष्फल लौट आने तक।

No. 339(*g*) Birahāśataka by Rāmacharaṇa. Substance—Leaves—12. Size—9 × 4½ inches. Lines per page—16. Extent—144 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Lālā Tulasī Rāma Srīvastāva, Rāe Barelī.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ रामचरण पत्रए मतक राम सरण रस देइ। लोह नान्ह ह्वै रज मिलै ज्यौं चुंवक गहि लेइ ॥ १ ॥ रामचरण दृष्टांत यह जो समुझै मन लाइ। वसहि राम हिय मग्न होइ मूक स्वाद जिमि षाइ ॥ २ ॥ रामचरण विनु विरह प्रभु मिलु न कल्प चलि जाइ। गलत सोहागा प्रथम जिमि तव कंचन मिलि आइ ॥ ३ ॥ विरह अगिनि निसि दिन जरैं सहैं वान असिधार। रामचरण रघुवीर जन सती सूर एक वार ॥ ४ ॥ राम विरह हिमि मन जरै मूल वीज सब जाइ ॥ रामचरण जो ज्ञान जरु दावागिनि हरि आइ ॥ ५ ॥ चिता विरह की अग्नि हुइ रामचरण सो विचारु। चिता जरावै मृतक को विरह जिअत नितजारु ॥ ६ ॥ रामचरण दुष मिटत है जो सर लगै शरीर। राम विरह सर हिय लगे तन भर कसकत पीर ॥ ७ ॥

End—निजस्वरूप पर रूप लषि पल पल चलत अनन्द।
रामचरण तव द्रवहिं प्रभु देषि चन्द्र मनिचंद ॥ ९६ ॥

जक्त तजे प्रभु भजे विनु मिटै न जिय की पीर।
रामचरण विनु धनुष के तजे लगे किमि तीर ॥ ९७ ॥
रामचरण जग वासना तव लगि सुद्ध न होइ।
ज्यों मद के घट भरै कछु पावन केहि विधि होइ ॥ ९८ ॥
लोक लाज अभिमान सुष तव लगि हृदय न राम।
रामचरण नृप क्यों वसै जह मलीन लघुग्राम ॥ ९९ ॥
लोक मान की अग्नि में धर्म कर्म जरि जाइ।
रामचरण रघुनंद की करुणा वारि बुझाइ ॥ १०० ॥
अस करुणा करि हो कवहुं रामचरण पर राम।
तव स्वरूप जल मोन मैं मरौ विछोहत नाम ॥ १०१ ॥
यह दृष्टांत प्रवोधिका सतक विरह को अंग।
रामचरण तेहि समुझि रहु राम न छोड़हि संग ॥१०२ ॥

इति श्री दृष्टांत वोधिका का विरह अंग वर्णन नाम पंचमः सतकं ॥ राम राम राम राम राम राम राम राम ८

Subject—१—विरह शतक की महिमा, विरह शतक के दृष्टांतों की महिमा, राम विमुख रहने की हानि वर्णन। राम के भक्तों की उनके विरह में जो दशा होती है उसका वर्णन। राम भक्ति से दुखों की निवृत्ति, मद का वर्णन, सुरति वर्णन। विरह अंग का वर्णन। वधिर का वर्णन। धर्म सूर का वर्णन। धर्म की महिमा वर्णन। विरह की तीन दशाओं का वर्णन। राम के विना रामचरण की दशा राम के प्रति कवि की विनती राम विरह में मन का वर्णन। कुसंगति का फल वर्णन। राम के ध्यान का वर्णन। अहंकार का वर्णन। बुद्धि सुधरने के लिये कवि की राम से विनती। मन शुद्धि के लिये राम से विनती। सुरति की दृढ़ता का वर्णन। काम क्रोध और लोभ का भक्ति से रोकने का वर्णन। राम की शरण के लिए विनती। कानों को राम गुण गान सुनने में लगाने के लिये विनती। राम स्पर्श के लिए विनती, राम स्वरूप देखने में आंखों के लगने के लिए विनती, राम कार्य में हाथों के लगने के लिए विनती, राम रूपी तीर्थ में पगों के चलने के लिए विनती, राम के चरणों में सिर लगने के लिए विनती; मन क्रम वचन से राम के प्रति भक्ति का वर्णन। विषय के त्यागने और राम भक्ति का उपदेश, राम का वचन सिंधुतट पर शरणागत को तारने में भ्रम की निंदा। अपराधों की क्षमा के लिए प्रार्थना, राम विरह में कवि दशा का वर्णन, राम की लीला की महिमा वर्णन। राम की प्रतिभा का वर्णन। राम के मिलने की इच्छा का वर्णन। राम भक्ति विना संसार में जीना व्यर्थ है। राम के विना कवि की व्याकुलता का वर्णन। वसंत ऋतु में राम विरह में कवि

दशा का वर्णन। पति के बिना जो दशा पत्नी की होती है वही दशा राम विरह में रामचरण की है। राम शरण में जाने में भय संचार का वर्णन। विना राम भक्ति के शांति नहीं मिलती इसका वर्णन। राम के विना जगवासनाओं की निवृति नहीं होती। लोक लाज अभिमान और सुख की वासनाओं का तब तक ही हृदय में वास है जब तक राम विमुख हैं। रामचरण की राम के प्रति प्रार्थना, ग्रन्थ नाम वर्णन।

No. 340(*a*). Pānī Rāmacharaṇajī kī by Rāmacharaṇa. Substance—Country-made paper. Leaves—114. Size—4½ × 3¼ inches. Lines per page—18. Extent—1,260 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1852 or A. D. 1795. Place of deposit—Harbansa Rāi, Post Office Ṭikārī, District Rāe Barelī.

Beginning—अथ स्वामी जी श्री रामचरण जी की वांणी लिष्यै। नमोराम रमतो तन मो गुरदेव सुवामी॥ नमो नमो सबसंत न'व रटि भये ज्ञुनांमीं। जिन के चरणूं हेठि रहो नित सीस हमारा॥ तन मन धन अर प्रांण करूं नवछावरि सारा॥ राम संत गुरदेव विनि नहीं और आधारा॥ रामचरण कर जोडि कें वंदै वारंबार॥ १ नमो रांम रमतो सकल व्यापक घण नांमीं॥ सब पोषे प्रतपाल सवन का सेवग स्वामां॥ करुणां मई करतार करम सब दूरि निवारै भगति विकलता विडद भगति ततकाल उधारै॥ रामचरण वंदन करै सब ईसन के ईस जगपालक तुम जगत गुर जग जीवन जगदीस॥ २॥

End—राग आरती॥ आरति रमता राम तुमारी॥ तुम सूं लागो सुरति हम री। टेक॥ रमता राम सकल भर पूरा। सुषिम थूल तुमारा नूरा॥ १॥ आरति सुमरण सेवा कीजे। सव निरदोष ग्यान गह लीजे॥ २॥ ऐही आरति ऐसी पूजा। राम विनां दरसन नहीं दूजा॥ ३॥ सिव सनकादिक सेस पुकारै। ऐही आरति भौ सागर त्यारै ४ रामचरण पे आरति ताकै। अठ सिधि नौ निधि चेरी जाकै॥ ५॥ आरती॥ आरति अलष पुरस अविनासी। पूरण ब्रह्म सकल प्रकासी॥ टेक॥ रमता राम सुरति के स्वामीं। अलह अमूरति अंतर जांमी॥ १॥ सुरति मुरति आदि न अंता। सब सूं भिव रति सब वरतंता॥ २॥ चौदा तीनि लोक पतिसाही। सपत दीप नव षंड दुहाई॥ ३॥ वार पार कहूं थाहा न आवै। सुमरि सुमरि जन मद्धि समावै॥ ४ ऐसा साहिब गोविंद मेरा। रामचरण चरणां का चेरा॥ ५॥ पद॥ ४७ पूरो पद संपूरणं॥ राम राम राम राम राम राम रामराम राम राम राम॥

Subject—पृ० १—२ ॥ राम स्तुति, गुरु और अन्य संतों को वंदना। पृ० ३—६—राम की महिमा वर्णन। सूर वही जो इंद्रियों का दमन करै और काम, क्रोध, लोभ, मोह पर विजय प्राप्त करै तथा राम के चरणों में सदा भक्ति रक्खै ॥ ७-९। धर्म में दृढ़ता का उपदेश हंस, चकोर, चात्रक के गुणों का उदाहरण। और प्रह्लाद, नाभा कवीरदास की दृढ़ता अर्थात् दुःख रूपी कसौटी पर कसने से जिसकी दृढ़ता पूरी उतरै वही सच्चा भक्त है। १०—१२ ॥ जिस प्रकार पतिव्रता स्त्री विभचारियों के बीच में पड़ी हुई भी सदा पति प्रेम में ही रत रहती हैं और अन्य पुरुष की तरफ़ निगाह उठा कर भी नहीं देखती उसी प्रकार सच्चा भक्त अनेक मत मतांतर से घिरा हुआ भी केवल अपने इष्ट ही का स्मरण करता है। १३—१५। जो लोग अनेक देवी देवताओं को पूजते हैं उनकी दशा व्यभिचारिणी स्त्री के समान है जिसको कभी शांति नहीं मिलती और जिस प्रकार व्यभिचारिणी की बुरी हालत होती है उसी प्रकार वह मनुष्य सदा भटकता रहता है। इस लिये अपने एक इष्ट ही में सदा लवलीन रहे ॥। १६। उसी मनुष्य की बुद्धि सदबुद्धि है जो राम में सदा लवलीन रहता १७—१८ दुर्बुद्धि मनुष्य वही है जो काम क्रोध लोभ मोह आदि संसार के झगड़ों में पड़ा रहता है और राम से विमुख रहता है। १९-२१। राम की सत्यता और उनसे सब वस्तुओं और परमपद की प्राप्ति तथा राम महिमा वर्णन ॥ २२—२४ प्रकृति और ब्रह्म का उपदेश इन गुण मायाजाल से अलग होकर केवल ब्रह्म में ही लवलीन रहना चाहिए। २५—२६। जिज्ञासु के गुण लक्षण २७—२८। साधु के लिए दया धर्म का उपदेश। २९—३५। माया का विस्तार से वर्णन। ३६—सुमिरण विधि ३७। साधु लक्षण। रामभक्ति करने से लाभ ३८—और विमुख रहने से हानि का वर्णन। ३९—४३। राम जपने का उपदेश। ४४—४५। दरिद्री, दुखी, निर्धन, निर्बल के केवल राम ही बल हैं—४६—५०। साधु संग का फल। राम की उपासना से ही जीवन लाभ है—५१—५३ गुरु महिमा वर्णन। ५४—६४। राम नाम का प्रताप वर्णन। ६५—८०। चेतावनी के छंद—८१—८४। दश इंद्रियों और मन का सम्बन्ध वर्णन और उनका कर्त्तव्य—८५—११४ भक्ति रस के गाने योग्य फुटकर पद।

No. 340(*b*). Kālajñāna by Rāmacharaṇadāsa of Ḍiḍavānā, Jodhapura Rājya. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—8 × 4 inches. Lines per page—14. Extent—68 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṃvat 1794 or A. D. 1737. Place of deposit—Śrī Mahanta Gopāladāsa, Ḍiḍavānā, Jodhapura Rājya, Post Office Ḍiḍavānā, Rājputānā.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ काल ज्ञान लिष्यते ॥ दत्तत्रेयउवाच ॥ सावधान हरिदास रहाई । जो रैन दिना हरिसों मिलाई । मृत्युकाल को सदा विचारै । देषि उपद्रव वेगि संभारै ॥ जानि मृत्यु को पहिले ही राई । जोगेश्वर न्यारा होइ रहई ॥ देह गेह ममतादिक त्यागे । निरालंब होइ कहीं न लागे । लागे तहां जहां ते आयो । हो अलरक वेद भागवत गायो । पारब्रह्म सरिसे चलि जाई । जे अरिष्ट देखि सावधान रहाई । सो अरिष्ट तोहि कहि समझावत । जिनने मृत्यु को समै लषावत । जो शुक, अरुंधती ध्रुव नहिं देषै । तथा देव मारग नहिं पेषै ॥ अथवा ससि छाया ससि मांहीं सो वरसते ऊपर जोवै नाहीं ॥ जाहि किरण हीन सूरज दरसावै ॥ अग्नि सर्व समान लषावै ॥ सोतो जीवे एकादस मासा । विचारि पहले हो होइ उदासा ॥ जो छादै मूतै विष्टा-कराई, सो वन रूपै पै मन जाई । प्रतच्छ अथवा सपने माहीं । सो मास दस जोवै आगै नाहीं ।

End—इतै उपद्रव सदा विचारै । रात दिवस छिन छिन हिं सभारै । ये घोर उपद्रव टरत जुनाहीं ॥ मत कोइ एक पुन्य करि टरि जाहीं ॥ किसहो एक टरि जाई ॥ परि हरि रति भूठो सत करि पुन्य केवल गाई । कोई एक अरिष्ट जिस उपद्रव को जितनो परमाना । मास धावै । कालको गति लखो नाह जावै । रहै एक शुभ स्थाना ॥ निरालंब होइ साधै दिवस पष तीनै निदाना ॥ जब लग आवै । तव सावधान होइ वपु छिटकावै । ध्याना ॥ जब मृत्युकाल को अवसर सव से ले उलटाय । प्रेम प्रोति सरधावंत दोहा । वपु छिटकावै सावधान होइ । ज्ञान भाषा ग्रंथ संवत १७९४ कार्तिक मासे जोगी हरिसन हेत लगाय ॥ इति काल लिषतं जैपुर शुभ स्थानं लिपिकृतायां गंगाराम शुक्ल पक्षे तिथि अष्टमी गुरु वासरे निरंजनी वैष्णव । पथनांर्थे रूपदास जो महंत जोधपुर राज्य ग्राम गद्दी डीडवाना शुभ भवतु ॥

Subject—मृत्यु का समय और उसकी परीक्षा । देखो No. 340 (*c*).

No. 340(*c*). Kālajñāna by Rāmacharaṇadāsa of Ḍiḍavānā. Substance—Country-made paper. Leaves—3. Size—$8\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{3}$ inches. Lines per page—26. Extent—60 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1794 or A. D. 1737. Place of deposit—Paṇḍita Nāgesarjī, Post Office Fakharpur, Village Bunakapur, District Bahrāich (Oudh).

Note—Details as in No. 340 (*b*).

Subject—पृ० १—३ तक—काल का ज्ञान कराया गया है कि मनुष्य अपनी मृत्यु को किस प्रकार जान सकता है। जो शुक्र अरुंधती—ध्रुव, देव मारग चन्द्रमा के काले चिन्ह न देखे वह १ वर्ष से अधिक नहीं जी सकता। जिसको सूर्य में किरण न देख पड़े, अग्नि में गर्मी न जान पड़े वह ११ मास से अधिक नहीं जी सकता। जो स्वप्न में मल मूत्र या कै करै सोने रूपे पर मन जावे वह दस महीने से अधिक नहीं जी सकता। जो भूत पिशाच आदि देखै वह ९ मास से अधिक नहीं जी सकता। जो साधु असाधु न जाने जिसकी प्रकृति पलट जावे वह ८ मास जीता है। कपोत, काक, उल्लू, गृध जिसके सिर पर बैठें या काक पर मारै वह ६ मास जीता है। अगर अपनी छाया उलटी देखै तो ४ मास जिन्दा रहता है। जो विना कारण दक्षिण दिश विजली देखता है, इन्द्र धनुष जल में देखै वह दो मास जिन्दा रहता है, जो घृत, तेल आरसी में अपना सिर कंधे पर न देखै वह १ मास जीता है। जिसका स्नान समय पर हिरदा पहिले सूखै वह दस दिन जीता है। जिसको हवा अथवा गर्मी अच्छी न लगै उसकी मृत्यु ततकाल होती है। लाल वस्त्र पहिरे स्त्री गाती वजाती दक्षिण दिशि ले जावै उसकी मृत्युनिकट है। जो नग्न, स्वेताम्बर देखै अथवा हंसता देखै उसकी मृत्यु तत्काल जानिये। दांत में दांत घिसै अथवा खाते खाते न तृप्त हो जल विना नदी देखे दिन में तारे देखे उसका अल्प जीवन है जिसके नाक कान टेढ़े पड़ जावे अथवा वाया नेत्र वहे ऊंट गदहे पर सवार हो कान न सुने उसकी मृत्यु ततकाल है। जिसकी आंख की जोति घट जावे या अग्नि में गिरै या तलवार से मारे सो सात रात जीता है। गुरु ब्राह्मण की निन्दा करे या माता पिता की निन्दा करे या अपने पूज्यों की निन्दा करे उसकी मृत्यु आई समझना। जब मृत्यु निकट जाने तो दान पुण्य ईश्वराधन में लगै तो अरिष्ट दूर हो सकते हैं।

No. 341. Dāna Līlā by Rāma Datta Brāhmaṇa of Guñjaulī. Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—6 × 3½ inches. Lines per page—10. Extent—70 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1855 or A.D. 1798. Place of deposit—Ṭhākura Jagadeva Siṁha, Village Guñjaulī, Post Office Bauṇḍī, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः

दोहा ॥ गणपति जो शुभ करण हो सुमिरत सब संसार। लीला गोपी कृष्ण को करीनाथ विस्तार। १। जेहि सुमिरे संसै मिटै होत सदा आनंद। देवन हित अवतार धरि नंद कहवाते नंद। २। भुजंग प्रयात छंद। अवे प्रात मो कान्ह

जसुधा जगाये। सबै गोप गोपी मनो द्रव्य पाये। मंजन किये ध्यान पूजा मुरारी। वागेश जे अंग मै चारु भारी। धरे मोह को मुकुट आनंद कंदा। भली भांति राजे मनो कोटि चंदा। भली भांति केशरि तिलक भाल राजे। कहूं लाल पेरी सो लीकै विराजै। श्रवण लोल कुंडल विराजे शो हरे। मनो जुग द्विवाकर सबै भांति पूरे। अधर विंव दाड़िम दशन वोच सोहै। हंसनि लेत मोलै कते काम मोहै।

End—कोई चीर त्यागे चली नग्न वाला। वजै प्रेम वंसो भली चित्र माला। कोउ मैान छाड़े न बालक निहारे। ठगी सी तकै वे कदंबन की डारैं। कोई लोटै भू पर गिरे हैं अधीरा। फिरै कुंज कानन न जानै सरीरा। भई मान होनी सबै ब्रज की नारी। धरे ध्यान वंसी जगी तान भारी। जहां जाय मोहन ने वंशी वजाई। तहां ग्वालनी वे फिरैं पछ धाई। किये मंद सर्वासुरी वृज चंदा। थकी सी निहारै परी काम फंदा। जोइ चित्त भावै। सोई कान्ह कीजे। हरित वांसुरी को हमै शब्द दीजै। उतारी दही दान दीन्हो चुकाई। हंसी गुजरी कान्ह वंशी वजाई। दोहा॥ रामदत्त सुमिरत सदा गिरधारी वृजराज। चरन कमल हदै वसै दीजै विदुष समाज। सोरठा। पूरण पूर्ण इन्दु अब्द गते नृप विक्रमा। वान नक्षत्र नग इन्दु। शाक भनित प्रवीन मति। सम्पूर्ण शुभं

Subject—श्री कृष्ण का गोपियों से दान मांगना।

No. 342(*a*). Dayā Vilāsa (Sabhājīta) by Rāmadayā. Substance—Country-made paper. Leaves—126. Size—$8\frac{1}{2} \times 3\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—24. Extent—1,725 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Good. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Mahābīra Baksha Siṁha, Tālukedār, Village Korethārā Kalā̃, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ दोहा। एकदन्त सुत कंत हरहरा हरन दुष सोग। मेरी बुधि अज्ञात शिशु वृद्ध करन तिहि योग। १॥ रामदया जांचत तिन्हैं चरन कमल करि नेहु। कोविद के मन स्रवन को वाक अर्थ प्रिय देहु। २॥ सकल ग्रंथ को अर्थ लै महा बुद्धि को धाम। रामदया संग्रह कियो सभाजीत धरि नाम। ३। सभाजीत जातें कियो रामदया चित लाइ। मूरुष पंडित होइ हैं कि कीन्हें कंठ सुभाइ। ४॥ सभाजीत यह ग्रंथ को नाम धरयो इहि रीति। समय समय के अर्थ कहि लेइ सभा सब जीति। ५। मथि के नाना ग्रंथ को लहो जहां जो उक्ति। सो सब भाषा में धरी कहो अनुक्ता युक्ति। ६। बुद्धि ज्ञान चेतावनी धीरज धर्म सुदेश। नेति अनेति सबै कहो भूपति को उपदेश। ७॥

पुण्य प्रताप प्रसिद्ध बन दंड अनुग्रह जाहि। अरि सासन नासन प्रजा प्रिय भूपति सो आहि। ८॥

End—(४) राग माला खंडः—अथ सत सुरनाम। षर्ज ऋषभ गंधार अै मध्यम पंचम जानि। धैवत बहुरि निषाद पुनि ये सुर सात वषानि। सात सुरन को समुझि चित सुरति होत बाईस। रामदया भाषा धरो जानि लेहु इकईस। अथ बाईस सुरति के नाम—कवित्त—तिव्रा कुछैती मुद्रा छंदोवनी रंजनी विचारि वुधि रति का विशेषिये। जानिये रउद्रा क्रोधो वज्र अै प्रसारिनी है प्रीतिमझा धृति रिक्ता श्रुति चित लेषिये। संदीपनी आलापनी कहा रोहनी अै रम्या मंदनी सुउग्रा उभै रामदया पेषिये। सहित छोभ निकाये श्रुति कहो वाईस में सात सुरमा हंस-वही की गति देषिये।

(५) वैदिक खंड—अथ नाटिका भेद चैाबोला छंदः—दछिन कर अंगुठा की जर पर अंगुरी तीन धरि जै। प्रथम पित्त फिर कफ पुनि वाई क्रम ही ते लोष लोजै आदि आंगुरी लगै पित्त कफ दूजो अंगुरी कहिये। तीजो अंगुरी वाइ जानियै नारि लछन लहिये। मेडुक काग कुरंग चाल जो चलै पित्त को नागे। पंडुक मोर मराल नाटिका कफ को चलै विचारो। वाइ नाटिका चित दै देखो सांप जोंक गति जैसो तीतर लवा वटेर नाटिका सन्निपात को ऐसो होइ नाटिका अति ही चंचल ताप जानि ये ही मै उपजै पित कम वाइ जैान विधि सो सब भांति कहो मैं। १०

(६) शालहोत्र खंड—श्लेष्मज्वर लछनं। दोहा—तन तातो व्याकुल श्रवन नाक सिथलता नैन। अघर अचर से लो जल श्लेष्मज्वर को चैन। चैापाई॥ उपचार। मिरचै जोरो सेधो नोन चोचा चाभ सोठि लै तीन वच्च अतीस पोपरामूल मधु सो सानि समै सम तूल पाव तीन वाज कहु देहुं अश्लेष्मज्वर छुटै तेहु॥

Subject—(१) पृष्ठ १ से २१ तक—सर्वनीति प्रथम खंड।
(२) पृष्ठ २२ से ४१ तक—ज्योतिष भाषा।
(३) पृष्ठ ४२ से ५८ तक—सामुद्रिक खंड।
(४) पृष्ठ ५९ से ६६ तक—रागमाला खंड।
(५) पृष्ठ ६७ से ९९ तक—वैद्यक खंड।
(६) १०० से १२६ तक—शालिहोत्र खंड।

No. 342(*b*). Sabhājita Sarvanīti by Rāmadayā. Substance—Country-made paper. Leaves—11. Size—16 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—240 Anushṭup Ślokas.

Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Lālā Bhagavat Prasāda, Village Sadhuwāpura, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः दोहा । एकदंत सुत कंत हरहरा हरण दुष सोग । मेरा बुधि अज्ञान सिसु बुद्धि करन तेहि जाग । १ ॥ रामदया जानत तिन्है चरण कमल करि नेहु । कोविद के मन श्रवन को एक अर्थ प्रिय देहु । सकल ग्रंथ को अर्थ लै महा बुधि को धाम । रामदया संग्रह सभाजोत धरि नाम । सभाजाति जाते कियो रामदया चित लाइ । मूरष पंडित होत जहि काने कंठ सुभाइ । सभाजोति या ग्रंथ को नाम धरो यहि रीति । समय समय के भेद कहि लेइ सभा सब जोति । मथि के नाना ग्रंथ सब लहि जहां जो उक्ति । सो सब भाषा में धरो कहि अजुको जुक्त । बुधि ज्ञान चेतावनो धीरज धरि सुदेष । नोति अनोति सबै कहा भूप को उपदेस । उठत प्रात रति को प्रबल प्रीत पालक परिवार । मुरत नहि जुरि समर में कुरकुट समर विचार ।

End—कबहुं न निकरै जतन सो तेल परहू धूलि । मूरष को मन चोकनो होय न कबहूं भूलि । रक्त वोज पर जाय रहु सहस पवन श्रुति चाक । भुजा देषि पछिताइये सुवा सेव मत जाक । मैं पहिले हो हो लषा निकरत मे चक फूल । आतप ताप तुसार को त्रान न बहुत समीर । सुष सुषमा स्वारथ कहा वसे करील हो कीर । मूरष सोषै सीप सो कुसल आपुहो जानि । तिहि सिषाय सकै अजो मूक महा तनु ज्ञान । घटत अधिक सो पुरुष है घटित घटै ना देषु । उड़गन इक सो रह शशी नसै वढ़ै परवेष । विपं परै पर पुरुष को विमा होय सुष जाल । अर्जुन सो आपने ह्वै फूले फले रसाल । भूषन भाजन भामिनो विभो न भूलाल । सोच सचि मरै अनेक जनु भुगवे लै भूपाल । संतत एक हरिचन्द्र नृप राष्ये। क्षितिज ससेत । सुर पुर गे नर नारि पसु सकुर स्वान समेत । इति श्री सभा जीति समय सारे सर्व नीति बरनन समाप्तह लिषा शिवचरण बाजपेई संवत् १९२१ पूस मासे शुक्लपक्षे तिथै पंचम्यां मंगल वासरे लिषतं सीतलप्रसाद सधुवापुर के पठनार्थ ।

Subject—राजनीति ग्रौर सभानीति ।

No. 342(*c*). Sabhājīta Jyotisha by Dayārāma. Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—16 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—220 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of

manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Lālā Bhagavat Prasāda, Village Sadhuwāpura, Post Office Sasaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ भाषा ज्योतिष लिष्यते । परम पुरुष परमात्मा घट घट जाको वास । पूरि रह्यो तिहुं लोक मे जल थल भू आकास । ताको करत प्रनाम औ लेत नाम मन काम । पूरन होत उदोत नित बाढ़त आठौ जाम । रामदया जाचत तिन्है चरण कमल सिर नाय । जोतिष भाषा में रचो दोजै जुगुति बताइ । ग्रंथ संस्कृत देषि कै भाषा कीन्हो सोय । तिथि औ वार नक्षत्र सब योग करण गति लोय । अथ तिथि नाम । परिवा दुतिया तृतीया कहो । चौथो पंचमी षष्टी लहो । सातै आठै नौमी वषानु । दशमी एका द्वादशी बषानु । तेरसी चौदसी मावस गनो । कृष्ण पक्ष ऐसो विधि भनो । पक्ष उजेरे पूरणमासो । सोरह तिथि यहि भांति प्रकासो । अथ वार नाम । आदित सोम भोम बुधवार । जीव शुक्र शनि सातौ वार ।

End—अथ ग्रह भोग । एक मास रवि भोगवै नषत सवा दुइ चंद । डेढ़ मास कुज बुध करै एक मास आनंद । वेफै तेरह मास लों शुक्र महीना एक तीस मास सो शनि रहै कहियो किये विवेक । रहै अठारह मास लों राहु केतु जिय जानि । रामदया नव ग्रहन को भोग रासि सुबषानि । अथ नषत जानिवो । कुंडलिया कातिक सो दूनो करै मास जिते गुनि लेइ । तिथि सब लीजै मास की एक घोस अरु देइ । एक घोस अरु देइ सवै मिश्रित करि गनिए । जेते गनित होइ नषत तेतो इमि भनिए । कहि रामदया यहि भांति होइ बुध बुद्धि अवतादिक । जानि लीजिये नषत मास दूनै कै कातिक । अथ रवि ग्रहन विचार । दोहा ॥ महा नषत के सूर्य जेहि मावस लघु सुनु छत्र । परिवा कछु कछु संचरै सूर्य गहन गनि तंत्र । अथ चंद्रग्रहन विचार । पून्यो कछु परिवा कलित होहि भानु जिहि रोसु । ससि सतये तिहि रासि सो चन्द्रग्रहन सो प्रकासु । इति श्री सभाजीत रामदया कृत ज्योतिष सम्पूरन लिषितं शिवचरण वाजपेई संवत १९२१ लिषा सीतला प्रसाद सधवापुर के पठनार्थ ।

Subject—ज्योतिष ।

No. 342(*d*). Sabhājīta Rāgamālā by Rāmadayā. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—16 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—40 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Lālā Bhagavat

Prasāda, Village Sadhuwāpura, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः । अथ राग रागिनी लिष्यते । गुरु गणपति को सुमिरि पद लाय प्रीति दृढ़ चित्र । राग रागिनी सुर श्रुति भाषा कहौं कवित्त । अथ सप्त स्वरनाम । षर्ज ऋषभगंधार औ मधम पंचम जानि । धैवत बहुरि निषाद पुनि ये स्वर सात बषानि । सत स्वरन को समुझि चित सुरति होति बाइस । राम दया भाषा धरी जानि लेहु इकईस । अथ बाइस श्रुति के नाम । कवित—त्रिवाकु द्वैती मुद्रा छंदोवती रजनी विचारि बुधि रति का विलेषिये । जानिये २ उद्रा क्रोधी वज्र और प्रसारनी है प्रीतिमज्ञा धृति रिक्ता श्रुति चित लेषिये । संदीपनी अलापनी कही रोहनी औ स्याम दती सु उग्रा उभै रामदया पेषिये सहित छोभ निकाम श्रुति कही बाइस में सात् सुर माह सब ही को गति देषिये । दोहा । जो न सुरन को लेह श्रुति मिलै और जोग राग । राम दया क्रम सो कहै जानहु कुसल सभाग ।

End—अथ आसावरी । अगर बरन मधु स्याम चंदन सो रचित सदां सो आसावरी वाम नाह नेह राती रहै । मेघ राग लछन । स्याम रंग पठ पात वैस तरुन सुंदर सुघर । मेघ राग की रीति चित प्रसन्न ज्यावत जगत । मेघ राग की रागिनी टेक लछन । बिछुरी संग सो नाह लेति सांस सय्या परी । अति कलेस मन माहि विरहत चेत नट कट के । अथ मल्लार । अति प्रवीन गहि वीन गान करत पिय गुन दुषित । यह मलार तन छिन विरह भरी सुकुमार वहु । अथ गुजरी । शोभित श्याम शरीर बड़े वार सों गुजरी पहिरे भूषन चीर गान करत सेज्या परी । अथ भूपाली । गोरव सो सुभ अंग नष सिष सो कुमकुम रचित । दा.त देह अनंग भूपाली पिय सुधि करत । अथ देशकार । नैन कमल मुष चंद कुच कठोर कचन वरन । ह्'त नाह दुषदंद देशकार सुकुमार रत । अथ सर्व को कवित । प्रथमहि वाइस जो विचारि जो धरी श्रुति मिली तीन सुर सोऊ कही मैं प्रमान है । षट राग प.च रागिनी समेत धरे ओड़व षाड़ न आदि जाको जो वषान है । सब ही के ग्रह सुर लछन रहे निरूप वर्णन सुनायेउ बुध जानत न आन है । सात सुर ही में सब ही की गति रामदया ऐसी रीति कोऊ कवि जानत सुजान है । इति श्री सभाजीत राग रागिनी सम्पूर्णम् लिषितं शिवचरण वाजपेई संवत १९२१ पठनार्थ दीवान सीतलप्रसाद सधवापुर के ।

Subject—राग रागिनी स्वर आदि का वर्णन ।

No. 242(c). Sabhājīta Sāmudrika by Rāmadayā. Substance—Country-made paper. Leaves—12. Size—16 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—260 Anushṭūp Ślokas.

Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṁvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Lālā Bhagavat Prasāda, Village Sadhuwāpura, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ सभाजीत सामुद्रिक लिष्यते। करौ कृपा श्री सारदा हरौ कुमति मति देहु। सामुद्रिक लक्षण कहौं चरण कमल करि नेह। लछन जेते सुभ असुभ सामुद्रिक के गूढ़। रामदया कीन्हे प्रगट पहिचाने मलि मूढ़। रामदया भाषा किये सामुद्रिक यह जानि। बुरे भले नर नारि के लिए अंग पहिचानि। अथ पुरुष लछन॥ आयु प्रमाने। वामन अंगुली मनुष वपु नृपति पुत्र जो होय। आदर जग दिन दिन बढ़ै भिच्छा तजै न सोय। आठ दहाई आंगुरी नाप लेहु नर देह। कूर कुटिल कपटि महि भूलि न कीजै नेह। नब्बे अंगुर पुरुष की तीस वरष की आयु। पांच वरष प्रति अंगुरहिन नब्बे सो अधिकाय। असी बरष की आयु बल सो अंगुर जो अंग। सात वरष सो ते अधिक प्रति अंगुर के संग। सो अरु दस आंगुर पुरुष वरष डेढ़ सो आयु। आंगु पाछे वरष दस वीस से लै पाय। होय एक सो वीस सो ऊपर मनुष पतंग। चिरंजीव सो जानिए होय न कवहूं भंग।

End—कपोल लछन। दोहा। होहि मसोले मंजु शुभ गोल गाल रंग लाल। सदा कृषी धन तासु के भाषत कुसल रसाल। सिंघ वाघ गज सम वियो होहिं जासु के गाल। भोगो सो सव रसनि को सेनापति ततकाल। गाड़ कपोलन में पड़ै हंसत कहत जो वैन। हैत चेत विन दिन असमैन कछू पैन। अथ कान लक्षण। छोटे मोट कान ना दीरघ पतरे नाहिं नाहिं। सुमिलि कान कहिए धनी सुजस लाभ जग माहिं। सोरठा। दीरघ पतरे कान के राजा के सिद्ध सुभ। लछन होय न आन। छोटे मोटे कान दुष। अथ नास लछन। कोर करी सी नाशिका ऊंची सुमिल सुढार। सो नर भूपति को धनी कुंजर झूमहिं द्वार। मोटी चपठी पोल लघु कंचित नासा होय। लटकि परै जो वदन पर दुषित जानिए सोय। दीरघ छेद कपाल का निर्ष परै जो मासु। नीलो वासो पाप वहु करै जीव को नासु। मुष लघु दीरघ नासिका कंठ खांखरे वैन। पापी कपटी दुष्ट बहु जानि लेहु निज नैन। इति श्री सभाजीत सामुद्रिक सम्पूरन लिषा शिवचरन वाजपेई दीवान सीतलप्रसाद के पठनार्थ संवत १९२१।

Subject—सामुद्रिक के लक्षण श्रैार स्त्री पुरुष के हर एक अंग के पृथक् पृथक् शुभ अशुभ गुणों का वर्णन।

No. 342(*f*). Sabhājīta Vaidyaka by Rāmadayā.—Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—16 × 6

inches. Lines per page—18. Extent—96 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Lālā Bhagavat Prasāda, Village Sadhuwāpura, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः। अथ वैद्यक भाषा लिष्यते। दोहा॥ कै परनाम परमात्मा सुमिरों दिढ़ चितलाय। सोक मोह भ्रम कलुष दुष दुर्मति दूरि ह्वै जाइ। गणपति के पद सुमिरि के मांगों यह वरदान। वैद्यक भाषा मैं रचौ करो सुमति को ज्ञान। रामदया चितलाइ के सोधो वैदक ग्रंथ। सो विचारि भाषा कह्यो समुझि नाटिका पंथ। रामदया ने कहे भाषा नारी भेद। पढ़ै मूढ़ चित लाइकै होइ दक्ष बुध वैद। नारो लक्षण तोनि है क्रम सो दियो बताइ। प्रथम पित्त कफ दूसरो तोजो कहियत वाइ। जहां जासु को वास है कहो तहां सो ठोर। प्रथम बोध बुध आपनो जानि लेहु तव श्रोर। लक्षण साध्य असा ध्य के पहिले लीजै जांन। तव ताको उपचार कर सोष लोजिये मांन। रोग समुझिये सुभ असुभ जैसे करले वीन। दक्षिण कर गहि नाटिका जानहु व्यथा प्रवीन।

End—अथ इन्द्री ढीलो परो होय ताको इलाज। प्रथम चमेली के दल आंन। ताको कूट लेहु रस छानि। कूटि सोहागा तामें देहु। मानशिला सब सम करि लेहु। चारो डारो तिल को तेल। पांचो श्रांटि कराहो मेल। छानि तेल इन्द्री पर लाइ। सात दिवस मे नस जुरि जाइ। अथ गंठिया वाइ का इलाज। मदार का दूध ऽ। छकरा का दूध ऽ॥ तेल तिल का ऽ१ सेर ताको चुरे के मेउड़ो का रस। ऽ भरि अमिलो वा रस ऽ। लै गुण चैारासी वायु नासै अथ वाई की दवा सिंगरफ तोला १८ लोलाथोथा परा तोला ६ गाइ का घिउ ऽ॥ मोम ऽ॥ कपड़ा मिहो गिरह १२ पहिले कराही मां घिउ डारै तव मोम डारै तव इंगुर बूंकि तुतिया डारै बूंकि जस सब मिलै तव कपड़ा वोरै उतार लेइ मोम जमा होइ तो वाती बनावै ६ः एकांत कोठरो में एक वातो तपावै सकारे वा सांझ रहुते लार गिरै गढ़ो हाथ पाव जो पसोना चलै लासा अस जब जानब नीक मलावै रोज तीनि ऊपर ते पिछैारा श्रोढि कै श्रांच वाहेर ना जाय वाउ नीक होइ। इति वैदक समाप्तम सुभ मस्तु संवत् १९२१ पैास मासे सुक्लपक्षे तिथैा पंचमयाम मंगलवासरे लिषतं पुस्तकं सोतलप्रसादे कायथ ग्राम सधवापूर के।

Subject—नाड़ी लक्षण, पित्त का उत्पत्ति, कफ, वायु की उत्पत्ति, पित्त लक्षण परोक्षा, कफ लक्षण परोक्षा वात पित्त कफ का उपचार, साध्य असाध्य

लक्षण और नारी परीक्षा। आठ प्रकार के ज्वरों के नाम, उनके लक्षण और उपचार व उनकी औषधि, धातु मारण विधि, गुप्त रोगों की औषधियां और कुछ मंत्र आदि॥

No. 342(*g*). Śālihōtra by Rāmadayā. Substance—Country-made paper. Leaves—75. Size—9 × 4½ inches. Lines per page—8. Extent—525 Anushṭup Ślokas. Appearance—Good. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Viśvanātha Siṁha Raīsa, Taluqédār, Village Aganesa, Post Office Tirasuṇḍī, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः। दोहा॥ प्रभु गुरु गणपति सारदा चतुर चतुर के पांइ॥ बंदन करि बंदन रच्यो सालहोत्र के भाइ। १ गिरावान वानी सुभग प्रथम करयो रिखिराज। वहै न कुल न लोक में प्रगट करयो नर काज। २ नर भाषा सोई कह्यो रामदया यहि जानि। लछन हय के असुभ सुभ लेहिं अज्ञ पहिचान। ३। गगन गौन सम पौन वल जल थल भू आकास। तुरंग सुपक्ष सुइक्ष सो फिरत अभीत हुलास। ४। परम पराक्रम देषि के सुनासीर निज काज। पायो विन वाहन जहां सालहोत्र रिषिराज ५

End—अथ हडा को इलाज। मूली एक बड़ी लम्बी सो बीता डेढ़ की, भेड़ी को लीद आधा मन तेहि के आगि करै तेहि में मूरी को भर्त्ता करै जब नरम होय तब वैस हडा के उपर बांधि देइ घरी दुइ लो अधिक रहै तो हाड़ गलि जाइ तेहि ते घरी दुइ राखै फिरि छोरि डारै। इलाज कम खुराकी सूल की भरि गा होइ अंग बैठा होय छाती बंद होइ बूझि गा होइ तेहि के औषधकारो जीर आध सेर लहसुन आध सेर लाल मिरच आध सेर सब कूटै गोली बांधै पैसा दुइ भरे कै देइ रोग ७ फिर तीनि रोज न देह असे तीन सात करै।

Subject—१—३२ वकसराय दसौधी कृत सालिहोत्र।

(१) पृ० १ से पृ० ४ तक ग्रन्थ निर्माण कारण।
(२) „ ४ „ ५ „ चतुर्दश के हय वर्णन
(३) „ ५ „ ९ „ „ उत्पत्ति, वर्णभेद लक्षण स्वभाव
(४) पृ० १० से पृ० १२ तक सात रंग के शुभ अश्व, मिश्रित रंग, षट् अशुभ अश्व वर्णन, एकादश लक्षण।
(५) „ १२ „ १४ „ शुभाशुभ लक्षण
(६) „ १४ „ १८ „ उत्तम अश्व वर्णन। भौंरी शुभाशुभ लक्षण।

(७) पृ० १९ पृ० २० तक दंत परिज्ञान

(८) ,, २० ,, २१ ,, उत्तम हय, देह प्रमाण वर्णन, वाह वर्णन वाह को भूमि।

(९) ,, २१ ,, २३ ,, चाबुक विधान, सवारी विधान, धातु परीक्षा।

(१०) ,, २३ ,, ३२ ,, रोग लक्षण, अग्नि परीक्षा, पित्तरक्त लक्षण औषधि, अन्य रोगों के लक्षण तथा उनकी औषधियां।

[गद्य] ३३—३६ पृ०—घोड़े के ३५ दोष, नकुल कृत प्रथम अध्याय।

३६—३८—छिंका लक्षण, अश्व के चार वर्ण।

३९—५०—अश्व के ७२ दोष १२ पेट में ६० देह में, पित्तदोष, उपचार षट् ऋतु।

५१—५८—नास-कुक्रिया चिकित्सा विधान।

५८—६२—वात की औषधि, असलेषमज्वर, कालज्वर, सन्निपात इत्यादि।

६३—७५—अन्यरोग तथा उनकी चिकित्सा।

No. 343. Svarodaya by Rāmadhana Dūsara of Āgrā. Substance—Country-made paper. Leaves—13. Size—12 × 6 inches. Lines per page—22. Extent 250 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1924 or A. D. 1877. Place of deposit—Ṭhākura Rāma Siṁha, Village Ragunāthapur, Post Office Bisawā̃, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः। अथ सरोधा सार लिष्यते। मुंशी रामधन दूसर अकबराबादी ने बनाया स्थान मथुरा। वार्ता॥ प्रगट होय कि सरोधा ऐसी विद्या है जिस्के द्वारा गुप्त मनोरथ प्रगट हो सक्ते हैं और इस विद्या के जानने लोगों को बड़े लाभ होते हैं इस लिये अगले ग्रंथों से जिन बातों का जाना और जिन साधन का साधन आवश्यक है उनको चुनि चुनि के यह छोटा सा ग्रंथ लोगों के हित विचार हमने बनाया जो लोग इस विद्या में निपुन हैं॥ उनसे मेरी यह प्रार्थना है कि इस ग्रंथ में जहां कहीं भूल हो देषे उसको अपनी दयालुता सों सुद्धदेवें आशा चाहिये।

तत्व नाम	तत्व का रंग	तत्व को काल का प्रमाण	तत्व को वाहना	तत्व को प्रकृति	तत्व का स्थान	तत्व का दुर्वाजा	तत्व का भोजन	एक एक तत्व में पांचो तत्व में भुगत है और उनके प्रकृति के न्यारे न्यारे भेद है
१	२	३	४	५	६	७	८	९

End—श्री पहिला मानसी सेवा जो मन करिके निम दिन अपने इष्ट देव के ध्यान में मगन रहे। और समय समय को सेवा में चित्त लगावे। जितनी सांची प्रीति से मन सुद्ध करके अर्थात ईश्वर को सब जीवों में व्यापक जाने अरु मानसी सेवा में मन लगावेगा उतनीही जल्दी दिव्य दृष्टि हो जावेगी। दूसरा प्रतिमा सेवा इसमें मूर्ति का भाव न जाने साक्षात नंदकुमार जानके जैसे पांच वर्ष के बालक को माता पिता लाड़ लड़ावे तैसेही श्री ठाकुर जी को लड़ावे। अरु मन वच कर्म करिके सेवा करे सेवा में चित्त लगाय राखे। काल ज्ञान की रीति प्रथम दाहिने हाथ की मुट्ठी बांधिके मस्तक पै लगा के पहूंचा पै दृष्टि कर लिया करे छः महीना पहिले मुट्ठी अरु हाथ न्यारे न्यारे दीखेगे दूसरे दाहिने हाथ की मध्यमा को मोड़े के अंगुरी को जड़ में लगा के बाकी रही अंगुलियें को धरती पै जमा के एक एक उठा के फिर जहां की तहीं अस्थित करै दोपहर पहिले मृतकाल से अनामिका उठेगी तीसरे दाहिने स्वर मृतकाल से पहिले दो राति दिन १ वर्ष पहिले ५ दिन ६ महीना पहिले १५ दिन ३ महीना पहिले २० दिन २ दिन पहिले ३० दिन राति बराबर चलना रहै और एक वर्ष पहिले आकर्श तत्व ३ राति दिन चलता है॥ दो० स्वासन स्वासन कृष्ण कहु वृथा स्वांस मति खोय। ना जानू या स्वांस को आवन होहु न होइ इति श्री सराधा समाप्त संवत १९२४

Subject—स्वरोदय का वर्णन अर्थात् उसके द्वारा हानि लाभ, गर्भ में पुत्र है अथवा बेटी, लड़ाई पर जाने से जय होगी या विजय, आदि का जानना।

No. 344. Sahaja Rāmachandrikā (Kavi Priyā kī ṭikā) by Rāmakavi of Vikramangara. Substance—Country-made paper. Leaves—392 Size—12 × 6 inches. Lines per page—6. Extent—3,675 Anushṭup Ślokas. Appearance—Good. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of Cmposition—Samvat 1834 or A. D. 1777. Place of deposit—Paṇḍita Rāma Deva Bhaṭṭa, Village Nunarā, Mauzā Lamahā, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—अथ नृप वंश वर्णनम् ।

विष्णुराम विख्यात विष्णुपुर नग्र बसायो । लैान कर्ण सूरजकरन अनूप नृप सिंह सुजान सुजानियें । तेहि कुल जोरावर सिंह नृप पर दुख हरन बखानिये । दोहा । सोजो राव पाठ अब राजन भूप गजेश । दिन दिन दान उदारमति विलसत विभव विसेश । कवित्त ॥ गजै ना सकतु निरबल को सबल कोऊ भंजि न सकत बली आनहू सुतन को । देव द्विज भाव माहा सरल सुभाव कहिये पूरन प्रभा वर है लछिमी रमन कैा । कहै कवि राम जाको नाव नव खंडनि मे सुजस अखंड महिमंडन वरन को । विक्रम नगर गजसिंह जू करत राज शत्रुन को साल प्रतिपाल है सरन को । दोहा । महाराज जग सिंह को नागर नजरि उदार । सहज राम जिहि नाम है सब बातनि रिझवार । कवित्त—दिन दिन दुनो महराज गज सिंह जू को सब ते सरस जिनि ऊपर महा है । नाजर सहजराम बुद्धि को उजागर है अति हित सागर है चित्त को सुघर है । कविन दाता गुण ज्ञाता बड़े ग्रंथनि को जिनको विधाता दोनो धन नृप वर है । कहै कवि राम भुव मंडल में ठाम सुजस को धाम कैान जाको सरवर है । ७ ॥ दोहा । नाजर निरमल गंग सो वसत हिये उपकार । कथा कृष्ण कोरति सुनत प्रीति रीति निरधार । सहज राम चित सहज ही यह उपज्यो उपजोग । कवि प्रिया अति कठिन है नहिं समझत सब लोग । चतुर नरन के वचन ते बड़ो चढ़ी चित चाह । चित्र श्लेषनि के अरथ नीके करो निवाह । १० । कवि सुरति टोका करी रही संत कवि पास । सहज राम नाजर सुघर कीन्हें जगत प्रकास । ११ ॥ संवत अठ दस सत वरष चैातोसे चित धार । रचो ग्रंथ रचना रुचिर विजैदशमि शनिवार । १२ सहज राम कृत चंद्रिका धरयो ग्रंथ को नाम । पढ़त सुनत पंडित नरनि उर उपजत विश्राम ॥

End—दोहा—इहि विधि केशव जानहू, चित्त कवित्त अपार ।
वर्णत पंथ बताइ मैं, दोनो बुद्धि असार । १९७

सुवरण जटित पदारथनि भूषन भूषित मानि । कविप्रिया है कवि प्रिया कवि संजीवनि आनि । १९८ । पल पल प्रति अवलोकि कै सुनिबो गिनिबो चित्त । कवि प्रिया में रक्षियो कवि प्रिया ज्यों मित्त । १९९ ॥ अनिल अनल जल मलिन ते विकट खलन ते मित्त । कवि प्रिया यों रक्षियो कवि प्रिया ज्यों मित्त । २०० ॥ केशव सोरह हाव शुभ सुवरनमय सुकुमार । कवि प्रिया के जानियो सोरहई श्रंगार । २०१ ॥ सुगम । सहजराम कृत चन्द्रिका शशि चन्द्रिका समान । देखत ही संसय तिमिर प्रति दिन करत पयान । २०२ इति श्री नाजर सहजराम विरचितायां कवि प्रिया सटोका षोडसह प्रकाश । १६ ।

Subject—(१) पृ० १ से पृ० २९ तक—प्रथम प्रकाश—राजवंश वर्णन ।

(२) पृ०	२९	से पृ०	३३	तक—	द्वितीय	प्रकाश	कवि वंश वर्णन ।
(३) ,,	३४	,, ,,	६६	,,	तृतीय	,,	कवित्त दोष वर्णन ।
(४) ,,	६७	,, ,,	७८	,,	चतुर्थ	,,	कवि व्यवस्था ।
(५) ,,	७९	,, ,,	९६	,,	पंचम	,,	अलंकार वर्णन ।
(६) ,,	९७	,, ,,	१३८	,,	षष्ठम	,,	वर्णालंकार ।
(७) ,,	१३९	,, ,,	१६९	,,	सप्तम	,,	सामान्यालंकार वर्णन ।
(८) ,,	१७०	,, ,,	१९५	,,	अष्टम	,,	भूषण वर्णन ।
(९) ,,	१९६	,, ,,	२१०	,,	नवम	,,	विशेषालंकार वर्णन ।
(१०) ,,	२११	,, ,,	२२५	,,	दशम	,,	विशेषज्ञेयालंकार ,,
(११) ,,	२२६	,, ,,	२७६	,,	एकादश	,,	क्रमालंकार ,,
(१२) ,,	२७७	,, ,,	२९४	,,	द्वादश	,,	उक्तालंकार ,,
(१३) ,,	२९५	,, ,,	३०९	,,	त्रयोदश	,,	समाहित दीपक परवृत्तालंकार वर्णन ।
(१४) ,,	३१०	,, ,,	३२५	,,	चतुर्दश	,,	उपमालंकार ,,
(१५) ,,	३२६	,, ,,	३६२	,,	पंचदश	,,	विशिष्टालंकार ,,
(१६) ,,	३६३	,, ,,	३९२	,,	षोड़ष	,,	एकाक्षरादिकाब्द वर्णन ।

No. 345. Guṇasāgara by Rāma Kavīra of Nandagrāma. Substance—Country-made paper. Leaves—16. Size—6 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—120 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṁvat 1842 or A. D. 1785. Place of deposit—Ṭhakura Naunihāla Siṁha, Kānthā, District Unao.

Beginning—श्री इष्टा देवता सुप्रसन्नमस्तु । अथ गुणसागर की छप्पय लिख्यते ।

जय जय जगदा नंद कंद नंदालय मंडन । जय जय·······रतनि कादिश कर चक्रानिल ॥ कर चक्रानिल । जय जय मृदुकर जानु चारु·······कम हास लानस । जय पाणि संजीव मंजु सिंजित विगताश्रम ॥ वि····ले शलालित चरण जय निज····भ विभिन्न भय । जय जय जनन्य दल सुख करण नवनीत प्रियानाथ प्रिय । १ ॥ जयसि वकी वक दलन जयसि पद सकट निवर्तक । तृणावर्त हर जयसि जयसि खल वत्स निवर्तक ॥ अघ विध्वंसन जयसि जय सिचर धुर षर दारण । शंख चूर जिज्ञयसि जयसि वृषभासुर मारण । हय रूप दनुज

गंजन जयसि जयसि मत्तमय सुत हरण । गिरि धरण जयसि गिरिधर जयसि जयसि जयसि गिरिवर धरण । २

End—जय युधि निर्जित दंतवक्र शिशुपाल जरासुत । जय रिपु रुक्मि विरूप करण जय नव्य वधू तुल । जय शरदिंदु ···सहस्र युवति जन वल्लभ । जय शक्रो कृत रंक विप्र जय सर्व सुदुर्लभ । जय विप्र नष्ट तनया नयन निज गति विस्मायित विजय । जय मधु महोश जगदीश जगदेव द्वारा वतोश जय । २० वामदशा भट मित्त वामरूप वाम श्रुति कुंडल । वामन स्पृह काम पाल कामक····षंडल । श्री दाम विप्र दाम वि·······दुद्दाम यशस्कर । सौरिधाम कृत धाम भावषल धाम तिरस्कर । सद्ग्राम सुखद संग्राम भट नंदग्राम सुखानुभव । रमतेऽभिराम चरितेऽभिरुचि जिजा रामोऽपि तव २१ । श्री

Subject—२१ छप्पयों में श्रीकृष्ण की स्तुति ।

No. 346(*a*). Rāja Nīti Kavitta. by Pradhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—7. Size—12 × 4 inches. Lines per page—36. Extent—158 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Rāmaśaṅkara Vājapeyī, Village Bahorī kā Vājapeyi kā purwā, Post Office Sisaiyā, District Bahraich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ राजनीति के कवित्त लिष्यते ॥ भूप लक्षन ॥ देव द्विज तोषै प्रजा प्रान सम पोषै चूक कोन्हे पर रोषै ना समोषै मान प्यार है । काहू को न लषै न्याव गैल में परेषै काम काजी पै विसेषै काम द्वै वार वार है ॥ भाषत प्रधान मान चाकर को राषै विना विगरेना माषै कोऊ भाषै जो हजार है ॥ साजिके समाजै करै ऐसो राज काजै ताही जानो नर राजै यह राम अवतार है । १ ॥ ब्राह्मण पै भावै प्रीति भांडन सो राषै देत विरचन को लाषै नेत माषै यही सार है ॥ प्राज द्वार रोवै आप दोऊ जून सोवै जिनै कोने गुना होवै टेढ़ जोवै वार वार है । जाको नोक नारो जानै ताही को संकोच मानै भषत प्रधान आनै एकौ न विचार है । नीति नहिं पालै चलै याही रीति चालै ताही जानो जम आलै जान द्वार महिपाल है । अथ देवान लक्षन ॥ राजनीति जानै बड़ो छोट पहिचाने लाभ हानि अनुमानै काज ठानै सावधान है ॥ तजिकै गुमानै विनती सुनै सब लोगन की दीन्हे विन दीन्हे भूरि राषै सनमान है । भाषै है प्रधान सेवा सहै नहिं सेवक को रीझि खीझि दोऊ करिवे में बड़ो ज्ञान है ॥ माचे स्वामी काजी राषै रैयत रो राजी सदा ऐसे काम काजी पर राजी जहान है ।

End—फूले फिरैं अैंडे गात सूधी वात में रिसात मारे जात लात पै बतात अैड़ दारी को ॥ डोमते निकाम काम कै कै विढै लावैं दाम ताहू मैं गुनाम सा मानै पानिहारी को ॥ भाषत प्रधान अैसी पाजिने की वाढ़ी सान कहां लैं करौ वषानि तिन की गवारी को । फुटना कलंको धूत कौरहा कुकर्मी धूत कायर कुमृत तेऊ मरे वडवारी को ॥ करनो चमारन की संगति गंवारन को चान मतवारन को ताही मैं भुनान है । माषै मजबूती खात रोजै चारि जूतो सबै नोच करतूती पै सपूती को गुमान है ॥ भाषत प्रधान अैसे गोदर गुलाम जेऊ भाग्य वस पाय जात राज घर मान है । लालच के मारे चारि जुतिया सराहैं तिन्है सज्जन सुजान लेषै स्वान के समान है ॥ पादमों न चोन्हे यह को है कौन लायक को सबहो सा वाधे फिरै गर्वही को वाना है ॥ जानै न गवार जानिवे की चारि वातैं भारि नाहक बनाये फिरै मूंढ़े महताना है ॥ भाषत प्रधान राषै कपटै को हेल मेल ऊपर ते आपने और भीतर विराना है ॥ जबैं जग जारै नर अैसेहो सुभाय कहिवे हो को मरद तिन्है जानिए जनाना है ॥ कौड़ी चारि पांवैं तो चमारहू छांड़ै जाति नाहिं जाति को चोषाई चारो ओर निज गावहीं ॥ भंगो मतवारे षासैं नंगा सरदार आगे पोछे न रंभार द्वार द्वार नित धावहीं ॥ भाषत प्रधान अैस नकटा निलज्जन को सज्जन सुजान सबै भांतिन बचावहीं ॥ चलनो को चाम अौ घोरे को लगाम अैसे सदा के गुलाम काम काहू के आवहीं ।

Subject—राजा, दीवान, सरदार, मुसद्दी, व्योहार, पंच, वैद, नारी, पाषंडो, दंभी, पदैया, गुलाम, सांच, लबार, मीत और दरबारी के लक्षण ।

No. 346(*b*). Kavitta Rāja Nīta by Pradhāna Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—9 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—128 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Lālā Narsimha Nārāyaṇa Shiwagarha, Rae Bareli.

Note—Details as in No. 346 (*a*).

No. 346(*c*). Rāma Kalēwā by Rāma Nātha Pradhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—30. Size—15 × 6 inches. Lines per page—14. Extent—420 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1902 or A. D. 1845. Date of manuscript—Samvat 1924 or A. D. 1867. Place of deposit—

Biṭṭhaladāsa Mahanta, Mirzāpura, Post Office Baharāich, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः ॥ अथ राम कलेवा लिष्यते ॥ छंद ॥ चैापैया ॥ जय गनपति गिरजा गिरजा पति जयति सरस्वति माता। जय गुरुदेव केसरीनंदन चरण कमल सुषदाता ॥ उनइस से दुइ के संवत में जेठ दसहरा काहीं। ग्रिथ कियो आरंभ अनूपम बैठि अयोध्या माहीं ॥ अहै प्रीति की रीति अटपटी में कै भांति बताऊं। ताते सानुज रामकुंवर को रहस कलेवा गाऊं ॥ जेहि विधि जनक सदन रघुनंदन कीन्हेउ रुचिर कलेऊ ॥ सुष दीन्हे सारिन सरहज कैां सो सब कहि हैां भेऊ ॥ ब्याह उछाह सिया रघुवर को मैं बरनैां केहि भांती ॥ छन मह बीति गई सब रजनी रागे रंग बराती ॥ भोर भयो अपने कुमार के जनक वेगि बुलवायो। सुनि के पितु निदेस लक्ष्मीनिधि सषिन सहित तहं आयो ॥

End—राय रजाय पाय रघुनंदन अति आनंद उर छाये। सब कहि गये महल की बातें रघुवर सहज सुभाए ॥ सुनि बिहसे महाराज सभाजुत बरनि न जाय हुलासू। पुनि नृप दिये रजाय सुतन कहं गे सब निज निज वासू ॥ इमि आनंद जनक पुरवासी नित प्रति पालत लोगू। कोटिन इन्द्र नजारे नहिं आवत निरषत बहु सुष भोगु ॥ राम कलेवा रहस चरित यह लघु मति कवि किन गावै। सेस गणेश महेस सारदा तेऊ पार न पावैं ॥ जो कोउ प्रीति रीति उर चाहै सो ग्रंथहि यह बांचै, पूरन पावै प्रेम राम को पुनि जग नाच नचावै। राम कलेवा रहस ग्रंथ यह रसिक जवन अधिकारी। जाके श्रवन परत रस बातैं हिए न उठत विकारी ॥ जेष्ट दशहरा ते अरंभ करि क्वांर दशहरा काहीं। राम कलेवा रहस ग्रंथ यह पूरन भो मुद माहीं ॥ दोहा निज पैतालिस बरस की उमर जान परमान कियो कलेवा ग्रंथ यह रामनाथ प्रधान ॥ इति श्री रामनाथ प्रधान विरचित राम कलेवा समाप्तं लिः रघुवरदास वैसाष कृष्ण ५ संवत १९२४ सीताराम भज्ञु ॥

Subject—रामजी का अपने भाइयों सहित कलेवा के लिये ससुराल में जाना श्रौर साली सरहजों से हास्य विलास करना।

No. 346(*d*). Rāma Kalēwā by Rāma Natha Pradhāna of Ayodhyā. Substance—New paper. Leaves—16. Size—12×7 inches. Lines per page—4. Extent—480 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1902 or A. D. 1845. Place of deposit—Paṇḍita Bhagawāudīna, Inonā, Rāe Barelī.

Note—Details as in No. 344 (*c*).

No. 346(*e*). Rāma Kalēwā by Pradhāna Rāma Nātha of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—100. Size—9 × 6 inches. Lines per page—13. Extent—406 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1902 or A. D. 1845. Place of deposit—Rājā Bhagawān Baksha Siṁha, Riyāsata Amethī, District Sultānpur (Oudh).

Note—Details as in No. 346 (*c*).

No. 347(*a*). Arjuna Gītā by Rāma Ratna. Substance--Country-made paper. Leaves--100. Size—8 × 6 inches. Lines per page 18. Extent—731 Anushṭup Ślokas. Appearance --Old. Character--Kaithī. Date of manuscript--Samvat 1837 or A.D. 1780. Place of deposit—Paṇḍita Gayā Prasāda Tīwārī, Dostapur, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री पोथी लिषी ग्रर्जुन गीता ॥

मातु भवानी सुमिरैं तोही । सुमिरत ग्यान बुद्धि देहु मोही ॥ सुमिरैं चंद सुरज दुइ भाइ । जेहि की जोति रही जग छाइ ॥ सुमिरैं पवन पुत्र हनिवंत । जेहि सुमिरे बल होइ बहुत ॥ सुमिरैं गनेस जेन्ह विघिन संहार । जेहि कारज सों गावै संसार । सुमिरैं सकल लोक माही मंद । सुमिरै नदी ग्रठारह गंद । सुमिरै प्रवता पवन पहार । सुमिरै सकल लोक संसार ॥ सुमिरैं गुरु ब्रामन के पायां । जेहि सुमिरे मोरी निरमल काया ॥ सुमिरै गुरु यंत्र जो दीन्हा । जेहि प्रसाद मैं गोविन्दहि चीन्हा ॥ धनी गुरु विद्या जो दीन्हा । जेहि प्रसाद मैं ग्रधार चीन्हा ॥ सुमिरै सरस्वती ग्रमृत पानी । जेहि एहि कान कीन्हा मनजानी ॥

End—जेती का धरम तीहु लोक मो ग्राही । गीता समान दूसरा कोइ नाहीं ॥ रामरतन गीता प्रभु भाषा । प्रमातंतु के ग्ररजुन राषा ॥ श्री मुष गीता संपूरन भयेऊ । ग्ररजुन के संसै छुटि गयेऊ ॥

दोहा—श्री कृष्ण ग्रर्जुन मिलि गुप्त कीन्ह एेका नाम ।
सो ग्रन्ह के तारन को भाखेव केवल नाम ॥

× × × ×
× × × ×

मदमाती जो एेही मारि कै मान भजै एक नाम ।
इतै सब लोक की माया भाजहुना केवल नाम ॥

इतो श्री पोथी अरजुन गीत संपूरना समापाता जो देख सो लोख ममदोष दीजोये पंडीत जन सो बोनती मोरी टुटो अछ्छर लेबै साव जोरी ॥ संमाता १८३७ की साल मह पोथा उतारा अरजुन गीता । प्रतपश्वरा सातो मात समै नाम मस आसोम सुदो ९ वार सुक्रवार का काथ उतरो जैसे पूरान दसषत सुभव सोध वयेसा भुमोबड़ो सव रागवरामपुरा पोथो उतार गुजरात महा श्री वारन सहये ।

Subject—(१) पृ० १—४ तक—वन्दनाएं, ।

(२) पृ० ५—९५—तक—श्रीमद्भागवत का पद्यानुवाद ।

(३) पृ० ९६—१०० तक—गीता पठन का फल ।

No. 347(*b*). Rāma Ratna Gītā by Rāma Ratna. Substance-Country-made paper. Leaves--100. Size-$10\frac{1}{2} \times 7\frac{1}{2}$ inches. Lines per page--20. Extent--1,000 Anushṭup Ślokas. Appearance--Old. Character--Kaithi Muḍiyā. Date of manuscript--Samvat 1822 or A.D. 1765. Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Simha Señgara, Village and Post Office Kānthā, District Unao.

Beginning—श्रीराम जी सहाई । श्री महादेव जी सहाई । श्री दुर्गा जी सहाई । श्री गनेश जी सहाई । श्री हनुमान जी सहाई । श्री सब देवता जी सहाई । श्री पोथी रामरतन गीता लोखते । श्री गुरबोसन कै चरन मनावो । जेहो परशाद गोविंद गुन गावो । श्री कोसन आरजुन रसबानी । गुर परशाद कहा केछु जानी । येक समो श्री जादोराई । आरजुन संग भेइ इक ठाई । धुप दीप लै आरती कीन्हा । चरनोदक लै माथं दीन्हा । शंशै प्रभु आहे चित मोरै । कहत अ.र दुनो कर जोरै । तब हो कोसन बोलै बोहसाइ । अरजुन सो कहो जदुराइ ॥ दोहा । तोनी लोक कै ठाकुर दोनबंधु नंदलाल । बोनती करो अधोन होई प्रभु भाखो वचन रसाल ॥ रामरतन गोता कराः आरजुन कीन्है अनुसार । संत सुनै सुचोत होईः मुकती होत शंसार ।

End—येही बोधो गुरु दैआल जब की यउ । शंशै छुटी त्रीमल बुधि भेयउ । दोहा । गुरु दैआल भै मोहीकः छुटेउ जीव कै भ्रम । रामनाम चोत लायउः श्रार जानो भ्रम ॥ इति श्री रामरतन गोता श्री कोशन आरजुन शमादनो नाम उनइशमो अध्या ॥ १९ ॥ ईतो श्री रामरतन गोता समपुरन जो परती देखा सो लोखा मम दोख नाहीं अने पंडोत जन सो मोनती मोरो कटल अच्छर लेय सब जोरी मीतो पूस वदो ईकादसो रोज मगर पोथी लिखा वाले

सुखलाल राम सरदार का मोकाम आचानक में लीखवैा। संवत १८२२ शाल मोकाम है रामपुर का इंगलीस में।

Subject—अध्याय १—२पृ० १—१०। गुरुवंदना, अर्जन का भगवान की आरती और पूजन कर मुक्ति के हेतु प्रश्न करना। भगवान का चारोवर्ण और चारो आश्रम की श्रेष्टता का वर्णन करना और सब के परे भक्ति का महत्व और श्रेष्टता का वर्णन करना तथा सब योनियों में मनुष्य की श्रेष्टता का वर्णन किया गया है। अ० ३ पृ० १०—१४ अर्जन का भक्त और भगवान में अन्तर का पूछना, भगवान का भक्त की बड़ाई और महिमा कहना तथा नाम जपने की महिमा का वर्णन। अ० ४—पृ० १४—२२—अर्जन का गुरु की महिमा और गुरुमंत्र का पूछना, भगवान का गुरु की श्रेष्टता और गुरु मंत्र की गुरुता का वर्णन करना। अ० ५—पृ० २२—३०। अर्जुन का पाप के संबंध में पूछना भगवान का नाना प्रकार के पापों के नाम और उससे होने वाले कुफलों का वर्णन। अर्जन का उनसे उद्धार का प्रश्न करना और भगवान का उनके उद्धार का यत्न कथन करना। अ० ६ पृ० ३०—३८। अर्जुन का धर्मी के बारे में पूछना और कृष्ण का धर्मी के संबंध में कथन करना, अर्जुन का अनेक प्रकार की हत्या जनित पाप का प्रश्न करना और कृष्ण का उत्तर देना। ऋण मारने का दोष और उसका समाधान करना-अ० ७—पृ० ३८—४४। भगवान का सब में अपना व्यापकत्व वर्णन करना। अर्जन का धर्म और पाप की पैदाइश का प्रश्न करना तथा लोभ और काम का प्रश्न करना, अ० ८ पृ० ४४—५०। अर्जन का चांडाल होने का पाप पूछना, भगवान का वर्णन करना तथा दान की विधि पूछना और उसका विस्तृत वर्णन करना, नाम जपने के लिये आसन का प्रश्न और उसका उत्तर। अ० ९ पृ० ५०—५६। माल की विधि और उसका फल तथा किसके छूने से किस प्रकार का दोष पूछना तथा भगवान का सब का उत्तर विस्तृत रूप से देना। अ० १० पृ० ५६—५८ पाप पुन्य का भेद पूछना और उसका उत्तर देना। अ० ११—१२ पृ० ५८—६३। ठाकुर और स्त्री का धर्म पूछना और उसका वर्णन अ० १३—पृ० ६३—६७। अर्जुन का ज्ञाना प्राप्ति का प्रश्न करना और उसका उत्तर कहना। अर्जुन का नासिका द्वारा स्वांस आने का प्रश्न पूछना और उसका उत्तर कहना। अ० १४-पृ० ६७—७८ अर्जन का व्यास के जन्म का वृतांत पूछना और भगवान का पूर्वजन्म से उसका वृतान्त कहना। अ० १६ पृ० ८३—८७। भगवान का अपनी भक्तवत्सलता और उन भक्तों का नाम वर्णन करना। अ० १७ पृ० ८७—९० अर्जन का विराट रूप का पूछना और भगवान का उसका वर्णन करना। अ० १८—पृ० ९०—९४। भगवान की अनन्त महिमा का वर्णन और भक्ति की श्रेष्टता का वर्णन। अ० १९ पृ० ९४—१००।

अर्जुन को अपना श्रेष्ठ भक्त स्वीकार करना और भजन तथा नाम जाप का उपदेश देना ।

No. 348. Krishna-shataka by Rāma Ratna. Substance--Country-made paper. Leaves--26. Size—$6\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page--8. Extent—117 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit--Paṇḍita Ayodhyā Prasāda, Deputy Inspector, Bikāner.

Beginning—भुज त्रिवली रुचिर बनी सुषदन की। कटि किंकिनी प्रोति पट छाजत चमकत तड़ित जथा जलदन की । जुगलजंघरां भावत राजत अति सोभा मतिजाल कदन की । राम रतन तजिलाज भट्ट में हैान चहैा रज कुंजन पदन की ॥ ३ ॥ दोहा । श्री चंद्रवलि श्री प्रिया श्री ललितादिक जूह । श्री विलोकि श्री स्याम कैा श्री रत सरव समूह ॥ देषि सषी छवि नागर नट की । अदुल मनोर स्याम सुभगतन याहि विलोकि रहै को हटकी । मोर मुकट मकराकत कुंडिल चंद्रवदन अलकावलि छुटकी । भाल विसाल तिलक भ्रकुटी वरबंक विलोकनि मोमन पटकी ।

End—हांस मुसिक्याय दगंचल फेरत श्रीवन कुंज दुरै चित टोहन कुम्हिलात वामलता सषि सींचत दरसन वारि हिया हित जाहन हिलिमिलि करत बिहार साषनि महि मृतक सरीर प्रान पुनि पोहन रामरतन लघुदास सरनि निज राषो भक्ति गाउ रस दोहन ॥ दोहा ॥ २० ॥ श्री निवास अस्टक पढ़ै श्री अनुराग समेत श्री वानो कीरति लहै श्री घनस्याम निकेत ॥ २१ ॥ जुगल उपासिक नारि नर जे न लहै रस आन जिनकैा जन सर्व ध्यान पुर विमुष सुनै नहि कान ॥ २२ ॥ श्री स्वामी सरवग्य श्री मयाराम महराज, श्री गुरु करुना ते कहैा श्रीपति सभा समाज ॥ २३ ॥ इती श्री कृस्न ध्याना अस्टक संपूरनं सुभ मस्तु श्री ।

Subject—श्रीकृष्ण और राधा के सुंदर स्वरूप का ध्यान ललित पदों में वर्णन किया गया है । श्रृंगार में नखशिष भी वर्णन किया गया है । तथा राधा कृष्ण के विहार का भी वर्णन किया गया है ।

No. 349 (*a*). Vritta Taraṅgiṇī by Rāma Sahāyadāsa of Bhavanīpura (Benares). Substance—Country-made paper. Leaves—75. Size—2×4 inches. Lines per page—48. Extent—2,250 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1873 or A. D. 1816. Date of manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit--

Paṇḍita Nawala Bihārī Miśra, Braja Rāja Pustakālaya, Village Gandhaulī, Post Office Sidhaulī, District Sītāpur.

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ ॥ वृत तरंगिनो लिखते । मनहरन ॥ सिंदुर वदन एक रदन सदन बुद्धि सुंदर भुसुंड मध्य सिदुर प्रभा लसै ॥ सुंडा दंड उन्नत कै कुंडलो के परसत प्रनवस रुप लषि विघुन महा नसे ॥ जातनु के ध्यान कीने छूटै जमजातन ते भाल बालचंद दोष पाप ताप श्रै त्रसे ॥ सिव जगदंव वारो उदर प्रलंव वारो तेरे हिय धाम राम ससिद्धि सदा वसे ॥ अपरंच ॥ कनक कमल मध्य वनक अमल लसै तीनि चष चंचलासो सुषमा प्रकासिनो । संष चक्र वरु अरु अभय करनि वीच चंदकला कलित ललित छवि रासिनो ॥ राम भुज आभरन अंगद उर सिहार कुंडल श्रवन पग पायल विलासिनो ॥ अस्तुति सुरेन्द्र आदि करहिं मयंक मुषो दुहुघां मृगेंद्र सुषो ध्यावैा विंध्यवासिनो ॥ दोहा ॥ सिद्धि करहिं सो देव वर नित निज जन मन काम । असन भंग सिर गंग अरु चंदकला छविधाम ॥ सोरठा ॥ श्री गुरु ब्रह्म सरुप चिंतामन चिंता हरन । तिनके चरन अनूप नमो जोरि निज कर जुगल कविता की रचनानि को नेकु न जानैा भेद । श्री गुरुपद अरविंद की केवल मोहि उमेद । दायक नित्यानंद के श्री चिंतामनि चित सो मोपै अनुकूल अति याते रच्यो कवित्त ॥ सोरठा ॥ श्री चिंतामनि पाय चिंतामनि पायहिं जोत्यों । चिंतत चिंता जाय जिहि सो नित मोचित वसै । संध्या सुधि सिधि विधु वरष १८ ३ गैारो तिथि सुदिउ जो सुराचार्य वासर सुषद अरु धरमैं गत सूर्जे ॥

End—कायस्थ रामसहाय सुत भवानोदास के नातो हुकुमचंद के वासो भवानोपुर कासो विषै वृत तरंगिनो की रचना करो सोरठा ॥ वृत तरंगिनो पूरचहु हरिता दुति गति सरल कागद परसु जहूर कानिंदो लों को कहै ॥ दो० ॥ जब लगि रवि ससि सेस विधि सिव रमेस अमरेस तव लगि वृत तरंगिनो उमगत रहै गनेस ॥ वानो सरवानी रमा विधि हर हरि गन राय अरु गुरु कृपा कटाक्ष सों निति वृत्त धुनि उमगाय ॥ कोस छंद रस आभरन नारकादि साहित्य । या मैं दीजो सोधि कवि करि मोपै हित नित्य ॥ सोरठा ॥ रामसहाय बनाय जस हित वृत तरंगिनिहिं ह्रदय परम सुष पाय अरपन किए विंध्येस्वरिहिं ॥ सवैया ॥ राम सहाय करै उनकैा नति जो गुन को तजि दोष निहारिहैं ॥ श्रो सपनेहु जिन्हैं नहि ज्ञान अपान वने वरनानि विगारि हैं । पावहिं गे सुष सोई विसेषि भलि विधि जो इहि विचारिहैं । है इतनी परतीति बनो अवनी कविता कवि साधु सुधारिहैं । सोरठा । दोष रहित कविता न जो ये चिंता को ह्वै कृता । याते कवि विद्वान मो उपहास न कोजियो ॥ दो० ॥ सुमति रसिक कवि काव्य निधि भंवर श्रोर मृगांक । भामिलि यामे वामगति जानेहु संख्या आंक ॥

इति श्री भवानी दासात्मज रामसहाय दास कायथ अष्टाना वृत तरंगिनी समाप्तम् श्री संवत १९०० श्रावण कृष्णपक्षे द्वितियां गुरुवासरे लिषतं हीरालाल पाठक अगस्तिकुंड पर।

Subject—कविता के लक्षण और छंद निरूपण।

No. 349(*b*). Vritta Taraṅgiṇī by Rāma Sahāya. Substance—Country-made paper. Leaves—172. Size—10 × 4½ inches. Lines per page—10. Extent—1,075 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1873 or A. D. 1816. Place of deposit—Paṇḍita Rāmānandajī Miśra, Village Hiṅganā Gourā, Post Office Kadīpur, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः॥ अथ वृत तरंगिनी लिख्यते॥ मनहरण॥ सिंधुर वदन इक रदन सदन बुद्धि सुंदर भुसुंड मध्य सिन्दुर प्रभा लसैं सुंडा दंड उन्नत कै कुंडली के परसत प्रनव सरूप लखि विघ्न महा नसै॥ जातन के ध्यान कीन्हे झूठे जम जातन ते भाल बालचन्द देषि पाप ताप त्रय त्रसै॥ शिव जगदंब वारो उदर प्रलम्ब वारो मेरे हिय धाम राम सन्निधि सदा बसै॥ १॥ × × × × × × ×

कविता की रचनानि को नेकु न जानो भेद। श्री गुरु पद अरविंद की केवल मोहि उमेद। दायक नित्यानंद के श्री चिंतामनि चित्त। सो मोपै अनुकूल अति याते रचौं कवित्त॥ सोरठा॥ श्री चिन्तामनि पाय चिंतामनि पायहि जिते, चिंतत चिंता जाय। जिहि सो नित मो चित बसै॥ ७॥ दोहा॥ संध्या सुधि सिधि विधु बरष (१८७३) गौरी तिथि सुदि पूज॥ सुराचार्ज वासर सुषद ग्रह घट गत सूर्ज॥ ८॥ सोरठा॥ गन गौरी सिव ध्याय अरु गुरु के पद पदुम परि॥ ता दिन राम सहाय वृत्त तरंगिनी रची॥ तामें वरन तरंग इक गन इक लक छंद को। एक वरन वृत अंग इक तुक भेद विचार है॥ १०॥ रोला॥ लघु गुरु नव प्रस्तार बहुरि सूचीहि बषानो॥ तव पताल गिरि केतु नष्ट उदिष्टहि गानों। पुनि मकरी कल वरन छन्द पुनि राज जु माषे॥ बहुरि भनो तुक भेद सेस पद मान न राषे॥ ११॥

End—कलभ को लक्षण॥ सुगंध कुसुम द्वियत्रहु द्विज वर वियन नन नन नन प्रिय अहिय कलभ किय॥ ५३१॥ I.I. II. II II. IIII. III. III. III. III. III. II. जथा। उत्र कुत्र ललित कनक सरसिज जित सुवसन वलित कलित अभरन वर।

चितवनि कुटिल पयन सुनयन लखि सखि जदुवर हिय लगत मयन सर ॥ अध-रनि विहसति अति रस वरसति मन मनहर सति दरपन दरसति ॥ तकि छवि सकुचति छन दुति अरु रति अजिर गमति लहि कलभ सरस गति ॥ ५३२ ॥ दे।० ॥ काम तथा मनहरन अरु रूप घनाक्षरि संत ॥ भनत वरन मुक्तक इन्हैं दंडक मैं मति वंत ॥ ५३३ ॥ इति दंडक ॥ अथ समद्धि वृत्त तआदै। ददक छंद के। लक्षन ॥ विष मन नल दस नाने। ॥ जन्यौ सम ददक जाने। ॥ ५३५ ॥. ॥।. ॥।. ।.।ऽ.।ऽ।.॥।. ॥ऽ. जथा ॥ पलन कलन तव ते हैं ॥ जये ललन जवते हैं ॥ तिय अजहुं न पिय आये ॥ पयोददक झरिलाये ॥ ५३५ ॥ वार्ता ॥ दक और उदक जल के। नाम है द के। दक मुइंति मेदिनो ॥ × × × ×

Subject—प्रथम तरंग—(१) पृ० १—३२ तक—मंगलाचरण देव गुरु वंदना, पुस्तक रचना काल, पुस्तक विषय की संक्षिप्त सूची, प्रस्तारादि प्रत्ययें के लक्षण, लघु गुरु कथन। (२) पृ० ३२—३५ तक—विश्राम संज्ञा कथन, संख्या की संज्ञा, मात्रा प्रस्तार का लक्षण, षट् कलादि की संज्ञा, प्रति स्वरूप संज्ञा, वर्ण प्रस्तार लक्षण, गण भेद, शुभाशुभ गण, द्विगन का विचार, मात्रा तथा वर्ण सूची, छन्दे।भंग, मात्रिक तथा वर्णिक पाताल तथा मेरु, खंड मेरु दोनें प्रकार, पताका दोनें प्रकार की। वर्ण मात्रिक नष्ट तथा मर्कटी। द्वितीय तरंग—(३) पृ० ५६—८२ तक—छंद का लक्षण, मात्रा की भेद की संख्या का प्रमाण—सम विषय, समद्धि लक्षण, अनेक छन्द लक्षण—मात्रिक वृत्त समाप्त ॥ (४) पृ० ८३—१७२ तक—वर्णिक वृत्तों के लक्षण।

No. 350. Āratī Jagajīvana by Rāma Sahāya. Substance—Country-made paper. Leaves—2. Size—6 × 5 inches. Lines per page—18. Extent—18 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1948 or A.D. 1791. Place of deposit—Iśwarī Gaṅgādīna Murāwa, Village Udawāpur, Post Office Baranāpur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ आरती लिख्यते ॥ आरती प्रभु जगजीवन प्यारे। आदि साह जिन पंथ पसारे ॥ चारि वजीर की आरति गाई ॥ नाम ग्राम कहि भेद वताई ॥ दास गोसांई वालक भोली। खेम दास हरि सकरो षोली। सोमवंस प्रभु दूलन दासा। धरम धाम जग विदित प्रकासा। देवीदास प्रभु गैार कहाये ॥ तजि लछिमनगढ़ पुरवा आये ॥ अब चैादह गद्दीधर गाइन। चरनवंदि कर विनय सुनाइन ॥ घाघरा तीर सरदहा ग्रामा। प्रभु अहलाद करे

निज धामा ॥ उदैराम हरिचंद पुरवासी । ऊमापुर प्रभु केवल निवासी ॥ ग्रहरे लाम भवानी दासा । पटवा मेडनदास प्रकासा ॥ ग्राम हथौधा माधौ दासा ॥ वै द्विज गुरुचरन को ग्रासा ॥ पुनि सिवदास मंत्र दिढ़ पाये । चलि पंजाब म गद्दी लाये ॥

End—साहब कायमदास पठाना । बसि रसूलपुर सब जग जाना ॥ प्रभु ग्रनूप सत ग्रामहिं ग्राए । इम्रजीत ग्रस नाम कहाए ॥ तिन्ह चौदह गद्दीधर गाइन्ह ॥ भक्ति भजन सतसंग दिढ़ाइन ॥ रामसहाय जन्म फल पावा । मगन दरस रस ग्रारति गावा ॥ इति श्री ग्रारती सम्पुर्णम् शुभ मस्तु संवत १९४८ विक्रमी ।

Subject—बाबा जगजीवनदास को ग्रारती ग्रौर उनके चेलों के नाम निवास स्थान सहित ।

No. 351. Nṛitya Rāghava milana by Rāma Sakhē. Substance—Country-made paper. Leaves—76. Size—6 × 4 inches. Lines per page—17. Extent—700 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1804 or A.D. 1747. Date of manuscript—Samvat 1949 or A. D. 1892. Place of deposit—Lālā Sūraja Prasāda, Village Tulasīpur, Post Office Millīpur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री सीतावल्लभो जयति । ग्रथ नृत्य राघव मिलन प्रारम्भः ॥ दोहा ॥ करि उर ध्यान वसिष्ट गुर राम सखे मृदु शील । भनैा नृत्य राघव मिलन ग्रद्भुत रंग रंगील ॥ विविध केलियुत प्रेमघर रूप द्रव्य भंडार । विमल नृत्य राघव मिलन रसिकन का ग्रधिकार ॥ श्रुति संवत ग्ररु युक्ति करि ग्रौर जगत उनमान सुनि जिय ईश ग्रखंड तन तामे निज विज्ञान । चौपाई ॥ प्रथम कहैा यह तत्व विचारा । ताकरि हाय इष्ट प्रण भारा ॥ तत्व मसी श्रुति वाक्य प्रधाना । तत्व ग्रव्यै षष्टी ग्रस्थाना । कहत झूठ जे जिय परिनामा । तिनके संग न करि विश्रामा जिय विन ईश नाम नहिं लहिये ता ग्रनीशवादी वै कहिये वै जगरूप सेवा जानो उनको कहि न कदाचिन मानैा ॥

End—ग्रंथ नृत्य राघव मिलन विना सुने जिय ग्रंध जिय ईश्वर निजरूप का जाने कहा निबंध । पठन नित्य राघव मिलन करै कोउ नर नारि । पावत तहां सत्र तियन युत राम रटन तन धारि ॥ संवत ग्रष्टादश चतुर शुक्ल मधुर मधु तीज भन्यो नृत्य राघव मिलन दाहा इकशत तीस ग्रौर २० पुनि चौपई हैसे दश छयालीस इति श्री रामसखे विरचितं नृत्य राघव मिलन ग्रंथ रसिक

ऐश्वर्य वर्ननो नाम अष्टादशमो प्रसंग छाप्पै छंद ॥ राघव संग इक सेज रमन नृप सखा पृय अति तहां देषत मृदुरूप वढ़त रघुनाथ मिलन रति ॥ वन प्रमोद रसरास छके रस छंदन—सिर्जत । जिय ईश्वर निज रूप पाइ नित वदत द्वैत मत प्रभु ह्वै अदृष्ट जल कूप मधि तिनके हित प्रगटे निकट । सब रसिक मुकुट हरितन अघट रामसखे रघुकुल प्रगट वि० १९४९ ।

Subject—पृ० १—१८ तक-जीव और ईश्वर के अखंड स्वरूप का वर्णन । पृ० १९—२३—ब्रह्म राम एकत्व वर्णन । पृ० २४—२४ तक—ज्ञान वैराग्य भक्ति का वर्णन । पृ० २५—रसिक अनन्य रीति वर्णन । पृ० २६—२७—शरणागत धर्म का वर्णन । पृ० २८—३१—राम नाम की महिमा । पृ० ३२—३३ राम रूप गुण प्रताप धाम परत्व का वर्णन । पृ० ३४—३९ आश्चर्य लीला का वर्णन । ३९—४४ लोक अवध प्रमोद वन नित्य रास ध्यान का वर्णन । पृ० ४५—४७ राज माधुर्य ध्यान का वर्णन । पृ० ४८—राम आवर्ण ध्यान । पृ० ४९—अवध आवर्ण । पृ० ५०—६७ अवध जीव ईश्वर तथा विविध केलि का वर्णन । पृ० ६९—७० नम्र सखा रहस्य का वर्णन । पृ० ७१ रसिक गुरु जिज्ञासु शिष्य मिलन पृ० ७२—७४ रसिक लक्षण । पृ० ७५—७६ रसिक ऐश्वर्य वर्णन व लेखक का नाम संवत् आदि वर्णन ।

No. 352(*a*). Bhūshaṇa Kaumudī by Raṇadhīra Siṁha of Siṅgarā Maū. Substance—Country-made paper. Leaves—48. Size—12 × 6 inches. Lines per page—44. Extent—1,320 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Ṭhākura Digvijaya Siṁha, Tāluqedār, Village Ḍikauliyā, Post Office Biswā̃, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भूषण कैामुदी लिष्यते ॥ दोहा ॥ विघन हरन गनपति वरन भरन सुमंगल षानि अैसे गजमुष को भजै सकल मनोरथ दानि ॥ कवित्त ॥ कृष्ण जू ॥ अति अरुनारे छवि भारै भाल वंद नित मधि ह्वै जवारे तारे अधिप सुधारे हैं ॥ बहुत पनारे मदधारे गंड थानन्नि ते गंध मतवारे भृंगु गुंजत किनारे हैं ॥ करन इसारे मतवारे फल देन वारे वेद भुज धारे लंबोदर सुढ़ारे हैं ॥ अम्ब प्रियकारे दृगतारे भव रनधीर एक रदवारे भारे विघन विदारे हैं ॥ जथा ॥ मंजुल सुरंगवर सोभित अचित रेष फल मकरंद जन मोदित करन है । प्रमित विराग ग्यान केसर अव्यक्त देस विरह असेस जस यो सु प्रसरन है ॥ सेवित

नृदेव मुनि मधुप ममाधि ही कै रनधोर ष्यात द्रत ईछित भरन है ॥ ईस तृदि मानस प्रकासत सदाई लसै अमल सरोज वर स्यामा के चरन है ॥ दो० ॥ जन प्रन प्रतिपालो विसद भव घालो अवगाह ग्रैसी कालो को सुजस ग्रालो वरनै काइ ॥

End—सब्द ग्रलंकृत बहुत है ग्रक्षर के संजोग अनुप्रास षट विधि कहे जो है भाषा जोग ॥ टोका ॥ ग्रक्षर के संयोग करिकै शब्दालंकार बहुत है परंतु जो भाषा के जोग है षट विधि को अनुप्रास सोई कह्यो है ॥ मूल ॥ वाही नरके हेत यह कोन्हो ग्रंथ नवोन । जो पंडित भाषा निपुन है ग्ररु कविता विषे प्रवोन ॥ टोका ॥ जो पंडित भाषा में निपुन है ग्ररु कविता विषे प्रवोन है ताही नर के हेत यह नवोन ग्रंथ जो है भाषा भाषाभूषण सो कोन्यो है ॥ मूल ॥ लछन तिय ग्ररु पुरुष के हाव भाव रसधाम ग्रलंकार संजोग ते भाषाभूषण नाम ॥ टोका ॥ तिय ग्ररु पुरुष के लक्षन हाव भाव जो है रस को धाम कहे गृह ग्ररु ग्रलंकार इनके संजोग करिकै भाषा भूषण नाम धरयो है ॥ मूल ॥ भाषा भूषन ग्रंथ को जो देषै मनलाइ । विविधि साहित्य रस को ग्रर्थ ताहि सकल दरसाय ॥ टोका ॥ भाषा भूषण जो है यह ग्रंथ ताको मनलाय कै जो देषैगो ताको विधि साहित्य रस को ग्रर्थ सकल दरसाय कहै देषि परि है ॥ इति श्रोमन महाराज श्रो सिरमौर वंसावतंस श्रोमन नृपति रनधोर सिंह विरचिते भूषण कौमुदो शब्दालंकार वरननम् षष्टमो प्रकाशः समाप्तः लिषतं गनेस सिंह जनवार मुकाम महिमापुर संवत ॥ १९३१ ॥

Subject—राजा यशवंत के भाषा भूषण नामक ग्रलङ्कार काव्य की टीका ।

No. 352(*b*). Kāvya Ratnākara by Raṇadhīra Siṁha. Substance—Country-made paper. Leaves—134. Size—$9\frac{3}{4} \times 7$ inches. Lines per page—22. Extent—2,575 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Siṁha, Village and Post Office Kānthā, District Unāo.

Beginning—जो कहियै की चारिहो रस मूल ना एक कह्यो पांच क्यो नहीं कह्यौ सो वीर, रौद्र, शृंगार, सान्त ये चारि सरोर की प्रकृति कहे स्वभाव है याते सरोर ते नित्य संबंध है वै पांचो विषे संजोग करि स्फुरित होतो है । ताते चारिहो रस मुख्य करि बर्न्यौ ॥ दोहा-कह्यौ सात विधि प्रकृति ए ग्रैार जितै ठहराय । प्रकृति विपर्यय दोष सों ग्रैार ग्रैार में ल्याय ॥ ज्यो वरनत पितु मातु को नहि सिंगार रस लोग । त्यो सुरतादिक दिव्य मैं वरनन लगै ग्रजोग ॥ ऐहि

विधि औरौ जानबो अनुचित बरनन रीति। प्रकृति विपर्यय जानिये है रसदोष विगोत ॥ (इति रसदोष कथन) । अथ दोषोद्धार वर्णनम्—

कहुं सब्दालंकार कहुं छंद कहुं तुक हेतु।

कहुं प्रकर्ण वस दोष हुं गनै अदोष सचेत॥

End—अथ दोषोद्धार वर्णनम् ॥

दोहा—कहुं शब्दालंकार कहुं छंद कहुं तुक हेत।
कहुं प्रकर्ण वस दोष हुं गनै अदोष सचेत ॥
अहै अदोषे होत कहुं दोष होत गुन खानि।
उदाहरन कछु कछु कहौं सरल रीति उर आनि ॥
यथा ॥ हरि श्रुति को कुंडल मुकुत हार हिए को स्वक्ष।
नैननि देखो स्यौ रहौ हिय मो छाइ प्रत्यक्ष ॥

टीका—स्वच्छ शब्द श्रुति कटु हैं प्रत्यक्ष शब्द भाषा हीन हैं। मुकुतहार अर्थातंर पदापेक्षी के ठौर हैं ॥ सो वाक्य दोष है ॥ औ श्रुति को कुंडल हिय को हार आंखिन को देखिवो अर्थ दोष में अपुष्टार्थ है ॥ कुंडलहार देखिवो एतनोही कहिवो याथार्थ को हो जातो है ॥ जद्यपि तुक वसते श्रुति कटु भाषा हीन और छंद वसतें अर्थातंर पदापेक्षी औ लोकोक्ति वसते अपुष्टार्थ अदोष है ॥ पुनः यथा—कवित्त ॥ सिंह कटि मेखला सो कुंभ कुच मिथुन त्यौं मुखवास अलि गुंजै मो है धनुलोक है ॥ वृषभानु कन्या मोन नैनो सुबरन अंगो उर करक कटाक्षन सो चाहिए ॥........

Subject—पृ० ३—१० तक—प्रयोजन कवित्त, सामग्री रस रहस्य वर्णन। व्यंग प्रधान उत्तम काव्य, मध्यम व्यंग, शब्दचित्र काव्य वर्णन, प्रस्तुत प्रशंसा वर्णन। शब्द अर्थ भेद कथन, वाचक लक्षण, काव्य प्रकाश का उल्लेख। रूढ़ि लक्षता का लक्षण, शुद्धा का भेद वर्णन, लक्ष-लक्षण कथन, शुद्ध सारोपा वर्णन, गौणी सारोपा कथन, गौणी साध्यवसाना वर्णन, व्यंजक कथन। पृ० ११—१४ तक—अभिधा मूलक व्यंग। लक्षणा व गूढ़ व्यंग वर्णन, अर्थ व्यञ्जक (काव्य निर्णय से) व्यक्ति विशेष वर्णन। प्रस्ताव, मिश्रित विशेषण, अभिधा—लक्षण—व्यंजना वर्णन। पृ० १५—२४ तक—अथ ध्वनि लक्षण, क्रम लक्षण, अनुमान वर्णन। सात्विक भाव कथन, संचारी भाव वर्णन, नव रस वर्णन, श्रृंगार कथन, संयोग और वियोग श्रृंगार वर्णन, सामान्य श्रृंगार कथन, संयोग में वियोग वर्णन, मिश्रित श्रृंगार वर्णन, हास्य, रौद्र, करुणा, भयानक, वीर भेद, वीभत्स, अद्भुत शांत रस वर्णन।

पृ० २५—३२ तक--नायिका भेद वर्णन। अवस्था भेद-मुग्धा, मध्या, प्रौढ़ा वर्णन। ज्ञात यौवना, अज्ञात यौवना, विश्रब्ध नवोढ़ा, मध्या, प्रगल्भा वर्णन। धीरादि भेद वर्णन। मध्या धीरा, अधीरा वर्णन। प्रौढ़ाधीरा, अधीरा, धीरा-अधीरा वर्णन। ज्येष्ठा-कनिष्ठा वर्णन। दृष्टि चेष्टा परकीया वर्णन। साध्या, वृद्ध बालवधू, ग्राम्यवधू, दुःसाध्या वर्णन, भूत-भविष्य-वर्तमान गुप्ता वाक्‌विदग्धा, कुलटा मुदिता, लक्षिता वर्णन। पृ० ४१—५० तक—सुरति लक्षिता, अनुसयना, तीन भेद वर्णन, कामवती, अनुरागिनी, प्रेम आसक्ता अन्य संभोग दुःखिता, रूप गर्विता, प्रेम गर्विता, मानवती परनारका भेद, स्वाधीन पतिका वर्णन। खंडिता-धीरा भेद कथन, खंडिता, विप्रलब्धा, वासक-सज्जा वर्णन। परकीया वासकसज्जा, उत्कंठिता, कलहंतरिता, अभिसारिका, कृष्णा अभिसारिका, शुक्लाअभिसारिका, दिवाभिसारिका, प्रोषितपतिका, अपर नायिका वर्णन। आगतपतिका-परकीया आगच्छत पतिका, समकरि वर्णन। उत्तमा; मध्यमा, अधमा वर्णन, गणिका कथन। पृ० ३३-४० नायक-पति, उपपति, वैशिक वर्णन। अनुकूल दक्षिण, सठ, धृष्ट वर्णन, मानी, वाक्र चतुर, क्रिया चतुर, उत्तम, मध्यम, अधम वर्णन (नायक वर्णन) त्रिगुण, माधुर्य, ओज, प्रसाद वर्णन। उपमासभेद, लुप्ता वर्णन। अनन्वय, उपमेयोउपमान, दृष्टान्त, अर्थान्तरन्यास, सभेद वर्णन। तुल्ययोग्यता, निदर्शना, उत्प्रेक्षा।

पृ० ५१—५८ तक उत्प्रेक्षा भेद, अपन्हुति सभेद, स्मरण, भ्रमा, अन्योन्या, संदेह, व्यतिरेक, तद्रूप, अधिकोक्ति, एमाक्ति तद्रूपक, अभेद रूपक, रूपक सामाक्ति, उल्लेख। पृ० ५९—६५ तक-अतिशयोक्ति, भेदक, संबंध, योगायोग। जयलता वर्णन। उपमा, अत्युक्ति, सापन्हुति, रूपक वर्णन। अधिक अल्प, अप्रस्तुत प्रशंसा, प्रस्तुतांकुर, समासोक्ति, निन्दाव्याज स्तुति, स्तुति व्याज, आक्षेप, निषेध पर्य्यायोक्ति, पर्य्यायोक्ति, अन्योक्ति वर्णन। विरोध—विरोधाभास, विभावना, व्याघात, असंगत, विषय वर्णन। पृ० ६६—७२ तक उल्लास, अनुज्ञा, विचित्र, तद्गुण, अतद्गुण अनुगुण, मीलित, सामान्य, मालित, उन्मीलित, साम, समाधि, भाविका, प्रहर्षण, विषाद, संभव, समुच्चय, अन्योन्य, विकल्प, सहोक्ति, विनोक्ति।

पृ० ७३--८६ तक—विनशोभित, प्रतिषेध, विधि, काव्यार्थापत्ति, विहित, युक्ता, गूढ़ोत्तरा, गूढ़ोक्ति, मिथ्याध्यवसित, ललित, विवृतोक्ति, स्वभावोक्ति, हेतु व्याजोक्ति, परिकर, परिकरांकुर, प्रमाण अनुमान, उपमान, आत्मतुष्टि, अर्थापत्ति अद्वैत दर्पण वर्णन। लोकोक्ति, छेकोक्ति, प्रश्नोत्तर, यथा संख्या एकावली, कारण माला, उत्तरोत्तर, रसनोपमा, रत्नावली, दीपक वर्णन।

पृ० ८७—९८ तक—आवृत्ति देहरो दीपक, शंकरालंकार, संग्रह, श्लेप अनुप्रास वर्णन। लाटानुप्रास, यमक, वोप्सा, चित्रालंकार वर्णन। निरोष्ठ, मात्रा रहित, अद्भुत, वर्णचित्र, अन्तर्लापिका, वहिर्लापिका, नागपास, शृंखला, खड्गवंध। पृ० ९९-१३४ तक-गजवन्ध, चमरवंध, चौरिवन्ध, हारवंध, डमरुवन्ध, सर्वतो मुख वर्णन। दोष वर्णन। श्रुति कटु, संस्काररहत, अप्रयुक्त, असमर्थ, निहतार्थ, अवाचक, अश्लील, अमंगल, घृणा, ग्राम्य, अप्रतीत, नेअर्थ, क्लिष्ट अवमृष्ट, शब्ददोष दुतिकृत, विसंधि, न्यूनपद, अधिक, कथित शब्द, पतन प्रकर्षण, समाप्त पुनरात्य, असंभव, अस्थान स्थज, संकीर्ण, रसविरोध, भाव परक्रम, अपुष्टार्थ, कष्टार्थ, वाक्यदोष, दुक्रम, ग्राम्ययार्थ, संदिग्ध, निरहंत, अनविकृत, अनेम, विशेष, साम्य प्रवृत्ति, साकांक्षा, अप्रक्त, विद्या-विरुद्ध प्रकाशित, विरुद्ध, सहचर भिन्न, अश्लील, व्यभिचारी, भाव व स्थायी भाव की सद्वाच्यता, वर्णन। रसदोष, प्रकृति विपर्यय वर्णन।

अपूर्ण।

No. 352(*c*). Piṅgala Nāmārṇava by Raṇadhīra Siṁha. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—10 × 6 inches. Lines per page—48. Extent—864 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1824 or A.D. 1767. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Viśwanātha Pustakālaya of Ṭhākura Maheśwara Siṁha, Village Ḍikauliyā, Post Office Biswā, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ पिंगल नामार्णव लिप्यते ॥ छप्पै छंद ॥ समुष एक रद कपिल चारु गज कर्ण प्रकाशित। लम्बोदर अरु विकट विघ्ननासन सुविकासित ॥ लसित विनायक धूम कंतु तिमि गणाध्यक्ष गति ॥ भालचंद्र गजवदन द्विरस इमि नाम सुभद भनि ॥ कृत प्रथम असमरन श्रवन जो आरंभे विद्यारने ॥ जु विवाद प्रवेशे निर्गमे संकट विघ्न व्रक घने ॥ कवित्त ॥ स्यामाजू तिहारे पद पंकज प्रभाव सुनि भत्यनि को काम दस दोइ वेद गायो है ॥ ताही ते ढिठाई करि विनय सुनाऊं मात भाषा नाम अर्णव सु चाहत बनायो है ॥ जानि निज सेवक निवाहै जू अविघ्न ग्रंथ दीनवंधु जानि निज दीनता सुनायो है। तेरो जस मंडित अषंड भव मंडल में ब्रह्म विश्नु ईस जेते तेरो जस गायो है ॥

End—धनुषनाम पद्धरी छंद ॥ धनुकामै करि संतापरेषि ज्यावास चाय भाषति विसेषि ॥ कोदंड जबै लैतो प्रकुद्ध षल त्रस्त मान त्यागे विरुद्ध ॥ जुगल

नाम मालिनी छंद ॥ नगन नगन करनो गोप गानोप गानो । विरति रचिय ग्राठै ग्रौर सातै बरानो ॥ सुमन गुनन लैके ह्वै रही डालिनी है । सरस सुरस हेली पालिनी मालिनी है ॥ जथा ॥ मिथुन जमल जुग मै द्वंद को साप्य रोतै । जुग जम बिय धारै द्वै उभे चारु गोतै ॥ जुगुल चरन स्यामा ग्रग्र तौ विश्नु ईसै ॥ विधि पति-तल से है ज्यें त्रिवेनी सुदोसै । पुष्प रस नाम हरि लीला छंद ॥ सारंग त्यौ मधु गनै रस चारु भासै त्यो पुष्प सार गनि पुष्प रसै प्रकासै । स्यामा पदाब्ज मकरंद सुवंद देवै । ध्यानस्थ चित ग्रलि ज्यें रलिनित्त सेवै ॥ मालानाम ॥ रूपमाला छंद ॥ राजो तौ स्रु क गुनवती इमि कोस रति प्रकास । दाम स्रज तिमि धोमताम पिपेषि करत प्रकास ॥ त्यागि जग ग्रासार सार प्रकार ग्राला ध्याइ । चिदानंद निरीह नित्या रूप माला ठाइ ॥ इति श्री श्री मन्महाराजा श्री सिरमैार वंसवतंस श्री मन रनधीर सिंह विरचिते नामार्णव समाप्तं सुभमस्तु संवत १९२१ लिषतं जवाहिर लाल पंडित पैदापुरी स्थाने चैत्र शुक्ले चतुर्थेया ॥

Subject—ग्रनेक छंदों के नाम तथा उन्हीं नाम के छंदों में सब ४५० नामों का वर्णन ।

No. 353. Sapta Vyasana by Raṅgalāla. Substance—County-made paper. Leaves—277. Size—11 × 6½ inches. Lines per page—12. Extent—4,075 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1937 or A.D. 1880. Place of deposit—Jaina Mandira, Daryābāda, District Bārā Bankī.

Beginning—ग्रों नमोसिद्धेभ्यः ॥ ग्रथ भद्रवाहु चरित्र तथा सप्त विसन भाषा लिष्यते ॥ सवैया—श्री जिनदेव सिद्दारथ नंदन के जुगपाद सरोज निहारे । पोत भवोदधि के सुथरे जगजीव ग्रनेकन पार उतारे ॥ ग्रंतम तीरथ के करता मद मान महान विदारन वारे ॥ सो प्रभु सन्मति दायक (नायक ?) दूरि करैा दुख दोष हमारे ॥ १ ॥ राजत नाभि नरेश्वर के घर में रंजनी कर श्रीकर नीके । निर्तत नष्ट निहार तिलोत्तम जानि विषै सुख लागत फीके ॥ फोरि मिथ्यात कुला-चल निश्चल नाथ भयो त्रैलोक मही के । ग्राप तरे ग्ररु ग्रैारन तारत पाद सरोज नमैां जिनही के ॥ २ ॥ श्री विजयादिक पूरब मे गज चिन्ह धरे प्रगटे तिमि-रारी । जिन मिथ्यात महातक कैासिक छिप्त भयो निज पैारुष हारो । देखि परयो शिव मारग सुंदर होत भये भवि जीव सुषारो । भूंवत हैं भव-सिंधु परेग्रा ग्रब वांह गहैा ग्रजितेस हमारो ॥ ३ ॥ ....

नंदन जाय ग्रनंदित के पुनि नंदन ग्रैार जन्यैा न सुनंदा ॥ कोटि कलंकन सात लखे कवि सों प्रभु सीतल नाथ जिनंदा । तोरि महा भव पिंजर मो ग्रब

मेटि गरीब नेवाज कुफंदा ॥ जा सम चन्द दिवाकर को दुति होति न पूरन आनंद कंदा ॥ १० ॥ तिनि सुग्यान लहे जनमे सिर आंस जिनेश्वर आनंद धारो। जंगम थावर जोव सवै जगमें तिनके प्रभु रक्षक भारो। तीरथनाथ कहे सगरे जहं पाद परे तहं तीरथ जारो। हे करुनानिधि आनंद की विधि हे भगवंत नमो दुख हारो ॥ ११ ॥

End—अडिल्ल छन्द ॥ यह वृतांत सुनि सकल त्रिया दस मुख तनो। भई विकल ता रूप मोह मद को सनो। डगमगाय गिरि परत चलन इत आइके। रावन मृतक सरीर देषि दुष दायके ॥ आवत नारी दस मुख ऊपर गिरि परी। हा हा करत पुकार नयन जलसैं भरी ॥ कै एक नारी मूरक्षा खाय पछार सैं। गिरी धरनि में जाय भई विलल सैं ॥ ११ ॥ कै एक नारी पति को गोद उठाय के। मुख चुंव करि वोली वैन उचारि के ॥ अहो नाथ क्या पोढ़े रन में आय के। सूनो सेज हमारो गे छुटकाय के ॥ १३ ॥ कै एक नारी पति के पाय पलोटती। कंकन माल उतारि वदन को कूटती ॥ कै एक नारी कूप गिरन को धाइया। तिन्ह सखी जन पकरि गोद वैठाय के ॥ × × ×

× × × × × ×

इन्द्रजीत को वारे सिया पति देषियें। मधु मधुर वच भाखत करुना पेषियो ॥ अहो दसानन—पुत्र राज्य करिये भिया ॥ हमे सिया सो काम जाय वन वासिया ॥ १७ ॥ × × × × × ×

इति सप्त व्यसन शास्त्र सम्पूर्ण ॥ भादौं वदी ११ संवत् १९३७ शाके

Subject—(१) पृ० १—११ तक—मंगलाचरणादि। चतुर्थ विंशति तीर्थंकर स्तुति, महाराज स्तुति, उपध्याय स्तुति। जैन वचन स्तुति, गुरु महाराज स्तुति।

(२) पृ० १२—२१ तक—दश लक्षण रूप मुनि धर्म वर्णन। प्रथम क्षमा धर्म वर्णन, उत्तम क्षमा वर्णन, उत्तम मार्दव धर्म कथन, उत्तम आर्जव धर्म कथन, उत्तम शौच धर्म्म, उत्तम सत्यधर्म, नाम सत्य कथन, रूप सत्य कथन, संस्थापन रूप सत्य, प्रतीत सत्य, संव्रत सत्य, संयोजना सत्य, जिन पद सत्य, भाव सत्य, समय सत्य, उत्तम सत्य, उत्तम संयम धर्म कथन, ईर्जा सुमति, भाषा सुमति, पेषना सुमति।

(३) पृ० २२— ३० तक—छियालीस दोष वर्णन। षोडष उदगम दोष दाता के आधीन, षोडष दोष पात्र के दोष वर्णन, वत्तीस अंतराय वर्णन, चौदह मलों का वर्णन, अदान निक्षेपन समिति प्रतिष्ठापन समिति, पंच सुमतिपूर्ण भाव शुद्धि, काय शुद्धि, ईजा पथ शुद्ध कथन, भिक्षा शुद्धि, भिक्षा के पांच भेद, गोचरी भेद,

अक्ष भूक्षन भेद, उदराग्नि समन भेद, भ्रमराहार भेद, गति पूर्ण भेद, प्रतिष्ठापन शुद्धि, सैन शुद्धि कथन, वाक्य शुद्धि, उत्तम संयम धर्म कथन पूर्ण । (४) पृ० ३१—३५ तक—उत्तम तप धर्म कथन, ताप नाम, प्रथम अनशन तप भेद, अमोदर्ज तप, व्रत परि संख्यान तप, रस परित्याग तप, विविक्त शैयेपासन, विविक्त शय्यासन तप, काय क्लेश तप । (५) पृ० ३६—५४ तक—प्रायश्चित तप, अकम्पित दोष, अनुमान दोष, इष्ट दोष, वादर दोष, सूक्ष्म दोष, प्रक्षन दोष, शब्दा कुलित दोष, वहुजन दोष, तत्सवी दोष, विनय तप वर्णन, वैयावृत तप कथन, स्वाध्याय तप, व्युत्सर्ग तप, ध्यान तप, शुभाशुभ ध्यान वर्णन, धर्म स्वरूप वर्णन, आज्ञा विचय, अपाय विचय, विपाक विजय, संस्थान विचय, शुक्ल ध्यान, प्रथक्त-वतर्क विचार, एकत्व वितर्क, सूक्ष्म क्रिया प्रतिपत्ति, उत्तम त्याग धर्म पूर्ण ।

(६) पृ० ५५—५९—तक—उत्तम अकिंचन धर्म कथन, उत्तम ब्रह्मचर्य, यहां तक उत्तम दशलक्षणी रूपमुनि धर्म पूरा हुआ ।

(७) पृ० ६०—८३ तक—एकादश प्रति मारुय । श्रावक धर्म कथन, पाक्षिक श्रावक धर्म, नैष्ठिक श्रावक धर्म, एकादश प्रतिमा नाम । सप्त व्यसन वर्णन, व्यसनों के नाम । प्रथम द्यूत व्यसन का वर्णन, उदाहरण स्वरूप कौरव पाण्डवों के उदाहरण को उपस्थित कर द्यूत-व्यसन संबंधी बुराइयों का वर्णन । (८) पृ० ८४—९३ तक—मांस व्यसन (२) का वर्णन । कौशाम्बी के भूप नाम राजा के पुत्र वकु के मांस भक्षी होने का वर्णन । उसके जैनी पिता का संताप कर दीक्षा लेना, वकु का राजा होकर सूपकार द्वारा वारा मांस भक्षी होकर दुर्दशा को प्राप्त होना, अर्थात् वकु के पिता को आज्ञा कि हिंसा न हो—जिससे डर कर उसका रसोईदार एक वालक का मांस लाया और उसी को पका कर खाया, उसको जीभ को वह पसन्द आया । रोज वालकों को चुरा कर खाने लगा । प्रजा को यह ज्ञात हुआ और उस नगर कोही छोड़ दिया पुनः—राजा का श्मशान में भ्रमण और वहीं वसुदेव का प्राप्त होना और उनका पाटकि भू देना और वकु का नरक में पड़ कर दुख भोगना । इस उदाहरण को उपस्थित कर मांस भक्षण करने से क्या क्या बुराइयां होती हैं यह निष्कर्ष निकालना ।

(९) पृ० ९४—१०७ तक—तीसरे व्यसन मद्य का वर्णन । श्री जिनेन्द्र मुनि का उज्जयंत गिरि पर पहुंचना और वहां उनके दर्शनों के हितार्थ यादवों सहित वलभद्र का पहुंचना, प्रश्नोत्तर द्वारा मदिरापान द्वारा यादव तथा द्वारावती नगरी के विनाश के समाचार श्रवण कर, अपने राज्य को लौटना और नगर में मद्यपान के निषेध का ढुंढेरा फेर कर सम्पूर्ण मद्यपात्रों को बाहर फिकवा देना, एक दिन वन क्रीड़ा के समय गये हुए यादवों का तृषाकुल होकर

उन पात्रों में भरे हुए बरसाती जल को पोकर उन्मत्त होकर पत्थरों को एकत्रित कर दीपायन नामक मुनि के पास रखना, उनके क्रोध से ज्वाला का निकल द्वारावती को भस्म करना, कृष्ण का जर्द कुंवर द्वारा विनाश वर्णन कर मद्यपान के दुर्गुणों का वर्णन किया है।

(१०) पृ० १०८—१२५ तक—चतुर्थ व्यसन, वेश्यागमन। चारुदत्त का चरित्र, उसका अपने मातुल की पुत्री से विवाह होना। काव्यादि ग्रंथों में विरत रहते हुए स्त्री का ध्यान न करना। उसकी सास का आकर पुत्री को देख कर और उसकी आंतरिक वेदना समझ कर दुःखित हो अपनी समधिन को यह व्यथा सुनाना। उसका अपने देवर से अपने पुत्र को कामकला में निपुण करने के लिये आदेश, उसका पुत्र को वसंतमाला की पुत्री वसंतसेना नाम्नी वेश्या के पास भेजना, उसका उसी में अनुरक्त होकर सम्पूर्ण धन धान्य उसी को दे देना, अंत में उस वेश्या की माता द्वारा तिरस्कार पाकर श्वसुर गृह को गमन कर वहां पहुंची हुई अपनी माता से मिलना, उसकी सहायता से अपने श्वसुर के साथ, देशाटन को जाना और वहां पर अनेक व्याधियों को भुगतना और अंत में अनेक विद्या और धन धान्य से सम्पन्न होकर अपनी नव-विवाहिता वधुओं सहित निज नगरी में आना, वहां व्रतधारिणी वसंतसेना को भी अपने घर में रखना, इस प्रकार वेश्यागमन से धन धान्यादि नष्ट होकर दुःख प्राप्तानुभव कथन।

(११) पृ० १२६-१३२ तक—वेश्यागमन का दूसरा उदाहरण। उज्जैनी नगरी के सुदत्त सेठ के संयोग से वसंतसेना को गर्भ का रहना, उससे एक पुत्र और पुत्री का उत्पन्न होना, दोनों का बाहर विरुद्ध दिशाओं में त्यागा जाकर वनजारे तथा समुदत्त द्वारा ले जाया जाना और इन भगनी तथा भ्राता का विवाह संबंध होना, किसी समय इसी वेश्या के पुत्र (धनदेव) का आकर उज्जैनी में अपनी माता वसंतसेना पर आसक्त होकर उसी के साथ से गर्भ रख पुत्र उत्पन्न करना, उसकी प्रथम पत्नी (कमला) के पूर्वभव समाचार जानने के पश्चात् उज्जयनी में आकर पालने में भूलते हुए बालक (वरुन) से अपने छै नाते निकालना, धनदेव संबंधी षट नातों का वर्णन। वेश्या सम्बन्धी षटनातों का वर्णन। इस प्रकार अष्ट दस संबंध समन्वित वेश्या व्यसन का वर्णन कर उससे घृणा कराना।

(१२) पृ० १३३—१५० तक—पांचवां व्यसन चोरी वर्णन। शिव भूतनाम ब्राह्मण का जय सिंह नृपति के सिंहपुर नाम के नगर में अपने को सत्यवादी प्रसिद्धि करना, एक सेठ का उसके यहां चार लाल थाती रखना और प्रवास से लौटने पर उसे न देना। राजा इत्यादि का सेठ के प्रार्थना करने पर भी कुछ ध्यान न जाना, रानी द्वारा नीति से ब्राह्मण से उन रत्नों का निकलवा कर ब्राह्मण का दंडित होना और सेठ को अपने रत्नों का मिलना, ब्राह्मण का मर

कर सर्प हो राजा के कोष भंडार में वास करना और एक दिन राजा को डसना, गारुड़ों द्वारा सर्प का विनाश तथा नारकी हो कर भोग भोगना और तिर्यक योनि पाना।

(१३) पृ० १५१—१६२ तक—अहेरी व्यसन वर्णन। उज्जैनी के राजा ब्रह्मदत्त का बड़ा भारी अहेरी होना, एक मुनि के तपोभूमि में जाकर आखेट खेलने की इच्छा से जाना और ४ दिन तक क्रमशः किसी प्रकार के शिकार का प्राप्त न होना, एक दिन मुनि का भोजन के निमित्त जाना। राजा का अपनी असफलता में मुनि को कारणभूत समझ कर उनके आसनवर्ती प्रस्तर खंड को तपा देना, मुनि का आकर और यह समाचार पाकर साहस पूर्वक उस पर बैठ कर नियमानुसार तप निरत होना। राजा का कुष्टी होकर मरना, और अनेक नरकों में पड़ कर यातनाएं सहन करना पुनः संसार में स्वानादि नीच प्रवृत्ति के पशुओं में जन्म लेकर, मर कर, एक धोवी के यहां पुत्री होना और अर्द्धांग रोग के कारण दुखी होकर बन जाना और वहां एक आर्यिका के समीप रह कर व्रत करना और सिंह द्वारा उसका खाया जाना पुनः सेठ की कन्या होना और सुदत्त सागरमती द्वारा अपने पूर्वभव का समाचार सुन कर दुखी होकर उनके बनाये व्रत को धारण कर मर कर राजा के यहां जन्म पा, स्त्री शरीर से पुरुष शरीर में आ पुण्यकार्य कर स्वर्ग को जाना इस प्रकार इस व्यसन की दुर्व्यवस्था का दर्शन करा उससे बचने का आदेश।

(१४) पृ० १६३—२७७—तक स्त्री व्यसन। सातवें व्यसन स्त्रीगमन परस्त्री गमन का वर्णन। राम जनक सुतादि उत्पत्ति का वर्णन, राजा दशरथ द्वारा राजा जनक की राक्षसों से रक्षा करना, राम द्वारा इस कार्य में योग दिया जाना। राजा जनक को विजय पाने का वर्णन, और उसकी सीता को राम से विवाहने का कथन। इस पर एक राजा की आपत्ति जो सीता का भाई था। राजा जनक की धनुषभंग प्रतिज्ञा। राम की विजय, सीता का विवाह, राम का लक्ष्मण सीता सहित वन गमन, बन संबंधी सुख दुःखों का सविस्तर वर्णन। लक्ष्मण के कई विवाहों का वर्णन। रावण द्वारा सीता का हरण किया जाना। राम का सुग्रीव, हनुमानादि की सहायता से विजय प्राप्त करना, रावण का वध, सीता को लेकर राम का प्रसन्न होना, रावण का तीसरे नरक में पहुंचने का वर्णन। शील की महिमा, ग्रंथ सम्पूर्णः।

इति श्री सप्त व्यसन शास्त्र संपूर्ण। भादोवदी ११ संवत १९३७ शाके।

No. 354(*a*). Vrata Mushṭī by Raṅganātha. Substance—Country-made paper. Leaves—6. Size—15 × 5 inches.

Lines per page—16. Extent—105 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1902 or A.D. 1845. Place of deposit—Paṇḍita Ayodhya Prasāda Miśra, Village Kaṭhailaḍi, District Bahrāich.

Beginning—श्री मनोरामानुजायः नमः ॥ चौपाई ॥ अभव युगुल मूरति उर धारैं मुनि मत भाषित ब्रतहिं विचारैं ॥ अमावेध परिवा नहिं लीजै । अमावेध षट दंड कहीजे ॥ साठि दंड तिथि कै व्रत होई । एकादसिय रहित सुभ सोई ॥ सुकुल पाष उदया परिमाना संत समाज सकल सुभ ठाना ॥ इति परिवा निर्णय ॥ परवेधो सुभ दुइज बषानौ सावन स्याम पूर्व सुभ जानौ ॥ इति द्वितीया निर्णय ॥ दोहा । रंभा जेठ उजेरकी पूर्वजता सुभ होइ और तीजि सब जानिये पर युत सुषदा सोइ ॥ इति त्रितोया निर्णय ॥ चौथि सकल परवेधो षासो श्राका भाद्र स्याम विधु भासो ॥ भाद्र उजेर दुपहरे मानौ विधु दर्शन प्रति षेद्ध वषानौ ॥ माघ अंधेर विधु उदय लेषो शुकुल चौथि सांझे की पेषो ॥ इति चतुर्थी निर्णय ॥ चौथि समेत पंचमी लेहु श्रावन सुदि परवेध कहेहु भादौं सुदि दुपहर को जानौ मुनि पूजा महं वेद बषानौ । इति पंचमी निर्णय ।

End—दान विधान संक्रमो होई । षोडस दंड पूर्व पर सोई ॥ आधी राति पूर्व जौ लागै पुन्य दिवस पूरव पर भागै ॥ आधी राति परे जो होई । पर दिन पुन्य कहैं सब कोई ॥ आधो राति वीच संक्रमणो पुन्य दिवस दूनौ तव रमणो ॥ राति भरे यह संक्रम लागै कर्क पुन्य पूरब दिन जागै ॥ राति भरे मह मकरौ लागै पर दिन पुन्य वेद मत पागै ॥ संध्या तीनि दंड परमाना होइ रात्रि दिनहो कर ठाना ॥ संध्या माह संक्रमो होई तेहि समोप दिनहो में सोई ॥ सिंह कुंभ वृष वृश्चिक कर्क । आदि दंड षोड़स अति फर्क ॥ वीच माह घमेषा गावा । शेष गासि पर पुन्य बतावा ॥ इति संक्रांति निर्णय ॥ कोइ मुनि अरक वार व्रत धारै ॥ दिन अलोन भोजन इकवारै । इति अर्क वार निर्णय ॥ दोहा ॥ ब्रत मुष्टी शुभ ग्रंथ है रंगनाथ की जानि । मूठी में व्रत करत है जो करि है पहचान ॥ जो निरणय करि ग्रंथ यह पढ़ै सुनै नर कोउ । मनवांछित फल देहि तेहि सिय रघुनंदन दोउ ॥ इति श्रीमद गर्ग वंसावतंस कवि कुलालंकार चूड़ामनि श्री रघुवर तनुज रंगनाथ रचिता व्रत मुष्टी समाप्ता । लि: रघुवरदास वैष्णव मिरजापुर हरि मंदिरे पौष कृष्ण ७ संवत १९०२ ॥

Subject—प्रतिपदा से अमावास्या, पूर्णिमा, ग्रहण, संक्रांति मकर वारुणी आदि व्रतों के फलों का वर्णन ॥

No. 354(*b*). **Vrata Mushṭī by Paṇḍita Faṅga Nātha** of Akaraurā, Payagpur, District Bahrāich. Substance—Country-made paper. Leaves—13. Size—6 × 4 inches. Lines per page—14. Extent—105 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Paṇḍita Ayodhyā Prasāda Miśra, Village Kaṭhailaḍī, Trilwaliā, District Bahrāich.

Note—Details as in No. 354 (*a*).

No. 355. Savaiyā by Rasakhāni. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—$8\frac{3}{4} \times 4\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—16. Extent—280 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1909 or A. D. 1852. Place of deposit—Bhaiyā Santa Baksha Siṁha, Guṭhawā (Bahrāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सवैया लिष्यते ॥ या लकुटी अरु कामरिया हित राज तिहूं पुर को तजि डारौं । आठव सिद्ध नवो निधि को सुख नंद कि गाय चराइ बिसारौं ॥ रसखानि कवै इन नैनन तें व्रज के वन वाग तड़ाग निहारौं ॥ कोटिन्ह ए कलधौति के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं ॥ १ ॥

End—व्रज को वनिता सव घेरो करैं तेरो टारयो विगारयो जहां गसु री ॥ तूं हमकों रिपु काहे भई जोपै कान्ह लई तौ कहा रसु री ॥ रसखानि भनै विधि मान भई वसने नहिं देत दिना दस री ॥ हम या व्रज को वसवोइ तज्यौ वसुरी व्रज वैरिनि तूं बंसुरी ॥ ७४ ॥ वजी है तू आज कलंक भरी सुनिकै वृषभानु कुमारि न जी हैं । न जो है कदाचित कामिनी कौंजु पै कान मैं जाइ अचानक पो है ॥ पी हैं विदेस से देस न आवत मेरो ही देह कों मैन सजी है । सजी सु है मैन कहा वसु है व्रज वैरिनि बांसुरी फेरि वजी है ॥ ७५ ॥

इति सुभमस्तु संमत् १९०९ पौष वदी ५ श्रीराम श्रीराम राम राम १

Subject—श्रीकृष्ण राधिका के प्रेम संबंधी फुटकर ७५ सवैया ।

No. 356. Vaidya Prakāśa by Rasālagiri. Substance—Country-made paper. Leaves—50. Size—$9\frac{1}{2} \times 6$ inches. Lines per page—20. Extent—1,240 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Place of deposit—Lālā Jaṅga Bahādura, Kundana Jaṅga, Rāe Bareli.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः ॥ श्री गुरुचरण कमलेभ्यानमः ॥ अथ वैद्यप्रकाश ग्रंथ लिष्यते ॥ दोहा ॥ शिवसुत पद बंदन करौं वहुविधि सीस नवाइ । वैद्यक ग्रंथ विचित्र अति रचो महासुख पाय । बैस बंस अवतंस अति गोवर्धन सुखधाम । ताके सुत अति ही सुभग तीनि महा सुष धाम ॥ गिरि रसाल अरु भीम की प्रीति प्रतीति रसाल । अति गति जति मति है सरस अद्भुत परम विसाल ॥ श्री मथुरापुर के गये सेह भीम के संग । तेहि लघु अनुज सुजान सो तब तहं भयो प्रसंग ॥ लेखराज तव मोहि कहि गिरि रसाल सुनि लेहु । ग्रोषधि सुभग समूह कैा ग्रन्थ मोहि रचि देहु ॥

End—उबटन ॥ मसूर की दाल चिरैाजी हलदी दारु हलदी लाल चन्दन इन सब ग्रैाषधि के बराबर गाय के दूध में पत्थर पर चन्दन की समान घिस शरीर में लेप कर स्नान करने से भाई मुहासा ग्रोर चमड़े के सब रोग दूर होंय ॥

अथ तालीसादि चूर्ण ॥ तालीस मासे २ नागकेसर मासे २ सोंठ मासे २ पीपरि मासे २ मिस्री मासे २ बंसलोचन तोले २ दाख तोले २ छुहारे तोले २ अनारदाने तोले २ जायफल मासे २ कचूर मासे २ अकरकरा मासे २ हर्र बड़ी की बकली मासे २ जीरा सफेद मासे २ कंकोल मासे २ मिस्री सम मात्रा लेय ॥ नागेस्व ॥) सु एक धेला भर षाय जीर्णज्वर जाय ॥ इति शार्द चूर्ण सम्पूर्ण शुभं ॥

Subject—गणेश स्तुति, कवि परिचय, आश्रय दाता का परिचय, नाड़ी विचार, ज्वर के भेद ग्रोर लक्षण तथा ग्रैाषधि, पेट पीड़ा की ग्रोषधि, कान पीड़ा की ग्रैाषधि, खांसी की ग्रोषधि, गले की पीड़ा की ग्रैाषधि, सिर पीड़ा की ग्रैाषधि, सब प्रकार के ज्वरों की ग्रोषधि, अतीसार, मन्दाग्नि, सर्व रोग ग्रैाषधि, धातु करन ग्रैाषधि, प्रमेह की ग्रोषधि, क्षय रोग की ग्रोषधि, श्वास रोग की ग्रैाषधि, नेत्र रोग की ग्रोषधि कमल रोग की ग्रोषधि, संग्रहणी रोग की ग्रैाषधि, जलोधर रोग की ग्रोषधि, दांत मंजन, उबटन, तालीसादि चूर्ण ।

No. 357(*a*). Rasasāra by Rasikadāsa of Brindābana. Substance—New paper. Leaves—8. Size—6 × 4 inches. Lines per page—12. Extent—48 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Hansa Bahādura Vaishya, Bodhipur, Rāe Barelī.

Beginning-श्री राधा रसिक विहारी जी अथ रससार लिख्यते ॥ चैा० ।
श्री हरिदासी नर हरि दासि । स्यामा स्याम रहे मन भासि ॥
तिनकी कृपा रस सार बखानो तहं छवि अमित अपार अति जानो ॥१॥
कुंज केलि सहज प करैं महा केलि न्यारे विस्तरैं ॥

भीर भार तहं जात न कोई मुहां चुहो ज्यों ज्यावत दोई ॥ २ ॥
जहं पंछी को नहीं प्रवेस मधुकर धुनि को तहां न लेस।
निभ्रत कुंज की सुनें अब कथा तहं सोभा को नाहो तथा ॥ ३ ॥
जहं सब रितु रहैं फूले फूल एकांत कुंज सब रस को मूल ॥
प्रथम चोक में घोस प्रकासे दूजा चोक सरद निसि भासे ॥ ४ ॥
तोजे चोक रंनि तम लगै स्यामा स्याम रूप जगमगै
पत्र मूल फल फूल हैं जिते राधा छवि करि सो है तिते ॥ ५ ॥
ठार ठार जहं प्रिया जनावे धाइ धाइ स्याम कंठ उरलावे
भुजा पकरि प्यारी गहिराखे प्रेम मग्न अति मोहन दाखै ॥ ६
अनुराग मूर्ति दोऊ तन बने गैार स्याम सोभा रस सने
प्यारी दृग स्याम है तारे औार खेल पल नैन उघारे ॥ ७ ॥
ज्यों दर्पन में देखो झाई गोरी स्याम स्याम है छाही
औार खेल में चित्त न जाई मन को दसा रहै ठहराई ८
स्याम नैन गोरी को देह रूप दृष्टि चित सने सनेह
जो कहिये तो कहत न आवै नेहो विना भेद को पावै ॥ ९

End—नित्य सिधा जेती हैं सखी साधन सिधा न्यारी लखी
मुनि कन्या ऋषि कन्या जिती श्रुति कन्या साधन सिधा तिती ३७
नित्य सिधा गोप कन्या जानें श्री कृष्ण अनादि तेसें ये मानो
राधा कृष्ण सर्व को मूल तिन की औार कैान समतूल ॥ ३८
चाह मूरति नित्य सिधा भई तिनतें औार सखी सब लई
तत सुख सखी एक रस पागें तिनके भेद कहों अब आगे ३९
तत सुख सखी को एहो रीति तन में रहै अपन यो जीत
प्रिया प्रीतम को निजु सुख चाहे अपनो सुख नहीं मन आेगाहैं ४०
पूर्ण सुखे सखीए लेंहि चाह में चाह मिले मन देहिं
तिनको पारदा करै न कोई एकांत सेज जहां पैाढ़े दोई ४१
भूषन वसन ए निकरि संवारें श्रमजल पोंछि पवन कर ढारैं।
सो सुख सखी कहावै तोन स्याम के सुख को चाहै जोन ॥ ४२
अपने सुखे रहै जे राती कृष्ण सरूप सों रहैं जो माती
एकांत केलि जहां दोइ करैं ये सखी न तहां अनुसरै ४३
औार कुंज क्रीड़ा जो करैं तहां तहां सखी संग सब फिरैं
सहज केलि करि सब सुख देहि तत सुख सखी सबै सुख लेंहि ॥ ४४
महाकेलि में जातन कोई निर्भृत कुंज सुख लूटैं दोई
महाकेलि को सकै बताई नहि कहिवे को परमति आई ॥ ४५

या रस को जो जानै मर्म तातो कहियो यह निजु धर्म ।
श्री नरिहरिदास को हेत निजु जानें, श्री रसिकदास रससार वखानें ।
इति श्री रससार संपूर्ण ।
Subject—श्री राधा कृष्ण का प्रेम वर्णन ।

No. 357(*b*). Rasikadāsajī ke Pada by Rasikadāsa. Substance Country-made paper. Leaves—28. Size—8 × 7 inches. Lines per page—48. Extent—1,176 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Babu Śyāma Kumāra Nigama, Rāe Barelī.

Beginning—श्री कुंज बिहारी जी ॥ अथ श्री स्वामी रसिकदास जी के पद रस के लिषते ॥ राग बिहागड़ा ॥ दूलहा दुलहनि अधिक बनी ॥ पूजन चली कल्पतरु सुंदरि ओरै ठान ठनी ॥ कियो सषनि गढ़ जोर सवनि मिलि आगे धन पाछे जो धनी ॥ गावत चली गीत मंगल के सवै सुघर सजनी ॥ तनुक झुनक पग धरत धरनि पर छवि पावत अवनी ॥ छिरक सुगंध मूल तरु पूज्यौ फूलनि मान घनी ॥ अंचल जोर यहै वर मांगत रहो यह प्रेम सनी ॥ श्री रसिक विहार न होइ मान छक केलिकला कवनी ॥ १ ॥ प्यारी जू तें मोहि मोलि लियो ॥ तेरी कृपा मदन दल जीत्यो तेरो जिवायो जियो ॥ उमड़ी सेन महा मनमथ की ते अधरामृत दियो ॥ श्री रसिक बिहारी कहत दीन ह्वै धनि स्यामा को हियो ॥ २ ॥ स्यामा स्याम रूप रस चाषैं ॥ कुंज महल अकेले दोऊ तहां न कोई झांकै ॥ बैठी आप ठाढे लाल पकरि पकरि कर राष ॥ ठाढ़े रहो किंकिनी संवारो मंद मधुर भाषैं ॥ अंग अंग ललचाइ रहे मन उमगी उर अभिलाषैं ॥ श्री रसिक बिहारी यह सुष विलसत निकट भये सुषदाषैं ॥ ३ ॥

End—वहु विधि वेद पुराण प्रेमतत्व निजु गावै । ध्यान धरैं । षोजै नित्य वृंदावन कौं अंत न पावै ॥ तरुणी रूप मनसासक्त चेतन्य जाग्रत जानौ । वेद गुप्ति जो जपै सो अनंत कियौ वषानौ । सीत उश्न सुष दुष नही निसवासर नही तास । इंद्री मन कौं सुष नही नष रवि जोति प्रकास । महा गोप्ति तें गोप्य रहसि तें रहसि एकांत रस । विनु जानैं रस रीति तिनसौं ना कहियैं जस । पद्मनासन यौं ध्यान सो नीकै चित धरई । माया बंधन छोड़ि वास विपिन मैं करई । श्री वृन्दावन वास सुरनर मुनि नित्त चाहै । श्रुति धरै जो ध्यान विधि संकर योगाहै । श्री हरिदास कृपा विना क्यों सूझै व्रज धूरि । श्री नरहरिदास वताई अपनी जीवनि मूरि । श्री नरहरिदास प्रताप तें भाषा कृत सो कीनौ । श्री रसिकदास कौं करि कृपा वास विपिन मैं दीनौं ॥ इति श्री रसार्णव पटल श्रुति अनंत संवादे ध्यान लीला भाषा संपूर्ण ॥

Subject—पृ० १—३—शृंगार रस के पद—पृ० ४—सिद्धांत की साखी। पृ० ५—सिद्धांत के पद। पृ० ६—७—रसिकदास जी का वृन्दावन निवास वर्णन। पृ० ८—भक्ति सिद्धान्त वर्णन। पृ० ९—पुण्य कर्म वर्णन। पृ० १०—पाप कर्म वर्णन, भक्ति कर्म वर्णन, अपराधों का वर्णन. साधु लक्षण वर्णन। पृ० ११—पूजा विलास वर्णन, सतगुरु लक्षण वर्णन, अछूत दोष वर्णन, पांच भाव वर्णन, उपासना भेद वर्णन, नित्यनेम वर्णन। पृ० १२—आसन की महिमा, बिना आसन दोष वर्णन। तिलक की महिमा वर्णन। पूजा विधि वर्णन। पृ० १३—सोलह सखियों का वर्णन, भोजन विधि वर्णन, शुद्धता का वर्णन, विश्वास का वर्णन, प्रगट पूजा वर्णन। पृ० १४—अन्य देवताओं का वर्णन, परिक्रमा फल, संध्या वर्णन, अपराध वर्णन, विना अर्पण दोष वर्णन, पृ० १५—श्री कृष्ण कृपा का वर्णन, पृ० १६—कुंज कौतिक वर्णन। कुंज वर्णन। पृ० १७—विरह और उसके भेद वर्णन, कुंज केलि वर्णन। पृ० १९—२० गुरु मंगल यश वर्णन। पृ० २१—हरि कृपा वर्णन। पृ० २२—बाललीला वर्णन। पृ० २३—कल्पवृक्ष वर्णन। पृ० २४—मंडप वर्णन। पृ० २५—श्री कृष्ण ध्यान वर्णन। पृ० २६—श्री कृष्ण चरण चिन्ह वर्णन। पृ० २७—श्री राधा ध्यान वर्णन। पृ० २८—श्री राधाचरण चिन्ह और ध्यान वर्णन। समाप्ति॥

No. 357(*c*). Vārāha Saṁhitā by Rasikadāsa of Bṛindābana. Substance—Country-made paper. Leaves—14. Size—8 × 7 inches. Lines per page—38. Extent—466 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Śyāma Kumāra Nigama, Rāe Barelī.

Beginning—अथ श्री बाराह संहिता लिख्यते॥ चैापाई॥

श्री नरहरि दास चरन सिरनाऊं श्रीराधा कृष्ण सुमरि गुन गाऊं
मैं भाषा कै। कियो विचार मति बुधि देहु करौं उच्चार॥ १॥
वन उपवन की कथा जु वरनैां सत आवर्ण कैां कीनैा निरनैां
निर्गुन सर्गुन कै। जुदो विस्तार सबतें परें सुनित्य विहार॥ २॥
पछियात कोउ भेद लगावै श्रीबाराह पृथ्वी सैां गावै

श्री प्रथ्व्योवाच॥ श्लोक॥ अनंत कोटि ब्रह्मांडे तद्वाह्यांतर संस्थिते॥ विष्णु स्थान नपरंतेषां प्रधानं प्रिय मुत्तमं॥ १॥ चैापाई॥

अनंत कोटि ब्रह्मंड हैं जिते बाहिर भीतर हरिपुर तिते॥ ३॥
विष्णु कै। प्रिय कैान सथान सबके परें कैान प्रधान्॥
कृष्णस्थान अद्भुत प्रिय होइ ताकें परैं और नहीं कोइ
महाप्रभु कृपा करि मोसैा कहैा यैां सुष सुनि अनंद अति लहैा॥

श्री वाराहउवाच ॥ श्लोक ॥ गुह्यादगुह्यतमं गुह्यं परमानंद कारकं ॥ अत्यद्भुतं रहस्यांतं रहस्य परमं शिवं ॥ २ ॥ चौपाई ॥

End—कृष्ण वर्ण चारि हैं भुजा संख चक्रादि भूषि धुजा
दक्षिण द्वारपाल प रहे श्री विष्णु स्यामवर्ण जो कहे

तत्र श्लोक ॥ कृष्णवर्ण चतुर्बाहं शंख चक्रादि भूषितं ॥ दक्षिणे द्वारपालं च विष्णुं कृष्ण वर्णकं ॥ २ ॥

जुग औतार चारि ये कहे द्वारपाल ते वृज के लहे ॥ १५ ॥ इति सप्तम आवरण ॥

सप्तम आवरण उलंघ जो आवै महल कुंज विहारी कौ पावै
श्री हरिदास करुना निधि रहि हैं । निजु दासी महल को करिहैं ॥ १६ ॥
श्री नरहरिदास चरन उर आनैं तव भाषा के पद करि जानैं ॥
निजु महल जो जान्यौं चाहौ तौ यह जस नीकैं अवगाहौ ॥ १७ ॥
बुद्धि उनमान यह जसु जु वषान्यौ सुद्ध असुद्ध अपराध न मानौं
श्रीबाराह धरनी सौ भाख्यौ श्री रसिकदास भाषा करि राख्यौ ॥२१८॥

इति श्रीवाराह संहितायां धरनी बाराह संवादे श्रीवृंदावन रहस्य पटल समाप्तं ॥

Subject—पृ० १—गुरु २—वंदना, मथुरा की प्रशंसा । ३—द्वादश वन और उनके भेद अष्टदल वर्णन । ४—षोडश दल वर्णन । श्री वृंदावन ध्यान वर्णन । ५—प्रभु ऐश्वर्य वर्णन । वसंत वर्णन । प्रभु रज महिमा वर्णन । ६—यमुना जी का वर्णन । निज मंदिर वर्णन । ७—नवकिशोर ध्यान वर्णन । प्रभु महिमा वर्णन । ८—सौरभ वर्णन । श्री राधा प्रताप वर्णन । ९—राधा कृष्ण कैशोर आवेश वर्णन । अष्ट सखी वर्णन । १०—सखी ध्यान वर्णन । गोपकन्या का वर्णन और भक्ति श्रुति कन्या का वर्णन । ११—देव कन्या वर्णन । मुनि कन्या वर्णन । महल के चार दरवाजे के अधिकारियों का वर्णन । १२—प्रथम आवर्ण, द्वितीय आवर्ण, तृतीय आवर्ण, दक्षिण द्वार का वर्णन, पूर्व द्वार का वर्णन, चतुर्थ आवर्ण । १३—पंचम आवर्ण, चूड़ामणि मंत्र प्रताप वर्णन, षष्ठ आवर्ण । १४—अवतार वर्णन । सप्त आवर्ण । समाप्ति ।

No. 358. Jugala-rasa-mādhurī by Rasikagovinda of Bṛindābana. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—10 × 5 inches. Lines per page—10. Extent—200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1972 or A. D. 1915. Place of

deposit—Nimbārka Pustakālaya, Bābā Mādhava Dāsajī Māhanṭa ka Mandira, Nānpārā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री हरिशरणम् ॥ श्री भगवन्निम्बार्क महा मुनिन्द्रायनमः ॥ अथ युगुल रस माधुरी लिष्यते ॥ जय जय श्री हरि व्यास देव दिन विदित विभाकर । भ्रम तम श्रम अघ औघ हरन सुख करन सुघर वर ॥ १ ॥ कृपासिंधु आनंद कंद दंपति रस भीने । मोसे मूढ़ अनेक पतित जिन पावन कीने ॥ २ ॥ जासु कृपा परसाद युगुल रस जस कछु गाऊं । सब रसिकन को हाथ जोरि पुनि सीस नवाऊं ॥ ३ ॥ श्रीवृंदावन सघन सरस सुख नित छबि छाजत । नन्दन बन से कोटि कोटि जिहि देखत लाजत ॥ ४ ॥ जहं खग मृग द्रुमलता बसत जे सब अविरुद्धि । काल कर्म गुन काम क्रोध मद रहित हित ॥ ५ ॥

End—निज सुख हित रस जुगुल माधुरी चरित बनायो । रसिकन हित सों दियो विमुख सो महा दुरायो । जे जन रसिक चकोर मीन चातक व्रत धारी । ते भले इहि मग चलै कोऊ नहिं अधिकारी ॥ जिनके यह रससार आनरस सुनो न भावै । ते नित ये सुख लहैं आन सपने नहिं पावै ॥ यह अगम अधार सुगम साधन किन होई । श्री गुरु श्री हरि व्यास कृपा विनु लहै न कोई ॥ रसिक गुविन्द सखि चरन सरन दिन दरसन पावै ॥ जय जय श्री गुरुदेव यहै सुख हगन दिखावै ॥ जैसे पारस परस लोह तन कंचन धरई । ज्यों चंदन को पवन नींब पुनि चन्दन करई ॥ श्री गुरु की महिमा अनंत कछु कहो न जाई । जिन धर सिर धरि वासुदेव लकरी पहुंचाई ॥ दोहा ॥ यह अगाध निधि मधुर रस छबि कछु कही न जाय । चटका चहै सब ही पियो पै इक बुन्द समाय ॥ अहै युगुल रस माधुरी सादर लव जु कोइ । प्रेम भक्ति सब सुख सदा श्री गोविन्द तिहि होई ॥ इति सम्पूर्णम् ॥

Subject—राधा माधव की स्तुति ।

No. 359. Premaratna by Ratanadāsa of Kāśī. Substance—Country-made paper. Leaves—51. Lines per page—17. Extent—850 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1844 or A.D. 1787. Date of manuscript—Samvat 1857 or A.D. 1800. Place of deposit—Bābū Padmabaksha Simha, Lavedapur, Bhinagā Raj, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ प्रेमरत्न लिष्यते ॥

सोरठा अभि गति आनन्द कन्द परम पुरुष परमात्मा ।
सुमिरि सुपरमानन्द गावत कछु हरिजस विमल ॥

पुनि गुरुपद सिरनाय   उर धरि तिनके वचन वर ।
कृपा तिनहिं की पाइ   प्रेम रतन भाषत रतन ॥
अगम उदधि मधि जाहि   पंगु चढ़हिं जिमि विनु तरणि ।
तैसिय रुचि मन मांहि   अमित कान्ह जस गान को ॥
पै मो मन विस्वास   पुरवत पूरन काम प्रभु ।
उर पुर सकल नेवास   निज जन को अभिलाष लषि ॥
लीला अगम अपार   वरन न पावै शेश शिव ।
जासु स्वास श्रुति चारि   तेहि गुण गण को कहि सकै ॥
अमित चरित्र विचित्र   यथा शक्ति गावत सकल ।
निज मुख करन पवित्र   भाषत हरि गुण गण विमल ॥

End—सोरठा ॥ निर्माणकाल   ठारह से चालीस   चतुर वर्ष जब विगत भो । विक्रम नृप अवनीस   भयो भयो यह ग्रंथ तव ॥ ३ ॥ महा माह के मांह   मति शुभ दिन शित पंचमी । गायो परम उछाह   मंगल मंगलवार वर । ४ । कह्यौ ग्रंथ अनुमान   त्रैशत अरसठ चैापई । तेहि अक्षर अठ जानि   दोहा सोरठ सोरठा ॥ ५ ॥ कासी नाम सुठाम   धाम सदा सिव को सुषद । तीरथ परम ललाम सुभद मुक्ति वरदाय क्षम ॥ ६ ॥ ता पावन पुर मांहि   भयो जन्म यहि ग्रंथ को । महिमा वरनि न जाय   सगुण रूप जस रस भयो ॥ ७ ॥ कृष्ण नाम सुख मूल कलिमल दुख भंजन भजत । पावहिं भवनिधि कूल   जाके मन यह रस रमहि ॥ ८ ॥ कुरुछेत्र सुभ थान   बृजवासी हरि को मिलन । लीला रस की खानि   प्रेम रतन गायो रतन ॥९॥ इति श्री व्रजवासी हरि मिलन कथा प्रेम रतन कवि रतनदास कृत सम्पूर्ण सुभ मस्तु कातृक मासे कृष्ण पक्षे चतुर्दस्यां रविवारे सम्पूर्ण ॥ ५७ ॥ श्रीराम राधाकृष्ण गैारीशंकर ॥

Subject—पृ० १—४ तक । प्रार्थना, कृष्ण जन्म वर्णन तथा कृष्ण का व्रज प्रेम वर्णन । पृ० ५—१७ तक । सूर्यग्रहण पर सब द्वारकावासी व कृष्ण का कुरुक्षेत्र नहाने आना और व्रज से नंदादि का गमन वर्णन—पृ० ८—१० तक । एक ग्वाल को द्वारिकावासी से भेंट होना तथा कृष्ण की खबर पाना तथा गोपियों का संकल्प स्मरणादि विरह वर्णन--पृ० ११—१५ तक । ब्रजवासियों का कृष्ण से मिलने जाना, वसुदेव देवकी कृष्णादि सब का प्रसन्न होना ॥ व्रजवासियों के भाग्य की प्रशंसा करना, सत्यभामा का कृष्ण से हंसी और व्यंग करना । पृ० १६—२१ तक । कृष्ण का नन्द यशोदा व्रजवासी राधा ललितादि से मिलन । पृ० २२—२५ तक नंद यशोदा व वसुदेव देवकी से मिलन ॥ पृ० २६—३० तक राधा आदि का रुक्मिणी सत्यभामा से मिलन और सत्यभामा की आलोचना । पृ० ३१—३३ तक । कृष्ण का रुक्मिणी से राधा का प्रेम वर्णन तथा राधा

को विरह व्यथा का वर्णन। पृ० ३३—३४ तक। गोपियों में कृष्ण का रहना तथा नन्द यशोदा व गोपियों का पूर्ववत् व्यवहार करना। पृ० ३५ से ३७ तक। कृष्ण से मिलने को ऋषियों का आगमन और वसुदेव देवकी का सत्कार करना। पृ० ३८। कृष्ण को ऋषियों का यज्ञ कराना और सब को वसुदेव देवकी का भोजन कराना। पृ० ३९—४९ तक। देवकी का कृष्ण को चलने को कहना, राधा और सत्यभामा का विवाद, कृष्ण का दो रूप धर व्रज व द्वारिका जाना। पृ० ५०—५१। ग्रंथ निर्माण वर्णन।

Note—यह प्रेमरत्न रत्नदास का रचा हुआ संवत् १८४४ का है। इसमें भूल से लेखक ने १२४४ कर दिया है। लिखने का संवत् ५७ दिया है स्यात् १८५७ होगा क्योंकि ग्रंथ पुराना लिखा हुआ है। राजा शिवप्रसाद ने इस में से कुछ भाग गुटका में उद्धृत किया है और उसे अपनी दादी रतनकुंवरि का रचा हुआ बतलाया है, यह राजा साहब की भूल प्रतीत होती है। इस प्रति में पृ० ३, ६, २२ व २७ नहीं हैं।

No. 360(*a*). Fatah Prakāśa by Ratana Kavi of Śrīnagara (Kamāun). Substance—Country-made paper. Leaves—134. Size—$10\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—9. Extent—1,300 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1910 or A.D. 1853. Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Simha Seṅgara, Village Kānthā, District Unāo.

Beginning—श्री गणेशायनमः।

थोंदि थरकोलो भरकोलो विधु कलपभाल ढरकोलो भोंहनि समाधि सरसति है। प्रानायाम सासन कलित कमलासन में विपति विनासन को बासना बर्सात है। सेंदुर भरयो भुसुंड मंडल समीप गजवदन के रदन की दुति यों लसति है। संध्या श्रौन सरद के नीरद निकट मानों द्वैज के कलाधर की कला विगसति है। १। गंग उतमंग आधे तरल तरंग भगो आधे भरी मांग मुकुताहल सुढंग को। आधे कंठ कालकूट कालिमा कलित आधे नीलमनि की ललित लपक उमंग को। आधे उर केहरि को आधे निरवेद आधे हाव भेद धरे राजत अभेद लीला शिवा शिव अंग को। २ अथ काव्य को प्रयोजन।

End—अतद्गुनालंकार दोहा—अप्रकृत गहै न प्रकृत जो गुन गहिरे अवगाहि। अलंकार कोविद सबै कहत अतद्गुन ताहि। २१९। यथा सवैया। नेह भरी अंखियान में राखें तऊ तुम रूखे लखे बिलखे से। ताप तये हिय मांह दये

परि सोरे उसीर के नीर रखे से। काहे को और को ओर मिलावत और को और है। चोप चखे से। जो कुल चालि नवै तुम्हैं चाहि कै चाहिये तासैां रहै। अनखे से। २२० ॥ व्याघातालंकार। लक्षण दोहा। ज्यों ज्यों हीं काहू कह्यो त्यौंही ताहि जुआन। करै अन्यथा कहत हैं सो व्याघात सुजान ॥ २२१। यथा कवित्त लाल बलि गई दई ऐसो क्यों करत गई हैं। ही बलि गई सो तौ विकल विलोकी बाल। तनु तपै तवा सो दवा सो देहरी लौं भयो ऊंवां सो अवासौ भयो विरह की ज्वाल जाल। रावरी रसाल उर धरै उठि बैठो हाल बूझत हवाल विह्वल भई तेही काल। कहा करौं प्यारे जू तिहारे वाही हार ही सों मैं करी निहाल ही पै मदन करी विहाल। २२२। इति श्रीनगर वासी फतेसाह नृपस्याज्ञया कविरतन विरचित फते साहि प्रकाशे साहित्य अर्थालङ्कार निरूपन नाम षष्टो द्योतक ग्रंथ संपून। संवत् १९१० वैसाख कृष्ण पंचम्यां गुरौ लिखितं ठाकुर प्रसाद त्रिपाठी स्वपठनार्थं वह्मार्पणमस्तु।

Subject—पृ० १ से ७ तक। गणेश वन्दना, शिवस्तुति, काव्य प्रयोजन, काव्य के कारण शक्ति, निपुणता और अभ्यास वर्णन, काव्य लक्षण, अभिधा लक्षण, व्यंजना भेद कथन, तीनो का लक्षण और उदाहरण वर्णन, अभिधा मूलक व्यंग वर्णन, योग, वियोग, विरोध में नाक तथा वेसरि तथा कौशिक काक उदाहरण। काल ध्वनि वर्णन, चकवों का उदाहरण, देश सामर्थ्य संयोग्यता का लक्षण व उदाहरण।

पृ० ८ से १३ तक। लिंग का उदाहरण लक्षण, अभिनय कथन, अगूढ़ व्यंग्य लक्षणामूलक व्यंजना व्यंजक। व्यंग वर्णन शब्द व्यंजक है। अर्थ व्यंजक वर्णन, देश काकु से भेद वर्णन। काक कथन करके उदाहरण। परसन्निधि विशेषण वर्णन, समय विशेष कथन देश विशेष का कथन, प्रस्ताव विशेष, वाच्य विशेष कथन में जयद्रथ का उदाहरण वर्णन, संदेह विशेष वर्णन, आदि ग्रहणोत्सव चेष्टारथः अर्थ व्यंजक चेष्टा वर्णन।

पृ० २१ से २९ तक काव्य भेद, उत्तम, मध्यम अधम वर्णन उदाहरण वर्णन। चित्र काव्य वर्णन, दो वीर रस के उदाहरण हैं। इस उद्योत के अंत में श्रीनगर वासी राजा फतह साहि मेदिनी साहि के पुत्र का उल्लेख है। उत्तम काव्य के भेद वर्णन, विवक्षितान्य पर वाच्य ध्वनि और अविवक्षित वाच्य, असंलक्षण क्रम विवक्षित अन्य परवाच्य ध्वनि वर्णन, रस निरूपण—भाव, विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी भाव वर्णन, स्थायी भाव वर्णन, विभाव, आलंबन उद्दीपन वर्णन, अनुभाव, स्वेद, थंभ वैवर्ण्य, स्वरभंग, कंप, रोमांच, प्रलाप, अश्रु, कटाक्ष वर्णन; निर्वेदादि ३३ व्यभिचारी भावों का वर्णन, रस भेद वर्णन, श्रृंगार, हास्य, करुणा, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत रस वर्णन, श्रृंगार लक्षण व संभोग वर्णन, वियोग

सिंगार, भूत प्रवास को हेतु वियोग वर्णन, भविष्य प्रवास हेतु को वियोग वर्णन, भवतु प्रवास हेतु का वियोग, अभिलाष हेतु का वियोग वर्णन, विरह हेतु का वियोग वर्णन असूया हेतु वियोग कथन, शाप हेतु का वियोग, इति शृंगार रस वर्णन, हास्य रस लक्षण—शिव विवाह का उदाहरण, करुणा रस का वर्णन, रौद्र रस का वर्णन राम—रावण युद्ध वर्णन, वीर रस में रावण का वर्णन, भयानक रस वर्णन और फतहसाहि की प्रशंसा का छन्द वीभत्स रस, फतहसाहि के युद्ध का वर्णन, अद्भुत रस वर्णन में फतहसाहि की प्रशंसा वर्णन, शांति रस में शिव का ध्यान वर्णन।

पृ० ३० से ३७ तक। भावादि ध्वनिकथन—देव विषयक भक्ति वर्णन, मुनि विषयक रति, राघव विनोद वर्णन, गुरु विषयक रति वर्णन, नृप विषयकरति वर्णन, फतह साहि की प्रशंसा का वर्णन, पुत्र विषयक रति कौशिल्या का विश्वामित्र के प्रति राम ले जाने पर वर्णन, व्यंग व्यभिचारी वर्णन, रसाभास कथन, नीलकंठ का विकृत कवित्त—भावाभास वर्णन, भावोदय वर्णन, भाव सबलता वर्णन, भाव शांति कथन, फतह सिंह की नायिका का मान मोचन वर्णन, भाव संधि असंलक्षक्रम व्यंग्य ध्वनि, संलक्षक्रम व्यंग ध्वनि वर्णन, शब्द, अर्थ और शक्ति से ३ भेद कथन, शक्ति भू प्रतिध्वनि, रूपोपमालंकार ध्वनि वर्णन, शब्द शक्ति भू प्रतिध्वनि विरोधालंकार ध्वनि वर्णन, पदभेद विरोधालंकार ध्वनि में फतहसाहि की प्रशंसा।

पृ०—३८-४४ शब्द शक्ति भू प्रतिध्वनिरूप व्यतिरेकालंकार वर्णन—शिव भक्ति वर्णन, उपमालंकार वर्णन, शब्द शक्ति भू प्रतिध्वनिरूप वस्तुध्वनि वर्णन, इति शब्द शक्ति भू प्रतिध्वनि वर्णन, अर्थशक्ति भू प्रतिध्वनि वर्णन, सभेद स्वतः संभवी, प्रौढ़ोक्ति कविकृत, वस्तु अलंकृत, व्यंग के १२ भेद वर्णन, अर्थ शक्ति भू स्वतः संभवी वस्तु से वस्तुध्वनि, अर्थ शक्ति भू स्वतः संभवी वस्तूत्प्रेक्षा वर्णन, अर्थ शक्ति भू स्वतः संभवी वस्तु से व्यतिरेकालंकार ध्वनि वर्णन, अथ कवि प्रौढ़ोक्ति सिद्धि वर्णन :—शक्ति भू वस्तुना वस्तुध्वनि वर्णन, कवि प्रौढोक्ति सिद्धार्थ शक्ति भू वस्तुनालंकार ध्वनि वर्णन; उत्प्रेक्षा में कथन, कवि प्रौढ़ोक्ति सिद्धार्थ शक्तिना अलंकारेणालंकार ध्वनि वर्णन। काव्य लिंग से विभावना की उत्पत्ति वर्णन, कवि कृत वक्तृ प्रौढ़ोक्ति सिद्धार्थ शक्ति भू वस्तुनावस्तु ध्वनि वर्णन। वस्तुना विभावनालंकार वर्णन, उत्तरालंकार ध्वनि, कवि काव्यलिंग विशेषोक्ति वर्णन, शब्द अर्थ शक्ति भू ध्वनि वर्णन, संलक्षणक्रम विवक्षित वाच्य ध्वनि वर्णन; अविवक्षित वाच्य ध्वनि वर्णन; अविवक्षित वाच्य ध्वनि भेद गण वर्णन, अर्थान्तरगत वाच्य पुनरुक्ति, विशेष नायकत्व वर्णन; अत्यन्तारिक्ता वाच्य वर्णन।

पृ० २४ से ५४ तक पद व्यंग से अलक्ष क्रम व्यंग वर्णन, उत्तम काव्य के ३५ भेदों का वर्णन। लक्ष क्रम व्यंग पद ध्वनि भेद से शब्द शक्ति मूल से वस्तु ध्वनि वर्णन; लक्ष-वस्तु के वस्तु ध्वनि का वर्णन और अतिशयोक्ति कथन तथा विरोधालंकार वर्णन, फतहसाहि की प्रशंसा वर्णन। अलंकार ध्वनि वर्णन। स्वतः संभाव्य व्यंग के भेद चतुष्टय कवि प्रौढ़ोक्ति सिद्ध व्यंग काव्य लिंगालंकारेण वस्तुना वस्तुध्वनि वर्णन, विरोधालंकार, कवि व्यंग, व्यतिरेकालंकार वर्णन, काव्य लिंगध्वनि वर्णन। अपन्हुति अलंकार ध्वनि वर्णन। अतिशयोक्ति चार संवाद वर्णन, पद विभाग रस के ५१ भेद वर्णन। मंडन मिश्र का सवैया, शृंगार रस वर्णन, व्यंग के भेद नाटक, साध आदि वर्णन, संघटित वाक्यतर वाक्य समुदाय वर्णन शृंगार और फतहसाहि प्रशंसा। काव्य भेद शंकरादि वर्णन। संशय ध्वनि शंकर वर्णन, संसृष्टि अंगांगी भाव एक व्यंजक प्रवेश त्रितय वर्णन गुणी भूत व्यंग के ८ भेद—अगुढ़, विगुढ़, संगिग्ध, प्राधान्य, वाच्य, सिद्धांत तुल्य-प्राधान्य, काक्वादि असुंदर वर्णन।

पृ० ५५—६४ तक—अगुढ़ वर्णन, निगुढ़, व्यंग कथन, संदिग्ध प्राधान्य, राघव विनोद से भिन्न-वक्तृक पद वाच्य गुणीभूत व्यंग वर्णन, तुल्य प्राधान्य गुणीभूत व्यंग वर्णन, काक्वादि गुणीभूत व्यंग वर्णन, अपसंग गुणीभूत व्यंग वर्णन। अपरांग व्यंग रसास्यत्सो अंग और व्यंग के भाव वर्णन फतहसाहि की प्रशंसा चित्र भेद वर्णन।

पृ० ६५—७३ तक। दोष सामान्य विशेष लक्षण। सामान्य दोष—वचन दोष वर्णन, कर्णकटु, अवाचक, हितारथ, अपनीत, अनुचितार्थ, नेयार्थ, अयुक्त, अश्लील निरर्थक, क्लिष्ट, ग्राम्य भव, विरुद्ध, संदिग्ध, अविमृष्ट, असमर्थ ये १५ दोष हैं. अवाचक दोष के तीन भेद वर्णन, वाचक पद शक्ति योग सापेक्ष्य वर्णन, वाचक पदशक्ति योग अनपेक्ष अवाचक दोष वर्णन, द्वितोय धर्म में वाचक पद शक्ति योग अवाचक दोष वर्णन, तृतीय धर्मदोष वर्णन, अप्रतीत दोष वर्णन, गंग सवैया वर्णन, अनुचितार्थ दोष व नेयार्थ दोष वर्णन, अप्रयुक्त दोष कथन, अश्लील वर्णन, व ३ भेद वर्णन, लज्जा व्यंजक अश्लील, अमंगल व्यंजक व जुगुप्सा व्यजक अश्लील वर्णन, क्लिष्ट दोष वर्णन, ग्राम्य दोष वर्णन, विरुद्ध मति वर्णन।

पृ० ७४—८४ तक। अलंकार वर्णन, उपमा—पूर्णोपमा, लुप्तोपमा वर्णन, सम्मादि पदलोपी वाचक लुप्तोपमा वर्णन, उपमान लुप्ता, धर्मवाचक लुप्ता, धर्म उपमान लुप्ता, फतहसाहि प्रशंसा कथन, धर्मवाचक उपमान लुप्ता, मालोपमा धर्म अभेद मालोपमा, रसनोपमा, धर्म अभेद रसनोपमा, अनन्वय लक्षण व, उदाहरण। उपमेयोपमा वर्णन, उत्प्रेक्षा, भेद, फल, हेतु, रूप वर्णन। संदेह

निश्चय पृ० ८५—१०५। वर्णन। रूपकालंकार वर्णन, समस्त वस्तु विषय, एक देशीय विवर्ति के दो भेद लक्षण उदाहरण वर्णन, फतह साहि को मजलिस वर्णन, मंगल रूपक वर्णन, परंपरित रूपक कथन, श्लेष वर्णन, फतह साहि की प्रशंसा वर्णन, राम प्रशंसा वर्णन, अपन्हुति वर्णन। दो भेद शाब्दो अर्थी वर्णन, सुंदर कवि का फतह साह की प्रशंसा में समासोक्ति वर्णन, निदर्शना व माला निदर्शना वर्णन, भूषण कृत फतह साहि की प्रशंसा वर्णन, अप्रस्तुत प्रशंसा वर्णन, ४ भेद सामान्य, विशेष, कार्य्य, कारण भेद से कथन, अप्रस्तुत प्रशंसा वर्णन, अतिशयोक्ति कथन, केवल उपमान वर्णन, श्रीनगर शोभा वर्णन, उपमान उपमेय वर्णन, अलौकिक अर्थ वर्णन, कार्य्य कारण से वर्णन, प्रतिवस्तूपमा, माला प्रतिवस्तूपमा, दृष्टान्त में फतहसाहि का यश वर्णन। दीपकालंकार वर्णन। एक कारक बहु क्रिया का दीपक, माला दीपक, तुल्य योग्यता, अप्रस्तुत तुल्य योग्यता, व्यतिरेकालंकार सभेद वर्णन। उत्कर्षापकर्ष व्यतिरेक के उदाहरण में फतह साहि की प्रशंसा वर्णन आक्षिप्तोपमा आक्षेपा-पृ० १०६—१३४ तक। लंकार वर्णन—विभावनालंकार, विशेषोक्ति, यथा संख्या, अर्थान्तरन्यास, में गढ़वार का वर्णन। विरोधालंकार, फतहसाहि वर्णन। सभेद वर्णन, स्वभावोक्ति, व्याज स्तुति वर्णन, फतहसाहि को विजय का वर्णन, सहोक्ति, विनोक्ति, परिवृत्त अलंकार वर्णन, काव्यलिंग में शत्रु स्त्रियों पर प्रभाव वर्णन। पर्यायोक्ति, उदात्त, सभा शोभा वर्णन, समुच्चय सभेद तृतीय में फतहसाहि के वैरियों का भयभीत होना वर्णन, पर्यायालंकार वर्णन विपरीत पर्याय वर्णन, उदारता कथन अनुमान अलंकार, फतहसाहि यश वर्णन, परिकरालंकार साभिप्राय विशेषण, काकोक्ति, परिसंख्या में शिवा की प्रशंसा, गढ़वार के राजा का वर्णन, ब्राह्मण भक्ति कथन, कारण, मालालंकार वर्णन। अन्योन्या-लंकार, सूक्ष्म, सार के उदाहरण में फतहसाहि के सुजस का कथन, असंगति, समाधि, सम, विषय, उसके ४ भेद वर्णन, अधिक प्रत्यनीक मीलित, फतहसाह यश कथन, एकावली वर्णन स्मरण, भ्रांति मान, इसमें फतहसाह का आतंक वर्णन। प्रतीप सभेद वर्णन। सामान्यालंकार। विशेष, वलि, विक्रम, हरिचंद से फतहसाहि को विशेष मानना, अन्यत कर्ण व्यंग कथन, तद्गुनालंकार, अतद्गुन, व्याघातालंकार वर्णन। इति।

No. 360(*b*). Fatah Prakāśa by Ratana Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—60. Size—8 × 6 inches. Lines per page—14. Extent—1,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Māhāvīra Baksha Siṁha, Tāluqedār,

Village and Post Office Kotharā Kalā̃, District Sultānpur (Oudh).

Note—Other details as in No. 360 (*a*).

No. 361(*a*). Bandī Mochana by Raghuvara Siṁha of Alīpura. Leaves—23. Size—8 × 7 inches. Lines per page—22. Extent—230 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṁvat 1904 or A. D. 1847. Date of manuscript—Saṁvat 1920 or A. D. 1863. Place of deposit—Ṭhākura Rāmadaurā, Village Miṭhaurā, Post Office Keśargañja, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री देवी जी सहाइ । श्री पोथी वंदी मोचन लिष्यते । अस्तुति । आदि भवानी सुर कल्यानी असुर संघारनी नाम जी । तीनि भुअन जहि मस्तक नावे, सो वरदायनी वाम जी आदि कुमारी सिघ असवारी जाहि भजे श्री राम जी । सो वरदाएनी त्रिभुअन दाता सिध करैा सब काम जी । महिमा वंदी अगम अपार मुष से बरनी नहिं जाई जी ॥ गाढ़ परै वंदी कह सुमिरै निश्चै करै सहाई जी ॥ वदी माई सुमिरैां मैं तोही सुमिरत गाढ़ छुटावहु मोही । नाम तुम्हार है वंदी माई । अपने जन पर होहु सहाई । तीन लोक सिरजा तुम जबहीं । नाम धराए वंदी तबहीं ॥ सुर गंधर्व नाग मुनि देवा सकल करै वंदी की सेवा । महिमा वंदी अगम अपारा । तीनी भुअन जासो उजिआरा ॥ जो वंदी कर धरै ध्याना । षाइ कपूर औा विलसै पाना ॥

End—तब प्रभु वहु विधि अस्तुति कीन्हा ॥ आसीरवाद वंदी तव दीन्हा ॥ बहुत सेवा तुम कीन्ह हमारी । लेउ अभे वर देउं विचारी । सुनहु नाथ एक वचन पुनीता । लेहु असीस जग होहु अजीता ॥ औारैा वचन सुनि लेहु हमारी । सो मैं कथा कहैां अनुसारी ॥ जहां परै प्रभु तुम कहं गाढ़ा । अस जानो तहं हम ठाढ़ा ॥ इतनी अस्तुति कर रघुनाथा । विनै देव सब भये सनाथा ॥ धन्य वंदी है गाढ़ उधारा ॥ अधम उधारे पतितन तारा ॥ जो यह कथा पढ़ै मनलाई ॥ ताकहं गाढ़ सकल मिटि जाई ॥ दोहा ॥ निश्चै गाढ़ उधार होई । धन्य तुम वंदी माई । जो यह कथा निसदिन पढ़ै सो वैकुंठही जाई ॥ इति श्री पोथी वंदी मोचन कथा संपूरन समापती पुस्तक लिषतं गंग नरायन पठनार्थ गिरधारी राम के जो कोई बांचै सुनै तिसको हमारी सीता राम । पंडित जन सो विनती मोरी । टूटा अक्षर बांचब जोरी । सुभ महीना सावन मासे किस्न पछे तिथ त्रिवोदसी संवत १९२० लिषा बांसबरेली की छावनी सदर बाजार में ।

Subject—पृ० १—देवी की महिमा, पृ० २—वंदी माई का ध्यान। पृ० ३—वंदी देवी को संसार में महिमा भजन से इच्छा फल प्राप्ति। पृ० ४—९ तक—कमलावती राजा का उदाहरण जिसने स्थिर होकर वंदी जी का ध्यान कर सब प्रकार के सुख संपति आदि प्राप्त किये राजा पुत्र न होने के कारण दुखी था सो पुत्र पाकर पूर्ण रूप से सुखी हुआ। राजा ने दान पुण्य अधिक किया वंदी के दरबार में जाना नाना प्रकार से पूजन करना पृ० १०—१८ तक। राम जी का अहिरावन का ले जाना, स्नान करा देवी पर बलिदान करने की तैयारी करना, राम जी का देवी का स्मरण करना, हनूमान का आना, अहिरावण का मारना आदि का वर्णन। पृ० १९—२३ तक—भगवान रघुनाथ जी का देवी सेवा में लगना, देवी का प्रसन्न होकर वरदान देना।

No. 361(*b*). Bandī Mochana by Raghuvara. Substance—New paper. Leaves—32. Size—8 × 6½ inches. Lines per page—18. Extent—252 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Kaithī Muḍiyā. Date of manuscript—Samvat 1953 or A. D. 189[illegible]. Place of deposit—Paṇḍita Yaśōdā Nanda Tiwārī, Village Kānthā, District Unāo.

Note—Other details as in No. 361(*a*).

No. 362. Sītācharitra by Rāyachandra (Kavi Chandra.) Substance—Country-made paper. Leaves—300. Size—10½ × 5½ inches. Lines per page—12. Extent—4,050 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1713 or A. D. 1656. Date of manuscript—Samvat 1862 or A. D. 1805. Place of deposit—Jaina Mandira (Baḍā) Bārābankī.

Beginning—श्री जिनायनमः ॥ दोहरा ॥ प्रनमैा परम पुनीत नर ॥ वरध मान जिनदेव। लोकालोक प्रकास तस करै सम किती सेव ॥ १ ॥ तस गनधर गैातम प्रमुष। धर्मवन्त धन पात जिन सेवत भवि जन सदा। विलै मोह तम राति ॥ २ ॥ चैापाई ॥ कवि बालक यह कोन्हैा ख्याल। हसैा माती बुधिवंत विसाल ॥ राम जानकी गुन विस्तार। कहै कैान कवि वचन विचार ॥ ३ ॥ देव धर्म गुरु कुं सिर नाइ। कहै चंद उत्तम जग मांइ ॥ पर उपकारी परम पवित्त। सज्जन भाव भगत कै चित्त ॥ ४ ॥ समकरि आदि अंत अक्षरा। असंात आदि अक्षर करि परा। प सुमिरैा परग्या दातार। सीता चरित चित करैा उदार ॥ ५ ॥ कर जुग जोरि नमैां जगदोस ॥ संतन कै मन अतिही जग्गोस ॥ पर उपकारी परम

दयाल ॥ परम पूज्य अति परम कृपाल ॥ ६ ॥ पंच परम गुरु परम प्रधान ॥ ए सुमिरो उर लक्षन आन ॥ जिन के भव अति हो तुच्छ रहै गुरु के वैन हिये जिन ग्रहै ॥ ७ ॥ दोहा ॥ पंच परम गुरु कौ नमो। मंगलोक सिव लोक। आपु समान भगत कौं करै तुरत तहकीक ॥ ८

End—दोहा:—जो जाणैं निज जांणतैं वहै जात पर वांण। जाण पणास्यैं जाणिये जाण पणै परधान ॥ × × × ×
चौपाई—किरिया करत करण सुष चितवै। सो वहु गत मै निकसै कित ह्वै। करणी करै अयस्यैं पूठै। तापर मोह मया कर तूठै ॥ करणी करै [illegible]रकता जानै। जोग किया माहैं चित ठानै ॥ रन मूढ़ ममता रस भोनै। कवहूं आपन आपै चोन्है ॥ अडिल्ल—सुनता है संतान धरम बुधा धारको। करै सुगत परवेस न पहुंचै नानको ॥ यामै धाषै नाहिं जिनेसुर यों कहै। तजै सकल परभाव निराश्रव सोल है ॥ पुनः ॥ कविवल कयै जानको यों यह व्याल है। हसै मतो बुध कोई जु बुधि विस्तार है ॥ यह पपनी अरदास्य मनोषा पास है। जैहै परम सुजान जिनै को दास है ॥ चौपाई ॥ संवत् सतरै तेरो तरै। मृग सिर ग्रंथ समापत करै। सुकल पष तिथि है पंचमी ॥ तादिन सरस कथा यह भणी ॥ ४३ इति श्री सीता चरित्र भाषा संपूर्ण ॥ संवत १८६२ ॥ मिती पौष कृष्ण १३ बुद्धे ॥

Subject—(१) पृ० १—१४ तक—सीता का वनवास। मंगलाचरण गणधरादि वंदना। प्रस्तावना—राम सीता के शील गुणादि कथन द्वारा पाठकों का ध्यान कथा की ओर आकर्षित करना। सीता का स्वप्न देखना। रामद्वारा उसका फल कहा जाना। कुछ निकृष्ट फल से सीता का विह्वल होना। राम का आश्वासन। नगर में सीता रावण संबंधी मिथ्या अपवाद राम को इस विषय की सूचना। लक्ष्मण का इस सूचना द्वारा क्रोधित होना और सीता के सती होने का वार वार कथन करना। राम का उन्हें समझा देना। सेना पति द्वारा सीता का वन निर्वासन करना। (२) पृ० १५—२२ तक—सीता की वन वोती कथा—वन में सीता का विलाप। वज्रजंघ से उसका मिलाप, उसका सीता को अपने साथ ले जाना और भगिनीवत् उसकी रक्षा करना। उसके वहां कुछ काल पश्चात् दो पुत्रों का उत्पन्न होना। एक क्षुल्लक द्वारा उनको युद्धादि विद्याओं में निपुण किया जाना। राजा वज्रजंघ ने यथा समय उनकी अवस्था व्याह योग्य समझ कर 'पृथ्वीधर' को उसकी कन्या के साथ इनके विवाह होने के लिये एक सम्मति पत्र भेजना, उसका क्रोधित होकर निषेध करना। दोनों दलों का युद्ध के लिये सुसज्जित होना। सीता पुत्र लवणांकुश का यह समाचार पाकर प्रथम से ही युद्ध कर शत्रु की सेना को पराजित करना। इस पर वज्रजंघ व सीता का संतोष।

(३) पृ० २३—८० तक—राम से सीता के युग पुत्रों से युद्ध। नारद का वन में सीता के पुत्रों से मिलना, उनका प्रणाम करना, नारद द्वारा राम लक्ष्मण का वैभव की साधारण चरचा करना, बालकों का उनसे उपर्युक्त सज्जनों का संपूर्ण चरित्र जानने की अभिलाषा प्रगट करना, उनका वर्णन करना, जनक भय निवारण तथा दक्खिन के महात्म्य सेन की कथा—जनकी स्त्री विदेहा से एक पुत्र और एक पुत्री का जुड़वा होना, पूर्वजन्म के वैर से एक देव का पुत्र को उठा ले जाना, फिर दया करके एक स्थान पर छोड़ देना, रथनूपुर के चन्द्रगति विद्याधर द्वारा उसका पोषण। एक दिन नारद का जनक के यहां आगमन, सीता का भय से घर में घुस जाना। इस पर नारद ने अपना अपमान समझ कर उससे वदला लेने के लिये सीता का चित्र खींच कर उसी बालक को-जो इसका भाई था और विद्याधर के यहां पाला गया था-दिखा कर मोहित करना, उसका सीता सीता रटना, विद्याधर का जनक से सीता का संबंध स्थिर करने के लिये प्रस्ताव, जनक का राम के साथ उसका बिवाह करने का प्रण कथन करना, इस पर विद्याधर की धनुष प्रतिज्ञा, राम द्वारा उसका पूर्ण किया जाना तथा विवाह होना, 'भामंडल' को भी सीता का अपनी भगनी होने का ज्ञान होना, अपने पूर्व भव का स्मरण आने पर, भामंडल, जानकी और राम से प्रेम संयुक्त मिलाप होना, चंद्रगति राजा का भामंडल को राज्य देकर मुनि होना, राजा दशरथ का अपने दिए हुए केकई के वर को काम में लाते हुए 'राम' को वनवास देना, भरत को गद्दी देना, राजा का मुनि होना, लक्ष्मण सीता का राम के साथ जाना, भरत का वन में आकर राम से मिलना, और लौटने की प्रार्थना करना, राम का उन्हें समझा कर लौटा देना, वहां से आगे को लक्ष्मण-सीता सहित राम का चलना, मार्ग में वज्रकरण राजा को सिंहोदर से अभय करना, लक्ष्मण के कई विवाह होना, वालखिल की कन्या से लक्ष्मण का विवाह।

(४) पृ० ८१—२५६ तक—रामचन्द्र लक्ष्मण का एक कृपणी ब्राह्मण की स्त्री के पास ठहरना, उसका इनके साथ प्रेम से व्यवहार करना, ब्राह्मण का कुपित होना, लक्ष्मण का उसे टांग पकड़ कर घुमाना, उसका भयभीत होना, राम का उसे छुड़ा देना और आगे चलना, एक देव का वन में राम से भेंट और उसके द्वारा राम का कुछ असम्मान, देव का अपने स्वामी से उनका सब समाचार जान कर उनकी सेवा करना उनके वर्सात के निर्वाह के लिये एक उत्तम सा भवन निर्माण करना, वहीं पर उस कृपणी ब्राह्मण का आगमन, राम का उसके साथ प्रेम निर्वाह, ब्राह्मण का मुनि होना, वीजापुर की कुछ बातें, विजय सिंह राजा का निमित से अपनी कन्या के संबंध में पूछना, उनका उसका लक्ष्मण के साथ विवाह होने की भविष्यवाणी, गुण माला—विजय सिंह की

पुत्री—का मुनि सुन कर कि मेरे पति लक्ष्मण वन में आवेंगे प्रथम से ही वन में वास करना और यथा समय वहीं राम लक्ष्मण का आना और लक्ष्मण के साथ वनमाला का विवाह होना। वनमाला के पिता विजय सिंह के यहां राजा अनन्तवीर्य्य का भरत पर चढ़ाई करने के लिये सहायता मांगने का पत्र आना, यह जान कर राम लक्ष्मण का स्वयं राजा से कह कर उसकी सेना लेकर वहां जाना, राजा को हरा के भरत को उसकी कन्या देने का प्रस्ताव करना, राजा का भरत को कन्या देना, रामचन्द्र का बीजापुर को लौटना, पद्मावती तथा लक्ष्मण विवाह, दंडक वन में रामचन्द्र का प्रवेश, एक मुनि द्वारा रामचन्द्र को ज्ञात होना कि ४००९ जैन मुनि कोल्हू में पेर डाले गये थे यही कारण इसके ऊजड़ होने का है, खरदूषण की स्त्री चन्द्रनषा का लक्ष्मण पर मोहित होना, रामचन्द्र और लक्ष्मण द्वारा उसको लज्जित किया जाना, राम लक्ष्मण से खरदूषण का युद्ध करके परास्त होना, सीता हरण। रावण का सीता से मन्दोदरी द्वारा प्रस्ताव करना, सीता का उसे इसके लिये धिक्कारना, उसका लज्जित होना, उधर राम की सुग्रीव से भेंट और उनके द्वारा साहसवली विद्याधर से उसकी स्त्री की प्राप्ति। अपनी विषय वासना में राम के कार्य्य का सुग्रीव को विस्मृत हो जाना, लक्ष्मण द्वारा उसका पुनः स्मरण दिलाया जाना, सीता की खोज को जाना, रतनजटी विद्याधर द्वारा उसका संपूर्ण समाचार पाना और ज्ञात होना कि वह रावण द्वारा हरी गई है। इस पर विद्याधरों का भयभीत हो कर राम से कहना कि सीता का ध्यान त्यागिये और जितनी चाहिये विद्याधर कन्याओं से विवाह कीजिये, राम का न मानना और कहना कि "अच्छा तुम कुछ सहायता न करो हमे केवल मार्ग बता दो हम अकेले उससे लड़ेंगे।" इस पर विद्याधरों का 'कोटि शिला' दिखा कर यह कहना कि जो इसे उठालेगा वही रावण को जीत सकेगा। लक्ष्मण का उसे उठा लेना। विद्याधरों का उनके बल का परिचय पाकर राम की सहायता करना, हनुमान द्वारा सीता की खबर आना लंका पर चढ़ाई करना। लक्ष्मण रावण युद्ध, रावण का वध। सीता की प्राप्ति। उनका अयोध्या को गमन। उधर अयोध्या के लोगों का राम वियोग में दुखित होना। सीता को पाकर राम का जिन स्तुति करना। राम का विभीषण द्वारा अभिषेक किया जाना। वहां पर बहुत दिनों तक सानंद राम का राज्य करना।

(५) पृ० २५७—२८२ तक—एक दिन राम की सुधि करके कौशल्या का व्याकुल होना, नारद का वहां पर अकस्मात आना। दोनों का संवाद, नारद का राम का समाचार लेने लंका जाना, लंका में जाकर एक दिन 'रावण' का कुशल पूछने पर उनकी दुर्दशा होना और बंदी अवस्था में राम के निकट आना

पीछे नारद द्वारा माता के रोने पीटने का समाचार राम का सुनना और उन्हे का मोह उत्पन्न होना। विभीषण का राम मातु के पास उनके पुत्रों का समाचार भेजा जाना और अयोध्या आगमन की सूचना। माता की प्रसन्नता और दान। नगर में बधाईव जना। लक्ष्मण का राम से अपनी ब्याही हुई सभी स्त्रियों को बुलाने के लिये आज्ञा मांगना। राम का प्रसन्नता पूर्वक आज्ञा देना। दूतों द्वारा सभी स्त्रियों का बुलाया जाना। और इन सब के साथ अयोध्या आगमन। अयोध्या में भरतादि सहित सभी माताओं का आनन्द मनाना। अयोध्या की उस समय की शोभा का वर्णन। भरत का अपने को राजपाट से घृणा दिखाना, और भोग विलास से उन्मुक्त होने के लिये राम से प्रार्थना करना। राम तथा भरत संवाद। एक दिन राम के एक हाथी का बिगड़ना और भरत को देख कर उसका जाति स्मरण होना। दाना घास न खाना। कुल भूषण और देश भूषण मुनियों द्वारा राम को यह समाचार ज्ञात होना कि इनका और भरत का पूर्व संबंध है, इससे भरत को वैराग्य उत्पन्न होना। उनके वैराग्य की दशा, राम का विभीषण आदि को विदा कर सब को राज्य बांटना। शत्रुहन को मथुरा का राज्य दिया जाना। मधु की हार। नगर के कुछ अविचारी लोगों द्वारा सीता के अपवाद का समाचार राम पर पहुंचने और उनके वनवासादि की कथा सुनाना। सीता के दोनों बालकों का क्रोधित हो कर राम पर चढ़ाई करना।

(६) पृ० २८३—३०० तक—दोनों दलों में युद्ध होना। बालकों के विचित्र रण कौशल को देख कर राम लक्ष्मण का आश्चर्यान्वित होना। अन्त में पारस्परिक पहिचान होना। युद्ध की निवृत्ति सिद्धारथ द्वारा राम को सीता निर्वासन विषयक उपालंभ, राम का हंस कर उनके आदेश शिरोधार्य कर सीता को बुलाना। सीता का अयोध्या में आगमन। सीता के सतीत्व की अग्नि द्वारा परीक्षा। देव शक्ति से अग्निकुंड का तालाब हो जाना और उसका उमड़ कर वह चलना। दर्शकों के डूबने का भय होना। सीता से विनती करना, तब पानी का कम होना। सीता का जल से निकल कर विरक्त होना, राम का उन्हे इस कार्य से बहुत रोकना और उनका न मानना। अनेक ज्ञान-गर्भित वाक्यावली द्वारा लक्ष्मणादि सभी राम के सहयोगियों को उपदेश। सीता का आर्यिका हो जाना, कवि द्वारा सीता का कुछ गुणानुवाद, कवि का ग्रंथ का आधार वर्णन करते हुए कुछ थोड़ा सा अपना कथनः—

किया ग्रंथ रविसेन ने, रघुपुराण जिय जाण।
वहै अरथ इस में कह्यौ राइचंद उर आण॥

कथा के पाठकों को फल प्राप्ति। ग्रंथ समाप्ति तथा लेखन काल।

No. 363(*a*). Bhīśma Parva by Sabala Siṁha Chauhāna Substance—Country-made paper. Leaves—80. Size—8 × 5 inches. Lines per page—28. Extent—1,220 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1718 or A. D. 1661. Date of manuscript—Samvat 1919 or A. D. 1862. Place of deposit—Ṭhākura Umarāwa Siṁha, Village Mānikapur, Post Office Bisawā̃, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ चैापाई ॥ ० गुरु गोविन्द के चरण मनावैां । जेहि प्रसाद उत्तम गति पावैां ॥ करि प्रनाम रघुपति के पायन ॥ चारि वेद जाके गुन गायन ॥ अवधनाथ सीतापति सुंदर । दीनबंधु रघुवंस पुरंदर ॥ शिव सनकादि अंत नहि पावै । नर मुष ते केहि विधि गुन गावै ॥ सुक सारद नारद से पाठक । हनूमान गावै गुन नाटक ॥ वालमीक रामायन कर्ता । राम चरित्र पाप के हर्ता ॥ अष्टादश पुराण श्री भारथ । भाष्यो व्यास ग्यान पुरषारथ ॥ दोहा ॥ परासर ते जन्म है व्यास देव रिषिराज । जा मुष ते भाषा प्रगट भा कवि कुल सिरताज ॥ चै।० ॥ गुन गनेस सारद के पायन । करैां प्रनाम होहु सुभ दायन ॥ संवत सत्रह से अट्टारहि । तिथि पूर्णा मंगल के वारहि ॥ माघ मास मा कथा विचारी ॥ अवरंग साहि दिल्लोपति धारी । सब पुरान पर नायक भारथ । जामे कुरु पांडव पुरुषारथ ॥ व्यास देव भवभार निवारन । भारथ रचेउ जगत के तारन ॥ दे।० ॥ जोगजुद्ध रस मंत्र सब भारथ मोहै सर्व सवल सिंह चैाहान कहि भाषा भीषमपर्व ॥

End—पांडव मन आनंद दल जोति चले रन ठान । अर्जुन के रथ सारथी सुन्दर श्री भगवान ॥ चै।० ॥ गोधन सहस देहि जो दानहि जा फल सब तीरथ असनानहिं जो फल संभुनाथ पद परसे । जो फल होइ साधु के दरसे ॥ जो फल व्रत एकादसि कीन्हे । जो फल होइ धरनि के दीन्हे जो फल रन महं प्राण गवाये । जो फल होइ ब्रह्म के ध्याये ॥ जो फल कोटि विप्र पद परसे । सो फल भारथ कहे सुने से ॥ व्यास देव भारथ के करता । बाढ़ै पुन्य पाप के हरता ॥ दे।० ॥ राम कृष्ण गोविंद हरि कीजिय सदा वषान । भाषा भीषम पर्व कह सबल सिंह चैाहान ॥ इति श्री महाभारते भीषमपर्वे भाषा कृते अष्टादसोध्याय १८ समाप्तं संवत १९।१९ शाके १८८४ माघ मासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां शनिवासरे लिष्यते इदं पुस्तकं गनेस पंडित श्रीराम चन्द्रायनमः ॥ श्री राधाकृष्ण जू सहाइ सदा ॥ श्रीराम ॥

Subject—भीष्म का युद्ध और उसकी महिमा आदि का वर्णन । अंत में महाभारत के गाने पढ़ने सुनने सुनाने का फल और लेखन काल ।

No. 363(*b*). Bhīshma Parva by Sabala Siṁha Chaubāna. Substance—Country-made paper. Leaves—52. Size—12 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—1,170 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṁvat 1923 or A. D. 1866. Place of deposit——Ṭhākura Jaibaksha Siṁha, Village Miṭhaurā, Post Office Keśarganja, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ भीष्मपर्व लिष्यते ॥ चैापाई ॥ गुरु गोविन्द के चरण मनैये । जेहि प्रसाद उत्तम गति पैये ॥ कहैा नाम रघुपति के पावन । चारि वेद जाके गुन गायन अवधनाथ सीतापति सुन्दर । दीनबंधु रघुबंस पुरंदर ॥ सिव सनकादिक अंत न पावहिं । नर मुषते केहि विधि गुन गावहिं ॥ महिमा निगम कहत नहिं आवे । सेस सहस मुषते गुन गावे ॥ सुक सारद नारद से पाठक ॥ हनोमान गावत गुन नाटक । वालमीक रामायन कर्ता । राम चरित्र पाप के हर्ता ॥ अष्टादश पूरन श्री भारथ । भाषेउ व्यास ज्ञान पुरुषारथ ॥

End—पारथ नहिं जीते अपने बल । जो नहिं कृष्ण करै रन में क्षल । जहं भीष्म सर सज्या लीन्हों । तंबू एक बड़ो षड़ो कै दीन्हो । गंगासुत जब कीन्हो मैानहिं धर्मराज आये तब भैानहिं ॥ दो० ॥ पांडव दल आनंद भे जीति चले मैदान । अर्जुन के रथ सारथी आप अहै भगवान ॥ धन साहस्र देइ जो दानू । कासी बैठे सुने पुरानू । जो फल होई सिद्धि के परसे । जो फल होइ संभु के दरसे । जो फल होइ एकादसि कीन्हे । जो फल होइ भूमि के दीन्हे । सो फल है रन प्रान गंवाये सो फल होई ब्रह्म के ध्याये ॥ सो फल कोटिन विप्र जिवाये । सो फल होइ अर्थ सुनि पाये । व्यास देव भारथ के करता । नासे पाप पुन्य के बढ़ता । दोहा कृष्ण विष्णु गोविंद प्रभु कीजै सदा बषान । भीष्मपर्व भाषा रची सबल सिंह चैाहान ॥ इति श्री महाभारथे भीषम पर्व भाषा कृते । अष्टादसोध्याय श्री श्री महापुराणे भाषा पर्व सम्पूर्णम् । फागुन मासे शुक्लपक्षे तिथैा परिवा संवत १९२२ लिषं जंगबहादुर रैकवार जो देषा सो लिषा मम दोष नाहीं । साध संत कै वंदगी ब्रह्म के प्रनाम जो कोई बाचें प्रेम ते ताको सीता राम ।

Subject—महाभारत के भीष्म पर्व की कथा ।

No. 363(*c*). Bhīshma Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—68. Size—10¼ × 6 inches. Lines per page—19. Extent—1,300 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of

Composition—Samvat 1718 or A. D. 1661. Place of deposit—Bābū Padma Baksha Siṁha, Lavedapur, District Bahrāich.

Note—आदि अंत के अवतरण No. 363 (*b*) के अनुसार। अंत में कार्तिक कृष्णपक्षे एकादश्यां तिथौ चन्द्रवासरे पुस्तकं समाप्तम् ॥ शुभ संवत् ॥ मासे ॥ शाके ॥ श्रीकृष्ण को जै। इति

Subject—पृ० १—९ तक—कौरव पांडव की सेना की तैय्यारी और अर्जुन का वैराग्य, कृष्ण का समाधान करना, फिर भीष्म से आशीर्वाद पाना।

पृ० १०—१६ तक—दोनों सेना का युद्ध वर्णन, अर्जुन और भीष्म के युद्ध का वर्णन।

पृ० १७—२२ तक। शंख का युद्ध के लिये तैय्यार होना। भीष्म शिखंडी युद्ध वर्णन। अर्जुन का कौरव सेना से प्रबल युद्ध करना। शंख और द्रोण का युद्ध वर्णन। युद्ध विश्राम।

पृ० २३—३२ तक। धृष्टद्युम्न और उत्तरा का द्रोण से युद्ध वर्णन। अर्जुन व भगदत्त युद्ध वर्णन। भगदत्त का वध।

पृ० ३३—५० तक। सोमसुत और अलम्ब युद्ध वर्णन। लाक्षागृह वर्णन। अर्जुन व भीष्म का युद्ध। भीष्म का सब को निश्शस्त्र करना। हनूमान व भीष्म संवाद।

पृ० ५१—६८ तक। भीष्म का कृष्ण को अस्त्र गहवाने की प्रतिज्ञा करना और उसका पूरा होना। अर्जुन का प्रबल युद्ध। धर्मराज और कृष्ण का भीष्म के समीप जाना और मृत्यु ज्ञात करना। शिखंडी व भीष्म का युद्ध। अर्जुन का बाण मारना और भीष्म का हत होना तथा अर्जुन का शरशय्या बनाना। कथा का फल वर्णन।

No. 363(*d*). Śalya Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—10 × 5 inches. Lines per page—11. Extent—265 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1902 or A.D. 1845. Place of deposit—Mahārāja Bhagawān Baksha Siṁha, Rājā of Amethī, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सैलपर्व ॥ दोहा ॥ व्यासदेव पद बंदिये जा मुष वेद पुरान ॥ सैलपर्ब भाषा रचै सबलसिंह चौहान ॥ जूझे करन

जक जस पाये ॥ दुर्योधन अस वचन सुनाये ॥ हाहा मित्र परम सुषदायक ॥ महा बुद्धि करवे के लायक ॥ क्षत्रीधर्म मित्र तुम पाला ॥ यह सब दोष हमारे भाला । वल से सके न अर्जुन मारन ॥ छल से वधे जगत के तारन ॥ अब काको सेनापति करिये ॥ जाके वल भारथ में लरिये ॥ कृतब्रह्मा तब कहेउ विचारी ॥ राजा सुनिये बात हमारी ॥ जब पंडौ निज देसै आये । कै वसिष्ट जदुनाथ पठाये ॥ मांगे पांच गांउ नहिं दीन्हें ॥ सब विधि पांडु निरादर कीन्हे ॥ जदुपति कहेव न कीन्हेव राजा । तब श्रीपति यह भारथ साजा ॥ अब करुना कीजे केहि काजा ॥ सहसा सदा बूझिये राजा ॥ धीरमान नृप परम सयाने ॥ तिन कर गुन नहिं जात बषाने ॥ सदाधर्म अपने मन राषे ॥ सत्य छाड़ि असत्य न भाषे ॥

End—पृथीपति दुर्योधन लक्ष क्षत्रधर साथ ॥ लक्ष्मी जाके कांध पर तेहि विधि कीन्ह अनाथ ॥ तब नृप मन महं कीन्ह विचारा ॥ पैरौ रुधिर जाउ अब पारा ॥ अत्र सनाह षोलि सब डारे ॥ लैकै गदा नृपति पगुढारे ॥ यहि विधि भारथ भयो महारन ॥ परी लोथि पर लोथि हजारन ॥ वार वार नहिं सूझै काहू ॥ रुधिर नदी अति वहिय अथाहू ॥ पैरत नृप संका नहिं मन मे ॥ वहत लोथि अभिरत है तन में ॥ कवहुंक केश चरन अरुझावे ॥ पैरत थके थाह नहिं पावे ॥ जहां द्रोण गडे वह षंभा ॥ अभिरेव तहां धरे कर थंभा ॥ गहि के षंभा किये विश्रामा ॥ जिय में सोच जाउ किमि धामा ॥ पकरे लोथि वहुत मझियारा ॥ वूढ़ि जग्त सहि सकत न भारा ॥ विधि वस एक लोथि तब गहेऊ ॥ बूड़ो नहीं भार तिन सहेउ ॥ चली लोथि सो रुधिर हिलोरति ॥ अभिरत मृत्यु गदा सिर फोरत ॥ वहुत कष्ट ते उतरेउ पारा ॥ तव अपने मन कीन विचारा ॥ दोहा ॥ कैान वीर की लोथि यह दियो निवहि निदान ॥ सैलपर्व एहि विधि कहेव सबल सिंह चैाहान ॥ इति श्री हरि चरित्रे महाभार्थे सवलपर्व भाषा कृत दुतियेमो अध्याय ॥ २ ॥ मिती वैशाष सुदी ॥ ६ ॥ संवत ॥ १९ ॥ २ ॥

Subject—महाभारत के शल्यपर्व की कथा।

No. 363(*e*). Śalya Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—New paper. Leaves—15. Size—$10\frac{3}{4} \times 6$ inches. Lines per page—18. Extent—200 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1724 or A.D. 1667. Place of deposit—Babū Padma Baksha Siṁha, Lavedapur (Bhinagā), District Bahrāich.

Note—आदि अंत No. 363(*d*) के अनुसार।

No. 363(f) Sabhā Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—35. Size—$9\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—20. Extent—1,750 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1727 or A. D. 1670. Date of manuscript—Samvat 1931 or A.D. 1874. Place of deposit—Ṭhākura Jadu Nātha Baksha Siṁha, Hariharapura, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सभापर्व कथा महाभारत लिख्यते ॥ दोहा ॥ सुमिरि व्यास गनपति चरन गिरिजा हरि भगवान ॥ सभापर्व भाषा रचौ सबल सिंह चौहान ॥ सत्रह से सत्ताइस संवंत सुध मलमास । नौमी गुरु अरु पक्ष सित भय यह कथा प्रगास ॥ चौ० ॥ अब नृप कथा सुनहु भय जोई । तव हित हेतु कहत मैं सोई ॥ कुरु पांडव सोहहिं दोउ आछे । जस समाज बरनत मैं पाछे ॥ इन्द्र प्रस्थ दोउ बसै सुखारो ॥ मति दिग नंद राज्य अधिकारो ॥

End—लखि कुंभो कच्च भूप हय आतुर वाहन लाग । गर्जि गजि उच्चाट कर गयो नागपुर त्याग ॥ सबलसिंह सुनि कहि विदुर मुख को ए नाथ हलवाल । होई उदास सकुणो करन वोलि लीन ततकाल ।

इति श्री महाभारत सभापर्वे भाषा कृते पांडव वन गमनो नाम सप्तमोऽध्याय ।

माघमासे शुक्ल पक्षे तिथौ प्रतिपदायां शुक्रवासरे लिख्य दुर्गाप्रसाद संवत् १९३२ राम राम ।

Subject—पृ० १—१७ तक—निर्माण संवत्, प्रार्थना, शिशुपाल बध ।

पृ० १८—सकुनि दुर्योधन संवाद ।

पृ० १९—२०—कुरुओं को धृतराष्ट्र से भेंट ।

पृ० २१—२४—जुआ होना और पांडव का हारना ।

पृ० २५—२९—सभा में द्रोपदी आदि का संवाद ।

पृ० ३०—३१—भीम प्रतिज्ञा ।

पृ० ३२—३५—पांडव बन गमन ।

No. 363(g). Sabhā Parva by Sabala Siṁha. Substance—Country-made paper. Leaves—55. Size—11 × 7 inches. Lines per page—24. Extent—1,485 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1727 or A.D. 1670. Date of manuscript—Samvat 1936

or A.D. 1879. Place of deposit—Ṭhākura Jai Baksha Siṁha, Miṭhaurā, Post Office Keśarāgañja, District Bahrāich (Oudh).

Note—उद्धरण व विषय No. 363 (*f*) के अनुसार ।

तिथि—संवत १९३६ शाके १८०१ चैत्र मासे कृष्णपक्षे तिथौ दुइज सोम-वासरे हस्त नक्षत्रे लिषतं दलजोत सिंह रैकवार के ।

No. 363(*h*). Drōṇa Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—32. Size—12½ × 5¾ inches. Lines per page—22. Extent—1,100 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—Bābū Padma Baksha Siṁha, Lavedapur, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ द्रोनपर्व लिष्यते ॥ चैापाई ॥ श्री गुरु चरन दंडवत करिये । जा प्रसाद भवसागर तरिए ॥ वन्दैा रामचन्द्र रघु नन्दन महावीर दसकंध निकंदन ॥ दीरघ बाहु कमल दल लोचन ॥ गनिका ब्याध अहिल्या मोचन ॥ ब्यास देव कलि पातक हरता । चारिवेद श्री भारथ करता ॥ श्रोता जनमेजय गुन सागर । महावीर कुरु वंस उजागर ॥ उत्तम नगर चंद्रगढ़ साजा । भूपति मित्रसेन तहं राजा ॥ दोहा ॥ रघुपति चरन मनाइ कै ब्यास देव धरि ध्यान । द्रोन पर्व भाषा रचत सबल सिंह चैाहान ॥ १ ॥ चै० ॥ तब भीषम सर सेज्या लीन्हेउ । दुर्जोधन तब अति दुख कीन्हेउ ॥

End—दीनबंधु जाके रथ सारथ । मारि सकै को रन मैं पारथ ॥ कुरुपति लरत सैनबल कारन । मेरे बल तुमही जगतारन ॥ सो सुनि कृष्ण बहुत सुख माने । नृप कैां परम साधु करि जान्यैां ॥ दुर्योधन तब करन बुलायो । .... । तुम बल हम यह भारथ ठाना । मित्र सो समै आइ नियराना ॥ मुकुट बांधि सैनप पै लरिए ।...............। सो सुनि करन कहन असलागे । दुर्योधन राजा के आगे ॥ नृप निरषहु मेरो पुरुषारथ । पंडो सैन बधो रन पारथ ॥ दुइ दिन रन मेरो सिर भारा ॥ निश्चै अर्जुन करैां संहारा ॥ सो सुनि दुर्याधन सुख पायो । सैनापति करि मुकुट बंधायो ॥ दोहा ॥ द्रोनपर्व भाषा रचो सबल सिंह चैाहान । पंडव के रक्षक सदा भक्त वस्य भगवाना ॥ इति श्री महाभारते द्रोनपर्व भाषा कृते अष्टमो अध्याय ८ संपूर्ण मस्तु ॥ पूसमासे कृष्ण पछे द्वादस्यंग तिथैा सम्बत् १९०० श्री राम ॥

Subject—पृ० १—१२ तक । भीष्म के मारे जाने पर द्रोण को सेनापति बनाना और चक्रव्यूह युद्ध व अभिमन्यु वध वर्णन ।

पृ० १३—३२ तक—अर्जुन को जयद्रथ को मारने की प्रतिज्ञा, दुर्योधन से सलाह, द्रोण का रक्षा करना, कृष्ण का छाया कर धोखा देना और अर्जुन का जयद्रथ को मारना। युधिष्ठिर का कृष्ण की स्तुति करना।

No. 363(*i*). Drōṇa Parva by Sabala Siṁha. Substance—Country-made paper. Leaves—54. Size—12 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—1,136 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1727 or A. D. 1670. Date of manuscript—Samvat 1932 or A. D. 1875. Place of deposit—Ṭhākura Jaya Baksha Siṁha, Village Miṭhaurā, Post Office Kesaragañja, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—अथ द्रोनपर्व लिष्यते ॥ चौ० । श्री गुरुचरन दंडवत करिये। जेहि प्रसाद भवसागर तरिये। वन्दौ रामचरन रघुनंदन महावीर दसकंध निकंदन। करि कर वाह कमल दल लोचन। गनिका व्याध अहिल्या मोचन॥ व्यास देव कलिकल्मष हर्ता। चारि वेद औ भारत कर्त्ता॥ श्रोता जन्मैजै गुण सागर। महावीर कुरवंस उजागर॥ नृप सोइ पाइ रिषेसुर ग्यानो। भाषत महा सुधा समवानो॥ सत्रह सै सत्ताईस जानो। सो संवत यहि भांति बषानो। शुक्ल पक्ष अश्वनि के मासहि। तिथि षष्टी कियो कथा प्रगासहि। उत्तम नगर चंद्रगढ़ छाजत। भूपति मित्रसेन तहं राजत। रघुपति चरन मनाइ कै व्यास देव धरि ध्यान। द्रोणपर्व भाषा रचो सवल सिंह चौहान॥

End—चौ० । सो सुनि द्रोन पुत्र कियो क्रोधहिं। पांडौ सहित वंधु सब जोधहिं॥ धृष्टद्युम्न मारौ मैदानहिं। तौ पित्रहि देहौं जलपानहि॥ यह कहिकै कछु भासउ वैनहिं॥ काल्हि करन सेनापति सैनहिं॥ दुइ दिन करन सेन के रच्छक। महामार करिहैं परतच्छक। सुरपति सकति लियो या कारन। करन वीर अरजुन कर मारन। जो अर्जुन को देषन पैइहै। वज्र फांसते कौन वचैहै। दोहा॥ धर्मराज यहि विधि कही कहिये आनंद स्याम। पांडौ संकट परै जब तुम रच्छक सुषधाम॥ चौ०॥ दीनवंधु जाके रथ सारथ। मारि सकै को रन में पारथ॥ कुरुपति लरत सैनवल कारन। मेरे बल तुमही जगतारन॥ सो सुनि कृष्ण बहुत सुष मानो। नृप को परम साधु करि जानो। दुर्जोधन तव करन बोलाये। करि आदर आसन बैठाये। तव बल मैं भारथ रन ठानो। सिर सो समै आइ नियरानो। मुकुट वांधि सेनापति हूजै। प्रातहि जैत पत्र नृप लीजै॥ सो सुनि करन कहन यह लागे। दुर्जोधन राजा के आगे॥ नृप देषो मेरो पुरुषारथ। पांडौ सैन बधौं नृप

पारथ ॥ दुइ दिन रन मेरं सिर भारहिं । निहचै अर्जुन करैं संहारै ॥ सो सुनि दुर्जोधन सुष पायो सैनापति के मुकुट बंधायो ॥ दो० ॥ द्रोनपर्व भाषा रचो सबल सिंह चैाहान पांडव के रक्षक सदा भक्तवस्य भगवान । इति श्री महाभारते द्रोन पर्व भाषा कृते सप्तमोध्याय सम्पूर्णम् लिषा दलजीत सिंह रैकवार संवत १९३२ सावन मासे कृष्णपक्षे तिथैा द्वादस्यां गुरुवासरे शाके १७९५ राम राम ।

Subject—महाभारत के द्रोण पर्व की कथा ।

No. 363(*j*). Gadā Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—$9\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—16. Extent—250 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṁvat 1727 or A. D. 1670. Date of manuscript—Saṁvat 193 or A.D. 1874. Place of deposit—Ṭhākura Jadunātha Baksha Siṁha, Hariharapura, District Bahrāich.

Beginning—चैा० ॥ गदापर्व अब करत बखाना । दुर्योधन मन में अनुमाना ॥ अंधकार में गयो न चीन्हा । मुकुट चैाथ मुख निरखै लीना ॥ लछन कुंवर चीन्हि जब पायो । करुना करत नृपति मनलायो ॥ जूझे पुत्र हमारे कामहि । कहो कहा जाये कहि धामहि ॥ ऐसे तुम सपूत संसारा । मुए परे मोहि पार उतारा ॥

End—भारत सुने अंग फल सको कहो नहि जाय । अंत वास बैकुंठ लहि दरश देहु जदुराइ ॥ इति श्री महाभारते गदापर्व भाषा कृते सबल सिंह कृतैा समाप्तम् शुभ मस्तु वैशाख मास शुक्लपक्षे तिथैा चतुर्दश्यां गुरुवासरे लिखितं दुर्गा पाठक कंगेपुरवा के यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखितं मया । यदि शुद्धम् मशुद्धम वा मम दोषो न दीयते ॥

Subject—भीम का जरासंध को जंघा तोड़ना और धृतराष्ट्र का भीम से मिलने के लिये कहना और कृष्ण का बचाना ।

363(*k*). Gadā Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—New paper. Leaves—7. Size—$10\frac{3}{4} \times 6$ inches. Lines per page—18. Extent—100 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābū Padma Baksha Siṁha, Lavedapura, Bhinagā Rāja, (Baharāich).

Note—आदि अंत No. 363(*j*) के अनुसार ।

No. 363(*l*). Udyōga Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—80. Size—$9\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—16. Extent—2,240 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1931 or A.D. 1874. Place of deposit—Ṭhākura Jadunātha Bakhsha Siṁha Tāluqēdār, Hariharapura, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ विधि हरिहर गणपति गिरा सुर मुख पाइ नियोग। सबल सिंह कहि भनत पर्व उद्योग ॥ १ ॥ चौ० ॥ कह रिषि राइ सुनहु कुरुकेतू। कथा सुभग मुद मंगल हेतू ॥ २ ॥ जब हरि धर्मराज पहं आये। मिलत हृदय अति आनंद छाये। गहे चरन भीमादिक भाई। बैठे अति प्रसन्न जदुराई ॥

End—करौ अकौरौ भूमि सब छत्र धरो तव शीश।
बचै न संकर सत मोहि जो राखै अज ईश ॥
भये मुदित मन धर्म सुत सुनि हरि गिरा प्रमान।
भणित पर्व उद्योग यह सबल सिंह चौहान ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वं भाषा कृते तृंसत्तमोऽध्याय ॥ ३० ॥ वैसाख मासे शुक्लपक्षे तिथौ अष्टम्यां शुक्रवासरे श्री संवत् १९३१ शाके १७ ॥ राम राम।

Subject—महाभारत के उद्योगपर्व का अनुवाद।

No. 363(*m*). Karṇa Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—17. Size—13×5 inches. Lines per page—22. Extent—440 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1724 or A. D. 1667. Date of manuscript—Samvat 1893 or A.D. 1836. Place of deposit—Ṭhākura Dalajīta Siṁha, Village Jālimasiṁha kā Purwā, Post Office Keśargañja, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ कर्णपर्व लिष्यते ॥ प्रथमहिं कोजै गुरुहि प्रनामा जेहिते होइ सिद्धि सभ कामा। बंदो रामचन्द्र के पाया। सीता पति रघुवर कै दाया। महिमा अगम कोऊ नहि जानहो। परम भक्ति बंदौ हनूमानहो ॥ सुर गुरु वार क्वार को मासा। तिथी एकादसी कथा प्रकासा ॥ रघुपति चरन मनाइ कै व्यासदेव धरि ध्यान। कर्नपर्व भाषा रची सबल सिंह चौहान ॥

गुरु द्रोन जूझे मैदानही। दुर्जोधन तब आप बषानही॥ द्रोनी करन सालोछत्रो। और अनेक चढ़े ढ़िग अत्रो। अब केहि के ढिग मुकुट बंधैये। जेइन जीते पत्र पौधो पैयै॥ द्रौन पुत्र कहो नृप सुन लोजे। आप सोच केहि कारन कीजै॥ को मेरे सिर दोजे भारा। नाहिं तौ करौ करन सिरदारा॥ रवि सुत करन महाबल भारो। अर्जुन के समान धनुधारी॥ गुरु सुत दोनौ करो प्रनामा। तब राजा यहि भांति बषाना॥ कहो करन कुरुनाथ भुवरहो। जो मोकहरन सोपतो भारहो॥

End—करन का बाण उड़ाना जबहीं। कौरव निज दल आये तब ही॥ पांडव आये रवि सुत पास्मा। छातो ठोंकत ऊभो स्वांगा। राय युधिष्ठिर अंक मैं लाये। सहदेव नकुल जब वंधव पाये। अर्जुन कहो संग में जरिहै। भीम कहो जीके का करिहै। अन दाढ़ो मुंह खोजौ भाई। करन कै चिता समारहु जाई॥ वासदेव सुत हेरन तब आये। विन दग्धी छित कतहुं न पाये। देषा हेरि सकल भूहारो कहो वसुधा न रहो विनु जारो॥ सब पांडव कारन करहिं कौन कुमति विधि दीन करन वोर अरु बंधु यह मारि कौन गति कीन्ह॥ भीम हथेरी चिता वनायो। करन दाह लै तहां दियायो। रोवहिं धरनो और अकास्मा। रन वन रोवत रोवत तासा॥ रोवहिं सव पशु पंथो व्याला। कहिये काह दई के ख्याला॥ रन में करन नाउ कै लोना। अगर मतो पहिले पहिले जिउ जोना॥ इकहो संग वसेर सुभ स्वर्गलोक तिन लोन। करन वोर अरु बंधु वा जनम सुफल करि दीन। इति श्री महाभारते करनपर्व भाषा कृते चतुर्थमो अध्याय समाप्त संवत १८९३ माघमासे शुक्लपक्षे तिथौ नौमियं चंद्रवासरे॥

Subject—कर्ण का अर्जुन के हाथ युद्ध में मारा जाना, पांडवों का रोना, अर्जुन का यह कहना कि हम कर्ण के साथ जल मरेंगे, भीम का यह कहना कि अब जोना व्यर्थ है। श्री कृष्ण भगवान का समझाना, भीम का विना जली भूमि कर्ण को चिता के लिये खोजना और उसका न मिलना, अंत में अपनी हथेली पर चिता वनवा कर कर्ण को जलाना, उसकी स्त्री का सती होना आदि।

No. 363(*n*). Karṇa Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—14. Size—$12\frac{1}{2} \times 5\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—20. Extent—400 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābū Padma Bakhsha Siṁha, Lavedapur, District Bahrāich.

Note—शेष No. 363 (*m*) के अनुसार।

No. 363(*o*). Svargārohaṇa Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—

$9\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—20. Extent—700 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1931 or A. D. 1874. Place of deposit—Bābū Jadunātha Siṁha, Hariharapura, Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ स्वर्गारोहण पर्व लिख्यते ॥ पार्वती सुत सुमिरौं तोही । ज्ञान बुद्धि वर दीजे मोही । सुमिरि शारदहिं सुमति विचारी । करहु कृपा जाहुं बलिहारी ॥ निसु दिन मैं तुव चरण मनावों । आज्ञा करु पांडव गुन गावौं ॥ पर्व अठारह भारत भयऊ । तापर अंत कथा यह ठयऊ ॥

End—बौध रूप ह्वै यहां मुरारी । सुनु जनमैजय कथा विचारी ॥ जुधिष्ठिर राजा दुर्योधन राई । यहि विधि हरि पुर को ठकुराई ॥ वैशंपायन जनमेजय आगे । कथा रमान ज्ञान के पागे ॥ जो यह कथा सुनै अरु गावै । हरि पुर बसै इहां नहिं आवै ॥ इति श्री स्वर्गारोहण कथा समाप्त शुभ मस्तु आश्विन मास शुक्लपक्षे तिथौ अष्टम्यां रविवासरे श्री संवत १९३६ लिषि दरबारी लाल कायस्थ ।

Subject—महाभारत के अंत मे स्वर्ग का जाना ।

No. 363(*p*). Svargārohaṇa Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—33. Size—$8\frac{1}{2} \times 4$ inches. Lines per page—16. Extent—400 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1734 or A.D. 1676. Date of manuscript—Samvat 1932 or A. D. 1875. Place of deposit—Ṭhākura Jayabaksha Siṁha, Miṭhaurā, Post Office Keśargañja, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गनाधिपतयेनमः ॥ अथ कथा सर्गारोहिनि लिष्यते ॥ अति उदार मंगल सदन दलन प्रबल दुष द्वंद । सबल स्याम आनंद घन प्रभु बृन्दा वन चंद ॥ चौ० ॥ कलि कराल आवत बल देषा । राहिहि न कतहुं धर्म कै रेषा ॥ सब विचारि सभ मंत्र दिढ़ावा ॥ कलो प्रभाव सभ प्रभुहिं सुनावा ॥ बान तरंग कलि अस्तुति कीन्हा । अग्या पाइ पगु मंगल दीन्हा ॥ व्यास देव जाना सब भेऊ ॥ अलष निरंजन है समदेऊ ॥ दो० ॥ बलभद्रहि उपदेसि प्रभु चले द्वारिका जाहि । कंचन महल विचित्र अति लुप्त भये जग माहिं ॥ कथा अरंभ कीन तब व्यासदेव उपचार । परिछित सुत उपदेस सुनि कही हेवार विचार ॥ सुन राजा पांडव कुर षेता । एक एक नृप अहहि सचेता । महाबली मारेउ कुर षेता । सत भ्रात

दुर्जोधन मारे । अष्टादस छोहनि संहारे ॥ वधे भीष्म । द्रोन भगदंता । जूझे कर्ण आदि सावंता ॥

End—कृष्ण वहोरि सारथी बोलाये । दिव्य विमान साजि तब लाये जाहु नर्क दुर्जोधन राजा । आनहु वेगि सुभ साजि समाजा ॥ मौन वेगि चलि जमपुर आये । चलहु भूप जदुनाथ बोलाये ॥ चल्यो हर्षि तब स्वन आये । आये उत जहं मुनि समुदाये ॥ दो० ॥ हरि पग रेनु चढ़ाइ सिर । मुनिन्ह दंडवत कीन्ह । सत भ्राता जहंवा रहे तहां नृप आसन दीन्ह ॥ धर्मराय बोले बिलषाता कर गहि वांह उठे जन त्राता ॥ देषहु बंधु द्रोपदी नारी । अपर चरित्र देषु विस्तारी ॥ करन द्रोन अरु देषु गंगेऊ । जुत जूझे देषौ सब केऊ ॥ दो० ॥ देषा सवहि जुधिष्ठिर पूजी मन कै आस । अधिक सनेह कीन्ह सभा उर मह भये हुलास ॥ सवहिं भेंटि मिलि राजा बंधु सहित मुनि पास सत । भ्राता दुर्जोधन वैठि करहिं कविलास ॥ सर्गारोहनि कथा यह पांडव गै हरि पास । यह चरित्र जो भाषै वसै कृष्ण के पास ॥ सर्गारोहनि कथा जो गावै । सो बैकुंठ परम पद पावै । ईश्वरदास महा कवि भारी । यह चरित्र वर्णन विस्तारी ॥ जेठ मास कवि वार दिन मृग नछत्र तिथि त्रै जानि । कथा समाप्त कीन्ह लिषि । धर्मसोल को षानि ॥ सं० १९३२ कुवार मासे क्रिस्न पछे ४ जैसो प्रति पाई तैसो लिषो ॥

Note—संवत् १७३४ में इस लेख में दिये हुए जेठ मास कविवार दिन मृग नक्षत्र तिथि तृतिया शुक्रवार हो को तारीख़ ४ मई सन् १६७५ को पड़ा था । उस दिन मृग नक्षत्र चालू था ।

No. 363(*q*). Mahābhārata by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—130. Size—8½ × 5½ inches. Lines per page—16. Extent—780 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī and Kaithī. Date of manuscript—Samvat 1833 or A. D. 1876. Place of deposit—Rāmanātha Lālā, Kāśī.

Beginning—माता सरशती कंठ जो फुरइ । जोग जुगुती अछर जुरइ । प्रनवो आदि पुरुष को साया । शंवौ मातु पीता गुरु पाया ॥ प्रनवौ देव तैंतीशौ कोरी । छीजे पाप न लागै खोरी ॥ कोठी की रानी प्रनवौ दुइ कर जोरी । ज्ञान पंथ कर विग्रह गावो शुरशरी तोहो ॥ नवे शकार देव कर देसु । अरोकत पाय करार नरेसु । गंगा जमुना गावो शरीरा । यशै अर्थ गावहु मति धीरा । पर्व पछीम उतर कै वारी । पाय मेठो वसै पुरवारी । पूरव काशो पछिम पयाग । तहवां धार गंग जल लाग । दखिन विंद सो राज पहारा । उत्तर सवालाख

गोड़धारा। बहुठ कोटी मलठोका गाउ। तहा के ठाकुर ठकुरे नाउ। सारद मातु जे सपने देखावा। गौरी पुत परतछोहो आवा॥

End—बूड़ो नाहि भार मम सोहो। चलै लोथो गहो हथोरहि हेरत। अमोरत ओतु कागद गौ फेरत। वहुतक सौ उतरोर पारहो। वहुतक बूड़ी धार मझ धारहो। एहि विधि धर्मराज घर आये। जुरजोधन तव भवन सोधारे। दुनो दल नोजो नोजो मन धारे लागे करन लोग वोसरामा हो॥ दोहा॥ ऐहो वोधो जुधो भया करः की वो सल्य वलवान। एक देवस पुरखारथ सवल सिंह चैाहान। इसतो श्री महाभारथे सल्य प्रव संपूरनं॥ एक देवस जुधो—जे देखा सो लोख मम दोख न दीयते॥ मिती कुआर सुदी २ के पत्र लोखा वार सोमवार। दसखत सोंभु कायथ संवत १९३३ सन ११८४।

Subject—पृ॰ १ से ९६ तक-कर्णपर्व—कथा महात्म, अर्जुन कर्ण पुरुषार्थ, भीष्म, द्रोण कर्ण आदि के युद्ध की दिन सारिणी, दुर्योधन का स्वप्न, कर्ण से उसका उद्धार पूछना, कर्ण का महा कठिन संग्राम की प्रतिज्ञा करना। शल्य का कर्ण से अर्जुन को अजेय कहना, कर्ण का अपना उत्कर्ष वर्णन, श्रीकृष्ण का कर्ण के प्रण से चिंतित होना, छल से कर्ण के प्रचण्ड शस्त्रों के ले लेने का विचार करना। कृष्ण का कुंती के पास जाना, कुंती से पुत्रों के प्रति प्रश्न करना, कुंती का पांच पुत्रों का उत्कर्ष कहना, कृष्ण का उसके पुत्रों का भेद वतलाना, शल्य और कर्ण के जन्म की कथा कहना, कर्ण का परशुराम के पास पहुंचने की कथा का वर्णन। कालकूट धनुष का वर्णन। कर्ण का परशुराम से आशीर्वाद और श्राप पाना। कर्ण और दुर्योधन की भेंट, युद्ध, दुर्योधन का कर्ण को मित्र वनाना, कर्ण का विवाह, राज्य और मान तथा सेना आदि का पाना। कृष्ण द्वारा सव समाचार जान कुंती का प्रसन्न होना। कर्ण से मिलने के लिये उत्कंठित होना, कृष्ण का कुंती से कर्ण की प्रतिज्ञा और उसके पुत्रों की मृत्यु कहना और चुपके से कुंती को रहस्य समझा कर कर्ण के पास भेजना, पांच वाण मांगने को कहना, कुंती का कर्ण के दरवाजे जाना, प्रतिहारी से कर्ण के पास संदेशा भेजना, कर्ण का कुंती के वहां जाने का विश्वास न करना, कर्ण का द्वार पर आना, कुंती को शिरनवा अभिवादन करना, भाव भक्ति से स्वागत करना, कुंती के आने का कारण पूछना, कुंती का कर्ण का जन्म वृतान्त कहना, कर्ण का दान देने की प्रतिज्ञा करना, पुत्र होने में अविश्वास करना, कुंती का क्रोधित होना, स्वप्न में मरने का शाप देना, कर्ण का चिंतित होना, कर्ण का कुंती से अपनी गया यात्रा का वर्णन करना, ग्लानि युक्त होना, मरने की ठानना, सूर्य्य का पिंडा मांगना, कर्ण को अपना पुत्र वतलाना। कर्ण का सूर्य्य से माता को पूछना, सूर्य्य का अग्निपट देना, उस पट को धारण करने

वालों को कर्ण को माता कहना, अनेक स्त्रियों का उसके धारण के लिये आकर जल मरना, कुंती का वस्त्र मांगना, कर्ण का अपयश से डरना, कुंती का निश्चय दिलाना, वस्त्र का मंगाया जाना, कुंती का धारण करना, स्तन से दूध की धार बहना, कर्ण का पीकर अमर होने को कहना, कर्ण का पुत्र रूप से पीने को दौड़ना, कृष्ण का ब्राह्मण वेष में छिपे रह कर पीने से मना करना, कुंती का सिंहासन पर बैठना, सब का हर्षित होना आनन्द के बाजे बजना, कर्ण की स्त्री का हर्षित होना, अनेक प्रकार का दान करना, कुंती का कर्ण को पांचो भाइयों से मेल कर राजसिंहासन पर बैठने का उपदेश करना और पांचो बाण मांगना, कर्ण की स्त्री का विकल होना, कुंती का उदास हो कर्ण से बोलना, कर्ण का कुंती को सान्त्वना देना, अपने को बड़भागी जानना, अंगार मती का आंसू ढारने का हेतु कहना, कुंती से प्रार्थना करना, कुंती का कोपित होना, कुंती की बात सुन कर कृष्ण का प्रसन्न होना, कर्ण का बाण पर हाथ जाना, बाणों का कर्ण से पराये हाथ देने से मना करना, कर्ण को बाणों का उपदेश देना, कर्ण का बाणों को उत्तर देना, पांचों बाणों को कुंती को देना, कुंती का प्रसन्न हो बाणों को लेना, कर्ण का छल कर कुंती को उसके पास भेजने का भेद पूछना, अपनी कौरव पांडव प्रति प्रतिज्ञा का कहना, कुंती का आंसू ढार कर रथ पर चढ़ कर चलना, कुंती का कृष्ण से अर्जुन को समझा कर कर्ण से मेल करने को कहना, मेल न होने पर वध का पापभागी कृष्ण को कहना, कृष्ण का अपनी प्रतिज्ञा का स्मरण करना, कुंती और कृष्ण का वार्तालाप। कुंती का कंपायमान होना, कृष्ण से अग्नि तपाने को कहना, आग का जलाया जाना, कुंती का कृष्ण से पांचो बाण जलाने के लिये मांगना, कृष्ण का दूसरे पांच बाण लाकर देना, कर्ण के बाण को छिपा कर रखना, कुंती को सुभद्रा के पास रखना, कृष्ण का अर्जुन को जगाना, सोने के लिये फटकारना, निश्चिन्त सोने और न सोने वाले का वर्णन करना, अर्जुन का लड़ाई के लिये नाद घोष कराना, कर्ण के मारने की प्रतिज्ञा करना, कृष्ण का अर्जुन से कर्ण के बलका वर्णन करना, अर्जुन का कृष्ण के भरोसे अपना बल वर्णन करना, वर्णन की निन्दा करना, अर्जुन का उत्कर्ष वर्णन, रथ का रणक्षेत्र में जाने के लिये घोष के साथ बाहर आना, शल्य का कर्ण के पास जाना, लड़ाई के लिये उद्यत होने के लिये कहना, कर्ण को प्रतिज्ञा का स्मरण दिलाना, कर्ण का रणविजय के लिये पुनः प्रतिज्ञा करना, कर्ण का स्नान करना, डुबकी लेते समय कृष्ण का अर्जुन कर्ण का सगा भाई कहना, कुंती की आज्ञा का पालन करना, अर्जुन का कृष्ण से कारण पूछना, कृष्ण का वर्णन करना, अर्जुन का विरक्त होना, कृष्ण का अर्जुन का उत्कर्ष बढ़ाना, अर्जुन विश्वसेनी

का युद्ध, अर्जुन का बाण प्रहार करना, विश्वसेनी का पांडव दल पर बाण वर्षा कर सब को विकल करना, कृष्ण का गरुड़ का आवाहन करना, गरुड़ का अमृत लाकर सब को जिलाना, पांडवों का क्रोधित हो लड़ाई करना, अर्जुन और विश्वसेनी का घोर युद्ध वर्णन। अर्जुन का विश्वसेनी का सिर काटना, शिर का धड़ में पुनः जाकर लगना, कृष्ण से कारण पूछना, कारण बताना, विश्वसेनी के मरने की युक्ति बतलाना, अर्जुन का मारना, विश्वसेनी का शिर भार द्वारा कर्ण के पास भेजना, कर्ण का देख कर दुःखित होना, अंगारमती का विलखना।

शल्यपर्व—पृ० ९७ से—१३० कर्ण के मारे जाने पर दुर्योधन का विलाप करना, कृतवर्मा का धर्मोपदेश देना, शकुनी का दुर्योधन को समझाना, शल्य को सेनापति बनाना, शल्य का प्रतिज्ञा करना, लड़ाई के लिये मैदान में आना, पांडवों का मैदान में आना, दोनों सेनाओं का युद्ध वर्णन, शल्य का बाण वर्षा वर्णन, अर्जुन का बाण वर्षा वर्णन, अन्य योधाओं का परस्पर युद्ध वर्णन। अर्जुन शल्य का परस्पर युद्ध वर्णन, अर्जुन द्वारा सारथ और रथ का विनष्ट किया जाना, शल्य का क्रोधित हो अन्य रथ पर जाना, बाण वर्षा कर पांडव दल को विकल करना, भीम और द्रोणी का घोर युद्ध वर्णन, कृतवर्मा और नकुल का युद्ध वर्णन, घोर युद्ध वर्णन, भीम का गदा लेकर आना, पांडव दल की अधिक सेना का मारा जाना, घोर युद्ध वर्णन, दोनों दल का पैदल युद्ध वर्णन, पुनः रथ की लड़ाई अनेक प्रकार का असगुन होना, धर्मराज (युधिष्ठिर) का शल्य पर शक्ति का प्रहार करना, शल्य का मारा जाना, पांडवों का घर आना, दुर्योधन आदि का घर जाना, लेखक का नाम, लिखने का संवत।

No. 363(r). Mahābhārata Bhāshā by Sabala Simha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—160. Size—$9\frac{1}{4} \times 8\frac{1}{4}$ inches. Lines per page—40. Extent—5,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī and Kaithī. Date of manuscript—Samvat 1834 or A. D. 1777. Place of deposit—Panḍitā Rāmasundara Miśra, Village Kaṭāgharī, Post Office Akaunā (Bahrāich).

Beginning—पोथी महाभारत कै।

दोहा—जत फलंग अस मेद करी जत फलं गउदान। तत फलंग भारथ कथा सबल सिंह चोहान ॥ १ ॥ आइउ बाहै होइ यम आगम निगम पुरान। भारथ कथा सुनंभे यत कासी स्नान ॥ २ ॥ श्री दुरजोधन वाच ॥

साजहु तुरित जाइ सब कटक असंख समूह। सजि हौ जल्दी आवहु मत हस्ती गज जूह ॥ ३ ॥ चौ० ॥ सुनि कै द्रोन कहौ विहसाई। अइसेइ मंत्रम्ह मध मनुसाई ॥ सकुनी क मंत्र सदा तुम लेहू। हम पाचन्ह कहं दोष न देहू ॥ पांडव पांचउ आनिजे आउ। लाहा गृह तुम आग लगाउ ॥

End—भारथ कथा सुनहिं अरु गावै। ताके निकट पाप नहिं आवै ॥ जे फल सब तीरथ स्नाना। जे फल कोटिन्ह कन्या दाना ॥ जे फल जग्य धरम के कीन्हे। जो फल लक्ष गाय के दीन्हे ॥ जो फल होइ सरन के राखे ॥ जो फल सदा सत के भाखे ॥ जो फल पिंड गया महं दीन्हे। सो फल यहि भारथ सुनि लीन्हे ॥ दोहा—भारथ सुनै अनंत फल सो तऊ कहा न जाइ। अंत वसहिं बैकुंठ महं दरस देहि जदुराइ ॥ ४८४ ॥ महाभार्थ पूरन कियो सुद्ध बनाइ विचारि। पंडित जन सो विनय करि आखर पढ़ब सुधारि ॥ ४८५ ॥ इति श्री महाभारथ संपूर्ण किया जो प्रति मों देखा सो लिखा मम दोखो न दीयते संवत १८३४ मिति कुआर सुदी नवमी ९ वार सुक्रवार के संपूरन ॥ लिखा सीताराम ऊमर के सो जानवे सुभमस्तु श्री रस्तु ॥

Subject—पृ० १—१३ तक—अभिमन्यु युद्ध वर्णन।
" १३—१६ " उद्योगपर्व वर्णन
" १७—६१ " भीष्मपर्व वर्णन
" ६१—१०५ " द्रोण पर्व वर्णन
" १०५—१४२ " कर्ण " "
" १४२—१५० " शल्य " "
" १५१—१६० " गदा " "

No. 363A(*a*). Bhāgawata Bhāshā, Daśama Skandha by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—239. Size—$8\frac{1}{2} \times 7$ inches. Lines per page—36. Extent—6,480 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī and Kaithī. Date of Composition—Samvat 1726 or A. D. 1669. Date of manuscript—Samvat 1810 or A. D. 1750. Place of deposit—Paṇḍita Rāmasundara Miśra, Village Kaṭāgharī, Post Office Akaunā, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भाषा भागवत लिख्यते ॥ श्री राधा कृष्णायनमः ॥

श्लोक—बालं नील तनुं सरोज नयनं लावण्य कोटि स्मरां दीप्ति चारु मुखे विलास कुशलं वंसादि वदिस्तवं ॥ गोपाल धृत भूधरं जन हितं च विश्वंभरं माधवं। गोपीनां नयनं चकोर शशिना वंदे जसोदा सुतम् ॥ १ स्फुरत पद्म वक्रं, लसत भ्रंगकेशं, तड़ित पीत वस्त्रं घनश्याम वेशं ॥ वलित भूषणं चारु गुंजा वतंसं जगेसं सुरेशं रमेशं हि वन्दे ॥ २ ॥

दोहा—अति उदार मंगल सदन दलन प्रवल दुखदंद। सवल स्याम सेवक सुखद प्रभु वृन्दावन चन्द्र ॥ १ ॥

End—छंद—हरिचरन पंकज पतित पावन जगत जीवन जानिए। तजि मान पति निर्वान नाम प्रमान करि हित मानिए ॥ ब्रह्मादि सुर सनकादि नारद जासु पद रज सेवहीं। को कहै जड़ मति मूढ़ मानव आन मानत देव ही ॥ दोहा—सवल स्याम भव भय हरन पावन परम उदार। कृपासिंधु सरनद सुषद व्यापक जगदाधार ॥ ८६५ श्लोक—कृषनं करोति करबानं केस कुंडल केसरी। कालिन्दी कूल कल्लोले कोलाहलं कुतूहलं ॥ इति श्री हरिचरित्रे दशम स्कंधे महापुराने भगवतं परम रहस्यां वेलासि भाषा सवल स्याम कतौ चौरानवे खंड कथा लिखितं रामवकस रैकवार मौ० नन उपरा के जस देखो वैसो लिखो मम दोस न दियते कथा समाप्तं सुभ मस्तु ॥

संवतु १८८० समै नाम असाढ़ सुदी दुइज रोज सुकवार ॥

Subject—पृ० १—२३९ तक—भागवत संस्कृत दशम स्कंध का भाषानुवाद ॥

Note—निर्माण काल तथा कारण :—

संवत सत्रह से सोरह दस। कवि दिन तिथि रजनीस वेद रस ॥
माघ पुनीत मकर गत भानू। असित पक्ष ऋतु सिसिर प्रमानू।
प्रथमहि वरनौं नृप नृप देशा। तब हरि कथा करौं परवेसा ॥
रचेउ विरंचि नगर एक पोढ़ा। तासु नाम जग विदित अमोढ़ा।
अवध नगर तें पूरव सोहै। निरखि रूप सुर मुनि मन मोहै ॥
तहं रह वीर सिंह धरणी धर। तरनि वंस अव तंस नृपति वर।
वरनौ वहुरि भूप कर साजू। नगर समाज सहित जुवराजू ॥
मति अति विमल भक्ति रस पागो। वीर सिंह हरि पद अनुरागो।
सहित सनेह कृपा अधिकाई। पुनि हरि भक्त जानि लघु भाई ॥
कहेउ दसम हरि कथा बनावहु। सगुन रूप कर भेद सुनावहु।

No. 363A(*b*). Bhāgawata Bhāshā Daśama Skandha by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—

265. Size—12 × 4 inches. Lines per page—12. Extent—4,372 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1818 or A. D. 1761. Place of deposit—Ṭhākura Dalajīta Siṁha, Village Jalima Siṁha kā Purawā, Post Office Kesargañja, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः मातु दीन्ह मैं तुमहि जनाये। मानुष देह यानि नहिं पाये ॥ दोहा। पुत्र भाव करि दम्पती ब्रह्म भाव जिय जानि। परम प्रेम बस समुझि मोहि मम गति सुलभ सयानि ॥ यह कहि निज माया हरि हेरी। सोइ प्राकृति शिसु भयऊ बहोरी ॥ रोवन लगे बाल भय हारी। जगमोहनी प्रकृति विस्तारी। कह देवकी सुनहु प्रिय प्राणा। चहत होन यह प्रगट बिहाना। यहाँ तुम्हारण सहज सहाई। जहं राषिय यह तनय छिपाई ॥ देषहि जबहि कंस यह बारा। बधहि वेगि नहिं करहि विचारा। गोकुल नंद गोप हितकारी। तहं रहि है यह तनय सुकारी ॥ लै तहं जाहु बार जैानि लावहु। सुतहिं सौंपि तुरत तुम आवहु ॥ सुनि प्रिय वचन गोपाल उठाये। पुनि बसदेव अंक लै आये ॥ लै तव त्वरित चले वनवारी। घन तम मैं घनी अंधियारी उघरे वज्र कपाट निहारे। प्रभु प्रभाव मोहे रषवारे ॥

End—यहि कहि प्रेम विवस भइ भोरी। दीन वचन फुनि कहेउ बहोरी। कृष्ण कृष्ण भव भंजन भारा। सरणद अखिल लोक करतारा ॥ पाहि पाहि प्रभु त्रिभुवन पालक। कठिन कलेस सहित सह बालक ॥ तव पद तजि नहिं सरण कृपा कर। जन वन कंज प्रकास प्रभाकर ॥ परम उदार चरित फल दायक। विधि श्रुति शक्र सेइवे लायक ॥ दोहा ॥ कृपासिंध भव भयहरण सुषदाय भगवान ॥ मायापति निर्माण पति सरणद सील निधान ॥ यहि विधि समुझि स्वजन घन स्यामहि। जपत अखिल जग जन येहि नामहि ॥ देत कर्म फल करत विभागा ॥ करत प्रवेस सहित अनुरागा ॥ वन्दौ तासु चरण रज पावन। जग निवास अघ अखिल नसावन ॥ नृप मति समुझि महामति माना। विदा भयउ सिर नाइ सुजाना ॥ सुहृद वर्ग पहं मांगि रजाई। पवन गवन रथ त्वरित चलाई ॥ मथुरा गयऊ महां वन माली। कही सकल कुरुराज कुचाली ॥ छंद ॥ कुरुराज कुमति कुचालि प्रभु पहं दान पति सव विधि कही। सोइ सुन्यों सम्यक वचन कृपानिधान हरि मान्यो सही ॥ प्रभु हृदय धरि हित पांडवन प्रमुदित जिन गृहको गये। चढ़ि व्योम यानि विमान कीरति विवुध बुध गावत भये ॥ सवल स्याम आरति हरण दीनवंधु भगवान। सुनहु राम कुरुवंस मनि हरि तजि सरण न आन ॥ इति श्री हरि चरित्रे दसमस्कंध महापुराणे भागवते परम रहस्ये संहितायां वयासिक्या

भाषायां सवल स्याम कृते पूर्वार्द्ध समाप्तं संवत् १७३३ समय फालगुन सुदि एकादश्यां रविवासरे तरण तारखे ताले। लिखा संवत १८१८ ठाकुर प्रताप सिंह ॥

No. 363A(*c*). Bhāgawata Daśam Skandha by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves--81. Size—13 × 6½ inches. Lines per page—28. Extent—3,360 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—1875 Samvat or A. D. 1818 Place of deposit—Bhaiyā Santa Baksha Siṁha, Guṭhawārā (Bahar-rāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री गुरवेनमः ॥ सर्व देवायनमः ॥ भुंजा पीत पवीत चारु युगलं पाणौ च पंकरुहं। मुक्ताहार किरीट कुंडल युतं स्यामं प्रफुल्लाननम् ॥ गोविंदै परितः परीत मशिशं गोपीजनै सेवितं। नीत्वा वत्स पवत्स कान्त जगतं वंदे यशोदा सुतं ॥ दोहा—सवलश्याम प्रभु कमल पगु भव भयहरन विधान। वंदौं चरण सरोज द्वै करत अषिल कल्याण ॥ १ ॥ चौ० ॥ कह मुनि सुनिय भूप मति माना। कथा पुनीत करौं सो गाना ॥ अस्ति प्राप्ति द्वौ सब गुन खानी। कंस महीपति कै पटरानी ॥ निज पति निधन देखि दुख भारी। गई पिता गृह परम दुखारी ॥

End—जन्म देवको गर्भ तुम्हारा। है यह वादमात्र संसारा ॥
थिर चरवृजिन हरन प्रभु कैसे। तिमिर तोष कहं रविकर जैसे ॥
व्रजपुर रमनि परम सुखदायक। पद श्रुति सक्र सेइवे लाइक ॥
भवनिधि जान चरनसुभ पावन। हरन पाप त्रै ताप नसावन ॥

छंद हरिगीतिका —हरि चरन पंकज पतित पावन जगत जीवन जानिए। तजि मान पति निर्वान नाम प्रमान करि नित मानिए ॥ व्रह्मादि सुर सनकादि नारद जासु पग रज सेविहीं। को कहौं जड़मति मूढ़मानव आन मानत देवहीं ॥ १ ॥ दोहा—सवल स्याम भव भयहरन पावन जन्म उदार। कृपासिंधु सरनद सुषद व्यापक जगदाधार ॥ ४२७ ॥

इति श्री हरिचरित्रे महापुराने भागवते दसमस्कंधे समाप्त सुभमस्तु ॥ जेठ सुदि १० का पुस्तक प्रारंभ किया आषाढ़ सुदि १३ का संपूर्ण भई ॥ पुस्तक लिषित शिवप्रसाद कायस्थ वलरामपुर के वासी पाठार्थ श्री महाराज कुमार भैया उमराव सिंह जीव के संवत १८७५ सन् १२२५ मोकाम भिनगा कोट ॥ ॥

Subject—पृ० १—७ तक—प्रार्थना, जरासंध युद्ध। मुचुकन्द द्वारा यवन बध वर्णन। पृ० ७—१६ वलभद्र विवाह, रुक्मिणी विवाह पृ० १६—२० सम्बरासुर

वध, स्यमंतक हरण, जाम्बवती बिबाह बर्णन और सत्यभामा बिबाह वर्णन। पृ० २०—३५ तक—सतधन्वा, सत्राजित वध, रानियों का उद्धार, नरकासुर वध, कृष्ण रुक्मिणी, अनिरुद्ध ऊषा सम्वाद। पृ० ३५—४४ तक—नृगोप वर्णन। बलदेव विजय जमुना कर्षण। पौड्रक वध, द्विविद वध, साम्ब विवाह, जोगमाया दर्शन वर्णन। पृ० ४४—५४ तक—इन्द्रप्रस्थ में कृष्ण गमन, जरासंध वध, पांडव राजसूय यज्ञ वर्णन। भगवान नारद संवाद, दुर्योधन मानभंग। पृ० ५४—६४ तक—साल्व युद्ध वर्णन। सौभराज वध, बलदेव तीर्थ यात्रा वर्णन, वदज्ञल वध, कृष्ण सुदामा सम्वाद वर्णन। पृथु उपाख्यान वर्णन। पृ०—६५—८१ तक। रुक्मनी अष्टधानी संवाद। वसुदेव नंद सम्वाद, मोक्ष वर्णन। भृगु मुनि दर्शन व द्विज कुमार वर्णन।

No. 363A(*d*). Bhāgawata, (Daśama Skandha) by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—194. Size—14 × 8 inches. Lines per page—60. Extent—6,500 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1726 or A. D. 1669. Date of manuscript—Samvat 1888 or A. D. 1831. Place of Deposit—Mahārājâ Rājendra Bahādur Simha, Bhinagā Rāj, Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ बालं नीलतनुं सरोजनयनं लावण्य कोटिस्मरं। दीप्तं चारु मुखं विलास कुसलं वस्त्रा दिवां पेतरम्॥ गोपालं धृत भूधरं जन हितं विस्वंभरं माधवं॥ गोपीनां नयने चकोर शशिनं वंदे यसोदा सुतम्॥ १॥ सरद पद्म वक्रं लसद भृंगकेसं। तड़ित पीतवस्त्रं घनस्याम वेसम्॥ चलत दूषणं चारु गुजां वतंसं। जनेसं सुरेसं रमेसं हि वंदे॥ दोहा॥ पति उदार मंगल सदन दलन प्रवल दुख द्वंद। सवलश्याम सेवक सदा प्रभु वृन्दावन चंद॥ १

सोरठा—गुरु पद पंकज धूरि प्रथम सीस निज राखि कर।
प्रभुजस वरणैां भूरि सुखदायक सब दुःख हरन॥ २॥
वंदैा वंदनीय अविनासी। वंदैा शिव कैलाश निवासी।
वंदैा गिरा गणेश षड़ानन। वंदैा सुर सुरेस सहस्रानन॥
वंदैा नारद श्रुति चतुरानन। वंदैां भूमि गगन गिरि कानन॥
वंदैा देवन दीन दयारी। वंदैां चंद तिमिर तम हारी॥

End.—छंद हरगीतका।

हरि चरण पंकज पतित पावन जगत जीवन जानिये।
तजि मान पति निर्वान नाम प्रनाम करि नित मानिए॥

ब्रह्मादि सुर सनकादि नारद जासु पग रज सेवहीं ।
को कहै जड़ मति मूढ़ मानव आन भानत देवहीं ॥

दोहा—सवल स्याम भव भयहरण पावन जन्म उदार ।
कृपासिंधु सरनद सुषद व्यापक जगदाधार ॥

इति हरि चरित्रे महापुराणे भागवते दशमस्कंधे पारमहंस संहितायां वैयासिक्यां भाषायां श्री सवल सिंह कृतै चतुर्नवतितमोऽध्यायः दसमस्कंध समाप्त सुभ मस्तु अषाढ़ मासे शुक्लपक्षे नैाम्यां चंदवासरे संस्कृत भाषा सम्पूरणम् संवत् १८८८ सन् १२३८ साल ॥ पुस्तकं लिषितं ॥ गंगाप्रसाद कायस्थ ॥ टिकुइया ग्राम के वसैा वासं पाठार्थे ॥ लाला दाऊलाल देवान भिनगा के श्रोता पढ़ै तेकां सत्यनाम ॥ जो प्रति पावा सो लिषा मम दोसो न दीयते ॥ इति ।

No. 363A(*e*). Bhāgawata Daśama Skandha by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—570. Size—$8\frac{1}{2} \times 7$ inches. Lines per page—15. Extent—6,680 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Kaithī. Date of Composition—Samvat 1726 or A. D. 1669, Date of manuscript—Samvat 1871 or A. D. 1814. Place of deposit—Śītala Prasāda Nigama, Village Saidpur, Muhallā Potidārāu, District Bārābankī (Oudh).

No. 363A(*f*). Bhāgawata Daśama Skandha by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—170. Size —$13 \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—20. Extent—3,825 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1726 or A. D. 1669. Place of deposit—Bhaiyā Santa Baksha Siṁha, Guṭhwā, District Bahrāich.

No. 363A(*g*). Bhāgawata Bhāshā by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—138. Size—14×6 inches. Lines per page—20. Extent—3,795 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1726 or A. D. 1669. Place of deposit—Paṇḍita Murlīdhara Tripāṭhī, Mailā Sarāya, Post Office Bauṇḍī, District Bahrāich.

No. 364(*a*). Bhagwañtā Rāya Rāsā by Sadānañda Kavi of Asothara. Substance—Country-made paper. Leaves—11. Size—$7\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{4}$ inches. Lines per page—24. Extent—180 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1797 or A. D. 1740. Date of Manuscript—Samvat 1798 or A. D. 1741. Place of deposit—Śrī Mān Mahārāja Rājendra Bahādura Simhā Sāhaba, Bhinga Rāja, Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रासा भगिवंत सिंह जोवक ॥ दोहा ॥ एक दिवस भगिवंत जू अति अनंद सो लीन । कोड़ा जहानावाद को हुकुम कूंच को दीन । छंद पद्धरी ॥ सज्जे सुवीर बज्जे निसान । लज्जे सुरेस भज्जे गुमान ॥ फुट्टे सुमेरु टुट्टे अराति । कुट्टे कितेक लिहे नसाति ॥ दोहा ॥ आइ जहानावाद में करत मुलुक को गैार । साधत वाम अवाम सभ लखि कै ठैार अठैार ॥ साह महम्मद छत्रपति दान कृपान जहान । सुवा कीन्हें अवध को विदित सहादति खान ॥ करे जे रक्षित बाहुबल दीन्हे नृपति निकारि । राखे जे धर्मज्ञ अति सकल विचारि विचारि ॥

End—कंप्यै लोक अवलोकि सोक मय जहं तहं वज्यै । लषि चरित्र विधि हरिहर हिय अनुराग उपज्यौ ॥ प्रेरित गन चलि वेगि समर अवनी महं आयो । कहि प्रसंग कर जोरि अमिय मय वचन सुनायो ॥ अप्सरि सुचारु चहुं दिसि चमर चापु ढरत आनंद भयो । राजाधिराज भगवंत जू चढि विमान सुर पुर गयो ॥ १०३

दोहा ॥ संवत सत्रह सतानवे कातिक मंगलवार ।
सित नैामी संग्राम भो विदित सकल संसार ॥ १०४ ॥

इति श्री कवि सदानन्द विरचिते भगिवंत सिंह खीचरि अेा नवाव सहादति खान जुद्ध बरननो नाम सुभ मस्तु सुभं भूयात् ॥ लिखी मिती सावन वदि अष्टमी ८ सन १२५७ हि० बारह सै सत्तावन मा लिखा ॥ इति ॥

Subject—पृ० १—२ तक । राजा भगवन्त सिंह का कोड़ा जहानावाद पर चढ़ाई करना और यवनों को भगाना सयादत खां का नूर मोहम्मद को तहसील के लिये भेजना और भगवंत राय का लूट करना, नवाव का चढ़ाई करना और दुर्जन चौधरी से मिलना ।

पृ० ३—४ नवाव का खजुहे पहुंचना और सेना का वर्णन ।

पृ० ५—६ मंत्री से राजा भगवन्त सिंह का सलाह करना, रानी का युद्ध के लिये निषेध करना और युद्ध की तय्यारी का वर्णन।

पृ० ७—८ सआदत खां व तुराव खां से खीची का युद्ध वर्णन—

पृ० ९—११ तक। भवानी प्रसाद व दीनमोहम्मद का युद्ध वर्णन। शेरअली और जयसिंह का युद्ध वर्णन। भगवन्त सिंह खीची का युद्ध वर्णन और वीरत्व को प्राप्त होना। निर्माणकाल व युद्धकाल वर्णन।

No. 364(*b*). Bhāgawantā Rāya Rāsā by Sadānandā. Substance—Country-made paper. Leaves—7. Size—10 × 8½ inches. Lines per page—32. Extent—225 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1797 or A. D. 1740. Date of Manuscript—Samvat 1936 or A. D. 1879. Place of deposit—Ṭhakura Chitra Ketusiṁha, Nārāyaṇapur Taparā (Hariharpur) Post Office Chilwaliā (Bahrāich).

No. 365. Nandaji kī Vaṅśāvalī by Sadānañda Dāsa. Substance—New paper. Leaves—4. Size—10 × 6½ inches. Lines per page—30. Extent—60 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Babū Śyama Kumāra Nigama, Rāe Barelī.

Beginning—अथ वंसावली नंद जी की सदानंद दास कृत॥

श्री गुरुचरण प्रतापहि लहौं कृष्णवंश उद्भव कछु कहौं॥ १॥
तीन प्रकार गोप की जाति वैस अहीर गुज्जर वर ज्ञाति॥ २॥
उत्तम वल्लव गोप कहाये जदुवंशी वेदन में गाये॥ ३॥
हित सो गोधन ठाट चराये क्षत्री ते ते वैस कहाये॥ ४॥
वैस सुद्रिका ते जो होई शुद्ध अहीर कहावै सोई॥ ५॥
गुज्जर कछु इनते लघु वरने पीन अंग ऊंचे सुख करने॥ ६॥
ब्रज के निकट सो विधि सों वसै अजा आदि पशुधन सों लसैं॥ ७॥

दोहा—माथुर पुरोहित विमलकुल गर्ग गुरु इनके निकट अवास।
वेद पुरानन में निपुन हिये विष्णु परगास॥ ८॥

सवै कौम व्रज में रहैं हरि सेवा सुष हेत। पांच कहे परिवार प हरि जू कों सुष देत॥ ९॥ अब वरनो गोपन के नाम जिहि सुमिरे सब पूरण काम॥ १०॥

प्रथम गोपर्जन्य बखानै । ताकी त्रिया वरेयसी जानें ॥११॥ प्रथम सुतै उपनंद बषानो । ताको प्रिया सुनंदा जानो ॥ १२

सुत सुभद्र तनया तुंगोनव । उत्तम गुण ताके मन उद्भव ॥ १३ ॥
सरसगोर अभिनंद बषानो । ताकी त्रिया पोवरी जानें ॥ १४ ॥
सतु कुंडल अरु नंद सुता । कुल पनीत गावैं पतिव्रता ॥ १५ ॥
धरानंद ताकी प्रिय परमा । किंकिनि सत तनया शुभ करमा ॥ १६ ॥
कंचन तन ध्रुवनन्द बखानो । ताकी त्रिया सुदेसी जानै ॥ १७ ॥
सुत विलास तनया मन सोला । गावत रहत कृष्ण गुण लोला ॥ १८ ॥
महानंद की तिय हितकारी । सुता सुसोला सुत मन धारी ॥ १९ ॥
सुनै सुनंद त्रिया मन लेखा । सुत उत्तम तनया रुचि भेषा ॥ २० ॥

End—सोमवंश हरि जीव को वरनै लै लै नाम । ससि के बुध बुध के पुर जो परम संत निहकाम ॥ ७५ ॥ तिनके आयु नहुष नृप तिनके नृपति जजाति । तिनके जदु इनके हरि सेवी वरगात ॥ ७६ ॥ क्रोष्टवान व्रज नृपति जू स्वाहि तिनके पूत । तिनके दस आहुत भये व्योम नृपति जस तूत ॥ ७७ ॥ इनके शशविंद प्रथजू किये परम सुख कर्म । ताके ऊमना ताके रुचि किए परम सुधर्म ॥ जामधवाके के तास विदर्भ विलछन गुनमान । ताके पुत्र प्रगट भए कथ जु किये ग्रंथ बहु दान ॥ ताके कुंत विष्ट सुत सुंदर ताके नरिव्रत पूत । ताके दश आहित सुत व्योम नृपति जस नूत ॥ जोय नूत ताके विकृत भोम सुरथ भुजमान । नरथ ताके दशरथ के सुत सकणे सुर जजात ॥ नृपति करंभिक भये ताके सुत भये देव रतिराज । भए देवरति देवछत्र सुत मधु नृप सतत सिरताज ॥ कुरु वंस ताके अंतु नृप के सुत प्रोहित जुजान । ताके सुचित ताके अंधक ताके नृप भज मान ॥ ताके नृपति विदरथ ता सुत सुर नृपति वरजान ॥ ताके सुनि भजि मान नृपति जु ज्ञानवंत धनवान ॥ ताके सुचित सु भोज नृप ताके नृपति हृदीक । देवमीढ़ तिनके कुल प्रगटे तिन प्रगटकरी जसलीक ॥ छत्रानी वैश्यानी इनके पत्नी दोय । छत्रानी के सूरसेन जिन राष्यो जग भोय ॥ वैश्यानी के पर्जन्य प्रगट भये तिनके प्रगटे नंद । तिनके प्रगट भए मनमोहन व्रज के पूरनचंद ॥ इह वंशावली बखानी ढाढ़ी हर्ष वल्लव राज । श्री सदानंद प्रानन वारत रंग भीनें सकल समाज ॥ इति संपूर्ण शुभ ॥

Subject—नंद जी की वंशावली

No. 366. Chhattis Aksharī by Sāhabadinadāsa of Tiparī, Rāmapur. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—8 × 5 inches. Lines per page—46. Extent—128

Anushṭup Ślokas. Appearance--Old. Character--Nāgarī. Date of Composition--Samvat 1921 or A. D. 1864. Date of Manuscript--Samvat 1950 or A. D. 1893. Place of deposit--Bābā Bhāratamahañta, Village Dataulī, Post Office Phakharpur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ छत्तीस अक्षरी लिष्यते ॥ ॐ ओंकार अपार आगे घर आदिव अंत पसारा है। ब्रह्मा विष्णु महेश गणेशहु सुजे किरण उजियारा है ॥ पंच उपासन तत्व प्रकीरति याते सव विस्तारा है ॥ गति साहव दीन कहैं कहलैं सव रोम रोम ओंकारा है ॥ ना ॥ नाम निरंजन सब दुख भंजन सुमिरन किये कलेश मिटै। मन मस्त उमंगै उठै तरंगै सुनि दुष्टै हिय हरी पटै ॥ जो नाम पुकारै कवहू न हारै कलिकाल जंजाल कटै ॥ जन साहब दीन सोइ पूरा जो हरदम हरिका नाम रटै ॥ मा ॥ मन को बूझे तव गति सूझे त्यागै कपट दलाली है। वृन्दावन तन रच्यो विन्द सों मगन मूल प्रतिपाली है ॥ वाग लगाय गयो नहि अनैावा तिन वागन खाली है ॥ साहव दीन सदा अनुभव गति वाग माझ वनमाली है ॥ सा ॥ सहित सनेह गुरुपद पूजे ल्यावे ध्यान समाधू है। सुमिरै ररंकार निअक्षर तका मता अगाधू है ॥ राम नाम दम दम पर खींचे मिटै व्याधि अपराधू है ॥ साहव दीन सफल मत बूझे तिसको कहिए साधू है ॥

End—॥३॥ इश्क सिंधु में मगन सदा दुख मरम शर्म सव खोई है। जो कुछ कहि आवै नास मान अरु आसत मान सुख सोई है ॥ सता समाज साजे सदै वस एक विषम नहिं कोई है। आस साहव दीन विचार लीन्ह ईश्वर जन जगमें सोई है ॥ उ ॥ ऊजर वीज नहक मत बैावो रहै यके दृढ़तासी है। मन में भरम भूल न लावै आनंद हृदय हुलासी है येके सूर पूर जग देखे दिल को दिल की दुविधा नासी है साहबदीन रहन अस जाकी तिस्को कहा उदासी है ॥ पे ॥ ऐ संसार वजार ठगों की विन भेदी तुम जावोगे। मीन आनंद अमोल अजूवा अद्धो भाव भंजावोगे ॥ खोल कपट को गांठ सवेरे जैाहर न परखावोगे। साहवदीन मुरशद के जुग जुग भटका खावोगे ॥ श ॥ शपत स्वर्ग को सीस तिलक दे त्रिगुना वुंदा मेली है। वीज मंत्र अजपा की सुमिरत पीत वसन रंग रोली है ॥ पांच कली पांचै रंग टोपी अजब रीति अलवेली है। सोहत साहव दीन गले बिच पांच दत्त की सहेली है। इति छत्तीस अक्षरी समाप्तः लिखी संवत १९५० कात्तिक शुदी चतुदर्शी ॥

Subject—पृ० १—४ तक ३६ अक्षरों पर ज्ञान उपदेश ईश्वर भजन पर कविता की है।

No. 367(*a*). Kavitāvalī by Sahaja Rāma. Substance—Country-made paper. Leaves—46. Size—9 × 6 inches. Lines per page—11. Extent—348 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Rāmajiāwana Lāla, Village Daulatīpur, Post Office Bīlhara, District Bārā Bankī.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सहज राम जी की कवितावली लिख्यते ॥ कवित्त ॥ गैारि गिरा गणनायक के पदपंकज को रज सीस चढ़ावैा। पवन के पूत सपूत बड़े तिनके पद पंकज का शिर नावैा ॥ श्री गुरु दीनदयाल पड़े पद पंकज का अनुशासन पावैा। राम चरित्त कवित्त की माल बनाय गिरा के गरे पहिरावैा ॥ १ ॥ ब्रह्मादिक ध्यान धरैं जिनको सनकादिक जोग समाधि को साधे। संकर नाम जपैं जिनको पदुमा पद पंकज को अवराधे ॥ नैामी सुकुला मधु मास पवित्र नक्षत्र पुनर्वसु वासर आधे ॥ राम को जन्म भयो सहजू हरषे सब देव दशानन जाधे ॥ २ ॥ संख अैार चक्र गदा सरसोरुह चारि भुजा लखि मातु त्रसी है। कुंडल लोल कपोल विमंडित आनन देखि लजात ससी है। सुंदर कोट जड़े मुक्ता सुखमा लषि कै (× ×) उमान वसी है ॥ भाल विशाल विलोचन लोहित कैास्तुभ कंठ ललाम लसी है ॥ ३ ॥

End—आपनी बुढ़ाई लरिकाई रामचन्द्र जी की निरखि परस पानि जानि के सकात है। क्षत्रीन का छोना जो छपावै अैा बचावै कोऊ ताहू को मारै न विचारै अैार वात है ॥ पाई न मेराई न बधाई बाजी अंगन में सखिन समेत सीता व्याकुल वरात है। सहजू महोप महिदेव की लराई कैान केतेऊ कुजोग आजु वा जिवाये तात है ॥ ९८ ॥ पिता सभीत जानी लीन्हे हैं धनुषवान भ्रातन समेत राम स्याम गैार गात हैं। मुनि को प्रनाम कीन्हे वालक विचित्र चीन्हे थके मुनि नयन बैन आवत न वात है ॥ रामचन्द्र चन्द्रमा चकोर कीन्हे नैन दोऊ मैन की समान रूप देखे न अघात है। सहजराम देखि के विदेह विदेह भये परसराम राम को स्वरूप देखि कामहू लजात है ॥ ९९ ॥ आशिष दै हग दोना किये छवि पुंज पियूष पियो जनु है। करिसायक चाप निषंग कसे सरनागत पालक के प्रनु है ॥ चारि कुमार मनैा मधुमार अैा प्रेम सिंगार धरो तनु है। भृगुनन्दन को मन भूल्यो फिरै सहजू हरि सुन्दरता वनु है ॥ १०० ॥

Subject—पृ० १—७ तक—मंगलाचरण, राम जन्म, उनके जन्म पर उल्लास, उनकी शोभा का वर्णन। राम-माता का युक्ति सहित चतुर्भुज रूप छिपाने का प्रस्ताव। नगर में आह्लाद, मंगल बधाई इत्यादि। दशरथ का दान, बाल बिनोद।

(२) पृ० ८—१२ तक—राम का मृगया के निमित्त अपने सहयोगियों सहित वन में आना। चारो भाइयों के घोड़ें के विभेद का वर्णन। मृगया में सफलता प्राप्ति। उनका लैाटना।

(३) पृ० १३—२४ तक—दशस्यंदन के समीप आकर कुश नन्दन का राम को मख-रक्षा के लिये मांगना, राम नाम महत्ता पर मुनि का छोटा सा व्याख्यान। राजा का इस प्रस्ताव पर खेद। वशिष्ट का समर्थन वशिष्ट द्वारा राजा को संतोष होना। संदेह भंग पश्चात् राम लक्ष्मण को मुनि के साथ भेजना।

(४) पृ० २५—४० तक—मार्ग में गैातम पत्नी उद्धार इत्यादि कार्य करते हुए राम का जनकपुर गमन। राम के स्वरूपादि पर नगर निवासियों का आश्चर्य तथा प्रेम। धनुष यज्ञ वर्णन। जनक की दर्पोक्ति पर लक्ष्मण का क्रोध। राम का धनुष भंग करना। रामादि विवाह वर्णन। (५) पृ० ४०—४६ तक—बारात इत्यादि को शोभा के वर्णन के साथ ही साथ जनक के द्वारा उसके सम्मानित होने का वर्णन। बारात का विदा होना। परशुराम आगमन। परशुराम की आकृति तथा वेष भूषा का वर्णन। परशुराम तथा राम में समझैाता॥

No. 367(*b*). Prahalādacharitra by Sahaja Rāma. Substance—New paper. Leaves—22. Size—8 × 6 inches. Lines per page—32. Extent—352 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1955 or A. D. 1898. Place of deposit—Lāla Tulasī Rāma Srīvāstava, Rāe Barolī.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ ॐ श्री गुरुभ्योनमः॥ अथ प्रहलाद चरित्र लिषते॥ दोहा॥ गनपति सुमिरैां सारदा वंद कमल कर जोरि बरणत सीताराम गुण विमल करैा मति मोरि॥ एक समै कैलास में वैठे शिव भगवान पारबती तहं प्रश्न कर सुनिये कृपा निधान॥ बोली गिरिजा बचन वर संकर सिला निधान। चरित सुभग प्रहलाद को मोसन कहो भगवान॥ ३॥ चैापाई॥ प्रश्न उमा को सहज सोहाई सुन महेस बोले हरषाई॥ सुनहु उमा यह कथा रसाला। सुंदर सुषद विचित्र विसाला॥ एक बार मन अति सचुपाये सनकादिक वैकुंठ सिधाये। देषा जाइ हरि लोक अनूपा। बसत जहां श्रीपति सुर भूपा। पांच पदुम जोजन विस्तारा जोजन सहस्र उतंग अगारा। हरिदासन के मंदिर जेते। सुर सुरभि सुर स्यामद जेते॥ जहांन राज जन्म दुख भोग। जहांन ब्याधि नहि मानस रोग। पुण्य छीन जह कबहु न होइ। जहां गये फिरि आवै न कोइ॥

End—धन नर हरि तन धारन कीन्हा । जन प्रहलाद विपति हर लीन्हा ॥ अब कृपाल जस आयुस होई । सादर करिये मान सिख सोई ॥ बोले वचन विहसि असुरारी । कहा कहिये विधि बात तुम्हारी ॥ वर विचार नहि सुरै दीन्हा । अखिल लोक खल व्याकुल कीन्हा । भसमासुरै संभु वर दयऊ । पलटि महा दुख भाजन भयऊ । सहित धरा धन सैन समाजू देउ देव प्रहलादै राजू ॥ सुनि सुरेस सिंगासन दीन्हा । तिलक लिलाट कमल भव कीन्हा ॥ दोहा ॥ चैार लिये दिगेस कैा लिये हाथ हथिआर आरति करत इन्द्रावती ग्रत घट दीपक वारि ॥ सहज राम प्रहलाद कैा सिर परसि पंकरुह पान । अंतर हित नर हरि भए निज सेवक सुषदान ॥५३॥ इति श्रीरामायण बालकांडे तुलसीकृत इतिहासे महादेव पारवती संवादे प्रहलाद चरित्रे नरसिंह अवतारे कथा समाप्तं शुभं कलम गंगाराम ब्राह्मण गैाड ॥ शुभ संवत १९५५ वैसाष कृष्णपक्षे तिथि ४ रविवार पुस्तक तुलसीराम को ॥

Subject—१—गणेश और शारदा स्तुति, पारवती का शंभु से प्रहलाद चरित्र सुनने के लिए आग्रह करना, शंभु द्वारा वैकुंठ का विस्तार और शोभा वर्णन, हरि स्वरूप वर्णन, सब देवताओं का हरि की स्तुति करने का वर्णन। दक्ष मुनि का विना द्वारपाल की आज्ञा के हरि के निकट जाने का वर्णन, द्वारपाल का हरि के प्रति मुनि की शिकायत का वर्णन, मुनि को क्रोध दशा का वर्णन, मुनि का श्राप देना, कमलापति की शोभा वर्णन और शिख नख, पीठ की शोभा वर्णन, भाल की शोभा वर्णन, कुंडल की शोभा वर्णन, कपोलों की शोभा वर्णन, कोट की शोभा वर्णन, भृकुटी की शोभा वर्णन, नासिका की शोभा वर्णन, दशन की शोभा वर्णन, भुजाओं की शोभा वर्णन, कंठ की शोभा वर्णन, संख, चक्र, गदादि का वर्णन, मुनि का भगवान से भेंट होने का वर्णन। विप्र के अपमान का फल वर्णन, भगवान की लीलाओं का वर्णन, द्वारपाल के श्राप को क्षमा करने के लिए भगवान का मुनि से कहना, हरि सेवक होने के लिए मुनि का अनुग्रह, राम का अपने अवतारों का वर्णन, दनुजराज का भगवान से वर पाने का वर्णन, दनुराज के पुत्र प्रहलाद का जन्म, पिता का पुत्र वध किस दोष से हुआ, प्रहलाद को अपने कुल गुरु को सैांपना, प्रहलाद का गुरु से राम भजन फल पूछना, गुरु द्वारा विद्या की महिमा का वर्णन, गुरु का राजविद्या के लिये प्रहलाद से कहना, प्रहलाद का हठ राम भजन के लिए, गुरु का राजा से प्रहलाद की शिकायत करना, पिता का अपने प्रहलाद को समझाना। प्रहलाद का राम भक्ति के लिए फिर हठ करना, प्रहलाद का अन्य बालकों को राम भक्ति का उपदेश अध्यात्म विषयक उपदेश जिसमें मनुष्य की गर्भावस्था से लेकर पालन पोषण बालकाल युवावस्था वृद्धि अवस्था और मरणावस्था का वर्णन, कर्म की

प्रधानता का वर्णन, संसार के नाते और सम्बन्धों पर आलोचना, राम भक्ति से रहित इंद्रियों का सुख निरर्थक है, राम भक्ति बिना आहार निद्रा, भय मैथुन आदि में पशु और मनुष्य की समानता का वर्णन, अन्य बालकों का प्रहलाद से यह पूछना कि तुमने भक्ति कहां से सीखी, प्रहलाद द्वारा अपने पिता को पूर्व तप कथा का वर्णन, नारद का प्रहलाद की माता को उपदेश और वहां से भक्ति का अंकुर पैदा होना, राजा का प्रहलाद की परीक्षा लेना, प्रहलाद द्वारा राम की महिमा का वर्णन, राजा का प्रहलाद को राम विमुख होने के लिये समझाना, प्रहलाद का हठ करना और राजा हिरण्यकश्यप का तलवार लेकर मारने के लिए उद्यत होना तथा मंत्रियों द्वारा राजा को समझाना, प्रहलाद को हाथी तले कुचिलवाना, माता का प्रहलाद को समझाना, अन्य पुरवासियों की शिकायत उनके बालकों को बिगाड़ने का कारण प्रहलाद को बता कर अपराध लगाना, राजा का पुनः क्रोध कर प्रहलाद को पहाड़ से गिराना इसके पश्चात समुद्र में फिकवाना और वहां से भी राम राम जपते हुए प्रहलाद का निकल आना। फिर प्रहलाद का अग्नि में डाला जाना इसके बाद में सर्प बिच्छू आदि से कटवाना और अंत में खंभ से बंधवाना और राजा का तलवार लेकर मारने के लिये उद्यत होना और हरि का प्रगट होना। राजा और भगवान का युद्ध होना और राजा का उदर चीरा जाना, प्रहलाद का भगवान को प्रणाम करना और उनका आशीर्वाद देना और वरदान देना और भगवान द्वारा प्रहलाद का राजतिलक होना और भगवान का अंतर्धान होना।

No. 367(*c*). Prahalāda Charitra by Sahaja Rāma. Substance—Country-made paper. Leaves—2. Size—$8\frac{1}{4} \times 3\frac{1}{4}$ inches. Lines per page—14. Extent—320 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bhaiyā Sañtabaksha Siṁha, Guthawā, District Bahrāich.

Beginning—......................कन कैसे तरनि आदि अम्बुज महं जैसे। गदा एक कर रिपु मदहारी। देखि महामुनि भये सुखारी॥ लीला कमल एक कर लीन्हें। भ्रमन करत मुनि मन बस कीन्हें॥ भाल तिलक श्रुति कुंडल लोला। झलकत पुनि पुनि मंजु कपोला॥ रतन किरीट विमंडित शीसा। कहि न सकहिं छवि अज अरु ईसा॥ कमल बिलोचन लोल सुनासा। भृगुटी कुटिल मनोहर हासा॥ श्री सुरभी मुनिपद जनु चच्छा। उर श्रीवत्स कहै कवि दच्छा॥ दो०—कंबु कंठ कौस्तुभ लसै उर तुलसी की माल। चरन चलावति श्री मंनहु सुमिरि सवतिया साल॥ ५॥

End—दनुज राज लषि रूप खरारो। चला सक्रोध गदा कर धारो॥ हे हरि कुहुक तोहि मैं जाना। छल करि बधेउ बंधु बलवाना॥ अब नरहरि तन धरि मम नेरे। आयहु कठिन काल के प्रेरे॥ अस कहि कोन्हेसि गदा प्रहारा। हरि धरि भूपर पटकि पछारा॥ मरै न भूपर विधि वर दीन्हा। ऊरू उदर विदारन कोन्हा॥ उदर विदारि रुधिर करि पाना। खोजत जन प्रहलाद समाना॥ रूप भयंकर दशन कराला। पहिरे उर अंतावरि माला॥ शोणित सद्य भरी मुख मोंछै। रसना अधर कपोलन पोछै॥ दो०—नारदादि सनकादि शिव ब्रह्मादिक सुर भूरि। निकट न जाहि सभीत अति। विनय करहि सब दूरि॥ ४३॥ कमला सन कमलासन भाखे। निकट जाहु कर कानन्ह राखे॥ हम यह रूप कबहुं नहिं देखा। रहत रहित हरि संग विशेषा॥ तब प्रहलाद निकट सुर आये। करि विनतो विधि हृदय लगाये॥ धन्य तात तुम साधु सुजाना। प्रेम ते प्रगट किये भगवाना॥ शिव विरंचि सुर मुनि दिगपाला सनमुख होइ न सकहिं यह काला॥ तुम प्रहलाद जाहु प्रभु पाहो (हम सब देव विलोकि डे..........

No. 367(*d*) Sundara Kānda Sahaja Rāma. Substance—Country-made paper. Leaves—54. Size--8 × 6 inches. Lines per page—38. Extent—1,028 Anustụp Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1926 or A. D. 1868. Place of deposit—Viśwanātha Pustakālaya Ṭhakura Maheśwara Simha, Village Dikaulia, Post Office Bisawan̐, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेसायनम:॥ अथ सुंदर कांड लिष्यते॥ श्री गुर श्री रघुवंश मणि पद सरोज सिर नाइ। सुंदर सुंदर की कथा कहैं जथा मति गाइ॥ चौ०॥ तिहि औसर मारुत सुत वीरा। देषा लवन पयोध गंभीरा॥ सीताराम रूप उर लाषो बोले पवन तनय वल भाषो॥ मैं अब करौं गगन पथ गवनू। निदरौं वैन तेज मन पवनू॥ देषहु सकल भालु कपि वैसे। नाघैा जलदि धेनु पद जैसे॥ सोधौं जनक सुता सब ठाऊं। यहि विधि आज पुरटपुर जाऊं॥ जो न लहैं पुनि सिय सुधि लंका। सपदि जांउ सुरलोक असंका॥ जो सुरलोक न सिय सुधि पावौं। रावन अधम वांधि लै आवौं॥ ताते सत्य कहौं तुम पाहीं। प्रभु प्रताप वल निज बल नाहीं॥ दो०॥ अस कहि भुजा पसारि दोउ चला गगन पथ कोस। पंच पंच फन सहित जनु जोहत जुगल फनीस॥ चले साथ कपि नाथ के कुसुमित सुतरु सुरंग॥ चले पठावन लोग जिमि गुरु हरिजन के संग॥

End—उछरि उछरि जल वहेउ श्रकासा। नभ सरि जलद मनावन श्रासा॥ सरित प्रवाहु बहेउ जल उलटा। विपति परे गति त्यागहिं कुलटा॥ मरि मरि जीव रहे उतराई। कूल मूल कछु चले पराई॥ छिटक छीट को परो गढ़ लंका। सुनि रव घोर सुरारि ससंका॥ सबल सुवेल नाघि जल गयऊ। लंका नगर कोलाहल भयऊ॥ पांच दिवस महं वाधेउ सेतू। हरषे निरषि भानुकुल केतू॥ जोजन चारि सेत चकलाई। श्रति श्रनूप कछु वरनि न जाई॥ भालु कपिन की श्रद्भुत करनी। सेस सहस मुख सकै न बरनी॥ दो० ॥ श्री रघुवीर प्रताप ते उपल भए जल जान। सुजस भयो नलनील को जानहि संत सुजान॥ पवन तनय की पीठि पर भए श्ररूढ़ रघुराव। मुये जिये जल जंतु सब हरषे दरसन पाउ॥ बालि तनय की पीठि पर लषन भए श्रसवार। सुमिर सिवा सिव पुत्र को गवने राजकुमार॥ चली भालु कपि सयन सब को कवि वरनै पार। सहज राम सुरपुर मची जय जय जयति पुकार॥ उतरि पार डेरा किए सबल सुवेल समीप। उतरे वानर भालु कपि जय दिनकर कुलदीप॥ इति श्री रघुवंस दीपक सहजराम कृत सुंदर कांड समाप्तः दस्तषत मोहनलाल के संवत १९२५ पूसवदी श्रमावस्यां।

Subject—इस ग्रंथ में श्रीरामजी का हनूमानजी को सीता खोज के लिये भेजना रामजी के समीप हनूमानजी का समाचार लाना, नलनील का पुल वांधना श्रोर राम लक्ष्मण सहित वानर रीछ श्रादि का पार होकर लंका जाना वर्णन है।

No. 368. Rasaratnāgāra by Siyad Pahāra of Kasi Substance—Country-made paper. Leaves—96. Size—$11\frac{1}{4} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—11. Extent—2640 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1940 or A. D. 1883. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhingā, Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ हज़रत गोस श्री श्रवदुल हू॥ श्रथ स्तुति॥ दोहा॥ श्रलष निरंजन एकु है श्ररु दूजो नहिं होइ। यह काहू कीन्हें नहीं रहि कीन्हें स चकोर॥ १॥ चौ०॥ मुहम्मद नाम जगत उजियारा। ताके हेत रचैा संसारा॥ पुनिता मत चारि विधि दये। पंथ दिखावन के निर्मये॥ पुनि विधि रचे मोहम्मद गोस। जाके सुमिरन रहै न होस॥ इतनो तासु वड़े विधि किया। जासम को महि श्रोर न हुश्रा॥ विद्या गुण के सरे सुजान। सुंदरता के मदन समान॥ सब ही विधि के जेता गुणी। सेवा करै रिषी सुर मुनी॥ श्ररु सब

विधिना ग्रापुन लहै। तिन के गुण प्रगट के कहैं ॥ सेवा करो नरायण साइ। गहै पाइ रे सेवा पाइ ॥ एकहि नाम नमैं यह भई। जानि वेगि कै ग्राज्ञा दई ॥

End—ग्रष्ट शेष के देइ सिराइ। काथ देत त्रिदोष नसाइ ॥ पीपरि के पुक्षेप सें कही। रोगु जाइ जो सुपक्क रही ॥ ग्रथ पुनरवार ॥ ग्रथ ईंगुरादि वरी ॥ ईंगुर तेल चुपरी क्षेना के ग्रंगरा पर धरै जब धुग्रा निकसि जाय तब उठाइ लेइ ग्रावरासार गंधक टंक १ ग्रकरकरा टंक १ मिरच टंक १ पीपरि टंक १ ग्रभ्रक टंक १ फुलयो सुहागा टंक १ मिटै टंक १ जीरा टंक २ फूंजि लीजै तव वाट जै काज रुसी मह सो वरी बांध जो मिरच प्रमान तव खाइ सन्निपात कों दीजै ग्रादे के रस सों सन्निकोला कैाया तोसो दीजै ॥ इति श्री सय्यद पहार संपूरनं ॥ शमत्त १९४० मिति माघवदी १ एक मंगलवार समातम् ॥ लिषितं काशी विश्वरंजी काशी मध्ये गंगाजी राम जी नमोनमः कालभैरव काशी के कोटवाल

Subject—पृ० १—२ प्रार्थना कवि वर्णन। पृ०—३—८ तोल वर्णन। ग्रभ्रक वर्णन। गंधक, सज्जी, रंगविधि, पारा, हड़ताल, सोनामाखी, ईंगुर, नैानिग्रा शोधन, मुर्दाशंख, शिलाजीत सोधन। पृ० ९—१५ ग्रभ्राभ्रारो, वंग विडंगादि, यंत्र विधि। पृ० १६—२६ धातु गुण ग्रैागुण, मारन विधि, नाग विधि, धोने की विधि, हीरा कुंद, तांवा, वंग विधि। पृ० २७—३२ ग्रभ्रक, हरताल, मकरध्वज रस, गंधक पाट, शीशा रांगा, पारा, सिंदुर, कपूर। पृ०—३३—४२ गंधक तेल, कनक सुंदरी, मुनि वल्लभ, वंग रस, कुसुम भुवंग, चन्द्रकान्ति, संखिया, ब्रह्मखपरेश्वर, भस्मसूत, कुष्ट हरताल, धातु हलाहल, तिरोरदा, कंठीरस। हेम रस, रुसो जंगाल, रूपराज, रसाराजस, मदनसुंदरी। पृ० ४३—५७ नागेश्वर, मृगांक, गैारी, गनेस रस, कल्यान गुटका, मदनपाल गुटका, चंद्रद्रयारस, रामवाण, मुक्ता विधि, हरताल, धूनो, मरहम, उवटन, महातैल, दिनाई उपचार, संकोचन, थंभन, पृ० ५८—६९। वायुका उपचार, गंधक तैलादि, सैाभाग्य सोंठि, ज्वरांकुस, प्रमेह, कर्णरोग, त्रिकुटा, ग्रवलेह, मूंगा बनाना, मेघनाद रस, नारायण वटी, बवासीर का इलाज। मृगी का नास, तिजारी, कायाकल्प, बांझ विधि, भृंगराज रस। पृ० ७०-८१ काथ, गुटिका, ईंगुर विधि विषादि चूर्ण, चिरायता, पाताद्राव, थंभन विधि, काथ, जोगराज, मंजाष्टादि, उदै भास्कर, कोट विधि, ग्ररस भुवंगम रस, गर्भ पातन पृ० ८२—९६ काकवंध्या, कुरंड विधि, जोरकादि वटी, खांसी, सैाभाग्य सोंठि, काढ़ा, तावे ग्रादि का ग्रनुपान। मंडारी रस, प्रताप लंकेश्वर, सूरज रस, कालाग्नि, ब्रह्मभैरों, सूतादि रस, मदनमोदक, षट भैषज, काढ़ा, इंगुरादि वटी।

No. 369. Vinaya Bihāra by Sukhapunja (Nandagopāla) of Gaṅgāpura (Kashi). Substance—Country-made paper. Leaves—9. Size—12 × 5 inches. Lines per page—10. Extent—220 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1819 or A. D. 1762. Place of deposit—Rāja Pustakālaya Bhingā, Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ विनय विहार लिष्यते ॥ दोहा—गौरि तनै सुमिरे बनै सनै सनै सब काज । करनधार वल उदधि ते जेहि विधि तरत जहाज ॥ १ ॥ कबित ॥ वारन वदन हैं विदारन विघन घन मोह मन मारन हैं तनय गनेस के । कारन हैं सुख के कलुष ते उधारन हैं दीन जन तारन हैं बारन कलेस के ॥ अभै पद दायक हैं सभै विधि लायक हैं देव गननायक सहायक सुरेस के । चंदन हैं सुर के असुर के निकंदन हैं सुख पुंज वंदत हैं नंदन महेश के ॥ २ ॥ दोहा ॥ श्री गुरु दीनदयाल गिरि पद वंदौ सुखदानि । जासु कृपा कवि रीति मो भई प्रीति पहिचानि ॥ ३ ॥

End—दो०—गंगापुर काशी निकट रजिधानी कसिवार । लक्षिमी नारायण तहां वसत सहित परिवार ॥ ५५ ॥ कायथ कुल श्री वासतव नंदन नंद गोपाल । वन्दन कीन्यो गौरि पद कंदन दुख भो जाल ॥ ५६ ॥ कविताई में नाम निज गुरु प्रसाद वर पाय । भाषत हैं सुख पुंज कहि जगदेवहि शिरनाय ॥ ५७ ॥ भगति सुमन गुथि नति गुनन मोमन मालाकार । ईस प्रिया पद सीस धरि विरच्यौ विनय विहार ॥ ५८ ॥ प्रेम घ्रानते सूंघिहै जे नर अरथ सुगंध । तेहि ढिग कबहुं न व्यापि है दुरगति को दुरगंध ॥ ५९ ॥ नि० का०—अंक मही ग्रह सिद्धि ससि संवत मै यह ग्रंथ । १९१९ आस्विन सुदि रस कवि दिवस भयो सुमति को पंथ ॥ ६० ॥ इति श्री विनै विहार गिरिंद तनया चरनारविंद स्तव सुषपुंज कृत संपूर्णम् ॥ शुभ मस्तु सिद्धि रस्तु मि० कार्तिक शुदि ७ ॥

Subject—छन्द—१—२ गणेश वन्दन ।
छं० ३—४ गुरु बन्दना । छं० ५, ६, ७, ८, ९ । गौरी शिव वंदना ।
छं०—१०—५४ गौरी प्रार्थना । छं० ५५—५९ । कवि बंश वर्णन ।
छं०—६० निर्माण काल ।

No. 370. Rāmāyana by Samaradāsa of Magaraurā, District Sitāpur near Kalyānī. Substance—Country-made paper. Leaves—265. Size—10 × 6 inches. Lines per page—36.

Extent—4,790 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1900 or A. D. 1843. Date of Manuscript—Samvat 1927 or A. D. 1870. Place of deposit—Ṭhakura Durgā Simha Raīs, Dikauliā, Post Office Biswāñ. District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वाल कांड लिष्यते ॥ भजन ॥ गनपति सुमिरौं सिद्धि निद्धि दायक । लंबोदर गज वदन सदन सुष कृपासिंधु सब विद्धि से लायक ॥ विघन हरन सुष करन उमा सुत आदि देव समर्थ गननायक । मंगल करन दहन दुष दारुन संकर सुनु जगत मुन भायक ॥ सुनहु अर्ज यह गर्ज समर को कहौ राम जस होहु सहायक ॥ रागनी भैरवो ॥ ध्यावैं आदि सक्ति महरानी । व्रह्मा विश्नु रुद्र जेहि ध्यावैं तुह्मरी गति अद्भुत जगरानी । जगत तेज चौदहौं भुवन में वेद सेस नहि सकत वषानी ॥ रक्तवीज सम कोटिन दानौ निषि षिम दुष्ट वध्यो है भवानी ॥ समर चहत राम जस वरनन करौ सहाय देवी वरदानी ॥ सो० ॥ तुम गुर ग्यान निधान मैं अग्यानी अधम हौं । जानौ मोहि अजान करहु समर निस्तार प्रभु ॥

End—राजा रघुवर के वंस मह राम अवतरे आय उनको सुजस अपार है समर कह्यो नहिं जाय । ध्यान करत ध्यानी थके ग्यानी करते ग्यान । पार न पायो जग कोई का कहै समर अयान । वहि रघुकुल में जन्म है समर राम को दास । तीस कोस पश्चिम दिसा अवधपुरी ते वास । सरजू जहं कलि विष हरन और अनंदहिं देत । राम अवतरे हैं जहां ताहि न भजसि अचेत ॥ जे पढ़िहैं सुनिहैं समर राम चरित मन लाय । भवसागर तरिहैं सही दिन दिन सुष सरसाइ ॥ मगरौड़ा स्थान है कल्यानी के तोर । समर इथि रास तजि सुमिरो श्री रघुवीर ॥ कोविद कवि सुर साधु ते अर्ज समर सिर नाय । वनो न होवै सोइ छम्यो जान्यो सेवक आय ॥ संवत सत उन्नीस से औ पावस के माहिं । सुक्ल पक्ष तिथि सप्तमी नषत मैत्र गुर ताहि ॥ इति श्री रामचरित्रे मानस सकल कलिकलष विध्वंसने विमल वैराग्य तुलसीदास दासस्ये समरदास कृत उत्तर कांड समाप्तः ॥ लिषतं विश्वनाथ पांडे संवत १९२७ पठनार्थ दुर्गा सिंह के ॥

Subject—इस पुस्तक में वाल, अयोध्या, किषकिंधा, सुन्दर, लंका उत्तर—सातकांड हैं और सातो में तुलसीदास जी की भांति भजन दोहा चौपाई, सोरठा आदि में राम जी की लीला वर्णन की गई है ।

No. 371(*a*). Kavitta by Śambhunātha of Terā, Unao, Substance—New paper. Leaves—3. Size—7 × 4¾ inches.

Leaves per page—32. Extent—48 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Banibhushana Ji, Rāe Barelī.

Beginning—श्री शम्भुनाथ के कवित्त ॥ सांप सबै सरके हर देह ते शृंगन में सुनि मोर को वानी ॥ बैल भजो लखि सिंहन को गन गोदत ही गिरि को रजधानी ॥ द्वार में काहि ले ग्रावै लिवाइ वरात तो पोछे फिरी भररानी । वाहर ठाढ़ी हंसै लखि शम्भु गई पुर ते जुरि जो ग्रगवानी ॥ १ ॥ सैल की गैल यो बैल को सिंह दरोन मो देखि परो निज नेरे । पूछ गहै गन जात चले डरि भाजि चलो न फिरे फिरि फेरे ॥ ग्रागे ह्वै लेन चले वर को ते हंसै झिगरे यह कैातुक हेरे । द्वारे को चारु रह्यो कहि शम्भु वरात चली फिरि दूलह घेरे ॥ २ ॥ भाल कराल कपाल की माल कसे कटि व्याघ्र की खाल डरारी । देह में खेह धरे वरु शम्भु गरे विष रेख भयंकर कारी ॥ रोचना देन लिलार लग्यो तव तोछन ग्रांच लगी दृगवारी । ऐचि कै हाथ ग्रचेत गिरो दुज देखि हंसै सब कैातुक भारी ॥ ३ ॥

End—खेलत फाग सुहाग भरी जिन पै सुर ग्रंगना डारतीं वारि है । जैये चले ग्रंठिलैए उतै इतै कान्ह खड़ो व्रषभान कुमारि है ॥ शंभु समूह गुलाब के सोसन को रंग केसरि डारि वेगारि हैं । पामड़ो पामड़े होत जहां तहं को लला कामरी पै रंग डारि है ॥ १३ ॥ वालम के विछुरे वढ़ी वाल को व्याकुल विरहा दुख दानिते । चैापरि ग्रानि रची कवि शम्भु सहेलिन साहिविनी सुखदानते ॥ तू जुग फूटै न परी भटू यह काहू कहो सखिया सखिग्रान ते । कंज से पानि ते पांसे गिरे ग्रंसुवा गिरे खंजन सी ग्रंखियान ते ॥ १४ ॥ सोए लोग घर के डगर के केवारे खोलि जिय जानि वीति जुग जाम गई जामिनी । चापे पद चुप चाप चोरी चेरा चितवत चली हितू पास चित चाह भरी भामिनी । पैठत सकेत के निकेत के निकट शम्भु कैसी वन वीथिन विराज रही कामिनी । चामी कर चोर जानी चंपलता भैार जानी चांदनी चकोर जानी मोर जानी दामिनी ॥ १५ ॥

Subject—हास्य रस के ८ छंद, करुणा रस के—२ छंद, वीर रस के १ छं० होली—२ छंद, विरहिनी का वर्णन—२ छंद

No. 371(*b*). Muhurta Chintāmaṇī Bhūshā (Muhurta) Manjarī). Name of author—Śambhunāth Tripāthī. Substance—Country-made paper. Leaves 72. Size—10 × 6 inches. Lines per page—40. Extent—1,440 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1803 or A. D. 1746. Date of Manuscript—Samvat

1903 or A. D. 1846. Place of deposit—Pustakālāya Rājā Lāltā Bhakśha Siṁha Ji Talukédara Nilgama, Post Office Nilaganva, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मुहूर्त चिन्तामनि भाषा लिष्यते ॥ सघन अनघ के दलन को तुव समान को होहि । हरज विनायक को हरै विघन विनायक तेहि । छबि कदंब लखि अंब के उमड़त मोद अषंड ॥ कलरव करि करि वदन फेरत सुंडा दंड ॥ अति सुदेश मम आचरन देसन को सिरताज । रूव सुष करि वगि सिर जहां वैश भूप को राज ॥ अमल चरित तेहि देश को ज्यों सुरसरि को सोतु । जहां धरम अ चरण सुष दिन दिन दूनो होत ॥ प्रगट भये तेहि देश में जाके वेश प्रभाव । अरि कुल मरदन सुख सदन मरदन नर या राव । तेहि मरदाने राय के प्रगट भये अचलेस । जाके गुण गण को कथा वरणि सकै नहिं सेस ॥ जयति पत्र जग जिन लयो सत्रु समूह नसाइ । निज वश करि तुरकान दल कस्यो मढ़ो में आय ॥ सभा मध्य बैठे हते एक समय अचलेस । तिन कवि शम्भूनाथ को कीन्हो यह निदेस । जैसे जातक चंद्रिका करि दीन्हो करि नेह । त्यों मुहूर्त चिंता मन्यो भाषा में करि देहु ॥

End—घनाक्षरी ॥ अथ ग्रहप्रवेश ॥ तानिए वितान मुकतान सो समेत गान मंगल के कानन सु सासो पोजिअतु है ॥ वेद धुनि सुनत न गई सुर पूज गुरजन पुरजन सो आसीस लीजिअतु है ॥ गनिका चितेरे औ लोग जे घनेरे नेरे जोहित पुरोहित न दान दीजिअतु है ॥ विहसत बदन सुमन दुरजन चढ़ि नूतन सदन को गमन कीजअतु है ॥ इति श्री मन्महाराज कुमार श्री अचल सिंह आज्ञा त्रिपाठी शंभूनाथ कृत निमितायां मुहूर्त मंजर्य्या ग्रहप्रवेश प्रकर्ण इति मुहूर्त मंजर्य्या समाप्त शुभ मस्तु ॥ घनाक्षरी ॥ जौ लौं कोल नायक कलानिधि कलपतरु कमठ की पीठि में निवास जौलौं सेस को । देव मुनि मनुज दनुज गंधर्व जौलौं मन में अग्र भाल पूजत गमन साको ॥ तौलौं हिमगिरि परा गिरिजा संभुता संभु जौलौं अमरावती अमरेश को । मान सरवर जल प्रफूलित के जौलौं तौलौ राज राजै राजवंशी अचलेश को ॥ इति श्री मुहूर्त चितामणि भाषा समाप्तम् । लिषतं गंगा गणेश संवत् १९०३ श्रावण मासे शुक्ल पक्षे तिथौ चतुर्दस्यां ॥

Subject—मुहूर्त चितामणि ज्योतिष विद्या की पुस्तक का भाषा किया गया है, इसमें मुहूर्त आने जाने व्याह यज्ञोपवीत यज्ञ आदि के वर्णन किये गये हैं उनके लाभ हानि भी लिखे हैं ।

No. 371(*c*). Muhurta Chintāmaṇī by Śambhūnātha. Substance—Country-made paper. Leaves—60. Size—15 × 5

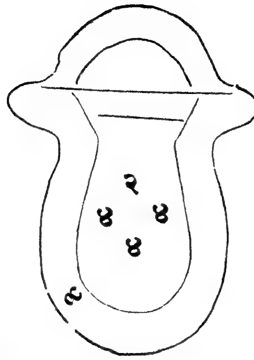
inches. Lines per page—30. Extent—2250 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1803 or A. D. 1746. Date of Manuscript—Samvat 1911 or A. D. 1854. Place of deposit—Chhatra Siṁha Ṭhakura, Katailā, Post Office Phakharpur, District Bahrāich (Oudh).

No. 371(*d*). Muhurata Manjarī by Śambhūnātha Tripāthī of Baksara (Rāe Barelī). Substance—Country-made paper. Leaves—62. Size—11½ × 5 inches. Lines per page—20. Extent—1550 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1803 or A. D. 1746. Place of deposit—Paṇḍit Achyutakumār Uttarpārā, Rāe Barelī.

Note—भ्रादि No. 371(*c*) पर लिखा गया है।

End—घनाछरी—सूरज नषत ते कलस मुष दीजै एक ताते कहू भ्रागिन की ज्वाला ते जरतु है। चारि चारि नषत विचारि वहु दिर्सान्ह में दीजै फल ताको तैान टारे न टरतु है ॥ उदवस लाभ लक्ष्मी कलह बहुरि मध्य वेद में परै तैा भ्रासु प्रानन्नि हरतु है ॥१०॥ (एक चरण नहीं है) तानिए वितान सुकतान सो समेत भ्रान मंगल के कामन सुधा सो पीजियतु है। वेद धुनि सुनत नगर सुर पूजि गुरजन सो भ्रसीस लीजियतु है। विहसत बदन सुमन द्विरदन्ह चढ़ि नूतन सदन के गमन कीजयतु है ॥ ११ ॥

उत्तर	१२ १ २ ३	उ०	मुष लग्ने रविः	६ ८ १३
पश्चिम	३ ४ ५ १	प०	मुष लग्ने रविः	२ ७ १२
दक्षिण	६ ९ ८ ९	दक्षिण	मुष लग्ने रविः	१ ६ ७
पूर्व	९ १० ११ १३	पूर्व	मुष लग्ने रविः	५ १० १५



Subject—पृ० १ गणेश स्तुति, आश्रयदाता का परिचय, ग्रन्थ रचना का कारण। पृ० २—निर्माण सम्बत, तिथि वर्णन तिथि ईस, कर्कच योग वर्णन, पृ० ३—दन्तधावन विचार, तिथि मिलन, नक्षत्र शून्य और नक्षत्र तिथि मिलन शून्य वर्णन। ४—तिथि, वार, नक्षत्र मिश्रित दोष, आनंद योग वर्णन—५—सिद्धि योग, और कुयोग परिहार वर्णन। पृ० ६—कुलिक योग वर्णन और रव्यादिक वार दुष्ट मुहूर्त वर्णन। पृ० ७—रव्यादीनां मुहूर्त दोष वर्णन, भद्रा विचार और लोक वास वर्णन। पृ० ८—सिंहस्ते गुरौ परिहार त्रय, वक्र अतिचारे परिहारः, वार प्रवृत्ति और काल होरा वर्णन। पृ० ९—मन्वादयः और युगादयः वर्णन, शुभाशुभ प्रकर्ण समाप्त, नक्षत्र नाम ध्रुवादि संज्ञा वर्णन। पृ० १०—अधोमुखादि नक्षत्र, नारी भूषण परिधान, वस्त्रचक्र, मद्यारंभः, गवांक्रय विक्रय, पशूस्थापन वर्णन। पृ० ११—हाट मुहूर्त, विक्रय मुहूर्त, गजवाजि कर्म, आभूषण बनाने का मुहूर्त, सूची कर्म वर्णन। पृ० १२—शस्त्र धारण मुहूर्त, अंधादि नक्षत्र ज्ञान, थाती धरने का मुहूर्त, राज सेवा मुहूर्त और सेवा चक्र वर्णन। पृ० १३—हलकर्म, वीज वोने का मुहूर्त, खेत काटने और अन्न लेने का मुहूर्त। पृ० १४—रुधिर निकलवाने का मुहूर्त, शांति कर्म, अग्नि निवास, आहुति विचारनाम, नौका, रोगी स्नान, और शिल्प कर्म मुहूर्त वर्णन। पृ० १५—संधि मुहूर्त, सुवर्णादिक के मुहूर्त, रोगो सक्ति विचार, विषरोगोत्पत्ति, विषधर नक्षत्र, पंचक विचार, ईंधन धरने का मुहूर्त वर्णन। पृ० १६—त्रिपुष्कर योग, नारायण वलि, मूलविचार, मूलवास, मूल वृक्ष, मूल घड़ी वीतने का विचार वर्णन। पृ० १७—अश्वन्यादि स्वरूप, देव जलाशय प्रतिष्ठा वर्णन २ प्रकरण। पृ० १८—संक्रांति चक्र, उत्तरायन दक्षिणायन विचार। पृ० १९—कर्ण ज्ञान, सुतादि ज्ञान, वाहरिणादि विचार वर्णन। पृ० २०—मलमास विचार, ३ संक्रांति प्रकरण समाप्त। पृ० २१—गोचर वर्णन।

पृ० २२—तारा विचार, विरुद्ध तारादान वर्णन। चंद्रमा की १२ अवस्था, गुरु विरोध औषधि स्नान विचार वर्णन। पृ० २३—रव्यादि दान, अन्य सर्वेसा दान, चतुर्थ प्रकरण गोचर। पृ० २४—स्नान मुहूर्त, गर्भाधान, स्तनपान, सूतो स्नान मुहूर्त प्रथम मास दंतोत्पत्ति फल, दोला रोहन, पुंसवन सीवंतकर्म जातकर्म वर्णन। पृ० २५—निष्क्रमन, अन्नप्रासन, स्नान जल पूजा मुहूर्त, भूमि प्रवेश, तांबूल भक्षण मुहूर्त। पृ० २६—कर्णवेध, चूड़ा कर्म मुहूर्त वर्णन। पृ० २७—२८—अक्षरारंभ, गुरु शुक्र बाल वृद्धित्व, विद्यारंभ, पृ० २९-व्रतबंध वर्णन, ५-प्रकरण संस्कार समाप्त। पृ० ३०-विवाह प्रकरण। पृ० ३१-वर रक्षा मुहूर्त, चूड़ा व्रत विवाह के अंत। पृ० ३३—वर्ण विचार, तारा विचार, जोनि विचार ग्रहाणां मित्र विचार। पृ० ३३—गण विचार, रासिकूट, अरिहार, नाड़ी विचार, नक्षत्र कूट विचार। पृ० ३४—अष्टवर्ग, परिहार, अन्य विचार, रासि ईश, षटवर्ग द्रंष्कालः, सप्त मासा विचार। पृ० ३५—नवांशा विचार, द्वादशांश, त्रिशांस विचार। पृ० ३६—दिन के १५ मुहूर्त, रात्रि के मुहूर्त, विवाह नक्षत्र, पंच शलाका। पृ० ३७-सप्त शलाका, पंचक विचार वर्णन। पृ० ३८—रोग, एकार्गल, षाजूरक, क्रांति साम्यं, दग्ध तिथि, दशयोग विचार। पृ० ३९—ग्रहण इष्टि विचार तत्काल विचार, अंधादि पंगुलग्न विचार। पृ० ४०—विश्वावल विचार वर्णन। पृ० ४१—चक्र वर्णन। पृ० ४२—विवाह प्रकरण समाप्त ६, वधू प्रवेश। पृ० ४३—द्विरागमन, अग्नि स्थापन मुहूर्त वर्णन। पृ० ४४ राज्याभिषेक, यात्रा प्रकरण। पृ० ४५—जीवपक्ष मृतपक्ष, कुलाकुल विचार। पृ० ४६—पथिखड, तिथि चक्र वर्णन। पृ० ४७—घात चन्द्र वर्णन। पृ० ५८—योगिनी विचार, काल वास परिधि विचार, अयन सून, सुक्र विचार वर्णन। पृ० ४९—अंधशुक्र विचार, द्विगोसा, ललाटी योग विचार। पृ० ५०—५१—प्रस्थान विधि। पृ० ५२—भाग्य योग, कल्यान योग, विजय योग, चिंतामणि योग, सिंह योग, मृत्यु योग, केन्द्र योग, पारावर्त योग, पिनाक योग, मृत योग, संजीवन योग, भयंकर योग, अभय योग, कुंडवर योग, पाप कंचुकी योग, आनंदावर्णव योग वर्णन। पृ० ५३—जात्रा समय अंगादि स्फुरण सकुन वर्णन। पृ० ५४—उत्पात दोष, प्रवेश निर्गम विचार, यात्रा विधि, अश्वन्यादि नक्षत्र दोह दानि, दिग दोह, वार दोह, चलने की विधि वर्णन। पृ० ५५—प्रस्थान स्थान विचार। पृ० ५६—शकुन विचार, असगुन विचार वर्णन। पृ० ५७—प्रवेश निर्गम, यात्रा समय दोष वर्णन, यात्रा प्रकरण समाप्त। पृ० ५८—गृह प्रकरणः—द्वार विधि वर्णन। पृ० ५९—ध्वजादि मुख विचार, ध्रुवादि शाला, मास भेद, गृहद्वार विचार वर्णन। पृ० ६०—गृहारंभ मास विचार, तिथिपक्ष से गृह मुख विचार। वृष चक्र, दिशा नक्षत्र विचार वर्णन। पृ० ६१—राहु मुख जानने की विधि, शाला विधि,

वदानि, चैाखट विचार, वास्तु प्रकरण समाप्त। पृ० ६२—सूर्य विचार, कलस चक्र विचार, प्रवेश विधि वर्णन।

No. 371(*e*) Vaitalapachīsī by Śambhū Kavi (Śambhūnātha Tripāthī) of Bakasar. Substance—Country-made paper. Leaves—292. Size—9 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—2,956 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1809 or A. D. 1752. Date of Manuscript—Samvat 1885 or A. D. 1828. Place of deposit—Lālā Mohana Lālajī Haluāī, Nawabganj, Bārā Bankī

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वैताल पचीसी कथा लिष्यते ॥ दोहा ॥ तव सन्मुष ज्वाला मुषो उरज्वाला मिटि जात ॥ कलि कलूष अषिल जथा सुरसरि वारि नहात ॥ गनमुष सन्मुष होतहो विघन विमुष ह्वै जात ॥ जिमि पगु परत पराग मग पाप पहार विलात ॥ दोहा ॥ छवि कदंब लखि अंब के उपजत मोद अषंड ॥ कलरव करि करिवर बदन फेरत सुंडा दंड ॥ कवित्त ॥ एक समै गिरिजा को नंदनि आइ अन्हाइ कहु सरसीते ॥ भासुर भाल दिये दल आनन तै। छवि को छवि जीते ॥ सो हठि लीवे को सुडि पसारि तहा गन नायक आइ अभीते ॥ चाहि के चोप सो दैारि मनोहरे लेत सुधा अहिराज ससीते ॥

End—कहि देवी यह बचन प्रधान ॥ तुरित ह्वै गई अंतर ध्यान ॥ बचन प्रमान देविके भये ॥ दुवो पुरुष नृप घर लै गये। आयो तब बैताल के पास ॥ महाराज हिय सहित हुलास। प्रेम सहित बरस्यो नृप पाई ॥ करी विनै बहु सीस नवाइ ॥ जोतू सिःष मोहि नहिं देतैा। तो मम प्रान आजु वह लेतैा ॥ जो तुम मेरे भये सहाई ॥ जिय से बचो सिद्धि में पाई ॥ जीवत रहैा जक्त मे जैालो ॥ क्रियादास पर कीजै तैालो ॥ यह सुनि बचन देव हिय हरषो ॥ सुमन समूह भूप पर बरषो ॥ कह्यो अचल ह्वै कीजै राज ॥ विजइ होहु सदा महाराज। जो तेरे अनहित को करै ॥ विना मीचु वह प्रानी मरै ॥ दिन दिन राज तिहारैा बढ़ै। सुजस दिवस विदिसन में मढ़ै ॥ लछिमी तजै न तेरो धाम ॥ पूरन सदा रहै मन काम ॥ जीवत रहैा भूप बहुकाल ॥ यह कहि बचन गयो बैताल ॥ कथा संपूर्न सुभ मस्तु पैाष मासे क्रिस्न पच्छे नैामी तिथिऊ भैामवासर सवत ॥ १८८५ को साल ॥

Subject—पृ० १—५ तक ज्वालामुखी तथा गणेश की वंदना, वैश्य वंश वर्णन । ग्रंथ निर्माण काल । हरिगोतिका छन्द ॥ द्विजराज कुल बन कुमुद को मुद दानि पूरन इन्दुभो ॥ निज वंस वारिज को दिनेस तिलोकचंद नरिंद भो ॥ पुनिभो आनंद कंद प्रिथवी चंद न्रिप ताके तनै ॥ भुज जोर सो जुरि जंग में जमराज हू को नहिं गनै ॥ पुनि भयै ताके अजैचंद अरिंद कुल दल जेन्ह हन्यो ॥ तिनके भये पुनि देव राय प्रचंड रैया राउ है ॥ इनरंग निरषत चढ़त जाके चैागुनो चित चाउ है ॥ पुनि भयै भेरो सो उदंड प्रचंड भैरोदास है । हरि साहिवी अरि वरन्ह की गिरि दरिन्ह दीन्हें वास है तिनके धराधर धरन को न्रिप भयो ताराचंद है ॥ निज कर अकंटक भू करो हरि प्रजन को दुषदंड है ॥ संग्राम राउ भये वली संग्राम दूलह ताहिके ॥ अति धवल कवल समान जस जगि मगि रह्यौ जस जाहि के ॥ पुनि कनिक सींह नोरंद्र ग्रिषम भानु सो जेन्ह के भयै ॥ तिन को समर भट भीर न पगु पछुयो गयो ॥ पुनि भयो प्रिथिराज प्रिथु कैसो कियो ॥ जस जूह जेहि जगमें लयो वनवास वैरिन्ह को दयो ॥ तिनके पुरंदर सो प्रवल प्रगटो पुरंदर राउ है ॥ जिनको महा भै मानिकै न्रिप के इन परस्यो पाउ है ॥ करवाल जब कर लइ तौ रिपुकाल कहि कहि सब भनै ॥ रन होइ सनमुष सुभट को जमराज हू जो नहिं गनै ॥ पुनि भयै अरि मद कदन मरदन सिंह रैया राउ है ॥ जेहि पाइ पति वसु मति हिये दिन दिन बढ़त चित चाउ है ॥ कल जुंगन कोउ पति ह्यौ सक्यो तेहि देव सते डेरि डेरन्ह सों । तजि त्रास डरे मन मुदित ह्यौ फूलो फिरै चहुं चरन्ह सो ॥ जगवंद अनंद कंद चंद कुटुंव कैरव को भयो ॥ रनधीर वार गंभीर निरमल सुजस जेहू जगमें लयो ॥ जरिजात जासु प्रताप पावक तेज तें अरिवर अनो ॥ तिन्ह के भयो सुरनाथ सो रघुनाथ जू बमिसर धनो ॥ दोहा ॥ सभा मध्य वैठ्यो हुतो येक समै रघुनाथ । वीर धीर बद भट सुभट सुतन वंधु जन साथ ॥ कह्यौ क्रिपा करि संभु सन जिथा में मानि सनेह । यह वैताल कथा हमहि भाषा में करि देहु ॥ नंद व्योमधित्र जानि कै संवतसर कवि संभु ॥ माघ अध्यारी द्वैज को कीन्हें तब आरम्भ ॥

(२) पृ० ६—२३ तक—प्रस्तावना—राजा विक्रम का जन्म, पंडितों द्वारा उनके उच्च ग्रहों का वर्णनन, उसी घड़ी एक तेली तथा एक कुम्भकार के पुत्रों का उत्पन्न होना, योगी वन कर कुम्भकार का जप, तेली को धोखे से मारना, विक्रम को भी धोखा देना, अपने साथ में अंधेरी रात्रि में ले जाना, मार्ग में भूत पिशाचादि दर्शन, मुर्दे को ले कर चलना, अपने मित्र बेताल द्वारा मार्ग में राजा का कहानियां श्रवण करना ।

(३) पृ० २४—४९ तक—प्रथम कहानी—मंत्री की कथा, काशी के राजा प्रताप मुकुट के पुत्र मुकुट शेखर और मंत्री के पुत्र मतिसागर की मित्रता होना,

दोनों मित्रों का शिकार को जाना, रात्रि हो जाने पर एक शिव मंदिर में निवास, वहां पर नारियों का आगमन, एक स्त्री पर राजकुमार का मोहित होना, छल बल से उसे ले आना, इस पर विक्रम का हैद्रक नगर के विप्र चंद्रसेन की कथा सुनाना, उस ब्राह्मण के बालकों का सर्प द्वारा खाया जाना। पाले हुए नकुल द्वारा उस सर्प का विनाश तथा ब्राह्मणी द्वारा उस नकुल का हनन पुनः ब्राह्मणी के पश्चात्ताप का वर्णन, मुर्दे का उसी डाल से लग जाना जिसे राजा लाया था।

(४) पृ० ५०—६३ तक—द्वितीय कथा—तीन वरों की कथा—एक ब्राह्मण की रूपवती कन्या को वर न मिलना, अनायास ही तीन वरों का घर पर आजाना, ब्राह्मण का संकोच कि किस को कन्या दें ? दैवात् उस कन्या को सर्प का काटना, उसका मरना, एक वर का उसके साथ जल कर मर जाना, दूसरे का उसकी भस्म की रक्षा करना तीसरे का तीर्थ यात्रा को निकल जाना अंत में एक पोथी पाना जिससे जला हुआ मनुष्य जीवित हो जावे। कन्या का जीवित होना, वेताल का प्रश्न कि कन्या किसे मिले, विक्रम का सकारण उत्तर, मृतक का उसी डाल पर चला जाना।

(५) पृ० ६४—८९ तक—तृतीय कथा, शुकसारिका की कथा, (रूपसेन) भागवति रानी के कंत का अपने मित्र शुक द्वारा 'सुर सुन्दरी' का समाचार पा उससे विवाह करना, राजा रानी के अनेक भोग विलास के पश्चात् शुक—सारिका को भी—एक पिंजड़े में पहुंचा देना, सारिका का तोते से विमुख रहना तथा एक साहूकार के पुत्र की—जिसने अपनी स्त्री को मारने की चेष्टा की थी—कह कर पुरुषों से घृणा प्रगट की तथा तोते ने एक सेठ की पुत्री की कथा—जिसके मित्र द्वारा उसकी नाक काटी गई थी—अपने पति का नाम लगाने का अपराधी बता कर घृणा प्रगट करने का वर्णन।

(६) पृ० ९०—९९ तक—चतुर्थ कथा। जंबूदीप के अंतर्गत धारानगर के राज के मित्र हरिदास की कन्या महादेवी के लिये वर की तलाश विप्र का राजा की आज्ञा से विदेश गमन और वहां से एक गगन में उड़ने वाले विप्र वालक के साथ आना और उसे अपनी कन्या देने का निश्चय करना, घर आकर ज्ञात करना कि एक त्रिकालदर्शी विप्र वालक स्त्री द्वारा और दूसरा उसके पुत्र द्वारा और लाया जा चुका है। शंका उठना कि किसको कन्या दी जाय। नगर निवासियों का निश्चय कि प्रातःकाल देखा जायगा। रात्रि को विप्र कन्या का हरण, ब्राह्मण का पश्चाताप, त्रिकाल दर्शी वालक द्वारा समाचार पाकर रथ पर आरूढ़ हो तीसरे शक्तिशाली का जाकर राक्षस को मार के कन्या को ले

आना, परस्पर विवाद होना, वैताल का प्रश्न राजा से कि किसको कन्या ब्याही जावे ? राजा का सकारण उत्तर देना कि वह कन्या लाने वाले को दी दी जाय, उत्तर सुन कर मृतक का फिर उसी डाल पर लटक जाना और राजा का पुनः उसके लेने के लिये जाना।

(७) पृ० ९९—१०८ तक—पंचम कथा नर्वदा नदी के तट पर एक राजा का देवी का मन्दिर बनवाना, एक रजक पुत्र का देवी के कुंडों में स्नान कर उनकी पूजा करके निकलना और एक रजक कन्या को देख कर उस पर मोहित होना और देवी से वर मांगना कि यदि यह पत्नी मिले तो तुझ पर अपना शीष चढ़ा दूंगा। पिता के उद्योग से उसे पत्नी के पिता का अपनी पुत्री को देने का वचन, रजक पुत्र का अपने मित्र सहित जाकर उस कन्या का लाना, मार्ग में देवी का मन्दिर मिलना देवी पर रजक पुत्र का शीष चढ़ा देना। पीछे उसके मित्र का जाना और उसका भी शीष का चढ़ा देना। पुनः उस रजक कन्या का मंदिर में जाकर वैसा ही करने का इरादा देख देवी का दया करना और कहना कि उनके शिरों को उनके धड़ों पर रख कर तू बाहर निकल जा वह जीवित हो जावेंगे। शीघ्रता में एक का शीश दूसरे के धड़ पर रख जाना, दोनों का परस्पर घर आकर पत्नी के लिये झगड़ा, वैताल का प्रश्न कि वह स्त्री किसको मिले, राजा का उत्तर कि जिस पर उसके पति का शीष है उसी को मिले यह सुन कर मृतक का वहीं पर पुनः पहुंच जाना। राजा का पुनः जाना।

(८) पृ० १०९—११५ तक—षष्ट कथा—चंपापुर के नृपति की रूपवती कन्या के लिये वरों का खोज करना और प्रत्येक के गुणादि अंत में उसी को उसे सुनाना न रुचने पर पुनः लोगों को भेज कर उसके योग्य चार नृपालों का आना, एक पंच वस्त्र उपराजने वाला (नित नये), दूसरा शास्त्र धारी, तीसरा शस्त्रपाणि चौथा पक्षियों की बोली पहिचानने वाला, बैताल का प्रश्न कि किसको कन्या मिले, राजा का सकारण उत्तर कि शस्त्रपाणि वाले को सुनते ही मृतक का पुनः चला जाना।

(९) पृ० ११६—१२६ तक—सातवीं कहानी। एक राजकुमार का दल बल सहित एक नृपति की राजधानी में आकर नौकरी की इच्छा प्रगट करना, राजा का उनको रहने की आज्ञा दे देना, उसका नित्य प्रति ढाल तरवार लेकर राज दरबार में कुछ द्रव्य पाने के लिये हो आना किन्तु राजा का न मिलना, यहां तक कि उसके सब साथी भी भाग गए और वह सब कुछ बेच कर खा गया। अन्त में राजा से साक्षात्कार होना, उसे राजा का एक स्थान के प्रबन्ध

के लिये भेजना, मार्ग में उसे एक मंदिर में पूजन करते एक रूप यौवन सम्पन्न युवती के दर्शन होना, उस पर मोहित होना, राजकुमार का कुंड में स्नान करते ही अपनी इच्छानुसार राजा के पास पहुंच जाना, राजा का उसी स्थान पर आना, उस सुन्दरी का राजा पर मोहित होकर आज्ञा मांगना, उनका कथन कि मेरे सेवक के साथ विवाह करो, स्त्री का आज्ञा पालन, वैताल का प्रश्न कि उक्त राजकुमार और राजा में कौन अधिक सत्यवान गिना जाय और क्यों?— राजा का उत्तर कि राजकुमार अधिक सत्यवान है, इस पर मृतक शरीर का फिर उसी डाल पर लटक जाना और विक्रम का पुनः सक्रोध उसे लेने को जाना।

(१०) पृ० १२७—१४५ तक—आठवीं कथा—एक साहुकार का मरते समय अपने तकिये में सम मूल्य के चार रत्न बता कर अपने चारों पुत्रों को एक एक ले लेने के लिये कहना. छोटे का उसमें से एक रत्न चुरा लेना। उन चारों का एक काज़ी के पास न्याय के लिये जाना, उसको न्याय में असमर्थता दिखलाने पर एक राजा के पास जाना और उसके बतलाने पर एक राजकुमारी के पास जाना। राजकुमारी का एक एक को बुला कर एक कहानी (जिसमें शपथ के अनुसार वणिक पुत्र ने अपनी पत्नी को अपने मित्र राजकुमार के पास भेज दिया था, राजकुमार ने उसे माता के सदृश बुला कर विदा कर दिया था, यह देख कर मार्ग में मिलने वाले चोरों ने उसके आभूषण न लिये थे (सुना कर पूछना कि उन तीनो में कौन अधिक सत्यवान है, तीन राजकुमारों का उन सभी को सत्यवान बताना, किन्तु छोटे का उन सभी को बेइमान बताना। अंत में उसी को चोर ठहरा कर वह रत्न निकलवाया जाना। विक्रम से वैताल का प्रश्न राजा का चोरों को सकारण अधिक धर्मात्मा बतलाना, मृतक का पुनः उसी डाल पर पहुंच जाना और राजा का पुनः उसे लाने का उद्योग।

(११) पृ० १४६—१५१ तक—नवीं कथा—वेताल का राजा से प्रश्न कि एक रानी के पैर पर कमल गिरने से उसका पैर टूट गया, दूसरी के शरीर पर सूर्य्य की किरण पड़ने से छाला पड़ गया और तीसरी की पड़ोसिन के धान कूटने का शब्द सुन कर हाथों में पीड़ा हो गई, बताइये इनमें कौन अधिक सुकुमारि है, उत्तर में तीसरी का सुकुमारि सुन कर मृतक फिर उसी डाल पर पहुंच गया। राजा पुनः लेने गया।

(१२) पृ० १५२—१६० तक—दसवीं कथा—एक राजा का अपने मंत्री को राज काज सौंप कर विषय भोग करना। मंत्री का तीर्थ को जाना, वहां एक विद्याधर कन्या को जल में देखना और रत्न जटित वृक्ष समेत डूब जाना, यह कथा उसका लौट कर राजा को सुनाना। राजा का वहां पहुंच कर उसके

साथ डूब कर पाताल पहुंचना, उससे विवाह की अपनी इच्छा करना, उसका कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को विवाह करने का बचन देना, उस दिन कन्या का एक राक्षस द्वारा निगला जाना, राजा का उसे मार कर उसका निकालना ग्रैार उसको अपने साथ लाना। कन्या को अपने पिता से मिलने की आज्ञा लेकर जाना किन्तु मनुष्य स्पर्श के कारण वहां न पहुंच सकना ग्रैार फिर राजा के पास ही लौट ग्राना। राजा का ग्रानन्द मनाना यह देख कर मंत्री की मृत्यु, इस पर बैताल का प्रश्न कि मंत्री की मृत्यु क्यों हुई। विक्रम का उत्तर कि "उसकी मृत्यु इस लिये हुई कि राजा विषय वासना में फंस कर राज्य कार्य्य को विस्मरण कर देगा" सुन कर मृतक का फिर उसी डाल से जा लगना ग्रैार विक्रम का उसे पुनः लेने जाना।

(१३) पृ० १६०—१६६ तक—ग्यारहवों कथा—एक ब्राह्मण का अपनी हरण की हुई स्त्री की खोज में निकलना, क्षुधातुर हो कर एक ब्राह्मणी से भोजन पाना, एक तड़ाग में स्नान करने जाना अपना भोजन एक वृक्ष के नीचे रख जाना, वृक्ष पर रहने वाले सर्प के श्वासोच्छ्वास से भोजन में विष मिलना, ब्राह्मण का खाकर नशा हो कर ब्राह्मणी का यह दोष बतला कर उसी के द्वार पर पड़ रहना, ब्राह्मण का ब्राह्मणी को दोषी समझ घर से निकाल देना, इस पर बैताल का पूछना कि कौन पापी है, राजा का उत्तर 'बिना विचारे पाप लगाने वाला' सुनकर मृतक का उसी डाल पर लग जाना ग्रैार विक्रम का पुनः उसे लेने जाना।

(१४) १६६—१७२ तक—बारहवीं कथा किसी राजा का एक चोर को सूली का दंड देना, एक सेठ कन्या का उसे देख कर मोहित होना ग्रैार अपने पिता को उसके बचाने की प्रार्थना करके राजा के पास भेजना, यह सुन चोर का हंसना, रोना, नृप के न मानने ग्रैार चोर के सूली पर चढ़ने के पीछे सेठ कन्या का जलने का साहस देख कर उसके पति को जीवित कर देना, राजा विक्रम से बैताल का प्रश्न कि वह चोर क्यों हंसा ग्रैार क्यों रोया? राजा का उत्तर कि हंसा इस लिये कि पिता पुत्री का इतना साहस है ग्रैार रोया इस लिये कि इसका बदला कैसे चुकाऊंगा। मृतक का पुनः चला जाना।

(१५) पृ० १७३—१८७ तक—तेरहवीं कथा—एक विप्र का एक नृप कन्या पर मोहित होना एक ब्राह्मण के गुटका देने पर उसका षोड़षी बन कर कपट से राज कन्या के पास रह कर गुटका प्रयोग से रात्रि में पुरुष ग्रैार दिवस में स्त्री बन कर विषय भोग में फंस कर छै मास रह कर, राज कन्या के गर्भ रखा कर, राज महिषियों के साथ वजीर के घर गया वहां वजीर पुत्र का उस पर

मोहित होना राज द्वारा उस ब्राह्मण के न आने और वज़ीर की प्रार्थना पर वह कन्या मंत्री सुत को झांसा देकर उसका तीर्थों को भेजना और उसकी स्त्री के साथ वही आचरण करना जो राजपुत्री के साथ किया था। मंत्री के पुत्र के आ जाने पर गुटका प्रयोग से पुरुष बन कर उसका निकल जाना। ब्राह्मण से जाकर सब सुनाना। ब्राह्मण का राजा से आकर और अपने पुत्र को साथ लाकर उस कन्या को मांगना, राजा का सब समाचार बताने पर उसकी पुत्री का मांगना, राजकन्या के लिये दोनों विप्र कुमारों का झगड़ा बता कर राजा से पूछना कि वह किसे मिले? राजा का उत्तर कि "वह मूलदेव के पुत्र को मिले" पुनः मृतक का भाग कर वृक्ष पर लटकना।

(१६) पृ० १८७—१९९ तक—चौदहवीं कथा—कल्प वृक्ष के वरदान से एक राजा का उत्तम पुत्र पाना, उसका बड़ा होकर विद्रोही भ्राताओं का वशीभूत करना, राजा (अपने पिता) के कथन से उनका अपराध क्षमा कर पिता सहित विरक्त वनवासी होना, वहां जाकर भी एक राजा की सुंदरी कन्या से उसका विवाह होना, घूमते हुए उन सर्पों की हड्डियां देखना जो गरुड़ द्वारा भक्षण किये जा चुके थे, उस दिन शंखचूड़ की बारी आने पर स्वयं गरुड़ का भक्ष बन जाना, इस पर शंखचूड़ का गरुड़ को भूल से सूचित कर स्वयं उसका भक्ष्य बतलाना, गरुड़ का प्रसन्न हो कर दोनों को छोड़ देना, और वर देना, राज कुमार का सर्पों को जीवित कराना, इस पर बैताल का प्रश्न कि कौन अधिक सत्यवादी है, राजा का साधारण उत्तर कि 'शंखचूड़' सुन कर मृतक का उसी डाल पर लग जाना।

(१७) पृ० २००—२०८ तक—पन्द्रवीं कथा, विजयपुर नगर के धर्मशील नामक राजा के राज्य में रतनदत्त नामक एक वैश्य को अपनी लावण्यवती पुत्री 'उन्मादिनी' को राजा के लिये देने की प्रार्थना, राजा का उसके स्वरूप शीलादि की परीक्षा के लिये ब्राह्मणों को भेजना, राजा के विषय वासना में फंसने तथा प्रजा के दुःख के भय से ब्राह्मणों को उसके लक्षण ठीक न बताना, राजा का वैश्य की प्रार्थना का अस्वीकार करना, वैश्य का उस कन्या को सेनापति को देना, दैवात एक दिन उस कन्या को देख कर राजा का मोहित होना, और ब्राह्मणों का छल प्रगट होना, सेनापति का अपनी स्त्री राजा को देने का प्रस्ताव, राजा का धर्म भय से उसे अस्वीकार करना, और वियोग में मर जाना, सेनापति का यह देख कर जल जाना, और उसकी स्त्री का सती हो जाना, इस पर बेताल का प्रश्न कि कौन अधिक सत्यवान है? "राजा" यह उत्तर सुन कर मृतक का पुनः उसी डाल पर पहुंच जाना।

(१८) पृ० २०९—२१२ तक—सोलहवीं कथा—ब्राह्मण के एक जुआरी बालक का घर से निकल कर एक योगी को पाना, उसकी कृपा से एक यक्षिणी का आकर उसे भोजन देकर भोग विलास कर प्रातःकाल चला जाना विप्र बालक का मोह विवश हो जाना, योगी के मंत्र को जल. तथा क्रिया से उसे जपना, यक्षिणी का न आना योगी के मंत्र जपने पर भी न आना। बैताल का राजा से पूछना कि वह स्त्री क्यों न आई। उत्तर पाते ही मृतक पुनः उसी डाल पर चला गया।

(१९) पृ० २१३—२२२—तक—सत्रहवीं कथा—एक सेठ के मर जाने पर उसका संपूर्ण द्रव्य राजा द्वारा हरा जाना, सेठानी का अपनी पुत्री सहित जंगल को निकल जाना, वहाँ सूली लगे एक चोर का मरते समय अपना संपूर्ण द्रव्य देकर सेठ कन्या से विवाह करके मर जाना, संपूर्ण द्रव्य का उन दोनों द्वारा लाया जाना, ऋतुकाल में एक ब्राह्मण द्वारा सेठ कन्या का गर्भधारण करना, स्वप्न में एक दैवी पुरुष के कथानुसार द्रव्य सहित उस पुत्र का राजा के द्वार पर रख आना, बालक का गद्दी पर बैठ कर गया में पिंड दान करना, तीन करों का निकलना, बैताल का विक्रम से प्रश्न कि वह बालक किस के हाथ में पिंड दे राजा का उत्तर कि "चोर के हाथ में" यह सुनते ही मृतक का फिर उसी डाल पर पहुंचना।

(२०) पृ० २२२—२२८ तक—अठारहवीं कथा—एक राजा का शिकार के लिये जाना, एक ऋषि कन्या से उसका विवाह होना, मार्ग में एक राक्षस का उस कन्या को भक्षण करने का विचार, सातवर्ष के एक बालक को बलि देने के लिये राजा को उद्यत करके रानी को न खाना, मंत्री की सम्मति से एक स्वर्ण का पुतला देकर एक ब्राह्मण का बालक खरीदा जाना, सातवें दिन बलि की तैयारी नृप के मारते समय बालक का हंसना, राजा का नीची निगाह डालना और राक्षस का दयावान होना, इसका कारण बैताल ने राजा से पूछा, उत्तर पाते ही मृतक शरीर पूर्वस्थान पर जा लटका।

(२१) पृ० २२९—२३३ तक—उन्नीसवीं कथा—एक ब्राह्मण के चार कुमार्गी पुत्रों का शिक्षा द्वारा सुधार होकर उनका बाहर जाकर विद्या सीखना, उस विद्या की परीक्षा के लिये एक का सब हड्डियां इकट्ठी करना, दूसरे का चमड़ा लगा देना, तीसरे का पूरा रूप बना देना, चौथे का उसमें जान डाल देना, क्षुधातुर सिंह का चारों को खा जाना, बैताल का पूछना कि कौन सब से मूर्ख था। विक्रम का उत्तर "जान डालने वाला" सुन कर मृतक का पुनः अपने स्थान पर चला जाना।

(२२) पृ० २३४—२४० तक—बीसवीं कथा—एक सेठ कन्या का विप्र पर मोहित होना, जब तक सखी विप्र के यहाँ गई तब तक वियोग में उसका शरीर त्यागना। विप्र का वहाँ पहुंच कर यह देखने पर अपना शरीर त्याग देना, इतने में स्मशान में इनके जलता देख उसके पति का चिता में कूद कर जल मरना, बैताल का राजा से प्रश्न कि कौन अधिक कामांध था "जल मरने वाला उसका पति" सुनकर मृतक का फिर उसी वृक्ष पर चला जाना।

(२३) पृ० २४१—२४२ तक—इक्कीसवीं कथा—एक ब्राह्मण के तीन चतुर बालकों का बैताल द्वारा विक्रम से न्याय करना कि कौन अधिक चतुर है, एक ने भोजन में रक्त की बदबू बतला दी, दूसरे ने स्त्री के मुख से बकरी के दूध का संबंध बतला दिया और तीसरे ने तूल की उत्तम परीक्षा की, राजा ने तीसरे के अधिक चतुर बताया, उत्तर सुनते ही मृतक का चला जाना।

(२४) पृ० २४९—२६१ तक—बाईसवीं कथा—बीरबल नामक व्यक्ति का नैाकरी के लिये एक नृप के पास पहुंचना, राजा का उसे रख लेना, एक दिन किसी रोती हुई स्त्री का शब्द सुन कर राजा का उसे भेजना, परीक्षा के लिये स्वयं उसके पीछे जाना, वहां जा कर राजकुमार का उस स्त्री से बार्तालाप कर यह जानना कि वह राजलक्ष्मी है और राजा के मरने का दिवस जान कर रुदन कर रही है, प्रयत्न पूछना और अपने बालक की बलि देना, उसकी स्त्री तथा स्वयं उसका बलि वेदी पर चढ़ जाना राजा का यह आचरण देख राजलक्ष्मी का सब के जीवित कर बर देना। बैताल का प्रश्न कि किसका कार्य्य अधिक सराहनीय है। 'राजा का' यह उत्तर सुन कर मृतक का पुनः भाग जाना।

(२५) पृ० २६२—२६४—तक तेईसवीं कथा—एक विप्र के पुत्र को अकाल मृत्यु हो जाना, उसके स्मशान में ले जाने पर एक योगी का उसे सुन्दर पा उसके शरीर में प्राण डालना, अपना शरीर छोड़ते समय रोना—बैताल का प्रश्न कि योगी क्यों रोया? राजा का उत्तर कि शरीर के सम्बन्ध के स्मरण करके; यह सुन कर मृतक का फिर भाग जाना।

(२६) पृ० २६४—२८० तक चौबीसवीं कथा—एक राजा का तेरह विद्या सीख कर चौदहवीं चोरी के सीखने की इच्छा प्रगट करना घरफरा के बुला कर उसके साथ जाना, दो और चोरों का मिलना, अपने अपने गुण प्रगट करना, घरफरा का रत्न चुराना, दो चोरों का पकड़ा जाना, घरफरा द्वारा उनका छुड़ाया जाना, उन चोरों में सब से अधिक गुणवान का हाल राजा से बैताल द्वारा पूछा जाना, उत्तर में सगुन वाले चोर के बड़ा सुन कर मृतक का पूर्वोक्त स्थान पर पहुंच जाना।

(२७) पृ० २८०—२८७ तक पचीसवीं कथा—एक राजा का शत्रुओं द्वारा विनाश, उसकी रानी तथा पुत्री का वन में गमन, वहां पर एक राजा और राजकुमार की प्रार्थना पर उनके साथ जाने उद्यत होना, पिता पुत्र में यह निश्चय हो जाना कि छोटी पैरवाली पुत्र को और बड़ी पैरवाली पिता को मिले, बड़े पैरवाली राजकन्या थी, कुछ दिन पश्चात दोनों के पुत्र हुए, सब साथ साथ खेलते हैं। बैताल का पूछना कि राजा और उनका कौन रिश्ता है। इस पर राजा का उत्तर न दे कर यह कहना कि अनेक रिश्ते हैं।

(२८) पृ० २८८—२९२ तक—उपसंहार-में बैताल द्वारा उस कुम्हार के बालक का सब समाचार जान कर उसी की सम्मति से उसका देवी को बलि दिया जाना, देवी का राजा को वर देना। कथा समाप्तिः—लिखने का काल सम्वत् १८८५

No. 371(*f*). Vaitāla Pachchīsī by Śambhūnātha Tripāthī. Substance—Country-made paper. Leaves—154. Size—$8\frac{1}{2} \times 7$ inches. Lines per page—36. Extent—2772 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1809 or A. D. 1752. Date of Manuscript—Samvat 1869 or A. D. 1832. Place of deposit—Ṭhakura Basanta Siṁha, Village Uḍawa, Post Office Śāhamau, District Rāe Barelī.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ छवि कदंब लषि अंब के उमहत मोद अषंड। कलरव करि करि बर बदन फेरत सुंडा दंड ॥ १ ॥ कवित्त। एक समै गिरि राज को नंदिनी आइ कन्हाइ कहूं सरसोतें। भासुर भाल दियें दल कोल को आनन सों छवि की छवि जोतें ॥ सो हठि लेवे को सुडि पसारी तहां गननायक आइ अभीतें। चाहि कै चोप सों दौरि मनौ हरे लेत सुधा अहिराज शसीतें ॥ २ ॥ राजवंस वर्णन ॥ हरिगोता छंद ॥ ध्रुव धरज पल दल मजन जिन आचरन कृतयुग के किए। सनमान दान कृपान जज्ञ विधान कै जग जस लिए। द्विजराज कुल वन कुसु''''कामुद दान पूरन इंदु भो। निजवंश वारिज को गनै पुनि लोकचंद नरेश भो। पुनि भयों आनंद कंद पृथ्वीचंद नृपता को तनै भुज जोर सो जुरि जंग में जमराज हू जो नहि गनै। पुनि भयो ताके अजय चंद अरिंद कुल दल जिन हने जग मगत जाके जस अजैां सुर असुर मुनि गवत जनु भने ॥ ४ ॥

End—वचन प्रमान देवि कै करे, दुवैा पुरुष नृप भीतर धरे।
आयो वहुरि मित्र के पास, महाराज हिय सहित हुलास ॥ १०१

नमे पेम सहित परसे नृप पाइ , करी विनै वहु सीस नवाइ ॥
जो यह सोष मोहि नहिं देता , तौ मोहि मारि राज वह लेतो ॥ १०२
जो तुम मेरे भयो सहाई , जिय सो वच्यो सिद्धि मै पाई
जीवन रहो जगत में जो लो , कृपा दास पर कीजै तैा लो १०३
सुनिष वचन देवहि यह रच्यो , सुमन अनूप भूप पर वरच्यो ।
कह्यो अ चल ह्वै कीजै राजु , विजई होउ सदा महराजु ॥ १०४
जो तेरे अनहित को करै , बिना मोचु वह प्रानी मरै ।
दिन दिन राजु तिहारो वढै , सुजसु दिसनि विदसनि तव बढै १०५
लक्षिमी तजै न तेरो धाम , पूरन रहै सदा मन काम ॥
जीवत रहो भूप वहु काल , ए कहि वचन गयो वेताल ॥ १०६

इति श्री मन्महाराज कुमार श्री मद्राय रघुनाथ सिंघाज्ञाये त्रिपाठी शंभुनाथ कृते पंच विंशति कथायां वेताल पंच विंशति कथा समाप्त शुभमस्तु ॥२५॥ मितिः आषाढ़ सुदि ॥ १५ वार वृहस्पति । संवत ॥ १८८९ ॥

No. 371(*g*). Vaishya Vaṅśavali by Śambhu Kavi of Kānthā, District Unāo. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—$13\frac{1}{2} \times 9\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—16. Extent—160 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Date of Manuscript—Samvat 1916 or A. D. 1859. Place of deposit—Ṭhakura Raghu Nātha Siṁha Señgarā, Kānthā, District Unāo.

Beginning—इति वंसावरी वैस लिख्यते ॥ एक है रदन गज वदन विराजै जाकैं माथे जाके चन्द्र चान्दनो समाने कों । पूजै लोकपाल दिगपाल सुरपाल सवैं पढ़ै आदि रिचा सुभवानी कों । गुननकों बखाने कों सारदा महेस सेस पावैं नहिं अंत संभु अकथ कहानी कैा । गुनन को नायक है बुद्धि सरसायक हैं चारिउ फलदायक सुत गिरिजा महारानी को ॥ १ ॥

गननायक कों सुमिरि कै निजमति के अनुसार । चारिउ जुग के नृपन को करैा वंस विस्तार ॥

छप्पय—महाप्रलय के अन्त रह्यौ अवसिष्ट एक हरि । छीरोदधि में सोइ रह्यो अति सुक्षरूप धरि ॥ हरि नाभी में कमल एक जनम्यौ अति अद्भुत । तहां चतुरानन प्रगट भए सुभ वेदन सो जुत ॥

सिष्टि करन कों हुकुम तेहि दीन्हों दीन दयाल हरि ।
सत वरष तासु जीवन परम होत प्रलै जब लैां युठरि ॥

End—बहुरि सालिवाहन भये रतो भानु के पुत्र।
जाके समदानो नृपति देखै जान न कुत्र॥
ताके परगट जानिये अंगद राय देवान।
महाबली दुसमनन कों जिन जीतै मैदान॥
तासु वंधु लाल साहि। सूरबंद में सराहि॥
जासुदान के विधान। कौन कै सकै बखान॥
अंगद राम देवान के हैं त्रय सो सुत चारि।
जेठे तेज हमीर हैं लघु हिम्मति सिंह विचारि॥

कवित्त—वरजोर मितानि सिंह हिन्दू सिंह उदोत सिंह बली वखतावर सिंह जू सुतचार भये वैस वरजोर खानि है। कहै कवि शंभु महावली परताप वली भानु के समान भयो दूसरो मितानि॥ हिंदुन की हद्द कै रखैया हिन्दू सिंह बडो देवे को दान जाके पड़ी एक वानि है। जाको जस काहे को उदोत कवि गोत करै नाम है उदोत सब गुननि की खानि है॥ दोहा॥ हिन्दू सिंह के परगट पुनि विमल भये सुत चारि। तिनके गुण वरनन करौं भिन्न कवित्त बिचारि १ चन्द्रिका वकस २ गंगा सिंह ३ इन्द्रजीत ४ आदि वकस॥ ताके भये वज्रकुमार नाम। जो है महाविक्रम तेज धाम॥ लीन्है सवै सत्रु समूह जीती। गाव सवै जाकी कवि लोग कीती॥ ताके घोषकुमार पूरनमल, जगतपति राना परमल देव, मानिकचंद मलदेव, जसधर देव, राने होरिल देव॥ कृपाल साहि सातन चन्द्र हिन्दूपति राजसाहि, परमलसाहि रुद्रसाहि, विक्रमसाहि, नृप संतोष छत्रपती जगतराय केसो राय॥

Subject—पृ० १—गणेश बंदना, सृष्टि उत्पत्ति, ब्रह्मा और कल्प संख्या, स्वायंभुव—सतरूपा जन्म, प्रियव्रत, ध्रुव पृथु जन्म वर्णन। पृ० २—सूर्य्य वंश वर्णन, सुद्युम्न का कन्या होना गौरी के श्राप से। राम वंश वर्णन। पृ० ३—क्षत्रियों की ३६ कुरियों की उत्पत्ति तथा वर्णन। अभयचंद को अर्गल राजा का कन्या देना, चिल्ली का राना बनाना। पृ० ४—अभयचंद को दायज में वैसवार मिलना। अभयपुर राजधानी बनाना। अभयचंद्र के पुत्र विक्रमचंद, उनके रनजीत, उनके रायतास और उनके पुत्र सावन, उनकी वीरता वर्णन, बादशाह के पुत्र से युद्ध करना कालिंजर को राजधानी बनाना। पृ० ५—चैाहान पुत्र को मारना, और बादशाह पुत्र को घायल करना, अभयचन्द्र और निर्भयचंद्र भाई भाई थे, अर्गल की रानी को छुड़ाना राजपुर में चैाहानों से। पृ० ६—चैाहान व रामतास का युद्ध वर्णन। सातना नरेश बैसवारे में तिलोकचंद हुए। उनके राना हरिहर देव हुए। उनके भाई पृथ्वीचंद थे। पृ० ७—हरिहरदेव के छोटे भाई ने राज लिया तव दिल्लीपति ने उन्हे बड़ा

इलाका दिया, उनके खेमकरन जिन के सकतासिंह, बरियान, अमान, जोगाजीत हुए, सकत सिंह के तीन पुत्र डोमन देव, रुद्रसाहि और आलमसाहि हुए। इन सब के ८ पुत्र हुए। रतिमान जेठे थे, इन्हीं में शालिवाहन रतीमान के पुत्र हुए। पृ० ८—उनके अंगदराय और लालसाहि हुए, अंगदराय के ४ पुत्र हुए, हमीर सिंह, हिम्मत सिंह, हिन्दु सिंह व उदोत सिंह थे। शंभू कवि के येही ख्यात आश्रय दाता थे।

No. 372. Kavitta by Sangama Lala of Teṛha. Substance—Foolscap paper. Leaves—3. Size—7×4¾ inches. Lines per page—32. Extent—48 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Baṇī Bhushanaji, Rāe Barelī.

Beginning—समै को जानै सोख काहू की न मानै मान नाहक ही ठानै तू अजानी भई जात है। संगम मनावें सखी हित की सिखावें सोख जा विन न भावै भौन ताही सों रिसात है। पीछे पछितैये टेक तेरी छूट जैहै घात ऐसी तू न पैहै अबै टेढ़ी तनी जात है। मोसों सतरात विनकाज सोंह खात प्यारी तू तो इतरात उतै रात बीतो जात है। १ सालनख स्याम तारु कंजा कल जिह्वा जैान पेचापांउ काडी पांउ जखम गनीजिये। वाड़ी दुम बालखड़ी झारु कस झोंक-दार यश मटि खोरे पर नजर न कीजिये। संगम कहत टेढ़े दांत को दुरद दान देवे की पताल देतो दिल में न कीजिये॥ राज सिरताज, राजसिंह महराज सुनौ ऐसे गजराज कबिराज को न दीजिये॥ २ दीजे दान दुरद दतीलो द्रुमदार देखि द्रोहिन के दिलको उठावै हूक हारि है। मरदि यही को सीस गरद चढ़ावै सुंड नीर झरि लावे औ हरावै हेरि वारि है। संगम कहत पावों ऐसे जो मतंग तो करज को गरज गुदारि डारों गारि है। मारि डारौ दिकवली विपति विदारि डारौं फारि डारौं फिकिर दबाइ डारौं दार है॥ ३

End—कढ़त भुलानो मुख वैरिन का पानी जब जंग थहरानो है भुखानी अरि साज को। सोनित सो सानो भई अकह कहानो रन मानो पगलानी ठकु-रानी जमराज की। सब जग जानो खाइ अरिन अघानो विष पानी सो बुझानी है जिठानी मनोगाज की। संगम बखानो शंभुरानी है रिसानी कैधौं कैधौं है कृपानी राजसिंह महराज की॥ १२ वेही ग्वालबाल हैं विसाल तरु जाल वेही वेही हैं तमाल ख्याल और कछू ह्वै गयो। छायगो उदासी ब्रजवासी गनहांसी भई जब ते विषासी वीस गांसी मारि कै गयो॥ संगम अक्रूर कूर वैरी जन्म पीछले को कीन्हों ना कसूर कछू हाय हरिले गयो। साली रहे सूल सी कुचाली अक्रूरवली बिना बनमाली यहां खाली ब्रज ह्वै गयो॥ १४

Subject—रति विरक्त नायिका वर्णन १ कवित्त, राजा राजसिंह और व्रजनाथ के महाराजों का वर्णन ५ कवित्त

वर्षा वर्णन	२ कवित्त
वसंत वर्णन	२ कवित्त
सिंहावलोकन	१ कवित्त
कुब्जा वर्णन	१ कवित्त
राजसिंह की तलवार का वर्णन	१ कवित्त
करुणारस	१ कवित्त

No. 373(*a*). Satyā Prakāśa by Santa Baksha of Narahī, District Lucknow. Substance—Country-made paper. Leaves—48. Size—10 × 6 inches. Lines per page—22. Extent—860 Anushṭup Ślokas. Complete. Appearance—New. Written in Prose and Verse. Date of Manuscript—Samvat 1921 or A.D. 1864. Place of deposit—Parāgi Dāsa Murāu, Village Jādavapur, Post Office Varnāpur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री सत गुरु साहब सहाय। अथ सत्य प्रकाश लिख्यते। प्रथम वंदना ॥ प्रथम आदि देव श्री गणेश जी स्वामी को जिनके सुमिरन से सब काज लोक व परलोक के सिद्धि होते हैं। बहुत भांति विनय के साथ बारबार दंडवत करि के उस पारब्रह्म परमेश्वर निरगुण व सगुण सरूप सर्वत्र व्यापक भक्तवत्सल कृपासागर दयासिंधु दीनबंधु जन सहायक के चरण कमल की वंदना करत हूं तुम्हारी महिमा अगम अथाह है श्री ब्रह्मा जी चारो मुष से व शेष जी और सारदा निरंतर वर्णन करते हैं और पार नहीं पाते सो मैं पतित कामी औगुनन की षान बुद्धिहीन किस प्रकार कहि सकों ॥ आपने गनिका व अजामिल आदिक अनेकों पापियों को इस भवसागर से पार उतारा और निजधाम दिया सो जानि परत है कि पतित तारन आप का स्वभाव है। सो हे पतित तारन दीनदयाल इस पापी को भवसिंधु से पार उतार कृपा करके हृदय में वास दीजिये ॥

End—दोहा—जगजीवन के पंथ का जो कोइ जानै हीन। राजा होय कि छत्रपती दिन दिन होय मलीन ॥ जगजीवनदास को निंदा जो कोउ करै चोलय। जीवत सुष पावै नहीं मरे नरक मां जाय ॥ जो सत्तनामी सत्तगुरु साहब के बाना को निंदा करते हैं वह महा रोगी व दरिद्री हो जाते हैं अंतकाल उनको महा-

ओर नरक होता है सतनामी जनों को नशा गांजा व भंग अफीम का ग्रहण अनुचित है औ मुख वाचि है। दोहा—गांजा भंग व पोस्ता संत लोग नहिं खाहिं जगजीवन दास सांची कहैं खांहि तो नरकहिं जाहिं ॥ समर्थ गिरिवर दास की बानी ॥ संतनाम के पंथ मां भांग खाइ जो कोइ जगजीवन गिरिवर कहैं ताकी मुक्ति न होय ॥ सत्तनाम के पंथ में खाय जो गांजा भंग जगजीवन गिरिवर कहैं ताको मत है भंग ॥ सतनामी को बैगन व कुंदरु अवश्य वर्जित है औ सत गिरिवर दास साहब ने कैथा भी वर्जित किया है सो सतनामी को गुरु वचन परमान उचित है। गुरु का वचन न मानै जोई। अवश नरक तेहि प्रापत होई ॥ इति श्री सत्य प्रकाश समाप्तम् लिखा सतगुर प्रसाद संवत १९२१ जेठ मासे कृष्ण पक्षे द्वितीयायां श्री राम ।

Subject—इस ग्रंथ में गणेश जी, भगवान, हनूमान जी, शंकर, ब्रह्मा बाबा जगजीवन दास आदि की वंदना की गई है, पश्चात बाबा जगजीवन दास जी का जीवन चरित्र दिया है। आप पहुंचे हुए महात्मा थे, भूत, भविष्यत, वर्तमान तीनो काल को जानते हैं, अपने मृत्युकाल में जलाली दास को बुलाकर शरीर का दाह कर्म मना किया इस पर कुछ लोग अप्रसन्न हुए और मरने के पश्चात् दाह का कार्य ठहरा, परंतु जलाली दास ने न माना तब सबने कहा कि अगर तू सच्चा है तो बाबा जी फिर कहैं लोगों का विचार था कि बाबा जी को मरे देर हो गई किस प्रकार कहेंगे। परंतु जिस समय जलाली दासने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की बाबा जो उठ बैठे और कहा मेरा शरीर न जलाया जाय समाधि दी जावे तब सब को बाबा जी का महत्व प्रगट हुआ और उनके कथनानुसार समाधि दी गई।

No. 373(*b*). Kotawabandan by Santa Baksha Mahānta of Narahī (Lucknow). Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—14 × 5 inches. Lines per page—44. Extent—1,144. Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1929 or A.D. 1872. Place of deposit—Parāgīdāsa Murāu, Village Jadavapura, Post Office Baranapur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—अथ कोटवा बंदन लिख्यते ॥ दोहा ॥ कोटवा वंदन ग्रंथ यह । श्री सतगुरु स्थान । इन्द्र दवन जे भक्त हैं तिनके उर परमान ॥ प्रभु जग जीवन शुभ करौ भाषौ सतमत ग्यान ॥ अति कोटवा की वंदना परगट करौं बखान ॥ कथा

भई प्रारंभ तब जब प्रभु दाया कीन्ह । बैठे घट मो आय के सत्त शब्द कहि दीन्ह ॥ तुम हो तो वानी कहत मैं कछु जानत नाहिं । गुन तो एकौ है नहीं सब औगुन मोहि माहिं ॥ जब तुम्हारि कृपा भई कथा प्रगट भई सोइ । आपहि तो सब कहत हैं और न दूजो कोइ ॥ जन्म लियो सरदहा में संतन के आधार । नाम कहायो जगजीवन जगन्नाथ अवतार ॥ चै० ॥ प्रभु जगजीवन जगत अधारा । लियो सरदहा मा अवतारा ॥ गति तुम्हारि कोइ जान न पावै । जेहि जस कृपा सो तस कहि गावै ॥ आइ सरदहा कीन्ह निवासा । जगजीवन जग विदित प्रकासा ॥ प्रभु जगजीवन नाम कहाए । मारग सो सतनाम चलाये ३

End—छंद ॥ सरन में समरथ तुम्हारी औार नाम न आनऊं ॥ कहत हैं करजोरि साईं दूसरो नहि जानऊं ॥ चरन परि मैं करत विनती नाथ मोहिं अपनाइए । फिरत हूं मैं भरम भूला कृपा कर के छुड़ाइए ॥ छोड़ि तुम तजि जाऊं कहंवां द्दष्टि में आवै नहीं । चरन तुम्हरें तक्यों जब से औार कछु भावै नहीं ॥ सर्वं में तुम अहो व्यापक औार दूजा कोई नहीं । जानि मोहिं का परत यहि विधि नाथ तुमही सब कहीं ॥ स्थिर रहैं नहि भटकैा भरम को परदा फटै । करो अंतर नाम सुमिरिन तिमिरि आंखिन को छुटैं । दीनवंधु दयाल तुम सम नहिं दूसर देषहूं ॥ समरत्थ प्रभु जग जीवन साहब सत्त मन मह लेषहूं ॥ दोहा ॥ वलिहारी गुरुचरन की जिन मोहिं दीन्हो नाम । तेहि सुमरैं चितलाइ के ये मन आठैां-याम ॥ चैा० ॥ संतों कथा सुनैां चितलाई । गुरु जग जीवन दियो लषाइ ॥ बैठि गयो आपहिं घट माहीं कहत कीर्ति मैं जानत नाहीं ॥ मोरि बुद्धि यामें कछु नाहीं । आपुहिं वैठि कहो घट माहीं ॥ जाऊं सदा चरनन वलिहारी । जिन यह कथा कह्यो अनुसारी ॥ इति श्री कोटवा वंदन सम्पूरन संवत १९२९ वैसाख पूर्णमा व्रहस्पति लिषतं संतबक्श महंत ।

Subject—इसमें बाबा जगजीवन दास और स्थान कोटवा को वंदना की गई है । कोटवा और बाबा जगजीवनदास की महिमा का साथ ही साथ वर्णन किया गया है ।

No. 374. Nakhaśikhā by Sañta Baksha Bandījana of Holapur. Substance—Country-made paper. Leaves—12. Size—8 × 5 inches. Lines per page—15. Extent—101 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bajaranga Balī Brahmabhaṭṭa, Village Holapur, Post Office Haidargarha, District Bārā Bankī (Oudh).

Beginning—मुकुट वर्णन ॥ मणि माणिक मंडित मौलि रह्यो अनुराग विराजि रह्यो थलपै। तेहि ऊपर मोतिन को कलंगी विचवीच कुसुम्भ कली दलपै ॥ कवि 'संत' कहै दियै दीपन लैां उपमा तिहुं लोकन की कलपै। रघुवीर के ऐसे किरीट लसैं मानैं भानु उदै उदयाचल पै ॥ बार वर्णन ॥ मखतूल के तार सिवार से हैं उपमा लखि कै सरि कौन गनै। अति कारी बलाहक से दरसै भरे सौरभताई सनेह सने ॥ कवि संत कहै सटकारे छबीले लजीले मनोभव देखि घनै। किलकैं दुति मेचकताई अरे रघुवीर के केस सुवेस वने ॥ भाल वर्णन ॥ जोत को पत्र लिख्यो है विरंचि किधैां लिखो देवल को प्रतिपाल है। जंत्र और तंत्र वसीकर मंत्र सु मोहै त्रिलोक हृदय सदा अरिसाल है। संत कहै जन पालिबे हेत को देर न लाय दया करि हाल है। भागो भरो निसि द्योस रहै शुभ श्री रघुवीर को भाल विसाल है ॥ भृकुटी वर्णन ॥ भौंहैं सरासन कैधैां धरे जुग सुंदरता अति है अनियारी। बैठि दुरे फणि की अवली किधैां सकैत रेख लसै जुग न्यारी ॥ कैधैां अनंद के कंद को देन को संतन सो करिये हितकारी। काम को शोभा जुटी है किधैां भृकुटी है बनी रघुवीर तिहारी ॥ नेत्र वर्णन ॥ गोल अमोल सुडोल कपल लैां चंचल कोर चुभै चित चैन हैं। लज्जि तुरंग कुरंग दुरै वन मीन सो दीन भये दिन रैन हैं ॥ सो उपमा उपमेय वखानत संत कहै सुखमा वर ऐन हैं। कंजन खंजन गंजन हैं सदा शोभित श्री रघुवीर के नैन हैं। नाक वर्णन ॥ निन्दित हैं शुक तुंड विलोकि के फूल तिली को दिली में उदासिका। चारु सुधारि विचारि पितामह मोद भरे मन कीन्हे हुलासिका ॥ सो छवि देखि कहैं कवि संतजू तेस सदा धरे ध्यान प्रकाशिका। राजत आनन अंबुज पै शुभ सुंदर श्री रघुवीर की नासिका ॥ कपोल वर्णन ॥ पाणिप्रपाल के वाल भरे किधैां पत्र पुरैन के सुन्दर नोल हैं। सिद्धि मनोरथ ही को करैं तुला तौलिबे हेत के नेत अलोल हैं ॥ संत समान विचार करैं केहि संपुट सैनि के अमोल हैं। आरसी हैं की सुधांशु की हैं किधैा श्री रघुवीर को गोल कपोल है ॥

End—नख वर्णन—प्रात सरोज पै कैधैां परी मकरंद के बुंद के भांति भला के। सोने की लेखनी पै मुकताकनी सोहत छोगुनी छोर छजा के ॥ संत कहै जगी जोति अखंड दिये जग में जेसे छंद कला के। पाती नक्षत्रन की दरसै नख शोभित श्री रघुवीर लला के ॥ छाती वर्णन ॥ कंचन नोल के पत्र किधैां वनमाल विराजि रही बहु भांती। केसरि खौरि पिताम्बर राजित वज्र किधैां है अरिंद की घाती ॥ संत कहै फलदायक चारि को रिद्धि और सिद्धि की वृद्धि बढ़ाती। चौकनी चौरी चरिचत चंदन वोर भरी रघुवीर की छाती ॥ जंघ वर्णन ॥ अति पोम भरे कलधौत के दंड उदंडता धारि समाय रहे। करके सरके कर ज्यों उपमा सुखदाय रहे ॥ वर विक्रम उन्नत ओप लहे जुग जानु विसालता छाजि

रहे। मणि खंभ भजैं दुतिरंभ लजैं रघुवीर की जंघे विराजि रहे॥ चरण वर्णन॥ तरनि तरन धर वरन वर धर धरन धरन भरे सुखमा उसीर के। करन हरन करुणा कृपाल कोर चितै भरन भरन भो हरन भय भीर के॥ जाहिर तरनसम मंगल करन चारु जारन फले के ये उधारण अघोर के। दारिद दरन अघ ओघ के हरन परिजात के करन सो चरन रघुवीर के॥ शिख नख वर्णन॥ भृकुटी और लिलाट कपोलन क्रूं सुख कोयन लोयन देखि भरै। चिबुका धरि ग्रीव उरोजन पै पुनि नाभी सरोवर में लहरै॥ कवि संत कहै जुग जंघन में मोरवानि हिये विच ध्यान धरै॥ रघुवीर पदांवुज से सुनिये मन मेरो मधुव्रंत गुंज करै॥ २०॥ सर्व अंगतीरथ वर्णन॥ पदस्याम सरोज कलिंदी लसै सुखमा अतिही सुख साजत है। हिय मोतिन माल विसाल लरै लखि निम्नजा वेगिहि भ्राजत हैं॥ कवि संत कहै अधरान को लालो गिरा अनुराग समाजत है। नखते सिख लैां रघुवीरहिं के तन तीरथ राज विराजत हैं॥ २१॥ कीरति वर्णन॥ नारद पारद सो दरसै औ सुधाकर सी लसै चन्दर चूरसो। विज्जु सो कंबु कमोदनि का शशि चैावर से जल गंग की धूरि सी॥ संत कहैं सित भोंडर सो नखतावलि सी गजदंत के तूरसो कीरति श्री रघुवीर की राजति कुंदकली करका कपूंसी॥ २२॥ वेनी लखे तिरवेनी लजै मुख देखि छपा कर छीम छली के। गोल कपोल विलोकि कै आरसी लोचन लोल सरोज दलीके॥ संत कहै सारे दंतन की सखी निंदित दाड़िम कुंदकली के। मोह मई तम क्यों न मिटै मन ध्यान धरे मिथिलेश लली के॥ २३॥ कैधों कैाल पाखुरो पै रवि की किरनि प्रात कैधों इन्द्र वधू काम करत निहोरी के। कैधों गुंज विम्बा फल वन्धु जीव लालो कैधों दाड़िम कुसुम्ब रंग भई मति भोरी के। कहै कवि संत कुरु वृंदन की कैान गनैं दूखक पतंग औ गुलाल दुति थोरी के॥ जावक महोज पै ईंगुर वरण ऐसे चरण विशाल राजै जनक किशोरी के॥ २४॥ कास ते अधिक वक हास ते अधिक घन सार ते अधिक लसै मुक्तहार हीर को। सीय ते अधिक चून फेन ते अधिक गजदंत ते अधिक लघु लागै गंग नीर को॥ दुग्ध ते अधिक वर वुद्धि ते अधिक सत्त्व गुण ते अधिक शांत रस धरि धीर को। छत्र ते अधिक औ नक्षत्र ते अधिक इन सब सो पनिच जस राजै रघुवीर को॥ २५॥ इति—लेखक परमेश।

Subject—(१) पृ० १—९ तक—रामचन्द्रजी का नखशिख वर्णन। मुकुट, केश, भाल, भृकुटी, नेत्र, नाक, कपोल, श्रवण, अधर, दशन, मुख, भुज, अंगुरी, नख, छाती, जंघा, चरण वर्णन।

(२) पृ० ९-१० तक—सिखनख वर्णन, सर्व अंग तीरथ वर्णन, कीर्ति वर्णन।

(३) पृ० ११-१२ तक—सीता जी का नख शिख, वेनी, पैर और रघुवीर का यश वर्णन।

No. 375(*a*). Bāni or Sākhī by Santa Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—56. Size—$4\frac{1}{2} \times 3\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—18. Extent—630 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1852 or A.D. 1795. Place of deposit—Harvanśa Rāi, Village Tekāri, District Rāe Barelī.

Beginning--राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम । अथ स्वामी जी श्री संतदास जी की वाणी ग्रंथ भै लिष्यते ॥ अथ गुर देव को अंग । सतुति ॥ अग भै पद परकास के ॥ दाइक सत गुर राम ॥ अनत कोटि जन साहिका ॥ ताहि करूं परनाम ॥ १ ॥

अंग ॥ सत गुरु का ऐको सवद मनि कोई लेवै मानि ।
तो सहज होत है संतदास मुसकलि सूं आसानि ॥ १ ॥
सतगुर कीन्हो संतदास मुसकलि सूं आसानि ।
रामनाम को हो रही रूंम रूंम निज ध्यान ॥ ३ ॥
संतदास तिहूंलोक मैं ऐह सिरोमणि संत ।
पूरवजनम का वीछड़रा सोहो मिलाया कंत ॥ ४ ॥
सतगुर मेल मिलाइया ॥ सरित सवद का संग ।
अब छूटत नाहीं संतदास लगा करारो रंग ॥ ५ ॥
सत गुर वर परमारथी असी देह वणाइ ।
धरीया मुलक छूराइ कैं अधर मुलक ले जाइ ॥ ६ ॥

End—निरगुण नांव हिरदै धरै निरगुण पहरै भेष ।
संतदास वा संत सूं कहीये आप अलेष ॥ २२ ॥
फकर तारै जगत कूं निरगुण नांइ मिलांहि ।
मकर ले बूझै संतदास भो सिंधि का दह मांहिं ॥ २३ ॥
चली जात है सुरसुरी अपणैं सहज सुभाइ ।
प्यासा होइगा संतदास सो पीवेगा आइ ॥ २४ ॥
संत सुरसरी राम जल कोई पीवे प्रीति लगाइ ।
तो भरम करम की संतदास प्यास न उपजै ताहि ॥ २५ ॥
संत निवासी संतदास सब कूं देत निवास ।
सांच झूंठ निरणूं कीयां झूठा होत उदास ॥ २६ ॥

इति स्वामी जी श्री संतदास जी की साषी संपूरण ॥

Subject—पृ० १ गुरु स्तुति- पृ० २-१४ गुरु महिमा पृ० १५। गुरु सामर्थ्य पृ० १६-३०, ईश्वर सुमिरन विधि और भेद पृ० ३१—३३ईश्वर नामें का भेद, उनका निर्णय, और सर्वोपरिनाम वर्णन, पृ० ३४। जीव निर्णय, पृ० ३५-३६। ईश्वरनाम सुमिरन की सामर्थ्य—पृ० ३७, ईश्वरनाम की महिमा, पृ० ३८-५४। संतदास की चेतावणी भक्ति के लिये। पृ० ५५-५७ साधु की महिमा, लक्षण और साधु असाधु निर्णय, समाप्ति।

No. 375(*b*). Sañtadāsa kī Bānī by Sañtadāsa of Sahipurai. Substance—Country-made paper. Leaves—2262. Size—$5\frac{1}{2}\times$ 4 inches. Lines per page—13. Extent—29,406. Appearance—New. Character--Nāgarī. Date of Composition--Samvat 1830 or A.D. 1773. Date of Manuscript—Samvat 1870 or A.D. 1813. Place of deposit—Paṇḍita Devīduttaji Śarmā, Village Fatahapur, District Bārā Baṇkī (Oudh).

Beginning—अथ स्वामी जी श्री संतदास जी की वाणी अणभै लिष्यते ॥ प्रथम गुरु देव को अंग लिष्यते ॥ स्तुति ॥ अणभै पद परकास के ॥ दाइक सत गुरु राम ॥ अनंत कोटि जन साहि को ॥ ताहि करुं परनाम ॥ १ ॥ अंग ॥ सत गुरु कारो का सवद मनि कोइ लेवै मानि ॥ तो सहज होत है संत-दास ॥ मुसकिल सूं आसानि ॥ १ ॥ सत गुरु किन्हो संतदास ॥ मुसकिल सूं आसानि ॥ राम राम की होइ रहो ॥ रोम रोम रज ध्यान ॥ २ ॥ संतदास हम कूं कीया ॥ सत गुरु कभ्भई सानि ॥ देह छूटां छूटै नहीं ॥ परब्रह्म लू ध्यांन ॥ ३ ॥ संतदास तिहुंलोक मैं ॥ रोह सरोभं निर्मत ॥ पूरव जनम का विछड़या ॥ सोहो मिलाया कंत ॥ ४ ॥ सत गुरु मे ला मिलाइया ॥ सुरति सवद का संग ॥ अव छूटतं नांही संतदास ॥ लगा करारो रंग ॥ ५ ॥ सत गुरु वड परमारथो ॥ ऐसो देह वणाइ ॥ धरी या मुल कछु भाइ करि ॥ अधर मुलुक लेजाइ ॥ ६ ॥ चोरासी धरीया मुलक ॥ तामैं सुर नर रहे समाइ ॥ अधर मुलक है रांम नांम ॥ जहां जन पहुंच्या जाइ ॥ ७ ॥ तीनलोक सूं अलध सुष ॥ लाधन नांही कोइ ॥ सत गुरु लाधा संतदास ॥ ८ ॥ सत गुरु मिलीया संतदास कटी भरम की पासि ॥ गा सत गुर वांण ॥ चौरासी का संतदास ॥ मिटि गया आवंण जांण ॥ १० ॥ सत गुर वाह्या वव भारि ॥ सुषम प्रेम का सेल ॥ निज मन तो घाइल भया ॥ अवरुं मकता पेल ॥ ११ ॥

End—कांम दुष क्रोध दुष पावै ॥ लोभ दुष कछु कहत न आवै ॥ माया मोह दुषी संसारा ॥ तातैं जागै राम पियारा ॥ ८६ ॥ माता नास्त पिता सुनि

भयौ ॥ वंस सोदर आपन गयो । पुत्र कलित्र दुष सकल पसारा ॥ तातें जागै राम पियारा ॥ ८७ ॥ अरब षरब हाथी मद घोरा ॥ मैामि मंभारन विभो थोरा ॥ आंषि मूंदि देषत ही वारा ॥ तातैं जागै राम पियारा ॥ ८८ ॥ करि उपदेस गयो रिषराई ॥ राजा का मन प्रीति बढ़ाई । डेरा छाड़ि गए वन वासा ॥ गुरु गोविंद से वाढ़ी आसा ॥ ८९ ॥ मन ही मन राजा यूं जानी ॥ क्रिपा करी है सारंग प्रांनी ॥ अनयासै गुरु मिलीया आई ॥ प्रेम प्रीति हरि सूं ल्यो लाइ ॥ ९० ॥ दुहा ॥ भाग वड़ेही पाइयैा साधन को सतसंग ॥ जन गोपाल जगदीस कैा तन मन लागै रंग ॥ ९१ ॥ इति श्री ग्रंथ जड़भरत संपूरण ॥ महाराजाधिराज पूरण व्रह्म जी दया का सागर जी रामनिवास साहिपुरै विराजमांन तोस मरो पुस्तक लपी क्रते संवत १८७० वर्षे मिती भाद्रपद शुक्लपक्षे पुनि त्तिथैा ३ शनि वासरायां ॥ लिपि क्रत ब्राह्मण गुजर गैाड़ दासानुदास चरणाविंद को रज हव राम वाचै विचारै ज्यां सूं रांम रांम ॥ संत गुलम तासकैा नाम ब्राह्मण तुलछी राम बांच वीचारै ॥

Subject—पृ० १—१३ तक—स्तुति सत गुरु राम जी की, सत गुरु की महिमा का वर्णन, सत गुरु के दिये हुए ज्ञान के लाभ ॥

(२) पृ० १४—३१ तक—सुमिरण का अंग, माला जाप, राम नाम का महत्त्व, राम नाम निर्णय, जीव निर्णय, नाम की सामर्थ्य, साखी ।

(३) पृ० ३२—५६ तक—विनती का अंग—स्तुति । साखी नाम में लगन का वर्णन । प्रेम प्रकाश, परिचय ।

(४) पृ० ५७—९९ तक—पतिव्रता वर्णन, व्यभिचारिणी वर्णन । टेक, विश्वास, साधु, साधु महिमा, साधु पारख, साधु परमार्थ, साधु संगति, विरक्तता, निवृत्ति, प्रवृत्ति, विचार, कुविचार, सार असार, रस, पंथ वेहद, सजीवन, जीवित मृतक, हठयोग, अवगुणग्राही, भक्त द्रोही, मन मुषी, मन, उपदेश, जग्यासी, कादर, सूरातण, सती, गुरु शिष्य पारख, खोजना ।

(५) पृ० १००—१४१ तक—गुरु वे मुख, सन्मुख, विमुख, राम विमुख, काल, चेतावनी, वोहैा आरंभी, माया, कामी नर, वाचिक ज्ञानी, सांच, भ्रम विध्वंस, भेष, चाणक्य ।

रेखता

(६) पृ० १४२—१४४ तक-रेखता । (७) पृ० १४४-१५० तक—ब्रह्म ध्यान, (८) पृ० १५१—१६७ तक—भ्रम तोड़ । (९) १६८—१७२ तक—पद, आरती, संतदास जी का निर्माणकाल सं० १८०६-अठारै सै षट व्रष में संक भये निरकारी ॥

राम चरण जी की वाणी ।

(१०) पृ० १७३—३१५ तक—निरंकार स्तुति, गुरुदेव का अंग—गुरुदेव स्तुति, साखी, गुरु सामर्थ्य, स्मरण, विरह, ज्ञान विरह, लै, प्रेम—प्रकाश, पीव पहिचान, परिचय, पतिव्रता, व्यभिचारिणी, समर्थता, विनती, विश्वास, वरकत, निवृत्ति, साधु, असाधु, साधसंगत, कुसंगत, वेअकिल, विचार, वे विचार, निहिचै, जीवन, मृत संजीवन, सारग्राही, अवगुण ग्राही, अज्ञानी, राम विमुख, काल चेतावनी, उपदेश, जिज्ञासु, गुरु पारख, सिष पारख, गुरु सिष पारख, सन्मुख, वेमुख, गुरु विमुख, चितकपटी, देखा देखी, कांदर, सूरातण, टेक, हेत प्रीति, कस्तूरिया मृग, मन, सती, वेहद, मधि, निरपष, पंथ, रस, सुखी मारग, शुभकम, दया, माया, कामीनर, जरणां, रहनी, सहज, वैाहै आंरभी लोभीनर, आसावेली, निद्रा, मुरकी, निन्दा, साच ।

चंद्रायण अंग—(११) पृ० ३१६—३४० तक—चन्दरायण स्मरण, नाम सामर्थ्य, चन्दरायण वीनती, बिरह, परिचय, साधन, साधु संगत—वरकति, गुरु पारख, सिखपारख, गुरु, गुरु वेमुख, सन्मुख, विमुख, मन मुषी, अज्ञानी, काल, चेतावनी, सूरातण, विचार, साच, तृष्णा ।

सवैया—(१२)—पृ० ३४१—३५९ तक—गुरुदेव अंग, स्मरण, नाम महिमा, परिचय, विचार साधु, साधुसंगति, वरकत, विश्वास, तृष्णां, लोभीनर, अज्ञानी, काल चेतावनी, सन्मुख, विमुख, गुरु बेमुख, अवगुणग्राही, व्यभिचारी, व्यभिचारिणी, कायर सूरातण, कामीनर, सांच ।

झूलना—(१३) पृ० ३६०—३६८ तक—गुरुदेव अंग, स्मरण, विचार, साध, साधसंगति, उपदेश, वरकत ।

(१४) (कवित्त) पृ० ३६९—४५१ तक—गुरुदेव अंग, स्मरण, नाम सामर्थ्य, परिचय, पतिव्रता, व्यभिचारिणी, विनती, अविश्वास, तृष्णा, निरपक्ष, निर्गुण उपासना, साधु असाधु, साधुसंगति, कुसंगति, साधु पारक, साधु महिमा, वाचक ज्ञानी, लक्षक ज्ञानी, अज्ञानी, ब्रह्म व वेष, काल, चेतावनी, मन, मनमूसा मनसूब, कायर, सूरातण, उपदेश, जिज्ञासु, शिवनिर्णय, सिष पारख, टेक, निर्णय, विचार हठयोग, भक्ति महिमा, माया, कामीनर, रहनी, जरणा, सांचा, माला, सांच ।

(१५) कुंडलिया—पृ० ४५२—४२७ तक—गुरुदेव अंग, गुरु परमारथी, लोभी गुरु, स्मरण, विनती परिचय, पतिव्रता, व्यभिचारिणी, कायर, सूरातण, विश्वास, वे विश्वास, विश्वास निरपेक्ष, वरकत, निर्गुण उपासना, साध, साध पारख, साध गति, साधसंगति, कुसंगति, अदया, उपदेश, जिज्ञासु, गुरु शिष्य,

शिष्यपारख, गुरु विमुष, राम विमुख, सन्मुख विमुख, अज्ञानी, विचार, निर्णय, विचार, लोभीनर, काल, चेतावनी, मन, हठयोग, माया, कामीनर, निद्रा, सांच।

रेखता (१६) पृ० ४९८—६१० तक—गुरुदेव को अंग, भेषधारी, सरण, प्रेमप्रकाश, परिचय, विचार, सूरातण, सारग्राही, चेतावनी, असाधु, कामीनर, सांच, भेष, चांणक।

(१७) गुरु महिमा, नामप्रताप, शब्द प्रकाश, चेतावनी, मनखंडन।

(१८) शब्द समात पृ० ६११—६६६ तक—गुरु शिष्य गोष्टी, ठग की परीक्षा, जिंद परीक्षा, पंडित, समाधि, लक्ष्य—अलक्ष्य, साधलक्ष्य, वेज्ञुगति, काफरबोध।

गाने के पद

राग भैरव इत्यादि, गाने के भक्ति संबंधी पद, (१९) पृ० २६७—७३६ तक राग भैरव, रागललित, रागविभास, विलावल, जैजैवंती, रागआसा, गौड़—ध्वनि इत्यादि सहित, वसंत, काफी, आसावरी, कल्याण, कनड़ों, कनड़ा, राग वहाग, मंगल, पंजाब, राग गिरनारी, राग सुवा, सोरठ, मारु, जैतश्री, धनाश्री, राग केदारी, जोग धनाश्री, आरती।

(२०) अणभै विलास। पृ० ७३७—७५९ तक—अणभै विलास ग्रंथ, गुरु शिष्य संवाद, संग महातम, संग पारस, सतपुरुष, असत पुरुष, मुक्त जन परीक्षा, जिज्ञासा साधु लक्षण।

(२१) सुखनिवास—पृ० ७६०—७८७ तक—ग्रंथ सुखनिवास, दाताक्या, रचना, अभिमान, आया, मोह, सर्वज्ञ, उत्तम इत्यादि शब्दों की परिभाषाएं राम विमुख का निषेध, राम विमुख का लक्षण, अपारख, कपटी और कुबुद्धि।

(२२) पृ० ७८८—८१३ तक—दादसमो प्रकरण, डर क्यों, जतन क्या, जाल क्या, दुखदाई, विह्वल काल कब आवेगा ? । वैराग्य बरकत ठीक क्या, अशुद्ध व्यवहार।

(२३) पृ० ८१४—८३४ तक—सूरापण, जिज्ञासु, सबोध, आत्म प्रबोध, सूर कायर।

(२४) पृ० ८३५—८५९ तक—ग्रंथ विश्वास बोध, आत्मशोध भवितव्य और विश्वास निरूपण।

(२५) पृ ८६०—८८६ तक—ग्रंथ जिज्ञासुबोध, आत्म प्रबोध, गुरु स्तुति और ग्रंथ संख्या निरूपण।

(२६) पृ० ८८७—९१६ तक—विश्रामबोध, सुख संबोध, ग्रंथ संख्या निरूपण।

(२७) पृ० ९१७—१०७४ तक—राम रसायन ग्रंथ, गुरु शिष्य पारख निरूपण आनन्द प्रबोध सरणूं, स्मरण, ज्ञान धारण निरूपण, अकिल, धारक, लक्षित सकार स्पर्श प्रेम, अध्यात्म ज्ञान, भोगत सकार, अकिल विचार, चंचल तात सकार, विगति, सोनिकाज साल्ह्या, ऐसा साल्ह्या वाचिक तक सकार, असलाकी आशा मुखी, कुदिशा, दोइ आसै मिलै, सो भेष दरसन गति, रोम, तृष्ण, संतोष, मुतलब सकार, हंस्पात सकार, दया, उपदेश, चेतावनी हारबीत, अर्थात् माया मतलब हंस्पा लोभ खंडन और उपदेश चेतावनी, काम खंडन तिमिसंग, सुरापण, गुरु महिमा और संख्या निरूपण। रामचरण की वाणी संपूर्ण।

राम जनजी की वाणी।

(२८) पृ० १०७४—११८४ तक—स्तुति, ज्ञान प्रबोध, प्रकाशबोध निरूपण, साधु लक्षण, साधु संग, गुरुशिष्य पारख भक्ति योग अंग निरूपण, नाम महात्म्य वर्णन, वैराग्य विधि निरूपण, उत्तम भक्ति योग, अद्वैत ज्ञान, प्रलय निरूपण, युग, वर्तमान युग, धर्म, नाम और दृढ़ता, कुसंग त्याग, निज वैराग्य, गुरु महिमा निरूपण, ज्ञान प्रबोध ग्रंथ संपूर्ण।

(२९) पृ० ११८५—११९६ तक—ग्रंथ ध्यान वगीचो।

(३०) पृ० ११९७—१२६४ तक-सुमिरण सिद्धान्त, गुरु ध्यान की परिभाषा, स्मरण भेद, समता, मनजेर, मन उपदेश, राम गुरु से विनती, तीन गुणों से पार होने का साधन भक्ति, प्रीति, प्रगिभाव, उत्तम विचार, जगत अभाव चेतावनी, साधु लक्ष्य, उपदेश, जिज्ञासु गति, कुसंग, कुवधित सकार, फोकटक (करनी विन कथन), गुरुकृपा, शिष्य दीनता, सुमिरण सिद्धान्त पूर्ण।

(३१) पृ० १२६५—१८८८ तक—ग्रंथ श्रवंग सार—स्तुति, गुरुदेव स्तुति, विचार माला, संत स्तुति (पहला विधान), गुरु मिलाप महिमा, गुरुदेव की विशेषता, एकादश का प्रसंग (दूसरा विधान) गुरु लक्षण निरूपण (तीसरा विधान) गुरु कसैाटी, शिष्य शुद्धात्मा, गुरु सामर्थ्य, शिष्य अशुद्धता, कृतघ्नी, मनाधीन, शिष्य प्रतापीक, (चैाथा विधान-शिष्य परीक्षा), सहकाम भक्ति निरूपण (पान्चवा विधान) किसको किस रूप की भक्ति करनी चाहिए (छठा विधान)। निर्गुण निजमूल भक्ति निरूपण (सातवां विधान)। नवधा भक्ति वर्णन श्रवण, कीर्ति स्मरण पादसेवन, अर्चन, वंदन, दासभाव, साख्य भाव, नैवेद्य, आपा अर्पण किया उसका भेद (अठवां विधान)। विकार, सुमिरण नाम निरूपण, रामनाम की सर्वोच्चता, स्मरण टेक, पतिव्रत निरूपण (दशवां विधान) नाम महिमा निरूपण, (ग्यारहवां विधान)। सुमिरण नाम माहात्म्य निरूपण (बारहवां विधान) उत्तम भक्ति ज्ञान निरूपण (तेरहवां विधान)। बंध, मोक्ष, अशुभ वासना

निरूपण, (चौदहवां विधान)। अंग दूषण, वैराग्य निरूपण, (पंद्रहवां अध्याय)। अजाचोक वैराग्य, अजगरी भवरवृत्ति निरूपण, (सोलहवां विधान)। संन्यास योग, शुद्ध वैराग्य निरूपण (सतरहवां विधान), लक्ष्य अलक्ष्य वैराग्य वेष निरूपण (अट्ठारहवां विधान)। भेष की आड़ में भिक्षा मांगने वालों की गति, कदरज स्वरूप, निंदित धन से उत्पन्न पन्द्रह अनर्थों का वर्णन (बीसवां विधान) सतसंग महिमा निरूपण, साधु लक्षण निरूपण (इक्कीस व वाइसमो विधान)। सोत प्रसाध—महिमा निरूपण, जोव दया निरूपण, (तेईसवां विधान)। अधर्म कार्य, दास लक्षण (चौवोसवां विधान) राम विचार कुसंग त्याग निरूपण (पच्चोसवां विधान), कुसंग लक्षण निरूपण (छब्वीसवां विधान) परधन परत्याग, जोग, कर्म-धर्म निरूपण (सत्ताइसवां विधान)। काम खंडन निरूपण (अट्ठाइसवां विधान) शोल, सुधर्म निपरूण (उनतोसवां विधान)। माया खंडन आशा लोभ निरूपण (तोसवां विधान)। माया खंड तत अतत निरूपण (इकत्तीसवां विधान), चेतावनो काल को गति, गृह कूप का वर्णन, (बत्तीसवां विधान)। मन प्रसंग (तेतीसवां विधान)। बाहरी भ्रम, भूमि भेद निरूपण (चौतोसवां विधान), भ्रमभेद खंडन, मनसा तीरथ निरूपण (पैतीसवां विधान)। साधु महिमा निरूपण (छत्तीसवां विधान)। साधु पारख निरूपण (चौतोसवां विधान)। लक्ष्य अलक्ष्य पंडित परीक्षा निपरूण (अड़तीसवां विधान)। योगो लक्ष्य, अष्टांग योग, विचार परीक्षा, वमंक परीक्षा, शोल परीक्षा, संतोष परीक्षा, निरवैर परीक्षा, सहज परीक्षा, शून्य परीक्षा, समाधि, सिद्ध, अणिमादि के लक्षण, जोगी के गुण (उनतीसवां विधान—दर्शन लक्ष्य निरुपण)। रोजा वृत्त निषेध, भूत खंडन, महंत का लक्षण, राम नाम महिमा (चालीसवां विधान)। निज वृत्त भेद (इकतालीसवां विधान)। अवंग सार ग्रंथ संपूर्ण।

(३२) साधुवर दूल्हा राम जी के फुटकर शब्द।

पृ० १८८९—१९७१ तक स्तुति (निरंजन स्तुति) गुरुदेव स्तुति, साखी गुरु देव का अंग, स्मरण का अंग, नाम महात्म्य, नाम सामर्थ, विनती जोवन का अंग, सारग्राही का अंग, विश्वास का अंग, जन देह जीत का अंग, साधु संगति का अंग, कुसंगति का अंग, ज्ञानी अंग, अज्ञानी का अंग, निर्वासन का अंग, पतिव्रता का अंग, व्यभिचारिणी का अंग, सूरातन का अंग निश्चय का अंग, सती का अंग, वेहद का अंग, असती का अंग, मृतक का अंग, निर्पक्ष का अंग, टेक का अंग, रस अनरस का अंग, सकल का अंग, चंद्रायण गुरु देव का अंग, (गुरु देव का अंग संपूर्ण)। स्मरण, चन्द्रायण विनती का अंग जम कुजम का अंग, विरह का अंग, प्रेम प्रकाश, विचार, साध, परचा, पतिव्रता

व्यभिचारणी, विश्वास, अविश्वास, संतोष, साध संगति, कुसंगति, असाध का अंग, दया का अंग, ज्ञानी, टेक, उपदेश, अहंता, काल, चेतावनी, सांच, भरम विध्वंस, (सवैया गुरु देव का अंग) । स्मरण विनती, सत्संग, बरकत, विश्वास का अंग, चेतावनी का अंग, काल का अंग, (झूलना) गुरु देव का अंग गुरु महिमा, स्मरण, नाम महिमा, प्रेम प्रकाश, बरकत, निवृत्ति-प्रवृत्ति, साधु महिमा, साधु साषी भूत का अंग, सत संगति का अंग, उपदेश का अंग, मन का अंग, चेतावनी का अंग, काल का अंग, अकलि का अंग, बे अकलि का अंग, दया अदया, फुटकर, मन हरण और कुंडलिया इत्यादि ।

(३३) पृ० १९७२—१९८६ तक—ग्रंथ राम पदति, गुरुवन्दना, गुरु की मेध से समता, गुरु द्वारा ब्रह्मोपदेश वर्णन, रामनामोच्चार महिमा, शरीर की सजावट का खंडन ।

(३४) पृ० १९८७—२०१९ तक—ब्रह्म समाधिलीन योग ।

(३५) पृ० २०२०—२०५३ तक—नवल सागर—स्तुति, उपदेश, गुरुदेव का उपयोग, कलयुग निरूपण, नाम का निश्चय, नाम का प्रताप, रामनाम में प्रीति, भक्ति, सार असार विचार, भजन का प्रभाव ।

(३६) पृ० २०५४—२१३६ तक—यथार्थ बोधः—वंदना—जगन्नाथ को, रामचरण की महिमा, तोको ब्यौरा, विप्रलक्षण राजा लक्षण, आत्म कथा—अठारह से सत्रह की साल, ऐक ऐको विकत हाल ॥ देव करण तहां दरसण पायौ ॥ सुमिजन वचन मोद मन आयो ॥ पाखंड निषेध, जरणां मन गति, नारि लक्षण, काम गति, सन्मुख विमुख, प्रस्ताइक, विश्वास, अदलि, भक्ति, आखिरै लोभ करै सो गति, व्यभिचारिणी, हित पदार्थ, नव संध्या का लक्ष्य, चेतावनी, निंदक की चाल ।

(३७) पृ० २१३७—२१६७ तक—गोपाल कृत प्रहलाद चरित्र—हिरण्यकश्यप को सनकादि का श्राप, उसके पापों से पृथ्वी का कंपित होना, सुर असुरों में वैर होना, हिरण्यकश्यप का तपस्या को जाना, इन्द्र को उसकी स्त्री का हर लेना, नारद का आदेश, इन्द्र का कथन कि इसके गर्भ के बालक का वध किया जायगा, इसका नहीं । इस पर नारद का कथन की इसके गर्भ में भक्त है, ऐसा मत करो, इस पर इन्द्र का अविश्वास, नारद का उपदेश, साधु लक्षण, इन्द्र का उसकी स्त्री को नारद के स्थान में रखना, नारद का उसे उपदेश सुनाना । बच्चे को प्रबोध, हिरण्यकश्यप का वरदान लेकर घर लौटना, उसकी स्त्री का भी आगमन, प्रहलाद जन्म, पिता द्वारा उसका पढ़ने को भेजना, उसका भक्ति की ओर मन होना, पिता का क्रोध, भक्त को नाना प्रकार के कष्ट, नरसिंह अवतार, प्रहलाद का भक्ति वर मांगना, नरसिंह का तथास्तु कथन ।

(३८) पृ० २१६८—२१९९ तक—जगन्नाथ कृत, मोहोमरद राजा की कथा—नारद का भ्रम, परमात्मा द्वारा उसका निवारण, मोहोमरद नृप को कथा सुनना, साधुओं की बड़ाई, ईश्वर द्वारा स्वयं साधुओं का ध्यान करने का कथन, नारद का मोहोमरद नृप के दर्शन के लिये गमन, नारद के वहां पहुंचने पर मुनि का योगमाया उत्पन्न करना, और उसके मोहजित होने की परीक्षा, नारद का परिचय लेना और नृप के पुत्र का मृतक होना, दासी का उपस्थित होकर राजा के पास चलने की प्रार्थना, इस पर मुनि का उनके घर में शोक बताना, दासी द्वारा उसका खंडन, पुनः रानी का मुनि के पास आना और चलने की प्रार्थना और मोह खंडन के विषय में कुछ उदाहरण उपस्थित करना, मुनि का नृप के पास आना और पुत्र शोक के कथन में उदाहरण उपस्थित करना, राजा का मोह खंडन करना, सत्यादिक नृप की कथा सुनाना, चार भाइयों की कथा सुनाना, दो कुत्तों की कथा, एक कुम्भकार के पुत्र की कथाओं द्वारा पुत्र कलत्रादि का मोह खंडन, नारद की तृप्ति, नारद का उस लड़के की स्त्री के पास जाना, उसका शिष्टाचार, नारद का उसके पति के मृतक होने का प्रसंग छेड़ना, उसका ज्ञान कथन और सीतादि के उदाहरण देकर कर्म की प्रधानता बतलाना, नारद का नृप की वंदना करना और ईश्वर के पास आकर उनकी स्तुति करना।

(३९) पृ० २२००—२२०८ तक—राम सागर ग्रंथ, नैमषारण्यक तीर्थ में सौनिक का सब मुनियों से प्रश्न करना कि कहो हरि कैसे मिलते हैं ? सब का चुप रहना, नारद आगमन. सौनिक का नारद से भी वही प्रश्न करना, मुनि का शिव जी द्वारा सुना हुआ राम नाम का महत्त्व बताना, जो शिव जी ने कभी पारवती को सुनाया था।

(४०) पृ० २२०९—२२२० तक—कृष्ण उद्धव संवाद—कृष्ण का कथन कि श्राप के अनुसार यदुकुल का विनाश होना है, मैं भूमि के भार को उतारहो चुका अतः मैं भी अंतर्धान होऊंगा, तुम मोह मदादिक को त्याग ईश्वर भजन में संलग्न रहना, उद्धव का कथन कि महाराज यह मोहजाल क्योंकर दूर होगा ? इस पर कृष्ण का दत्तात्रेय और यदु का संवाद सुनाना, यदु का प्रश्न कि महाराज आप में इतना ज्ञान कैसे उत्पन्न हो गया, अवधूत का उत्तर कि मेरे बहुत से गुरु हैं—क्रमशः गुरुओं के २४ नामों को लेकर प्रथम आठ की कथा सुनाकर उनसे गुण ग्रहण करने का कथन (धरनी, पवन, गगन, पानी, अनल, चंद, रवि, कपोत)।

(४१) पृ० २२२०—२२२७ तक—सूकर, कूकर, अजगर, सागर, मधुकर, हस्ती, मधुमाखी, मधुहरा, पिंगला (वेश्या) सत्रह गुरुओं की कथा।

(४२) पृ० २२२८—२२३२ तक—कहर पंक्षी, बालक, सांप, सती, मकड़ी भृंगी कीट, चैाबीस गुरुग्रों को कथा सुना कर शरीर का नश्वर सिद्ध कर परमात्मा में स्नेह लगाने का वर्णन।

(४३) पृ० २२३३—पृ० २२४६ तक—भिक्षुक गीता कथन—भागवत के ग्राधार पर—एक ब्राह्मण का विरक्त होकर के भिक्षुक होना, लोगों का उसे तंग करना ग्रैार उसका ज्ञानोपदेश।

(४४) पृ० २२४७—२२५३ तक—ऐलव गीतव व्याख्यान। इन्द्र का उरवसी के विरह में दुखित होना, फिर ग्रपने ग्रज्ञान पर मोहित होकर ज्ञान उत्पन्न होना।

(४४) पृ० २२५४—२२६२ तक—जड़भरत को गाथा—राजा भरत का विरक्त होकर बन में चला जाना। वहां पर एक हिरण-शावक के साथ दया के संसर्ग से शरीर छोड़ कर मृग हो जाना, पश्चात मृग शरीर के त्यागने पर एक ब्राह्मण के यहां जन्म लेना, पिता के पढ़ाने लिखाने पर न पढ़ना, उनका नाम जड़ भरत पड़ना, भरत का देवी को वलि दिया जाना, देवी द्वारा भरत की स्तुति ग्रैार वलि को न ग्रहण करना, एक राजा का मोह दूर कर भरत का उसे ज्ञान देना ग्रंथ की समाप्ति।

No. 376. Sarasadāsajī kī Banī by Sarasadāsa of Vṛindāvana. Substance--Country-made paper. Leaves--8. Size--8 × 7 inches. Lines per page—48. Extent--336 Anushṭup Ślokas. Appearance--Old. Character--Nāgarī. Place of deposit—Babū Śyāma Kumara Nigama, Rāe Barelī.

Beginning—श्री कुंज विहारी जी। ग्रथ सरस दास जी की बानी लिष्यते ॥ कवित्त ॥ रसिक सिरमैार श्री हरिदास स्वामी ॥ विविधि वर माधुरी सिंधु में मगन मन वसत बृंदा विपुन वर सुधामी ॥ महल निजु टहल में महल पावै न कोऊ छत्र पतिरंक जिते करमकामी ॥ रसिक रस रीति की रीति सों प्रीति निति नैन रसना रसत नामनामी ॥ हदै कमल मधि सुख सेज राजत दोऊ ॥ रसिक सिर मैार श्री हरिदास स्वामी ॥ १ ॥

ग्रनन्य मति धनि श्री हरिदास स्वामी ॥

जमुन कलकूल कलकेलि कलकलप तरु तीर छवि भीर वसैं वर विश्रामी ॥ मंजु नव कुंज सुष पुंज गुंजै सुनत सरस ग्रनुराग गुनराग धामी ॥ पछि लछि लछि ग्रलछि लछैन सुलछ निरषि निरपेछ लता ललित नामी ॥ नैन पुतरीनि ऊपर सुष सेज कोवृत दोऊ ॥ ग्रनन्य मनि श्री हरिदास स्वामी ॥

End—मदन दवंज सुष पुंज गुंज अलि इंजन षेल बख्यो सुषदाई। भूषन वसन व्यसन न्यारे प्यारे मिलि करत केलि मन भाई॥ अंग अंग सौ संग रंग छवि उपजति मानौं सुरंग ओढ़नो दरंग उठाई॥ करत विहार विहारो विहारनि सरसदासि नेवत मुस न्याई॥ ३७॥ विमल पुलिनि मंडल मधि राजत नागरी किशोर मोर मुकुट भूषन दुति काछनो बनाई॥ नृतत रास रंग भरे उरपति रव सुलप लेन ताल सचित लाग डाट अति गति मन भाई॥ अपने अपने रंग गावति मिलिवत तान तरंग वह सुवख्यौ सनमुष सुष भृकुटी नैन नचाई॥ करन सैां कर जोरत हंसि हंसि रीझि उर लागे लटकत तन मन मगन सरस दासिनि सुषदाई॥ ३८

भूलें फूल डोल दोऊ फूल भरे।
फूल वसन फूस आभूषन हंसनि दसन ये फूल झरे।
फूल्यो फूल मनोज मोज रति कसि कसि अंगन चोज करे॥
अलिगुन गावै फूल बढ़ावै रीझि भीज सरस रीति ढरे॥ ३९॥
इति श्री सरसदास जी को बानी रस को संपूरन॥

Subject.—१—हरिदास जो के प्रति वंदना।
२—नागरीदास प्रति भक्ति वर्णन।
३—श्रीकृष्ण के भक्ति विषय के स्फुट पद।
४—सिद्धांत के कवित्त।
५—७—श्रीकृष्ण के कोमल भाव परम उज्वल शृंगार का वर्णन।
८—श्रीराधाकृष्ण का विलास वर्णन।

No. 377. Virahasāgara by Bābā Sarajudāsa of Kotawā (Bārā Bañkī). Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—8 × 6 inches. Lines per page—20. Extent—125 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance--New. Character--Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1938 or A. D. 1881. Place of deposit--Paragidāsa, Village Jadawāpur, Post Office Baranāpur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—ऐसे घन नामी सुनो सतनामी अंतरजामी सत साईं॥ सब गुनलायक रुचि फलदायक प्रगट जन ताईं॥ बहु बालक साथे महिरज हाथे लावत माथे वंदि छोरा॥ पायन पैजनियां पहिरे चैातनियां सोहत करधनियां छत सोरा॥ सतगुरु अंगनाई वैठे यकठाईं षेलत साईं रंग गोला॥ अचल पसारी तकि महतारी सुनै नरनारी करि लीला॥ बालक अविगति रूप किरति अनूपा अघ हरना॥ प्रभु कीरति पावन सत मन भावन जग कलुष नसावन है तारन

तरना ॥ हरिजन कारन असुर संघारन पतित उधारन सत सामी ॥ संतन अभिलाषत कीरति भाषत जन प्रन राषत निहकामी ॥ सब बालक संगा चढ़े तुरंगा फिरत उमंगा कर कोड़ा ॥ जेहि दुषिया जानत सरनै आनत तेहि सनमानत दै घोड़ा ॥ करैं प्रतिपाला बकसि दुसाला दीनदयाला छिन माहीं ॥ भजि नाम रसाला भै मतवाला नैन कराला कछु भै नाहीं ॥

End—दोहा ॥ रोवैं जिव जंतू पंछी पसु संवरि संवरि गुनगाथ । आपु समान्यो सुन्य मा मोहि करि गयो सनाथ ॥ सोरठा ॥ सो मंडफ बनवाइ दीन्ह छोटानी दास तब । चरन कमल मन लाइ हिरदे मा विस्वास करि ॥ त्रोटक छंद ॥ संतन की दाया तव कहि गाया यह अरजी । सुनो नर नारी कहेउं पुकारी लै मरजी ॥ भक्तन पर दाया किहे रहें छाया अस परतापी रहे साईं । भै कृपा निधाना अंतर ध्याना अबहुं हरै तन अघ झाईं ॥ वह देषि ममाधी तरै अपराधी तजि मोहमदा ॥ बहु दोषी धाये दरसन पाये तरे तुरत रहे पाप लदा ॥ जे करि कामन धावै ते तुरतै फल पावै अस परतछ समाधी ॥ जे जगत भुलाने ते आइ तुलाने कटिगे तेहि भव व्याधी ॥ दोहा ॥ अबहुं तबहुं किरपा किहिनि ऐसे कृपा निधान । सरजू का यह दीजिये गुप्त भजे धरि ध्यान ॥ दोहा ॥ इन्दुदवन गुर साहेब भये प्रगट जगत धरि देहं । प्रभु सनमानि लघु तात तेहि दीजे नाम सनेह ॥ चौ० कोटवा धाम सत गुर मन भावन । अवर न टट वट छांह सुहावन ॥ कूप कुटी घन विटप सोहाये । मेला हाट देषि मन भाए । मंडप दरस पूरि अभिलाषा । पच्छिम द्वार बैठि तहं भाषा ॥ इति श्री विरह सागर बानी सरजू दास को संपूरन सुभमस्तु पौषमासे शुक्लपछे तिथौ ११ श्री संवत १९३८ जो प्रति देषा सो लिषा लेषक परमानंद कवि बसत सरैयां ग्राम । जो प्रति देषा सो लिषा सिद्ध करै श्री राम ॥ राम राम राम—

Subject—इस पुस्तक में बाबा जसकरन दास का मृत्यु काल वर्णन है। इसमें उनके गुणों का स्मरण करके विरह प्रगट किया गया है।

No. 378. Mahābhārata Aswamedha Pārva (Jaimini-purāṇa) by Saraju Rāma of Awadha. Substance--Country-made paper. Leaves--308. Size--$12\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page--14. Extent--8,085 Anushṭupa Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1805 or A. D. 1748. Date of Manuscript—Samvat 1885 or A.D. 1828. Place of deposit—Paṇḍita Śyāma Bihārījī Miśra, Golāgañja, Lucknow.

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ चंतज्जैलो लसति वारिद रम्य गात्रं, विद्युत प्रभावर विभूषितमम्बुजाक्षं। कंदर्प्प कोटि सुभगं व्रज सुंदरीणां, नेत्रोत्सवं भजतु नंदकिशोरमीशं ॥ १ ॥ मज्जै मुनो प्रभतिभिर्मुनिभिर्विचित्रं, माख्यान मद्‌भुत तरंग दितंजपूर्वं तद्भाषया सत्युराम प्रसिद्धिनामा, धर्मास्वमेध मिहरम्यतमं तनोति ॥ २ ॥ सोरठा—गुण गन ज्ञान निधान मंगल मय सुखमा सदन। कलि विष तूल कृसानु एक रदन करिवर वदन ॥ ३ ॥ जाहि अमंगल मूल सुमिरत गणपति गैारि सुत। जरहि व्याल जिमि तूल विघन व्याधि संकट सकल ॥ ४ ॥ छंद—नमो गैारिजा ज्ञान रूपं गनेसं। तमो मोह मज्ञान नासं दिनेसं ॥ नमो धूम्रकेतुं गनेसैक दंतं। नमो विघ्न छेदं धरं परसु हस्तं ॥ नमो बुध्यकांतं नमो गैारि पुत्रं। नमो निर्विकारं नमो चारु वक्र ॥ नमो बुध्य बुध्यं नमो संत रूपं। नमो ज्ञान गोपार सिध्यं सरूपं ॥ भजेहं गणेशं गुणं ज्ञान गेहं। नवोनार्थ वर्णं सुभं सुभ्र देहं ॥ करिन्द्राननं सोभितं इन्दु भालं। चतुर्वाहु कंठं चलं चारु मालं ॥

End—छंद—सुख पाइहै सुनि सुनत श्रोता जिन्हे प्रिय हरि जस अहो। परसिद्ध जैमुनि की कथा अति कूर कविता को कही ॥ वल बुद्धि विद्या होन हनि मति अज्ञ अैागुन मय महा। श्री गुरु कृपा यह चरित कछु निर्मित सो नियमित कर कहा ॥ दोहा—विशिष व्योम वसु बुध्य सुकुल अष्टमी फाग। पूरण भइ श्री गुरु कृपा कथा युधिष्ठिर राज ॥ (निर्माणकाल सं० १८०५ वि०)। इति श्री महाभारथ पुराणे अश्वमेधि पूर्वे सूत सैानिक संवादे जैमुनि पुराणे जज्ञ कृत्ते राजा युधिष्ठिर समाप्तं षट त्रिंशतमोऽध्यायः ॥ दोहा—वन रिपु ता रिपु तासु रिपू तारिपु रिपू असवार। सो तोरी रक्षा करै घरी घरी सब वार ॥ मिदं पुस्तकं लिख्यतं ललितादीन पाण्डे स्वयं संवत १८८५ वि० भाद्रमासे कृष्ण पक्षे पार्वणि त्रियोदश्यां चंद्रवासरे शुभम् ॥ तैलं रक्षं जलं रक्षं रक्षं शिथिल बंधनम्। मूर्ख हस्ते न दातव्यं मेते वदति पुस्तकम् ॥ राम राम राम ॥ इति ॥

Subject—पृ० १—५ तक प्रार्थना, मंगलाचरण, विष्णु, गणेश, देवी, शिववन्दना, वाणी, गुरु स्तुति वर्णन। पृ० ६—११ तक भीष्म, युधिष्ठिर अैार व्यास संवाद, युधिष्ठिर का वैराग्य होना, अैार व्यास का समाधान करना तथा उसके लिये विधि बतलाना। पृ० १२-१९ तक यज्ञ मंत्रणा करना कृष्ण आदि मिल कर पृ० २०-३१ तक। भीम अैार अर्जुन का धन अैार घोड़े के लिये यात्रा करना, जोवनास से मैत्री होना अैार घोड़ा लाना। पृ० ३२—३८ तक। यज्ञ की तय्यारी होना, जोवनास सम्मिलन अैार हस्तिनापुर आना। पृ० ३९-४७ तक। भीमसेन का द्वारका जाना अैार श्रीकृष्ण जी के साथ देवकी यशोदादि को लाना। पृ० ४८—५७ तक अनुसाल का षड्‌यंत्र रच कर युद्ध करने का प्रयत्न करना, अैार घोड़ा

चुराना, घोर युद्ध होना, वृषकेतु का अनुसाल को पकड़ना। पृ० ५८—६३ तक घोड़ा छोड़ना, अर्जुन, अनुसाल, जीवनाथ, वृषकेतु आदि का साथ होना पृ० ६३-७० तक मदुरा के राजा नीलध्वज के यहां जाना और उसका घोड़ा पकड़ना नील-ध्वज का युद्ध वर्णन, अर्जुन का अग्निदेव की स्तुति करना, अनल का नीलध्वज को कन्या से विवाह वर्णन पृ० ७१-७३ तक। नीलध्वज का युद्ध वर्णन बभ्रुवाहन को कथा। पृ० ७४—७८ तक। एक स्त्री को मुनियों का भोजन शूकर को देने से शापवश पत्थर हो जाना और प्रार्थना पर अर्जुन के पद छू कर तरने का वरदान देना, शिला से घोड़ का चिपकना, अर्जुन का छुड़ाना—पृ० ७९—८७ तक—घोड़ा का हंसध्वज के यहां पहुंचना, सुधन्वा के सत्य की परीक्षा तप्त कड़ाही में कूदना, द्विजों का समाधान होना पृ० ८७—१०० तक—सुधन्वा पांडव संग्राम वर्णन, वध होना। पृ० १००—१०७ तक सुरथ पांडव युद्ध वर्णनम् व वध होना, पृ० १०७—११० तक। एक सरोवर पर जा कर घोड़े का सिंह होना, अर्जुन को प्रार्थना पर फिर घोड़ा बन जाना वर्णन पृ० ११०—११४ तक। प्रमिला का घोड़ा पकड़ना, उसका युद्ध को प्रस्तुत होना, अर्जुन के हार की प्रतिज्ञा पर घोड़ा छोड़ना, पृ० ११४—१२० तक वेगन राक्षस से युद्ध व वध वर्णन और माया का नाश करना—पृ० १२०—१३६ तक—घोड़े का मनिपुर में आना अर्जुन का पुत्र बभ्रुवाहन राजा था, चित्रांगदा मा थी, बभ्रुवाहन का युद्ध वृषकेतु प्रद्युम्न आदि को युद्ध में हराना, अंत में अर्जुन का पुत्र मानना और बभ्रुवाहन का अपमान जो अर्जुन ने किया भूल जाना, पृ० १३७—१४० तक। लवकुश कथा वर्णन। पृ० १४१—१४८ तक जानकी वन गमन वर्णन। पृ० १४९—१५९ तक। लवकुश जन्म कथा वर्णन व विद्याध्ययन शिक्षा वर्णन। पृ० १६०—१७३ तक लवकुश का अश्व पकड़ना और शत्रुघ्न से युद्ध होना पृ० १७४—१८६ तक। लवकुश का लक्ष्मण, सुग्रीव अंगद विभीषण सब से युद्ध वर्णन। पृ० १८७—२०० तक लवकुश का भरत से युद्ध वर्णन। पृ० २०१—२१४ तक। लवकुश सीता का राम से मिलना, सब का जी उठना और सीता जी का अयोध्या में कुमारोंसहित आना, पृ० २१४—२२४ तक। अर्जुन और बभ्रुवाहन का युद्ध होना तथा अर्जुन का वध वर्णन। पृ० २२४-२३३ तक—चित्रांगदा का दुःखित होना और पाताल से अमृत लाने को कहना, बभ्रुवाहन का जाना और नागों से युद्ध होना—पृ० २३४—२४० तक। सिर का खो जाना, बभ्रुवाहन का सञ्जीवन रत्न लेकर आना कृष्ण का कुंती, भीम आदि समेत आना, अंत में दुःखित हो बभ्रुवाहन ने अपना शिर दे दिया तब श्रीकृष्ण ने सब को जीवित कर दिया। पृ० २४०—२४७ तक। ताम्रध्वज का घोड़ा पकड़ना, मयूरध्वज का सेना सहायतार्थ भेजना व अर्जुन का मूर्छित होना। पृ० २४८—२६० तक कृष्ण जी का विप्र भेष से मोरध्वज की

परीक्षा करना और वरदान देना और सत्कार पाना—पृ० २६१—२६७ तक। चंदेरी के चन्द्रहास राजा के यहां आना, घोड़े का तैर जाना, सेना का पीछे रह जाना, अर्जुन को नारद का मिलना, नारद का चन्द्रहास की कथा कहना और कुलिंद के यहां कुमार का आना—पृ० २६७—२७६ तक। चन्द्रहास की वीरता व उदारता का वर्णन। पृ० २७७—२८९ तक। चन्द्रहास की कथा व इतिहास तथा तप दर्शन पृ० २९०—२९४ तक घोड़ा का जयद्रथ के पुत्र के देश में जाना, अर्जुन का नाम सुनकर मर जाना, और कृष्ण का जिलाना वगदालभ्य का सम्मिलन वर्णन—पृ० २९५—३०३ तक—अश्वमेध यज्ञ में राजाओं का आना और सानन्द पूर्ण होना। पृ० ३०४—३०८ तक। वकदालभ्य को दान देना, सब को विदा करना, युधिष्ठिर का कृष्ण की स्तुति करना—विप्रों को दान देना—

No. 379 (*a*). Kavitta Ratnākara by Senāpāti. Substance--Country-made paper. Leaves--31. Size--10 × 7 inches. Lines per page--72. Extent—1,674 Anushṭup Ślokas. Appearance--Old. Character - Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1706 or A. D. 1649. Date of Manuscript—Samvat 1884 or A. D. 1827. Place of deposit— .

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ कवित्त रत्नाकर लिष्यते ॥ परम जोति जाको अनंत रहि रही निरंतर। आदि अंत अरु मध्य गगन दश दिशि वहि अंतर॥ गुण पुराण इत् साह वेद वंदीजन गावत। धरत ध्यान अनुवरन पार ब्रह्मादि न पावत। सेनापति आनंद घन रिद्धि सिद्धि मंगल करन। नायक अनेक ब्रह्मांड को एक राम संतन सरन॥ कवित्त॥ पाई जो कविन जल थल जप तप करि विद्या उर धरि परहरि रस रोसो हैं॥ ताकि कविताई को सुजस सुपञु चाहतु हैं सेनापति जानत जो अक्षर न ओसो है॥ पाय के परस जाके शिलाहू सचेत भई पायो वोध सार सारदाऊ को धरोसो है॥ और न भरोसो जिय परत परोसो ताही राम पद पंकज को पूरण भरोसो है॥ भूप सभा भूषन छिपायो पर दूषन को बोल एक दूषन कहेन देह पार के॥ राज महराजनि पूरे सकल कलानि सेनापति गुणषानि औरहू को गुणदाइ के॥ तुमही बताई कछु कीन्हीं कविताई तामे होइ जोगताई दुचिताई के सुभाइ कै॥ बुद्धि के बिनायकै गुसाई कबि नायके सो लोजिये वनाय कै कहत शिरनाइ के॥

End—अथ गूढ़ार्थ—ज्योतिस ताते पाइये संतति नीको होइ। सेनापति जो तप करै संतति पावै सोइ॥ सेनापति जो कामिनी बंधी कछू लषैन॥ कवि नव पाने कौल से ताही तीके नैन॥ सेनापति वर्न्यो तुरंग उरगदमन को भाइ। तौन

पाइ की भांति ज्यों चलत चारहू पाइ । पाइ एकसौ साठि है तिनमें एक चलैन । ताको समवाजो चलै सेनापति हारैन ॥ चौ० ॥ आदि अंत जाके है आदि न अंत न जाके सोचे वादि देह विनाहू होतरु जात निशि दिन सोचि कहौ सो बात ॥ दोहा—जिन पाटी सिर ओर है कीन्हो षरो अनूप ॥ सेनापति वारद षरी त्रिय पालका स्वरूप ॥ संवत सत्रह से छमै १७०६ सेइ सियापति पांय सेनापति कविता सजी सज्जन सजौ सहाइ ॥ कवित्त ॥ पूरी पंडिताई कविताई परवीनताई पाई शुभ साधुताई कोजे अब षानिहै ॥ अति गुणवान शीलवान सव संतन को अति पर निंदा को सुहाति है सुहानिहै ॥ कहां कहां जैये काहि काहि समुझैये ॥ आप गुनी हैं गुनीन सनमानि है सो मानिहै ॥ अर्थ कवि चित्र सेनापति के कवित्त जानि जानिहै सो जानिहै न जानि है न जानिहै इति श्री कवित्त रत्नाकर सेनापति कृते चित्र काव्य वर्णन नाम षष्ट स्तरंगः ॥ संवत १८८४ चैत्र शुक्ल सप्तम्यां भौमे लेखि वकसीराम कान्यकुब्ज पुरे ॥

No. 379 (*b*). Kavitta Ratnākara by Senāpati. Substance—Country-made paper. Leaves—63. Size—9 × 5 inches. Lines per page—30. Extent—1,418 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Prose or verse—Verse. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhakura Ganeśha Siṁha, Village Karailā, Post Office Phakharpur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ लिषितं कवित रत्नाकर सेनापति कृत ॥ सुरतरु सार की सवारी हैं विरंचि पंचि कांचन प्रचित चितामनि के जराइ की ॥ रानी कमला की पिय आगम कहन हार सुरसरि सषी सुष दैनी प्रभु पाइ की ॥ वेद में बषानी तिहूं लोकन की ठकुरानी सब जगजानी सेनापति के सहाइ की । देव दुख दंडन भरत सिर मंडन वे वंदो अघ षंडन षराऊं रघुराइ की ॥ १ ॥ पाइ जो कविनु जल थल जपु तपु करि विद्या उरधरि परिहरि रस रोसो है ॥ ताही कविताई को सुजसु यसु चाहतु हं सेनापति जानतु जु अकुरु न ऐसो है । पाइके परसु जाको सिलाउ सचेत भई पायो वोध सार सारदाहू को धरोसो है ओरु न भरोसो जिय आवत षरोसो ताही राम पद पंकज को पूरन भरोसो है ॥ मूढ़न को अगम सुगम एकताको जाको तोछन विमल विधि बुधि है अथाह की । कोई है अभंग कोई पदु है सभंग सोधि देषे सब अंग सम सुधा के प्रवाह की आदि ॥

End—वारन लगाही पुकार एक वार ताको वारना लगाई रछि पार भगतन को । सिव सिरताज तुम आपु महाराज बैठि रहे तजि लाज काज मो गरीब जन के ॥ सेनापति राम भुअपाल आपु जानि जिय हूजिये सरन असरन के ।

धाइ हरि राइ ह्वै सहाइ आइ दूरि करो त्रास लछिमन सु भैया लछिमन के।
आदर विहीन ताहिं परद्वार दीन जाइ होतु है मलीन बात सुनि अनबात की।
सदा सुष दीन राम नाम सुनि लीन रहै कोइ चित चिंतन करत प्रान गात को॥
आसर और को करत काहू ठौर को जु सेनापति एकु हरिराइ कृपा तको।
जाके सिरपर आजु राजतु है महाराज ताहि कहो करो परवाहि कौन बात को॥
तुम करतार जग रछा के करन हार वजवन हार मनोरथ चित चाहे के।
यह जिय जानि सेनापति है। सरन आयो हूजिये सरन महापाप ताप दाहे के॥
जो कहूं कहो कैसे कूर मन तैसे हम गाहक हैं सुकृति भवति रस लाहे के॥
आपने करम करिहौ हो निरवहै गो वही हो करतार करतार तुम काहे के॥

No. 380. Jaimini Purāṇa by Sewādāsa of Nawaranga Nagar. Substance—Country-made paper. Leaves—540. Size—$10\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—8. Extent—3,240 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Saṁvat 1700 or A. D. 1643. Date of Manuscript—Samvat 1855 or A. D. 1798. Place of deposit—Paṇḍita Bhawānī Bhiruji, Village Uttaragāma, Post Office Aliganja Bāzāra, District Sultānpur.

Beginning—श्री गणेशायनमः श्री गुरु चरणकमलेभ्योनमः॥ गोविंदाय-नमः॥ श्री सरस्वत्यैनमः॥ अथ जैमुनि पुराण लिख्यते॥ दोहा॥ वंदौ॥ गणपति सरस्वती पूजौ गुर के पाय॥ संतण पद रज शीशधरि भाषौ कथा सुभाय॥ १॥ चौपाई॥ जन्मेजै पूछै कर जोरी॥ जैमुणि रिषि सुनु विनती मोरी॥ पूर्व कथा कछु मोहि सुनाणा तिन्ह कर रिषि कछु करहु वषाणा॥ वंधुन सहित राज जस कीन्हा॥ विप्रण कंचण दाण वहु दीणा॥ जग मा अस्वमेध जस कीन्हा। सो राजा कहो कैसे सो दीन्हा॥ दोहा॥ राजणीति जगधर्म की सकल कहो समुझाय॥ मम मण धर्म सनेह वहु कृपा करो रिषिराय। जैमुणि उवाच॥ चौ०॥ धन्य धन्य जन्मेजै राई॥ जो तुम्ह जैसो बुधि उपाई॥ धर्म पूणीत कथा हितकारी॥ सो नृप तुम्ह मोहि कहो विचारी॥ × × ×

End—जैमुणि कहै जन्मेजै राजा। परम पूणीत कथा यह राजा॥ पूरण हम तुम्है सुनाई॥ अधिक प्रेमते तुम सुनि पाई॥ कलयुग अश्वमेध नहिं काजा॥ यहि प्रकार फल कीजिय राजा॥ दोहा॥ अश्वमेध जग्य को कथा भई र पूरण सोय॥ अंतर रुचि विचित्र पशूणै अस्वमेद फल होय॥ चौ०॥ जो कोई साधु संत जग वाण॥ तिनकी पद रज सेवा दाण॥ कवि जण की वोले कर जोरी॥

चूक अचूक वकसिये मोरो ॥ अस्वमेद सह सक्त तिग्राहो ॥ सो हम श्रवण पुणि कछु साही । वातरा कछु कछु सुणि पावा ॥ तुम मिलाय के ग्रंथ वणावा । खेरता कछु शंशै आवै ॥ ताते कवि जन ठौर वतावै ॥ भद्रावति नग्र के पासा ॥ जो जंग हेड़ कवि को वासा ॥ नवंरगाणगर जब सिंधपुर तहां को सुष मने नेवासा ॥ कान्ह राम के सामणे वसत है सेवादास ॥ संवत सत्रह सै भयऊ कातिक मास सोते पछे द्वादस्यां चन्द्रवासरे गुरु जाणवदनधाया पुस्तकं लोषितं मया ॥ लिषितं ब्राह्मण रुद्र त्रिपाठि त्रिवस सम्वत् बुध्या के सतत् मया ॥ वसतं ग्राम पेडोर अस्य विदितां कृति जगत्र स्थितां इति श्री महाभारते अश्वमेधे पर्वाणि जैमुनि कृत—संवत १८५२ ॥

Subject—कुल अध्याय । (१) पृ० १—१४—यज्ञ उपदेश । (२ १५-२६-हस्तनापुरी आगमन । (३। २७—३६—भोमसेन गमताणोणा । (४) ३७—४२—श्यामकरण हरण । (५) ४३—५० जोवणरा त्रिषकेतु युद्ध । (६) ५१—५३—भीम युद्ध । (५) ५७—६२-जोवनाराडाडि युधिष्ठिर मिलन (८) ६३—६६-धर्म निरुपण । (९) ६७—७१ भीम द्वारिका गमन । (१०) ७२—७६ कृष्ण हस्तनापुरो गमन । (११) ७७—८० कृष्ण हस्तनापुर आये । (१२) ८१—८७-शल्य घोड़ा हरण । (१३) ८८—९६ भामा संवोध । (१४) ९७—१०८-नीलध्वज तुरंग हरण । (१५) १०९—११६ नोलध्वज वर्णन । (१६) ११७—११९-उद्यालक स्त्री शाप विमोचन । (१७) १२०—१२६-सुधन्वा प्रतिज्ञा वर्णन । (१८) १२७—१३०-शुधन्वा युद्ध । (१९) १३१—१३५-शुधन्वा वध (२०) १३७—१४३-सुरथ वध । (२१) १४४-१५२ कृष्ण और हंसध्वज मिलन । (२२) १५३—१५८-प्रभाला रानी युद्ध । (२३) १५९-१६९ घोड़ा मानिकपुर आगमन ।(२४) १७०—१८३—वभ्रुवाहन युद्ध । (२५) १८४—१८८-वभ्रुवाहन युद्ध (२६) १८९—१९७-रामाभिषेक, (२७) १९८-२०६ सीता लक्ष्मण वर्णन । (२८) २०७—२१४-सीता वाल्मीकि आश्रम प्रवेश (२९) २१५—२२१-लव घोड़ा वंधन । (३०) २२२—२३० लव मूर्छा (३१) २३१-२३७ शत्रुहन मूर्छा (३२) २३८-२३९ लक्ष्मण सेना वध (३३) २४०—२४१ लक्ष्मण मूर्छा (३४) २४२—२४७-भरत आगमन (३५) २४८—२६०-रामचन्द्र लवकुश, सीता वाल्मीक मिलाप वर्णन (३६) २६१-२६७ वृषकेतु वध (३७) २६८—२८४-अर्जुन वध । (३८) २८५—२९५—श्रीकृष्ण माणिकपुरी आगमन । (३९) २९६—३०२—वभ्रुवाहन विजै वर्णन । (४०) ३०३—३०७ मोरध्वज अर्जुन समागम । (४१) ३०८-३१३-मोरध्वज जुध्य वभ्रुवाण मूर्छा । (४२) ३१४—३२१-सुचेत युद्ध (४३) ३२२—३२८-कृष्णार्जुन नग्र प्रवेश । (४४) ३२९—३३४—मोरध्वज ब्राह्मण समागम । ८४५, ३३५—३४९ मोरध्वज कृष्ण मिलाप । (४६) ३५०—३५५—मालिन कन्या राजा वोरब्रह्मा संवाद । (४७) ३५६—३६२ धर्मराज रोग वर्णन । (४८)

३६३—३७० वीरब्रह्मा उपाख्यान। (४९), ३७१—३८० चन्द्रहंस उत्पत्ति (५०) ३८१-३८६-चंद्रहंस विद्याध्ययन (५१) ३८७-३९६ मदनवती गमन।(५२) ३९७—४०१ चन्द्र कौतुलपुर आगमन। (५३) ४०२—४०८ चंद्रहंस विवाह (५४) ४०८—४०८ चन्द्रहंस विवाह। (५५) ४०९—४१६ चन्द्रहंस विषय वर्णन (५६) ४१७—४२७—चंद्रहंस राज प्राप्त (५७) ४२८—४४०-चन्द्रहंस राज वर्णन। (५८) ४४१—४४९—चंद्रहंस मिलाप (५९) ४५०—४६६—कृष्णवक तालमुनि मिलाप, (६०) ४६७—४७३—जयद्रथपुर गमन, (६१) ४७४—४८०—अर्जुन हस्तनापुर आगमन (६२) ४८१—४९३ यज्ञारंभ श्यामकरण स्नान वर्णन (६३) ४९४—५०८—यज्ञ वर्णन। (६४) ५०९—५१९ ब्राह्मण भोजन वर्णन। (६५) ५२०-५३०—शक्रपति ब्राह्मण कथा। (६६) ५३१—५३५—नेवरा मोक्ष (६७) ५३६—५४० जैमुनि पुराण पढ़ने के फल, कवि का अपना परिचयः—भद्रावती नगर के पास—वहां से डेढ़ योजन नवरंग नगर। सेवादास नाम। रचना काल सं० १७०० लिखी १८५८

No. 381(*a*). Dayābodha by Devīdāsa of Ḍiḍwānā Jodhapura Rāja. Substance—Country-made paper. Leaves—2. Size—10 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—28 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1794 or A.D. 1737. Place of deposit—Śri Mahanta Ḍiḍwānā, Rājā Jodhapurā, Post Office Ḍiḍwānā, Rajputānā.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ दयावोघ लिष्यते॥ गोरषनाथ गुरु आवो सिद्धौ खोज बताऊं। आदिनाथ का पूत कहाऊं। जोगारंभ की याही वाणी।सब घट नाथ एक ही करिजाणी। जोगारंभ हृदय मैं माड़ौ। दया उपावो जूतो छोड़ो। नागा पावा जो नर मुवा। ताका कारज पहिले हुवा। आप स्वारथ घालै धईं। तामैं चीटो केती मुई॥ तजै कहरि नजरि मभूत। वटवा फाऊँड़ो जिन लेउ हाथ। ऐता आरंभ परिहरै सिद्धौ। यों कथंत जती गोरषनाथ॥ माघ चलंता धरणि दिष्ट जो लागै। ताके कांटा कदेन लागे। पहिले आरंभ हम भी करते। जीव जंतु बहुतेरे हतते। आरंभ तजै गुदड़ी चलाग्रो। निरति सुरति अविनासी सों लाग्रो। अविनासी पुरुष का लागा रंग। रिद्धि सिद्धि ताही के संग॥ रिद्धि छांड्या सिद्धि पाइये। सिद्धि शंकर के हाथ॥ छांड़ौ सकल अकल को ध्यावो। यों कथंत जती गोरषनाथ॥ आसन तजि अनंत जिम आवो। अल्प भिक्षा बैठा पावो॥ तहना पांच घर चितायवा।

End—घड़ा देवरा औघड़ देव। तहां जोगेश्वर लाग्या सेव॥ पंच चेला मिलि पूरानाद। धरणि गगन विच भई आवाज॥ दीपक एक अषंडित विन वाती। तहां जोगेश्वर थापना थापी॥ ता दीपक के चरण न पिंड। सिषा न नैन सीस नहिं हाथ। सो दीपक देष्या जती गोरखनाथ॥ ता दीपक के डाल न मूल। ता दीपक के कली न फूल॥ ता दीपक के रंग न रूप। ता दीपक के छांह न धूप॥ ता दीपक के सबद न स्वाद। ता दीपक के विद्या न नाद॥ ता दीपक के मोह न माया। सो दीपक सुनै सून समाया॥ इति दयावोध सम्पूर्ण लिखतं गंगाराम निरंजनी वैष्णव जैपूर मध्ये संवत १७९४॥ पठनार्थं रूपदास महंत डीडवाना गद्दी वाले के। कातिक मासे शुक्लपक्षे तिथि नवम्यां शुक्र वासरे॥

Subject—इस में साधुओं के लिये दया का ज्ञान वर्णन है।

No. 381(*b*). Gorakha Gaṇeshā Goshthī by Sevādāsa Mahanta of Ḍiḍwānā (Jodhpura). Substance—Country-made paper. Leaves—5. Size—8 × 5 inches. Lines per page—14. Extent—80 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1794 or A.D. 1737. Place of deposit—Śri Mahanṭa Ḍiḍwānā Rāja Jodhapur, Post Office Ḍiḍwānā, Rājputānā.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ गोरष गणेश गोष्टी लिष्यते॥ गणेश पूछे गोरख कहिए। तुम स्वामी कहां ते आये। कहा तुमारा नाम॥ हम निरंतर आये जोगी हमारा नाम॥ स्वामी जोगी तोते बोलिये। जिन एता मेर मेषला रचा। तुम कैाण जोगी। अम्हे निरंजन जोगी। अतिथि गुरु चेला स्वामी। अतिथि ते कैाण जाणिये। रहति जाणिये शब्द प्रमाणिये स्वामी रहतिते क्या वोलिये॥ शब्द ते क्या वोलिये। शब्द वोलिये अवधू सवते विवर्जित। रहति वोलिये त्रिगुण तैा स्वामी सब ते विवर्जित ते क्या वोलिये। त्रिगुणते क्या बोलिये। सब ते विवर्जित ते वोलिये ते वोलिये अवधू सूछिम त्रिगुण वोलिये सत रज तम। तैा स्वामी सूछिम ते क्या वोलिये। सत, रज, तमसे क्या वोलिये। सूछिम ते वोलिये अवधू दृष्टि देषै न मुष्ट मावे॥ सतगुण वोलिये पवन। रजगुण ते वोलिये पाणी। तमगुण ते वोलिये अवधूतामसी रूपी पंचतत्व पचीस प्रकृति का आदम। एता एक त्रिगुण वोलिये। तैा स्वामी पंचतत्व से क्या वोलिये पचीस प्रकृति ते क्या वोलिये। पंचतत्त्व वोलिये अवधू। पृथ्वी, आप, तेज, वायु, आकाश। एक एक तत्व संयुक पांच पांच प्रकृति वोलिये॥

End—वायु का कैाण घर कैान द्वार कैाण आहार, कैाण व्यवहार। तेज का कैाण द्वार कैाण आहार कैाण व्यवहार। आप का कैाण घर कैाण द्वार कैाण आहार कैाण व्यवहार। पृथ्वी का कैाण घर कैाण द्वार कैाण आहार कैाण व्यवहार। तै अवधू आकाश का घर ब्रह्मांड, श्रवणद्वार सुणै सो आहार उभया षंड व्योहार। वायु का धर नाभी नासिका द्वार वासना आहार अहं क्रोध लोभ व्योहार। तेज का घर पीत्ता चक्षुद्वार दृष्टि आहार प्रीति मोह व्योहार। आप का घर ललाट, इन्द्री द्वार स्त्री आहार, मैथुन व्योहार। पृथ्वी का घर कलेजा गुदाद्वार खाय सो आहार लोभ लालच व्योहार। तै स्वामी पृथ्वी का कैाण गुरु, जल का कैाण गुरु, तेज का कैाण गुरु वायु का कैाण गुरु। आकाश का कैाण गुरु। तै स्वामी पृथ्वी का गुमन देवता। वाचा स्वरूपी॥ आपका चन्द्रमा देवता बुद्धि स्वरूपी, तेज का गुरु सूर्य देवता अग्नि स्वरूपी, वायु का गुरु ईश्वर देवता अनादि स्वरूपी, आकाश का गुरु गोरष देवता अविगत स्वरूपी। तै स्वामी पंचतत्व को कथे उत्पत्ति कथे षपंति। तै अवधू अविगत उत्पना आकाश, आकाश उत्पना वायु, वायु उत्पना तेज, तेज उत्पना तोयं। तोयं उत्पना मही॥ मही आसंति तोयं॥ तोयं आसंति तेज, तेज आसंति वायु, वायु आसंति आकाश॥ आकाश आसंति अविगीत। ये पंचतत्व पचीस प्रकृति भेद बोलिये। निरंजन देवता पाणी का जामण अग्नि की पुट, पवन का थंया सुरति निरति सोधि सून्य में समाया अविगत स्वरूपी॥ इति गोरष गणेश संवादे पठंते हरंते पापं श्रुत्वा मोक्षदायकं योगारंभ भवेसिद्धा आवागवण निवर्तते उचारं विचारं पापक्षयं जायंति ॐ नमो शिवाय ॐ नमो शिवाय गुरु मछिन्द्रनाथ की पादुका नमोस्तुते इति गोरष गणेश संवादे योगशास्त्र सम्पूर्ण समाप्तं॥ लिषतं गंगाराम निरंजनी वैष्णव जैपुर मध्ये पठनार्थ बाबा रूपदास महंत कार्तिक शुक्लपक्ष तिथि दसम्य शनिवासरे संवत् १७९४॥

Subject—इसमें सिद्धान्त संबंधी प्रश्नोत्तर हैं।

No. 381 (c). Mahādeva Gorakha Goshtī by Sevādāsa of Ḍiḍwānā, Jodhapura Rāja. Substance—Country-made paper. Leaves—2. Size—8 × 5 inches. Lines per page—25. Extent—70 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1794 or A.D. 1737. Place of deposit—Śri Mahantā Ḍiḍwānā Mandira Haridāsaji Rāja Jodhapurā, Post Office Ḍiḍwānā, Rājputāna.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ महादेव गोरष गोष्टी लिष्यते॥ ईश्वरोवाच॥ ॐ अविगत उत्पने इच्छा। इच्छा उत्पने आकाश। आकाश उत्पते वायु,

वायु उत्पते तेज, तेज उत्पते तोयं, तोयं उत्पते मही, अविगत इच्छा इच्छाते आकाश, आकाश नाम स्याम वरण दसवें द्वार वास, दाहिने पैसार, वामे श्रवण निकास, नाद सुनै सो आहार, दंभ बड़ाई व्योहार राग द्वेष हर्ष शोक मोहादिक ये पांच प्रकृति आकाश को बोलिए ॥ इन आकाश मारग जीव अनुसरै तो स्वेत रज खानि भोगवै ॥ आकास ते वायु नाम नीलवरण नाभिवासा इला पैसार पिंगुला निकास, गंध वासना, आहार क्रोध व्योहार, गावण धावण वलगण संकोचण, पसारन ये पंच प्रकृति वायु की बोलिए, इन वायु मारग जीव अनुसरै तो अंडरज खानि भोगवै । वायु ते तेज नाम रक्त वरण त्रिकुटी वासा दाहिने नेत्र पैसार वामें निकास दृष्टि देखै सो आहार मोह व्योहार, क्षुधा तृषा निद्रा आलस कांति ये पंच प्रकृति तेज की बोलिये, इन तेज मारग जीव अनुसरै तो रज खानि भोगवै ।

End—वर अजपा द्वार निःकाम पैसार संतोष निहसार मकरंद आहार अगम व्योहार इन चित मारग जीव अनुसरै तो स्वरूप मुक्ति भोगवै ॥ परम ध्यानं च अहंकार नाम प्रवाण वरण विषमी वासा लयचर नुवासीक द्वार अगम पैसार अगोचर निसार अजराहार, अगाध व्योहार इन अहंकार मारग जीव अनुसरै तो सालोक मुक्ति भोगवै।प्राण अंतःकरण नाम पवरण अस्थिति वासा धीरज धर चक्र द्वारा ज्ञान पैसार विज्ञान निसार अमरा आहार अबंध व्योहार इन अंतःकरण मारग जीव अनुसरै तो महा मुक्ति आत्मा परमात्मा भवंति जोगेश्वर जीव सीव एक भवंति परम सुन्य भवे स्थिति पारब्रह्म भवे लीनं सत्यं सत्यं च वदाम्यहं तत्व ज्ञान श्री शंभूनाथ अकथ कथितं ॥ सुनो हो गोरष अवधूतं परम जोग संप्राप्ति जोगी ईश्वरो कथितं महाज्ञान इति ज्ञान इति ज्ञान इन्द्रादि बोलिए इतिज्ञान पटल द्वितीयोध्याय इति गोरष महादेव संवादें पढंते हरंते पापं श्रुत्वा मोक्ष लाभते जोगारंभ भवे सिद्धा आवागमन निवर्तते पठंते करंते गुणंते कथंते पापे न लिप्यते पुन्येन न हारते ॐ नमो शिवाय ॐ नमो शिवाय गुरु मछिंद्रनाथ जी का पादुका नमोस्तुते इति श्रीमहादेव गोरष संवादे योगशास्त्रे ग्रंथ संपूर्ण समाप्त । लिषतं गंगाराम निरंजनी वैष्णव जयपुर मध्ये कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे एकादस्याम रविवासरे संवत १७९४ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

No. 381(*d*). Niranjanapurāṇa by Sewādāsa of Ḍiḍwānā Jodhapur Raj. Substance—Country-made. Leaves—4. Size—9 × 6 inches. Lines per page—44. Extent—176 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1794 or A.D. 1737. Place of deposit—Sri Mahanta Ḍiḍwānā, Raja Jodhapura, Post Office Ḍiḍwānā, Rajputānā.

Beginning—ॐ ॥ अथ निरंजन पुराण लिष्यते ॥ ॐ गोरष शिष्य विचार सिंगार। वंदितं वंदि ऊंकार शिवशक्ति न सृष्टि विचार। अषंड युग होता धुंधकार। जातो कुल माई न वाप। स्वयंभू निरंजन आपही आप ॥ वरण न चिन्ह न रूप न रेष। मूरति विहूना अगम अलेष। अर्धे न उर्ध न अहे न आम। सर्वत्र विवर्जित अतीत अनुपाम ॥ धरती न गगनं चन्दं न सूरं। वाहिर न भीतर नेरे न दूरं ॥ उत्पति प्रलै खानी न वाणी। असंष जुगे जुग जोग ध्यानी ॥ ब्रह्मा न विष्णु देवो न महादेव। संभू निरंजन अलष अभेव ॥ भेदा न भेदो दर्शन न भेष अगम अगोचर मूरति एक ॥ अलष किया सुचि नावों न भ्रांति। उत्तम न मध्यम जोते न जाती ॥ वेद न शास्त्र न पुस्तक पुराणं ॥ हिन्दू न कोई मुसलमानं ॥ अनिले न नील निरंजन राया। ते सर्व सूक्ष्म सून्य की काया ॥ सुने सून्य निरंजन राया। सुनि निरालंव होतो निरंजन को काया ॥ काया माया निरालंव होतो। पाप न पुन्य नहीं तहां छोतो ॥ सून्य से हुआ सर्व स्थूलं। अनाहद धूम रचिले सृष्टि का मूलं ॥

End—वावा आदम रसूल का भया। एक मसीन दस दरवाजा ॥ तहां चिन्ह तहां अलष पुरुष का वासा ॥ एतो एक दसौध वावा को कवूल थी दस औरत एक औरत। दस पुंगड़िये एक पुंगड़ो। दसे पुंगड़ी पुंगड़ा। दसे ग्रामे ग्राम। दसे हस्तो एक हस्ती। दसे घोड़े घोड़ा ॥ दसे वैले वैल। दसे थैलिये थैलो ॥ दसे छेलिये छेलो। दसे पुथड़े पुथड़ा ॥ दसे पुदड़े पुदड़ा। दसे रुपइये तै रुपइया। दसे टुकड़े टुकड़ा ॥ दसे मयूरे मयूर। दसे पथड़े पथड़ा ॥ दसे निवाले निवाला ॥ जोगो जतो का नाथ सन्यासो का संष। वैष्णव का दर्शन। मुल्लां को वांगि। दरवेस सोफो को वांगि एते दरसण सुणि मुसलमान षाना खावो तौ सुवर षाय ये सुनि हिन्दू षाय तौ गऊ का मास षाय ॥ पहिले पूरै पत्र पोछे पूरै कांसा ॥ कांसा का गुरु तिषाण। पत्र का गुरु अलेष रहिमाण ॥ निरंजन पुराण रहा भरपूर। धर्म न आवे नेड़ा पाप न जावे दूर ॥ श्रुत्वा के हरते पापं वक्ता मोक्ष लाभ ते इति श्री निरंजन पुराण पठंते हरंते पापं श्रुत्वा मोक्षदायकं जोग :- रंभ भवे सिद्धा आवागमन निवर्तते ॐ नमाशिवाय ॐ नमोशिवाय श्री शंभूनाथ का पादुका नमोस्तुते इति श्री निरंजन पुराण ग्रंथ सपूर्ण ॥ लिषतं गंगाराम निरंजनी पठनार्थ वावा रूपदास महंत कार्तिक शुक्लपक्ष एकादस्याम संवत १७२४ वि० श्री श्री श्री श्री श्री ॥

Subject—इस में पृथ्वी और मनुष्यों का बनना और हिन्दू तथा मुसलमानों का अलग अलग बनना वतलाया गया है ॥

No. 381(*e*). Śhrishtipurāṇa by Sewadāsā of Ḍiḍwānā Jodhapur Rāja. Substance - Country-made paper. Leaves – 2. Size—10×6 inches. Lines per page—14. Extent—24 Anushṭup

Ślokas. Appearance Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1794 or A.D. 1737. Place of deposit—Sri Mahanta Ḍiḍwānā Rāja Jodhapura, Post Office Ḍiḍwānā, Rajputana.

Beginning—श्री गणेशायनयः ॥ अथ सृष्टि पुराण लिष्यते ॥ ॐ एक उपरांति लेखा नाहीं । दोय पाये सृष्टि नाहीं । गुरु पाये ज्ञान नाहीं । काया उपरांति क्षेत्र नाहीं । आत्मा उपरांति देवता नाहीं ॥ सिद्धि उपरांत ब्रह्म नाहीं । माया पाये परचा नाहीं ॥ शील उपरांति व्रत नाहो । चक्षु उपरांति दृष्टि नाहीं । निर्भय उपरांति अभय नाहीं । संयम उपरांति सुचि नाहीं । संतोष उपरांति सुष नाहीं । अमर उपरांति सिद्धि नाहीं अभय उपरांति करामात नाहीं । माता उपरांति जन्म नाहीं ॥ गर्भ उपरांति नरक नाहीं । खलंत उपरांति हानि नाहीं । चित्त चंचल उपरांति रोग नाहीं । वृद्धा उपरांति मृत्यु नाहीं ॥ काल उपरांति वैरी नाहीं ॥ नासिका उपरांति रूप नाहीं । दया उपरांति धर्म नाहीं ॥ ध्यान उपरांति ग्रंथ नाही ॥ चंदन उपरांति काष्ट नाहीं ॥

End—वैकुंठ उपरांति अर्ध नाहीं । चन्द्रमा उपरांति शीतल नाहीं । सूरज उपरांति तप्त नाहीं । काया उपरांति रतन नाहीं ॥ सांच उपरांति शास्त्र नाहीं । बुद्धि उपरांत व्याकरण नाहीं ॥ स्वासा उपरांति वेद नाहीं ॥ पराधीन उपरांति बंधि नाहीं ॥ स्वाधीन उपरांति मुक्ति नाहीं ॥ चाह उपरांति पाप नाहीं । अचाह उपरांत पुन्य नाहीं । कर्म उपरांति मैल नाहीं दोष उपरांति कुबुद्धि नाहीं ॥ निर्दोष उपरांति सुबुद्धि नाहीं । सृष्टि उपरांति पोष नाहीं । अजपा उपरांति जाप नाहीं । अघोर उपरांति मंत्र नाहीं नारायण उपरांति इष्ट नाहीं ॥ निरंजन उपरांति ध्यान नाही ॥ इति सृष्टि पुराण ग्रंथ समाप्तम लिषतं गंगाराम निरंजनी वैष्णव जैपुर मद्धे श्री वावा रूपदास के पठनार्थ माघ वदी त्रयोदशी संवत १७९४ भैामवासरे इति श्री श्री श्री श्री श्री ॥

No. 382. Karuṇa Viraha by Sevādāsa Pāṇday of Ajodhya. Substance—Country-made paper. Leaves—75. Size—8 × 4 inches. Lines per page—28. Extent—1.075 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1822 or A.D. 1765. Date of Manuscript—Samvat 1889 or A.D. 1832. Place of deposit—Paṇḍita Baldeo Prasāda Awasthī, Village Banuwāpara, Post Office Jaitapur Bāzār, District Bahrāich (Oudh).

No. 383. Bāgavilāsa by Sewaka Rāma of Aśwanī. Substance—Country-made paper. Leaves—84. Size 8×6 inches. Lines per page—36 Extent—1,890 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgari. Date of manuscript—Saṃvat 1921 or 1864 A. D. Place of deposit—Ṭhākura Anirudha Siṃha, Assistant Manager, Nilgāma, Post Office Nilagāma, District Sītāpura.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ बाग विलास लिष्यते ॥ दे।० ॥ गजमुष सुरसुति गुरु चरन प्रफुलित कमल मनाय । रस स्वरूप रंग देवता भेद कहत सुष पाय ॥ अथ रस स्वरूप कथनम् ॥ सवैया ॥ थाई के कारन कारज औ सहकारी जिते कवि सेवक गावैं । ते हिय भावे विभावित औ अनुभावित औ वभिचार करावे ॥ नाट्य औ काव्य में ताते विभाव अनुभाव संचारिहू नाम के। पावे ॥ व्यक्त है से। इनसे। सुख रूप भये परिपूरन से। रस गावै ॥ अस्थायो वार्ताः ॥ मम पितुः काव्य प्रभाकरे लोक में रहित्यादि के कारन जे। स्त्री चंद्रोदयादि है औ कार्य (यह सवैया) काव्य प्रकाश के चतुर्थोल्लास के इन श्लोकों के भावार्थ प्रवंध जान पड़ता है कारणन्यथा कार्य्याणि सहकारिणो यानि च इत्यादिः स्थापिनो लोके तानियन्नाट्य काव्ययो ।

End—प्रलाप यथा ॥ करिन से। पूछै कवै। हरिन से। पूछैं राम केहरिन पूछिवे को प्रीति परसी गई । श्रगन से। पूछैं कवै। मृगन से। पूंछे जाय तटनो तरंगिनि तिहारी तरसी गई ॥ कंजन को मालन मरालन से। पूंछे दई व्यालन के। सेवक विलोकि डरि सो गई ॥ वैरभाव तजि कै दबाय दुख पाय धाय दीजिये बताय सिय हाय हरि सी गई ॥ पुनर्यथा ॥ पीतम के। जैबे। याके तायन तैबे। इतै मेघन के। अैबे। बन कूकै कंठ नीलेरी । भई तन षीन परै सेज पै लषोन दीन जल से। विहीन जैसे मीन अरसीलेरी ॥ वेदन के। सेवक निवेदन करै के। दई होत हिय भेदन विलोकि अंग ढीलेरी ॥ मूदे नैन मोहनो कहत राधे राधे आये षोले मृदु बोले श्याम सांवरे छबीलेरी ॥ अथ व्याधि लछन ॥ जहं पिय के मन मिलन ते करै काम अति छीन । तासो व्याधि वषानही विरह विकल अति दीन ॥ यथा ॥ भरती रहै है पुनि ढरती निसाहू ग्रोस धरती न भेदु सुठि सिंधु में परी मनो । उर बरियार में सुरति मोगरी को मारि काम घरियार दार करनि धरी मनो ॥ आह की अवाज निकरैरी न परैरी वाज सेवक जू राधे लागे डरनि डरी मनो । हेरे सब तंत्र कोऊ लागत न मंत्र भई आंषे परतंत्र जलजंत्र को घरी मनो ॥ इति श्री बाग विलासे सेवक राम अस्वनी निवासी विरचिते नायका

भेदादि वर्णन समाप्तम् ॥ संवत १९२१ आषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे तृतीयाम भृगुवासरे ॥

Subject—इस ग्रंथ में नायिका नायक भेद एवं शृंगार रस का वर्णन है।

No. 384. Śaṇtipurana by Sevārāma of Dewagarah. Substance—Country-made paper. Leaves—568. Size—10 × 6½ inches. Lines per page—14. Extent—7,952. Anushṭup Ślokas. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṃvat 1834 or A. D. 1777. Date of manuscript—Saṃvat 1892 or A. D. 1835. Place of deposit—Jaina Maṇdira (Bāra), Bārā Bankī (Oudh).

Beginning—श्री वीतरागदेवानमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः ॥ श्री गुरुभ्यो-नमः ॥ अथ शान्तिपुराण भाषा, सेवाराम कृत लिख्यते ॥ प्रणम्य परमानंदान ॥ देव सिद्धान्त सद्गुरुन ॥ शान्तिनाथ पुराणस्य ॥ भाषा सह्वित नैाम्यहं ॥ १ ॥ दोहा ॥ नमोशांति जग शांति कृत ॥ परम शान्ति दातार ॥ कर्म समूह विसात हर ॥ भरन संपदा भार ॥ २ ॥ जो षोडस मो तीर्थपति ॥ अमर निकर अरचाय ॥ त्रिभुवन भयहर प्रथित पद ॥ भये जलधि जलताय ॥ ३ ॥ फुनि पंचम निधिपति भयो ॥ मरुत वचन रतिवान ॥ द्वय षष्टम रति पति जयो ॥ लसो सुषोदधि थान ॥ ४ ॥ तास शान्ति जग भान्तिहर ॥ नमो शान्ति पद दोय सकल ललित नच्छिन कलित ॥ मंगल कारक लोय ॥ ५ ॥ नमो वृषभ पद वृषभ के ॥ वृषभा लक्षन वान ॥ वृषपति वृष दाता जगत ॥ वृषभ तीर्थ वृषभान ॥ ६ ॥ वृषभेश्वर वृष विस्तरगो ॥ शिवसुख करन महंत ॥ वचन किरन तम छेदि तसु ॥ वंदों शिव तिय कंत ॥ ७ ॥

End—नमोदेव अरिहंत सर्व तत्त्वारथ भासी। नमो सिद्धि अविकार ज्ञान मूरति अविनासी ॥ नमो सुर उवझाय साधुनि ग्रंथनि मो सिर। येई पद वर पंच नमत भागै अघ को गिरि ॥ वंदों जिनेस भाषत वचन धर्म दृढ़ावन सर्वदा। ये परम सार तिहुंलोक में करो खेम मंगल सदा ॥ ९१ ॥ दोहरा ॥ पंच मास कछु सरस से, लगे रचत अविकार। मतिथोरी थिरता अलप, ताते लगो अवार ॥ ९२ ॥ काव्य—लोकालोक विलोक स्वच्छ नयनं सादइनं निर्मलं ॥ जस्य ग्यान अनंत ता प्रविदधात्सर्वात्मनां वोधकां ॥ यच्छक्तिविधिवक्षणेन विमला विश्वस्य त्रोद्धारनो ॥ यत् सैाख्यं विगता मयांसि जिनयो सांति प्रशांतिः कृयात् ॥ ९३ ॥ (दोहरा, पढ़ै सुनै या ग्रंथ को ते पावैं सुखठाम। सुख सों कियत भव वन विषैं। फेरि गये शिवधाम ॥ ९४ ॥ जिनवर धर्म प्रभाव सों परम विस्तरो ग्रंथ। ता सेवत

पैये सदा नाक मोष को पंथ ॥ ९५ ॥ इति श्री शांति पुराणाचार्य्य श्री सकल कीर्ति विरचितां भाषा विर्चितात् लघु कवि सेवारामेनं तस्यां जिन ग्यानोत्पत्ति धर्मोपदेश विहार समय निर्वान गमन निरूपन नाम पंचदशमोधिकारः ॥ १५ ॥ इति श्री शांतिनाथ पुराण भाषा संपूर्ण ॥ समाप्तं ॥

Subject—(१) पृ० १—४४ तक—मंगलाचरण तथा वंदनादि सहित ग्रंथ निर्माण हेतु इत्यादि का वर्णन। ग्रंथ निर्माण में सहायता करने वाले का कथनः—मित्र खुस्याल सहित मनलाय। शांति पुरान रच्यो सुखदाय॥ वक्ता तथा श्रोताओं के गुण वर्णन। कथा लक्षण, सुकथा और कुकथा निर्णय। स्वयं-प्रभा विवाह वर्णनोभिधान ॥ (२) पृ० ४५—७० तक—जन्नजटी प्रजापति अर्ककीर्ति निर्वाण। अमित तेज राज विजै विघ्न विनाश वर्णन। (३) पृ० ७१-९० तक—अमित तेज सम्यक्त ग्रहण करण वर्णन। (४) ९१—११२ तक—श्री सेन इत्यादि भवों का वर्णन। (५) पृ० ११३—१३७—अविचल देव, वलभद्र नारायण तथा नारद का वर्णन। (६) पृ० १३८—१६८ तक—अनन्तवीर्य का स्वभ्र (नरक) गमन तथा उसको वल से इन्द्र-पद प्राप्त होना। (७) १६८—१९८ तक अनन्तवीर्य्य सम्यक्त लाभ तथा वज्रायुधचक्र-पद भव प्राप्ति वर्णन। (८) पृ० १९९—२३१ तक—वज्रायुध, सहस्रायुध तथा अहमिन्द्र पद-प्राप्ति वर्णन। (९) पृ० २३२—२६७ तक—मेघरथ का वर्णन। घनरथ के विरक्त होने तथा मेघरथ के राज्य-भोग का वर्णन। (१०) पृ० २६८—३०२ तक—मेघरथ वैराग्योत्पत्ति तथा दीक्षा ग्रहण वर्णन, मेघनाथ सुत राज्य ग्रहण वर्णन। दृढ़रथ तथा अन्य सात सौ नृपतियों के साथ मेघरथ का जिन मत साधन करना। (११) पृ० ३०३—३६८ तक—अपने भ्राता दृढ़रथ सहित मेघरथ का घोर तप साधन करना, जप, तप, तथा अनशनादि व्रत धारण करना। जिन शांति-गर्भावतारा-भिधान वर्णन। (१२) पृ० ३६९—४१६ तक—रानी का सोलह स्वप्नों का देखना और राजा से उन स्वप्नों के फलों के संवंध में प्रार्थना करना। राजा का फल कथन करना, और उन सोरहों स्वप्नों के फल स्वरूप उनके गर्भ से तीर्थंकरोत्पत्ति तथा उनके महत्वों का कथन। तीर्थंकर शांतिनाथ का गर्भ से जन्म लेना और देवादि द्वारा उत्सव मनाया जाना। (१३) ४१७—४६० तक—श्री शांतिनाथ जन्माभिषेक तथा राज्यलक्ष्मी और उनको कीर्ति का वर्णन, उनके सात चैतन्य और सात अचैतन्य रत्नों का वर्णन, उनके सन्मुख नाटकादि द्वारा मनोरंजक कार्य्यों का होना। (१४) पृ० ४६१—५१२ तक—जिन दीक्षा निःक्रमेण कल्याण वर्णन। हस्ती घोड़ा इत्यादि सांसारिक वस्तुओं के मिथ्यात्त्व का विस्तृत वर्णन। सोलह वर्ष तक शांति जिननाथ का छद मस्तक रहना। पुनः सविकार घातक कर्मों का घात करना। शांतिनाथ को कैवल्य—ज्ञान होना।

(१५) पृ० ५१३—५६८ तक—जिन ज्ञानोत्पत्ति, धर्मोपदेश विहार समय निर्वाण गमन निरूपण, जिनके पिछले भवों का अति सूक्ष्म वर्णन। ग्रंथ समाप्ति, कवि दैन्य वर्णन। ग्रंथ निर्माण हेतु :—

पूरब चरित विलोकिकें, हम कवि बुद्ध सयान।
भाषा बंध प्रवंध यह, रच्यो अनंदित वान॥

× × × ×

मो आनंद अपार धरि, तजि कलमल अधिकाहि।
भाषा रचो प्रमोद घन, रसतरंग मल नाहि॥

ग्रंथकार का परिचय—देश महा मालव सुभग, काठल सहित सुढार। तामे नगर नरेश जुत, 'देव—दुर्ग'-अविकार॥ मल्लनाथ मंदिर विषै, रच्यौ पुरान महान। अति प्रमोद रस रीति सो, धर्म बुद्धि उर आन॥ वासी जयपुर तनो, तो डर मल्ल कृपाल, ता प्रसंग को पाय के गह्यो सुपंथ विशाल॥ गोमट सारादिकन मै, सिद्धांत नमै सार। प्रवरवोध जिनके उदै, महाकवी निरधार॥

× × × × × ×

देश दुराहर आदि दै, संवोधे वहु देश। रचि रचि ग्रंथ कठिन किये, तो डर मल्ल महेश॥ तिनहो के उपदेश लहि, सेवाराम सयान, रच्यो ग्रंथ सुख पाय के, हर्ष हर्ष अधिकान।

ग्रंथ निर्माणकाल :—संवत अष्टादक शतक, पुनि चोवीस महान। सावन कृष्ण वराष्टमी, पूरो कियो पुरान॥

स्थान—अति अपार सुख सों वसै, नगर 'देवगढ़' सार। श्रावक वसै महा-धनी, दान पूज्य मतिधार॥

नृपति वर्णन :—ता नगरी में भूपती, सूरवीर वीभेष।
करै राज्यपुर पुन्य सो, सावंत सिंह नरेस॥

ता सावंत नर राय के, द्वै श्रावक मुखत्यार। इक राघव रघुनाथ पुनि धर्म धुरंधर सार॥

No. 385(*a*). Sewāsakhī kī Bānī by Sevāsakhī of Vrindābana. Substance—Country-made paper. Leaves—84. Size—6½ ×4 inches. Lines per page—7. Extent—349 Anushṭupa Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṃvat 1825 or A. D. 1768 Place of deposit—Paṇḍita Rāma Bali Dubay. Village Bhiṭaurā Lakhan, Post Office Jaidpur, district Bārābankī (Oudh).

Beginning—श्री राधावल्लभो जयति ॥ ओं अथ वैराग्युद्दीपन लिख्यते ॥ (ओं) करि सत संगति चाह मन सकल कपट तजि मोह ॥ श्री राधावल्लभ नाम रटि सखी भाव पति छोह ॥ १ ॥ अचह चाह हरि भक्ति बिनु जानो दुख को रूप॥ सेवा सखि हरि आसरे दोउ सुख परम अनूप ॥ २ ॥ मन को सब मन मै अहै बुधि के बहुत विचार । चित्त वासना पिय मिलै सेवा सखि निरधार ॥ मनपरीक्षा ॥ अति दुर्लभ सुलभ भयो मानुस देही पाय ॥ भजले राधावल्लभहिं जन्म जो बीतो जाइ ॥ १ ॥ वाल कुमार पव गंडा किसोर जुवा जवा की देह ॥ सेवा सखि दुख सुख भोग है अंत खेह की खेह ॥ कर्मज्ञान इन्द्री दसैा मिले देह को नाम ॥ इन्हैं भिन्न कै देखिये नहि नामी को नाम ॥ २ ॥ मन बुधि चित अहंकार जो जीय को इन्द्री होइ ॥ इन्हैं भिन्न कै जानिये जोय नाम नहि कोय ॥ ३ ॥ गुरु दीपिका—सर्व परे गुरु जानिये गुरु पर श्रोर न कोइ ॥ सब मिलि गुरु को नमत हैं गुरू नाम अस होइ ॥ गुरु गोविंद नारायन गुरु हरि गम कृष्ण गुरु कीन्ह ॥ गुरु के सद आधीन मन गुरु चरणन्ह चित लीन्ह ॥ २ ॥ नाम अनंत नामी अनंत दह भवसिंधु अपार ॥ विनु गुरु वूड़े भव धार में गुरु गति उतरे पार ॥ ३ ॥

End—अरील सोरठा सब्द दोहरा मंगल छन्द विश्राम । महामंगल परिचय लिष्यते ॥ सेवा सखि सहजानंद के लखि सहज अंग विज्ञान ॥ सहजानंद ब्रह्म अनुरूपन यह अरिल है ॥ होय जागृत सषियाइ सुनि कै जो अहै ॥ सत गुरु के उपदेस तारतम मानियै ॥ अली हां हां सेवा सखि सहजानंद के सहजा ही जानियै ॥ राग गैारी ॥ अरीरी मुरली वजाइ हरो मन मोहन गृह आगमन सुहाइ ॥ वन सुनत सुभि भई है कंत की छूटी जग चतुराई ॥ छूटी लोकलाज कानिकुल तन पट तजि उठि धाई ॥ प्रेम मगन सेवा सखि विरहनि जिन पिय की सुधि पाई ॥ १ ॥ राधाकृष्ण राधाकृष्ण कुंज विहारी गोपीनाथ गोपाल मोहन वनमाली ॥ मुरलीधर पीतांवर धारी ॥ त्रिभंगी मूरति आनंदकारी मोरमुकुट कुंडल छबि भारी ॥ चितवन में मोही वृजनारी ॥ नंदनंदन वृषभान दुलारी ॥ जुगल किशोरी पर सेवा सखी वारी ॥ १ ॥

Subject—(१) पृ० १—१४ तक—वैराग्योद्दीपन ॥ सतसंग श्रोर सखिभाव की भक्ति का आदेश । नाम प्रताप । शरीर के पंच तत्वादि से बनने का वर्णन । इन्द्रियों का वर्णन । ईश्वर द्वारा गर्भ में रक्षा होने का वर्णन । सेवा तथा भक्ति की महिमा । प्रीतम के अनुराग वर्णन । अभिमान त्याग कर ईश्वर भक्ति करने का आदेश । माया का वर्णन । जीव ईश्वर संबंध वर्णन । अहंकारादि रोगों का वर्णन । नाम रटने का आदेश ।

(२) पृ० १५—२२ तक—मनकी परीक्षा । युवादि अवस्थाएं । मन, बुद्धि चित अहंकारादि को वृथा बता कर भगवत भजन का उपदेश । मन की प्रबलता

का वर्णन। मन को स्थिर करने के नियम। सेवा में मन को देने का लाभ। मन देने के कारण हरिण की दशा। पिय की आज्ञा मानने का आदेश।

(३) पृ० २२—३२ तक—गुरु दीपिका—गुरु करने का लाभ, गुरुज्ञान की प्रधानता। नित्य, अनित्य, निमित्त, और गुरु की एकता। गुरु के लक्षण, गुरु के सात स्वाभाव, शिष्य के लक्षण, गली गली फिरने वाले गुरुओं की बुराई॥

(४) पृ० ३४—४२ तक—प्रकरण—एक ब्रह्म का वर्णन। सहजानंद का ही ब्रह्म-कथन, ठकुरानी के आनंद रूप होने का वर्णन। सहजानंद की परिभाषा, माया तथा ब्रह्म का रूप, पिय प्यारी द्वारा ही उद्धार होने के कारण सखी भाव की महत्ता का वर्णन। अंग अंगी संगपिय की भक्ति।

(५) पृ० ४३—४५ तक—दूसरा प्रकरण—जागृत चीन्हने का वर्णन, कार्य्य कारण तथा कर्त्ता का वर्णन। वाम दाहिने अंग का वर्णन। सखी सेवा का महत्त्व।

(६) पृ० ४६—५८ तक—महामंगल परिचय—सहजानंद के अंगों का वर्णन। सहजानंद की शक्ति, दाहिने तथा वामें अंग का (पिय, प्यारी) का वर्णन। राधा के अंगों की सेवा करने वाली सखियों की महत्ता। ईश्वर के सब में होने का वर्णन। रास इत्यादि का वर्णन। बायें तथा दाहिने अंग की सखियों का प्रभाव। कृष्ण के रूप में सखी का मिल जाना, सेवा की बड़ाई॥

(७) पृ० ५९—७१ तक—दाहिने बायें अंगों से सृष्टि का उत्पन्न होना। साढ़े तीन कोटि सखियों तथा उतनी ही उनकी सहचरियों सहित हास-विलास तथा लीलादि का वर्णन। हित हरवंस जी को उसका परिचय होना। (गद्य में)।

(८) पृ० ७१—८४ तक—मंगल आरती—सब मंगल पदार्थों के साथ ही साथ कृष्ण की आरती कृष्ण की मूर्ति इत्यादि का वर्णन करके उनपर अपनी भक्ति प्रदर्शित करना। ग्रंथ समाप्ति।

No. 385(*b*). Vivekasāra Surata by Sewāsakhī of Vrindābana. Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—$8\frac{3}{4} \times 4\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—10. Extent—200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhingā Rāja, Baharāich.

Beginning—अथ विवेक सार सुरत लिख्यते॥ दोहा॥ श्री गुर जुगल सुंदर वर वंदौं इनके पांइ। जिन्ह मोहि दीन्हों धर्म वैष्णव की भक्ति दृढ़ाइ॥ १॥ सर्व सिरोमनि भक्ति धर्म है इन समान नहिं आन। इनकी महिमा को कहैं जाके

र्षसि भगवान ॥ २ ॥ सबै परे भगवान ते इन पर और न कोइ । कार एक अनेक विधि लीला ताकी होय ॥ ३ ॥ कथा कथान्तर कल्पान्तर में चित्त ते वस्तु विचार । सर्वान्ते ते जानिये जासो सर्व विस्तार ॥ ४ ॥

End—सेवासखी जगायऊ जागो नयना सोय । परचै मूल स्वरूप को जानु जागनी होय ॥ विनु जानै चैारासी माही । भूली सखी खेलते ताहीं ॥ चैारासी माया खेल में खेलत सखि जिय संग । लीला शक्ति षेलावही सो सुरति मन के रंग ॥ सो मन अब सषि आपन होई । माया खेल खेलारी जोई ॥ जब लगि हम नहिं सुरति जाना । दुष में खेलत सुख कै माना ॥ दुख सुख को यह खेल है देखा खेल बनाय । जागो नयना नींद गइ मिलि सुरति सेवा सषि आय ॥ इति विवेक सार सुरति संपूरनम् ॥

Subject—गुरु वंदना, धर्म महिमा, सृष्टि उत्पत्ति—पृ० १—३
राधा महिमा पृ० ३—४ ।
ब्याह वर्णन राधा कृष्ण का पृ० ५—९ ।
लीला माहात्म्य--पृ० १० । इति ।

No. 386. Sidhadāsa jī kī Śabdāvalī by Sidhadāsa of Haragāma. Substance—Country-made paper. Leaves—114. Size—9 × 6 inches. Lines per page—12. Extent—600 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṃvat 1800 or A. D. 1743. Place of deposit—Mahanta Gurūprasādajī, Haragāma, Post Office Parabatapur (Sultanpur).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ साषी ॥ श्री जगजीवन जक्त गुर दूलन दानि उदार सगुन सरब हित जानि सुभ सिद्धा नाम अधार ॥१॥ नयन के भीतर अैन है मयन कोटि छबि जासु ॥ तासु चरन तर मन बस्यो सिद्धा निरषि हुलास ॥ २ ॥ नाम अैन है राम को दोष संत करि ज्ञाना । ताहि नयन बिच रैनि दिन करि सिद्धाम निधाना ॥ ३ ॥ बजे रैन दिन बासुरो धरै कदम तर ध्यान ॥ सिद्धा ताको का करै करम कोट परमान ॥ ४ ॥ सिद्धा भव जल जक्त सर तामें माया जार ॥ मीन जीव सब जानि कै पेलत काल सिकार ॥ ५ ॥ नाम भजन ते जीव यह जल सरूप होइ जाइ । जाल बीच आवै नहीं काल देषि पछिताहि ॥ ६ ॥

End—सिद्धा यहि संसार में कंत निरषि पहचानि ॥ अहै निरंतर पास ही अपने मन दृढ़ ज्ञान ॥ सिद्धानाम जिकिर ते चैांसठि घड़ो बिताउ । कंत दरस को लालसा छिण छिण बाउव ठांउ ॥ बिरह सत्य यह पोथी पहर जवनपुर कौन ।

सिद्धा पियहि पहिचानि निज चरनन तर सिर दीन ॥ अष्टादस सै समै दस मारग मास पुनीत ॥ सिद्धा हेरत आयु में परे षठ आपत मोत ॥ इति विरह सत सम्पूर्णम् ॥

Subject—पृ० १—२५ तक—साखी—दोहों द्वारा शिक्षाएं ।
(२) पृ० २६—९४ तक—शब्दावली—नाम की महिमा का ज्ञान ।
(३) पृ० ९५—११४ तक—शब्द साखी—कवित्त सवैयों द्वारा हरिनाम का उपदेश । विरह, सत-गुरु ज्ञानादि कई विषयों का रूपकों द्वारा मनोहर वर्णन ।

No. 387. Ānanda Rasa by Śīlamaṇi. Substance—Country-made paper. Leaves—26. Size—6 × 3½ inches. Lines per page—14. Extent—256 Anushṭupa Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṃvat 1949 or A. D. 1892. Place of deposit—Bhaiyā Jadunātha Siṃha ji Ṭhākura, Raisa, Rehuā, Post Office Baurī, District Bahaṛāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ सरसत बरसत रंगवर रामनाम सुख कंद शीलमनी जन जान है युगुल वरन युग चंद ॥ १ ॥ रामनाम रस रूप हैं रस वरणत वरवेद भावभेद रसभेद वहु नामी नाम अभेद । २ वत्सल सख्य शिंगार रस दास्य शांतमय नाम शीलमनी हिद में वशैं राजिव लोचन राम ॥ ३ ॥ रामनाम वर वरन पर परमतत्व नर रूप रश मूरति माधुर्जमय ईश ईश के भूप ॥ ४ ॥ रामनाम शे होत हैं सब अवतार सुरेश शीलमनी परतत्व कवि भनत मुनीश महेश ॥ सरल सुखद वर वरन युग विशदर शाल विशाल महिमा व्यापक शकल जग जन जीवन रघुलाल ॥ मधुर मनोहर सुधा से गौहर गरू उदार । अशल सुतारक ताल भव अद्भुत अगम अपार ॥

End—रसमय मूरति रामसीय की हिय में राजत मोरे हैं । जीवन प्राण किशोर अनूठे मीठे श्याम सुगोरे हैं ॥ अतिसै रूप अनूप मोहनी अंग अंग रस बोरे हैं । शीलमनी मन हरन विलोकनि अरुणारे हग कोरे हैं ॥ हरित अरुण रंग सख्य सुधा कर राग सरूप सदाई हैं । परनै प्रीति प्रतीति प्रेम रति अति विश्वास सनाई हैं ॥ निश्चय ज्ञान सनेह लगा वपु चतुराई मधुराई हैं । शीलमनी रस सख्य रसीले राम रंगीले पाई हैं । हास्य भयानक करुना अद्भुत वीर विभत्स रुद्रा हैं रस सिंगार सख्य रस वत्सल सांत दास कर मुद्रा हैं । स्याह अरुन रंग सोन सेत रंग चित्र शील मति फुंद्रा हैं ॥ इति श्री शीलमनी कृत आनंद रस सम्पूर्ण ॥ दोहा ॥ मार्गसीर्ष तिथि तीनि दश शुक्ल पक्ष भृगुवार वत्सर तान पुनि गोक्ष कहि जाउ गुजवली अगार ॥ लेषक जानकी शरण संवत १९४९ ॥

Subject—रामनाम की महिमा और भक्त का प्रेम।

No. 388. Vivekasāra by Śitaladāsa. Substance—Country-made paper. Leaves--33. Size—8½ × 4½ inches. Lines per page—8. Extent—200 Anushṭupa Slokas. Appearance—Old. Character--Nāgarī. Date of Composition—Saṃvat 1903 or A. D. 1946. Date of manuscript—Saṃvat 1908 or A. D. 1851. Place of deposit—Paṇḍita Rāmānānda jī Miśra, village Hinangaurā, Post Office Kādīpur District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरु गणपति शारदा फनपति सिव हनुमान ॥ जन सोतल सुमिरन करै देहु सुमति सतज्ञान ॥ १ श्री गुरुचरण सरोज रज हिय धरि पर उपकार ॥ विवेक सार वर्नन करै सोतल तत्व विचार ॥ २ ॥ तत्व विचार विवेक जुत वेद सास्त्र मतसार ॥ ग्रंथन नाना भांति ते जथा सुमति अनुसार ॥ ३ ॥ गुरु शिष्य संवाद वरनत विविध प्रकार ॥ अर्जुन ऊधैां सों कह्यो कृष्ण यहो निरधार ॥ ॥ ४ ॥ गुरु सों पूछत शिष्य यह कह्यो विवेक जो सार। सो विवेक काको कहो कहो नाथ विस्तार ॥ ५ ॥ गुरुवाच हंस विवेको एक गति छीर नोर करै न्यार ॥ नै। वेकार पानो तजै छीर छइउ सोइ सार ॥ ६ ॥ काम क्रोध मद लोभ रज तम तृष्णा अहंकार ॥ मत्सर नै। तजि संत सो पानो जानि विकार ॥ × × × × ×

End—दयासिंधु दाया प्रभु दोनबंधु सुपरास तासु दास सोतल भनै सदा चरन कि आस ॥ ९७ ॥ सोतल अपरंपार गति वेद न पावत पार। निज मति सम वरनन कहो नाम विवेक है सार ॥ ९८ ॥ यहि नहिं दोजै धूर्त को अरु निंदक अभिमानि। राम अभिलाषो संत जोति नहि देव हित जानि ॥ ९९ ॥ संवत वोनइस से अधिक तोनि पैाष बुधवार। असित सप्तमो कीन तव विवेकसार विसतार ॥ १०० ॥ इति श्री सोतलस्य विरचितायां विवेकसार संपूर्ण संवत १९०८ वोलि कैा याकजनै भेद प्रसव मह होई गरइ पोलो कै वोले क वोलो जनोह वल मोलि उइ वोलै तो सुजन जन मोलै तोनो वोलै तव कोइ घरक अदमो मोलै गटइ दबाइ कै चारि वोलो वोलै तव जानो को कोइ क मरन भ ग्रपन परार कहंद देषो लेई ॥

Subject—(१) १—४ तक—विवेकसार कथन।

(२) पृ० ५—५ तक—नवधा भक्ति।

(३) पृ० ६—१४ तक—ब्रह्म, माया तथा जोव के भेद। रामनाम महिमा का कथन, जोव अवस्था विचार। वेदोक्त चार फल और उनको क्रिया।

(४) पृ० १५—२० तक—वेद का रूपक, द्वादश यम बर्णन। नेम बर्णन। तितिक्षा, यज्ञ तथा जप तपादि लक्षण।

(५) पृ० २१—२२ तक-इन्द्रिय वर्णन।

(६) पृ० २३—३० तक—पंचतत्व, पंच प्रकृति, पंच वायु इत्यादि वर्णन के पश्चात् रामनाम महिमा।

No. 389. Dillagana Chikitsā by Sītārāma. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—10 × 6½ inches. Lines per page—40. Extent—1080. Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1846 or A. D. 1789. Place of deposit—Paṇḍita Martaṇḍa Datta, Vaidya, Rāe Barelī.

Beginning—पृ० ३ से प्रारम्भ। अथ नाड़ी-परीक्षा। सुंदर हाथ कवल दल नैनी मूलंगुष्ठ सुहाई। नाड़ो का घर तुझे बताऊं जानत पंडित राई॥ पहिलें पित्त समुझिये वाला काक गती चलबेली। टोका मोर की छीन लई है मृग गति पाय नवेली॥ दूजे कफ को चाल कबूतर ठुमुक ठुमुक पग धरने॥ है सिंगार निपुण सुनि प्यारी कविता श्योंकर बरने॥ वाय तीसरो पलकवान पैार वांको भवें कमानं गति नागिन की प्रीति भामिनी वैद्य शिरोमणि जाने॥ कबहूं मंद चले क्रम नाड़ी कबहूं वेग जुहाई॥ द्वंद्ज दोष कंवल दल नैनी ताकी विथा बताई॥ चाल चलै तीतर की अथवा लवा बटेर सयानी। सन्निपात तिरदोष है ताको आई काल निसानी॥

End—ये नाजुक तन प्यारी तुमने कहो कहां ते पाई। देख मधुरता अधरन को सों अमृत गयो छिपाई॥ रत्नज्योति को छानि नीर में डारे अग्नि औटावे। चार सेर जल छानि भामिनी षट पल तेल मिलावे। तेल बराबर सुघर कायफल पीस लाब सुभ नैनी। धरे अगनि में तेल रह जावै छाने सुन सुख दैनी॥ करके फोहा × × सी तेल का कुच ऊपर जो परसे। नौबूवत दिल्लगन पियारी कुच कठोर सी दरसे॥ ३८॥ इति श्री दिल्लगन चिकित्सायां हट्टी सिंह सुत सीताराम विरचितायां त्रयोदशी शृंगारः १३ पुस्तक लिखी लेखराज पठनार्थं संमत १८४६ आगरे मध्ये सुभं भूयात इति॥

Subject—नाड़ी परीक्षा, पित्त, कफ, वायु जुराज, पित्त निदान, उपचार, कफ वायु उपचार, साध्य असाध्य लक्षण, मूत्र परीक्षा, प्रथम शृंगार समाप्त। पित्तज्वर प्रतीकार, बातज्वर, वातपित्त, पित्तश्लेष्मज्वर चिकित्सा, मूलज्वर, स्वेदज्वर, विषमज्वर चि०, ज्वरांकुश रस, त्रिदोष अंजन, द्वितीय

श्रृंगार समाप्त। कर्णशूल चि०, सन्निपात उसके भेद, संध्यक, अंतक, रुग्दाहक, चित्तभ्रम, शीतांग, तंद्रिक, कर्णक, भग्ननेत्र, रक्तष्टी, प्रलाप, जिह्वक, अभिन्यास, सन्निपात की चिकित्सा, तृतीयो श्रृंगार स०, अतीसार चिकित्सा, वातअतीसार, पित्त अतीसार, श्लेष्म अतीसार चिकित्सा, वृद्ध गंगाधर चूर्ण, लेप अतीसार, दाड़िमाष्टक चूर्ण, गृहन्यावलेह, अरसरोग। चतुर्थ श्रृंगार समाप्त, अजीर्ण विशूचिका चि०, विलंविकायां चि०, कृमि चि०, हलीमक पांडु कमालिया पांड रोग चि०, रक्तपित्त चि०, पेठा पाक विधि राज छर्ई चि०— पंचमो श्रृंगार। कास स्वास चि०, हिक्का प्रतीकार, स्वरभेद चि०, अरुचि चिकित्सा, छर्ई चि०, तृषा चि०—षष्टो श्रृंगार। मदभ्र उपचार, चरण बिवाई, दाह चि०, उन्माद चि०, वात-व्याधि चि०, वातारी तेल, पक्षाघात चि०, सप्तमो श्रृंगार। वातरक्त चि०, अग्निवायु चिकित्सा, आमवात चि०, सूच चि०, अष्टमो श्रृंगार। वमन करन, जुलाब विधि, पेट अफारा चि०, गुल्म चि०, हृद्रोग चि०, मूत्र कृच्छ चि०, मूत्रघात चि०, मूत्ररोध प्रतीकार, पथरी चि०, प्रमेह चि०, पांडु रोग चि०, कंठमाला चि०, स्लीपद कंडु, घरेला सोथ चि०, भगंदर चि०, मंद बुद्धि चि०, शीत प्रसूत चि०, दशमो श्रृंगार। जलोदर चि०, कुष्ट चि०, श्वेत कुष्ट चि०, क्षय रोग चि०, अम्लपित्त चि०, दाद चि०, खाज चि०, एकादश श्रृंगार। क्षुद्ररोग चि०, कंठ रोग चि०, मुख दुर्गंध चि०, दंत रोग चि०, स्याह मिस्सी, अरुण मिस्सी की विधि, दाद चिकित्सा, अधर चि०, कर्ण प्रतीकार, परवाल चि०, अंजन हारी चि०, आंख वन्हो की चि०, शिरोवर्त्त चि०, द्वादशो श्रृंगार। स्त्री चि०, प्रदर रोग चि०, भगशूल चि०, भग संकोचन विधि, गर्भ निवारण, गर्भ धारण चि०, स्त्री प्रसव कष्ट चि०, कुच कठोर करण।

No. 390. Krishṇa Datta Rāsā by Śwadīna of Bilgrāma. Substance—New paper. Leaves—17. Size—$8\frac{1}{4} \times 6\frac{1}{4}$ inches. Lines per page—20. Extent—600 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṃvat 1901 or A. D. 1844. Place of deposit—Śrimān Mahārājā Rājendra Bahādura Sinha Sāhaba, Bhingā Rāja, Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ कृष्णदत्त रासा लिष्यते॥ दोहा॥ शिव सुत के पद वंदि क गैारी गिरा मनाय। करत विनय शिवदीन कवि दोजै ग्रंथ बनाय॥ १ जे गुरु चरण सरोज रज अंजन लोचन धारि। ते दर्शी त्रयकाल के कहत पुराण विचारि॥ २॥ छप्पय॥ वह्नि सहित नभ खंड चंद्र संवत परिमानो। बहुरि राग रस दीप आतमा शाके जानो॥ कियो समर नरनाह विदित

विश्वेन वंशवर। उदित देश परदेश सुजस अस छायो घर घर॥ लखि कवि शिवदीन विचारि चित करत ताहि वर्णन सुग्रव। करजोरि विनय कवि कुल करैं बिगरो वर्ण संभारि सब ॥ ३ ॥ दोहा ॥ नाजिम महमूदली खां वली सुजान विचार। दियो इजारे अवधपति सुभग देश शरवार ॥ ४ ॥

End—पायो नवाब जब हुक्म साह। दै खिलत खास वीरा सुवाह ॥ दीनो वसाय भिनगा नरेश। भरि रह्यो भूरि आनंद देश ॥ नरनाह वांह की छांह पाय । जन सघन अभय पुनि बसे आय॥ घरउमाह मंगल सु होत ! दे रहे आशिषा द्विजन गोत ॥ दोहा ॥ देत आशिषा भूपतिहि कवि कोविद के जाल। जोलैां मंदर मेरु महि तैालैां अचल भुवाल ॥ इति श्री मनमहाराजाधिराज विश्वेन वंशावतंश भूप शिवसिंहात्मज सर्वजीत सिंह तनुज कृष्णदत्त सिंह हेत विरचिते कृष्णदत्त राइसो कवि शिवदीन वंदीजन विल्लुल ग्रामी विरचित नाजिम महमूद अली खां को युद्ध समाप्तम् शुभमस्तु। इति।

Subject—प्रार्थना, महमूद अली खां को नवाव ने शरवार देश इजारे में दिया, प्रथम कुकरावल में, जो कि लखनऊ के उत्तर एक नदी है, वास किया फिर वहराइच घाट पर बसे, कलहंसों को वहराइच में जीता ग्रैार खिलग्रत ली—पृ० १—२—पांडे गोड़ा के महमूद ग्रली से मिल गये ग्रैार रामदत्त पांडे भिनगा पर उनको चढ़ा लाये। फिर फरेंदा (गोड़ा) में ग्राये फिर रावती के किनारे चैाकाघाट पर ग्राये, पीर हनीफ से नैाग्रा (भिनगा) पर ग्राये, राजवंश वर्णन तथा शासन विधि वर्णन। कृष्णदत्तसिंह के चचा उमरावसिंह का वर्णन तथा उनके दूसरे चचा कालीप्रसाद सिंह का वर्णन, तथा पृथ्वी सिंह के पुत्र क्षेत्रपाल सिंह ग्रैार हरिभक्तसिंह का वर्णन तथा उमरावसिंह के पुत्र युवराजसिंह का वर्णन। क्षत्रपाल सिंह के ग्रर्जुन सिंह हुए। त्रयोदशी सोमवार को म्लेक्षों ने हमला किया। पृ० ३—६ तक राज की सेना की तय्यारी, दूत का भेजना, युद्ध वर्णन, महमूद ग्रली खां के साले का मारा जाना ग्रैार सेना का भागना, राज यश वर्णन तथा दीवान का वर्णन—पृ० ७। पुनः युद्ध की तय्यारी, नाजिम की तोपों का वर्णन तथा राजकीय तोपों का वर्णन, ७ दिन तक युद्ध का होना, फिर रमणा (बाग) में युद्ध होना—पृ० ८—१०। नवाब का पुनः सेना भेजना ग्रैार नाजिम के भाई का युद्ध करना। गर्गवंशियों की सहायता से युद्ध करना ग्रैार भिनगा नरेश का भागना। पृ० ११—१४ तक। तुलसीपुर के पहाड़ी राजा ने बादशाह को सहायता दी ग्रैार नंदप्रसाद के साथ सेना भेजी परन्तु फिर उनको भी हराया। गोंड़ा-नरेश ने भिनगा-राज को मेल करने के लिये पत्र लिखा उस समय गोंडा में ग्रमान सिंह विसेन राजा थे मेल होने पर फैाजी सरदारों के साथ पहाड़ में शिकार खेलने चले गये फिर बद

अमली होने से नवाब ने नाजिम को कैद कर दिया और कृष्णदत्त सिंह को राजा बनाया। इति।

No. 391. Pingala Chhandobodha by Śiva Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—8×6 inches. Lines per page—40. Extent—900 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṃvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Thākura Jairāma Siṃha, Village Mirjāpur, Post Office Mahamudābād, District Sitapura (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ शिव कवि कृत पिंगल छंदो बोध लिष्यते ॥ दोहा ॥ श्री गजमुष मुष कहत हो रुज हत बिघन अमंद। ज्यों गिरीस गिरिजा भजत भजत सकल दुष द्वंद ॥ चारयो चारयो देन फल सुमिरन ही के साथ। सीता सीतानाथ अरु राधा राधानाथ ॥ संकर भूषन भूमिधर धवल रूप मति धाम। श्रीपति सैनद सहसमुष शिव कवि करत प्रनाम ॥ सकल सिद्धि आवै निकट ध्यावत श्री गुरु संभु। नयो नयो नयो परै हिये जुक्ति आरंभ ॥ सुमिरि गिरा सेसादि मत करि के बहु विधि सोध। सुगम रीति भाषा रचत शिव कवि छंदो बोध। जो वानी छंदो मई पद्यांसो पहिचानि। होइ जो तासों रहित सो गंद्या लीजै जानि। ॥ जामें मात्रा बरन की संख्या कीन्ही होइ। शिव कवि पिंगल के मते छंद कहावै सोइ ॥ पद्यावानी द्विविधि कर जाति व्रति पुनि जानि। संख्या जामें कलनि की जाति सो कहै बषानि ॥ संख्या जामे वर्न की वृत्त ताहि पहिचानि। केदारादिक के मते वृत छंद सब जानि ॥

End—मोमदीन अजमेर पीर गढ़ संभारै ॥ उपम कहि कै कौन मकनपुर साह मदारै ॥ बहिरायच सलार या रवी बढो पोदाई। दिल्ली तोपे कुतुप तास को करै वड़ाई ॥ सुमिरै हसन हुसेन जिन कुपुर मारि कीन्हो ध्वजा। मन वचस कर्म स्यहि कहै पंपे पीर मंदति सदा ॥ थकित पैान रहै जात सिंधु नहिं लहर संभारत फनिपति फन नहिं कठत कूर्म नहिं वक्र निकारत ॥ षट पद भ्रमा भ्रम्यो विमल नरपति नहिं सारद ॥ सवितारथ रहिजात वेग भ्रमि रतन भारथ ॥ दल मलित वरनि अतंक भय जस उदित टोद्यवुत जव जुलफ केर करि कै सभार है सर करार दुदुल चढ़त कनतषन परनग जाड़े सब जवाहिर भलक मोतियों वरिछत लता है विराजै मुकुट पर नूर का तज्ञ लालोषा भाल ऊपर ॥ इति श्री शिव कवि कृते पिंगल छंदा बोध समाप्तः ॥ श्री संवत १९२१ वैसाष मासे अधिक मासे शुक्ल पक्षे तिथै पूर्णमायाम चंदवासरे इदं पुस्तकं लिषतं विश्वनाथ पांड़े मोचके।

Subject—छंदें का वर्णन है।

No. 392. Singāsanabatīsī (Vikramabatīsī) by Śivanātha of Asanī (Fatahpur). Substance—Country-made paper. Leaves —52. Size—$10\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{4}$ inches. Lines per page—7. Extent—775 Anushṭupa Ślokas. Appearance—New paper. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṃvat 1861 or A. D. 1804. Date of manuscript—Hijarī 1256 or A. D. 1878. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhingā.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ विक्रमबतीसी लिख्यते शिवनाथ कवि कृत ॥ दोहा ॥ गैारीनंदन गजवदन भागिवंत गुन माल। कृपा करो मो दीन पर बरनो ग्रंथ विशाल ॥ १ ॥ वानीजू दानी सदा मानी सकल जहान। तीनो पुर रानी कहो मोहि देत वरदान ॥ २ ॥ है ऐसो बलरामपुर दाता ज्ञाता लोग। पूरबदिशि विजुलेश्वरी दूरि करैं तन शोग ॥ ३ ॥ नदी रापती कोस भर उत्तर दिशा सुहात। देखैं ते पातक कटैं पुन्य अधिक सरसात ॥ ४ ॥ सात कोश पटनेश्वरी राजैं दिशा इशान। अवध पचीसे कोस है दक्षिण का परमान ॥ ५ ॥ तवन सहर में भूप हैं नवल सिंह जनवार। तिनके द्वै सुत दानिया कवि लोगन पर प्यार ॥ ६

End—इति श्री सिंहासन बतीसी मुक्तनल पुतरी कथा द्वात्रिंसमः समाप्तः ३२ श्री महाराजकुमार श्री भैया अर्जुन सिंह हेत कवि शिवनाथ विरचिते अर्जुन प्रकास ग्रंथ समाप्तम् ॥ दोहा ॥ भाषा कीन्हो जानिकै अर्जुन सिंह के हेत। वानी संस्कृत में रही सुक्ष कथा सिरनेत ॥ महापात्र शिवनाथ कवि असनी बसै हमेस। सभा सिंह का सुत सही सेवक चरन महेश ॥ जोरैं मैं कर कविन्ह सों चूक परी जो होइ। ताको देखि सुधारियो अरजी जानो सोइ ॥ इति श्री सिंहासन बतीसी समाप्तम् शुभमस्तु सिद्धिरस्तु श्री महाकाली देव्यैनमः श्री सरस्वत्यैनमः ॥ सर्व देवायनमः। सन् १२६५ साल श्री।

Subject—प्रार्थना व राजवंश वर्णन—पृ० १—२। विक्रमादित्य-उत्पत्ति कथा, गंधर्व का इन्द्र के श्राप से लोक में आना, भर्तृहरि श्रोर विक्रम २ पुत्रों का जन्म भर्तृहरि व विक्रम दोनों का क्रम से राज पाना—पृ० ३—११ तक। राजा भोज का सिंहासन पाना—१२—१४। प्रथम पुतली पंज मंजरी की कथा—१५—१६। वज्रावती पुतली श्रोर जयवंती की कथा, पृ० १७। चंपा, मंजुघोषादि की कथा—१८—२३ तक। रोषा, कपिलावती, विचित्रा की कथा—२४—२९ तक। मदन सेना, मदपिंडरी, गंगा की कथा—३०—३१ तक। रतन मंजरी,

मानवती, चन्द्रमुखी की कथा—३२—३५ तक। चन्द्रमोहनी, कमलावती, अनंग-ध्वजा की कथा—३६—३८। मंगलावती, सुभद्रा, सुभग पिंजरी की कथा। ३९—४० तक। चंद्रिका, कमलसुधि, दुतीही की कथा—४१—४२ तक। रूप सागरी, नवभेषा, चंद्रकला, विचित्रा की कथा—४३—४७। घोषा, सोभ पिंजरी, मुक्तनन्न की कथा—४८—५१ तक, कविवंश वर्णन—५२ पृ०। इति।

No. 393(*a*). Rasa Brishṭī by Śiva Nātha of Puwaya. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—10 × 6 inches. Lines per page—50. Extent—1,535 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṃvat 1942 or A. D. 1885. Place of deposit—Paṇḍita Avadheśa Panday, Village Khamaharihā, Post Office Baranāpur, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः॥ अथ रस वृष्टि ग्रंथ लिष्यते॥दोहा॥ श्री गणपति पद वंदि के उर धरि शिव सुष धाम॥ शारदादि महिदेव कवि करि करजोरि प्रणाम॥ सब मिलि मोहि कृपा करै देहु विमल हिय दृष्टि॥ राधा हरि श्रृंगार सुष कियो चहैा रस वृष्टि॥ वारिज नैन सोहै पकई रदन जाके सुषमा सदन सो सहाय करि सति के *॥ सब सुषसागर उजागर गुनाकर है बुद्धिवर नागर देवैया शुभ गति के। विमल करन ज्ञान ध्यान धरि शिवनाथ संकट हरण ये चरण गणपति के *॥ दारिद दहन सुरतरु को ग्रहण सोहै मूषक वाहन विहगन षलमति के॥ ३॥ जै वाणी गुन षानि मातु अघ हानि करनि तुव॥ जै अंबिका भवानि दानि कल्याण करण भुव॥ अयतनाम तव दास ग्रास संतोष ज्ञान ध्रुव॥ वंछित फलदातार सकल संसार चरण छुव॥ चारि पदारथ कर वसै देवि दरिद्रदि नाशनी॥ करिय कृपा शिवनाथ पर विदित बह्मपुर वासनी॥

End—अथ कृष्ण जू को शांत रस वर्णन॥ दोहा॥ और कछु न सोहाय पद पकहि रस अनुराग॥ सो सम रस बरनत सुकवि उर उपजत बैराग॥ सवैया॥ दाड़िम दाषन ऊषन भूषन माषन चाषन का विसराई॥ कंदन खंदन गंदन बंधन चंदनि चंपकि चंद निभाई॥ जो अधरा मधु माधव चाषि लगा रद लाल अमोल मिठाई॥ तादिन ते शिवनाथ उठाइ उठाइ धरी वसुधा की सुधाई॥ राधे जू को शांत रस॥ कवित॥ जादिन ते पोरोसो पिछौरी ओढ़े देष्यो तुम्हे तादिन ते विना देषे पोरीतन परि गई। अंगनि अंगोठो सों अंगारन को तपै ताहि सांषन सों बोलि चालि षेलिबो बिसरि गई॥ लगी जकजकी बकबकी टकटकी लाल मूरति तिहारी प्यारी प्राणन में भरि गई॥ आसन बसन वास चंदन ते चंपक ते चन्द्रमा ते चांदनी ते चैागुनक जरि गई॥ काम क्रोध लोभ मोह दंभ नित माषत हैं॥

औगुण कहानी कहै चाषैं पट रस के ॥ करै ततवीर धीर नेक ना धरत उर विषय की बड़ाई करि गावैं नर जस के । साधनते चरचा न करै री जाते हरै अघ बोलत कुवाल वाक जाइ पाप वस के । रसना हठीली हठ छोड़ि शिवनाथ कवि कवधैा परैगो ताहि रामनाम चसकै ॥

Subject—इसमें नवरस, हाव-भाव, नायक नायिका-भेद आदि का वर्णन है । उदाहरण में श्री कृष्ण और राधिका का प्रेम वर्णित है ।

No. 393(*b*). Rasa Ranjana by Śiva Nātha. Substance—Country-made paper Size—24 × 7 inches. Lines per page—48. Extent—72 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhakura Naunihāla Siṃha, Kanthā, Unāo.

Beginning—अथ रस रंजन सिंगार आदि नौ रस के ग्रंथ शिवनाथ कवि कृत से संग्रह कुछ करत हैं । अथ तीनौ नाइका के भेद ॥ दोहा—त्रिविधि महामाया भई तीन भेद परकास । स्वीया परकीया कही पुरजोषिता विलास । तीनैां के भेदनि रहे तीनि लोक परिपूरि । इनही ते उपजत जगत यही सजीवनि मूरि ॥ २ ॥ स्वर्ग मनुज पाताल फल तीनौ कौ जिय जानि । देव मनुष अरु नारकी जीव तीनि मन मानि ॥ ३ ॥ सत गुन रज गुन तम गुनी तीनौ के तन जानि । सेत लाल अरु स्यामहू रंग किया हू मानि ॥ ४ ॥

End—सवैया—जुवती गन में ठट कूप पै ठाड़ी जवै नंदलाल पै दीठि करै । उत्साह सो बोलि उठै हंसि हाथ सहेली के हाथ धरै ॥ सब लोगनि की तजि लाज तहां निज नाह तिहीं दिसि लै डगरै । भरिकै धरिकै अपनी गगरी खरी प्रौर सखीनि कैां पानि भरै ॥ २ ॥ आठैा गांठि सठ नायक में यथा—विहंसनि मनसा कर्मना चितवनि वाचा चाल । चातुरता औ आतुरी आठ गांठि पै लाल ॥ १ ॥ हे लाल ये तिहारे अंग में आठ गांठि जे गांठि गंठीली नाइका होइ तिन सों तुमसैा ठीक जोर वनि है ॥ हम गंठीली नाहीं हैं ताते हम से तुम से नाहीं बनैगो जोरी ॥ अनभिज्ञ नायका को सवैया—

नारि कछू दिन की अरु प्राय बहिक्रम थोरिही होई ।
काम के भेद न जाने कछू दुल ही तन हेरै प्रतिछन गोई ॥
रैन दिना लरिकान की संगति खेलन कैां रहै खेलन कोई ।
धारन जानि सुजान कहै अनभिज्ञ मनोहर नायक सोई ॥ ३ ॥

Subject—नायक के तीन भेद वर्णन । ३ लोक, ३ गुण, ३ देव, ३ कर्म वर्णन । स्वकीयादि वर्णन का दोहा वारन कृत रसिक विलास से वर्णित । उत्तमा, मध्यमा, अधमा नायका वर्णन । पृ० १

मुग्धा नायका वर्णन, हाव-भाव-लक्षण वर्णन, उद्दीपन व आलंबन वर्णन, आठ स्थायी भाव वर्णन, चेष्टा वर्णन, शठ नायक में आठौ गांठि वर्णन—पृ० २

No. 394(*a*). Amarakōsha Bhāshā by Śiva Prasāda Kāyastha of Bhingā (Baharāich). Substance—Country-made paper. Leaves—137. Size—13¾ × 5¾ inches. Lines per page—22. Extent—3,740 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṃvat 1874 Samvat or A. D. 1817. Date of manuscript—Saṃvat 1876 or A. D. 1819. Place of deposit—Bābū Padamabaksha Siṃha Lavedpur (Bhingā), Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ वंदैा श्री गुरुचरन जुग हरन सकल भव त्रास। जा जाने सुर सिद्ध मुनि कियो ब्रह्म में वास ॥ १ गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु सिव गुरु गणेश गुर राम। गुरते दूजो ग्रैार नहि सहित शक्ति अभिराम ॥२॥ ताते गुरु पद वंदिये भव वारिध को पोत। पोत सरित तरिवो करै यह भव तारन होत ॥ ३ ॥ अमरकोष भाषा कियो लीजै सुकवि बिचारि। सुरवानी बुध लोग को भाषा अबुध निहारि ॥ ४ ॥ छंद अधिक वहु ग्रंथ में है पढ़िवो अति क्लिष्ट। ताते द्वै अति सरल लषि पढ़त सवै करि इष्ट ॥ ५ ॥ चैापाई ग्रो दोहरा ये द्वै छंद प्रसिद्ध। हैा याही में ग्रंथ किय है दोहन की वृद्धि ॥ ६ ॥

End—अमर तीसरे कांड मों आठ वर्ग को देषि। चारि वर्ग भाषा विषे ग्रावत काज विशेषि ॥ १ ॥ सो मैं भाषा करि कह्यौ दोहा छंदहि माह। भाषा विषे प्रवीन सो पढ़िहै जो करि चाह ॥ २ ॥ चारिवर्ग जो लिंग के भाषा मो नहिं होइ। स्त्री पुंस नपुंसकहि इस्त्रिन पुंमक सोइ ॥ ३ ॥ ताते भाषा नहिं करो नाम-मात्र को काज ॥ संस्कृत शब्द जु होत हैं ग्रावत जे व काज ॥ ४ ॥ लिंग भेद भाषा विषे विन कारज को पेषि। ताते छोड़ैा चारि ये स्वार्थ रहित कों देखि ॥ ५ ॥

पैाष मासे शुक्ल पक्षे तिथि पूर्णमास्यां विवस्वद्वासरे शिवचरेण लिखत सम्बत १८७६।

Subject—प्रार्थना व निर्माणादि वर्णन। स्वरादि कांड, प्रथम सर्ग वर्णन-पृष्ट १—२९ तक। पर्वतादि ग्रैाषधि नदी वृक्षादि नाम तथा सिंहादि जीव संज्ञा वर्णन—पृ० ३०—६० तक। स्त्री वर्ग ग्रैार रोगादि नाम वर्णन, शरीर नाम, गहनों के नाम, सुगंधित वस्तुग्रों के नाम, यज्ञ वस्तुग्रों के नाम वर्णन। पृ० ६१—८३ तक। पालतू जानवर, राजा, व्यवहारिक वस्तुग्रों तथा कारबारियों के नाम वर्णन। पृ० ८४—१०० तक। गाय के ग्रंगादि नाम, रंगों के नाम, सुवर्णादि के नाम,

शराब, जुवा ग्रादि व्यसनों के नाम द्वितीय काण्ड—पृ० १०१—१०९ तक। विशेषणादि ४ वर्ग का ग्रनुवाद वर्णन। पृ० ११०—१३७ तक। इति।

No. 394(*b*). Vaidya Jīwana Bhāshā by Śiva Prasáda. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—$10\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—11. Extend—600 Anushṭupa Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhingā.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा—फागुन सुदि की पंचमी गुरु वासर सुभ पाइ। शिवप्रसाद भाषा रचत लोलिम राज बनाइ ॥ श्लोक एक प्रति भाषा में छंद एक है ॥ छंद मत्तगयंद सुंदर गात सुभावहिते ग्ररु प्रीति रमा हिय मात्र रुदाई। धाम ग्रहै किमि स्यामल देत सुमंगल को सबही कह भाई ॥ रक्त सरोरुह सो पद लोलहि राषत है यह वेदन गाई ॥ वंदत हैं हर मैालि जटा करि गंग तरंग सु निर्मल ताई ॥ पुनर्यथा ॥ वाम सवै मह रत्न मुदो सत दृष्टि सदा सुख कवि लिखोई। श्रृंग सुसप्त सुधाम ग्रहै ग्रस पाए ग्रठारह वाहुते होई। सो शिव भक्ति भजे करि भक्ति धरी शत पाद्य ग्रमी यक रोई ॥ हे घट ग्रश्वनि तो परदक्ष दनोदत्त सर्व सुधाधर सोई ॥ २

End—छप्पय छंद ॥ वेद ग्रथर्वन वाक्य रहा जो काल विचारो। कहे परम परमान धनंतरि केवल भारो ॥ मरजादा जो गान दिवाकर पंडित जानो। शशि सो प्रगट्यो पुत्र सुधानिधि सम ग्रनुमानो ॥ ग्रति बड़ी काव्य जिन प्रगट किय सभा नृपति भूषन गनित। यह तिया उक्ति जीवन व पद लोलिमराज सुकवि भनित ॥

इति श्री वैद्य जीवने लोलिमराज कृत वैद्य शिवप्रसाद कायस्थ भाषा विरचितायां सप्तमोल्लासः ॥ समाप्तम् ॥ इति ॥

Subject—प्रार्थना छंद १—६ तक। वैद्य-लक्षण, ज्वर का काढ़ा, सन्नपात का काढ़ा, तिजारी ग्रैार चैाथिया का काढ़ा, शीतज्वर, विषमज्वर, ज्वरप्रतिकार छंद ७—७८। ग्रतीसार ज्वर, महागंगाधर चूर्ण। संग्रहणी प्रतीकार। छंद ७९—१०५ कास स्वास सूतिकादि प्रतिकार। छंद १०६—१४७। छर्दि रोगान्त कफादि प्रतिकार। छंद १४८—१९२। मदन उत्पात प्रतिकार, ग्रतिकृशता, रति पुष्टि, विश्वताप-हरन, ग्रतीसार, पंचामृत पर्पटी रस, विस्वासिनी वल्लभ रस। छंद १९३—२१६—इति।

No. 395. Kakaharā by Śiva Prasāda of Saraiyā, Baharāich Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—8×6 inches. Lines per page—18. Extent—90 Anushṭupa

Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṃvat 1924 or A. D. 1867. Place of deposit—Gangādīna Iśwarī, Village Udawāpur, District Baharāich, Post Office Baranāpur (Oudh.)

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ ककहरा लिष्यते ॥ सहर सरैयां बास करो जगवाजगो वजारा । सिवप्रसाद गरीव के एक रामनाम अधारा ॥ अपनो अपनो कछु ना चलै सतगुरु होउ सहाय ॥ चौपाई ॥ कका कामो जानु सगेरा । गुरु उपदेस ते करुमन धोरा ॥ कवहुक चोला वास करु भाई । गुरु उपदेस वसै तहं जाई ॥ खखा खरच करो दिन थोरा । आगे का कुछ होइ उजेरा ॥ वादि गया दिन अवहिं न चेता । वोज ऊसर लै वोयऊ षेता ॥ गगा गरवित भयऊ अचेता । तासे चिरियां चुनि गई षेता ॥ वहु प्रकार सब विधि समुझावा ॥ तवहुं न मूढ़ ज्ञान कछु आवा ॥ घघा घरहिं परी सब मूला । विनु गुरु ज्ञान फिरै जग भूला ॥ जो तुम सार सब्द पहिचानौ काहेक इत उत भटका मानौ ॥ दो० ॥ चरन असे दस साहस वोरत गहिरे कुंड अरधनाम जब टेर करो परकरि निकारे मुंड ॥

End—अपनो जन जानिय प्रभू मोहि राषिय सरना गतो धातो मंगल चार जुग जुग देहु मैं वर मांगतो ॥ जेहि नाम मनसा धयन धरो कछु काहत वोर गुन पारसो ॥ ग्यान सकल अपधून मारग दोन कर मोहि आरमो ॥ सिव प्रसाद गुर चरनन परे आधीन होई ईश्वर मग ते जेहि जल्म होइ साचेत दिढ़ मत राम गुन सोइ त्रासते ॥ दो० ॥ सब संतन की दया ते लिषा ककहरा गाइ । भूल भटक जो होइ कछु सतगुर सेठ बनाय ॥ लालन की यह हाट है भला कहै कोइ कूर । तापर चित ना दीजिए अपुरा है भरपूर ॥ सत गुर हंस काज कै दोना । अमो सजीवन हंसा लोना । दुअ दस मारग को गति पावै । छिन में आवै छिन में जावै ॥ सिवप्रसाद चरनन के चेरे । राम रसाइन पिये सवेरे ॥ दोहा ॥ संत रंगीले राम हैं राम रंगीले संत ॥ सिवप्रसाद रंगीले संतन चरन परसत गुर कौन महंत ॥ इति श्री ककहरा सिवप्रसाद कृत संपूरन सुभ मस्तु दसखत । रघुवर दास संवत १९२४ अगहन मासे कृष्ण पक्षे तिथौ द्वितोयाम शुक्रवासरे ।

Subject—ककहरा में उपदेश के दोहे और सतगुरु की महिमा तथा उनकी सेवा का फल वर्णन है ।

No. 396. Krisna vilāsa by Śivarāja Mahāpātra—Substance—Country-made paper—Leaves—140. Size—9 × 5½ inches. Lines per page—12. Extent—1.417 Anushṭupa Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date

of Manuscript—Saṃvat 1800 or A. D. 1742. Place of deposit—Rājā Bhagwān Baksha Siṃha, Rāja Amethi, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—पृ० ९ से—तत्र मुग्धा लछन ॥ दोहा ॥ नूतन जोवन की झलक जा तिय के तनु होय ॥ ताको मुग्धा कहत हैं कबिवर पंडित सोय ॥ यथा ॥ खंजन की सुघराई कछु विन अंजन नैननि आनि ढई है ॥ पूरन चन्द सो चारु कछू मुष को छबि सोभित बानि भई है ॥ ओप भई उर औरे भटू गति मंद गयंदनि की जो लई है ॥ मैन महोपति जोवन को बसिबो तिय के तन सोख दई है ॥ दोहा ॥ मुग्धा के दो भेद ये कविजन करत विवेक । एक कहत अज्ञात है ज्ञात यौवना एक ॥ तत्र अज्ञात यौवना लक्षणम् ॥ दोहा ॥ निज तनु यौवन आगमन जो नहिं जानै नारि । ताहि कहत अज्ञात है लक्षण सुकवि विचारि ॥ यथा ॥ सवैया ॥ जाय जनी सो कहो अरि कै यह कैसी कछूक उपाधि भई है ॥ रोजहि रोज बढै उर में दिन द्वैक सों रो यह रीति लई है। बात कहे ते हसों तुम्हरी यह तोहि दई किन सोष दई है ॥ नाहिं करै कछु याकी इलाजहि आपने काजहिं भूलि गई है ॥

End—लीजै सकल बिचारि जो बुधिबल करि करि चेत ॥ कह्यो है मैं संक्षेप सों-बालबोध के हेत ॥ वर्नौ नहीं जहं वर्नने लक्षण लक्ष्य विचारि। कहत जो कवि शिवराज हैं, लीजो सुकवि सुधारि ॥ ऊंचे तरुवर फरन को बालक हाथ पसारि। ताही विधि या ग्रंथ में बरनौं मति अवधारि ॥ गनत औगुन कों कबहुं बड़े जु नर जग कोइ। करत सदा उपकार को वह कैसा जो होय ॥ छमियो मो अपराध है विनय करत कर जोरि। ढिठई करि भाषो यहां ग्रन्थ बड़ा मति थोरि ॥ भानुदत्त मत बूझि के, चन्द्रालोक बिचारि। बरनों कृष्ण बिलास है यथा बुद्धि अनुसारि ॥ ७३७ ॥ इति श्री कृष्ण बिलासे शिवराज महापात्र बिरचिते अभिधा उत्तिम मध्यम अधम काव्यध्वनि वर्णनं नाम दशमोल्लासः समाप्तमासीत् ॥ सम्वत् अठारह सो सुषद वा ॥

Subject—(१) पृ० १ से × पृष्ट तक—प्रथम उल्लास (लुप्त)

(२) पृ० × से १८ पृ० तक—द्वितोय उल्लास—धीरादि भेद—वर्णन।

(३) पृ० १९—३१ तक—तृतीय उल्लास—परकीयादि भेद—वर्णन।

(४) पृ० ३२—५० तक—चतुर्थ उल्लास—अष्ट नायिका भेद—वर्णन।

(५) पृ० ५१—६४ तक—पंचम उल्लास—नवमो नायिकादि सखी इत्यादि लक्षण—वर्णन ।

(६) पृ० ६५—७६ तक—षष्ट उल्लास—नायक-भेद—वर्णन।

(७) पृ० ७७—८० तक-सप्तम उल्लास-सात्त्विक भेद लक्षण लक्ष्य वर्णन ।

(८) पृ० ८१—१०० तक—अष्टम् उल्लास—स्थायी भाव, रस शृंगार लक्षण, लक्ष्य, दश दशा दर्शन, हाव वर्णन ।

(९) पृ० १०१—१२७ तक—नवम् उल्लास—व्यभिचारी नवरस, रस विरोध, रस सबलता, भाव सबलता, भाव-शांति, भाव-उदय, राज विषयादि-रतिरसाभास और रीति चतुष्टय ।

(१०) पृ० १२८—१४० तक—दशम् उल्लास—व्यंजना, लक्षण, अभिधा, उत्तम, मध्यम, अधम काव्य, ध्वनि वर्णन ।

Note—यह 'कृष्ण विलास' नामक रीति-ग्रंथ महापात्र शिवराज जी ने, भानुदत्त के मतानुसार चन्द्रालोक को पढ़ कर लिखा है । इसमें नायक-नायिका-भेद, रस, रसों के अङ्ग और काव्य के भेदों की समुचित व्याख्या की गई है । उदाहरण भी उत्तम दिये गये हैं । लेखक की असावधानी से कहीं कहीं अशुद्धियां हो गई हैं । पुस्तक के प्रथम के ८ पृष्ट लुप्त हो गये हैं, अंत के पृष्ट का भी पता नहीं है । इस पुस्तक के प्रस्तुत अंतिम पृष्ट के भाग से पुस्तक का सम्वत् १८०० के लगभग लिखा जाना प्रतीत होता है । संवत् "१८ सै सुखदत्त" से यही निष्कर्ष निकलता है कि वह १८१२ या १८२२ की लिखी हुई है । यदि यह 'वा' 'वार' का प्रथमाक्षर है, तब वह १८०० में लिखी गई होगी । पुस्तक में कवि ने अपना तथा पुस्तक कालादि का विशेष परिचय नहीं दिया है । संभव है पुस्तक के आदि के लुप्त पृष्टों में कुछ इस विषय का उल्लेख हो ।

No. 397(*a*). Amarakosha Bhāshāe by Rājā Śiva Siṃha of Bhinagā. Substance—Country-made paper. Leaves—291. Size—8½ × 4 inches. Lines per page—20. Extent—5,100 Anushṭupa Slokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—1874 Saṃvat or A. D. 1817. Place of deposit—Maharāja Rajendra Bahādura Siṃha Mahōdaya, Bhingā.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ वंदों श्री गुरु चरन युग हरन सकल भय त्रास । जा जाने सुर सिद्धि मुनि कियो ब्रह्म में वास ॥ १ ॥ गुरु ब्रह्म गुर विष्णु शिव गुरु गनेश गुरु राम । गुरु ते दूजो और नहिं सहित सक्ति अभिराम ॥ २ ॥ ताते गुर पद वंदिए भव बारिधि को पोत । पोत स नित तरिबो करै यह भव तारन होत ॥ ३ ॥ अमरकोष भाषा कियो श्री सिवसिंह विचार । सुर-बानी बुध लोग को भाषा अबुध निहारि ॥ ४ ॥ छंद अधिक बहु ग्रंथ में है पढ़िबो अति क्लिष्ट । ताते दै अति सरल लखि पढ़त सबै करि इष्ट ॥ ५ ॥ चौपाई और

दोहरा ये द्वै छंद प्रसिद्ध । हैं याही में ग्रंथ लिय ह दोहन को वृद्ध ॥ ६ निर्माण काल ॥ (१७८४) वेद सप्त ग्रह अष्ट कहि पुनि ससि संवत जान कृष्णपक्ष नभ शुक्ल लषि तिथि तेरस पहिचानि ॥ ७ ॥

End—अमर तीसरे कांड में आठ वर्ग कों देखि । चारि वर्ग भाषा विषें आवत काज विशेष ॥ १ ॥ सो मैं भाषा करि कह्यो दोहा छंदहि मांह । भाषा विषै प्रवीन सो पढ़िहैं जो करि चाह ॥ २ ॥ चारि वर्ग जो लिंग के भाषा में नहि होइ । स्त्री पुरुष नपुंसकहि इ स्त्र नपुंसक सोइ ॥ ३ ॥ ताते भाषा नहिं करौं नाममात्र के साज । संस्कृत शब्द जु होत जहं आवत तहवां काज ॥ ४ ॥ लिंग भेद भाषा विषें विन कारज कें पेषि । ताते छोड्यो चाहिए स्वार्थ रहित कें देखि ॥ ५ ॥

वर्ग आठ हूं का प्रमाण ॥

विशेष्य निघ्न वर्ग १	संकीर्ण वर्ग २	नानार्थ वर्ग ३	अव्यय वर्ग ४	स्त्री लिंग विशेष वर्ग ५	पुंलिंग विशेष वर्ग ६	पु० नपुं० लिं० वि० वर्ग ७	स्त्री० पुं० लिं० वर्ग ८	तृतीय कांड वर्ग ८
३०९	१२८	५१५	५५	+	+	+	+	१०१२

प्रथम कांड वर्ग ११	द्वितीय कांड वर्ग १०	तृतीय कांड वर्ग ८	अमरकोष कांड ३ वर्ग २९
५७८	१६४५	१०१२	३२४५

इति श्री महाराजकुमार विशेनवंशावतंस वरिवंड सिंहात्मज सर्वदवन सिंह तनूज शिवसिंह कृते अमरकोष भाषायां तृतीय खंडः ॥ इति ॥

Subject—अमरकोश प्रथम खंड—पृ० १—५७ तक ।

द्वितीय खंड—पृ० ५८—२१४ तक ।

तृतीय खंड—पृ० २१५—२९१ तक ।

No. 297(*b*). Amarakōsha Bhāshā by Rājā Śiva Siṃha, of Bhingā Rāja, Baharāich. Substance—Country-made paper Leaves—196. Size—13 × 5½ inches. Lines per page—21.

Extent—4,620. Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character Nāgarī. Date of Composition Saṃvat 1874 or A. D. 1817. Date of manuscript Samvat 1875 or A. D. 1818. Place of deposit—Bhaiyā Santa Baksha Siṃha Guthawar, Baharāich.

No. 397(*c*). Bhakti Prākāmśa by Rājā Śiva Siṃha of Bhingā Rāja Baharāich. Substance—Country-made paper. Leaves—71. Size—$6\frac{1}{4} \times 4\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—30. Extent—1,050. Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition Saṃvat 1852 or A. D. 1795. Place of deposit.—Mahārājā Rājendra Bahādur Sīṃha Jī, Bhingā Rāja, Baharāich.

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ कवित्त—वारन वदन श्रौ रदन एक छवि छाजै गाजै तिहुंलोक को निकाई सुखकंद को। आनंद सरूप भरयौ मेंदुर भुसुंड ऐसा सोभित परमचारु काटै दुखदुंद को ॥ कामना को कल्पतरु चारयो फल देत जानि मानि जन आपनो जु मेरे भवफंद को ॥ जनन को पालक सकल अघ घालक मजु आनंद को कंद पारवती पति नंद को ॥ १ ॥ जपत रहत है वे पावत परम पद सकल समूह सुख आनंद विस्तारे हैं। विपति विदारि तारि केते पाप पुंजनि ते दीन्हों है निवास बैकुंठनि विहारे हैं ॥ केते दीह दुसह अजेय कौण आदि देवि कीन्हो तू अरूप षंड रुंड महिडारे हैं। मैं तो मन बच क्रम ऐसो दृढ़ जानत हैं चंडी के चरन भवसिंधु के नवारे हैं ॥ २ ॥

दोहा—जहं दोहा विपरीति करि सोई सोरठा नाम।
ग्यारह तेरह मत्त पद बरनहु अति अभिराम ॥ ३ ॥

सोरठा—रघुवर कथा अपार गुन समुद्र बरनो कहा।
को नर पावै पार नाथ रावरे कृपा बिनु ॥ ४ ॥

End—अथ स्तुति कवित्त—जाको चतुरानन सहित पंच आनन सहस्र मुख गानन करत गुन नाम को। पावत न अंत संत देवता सुरेस मुनि ध्यावत रहत नित जाके रूप ग्राम को ॥ जन सिवसिंह सोई जगत को पालक है घालक है वोघ अघ सोई नाम राम को। दीजै मोहि जानि जन भक्ति अम्बिका के पाइ बसै चित आइ कै अचल सुख धाम को ॥ ५३८ ॥

दोहा—जाके गुन गन को नहीं पावत अन्त अनन्त। सो अति लघुमति पाइकैं क्यों बरनौं भगिवन्त ॥ ५३९ ॥ इति श्री भक्ति प्रकाश श्री रामचन्द्र चरित्र वर्ननं समाप्तम् सुभ मस्तु ॥ सिद्धिरस्तु श्रीराम ॥ श्रीमहाकाली जी की सरन हों श्री ॥

Subject—गणेश व देवी वंदना वर्णन—छंद—१—२। सोरठा तथा दोहा के लक्षण और उदाहरण वर्णन, निर्माणकाल वर्णन, छं० ३—१०। हरिगीतिका लक्षण उदाहरण, तोमर छंद लक्षणादि वर्णन छं० ११—१६ तक। प्रमानिका या नगस्वरूपिनी, त्रोटक, सोमराजो, रोला, ससिवदना, घनाक्षरी, संजुता, कुंडलिया, माधविका लक्षण वर्णन—छं०—१७—४८ तक। छप्पय, हीरा, पादा कुलिक, सुलक्षना, नाराच, चामर, तिलका, सुंदरी, मौक्तिक माला, मत्त मातंग, लक्षण और उदाहरण छं० ४९—९१ तक। लक्ष्मीधर, भुजंगप्रयात, तारक, रामायण, दोधक, वंधु, नाया, संख नारी, मालती, अक्षर पंक्ति, कमला, सवैया लक्षण उदाहरण वर्णन, छंद—९२—१३९ तक। मदन मनोहर, सुलक्षण, मोदक, मोहन, तारक छन्द, कंद, स्वागत, हंम, तनुमध्य और मल्लिका लक्षण और उदाहरण वर्णन—छं० १४०—२०७ तक। चंचला, चित्रांगदा, तामरस, डिल्ल, मालती सवैया, भ्रमरावली, सुंदर, नागस्वरूप, समानिका, हारी, उपस्थित लक्षण और उदाहरण वर्णन छं०—२०८—२९२ तक। तुंग, गंटिका, द्रुत विलंवित, स्त्रग्विणी, चौपैया, पदनील, प्रमिताक्षरा, हरिनी, वृत, पंच चामर, तोर्ना, क्रीड़ा द्रुमिला, मुक्ता और किरीट के लक्षण व उदाहरण—छं०—२९३—३४८ कमला, चौपाई, इन्द्रवज्रा, चंचरी, सुंदरी, सारवती, त्रिभंगी, लक्षण व उदाहरण। छं० ३४९—४६० तक। विजय, चंद्रकला, लक्ष्मीधर, मानववंध, मोहन, और स्तुति वर्णन—छं० ४६१—५३८ तक। इति ॥

No. 397(*d*). Bhāshā Vritta Manjarī [by Mahārāja Śiva-siṃha of Bhingā Rāja (Baharāich). Substance—Country-made papers. Leaves—29. Size—6¼ × 4¼ inches. Lines per page—28. Extent 392 Anusṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit.—Mahā Rāja Rājendra Bahādura Siṃha, Bhingā Rajā (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ शोर........य सुमिरि चितलाय गौरी नन्द अनन्द मयं।........भाषा कहौं बनाइ मत पिंगल अवलोकि कै ॥ १ ॥ दोहा ॥ भाषे नाग अनेक विधि छंद बिबिधि विधि नाम। सो मत लै कविजन कियौ ग्रंथ वृत्त सुखधाम ॥ २ ॥ तिनकौ मत लै कहत हैं कछु छंदन को रीति। नाम तासु वृतमंजरी कवि जनकी जे प्रीति ॥ ३ ॥ अथ गुरुविचार ॥ संजोगो के प्रथम का बरन दुमत्त समेत। कहि दीरघ अनुसार जुत कहुं चरनान्त उपेत ॥ ४ ॥ अथ लघु को विचार ॥ सुद्ध एक फल लघु कहत कहुं दीरघ लघुमानि। भा.......... क विधि सो संक्षेप वखानि ॥ ५ ॥

End—बत्तीसाक्षरी कवित्त रूपक घनाक्षरी छंद यथा ॥ विपति विदारन है मुक्ति के·······रति है कोटि छवि वारन है तारन जगत नित । अघ को विदारन है कामना संवारन है विपति विदारनि है निश्चर निकर जित ॥ खलनि को घालक है दैत उर सालक है जनवर दालक है मेरे सो वसत चित ॥ अंबिका तिहारे पांय कोटि कोटि छबि छाय मेरे मन वच काय रावरे सरन हित ॥ १० ॥ इति श्री भाषा वृत्तमंजरी दंडक छंद वर्णनं नाम षष्टमः ६ ॥ समाप्तम ॥ शुभमस्तु सिद्धिरस्तु श्री महाकाली जीव को सरण हैां ॥ श्रीराम ॥ इति ॥

Subject—गणेशवंदना, नाग कवि के पिंगल का आधार वर्णन । गुरु लघु विचार, व्योममाला छंद, दीर्घ लघु उदाहरण वर्णन पृ० १—२ । गण, देवता, फल विचार, दग्धाक्षर, मित्र सत्रुगण, मात्रावृत्त छंद; वर्णवृत्तछन्द वर्णन पृ० ३–७ तक । गाथा छंद, गीति छंद, उपगीति, दोहा, दोहा—भेद, रोला छंद, छप्पय सभेद, पृ० ८–१४ तक । कुंडलिया, चैापैया, त्रिभंगी, अभिराम छप्पय, अमृतध्वनि वर्णन, पृ० १५—१६ तक । दुर्मिल सवैया, लीलावती, सुभग, मरहठा छंद पृ० १७—१८ तक । श्रीछंद, उल्का श्रीछंद, नारी छंद, प्रिया, नाया, प्रमदा, मधु छंद, मही छंद, सवास छंद, व्योममाला, पद, हरिनी, वंधु, मोटनक, अनुकूल, सुंदरी, मोहन, तामरस, मनि, मालती छंद वर्णन पृ० १९—२१ । पंकज वटिका, हरिलीला, रामायण, सुप्रिया, विशेषिका, शिषरनी, कोड़ा, चंदु, गीतिका, श्रग्धरा, विजय, मत्तगयंद, चन्द्रकला, मनोहर, मदनमनोहर, भुजंग, विजृंभत छंद वर्णन पृ० २२—२७ तक । दंडक, सर्वतोभद्र छंद, साल्हर, अनंगशेखर, घनाक्षरी, रूपक घनाक्षरी—पृ० २८—२९ । इति ।

No. 397(*e*). Bhāshā Britta Ratanawali by Mahārāj Śhiva Siṃha of Bhingā (Baharāich). Substance—Country-made paper. Leaves—17. Size—$6\frac{1}{4} \times 4\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—30. Extent—210. Anusṭupa Ślokas. Complete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Mahārājā Rājendra Bahādur Siṃha Mahodaya Bhingā Rāja (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ शुभग वृत्त रत्नावली छन्द शास्त्र सुखानि । सो ताको भाषा कियो गिरिजा पद नुति ठानि ॥ १ ॥ अथ अष्ट गण नाम ॥ मय रस तज मन अष्टगन पिंगल नाम बखानि । बरन एक उच्चारतें लीजे क्रम सों जानि ॥ २ ॥ मनगल तीनों होत हैं भय गल आदि कहंत । रजलग मधि सो जानिए सतलग भाषत अन्त ॥ ३ ॥ अथ गण देवता फल विचार ॥

मन महि सूर्य थो सुषद भय शशि जलजस वृद्धि । रजपावक रवि मृत्युरुज सतकष गमन न सिद्धि ॥ ४ ॥ अथ गुरु विचार ॥ संयुक्ता दिग विदु जुत पुनि विसर्ग कल होइ । स्वर दीरघ गविकल्प लग चरन अंत गल होइ ॥ ५ ॥ अथ लघु विचार ॥ जो विभिन्न गुरु गहत कवि एक मात्र लघु जानि ॥ ह्रस्व दीर्घ द्रग सब्द के आदि कहूं लघु मानि ॥ ६ ॥

End—अथ एक त्रिसाक्षर कवित्त कामः ॥ कीजे यकतोस जानि वरन प्रमान ठानि षोडसे विराम पद लषि परमानिए । भाषते फनीस मत कवीस ऐसे पिंगल वषानि सो कवित्त काम ठानिये ॥ कहैं कविलोग गुरु चरन विराम लषि कीजै पद जमक विलोकि इमि जानिए । वेद पद गाए सो सकल सुख भाए रचि विमल सोहाए ऐसो छंद पहिचानिए ॥ ९६ ॥ दोहा ॥ गुरु लघु लक्षन जो कहे यामें विविध विचार । उदाहरन ताको कियो पद छंदनि सुष सार ॥ ९७ ॥ इति श्री भाषा वृत्त रत्नावली समाप्तम् सुभमस्तु सिद्धिरस्तु श्री महाकाली देव्यैनमः ॥ श्री राम श्री ॥ इति ।

Subject—गणेश वंदना छं० १ । गणनाम वर्णन—छं० २—३ गणदेवता फल विचार और गुरु लघु विचार छं० ४—८ तक । वर्ण वृत्त छंद—हंस, गुरु लघु संज्ञा, छंद लक्षण वर्णन और चक्र वर्णन, छं०, ९—१७ । तारी छंद तीनों, वारि, पंक्ति शशिवदना, सोमराजी, मदलेषा, मधुमती, विद्युन्माला, नागस्वरूपिनी, छन्दों के लक्षण और उदाहरण छं० १८—२८ । चित्रपदा, मानव वंद, अनुष्टुप छंद, कमला, मनिबंध, रुपमाली, पंचकला, सारवती, अमृतगति, हंसी, सुंदरी, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति—छंद लक्षण और उदाहरण वर्णन छं० २९—४३ । रथोद्धता, स्वागता, दोधक, मालिनी, हरिणप्लुता, द्रुत विलंबित, तोटक, प्रमिताक्षरा, स्रग्विनी, भुजंग प्रयात, वंशस्थ, इंद्रवंशा, उपजाति, कुसुम विचित्रा, छंद लक्षण और उदाहरण पृ० ४६—५६ । पुष्पिताग्रा, प्रभावती, प्रहर्षिनी, वसंततिलका, मालिनी, भ्रमरावली, चामर, नाराच, पृथ्वी, हरिणी, शिखरणी, मंदाक्रान्ता, चित्रलेखा, शार्दूल विक्रीड़ित, शोभा स्रग्धरा, सवैया तरंगता, मदिरा, मालती, चित्रपदा, मल्लिका, माधविका सवैया के लक्षण और उदाहरण वर्णन—छं० ५७—७८ । दुर्मिल, तन्वी, कमला, भुजंग विजृंभित वर्णन—छं० ७९—८२ । अथ मात्रा वृत्त—गाथा, उपगीति, दोहा, रोला, छप्पय, कुंडलिका, चोपैया, त्रिभंगी छंदों का लक्षण उदाहरण वर्णन छं० ८२—९१ । अथ दंडक वर्णन । सर्वतोभद्र छंद, चन्द्र वृष्टि प्रयात, मत्तमातंग, अनंगशेषर, कवित्त कामः लक्षण उदाहरण वर्णन—छं० ९२—९७ तक । इति ।

No. 397(*f*). Kāvyadukhana Prakāsa by Mahārājā Śiva Simha of Bhingā (Baharāich). Substance—Country-made

paper. Leaves—26. Size $6\frac{1}{4} \times 4\frac{3}{4}$ inches. Lines per page —28. Extent—275. Anusṭupa Ślokas. Appearance—Old. Character Nāgarī.—Place of Deposit—Mahārājā Rājendra Bahādura Siṃha of Bhingā Rajā (Baharāich).

श्री गणेशायनमः ॥ छन्द बरवा ॥ गौरी सुअन सुभ वदनै रदन विचारु। विघ्न हरन विधि कीधैं यह संसार ॥ १ ॥ वारिज जात षडानन आनन अंक। सिद्धि रदन गज मुख लषि अवदन संक ॥ २ ॥ सुक्रवार अष्ठमि तिथि सिति वैसाख। प्रगट करयो यह ग्रंथै करि अभिलाष ॥ ३ ॥ नाम धरयै या ग्रंथै वरनि विचारि। काव्य दुषन परकासै सुकवि सुधारि ॥ ४ ॥ लषि दूषन उल्लासैं कवि प्रिमान। सो संचित करि वरनै अति हित मानि ॥ ५ ॥ नहि समरथ करिवेकी जुक्ति नवीन। याते सुकवि छंदै पदजुत कीन ॥ ६ ॥ अर्थ पदारथ वेई वरनै सोइ। छंद भेद करि भाषे नाम मिलोई ॥ ७ ॥ नाम प्रगट करि वरनै कवि निज सर्व। हैां कैसे करि भाषैां मति अति पर्व ॥ ८ ॥ ताते प्रगट न भाषत राषि दिगोइ। सुकवि सुमति लषि जानै और न कोइ ॥ ९ ॥ कैान वरन मंगल जग करि रिपु कैान। सो वरनै या ग्रंथै लषि कवि तैान ॥ १० ॥ अथ दूषन वर्नन तत्र प्रथम अप्रउक्ति दूषन वर्नन ॥

End—चैापाई ॥ यह प्रहेलिका जानो विसन्न। सूधे..........उलटे अमल ॥ ५० ॥ सोइ। यह प्रहेलिका कहो अनूठो। सूधे भांतल उलटे भूठो ॥ ५१ ॥ पाल्ला। सुनो सबै प्रहेलिका हाल। सूधे नभ वसि उलटे लाल ॥ ५२ ॥ ताग—छंद वरवा—करि प्रकास दीपक जहं लघु लखिलेन। त्यैां दूषनन दुरन कछु यह कहि देत ॥ ५३ ॥ लखि विरोध कछु यामें छमि अपराध। हैां लघुमति कवि गुरु मति परम अगाध ॥ ५४ ॥ इति श्री काव्य दूषन प्रकाप विरचितायां प्रहेलिका वर्णन नाम त्रितीयोऽध्याय ॥ ३ ॥ समाप्तम् शुभ मस्तु सिद्धिरस्तु श्री महाकाली जीव की सरण हैां ॥ इति ॥

Subject—गणेश वंदना, निर्माण तिथि, ग्रंथ नाम, रचयिता का नाम वर्णन पृ० १—२। अप्रयुक्त दूषण वर्णन, अंध दूषण वर्णन। अमित, वधिर, अगतापंगु, नाम्र वाक्य, नाम्र, हीन रस, मृतक दूषण, असमर्थ, जतिभंग, ग्रामीण। व्यर्थ, वायस पांति, मरालिका, अपार्थ वर्णन। कायर स्थूल कृष्ण दूषण और क्रमहीन दूषण कथन पृ० ३—५ तक। क्लिष्ट, कर्णकटु, अनुवोक्षण, पुनुरुक्ति, प्रतत्प्रकर्षन, देश विरोधी, पात्र दुष्ट, काल विरोध, नष्टानष्ट, लोक विरोधी, नेमानेम, न्याय आगम विरोधी, वालक्षति, अन्न अक्ष, रसहत वृत्ति, पिंड वाक्य विरोधी, वरन वाक्य विरोधी, अवस्था वाक्य विरोधी, भेष वाक्य विरोधी,

दूषन, देश वाक्य विरोधी, वरन अपक्षापक्ष, समय सिंगार विरोधी दूषण वर्णन पृ० ९—१० तक। कवितालंकार वर्णन। कामधेनु लक्षण, कंकण बंध, कमल बंध, धनुष बंध, गोमित्रिका, अश्वगति, कपट बंध लक्षण वर्णन, पृ० ११—१५ तक। निरोष्ट लक्षण, मात्रा रहित, वहिर्लापिका, अन्तरलापिका, सासनोत्तर लक्षण वर्णन, पृ० १६—१९ तक। प्रहेलिका लक्षण, वग, सांड, जूता, चना, वंदूक, जाल, यशोदा, कुच, नौका, मराल, खटिया, वाट, राज, मोहर, जग, सर, वारन, कपि, नर, बाग घोड़े को, गज, मन, पगड़ी, वरगद, सुआ, सीतल, वाजू, टाल, सारस, वरद, वादर, छुरी, काम, बकरी, तोर, धाम, दादुर, घाम, मछरी, नींद, बेसर, खीरा, वोरकानेकी नारि नषत, सुधाकर, नगर, सान, पाला और तारा आदि प्रहेलिकाओं का वर्णन है, पृ० २०—२६ तक।

No. 397(*g*). Rāma Chandra Charitā by Mahārājā Śiva Simha of Bhingā Rājā (Baharāich). Substance—Country-made paper. Leaves—7. Size—$6\frac{1}{4} \times 4\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—30. Extent—100 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1857 or A. D. 1800. Place of deposit—Mahārāja Rājendra Bahādura Simha, Bhingā Rāja (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा। जो करता हरता सदां पालनता संसार। तापद वंदन कीजिये रहत सबनि तें पार ॥ १ ॥ अग्नि वेस्य मुनि मत निरषि वरने कथा विचारि। रामचन्द्र के गुन कछू अति अपूर्व सु निहारि ॥ २ ॥ छंद हरिगीतिका—पूरव हिरन्य कसिप भयो दिति तनय दैतनिराज है। नरसिंह रूप धरयो हरी तिन हयो देवनि काज है ॥ विश्रवा सुत पुनि सो भयो नकता चरी सों आइ है। तिहि नाम रावन जानिए त्रय लोक को दुखदाइ है ॥ ३ ॥ कवित्त—ताहि वधिवे कों दसरथ सुत भयो हरि लीन्हो अवतार नाम राम जग जानिए। तोरयो हर धनुष विदेह धाम राम जब पक्ष वर्ष रस सीय उमिरि प्रमानिए ॥ द्वादस वरस पूनि अवध वितायो धाम त्यागि वनवास वेष तापस वखानिए। रामनग नप सोय धृति वर्ष जानि मन ऐसिये वहि त्राम विपिन वास जानिए ॥

End—छंद गीतिका—पुत्र दै श्रीराम कों पुनि सोय वास धरा किए। ताहि सों गनि लीजिए षषदि गुन इंदुहि लै दिए ॥ अंक लषि परिमान वर्ष सुराज पूनि रघुवर कहे। फिर दई पुत्रन्ह अनुज पुरजन सहित सुरपुर कों लहे ॥ ४१ ॥ दोहा—मासवार तिथि सम प्रभू जो कछु कीन्हे कर्म। त्यागि और सोई कहे यामें कछू न भर्म ॥ ४२ ॥ रघुवर चरित प्रकास कर वरने ग्रंथ

विचारि। रामचन्द्र आनन्द जग वंद फंद भवतारि ॥ ४३ ॥ निर्माणकाल :—
वेद ससी अम कुसन तिथि सप्तमि सित गुरुवार। मास मादि दे वीच लषि
संपूरन सु विचार ॥ ४३ ॥ मुक्ति वरन कल्यान पद अर्द्ध द्विदल रिपु व्याल। ये
पूरन मिलि नाम जिहि कियो ग्रंथ हित वाल ॥ ४५ ॥ इति श्री रामचन्द्र चरित
संपूर्नम् सुभः ॥

Subject—प्रार्थना, निर्माणकाल कथन, अवतार के कारण वर्णन। छं० १—४ तक—

राम विवाह वर्णन, वन गमन, सूर्पनखा का नाक कान छेदन, सीता-हरण, सुग्रीवमिलन, सेतु-बंधन का तिथियों सहित वर्णन। छं० ५—१९ तक।

अंगद रावण संवाद, मेघनाद का नागफांस में बांधना, धूम्राक्ष-वध, चक्र प्रहस्त, कुंभकर्ण वध, अतिकाय वध, नारान्तक वध, अकंपन वध, लक्ष्मण-शक्ति, मेघनाद-वध-वर्णन तिथियों सहित। छं० २०—२७ तक—

महापार्स्वादि वध, रावण-युद्ध, रावण वध, विभीषण को राज तिलक, राम का अयोध्या गमन, भारद्वाज के आश्रम में आना, राम-भरत भेंट, राम का सीता को परित्याग, लवकुश उत्पत्ति, सीता जी का अवस्थान, राम का राज्य को बांटना, राम का सपरिवार स्वर्ग जाना, निर्माणकाल और कवि वर्णन तिथियों सहित। छं० २८—४५ तक।

इति।

No. 397(*h*). Śrutibōdha Bhāshā by Mahārājā Śiva Simha of Bhingā Rāja (Baharāich). Substance—Country-made paper. Leaves—7. Size—$6\frac{1}{3} \times 4\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—32. Extent—200 Anusṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Mahārāja Rājendra Bahādura Simha Mahodaya, Bhingā Rāja (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ सोरठा ॥ गगुरु लघु मन आनि प्रणत गैारि हर विमल पद। कहे सुकवि पहिचानि छंद सवै श्रुति वोध के ॥ १ ॥ दोहा ॥ आदि मध्य पुनि अंत गो भजसा लेहु विचारि। यरता लो पहिचानिए मन गन सुकवि निहारि। दीरघ विंदु विसर्ग गो संयुक्ता दिन अल। चरन अंत लग वरन गो कहि फणि ताहि विकल्प ॥ ३ ॥ अथ छंद लक्षणम् छंद आर्या यथा ॥ प्रथम तीसरे आनो रस दो मत्ता विचारि के ठानो। दूजे अंक दुजानु पद चैाथा आर्या तिथि मानु ॥ ४ ॥ गीति छंद यथा ॥ विषमे भान करीजै ॥ सब पद मत्ता अंक द्वै दीजै ॥ या विधि सों जहं कीजै। गीति छंद सोई नाम कहीजै ॥ ५ ॥

End—अथ ऊन विंसाक्षर शार्दूल विक्रीड़ित छंद ॥ यथा ॥ आदौ दो पुनि तीसरो रस वसू गो द्वादसो जानिता। आदित्यौ सम येक चौदह वसू द्वै दीर्घ सो मानिता॥ त्योंही सत्रुह ऊनविंस गुरु विश्रामो तहां आनिता। भाषे सेस सुभानु मेरु सुभगो सार्दूल विक्रिड़िता॥ ४२॥ एक विंसाक्षर स्रग्धरा छंद यथा॥ चत्वारो जासु वर्नां प्रथम सु गुरु कै षष्टगो सप्त सो है। कीजै गो चौदहो सो तिथि रिषि दस है धृतिः विंशो जुगो है॥ एको विंसोग आनो विरति हरदसो छंद से सो कहो है। गाय साईं कवी नो सकल गुन जुतो स्रग्धरा नाम सो है॥ ४३॥ इति श्री श्रुत बोध समाप्तम् शुभ मस्तु सिद्धि रस्तु॥ श्री महाकाली जीव को सरण हैं॥ श्रीराम॥ इति॥

Subject—गणेश गौरि हर वन्दना वर्णन—छं० १। गण व दीर्घ ह्रस्व वर्णन—छं० २—३। आर्या छंद, गीति, उपगीति, होति छंद लक्षण उदाहरण वर्णन-छं०—४—७। पंक्ति छंद, समियदना, मदलेषा, अनुष्टुप श्लोक, मानव क्रीड़ा, नाग स्वरुपिणी, विद्युनमाला, मणिवंध लक्षण व उदाहरण वर्णन छं०—८—१५। पंचकमाला, मंदाक्रांता, हंसी, सालिनी, दोधक इन्द्रवज्रा उपेन्द्रवज्रा, उपजाति छंद लक्षण व उदाहरण—छं० १६—२३। विपरीति पूर्वा, रथोद्धता, स्वगता, तोटक, भुजंगप्रयात, प्रमिताक्षरा, द्रुत विलंवित, हरिनीप्लुता, वंशस्थ, इन्द्रवंशा, प्रभावती छंद के लक्षण व उदाहरण वर्णन, छं०२४—३५। प्रहिर्षिणी, वसंततिलका, मालिनी, हरिनी, शिषरनी, पृथ्वी, शार्दूलविक्रीड़ित, स्रग्धरा छंद के लक्षण व उदाहरण वर्णन। छंद—३६—४३ तक। इति॥

No. 398. Śiva Siṃha Sarōja by Śiva Simha of Kānthā, Unao. Substance—Country-made paper. Leaves—490. Size—8 × 6 inches. Lines per page—56. Extent—9,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṃvat 1931 or A.D. 1874. Place of deposit—Ṭhākura Digvijaya Siṃha, Tālukedāra, Village Dikaulī, Post Office Bisawañ, District Sītāpur.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ सिवसिंह सरोज लिष्यते॥ अकबर कवि श्री मोहम्मद जलालउद्दीन अकबर बादशाह। शाह अकव्वर बाल की बांह अचित गही चलि भीतर भौने। सुन्दरी द्वार ही दृष्टि लगाय के भागिवे की भ्रम पावत गौने॥ चाकत सो सब ओर विलोकत शंक सकोच रही मुष

मैाने। यों छबि नैन छबोले के छाजत मानो विछोह परे मृगछौने ॥ १ ॥ शाह अकब्बर एक समै चले कान्ह विनोद विलोक बालहिं। आहट ते अबला निरख्यो चकि चैांकि चली कर आतुर चालहिं। त्यों बलि बेनी सुधारि धरी सुभई छबि यों ललना अरु लालहिं। चंपक चारु कमान चढ़ावत काम ज्यें हाथ लिये अहि बालहिं ॥ २ ॥ केलि करै बिपरीति रमै सो अकब्बर क्यों न रतो सुष पावै। कामिनि की कटि किंकिनी कान किधैं मन प्रीतम के गुण गावै ॥ बिंदु छुटी मन में सो लिलाट ते यां लट में लटकी लगि आवै। साहि मनोज मनोचित में छबि चंद लए चक डोरि खिलावै ॥

End—(१) हरीराम प्राचीन ॥ संवत १६८० । इनका नख सिख अति सुंदर है। (२) हिमाचल राम कवि ब्राह्मण भटैाली जिला फैज़ाबाद सं० १९०४ सीधी सादी कविता है ॥ (३) हीरालाल कवि ॥ शृंगार में बहुत उत्तम कवित्त हैं। (४) हुलास कवि—ऐजन ॥ (५) हरचरण दास कवि। इन्होंने एक ग्रंथ भाषा साहित्य में महा सुंदर अद्भुत अपूर्व ब्रहत कवि वल्लभ नाम बनाया है इस ग्रंथ में अपने ग्राम सन् संवत आदि का पता नहीं दिया है। (६) हरिचंद कवि बरसाने वाले ग्रंथ बहुत सुंदर बनाया लेकिन सन संवत नहीं। (७) हजारी लाल त्रिवेदी विद्यमान हैं। नीति शांति संबंधी इनकी काव्य सुंदर है। (८) हरिनाथ ब्राह्मण काशी निवासी १८२६ संवत इन्होंने अलंकार दर्पण नामक ग्रंथ बनाया। (९) हिम्मत बहादुर नबाब ॥ बलदेव कवि ने सतगिरा विलास में इनके कवित्त लिखे हैं ॥ संवत १७६५ वि०। (१०) हिम्मतराम कवि सूदन कवि ने इनकी प्रशंसा की है। (११) हरिजन कवि ललितपुर निवासी संवत १९११ राजा ईश्वरी नारायन सिंह काशिराज के यहां रसिक प्रिया की टीका की ॥ (१२) हरिचंद कवि वंदीजन चरखारी वाले। राजा छत्रसाल चरखारी के यहां थे ॥ (१३) हुलास राम कवि सलिहोत्र भाषा में बनाया। इति श्री शिव सिंह सेंगर कृत शिव सिंह सरोज समाप्तं संवत १९३१ लिषतं गौरीशंकर ॥

Subject—इस शिव सिंह सरोज में लगभग १००० कवियों के नाम पुस्तक नाम उनकी कविता का कुछ नमूना निर्माणकाल निवास स्थान का पूरा पता आदि भली भांति वर्णन किया है। पुस्तक उत्तम है।

No. 399(*a*). Rasapiyūsha Nidhī by Soma Nātha of Mūttra. Substance—Country-made paper—Leaves—148. Size—12 × 7½ inches. Lines per page—30. Extent—2,775 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1794 or A.D. 1837. Date of

manuscript—Samvat 1941 or A.D. 1844. Place of deposit—Paṇḍita Syāma Vihārī Miśra, Golāganja, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रसपीयूष लिष्यते । छप्पय—सिंधुर वदन अमंद चंद सिंदूर भाल धर। एकदंत दुतिवंत बुद्धि निधि अष्ट सिद्धि वर ॥ मद जल श्रवत कपोल गुंजरत चंचरीक गन ॥ चंचल श्रवन अनूप थोंदि थिरकति मोहति मन ॥ सुर नर मुनि बरनत जोरि कर गुन अनंत इमि ध्याइ चित । ससिनाथ नंद आनंद कर जय जय श्री गननाथ नित ॥ १ ॥ कवित्त—अमल अनंत नव नीरद बरनवंत प्रगटे अवनि पै अनादि निरधारे है। असुर बिदारे दुष पुंज निरवारे कोरि सकल सुधारे काज गूढ़ गुन भारे है ॥ जहां जेहि ध्याये तुम तहां ठहराये आइ रूप उजियारे सोमनाथ उरधारे है। जे श्री रघुराइ कह्यौ चारौ फल दाइक दुलारे दशरथ के हमारे प्रान प्यारे है ॥ २ ॥ कंचन के रंग अंग आनन अरुन राजै उद्धत फंदैया नीर सागर दुरंत के। श्री को महामंगल संदैसो पहुंचैया और लंक बिनसैया औ फिरैया सब संत के ॥ सोमनाथ बरनै समीर के सपूत सांचे सेवक समीपी रघुबीर बलवंत के ॥ कंत अवनी के ह्वै अनंत सुख पावें गुन गावैं नर ऐसौ जो हठीले हनुमंत के ॥ ३ ॥

End—सवैया—सागर सील उजागर कीरति आनन्द के उपजावन हारे। आदि अनादि सरूप निरंजन इन्द्र कौं आछे खिझावन वारे ॥ मोहन श्री ससिनाथ महाजन कौं घने खेल खिलावन हारे। लाज हमारी है रावरे हाथ ऐ नंद को गाय चरावन वारे ॥३०४॥ निर्माणकाल—सत्रह से चौरानबे संवत जेठ सुमास। कृष्णपक्ष दसमी भृगौ भयो ग्रंथ परकास ॥ ३०५ ॥ छंद—श्री रघुनंद आनंद कंद हिय में ध्याइ सुख सरसाइये। ३०६ ॥ इति श्री मन्य महाराज कुंवर प्रताप सिंह हेत कवि सोमनाथ विरचिते रस पीयूष निधौ अर्थालंकार संश्रष्टि शंकर अलंकार वर्ननं नाम एक विंसति मस्तरंगः २१ ॥ श्री रस्तु शुभ मस्तु श्री संवतु १९४१ श्रावण शुक्ल प्रतिपदायां बुधवासरे लिखित मिदं पुस्तकं बलदेव मिश्रेण श्री कृष्णाय नमोनमः ॥ श्री शिवायनमः ॥

Subject—मंगलाचरण पृ० १—२। राजकुल वर्णन--पृ० २—४। सभा वर्णन—पृ० ५। कविकुल वर्णन—पृ० ५—६। पिंगल, प्रस्तार, मर्कटी, पताकादि वर्णन—पृ० ७—१२ तक। मात्रावृत्त छंद वर्णन—पृ० १३--२०। वर्णवृत्त छंद वर्णन—पृ० २१—२४। काव्य सामिग्री लक्षण—अभिधा, व्यंजना आदि का वर्णन—२५—३२ तक। ध्वनि भेद वर्णन—पृ० ३३—३६। शृंगार रस भेद तथा स्वकीया नायका सभेद वर्णन—पृ० ३७—४६ तक। परकीया तथा गणिका नायिका सभेद वर्णन—पृ० ४७—५०। अन्य संभोग दुःखिता तथा

मानिनी नायिका सभेद वर्णन—५१—५२। स्वाधीनपतिका, खंडिता, कलहंतरिता, विप्रलब्धा, उत्कंठिता, वासकसज्या, अभिसारिका, प्रोषितपतिका, प्रवत्स्यपतिका, आगमभव्यति पतिका, नायका भेद वर्णन—पृ० ५३—६८ तक। उत्तमादि नायका तथा सखी भेद, उपालंभ, परिहास, दूती कर्म वर्णन- पृ० ६९—७२। नायक निरूपण, सखा, दर्शनादि भेद वर्णन पृ० ७३—८२। हाव भेद वर्णन—पृ० ८२—८६। वियोग श्रृंगार तथा दश दशाओं का वर्णन—पृ० ८७—९०। हास्य रस, करुण रस, रौद्र, वीर भेद, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शांत रस का वर्णन—पृ० ९१—९६। भाव ध्वनि वर्णन—९७—१०२। मध्यम काव्य गुणीभूत व्यंग के आठ भेद सहित वर्णन—१०३—१०६। काव्य के दोष वर्णन, वाक्य दोष, पद असमर्थ दोष, अश्लील, क्रमहीन, व्याहत, पुनुरुक्ति आदि का वर्णन—पृ० १०७—११२। काव्य गुण वर्णन। माधुर्य, प्रसाद, ओज वर्णन—पृ० ११३—११४। चित्र काव्य और अनुप्रास वर्णन—पृ० ११५—१२०। अर्थालंकार निरूपण, पृ० १२०—१४७ तक। संसृष्टि और संकर अलंकार वर्णन तथा निर्माण संवत कथन—पृ० १४७—१४८। इति।

No. 399(*b*). Rasapīyusha Nidhi by Soma Nātha. Substance—Country-made paper. Leaves—76. Size—12 × 5 inches. Lines per page—28. Extent—4,332 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition Samvat 1794 or A. D. 1737. Date of manuscript—Samvat 1948 or A. D. 1891. Place of deposit—Ṭhakura Digviyai Simha Tālukedāra, Village. Dikauliyā, Post Office Bisawān, District Sītāpur.

No. 400(*a*) Śrī Jugalaśat kī Ādi Bāṇī by Śri Bhatta. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—12 × 6 inches. Lines per page—48. Extent—600 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1898 or A. D. 1841. Place of deposit—Paṇḍita Ganeśjī, Village Rakabā, Post Office Sisaiyā, District Baharāich, Tahsīl Kesarganj (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ श्री लाड़िली लाल की जय। श्री निंबादित्यायनमः श्री आदिवाणी जुगुल शत श्री भट्ट जी महाराज कृत लिख्यते संवत १८९८ माघ मास कृष्ण पक्ष शुभ दिन॥ छप्पै॥ कल्प विटप श्री भट्ट प्रगट

कलि कल्मष । दुख दूरि कर जे नर आवे सरण ता । अय तिनको हरही तत दरसी ते होहिं हस्त जा मस्तक धरहीं गुण निधि रसिक प्रवीन भक्ति दसधा के आगर । राधाकृष्ण स्वरूप ललित लीला रस सागर कृपा दृष्टि संतन सुषद भक्ति भूप द्विज वंशवर कल्प विटप श्री भट्ट कलि कल्मष दुष दूरि करि ॥ अथ आदि वाणी श्री युगुल शत तत्र प्रथम सिद्धांत सुष लिष्यते ॥ पद आभास दोहा ॥ राग केदारो ॥ चरण कमल को दीजिए सेवा सहज रसाल घर जाये मुहि जानि के चेरो मदन गोपाल ॥ पद इकताला ॥ मदन गोपाल सरन तेरी आयो । चरन कमल की सेवा दीजे चेरो करि राषो घर जायो ॥ धनि धनि मात पिता सुत बंधु धन जननी जिन गाेद खिलायो । धनि धनि चरन चलत तीरथ को धनि गुरु जिन हरि नाम सुनायो । जे नर विमुष भये गोविंद सो जन्म अनेक महादुष पायो । श्री भट्ट के प्रभु दियो है अभय पद जम डरपो जब दास कहायो ।

End—तुम हमरे घर के जो पुरोहित लगें तिहारे पाईं । यह बालक चपला सों न चोकें तैसे करो उपाई ॥ श्रावण शुक्ल पक्ष एकादसी गोप मिल सब आई । बोले गर्ग विचारि मंत्र को सुत बनो भलो नंदराई । पच रंग पाट की दाम रचवैा नाना रतन लगाई ॥ आगम निगम मंत्र सो नीके रक्षा करो वनाई ॥ श्री ब्रजराज आचरज सो सुनि तैसेई करवाई ॥ मंत्र पवित्राश्याम कंठ मैं गर्ग दई पहिराई ॥ मानो घन थिर कीन्हो दामिनि सोभा लगन सुहाई । वाट रोम गल सब ब्रजपुर में श्री भट भई मन भाई ॥ श्री लाल जी की वधाई लिष्यते ॥ आभास दोहा ॥ भागवती जसुमति अति भई । प्रफुलित लषि लाल गोकुल मंगल आजु लषि बाढ़यो बिसद बिसाल । पद तिताला । गोकुल मंगल आजु बधाई । रानी जसुमति के प्रगट हैं सुन्दर कुंवर कन्हाई । गोपी आपी थार लिये कर रवि छवि देषि लजाई ॥ गावत आवत अविपावत मूरति लगति सोहाई । देषि देषि मुष स्याम सुन्दर को अंग अंग सचुपाई ॥ भागवती जसुमति रानी अति सुतजायो सुषदाई । नृत्यत कीरति मुषिया जिन मुंह कमला करत बड़ाई । कर सनिमान सवन को तैसे जो जैसे मन भाई ॥ नंद सदन में दूध दही की गोपिन कीच मचाई ॥ आगन गोप ग्वाल गन नाचत आनंद मगन महाही । भाग सराहत श्री जसुमति को भाषत भूप भलाई ॥

Subject—इसमें श्री कृष्ण राधिका की छवि ब्रजलीला वर्षा बहार, लालजी की बधाई, पवित्रा आदि का वर्णन है ।

No. 400(*b*) Śrī Jugulaśataka by Śrī Bhaṭṭadeva. Substance—New made paper. Leaves—20. Size—10 × 6 inches. Lines per page—40. Extent—650 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—

Samvat 1652 or A. D. 1595. Place of deposit—Śri Nimbārka Pustākālaya Maṇdira Bābā Mādhavadāsajī Mahaṇta, Nānpārā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री राधा सर्वेश्वरो विजयतेतराम् । श्री निम्बार्क दीनबंधु सुनि पुकार मेरी । पतितन में पतित नाथ शरण आयो तेरी । तात मात भगिनी भ्रात परिजन समुदाई । सब ही संबंध त्यागि आयो शरणाई । काम क्रोध लोभ मोह दावानल भागी । निशि दिन में जरौं नाथ लीजिए उबारी । अंबरीष भक्त जानि रक्षा करि धाई । तैसेई निजदास जानि राखौ शरणाई । भक्त वत्सल नाम नाथ वेदन में गायो । श्री भट्ट तव शरण आय अभयदान पायो ॥ १ ॥ रेमन वृन्दा विपिन निहार । यद्यपि मिलैं कोटि चिन्तामणि तदपि न हाथ पसार । विपिन राजसी याके बाहिर हरिहू को न निहार ॥ जय श्री भट्ट धरि धूसर तनु यह आशा उर धार ॥ २ ॥ दोहा ॥ सेव्य हमारे हैं सदा वृन्दा विपिन विलास । नंद नदन वृषभानु जा चरण अनन्य उपास ॥

End—अथ फल अस्तुति लिख्यते । श्री भट प्रगट युगुल शत पढ़ै कंठ तिहुं काल । युगुल केलि अवलोकतें मिटै विषय जंजाल । नयन वाण पुनि राग शशि गनै अंक गति वाम प्रगट भयो श्री युगल शत यह संवत अभिराम ॥ १६५२ संवत । एक छप्पय १ दोहा आदि अंत मधिमान । शत पद आभासन सहित युगुल शत हद परमान ॥ छप्पय रूप रसिक सब संत जन अनुमोदन याको करौ । दस पद हैं सिद्धांत बोस षट वृजलीला पद सेवा सुष सोलह सहज सुष एक वीस हद । आठ सुरत इक उनवीस उत्सव लहिए श्रीयुत श्री भट देव रच्यो शत युगुल जु कहिए निज भजन भाव रुचि ते किये इते भेद यह उर धरौ रूप रसिक सब संत जन अनुमोदन याकौ करौ हस्ताक्षर किशोरीदास ।

No. 401(*a*). Salihotra Prakaśikā by Rājā Śridhara of Kherī Substance--Country-made paper. Leaves--160. Size 10/6 inches. Lines per page—44. Extent—5,280 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of Composition--Samvat 1896 or A. D. 1839. Date of manuscript.—Samvat 1920, or A. D. 1863. Place of deposit.—Thākura Durgā Simhajī, Dikauliyā, Post Office Biswāu, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सालहोत्र प्रकासिका लिष्यते ॥ श्री गणपति गौरी गिरा हरि हर के पद ध्याय । श्रीधर विरचित ग्रंथ को हय कुल को सुषदाय ॥ छप्पै छंद ॥ सिर पर लसत किरीट भाल पर तिलक विराजत ।

कुंडल कानन माझ गरे बनमाला छाजत ॥ पीताम्बर कटि कसे हाथ दछिनता जनवर। स्यंदन में आरूढ़ अस्व रसी वाएं कर ॥ ढिग पारथ सो मुसकात लषि भोषम कहो सैना डरै। यहि भेष गुविंद अनंद मय मंगल श्रीधर को करै ॥ छप्पै छंद ॥ ब्रह्मा के सुत अत्रि अत्रि के चन्द्र बषानो। जल स्वरूप भो तासु तनय गुन ग्यान निधानो ॥ तासु बंस में भए मुनिंद्र महोपति जानो प्रगट सालमल द्वोप तासु राजा उर आनो ॥ तिन परसुराम सो युद्ध करि देह छोड़ि सुरपुर गये। मृत भूप भए वहि देस मां सकल उपद्रव बहु भए। दोहा ॥ तब रिषि वत्स विचार गे परसराम के पास। भाष्यो वंस मुनींद्र को किहि बिधि होइ प्रकास ॥

End—कफ को होइ मिजाज जेहि चना देहु तेहि आनि ॥ रक्त मिजाजहि मारही मो अरदाया को आनि ॥ टका तोन परमान सो कम दाना नहिं देइ ॥ टका तीन से के ऊपर दाना अधिक न लेइ ॥ या विधि दाना दोजिए कद अरु भूष निहारि। जासो बाजो लघु रहै लीजै मतो विचारि ॥ सारंगधर अरु नकुल मत सालहोत्र को ग्रंथ। सो विचारि अनुसार मति भाषा कीन्हो ग्रंथ ॥ देषि सरल हरषत सुकवि पल निंदत हैं ताहि। देषि दर्प ज्वर वाचरे कटु कराति है ताहि ॥ सुकवि चतुर तिहुं लोक के तिन सब को सिर नाइ। विनती करत बिनोत है सो सुनि ये चितुलाइ ॥ प्रगट प्रताप सुरावरो मेरी चूक विचारि। वाव दुक तुम आपु हो दीजै ताहि सवारि ॥ सोरठा ॥ पट आनन पद ध्याइ गौरि मंद गिरिजा गिरिस। हरि कुल को सुषदाइ श्रीधर कीन्हो ग्रंथ यह ॥ दोहा ॥ सालहोत्र प्रकासिका पढ़ै सुनै चितुलाइ ॥ बाजी ताके बहुत बढ़े गिरिजा होइ सहाइ ॥ इति श्री सालहोत्र प्रकासिकायां श्रीधर सुकवि विरचितायां ग्रंथ संपूर्णम् सुभ मस्तु मंगलं ॥ दसखत मोहन केर गोधनो गाउं सो जानिये ॥ संवत १९२० मारग मासे कसन पछे तिथैा तीजयां ॥

Subject—इस ग्रंथ में घोड़े की जाति, उत्पत्ति के देश रंग, शुभ अशुभ लक्षण, दोष, रोग, औषधियां सवारी की रीति बैठक, घोड़े के भोजन की रीति, घोड़ा रखने के स्थान, आदि का भली भांति वर्णन किया गया है।

No. 401(*b*). Vidwan Moda Tarangiṇī by Rājā Śrīdhara of Kherī. Substance—Country-made paper. Leaves—136. Size—8 × 6 inches. Lines per page—34. Extent—2,313 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1900 or A. D. 1843. Date of manuscript—Samvat 1910 or A. D. 1853 Place of deposit—Ṭhakurā Maheswara Siṃha, village Dikauliyā, Post Office Biswān, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ विद्वन्मोद तरंगिनी लिख्यते। कवित्त ॥ इतै सीस मुकुट विराजै सीस फूल उतै इतै भाल बेंदि उतै वेंदो है पषान को। इतै श्रुति कुंडल चौवा उतै राजत है इतै वनमाला उतै माला मुक्तान को ॥ इतै पीतपट उतै सारो जरतारी सोहै दोऊ नेह भरे जोरी मानौ एक प्रान को ॥ श्रीधर की वानी बन्दै वर वरदान सदा नंद को किसोर औ किसोरी वृष-भान की ॥ सोरठा ॥ सुवा जानियो नाम वषत सिंह को लघु तनय। द्विज मत लै अभिराम श्रीधर कविता यो कह्यो ॥ दो० ॥ लै कवित सब कविन के निज मति के अनुसार। विद्वन्मोद तरंगिनी सुभ संवत अवतार ॥ प्रथम मंगलाचरन कहि कहौं ग्रंथ को हेत। नवरस यामें कहति हौं समुझो बुद्धि निकेत ॥ कवित्त ॥ कारन भाव कौ भाव को रूप नवोरस पूरन कै दरसायो। नायका दूती रसौ मिलि जात इन्है करि न्यारोई भेदवतायो ॥ जन्म विता अवरोध विरोध औ दृष्टि सवै रस भांति जनायो ॥ विद्वनमोद तरंगिनी श्रीधर आनद षानि वषानि बनायो ॥

End—दोहा ॥ एक बिनती मैं करत हौं कविजन सों करजोर। बिगरो बरन संभारियो मोहि न दीजो षोरि ॥ राधिका कृश्न को यामें चरित्र विचित्र महा सुनि रीझि हैं ग्यानो ॥ अंग उमंग समेत न छो रस राजत है अति ही सुष-दानो ॥ विद्वनमोद तरंगिनी श्रीधर आनंदरूप अनूप वषानो ॥ याहि पढ़े गुन आनंद कीरति बुद्धि औ सिद्धि मिलै मनमानो ॥ कुंडलिया छंद ॥ कविता या में लसत है सत कवि को अति चारु। विद्वनमोद तरंगिनी करो कंठ को हार ॥ करो कंठ को हार चारु श्रीधर कवि वानी। सब अंगन तें सदा विराजत है मन हरनी ॥ हरनी दुष अरु दोष तिमिरि कोर जैसे सविता। याको पढ़ि विश्राम लोग करि हैं वर कविता ॥ दो० ॥ नव रस जल मो उंस लहरि भाव भंवर से जानि। विद्वनमोद तरंगिनी श्रीधर कहो वषानि ॥ भाव उदै आदिक कह्यो अभिमुष आदिक जानि। यासो रहो तरंग में श्रीधर कह्यो बषानि ॥ इति श्री श्रीधर कवि विरचितायां विद्वनमोद तरंगिनी ग्रंथ सम्पूरन ॥ मासे अगहन मासे कृश्न पक्षे तिथौ नवमीयां बुद्धवासरे संवत १९०० लिषतं मोहनलाल शुक्ल संवत १९१० ॥

Subject—इस ग्रंथ में नवरस भाव विभाव नायका नायक भेद और लक्षण वर्णन कहे गये हैं।

No. 402. Sūrśataka Purvardha 'Tīkā' by Śrīdhara of Benares. Substance—Country made paper. Leaves 34. Size—12 × 6 inches. Lines per page—41. Extent—748 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old, Written in Prose and

Verse. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1882 or A. D. 1825. Date of manuscript—Saṃvat 1921 or A.D. 1864. Place of deposit—Paṇdita Rāma Shaṇkara Vājpai Village Bahori ka Vajpai ka Purwā, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गोपीवल्लभायनमः ॥ सूरदास जी का कूट लिष्यते ॥ श्री गणेशायनमः ॥ अथ सूरदास जी के कोर्तननि को संग्रह करिवे को प्रथम मंगलाचरन ॥ दोहा ॥ श्रीवल्लभ विट्ठल वदत वंदत विसद विचार। बढ़त सुविघा वुद्धिवल विनसत विकट विकार ॥ १ ॥ यह संसार असार में हरि कोर्तन सुषसार। कहत करन सब अजहुं लौ वड़े अवर विसार ॥ उपकारक हैं सबन के हेतु अर्थ समुझाय। ताते गाये भक्त जन भाषा सरल सुभाय ॥ सूरदास तिन में भए जगत जात ज्यों सूर। गायो सब विधि कर सुजस हरि लीला रस पूर ॥ जिनके पद में गूढ़ बहु अर्थ भाव रस व्यंग। सूझ परै जेते तिते संग्रह कियो सुसंग ॥ श्रीमत श्रीगोपाल सुत श्री श्रीधर सुष दाय। जिनकी आज्ञा ते कियो भाग नगर में चाय। वान्न कृष्ण की वीनती सुनिये रसिक सुपंथ। लीजै सुमति सुधारि कै सूर शतक यह ग्रंथ ॥

End—राग नट ॥ मूल ॥ सुनरी हरिपति आजु विराजैं ॥ हरि गति चलत मंद भयो हरिवन वलकरि हरिदल साजे। हरि की चाल चलो चंचल गति हरि को हरि दुष छाजे ॥ सूरदास हरि को भज इक छिन विरह ताप तन भ्राजे ॥ अर्थ ॥ माननी नायका सों दूती की उक्ति मनाय के पधराय ले जात हैं ता समय को वरनत है ॥ सुनिरी हरि तेरे पति आज विराजे हैं संकेत में अथवा हरि जो मृग तेरे नेत्र तिनके पति चन्द्रमा सो प्रियतम को श्रीमुष आज विराजे हैं ॥ प्रसन्नता सों ताते नेत्र को मिलावो। हरि गज को मंद गति चलत विलंव होत है हरि जो सूर्य को वल मंद भयो अस्त भयो वल करि के हरि जो इन्द्र ताको दल मेघन को घटा होय आयो ताते उतावल सो चलिवे को समय है अथवा सूर्य अस्त भयो अब हरि जो काम देवता को दल चन्द्रोदय पुष्पन को विकास त्रिविधि पवनादिक सब सज भये ताते वेग चलो ॥ अथवा तिहारे मनावत तो विलंव भयो अब चलिवे मेहू विलंव होत हरि जो चन्द्रमा सो मंद भयो और हरि जो सूर्य ताको वल अरुनोदय की विरियां भई ताते वेगि चलौ ताते अव हरि हस्ती की गति चंचलताई से चलौ ॥ अथवा हरि जो सर्प सो सर्प को परियाय दूसरो नाम उतावल को है सो उतावल सो चलो अथवा हरि जो पवन सो ताको तो पवन को नाई चलनो चाहिए ॥ काहेते जो हरि प्रियतम को हरि जो काम

ताको दुष है ताते अथवा हरि को दुष है सो तुम चलिके हरै। ॥ हरि जो प्रियतम तिनके तिहारे भजतें सुरति किया तें विरह ताप तन के सब भाजेंगे ॥ ताते वेगि चलै अथवा सूरदास जी कहते हैं यह जो हरि जू के मान प्रसंग को लोला को भजन इक छिन किए ते विरह ताप तन का भाजै ॥ इति शूर शतक को पूर्वार्ध संपूरन ॥ यह इतिहास सब पद को अर्थ भयो सुषदाय श्री गिरिधर महराज को अमित कृपा बलपाय संवत अष्टादस शतक अस्सो पर द्वै लेष मार्ग शिर वदि सप्तमी कवि कविता पथ देषि ॥ संवत १८८२ ॥

Subject—इस सूर शतक पूर्वार्ध में श्री श्रीधर महाराज ने सूरदास कृत कूट राग की टीका की है जिससे भली प्रकार पदों के अर्थ समझ में आ जाते हैं।

No. 403. Brahamavaivarta Purāna by Śri Govinda. Substance—Country-made paper. Leaves—33. Size—9 × 5 inches. Lines per page—14. Extent—280 Anushṭup Slokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1867 or A.D.1810. Date of manuscript—Samvat 1952 or 1895 A.D. Place of deposit—Paṇdita Bhagwān Dīnajī Miśra Vaidya, Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ ब्रह्मवैवर्त्त लिष्यते ॥ षट पद ॥ गैारीनंद यश अलंकार कविता युवती को राज अर्थ असि उक्ति वश्य कीन्हो जिन नीको ॥ यक्त ग्रंथ विच वोच फिरत जेहि दैाड़ि नाम को ॥ तारि कोश कारक सो रहत कर सिद्धि धाम को ॥ जन जब गोविन्द मन कर्म वचन पंकज पद निज हिय धरत ॥ तब सगुण पानि निदान जगशो इकलिद तिनकर परत ॥१॥ कृपा अम्ब अवलंब आसकलि रलि विकशित कर। करण घ्राण लहि सुरभि ताहि तन विकुच करसि वर ॥ यथा ॥ तथ्य सब निरषि पाइ हरि रूप जानि करि ॥ मेधा वरकर भान पदारथ पर्म पाइ धरि ॥ मृगमद विशाल राधारमण दुर्ज्ज हृदै मम तव धरिय ॥ तेहि सुरभि उदै अस्ताचल पिदिविभूतल वासित करिय ॥ २ ॥ छंद भुजंगप्रयात ॥ सुधो देवो पद्मालया चारु सोहैं ॥ पदाब्जैं लसैं भृंग नेत्राभि मोहैं ॥ महामोह विध्वंश कै ध्यान मानो ॥ किधैां ईश है कै जगदोश जानो ॥ ३ ॥

End—नंद अनंदहिं पाइ पाइ सुत गोविंद श्री माधाराा। विप्र बृंद सब पूजि पूजि कै दोन्हें दान अपारा ॥ ४२ ॥ मन हरन ॥ सुनत जगत ईश कनक अशन करि काम धुक काम तरु मग पशु जानियो ॥ सूरतपि विधि द्विज रूप धरिउ चितामनि माजिपरी श्रोव हरि सब सुख दानियो ॥ विष्णु लक्षि हिय

धरि सागर निवाश करि सागर उदर ताप अति दुख दानिये ॥ दानि वराइ लाज पाइ करि यह गतिदान प्रमान का विधि वषानिये ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ भइ अकाश-बानी बहुरि कंशकाल बृजराखि ॥ कन्या नंदहि आनि वसु दई आपनो भाषि ॥ ४४ ॥ इह्ला ॥ नंद नंद सुन्यो । नृप सोस धुन्यो ॥ जोवको पठई । क्षण माह हई ॥ ४५ ॥ इति श्री गोविंद विरचिते राधाकृष्ण विनोदे राधाकृष्ण जन्म वर्नेनो नाम तृतीयो सर्गः ॥ ३ ॥ वैब्रवैवर्त पूर्वोद्धोत्तरस्य गोलोक कथा प्रसंग सम्पूर्णम भाद्रकृष्ण तिथैा २ सेबा ॥ संवत १९५२ लिखित्वा शिवगल द्विजे न वासस्थान थहेल्या पाठनार्थे रामविलास मिश्र वासस्थान व्रह्माइच चैाक बाजार के द्वारा ॥ राम राम ॥

पृ० १—१२ तक—पुस्तक का नाम, कविका श्री कृष्ण राधिका से प्रार्थना करना, निर्माण संवत व ईश्वर की महिमा का वर्णन, पुनः श्री कृष्ण की महिमा आदि का वर्णन किया है । पृ० १३—२३ तक—पृथ्वी पर अधिक पाप होने के कारण पृथ्वी का गाय रूप में भगवान के निकट जाकर प्रार्थना करना, प्रार्थना पर भगवान का पृथ्वी को धोरज बंधाना, जन्म लेकर पृथ्वी का भार उतारने का वचन देना आदि वर्णन किया है । पृ० २४—३३ तक—श्री कृष्ण राधिका का जन्म ग्रोर उनके विहार तथा आनंद का वर्णन किया गया है । इसमें कृष्ण का जन्म ग्रोर कृष्ण का राक्षसों को मारना, कंस को मारना, भक्तों को रक्षा करना, लिखने का संवत ग्रोर लेखक का नाम आदि वर्णन है ।

No. 404(*a*). Kavya Saroja by Srīpati of Kālpi. Substance—New paper. Leaves—66. Size—13 × 8 inches, Lines per page—28. Extent—790 Anushṭup Slokas. Incomplete. Appearance.Old--Character— Nāgari. Date of Composition—Samvat 1777 or A.D. 1720. Date of manuscript—Samvat 1943 or A.D. 1886. Place of deposit—Paṇḍita Kṛishnabihari Miśra, Editor, Sāmālochaka, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ काव्य सराेज लिख्यते सोरठा ॥ लसत वाल विधु भाल अरुन वसन मनिमाल उर । शंकर सुवन दयाल वंदत पद सुर असुर नित ॥ १ ॥ सेवक जन प्रतिपाल, एक रदन वारन वदन । बिघन हरन ततकाल, बिपति कदन मंगन सदन ॥ २ दोहा ॥ अलिसम स्वाद महान कैा जासों सुख सरसाइ । रचत काव्य सराेज सो स्रोपति पंडित राय ॥ ३ ॥ निर्माण काल संवत मुनि मुनि मनि ससी, सावन सुभ बुधवार । असित पंचमी कैां लियो लसित ग्रंथ अवतार ॥ ४ ॥ सु कवि कालपी नगर कैा द्विज मनि स्रोपति राइ । जस सम स्वाद जहान को बरनत सुख समुदाइ ॥ ५ ॥

End—अथ वीर रस विभाव—युद्ध दान अरु लघु दया बढ़ै जबै उत्साह। है विभाव रस वीर को प्रगट करै कवि नाह ॥ २० ॥ वीर युद्ध रसालंवन युद्ध कौं रावन आवत है जो सदा मुनि देवन कौं दुखदायक। जंम अराति कौं दंभ दलै। सुर बानर नाहि सकै सहि सायक ॥ पूछि मरोरि विलोकि भुजा निज माधुरी हास हंसो रघुनायक ॥ २१ ॥ मघवा रिपु को रन आवत हो वर वंव प्रलय बहरान लगो। जितनो तित भागि चले कपि कायर गातन में थहरान लगो। कवि श्री पतिजू उत्साह नदी हिय लच्छन के थहरान लगो। डगरे डग केहरि के अनुहारि सुमुच्छ यहां फहरान लगो ॥ २२

Subject—वंदना, कवि वर्णन, काव्य लक्षण, उत्तम काव्य, मध्यम काव्य, अधम काव्य, वाच्य चित्र वर्णन। पृ० १—४ तक शब्द निरूपण, वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ लक्षण सभेद, व्यंग सभेद, वाच्य सभेद, काकु, व्यंग के अन्य भेद, दोष वर्णन। अनर्थ, श्रुति कटु, गनागन विचार, यति भंग व्याहतार्थ, अप्रयुक्त, असमर्थ, उपहत, ग्राम्य, असंमत, भाषाच्युत, प्रतिकूल वर्ण। पृ० ५—२० तक। अर्थ दोष वर्णन तथा दोष निवारण। पृ० २१—३२ तक काव्य गुण कथन, अर्थगुन वर्णन, श्लेष, प्रसाद, ओज वर्णन, अलंकार वर्णन। पृ० ३३—५९ तक। रस—निरूपण। पृ० ६०—६५ तक।

No. 404(*b*). Kāvya Saroja by Srīpati of Kālapi. Substance—Country-made paper. Leaves—34. Size—12 × 6 inches. Lines per page—56. Extent—1,666 Anushṭup Slokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1777 or A.D. 1720. Place of deposit—Thākura Bīra Simha, Village Bhudarā, Post Office Biswān, District Sītāpur (Oudh).

No. 404(*c*). Kāvyasudhākara by Srīpati of Kālapī. Substance—Country-made paper. Leaves—15. Size—9 × 4 inches. Lines per page—14. Extent—200 Anushṭup Slokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1777 or A.D. 1720. Place of deposit—Rājapustakālaya Bhinagā (Bahraich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ स्याम स्याम अमर विटप श्री गुरु पद जलजात। जांचत द्विज श्रीपति सुकवि देहु सुमति अवदात ॥ १ ॥ सवैया ॥ नेम विना निति आनन्द में परतंत्र नहीं कछु पार न पावै। नौ रस

यामें सबै मधुरे द्विज श्रीपति चाहि कहा जस गावै ॥ नेमुक नाहि डरै जम सों इन भांतिन के गुन केते गनावै। वानो मई तिहुंलोक रच्यौ कविराज विरंचि कौं सीस नवावै ॥ २ ॥ कवित किए तें पाइयतु परम सुजस धनमान। रोगन सें अरु दुखन सों कहै सबै मति मान। ३। केसव अरु गंगादि को सुजस रह्यौ जग छाय। यों बैरम सुततें लह्यौ धन मुकुंद कवि राय ॥ ४ ॥ अकबर वरु दिल्लीस तें पायो मान अनूप। ब्यालहि में तब ह्वै गयो सुकवि वीर वर भूप ॥ ५ ॥ जगन्नाथ तें ज्यों नस्यौ कवि दिनेस को रोग। मनीराम ज्यायो तनय जानत सिगरे लोग ॥ ६ ॥

End—दोहा—रसिक चकोरन कहं बढ़ै याते परम हुलास। काव्य सुधाकर रचित सो श्रीपति सुमति निवास ॥

भरत विबुध नर हनत दरिद दर, मिटत कलुष जर डरत असम शर। लसत गरल गर भरत कनक भर, सुजस धरनि तर रटत कुलिस कर ॥ दहत बिरह थर रहत निगम कर लहत सुमति धर सतत कहत हर ॥

दोहा ॥ जमक लेष अरु चित्र महं कहुं धुनि के कन होत। सबै वहर महं अधम है कवि कोविद उद्योत ॥ मेरे मत श्लेष में कहुं अपर धुनि होय। ताकों दरसै हौं सबै सहित ग्रंथ कवि लोय ॥ तामें मध्यम भेद है कहुं श्लेष देखाय। उत्तम भेदन ह्वै सकै कहैं महा कविराय ॥ कवित निरूपन पट कह्यो श्रीपति सुमति निवास। काव्य सुधाकर महं भई पहिलो कला प्रकास ॥ इति श्री काव्य सुधाकरे निरूपनं समाप्तम् ॥ इति ॥

Subject—प्रार्थना, कविता की महत्ता व कवियों का उत्कर्ष वर्णन। पृ० १। काव्य गुण तथा कवि वंशादि वर्णन—पृ० २—३ तक। काव्य लक्षण, काव्य शक्ति—पृ० ४ उत्तम काव्य लक्षण, उदाहरण, मध्यम काव्य लक्षण व उदाहरण तथा अति काव्य मध्यम लक्षण व उदाहरण पृ० ५-६। मध्यम काव्य लक्षण व उदाहरण अधम काव्य लक्षण व उदाहरण—पृ० ७। अल्प मध्यम काव्य लक्षण व उदाहरण व उत्तम काव्य कथन—पृ० ८। अनुप्रास लक्षण व उदाहरण व उपपतिकादि उदाहरण—पृ० ९—१०। यमक लक्षण व उदाहरण, श्लेष लक्षण व उदाहरण। पृ० ११—चित्र काव्य सभेद। उदाहरण सहित—पृ० १२—१३ अतत्पर लक्षण, षोड़स दल चित्र काव्य तथा अधम काव्य वर्णन। पृ० १४—१५ तक।

No. 405. Śringāra Saurabha by Śri Rāma Bhatta. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—$11\frac{1}{2} \times 7\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—32. Extent—432 Anushṭup Slokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—

Samvat 1942 or A.D. 1885. Place of deposit—Pandita Syamabihāri Miśra, Golāganja, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शृंगार सौरभ ग्रंथ लिख्यते ॥ मंगलाचरण कवित्त ॥ वृन्दा राजरानी आदि शक्ति जग जानी जहां अदब सों दबो सिद्धि संघनि हदीश को । दासी हेरे मासी औा उमा सी है खवासी खासी पावत न जान जहां मनहू सचीस को ॥ वायें कर वोर और दाहिने नवीन बर कोटि मारतंड कैा प्रकास नख वोस कौ । वात वारि जात नव पात पारिजात पदजात नित ईश को कि सीस जगदीस को ॥ १ ॥

दोहा—कही नायका नारिसों सुन्दर सुखद उदार । पिय हित रचति प्रवीनता रिझवावति रिझवार ॥ २ ॥ उदाहरण—लागत समीर लंक लचकि लचकि जात ललकि ललकि जात नजर निपाती है । विपुल नितंवन को उरज उतंगन को सिरज कदंवन को छवि छहराती है । रामजी सुकवि अरविंद में मलिंद सम लोयन को बंदि बंदि मीन मुरझाती है । बनी बनितान में मसाल सी विशाल बाल आर सकुचाती परी बातासों दिखाती है ॥

End—अथ परकीया आगतपतिका को उदाहरण । बेलि मनोहर चंपक की अरु काम के कंबुक के तुलही है ॥ स्वांस समीर लगै लचकै करि ब्रह्म सयान कवीन कही है ॥ बाल अटा प चढ़ी मग देखत त्यों उचकी कुचकी सुलही है । वायस बोलि परोस गयौ मन ही मन आनंद सो उमही है ॥ ६३ अथ सामान्य आगतपतिका को उदाहरण—अंगिया दरकी हरषी मन में लरकी लर मोतिन जालन की । .... हकी सहकी कुचहू बहकी गति जासु मरालन की ॥ .... मोतिन के जालन गुंफित मालनदी है लालन की ॥ .... उमगी उमगै भरि है मनकी गति .... ६४ ॥ इति श्री रामजी भट्ट विरचिते शृंगार सैारभे दस अवस्था भेद वर्णन नाम पंचमस्तरंगः समाप्तं ॥ शुभ मस्तु ॥ श्री संवत् १९४२ आषाढ़ मास कृष्ण पक्षे तिथैा चतुर्दश्यां शनिवासरे लिखित मिदं पुस्तकं बलदेव मिश्रेण श्रीमान मिश्र युगल किशोरस्यार्थं गंधावली स्थानेषु ॥ श्री कृष्णायनमः ॥

Subject—मंगलाचरण, नायिका वर्णन, स्वकीया भेद, मुग्धा अज्ञात यैावना, ज्ञात यैावना, नवोढ़ा और विश्रब्ध नवोढ़ा वर्णन । छ० १-१३ तक ।

वयःसंधि वर्णन, मध्या वर्णन, प्रौढ़ा वर्णन, प्रौढ़ा विपरीत रति व सुरत वर्णन । धीराधीरादि भेद वर्णन । छन्द—१४—३९ तक । परकीया वर्णन । ऊढ़ा, अनूढ़ा, गुप्ता कुलटा, लक्षिता, अनुशयना, मुदिता, विदग्धा सभेद, स्वयं दूतिका वर्णन छन्द ४०—७० तक ।

गर्विता सभेद । मानवती सभेद, अन्य संभोग दुःखिता, स्वकीया, परकीया और सामान्या वर्णन । छन्द ७१—८४ । अष्ट नायका भेद वर्णन—छन्द ८५—१४८ तक ।

इति ।

No. 406. Biharīsatsaī with Tīkā Anawar Chandrika by Subha Karana of Delhi. Substance—Country-made paper. Leaves—98. Size—9 × 5 inches. Lines per page—25. Extent—1,980 Anushtup Slokas. Appearance—New. Character—Nāgarī Date of Composition—Samvat 1771 or A.D. 1714. Date of manuscript—Samvat 1855 or A. D. 1798. Place of deposit—Pandita Śrīpāla, Village Khajurī, Post Office Gourīganja, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अनवर चंद्रिका लिष्यते ॥ प्रभु वंश वर्णन ॥ भनि सत्र फुल्लह साहि साहि सर पुद्दो जानो । साल्लह साहि सुजान साह असगर पहचानो ॥ अनवर साहि समत्थ मुनवर साहि परथसम ॥ हासम साहि प्रचंड साह कासम जु अनुपम । कहि किसवर साह बिलंव दल कैसर साहि सुजान चित ॥ पुनि मालिक अजदर साह हुव कुल मंडन जस किय अमित ॥ २ ॥ अमित तपावर चलन हुव जाहिर सब जगजानि । गरदेजी यह ख्याति जुत वूसफ साहि बखानि । ईसफ साहि बखानि सकल गुन गन जो जानै ॥ विदित विलाइत सोल समुद्रत्यैां पांहिचानै ॥ पांहिचानै वहु दिनन कवरते करन करौ नित लसत थान लुलतान भान सम सोहै जो अमित । अमित सोल मैं अकबर सुअमर साह हुअ पुनि अवदुल्ला साह । साहि अवदुला हाउ गनि साहि फरीद सुजान । सैद खाँ सुभट सिरोमनि, पुनि सैद मुवारिक खाँ प्रवल, तनय सैद साला अवनि पुनि सैद मुसताक जस जलधि सुत ससि अनवर खान भनि ॥ + + + + +

दोहा—ससि रिखि रिखि ससि लिखि लिख्यो । सम्बत् सबस विलास । जामें अनवर चंद्रिका कीन्यो विमल विकास ॥

End—चले जाहु ह्याँ को करत, हाथिन को व्योपार । नहिं जानत इहि पुर बसत, धोवी अेांढ़ कुम्हार ॥ विषय विषादिक की तृषा जिये मतीरन सोधि । अमित अपार अगाध जल, मास मूड़ पयोधि ॥ यहि देही मोती सुगथ तुअनथ गरव बिसाक, जिहि पहिरे जग दृग कसत लसति हंसति सी नाक ॥ इति अत्युक्ति ॥ इति विहारी सतसैयायां टीका समाप्तम् ॥ सम्बत् १८५५ वैसाख सुदी २ शुभम् भूयात् ॥

Subject—(१) पृ० ४ तक—प्र० प्रकाश, प्रभुवंस वर्णन ।
(२) १०वें तक—द्वि० प्रकाश—साधारण नायिका वर्णन ।
(३) २४वें तक—तृ० „ नख शिख वर्णन ।
(४) २६वें तक—च० „ मुग्धादि त्रिविध नायिका ।
(५) ४२वें तक—पं० „ दश विधि नायिका वर्णन ।
(६) ४३वें तक—ष० „ प्रेम प्रशंसा ।
(७) ५०वें तक—स० „ मानिनी वर्णन ।
(८) ५२वें तक—अ० „ सुरत सुरतांत वर्णन ।
(९) ९८वें तक—अंतिम प्रकाश गणना रहित—विविध विषय, रस हाव-भाव तथा ऋतु इत्यादि वर्णन ।

Subject—यह पुस्तक विहारी सतसई नामक अद्वितीय शृंगार ग्रंथ की टीका है। जो अनवर खां के नाम निर्माण की गई है। प्रारंभ मे ही प्रभुवंश वर्णन किया गया है जो प्रगट करता है कि यह कवि सं० १७७१ में दिल्ली दर्वार के आश्रित थे।

No. 407. Sudāmā kī Bāraha Kharī by Sudāmā. Substance—Country-made paper. Leaves—9. Size—6 × 4 inches. Lines per page—18. Extent—55 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Kaithī. Date of manuscript—Samvat 1880 or A.D. 1823. Place of deposit—Ṭhakura Ayodhyā Simha, Village Sadarapur, Post Office Gārāpur, paraganā Chāndā, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—कक्का कलजुग नाम अधारा। प्रभु सुमिरत भव उतरे पारा ॥ साधु संग करि हरि रस पाजै ॥ जीवन जन्म सुफल कर लीजै ॥ षषा जो सकल जहाना ॥ जाको गावै वेद पुराना ॥ निरभय नाम हरि को लीजै ॥ चरन कमल को ध्यान धरीजै ॥ गंगा गुन गोविंद के गावै। माया जास भूलि जनि जावै ॥ धन जोवन तन रंग पतंगा ॥ छिन में छार होए यह अंगा ॥ ३ ॥

End—हहा हरि गुन गाये पाप गोकुल आप ॥ श्री गुरुचरन कमल परतापु ॥ जैसे द्वंद चहूंदिसि घेरा ॥ प्रगट भान तब भयो उजेरा ॥ ३ ॥ लेने को हरि को नामा ॥ देने को नहि आन समाना ॥ ३४ ॥ छाड़ो जो विष बंधन चहोये ॥ सत गुरु चरन सरन होए रहोए ॥ नाम मधुर रस पीवो सुजाना ॥ गर्भ वास नहिं होए पयाना ॥ बारा खड़ी ग्यान गुन गाउ ॥ दास सुदामा दीन प्रति गावै ॥ गुरु देव चरन चीत लावै ॥ ३६ ॥ इति श्री सुदामा कृत बाराखड़ी संपूरन समापत ॥

Subject—पृ० १—९ तक—ककार से लेकर हकार तक क्रमानुसार छन्दों के आदि में अक्षरों का आना और प्रत्येक छन्द में ईश्वर भक्ति का ही कुछ न कुछ वर्णन।

No. 408. Ekādaśī Mahātmya by Sudarśana of Ambu. Substance--Country-made paper. Leaves--300. Size--12 × 4½ inches. Lines per page--7. Extent—2,494 Anushṭup Ślokas. Appearance--New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1770 or A.D. 1713 Date of manuscript--Samvat 1922 or A.D. 1865. Place of deposit—Munsī Rāmajiāwana Lāla, Teacher, Town School, Fatehpur, Bārā-bankī (Oudh).

Beginning—श्री गनेशायनमः ॥ अथ लीषते येकादसी महत्तम ॥ दोहा ॥ कृपा करी रघुवीर जब तब कवि किया विचार ॥ किया महातम एकादसी रचि भाषा संसार ॥ × × × × मारग यह सुरलोक को कथा सुनै नर जोइ ॥ गंगतीर को भजत है दरसन को चित होइ ॥ चौ० ॥ प्रथमहि भजो मातु मैं गंगा ॥ जेहि सुमिरे उपजै मति अंगा ॥ जे नर बसहिं गंग के तीरा ॥ ते बैकुंठ बसहिं बलबीरा ॥ येक चित होइ गंग अन्हावै ॥ ते नर सबै पदारथ पावै। धरै ध्यान गंगा को जोई ॥ सो नर दुषित कबहु न होई ॥ जो मानुष जग में चतुरंगा ॥ ते असनान करहिं नित गंगा ॥ तिन के कलिमष होइ बिनासा ॥ ते नर सुरपुर पावहि बासा ॥ जे नर पीवहिं गंग को नीरा ॥ तिन के रोग न रहै सरीरा ॥ ते नर बहु विधि रहै अनंदा ॥ तिनके वदियहि जस चंदा ॥ जे नर दूरि देस ते आवहिं ॥ मनो कामना ते नर पावहिं ॥ दोहा ॥ अंग बोरहिं जे गंग मह ते नर चतुर सुजान ॥ आगे कथा प्रसंग में सुनहु लोग दै कान ॥ जे नर निंदा गंग की करहीं ॥ सात जन्म कुष्टी अवतरहीं ॥ जे नर हंसहि गंग के जल को ॥ ते नर सदा दुषित यहि तन को ॥ × × × × ×

End—दान पुन्य तब नृप करी विधि समेत नृप सोइ ॥ जै जै जै जै सब करैं रंग रंग नित होइ ॥ चौ० ॥ कहेउ उमा तब बात बिचारी ॥ बात हमारि सुनहु त्रिपुरारी ॥ जैसेव अरु प्रभावति नारी ॥ केहि विधि मुक्ति डगर सिधारी ॥ भये परम पद के अधिकारी ॥ काल पाइ ते डगर संभारी ॥ मुक्ति मय सो होइगे कैसे ॥ बिस्नु सरूप बरनन जैसे ॥ येकादसी है मुक्ति को दाता ॥ पारबती सुनु ऐसी बाता ॥ बीरभद्र नृप सो करई ॥ रघुपति भक्ति हृदय में धरई ॥ बन में नृपति सिधारन कीन्हा ॥ राजा पुत्र इक सुन्दर दीन्हा ॥ नारद कल्प की कथा पुनीता ॥ पारबती सुनि भई सुचीता ॥ दोहा ॥ एकादसी ब्रत ऐसा जो कोइ करै सुजान ॥

मुक्ति पदारथ पावै सो बैकुंठ समान ॥ सुनै। लोग दै कान वृत्त यह करै। येका-दसि। पावै पद निर्वान सुष संपति श्रै। जस मिलै ॥ इति श्री नारद पुरान कथा एकादशी महात्म्य समाप्तम ॥ (लिखिते दीन भगत)। दोहा ॥ श्रीगुरु संभु प्रताप पोथी भई तयार। जो जस देषा तस लिषा दोष न देव हमार ॥ मिति कुवार सुदी ४ वार इतवार ॥ सन् १२७३ ॥ संवत् १९२२ ॥

Subject—पृ० १—३ तक—ग्रंथ निर्माण कालः—"सत्रह सै सत्तरि संवत भे संसार। भादो सुकुल सोवार को कथा लीन अवतार"—गंगा महात्म्य तथा उत्पत्ति। (२) पृ० ४—५ तक—कवि के नगर आदि का वर्णन। "अंबू नगर ग्राम को नाऊ ॥ सुदरस कवि बसै तेहि ठाऊं ॥ इत गंगा उत जमुन बहाई ॥ अंतरवेद सुदरसन रहई ॥

"असो तेज नरेस को बसै सब सध देस ॥ नाम तै। रामगुलाम है तेज स्वासि नरेस" ॥

(३) पृ० ५—२८ तक—अगहन शुक्ल एकादशी की उत्पत्ति, अर्जुन कृष्ण संवाद, मुर राक्षसी द्वारा देवताओं को कष्ट, देवताओं का भाग कर विष्णु के पास जाना, देवासुर संग्राम, सुरों की पराजय, विष्णु का गुफा में छिपना, स्त्री का गुफा से निकलना, राक्षस को मारना। विष्णु का अचंभा, उसका नामादि पूछना, एकादशी का सब वृतान्त कथन। विष्णु का वर देना। (४ पृ० २०—३० तक—एकादशी अगहन कृष्ण पक्ष की उत्पत्ति वर्णन। हैहय देश के राजा का स्वप्न में अपने पिता को नरक में देखना, मुनि द्वारा इसका कारण जानकर एका-दशी (अगहन कृष्ण) का व्रत करके उन्हे सुरपुर भेजवाना। (५) पृ० ३७—४४ तक—माघ की एकादशी व्रत का फल उसकी उत्पत्ति का इतिहास, पंचावती के महाजोत नामक राजा के पुत्र लम्बु का ज्वारी होना, पिता द्वारा उसका निकाला जाना। दशमी तथा एकादशी के दिन भूखा पड़े रहने पर एकादशी व्रत का फल प्राप्त होना। पिता के पास जाकर राज्याधिकार प्राप्त करना। (६) पृ० ४५ से ५३ तक—पौष शुक्ल एकादशी का फल, व्रत की रीति, चंद्रावतीपुर के सुकृत नामक राजा का पुत्र न होने पर वन को जाना। वहां भूख प्यास से व्याकुल होकर एक तालाब पर निकलना। वहां पर एक बैठे ऋषि के आदेश से व्रत करना और पुत्र पाना।

(७) पृ०—५४—६४ तक—माघ कृष्ण एकादशी के व्रत का नियम, उसका इतिहास—एक ब्राह्मणी की नारायण द्वारा परीक्षा, भिक्षा मांगने पर मिट्टी डालना, उसको स्वर्ग होना, केवल मिट्टी का घर मिलना, पूछने पर नारायण का खाली मकान देने का कारण बताना। किवाड़ देकर नारायण की

आज्ञा से रहना, मुनि नारियों का उसे व्रतदान का फल प्रदान करना, उसके घर में सब कुछ हो जाना।

(८) पृ० ६५—७२ तक—माघ शुक्लपक्ष एकादशी के व्रत का नियम इतिहास—एक गांधर्व का इन्द्र के अखाड़े को पुष्पवती नामवाली अप्सरा पर मोहित होना, इन्द्र के अभिशाप से दोनो का पिशाच पिशाची होना। एकादशी के अज्ञात व्रत से उनका उद्धार।

(९) पृ० ७३—८२ तक—फागुन कृष्ण एकादशी के व्रत का नियम-इतिहास—वगदलभ्म द्वारा एकादशी महात्म्य सुनकर और वैसा ही करने पर राम की विजय का वर्णन।

(१०) पृ० ८३—९४ तक—फागुन शुक्ल एकादशी का नियम इतिहास-मानधाता-वशिष्ठ संवाद—चैतरथ राज के एकादशी व्रत द्वारा एक दुष्ट का तरण, सुरथ नामक एक राजा का एकादशी व्रत के कारण शत्रुओं से बचना।

(११) पृ० ९५—१०५ तक-चैत्र कृष्ण पक्ष की एकादशी व्रत का फल, मानधाता-लोमस संवाद, इतिहास-चैतरथ नृप का वन विहार, उसी वन में मेधावी ऋषि को तपस्या देख कर और इन्द्रासन जाने की आशंका से सुरराज का मंजुघोषा नामक अप्सरा का उसका तप भंग करने को भेजना, कामदेव की सहायता से अप्सरा की सफलता, मुनि के साथ ५७ वर्ष निवास, ज्ञात होने पर स्त्री को मुनि का अभिशाप। एकादशी व्रत से दोनों के कल्मष दूर होकर उद्धार।

(१२) पृ० १०६—११२ तक-चैत्र शुक्ल पक्ष एकादशी, नागपुर के ललित नामक पुरुष का अपनी पत्नी ललिता के एकादशी व्रत कर के उसका फल देने से ललित का शापमोचन और पिशाच से अपना वास्तविक रूप ग्रहण करना, एकादशी व्रत का फल कथन।

(१३) पृ० ११३—१२१ तक-वैसाख कृष्ण एकादशी का फल-इतिहास-लवनपुर के राजा हरिसेन के एक चमार द्वारा एकादशी का फल प्राप्त करने पर एक गदहा बने हुए ब्राह्मण का उद्धार।

(१४) पृ० १२२—१३१ तक—वैसाख शुक्ल पक्ष की एकादशी व्रत का फल, एक सेठ के पापी पुत्र का जुआ इत्यादि कुकर्मों द्वारा घर से निकाला जाना, चोरी करने पर दंड देकर नगर से निकाला जाना। पशु पक्षियों का विनाश करना। कौडिन्य ऋषी द्वारा उसका एकादशी व्रत करके उद्धार होना।

(१५) पृ० १३२—१३८ तक—जेष्ठ कृष्ण पक्ष की एकादशी व्रत का फल-इतिहास-बैंगन की धुआं से एक अप्सरा का विमान नीचे गिरना, दासी जो एकादशी के दिन भूखी रही थी उसके फल से उसका आकाश पर चढ़ना, राजा का एकादशी व्रत नगर के स्त्रियों पुरुषों सहित करना।

(१६) पृ० १३९—१६० तक-जेष्ट शुक्ल पक्ष एकादशी महात्म्य, इन्द्र के शाप से एक गंधर्व का जिन्द होना, एकादशी व्रत का महात्म्य सुनकर उसका आचरण करने पर एक राजा का पुत्र होना। उस पुत्र का बड़ा होकर नन्दन वन को जाना, वहां जिन्द का उससे चिपट जाना, घर आने पर एकादशी व्रत का फल पाने पर उसका उद्धार।

(१७) पृ० १६१—१६७ तक-आषाढ़ कृष्ण पक्ष की एकादशी। एक ब्राह्मण का कुबेर के अभिशाप से कुष्टी होना और मारकंडेय ऋषि द्वारा आषाढ़ एकादशी व्रत द्वारा उसका उद्धार, व्रत फल।

(१८) पृ० १६८—१७४ तक-आषाढ़ शुक्ल प० एकादशी—इस व्रत द्वारा राजा वलि को जो पाताल लोक के राजा वन गये थे—का नित्य ही भगवान के दर्शन पाना। व्रत का फल।

(१९) पृ० १७५—१७८-श्रावण कृष्ण एकादशी व्रत का फल। ब्रह्मा द्वारा नारद को बोध।

(२०) पृ० १७९—१८६ तक-श्रावण शुक्लपक्ष की एकादशी व्रत का महात्म्य, द्वापर में महिषामती नगर के महीजीत नामक राजा का इस व्रत को करके पुत्र प्राप्त करना।

(२१) पृ० १८७—१९२ तक-भाद्र कृष्णपक्ष की एकादशी के व्रत का फल—इस व्रत के फल से राजा हरिश्चन्द्र का मृतक पुत्र जीवित होना।

(२२) पृ० १९३—२०० तक-भाद्र शुक्लपक्ष की एकादशी का फल—एक राजा के नगर में वर्षा न होना, उसका दुःखित होकर नगर परित्याग, वन में ऋषियों का आदेश पाकर एकादशी व्रत द्वारा जल बरसाना।

(२३) पृ० २०१—२०६ तक-आश्विन कृष्ण एकादशी व्रत महात्म्य—महिष-मती के राजा इन्द्रसेन के एकादशी व्रत से उनके नरक में पड़े हुए पिता का उद्धार होना। व्रत का नियम।

(२४) पृ० २०७—२१८ तक—आश्विन शुक्लपक्ष एकादशी व्रत महात्म्य कृष्ण द्वारा युधिष्ठिर से चार प्रकार की मुक्ति का कथन, व्रत के नियम तथा फल।

(२५) पृ० २१९—२३३-कातिक कृष्ण एकादशी व्रत का फल, मुचुकुंद की पुत्री चन्द्रभागा का विवाह सोभन के संग होना, सोभन का ससुराल आगमन, एकादशी व्रत का आना, मुचुकुंद की आज्ञानुसार सब नग्र के साथ इनका भी व्रत होना, जामात्र का मरण होना, राजा का उसकी क्रिया करना, एक ब्राह्मण का तीर्थ को जाना, मार्ग में पड़ने वाले परवत पर सोभन का देखना, व्रत के महात्म्य से उसका राजा होने किन्तु, अरुचि के साथ किये व्रत के फल से उस नग्र के थोड़े दिन रहने की चरचा कर अपनी पत्नी को सूचित करना

पत्नी के एकादशी व्रत के प्रताप से नगर का स्थिर रहना। (२६) पृ० २३४—२३९ तक—कातिक शुक्ल पक्ष को एकादशी का महात्म्य—व्रत के नियम और फल।

(२७) पृ० २४०—२५८ तक—रुक्मांगद चरित्र—सरूपदास विरचित—राजा का व्रत करना, इन्द्र का घबराना, एक मोहनी स्त्री द्वारा राजा को धोखा देकर वन से घर लौटाना, राजा का एक ऊंटनी—जो शापवश इस रूप में परिणत हुई थी—द्वारा सचेत होने पर भी लौटना, मोहिनी द्वारा राजा से एकादशी व्रत फल मांगना अथवा पुत्र का शिर मांगना। राजा का असमंजस, रानी की सम्मति तथा पुत्र की अनुमति से सिर देने को उद्यत होना। ईश्वर का प्रसन्न होकर प्रगट होना, सब नगर सहित राजा का स्वर्गवास। (२८) पृ० २५९–३००–तक—जैदेव की कथा—एक ब्राह्मण की तपस्या द्वारा यह वरदान मांगना कि यदि मेरे प्रथम पुत्र अथवा कन्या होगी तो वह आप के अर्पण करूंगा और दूसरे को मैं ग्रहण करूंगा, उसकी मनोकामना पूर्ण होना, पुत्री को लेकर जाना, स्वप्न में ईश्वर का कथन कि वह कन्या जैदेव को दो, जैदेव के न ग्रहण करने पर बरबस कन्या को छोड़ कर ब्राह्मण का चल देना, जयदेव का उसे ग्रहण करना और धन धान्य की इच्छा से किंदविंद के नृपति के पास जाना, चोरों द्वारा उनका अंग भंग, राजा का आकर उन्हें ले जाना, अच्छा होने पर उन्हें दान का कार्य्य सौंपना, एक दिन चोरों का आ जाना उनका भयभीत होना जयदेव का अभयदान, उन्हें बहुत सा द्रव्य देकर विदा करना, उनकी स्त्री प्रभावती की ईश्वर द्वारा भेजी हुई सिद्धियों से रक्षा। चोरों को राजा द्वारा जयदेव का बहुत सा द्रव्य देकर दूतों के साथ विदा करना, घर के पास पहुंच कर चोरों का दूतों द्वारा राजा को संवाद, कि 'वह साधू नहीं है' हमारा साथी चोर है इसी कार्य्य में उसके हाथ पैर कटे हैं, इतना कहते ही चोरों का पृथ्वी में समा जाना, दूतों का जयदेव के पास आकर सब हाल सुनाना, जयदेव के हाथ पैर उगना, संपूर्ण समाचार राजा को ज्ञात होना, राजा का सेवा में उपस्थित होकर विनय पूर्वक सब समाचार जानना, प्रभावती आगमन, राजा का रणक्षेत्र में जाना और जय लाभ करना, सात संतों का युद्ध में मारा जाना और उनकी स्त्रियों का सती होना, रानियों का यह हाल प्रभावती को सुनाना, उसका कहना कि इससे क्या लाभ, रानियों द्वारा प्रभावती की जांच। जयदेव का सर्प से डसे जाने का मिथ्या समाचार, उसका सब समाचार जानकर मिथ्या बताना। रानी द्वारा दूसरा धोखा कि जयदेव की मृत्यु हो गई, यह सुनकर प्रभावती का शरीर त्याग। रानी का खेद, राजा को सब समाचार सुनाना। राजा का जयदेव से सब समाचार सुनाना, राजा का जयदेव से सब वृतान्त कहना; जयदेव का कथन कि अच्छा हुआ रघुवीर के पास गई, इसपर राजा का आग्रह, प्रभावती का

जीवित होना, एक मेले में राजा के साथ जयदेव का जाना, मेले में उनका खोजाना, द्रव्य लोलुपों द्वारा उनका पकड़ा जाना, उनके मारने का इरादा जान कर जयदेव का प्रश्न कि तुम लोग मुझे क्यों मारना चाहते हो। चोरों का कथन कि द्रव्य लाभ हेतु, जयदेव का शीस झुका देना, ईश्वर द्वारा लोगों का मत पलट जाना, जयदेव को छोड़ देना, राजा से उनका मिलना, राजा का सब समाचार जानकर खेद करना, घर लौटना, जयदेव से प्रभावती की पुत्र—इच्छा प्रकट करना, जयदेव का उसे एकादशी व्रत का उपदेश "गंगा उत्पत्ति का कारण" ब्रह्मा द्वारा नारद को बतलाया जाना, और एकादशी महात्म्य वर्णन—मनसुखदास कृत भक्त माल (कुछ अजामिलादि के तरण का बहुत ही सूक्ष्म वर्णन, अथवा नाम गिनाना) वर्णन। ग्रंथ समाप्ति।

No. 409. Bhishaja Priyā by Sudaraśana Vaidya of Hamirpur. Substance--Country-made paper. Leaves--166. Size--7½×5½ inches. Lines per page—13. Extent--2,160 Anushṭup Ślokas. Appearance--Old. Character--Nāgarī. Date of Composition--Samvat 1729 or A.D. 1672. Date of manuscript--Samvat 1865 or A.D. 1808. Place of deposit--Paṇḍita Rāmādhina Vaidya, District Bārābankī (Oudh).

Beginning—ओं श्री गणेशायनमः ॥ नमः सरस्वतै ॥ अथ भेषज प्रिया लिष्यते ॥ दोहरा। लंबोदर गजमुख सुभग एक रदन जग वंद। विधु-बाल भाल वंदन सुमिरि हे गिरजानंद ॥ १ ॥ दोहरा ॥ धूम्रनयन सुभमति करन हरन दरिद्र समाज। असन वसन धन बुध वरन महादान गजराजि ॥ २ ॥ दोहरा। रिपुमर्दन संकट हरन करन सदा आनन्द। मूषक वाहन दरसते मिटत सकल दुखदंद ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ एक रदन फरसा कर लीन्हे। गज आनन सिंदुर सिर दीन्हे ॥ कुमति हरन शुभ मति बजावत। तुरत प्रवीन बुद्धिवर आवत। ४ ॥ धूप दीप मोदक कर पूजा। विधि वार अस देव न दूजा ॥ प्रथम गणेश पढ़तई जावै ॥ शुभ कारज मंगल त्रिय गावै ॥ ५ ॥ मदन कदन सत गुरु गननायक ॥ अष्ट सिद्धि दाता सुख दायक ॥ जा सेवत निर्धन धन पावत। महादीन को दरिद्र नसावत ॥ ६ भय संकट मह सदा सहायक। अतिवल विक्रम कौतुक लायक ॥ ७ ॥ दोहरा ॥ बानी जू को वदन विधु सुधा अमृत सुषकंद। सिव चकोर जिमि चितु बसत निह कलंक मुष चंद ॥ ८ ॥ दोहरा ॥ रवि प्रताप आनन ससि छवि दामिनि तन हेम। जग जननी तुव दरस को लियो सदा सिव नेम ॥ ९ ॥

End—चित्रिकादि चूर्न कफ हरन ॥ सेंधव लीजिए एक पल दो पल पीपरा मूर ॥ पीपर लीजिये तीन पल चारि तौ वाको मूल ॥ २१ ॥ चित्रक लीजे पंच

पल सुंठी षट पल लेउ ॥ हरै लीजिये सात पल सब चूरन करि देउ ॥ २२ ॥ टंक तीनि प्रमान यह जो रोगी को देइ । भूष अधिक पुनि मल टरैं सुनि भिषज यह भेउ ॥ २३ ॥ वड़वानल चूरनं ॥ अकरकरा केसरि कना लैांग इलाची आनि ॥ पतै चंदन जाइफल सोंठि कंकोल बषानि ॥ २४ ॥ सुमित भाग वोषद सबै अफीम बराबरि जानि ॥ पकत सबै मिलाइ कै चूरन करै। बनाइ ॥ मासो येक प्रमान यह मधु मिलाइ कै षाइ ॥ बाढ़े काम ता पुरुष के बाढ़ै रुचि अधिकाइ ॥ करभादि चूरन वोज अस्थंभन॥ जवाषार साजी को आनि ॥ पाढ़ा चीता कह्यो बषानि ॥ बाइविडंग तासु यह नाउ ॥ पंच लवन पुनि अ नि मिलाइ ॥ पला तगुरु लेइ देवदारु ॥ मोथा बीज कचूर को डारु ॥ इन्द्रजवा आंवरे आनि ॥ २६ ॥ इति श्रीवास्तव्य कायस्थ कुल सुदर्शन वैद्य कृते भिषज प्रिया समाप्तम् ॥ संपूर्णम् ॥ × × × × ×

संवत् १८६५ मितो चैत्र तीज बुधवार के दिन लिखतं ॥

Subject—पृ० १—२५ तक—प्रथम उद्देश्य, वैद्य लक्षण, मंगलाचरण, गणेश तथा सरस्वती वंदना । ग्रंथ निर्माण परिचय, 'नाना मुनि के वचन सुनि ग्रंथ उक्त परगास । गिरधर सुत भेषज प्रिया, भाषा करी विलास ॥ सार सार संग्रह कियो सकल ग्रंथ मति मान । भिषजन को भेषज प्रिया, चित्त सुदर्शन ज्ञान ॥

× × × × × ×

ग्रंथ चतुष्टय । कवि कुल वर्णन :—उत्तर दिशि मिश्रीनगर, कियो वास छवि-लाल । कायस्थ उष्ट प्रसिद्धि घर तिन मैनाम रिसाल ॥ वैद्य वृत्ति तिनकों दई भक्त भवानी जान । मानहि राजा राइ सब सुख काटैं सुभ वान ॥ तब ते उद्यम करत यह बीति गये बहुकाल । पक दिवस पूछन लहे नैन पीछ नृप वाल ॥ विहवल मदिरा पान ते सुधि न रहो मति धीर । अर्क छोर अछन दियो राज रवन गई पीर ॥ वहु कालो मिर्वासपुर घट रवि को मूल । ताके पय अंजन किये गये हगन को सूल ॥ वहु कालो निर्वासपुर तवं ते मदिरा पान को सतकरी पुरषान ॥ अब याको संग्रह कियो बुद्धिमंत जस हान ॥ २३ ॥ रामदमन परसुत दमन धनुष धन्वंतर रूप । पकते एक हैं गुन अधिक जिन्हैं सराहैं भूप ॥ २४ ॥ पंडित प्रगट प्रसिद्ध सब, हमीरपुर स्थान । पंच भ्रात तिहि वंस में वैद्य सुदर्शन जान ॥ जन्म भूमि है तासु की पुर पवित्र शुचि धोर ॥ अति प्रवीन नर जासु कै वसत वैतवे तोर ॥

राज वंसादि वर्णन :—गहिरवार कुल जगत जसु काशी सुर महिपाल कीन्हें। राज कुड़ारगढ़ षगवल साह नृपाल ॥ कवि जन ताके वंश को कहां लगो करै वखान । प्रतापरुद्र सुत साधु मति उपजै। धर्म निधान ॥ सुख समूह सम्पति सहित निस दिन रहत अनंद । सुभग नगर निधि ओड़छो मधुकर साहि नरिंद ॥

तब तै उद्यम करत यह बीति गये बहु काल । एक दिवस पूछत लहे नैन पीर नृप पाल ॥ ताको पुत्र प्रसिद्धि नृप महि मतिवीर सिंह देव ॥ जेते देस विदेस नृप करत भूप मव सेव ॥ दान करन पारथ समर श्रुति पुरान परवान । महाराज वीर सिंह को दियो माह भुज रान ॥ बुंदेलखंड भरतखंड मों मध्य देस में देस । पहार सिंह महो को संकित सकल नरेस ॥ तिहि कुल सुजान सिंह नृप करी धर्म सुत रीति । द्वापर जैसा कृष्ण सो कलि विश्वंभरि प्रीति ॥ ताकी परजा सब सुखी अन्न बसन धन धान्य । निर्भय राज सदा रहे अहिनिस आठोजाम ॥ × ×

ग्रंथ निर्माण काल :—संवत सत्रह से भये लगो वास उनतीस । १७२९ । रितु वसंत फागुन सुभग कृष्ण पक्ष व्रत ईस ॥ सनि दिन सुभग चतुर्दसी सिद्धि जोग तिथि वार । प्रथम पहर आरंभ यह तादिन भयो विचार ॥

वैद्य लक्षण, रोगी लक्षण, अवैद्य कथन, रोगी अंग अनुमान । परिअनुक्रमन । दूत परीक्षा, सुभ शगुन लक्षण, अशुभ सगुन परीक्षा, वाम दक्षिण सगुन, स्वर परीक्षा, नाड़ी परीक्षा, मुख परीक्षा, नेत्र परीक्षा, दंत परीक्षा, जिह्वा परीक्षा, नख परीक्षा, श्लेष्मा परीक्षा, स्वप्न परीक्षा, मूत्र परीक्षा, मल परीक्षा, छाया परीक्षा, छाया विचार ।

(२) पृ० २६—६५ तक—काल वेधादि, द्वितीय उद्देश्य। चतुर्दश परीक्षा लक्षण, सूर्य्य कालानल चक्र दूत आगम जानना, काला चक्रम, चन्द्र कालानल चक्रम्, पताका चक्र, सलाका चक्र, द्वादश रासिका दान । नक्षत्र वार तिथि रोग निषेध, नक्षत्रादि दोष, वार वर्ग, नक्षत्र भेद, चन्द्र बल, नक्षत्र रोगावली चारो चरणों की, लग्न विधान, कालज्ञान लघु जातक, राशि फल । घात फल ।

(३) पृ० ६६—९४ तक । तृतीय उद्देश । चिकित्सा दर्पण । साध्य लक्षण सभीत भाव लक्षण, अष्ट ज्वर लक्षण—ज्वर को उत्पत्ति, स्वरूप, कोप, असाध्य उपद्रव, ज्वर प्रमाण, दोष प्रमाण, शुभ ज्वर लक्षण, दोष ज्वर लक्षण, चार प्रकार का लक्षण, सन्निपात त्रयोदश लक्षण, अंतिक लक्षण, रुग्दाह लक्षण, चित्त भ्रम लक्षण, अन्य सन्निपात भेद लक्षण वंध्या गर्भ विधान, नष्ट पुरुष विधि, वह्मदंडी प्रयोग, वंध्या लक्षण तथा उसका उपचार, अन्य कफ वंध्यादि लक्षण और प्रयोग गर्भ चिकित्सा, गर्भ रक्षा, गर्भ कष्टी स्त्री का उपचार, द्वादश मास रक्षा करण विधि, गर्भ वर्जित गर्भ पतन उपचार !

(४) पृ० ९५—१११ तक—बाल चिकित्सादि । बाल चिकित्सा विधान, धाय परीक्षा, धाय लक्षण, फूली लक्षण, जोगिनी लक्षण तथा उपचार, उनकी शांति के मंत्र । धारादि जोगिनी वर्णन, बालक के बोलने की बात, देश वर्णन—

अनूप देश तथा जांगल्य देश वर्णन, घोरन देश वर्णन, अष्ट दिशा रोग वर्णन, षट् ऋतु वर्णन, ऋतु विधान, ऋतु रोग लक्षण, दिन रात प्रहर रोग राज वर्णन, तीन काल, वायु हेतु लक्षण, पित्त हेतु लक्षण, कफ कोप निदान, कफ हेतु निदान।

(५) पृ० ११२—११६ तक—वायु लक्षण निदान, पित्त लक्षण, कफ लक्षण, प्रशमन, वायु, पित्त कफ कोप। पञ्चमोद्देश।

(६) पृ० ११७—१३० तक—षष्टमोद्देशः—स्वरस क्रिया, अनुपान, स्वर, त्रिफलादि सुरस, निंब तथा गुरुच स्वरस, तुलसी तथा गुमा स्वरस, जंबू स्वरस, धात्रीफल सुरस, चतुर्विधि स्वरस, सतावर तथा रवादि स्वरस, सुंठी स्वरस, ससा स्वरस मुंडी स्वरस, ब्रह्मादि चतुर्विधि चूर्ण, गंगेरुवा स्वरस त्र घातक, पुट पाक विधि, जवादि घृत, मंड विधि, जूसव विधि, कल्क करन।

(७) पृ० १३१—१५४ तक—सप्तमोद्देश—

क्वाथ कल्पना, अनुपान, काढ़ों के नाम, गुरुच्यादि काढ़ा, पंचभद्र पित्तज्वर, अमृताष्टक, सन्निपातज्वर दशमूल क्वाथ, अभयादि क्वाथ, कटफलादि क्वाथ, गुरवादि क्वाथ, अतीसार, संग्रहणी ज्वर वर्णन, अन्य त्रिफलादि क्वाथ, अतीसार संग्रहणी संबंधी मांड विधि, पानादि कल्पना, क्षीरपाक विधि, चतुर्विधि वल।

(८) पृ० १५५—१६६ तक—अष्टमोद्देशः—

चूर्ण विधि—अनेक प्रकार के चूर्ण—ग्रंथ समाप्ति।

No. 410. Bhakta Nāmāvalī by Sudhāmukhī. Substance--Country-made paper. Leaves--8. Size--$6\frac{3}{4} \times 4\frac{3}{4}$ inches. Lines per page--20. Extent--120 Anushṭup Ślokas. Appearance--Old. Character--Nāgarī. Place of deposit--Gaṇeśa Prasāda, Village Danoj, District Rāe Barelī.

Beginning—श्री सीतारामाभ्यांनमः॥ अब मैं इन हरिजन कौ चेरो। ह्वै अनुकूल मूलवर दीजै हरि छूटै भव घेरो १। विधि नारद, संकर सनकादिक, कपिलदेव, मनु, भूपा नरहरि दास, जनक, भीषम, वलि, सुक मुनि, धर्म सरूप॥ २॥ विस्वकसैन, जय, विजय, प्रवल, नंद, सुनंद, सुभद्रा। चंड, प्रचंड विनोत, पुनीता, कुमुद, कुमुद दग, भद्रा॥ ३॥ सील, सुसील, सुषेन, गरुड़, कमला जानो हरि प्यारो। जामवंत हनुमान विभीषन, सवरी षगपति धारी॥४॥ विदुर सुकंठ, ध्रुव, उद्धव, अक्रुर, सुदामा, जानौ। चित्रकेतु, अंवरीष ग्राह गज, चंद्रहास मन मानौ ५॥ कौषारव, कुंती, विधु, पांडव, जोगेश्वर, श्रुति देवा। प्रथु अंग, मुचकंद परीक्षत, प्रियव्रत, सेस, सुसेवा॥ ६॥

End—रामभद्र, पूरन, परवोधा, जगदानंद भलाई। दास द्वारिका भट्ट लक्षमन, नाम गदाधर भाई—९४। श्री नरायनदास, दास भगवान, सुभग कल्याना, संतदास पुनि माधोदासा, सोभू, राम भमाना ॥ ९५ ॥ कान्हर, गोविंद, वासव सुत, श्री जगत सिंह जगजागे। दीप कुवंरि, जयसिंह ग्वाल गिरधर, हरिजन अनुरागे ॥ ९६ ॥ रामदास गोपाई वाई, रामराइ भगवंता, माधो रसिक, स्वरूप उपासिन, लालमती मनिसंता ॥ ९७ ॥ श्री नाभा स्वामी माला सों गुरु संतन मुष जान्यैा। मति अनुरूप रची नामावलि सज्जन सुनिसुष मानैा ॥ ९८ ॥ भूल चूक सब क्षमा करो मम गम नहिं जो सब भाषै। प्रातकाल नामावलि लीजै तैा हरिजन रस चाषै ॥ ९९॥ दसरथ सुत श्री जनकनंदनी रीझै तापर वेगी। भोर घोर मधुरे स्वर भाषै नाम सकल ह्वै नेगी १०० ज्यें हरि आप सकल जग पावन नाम पुनीत पुनीता। त्यों हरिजन सच्चिदानंद है नाम लेत जग भीता ॥ १०१ ॥ नाम भक्त नामावलि याको जाको जाप करीजे। अनायास भव त्रास विगत सो होय जुगल पद लीजै ॥ १०२ ॥ हरि को अति प्यारे हरिजन जस जो जन मन में भावे। सोल मती गुरु कृपा करी जब सुधा मुषी कछु गावे ॥ १०३ ॥

Subject—सुधा मुखी कृत भक्त नामावली अर्थात् नाभा जी कृत भक्तमाल में जिन भक्तों के नाम आये हैं उनके संक्षेप रूप में काव्य में रचा है।

No. 411. Stuti Bhawanī kī by Sukhadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—8 × 4 inches. Lines per page—22. Extent—125 Anushṭup Ślokas Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1917 or A.D. 1860. Place of deposit—Ṭhakura Jagadewa Singh, Village Gujarī, Post Office Baurī, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अस्तुति भवानी की भाषा ॥ चैापाई ॥ गुरु गनेस के चरन मनावों। जेहि प्रसाद देवी गुन गावैं ॥ प्रथमहिं सुमिरैं वंदी माया। जेहि सुमिरे ते निर्मल काया ॥ मोरैा देवी आदि कुमारी। जेहि सुमिरे सिधि होइ हमारी ॥ सुमिरैं देवी मन चितलाई। दुख दारिदहु पाप छै जाई। अस्तुति करों भवानी केरा। सुनैा संत कहों मैं टेरा ॥ जा सुमिरे दुख भंजन होई। रोग भयानक रहै न कोई ॥ जा सुमिरे ते दुर्जन डुरई। काल कराल महा दुख हरई ॥ जल थल रन मह रक्ष्या करणी। सुमिरैं ताहि माह भय हरणी ॥ ताको अग्नि कभी नहिं जारै ॥ जब देवी को नाम पुकारै। संकट विपति दूरि तेहि भाजै। जहं देवी को सेवक गाजै। विषम उजारि दुर्ग मह जाई। तहां

भवानी पाप नहाई ॥ कहं लगि प्रभुता कहैं बषानी । बार बार नर सुमिरु भवानी ॥ आदि स्वरूप ज्योति तव लयऊ । ब्रह्मा विष्णु सब तुमते भयऊ ॥

End—अस्त्र शस्त्र कोउ घाव न आवै । नित देवी की अस्तुति ध्यावै ॥ डंकनि संकनि औ महामारी । तिन्ह से नाहीं होइ दुखारी । नवग्रह ताहि न सकैं सताई । पढ़ि अस्तुति सब दोष नसाई । धन ग्रह धान्य होइ अधिकारी । महा धनाढ्य होइ सो भारी । तीनि लोक माता कोऊ नाऊं । अस्तुति पढ़ै सदा तेहि ठाऊं । अल्प मृत्यु नहिं ताको होइ । औ सौ वर्ष जिये निज सोई ॥ उरिन होइ कछु रिन न रहाई । जब देवी की अस्तुति कहई । पुत्र पौत्र बाढ़ै परिवारा ॥ पढु अस्तुति नित दूनौ वारा ॥ चंद सूर्ज औ जवलौं धरती । संत जनन की तब लग बढ़ती । कलयुग कलमष जाय नसाई । अस्तुति पढ़ै सदा चितलाई । कोढ़ी पढ़ै कुष्ट क्षय जाई । दादु खाजु ना तन मैं रहई । जाती सुमिरु होइ सो प्रानी जपै नाम होइ बड़ ज्ञानी । विद्यार्थी सो विद्या पावै । पुत्र आथिक को पुत्र मिलावै । जो जो मन में इच्छा लावै । सो इच्छा सम्पूरण पावै । दिन प्रति अस्तुति जो कोइ ध्यावे । कहि सुषदास परम पद पावै ॥ देवी की अस्तुति सम्पूर्ण सुभ मस्तु जेठ मासे कृष्ण पक्षे तिथौ परिवा ग्राम, गुजलो देवीदीन मुसद्दी लिष्यते संवत १९१७ राम राम राम राम राम राम राम ।

Subject—पृ० १—८ तक-भवानी की महिमा का वर्णन किया गया है कि इस प्रकार शुंभ निशुंभ आदि को मारा । भवानी का स्मरण करने से पुत्र पौत्र धन बल आदि प्राप्त होता है, मनुष्य आनन्द से अपना जीवन व्यतीत करता है उसको किसी प्रकार का भय तीनो तापों का नहीं रहता है ।

No. 412(*a*). Adhyātma Prakāśa by Sukhadeva Miśra. Substance—Country-made paper. Leaves—19. Size—9×7 inches. Lines per page—32. Extent—456 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1775 or A.D. 1718. Place of deposit—Paṇḍita Śiva Narayaṇaji Vājpai, Village Vajpai kā purwā, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ सच्चिदानन्दाय नमः ॥ कवित्त ॥ थावर जंगम जीव जेते जग भांतिन भांतिन भेष धरे हैं ॥ नामहि सत्य चिदानंद रूप सो आतम एक प्रकास करै है । ता विन जानत सिंधु सो लागत जानेते गोपद तुल्य तरै है ॥ वंदत ताहि सदा सुषदेव जू ब्रह्म सदा सब ही ते परे है ॥ १ ॥ दोहा ॥ व्यास मथन करि वेद सब सूत्र निकारे सार । श्री गुरु शंकर देव जो कीन्हो वहु

विस्तार । तिन ग्रंथन को समुभि मत हिय धरि पर उपकारु । भाषा कर सुषदेव यह रच्यो ग्रंथ अति चारु ॥ जैसे रवि के तेज ते अंधकार मिट जाय । अध्यातम परकाश तें त्यों अज्ञान नसाइ ॥ गुरु शिष्य को बाद अरु वेद वचन उपदेश । अध्यातम परकाश यह भाषा सरल सुवेष ॥ अधिकारी जिज्ञासु अरु शिष्य कहावै सोइ । तप साबुन करि देह के पापनि डारौ धोइ ॥

End—सांष्य ॥ प्रकृति पुरुष अरु ततु को जाके होय विवेक । यहै मुक्ति सांष्यो कहै ज्ञान भये सब एक । आगम तंत्र पुरान पुनि पंच रात्र मत जानि । ऐंचि आपने पंथ को जग में डारत आनि ॥ औरे सास्त्रन के मते पर जगत में आनि । कल्पन लो छूटै नहीं जन्म मृत्यु लपटानि ॥ अपने मत यह वेद सिर सब ते उत्तम जानि । ताहो को विस्वास करि भूल और मत मान ॥ सठ अरु धूरत नास्तिक वेद विरोधी और । तिन्हें न भूलि सुनाइये यह मत मत सिर मौर ॥ जिनके उर हरि भक्त हैं औ गुरु भक्ति निदान । तिनके आग बोलिबो यह उपदेस निदान ॥ वेद स्मृति स्रुति वचन को कह सुषदेव विलास । अध्यातम परकास ते अध्यातम परकास ॥ सत्रह से पचहत्रै कातिक मास वषानि । हरि वासर बुधवार को सुकुल पक्ष जिय जानि ॥ इति श्री अध्यात्म प्रकाश सुषदेव मिश्र कृत पूर्ण ॥

Subject—इस अध्यात्म प्रकास में शिष्य गुरु संवाद है शिष्य ने मनुष्य शरीर पर व ईश्वर रूप पर व आत्मा आदि पर प्रश्न किये और गुरु ने उनके पृथक पृथक उत्तर दिये । इसमें सांख्य वैशेषिक पातंजलि आदि के उदाहरण दिये हैं और प्रकृत के रहस्य को उत्तम रीति से समझाया है ।

No. 412(*b*). Adhyātma Prakaśa by Sukhadeva. Substance—Country-made paper. Leaves—40. Size—$9\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—8. Extent—360 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1772 or A.D. 1715. Date of manuscript—Samvat 1845 or A.D. 1788. Place of deposit—Paṇḍita Chandrabhālajī, Village Parvatpur, Post Office Suratganj, District Bārābaṇkī (Oudh).

Note—(I) आदि अंत No. 412. (*a*) पर लिखा गया है ।

End—(II) इति श्री अध्यात्म प्रकाश सुषदेवेन कृतं वहि मुखनंतं ॥ दोहा ॥ सकल धर्म कामादि तजि भज्जु निहचै करि मोहि ॥ सब पापनि ते

मुक्त कर मोक्ष देहुंगो तोहि ॥ गोपाल वचनोक्तं अर्जुनं प्रति ॥ संवत १८४५ मितौ भाद्रपद सुदौ द्वादशौ भृगुवासरे लिखितं भोलानाथ द्विवेदी स्वात्म पाठार्थम् ।

No. 412(c). Adhyatma Prakaśa by Sukhadeva. Substance—Country-made paper. Leaves—30. Size—9 × 6 inches. Lines per page—24. Extent—540 Anushṭup Ślokas. Appearance--Old. Character—Nāgarī. Date of Composition--Samvat 1755 or A.D. 1698. Date of manuscript—Samvat 1867 or A.D. 1810. Place of deposit—Thākura Rāmadaura, Village Mithaurā, District Baharāich, Keśaraganja (Oudh).

No. 412 (d). Adhyatma Prakāśa by Sukhadeva. Substance—Country-made paper. Leaves—17. Size--8 × 5 inches. Lines per page—44. Extent--468 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1755 or A.D. 1698. Date of manuscript—Samvat 1921 or A.D 1864. Place of deposit--Mahanta Jawāhiradāsa, Village Narottamapur, Post Office Khairighāt, District Baharāich (Oudh).

No. 412(e). Adhyatma Prakāśa by Sukhadeva. Substance—New paper. Leaves—24. Size—9 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—432 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character--Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1755 or A.D. 1698. Date of manuscript--Samvat 1946 or A.D. 1889. Place of deposit--Nāgarī Prachāriṇī Sabhā, Kāśī.

No. 412 (f). Piṅgala Chhaṇḍa Vichāra by Sukhadeva Miśra of Kampilā (Farrukhābād). Substance--Country-made paper. Leaves--29. Size—10 × 5 inches. Lines per page—11. Extent--750 Anushṭup Ślokas. Appearance--Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript--Samvat 1907 or A.D. 1850. Place of deposit--Rāja Pustakālaya Bhiṅgā (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ गनपति गौरि गिरीस के पाइ नाइ निज सीस । मिश्र सुकवि महाराज को देत बनाइ असीस ॥ १ रजत खंभ पर मनहु कनक जंजीर विराजति । बिसद सरद घन मध्य मनहुं छन दुति छबि छाजति ॥ मानहुं कुमुद कदम्ब मिलित चंपक प्रसून तति । मनहुं मध्य घनसार लसत कुम-कुम लकीर अति ॥ हिमिगिरि पर मानहुं रवि किरिन इमि धन धरि अरधंग मह । सुखदेव सदासिव मुदित मन यों हिम्मत सिंह नरिंद कहं ॥ रतन जटित भू भाल को मनो विभूषन वेष । जाहिर जम्बूदीप में सिरै अमेठी देस ॥ सपनेहु सुनिये नहि जहां काहू को डरु नाहि । सदा एक परलोक ही सिगरे देस डेराहिं ॥ ४ ॥ रातौ दिन सुनियत जहां दुशमन ही को नास । सात्विक भाव हो में जहां अंसु अद्रोह उसास ५

End—अथै काक्षरात्पदारभ्य षड्वि शतिवर्ण पर्यंत पृथक पृथक नामात्युच्यते ॥ उक्ता पत्युक्ता बहुरि मध्या कहिऐ जानि । कही प्रतिष्ठा बहुरि सुप्रतिष्ठा मन में आनि ॥ ४२ ॥ गायत्री उष्निक बहुरि कहत अनुष्टप जानि । बृहती पंगति कहि बहुरि त्रिष्टुप जिय में जानि ॥ जगती अति जगती कही बहुरि सक्करी जानि । अति सक्करी गनाइ पुनि अष्टनि अष्ट बखानि ॥ पुनि कहि धृति अति धृति बहुरि कृति पुनि बिकृति बखानि ॥ बहुरि संस्कृत जानि पुनि अति क्रांति उतक्रांत मानि ॥ येक बरन प्रस्तार ते छबिस सौ ये नाम ॥ क्रमते कहत फनिन्द सुनि होत श्रवन विश्राम ॥ वृत्तानि समाप्तम् ॥ शुभं भूयात् सावन मासे कृष्ण पक्षे ७ बुधवासरे सम्वत् १९०७ साके १७७२ इति श्री मन्महाराजाधिराज वाधल गोत मनिराजा हिम्मत सिंह कारिते मिश्र सुखदेव कृते पिंगल छन्दो विचार वर्ण वृत्तानि ॥

Subject—प्रार्थना, राजवंश वर्णन—पृ० १—३ । गुरु, लघु संज्ञा, प्रस्तार षटकल, अक्षर गण, गण विचार, उद्दिष्टादि । ३—५ । गाहा छन्द, विषमस्थान, विगाहा, उगाहा, गाहिनो, सिंहनो, षंधा, वर्णभेद, दोहा भेद, व्याघ्र अविडाल, सुनक, उंदर । ६—९ तक । रसिका, रोला, उल्लाला, साम्लो संज्ञा भेद, काव्य दोष, छप्पय, हुटिका, असिला, पादाकुलक, चौबोला, दंडा, पद्मावती, कुंड-लिया, अमृतध्वनि, गगनांगन, दोवह, ऊलना, षंजा, सिथा, माला, चुलिआला, सोरठा, हाकलि, मधुभार, आभीर, देवत्काला । ९—१३ । दीपक, सिंहावलोकन, प्लवंग, लीलावती, हरिगीत, त्रिभंगी, दुर्मिला, होरका, जनहरन, मदनहरा, १४—१५ उध्वल, मोहनो, हरिपद, बरवै, सवैया, सुगति, काम, तालो, शशि, पंचाल, मृगेन्द्र, मंदउतोर्णा, कमल, तोर्णा, नगानिका, संमोहा, हारी, सेषा, तिलका, विमोहा, चतुवंसा, मंथान, संखनारी, मालती, समानका, सुवासक, करहचो, सरष रूपक, वसुमती, मदलेखा, विद्युन्माला, प्रमाणिका, मल्लिका, तुंगा—१६—१८ । कमल, मानवक्रीड़ा, यादंत, कमला, विव, तोमर, हलमुखी,

रूपमाली, मणिबंध, संयुता, चंपकमाला, सुमुखा, अमृतागति, बंधु, तुकाई, दोधक, सालिनी, दमनक, सेनिका, मालती, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, स्वागता, रथोद्धता, भुजंग प्रभाग, लक्ष्मोधर, त्रोटक, मौक्तिक दाम, सारंग, मोदक, तरल नयन, सुंदरी, प्रमिताक्षरा, वंशस्थ, इन्द्रवंशा, माया, तारक—१९—२३। कंदु, पंकावली, वसंततिलका, चक्रपद, अमरावली, सारंगिका, चामर, मनहंस, मालिनी, सरभ, नाराच, नील, चंचला, ब्रह्मरूपका, शिखरिनी, मंदाक्रांता, हरिणी, मंजरी, चंचरी, चन्द्रमाला, धवला, गीतिका, गैाका, श्रग्धरा, नरेन्द्र, हंसी, मोहिनी, सुंदरी, चकोर, मत्तगयंद, दुर्मिल, किरीट, त्रिभंगी, सालूर—२४—२८। सैादाम, सुंदरी, पुष्पतारा, सैारभ, घनाक्षरी, रूपघना, शशी, वैदिक छंद—२९।

No. 412(*g*). Pingala Bhāshā (Vrittī vichāra) by Sukhadeva Miśra of Kampilānagara. Substance—Country-made paper. Leaves—91. Size—8 × 4 inches. Lines per page—18. Extent—1,435 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1728 or A. D. 1671. Date of manuscript—Samvat 1915 or A. D. 1858. Place of deposit—Ṭhākura Jagadeva Simha, Village Gujaulī, Post Office Baurī, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्रीरामानुजायनमः ॥ अथ पिंगल भाषा लिष्यते ॥ चो० छंद ॥ जय जय मोहन मदन मुरारी। कमल नयन केशव कंसारी ॥ करुना कर केसी रिपु कृष्ण जय वसुधा धर बावन विष्णु ॥ मनहरन छंद ॥ बिघन बिनासन है पाछे आपु आसन है से ये पाक सासन है सुमति करन के। आपदा के हरन हैं संपदा के करन हैं सदा के धरन हैं सरन असरन को। कुंज कुल को है नव पल्लव जो है सरि सुषदेव सोहैं धरे अरुन वरन को ॥ बुद्धि के बिधायक सकल सुषदायक सुसेवो कविनायक विनायक चरन को ॥ दोहा ॥ मदन पाल कृपाल के कमल चरन चितलाइ। कियो सुकवि सुषदेव यह वृत्त विचार बनाइ ॥ पिंगल नाम अगस्ति कृत छंदो ग्रंथ अगाध। सार लियो तिन को कछू छमियो कवि अपराध ॥

End—समुझि बिचारि सु चारु मति दोहा अर्थ बिसेषि भो। रघुवर दास अनंद जुत कवि पंडित जन लोष भो ॥ होत मात करतव्य बात वश पिता मरण भो। विछि राम वन गमन वाहणी राज धरण भो सुवन केकई योग चतुर ब्रह्मा मोहि कीन्हा। नृपति तनय प्रभु बड़ापन नाहके दीन्हा। वादि बड़ाई तेहि वंश सुम सब मिलि अब राज लय रघुवर दास ये कवित कहि राम चरन जुग हृदय धरि।

सवैया । आनंद कंद सुकोमल चंद यहै बलिहारो सुबाहु तुम्हारी । जगते जेहि को अश दै अरुवेदन हु कहि नीति सुगाई । पार न पायो शारदे शेष गणेशहु आहि रहे सिर नाई । रघुवर दास सु आश यहो कृपा करि के हमहू अपनाई ॥ इति श्रोरस्तु ॥

No. 412(*h*). Pingala Himmata Simha by Sukhadeva Miśra of Kampilā. Substance—Country-made paper. Leaves—44. Size—8 × 6 inches. Lines per page—32. Extent—792 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript.—Samvat 1920 or A. D. 1863. Place of deposit—Thākura Lāyaka Simha, Village Bhagawānpura, Post Office Biswān, District Sītāpura (Oudh).

Beginning—श्रो गणेशायनमः ॥ अथ पिंगल हिम्मत सिंह को लिष्यते ॥ दोहा ॥ गणपति गैारि गिरीस के पाय नाय निज सीस ॥ मिश्र सुकवि महाराज कहू देत बनाय अमोस ॥ छप्पै ॥ रजत षंभ पर मनहुं कनक जंजीर बिराजति बिसद सरद घन मध्य मनहु छन दुति छवि छाजति ॥ मानहु कुमुद कदंब मिलत चंपक प्रसून भति मनहु मध्य घनसार लसति कुंकुम लकीर अति ॥ हिम गिरि पर मानहुं मानहु रवि किरिनि इमि धन धरिय अरधंग महं सुकदेव सदासिव मुदित मन हिम्मत सिंह नरेस कहं ॥ दोहा ॥ रतन जटित भूपाल को मनैा विभूषन बेस जाहिर जंबूदीप में सिरे अमेठी देस ॥ सपनेहू सुनियत जहां काहू को डर नाहिं । सदा एक परलोक हो सिगरे लोग डेराहिं ॥ रातैा दिन सुनियत जहां दुसमन हो को नास । सात्विक भावहि में जहां अंसुवा दोह उसास ॥

End—अथ गद्यस्योदाहरण ॥ जबर अरि जेर कर सेर समसेर समसेर बहादुर ॥ वैरि वर वानर विदारन सिंह मत्थ ॥ हत्थ अकत्थ बल पत्थ समान महा ॥ वोराधि वोर समर धोर धरनि धुरंधर ॥ धराधीस धवल धाम धवल सुजस पुंज । विजित सुर धुनी धार धवलिम श्रो महाराजाधिराज हिम्मत सिंह चिरंजोव ॥ अथै काक्षरात्यादारंभ्य षड्विंसति वर्ण पर्यंत पृथक पृथक नामम्मुच्यते ॥ उक्ता अत्युक्ता बहुरि मध्या कहिये जानि । कही प्रतिष्टा बहुरि सुप्रतिष्टा मन में आनि ॥ गायत्री उष्णिक बहुरि कहत अनुष्टुप जानि । वृहती पंक्ती कहि बहुरि त्रिष्टप जिय में आनि ॥ जगती अति जगती कही बहुरि सक्करी जानि । अति सक्करी गनाइ पुनि अष्टति अष्टि बषानि ॥ धृत अति धृत कृत प्रकृत पुनि आकृति विकृति बषानि ॥ बहुरि संस्कृति जानि पुनि अनि कृति उतकृति मानि ॥ एक बरन प्रस्तार से कृबिस लैा ये नाम । क्रमते कहत फनिंद सुनि होत श्रवन विश्राम ॥

इति श्री मनमहाराजाधिराज हिम्मत सिंह कारते मिश्र सुखदेव कृते छंद विचारो वर्ण वृतानि निवृतानि संपूर्णम् सुभमस्तु ॥ श्री संवत १९२० शाके १७२४ कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे तिथौ द्वतीयायां मिदं पुस्तकं समाप्तम् लिष्यते गनेस पंडित पैदापुर मस्थाने ॥

Subject—इस पुस्तक में पिंगल काव्य वर्णन है ।

No. 412 (*i*). Pingala Bhāshā (Vritta vichāra) by Sukhadeva Miśra of Bigahāpura Kampilā. Substance—Country-made paper. Leaves—85. Size—12 × 6 inches. Lines per page—32. Extent—1275 Anushtup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1728 or A. D. 1671. Date of manuscript—Samvat 1939 or A. D. 1882. Place of deposit—Lālā Bhāgawatā Prasāda, Village Sadābāpur, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

No. 412 (*j*). Chhanda Vichāra by Sukhadeva Miśra of Kampilā (Farrukhābād). Substance—New paper. Leaves—50. Size—13 × 8 inches. Lines per page—22. Extent—620 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1943 or A. D. 1886. Place of deposit—Paṇdita Krishṇabihārī Miśra, Editor, *Mādhuri*, Lucknow.

Note—प्रथम पृष्ट खंडित है । शेष खंडित प्रति सहित पूर्ण विवरण सहित No. 412 F पर लिखा गया है ।

No. 412 (*k*). Pingala (Himmata Simha) by Sukhadeva Miśhra. Substance—Country-made paper. Leaves—33. Size—10 × 6 inches. L[illegible] per page—64. Extent—1,805 Anushtu Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1875 Samvat or A. D. 1818 Place of deposit—Siva Nārāyaṇa Vājpai, Village Vajpai kā purwā, Post Office Sisaiyā, District Bāharāich (Oudh).

No. 412 (*l*). Chhandoniwāsa Sāra by Sukhadeva. Substance—Country-made paper. Leaves—48. Size—13 × 6 inches.

Lines per page 10 Extent—600 Anushtup Ślokas. Appearance New. Character—Nāgarī Place of deposit.—Daughter of Paṇḍita Dwarikā Prasāda Trivédī, care of Devī Dīna Kuram, Numberdāra Village Lakshmanpura, Post Office Satarikha, District Bārābankī.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ मगन तीनि गुरु भूमि सुर सिद्धि करै ततकाल ॥ यगण आदि लघु नीर प्रभु सुख संपदा सुकाल ॥ १ ॥ भगन आदि गुरचन्द्र सुख पूजै मन को काम ॥ गोत सोरठा का विसव पूरण पुरष विलास ॥ २ ॥ भगन तोलहु शेशधन सुख संपति प्रानन्द ॥ कवित छंद दोहा करो फलो होइ सुख कंद ॥ ३ ॥ जगन मध्य गुरु होत है ताकर देव प्रकास होत सुन्य फल देत नहि निःफल मन को आस ॥ ४ ॥ तगन अंग लघु जानिए पवन देवता मानि ॥ दूरि बहावै सर्वदा करै सवे हित हानि ॥ ५ ॥ रगन मध्य लहु देखि सो पावक इष्ट विचारु ॥ मृत्यु करै कवि तै कहत मति करु कवित सिंगारु ॥ ६ ॥ सगन अन्त गुरु कहत है रवि ताको बलवान ॥ रोग बढ़ै आनंद घटै पंडित सुनहु सुजान ॥ ७ ॥

End—दोहा ॥ होइ हानि हाते निपटि छाहै सुख को मूल ॥ वरनि शुद्ध कविराज यह कही जगत अनुकूल ॥ ८ ॥ रस वर्णन—प्रथम सिंगार सुहास रस करुना बहुरि सुजान ॥ रौद्र वीर सुभयान कहि औ विभत्स सुपपान ॥ ९ ॥ अद्‌भुत रस कविराज कहि समरस कहियत और ॥ नवरस नाम प्रसिद्ध ये वरनत कवि सिरमौर ॥ १० ॥ पराभाव अनुभाव के अरु विभाव के चित्त ॥ जो कुछ उपजत आनि कै सो कहियत रस मित्त ॥ ११ ॥ कवित्त—कोटि उपाय के छिपाइ करै कोउ किन भीतर की उपरहि आनि उफनात है ॥ बोलत चलत चितन में लखन पै ये नयन की नजोर बनाइ करामात है ॥ सुधरै न कूर औ कूरै न सुधर भावै जाको जैसो समुझि तैसी संगति सुहात है ॥ तीन तीन गुन के भया के मनुषन के साहब की सगरी समुझि जाती जात है ॥ १२ ॥ इति श्री कवि कुलालंकार चूड़ामनि श्री सुषदेव विरचितायां छंदो निवास सार समाप्तम् शुभम्भूयात सम्वत् १९२७ शाके १७८५ अषाढ़ शुक्ल १ बुध वासरे अलिष द्वारिका प्रसाद त्रिवेदीन ॥

Subject—(१) पृ० १—६ तक—गण भेद तथा गणों के फल । दग्धाक्षर आठ (ह भ ध न घ र ष भ) । दग्धाक्षर फल । गुरु लघु विचार, लघु के नाम । पादाकुल छन्द । रसिक छन्द, पादाकुलक, गाथा छन्द, दोहा लक्षण, भवर छन्द, रोला छन्द, रसिक छन्द, चौपैया छन्द, गंधान छन्द, सुलक्षण, न्यंबता

छन्द, घनानन्द, पादाकुलक, अलिल्लह, काव्य लक्षण, कुंडलिया, दुरती लक्षण, कीर छन्द के लक्षण।

(२) पृ० ७—२८ तक—उल्लाला, मोहन छन्द, राइ से विगत नंगा। चैाबोला, भूजना, शिष्यमा, चुलि आल, पद्मावती। दोवाइ छन्दा पंजा छन्द। प्रज्यलिय, हाकलि छन्द, भार छन्द, आभीर छन्द, कुकुभ छन्द, सरसी छन्द, दंडक छन्द, दीपक छन्द, सिंहावलोकन छन्द, दिप्पटा, प्लवंगम, लीलावती, हरिगीतिका, त्रिभंगी, दुर्मिला, अहीर, जलहरन, मदनहर मरहटा, दंडक, अमृतध्वनि, श्रीछंद, त्यकुता, मही छंद, मधु छंद, सार, प्रतिष्ठा, हत छन्द, हरित छन्द, हंसी छन्द, जमक छन्द, गायत्री, शिवराज, डिल्ला, मालती, तनमध्वा, चैारासी, शशिवदना, वसुमति, विज्जहा, सामानिक, सुवस छन्द, करहंची छन्द, सिश्रुरुप, मदनलेषा, मधुमति, विद्युन्माला, प्रमानिका, मालिका छन्द, तुंगा छन्द, पंकसाला, कुमार ललित, चित्रपद, महालक्ष्मी, सारंगिका, पाइता छन्द, कमल छन्द, बिंब छन्द, तोटक छन्द, रूपमाला, संयुता छन्द, चंपकमाला, सारस्वती, सुश्याम छन्द, अमृतगति, नीलस्वरूप, सुमुषी छन्द, दोधक छन्द, मदनक छन्द, सेनिका छन्द, मालती छन्द, इन्द्रवज्रा छन्द, उपेन्द्र वज्रा, भुजंगप्रयात छंद, लक्ष्मीधर, तोमर छन्द, स्मरण छंद मुक्तिदाम, मोटक छंद तरलन मान, सुंदरी छन्द, द्रुतविलंबित छन्दाे के लक्षण।

(३) पृ० २९—४२ तक—माया छन्द, तारक छन्द, कदंक छन्द, पंकावली बसंततिलका, चक्र छन्द, भ्रमराक्ष, रंगिका, चामर छन्द, त्रिशिपाल छन्द, मनहरन छन्द, मलिन छन्द, सार छन्द, नाराच छन्द, नील छन्द, चंचला छन्द, पृथ्वी छन्द, मालाधर, मंजीर छन्द, क्रीड़ा छन्द, चंचरीक छन्द, शार्दूल विक्रीड़ित, चन्द्रमाला, छवल छन्द, गीतका, दंडिका, श्रग्धरा, मंदिरा, छरी, पविम्राक्ष, गजेन्द्र गति, द्रुमिला छंद किरीटी, सवैया, त्रिभंगी, शालूर, सुंदर छन्द, सुख छन्द, छप्पय, दोहा, भेदना, गनांगन देवता फल, गणभाव दग्धाक्षर फला, विचार, रस वर्णन, ग्रंथ समाप्त।

No. 412 (*m*). Fāzila Alī Prakāśa by Sukhadeva Miśra of Kampilā. Substance--Country-made paper. Leaves--62. Size—10 × 5 inches. Lines per page--32. Extent—1,116 Anushṭup Ślokas. Appearance--Old. Character—Nāgarī. Date of Composition--Samvat 1733 or A.D. 1676. Date of manuscript--Samvat 1919 or A.E. 1862. Place of deposit—Paṇḍita Śhivadāyalajī Village Jaunāpura, Post Office Biswān, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—अथ फाजिल अली प्रकास ग्रंथ लिष्यते ॥ दोहा ॥ कमल नयन करुना करना कमला पति करतार। करो कृपा कविराज को कामद कान्ह कुमार ॥ अथ क्षेपकानुप्रास ताको लक्षन ॥ तुकसों तुक जोई मिलै चरन चरन सुर वृत्ति। अक्षर के स्वर होहिं सम छेका कहति सुकृति ॥ यथा ॥ जय जय गननायक सिद्धि सहायक बुद्धि विधायक भै। हरनं जय षल दाहन विघन विगारन मूषक वाहन जन सरनं ॥ जय जय गुन आगर सब सुष सागर अवनि उजागर दुवन दमों। जै जै जगवंदन कलिमल कंदन गिरिजा नंदन नमः नमो ॥ अथ छंद त्रिभंगी ताको लक्षन ॥ पहिले कल दस पर पुनि वसु वसु पर वहुरि सुरसु पर विरति जहां। फनि भाषिन मानैा बुधिवल जानैा गुर यक आनैा अंत तहां ॥ कहुं जगनन आवै कवि मन भावै श्रवन सुहावै गुनहिं गहै। तिरभंगी नामा छंद सुदामा अति अभिरामा किरति लहै ॥

End—अथ तषतवद्ध कविता ॥ दरव यति आतंक बाढ़ो चढो चढ़ो फाजिल दुरद दरदु भारो पोठि कूरम भयो मुष अति जरद ॥ दरज षाई भार धरती भयो भूधर गरद गहे गढ़ सिर गिरे लै भिरे हरवै वरद ॥ अथ प्रेम हेलिका ॥ नाम एक सब के मन भावै आंक तीनि जामें वनि आवै ॥ उलटि पढ़ेते पसु ह्वै जावै। जो जानै सो पंडित राइ। अथ दव मरसो छंद ॥ तोको चली तुहो चलि आयो तोहि देषि रहो लुकाइ ॥ तू चलि जाहि तोहिलै आवै मोघर सासु रिसाइ ॥ अथ वारि ॥ सब काहू के प्रगट है घर घर कायर सिद्धि। द्वै अक्षर द्वै सरथ हैं एक नाम परसिद्धि ॥ आसीर्वाद ॥ जब लगिवेद पुरान पुरुष पूरन नारायन। जब लगि भूधर भूमि भानु ससि घन तारायन ॥ जब लगि गैारि गनेस वेस सुरपति गुर सुनिये। जब लगि गंग समुद्र रुद्र व्यासादिक गुनिये ॥ कविराज राज फाज़िल अली महावनो कीरति लहै। संपति समाज दंपति सहित चिरंजीव जव लगि रहै ॥ दोहा ॥ दसमो रवि पूरन भयो फाज़िल अली प्रकास। संवत सत्रह से जहां तेंतिस कातिक मास ॥ इति नवाब इनाइत खांन आत्मज महावली मिरजा फाजिल अली विरचिते फाजिल अली प्रकासे संवत १९१९ साके १७८४ फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे तिथैा षष्टमायाम सोमवासरे समाप्तं लिषतं गनेस पंडित ॥

No. 412(*n*). Fāzila Ali prakāsa by Sukhadeva Miśra. Substance—Country-made paper. Leaves—58. Size —8½ × 4½ inches. Lines per page—10. Extent—1,160 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1733 or A.D. 1676. Place of deposit —Rāja Pustakālaya Bhiṅgā Rāja Baharāich).

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ फाजिल अली लिख्यते । प्रथम वृत्यानुप्रास ताके लक्षन ॥ दोहा ॥ पुरबै तुक एकै वरन चरन चरण जह आइ । कहै वृत्य अनुप्रास सो पंडित कवि समुदाय ॥ १ ॥ संशक्ततोपि आवृत्ति वर्णनं संपूर्ण वृत्यानुप्रास लोकाद्वयः ॥ दोहा ॥ कमल नयन करुणा करन कमलापति करतार । करहु-कृपा कविराज कहं कामद कान्ह कुमार ॥ २ ॥ छंद त्रिभंगो छेकानुप्रास इन दुहू को लक्षण ॥ पहिले कल दस पर पुनि वसु वसु पन वहुरि सुरस पर विरति जहां फनि भाषत मानो बुधजन जानो गुरयक आनो अंत तहां ॥ कहुं जगनन आवै कवि मनभावै श्रवन सुहावै दुनहि गहै । तिरभंगी नामा छंद सुधामा अति अभिरामा कीर्ति लहै ॥ ३ ॥

End—सवद एक सबकै मन भावै । आंकतोनि तामें गनिआवै ॥ उलटि पढ़ै तो पसु ह्वै जाइ । जो जानै सो पंडित राइ ॥ दरबयति आतंक बाढ़ौ चढ़ो फाजिल दुरद । दरदु भोरो पोठो कूरम न ऐ मुख प्रति जरद ॥ दरज खाई भारधरती भये भूधर गन्द । दर गहे गढ़ सिर गिरे अरि लै भरे हर वदर ॥ तो को चलो तुहो चलि आओ रीति कि रहो लजाइ । अवतू जाहि तोहि लै आवौ मो घर सानु रिसाई ॥ दोहा ॥ पानो सब का प्रगट है घर घर कारज सिद्ध । द्वै अक्षर है अर्थ है एकै नाम प्रसिद्ध ॥ इति श्री फाजिल अली ग्रंथ समाप्तम् संपूर्ण मस्तु ॥

Subject—अनुप्रास सभेद, राजकुल वर्णन, कवि कुल वर्णन । पृ० १—३ तक, जयशब्द, प्रज्झटिका छन्द, छप्पय, मनहरण व्यतिरेकालंकार, रूपक, उल्लेख, यश व प्रताप वर्णन, यमक गण विचार गणदेवता, फल, दुर्गुण विधान, गोपाल छंद, वृत्ति विचार, दग्धाक्षर, वर्णविचार, गुरु लघु विचार । पृ० ४—८ रसनिरूपण भाव, संस्कृतेपि, रसतरंगणी नवरस कथन, शृंगार रस, संयोग सिंगार, माधव छंद, उत्प्रेक्षा, वियोग, अत्युक्ति, आक्षेप । पृ० ९—११ तक, नायका वर्णन, स्वकीया, जाति, नीलकालंकार, गोपाल छंद, दोहा, सरसी छंद, उत्प्रेक्षा, लुप्तोपमा, क्रम-शैशव मुग्धा, नव यौवन मुग्धा, सरसी छंद, अज्ञात यौवना, धर्मलुप्तोपमा, स्वभावोक्ति, नवोढ़ा मुग्धा, विषद नवोढ़ा, यमक, दृष्टान्तालंकार विश्रुब्धनवोढ़ा, मध्यमा, संदेहानुगत दृष्टान्तालंकार, प्रगल्भा, उत्प्रेक्षा, मध्याधीरा, वक्रोक्ति, संस्कृत्येपि, मध्याधीरा, प्रौढ़ाधीरा, अपन्हुति, प्रौढ़ाधीरा, यमक, प्रौढ़ाधीरा धीरा, ज्येष्ठा कनिष्ठा, संस्कृतेपि, परकीया, अनूढ़ा, पादाकुलक, गुप्ता, व्याजोक्ति विदग्धा, ध्वनि, लक्षिता, अनुशयना, संकेत संदेहा, व्याजोक्ति सामान्या, असंभोग दुःखिता, वक्रोक्ति, व्यतिरेक, रूपगर्विता, मान । पृ० १२—२८ तक । अष्टनायका—खंडिता अपन्हुति, प्रोषितपतिका, उत्प्रेक्षा, अत्युक्ति, शब्द रूपालंकार, अभिसारिका, भ्रान्तिमान, धर्म लुप्तोपमा, विप्रलब्धा, उक्ता, कलहंतरिता, स्वाधीनपतिका, वासकशय्या, प्रोषितपतिका, उत्तमनायिका, मध्यमा,

मर्कसमवृत्ति, अधमा, नायिका की जातियें, पद्मिनी, चित्रनी, संषनी, हस्तनी, सखी, शिक्षा, उलहना, परिहास, शृंगार व आभूषण, श्लेष, दूती, नायिका की दूती, विरहवेदन, विहार। पृ० २९—३७ तक, नायक लक्षण, पति, अनुकूल, दक्षिण, दृष्टान्त, शठ, धृष्ट, उपपति, वैशिक, उत्तम, मध्यम नायक, अनुमान अधम, प्रोषित पति, रूपकालंकार, प्रोषित वैशिक, मानी, चतुर, अनभिज्ञ, पीठ मर्द, वचन व क्रिया चतुर, विट, चेटक, विदूषक, भाव, स्थायी भाव, व्यभिचारी, अंतक, अनुभाव, हाव, लीला, ललित, विलास, विच्छित हाव, विभ्रम, व्यतिरेक, गर्वित उत्प्रेक्षा, विहित, किलकिंचित, विब्बोक कुट्टमित, प्रत्यक्षदर्शन, स्वप्न, चित्र, भ्रमला छंद। पृ० ३८—४९, विप्रलंभ, समीप, अभिलाषा, गुनकथन, सुमति, उद्वेग, प्रलाप, चिन्ता, जड़ता, व्याधि, उन्माद, पृ० ५०—५२ तक। रसनिरूपण, करुणा, रौद्र, वीर, दया, दान, युद्ध, भयानक, वीभत्स, अद्भुत, सम, मध्याक्षरी छप्पय—पृ० ५३—५६ तक इति।

No. 412 (*o*). Fāzila Prakāśa by Sukhadeva Miśra of Kampilā. Substance—Country-made paper. Leaves—63. Lines per page—32. Extent—1,008 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1733 or A.D. 1676. Place of deposit—Ṭhākura Śiva Prasāda Simha, Katolā, Post Office Fakharpur, District Baharāich (Oudh).

No. 412 (*p*). Jnāna Prakāśa by Sukhadeva. Substance—Country-made paper-Leaves—11. Size—7½ × 5⅓ inches. Lines per page—8. Extent—52 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1893 or A.D. 1836. Place of deposit—Rāmādhina Murāw, Village Badausarāya, District Bārābaṇkī (Oudh).

Beginning—अथ ज्ञान प्रकाश लिष्यते ॥ दोहा ॥ दोन वचन ह्वै शिष्यने नमस्कार कियो आइ। बांध्यो मन संसार में छूटै कौन उपाइ ॥ १ ॥ द्वितीय प्रश्न पुनि कहत हैं नीके कहिये मोहि ॥ पंच कोश वपुतोनि की उत्पति कैसे होइ ॥ २ ॥ गुरु वचन ॥ सिष उत्तर सुनि गुरु कह्यो निश्चय करु उर माहिं ॥ छूटै एक विचार ते दूजो साधन नाहिं ॥ ३ ॥ येकै ते तृष्णा भयो द्रष्टा सत्ता पाइ। पंच कोश करि रचित है कहैां तोहि समुझाइ ॥ ४ ॥ शिष्य ॥ ईश्वर तुम तृष्णा कह्यो चेतन सत्ता पाइ ॥ भिन्न भिन्न करि मोहि इन को कहैा बुझाइ ॥ ५ ॥

End—हलन चलन भोजन क्रिया ज्ञानिहु के घर होइ ॥ अहंकार करि रहित है ताते वधै न कोय ॥ ४६ ॥ अरिल्ल ॥ आतम उद्यत रूप सर्वगत जानु रे ॥ वेकल्प रहित सारूप सुद्ध परमानु रे ॥ परारब्ध के योग दुख सुख भासही ॥ आतम सुद्ध सरूप सुता परगासहीं ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ कहत सुनत सबही थके उभयो एक निरधार । ब्रह्म अग्नि परगट भई जक्त भयो जरि छार ॥ ४८ ॥ कीन्हैं ग्रंथ विचार यह निश्चै ज्ञान प्रगास ॥ श्रवण सुनत आनंद युत मिटै द्वैत जग त्रास ॥ ४९ ॥ गुरु सिष को संवाद यह जोरि सुनै चित लाइ समुझै अपने रूप को जक्त भर्म मिटि जाइ ॥

Subject—(१) पृ० १—४ तक—संसार में बंधे हुए मनके छुटकारे का प्रयत्न पूछना (शिष्य द्वारा)—गुरु का ज्ञान द्वारा संसार से छुटकारा पाने का वर्णन, आनन्द कोश तथा कारण और सूक्ष्म शरीर का वर्णन। स्थूल शरीर का वर्णन, जीव का वर्णन, जीव को ब्रह्म का आभास कथन और ब्रह्म का निर्विकल्प।

(२) पृ० ५—१० तक—तत् तथा त्वं पदों के वाच्य तथा लक्ष्य अर्थ। देह और प्राण का पृथकत्व। माया का मिथ्या होने का वर्णन। ईश्वर की परिभाषा। अविद्यांधकार विनाश होने का समय।

(३) पृ० ११—११ तक—ज्ञानी को सभी क्रियाओं का निरभिमानता से होने का वर्णन। निरभिमानी का क्रियाओं में न बंधने का वर्णन, दुख सुख भासने का कारण, अपने रूप के पहचानने से संसार के भ्रमों का विनाश।

No. 412 (*q*). Jnāna Prakaśa by Sukhadeva. Substance—Country-made paper Leaves—27. Size—6½ × 5 inches. Lines per page—34. Extent--459 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1755 or A.D. 1698. Date of manuscript--Samvat 1904 or A.D. 1847. Place of deposit--Śrī Bābā Rāmacharanadāsajī, Chandrabhawana Payāgapura, Post Office Payagapur, District Baharāich (Oudh).

Note--शेष सब No. 412 (*p*) पर लिखा गया है।

End—नीति अनीति विवेक विचारो। राखो नीति अनीति विसारो ॥ उलटि आयु में सहज समावे। निज स्वरूप आपन तब पावे ॥ सांख्य ज्ञान मत दूजे सुखो। वल्ली कहै जान गुरमुखो। पुनि वेदांतसार मत कहै जामे कहन सुनन नहिं रहै। पूरनब्रह्म निरंतर अहै कैसो नीति अनीति कहै ॥ ज्ञान अज्ञान कवन

सो कहै। सब में सोहं प्रकासो लहै ॥ वेदांती पुनि प्रगट बषानै वल्ली साधुन हू सो जानै ॥ षटशास्त्र को भिन्न विचारा। तत्व विचार पुनि सब मत सारा ॥ जैसे एकै गावन हारा। राग रागिनी वहु विस्तारा ॥ जोई जोई जाको भावै ॥ रीझि रीझि पुनि सोई गावै ॥ विधि निषेध कवने सो कहैं। जैये कै गावन हारा लहै ॥ वल्ली सर्व मत पूरन एका। अपने भावते भये अनेका। सधु वल्ली सुरसरी है। निर्मल अति उजियारी रहै ॥ तन में तन सो नियरे रहै। ज्यों जल में शशि तारे रहैं ॥ षट दरसन ब्राह्मण जोगो जंगम सेवरा संन्यासी दरवेस। विना प्रेम पहुंचे नहीं दुर्लभ हरि को देस। चारि मनुज नौ जज़ है ग्यारह पसु दस पक्ष। बोस महेरु तीस अहि एह चैारासी लक्ष ॥ लिषितं गंगासिंह क्षत्रिय सं॰ १९०२ चैत्रमासे असित पक्षे षष्टीयां सनिवासरे।

No. 412 (r). Maradāna Rasāraṇava by Sukhadeva Miśra of Kampila. Substance—Country-made paper. Leaves—42. Size—10 × 6 inches. Lines per page—46. Extent—1,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1736 or A.D. 1679. Date of manuscript—Samvat 1834 or A. D. 1777. Place of deposit—Thākura Śiva Prasāda Simha, Village Katailā, Post Office Fakharapura, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ कानन टुटै विघन के जालन के यह ग्यान। कज आनन को जाति मिटि गज आनन के ध्यान ॥ वैस वंस अवतंस सम निर्गुन गन को दरिआउ। कनक सिंह जाहिर भयो। जग में रैया राउ। दिलीपति के काज जिन कोटिक करी फतूह। जग मंगात जग पर अजो जाके जस के जुह ॥ जाहिर हिम्मत हद भयो सबहों दुन की मेड। सुमृति जानि जग में करी प्रगट पुन्य को पेंड़। पृथ्वी पालन के भयो ताके पृथ्वीराज मोज देन को भोज सो बड़ा गरीब नेवाज ॥ महा वाहुता के भयो ज्यों छीरधि ते चंद। भूमि पुरंदर सो लगै लषत पुरंदर नंद ॥ सेत करी पुहमी सकल। जाके जस की छोह। मानो छोर के सिंधु ते काढ़ी बहुरि बराह ॥ मरदानो ताके भयो मृदुन रैया राउ जग जाको अविचल वचन अंगद कैसो पाउं ॥ मृदुन कवि सुखदेव सो भाष्यो निपट सनेहु। कह्यो नाइका नाइकन वरनि ग्रंथ करि देउ। मृदाने के हुकुम ते मिश्र सुकवि सुखदेव कहत लक्ष लक्षन सहित न्यारे न्यारे भेव ॥

End—ऐसे नवहू रसन के भेद कहे हम जानि। रस ग्रंथन की रीति यहि सबै जानि है जानि ॥ यह मर्दान रसार्नो पूरो कीन्हेंा ग्रंथ। याके माने मानि है रस ग्रंथन को पंथ ॥ इति श्री मिश्र सुखदेव कृतो रसार्णव संपूर्ण समाप्त मस्तु

मिश्र शिवदास दासेन श्री श्री श्री चौधरी देव सिंहस्य पठनार्थं मिता भादिया कृष्ण पक्षे तिथैा पंचम्यां शनैा संवत १८३४ प्रसनी गोलालपुर तिनके मध्य सुठाम। मिश्र सुकवि शिवदास तहं बसै लषोपुर ग्राम ॥ तिनपै करि कै बहु कृपा देवसिंह कह्यो हमै लिषिदेव यह लषै रसनि को भेव ॥ जौलो देस गणेश हैं ईस दिनेस कुरेस देवसिंह दलसिंह सुत करै राज्य सब देस ॥ श्री दुर्गा देवैनमः श्री रामानुजायनमः चिरंजीव तब लौ रहै जबलो रवि रजनीस जाको यह पोथी लिखी ताको यहै असीस ॥ श्रीपूरब खैराबाद को परगना बिसवां नाम तामे बसै सु चौधरी देवसिंह सरनाम ॥ यह पुस्तक संवत १७३६ में मर्दानसिंह की आज्ञा से रची गई।

Subject—पृ० नं० १—४२ तक—नायिका नायक भेद आदि कवित्त सवैया आदि छन्दों में वर्णन किये गए हैं।

No. 412(*s*). Vrittivichāra by Sukhadeva Miśra of Kampilā. Substance—Country-made paper. Leaves—176. Size—9 × 5 inches. Lines per page—8. Extent—1,056 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nagarī. Date of Composition—Samvat 1626 or A. D. 1569. Date of manuscript—Samvat 1851 or A. D. 1794. Place of deposit—Paṇḍita Rāmadulārē, Post Office Deva, Village Deva, District Bārābaṇkī (Oudh).

Note—(1) आदि अंत No. 412 (*g*) पर लिखा गया है।

Subject—(१) पृ० १—४ तक—वंदनाएं—कृष्ण, गणेश को, ग्रंथ का आधार, छन्द की परिभाषा।

(२) पृ० ४—१४ तक—कविवंश वर्णन। आश्रयदाता का परिचय तथा ग्रंथ निर्माणकाल।

(३) पृ० १५—२८ तक—दग्धाक्षर विचार, प्रतिवर्ण फल, पिंगल मतानुसार गुरु विचार, उदाहरण, टीका ३ ॥ गुरु का उदाहरण गुरु के नाम, लघुविचार, लघु के नाम, लघु के उदाहरण, सूत्रनिका प्रत्यय लक्षण, प्रस्तार लक्षण, पिंगल मत वर्ण प्रस्तार, अगस्त्य मत, प्रस्तार के तीन भेद, स्थान विपरीत, संख्या विपरीत, उभय विपरीत, प्रस्तार भेद ज्ञान, टीका, वर्ण सूची लक्षण, वर्णसूची कर्त्तव्यता, पाताल लक्षण, स्थान विपरीत, उदाहरण, संख्या विपरीत, उदाहरण, उभय विपरीत, मात्रा और सिंहन का प्रयोजन।

(४) पृ० २९—३२ तक—मर्कटी, वर्ण मर्कटी, पिंगल मत वर्ण मर्कटी, वर्ण मर्कटी का चक्र।

(५) पृ० ३२—४० तक—उद्दिष्ट लक्षण, अगस्त्य मत उद्दीष्ट, स्थान विपरीत को उद्दिष्ट, उदाहरण, वर्ण नष्ट, संख्या विपरीत उभय विपरीत, वर्ण मेरु।

(६) पृ० ४१—५० तक—लुप्त।

(७) पृ० ५१—५८ तक—समलक्षण, उदाहरण, अर्द्ध समलक्षण, उदाहरण, विषमवृत्त, उदाहरण, दंडक का लक्षण, उक्तादिको सूचिका, वर्ण प्रत्ययको सूचनिका।

(८) पृ० ५९—८० तक—समवृत्त श्री छंद, उक्ती श्री छन्द, मही छन्द, मधु छन्द, ससी, रमन, पंचाल, मृगेन्द्र, मंदर, प्रतिष्ठा, धारी, नगानिका, पंचाक्षर प्रस्तार, संमोहा छन्द, कोर छन्द, हस्ति, हंसी, जमक छन्द, गायत्री षड़ाक्षर प्रस्तार, सेषारोजा छन्द, डिल्ल, ससिवदना छंद, वसुमति, विज्जोहा, मंथाना, सप्ताक्षर प्रस्तार, उष्णिक छंद, सुवास, करहंच, सीरष, रूपका, मदलेषा, मधुमनी, अनुष्टप, अष्टाक्षर, प्रस्तार प्रमाणिका, कमल, कुमार ललिता, चित्रपदा अहीरी, वृहती, सारंगिका, पाइना, कमला, विंवा, तोमर, रूपामाली, दशाक्षर प्रस्तार संजुता, चंपकमाला, सारवती, सुषमा, अमृतगत, एकादशाक्षर प्रस्तार जगती मील सरुपा, सुमुषी दोधक, मदनक, सेनिका, मालिनी, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, वामछन्द के, चतुर्दश जाति का उद्दिष्ट ॥ नष्ट

(९) पृ० ८१—९२ तक—द्वादशअक्षर प्रस्तार, भुजंगप्रयात, लक्ष्मीधर छन्द, सारंग, मौक्तिक, गंगाधर, मोटक, तरल नयन, सुमुषी सुन्दरी, प्रमिताक्षरा, तारक, सुखदायक, कंदुक छंद, चारु छन्द, पंचचामर।

(१०) पृ० ९३—९७ तक लुप्त।

(११) पृ० ९८—११६ तक—मालिनी, सरभ छन्द, सारंगी छंद, भ्रमरावली, नराच, नील, चंचला, पृथ्वी छन्द, मालाधर, धृत, क्रीड़ा, चर्चरी, चन्द्रमाला, गीति का, कृति वृत्ति, दंडिका छन्द, स्रग्धरा, आकृत्ति, मदिरा, सवैया भेद, मोदक, विकृत, सुमुषी, वाम छन्द सवैया भेद, माधवी, गंगाधर, किरीटी, सुंदर छन्द, कृतवृत्त।

(१२) पृ० ११७—१२१ तक—दंडक छंद, सुधाधर, महीधर, वसुधाधर, नीलचक्र, मनहरण, जलदहन।

(१३) पृ० १२२—१३६—गद्य विचार वर्णन मात्रा, प्रस्तार, भेद, स्थान विपरीत, संख्या विपरीत, उभय विपरीत, पंचकल टगन के नाम, ठ, ड, ण, गण के नाम, मध्य गुरु के नाम, सर्व लघु चतुःकला के नाम, आदि लघु पंचकला के, आदि लघु त्रिकल के नाम, आदि गुरु त्रिकल, मात्रा सूची, कलापताल, कला

पताल का चक्र, अथ चारो प्रकार के उद्दिष्ट, प्रथमक्रम प्रस्तार, संख्या विपरीत प्रस्तार, उभय से विपरीत चारो कला प्रस्तार, स्थान विपरीत, मात्रा मेरु, खंड मेरु, मेरुचक्र, मर्कटी, मर्कटी चक्र, मात्रा पताका, मात्रा छंदों की अनुक्रमणिका।

(१४) पृ० १३७—१७६ तक। गाथा, दोहा, नंद, रोला, रसिका, चौपैया, गोधना, सुभगा, सुलक्षी, पादाकुलक, अरिल्ल, काव्य कुंडली, उल्लाला, छप्पय, छप्पय दूषण, चौबोला, मनमोहन, सुगती, मृदु गति, शोभन, वसुमती, गोपाल, लीला, हरिप्रिया, अनुकूल, सुमाला, चुलियाला, परज्वोन, साल, सोरठा, हाकिल, मधु भार, अहीर, कुंभ, सरसी, दंडकला, दीपक, जोतिधरा, निर्मला, सिंहावलोकन, पुलंगम, लोलावती, हरिगोता, त्रिभंगी, दुमिला, हरिसुजन, हरनाम, दोहरा, मरहट्टा, दंडिका, मागधी, ग्रंथ समाप्ति।

No. 412( ). Vritti Vichār by Sukhadeva Miśra of Kampilā (Farrukhābād). Substance—Country-made paper. Leaves—81. Size—8 × 6 inches. Lines per page—20. Extent—915 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1728 or A. D. 1671. Date of manuscript—Samvat 1936 or A. D. 1879. Place of deposit—Pandita Krishna Bihārījī Miśra, Editor, Mādhuri, Lucknow.

No. 413. Vaidyaka Sāra by Sukhalāla of Gaundāpur (Gondā). Substance—Country-made paper. Leaves—92. Size—9 × 7 inches. Lines per page—16. Extent—2,200 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1892 or A. D. 1835. Date of manuscript—Samvat 1892 or A. D. 1835. Place of deposit—Rājā Pustakālaya, Bhingā (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ श्री सरस्वत्यै नमः॥ दोहा॥ गनपति गिरा सु गुरु गवरि गिरिपति गोविंद गंग। गाइ गाइ गुन गन गनत गति मति होत अभंग॥ १॥ अवधपुरी सरजू नदी तीन भुवन विख्यात। गुरु वसिष्ट दसरथ नृपति सुमिरत सुख सरसात॥ २॥ अवधोत्तर दिसि में लहसै गउडापुर अभिराम। बरन चारि चतुराश्रमी बसत जहां सुभ ठाम॥ ३॥ तापुर बंस बिसेन में भूपति भये उदार। सूर सुपूत सुसाहसी भक्त दीन दातार॥ ४॥ तिहि कुल प्रगट प्रसिद्ध भव श्री गुमान नरनाह। प्रजा अनंदित बसति है जाके जसकी छांह॥ ५॥

End—सगुन सुभूप गुमान के बानो बुद्धि बिबेक। लघुमति कबि सुखलाल की कहा कहौं मुख एक॥ संबत लोचन रंध्र बसु ससि मधुमास बिचार। कृष्ण चतुर्दसि सौम्य दिन पूरन बैदक सार॥ श्लोक—तैलं रक्ष जलं रक्षे रक्षेसि मल बंधनात्। मूर्ख हस्ते न दातव्यं येवं वदति पुस्तकम्॥

इति श्रीमन महाराजाधिराज श्री महाराज गुमान सिंह जी बहादुर आज्ञा बैदक सार ज्योतिर्विद सुखलाल विरचिते गद गंजन वर्णनाम सुभमस्तु॥

Subject—मंगलाचरण—पृ० १। नाड़ी परीक्षा—पृ० २ मुख परीक्षा—पृ० ३। नेत्र परीक्षा—पृ० ४। मूत्र परीक्षा पृ० ५। वात पित्त-कफ परीक्षा—पृ० ६। पित्त कफ लक्षणादि, स्नायु लक्षण, वैद्य लक्षण, साध्यासाध्य—पृ० ७। ज्वर भेद चिकित्सादि पृ० ८, सन्निपात पृ० ९—२२। जल भेद चिकित्सा, अतिसार पृ० २२। संग्रहणी—पृ० २३—२५। बवासीर—२६, भगंदर, २७। विशूचिका—२९—३०। अजीर्ण, विशूचिका ३१, कृमि, ३२। पाण्डुरोग ३३, रक्तपित्त लक्षण कास पृ० ३३—३५। श्वास पृ० ३६, हिचकी पृ० ३७, यक्ष्मा पृ० ३८ अरोचक पृ० ३९, तृषा, छर्दि पृ० ४०, मूत्र परीक्षा पृ० ४१, उन्माद, पृ० ४२। मेद, पृ० ४३, वात व्याधि पृ० ४३—४७ वातरक्त पृ० ४८, आमवात पृ० ४९ शूल पृ० ५०, गुल्म पृ० ५२, उदर रोग पृ० ५३, गुल्म जलोदर, हृदि रोग, मूत्र कृच्छ्र पृ० ५४। प्रमेहो पृ० ५५, मूत्र रोग प्रमेह पृ० ५६। मेदा रोग पृ० ५८, शोथ पृ० ५९। अंडवृद्धि, श्लोपद पृ० ५९, व्रण पृ० ६०। गंडमाला पृ० ६०, अन्नपान उपदंश पृ० ६१। विसर्प पृ० ६३। कुष्ट रोग पृ० ६४, दद्रु पृ० ६६, उन्माद अम्लपित्त पृ० ६६। दूसरा रोग पृ० ६७। अर्द्धशीशो केशवर्द्धन, केश स्याह पृ० ६८। नेत्र रोग पृ० ६९, जोबन पीड़ा पृ० ७१। मुख झाई संमोह, नासिका रोग पृ० ७१। कर्ण रोग, स्त्री रोग पृ० ७२। गर्भ रक्षा पृ० ७३। कुष्ट रोग सूतिका रोग पृ० ७३, योनि दुर्गन्धि रगड़ गर्भ निवारण, क्षीर वृद्धि, कुच काठिन्य, बाल रोग पृ० ७५। मुख रोग लिंग शिथिलता पृ० ७७। वृश्चिक विषोपचार, खुजली, विष पृ० ८१। मुख दुर्गंधि हरण कस्यकर्म पृ० ८२। रेचन, वमन पृ० ८३ हरीतिकादि पृ० ८३। आशीर्वाद—८८।

No. 414. Hanumāna Charitra (Chaupāyī) by Sundaradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—80. Size—12½ × 6½ inches. Lines per page—12. Extent—1,440 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1616 or A. D. 1559. Date of manuscript—Samvat 1915 or A. D. 1558. Place of deposit—Jaina Mandira (Barā) Bārābankī (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ हरणवंत चौपाई कवित्त लिख्यते ॥ स्वामी सुबृत नाथ जिणंद। सुमिरत होइ सिद्धि आनंद ॥ नासै पाप भली मति होइ। नमैा सीस जोड़ि कर दोइ ॥ १ ॥ आदिनाथ जिण सेवा करौ। वाचा वनि काया चित धरौ ॥ अजित नाथ वन्दों जोन सार। लहैं ज्ञान पावैं शिव द्वार ॥ २ ॥ संभव नाथ जपों मन लाय। बाढ़ै धरम असुभ छै जाय। नमो सीस अभिनंदन देव। सुर नर फणि मिलि आचै सेव ॥ ३ ॥ स्वामी सुमिति देहु तुम मोहि। राति दिवस मति राषै तोहि ॥ पद्म प्रभू की सेवा करौ। जिमि संसारा बहु दिन परौ ॥ ४ ॥ हरित वरण जिन देव सुपास। नाम लेत सहु पूजै आस ॥ चन्द्र प्रभू जिण गुण हीन धान। सुमिरत होइ पाप छ्वै मान ॥ ५ ॥

End—जो या कथा सुणैं दै कान। काललवधि पावै निरवाण ॥ ६८ ॥ गांइ गांइ इहहु हणू न होइ। तेल सिंदुर जु पूजा कोइ। पवन पूत बैकुंठहि गयो। सिधु सुधप दई पाइयो ॥ ६९ ॥ जे पेखे पूजे हणुवंत। तासु पापन विलाभै अंत ॥ जीव बहुत तसु आगे मरे। पूजि कुदेव नरकि संचरै ॥ ७० ॥ जाणैं भव्य वहुप आचार। मिथ्या देव तजै व्योहार ॥ दुष्ट देव शंका मति करो। जैसे कर्म तोड़ि निस्तरै ॥ ७१ ॥ × × × × ×
स्वामी मुनि सुव्रत नरनाथ जिणंद। सुमिरत होइ सिद्धि आनन्द ॥ नासै पाप भली मति होइ। नमो सीस जोड़ि कर होइ ॥ ७२ ॥ इति श्री हणवंत कथा चैापाई संपूर्ण। लिष्यतं गजाधर के पूत दावरीका संवत १९१५ मिति आषाढ़ शुक्ला १—नवाबगंज में लिखी।

Subject—(१) पृ० १—१६ तक—मंगलाचरण—जैन तीर्थंकरादि बंदना, राजा प्रह्लाद के वैभव का वर्णन और उसकी रानी से पवनंजय कुमार की उत्पत्ति। महेन्द्र (विद्याधर) के अंजना कुमारी का उत्पन्न होना और समयनुसार उसके विवाह की चिन्ता, मंत्रियों से सम्मति, अंजना के पिता का राजा प्रह्लाद के पास आकर उनके साथ अपनी पुत्री का विवाह ठीक करना और उसका लैाट जाना।

(२) पृ० १७—२४ तक—राजकुमार पवनंजय अंजना के रूप लावण्य की प्रशंसा सुन कर विवाह के तीन दिन रह जाने पर ही उत्कंठित हो कर अपने मित्र प्रहस्त को लेकर अपनी ससुराल पहुंचना और अलक्ष्य होकर महलों में जाना और अंजना की सखियो का राजकुमार पवनंजय तथा इन्द्रजीतादि की प्रशंसा करना और अंजना का मैान होकर सुनना और इसपर राजकुमार का लैाटना और फिर बहुत आग्रह पर विवाह कर लेना। अंजना का पति के अश्रद्धा के कारण अपमानित होकर एकांत वास।

(३) पृ० २५—२८ तक—रावण की सहायता को कुबेर के साथ युद्ध करने का पवनंजय को जाना। अंजना के द्वार पर होकर हो उनका निकलना, और पति का पल्ला पकड़ कर उसका बहुत गिड़गिड़ाना किन्तु उस पाषाण हृदय का न पसीजना, पवनंजय का मान सरोवर पर पहुंचना और वहां से चक्रवाक मिथुन की वियोगावस्था से विवश होकर विमान द्वारा अंजना के महलों में आकर उससे संयोग करना और पारस्परिक मनोमालिन्य दूर करना। अपना चिन्ह देकर विदा होना।

(४) पृ० २९—४२ तक—गर्भ प्रकाशित होना। अंजना के प्रमाण उपस्थित करने पर भो सास ससुर का उसे निकाल देना, उसका पिता के यहां गमन और पिता का भो उसको सहायता न करना। एक महात्मा योगो के दर्शन और उनका भविष्य वाणी, पति सम्मेलनादि विषयों के संबंध में कह के अन्तर्धान होना, पुत्र जन्म, राजा प्रतिसूर्य (अंजना के मामा) का अंजना से सम्मेलन और उसे अपने यहां ले जाना। बच्चों का विमान से गिरना, और बच जाना, राजा प्रतिसूर्य द्वारा उसका नाम शिलाचूर पड़ना और घर आकर राजा का उत्सव करना और द्वीप के नाम पर उसका नाम हनूमान रखना।

(५) पृ० ४३—७९ तक—पवनंजय का युद्ध से लौटना और स्त्री को न पाकर विना माता पिता को सम्मति के उसको तलाश करने को ससुराल जाना और उसका वहां भो न पाना और अंत में निज प्रियतमा का कुमार से मिलाप। पवनंजय का कुछ दिनों तक वहां रहना और हनूमान का वहीं कोष, व्याकरण, न्याय छंदादि का पठन कर के पारंगत होना, हनूमान जी का कई युद्धों में रावण की सहायता करना। हनूमान का रावण को भगिनो शूर्पणखा की पुत्री अनंग पुष्पा और सुग्रोव सुता पद्मरागी से विवाह होना। रामचन्द्र के बनवास के समय महारानो सोता के अन्वेषण में और रावण के साथ संग्राम में बहुत कुछ सहायता दी और जीवन के अंत में इस संसार को असार समझ कर इससे विरक्त होना और इन्द्रिय दमन पूर्वक योग को चरम सोपान पर आरूढ़ हो आत्मा की शुद्धि कर परमात्मपद प्राप्ति।

(६) पृ० ७९—८० तक—हनूमान की पूजा का फल। कथा निर्माण कारण व समयः—ब्रह्मराय मल्ल मत करि हिये, हणू कथा कोयो परगास॥ क्रियावंत मुनि सुंदर दास। भणा कथा मन में धरि हर्ष॥ सोलह से सोलह शुभ वर्ष। रित वसंत मास वैसाख॥ नवमो शनि अंधियारो पाख॥

No. 415(*a*). Jnāna Samudra by Sundaradāsa of Jaipura Rāja. Substance—Country-made paper. Leaves—32. Size—

8½ × 5 inches. Lines per page—25. Extent—600 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—Paṇḍita Badari Nāthaji Bhaṭṭa, Lucknow University, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः। अथ ज्ञान समुद्र लिख्यते ॥ मंगलाचरण ॥ छप्पय ॥ प्रथम वंदि परब्रह्म परम आनंद स्वरूपं। दुतिय वंदि गुरुदेव दियो जिन ज्ञान अनूपं ॥ त्रितिय वंदि सब संत जारि करि तिनके आगय। मन वच काय प्रणाम करत भय भ्रम सब भागय ॥ इहि भांति मंगलाचरण करि सुंदर ग्रंथ बखानिये। तहं बिघ्न न कोऊ ऊपजय यह निश्चय करि मानिये ॥ १ ॥

दोहा ॥ ब्रह्म प्रणम्य प्रणम्य गुरु पुनि प्रणम्य सब संत। करत मंगलाचरण इमि नाशत बिघ्न अनंत ॥ २ ॥ उहै ब्रह्म गुरु संत वह वस्तु विचारति एक। बचन विलास विभाग येह वदन भाव विवेक ॥ ३ ॥

End—सुन्दरज्ञान समुद्र कैा वारापार न अंत। विषई भागे भिझकि कैं पैठै कोई सन्त ॥ सुन्दर ज्ञान समुद्र कैा जो चल आवै नीर। देखत ही सुख ऊपजे निर्मल जल गंभीर ॥ यहई ज्ञान समुद्र है यह गुरु शिष्य संवाद। सुन्दर याहि कहै सुनै ताके मिटहिं विषाद ॥

इति श्री ज्ञान समुद्रे अद्वैतादि हुं निरूपणं नाम पंचमोऽध्याय ॥ गुरु शिष्य संवाद संपूर्ण ॥

मिति कार्तिक वदी १४ शनिवार संवत् १९०० वि० इति।

No. 415(*b*). Jnāna Samudra by Sundaradāsa.—Leaves—34. Size—11 × 4½ inches. Lines per page—16 Extent—544 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍitā Gurucharaṇa Vājpaī, Bhaṇḍa, Rāe Bareli.

Note—I आदि अंत No. 415(*a*) पर लिखा गया है।

Subject—पृ० १—परब्रह्म तथा गुरु संतो की वंदना और मंगलाचरण, ग्रंथारंभ वर्णन। पृ० २—ग्रंथ गुण वर्णन, जिज्ञासु के लक्षण, गुरु देव की दुर्लभता का वर्णन, गुरु-महिमा वर्णन। पृ० ३—गुरु लक्षण और गुरु की प्रीति वर्णन, शिष्य की प्रार्थना गुरु के प्रति। पृ० ४—गुरु की प्रार्थना। शिष्य का जीव प्रकृति और आवागमन विषय पर गुरु से प्रश्न और गुरु का उत्तर। पृ० ५—भक्ति

विषय, भक्ति के ९ भेद वर्णन। दसवां प्रेम लक्षण और उसके आगे पराभक्ति वर्णन। उत्तम, मध्यम और कनिष्ट भक्ति का वर्ण। पृ० ६—श्रवण, कीर्तन, स्मरण शिष्यत्व और अर्पण भक्ति का लक्षण और उदाहरण। पृ० ११—प्रेम लक्षण के उदाहरण, पराभक्ति के लक्षण और उदाहरण इनमें पराभक्ति उत्तम, प्रेम भक्ति मध्यम और नवधा भक्ति कनिष्ट है। पृ० १२—योग विषय-यम वर्णन अहिंसा का लक्षण, सत्य का लक्षण, अस्तेय लक्षण, ब्रह्मचर्य का लक्षण, अष्ट प्रकार मैथुन के लक्षण, क्षमा लक्षण, धृति लक्षण। पृ० १३—दया लक्षण, आर्जव लक्षण, मिताहार लक्षण, शौच लक्षण। पृ० १४—नियम—वर्णन, तप लक्षण, संतोष लक्षण, बुद्धि आस्तिक लक्षण, दान लक्षण, पूजा लक्षण, सिद्धान्त श्रवण लक्षण, पृ० १५—ह्री लक्षण, मन लक्षण, जप लक्षण, होम लक्षण, पृ० १६-सिद्धासन का वर्णन, पद्मासन का वर्णन, प्राणायाम विषय—इड़ा, पिंगला और सुषमना नाड़ियों का वर्णन। पृ० १७—दस प्रकार के पवन का वर्णन—प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान, नाग, कुर्म, कर्क, देवदत्त और धनंजय का वर्णन। इन दस वायुओं के स्थानों का वर्णन। छः चक्र वर्णन। प्राणायाम की क्रिया का वर्णन। पृ० १८—गोरष उक्तः कुंभक नाम वर्णन। धुनि—दस प्रकार की धुनि का वर्णन। भंवर गुंजर, संख धुनि, मृदंग, ताल, घंटा, वीणा भेरि, दुंदभि, समुद्र गरज, मेघ घोष। पृ० १९—मुद्रा नाम वर्णन प्रत्याहार वर्णन, पंचतत्व की धारणा का वर्णन। पृ० २०-ध्यान विषय—पदस्थ ध्यान वर्णन, रूपस्थ ध्यान, रुपातान ध्यान वर्णन। पृ० २१—समाधि वर्णन। पृ० २२-सांख्य मतानुसार योग वर्णन। जीव प्रकृति विषय वर्णन। पृ० २३-पंचतत्व गुण वर्णन। पंचतत्व स्वभाव वर्णन। तामसाहंकार वर्णन और राजसाहंकार वर्णन। राजसाहंकार से दस इंद्रियों की उत्पत्ति वर्णन। पृ० २४-सात्विकाहंकार से उत्पन्न देवताओं का वर्णन त्रिविधि शक्ति सत्व रज, तम का वर्णन। स्थूल देह का वर्णन। पृ० २५-पंचतत्व पंच बृतादिक अंश वर्णन और अन्यभेद वर्णन, कर्म इंद्रिय त्रिपुरी भेद वर्णन। पृ० २६-अंतःकरण त्रिपुरी वर्णन, पृ० २७-जाग्रत अवस्था, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्थाओं का निर्णय, तुर्या अवस्था का वर्णन। पृ० २८-तुरीयातीत वर्णन। पृ० २९-चतुरभाव वर्णन, प्रागभाव अन्योन्य। पृ० ३०-भाव वर्णन, पंचतत्व विकार वर्णन, प्रध्वंसा भाव। पृ० ३१—३३—अत्यंताभाव वर्णन, द्वैत अद्वैत का निर्णय। पृ० ३४—ज्ञान समुद्र ग्रंथ की प्रशंसा वर्णन।

No. 415(*c*). Jnāna Samudra by Sundaradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—34. Lines per page—16. Extent—612 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābū Chandrabhanajī, B.A., Aminābad, Lucknow.

No. 415-(*d*). Sabdasāgara by Śundaradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—3. Size—16 × 6 inches. Lines per page—26. Extent —90 Auushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhakura Jagadeo Simha, Village Gujaulī, Post Office Baundī, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ भूल्यौ फिरै भ्रमते करत कछु श्रौर श्रोर करत ना ताप दूरि करत संताप को। दक्ष भयो रहे सुनि दक्ष प्रजापति जैसे देत परदक्षणा न दक्षणा दे श्राप को। सुन्दर कहत ऐसे जाने न जुगति कछु श्रोर जाप जपै न जपत निज जाप को। बाल भयो जुवा भयो वय सोते वृद्ध भयो वय रूप होय के बिसरि गयो बाप को ॥ १ ॥ इन्द्रव छन्द ॥ पान उहै जो पीयूष पोवै नित दान उहै जो दरिद्रहि भानै ॥ कान उहै सुनिये जस केशव मान उहै कर ऐसन मानै। तान उहै सुरतान रिझावत् ज्ञान उहै जगदीसहि जानै ॥ बान उहै मन बेधत सुंदर ज्ञान उहै उपजै न श्रज्ञानै ॥ सूर उहै मन को बस राषत कूर उहै रन माहिं लजै है ॥ त्याग उहै श्रनुराग नहीं कहुं भाग उहै मन मोहत जै है ॥ तग्य उहो निज तत्वहि जानहि यग्य उहै जगदीसज जै है। रक्त उहै हरि सो रत सुन्दर भक्त उहै भगवंत भजै है। ३

End—सोवत सोवत सोइ गयो सट रोवत रोवत कै वर रोयो। गोंवत गोंवत गोइ धरयो धन बोवत बोवत लै विष बोयो। सुन्दर सुन्दर नाम भज्यो नहिं टोवत टोवत वोझहि टोयो। देषत देषत मागर मैं पुनि वूझत वूझत बूझत श्रायो। सूझत सूझत सूझि परी सब गावत गावत गोविद गायो। सोधत सोधत सुद्ध भयो पुनि तावत तावत कंचन तायो। जागत जागत जागि परयो जब सुन्दर सुन्दर सुन्दर पायो ॥१०९॥ बैठत रामहिं ऊठत रामहिं बोलत रामहि राम रह्यो है। जेवत रामहिं पोवत रामहिं धोमत रामहि राम गह्यो है। जागत रामहिं सोवत रामहिं जोवत रामहिं राम लह्यो है। देतहु रामहिं लेतहु रामहिं सुन्दर रामहि राम कह्यो है ॥ श्रोत्रहु रामहि नेत्रहु रामहि वक्रहु रामहि रामहि गाजै ॥ सीसहु रामहि हाथहु रामहि पांवहु रामहि रामहि साजै ॥ पेटहु रामहि पीठिहु रामहि रोमहु रामहि रामहि वाजै ॥ श्रंतर राम निरंतर रामहि सुन्दर रामहि राम विराजै ॥ भूमिहु रामहि श्रापुहि रामहि तेजहु रामहि रामहि वायुः। रामहि व्योमहु रामहि चंदहि रामै सूरज रामहि शीत न घामै ॥ श्रादिहु रामै श्रंतहु रामहि मध्यहु रामहि पुंस न वामै ॥ श्राजहु रामहि कालिहु रामहि सुन्दर रामहि म्हामहि थामै ॥ देषहु राम श्रदेषहु रामहि लेषहु राम श्रलेषहु रामै ॥ एकहु राम श्रनेकहु रामहि सेषहु राम

अशेषहु रामै ॥ मैानहु राम अमैानहु रामहि गैानहु रामहि भोनहु ठामै ॥ वाहिर रामहि भोतर रामहि सुन्दर रामहि है जग जामै ॥ दूरहु राम नज़ोकहु रामहि देशहु राम प्रदेशहु रामै ॥ पूरब रामहि पच्छिम रामहिं दक्षिन रामहि उत्तर धामै । आगेहु रामहि पोछेहु रामहि व्यापक रामहिं है वन ग्रामै ॥ सुन्दर राम दशौा दिशि पूरन स्वर्गहु राम पतालहु तामै ॥ आपहु राम उपावत रामहि भंजन राम संवरत रामै द्दष्टिहु राम अद्दष्टिहु रामहि इष्टहु राम करै सब कामै ॥ वर्णहु राम अवर्णहु रामहि रक्त न पोत न स्वेत न स्यामहि । शून्यहु राम अशून्यहु रामहि सुन्दर रामहि नाम अनामै ॥ इति ।

Subject—ईश्वर को भक्ति सम्बन्धो शब्द ।

No. 415(*e*). Sundaradāsajī ke Ashṭāka by Sundaradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—46. Size—7½ × 9 inches. Extent—285 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1893 or A.D. 1836. Place of deposit—Rāmādhīna Murāo, Village Badausarāya, District Bārābanki (Oudh).

Beginning—श्रो गणेशायनमः ॥ अथ सुन्दर दास जो के अष्टक ॥ दोहा ॥ अलख निरंजन बंदि कै गुरु दादू के पाइ ॥ दोऊ कर तब जोरि कै संतन को सिर नाइ ॥ १ ॥ सुन्दर तोहि दया करो सतगुरु गहिया हाथ ॥ माता ते‍ा अति मोह मै राता विषया साथ ॥२॥ छन्द ॥ त्रभंगो ॥ तोमें मत माता विषया राता बहिया जाता इनवाता ॥ तब गोते खाता बूड़त गाता ता होतो घाता पछिताता ॥ उन सब सुख दाता काढ्यो नाता आप विधाता गहि लेला ॥ दादू का चेला चेतन भेला सुंदर मारग बूझेला ॥ ३ ॥ तो सतगुरु आया पंथ बताया ज्ञान गहाया मनभाया । सब कोर्तन माया यो समुझाया अलष लषाया सचुपाया ॥ हों फिरता धाया उन मन लाया त्रभुवन राया दत देला ॥ दादू का चेला चेतन भेला सुंदर मारग बूझेला ॥ ४ ॥

End—कहु कैान कहै कहु कैान सुनै वह कहन सुनन ते भिन्न हैरे । तहं सोत नहीं तहं घाम नहीं तहं धाम नराति न दिन्न हैरे ॥ तहं रूप नहीं तहं रेष नहीं तहं सुन्दर कछू न चिन्ह हैरे ॥ ६ ॥ नहिं गोश हैरे नहिं नैन हैरे नहिं मुष्ष हैरे नहिं बैन हैरे ॥ नहिं नैन हैरे नहिं सैन हैरे नहिं गैन हैरे न असैन हैरे ॥ नहिं पेट हैरे नहिं पीठि हैरे नहिं कशा हैरे नहिं मोठ हैरे ॥ नहिं दुश्मन्न हैरे नहिं इष्ट हैरे नहिं सुंदर दोठ अदोठ हैरे ॥ ७ ॥ नहिं शोश हैरे नांहिं पांव हैरे नहिं रंक हैरे नहिं राउ हैरे ॥ नहिं पावन पोवन चाउ हैरे । नहिं हारन जोवन दाव हैरे । नहिं नोर हैरे

नहिं नाव हैरे नहिं षाक हैरे नहिं भाव हैरे ॥ नहिं मौति हैरे नहिं भायु हैरे नहिं सुंदर भाव अभाव हैरे ॥ ८ ॥ इति ज्ञान झूलना अष्टक संपूर्ण ॥ संवत १८९३ का

Subject—पृ० १—३ तक—गुरुदया अष्टक—गुरु के उपदेश से चैतन्य होने का वर्णन। अपने को दादू का चेला बताना। (२) पृ० ४—८ तक—भ्रम विदूषण--माला तथा तिलकधारी इत्यादि पाखंडियों के भ्रम का वर्णन। (३) पृ० ९—१४ तक-गुरु कृपा अष्टक—गुरु के चरणों की महानता, गुरु की शिक्षा का फल। (४) पृ० १५-१९ तक—गुरु उपदेश सतगुरु वंदना, गुरु के शब्द वाण का प्रभाव, गुरु के गुण वर्णन, संसार को स्वप्न तुल्य मानकर उससे बचे रहने का कथन। अष्टक के पढ़ने का फल। (५) पृ० २०—२३ तक – गुरु की महिमा कथन के साथ ही साथ दादू को ब्रह्म स्वरूप मान कर वंदना करना। गुरु देव महिमा स्तोत्र। (६) पृ० २४—२७ तक—रामजी अष्टक—राम के एक रस होने का वर्णन। ब्रह्मादि उसी के गुणानुसार नाम होने का वर्णन। सृष्टि उत्पत्ति होने का वर्णन। विश्राम पाने की वन्दना। (७) पृ० २७-३२ तक—नामाष्टक—ईश्वर के कई नाम हरि, ईश्वर, माधव, केशव, अज और मोहन का वर्णन कर के 'तू' शब्द में ही सब का प्रवेश और उसी से उत्पत्ति और विनाश होने का वर्णन। (८) पृ० ३२—३५ तक—आत्मा अचल अष्टक—कुंआ के चलने, दीपक तथा अग्नि के जलने इत्यादि के अशुद्ध प्रयोग या लोकोक्ति के अनुसार अर्थ न हो कर भिन्न अर्थ होने का वर्णन करके आत्मा का अचल सिद्ध करना। (९) पृ० ३५—३७ तक—पंजाबी भाषा अष्टक—योगी, जपी, तपसी इत्यादि को उसके भेद न पाने का वर्णन। उदासी इत्यादि का संसार में बाहुल्य होना किन्तु उसके भेद पाने वाले बिरले ही होने का वर्णन। ईश्वर के अगम अगोचर होने का वर्णन। (१०) पृ० ३८—४० तक—ब्रह्म स्तोत्र अष्टक--ब्रह्म के कुछ गुणों का वर्णन करके उस की कुछ स्तुति करना। (११) पृ० ४१—४४ तक—पीर मुरीद अष्टक—पीर की कृपा से ईश्वर (ब्रह्म) प्राप्त होने का वर्णन। नफ़स को मारने का वर्णन, पीर से राहे रास्त बतलाने का निवेदन। पीर का उसी के हृदय में ब्रह्म का होना बताना। (१२) पृ० ४४—४५ तक अजब ख्याल अष्टक - बंदे के हाजिर होने में खुदा का हाजिर होना, बंदगी के नियम और उपदेश (१३) पृ० ४५—४६ तक-ज्ञान झूलना अष्टक—ईश्वर का सब स्थानों पर समभाव से स्थित होने का वर्णन। बिना अनुभव के उसके ज्ञान न होने का वर्णन। उसी के सर्वस्व होने का वर्णन।

No. 415(*f*). Sundara Vilāsa by Sundaradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—12×6 inches. Lines per page—48. Extent—1,939 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Date of manuscr —Samvat 1940 or 1883 A. D. Place of

deposit—Ṭhākura Śivabaksha Simha, Village Basantapur, Post Office Payāgapura, District Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सुन्दर विलास लिष्यते ॥ प्रथम गुरु देव जी को अंग लिष्यते ॥ इंदव छंद ॥ मौजकरी गुरुदेव दयाकरि शब्द सुनाय कह्यो हरि नेरो। ज्यों रवि के प्रगटे निशि जात सु दूर कियो भ्रमभान अन्धेरो! कायक वायक मानस हू करि है गुरु देवहि वन्दन मेरो। सुन्दरदास कहै करजोर जु दादू दयाल को हूं नित चेरो ॥ पूरण ब्रह्म विचार निरंतर काम न क्रोध न लोभ न मोहै ॥ ज्ञान स्वरूप अनूप निरूपम जासु गिरा सुनि मोह न मोहै। सुन्दरदास कहै कर जोरि जु दादू दयालहि मारि न मोहै ॥ धीरजवंत अडिग जितेन्द्रिय निर्मल ज्ञान गह्यो दृढ आदू। भेषन पक्ष निरंतर लक्ष जु और नहीं कछु वाद विवादू ॥ शील संतोष क्षमा जिनके घट लागि रह्यो सु अनाहद नादू ॥ ये सब लक्षण हैं जिन माहि जु सुन्दर के उर है गुर दादू ॥ भव जल में वहि जातहु ते जिन काढ़ि लिये अपने कर आदू। बहुरि संदेह मिटाय दिये सब कानन टेरि सुनाय के नादू। पूरण ब्रह्म प्रकाश किये पुनि छूटि गयो यह बाद विवादू। ऐसी कृपा जु करी हम ऊपर सुन्दर के उर है गुर दादू ॥

End—जोगी थके कहि जैन थके ऋषि तापस थाकि रहे फल खाते ॥ न्यासी थके बनवासी थके जो उदासी थके वहु फेर फिराते। शेष मसायक और उलायक थाकि रहे मन में मुसुकाते ॥ सुन्दर मौन गही सिधि साधक कौन कहै उसकी मुष बातै ॥ इति आश्चर्य को अंग समाप्त ॥ सवैया। सुष धाम मनोहर अर्गल पुर निज कालिन्दी के कूल कहावै। सुर नर मुनि आदिक ध्यान धरैं तूहो जग को प्रतिपाल करावै ॥ जिन किंचित हो जलपान कियो तिनके अघ ओघ को खोज बहावै अब केतिक बात कहों प्रति गंग के जाहि लखे जमराज डरावै ॥ तहं ही वसि के निर्वाह करै द्विज राधा कृष्ण कहावत है। जेहि नाम शिरोमणि लेत सबै पुनि भक्तन के मन भावत है कर लेषक को उद्यम करि कै यों आय उदर को दीयत है। परमारथ हेत बनै न कछू तातें अति ही जिय कापत है। इति श्री सुन्दर दास कृत सवैया सुन्दर विलास ग्रंथ समाप्तः लेखक राधा कृष्ण ब्राह्मण ॥ संवत १९४१ वि०

Subject—इस ग्रंथ में ज्ञानोपदेश सवैया सब ज्ञानियों के लिये वर्णन किये हैं (१) गुरु की महिमा, उपदेश चिन्तामणि काल चिन्तामणि, देह आत्मा विछोह, तृष्णा, धैर्य उराहन, विश्वास, देह मलीनता, गर्भ प्रहार, नारी निन्दा, दुष्ट जन, मनका अंग, चाणक्य को अंग, विपरीत ज्ञान को अंग, वचन, विवेक को अंग, निर्गुण उपासना, पतिव्रता को अंग, विरह, शब्दमार, भक्तिज्ञान, विश्व के शब्द, सूरातन कर अंग, साधु का अंग, ज्ञानी का अंग, सांख्य ज्ञान, अद्वै

भाव का अंग, स्वरूप विस्मरण, विचार का अंग, निष्कलंक ब्रह्म, आत्मा अनुभव, निसंशय को अंग, प्रेम ज्ञानी का अंग, द्वैत ज्ञान का अंग, जगत मिथ्या का अंग, आश्चर्य का अंग, लेखक की सवैया आदि वर्णन।

No. 415(*g*). Sundaradāsa kṛit Savaiyā by Sundaradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—55. Size—15 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—880 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Biśeśwara Siṃha Indrabaksha Siṃha, Village Hari. harpur, Post Office Chilwariyā, District Baharāich (Oudh).

Note (I) 'सुन्दरदास कृत सवैया' नामक ग्रंथ वास्तव में 'सुन्दर विलास' है।

(II) शेष सब विवरण No. 415 (*f*) पर लिखा गया है।

No. 415(*h*). Savaiyā Sundaradāsa kī by Sundaradāsa. Substance—Country-made paper Leaves—174. Size—10 × 4 inches. Lines per page—14. Extent—1,696 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Avadheśa Pāṇḍey, Village Khambharihā Pāṇḍay kī, District Baharāich, Post Office Barahāpur (Oudh).

No. 416(*a*). Bhramaragītā by Sūradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—12 × 5 inches. Lines per page—28. Extent—4,200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript Samvat 1899 or A.D. 1842. Place of deposit—Swāmidayāla Vājpaī, Swamidayāla kā purwā, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गोपीजन वल्लभायनमः॥ अथ भ्रमरगीत लिख्यते॥ मंगलाचरण॥ राग कल्याण॥ ताल जलद तिताला॥ चरण कमल बंदौ हरि राई॥ जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे अंधेरे को सब कुछ दिखराई। बहरो सुने गूंग पुनि बोले रंक चले सिर छत्र धराई। सूरदास स्वामी करुणा मय चार वार बंदो तेहि पाई॥ अथ भ्रमरगीत को प्रस्ताव॥ श्री प्रभुजीके वचन उद्धव प्रति॥ राग सारंग॥ पहिले करि प्रणाम नंदराय सो समाचार सब दोजो और उहां वृषभान गोप सों

जाइ सकल सुधलीजा ॥ श्रीदाम आदि आदि सब ग्वाल बालनि मेरा इत भेंटिवो । सुष संदेस सुनाइ हमारो गोपिन को दुष मेटिवो ॥ मंत्री एक बन बसत हमारो ताहि मिले सचुपाइबो । सावधान ह्वै मेरे हूतो ताही माथे नाइबो ॥ सुंदर परम किसोर वय क्रम चंचल नैन बिशाल । कर मुरली सिर मोर पंष पितांवर उर वनमाल । जिन डारियो तुम सघन बन में ब्रज देवो रखवार । वृंदावन सो बसत निरंतर कबहुं न होत निग्रार । ऊधो प्रति सब कही श्याम जू अपने मन को प्रीति । सूरदास प्रभु कृपा करि पठये यह सकल ब्रज रीति ॥

End—राग सारंग ॥ देन आये ऊधो मत नीको । हित उपदेश करन ब्रज आये लिष हरि जीको । जोग जुगति निज मन उपदेसनि ग्यान सुनाइ जतीको । आवहुरी मिलि सुनहु सयानी लियो सुजस को टीको । तजन कहत अवर आभूषन देह गेह सतहीको । अंग भसम करि सीस जटा धरो सिखवत निरगुन फीको । मेरे जान इहै युवतिन को देत फिरत दुख पीको । ता सराप ते भए स्याम तन तरुन गहन उर जीको । जाको कृपा परी री जीव तै सो सोचन भली बुरी को । जैा लगि सुर व्याल डसि भाजै सुख नहिं होत अमी को । राग विहाग ॥ ताल इकतारा ॥ कृष्ण कृष्ण करत डोलु कृष्ण कहां मैं पाऊं । द्वारे ते दैाड़ आऊं तैा उन लाज लजाऊं ॥ तोहे छांड़ि श्रैार को मैं कैान को कहाऊं ॥ ऊधैा जैा तुम बेग जाश्रो प्रेम पाती पठाऊं ॥ ढूढ़ि फिरो बन कुंजन माहिं स्याम स्यामा गाऊं । या विधना नहिं पंख दीनो उड़ि के द्वारका जाऊं । ऊधो जी तुम बेग जाश्रो स्यामहो बेग लै आऊं । सूर के प्रभु दरस दीज्यो हरि हंस कंठ लगाऊं । इति भ्रमर गीत संपूरण ॥ शुभ मितो वैसाख शुक्ल १३ रविवार संवत १८९९ ।

Subject—इस पुस्तक में श्री कृष्ण जी ने ऊधो को मथुरा ते ब्रज में ब्रज युवतियों को समझाने जोग आदि को शिक्षा देने के लिये पठाया था उसी को कथा पूर्ण रूप से वर्णन की गई है इसो में ब्रज युवतियों ने भी ऊधैा जी से अपना संदेस कहा है श्रैार श्री कृष्ण जी को उलाहना दे भेजा आदि ।

No. 416(*b*). Bhanwaragīta by Suradāsa of Gaughāta (Runukta, Ágrā). Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—10 × 7 inches. Lines per page—20. Extent—1,200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Badarī Nāthajī Bhaṭa, Professor, Lucknow University, Lucknow.

Beginning—श्रीराधाकृष्णायनमः ॥ अथ भोंर गीत लिख्यते ॥ ऐन ऊधैा वेगि तुम ब्रज जाहु । श्रुति संदेस सुनाइ मेटैा बल्लभनि कैां दाह ॥ काम पावक

तुल्य तन में विरह स्वांस समोर। भसम नाहीं होन पावत लोचनन के नोर॥ आजुलैं एहि भांति हैं वे कछुक स्वांस सरोर। इते पर विनु समाधानहिं क्यों धरै तन धोर॥ वारवार कहा कहैं तुम सखा साधु प्रवोन। सूर सुमति विचारिये जिय मनैां जल विनु मोन॥

End—राग सारंग॥ हरि विनु मुरली कैान वजावै। कमल नैन स्याम सुन्दर विनु को मधुरे सुरगावै॥ ए दोउ श्रवन सुधाकैां पोषे को ब्रज फेरि बसावै। ऐसो कियो निठुर मन मोहन जो एहि पंथ न आवै। छांड़ो सुरति नंद जसुदा को हमरो कैान चलावै। सूरस्याम कैां प्रोति पाछिलो को अब सुरति करावै॥ ३॥ सुनियत मोहन व्याह सखोरो हम देखन नहिं पायो। आसा लगो रहो मेरे मन क्यों नहिं बोलि पठायो॥ जद्यपि हो परतोतो कान्ह को कैाने गुरु पढ़ायो। जननो जनम भूमि यह गोकुल नेको बहुरि न आयो॥ बचनहु को माता नहिं मेटत जो नहिं जसुदा जायो। पछिलो प्रोति बिसारि सूर प्रभु जा लै गोद वढ़ायो॥ ४॥ इति सूरदास जी कृत भंवर गीत संपूर्णम्॥

No. 416(*c*). Sūradāsakṛit Kabīra by Suradāsajī. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—9 × 4 inches. Extent—27 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Rādhā Krishṇajīpuri Bhoja Tiwāri, Post Office Alipur Bāzār (Sultānpur).

Beginning—पृ० १—श्री गणेशायनमः॥ कबोर॥ शारो नोल मोल मंहं छेको गोर गात छवि होति। मनहु नोलमनि मंडप मध्ये वरत निरंतर जोति॥१॥ निरखि छवि राधा नागरि प्यारो॥ कबोर॥ चोटो चारु तोनि सर रंजित कुहू केतु अरु राहु॥ मनु हिलि मिलि एक संग हेमगिरि ससि मुख कोन्ह गराहु॥२॥ कबोर॥ मंजुल मांग मोति लर लटकत भटकत उपमा देत॥ मनु उडगन सब सिमिट एक होइ थोच करत ससि हेत॥ ३॥ निरषि छवि॥ भाल विसाल तिलक अति राजत दिहे लाल रज बिंद॥ मनु बंधुप के सुमन आनि कै मनसिज पूजि महंद॥ ४॥ निरषि॥ जुपा आड ताटंक चक्र जुग भैां श्रृंगो मृग नयन मनु दै। तिलक बाग गहि बैठे ससि रथ स्वारथ मैन॥ ५॥ निरषि॥ भोंहैं विकट निकट श्रवनन्ह लग द्रग षंजन मनुहारि॥ मनहु परसपर करत लराई कोर बचावत रारि॥ ६॥ निरषि॥ कबोर॥ नासा शुभग मोति बेसरि को वरनत होत सकोच॥ मानहु कोर फोरि दाड़िम फल वोज रहे गहि चोच॥ ७॥ निरषि॥ क०॥ पुष्ट कपोल चारु चिक्कन अति वरणत मन सकुचात॥ मनु दैा संघ करत ससि तें मत मानि अनुज को नात॥ ८॥ निरषि॥ क०॥ अधर बिंब रंग सानि

सुधारस यह उपमन्ह को अंत ॥ मानहु उगिलित सीप रूप निधि मोति दपकि दुति दंत ॥ ९ ॥ निरषि ॥ क० ॥ ठोड़ी ठकुराइन की नीको मोलोवुंद मझार ॥ सालिग्राम मनु कनक संपुट मारहिगे तनक उझार ॥ १० ॥ निरषि ॥ क० ॥ केको कंठ सुभग कंठ सरो या सरि को अवर न कांति। मानहुं कनक मुरति गंगातट निकट निपटि दिपि प्रांति ॥ ११ ॥ निरषि ॥ क० ॥ पहुची पानि वाहु वाजू वंद

End—प्यारो ॥ कबोर ॥ अम्बुज चरण पावटो बुन्दो यह उपमा कहु अवर ॥ मधुर नाद गुंजार करत मनु उड़ि उड़ि बैठत भंवर ॥ २१ ॥ निरषि छबि राधा नागरि प्यारो ॥ कबोर ॥ कह सहचरी वेगि लै आई प्रभु तेरे हित लागि ॥ अब रस विलस विमल वृंदावन दंभ कपट छल त्यागि ॥ २२ ॥ निरषि छवि राधा नागरि प्यारी ॥ कवीर ॥ जोरी जुगी दोन सूरा प्रभु बढ़े रीतिरस रंग ॥ ठकुराइन श्री राधा मेरी ठाकुर नवल त्रिभंग ॥ २३ ॥ निरषि छवि राधा नागरि प्यारो ॥ इति सूरदास कृत कबीर समाप्त

Subject—पृ० १—४ तक—श्रीमती राधा रानी जी के नखशिख के वर्णन सहित कबीर कथन। राधा जी की साड़ी, चोटी, मांग, भाल तिलक, आड़, तार्टक, युग भौंह, नयन, दो तिलक, हग, नासा, कपोल, अधर, ठोड़ी का नीला बुंद, कंठसरी, पहुंची, बाजू वंद का फुंदना, सोप, मिपज का हार, चौकी, लालगुलाल हारावलि, चोली में कुच, रोमावली, नाभि, नीवी, नितम्ब, जंघा, और चरणों के पांवरे पर मनोहर उत्प्रेक्षाएं।

No. 416(*d*). Sūradásake Vishunapada by Sūradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—60. Size—15×5 inches. Lines per page—18. Extent—1,080 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1904 or A.D. 1847. Place of deposit—Biṭṭhaladāsa Mahanta—Village Mirzāpura, Post Office Baharāich, District Baharāich (Oudh.)

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः ॥ श्री सूरदास के विष्णु पद लिख्यते ॥ प्रथम राग धनाश्री ॥ जैगोविंद माधौ मुकुंद हरि। कृपासिंधु कल्यान कंस अरि। कृपन पाल दामोदर देव प्रति। कृष्ण कमल लोचन अगनित मति। रामचन्द्र राजीव नयन वर। सरन साद्र श्रीपति सारंगधर। वनमाली वीठल पावन नवल वासुदेव वंसी वृजभूषन तल षरदूषन त्रिसिरा सिर षंडन चरण चिन्ह दंडक भू मंडन काली दवन वं सि कुल पातन अघा दुष्ट धेनुक तन घातन। रिष

मष द्रवन ताड़िका ताड़न। वन वांसतात वचन प्रतिपारन वको बदन ब ॥ बदन वदारन। वरुन विषाद नंद निस्तारन। रघुपति प्रवल पिनाक विभंजन। जन हित जनक सुना मनरंजन। गोकुल पति गिरधर गुन सागर, गरुड़ध्वज स्वामी नटनागर करुनामय कपि कुल हितकारी वान विनोद संकट मृगहारी। गोपी गोप गुपत वतकारन। मन वच क्रम सेवक अघतारन सूरदास जाचत प्रभु रघुवर। कीजै कृपा अनंत हरि जन पर ॥ १ ॥

End—माधाै जीको अपराधी हौं। जन्म पाइ कछु जोगन साध्यो धरगौ न मन में भें सब सो कहत रीति जमपुर की गज पपीलिका लैं पाप पुन्य को फल न बताये दयो नर्क को यों। कैानपात पर कहा क्रिपानिधि कछु भक्ति मों भें॥ करुना सिंधु कृपाल कृपानिधि भजैां स्वर्ग को क्यों हंसि वोले जगदीस जगत गुरु वात तुम्हारी यैा वात कहै तो वहुत भूसैागे चरन कमल की सैां ॥ मेरी देह छुटत जम पठए जिते दूत घर मों। वे लै चले जु साज आपने सान धराये स्यों जिनके दासन दरसन होतें पतित करत म्यों म्यों। ढूंढ़ि फिरे कोउ घर न बतावे सुपच कोरिया लों ॥ रिसि भरि गये परम राकम्म तब पकरे छिपे न कैसों। तब लै फिरे नगर ते वाहर जहां मृतक हैां हैं ॥ तारिस करि हैं बहुत मारगो कहं लगि वरनि सकैां ॥ हाइ हाइ हैं करैां कृपन हैं रामनाम न जापैं ॥ ताल पषावज चले बजावत समयो सोभ कों ॥ सूरदास को भलो वनो है ॥ गजो गई यो पैं ॥ हां पतित सिरोमनि माधो ॥ अजामेल तुम काटजु तारगो जुते जु मेरो आधो जुगजुग यहै विरदि चलि आयो कहियत है अब ताते ॥ मोंहि छांड़ि तुम सबै उधारो हां घटि हैं अब काते ॥ कै अब हारि मानि प्रभु बैठो कै करि विरद सही। सूरस्याम जो धोवो उपजै तो सोधियो वही ॥ इति सूरस्याम के विष्णु पद ॥

Subject—इस ग्रंथ में सूरदास जीने श्री कृष्णजी की लीला यशोदा नंद का श्री कृष्ण पर प्रेम व राधिका कृष्ण का प्रेम व ऊधो का योग शिक्षा के लिये श्री राधिका के निकट आना व सूरदास के पद जो अंतिम में कहे हैं वर्णन हैं।

No. 416(*c*). Rukminīvivāhā and Sudāmā Charitra by Sūradāsa of Runukuta (Ágrā). Substance—Country-made paper. Leaves—5. Size—10 × 7 inches. Lines per page—20. Extent—50' Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Badari Nāthaji Bhaṭṭa, Professor, Lucknow University, Lucknow.

Beginning—अथ रुकमिनी विवाह कथा ॥ राग विलावल ॥ द्विज कहियो जदुपति सों बात। वेद विरोध होत कुंदनपुर हंस के अंस काग

नियरात ॥ जिन हमरे गुन दोष बिचारौ कन्या लिखो नीति करितात ॥ ताते यह द्विज बेगि पठायौ नेम धर्म मरजादा जात ॥ तन आत्मा समपौं तुमकौं पाछे अनुज परे कछु नात । करि सनेह पग धरौं तुम्हारे ऐसे कौं अति चित अकुलात ॥ कृपा करौ रथ बेगि चढ़ौगे लगन समोप रची परभात ॥ सूरदास ससिपाल पानि गहि पावक परौं करौं तन घात ॥ १ ॥

End—राग सारंग ॥ ऐसैं और कौन पहिचानै । सुनि सुंदरि हरि दीनबंधु बिनु कौनु मित्राई मानै ॥ हौं अति कुटिल कुटिल कुदरम भबे जदुनाथ गुसाई । लियौ उठाइ अंक भरि माधौ उठि अर्जुन की नाई ॥ लै प्रजंक बैठारि परम रुचि निज कर चरन पखारे ॥ पूरब कथा सुनाय कृपा करि सब संकोच निवारे ॥ ३ ॥ लये छिनाय चोर ते तंदुल केते लै मुख मेले ॥ आवहु कृपा करी सूरज प्रभु गुरु गृह बसे अकेले ॥ इति सूरदास कृत सुदामा चरित्र संपूर्णम् ॥

Subject—रुक्मिणी विवाह कथा छं० नं० १—३ तक । सुदामा चरित्र वर्णन छं० नं० ४—९ तक । इति ।

No. 416(*f*). Sūrasāgara by Sūradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—275. Size—12 × 10 inches. Lines per page—56. Extent—19,250 Anushṭup Ślokas—Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1899 or A.D. 1892. Place of deposit—Paṇḍit Śiva Nārayana Vājpai, Vājpai ka purwā. Post Office Sisaiyā, District Baharaīch (Oudh).

Beginning—श्री गोपीजन वल्लभायनमः ॥ श्री वल्लभ चरणकमलेभ्योनमः ॥ श्री विठलेशोजयतितराम ॥ श्री गिरधरो जयतिराम ॥ श्री कृष्णायनमः अथ श्री सूरदास जी कृत सूरसागर सारावली तथा सवालाख पद के सूचीपत्र श्रीकृष्ण नंद व्यासदेव राग सागर संग्रह कृत लिप्यते ॥ वंदौ श्री हरि पद सुखदाई । बहिरो सुनै गुंग पुनि बोलै रंक चलै सिर छत्र धराई ॥ सूरदास प्रभु की शरणागत वारंवार नमो तेहि पाई ॥ रागनी काफी ताल जत ॥ खेलत यहि बिधि हरि होरी हो होरी हो वेद विदित यह बात ॥ टेक ॥ अविगत आदि अनंत अनूपम अलष पुरुष अविनासी । पूरण ब्रह्म प्रगट पुरुषोत्तम नित निज लोक विलासी ॥ जहां वृंदावन आदि अजर जहं कुंजलता विस्तार । तहं बिहरत प्रिय प्रीतम दोऊ निगम भृंग गुंजार ॥ २ ॥ रतन जटित कालिंदी को तट अति पुनीत जहं नीर सारस हंस चकोर मोर खग कूजत कोकिल कीर ॥ ३ ॥ जहं गोवर्धन पर्वत मनिमय सघन कंदरा सार । गोपिन के मंडल मध्य राजत निसवासर करत विहार ॥

End—राग मलार ॥ कोउ ब्रज बांचत नाहिन पाती ॥ कति लिखि लिखि पठवत नंद नंदन कठिन विरह की कांती ॥ नैन सजल कागद अति कोमल कर अंगुरी अति ताती ॥ परसे जरे बिलोके भींजहु दुहू भांति दुख छाती ॥ क्यों ए बचन सु अंक सूर मुनि विरह मदन सर घाती ॥ मुख मृदु बचन विना सोचव जो वहो प्रेम रस भांती ॥ राग सारंग ॥ देन आयो ऊधव मत नोको । हित उपदेश करन ब्रज आये लोये मनोहरि जोको । जोग जुगति निर्गुन उपदेसहिं ज्ञान सुनाइ जतो को । आवहु री मिलि सुनहु सयानो लिये सुजस को टोको ॥ तजन कहब वर आभूषन देह गेह सत होको ॥ अंग भसम करि सोस जटा धरो सिखवत निर्गुन फीको ॥ मेरे जान इहै जुवतिन को देत फिरत दुख फोको ॥ ता सराप ते भये स्याम तन तहन गहत उर जोको । ज्यों लगि सुर घायल डसि भाजै सुख नहिं होत अमी को ॥ राग विहाग ॥ ताल एकतारा । कृष्ण कृष्ण करत डोलु कृष्ण कहां मैं पाऊं ॥ द्वारते दौड़ आऊं तौऊ न लाज लजाऊं ॥ तोहैं छाड़ि और को मैं कौन को कहाऊं ॥ ऊधो जो तुम वेग जाओ प्रेम पाती पठाऊं ॥ ढूंढ़ि फिरौ वन कुंजन माहिं स्याम स्यामा ध्याऊं ॥ या विधना नहिं पंख दीनो उड़के द्वारका जाऊं ॥ ऊधो जो तुम वेगि जाओ स्यामहि वेगि ले आऊं ॥ सूर के प्रभु दास जो हरि हंस कंठ लगाऊं ॥

Subject—इसमें श्री कृष्ण की लीला जन्म से लेकर अंत तक वर्णन की गई है प्रथम बधाई, बाल लीला आदि पूर्ण रूप से वर्णित है ।

No. 416(*g*). Sūrasāgara by Sūradāsa of Runkuta (Gaughat) Ágrā. Leaves—168. Size—10 × 7 inches. Lines per—page – 20. Extent—4,000 Anushṭup Slokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Badarī Nāthjī Bhaṭṭa, Professor, Lucknow University, Lucknow.

Beginning—सुनो ग्यान सो सुमिरन रह्यौ ॥ जैसे सुक कों व्यास पढ़ायो । सूरदास तैसें कहि गायो ॥ ३ ॥ श्री भागवत वक्ता श्रोता वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ व्यास देव जब सुकहिं पढ़ायौ ॥ सुनि के सुत सो हृदय वयो ॥ सुक सोनिक सों पुनि कह्यौ । विदुर मैत्रेय सों पुनि लह्यौ ॥ सुनि भागवत सबनि सुखपायो । सूरदास सो वरनि सुनायो ॥ ४ ॥ अथ सूत सैानिक संवाद ॥ राग विलावल ॥ सूत व्यास सों हरि गुन सुन्यौ । बहुरयौ तन तजि मन मैं गुन्यौ ॥ सो पुनि नोमषार में आयौ । तहां रिषिन कौ दरसन पायो ॥

End—फिर ब्रज वसो गोकुलनाथ ॥ अब न तुम्हैं जगाइ पठिवैं गोधनन के साथ ॥ बरजै न माखन खात कबहूं दह्यौ देत लुटाय । अब न देहिं उराहरो नँद

घरनि आगे जाइ ॥ नहिं देहिं दावर जोरि कैं औगुन न कहिहैं आनि ॥ कहि हैं न चरनन देन जावकु गुहन वेना फूल । कहिहैं न करन सिंगार बढ़तर बसन जमुना कूल ॥ करिहैं न कबहुं मान हम हठिहै न मांगत दान । कहि हैं न मृदु मुरली वजावन करन तुम सैां गान ॥ देहु दरसन नंद नंदन मिलन की जिम आस । सूर प्रभु के दरस कारन मरत लोचन प्यास ॥ ४८८ ॥

इति ।

No. 416(*h*). Sūrsāgara by Sūradāsa of Gaughāta (Ágrā). Substance—Country-made paper. Leaves—334. Size—10 × 6 inches. Lines per page—10. Extent—2,925 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Badri Nathaji Bhaṭṭa, Professor, University, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनः ॥ श्री कृष्णायनमः इति बालनोक काडा सार ॥ अथ दसमस्कंध लिखितं सूरदास कृत श्री भागवत वर्णनं ॥ राग सारंग—व्यास कह्यौ शुकदेव सों श्री भागवत बखान । द्वादश अस्कंध परम सुभग प्रेम भक्ति की खान ॥ नव अस्कंध नृप सों कह्यो श्री सुकदेव सुजान । सूर कहत अब दसम कैां उर मैं धरि हरि ध्यान ॥ ८६

राग विलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमरन करौ । हरि चरनारविंद उर धरौ ॥
जय अरु विजय पारषद दोई । विप्र श्राप असुर भये सोई ॥
दुई जनम ज्यो हरि उद्धारो । सो तो मैं तुम्हसों कहि उचारो ॥
वक्रदंत ससिपाल जो भरो । वासुदेव होइ सो पुनि हरौ ॥
औरौ लीला बहु विस्तारं । कीन्हे जीवन कैा ज्यों निस्तारं ॥
सो अब तुमसों सकल बखानो । प्रेम सहित सुनि हृदये आनो ॥
जो यह कथा सुनै चित लाय । सो भव तरि बैकुंठे जाय ॥

End—राग कल्यान ॥ कीयो अतिमान वृषभान वारी । देखि प्रतिबिंब पिय हृदै नारी । कहा ह्यां करत है जाहु प्यारी ॥ मनहि मन देत अति ताहि गारी । सुनत यह बचन पिय बिरह बाढ़ौ । कियो अति नागरी मानु गाढ़ौ ॥ काम तन दहत नहिं धीर धारै । कबहुं उठत बैठत बार बारै ॥ फेरि अति भये व्याकुल मुरारी । नैन भरि लेत जल देत ढारी । ३२ ।

राग विहाग ॥ जान कह्यौ तिय बिन अपराधहि । तन दाहति बिन काज आपनो कहतउ रतहि न बादहि ॥ कहा रही मुख मूंदि भामिनी मोहि चूक कछु नाहि । झझकि झझकि क्यों चतुर नागरी देखि आपनो छाँहि ॥ अजहूं दूरि करौ

रिस उरते हृदये ज्ञान विचारो । सूर स्याम कहि कहि पचि हारे हठि कोन्हों जिय भारो ॥ ३३ । राग कल्यान ॥ काम स्याम तनः—

Subject—मंगलाचरण, भगवान जन्म लीला वर्णन ।

No. 416(*i*). Sūrasāgar by Sūradāsa of Gaughāta, Agrā. Substance—Country-made paper. Leaves—368. Size—13 × 7 inches. Lines per page—14. Extent—14,168 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rājā Pustakālaya, Bhiṇagā, Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायमः अथ सूर सागर लिख्यते ॥ तत्र प्रथम परमारथ की कथा । हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरनारविंद उर धरो । हरि की कथा होइ जब जहां । गंगा हू चलि आवै तहां । जमुना सिंधु सरस्वति आवै । गोदावरी विलंब न लावे । सब तीरथ को बासा तहां । सूर कथा हरि को जहां । चरन कमल वंदों हरि राया । जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अंधे कैां सब कछु दरसाया । बहिरैा सुनै गुंग पुनि बोलै रंक फिरै सिर छत्र धराया ॥ सूरदास स्वामी करुना मै बार बार वंदों तेहि पाया ॥ कीजे प्रभु अपने विरद की लाज । महापतित कबहूं नहिं आयो नेक तिहारे काज । माया प्रबल धाम अरु वनिता आयो हो या साज ॥ देषत सुनत सबे जानत हैां नेक न आवत बाज । कहैं श्रुति पतित बहुत तुम तारे श्रवन सुनी आवाज । दै नहिं जात घाट उतराई चाहत चढ़न जहाज । लीजे पार उतारि सूर कहं महाराज बृजराज ॥

End—राग नट ॥ देखु सखी हरि वदन इंदुवर । चिक्कन कुटिल अलक अवली छवि कहि न जाय सोभा अनूप वर ॥ बाल भुजंगिनि निकसि मनों मिलि रही घेरि रस मनों सुधाकर । तजि नहिं सकहि नहिं करहि पान को कारन कैान विचारि डरि उर ॥ अरुन वनज लोचन कपोल सुभ श्रुति कुंडल मंडित अति सुंदर । मनहुं सिंधु निज सुतहिं मनावन पठयो जुगल बसीठि वारिचर । नंद नंदन मुख सुंदरता छवि कहि न सकत श्रुति सेस उमावर । सूरदास त्रैलोक विमोहन कपट रूप नर त्रिविधि सूल हर ॥ काहू फिर न कहों वे बातें । जो नर यहां सुकृत कछु करिगे वातन की कुसलातें । जैसे सती जरै पिय के संग विरह प्रेम रस मातैं ॥ ताको स्वाद पूछिये कातैं सियरे जार कि तातैं । जैसे सूर धसे रन भोतर अरु सनमुख करि वातैं ॥ ताको स्वाद पूछिये कातै सहत सेल उर घात । सूरदास देही की या गति समुझि परी अब यातैं ॥ या संसार बोल को धरिबो आयो गयो कहांते ॥

Subject—प्रार्थना .... २ पद

परमारथ वर्णन	३—१७६	पद तक
भागवत प्रथम स्कंध की कथा	१७७—२५८	,,
द्वितीय स्कंध की कथा	२५९—२८८	,,
तृतीय ,, ,, ,,	२८९—३१८	,,
चतुर्थ ,, ,, ,,	३१९—३३०	,,
पंचम ,, ,, ,,	३३१—३३७	,,
षष्टम ,, ,, ,,	३३८—३४४	,,
सप्तम अष्टम स्कंध ,,	३४५—३५८	,,
नवम ,, ,,	३५९— ४१७	,,
दशम स्कंध	४१८२—१०४	,,
एकादश स्कंध	२१०४-२११०	,,
द्वादश स्कंध	२११०-२१२४	,,

इति

No. 416(*j*). Sūrasāgara (Dashama Skandha) by Sūradāsa of Runakutā (Āgrā) Substance—Country-made paper. Leaves—103. Size—15 × 8 inches. Lines per page—32. Extent—5,300 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābū Padma Bakhsha Simhaji, Lavedapore, Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री कृष्णायनमः । भजुमन नन्द नन्दन चरन ॥ अमल पंकज अति मनोहर सकल सुख के करन ॥ सनक संकर ध्यान ध्यावत निगम निबरन बरन । सेस सारद रिषै नारद संत चेतत चरन ॥ पग प्रयाग प्रताप दुर्लभ रमा बोहित करन । परसि गंगा भई पावनि तिहूं पुर धर धरन । चित्त चेतन करत कीरति अघ टरति नारिन नरन । गये तरि लै जाय केते पतित हरि पुर धरन ॥ जासु पद रज परसि गौतम नारि गति उद्धरन । सोइ कृष्ण पद मकरंद पावन और नहि सिर धरन । सूर भजु चरनारविंदहिं मिटै जन्मौ मरन ॥ १

चौपाई । श्री कृष्ण चरित्र सदा सुखदाई । जेहि गावत सुर नर मुनिराई ॥ श्री वसुदेव देवकी धामा । मथुरा प्रगटे पूरन कामा ॥ २

End—राधे उडगन सुत पति हीन । तेरे भौन गौन हरि कीन्हौ राहु गहन कस कीन्ह ॥ नौ अरु सात साजि के बैठी सारंग सुत कस दीन ॥ सारंग देखि बिदा भे सारंग अहि रिपु त्यागन कीन ॥ उडगन सुत धरहु आपनो सैल सुता

सत कीन । कदली खंभ बने जग दोऊ नागारिपु कटि छीन ॥ सूरदास प्रभु मिलै गोपालहि अंग अंग परबीन ॥ निसि दिन पंथ जोवत जाइ । जल सुश्रन सुत तासु वाहन विकल ह्वै अकुलाइ ॥ गंध वाहन तासु सुत को वंधु धरनो भाइ ॥ हगनि ते कब देषि हौ अलि सकल दुष विसराइ ॥ गौ सुश्रन पति पति रिपु न मानत कानि मोहन राइ ॥ करि ततच्छन वेगि आवहु हृदै घालत घाइ ॥ अजै भष की हानि हय कौ दा को को सष काइ ॥ सूर के प्रभु कब मिलहिंगे परसिवे को पाइ । राम

No. 417(*a*). Rukmāngada kī Kathā Ekādaśī Māhātmya by Suryadāsa Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—8 × 4 inches. Lines per page—16. Extent—300 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Charactor—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1886 or A. D. 1829. Place of deposit—Pandita Śatrughnajī Miśra, Village Sikandarpore, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ रुकमांगद की कथा लिष्यते ॥ चौपाई । प्रनवौं गुन गनपति के चरना । सिद्धि वही दायक के करना । चरन मनावौं द्वौ कर जोरी । गनपति बुद्धि वढ़ावहु मोरी । मातु पिता गुरु बन्दौ पावां । जिन यह निर्मल ज्ञान लषावा ॥ सदाहि देवै वन्दौ स्वामी । गनपति हौ सब अंतरजामी । सूर्जदास कवि विनती करई । मोरे हृदय कपट नहिं परई । अवध नगर के वरनौ पारा । जहं नारायन भये अवतारा । कनक कोटि फिरि चारहु पासा । उठे कंगुरा जनु कैलासा । पूरब पावरी विरजे जरिया । दक्षिन पवरी सोन सव मढ़िया । पश्चिम देषे होहु अहि नास । उत्तर दीसै देव को वास । चारिउ वरन बसैं सब जाती । परजा लोग बसैं बहु भांती । सब को सुष सबै सकुमारा । सब के कंचन पवन पगारा । सब के घरों बाधे हाथी, सब के तुरै रथन सारथी ॥

End—मगुध रूप तब देवन लीन्हा । तबहिं मोहनी काहु न चीन्हा । संभावति तब दीन्हसि सरापा । डोमिनि हुइ कै भुगतहु पापा । पुहप के बस जियेहु तुम जाई । कुंकर के असि तोरहु आई । जग्म निरास हो गये परणाई । अपने लोक बैठे सो जाई । सिव कैलास बैठे अराधाई । निज निज डगर देवतन पाई । मोहनी भई श्राप की भंडिये । घूमै लागि ग्राम के छेड़िये । विप्र साथ हरि मंगर लीन्हा । प्रेत की महिमा कहं लगि कहियो ॥ एकादसी कीन्हे शाप सों कहं लगि व्रत करौं बषान । तिन्हहिं लै लगि व्रत ठाना । सूर्यदास कबि भाषा रुकमंगद कैलास निश्चै मन कैसे यहु कैसो चरन निवास । इति श्री एकादसी महातम सूर्यदास विरचिते भाषा रुकमांगद वादे वारदे इतिहास संपूरन लिष्यते

सेवा मिश्र सिंकदरपुर के सं० १८८६ साके १७५१ वैसाष मासे कृष्ण पक्षे तिथौ तिरोदस्याम शुक्र वासो जैसा देषा तैसा लिषा ममदोष नाहीं। समाप्त॥

Subject—१—रुकमांगद की कथा इस प्रकार है कि अयोध्यापुरी के राजा त्रेतायुग में हरिश्चन्द्र हुए उनके पुत्र रोहितास्व और रोहितास्व के रुकमांगद हुए। रुकमांगद न्यायी धर्मात्मा ईश्वर भक्त था। वह एकादशी का व्रत विधि पूर्वक करता था। उसके राज्य में कोई भी ऐसा न था जो एकादशी का व्रत न करता हो यहां तक कि हाथी घोड़े आदि को भी एकादशी के दिन दाना चारा न मिलता था। यमराज यहां से घबड़ा के भगे और इन्द्र के निकट सब समाचार सुनाया इन्द्र विष्णु के पास गए विष्णु मय इन्द्र के शंकर के पास गये वहां से मोहनी राजा को छलने के लिए भेजी गई। वह मोहनी राजा को बन में शिकार खेलते मिली राजा देखकर मोहित हो गया मोहनी और राजा का सूर्य चन्द्र की साक्षी में मेल हो गया और उसने एकादशी व्रत से सब प्रजा को राजाज्ञा से छुटाना चाहा जब राजा की रानी संभावती को यह वृतांत ज्ञात हुआ तो उसने मोहनी को श्राप दिया क्योंकि एकादशी व्रत वहां कोई भी न करने लगा। और मोहनी का रथ रुक गया कि एकादशी व्रत वाला अगर रथ छू देवे तो रथ चले राजा रुकमांगद के राज्य में कोई भी न निकला केवल एक बुढ़िया जो अपनी पतोहू से लड़ कर दुख से एकादशी के दिन भोजन नहीं किया था निकली। उसने रथ छुआ और रथ चला तब राजा को अपने राज्य की दशा ज्ञात हुई कि मोहनी ने हमको छल कर एकादशी का व्रत राज्य भर में छुड़वाया। रानी के श्राप से मोहनी डोमनी हुई और प्रायश्चित्त रानी ने यह बताया कि जब तू एकादशी व्रत करैगी तब फिर अप्सरा होगी। इस प्रकार राजा रुकमांगद की कथा एकादशी माहात्म्य के सहित वर्णन की गई है।

No. 417(*b*). Ekādaśi Māhātmya by Suryadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—24. Size—7½ × 4½ inches. Lines per page—35. Extent—475 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Date of manuscript—Samvat 1901 or A.D. 1844. Place of deposit—Paṇḍita Ayōdhyā Prasāda Miśra, Village Katailv, Post Office Chilawaliyara (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः

अथ एकादशी व्रत नारातम प्रारंभ्यतेः॥

दोहा॥ शंकर शरण प्रथमही पंकज सीस नवाइ। चरण कमल मैं मांगऊं श्री गुरुदेव लखाय॥ १ चो० राम लषण सुमिरैां दोउ भाई। नाम लेत पातक

बसि जाई। सुमिरौं पवन पूत हनुमंता। येहि सुमिरैं बल होइ बहूता ॥ सुमिरौं चांद सूर्य दोऊ भाई। जिनके ज्योति रही जग छाई ॥

End—सूर्यदास विनतो करै सुनहु हो संत सुजान। करहु ध्यान श्री कृष्ण कर होइ इन्द्र स्थान ॥ ८० चैा० एकादशी जो सुनहिं संपूरण। ते जानहु गंगा स्नान तरण। सुनिके कथा जो देइहि दाना। तेहि कहं होइ इन्द्र अस्थाना। एकादशो अमृत कै खानो। संत सुजान पियहिं मन जानो। जमके निशानी अंतमन जाहि के धैारी। रसना अक्षर अक्षर कै जोरी। दोहा—कहै सुनै जो प्राणी अश्वमेध जज्ञ होइ। सूर्यदास कवि भाषै हरि सम अवर न कोइ ॥ ८१ इति श्री एकादशी कथा संपूरणम् समाप्त सुभमस्तु। मि० भादैां मास कृष्णपक्ष १२ संवत् १९०१ लिषा देवी शिवदाश सागर मध्य रविवार।

Subject—स्तुति, नारद का पुष्प के लिये इन्द्र से कहना श्रैार इन्द्र का रंभा को पुष्प लेने रुक्मांगद के यहां श्रयोध्या भेजना पृ० १—२ रंभा का लिखा जाना, रानो का आश्चर्य करना, रंभा का राजा को एकादशीव्रत का फल कहना, नगर में एकादशी रहनेवाले को ढूढ़ना श्रैार एक स्त्री मिलने पर उसके छूने से रथ इन्द्रलोक को जाना। पृ० ३ से ६ तक।

राजा का व्रत के लिये नियम करना श्रैार सब का स्वर्ग जाना। देवताश्रों का व्रत भंग करने का विचार करना श्रैार मोहनी स्त्री बनाना श्रैार रुक्मांगद के पास भेजना राजा का मोहित होना रानी का राजा को समझाना पृ० ७-१२ तक।

मोहनी का राजा के साथ श्रयोध्या आना बड़ी रानी का विप्र भेज ब्रत की याद कराना मोहनी का निषेध करना राजा रानी संवाद पृ० १३—१७ तक।

पुत्र को बुला कर उसका सीस देने को तय्यार होना पुत्र के आने पर राजा का दुखित होना कुंवर का समझाना श्रैार दान देकर सिर काटने को तय्यार होना विष्णु का आना श्रैार रक्षा करना मोहिनी का नरक में जाना पृ० १८—२४ तक।

इति

No. 417(c). Rāmajanma by Sūraja Dāsa Kavi. Substance—Foolscap paper. Leaves—78. Size—8 × 6½ inches. Lines per page—16. Extent—468 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Kaithī Mudiā. Date of manuscript—Samvat 1953 or A. D. 1896. Place of deposit—Paṇḍita Yaśyodā Nanda Tiwārī of Village Kānth, District Unāo.

Beginning—श्री गणेश जी सहाय नमः। श्री सुरसती जी सहाय नमः। श्री गंगा जी सहाय नमः। श्री महादेव जी सहाय नमः। श्री पाथी राम जनम लिखते श्री गुरु चरन सरोज रज नीज मन मुकुर सुधार। बरनै रघुपति बीमल जस जैा धायक फल चार। बरनै रघुपती त्रीघोनी वनिता। रामरूप तुम पुरवहु आस। बरनै सुरसती अमोरीत बानी। रामरूप तुम भली गति जानी। बरनै चंद सुरज की जोती। रामरूप जस निरमल मोती। बरनै वसुध धरै जैाभर। राम रूप भये जगत पिआर। बरनै मात पिता गुर पऊ। जीन मैाही नीरमल गीआन सीखाऊ॥ सुरजदास कवी बरनै परम नाथ जीव मैार। राम कथा कीछु भखहु कहत न लगै भोर॥ बाल्मीक रामायन भाखा। तीनी भुवन जैा भरी पुर राखा। राम के जनम सुनै मन लाइ। बढ़ै धरम पाप छै जाइ। आनंद मंगल सब कोइ करइ। सहसर हैाम सीदीन दीन करइ। होंइ मह त्रीधनी कीन। कैाटीन गये वापर कहि दीन।

End—राम जनम सुनै मन लाइ। दुख दलिदर सभ जाइ पराइ। राम कै जनम सुनै जो कान। तेही कर पुत्र होत कलीआन। राम के जनम मनोती जो गावै। सो नर भव सागर तरी जावै। दोहा—राम जनम कथा जनम कथा विमल पढ़ै सो नर मन लाय। सो नर राम परताव ते भैा सागर तरी जाय। इती स्रोरी राम जनम पुरन जैा पत्र देखा सो लीखा मम दैास न दीजिए पंडित जन सो बीनती मैार टुटल अक्षर लेव सजैारी महीना फागुन दीन बुध सन १८९६ दस्तखत देवीराम के।

Subject—राम जनम की कथा पढ़ने की महिमा वर्णन पृ० १—४

राजा दशरथ का ३०० रानियों से विवाह करना तीन पट रानियां। राजा का शिकार खेलने जाना वन में भूल जाना संध्या समय सरोवर पर आना, धनुष वाण लेकर बैठे विचार करना—पृ० ४—५

श्रवण का जन्म होना, उसका विद्या पढ़ना, स्त्री का आना, वादाविवाद होना, स्त्री का निकाला जाना पुनः आना खट्टा मीठा भोजन बनाना, अंधी, अंधे के दुर्बल देख श्रवण का पूछना, समाचार जानकर फूलमती को उसके मायके भेजना। कांवरी बना कर माता पिता को लेकर घूमना, माता पिता का पिपासाकुल हो पानी मांगना, श्रवण का पानी के लिये जाना। पृ० ५—१४

सरोवर में कमंडलु का डुबाते समय शब्द होना, दशरथ का शब्द सुनकर शिकार का अनुमान कर बाण मारना, श्रवण को लगना राम राम शब्द सुन कर दशरथ का वहां आना, श्रवण का राजा से पूछना और राजा का अपना परिचय देना, श्रवण का राजा से माता पिता को पानी पिलाने के लिये कहना, राजा का उनके पास जाना, पानी देना, सब समाचार कहना, अंधी अंधे का

राजा को शाप देना और देह त्याग करना, राजा का अयोध्या आना, वशिष्ठ से पुत्र हेतु उपाय पूछना, यज्ञ करना और पुत्रों का होना। पृ० १४—२८

पुत्रों का यज्ञोपवीत होना, विश्वामित्र का अयोध्या आना, यज्ञ रक्षा के हेतु पुत्रों को मांगना, राजा का दुखित होना, विश्वामित्र का कोधित होना, देवताओं का दशरथ को समझाना, राजा का राम और लक्ष्मण को मुनि के साथ भेजना, दोनों भाइयों का विश्वामित्र के आश्रम में आना, राम का मुनि से गंगा का उत्पत्ति पूछना, मुनि का वर्णन करना पृ० २८—४७

मुनि से वार्तालाप कर के शयन करना, आधीरात को लुक कर आना, अनेकों प्रकार के उत्पात होना, राम का उसे मारना, ब्राह्मणों का सुखी होना, यज्ञ के लिये भगवान का मुनियों को आज्ञा देना, मुनि का राम को लेकर तिरहुत जाना विश्वामित्र को आया हुआ जानकर जनक राजा का आना, दंड प्रणाम करना, राजकुमारों को पूछना, परिचय पाकर प्रसन्न होना, पुरवासियों का राम लक्ष्मण को देख कर प्रसन्न होना, राम का धनुष यज्ञ देखना और धनुष का तोड़ना, जनक का अयोध्या को दूत भेजना, दशरथ का जनकपूर आना, जनक राजा का दशरथ को जनवास देना, चारों भाइयों की शादी पृ० ४७—६०

दशरथ का विदा होकर अयोध्या के लिये चलना, रास्ते में परशुराम से भेंट, नारायण धनुष राम को देना, राम का उसे चढ़ाना, परशुराम का वन गमन, राजा का पुर प्रवेश, परिछन होना, सासुओं का वधुओं का मुख देखना, गृह प्रवेश आदि वर्णन, राम जन्म पढ़ने का फल वर्णन—६० —७८

No. 418. Suratarāmaki Bāṇī by Sāddū. Substance—Country-made paper. Leaves—108. Size—$4\frac{1}{2} \times 3\frac{1}{4}$ inches. Lines per page—18. Extent—1,215 Anushṭup Slokas. Appearance Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1852 or A. D. 1795. Place of deposit—Haravaṃsā Rāi Tikāri, Rāe Barelī.

Beginning—अथ साधां सुरत राम जी की बांणी अणभै लिष्यते ॥

प्रथम सतूति का किवत लिष्यते ॥

नमो रमईया राम सिसरि तेरै आधारा। नमो नमो गुर संत सदा मोहि लगो पियारा ॥
तुमरे पदकी सरनि रहो नितही मम सीसा। मैं हूं पांवर जाव आप स्वामी जगदीसा ॥
सुरत राम सरणैं सदा कर प्रनाम अनंत। तुम अपरमपार अपार हो मैं हूं तुमरो जंत ॥

अथ साषी गुरदेव कौ अंग लिष्यते ॥

प्रथम राम रामतीत जू सत गुर सब ही संत। जन सूरत राम वंदन करैं बारूवार अनंत। अंग ॥ राम चरण गुर तपत है सूरत राम के सीस। ग्यान भगति वैराग दे नांवकस्यो वकसीस। राम चरण हरि रूप है भगति भूप है सोइ। सूरत जांय उनसूं मिल्यां सब मिल नामै धोइ। सत गुर सब गुण मेट दे निरगुण करै निराट। जन सूरतराम सांची कहै देह पुकति तणों बै वाट। ४ सत गुर का प्रताप सूं तोष प्रगटैं आइ। सूरत रात्रि ऐ लोक धन मेरे मन नहिं भाइ ॥ ५ मेरे मन भावै नहीं तीन लोक को धन। सूरत राम गुरदेव का चरणां लागे मन ॥ ६

End—पदराग आरतो ॥ आरति तेरी रांम अभंगो। घटि घटि चेतन आप असंगो ॥ टेक नहीं निराकार नहीं आकारा। रांम जपे जपि राम संचारा ॥ १ सेस महेसुर पार न पावै। निति अनिति हो निगम बतावै ॥ २ आदि अंत मधि है इक सारा। सूरत राम सो राम पियारा ॥ ३ इती साषां सूरत राम जी की वांणीं अणभै संपूरणं ॥ गोट की संख्या को ब्यौरा साषी ॥ ८०९ अस्वंद्राइणं ॥ १०१ ॥ सवईया १३ किवतज सार ॥ १९ ॥ कुंडल्या १८ अररेखता १९ ॥ ग्रंथ ६ ॥ पद वेताल ८७ ॥ ग्रंथ पद वेताल। सबद संता का मानूं सरब सवद की जोड़ ११३२ ही जानूं ॥ अनत ग्यान भरपूर है ताको नाहीं पार। साषो अर चंद्राइणां सवैया किवतज सारदुल ॥ सरब संता की महरि सूं सवद लिष्या है सार ॥ ज्यो कोई वांचिति बारमी सो नर उतर पार तर ॥ जन सूरत राम परताप सूं लिष्यौ जैतहो राम ॥ रोड़पूरो निज गांव है राम दुवारो धांम ॥ २ ॥ संवत अठारा सै सहो वष बावनै ठाम ॥ भांदवां बुधि हे। सतमी संत विराजत आठ ॥ ३ ॥ सोरठा ॥ संत विराजत आठ, भगति मुकति दाता रहै। तव मन आयो आपि, सोहो जग कें पार है ॥ इती गोखो संपूरण ॥

			पृष्ठ
Subject—राम और गुरु वंदना	....	....	१
गुरु महिमा (सूतराम रामचरण के शिष्य थे)		....	२
राम सुमिरन से लाभ सब पदार्थों की प्राप्ति	....	....	३—७
राम के प्रति विनती	...	....	७—८
राम के विरह में दुख वर्णन	....	....	९
प्रेम से राम मिलन	....	....	१०
राम की सर्व व्यापकता	....	....	११—१३
सषी भावना से पतिव्रता की महिमा वर्णन	....	....	१४
,, ,, व्यभिचारिणी की निंदा	....	....	१५
साधु महिमा और लक्षण	....	....	१६

समाप्ति

No. 419(*a*). Kavi Priyā Tīkā by Sūrata Miśra. Substance—Country-made paper. Leaves—57. Size—10 × 4 inches. Lines per page—42. Extent—1 197 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in prose and verse. Character—

Nāgarī. Place of deposit—Thākura Gyāna Simha, Village Mādhōpore, Post Office Bisawañ, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ सोरठा ॥ गरुड़ पाय गिरिपाल गोरि गिरा गण ग्रहप गुरु । ये जेहि रूप रसाल वंदो पद जेहि जुगुल के ॥ गज मुष संमुख होत हो या दोहा को तिलक सूरत मिश्र करत हैं तहां प्रश्न कोई वादी करत भयो । गनेश जूके बरनन में विघ्न को विमुप ह्वै वो कह्यौ श्रोर प्रयाग के बरनन में पापन को बिलाइबो कह्यो । बिमुष भजिबो को बिलात नसिबो यह समता नाहीं श्रोर प्रश्न जिन गनेश को बरनन तिन गनेश की अस्तुति में न्यूनता है बिघन भाजि जात है यामें प्रयाग को अधिकाई है श्रो पाप बिलात हैं यानी नसि जात हैं ये दोऊ प्रश्न ॥ तहां उत्तर विमुष को अर्थ विगत है मुष जिनको सोस कटि जात है यह प्रयोजन जब बिन सीस भये तब बिलाइबो दोऊ ठोर सिद्धि भयो ॥

End—को कामी सदा है । ये कहिये हे सषी तब उन उत्तर दीन्हो । को कहै हिय विषै कामी सदा सर्प गयो है । जेहि राह ताकी लीक बनी है ताको देषि करिकै सषी पूछत है यह लीक तुम हम पर कहउ ॥ कानी की है अर्थात केहि पंचाई है तब वह उत्तर देत है कालो है कोथी, सर्प गयो है ताकी लाक बनि रही है । वह जानिए पुनः कंठ बसत को सात कोक कहावहु विधि कहै का कहिए सुरतात को कामो हित सुरत रस ग्रथ गतागत चित्र अलंकार को लक्षन । सूधो उलटों बांचिए कहिए अर्थ प्रमान । कहत गतागत ताहि कवि केशव दास सुजान ॥ गतागत को उदाहरन मासम सो हंस जे वनवोनन वोन वजे सह सोम समा मारल तालि बनावति सारी रिसाति वनावति ताल रमा । माल वनी वलि केशव दास सदा वसु केलि वनो वलमा । सूधो उलटो बांचिव श्रोर पद ग्रह अर्थ एक सवैया में सुकवि प्रगटै होउ समर्थ ताको उदाहरन सैनन माधव ज्यो सर केसव रेष सुवेष सुदेस लसै मैनव को तम जो तरुनो रुचि चोर सवै विन काल फंसै । तै न सुनो जस श्रोर भयो घर घोर वरोति सु कैान वसै । मैन मनो गुन चालु चलै सुभ मामन में सरसो विलसै ॥

Subject—केवल कवि प्रिया को टीका प्रश्न उत्तर सहित है ।

No. 419(*b*). Nakha Śikha Rādhājūkō by Surata Miśra of Āgrā. Substance—Country-made paper. Leaves—14. Size—9 × 5 inches. Lines per page—26. Extent—200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1853 or A. D. 1796. Place of

deposit—Ṭhākura Naunihāla Simha, Village Kānthā, Parganā Kānthā, District Unāo.

Beginning—सूरति मिश्र कृत नष शिष वर्णन॥ श्री गणेशायनमः॥

कवित्त—चरन चतुर्भुज के चिह्न ह्वै करत सेवा रमा के सुदस ग्रहरूप सरसात है। आसन हू विधिहि रिझायो पै न बनो विधि सूरति सुकवि वातें जग में विख्यात है॥ सुनिये हो लाल उहि वाल पग समता कें कोनें बहुतेरो पै न भए वार जात है। ऐसो कैान जाके हिय धीरज धराइ बाके पाइ देखे काहू के न पाइ ठहरात है। १

जावक वर्णन-किधैां सब जगत की अरुनाई हारी ताकें आइ के रजोगुन चरन अनुराग्यौ है॥ किधैं पद कंजन कें सेवत हैं गिरा बड़े पूर हित जाके देखे अघपुंज भाज्यैा है। सूरति सुकवि जानि परी यह बात अब तोहि बूझिये न क्यैा हूं मान रिस पाग्यौ हैं। जावक न होइ सुनि प्रानप्यारी तेरे यह प्रीतम को अनुराग आइ पाइ लाग्यौ है। २

पद नख वर्णन-चदन अनुहारो छोनो रवि की अरुनताई जोते जोतिवंत स्वच्छ रूप विलसत है। जेती जग नारि ते निहारि नारि नोची करैं सबहो के प्रतिबिंब तिन में लसत हैं॥ सूरत श्री बृन्दावन रानो कैा चरन संग पाइबे कैं विब आभावंत दरसत हैं। सांची कहनावत इहां हो देखो लाल सबै जगत के रूप जाके नप में बसत हैं॥

End—केस्र वर्णन-किधैं तन पानिप कैा सोहत सिंगार पुंज किधैं चंद पाछो आइ घेरो तमधारि है। किधैं मन पक्षी गहिबे को मषतूल जाल मदन बनायो फांसि जाते को निकारि है॥ सूरति ए ऐसे बड़ सांवरो रसिक बड़ो देषिवे को जक लागे धोरजु न धरि है॥ कारे सटकारे ए तूं बार बार छोरति हैं तेरे वार देखे काह मेरे वार परि हैं॥ ३९

मांग वर्णन-किधैं जमुना के पूर वीच गंग धार वही किधैं तम चीरयैा रवि करि धाइ डारे तें। किधैं रसराज के सरोवर में चलो बग छोननि को पांति उत इत के किनारे तें॥ सूरत छगोले छैल छके हैं छगोलो देख अैार वसोकर कहा करिहो विचारे तें। व्यापि जाय विन अंग वारो अंग आगमन राग सो ढरत तेरो मांग के निहारे तें॥ ४० वेनो वर्णन-त्रिभुवन पति के हरति दुख देखत हो सहज सुवास ऊंचो वास सोभ रस है। नेह जुत सरसै पहाई सुख सरसै वे तोनहूं चरन कैा प्रगट सुदरस है। सब दिन एक सो महातम है सूरत यों नागर सकल सुख सागर परस हैं। एरी मृगनैनो पिकवैनो सुख दैनो अति तेरो यह बेनो तिरवेनो ते सरस है॥ ४१

इति श्री सूरति कबि विरचितं नष सिख वरननं समाप्तम् ॥ संवत १८५३ माघ वदी ९ नवमी मदं वासरे ॥ लिखित मिदं ।

Subject—राधा के चरण, जावक, पदनख एड़ी चरनांगुली, भूषन अनवट, नूपुर, पाइजेब वर्णन छंद १ से ८ तक।

गति, कटि, त्रिवली, रोमराजी, उरोज, हाथ, कर भूषन, चूरी, भुजमूल, पीठि वर्णन। छंद ९ से १९ तक।

ग्रीवा, तिल, मुख, अधर, दशन, रसना हँसी, वाणी और कपोल वर्णन छंद २० से २८ तक। नासिका, नथ, नेत्र, अंजन, नेत्रभाव, वरुनी, भृकुटी, श्रवण, भाल वर्णन छंद २९ से ३७ तक।

अलक, केस, मांग और वेणी वर्णन तथा लिखने के संवत् का उल्लेख छंद ३८ से ४१ तक। चाँदनी वर्णन, अंधकार व शीत वर्णन के ३ छंद इसमें सूरत कृत और भी दिये हैं। इति।

No. 419(c). Bihāri Satasaī kī Ṭikā by Surata Miśra and Isavī Khān of Āgrā. Substance—Country-made paper. Leaves—625. Size—$8\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—20. Extent—7,812 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Date of manuscript—Samvat 1973 or A. D. 1916. Place of deposit—Pandīta Śyama Bihari Miśra, Gōlāganja, Lucknow.

Beginning—विहारी सतसया टीका ॥

सतसैया की टीका श्री मिश्र कवि सूरति कृत अमर चन्द्रिका व ईस्वी कृत टीका लिख्यते ॥ दोहा—मेरो भव बाधा हरो राधा नागर सोइ। जातन को झाईं परै श्याम हरित दुति होई ॥ १ सूरति कृत टीका—प्रथम मंगलाचरन यह कवि की विनती जानि ॥ प्रगटत अपनो अधमता अधिकाई सुनि आनि ॥ जिता अधम तितनो वड़ी भव बाधा यह अर्थ। उहि हरिबे को चाहिये कोऊ बड़ा समर्थ। नर बाधा कों सुर हरत सुर बाधा ब्रह्मादि। ब्रह्मादिक को व्याधि कों हरत जु श्याम अनादि। लखि राधा तिन श्याम को, बाधा हरत न कोइ। याते मो बाधा हरो राधा नागर सोइ ॥

End—अमर चन्द्रिका ग्रंथ कों पढ़ै गुनै चितलाय। बुद्धि सभा परवीनता ताहि देई हरिराइ ॥ ई० टी० इस जगह वाद के अर्थ वृथा के हैं। हेतार्थ दोहा को यह है कि अपने मत का झगरा वृथा है, क्योंकि जिनने सेवा है तिनने जानी नंद किसोर ही की सेवा है क्योंकि ब्रह्मा, सिव, सनकादिक, सब विष्णु ही हैं तौ

जिनने जिसका पूजा माना विष्णु को हो पूजा। अलंकार उपमा तिसका लक्षण। जहां वेद स्मृति पुरानादिक करि अर्थ पाइये सब हो को एक नंद नंदन मिइबो पुरानोक्ति है। जो परिसंख्या अलंकार है तो ताको लक्षण यह है कि एक थल को वरोज एक थल नंद नंदन को सेवन ठहरायो। यामें और देवन की अवज्ञा होइ। ताते परिसंख्यालंकार नहीं राख्यौ॥ यद्यपि है शोभा घनी मुक्त मे देख। गुहे ठोर की ठोर में तार में होत विशेष॥ ७१७ निषेधालंकार॥ जे संपत्ति बहुतै बढ़ आनंद उपजे चित्त। यों तीनों न बिसारिये हरि अरु अपनो मित्त॥ संभावनालंकार॥ इति श्री अमर चंद्रिकायां अमर सूरति प्रश्नोत्तरे ईसवी कृत विहारी सतसैया व्याख्यानो शत रस वर्ननो नाम पंचम विलासः॥ मिती पौष सुदी १ संवत्, १९७३ विक्रमी॥

Subject—विहारी के ७१७ दोहों की टीका है। सूरति मिश्र ने प्रथम पद्य में और कहीं कहीं अर्थ स्पष्ट करने को गद्य में टीका की है। उस पर ईसवी खां ने गद्य में टीका की है।

No. 420. Ravi Vratā Kathā by Surendra Kirti of Gōpāchala (Gwālior). Substance—Country-made paper. Leaves—12. Size—$12\frac{1}{2} \times 8$ inches. Lines per page—22. Extent—662 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1740 or A. D. 1683. Date of manuscript—Samvat 1925 or A. D. 1868. Place of deposit—Srī Jaina Mandira (Bara), Bārā Bankī (Oudh).

Beginning—अथ रविव्रत कथा लिख्यते॥ चौपाई

प्रथमहि सुमिर जिनवर चौबीस। चौदह से त्रेयत जु मुनीस। सुमिरौं सारद भक्ति अनंत। गुरु देवेंद्र जु कीर्त्ति महंत॥ १॥ मेरे मन उपज्यो इक भाव। रवि व्रत कथा कहन को चाव। मैं तुक हीन जु अक्षर करौं। तुम गुण उर कवि नीके धरौं॥ २॥ नगर बनारस उत्तिम थान। पारसनाथ जन्म कल्यान। सहस कोटि चैत्यालय बने। कंचन कलस जड़ित सो भने॥ ३॥ वहैं जु गंगा गहिर गँभीर। जिन कर गुन सम उज्जल नीर॥ राजा के जो महल सोभंत। कंचन कलस दीपतजु महंत॥ ४॥ हाट बजार भरे दीनार। देस देस के कोठी वार। पढ़ैं सु पंडित वेद सुजान। बड़े ग्रंथ जसु धवल पुरान॥ ५॥ बने बगीचा कूपि विसाल। उपजै मेवा बहुत रसाल। चंपा पाडर करुना जुही। पर फुल्लति बहु बागन बनी॥ ६॥ निकल वेलि अरु मरुआ जाइ। लता लवंग रही बहु छाय। नगर बनारस महिमा घनी। अमरापुर ते अतिही बनी॥ ७॥ राज राज करै महिपाल।

बडी नीति सब के रक्षपाल । मति सागर तहँ सेठ जौहरी । जैन धर्म की टेक जु धरी ॥ ८ ॥

End—रवि-व्रत तेज प्रताप गई लक्ष्मी फिर ग्राई । कृपा करी धरनिन्द्र ग्रोर पद्मावति माई । जहाँ गये तहँ रिद्धि सिद्धि सब ठैारन पाई । मिले कुटुम परिवार भले सज्जन मन भाई । पढ़ै सुनै जो प्रात उठि, नर नारी जसु बुद्धि । धरनिन्द्र ग्ररु पद्मावती होइ सर्वदा सिद्धि ॥ वार वार ग्रब कह कहौं, रवि व्रत फल जु ग्रनंत । प्रभु धरनेन्द्र किरपा करी । दीनी लक्ष ग्रनंत ॥ दान मान जु करै धरै रवि व्रत जु ध्यान उर । जोग रोग भोग रस हित जपत उर माहि परम गुरु । सत सौच व्रत नेम जोग तीरथ फल पावै । रवि व्रत कथा कहंत सुनंत जो चित लगावै ॥ सुरेन्द्र कीर्ति ग्रब यों कहे रवि व्रत गुन रूप ग्रनूप सब । पंडित सुत केशवदास कहि लीजो चूक सुधारि ग्रब । १३५५ इति श्री रवि व्रत कथा सम्पूर्ण ॥

Subject—(१) पृ० १ से पृ० ७ तक-मंगलाचरण । जिनादि बन्दना, काशी के राज्यान्तर्गत एक सेठ मत्तिसागर तथा उसकी सेठानी गुन सुंदरी के सात पुत्रों का होना ग्रोर उनके वैभव का वर्णन । गुन सुंदरी का चैत्यालय जाकर मुनि से रवि व्रत लेना ग्रोर घर ग्राकर कहना । सेठ का व्रत की निन्दा करना सब द्रव्यों का नष्ट हो जाना, लड़कों का ग्रयोध्या जाना सेठ जिनदत्त से ग्राश्रय पाना, बालकों को भी व्यापारादि में क्रमशः हानि का ही होना । ग्रंत में एक मुनि के ग्रादेश से गुण सुंदरी सहित सेठ का पुनः व्रत साधन करना ।

(२) पृ० ७ से पृ० तक—गुनधर (सेठ मतिसागर के पुत्र) की नागेन्द्र सेवा से धन धान्य की प्राप्ति ग्रोर जिन मंदिर का निर्माण कराया जाना, उनके ऐश्वर्य से द्वेष करके उन्हें चोर बता कर ग्रयोध्या नरेश से उनकी शिकायत होना, राजा का भ्रम निवारण, राजा का ग्रपनी प्यारी पुत्री प्रीतिमती का विवाह होना, ग्रंत में राजा से सादर विदा लेकर काशी को लैाटना ग्रोर माता पिता से मिलना, व्रत के प्रताप से पुनः वैसे का वैसाही हो जाना बल्कि ग्रोर भी ग्रधिक धन तथा मान का होना, इस कथा के पढ़ने तथा सुननेवालों के फल का वर्णन,

कवि परिचय :—

ग्र—निवास स्थान, गढ़गोपाचल नगर भले शुभ थान बखानो ॥

ब—वंश परिचय, देवेन्द्र कीर्तिमुनि राज भले तप तेज प्रमाने । तिनके यह सुरेन्द्र कीर्ति भट्टारक जाने ।

स—ग्रंथ निर्माणकाल :—

संवत विक्रम जीत भलो सत्रह सै मानें । ता ऊपर चालीस जेठ सुदि द्वादश जानें । वार सु मंगल वार हस्त नक्षत्र जु पारियो । तम हर रबि व्रत कथा सुरेन्द्र कीरति शुभकरियो ॥

द—महंत होने का वर्णन—

गर्ग गोत्र अग्रवाल ते हू नगर के जे हैं वासो। साह मल्ल के पूत साह भाऊ बुध रासो॥ उनकी बुद्धि में कोजिये वे पूरे गुनवंत। पंचम मिलि जो दया करी पायो पदज्ञ महंत॥

No. 142(*a*). Jānakī Vijaiya by Sūrya Kumāra. Substance—Country-made paper. Leaves—26. Size—8 × 6 inches. Lines per page—8. Extent—130 Anushṭup Ślokas. Appearance—Ordinary. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—Rājā Bhagawāna Baksha Simhajī, Riyāsata Amethī, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनः अथ जानुकी विजय कथा॥ छन्द॥ जय जयति जय जगदम्बिका जननी अखिल जग जानकी॥ अति अतुल जासु प्रभाव गम्य नहिं गति जानुकी। गुण तीनि पावरै तत्त्व माया त्रिगुण सगुण सरूप जो। प्रसिद्ध त्रिभुवन विभव भूषित अमित शक्ति सरूप जो। सोरठ॥ परत विषम भव-कूप, सुर मुनि अहमित जोग में। चिदानंद मय रूप, जब लग जानि न जानकी॥ दोहा॥ जड़ पवि नासन जानकी राम वाम दिसि सोह। सुर नर मुनि सुमिरत सदा, होत विगत मद मोह॥ चरित नराकृत कीन्ह बहु सोभ्य सुभग तनु धारि। जानकी जिय मन मोह कछु जानि सु राजकुमारि। सप्त रिष्मिन अम मन भयऊ सिय महिमा नहिं जानि॥ विजय जानकी कंथ करि कह्यो प्रसंग बखानि॥

End—छन्द॥ लीला अमित सिय राम यह अति गुप्त ग्रंथनि जो रही। पावन करन हित (निज) गिरा परसिद्ध तुलसी कर कही॥ पदकंज जानुकि प्रीति युत जे सुनहिं सादर गावहीं। सोभाग्य श्री संपति सदा कल्याण कीरति पावहीं॥ सोरठ॥ श्री सम्पति सुख धाम, तासु सदा मंगल भवन। छबि सुधाम श्रीराम तुलसी के प्रभु खल दवन॥ ०॥ इति श्री जानुकी विजय रामायण सहश्र सी दिव्य रावन वध समाप्तम् सम्बत् १९०० शाके १७६५॥

Subject—इस में कवि ने रौद्र, वीर, भयानक तथा अद्भुत रस का उत्तम वर्णन किया है। रामचंद्र जी लंका को विजय करके सीता लक्ष्मण सहित अयोध्या को गमन करने को हैं; देवता तथा मुनीश्वर उनकी प्रार्थना कर कृतज्ञता प्रकाश करके चले गये हैं। इतने ही में सप्त ऋषियों ने आकर रामचंद्र से उनके लंका विजयोपलक्ष में प्रशंसात्मक वाक्य कहे और जानकी जी को राजकुमारी बतलाया, सीता जी मुसकराई राम ने कारण पूछा, इस पर सीता ने बतलाया

कि अभी एक रावण सहस्र मुख का सात समुद्र पार वध करने के बाकी है, फिर क्या था राम ससैन्य उसके वध को चले। समुद्र स्वयं शुष्क हो गया। राम वहां पहुंच गए। राम की सम्पूर्ण सेना उस राक्षस ने उड़ा दी। केवल जानकी (सीता) तथा राम रह गये, राम से भी कुछ न हो सका अंत में सीता से प्रार्थना की उन्होंने उग्र रूप धारण कर राक्षस को नष्ट कर दिया। वह रावण मरते समय सीता जी में ही प्रवेश कर गया। अनेक शक्तियां जो उनके शरीर से ही उत्पन्न हुई थीं उन्हीं में प्रवेश कर गईं। इसपर सम्पूर्ण ऋषि मुनियों को सीता जी का प्रभाव ज्ञात हो गया। राम ने तो एक सागर को पार कर दस मुखवाले रावण को ही विजय किया था और यह उन्होंने सात समुद्र पार कर सहस्र मुख वाले रावण को नष्ट किया। इस प्रकार बड़े अच्छे ढंग से जानकी जी की विजय दिखलाई है। सब ऋषियों ने उनकी वन्दना की तब कहीं उनका उग्र रूप छिपा। पुस्तक संवत १९०० वि० शाके १७६५ सन् १२५१ की लिखी हुई है।

No. 421(*b*). Janakī Vijaiya by Surya Kumāra. Substance—Country-made paper. Leaves—9. Size—8 × 6 inches. Lines per page 24. Extent—200 Anushtup Slokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1903 or A. D. 1896. Place of deposit—Paṇḍita Mahādeojī, Village Aurāhī, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ जानकी विजय लिख्यते। दोहा। चरित राम सत कोटि किय विविधि मुनिन्ह विस्तार। अदभुत चरित विचित्र अति गुप्त प्रगट संसार॥ भरद्वाज मुनि सन कहत बालमीक इतिहास। नाम विचित्र रामायन विजय जानुकी जास। छंद॥ जय जयति जय जगदंबिका जननी अखिल जग जानकी। अति अमित जासु प्रभाव पावन गम्य नहिं गति ज्ञान की॥ गुन तीन पांचौ तत्व में सब सगुन निरगुन रूप जो। परसिद्ध त्रिभुवन विजय भूषित अमित सक्ति सरूप जो। सोरठ॥ परतपरम भव कूप सुरमुनि अहिमित जोग जे॥ चिदानंद में रूप जब लगि जान न जानकी॥ दोहा॥ जड़ै विनासन जानकी राम वाम दिशि सोह। सुर मुनि सो सुमिरत सदा होत विगत मद मोह। चरित राम कृत कीन्ह बहु सौम्य सुभग तन धारि। जानकी जै मन मोह कछु जान सो राजकुमारी। सब रिषिन भ्रम भयो अति सिय महिमा नहिं जानि। विजय जानकी ग्रंथ यह कहौं प्रसंग बषानि॥

End—दोहा—यहि विधि अस्तुति प्रेम युत बुध जन जबहिं बषान। अभै दान दै देवि तब परम भयाकुल जानि॥ उग्र रूप जो त्यागि तौ सौम्य सुभग तन

धारि। राम बाम दिसि बास हिय बहु विदेह कुमारि ॥ सुरगन वर्षहि सुमन गन बाजहिं व्योम निसान। चले अवध प्रभु यान चढ़ि जय जय होति बधानि ॥ सिया राम राजत अवध जग अभिराम अपार। चरित चारु लखि लखि ललित करत अनेक प्रकार ॥ छंद ॥ लीला ललित सिय राम का यह गुप्त ग्रंथन जो रहो। पायन कटक हित निज गिरा परसिद्धि भाषा कवि कहो। पद कंज जानु विशेषि जुत सो जे सुनहिं सादर गावहीं। यह लोक तजि बैकुंठ पैठे परम पदवी पावहीं। इति श्री हरि चरित्र माहात्मे सकल कलिकलुष विध्वंसनेनाम विमल वैराग्य पावनोनाम जानकी विजै कथा समाप्त शुभ मस्तु भाद्रमासे कृष्ण पक्षे तिथौ चतुर्थ्याम चन्द्रवासरे संवत १९०३ शाके १७६८ सन् १२७४ लिष्यते ईश्वर सहाय चौबुकहा के ॥ श्रीराम ॥

Subject—जानकी विजय में श्रीराम जी जब अयोध्यापुरी में रावण को मार कर आये और सिंहासन पर बैठे उस समय सब देवता और ऋषियों मुनियों ने पृथ्वी के भार उतारने की प्रशंसा की उस समय जानकीजी मुसकायीं श्रीराम जी ने मुसकराने का कारण पूछा तो कहा कि हज़ार सिर वाला रावण जब तक आपने नहीं मारा तो किस प्रकार पृथ्वी का बोझ उतारना कहा जा सकता है। श्रीराम जी ने उस रावण के निवास स्थान को सीता जी से पूछा। उन्होंने सात समुद्र पार बतलाया और उसकी बड़ी महिमा वर्णन की। श्रीराम जी तुरंत ही अपना कटक जो रोछें और बानरें व राजाओं का था लेकर पहुंचे परंतु महारावण श्रीराम जी से न मरा तब अपनी शक्ति की प्रार्थना की उस समय सीता जी ने सैाम्य रूप को त्याग कर भगवती का रूप धारण कर और योगनी भूत प्रेत डाकिनी आदि लेकर महारावण को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। उस समय तीन लोक चैादह भुवन में बधाई बजने लगी देवताओं ने पुष्पों की वर्षा की और सीता जी (भगवती रूप) को सबने प्रणाम किया। इस प्रकार सीता जी ने विजय प्राप्त की। इसी का वर्णन इसमें किया गया है। कवि के नाम का छन्द नीचे दिया जाता है। प्रभु चरित्र अद्भुत किय सगुन रूप विस्तार। जानकि जिय मन भोर कछु जानि सूर्य कुमार।

No. 422(*a*). Jhagarā Rādhā Krishṇa of Suwaṁśa Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—6 × 5 inches. Lines per page—12. Extent—180 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṁvat 1942 or A. D. 1885. Place of deposit—Ṭhākura Hanumāna Siṁha, Village Bardeha, Post Office Kherighāta, District Baharāich (Oudh).

Beginning—अथ टीका झगरा राधा कृष्ण का लिष्यते ॥ दोहा ॥ अमल कमल गनपति चरन सुमिरि सुवंस सुचित्त । करौं अकार हकार लैं दोहा सहित कवित्त ॥ सवैया ॥ आसन एक लसैं हरि राधिका चंदन खैारि इतै उत रोरो ॥ मोर इते सिर फूल उतै तन स्याम इतै उतै तन गोरो ॥ पटदनि पीत पिछैारी इतै उत घांघरो चूनरि सो रंग बोरो । माहे सुबंस सुनैा मन मोरे लषै निसि दैास मनोहर जोरो ॥ मसला ॥ आई हतो हरि भजन का ओटै लगो कपास । दोहा । इत अनोषो ग्वालनो उतै रसिक नन्दलाल । वरणों रस झगरो सुनो अगरो परम विसाल ॥ सवैया ॥ इन्दु रसोली रसे यह इन्दु मुषो तारिता घन मय जनु मंचक सारी । संभु समान उरोज दोऊ कटि केहरि डीठि मनो अनियारो । भाषै सुबंस मरालन को गनै माते मतंगन को गति हारी ॥ जाति चली दधि बेचन को तिय लेति जगाति जहां गिरधारी । म. इर्षा माने उरोसिन को नियाह कहैा कैसे ।

End—हरषि हरषि हरि को चरित, जे सुनि है चित लाइ । ते जग मों सुष को करैं सकल संपदा पाय । हरि को हिय में धरि ध्यान कहैां यह है भव सागर को तरने ॥ सो ससि में ससि चंद्रक वार । हतो सित पक्ष चतुर्दस को भरनो महि नंदन वास सुवंस कहै दुष दोरघ दारिद को हरनो । नद नंदन औा नव नागर को रस को अगरो झगरो वरनो ॥ मसला । हरहा के साथ कपिला का विनास ॥ दोहा ॥ कियो अकार हकार लैं जानै सबै सुजान । छंद दोहरा कवित सो यों प्रसन्न उपपान ॥ सवैया । छूटन सारो समुद प्रमेद सितारो तुरन्तै वुधवंत न जानो । औार उपाय न देषि परो तब वायु बुझावन को मत ठानो । ठेकि चलावै सबै मिलि कै यह जानि सुवंस एकात्रि वषानो ॥ याहि पढ़े सब पंडित भाषत मारुत मंद वहै मन मानो । इति श्री ठेकि झगरो राधा कृष्ण सम्पूर्ण ।

Subject—इस ग्रंथ में राधा कृष्ण का झगड़ा है दोनों रूपों की शोभा और श्रृंगार बताया गया है ।

No. 422(*b*). Rāmacharitra by Suwansa Kavi of Torha (Unnao). Substance—Foolscap paper. Leaves—24. Size—9 × 5 inches. Lines per page—24. Extent—360—Anushṭup Ślokas. Complete or not—Complete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1879. Place of deposit—Baba Banamaladāsa Gundā (Rāe Bareli).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥
एको कुल के चरित को महिमा अपरंपार, का सुवंस कवि कहि सकै सेस न पावत पार ॥ वरन्यैा राम चरित्र बोस तरा के छंद ते । सुनैा चाउ करि मित्र

तिन को अब लच्छन कहीं। रस रिषि वसु औ वसुमती संवत बरष विचार। अमित असाढ़ एकादशी रामचरित अवतार॥ तपनि ले विस्वामित्र मुनि वा कात्यायन सुत जए। त्यहि वंस में अवतंस कनउज मांहि चिन्तामनि भये। तिनके तनय त्रय राम अरु अनिरुद्ध केसोराम ये। कहं लों सुवंस बखान नाई जिनके कलपतरु काम भे। सुत जुगुल केसाराम के भे हरी माधो अति लसे। ते पिक्ष मोद बढ़ाइ दुनौ भाइ सुठि आए बसे। प्रकट हरी के चार सुत जेठे गोवर्द्धन जानिए। अरु मारकंडे गनो भवन प्रसिद्ध सिद्धवर वानिए। भे मारकंडे मिश्र के सुत पांच लीला धर जसो गुनखानि कासीराम विद्यापति विरा र ज्यों ससी। सुखमै सुदामा परम पुरुष प्रकट रामेस्वर भए॥ सुत पांच लीलाधर मिसिर के जा गुन गन छिति छए। अनरुद्ध राजा राय जाहिर महामुनि मन मानिए। गुनगाथ जागेस्वर सुखद अति प्रेमनाथ बखानिए॥ त्रै तने राजाराम के भे छेपराम प्रथम कह्यो। मतिराम वे सीतल प्रसाद सुधर्म सुख पूरन लह्यो। सीतल प्रसाद सुबुद्धि के द्वै पुत्र भे जनु द्वै ससी। सुख दानि वाजी लाल औ रिषिनाथ साधु महाजसो॥ सुमति मिश्र रिषिनाथ के सुत भे साधोराम। कलियुग में तिम दिन करत सब सतजुग के काम। साधोराम सुवंस पै जितनी करी सताइ। सातो रसना एक सों कैसे बरनी जाइ। जासा बिन श्रम ही मिलै चारि पदारथ मित्र मंगलाचरण एक श्लोक मोंसी कह्यो बरनौ राम चरित्र। मंगल करन उताल विघनहरन दारिद दरन। करिए दया दयाल लंबोदर करिवर वदन। जटाजूट सिर गंग भालचंद गर गरल अहि। आदि शक्ति अरधंग महादानि संकट द्रवौ॥ चरन कमल गुरु के सुमिरि साधुन को सिर नाइ, राम कृपा से राम को चरित कहौं सुखदाइ। अमित राम अवतार हैं अमित कथा विस्तार, मोहूं कहत हौं एक विधि निज मति के अनुसार।

End—जब ते रघुनायक राज्य करी। जुग आदि को कीरति सबै बगरी। उतपन्न धरा सब सस्या करै। सब जीव सुखी न अकाल परै। जल देत बला तक चित्त चह्यो। वर वारि सदो परि पूरि रह्यो। सुरगो सम धेनु भई सगरी। अमरावति शील सती नगरी। नर नारि उदार गुनाढ़ जसी। दृढ़ संपति गेह न गेह बसी। उतसौ दिनहू दिन होन लगो। नर नारि सुधर्म सुनीति पगे। दारिद के दारिद भयो रोगहि के भो रोक। दुख के दुख भ्रम के भ्रमै सोकहि सोक संजोक। मातु पिता गुरु को करै सेवा प्रेम बढ़ाइ। कहै सुनै हरि हर कथा नर नारी मनुलाइ। धर्मवंत नृप की प्रजा साजति सब सुख साज। रीति तहां को क्या कहों जहां राम महराज।

Subject—१—राम चरित्र वर्णन में कवि की असमर्थता का वर्णन। निर्माण संवत वर्णन।

२—साधो राय का कुल वर्णन।
३—मंगलाचरण आसुरी समय का वर्णन।
४—भूमि का गो रूप वर्णन।
५—शिव स्तुति।
६—माता का वात्सल्य वर्णन।
७—बालक्रीड़ा वर्णन।
८—बारात की शोभा वर्णन।
९—भोजन सामग्रियों का वर्णन।
१०—गारी गायन
११—लक्ष्मण पशुराम का वर्णन।
१२—सेवक धर्म वर्णन।
१३—जाति ब्रह्म धर्म वर्णन।
१४—भातृ भक्ति वर्णन।
१५—केवट प्रेम वर्णन, राम निवास स्थान वर्णन।
१६—भरत कैकेई संवाद वर्णन।
१७—लक्ष्मण का क्रोध, सैन सुरसरी का वर्णन।
१८—वृद्धा अनुसूया के सिर कंप, राम प्रतिज्ञा, पंचवटी का वर्णन।
१९—खरदूषण प्रलाप, मायामृग का वर्णन।
२०—जटायु युद्ध, दुख के कारणों का वर्णन।
२१—राम वालि, तत्त्वज्ञान महाबीर का बल वर्णन।
२२—राम रूप, लंका दहन, रामदल, रामकी उदारता वर्णन।
२३—रावण की सभा में अंगद का संवाद वर्णन महल्ला में हल्ला घन घोर युद्ध वर्णन।
२४—जगत में दुःख के कारण, राज्यश्री मद और राम राज्य का वर्णन।

No. 422 (c). Sphuṭa Kāvya by Suwanśa of Terho (Unāo). Substance—Foolscap paper. Leaves—30. Size—9 × 5 inches. Lines per page—22. Extent—330 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābā Banamāla Dāsa, Gunda, Rāe Barolī.

Beginning—श्री गणेशायनमः

राखे सदा जन को भव भीमते, पार करे प्रन पातक नाषें। नाषें कुरूप कूबुद्धि सुबुद्धि दै खोलत हैं हिय को वर आंखे ॥ आंखे निहारत देव अदेव जे वेद

पुरान सदा गुन भाषें । भाषें सुवंस हिये धरि ध्यान गनेस कलेस को लेस न राखें ॥

जा हरि को चारि मुख चाउ सों विचारो करै धारा करैं ध्यान ध्यानो ध्यान में न पावहीं । जा हरि रिषि मुनि मनन करत रहैं जा हरि को बन बीच तपी तन तावहीं ॥ जा हरि को आठो जाम सुकवि सुवंस कहै धाम छोड़ि बीना लीन्हें नारदादि गावहीं । ता हरि को गोप नारी हंसि हंसि हेरि हेरि चारि पग चलै चूमि छतिया लगावहीं । गुलुफ सुलुफ ते वे मन को कुलुक करो करतो विहार तापै चाहता सो ऊघरू । गूंधो मखतूल सों न तुलि है तर्रान तेज फूल कर फूलो सदा सूल हरसू गुरु ॥ सुकवि सुवंस कहै जटी नग जालन सों हरतो जंजाल हाल मोहैं मन भूधरू । मंदरव करतो मरालन के बालन को मंद मंद बाजतो गुविन्द पांय घूंघरू ॥

End—दसन दिखाइ अरु उदर खलाइ बांधि मिथ्या के प्रबंध लघु लोगन को जांच्यो मैं । चरित लषै रस के गाइ कै रिझाय मूढ़ रूठो मन जानि झूठो ठहरायों सांचों मैं । लोभ के बजाइ बाजा सुकवि सुवंस कहै यहि मता मौज अपमान कहों खाच्यों मैं । भरत के भैया मेरी बिपति हरैया राम तोहि बिन जांचे तो अनेक नाच नाच्यो मैं ।

गहुरे हरि के पद पंकज तू परि पूरो मिवाबन है यहुरे । यहुरे जग झूठो है देखु चित हरिनाम है सांचो साइ कहुरे ॥ कहुरे न कहूं परद्रोह की बात सुवंस कहै कोऊ सो सहुरे । सहुरे मन तोसों करौं विनती रघुनाथ निरंतर को गहुरे ॥ छोड़ि अनीति को नीति गहौ दृढ़ साधु को संग करौ सब जामै होहु जमो हरि लीला सुनो अरु राखो सदा करुणा हिय धामैं ॥ आनंद पैहो सदा शिव लोक में ध्याओ सुवंस कहै सिय रामै । रेमन चंचल चोकनो चाहि चुभै मनि चंद मुखीन के चामै ॥

Subject—

पृष्ट

१ –५ गणेश स्तुति, बालकृष्ण का वर्णन ।

६—१० वसंत और वर्षा ऋतु का वर्णन ।

११—भंग (विजया) प्रशंसा वर्णन

१२—१५ राजा रघुनाथ सिंह के शिष्यों का वर्णन ।

१६—१९ राजा रघुनाथ सिंह और सुदर्शन के घोड़ों का वर्णन ।

२०—राजा सुदर्शन की तलवार का वर्णन ।

२१—वीर रस वर्णन ।

पृष्ट.

२२—दानवीर दयावीर के उदाहरण।

२३—रौद्ररस के उदाहरण।

२४—करुणा रस के उदाहरण

२५—हास्य रस और भयानक रस के उदाहरण।

२६—२७ वीभत्स क उदाहरण।

२८—भक्ति भाव वर्णन।

२९—गंगा महिमा वर्णन।

३०—भक्ति उपदेश वर्णन।

No. 422(*d*). Umarāo Kośa by Suwamśa Śukla of Bisawañ. Substance—Country-made paper. Leaves—92. Size—12×6 inches. Lines per page—44. Extent—2,530 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1862 or A. D. 1805. Date of manuscript—Samvat 1942 or A. D. 1885. Place of deposit—Paṇḍita Vipina Behāri Miśra, Brijarāja Pustakālya, Village Gandauli Post Office Sidhaulī, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ उमराव कोष लिष्यते ॥ दोहा ॥ सिद्ध करन असरन सरन दारिद दरन दयाल। मन मायक दायक सदा गो गायक गणपाल ॥ छप्पय ॥ करत वान कल्लोल केलि कनरव को करि करि। फेरत सुंडा दंड प्रतिछाया को धरि धरि। मुक्ता से श्रम कुंद परत आनन ते झरि झरि। सद्य शक्ति गहिलीन सुतै आनंद उर भरि भरि। उर लाय ललकि चूमति वदन यह सुवंस माग्यो परषि। सुपदेव नृपति उमराव को उमा उमा नंदनि हरषि। अथ राज स्थान वर्णन ॥ घनाक्षरी ॥ जामै चारो वरन करन के समान देपे वे भरम चारो पाप धरम हंसत हैं। देवो देवता से नर नारि नीति रीति गहे प्रीति देवता को दिन दिन सरसति है। सुकवि सुवंस कहै रतन अमोल जैड़े मानो भूमि भाग को विभूषन लसत है। देश देश जाहिर नरेश यों बषानि करैं वेस अोध मंडल मैं विसवां वसत है।

End—मोचा नाम। केरा समर ये दुवौ मोचा नाम प्रमान। भानु मेष पर्वत भयो प कवि कहत सुजान। इड़ा नाम। सनि वसुधा पुनि वाक गनि मदिरा औरो नीर। इड़ा कहत पांचौ विषे जे कवि गुनी गंभीर। स्याम नाम निज अरु घन पुनि ज्ञात गनि युत निज वस्तु सिहारि। ये चारौ को स्वा कहौ सुकवि सुवंस विचारि। ककुद नाम। कांध पुष्प नृपचिन्ह त्रय इन्है ककुद है

नाम । कुंदकली तारा मघा मघा जुगल बुध धाम ॥ सत नाम ॥ साधु सत्य पुनि श्रेष्ठ गनि और प्रसस्त मन मानि । ये चारौ को सब कहौ सुकवि सुवंस वषानि ॥ चौ० वर्ग विशेष विप्र द्वै मित्र । सहित अनेक अर्थ विचित्र । द्वैसे छंद सत्ततरि । दार कांड तीसरे में है बुधिवर । युग रस बसु अरु निशा पति संवत वर्ष विचारि । माघ कृष्ण प्रतिपदा को भयो ग्रंथ औतार । ग्रंथ संज्ञा ॥ वर्ग वोस भय कांड त्रय छिति रस वसु ससि छंद । भाषा शुक्ल सुवंस कवि करि कै महानंद ॥ इति श्री विश्वनाथ पुरा पंड मंडल धराधोस चौधरी शिवसिंह वंसावतंस उमराव सिंह कारिते शुक्ल सुवंस विरचिते उमराव कोषे समाप्तम् ।

Subject—एक शब्द के अनेक नाम दिए हैं ।

No. 422(*c*). Umarao Vrittakār by Sawamśa Śukla Kavi of Viśwanathapura. Substance--Country-made paper. Leaves--55. Size--8 × 6 inches. Extent--770 Anushṭup Ślokas. Appearance—Ordinary. Character--Nāgarī. Date of manuscript--Samvat 1898 or A. B. 1841. Place of deposit--Ṭhākura Mahābīra Baksha Simhaji, Raīsa Tālukedār, Village and Pargana Kothārā Kalān, District Sultanpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः दोहा ॥ गणपति गौरि गिरोश गिरि गुरु गोपालहिं धाइ । कवि सुवंश उमराव को देत असीस बनाइ ॥ १ ॥ छप्पै ॥ जब लगि गणपति गौरि गिरा गंगा गंगाधर । जब लगि गवूड़ जोन्हाइ गगन गुहाक पति गिरिवर ॥ जब लगि पन्नग राजपुरो अरु प्राग पुरंदर । जब लगि सातों सिंधु सिंधु की सुता सुधाधर । कहि सुवंस जब लगि ध्रुव चिरंजीव मुनि शंभु सुत । तब लगि राजा उमराव नृप करौ सकल संपति सुत ॥ दोहा । गुरु लघु वष्ट उदिष्ट अरु मेरु पताका जानि । सहित मर्कटो चक्र ए प्रथमहिं कहौं बखानि ॥

End—अथ द्वित्रिंश अक्षर प्रस्तार । दोहा ॥ सोरह सोरह पै विरति गुरु लघु नेता मानि । बत्तिस अक्षर अंत लघु छंद जलहरन जानि ॥ ७३ ॥

यथाः—जलधर सम स्याम तनु अभिराम राजै पारद जुगल पट बोजुरो सोहै विशाल । काछनो कलित कटि तट में सुवंस कहै कर परवेनु चारु गेर में प्रहुप माल । कुंडल कनक जड़ित मणि कानन मे सोस में किरोट अरु केसरि को खौरि भाल । ऐरे मन मेरे ऐसो रूप हिये धारि कहौ आठो जाम कहौ गोपाल गोपाल गोपाल ॥ इति जलहरन । अथ हरिगोत छन्द ॥ जब लगि विधाता वेद है अरु शेष हरिजस को कहै । तब लगि विदित वसुधा विष उमराव वृत्ता कर रहै ॥ जाहि

के पढ़े ते श्रम बिना वर वृत्त की रचना करै। कविराज है हिय में सुवंस कहै सदा सुष को भरै ॥ २७५ ॥ इति श्री विश्वनाथ पुरा पंड मंडल धराधीश चौधरी शिवसिंह वंशावतंस उमराव सिंह कारिते शुक्ल सुवंस विरचिते उमराव वृत्ताकरे वर्न वृत्त वर्ननोनाम पंचमोल्लास समाप्त संवत् १८९८ मिती पैाष कृष्ण पक्षे त्रयोदश्यये रविवासरे पोथी लीषा ईसरी प्रसाद सुक्ल माकोन पीछैारा सुभ मस्तु ॥

Subject—(१) पृ० १ से पृ० ५ तक प्रथम उल्लास, गुरु लघु विचार मात्रा का प्रस्तार, मात्रिक गण, चतुष्फल नाम, त्रिकल नाम, गुरु नाम, लघुनाम, अक्षर गण, गण फलाफल। द्विगण विचार, द्विगण फलाफल, दग्धाक्षर, मात्रा मेरु, मात्रा मर्कटी।

(२) पृ० ५ से ६ तक —द्वितीय उल्लास, उदिष्ट, वर्ण मेरु, उदिष्ट नष्ट मर्कटी वर्ण तथा मात्रा दोनो के संबंध से।

(३) पृ० ७ से पृ० २४ तक—तृतीय उल्लास, छन्द लक्षण, समवृत, विषम वृत, उक्तादिक नाम, गाहा, उपगीति, गाहिनी, सिंहनी, अस्कंधक, हारिगोत वर्ण भेद, भ्रमर, सरभ, मंडूक कर्कट, करभ, महकल, पयोधर, बलबानर, त्रिकल, कमठ, मच्छ, सिंह, अहि, बाघ, बिलाई, सुनक, सर्प, रोला, गंधानक, वृत्ता, उल्लाला, षट पद प्रकरण, प्रज्झटिका, धवल, आधाकुलक, कुंडलिया, अमृतध्वनि, झूलना, सोरठा, अभीर, सिंहावलोकिता, त्रिभंगी, दुर्मिला, मनहरण इत्यादि, छन्दों के लक्षण।

(४) पृ० २५ से पृ० ४० —तक—चतुर्थ प्रकाश, वर्ण वृत्ति वर्णन, छन्दों के नाम, ताली, शशी, प्रिया, पंचाल इत्यादि के लक्षण,

(५) पृ० ४१ से पृ० ५० तक पंचम प्रकाश २३ अक्षर तक का प्रस्तार। अंत में अपने आश्रय दाता का परिचय कवि ने दिया है।

No. 423. Pāṇḍava Yaśendu Chandrikā by Swarūpa Dāsa (Rasāla). Substance--Country-made paper. Leaves--197. Size—Lines per page--18. Extent--3,103 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance--New. Character--Nāgarī. Date of Composition--Samvat 1892 or A. D. 1835. Place of deposit--Paṇḍita Gaṇeśa Bihārī Miśra, Golāganja, Lucknow.

Beginning—श्रीगणेशायनमः अथ रसालकृत बोयनो पांडव येसेंदु चंद्रिका लिख्यते ॥ श्लोक ॥ गुणालंकारिणो वीरो ॥ धुनस्ता त्रचिधारिणो। भूभारहारिणो वंदे नर नारायण बुभो ॥ १ ॥ दोहा ॥ ध्यान कीरत वंदना, त्रिविध मंगलार्चन।

प्रथम अनुसटप वीच सोई भए त्रिया सुभ क्रनें ॥ २ नमो अनंत ब्रह्मांड के सुर भूपने भूप। पांडुव येसेंद चंद्रिका बरनत दास स्वरूप ॥ ३ ॥ स्वामी के पीछे रहै आदि होय उच्चार, नरनारायन सब्द कूं दास स्वरूप विचार ॥ ४ ॥ घनाक्षरी ॥ गरल तै भीम के सुज्वाला हू ते पांचहू कै ॥ द्रौपदी कै सभा अेा विराट वन तीन वार। किरीटी के अपछर कै श्राप तै युधिष्ठिर कूमा (इससे आगे पृष्ठ दे। और तीन नहीं हैं) पृष्ठ ४ ॥ कोसंबे पत्र है वरन्यो श्वरूप किरोटो के स्वारथो सहायवे कर हिये। १२ ॥ किं प्रयोजनं सवैयो ॥ पावैन करो गैान हरि दिस फेरियै पाव चेले न चेले ॥ जीभ द्वैत्ते करिवान हरि फिर दास स्वरूप हले न हलै तैन छोते लषो रूप विराट कैा फिरये नैन षिलै न षोले। श्रोन छेते हरि कोरति कुसुनि फिर ये श्रैान मिलै न मिलै ॥ १३ दोहा ॥ लाभ जिव का सुजस को पुनि परमारथ सांच विघ्न सांति परलोक कि सिद्धि प्रयोजन पांच ॥ १४ ॥ मेरे पांचों हैं मेरि जीवका हरि हरिदास कि तीन ग्रंथ कियें जास भी है पढ़ें गोंजनैा कैां बुद्धि सुकर्म प्राप्तो परमारथ ग्रंथ विषै विघ्न सांतिः परलोक सिद्धि है हो श्री हरि कैा हरिदासन कैा मिश्रत यसः साक लैान। करकंज निसा चंद्रन्यायेन ॥ १५ ॥ अष्टादस परब शुचि मंत्र प्रथम आदि पर्व शुचि ॥

End—श्लोक वैष्णवानां यथा शंभु देवानां गरुड़ध्वजः नदीनां च यथा गंगा सास्त्राणां भारती कथा ५० इदं भारत महाख्यानंमः पठे श्रणुयानरः अश्वमेधाधिकं पुण्यं लभते नात्र शंशयः ५१ इदं श्रुत्वा यथा शक्त्या ब्राह्मणान् भोजयेन्नरः हित्वासोध समूहं च ह्यंते विष्णु पदं व्रजेत्। ५२ दुहा मांहि जस सुनो किनां सुनैां जनजस सुनो जरूर अैसो श्रीमुष को बचन सुन्यैा निकट अरु दूरह ५३ ॥ फिर चाकर जस होन तै ठाकुर कैा अधिकार। दरसत यह विख्यात है मै का कहूं पुकार ५४ ॥ ताते कोनी चंद्रीका मेरी मति अनुमांन। भक्त संग अरु भक्ति कैा देहुं कपानिध दान ॥ पंगुल गुगो रोज जुत बनिक छुधातुर जीव। भय जुत बाल त्तोय अचष सुनत अनाथ सदीव। ५६ कवित—ज्ञान अेा विराग दोउ पायन विना हुं पंगुः भक्ति सारे तैहीं गुंग हो निहोरोगे। त्रिधाता परोगो कर्म बानिज वनिक हूं में भूषो दसधा को के ३ जन्म को विचारैागे। काल भीत बाल वुधि आतमा है अबला अेा अंघ तत्व अंजन विनाहु नैक धारैागे। अेक अंग के अनायः ताके विकै सुनै हाथः अा अंत में अनाथ नायः क्यैां विसारैागे ५७ छप्पैयः पंगु कुवज्या संमति गुंग जम जम लाज्ञु न गावत रोगी माधवदास वनितर लोचन ध्यावतः छुधित सुदामा विप्रः भीत जुत व्रज की भा।

Subject—भगवान की वंदन को कथा। २ और ३ पृष्ठ नहीं हैं।

४—ग्रन्थ की महिमा वर्णन (अष्टादश रूपी मंत्र) प्रथम आदि पर्व सूची। जन्मेजय से लेकर भरत नल और पांडु यादि की जन्म कथा, लाक्षागृह,

हिडंब, बकासुर बध, द्रौपदी स्वयंवर अर्ध राज्य पाना, बनवास, अर्जुन सुभद्रा विवाह खांडवदाह, धनुष, सभा का वर्णन इसमें २२७ अध्याय और ८९८४७ श्लोक अनुष्टुप हैं।

५—सभा सूची—नारद द्वारा सभा का वर्णन राजसूय यज्ञ का वर्णन, चारों दिशाओं की दिग्विजय, भीम द्वारा शिशुपाल बध, सभा में सुयोधन का अपमान होना, जुवा खेलना चीर हरण, ससुर से वर पाना, पुनः जुवा खेलना, और बनवास वर्णन, इसमें ७८ अध्याय हैं २५११ श्लोक हैं, इसी प्रकार वन पर्व की सूची उसके अध्याय और श्लोक संख्या का वर्णन।

६—विराट पर्व की सूची, अध्याय और श्लोक—संख्या वर्णन, उद्योग पर्व की सूची अध्याय और श्लोक-संख्या वर्णन, भीष्म पर्व की सूची अध्याय और श्लोक—संख्या—वर्णन, द्रोण पर्वत की सूची अध्याय और श्लोक संख्या वर्णन।

७—कर्ण पर्व की सूची। अध्याय और श्लोक—संख्या वर्णन। शल्य पर्व की सूची और अध्याय और श्लोक संख्या वर्णन।

८—सौप्तिक पर्व अध्याय और श्लोक संख्या वर्णन, स्त्री पर्व सूची अध्याय और श्लोक—संख्या—वर्णन, शांति अनुशासन पर्व सूची अध्याय और श्लोक संख्या का वर्णन, ९ अश्वमेध पर्व सूची अध्याय और श्लोकसंख्यावर्णन, व्यासाश्रम सूची अध्याय और श्लोक संख्या वर्णन, १०—मूसल पर्व सूची अध्याय और श्लोक संख्या वर्णन महाप्रस्थान, पर्व सूची अध्याय, और श्लोक संख्या वर्णन, स्वर्गारोहण सूची अध्याय और श्लोक संख्या वर्णन। ११—सम्पूर्ण महाभारत अर्थात् अष्टादश पर्वों के अध्याय और श्लोक संख्या वर्णन, अश्व सेना की संख्या सवार सहित वर्णन, १२—अष्टादश अक्षौहिणी सेना की संख्या और विवरण वर्णन। १३—१५—संस्कृत छंदों की नामावली, वर्णाष्टक छंद वर्णन, गुरु लघु का वर्णन, सम विषम छंद वर्णन, वृत्य छंद भेद वर्णन, वर्ण मात्रा और मात्रावर्ण का वर्णन। गणों का विचार और छंदों का वर्णन। १६—२२—साहित्य के छः अंग (छंदवृत्ति, २ नायिका, ३ अलंकार ४ रसशब्द, ५ पंचमारी तिमधा। ६ छन्यादि त्रिया) द्वैवाणी, संस्कृत, भाषा, विभक्ति, समास, वचन, लिंग वर्णन, काल वर्णन, काव्यदोष वर्णन, रस वर्णन, भाव, विभाव, अनुभाव, आलंबन, उद्दीपन आदि वर्णन, शृंगार रस की प्रधानता वर्णन, संयोग वियोग वर्णन, हाव भाव वर्णन। २३—अनुप्रास वर्णन, नायिका भेद वर्णन, स्वकीया, परकीया, सामान्या इनके अन्य भेद वर्णन। दर्शन, स्वप्न, चित्र, साक्षात, दर्शन, वर्णन, प्रकृति, राजसी, तामसी, तालसुर और ऋतुओं का वर्णन। २४ आठ नगन से करैउ छंद, आठ जगन से जीवक, आठ रगन से बोधक, २५ दोहा, चौपाई,

बैताल, त्रिया इंद छंद वर्णन, नपुंसक छंद सोरठा, पद्धरी, पदाकुलक नरायनी, कवित्त, घनाक्षरी आदि का वर्णन, २६—अलंकार सूची उपमा सूची, अष्ट लुप्तोपमा वर्णन। वर्णधर्म उदाहरण, स्वेत उदाहरण, २७—कृष्ण उदाहरण, रक्त उदाहरण, पीत उदाहरण। २८—आकृति वर्णन, २९—गुण आकृति उदाहरण ३०—गुण उदाहरण, अनन्य अलंकार, अनुज्ञा अलंकार वर्णन, भाव सावल्य वर्णन। ३१—सध्य अलंकार, व्याज स्तुति अलंकार, व्याज निन्दा, अलंकार, एकावलि अलंकार, सुसिधा अलंकार वर्णन, प्रहरयण अलंकार, प्रश्नोत्तर अलंकार, विभावना ॥ अलंकार। ३३—अनुगुना अलंकार, एकान्हेकी अलंकार वर्णन, ३४—काकोक्ति अलंकार वर्णन, ज्ञापकालंकार, ३६—दोषादोष वर्णन। ३७—समास लक्षण, गोटिका उदाहरण, वैदर्भी लक्षण उदाहरण ३८—लाट लक्षण उदाहरण लाटानुप्रास, छेकानुप्रास रस सूची—शत्रु मित्र स्थायी स्वामी वर्णन। ३९—४१—शांतिक अंग वर्णन। ४३ तक शब्द से शृंगार, रूप से शृंगार रस से शृंगार, गंध से शृंगार वर्णन, महाभारत आरंभ—४४ से ब्रह्म, अभि, चन्द्र, बुध, पुरुरवा, नहुष, ययाति, पुरु, रोधाश्व, कन्वेपु, अनावृष्टि, मतिनार, तकु, इलिन, दुबंधु, भर्क्क, भूमन्य, सुहोत्र, हस्तिर, अजमिठ, शक्ष, संवर्ण, कुरु, जन्मेजय, धृतराष्ट्र, देवापी, शांतनु, देवव्रत, विचित्रवीर्य, चित्रांगद पांडु; वाल्हिक, विदुर पांडव, कौरव आदि की उत्पत्ति क्रम से कथा सहित वर्णन। ४५ तक द्रोण की उत्पत्ति से लेकर भीष्म तक आने की कथा वर्णन।

४६—से ४९ कौरव पांडव का विद्यारंभ कथा का वर्णन, कर्ण का वन में मुनि से वर और श्राप पाने का वर्णन और विद्या में निपुण होने पर परीक्षा के दिन तक की कथा का वर्णन, अर्जुन के यश से सुयोधन को ईर्षा द्वेष होना, और कर्ण का अर्जुन से लड़ने को तैयार होना परन्तु दासीपुत्र होने से अधिकारहीन बताना और सुयोधन द्वारा अंग देश का राजा बनाने का वर्णन।

५०—धृष्ट प्रद्युम्न और कृष्णा की उत्पत्ति कथा वर्णन। द्रुपद और कौरवों का युद्ध वर्णन, भीम को सुयोधन द्वारा विष दिए जाने का वर्णन।

५१—सुयोधन का पिता से राज्य अधिकार पाने के लिये कहना और पांडवों का वारणाक्ष्य उत्सव देखने के बहाने भेजने का षड्यंत्र रचना। लाक्षागृह का निर्माण होना और विदुर द्वारा युधिष्ठिर का सचेत होना वर्णन।

५२—भीलनी और उसके पांचो पुत्रों का लाक्षागृह में जलने का वर्णन।

५३—हिडिंब वध और हिडिंबा के साथ भीम का ब्याह होना वर्णन।

५४—पांडवों का द्रुपद देश जाना, द्रौपदी स्वयंवर वर्णन, द्रौपदी का रूप वर्णन, अर्जुन द्वारा मीन वेधना वर्णन।

५५—सहदेव का माता से वस्तु प्राप्ति वर्णन। और माता का पांचों भाइयों के भोग की आज्ञा, युधिष्ठिर का यह जान धर्म संकट में पड़ना, व्यास द्वारा, पूर्व श्राप का वर्णन और द्रौपदी का विवाह वर्णन, सुयोधन का पांडवों को जीवित देख शोक बढ़ना वर्णन, और पांडवों के नाश करने का उपाय सोचना।

५६—विदुर का धृतराष्ट्र से पांडवों को आधा राज्य देने के लिये कहना, पांडवों को बुलाकर आधा राज्य देना, और कुछ दिन युधिष्ठिर का राज्य करना, नारद का आना और युधिष्ठिर को आशीर्वाद देना।

५७—द्रौपदी के भोगने का नियम वर्णन, एक ब्राह्मण का संकट में पड़ना, अर्जुन का शस्त्र लेने जाने के कारण नियम भंग होना।

५८—अर्जुन का वनगमन, उलोपी के साथ विवाह वर्णन, उससे पुत्र बभ्रूवाहन का होना, गिरि पर यदुवंशियों का मिलना।

५९—और अर्जुन का सुभद्रा हरण—वर्णन बलभद्र का क्रोध करना, और कौरवों का नाश करने का विचार करना, तथा श्रीकृष्ण द्वारा समझाना और दहेज देने के लिये कहना।

६०—खांडव में जमुना तट विहार श्रीकृष्ण और अर्जुन का वर्णन, अग्नि का ब्राह्मण भेष में आना और खांडव भस्म करने के लिये अपना जन्म होने का वर्णन, खांडव वन दहन और मय दैत्य की रक्षा, मय द्वारा सभा भवन निर्माण करना भीम को गदा देना और देवदत्त को शंख देने का वर्णन युधिष्ठिर से सब समाचार कहना, द्रौपदी से पांच पुत्रों की उत्पत्ति वर्णन सुभद्रा से अभिमन्यु का होना।

६१—सभामंडप की शोभा और विचित्रता वर्णन, अर्जुन आदि का दिग्विजय करके आना, श्रीकृष्ण को निमंत्रित करना, और जरासिंध का विजय न कर सकने का वर्णन, श्रीकृष्ण और भीम का जरासिंध से युद्ध करने जाना और भीम द्वारा जरासिंध वध तथा

६२—उसके पुत्र सहदेव को श्रीकृष्ण द्वारा राज्य देने का वर्णन, यज्ञकार्य भार सौंपने का वर्णन सुयोधन को भंडार कार्य सौंपने का वर्णन। यज्ञ समाप्त होने पर श्रीकृष्ण की पूजा पर शिशुपाल का क्रोध और कृष्ण द्वारा वध होना।

६३—सुयोधन का मय दानव की सभा देखने आने और भ्रम होने का वर्णन, नकुल और द्रौपदी के हंसने से अपमान समझ क्रोधित होने का वर्णन, सुयोधन का माता पिता से पांडवों के वैभव का वर्णन।

६४—पांडवों के समान वैभव पाने की सुयोधन की इच्छा का वर्णन, धृतराष्ट्र द्वारा विरोध न करने के लिये समझाना और सुयोधन का अपने पिता से अपना अपमान वर्णन तथा मरने के लिये उद्यत होना।

६५—शकुनि का जूआ द्वारा संपतिहरण करने का विचार वर्णन, युधिष्ठिर को जुआ के लिए बुलाना और शकुनि द्वारा संपत्ति, चारो भाई और स्वयं युधिष्ठिर तथा द्रौपदी को जीतना वर्णन।

६६—सभा में द्रौपदी को सुयोधन का बुलाना, द्रौपदी के सभासदों से प्रश्न, दुःशासन का द्रौपदी को सभा में लाना और द्रौपदी का पुनः सभासदों से प्रश्न करना और उत्तर न पाना सुयोधन का जंघा दिखाना।

६७— दुःशासन का चीर खींचना द्रौपदी का ईश्वर स्तुति करना।

६८—गांधारी का धृतराष्ट्र को समझाना भीम की प्रतिज्ञा का वर्णन, धृतराष्ट्र का द्रौपदी को वर देना द्रौपदी का पांचों पतियों सहित दासता छूटने और सशस्त्र घर जाने का वरदान मांगना, धृतराष्ट्र का वरदान देना, सुयोधन का पिता से पुनः जूआ खेलने की आज्ञा मांगना उसमें जो हारे वह १२ वर्ष बनवास भोगे और एक मास अज्ञात वास।

६९—अज्ञातवास में यदि अवधि से पहले जान लिये गये तो फिर १२ वर्ष बनवास होने का वर्णन, जूआ खेलना और फिर युधिष्ठिर का हारना तथा द्रौपदी सहित वनवास वर्णन। कुंती का मिलाप वर्णन, विदुर का सांत्वना देना वर्णन।

७०—सूर्य द्वारा यान पाने का वर्णन, वनवास की दशा वर्णन, श्री कृष्ण का वन में पांडवों के पास जाना, सुयोधन का दुर्वासा को पांडवों के पास श्राप देने के लिये भेजना, ८८ हजार ऋषियों सहित दुर्वासा ने युधिष्ठिर से भोजन मांगा। तब बड़े संकट में श्री कृष्ण को स्मरण किया और उनके आने से सब ऋषि गण तृप्त हो आशीर्वाद देकर चले गये।

७२—युधिष्ठिर को शस्त्रों के लिये तप करना वर्णन। कठिन तपस्या से इन्द्रादि देव प्रसन्न हुए और अनेक प्रकार के अस्त्र देने का वर्णन शिव का पांडवों की परीक्षा लेने का वर्णन, अर्जुन का शिव से युद्ध और पशुपति अस्त्र लाभ करने का वर्णन, अर्जुन का इन्द्रलोक में अस्त्र और संगीत सीखने का वर्णन।

७३—इन्द्र की आज्ञा से सिंधु में वालेसुर रिपु से युद्ध कर अर्जुन का आना और मुकुट तथा अस्त्र शस्त्रादि का प्राप्त करना वर्णन।

७४—उर्वसी को अर्जुन के इन्द्र द्वारा भेजना वर्णन।

७५—सुयोधन का सेना सहित पांडवों को मारने के लिये आना। इन्द्र का चित्रकेतु को अर्जुन की सहायता के लिए भेजना चित्रकेतु का कर्ण से युद्ध और सुयोधन का बंधना।

७६—भीमादि द्वारा उसको छुड़ा देना सुयोधन का यज्ञ करना।

७७—पांचों पांडवों का यज्ञ में जाना द्रौपदी-हरण वर्णन, जयद्रथ की तपस्या वर्णन शिव का अर्जुन छोड़ चारो भाइयों को जीतने का वर देना। वन में ब्राह्मण की पुकार सुनना और हिरन के पीछे पांडवों का दूर निकल जाना तथा प्यास से व्याकुल हो।

७८—एक एक का पानी लेने के लिये जाना अंत में युधिष्ठिर का जाना और चारों भाइयों को मृतक देख संताप। यक्ष का धर्मराज से प्रश्न करना, युधिष्ठिर का यक्ष को यथार्थ उत्तर देना, यक्ष का प्रसन्न होकर एक भाई को जिलाने के लिये कहना धर्मराज ने नकुल को जिलाने के लिये कहा अंत में सबों का जीवित होना वर्णन। यक्ष से अज्ञातवास निर्विघ्न समाप्त होने का वरदान वर्णन।

७९—शमी में अपने वस्त्र बांध कर राजा विराट के यहां पांडवों का द्रौपदी सहित अज्ञातवास करना भीम का जीमूत मल्ल से कुश्ती होना, और जीतना। कीचक का सैरंध्री (द्रौपदी पर आसक्त होना।

८०—कीचक की रति याचना, और द्रौपदी द्वारा अपमानित होने पर भी कीचक का अपनी बहिन से सैरंध्री को उसके पास भेजने को कहना। रानी [illegible] द्रौपदी के भाई से मदिरा लाने के बहाने से भेजना

८१—द्रौपदी का उसकी नीच वृत्ति देखकर भागना तथा कीचक का लात मारना वर्णन, द्रौपदी का सब समाचार भीम से कहना। भीम ने द्रौपदी से उसे नृत्यगृह में भेजने का वर्णन वहीं भीम द्वारा कीचक का वध करना।

८४—सुयोधन के दूतों का आना, परन्तु पता न पाने पर निराश हो लैाट आना

८५-८७—सुयोधन का राजा विराट से युद्ध वर्णन।

८८—उत्तरा का अर्जुन के दसों नामों का पूछना और अर्जुन का उत्तर।

८९—अर्जुन का उत्तरा से अज्ञात की कथा का वर्णन करना।

९०—पांडवों का पराक्रम वर्णन, और विराट को उनके

९१—अज्ञात वास का पता लग जाना, राजा विराट द्वारा

९२—पांडवों का सत्कार वर्णन, राजा विराट का उत्तरा का विवाह करने का प्रस्ताव करना।

९३ से ९७-अभिमन्यु का उत्तरा के साथ विवाह। राजा विराट और कृष्ण की सम्मति से धृतराष्ट्र के पास अपना राज्य पाने के लिये पुरोहित का भेजना। भीष्म, द्रोण, विदुर, आदि का सुयोधन को समझाना, सुयोधन का हठ वर्णन।

९८-१०० अर्जुन और सुयोधन का भी कृष्ण को निमंत्रण देने के लिए जाना कृष्ण का प्रथम अर्जुन से मिलना वर्णन, अंत में श्री कृष्ण ने एक तरफ सेना और दूसरी तरफ स्वयं निःशस्त्र रख कहा जिसको जो इच्छा हो ले लीजिए। सुयोधन और अर्जुन ने श्रीकृष्ण को अपना सहायक बनाया।

१०१—१०२ पांडवों का पांच ग्राम मांगना, पर दुर्योधन का न देना, भीष्म द्रोण आदि का समझाना और विदुर का धृतराष्ट्र से राजनीति वर्णन।

१०३—धृतराष्ट्र और गांधारी का सुयोधन को समझाना,

१०४—श्रीकृष्ण का संधि के लिए जाना।

१०५—द्रौपदी का श्रीकृष्ण को सुयोधन के नीच कर्मों का स्मरण दिलाते हुए बदला लेने के लिए आग्रह करना।

१०६-१०९—श्रीकृष्ण का धृतराष्ट्र की सभा में जाकर सुयोधन और धृतराष्ट्र को बार बार समझाना; अंत में निराश होकर लौट आना। श्रीकृष्ण का कर्ण को पांडव पक्ष लेने के लिये कहना। कर्ण का क्षमा मांगना।

११०—कुंती का कर्ण से पांडव पक्ष लेने का प्रस्ताव वर्णन।

१११—कौरव पांडवों का विरोध वर्णन। कुरुक्षेत्र में दोनों ओर की ग्यारह अक्षोहणी कौरव दल और सात अक्षोहिणी पांडव दल का इकट्ठा होना वर्णन।

११२—महारथी लक्षण, पांडवों के महारथियों के नाम वर्णन।

११३—सुयोधन के महारथियों के नाम वर्णन।

११४—अर्जुन का बीच में रथ खड़ा करना और सबों को अपना बंधु बांधव ही समझ कर धनुष बाण फेंक देना।

११५—श्रीकृष्ण का जीव शरीर का संबंध और आध्यात्मिक ज्ञानोपदेश वर्णन। पुनः भीम के विष, लाक्षाग्रह दाहन, द्रौपदी के अपमान, आदि का स्मरण करा के अर्जुन को युद्ध के लिए तैयार करना। युधिष्ठिर का भीष्म और द्रोण के पास जाना और आशीर्वाद पाना, और भीष्म तथा द्रोण के वध का उपाय जानना।

११६—दो दिन घोर युद्ध होने पर तीसरे दिन का वर्णन

११७—श्रीकृष्ण का भीष्म द्वारा परिघ शस्त्र पकड़ा देना।

११९—इसके पश्चात ९ दिन तक घोर युद्ध होने का वर्णन जिसमें अर्जुन और विराट के तीन पुत्रों का मरना तथा एक एक दिवस में दस दस हज़ार

सवारों का भोष्म द्वारा मारा जाना वर्णन। दसवें दिन शिखंडो को आगे कर अर्जुन ने युद्ध किया जिसमें भोष्म ने धनुष वाण छोड़ दिया और अर्जुन के वाणों से विद्ध हो सरशय्या पर पड़ना।

१२०—भोष्म का पानी मांगना और अर्जुन द्वारा वाण के आघात से पृथ्वी से जल निकालना वर्णन।

१२१—द्रोण का सेनापति होना वर्णन।

१२२—दो दिन द्रोण का घोर युद्ध वर्णन।

१२३—तीसरे दिन चक्र व्यूह की रचना का वर्णन

१२४—अभिमन्यु की प्रशंसा वर्णन

१२५—दुःसासन का मूर्छित होना, लक्ष्मण को मारना

१२६—अभिमन्यु वध और युधिष्ठिर का विलाप।

१२७—अर्जुन का संतप्तकों को जीत कर आना।

१२८ और अभिमन्यु के मरने का वृतान्त वर्णन।

१२९—अर्जुन का जयद्रथ वध करने का प्रण वर्णन सुयोधन का द्रोण से जयद्रथ की रक्षा करने का कहना।

१३०-१३५—अर्जुन का युद्ध प्रारंभ, द्रोण की गुरु परिक्रमा और प्रणाम कर अर्जुन का आगे बढ़ना

१३६-१३८—अर्जुन के वाणों से सेना का संहार वर्णन,

१३९-१४०—कृतवर्मा, दुःशासन आदि से युद्ध वर्णन,

१४१-१४२—सात्वकी भीम युद्ध वर्णन, भूरिश्रवा,

१४३—दुर्योधन दुःसासन, कृपाचार्य आदि का भागना वर्णन।

१४४—सुयोधन का द्रोण से कटु वचन कहकर जयद्रथ की रक्षा करने के लिये कहना।

१४५-१५०—द्रोण का युद्ध पराक्रम वर्णन

१५१—कर्ण का युद्ध वर्णन।

१५२—द्रुपद और विराट का वध वर्णन,

१५३—धृष्टद्युम्न का द्रोण से युद्ध वर्णन।

१५४—धृष्टकेतु और सहदेव का द्रोण से युद्ध वर्णन।

१५६—श्रीकृष्ण युधिष्ठिर से अश्वत्थामा के मरने का समाचार द्रोण से कहने के लिए आग्रह करना, युधिष्ठिर का झूठ बोलने पर राजी न होना। सबों के कहने पर युधिष्ठिर द्वारा अश्वत्थामा का मरण सुन द्रोण ने शस्त्र छोड़ दिए और द्रुपद ने उनका शिर छेद दिया। द्रोण मरण वर्णन।

१५७—अश्वत्थामा का युद्ध वर्णन, कर्ण का सेनापतित्व वर्णन।

१५८—१५९—भीम और कर्ण का युद्ध वर्णन।

१६०—भीम द्वारा दुःशासन का वध वर्णन।

१६१—१६८—कर्ण अर्जुन युद्ध वर्णन।

१६९—कर्ण का रथ पृथ्वी में धंस जाने का वर्णन।

१७०—१७१—कर्णवध वर्णन।

१७२—शल्य का सेनापतित्व वर्णन।

१७४ –शल्य वध।

१७५—१८०—अश्वत्थामा युद्ध, सुयोधन युद्ध और वध।

१८१—अश्वत्थामा को पकड़ लेना।

१८२—धृतराष्ट्र और गांधारी का युद्ध स्थल में आना, धृतराष्ट्र, गांधारी का युधिष्ठिर अर्जुन आदि के संवाद तथा गांधारी का विलाप वर्णन।

१८३—धृतराष्ट्र का भीम से मिलने की इच्छा करना और श्रीकृष्ण का भीम से न मिला कर धातु मूर्ति से मिलाना जिसे धृतराष्ट्र का चूर चूर कर देना।

१८४—युधिष्ठिर का सब का अंत्येष्ट कर्म करना। युधिष्ठिर का विलाप वर्णन।

१८५—युधिष्ठिर को भीष्म के पास लाना। भीष्म का युधिष्ठिर को ज्ञानोपदेश वर्णन, भीष्म का मरण वर्णन।

१८६—भीष्म का दाह कर्म करने का वर्णन, युधिष्ठिर का राज्य छत्र धारण करना। परीक्षित का जन्म वर्णन।

१८७—युधिष्ठिर के सुराज्य की कथा वर्णन।

१८८—१९०—कुंती, द्रौपदी, अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव और युधिष्ठिर का अपनी पूर्व इच्छा का वर्णन करना।

१९१—१९५—युधिष्ठिर का सुराज्य वर्णन, परीक्षित को राज्य देना, पांचों भाइयों और

१९६—द्रौपदी का हिमालय जाना वर्णन, चारों भाइयों सहित द्रौपदी का हिमालय में खपना और युधिष्ठिर का स्वर्ग जाना वर्णन।

१९७—ग्रन्थ की प्रशंसा वर्णन।

No. 424. Sākhī Dasa Pātaśāha kī by Swarūpa Dāsa of Punjāb? Substance--Country-made paper. Leaves--508. Size--13½ × 10½ inches. Lines per page--36. Extent--15,000 Anushṭup Ślokas. Appearance--Good. Written in Prose and Verse. Character--Gurumukhī. Date of manuscript--Samvat 1897 or A. D. 1890. Place of deposit--Sardāra Budhela Siṃha, Mohalla Gudadī Bāzār (Baharāich).

Beginning—ॐ सत गुरुप्रसाद ॥

दोहरा ॥ श्री सत गुरु प्रकास ॥ साखी जनम जग पावत नित नीत । महिमा प्रकास तिह नाम पर लिख पोथी कोनो मोत । १ नमो नमो परमातमा सतगुरु कृपा निधान । अघ दंडन मंडन भगत वंदन जगत महान । अथ राज जनक प्रसंग अनिक जावन नरक सों मुकाय सुरग पठवत भये । पर वचन भगत कीया प्रथम चरन कलुहरि भगत पायो पार होइ । सोरठा ॥ कोटि छिन वे जोव मुकताये नर को जनक । वर वचन भगत तेहि कीन तिहि ते हरि गुरु वपुधरा ॥

End—दोहरा-हे गुरु कृपानिधान दास सरूप विनती करै । गुरु चरनन मन ठानि हृदय नाम हर हर हरै ॥ ७१ ॥ अब दाजै मोहि दान जहि विधि वलि बामन कह्यो । हृदै बसो भगवान जेहि विधि वलि द्वारे रह्यो ॥ ७२ साखी सम्पूरण भई दसो पातसाह को पढ़न्ते सुनन्ते माख मुकति लहन्ते । श्री वाह गुरु मुख करो उचार । होइ दयाल कर लहु उधार । पोथी संपूरन संवत १८९७ विक्रमी असोज सुदी ९ ॥ इति ॥

Subject—साखी पहले मुहल्ले को गुरु नानक का वर्णन पृ० १ से १७९ तक । साखी दूसरे महल्ले को गुरु अंगद का वर्णन पृ० १८० से २०४ तक । साखी तीसरे महल्ले का अमरदास गुरु का वर्णन पृ० २०५—२५६ । साखी चैाथे मुहल्ले का गुरु राम का वर्णन पृ० २५७—२६५ तक । साखी पांचवे मोहल्ले की गुरु अर्जुन का वर्णन पृ० २६६-३०१ । शाखी छटवें मुहल्ले को गुरु हर गोविन्द का वर्णन पृ० ३०२—३४४ तक । साखी सातवें महल्ले का गुरु हरराम का वर्णन ३४५—३७८ । साखी गुरु हरिकृष्ण जी की आठवें महल्ल को ३७९—३८८ तक । नवां मुहल्ला गुरु तेग बहादुर का वर्णन पृष्ठ ३८९—४२७ तक । दसवां मुहल्ला गुरु गोविन्द सिंह जी का वर्णन पृ० ४२८ से ५०८ तक । इति ।

No. 425. Sāmudrika by Tejanātha of Sapahan Ganwañ. Substance—Country-made paper. Leaves—34. Lines per page—12. Extent—264 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old.

Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1892 or A. D. 1835. Place of deposit--Ṭhakura Maheśa Siṃha Village Kohalī Bechai Siṃha kā Purawā, Post Office Kesarganja, District Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ सामुद्रिक लिष्यते ॥ शेरसाह बहु दिसि सुलताना अनूप ताहि अनुमान। शगड़ी देश विप्रजन ठाऊ। तेजनाथ बस सपहा गाऊं। भल नहिं अपन अस्तु करई। लोग हंसे निज पुन्यो हरई। गुन निर्गुन सब लोग कि भाषा। जस अपजस अपने ही राषा। दोहा भलमानुस पै जनिहि जस गुआह हमार। साधु सकल गोविंद कह दुर्गन गुन षयकार॥ तेजनाथ सामुद्रिक जानि। आश कर्ण ते कहा वषानी। जेहि जाने सबके सुष होई। सर्व जानि मानै सब कोई। लक्षण सब जहजस देष। नर नारी केरा करब विसेष। जानत कहि न ग्रंथ कर भेऊ। कहै तब जानै सब कोऊ। कहबे मंह भल बुझन हारा। अश मानुस बिरलै संसारा। दो० केउ केउ बात विचक्षण केउ के ग्रंथ पहिचान। गाल गोल रहत षन एक ग्रंथै रहै निदान॥

End—जेहि कामिनि मुष देत सुवेषा। विषम मोट पुनि विररै लेषा। संतत दुःख अरु सुख न ताके। लट्टु समान स्वेत दंत सुभ वाके। लंव श्रोठ पुनि होइ रोवारा। कामिनि निश्चै षाहि भतारा। पाकरि अरुनि कोट सम लेषा। चिकन रोम रहित शुभ देषा। पातर अरुन शुभग मनिआरा। से कामनि स्वामी सुखसारा। नक अंगार लामि हो याके कोपिनि कामनि कहिहु हु ताके। नाक अगार जिस लघु होई। तेहि पर दासी कहि हो सोई। चिपटी नाक विधवा तृष देषी। सुवा टोंट सुभदायक दोषी। ना अति छोटी ना वड़ि नासा। सम सुंदरि सोभी सुषवासा। पीत नयन तृअकज पिआरी। शोल रहित विधवा हो नारी। करंजी आंषि विविचंचल नारी। निश्चय कुलटा कहेउ विचारी। जाके हंसत गंडा हो षाला। सो स्वामी घर बसै न वाला। दुइज चांद सम भोहै जाके। सम नासा अंगुरी लघु ताके। कंत प्रीति तेहि ते अधिकाई। दिन दिन देह सपय अधिकई। इति सामुद्रिक सम्पूर्णम् लिखतं प्रताप सिंह संवत १८९२ ॥ शुभमस्तु ॥

Subject—सामुद्रिक में हस्त रेषा, पद रेखा नेत्र नाक सिर वाल, वाल आदि के द्वारा शुभ अशुभ फल वर्णन किए गये हैं।

No. 426. Kūṭa Kavitta by Thākura. Substance—Country-made paper. Leaves—6. Size—6 × 5 inches. Lines per page—13. Extent—40 Anushṭup Ślokas. Appear-

ance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1842 or A. D. 1785. Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Simha Kānthā, Post Office Kāṇtha, District Unāo.

Beginning—कूट कवित्त लिख्यते—तथा

हरि हित नामै ये वचन सुनि मोहन के दस रस भूषन संवारि चलु गेहरो। सुर अरि गुरु वर वाहन के अरि अरि तापत पिता कें रिपु दाहत है टेहरो॥ कैसे मन कैसे लगै अजहू यो मानतु प्यारो बेगिहो मिधारै की करै नानाम्र नेहरी। दई सेंवारी होतो वाम को कुमारी आज कूं सो छवि वान वेवर देहरो॥ १ अजैां चलु प्यारी तोहि तातें बोलैं खगपति पतिय कई वियोग मैान तेरे में जु आई री। दादुर के रिपु रिपु ताको पति वाको तात वाको अरि कारने निहोरिहैं पठाई री। रवि सुत रिपु ताके पतिय गोपाल लाल ताके सुत सुताको घरनि होति माई री॥ कब कोहैं आई मोहि दीजिये विराट सुत तरो मुख इंदु रिपु जोहत कन्हाई री॥ २ सवैया—अंबु तनै हित नेक रह्यौ तबतें तुम्हरे ढिग बैठी कुमारो। वारुनो औन पितु हग जाम गई निसि मैान फिरो अभिसारो। तो बसु भूप दिसान दई षग पाधिप की जननो करि हारी। जोहत ऐन सरोरुह नैन चलै मघवा रिपु जाहु तिहारो॥ ३

End—पास अहार जो सिंह मरै कबहूं न मरै खर के वह खाये। कागद धूप दिखाये गरै कबहूं न गलै जल मांहि सड़ाये। निसि आये से चन्द मलीन लगै कबहूं न मलीन लगै दिन आये। मानुष सुधारस पीये मरै कबहूं न मरै विष के वह खाये॥ मोन मरै जल के परसे कबहूं न मरै वह पावक लाये। फूल जू फूलै सिना महं कंज कबै नहिं फूलै तड़ाग लगाये। बोलत सर्द में कोकिल है कबहूं नहिं बोलै बसंत के आये। दोप प्रकास करै दिन में कबहूं न प्रकास करै निसि आये। ८ दादुर ग्रीषम बोलै कहूं नहिं बोलत हैं वरषा रितु आये। भानुहि राहु गहै कबहूं नहिं घेरत है निज अवसर पाये। भोजन खाये ते जोव मरै कबहूं न मरै बिन अन्नहिं खाये। ठाकुर चंद पताल उवै कबहूं न उवै जु अकासहि ठाये॥ ९

इति

Subject—इस पुस्तक में दृष्टि कूटक ९ कवित्त और सवैये हैं। जिनमें उलटी बात कही हुई जान पड़ती है जैसे—मोन मरै जल के परसे कबहूं न मरै वह पावक लाये।

No. 427. Dalela Prakāśa by Kavithāna Rāma of Naisawāra Daundia Kheda. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—12 × 6 inches. Lines per page—60.

Extent--1050 Anushṭup Ślokas. Appearance--Old. Character--Nāgarī. Date of Composition--Samvat 1848 or A. D. 1790. Paṇḍita Bipina Bihāri Miśra, Brajarāja Pustakālaya, Village Gandhaulī, Post Office Sidhaulī, District Sitapur.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ छप्पै ॥ जै लंबोदर शंभु सुवन अंभोरुह लोचन। चर्चित चंदन चन्द्र माल वंदन रुचि रोचन ॥ मुष मंडाल गंडाल गंड मंडित श्रुति कुंडल। वृन्दारक वर वृन्द चरन वंदत आषंडल। वर अभय गदा अंकुश धरन विघ्न हरन मंगल करन। कवि थान नवासय सिद्धिवर एक दंत जै तुव सरन ॥ सरस्वती सुर मंडल मढ़त है आसन कवल अंग अंवर धवल मुष चंद से। धवल रंग नवल चढ़त है। ऐसी मातु भारती की आरती करत थान जाको जस विधि ऐसे पंडित पढ़त है। ताकी दया दीठि लाष पाषर निराषर के मुष ते मधुर मंजु आषर कढ़त है। गुरु देव छप्पै ॥ श्री गणेश गुरु देव ब्रह्म गुरु देव विधाता। रमा रमन गुरु देव देव गुरु शंकर दाता। भुक्ति मुक्ति गुण ज्ञान दान नर अंतरजामी। भव वंधन ते मुक्ति करन गुरु त्रिभुवन स्वामी। चरणारविंद रजशीश धरि नयन भरि जोरे करन ॥ कवि थान नमित धरि भूमि सिर जै जै जै गुरु तुव सरन ॥

End—कमल बद्ध दोहा—

वार भार धर सार कर हर
हर रर बर चार। पार तार जर
मार सर बर घर डर तर डार

अथ चौकी बद्ध।

न मान राषत दुग्रन को लै हाथ
कठिन कृपान न पाकृतमके
पंथ धरत दुलेल भूप सुजान।
न जासु गुन गन थाह पावत कहत
कवि यह बान न थाइ जाकी
मिलत शोभा शील मुष सनमानि॥
इति श्री कवि थान राम विरचिते
दलेल प्रकासे चित्र काव्य वर्णनो
नाम ११ दसो उल्लासः

Subject—श्रृंगार रस नायक नायका भेद व चित्र काव्य वर्णन।

No. 428. Samara Sāra Bhāsha, by Tīrtha Rāja. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—8½ × 4½ inches. Lines per page—20. Extent—560 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṃvat 1807 or A. D. 1750. Date of manuscript—Samvat 1880 or A. D. 1823. Place of deposit—Paṇḍita Durgā Prasādajū Jigania, Pargana Hajoorpore, Police Station Hajoorpur, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः। अथ समर सार विजयते लिख्यते॥ श्री गणपति पद कमल बिनु तू छिन छिन पद छीन। रंगो श्याम रंग में फिरत मोमन चुंबक दीन।

छप्पय॥ जय जय जय गुण रूप भूप पद कुल दल मंडन। भक्त हेतु तन धरत दोह दानव बल खंडन। करि करि विनय अनन्त सत्त चिन्तित उर धरि धरि। ताको सब व्रज नाम रूप पोवत दग भरि भरि। कहि राज कैान व्रजराज बिन भव बाधा संकट हरन। जय दीन बंधु गिरवर धरन राधा-वर बन्दैां चरन॥ पैरत निशि दिन विषय नद मो मन मोनन हाथ। प्रेम डोर वंशी बिना क्यों पावैं व्रजनाथ। मो करनो करि मोन मन तुम हर नोरद रूप। बरसत सब पर एक रस गिरवर सर वर कूप।

End—अथ आशीर्वाद॥ जैालैां काम तन को उदारता बखानै कवि जैा लैां मन सागर कीरति सुहाति है। जो लैां पंचतत्त्व है बिधाता के अखिल धन जैा लैां कमला को कला कलि में अघाति है॥ जो लैां बसुधा में धाम धाम राम राम रहें जैा लैां बाम बाम अंग भव के निभाति है। तो लैां श्री अचल सिंह धरणी में राज करै धरम धुरंधर पुरंदर को नाति है। ५२

इति श्री महाराज कुमार सिंहाज्ञया तीरथराज कृते समर विजये छाया पुरुष दर्शन नाम सप्तम प्रकाशः समाप्तः शुभमस्तु॥

सोरठा॥ श्री अरजुन नृप हेतु समर विजय भाषा लिखा।
वेला ग्राम निकेत पढ़ै वीर सुख सो लहै॥

दोहा॥ सर युग नग विधु मित शकै सावन वदि शनि रोज।
रामदीन भाषा लिख्यैा सो नीकै नृप तीज॥

Subject—प्रार्थना—राजवंश वर्णन पृ० १—३ तक। जयाजय वर्णन पृ० ४—७ तक। पंच स्वर वर्णन पृष्ट ८ से १० तक। भूवल साधना वर्णन पृ० ११—

१६। अष्टदल चक्र, प्रश्न विचार, जुवा विचार वर्णन पृ० १७—१९। कोट चक्र वर्णन पृ० २०—२३ तक। सर्वतो भद्र चक्र, सूर्य चन्द्र कला, जल छाया पुरुष विचार, आशीर्वाद पृ० २४ से २८ तक। इति।

No. 429(*a*). Gomata Sāra kī Samak Jnāna Chandrikā Nāma Tīkā, by Todara Mala of Sawāyī Jaipura. Substance—Country-made paper. Leaves—1,904. Size—13½ × 6½ inches. Lines per page—10. Extent—53,312 Anushṭup ślokas. Character—Nāgarī. Date of Composition—1818 Samvat or A.D. 1761. Date of manuscript—1826 Samvat or A.D. 1769. Place of deposit—Śri Jaina Mandira (Barā), Bārābankī (Oudh).

Beginning—श्री जिनायनमः। अथ श्री गोमठसार को समग्ज्ञान चंद्रिका नाम भाषा टीका लिप्यते ॥ दोहा ॥

वंदौं ज्ञानानंद कर। नेमिचंद गुनकंद ॥ माधव वंदित विमल पद। पुण्य पयोनिधिनंद ॥ १ ॥ दोष-दहन गुनगहन घन। अरि करि हरि अरहंत। स्वामि भूति रमनोर मन। जग नायक जयवंत ॥ २ ॥ सिद्ध शुद्ध साधित सहज। सुरस सुधारस धार ॥ समय सार शिव सर्वगत। नमत होहु सुषकार ॥ ३ ॥ जिन वानी विविध विध। वर्नत विश्व प्रमान ॥ ख्यात पद मुद्रित अहित हर। करहु सकल कल्यान ॥ ४ ॥ मैन मौन गन जैन जन। ग्यान ध्यान धन लीन ॥ मैन मान विनि दांन घन। रान हीन तन छीन ॥ ५ ॥ यह चित्रालंकार युक्त है। इह विधि मंगल करन तैं। सब विधि मंगल होत ॥ होत उदंगल दूरि सब। तम ज्यों भानु उद्योत ॥ ६ ॥ अथ मंगलाचरण कर श्री मद्गोमट्टसार द्वितीयनाम पंच संग्रह ग्रंथ ताकी देश भाषा मय टीका करने का उद्यम करो हौं। सो यह ग्रंथ समुद्र तैं असा है। जो सातिशय बुद्धिवल संयुक्त जीवनी करि भी जाका अवगाहन होना दुर्लभ है। और मैं मन्द बुद्धि हूं ॥ × × × ×

End—सवैया—अरहंत सिद्ध श्रुरि उपाध्याय साधु सर्व अर्थ के प्रकासी मंगलीक उपकारी है। तिन कौ स्वरूप जानि राग तैं भई है भक्ति तातैं काम कौंन मायस्तुत कौं उचारो है ॥ धन्य धन्य तुम तुम हो तें सब काज भयो कर जोर वारंवार वंदना हमारो है। मंगल कल्यान सुष ऐसो अब चाहत हौं हौंहु मेरो ऐसो दश्य जैसो तुम धारो है ॥ ६३ ॥ इति श्री महत् लब्धिसार वा क्षपणासार सहित गोमठ सार शास्त्र को समग्ज्ञान चन्द्रिका नामा भाषा टीका संपूर्ण ॥ १ ॥ वसु संवत फुनि एक धर युग रस वरस प्रमान। तिथि पड़िवा मंद वार दिन लिख्यो ग्रंथ हित आन ॥ भग्न प्रष्टोकरो ग्रोवा वधो दृष्टि रधो मुखं। कष्टे न

लिष्यते शास्त्रं यत्नेन परिचाल येत् ॥ २ ॥ यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिष्यतं मया यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥ लिषितं सीताराम जती स्वेताम्बराम्नाय स्वर तरगच्छे लिषो मध्ये लषखेउ ॥ लिखायतं लाला मौजीराम जी अग्रवाल वंशे वास्तव्य नवाबगंजे श्री जिनालय मध्ये स्थापितं ॥ शुभं भवतु······· कल्याणमस्तु··············श्रीरस्तु····························· ··········

Subject—

(१) पृ० १ से पृ० ७१ तक; पीठिका।

मंगलचरण। गोमठसार पुस्तक की टीका करने और हिंदी में ग्रंथ लिखने का कारण। शास्त्र अभ्यास का आदेश। सम्यक्ज्ञान की परिभाषा। शास्त्र अध्ययन के लाभ। तीन प्रकार के अनुपयोगियों की सम्मतियां। शास्त्र के आदि में पंच परमेष्ठी की बंदना का विधान। संस्कृत टीकाकार का मुनीन्द्रादि की वंदना करना। जैनियों के अध्ययन योग्य ग्रंथों का कथन। शास्त्र अभ्यास के अंग। शास्त्र अध्ययन का समय मिलने की दुर्लभता का वर्णन। सूक्ष्म अनुक्रमणिका। संदृष्टि के अर्थ वा कहे हुए अर्थों की संदृष्टि जानने को इस भाषा टीका में जुदा ही संदृष्टि अधिकार वर्णन। मूल शास्त्र व टीका में जहां संदृष्टि वा अर्थ लिखा था वहां ही उन अर्थों का निरूपण कर के न लिखने का टीकाकार का संदृष्टि। अधिकार में वर्णन करने का कारण। टीका के परिचय के सम्बन्ध में कुछ उल्लेख। अधिकारों की सूची। लौकिक तथा अलौकिक गणित के सम्बन्ध में कुछ कथन। दोनों गणितों से सम्बन्धित परिभाषाओं का वर्णन तथा उनकी क्रियाएं और इसी के अंतर्गत शून्य परिकर्माष्टक का वर्णन।

(बीस प्ररूपणा)

(२) जीव कांड (१) प्रथम अधिकार पृ० ७२ से पृ० १७७ तक—गुणस्थानाधिकार। गुणस्थान का नाम, और सामान्य लक्षण, सम्यक्त चरित्र, अपेक्षा और दृष्टिकादि संभव से भावनिका निरूपण, मिथ्या दृष्टि आदि गुण स्थान निन्दा वर्णन, मिथ्या दृष्टि में पंच मिथ्यात्वादिका, सासादन में काल व स्वरूप का वर्णन, मिश्र में उसके स्वरूपादिक का, देश संयत विषय उसके स्वरूप का वर्णन, प्रमत्त का कथन में पन्द्रह व असी वा साढ़े सैंतीस हज़ार प्रमाद भेदनिका और वहां प्रसंग पाइ संख्या, प्रस्तार, परिवर्तन, नष्ट, समुद्दिष्ट कर, गूढ़, यंत्रों से अक्ष संचार विधान का कथन। अक्ष संचार विधान, अप्रमत्त के कथन में स्वस्थान और सातिशय दो भेद कह सातिशय अप्रमत्त के अधःकरण का कथन, उसके स्वरूप काल, परिलाभ, समय, समय सम्बन्धी परिणाम व एक एक समय में अनुकृष्टिविधान, वहां संभवतः—चार आवश्यक इत्यादि का विशेष वर्णन।

श्रेणी व्यवहार रूप गणित का कथन। उसमें सर्व धन, उत्तर धन, मुख भूमि, चय, गच्छ, इत्यादि संज्ञाओं का स्वरूप और प्रमाण लाने के लिये सूत्रों का वर्णन, अपूर्व करण का कथन में उसके स्वरूपादि का कथन, सूक्ष्म सांपराय का कथन में कर्म प्रकृतियों के अनुभाग अपेक्षा अविभाग प्रतिच्छेद, वर्ग, वर्गणा, स्पर्द्धका, गुणहानि, नाना, गुणहानिनिका, पूर्व पर्द्धक, अपूर्वस्पर्धक, बादर कृष्टि, सूक्ष्म, कृष्टिका वर्णन है। उपशांत कषाय, क्षणिकषाय कथन में उनके दृष्टान्त पूर्वक, स्वरूपका, संयोगी जिनको कथन में नव केवल लब्धि, आदिकका, अयोगी विषयक अलेश्यपना आदि का कथन। बारह गुण स्थाननिविषै गुण श्रेणी निर्जरा का कथन है। वहां द्रव्य का अपकर्षण करके उपरतनि स्थिति, गुण श्रेणी, आयाम और उदयावली विषय जैसे विवर्णित हुए है उनका व गुण श्रेणी आयाम के प्रमाण का निरूपण है। अंतर्मूहूर्त व भेदों का वर्णन। सिद्धिनिका वर्णन।

(२) दूसरा अधिकार पृ० १७८ से २१६ पृ० तक, जीव समास अधिकार।

जीव समास का अर्थ। होने का विधान, चौदह, गुण तीस वा सत्तावन वा चार सौ छः जीव समासों का वर्णन। चार प्रकार के जीव समास, उसीके जीव समास वर्णन करके वहां स्थान भेद में एक एक आदि उगणसि पर्यंत जीव स्थाननिका वा इनही के पर्याप्तादि भेद कर स्थाननिका वा अट्ठानवे वाच्यादिसै छः जीव समासनिका कथन, योनि भेद विषे शंखा वर्तादि तीन प्रकार योनिका, और सन्मूर्च्छनादि-जन्म भेद पूर्वक नव प्रकार योनि के स्वरूप वा स्वामित्त्व का, और चौरासी लाख योनियों का वर्णन। चार गतियों के अन्तर्गत सन्मूर्च्छनादि जन्म वा पुरुषादि वेद संभावै है उनका निरूपण। अवगाहना भेद में सूक्ष्म निगोद, अपर्याप्त आदि जीवों की जघन्य उत्कृष्ट शरीर की अवगाहना का विशेष वर्णन है। उसमें एकेन्द्रियादिक भी उत्कृष्ट अवगाहना कहने का प्रसंग पाकर गोलक्षेत्र, संख क्षेत्र, आयत चतुरस्र क्षेत्र का क्षेत्रफल करने का, और अवगाहनाविषय प्रदेशों की वृद्धि जानने के अर्थ अनंतभागादि चतुः स्थान पतित वृद्धि का अर इस प्रसंगतें दृष्टांत पूर्वक षटस्थान पतित अदि वृद्धि हानिका, सर्व अवगाहना भेद जानने के अर्थ मत्स्य रचना का वर्णन है। फिर कुल भेद विषयक एक सौ साढ़े सत्तानबे लाख कोडिकुलानि का वर्णन है।

(३) तीसरा अधिकार, पृ० २१७ से पृ० २५८ तक—पर्याप्त नामा अधिकार।

मान का वर्णन, मान के दो भेद, लौकिक, अलौकिक, द्रव्य मान के दो भेदो में संख्या, संख्या मान में संख्यात असंख्यात अनंत के इक्कीस भेदो का वर्णन है, संख्या के विशेष रूप और चौदह धाराओं का कथन है, उनमें द्विरूप वर्गधारा, द्विरूप घन धरा, द्विरूप घनाघन धारा के स्थान में जेपा जाते है उनका विशेष

वर्णन है। पणट्ठीवादाल, इकट्ठी का प्रमाण, वर्गशाला का अर्द्धच्छेदनिकास्वरूप, अविभाग प्रतिच्छेद का स्वरूप वा उक्तं च ताथा ग्रेकरि अर्द्ध छेदादि के प्रमाण होने का नियम, आनिकाय जीवों का प्रमाण निकालने का विधान। दूसरा उपमामान के पल्यआदि आठ मेसे वर्णन है। व्यवहार पल्य के रोयों की संख्या लाने को पर माराहुते लगाय अंगुलपर्यंत अनुक्रम का तीन, प्रकार के अंगुल का, जिस जिस अंगुलिका से जिसका प्रमाण वर्णन करते हैं उसका कथन, गोलगर्त के क्षेत्रफल लाने का विधान, उद्धार पल्य से द्वीप समुद्रो की संख्या लाना, अद्धा वल्य, से आयु आपि वर्णन करने का विधान। सागर की सार्थक संज्ञा जानने को लवण समुद्र का क्षेत्रफल इत्यादि का वर्णन है। सूच्यंगुल, प्रतदांगुल, घनांगुल, जगत श्रेणी, जगत् प्रतर जगत घन का प्रमाण लाने का विरलन आदि विधान का वर्णन है। पल्यादिक की वर्गशालाका। अर्द्ध पोछै पर्याप्ति प्ररुपणा। पर्य्याप्त, अपर्य्याप्त के लक्षण और छः पर्याप्ति के नाम, स्वरूप का, आरंभ संपूर्ण होने के काल का, स्वामित्त्व का वर्णन है। बहुरि लब्धि अपर्य्याप्त का लक्षण, उसके निरंतर क्षुद्रभवनिके प्रमाणादिक का वर्णन, नहो प्रमाण फल इच्छा रुप त्रैराशिक गणित का कथन, सयोगी जिनके अपर्य्याप्त वना संभव नेका, लब्धि अपर्याप्त निर्वृति अपर्य्याप्त पर्याप्त के संभव से गुण स्थानिका वर्णन है।

(४) चैाथा अधिकार, पृ० २५९ से पृ० २६१ तक—प्राणाधिकार।

प्राणों का लक्षण, भेद, कारण स्वामित्व का वर्णन है।

(५) पांचवां अधिकार, पृ० २६२ से पृ० २६३ तक—संज्ञाधिकार।

चार संज्ञाओं का स्वरूप, भेद, कारण और स्वामित्त्व का वर्णन है।

(६) छठां अधिकार पृ० २६४ से पृ० २८६ तक—मार्गणाधिकार। मार्गणा का, निरुक्ति का, चैादह भेदों का, सातर मार्ग लाके, अंतरालवा, प्रसंग वश तत्त्वार्थ सूत्र के अनुसार नाना जीव, एकजोव अपेक्षा गुणस्थान विषयक, और गुण स्थान की अपेक्षा लिये मार्गणानि विषै कालका, अंतर का कथन करके छठा गति मार्गणाधिकार है। उसमें गति के लक्षण का, भेदो का और चार भेदों के निरुक्ति लिये लक्षणों का, पांच प्रकार तिर्यंच, चार प्रकार के मनुष्यों का, सिद्धों का वर्णन है। फिर सामान्य नारकी, अदेमुरे सात पृथ्वियां के नारकी, पांच प्रकार के तिर्यंचा चार प्रकार के मनुष्य, व्यंतर ज्योतिषी भवनवासी सैाधर्मादिक के देव, सामान्य देवराशि इन जीवों की संख्या का वर्णन है। कटपय पुरस्थ वर्णै इत्यादि सूत्रों द्वारा ककारादि अक्षर रूप अंक वा बिंदो की संख्या का वर्णन है।

(७) सातवा इन्द्रिय मार्गणा अधिकार, पृ० २८७ से पृ० २९४ तक—

इन्द्रियों को निरुक्ति लिये लक्षण का, वन्धि उपयोग रूप भावेन्द्रियका वाह्य अभ्यंतर भेद लिये निवृत्ति उपकरण रूप द्रेवेन्द्रिय का, इन्द्रियों के स्वामी का उनके विषय भूतक्षेत्र का, सूर्य के चार क्षेत्रादि का, इन्द्रियों के आकार का अवगाहना का, और अतीन्द्रिय जीवानि का वर्णन है। एकेन्द्रियादि का उदाहरण रूप नाम नाम वाहु कर उनको सामान्य संख्या का वर्णन। विषेशपनै सामान्य एकेन्द्री, सूक्ष्म वादर एकेको, सामान्यत्रस, वे इन्द्रिय, ते इन्द्रिय, चैाइन्द्रिय, पंचो इन्द्रिय इन जीवों का प्रमाण और इनमें पर्य्याप्त अपर्याप्त जीवों का प्रमाण वर्णन है।

८—आठवां काम मार्गणा अधिकार—पृ० २९४ से ३१९ पृ० तक।

काम के लक्षण और भेदों का वर्णन, पंच स्थावरों के नाम, काम, कायिक जीवरूप भेद, और वाहर सूक्ष्म पता का लक्षणादि, शरीर को अवगाहना, वनस्पति के साधारण प्रत्येक भेदों का प्रत्येक सप्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित भेदों का, उनको अवगाहना की, एक स्कंध में उनके शरीर का प्रमाण। योनोभूत, जीवों में जीव उपजने का वहां सप्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित जानने को उनके लक्षण, साधारण वनस्पति निगोदरूप, उसमें जीवों के उगने, पर्य्याप्ति धरने, मरने के विधान का निगोद शरीर को उत्कृष्ट स्थिति का, स्कंध, अंडर पुलवी, आवास देह, जीव, इनके लक्षण और प्रमाण, नित्य निगोदादि के स्वरूप, त्रिस जीवन और उनके क्षेत्र का वर्णन। वनस्पतीवत् औरों के शरीर में सप्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित पने का, स्थावर त्रस जीवों के आकार का, काय सहित काय रहित जीवों का वर्णन, अग्नि, पृथ्वी, अप, वात, प्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित प्रत्येक साधारण वनस्पति जीवों की और उनमें सूक्ष्म वादर जीवों, उनमें भी पर्याप्त अपर्याप्त जीवों की संख्या का वर्णन। पृथ्वी इत्यादि जीवों की उत्कृष्ट आयु का वर्णन, त्रस जीवों का, उनमें पर्याप्त अपर्याप्त जीवों की संख्या का वर्णन है। वाहर अग्नि कायिक आदि को संख्या का विशेष निर्णय करने के लिये उनके अर्द्ध छंदादि का वर्णन। और दिवण छेदे णव हिद" इत्यादिक करण सूत्र का वर्णन।

९—योग मार्गणा अधिकार—पृ० ३२० से पृ० ३६५ तक—

योग के सामान्य लक्षण, सत्यादि चार चार प्रकार मन, वचन और योग का वर्णन, सत्य वचन का विशेष जान को दस प्रकार के सत्य का वर्णन, अनुभव वचन काके विशेष जानने के लिये आमंत्रण आदि भाषानिका, सत्यादिक भेद होने के कारण, केवली मन वचन योग संभव द्रव्य मन का आकारादि, काय योग के सात भेदों का वर्णन, औदारिकादिकों के निरुक्ति पूर्वक लक्षण, मिश्र

योग होने का विधान, आहारक शरीर होने का विशेषत्व, कार्माण योग के काल का वर्णन। युगवत् योगों को प्रवित्ति होने का विधान, योग रहित आत्मा का वर्णन। पंच शरीरों कर्मनो कर्म भेद, पंच शरीरों को वर्गणा वा समय प्रवद्ध विषै परमायरनिका, प्रमाण वा क्रम से सूक्ष्मपना वा उनको अवगाहना का वर्णन। विश्रसे पंचम स्वरूप, उनके परिमाणुओं के प्रमाण, कर्मनो कर्म का उत्कृष्ट संचय होने का काल और सामिग्री। औदारिक आदि पंच शरीरों का द्रव्य का वर्णन समय समय प्रवद्ध मात्र कह कर उनको उत्कृष्ट स्थिति उसमें संभवती गुणहानि, नाना गुणहानि अन्योन्याभ्यस्त राशि, दोगुण हानि का स्वरूप प्रमाण कह कर कारण सूत्रादिक से उसमें त्रयादिक का प्रमाण लाकर समय समय पर संबंधी निषेकों का प्रमाण कह एक समय में कितने परमाणु उदयरूप हो कर निर्जरै केते सत्ताविषै अवशेष रहै उनके जानने को अंक से दृष्टि को अपेक्षा, लिए त्रिकोण यंत्र का कथन। वैक्रियादिकों का उत्कृष्ट संचय किस के कैसे होय इसका वर्णन। योग मार्गणा में जीवों को संख्या वर्णन, वैक्रियकशक्ति का संयुक्त बादर पर्याप्त अग्नि कायिक, वात कायिक, पर्याप्त पंचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्यों के प्रमाण का, भोग भूमिया आदि जीवों को पृथक विक्रिया, औरों के अपृथ विक्रिया हो उसका कथन, त्रियोगी, द्वियोगी, एक योगी जीवों का प्रमाण कहि त्रियोगों में आठ प्रकार मन वचन योगी और काम योगी जीवों का। द्वियोगियों में वचन काय योगियों का प्रमाण वर्णन। सत्य मनोयोग। दिवा सामान्य मन वचन काय योगों के काल का वर्णन। काय योगियों में सात प्रकार काय योगिनो का जुदा जुदा प्रमाण, औदारिक और रिकमिश्र कार्माण के जीवों को संख्या उत्कृष्ट पने युगवत् होने को अपेक्षा का वचन।

(१०) वेदमार्गण अधिकार—पृ० ३६६ से पृ० ३७० तक।

भाव द्रव्य भेद होने का विधान, उनके लक्षण, भावद्रव्य भेद समान व असमान होवे उसका वर्णन, वेदानिका कारण, दिखा कर ब्रह्मचर्य अंगीकार करने का वर्णन। तीनों वेदों को निरुक्ति के लिये लक्षण का अवेदी जीवों का वर्णन। संख्या के वर्णन में देवराशि कह उसमें स्त्री पुरुष वेदोनिका, तिर्यंचनि में द्रव्य स्त्री आदि का प्रमाण कह समस्त पुरुष स्त्री नपुंसक वेदोनिका प्रमाण वर्णन। सैनी पंचेन्द्रिय गर्भजा नपुंसक वेदी इत्यादि ग्यारह स्थानों में जीवों का प्रमाण वर्णन।

(११) ग्यारहवां कषायमार्गणा अधिकार—पृ० ३७१ से पृ० ३८८ तक।

कषायनिका निरुक्ती लिये लक्षण का, सम्यक्त्वादिक घात के रूप दूसरे अर्थ में अनुतानु बंधी आदि का निरुक्ति लिये लक्षण का वर्णन। कषायनि के एक, चार, सोलह असंख्यात लोकमात्र भेद कह क्रोधादिक की उत्कृष्टादि

चार प्रकार की शक्तियें का दृष्टान्त और फल की मुख्यता का वर्णन। पर्याप्त धरने के पहले समय कषाय होने का नियम है या नहीं इसका वर्णन। अकषाय जीवें का वर्णन, क्रोधादिक की शक्ति की अपेक्षा चार, लेश्या अपेक्षा चौदह आयुवंध अपेक्षा वोस भेद हैं। उनका और सब कषाय स्थानें पर प्रमाण कह उन भेदों में जितने जितने संभवैं उनका वर्णन। जीवें की संख्या के वर्णन में, तिर्यंच, मनुष्य गति में जुदा जुदा क्रोधी आदि जीवें का प्रमाण। उन गतें में क्रोधादिक का काल वर्णन है।

(१२) बारहवां, ज्ञानमार्गणा अधिकार। पृ० ३८९ से पृ० १४९९ तक।

ज्ञान का निरुक्ति पूर्वक लक्षण कह कर, उसके पांच भेद और क्षयोपशम के स्वरूप का वर्णन। तोन मिथ्या ज्ञानियें का, मिश्र ज्ञानियें का, तोन कुज्ञानियें के परिणामें के उदाहरण मतिज्ञान तथा उसके नामांतर। इन्द्रिय मन तें उपजने का और उसमें अवग्रहआदि होने का वर्णन, व्यंजन अर्थ के स्वरूप का, व्यंजन में नेत्र मन वा ईहादिक न पाये जांय उसका वर्णन, पहिले दर्शन होइ पीछे अवग्रहादि होने के क्रम का, अवग्रहादिकें का स्वरूप अर्थ व्यंजन के विषय भूतवहु वहुविधि आदि वारह भेदों का, तहां अनिवृत्ति विषै चारि प्रकारयतेक्ष प्रमाणगर्भित पना आदि का वर्णन। मतिज्ञान के एक, चार, चैावोस अट्ठाइस और इनस बारह गुने भेदों का वर्णन है। बहुरि श्रुति ज्ञान का वर्णन, उसम श्रुत ज्ञान का लक्षण, निरुक्ति आदि का अक्षररूप श्रुति ज्ञान के उदाहरण वा भेद वा प्रमाण का वर्णन। बहुरि भाव श्रुत ज्ञान अपेक्षा बोस भेदों का वर्णन। पहिल जघन्य रूप पर्याय ज्ञान का वर्णन विषै उसके स्वरूप का उसका आवरण जैसे उदय होवे उसका, यह जिसके होवे उसका दूसरा नाम लब्धि अक्षर है उसका वर्णन। यद्यपि समास ज्ञान का वर्णन, षट स्थान पतित वृद्धि का वर्णन। उसमें जघन्य ज्ञान के अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाण लाने कों प्रक्षेपक आदि का विधान, एक बार, दोवारा, आदि संकल धन लाने का विधान। साधिक जघन्य जहां दूना होवे उसका विधान, पर्याय समास में अनंत भाग आदि वृद्धि होने का प्रमाण इत्यादि का विशेष वर्णन। अक्षर आदि अठारह भेदों का क्रम से दो वर्णन है। अथाक्षिर के स्वरूप का, तोन प्रकार अक्षरें का, शास्त्रों के विषय भूत भावें के प्रमाण का, तोन प्रकार प्रदनिका, चैादह पूर्वोन वस्तु प्राभृतनामा अधिकाराने के प्रमाण का इत्यादि का वर्णन। बीस भेदों में अक्षर अनक्षर, श्रुत ज्ञान के अठारह दो भेदों का और पर्याय ज्ञान आदि को निरुक्ति लिये स्वरूप का वर्णन, द्रव्य श्रुत का वर्णन में द्वादशांग के पदनिको, प्रकोर्णक के अक्षरें को संख्याओं का, चासठ मूल अक्षरों को प्रक्रिया का। अयन उक्त सर्व अक्षरें का प्रमाण वा अक्षरें में प्रत्येक द्विसंयोगो आदि भंगों

करि तिस प्रमाण लाने का विधान, सर्व श्रुत के अक्षरों में अंगों के पद और प्रकोर्णकनि के अक्षरों के प्रमाण लाने का विधान इत्यादि का वर्णन है। आचार रांग आदि ग्यारह अंग, दृष्टि वाद अंग के पांच भेद, तिनमें परिकर्म के पांच भेद, तहां सूत्र और प्रथमानुयोग का एक भेद, पूर्व गत के चौदह भेद, चूलिका के पांच भेद, इन सबों के जुदा जुदा पदों का प्रमाण और इन में जो जो व्याख्यान है उनको सूचनिका का कथन। तोर्थंकर की दिव्यध्वनि होने का वर्णन। वर्द्धमान स्वामो के समय दस दस जोव अंतकृत केवलो और अनुत्तर गामो हुए उनका नाम, तोन सौ त्रेसठ कुवादिन के धारकवि में कई कुवादियों के नाम, सप्त भंग का विधान, अक्षरों के स्थान प्रयत्नादिक, बारह भाषा, आत्मा के जोवादि विशेषण इत्यादि अनेक कथन। सामयिक आदि चौदह प्रकोर्णकों का स्वरूप श्रुत ज्ञान की महिमा, अवधि ज्ञान का वर्णन, निरुक्ति पूर्वक स्वरूप कह कर उसके भव प्रताप, गुण प्रत्यय भेदों का, और वह भेद किस किस के हों कौन आत्म प्रदेशों से उपजें उसका, उसमें गुण प्रत्यय के छः भेदों का उनमें अनुगामो अननुगामो के तोन तोन भेदों का वर्णन, सामान्य पनैं अवधि के देशावधिपरमावधि, सर्वावधि भेदों का, उनमें भव प्रत्यय, गुण प्रत्यय के संभवपने का, यह किस किस के होवें, प्रतिपातो, अप्रतिपातो, विशेषका, इनके भेदों का प्रमाण का वर्णन। जघन्य देशावधि का विषय, भूत द्रव्य क्षेत्र काल भाव का वर्णन कर द्रव्य क्षेत्र काल भाव अपेक्षा, द्वितोयादि उत्कृष्ट पर्यंत क्रम से भेद होने का विधान द्रव्यादिक के प्रमाण का और सब भेदों के प्रमाण का वर्णन। ध्रुव, हार वर्ग वर्गला गुण कार इत्यादि का वर्णन, क्षेत्र काल अपेक्षा उस देशावधि के उगणोस कांडकनि का वर्णन है। बहुरि परमावधि के विषय भूत द्रव्य क्षेत्र-काल भाव अपेक्षा जघन्य से उत्कृष्ट पर्यंत क्रम से भेद होने का विधान, वहां द्रव्यादि का प्रमाण वा सर्व भेदों का प्रमाण। संकलित धन लाने और 'इच्छिदरासिच्छेदं'। इत्यादि दो करण सूत्रों का आदि अनेक वर्णन। सर्वावधि अभेद है। उसके विषय भूत द्रव्य क्षेत्र काल भाव का वर्णन, जघन्य देशावधि से सर्वावधि पर्यंत द्रव्य और भाव अपेक्षा भेदों की समानता का वर्णन। नरक में अवधिका और उसके विषय भूत क्षेत्र का वर्णन, मनुष्य तिर्यंच विषै जघन्य उत्कृष्ट अवधि होने का और देवो में भवनवासो, व्यंतर ज्योतिषो लोगों के अवधि गोचर क्षेत्र काल का सौधर्मादि द्विकनि विषै क्षेत्रादिका का, द्रव्य का भो वर्णन है। मनः पर्याय ज्ञान का वर्णन उसके स्वरूप दो भेद, ऋजुमति के तोन प्रकार, विपुल मति के छः प्रकार, मनः पर्यय जिनसे उपजतो हैं और जिनके होतो है उनका वर्णन। दो भेदों में विशेष है उसका, जोव से चिंतया हुआ द्रव्यादिक को जाने उसका और ऋजु मति का विषय भूत द्रव्य का और मनः पर्यय

संबंधी ध्रुवहार का और विपुलमति के जघन्य से उत्कृष्ट क्षेत्र पर्यंत द्रव्य अपेक्षा भेद होने का विधान, भेदों का प्रमाण, जघन्य उत्कृष्ट काल भाव का वर्णन, केवल ज्ञान सर्वज्ञ है उसका वर्णन। यहां जीवों की संख्या के वर्णन में मति श्रुति मनः पर्य्यय केवल अवधि ज्ञानी का और चारों गति संबंधी विभंग ज्ञानीनि का और कुमति कुश्रुति ज्ञानीनिका प्रमाण वर्णन।

१३—तेरहवां अधिकार—संयम मार्गणा—पृ० ५०० से पृ० ५०४ तक

संयम मार्गणा का स्वरूप। संयम के भेदों का निमित्त। संयम के भेदों का स्व-रूप। परिहार विशुद्धिका विशेष, ग्यारह प्रतिमा अट्ठाईस विषय इत्यादि का वर्णन। फिर यहां जीवों की संख्या को वर्णन में सामयिक छेदोपस्थापन, परि-हार, विशुद्धि, सूक्ष्म सांपराय, यथा ख्यात संयम धारी, संयतासंयत और असंयत जीवों के प्रमाण का वर्णन है।

(१४)—चौदहवां अधिकार—दर्शन मार्गणा—पृ० ५०५ से पृ० ५०६ तक।

दर्शन मार्गणा का स्वरूप, दर्शन भेदों के स्वरूप का वर्णन, जीवों की संख्या का वर्णन। शक्ति चक्षुर्दर्शनी, व्यक्त चक्षुर्दर्शनी निका और अवधि केवल अचक्षुर्दर्शनी का प्रमाण वर्णन।

(१५) पन्द्रहवां अधिकार—लेश्या मार्गणा अधिकार—पृ० ५०७ से पृ० ५५५ तक।

द्रव्यभाव से दो प्रकार लेश्या का निरुक्ति लिये लक्षण और उससे बंध होने का वर्णन है, फिर सोलह अधिकारों के नाम हैं। निर्देशाधिकार में छे लेश्यानि के नाम। वर्णाधिकार में द्रव्य लेश्यानि का कारण का और लक्षण का, छहों द्रव्यलेश्यानि के वर्ण के दृष्टांत का, जिनके जो जो द्रव्य लेश्या मिले उनका व्याख्यान है। प्रमाणाधिकार में कषायनि के उदय स्थाननि विषै संक्लेश विशुद्धि स्थाननि के प्रमाण का उनके संक्लेश विशुद्धि की हानि वृद्धि से अशुभ शुभ लेश्या होने के अनुक्रम का वर्णन। संक्रमणाधिकार विषयक स्वस्थान परस्थान संक्र-मण संक्लेश विशुद्धि का, वृद्धि हानि से जैसे संक्रमण होवे उसका, और संक्लेश विशुद्धि विषै जैसे लेश्या के स्थान होवें और तहां जैसे षट् स्थान पतित वृद्धि हानि संभवै उसका वर्णन। कर्माधिकार विषै छहो लेश्या वाले कार्य्य विषै जैसे प्रवर्त्तें उसके उदाहरण का वर्णन। लक्षणाधिकार विषै छहो लेश्या वाले निका लक्षण वर्णन है। गति अधिकार विषै लेश्यानि के छब्बीस अंश तिन विषै आठ मध्य अंश आयु बंधका कारण, आठ अपकर्ष कालों में हों उन अपकर्षनिका उदाहरण पूर्वक स्वरूप, यदि उनमें आयु न बंधे तो जहां बंधे उसका, सोपक्रमायुष्क. निरुपक्रमायुष्क जीवों के अपकर्षणरूप काल का, आयुबंधन, विधान व

गति आदि विशेष का वर्णन। अपकर्षन में आयु बंधने वाले जीवों का प्रमाण, लेश्यानि के अठारह अंश विषैं मारण हुए जिस जिस स्थान में उपजे उसका वर्णन। बहुरि स्वामी अधिकार विषैं भाव लेश्या की अपेक्षा सात नरकनि के नारकियों में मनुष्य तिर्यंच विषैं, वहां भी एकेन्द्रिय विकल त्रय विषैं असैनी पंचेन्द्री विषैं लब्धि अपर्याप्तक तिर्यंच मनुष्य भवनत्रिक देवसासादन वालों में, पर्याप्त, अपर्याप्त भोग भूमि या विषैं मिथ्या दृष्टि आदि गुण स्थानों में, पर्याप्त भवनत्रिक सौ धर्म द्विक आदि देवों में जो जो लेश्या मिले उनका वर्णन। उसमें असैनी के लेश्या निमित्त से गति में उपजने आदि का विशेष कथन। साधन अधिकार में द्रव्य लेश्या और भाव लेश्यानि के कारण। संख्याधिकार में द्रव्य क्षेत्र कालभाव मान कर कृष्णादि लेश्या वाले जीवों का प्रमाण वर्णन है। क्षेत्राधिकार में सामान्यपनैं स्वस्थान समुद्घात उपपाद अपेक्षा विशेष पनैं दो प्रकार स्वस्थान सात प्रकार समुद्घात, एक उपपाद इन दस स्थानों में संभव संस्थानियों की अपेक्षा कृष्णादिलेश्यानि का स्थान वर्णन अर्थात् क्षेत्र का वर्णन है। वहां प्रसंग वश विवक्षित लेश्या विषैं संभव संस्थान, उन जीवों के प्रमाण का केवल समुद्घात विषैं दंड कपाटादिक को, लोक के क्षेत्रफल का वर्णन, स्पर्शाधिकार में पूर्वोक्त सामान्य विशेष पनैं द्वारा लेश्यानि का वर्णन। तीन काल संबंधी क्षेत्र का वर्णन, मेरु से सहस्रार पर्यंत सर्वत्र पवन के सद्भाव का वर्णन। जंबूद्वीप समान लवण समुद्र के खंड, लवण के सदृश अन्य समुद्र के खंड करने का विधान। जलचर रहित समुद्रों का मिलाया हुआ क्षेत्रफल के प्रमाण का, देवादिक के उपजने गमन करने का वर्णन। काल अधिकार में कृष्णादि लेश्या जितने काल रहै उसका वर्णन। वहां प्रसंग या एकेन्द्री विकलेन्द्री विषैं उत्कृष्ट रहने के काल का वर्णन। भावाधिकार में छहो लेश्याओं में औदायिक भाव के सद्भाव का वर्णन। अल्प बहुत्व अधिकार में संख्या के अनुसार लेश्याओं में परस्पर अल्प बहुत्व का व्याख्यान है। इस प्रकार सोलह अधिकार कह कर लेश्या रहित जीवों का व्याख्यान है।

(१६) भव्य मार्गणा अधिकार—पृ० ५५६ से पृ० ५६७ तक।

भव्य अभव्य और भव्य अभव्य पने से रहित जीवों का स्वरूप। संख्या के कथन में भव्य और अभव्य जीवों का प्रमाण वर्णन। द्रव्य, क्षेत्र, काल, भवभाव-रूप पंच परिवर्तननि के स्वरूप का, अथवा जिस क्रम से परिवर्तन होवे उसका वर्णन, परिवर्त्तनों के काल, अनादि से जैसे जैसे परिवर्त्तन हुए उनके प्रमाण का वर्णन है। उसमें गृहीतादि पुद्गलों के स्वरूप संदृष्टि वाला वर्णन। योग संस्थानादिक का वर्णन।

(१७) सत्रहवां सम्यक्त्व मार्गणाअधिकार—पृ० ५६८ से ६१६ तक

सम्यक्त का स्वरूप, सराग वीतराग के भेदों का वर्णन, षट, द्रव्य, नौ पदार्थ श्रद्धान रूप लक्षण। षट द्रव्य का वर्णन में सात अधिकारों का कथन। उसमें नाम अधिकार में द्रव्य एक या दो भेदों का वर्णन, जीव अजीव के दो भेद। पुद्गल का निरुक्ति लिये लक्षण। पुद्गल परमाणु के आकार का वर्णन पूर्वक रूपी अरूपी अजीव द्रव्य का कथन, उपलक्षणानुवादाधिकार छहो द्रव्यनि के लक्षणों का वर्णन, उसमें गति आदि क्रिया जीव पुद्गल हैं। उसका कारण धर्मादिक है उनका दृष्टांत पूर्वक वर्णन। वर्तनाहेतुत्व काल के लक्षण का दृष्टांत पूर्वक वर्णन मुख्य काल के निश्चय होने का, काल के धर्मादिक के कारण पाने का वर्णन। समय आवली और व्यवहार काल के भेदों का वर्णन, उसमें प्रसंगवश प्रदेश के प्रमाण का, अंतर्मुहूर्त के भेदों का, व्यवहार काल जानने को निमित्त का वर्णन व्यवहार काल के अतीत अन्तर्गत वर्तमान भेदों के प्रमाण व्यवहार निश्चय काल का स्वरूप स्थिति अधिकार में सर्व अपने पर्यायनिका समुदाय रूप अवस्थान का वर्णन, क्षेत्राधिकार में जीवादिक जितना क्षेत्र रोकें उनका वर्णन। प्रसंगवश तीन प्रकार अधार व जीव के समुद्घातादि क्षेत्र का वासंकोच विस्तार शक्ति का पुद्गलादिकों की अवगाहन शक्ति का वा लोक के स्वरूप का वर्णन। संख्याधिकार में जीव द्रव्याधिक और उनके प्रकाशों का वर्णन, द्रव्य क्षेत्र काल भाव मान का वर्णन है। फिर स्थान स्वरूपाधिकार विषैं द्रव्यों का वा द्रव्य के प्रदेशों के चल अचल पने का वर्णन। अनुवर्गणादि ते इस पुद्गल वर्गणों का वर्णन। उन वर्गणों में जितने जितने परिमाणु मिलें उनके आहारादिक वर्गणा से जो जो कार्य नियमें उनका जघन्य, उत्कृष्ट प्रत्येकादि वर्गणा जहां मिले उसका वर्णन। पुद्गल के स्थूल आदि छै भेद —स्कंध, प्रदेश देश इन तीन भेदों का वर्णन है। फल अधिकार में धर्मादिक, का गति आदि साधन रूप उपकार, जीवों के परस्पर उपकार, पुद्गलों का कर्मादिक वा सुखादिक उपकार, प्रश्नोत्तर सहित उनका वर्णन। कर्मादिक के पुद्गल हो हैं। कर्मादिक जिस जिस वर्ग, से उपजें उनका वर्णन, स्निग्ध रूप के गुणों के अंशों से पुद्गल का संबंध। षट् द्रव्य का वर्णन, काल बिना, पंचास्तिकाय, नव पदार्थ जीव अजीव का षट् द्रव्यो में वर्णन। उपशम क्षपक श्रेणी वाले निरंतर अष्टसमयों में जितने जितने हैं। युगपत बोधिक बुद्धि आदि जीव जितने हों उनका वर्णन, सकल संयमियों के प्रमाण का वर्णन। सात नरक के नारकी भवनत्रिक सौधर्म द्विकादिक देव, तिर्यंच मनुष्य यह जितने जितने मिथ्यादृष्टि आदि गुण स्थानों विषै पाये जावैं उनका वर्णन, गुण स्थाननि विषैं पुण्य जीव पाप जीवों का भेद वर्णन। फिर पुद्गलीक द्रव्य पुण्य पाप का वर्णन, आस्रवबंध संवर निर्जरा मोक्ष रूप पुद्गल का प्रमाण वर्णन। षट् द्रव्यादिक का स्वरूप कह कर उनके श्रद्धान

रूप सम्यकत्त्व के भेदों का वर्णन, क्षायिक क्षम्यकत्त्व के भेदों का वर्णन। क्षायिक सम्यक्त्त्व होने के कारण के स्वरूप का वर्णन, उसको पाने से जितने भवों में मुक्ति होइ उसका वर्णन, उपशम, समाकु का स्वरूप, कारण पंच लब्धि आदि सामिग्री का जिसकर उपशम, सम्यक्त्त्व होने उसका वर्णन, प्रसंगवश अयु बंध हुए पीछे सम्यकत्त्व व्रत होने न होने का वर्णन। सासादन मिश्र मिथ्या रुचि का वर्णन है जीवों को संख्या के वर्णन में क्षायिक उपशम, वेदक सम्यग्दृष्टि, सासादन, मिश्र जीवों का प्रमाण, नव पदार्थों का प्रमाण। वहां जीव और अजीव में पुद्गल धर्म, अधर्म अकाश, काल और पुण्य पाप रूप जीव और आस्रव संवर निर्जरा बंध मोक्ष इनके प्रमाण का निरूपण।

(१८) अठारहवां संज्ञा मार्गण अधिकार—पृ० ६१७ से पृ० ६१८ तक।

संज्ञा का स्वरूप, संज्ञी, असंज्ञी जीवों के लक्षण का वर्णन, और यहां संख्या के वर्णन में संज्ञी, असंज्ञी जीवों के प्रमाण का वर्णन।

(१९) उन्नीसवां अहार मार्गणा अधिकार—पृ० ६१९ से पृ० ६२१ तक

अहार का स्वरूप और निरुक्ति और आहारक जिनके होवें उनका जहां प्रसंग है यहां सात समुद्घातीन के नाम व समुद्घात के स्वरूप का और आहारक, अनाहारक के काल का वर्णन। आहारक जीवों का प्रमाण वर्णन है वहां प्रसंग-वश प्रक्षेप योगोद्धृति मिश्रपिंड इत्यादि सूत्र कटि मिश्र के व्यवहार का कथन।

(२०) बीसवां, उपयोग अधिकार में—पृ० ६२१ से ६२२ तक

उपयोग के लक्षण, साकार, अनाकार भेद, उपयोग है सो व्याप्ति अव्याप्ति असंभवी दोष रहित जीव का लक्षण है उसका वर्णन, केवल ज्ञान केवल दर्शन बिना साकार अनाकार उपयोगों का काल अंतरमहूर्त मात्र है उसका वर्णन, जीवों का संख्या साकारोपयोग विषैं ज्ञान मार्गणावत् और अनाकारोपयोग विषैं दर्शना मार्गणावत् का वर्णन।

(२१) इक्कीसवां ओघादेश योग निरूपण अधिकार—पृ० ६२३ से ६३७ तक।

गति आदि मार्गणाभेदों में यथा संभव गुण स्थान और जीव समासों का वर्णन, द्वितीयोपशम सम्यकत्व विषैं पर्याप्त अपर्याप्त अपेक्षा गुण,स्थानों का विशेष वर्णन। गुण स्थानों में संभव तेजा जो व समास पर्याप्ति प्राण संज्ञा चौदह मार्गणा के भेद उपयोग तिनका वर्णन। मार्गणा व उपयोग के स्वरूप का भी कुछ वर्णन, योग भव्य मार्गणानि के भेदनिका व सम्यकत्व मार्गणा विषैं प्रथम द्वितीयोपशम सम्यकत्व का इत्यादि का विशेष वर्णन, गति आदि कई मार्गणानि विषैं पर्याप्त अपर्याप्त अपेक्षा कथन।

(२२) बाईसवां अधिकार आलाप—पृ० ६३८ से ७५१ तक।

आलाप अधिकार में मंगलाचरण कर सामान्य पर्याप्त, अपर्याप्त कर तीन अलाप, अनवृति करण में पांच भागों को अपेक्षा पांच अलाप उनका गुण स्थान चौदह मार्गणा के भेदों में यथा संभव कथन है। उसमें गति मार्गणा विषै विशेष कथन है। गुण स्थान मार्गणास्थान में गुणस्थानादि बीस प्ररूपणा यथा संभव अलापति को अपेक्षा निरूपण करनी। वहां पर्याप्त अपर्याप्त एकेन्द्रियादि जीवों के संभव से पर्याप्ति प्राण जीव सामासादिक का कुछ वर्णन कर यथा योग्य सर्व प्ररूपण जानने का उपदेश है। बहुरि उनके जानने का मंत्रों द्वारा कथन। पहिले मंत्रों विषयक जैसे अनुक्रम हैं वह समस्या है वा विशेष है सो कथन। एक एक रचना विषै बीस बीस प्ररूपण का कथन स्वरूप छह से चउदह मंत्रों को रचना है उसमें कोई रचना समान जान बहुत रचनाओं को एक रचना है। फिर मन पर्यय ज्ञानादिक में एक होवे अन्य न होवे उसका वर्णन। उपशम श्रेणी से उतर, मरण हुए उपजने का, सिद्धानि विषयक संभवसो प्ररूपणानिका निक्षेपादिक प्ररूपणा जानने के उपदेश का वर्णन है। फिर आशीर्वाद। टीकाकार के वचन

"जीव काण्ड नामा महाअधिकार"

संपूर्ण

(२) अजीव कांड नामा महाअधिकार (पृ० से पृ० तक)

(१) प्रथम अधिकार—पृ० ७५३ से ७८१ तक।

समुत्कीर्तन अधिकार में-मंगलाचरण, प्रतिज्ञा, प्रतिज्ञा का स्वरूप, जीव कर्म का संबंध, उनका अस्तित्व, दृष्टांत पूर्वक कर्म परमाणु का ग्रहण, बंध उदय, सत्वरूप कर्म परमाणु, का प्रमाण, ज्ञान वर्णादिक आप मूल प्रकृतियों के नाम। घाती अघाती भेद उनके कार्य। क्रम संभवने का वर्णन, दृष्टांत निरुक्ति लिये इनके स्वरूप का वर्णन, इनको उत्तर प्रकृति का कथन, पंच निद्रा तीन दर्शन मोह होने के विधान, पंचशरीरों पंद्र भंगनिका विवक्षित संहनन वाले देव नरक गति में जहां उपजैं उनका वर्णन, कर्म भूमि स्त्रियों के तीन संहनन आतान, प्रकृति के स्वरूप स्वामित्व। मतिज्ञान, वर्णादि उत्तर प्रकृति के निरुक्ति लिए स्वरूप का वर्णन। प्रसंगवश अभव्य के केवल ज्ञान के सद्भाव विषै प्रश्नोत्तर। सात धात, सात उपधातु। अभेद विविक्षा जो प्रकृति गर्भित हो उसका वर्णन, बंध उदय संज्ञा रूप जितनी प्रकृतियां हैं उनका वर्णन। घातिया में सर्वघाती देश घाती प्रकृतियां का वर्णन, सब प्रकृतियों में प्रशस्त अप्रशस्त विषैं का वर्णन, प्रसंगवश संशय विपर्यय अनध्यवसाय का वर्णन। तीन प्रकार के श्रोताओं का कथन, प्रकृति के चार निक्षेप नामादि निक्षेप का स्वरूप कह नाम निक्षेप का और

तदाकार अतदाकार रूप दो प्रकार स्थापना निक्षेप का और आगमनो आगम रूप दो प्रकार द्रव्य निक्षेप का जो आगम के ज्ञायक तद्व्यति रिक्तारूप तीन प्रकार भूत, भावी वर्तमान रूप ज्ञापक शरीर के तीन भेदों का कथन च्युत च्यावित्यक्त रूप भूत शरीर के तीन भेदों का व्यक्त के भक्त प्रतिज्ञा इंगिनी प्रायोपगमन रूप भेद भक्ति प्रतिज्ञा उत्कृष्ण मध्य, जघन्य रूप तीन प्रकार तद्व्यति रिक्त नोआगम द्रव्यके कर्मनो कर्म भेदों का फिर भाव निक्षेप के आगमनों आगम भेदों का वर्णन। मूल प्रकृतिनि विषैं इन कहि उत्तर प्रकृति विषैं वर्णन हैं। और नो आगा-भाव कर समुच्चय रूप वर्णन है।

(२) दूसरा अधिकार—बंध उदय सत्त्वयुकस्तव नामा अधिकार—पृ० ७८५ से ९६८ तक

नमस्कार पूर्वक प्रतिज्ञा कर स्तवनादिक का लक्षण वर्णन बहुरि। बंध व्याख्यान विषैं बंध के प्रकृति स्थिति अनुभाग प्रदेश रूप भेदों का और तिन विषै उत्कृष्ट अनुत्कृष्ट जघन्य अजघन्य पनै का, इन विषैं भोलादि जनादि ध्रुव अध्रुव संभवने का वर्णन। प्रकृति बंध का कथन विषय गुण स्थाननि विषै प्रकृति बंध के नियम का, तहां भी तीर्थंकर प्रकृति बंधन के विशेष का, और गुण स्थानों विषैं व्युच्छिति बंध अबंध प्रकृतियों का, जहां भी व्युच्छित्ति के स्वरूप दिखावने कौं द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक, नयकी अपेक्षा का गति आदि मार्गणा के भेदों के विषैं सामान्य पनै संभव से गुणस्थान, अथोव्युच्छित्ति बंध अबंध प्रकृतियों के विशेष का, मूल उत्तर प्रकृतिनि विषैं संभवते सादितैं, आदि देकर बंध का, वहां अध्रुव प्रकृतियों में सप्रतिपक्ष निःप्रतिपक्ष प्रकृतिनिका, निरंतर बंध होने के काल का वर्णन। स्थिति बंध के वर्णन में मूल उत्तर प्रकृतियों के उत्कृष्ट स्थिति बंधका और उत्कृष्ट स्थिति बंध संज्ञक पंचेंद्रियकैं हो होय उसका और जिस परिणाम में वा जिस जीव के जिस प्रकृति का उत्कृष्ट स्थिति बंध होय उसका, वहां प्रसंग या उत्कृष्ट ईषत् मध्यम संक्लेश परिणामों के स्वरूप दिखाने को अनु-कृष्टि आदि विधान का और मूल उत्तर प्रकृतियों के जघन्य स्थिति बंध के प्रमाण का जघन्य स्थिति बंध जिसके होय उसका वर्णन। एकेन्द्री बेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्री असंज्ञी संज्ञी पंचेन्द्री जीवों के मोहादिक की उत्कृष्ट जघन्य स्थिति के प्रमाण, प्रसंग पाइनिन के अबाधा के काल भेद कंदकनिके प्रमाण, भेद प्रमाण, गुणित कांडक प्रमाण को उत्कृष्ट स्थिति विषैं ऊपरौं जघन्य स्थिति कर प्रमाण होने का वर्णन है। बहुरि एकेंद्रियादि जीवों के स्थिति भेदों को स्थापन करि तहां चौदह जीव समासनि विषैं जघन्य उत्कृष्ट स्थिति बंध और अबाधा और भेदों के प्रमाण का और तिनने जानने का विधान वर्णन है। वहां प्रकृतियां का जघन्य स्थिति बंध तिनके होइ उसका, और जघन्य आदि स्थिति बंध विषयक सादि नें आदि देकर

संभवपन को और विशुद्ध संक्लेश परिणामों से जैसे जघन्य उत्कृष्ट स्थिति बंध होय उसका, अबाधा के लक्षण, मोहादिक की अबाधा के काल का वर्णन, आयु की अबाधा के विशेष का तहां प्रसंग पाकर देव नारकी भोग भूमियां कर्म भूमियों के आयु बंध होने के समय का, उदीर्णा अपेक्षा, अबाधा काल के प्रमाण का प्रसंग पाकर अचला वली, उदया वलि उपरितन स्थिति विषय कर्म परमाणु खिरने का उदीर्णा के स्वरूप का, आयु या अन्य कर्मनि के निषेकनि के स्वरूप का अंक संदृष्टि निषेकनि पूर्वक विषैं द्रव्य प्रमाण का तहां गुण हानि आदि का वर्णन है। बहुरि अनभाग बंध का व्याख्यान विषैं प्रकृतियों का अनुभाग जैसे संक्लेश विशुद्धि परिणाम निकरि बंधै है उसका और जिस प्रकृति का जाके तीव्र वा जघन्य अनुभाग बंधै है उसका वहां प्रसंग पाकर अपरिवर्तन मान, परिवर्त मानमध्य परिणामनि के स्वरूपादि का और उत्कृष्टादि अनुभाग बंध विषै सादिनें आदि देकर भेदों के संभवपने का वर्णन बहुरि घातियानि विषैं लातुदारु अस्थि शैल भाग रूप अनुभाग का तहां देश घाति या स्पर्द्धकनिका मिथ्यात्व विषैं विशेष है उसका वर्णन, जिन प्रकृतियों विषैं जेते प्रकार अनुभाग प्रवर्तै उसका वर्णन। अघातियानि विषैं प्रशस्त प्रकृतियों का गुड़ खंड शर्करा अमृत रूप अप्रशस्त प्रकृतियों का, निंबकांजीर विष हलाहल रूप अनुभाग का और इन प्रकृतियों के तीन तीन प्रकार अनुभाग प्रवर्तै उसका वर्णन। प्रदेश बंध का कथन विषैं एक क्षेत्र अनेक क्षेत्र संबंधी वा तहां कर्म रूप होने को योग्य अयोग्यरूप, तिन विषैं भी जीव के ग्रहण की अपेक्षा सादि अनादि रूप पुद्गलों का प्रमाणादिक कह तहां जिन पुद्गलों को समय प्रबद्ध में ग्रहै उसका वर्णन। ग्रहे अर्थात् परमाणु के प्रमाण उनको आठ या सात मूल प्रकृतियों में जैसे विभाग है उनका हीनाधिक विभाग होने का कारण। उत्तर प्रकृतियों में विभाग का अनुक्रम, ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अंतराय में सर्वघाती, देशघाती द्रव्य का विभाग, मति ज्ञानावरणादि प्रकृति में सर्वघाती, देशघाती स्पर्द्धकनिका, उसमें अनुभाग संबंधी नाना गुण हानि, अन्योन्याभ्यस्त द्रव्य स्थिति गुण हानि का प्रमाण कह कर उसमें वर्गणा का प्रमाण ला उसमें जहां देशघाती, सर्वघातीपना पाया जाय उसका वर्णन। चार घातिया कर्मों का उत्तर प्रकृतियों में कर्मप्रमाणुओं के विभाग का वर्णन, संज्वलन और नोकषाय में विशेषत्व। नोकषाय के युगपत् बंध। उनके निरंतर बंधने का काल। अंतराय की प्रकृतियों में सर्वघातीपना न होने का वर्णन। युगपत नाम कर्म की तेइस आदि प्रकृति बंधे उनका विभाग। वेदनीयादिक की एक एक ही प्रकृति बंध इनसे इसमें जहां कहीं जरूत बंध इससे वहां विभाग न होने का वर्णन। मूल उत्तर प्रकृतियों का उत्कृष्टादि प्रदेश बंध में सादि इत्यादि भेद संभवने का वर्णन। जिस प्रकृति का उत्कृष्ट जघन्य प्रदेश बंध जिसके हो उसका वर्णन। स्तोक सा एक जीव के युगपत् जितनी जितनी

प्रकृत बंधै उनका वर्णन। योगनिका का कथन। उपपाद एकांत वृद्धि परिणाम रूप होगनि के स्वरूपादि का वर्णन। योगनि अविभाग प्रतिच्छेदन वर्ग वर्गणा स्पर्द्धक गुण हानि नाना गुण हानि स्थाननि के स्वरूप प्रमाण विधान का योग शक्ति व प्रदेश अपेक्षा विशेष वर्णन है। योगनिका जघन्य स्थान से लेकर स्थाननि में वृद्धि के अनुक्रम तक वर्णन। सूक्ष्म निगोदिया लब्धि अपर्याप्तक का जघन्य उपपाद योग स्थान से लेकर ८४ स्थाननिका, वात्र बोच में जिनका स्थानो (स्वामी) न मिले उनका, उनमें गुणकार के अनुक्रम का, जघन्य स्थान से उत्कृष्ट स्थान के गुण कार का वर्णन। तोन प्रकार योग निरंतर जितने काल प्रवर्तें उनका पर्य्याप्त त्रस संबंधो परिणाम-योग स्थानों में जितने जितने योग स्थान, दो आदि आठ समय पर्यंत निरंतर प्रवर्तें उनके प्रमाण लाने को कालयव मध्य रचना। पर्य्याप्त त्रस संबंधो परिणाम योग स्थाननि में जितने जितने जोव मिलें तिनके प्रमाण जानने को गुण हानि आदि विशेषता युक्त जोव यव मध्य रचना का और योग स्थानों से जितना जितना प्रदेश बंध हो उसका, उसका जघन्य से उत्कृष्ट स्थान पर्यंत बंधने क्रम का वीचि वीचि जितने अविभाग प्रतिच्छेद हों उनका वर्णन है। चार प्रकार बंध के कारणों का कथन। योग स्थानादिक के अल्प बहुत्व का वर्णन। योग स्थान श्रेणी के असंख्यातवां भाग मात्र उनका वर्णन। असंख्यात लोक गुने कर्म प्रकृतियों के भेदों के वर्णन में मतिज्ञानादिक के भेद। क्षेत्र अपेक्षा अनुपूर्वी के भेदों का कथन। उनसे असंख्यात गुने कर्म स्थिति के भेदों का वर्णन में मतिज्ञानादिक के भेद। क्षेत्र अपेक्षा अनुपूर्वी के भेदों का कथन। उनसे असंख्यात गुने कर्म स्थिति के भेदों का वर्णन, उनमें एक एक प्रकृति की जन्याद उत्कृष्ट पर्यंत स्थिति भेदों का कथन है। उनसे असंख्यात गुने स्थिति बंधाध्यवसायनिका वर्णन, द्रव्य स्थिति गुण हानि निषेक त्रयादिक की स्थिति बंध का कारण परिणामों का स्तोकसा। फिर उनसे असंख्यात लोक गुने अनुभाग बंधाध्यवसाय स्थाननि का वर्णन। उसके अन्तर्गत द्रव्य स्थिति गुण हान्यादिक अनुभाग का कारण परिणामों का स्तोकसा कथन। उनमे अनंत गुने कर्म प्रदेशों का वर्णन। द्रव्य स्थिति गुण हानि नाना गुण हानि त्रय निषेकों का अंक संदृष्टि वा अर्थ करि कथन। एक समय मे समय प्रबद्ध मात्र पुद्गल बंधै, एक एक निषेक मिल कर समय प्रबद्ध मात्र हो निर्जरैं ऐसे होते स्पर्द्ध गुण हानि गुणित समय प्रबद्ध मात्र सत्त्व रहै उसका विधान जानने के लिये त्रिकोण पेत्र की रचना। उदय के वर्णन मे उदय प्रकृतियों का नियम। गुण स्थानों व्युच्छित्त उदय, अनुदय प्रकृतियों का वर्णन। उदीरणामे विशेष कह गुण स्थानों में व्युच्छिति उदीर्णा अनुदीर्णा रूप प्रकृतियों का वर्णन। मार्गण में उदय प्रकृतियों का कह गति आदि मार्गणा के भेदों में संभव संगुण स्थानों को अपेक्षा लिये व्युच्छित्ति

उदय अनुदय प्रकृतियों का वर्णन। सत्त्व के कथन में तीर्थंकर आहारक की सत्ता का, मिथ्या दृष्ट्यादि विषै विशेष और आयु बंध हुए पीछे सम्यक्त्व व्रत होने का विशेषत्त्व, क्षायिक सम्यक्त्व होने का विशेष कह मिथ्या दृष्टि आदि सात गुण स्थानों में सत्त्व प्रकृतियों का वर्णन। ऊपर क्षयक श्रेणी अपेक्षा व्युच्छित्ति सत्त्व असत्त्व प्रकृतियों का वर्णन है। मिथ्या दृष्टि आदि गुण स्थानों सत्त्व असत्त्व प्रकृतियों का वर्णन। उपशम श्रेणी विषै इकीस मोह प्रकृति उपशमावने का क्रम। सत्त्व प्रकृतियों का कथन। मार्गणा में सत्ता असत्ता प्रकृतियों का नियम। गति आदि मार्गणा के भेदों में यथा संभव गुण स्थानों की अपेक्षा लिये व्युच्छित्ति सत्त्व असत्त्व प्रकृतियों का वर्णन है। इन्द्रिय काय मार्गणा में प्रकृतियों की उद्वेलना का इत्यादि अनेक वर्णन।

(३) तीसरा अधिकार—विशेष सत्ता—पृ० ९६९ से पृ० ९८९ तक।

एक जीव को एक काल प्रकृति मिलै उनके प्रमाण की अपेक्षा स्थान स्थान में प्रकृति वदलने की अपक्षा भंग उनका वर्णन। नमस्कार पूर्वक प्रतिज्ञा कर स्थान भंगों का स्वरूप कर गुण स्थानों में सामान्यवत प्रकृतियों का वर्णन करके विशेष वर्णनों में मिथ्या दृष्टायादि गुण स्थानों में जितने जितने स्थान अथवा भंग हों उन को कह कर जुदा जुदा कथन में उनका विधान वा प्राकृतिक घटने बंधने बदलने के विशेष का बद्धायु अवद्धायु अपेक्षा वर्णन है। मिथ्या दृष्टि में तीर्थंकर सत्ता वाले के नरकायु ही का सत्व हो उसका वर्णन। एकेन्द्रिय आदिक के उद्वेलन्य का और सासादन में आहार सत्ता के विशेष का मिश्र में अनंतानुबंधी रहित सत्व स्थान जैसे संभवै उसका असंयत में मनुष्यायु तीर्थंकर सहित एक सौ अड़-तीस प्रकृति की सत्तावाले के एक वा दो वा तीन ही कल्याण कहीं उनका अपूर्व करणादि विषै उपशमक क्षपक श्रेणी अपेक्षा का इत्यादि अनेक वर्णन है। वहुरि आचार्यों के मत जो विशेषत्त्व है। उसके कथन पर उसकी अपेक्षा की कथन है।

(४) चौथा अधिकार—त्रिचूलिका पृ० ९९० से पृ० १००४ तक।

नौ प्रश्नों द्वारा चूलिका का व्याख्यान। पहिले तीन प्रश्न करना और उनके उत्तर में जिन प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति से पहिले वंधु व्युच्छित्ति युगपत् हुई उसका वर्णन, फिर तीन प्रश्न कर के उनके उत्तर में जितना अपना उदय होते ही बंधु हो उनका और जिनका अन्य प्रकृतियों का उदय होते ही बंध होने उनका वर्णन। फिर तीसरा तीन प्रश्न कर तिनके उत्तर में जिनका निरंतर बंध हो उनका और जिनका सांतर बंध हो उनका और जिनका सांतर निरंतर बंध हो उनका कथन। यहां तीर्थंकरादि प्रकृति निरंतर बंधी जैसे उसका और सप्रतिपक्ष निष्प्र-तिपक्ष अवस्था में सांतर निरंतर बंध जैसे संभव है उसका वर्णन है। दूसरी पंच

भाग हार चूलिका का व्याख्यान में मंगलाचरण कर उद्वेलन विध्यात अधः प्रवृत गुण संक्रम सर्व संक्रम इन पांच भाग हारन के नाम स्वरूप भाग हार जिन जिन प्रकृतियों में गुण स्थानों में संभवें ताकर वर्णन। सर्व संक्रम भाग हार गुण संक्रम भागहार उत्कर्षण वा अपकर्षण भागहार अधःप्रवृत्त भागहार योगों में गुणाकार, स्थिति में नाना गुणहानि पल्य के अर्द्धच्छेद पल्य का वर्गमूल स्थिति विषैं गुण हानि आयाम, स्थिति विषै अन्योन्यभ्यस्त राशि, पल्य कर्म की उत्कृष्ट स्थिति, विध्यात संक्रम भागहार, उद्वेलन भागहार अनुमान विषै नाना गुणहानि, दाे गुणहानि, अन्योन्याभ्यस्त इनका प्रमाण पूर्वक अल्प बहुत्व का कथन। तीसरी दश करण चूलिका के व्याख्यान में वंधन उत्कर्षण, २ संक्रम, ३ अपकर्षण ४ उदीर्ण, ५ सत्व ६ उदय ७ उपशम ८ निधत्ति ९ निःकांचना, १० इन दश करणानि के नाम स्वरूप जिन जिन प्रकृतियों या गुण स्थानों में जैसे जैसे समवें उनका वर्णन।

(५) फिर पांचवां बंध उदय सत्व सहित स्थान समुत्कीर्थन नया अधिकार पृ० १००५ से पृ० ११५३।

मंगलाचरण, एक जीव के युगपत् संभवती बंधादिक प्रकृतियों का प्रमाण रूप स्थान या वहां प्रकृतियों के बदलने से हुए भंगनि का वर्णन। मूल प्रकृत के वंध स्थान। भुजा कारादि वंध विशेष का, भुजाकार अल्प तर अवस्थित अब कतंव्य रूप वंध विशेषों का स्वरूप का वर्णन। मूल पद्धति के उदय स्थान उदीर्णा स्थान, सत्व स्थानों का वर्णन । उत्तर प्रकृतियों के कथन में दर्शनावर्ण मोहनीय नाम की प्रकृति विशेष है तहां दर्शना वरण के वंध स्थानों का वर्णन। गुण स्थान अपेक्षा भुजा कारादि विशेष संभन का दर्शनावरण के गुण स्थान वंध स्थान उदय स्थान सत्व स्थान मोहनीय के वंध स्थान। प्रकृतियां नाम जानने को ध्रुवबंधी प्रकृत का, कूट रचना आदि का। प्रकृति बदलने से हुए भंगियों बंध स्थानों में संभव से भुजा करादि विशेषों का भुजा करादि के लक्षण सामान्य अवक्तव्य भंगियों की संख्या, भुजा कारादि संभवन का विधान, गुण स्थान में चढ़ना उतरना, इत्यादि का विशेषत्व। मोह के उदय स्थान। उनकी प्रकृति का विधान। संख्या। मिलाई हुई संख्या। गुण स्थान में संभव से उपयोग, योग, संयम, लेश्या, सम्यक्त्व उनकी अपेक्षा । मोह स्थान का प्रकृतियों का विधान संख्या आदि का अनंतानुबंधी रहित उदय स्थान। मिथ्यादृष्टि की अपर्याप्त अवस्था में न पाइये इत्यादि विशेष वर्णन, मोह सत्व स्थाननिका वर्णन का आ तहां प्रकृति घटने का और वह स्थान गुण स्थानों में जैसे संभवें उनका, और अनिवृत्ति करण में उसका वर्णन। नाम कर्म का कथन में आधार भूत इकतालीस जीव पद चौतीस कर्म पदों का व्याख्यान कर नाम के वंध स्थान का और वे गुण स्थानों में जैसे संभवे उनका और वे जिस जिस कर्म पद सहित वंध हैं उसका

और उनमें क्रम से नौ ध्रुव वंधी आदि प्रकृतियों के नाम का, तेईस केव आदि दे कर नाम के वंध स्थाननि विषै जो जो प्रकृति जैसे जैसे हैं उनका वर्णन। प्रकृति बदलने से हुए भंगियों का वर्ण हैं। यहां प्रसंग या स्वयं भूरमण समुद्र परै कूणानि विषै कर्म भूमियां तिर्यंच बाहर सूक्ष्म परियाप्त अपरियाप्त अग्निकायिक आदि जीव जहां उपजें उसका सूक्ष्मनिगोदस आप मनुष्य सफल संयमन ग्रह इत्यादि विशेष का अपर्याप्त मनुष्य जहां उपजें उसका वर्णन। भोग भूमि कुभोग भूमि के तिर्यंच मनुष्य, कर्म भूमि के मनुष्य जहां उपजें उसका वर्णन सर्वार्थ सिद्धि से लगाय भवनत्रिक देव जहां उपजै उसका वर्णन। च्यवन उत्पादक कह चौदह मार्गणा में गुण स्थान की अपेक्षा लिए जैसे जो जो नाम कर्म के वंध स्थान संभवें उनका वर्णन है। गति इन्द्रिय काय काय भोग वेद मार्गणा तो लेश्या अपेक्षा बंध स्थानों का कथन है। कषाय मार्गणा में अनंतानु वंधी आदि जैसे उदय होवै उसका या इनके देश घाती सर्व घाती, स्पर्द्धकनिका, सम्यक्त्व संयम घातने का वा लेश्या अपेक्षा वंध का स्थान कथन। ज्ञान मार्गणा में गति आदिक की थी अपेक्ष कर बंध स्थाननिका कथन है। संयम मार्गणा में सामायिकादिक के स्वरूप का अर संयता संयत विषै दो गति अपेक्षा, असंयम विषैं चार गति अपेक्षा वंध स्थानों का कथन है। निवृत्य पर्याप्त देव के वंध स्थान कहने को देव गति विषै जे जे जीव जहां पर्यंत उपजें उनका वर्णन। सासादन में वंध स्थान कहने जो जो जीव जैसे उपशम सम्यक्त्व को छोड़ सासादन हो उनका कथन। दर्शन मार्गणा में अति अपेक्षा बंध स्थान। लेश्या मारगणा प्रथमादि नरक। पृथ्वी में लेश्या संभवने का जिस जिस सेहनन के धारी जो जो जीव जहां जहां पर्यंत नरक में उपजें उनका नरकों में पर्याप्त निवृत्य पर्याप्त अवस्था अपेक्षा बंध स्थान का और तिर्यंच मे एकेन्द्रियादिक के वा भूग भूमियां त्रियंच जो जो लेश्या मिले उनका जो जो जीव जिस जिस लेश्या द्वारा तिर्यंच में उपजें उनका वर्णन। उनके निवृत्य पर्याप्त अवस्था में बंध स्थाननिका शुभाशुभ लेश्या का परिणाम, कषायनिके स्थान। चौदह लेश्या स्थान। बीस आयुबंध स्थान व लेश्याओं छबीस अंश। लेश्याओं के पलटने का क्रम। भूमीभूमि आदि तिर्यंचादि का वर्णन। मनुष्य गति में लब्धि अपर्याप्त, निवृत्य पर्याप्त दशाएं देवगति भव्य मार्गणा में वंध स्थानों का वर्णन। सम्यक्त मार्गणा तीर्थंकर सत्ता वालों के तद्भव अन्य भव अन्य भव में मुक्त होने का वर्णन। क्षायिक सम्यक्त्व विषै संभवतें वंध स्थानों का वर्णन। वेद सम्यक्त्व जिनके हो। प्रथमोपशम। द्वितीयोपशम सम्यक्त्व से जैसे वेदक सम्यक्त्व हो और तिनके जे वंध स्थान हों उनका वर्णन। सासादन मिश्र मिथ्यात्व जहां जहां जिस जिस द्रव्य संभवें और तहां जे वंध स्थान मिलैं उनका वर्णन है। नाम के उदय स्थानों का वरन। कर्माण, मिश्रा शरीर,

शरीर पर्य्याप्ति, उच्छ्वासपर्याप्ति भाषा पर्याप्ति इनपंच कालों के स्वरूप प्रमाणादिक। प्रकृतियों के बदल कर संभव मे अंगोंनका वर्णन। नाम के सत्व स्थाननिका वर्णन। जिन प्रकृतियों को उद्वेलना तिनके स्वामी इत्यादि का कथन। सम्यक्त्व देश संयम अनंतानुवंधी विसंयोजन, उपश्रेणी चढ़ना सफल संयम धरना, व उत्कृष्टयन जितनी वार हों इनका वर्णन। इकतालीस जीव यहां में सत्त्व स्थान संभवैं उनका वर्णन। त्रिसंयोगी ने स्थान वा अंगियों का वर्णन। मूल प्रकृति उत्तर प्रकृति। दर्शना वर्णन, वेदनीय वर्णन। गोत्र, आयु। आठ अपकर्ष में बंधने का वर्णन। वध्यमान, भुज्यमान आयु के घटने रूप अपवर्तन घात कदली घात का वर्णन। वेदनीय गोत्र आयु के अंग। मोह की स्थानानि की अपेक्षा अंग मोह का त्रिसंयोग, मोह के वंध उदय सत्व। नाम कर्म के स्थानोक्त अंग। गुण स्थानों और चौदह जो समासों में वंध स्थान वा सात्व स्थानादि का वर्णन।

(६) छठवां प्रत्यय अधिकार—पृ० ११५४ से ११६७ तक।

नमस्कार पूर्वक प्रतिज्ञा, चार मूल आस्रव, सत्तावन उत्तर आस्रवों का और जैसे स्थानों विषे संभवे उसका उसमें व्युच्छित्ति वा आस्रवों के प्रमाण नामादिक का वर्णन। पंच प्रकारों का वर्णन प्रथम प्रकार में एक जीव के एकें काल संभवै ऐसे जघन्यादि का वर्णन। दूसरे प्रकार में एक एक स्थान में आस्रव भेद वलेन से जितने प्रकार हों उनका वर्णन। तीसरे प्रकार में उन्हीं कूटों के अनुसार अक्ष संचारि विधान से जैसे जैसे आस्रव स्थानों के कहने का विधान रूप कूटोच्चारण। पांचवें प्रकार में उन स्थानों में अंगलाने का विधान। गुणस्थानों में संभवतः भानिकादि का वर्णन।

(७) सातवां भाव चूलिका नाम अधिकार—पृ० ११६८ से पृ० १२०६ तक।

नमस्कार पूर्वक प्रतिज्ञा करके भावों के गुण स्थान संज्ञा होने इस प्रकार कथन कर पंचमूल भावनिका, उनके स्वरूप का तेयन उत्तर भावनिका मूल उत्तर भावो में अक्ष संचार के विधान से प्रत्येक पर संयोगोद्विसंयोगो आदि अंग। जवादि संभवे भावो का वर्णन। एक जीव के युगपत् संभव से भावों का वर्णन। गुण स्थानों में मूल भावों के प्रत्येक पर संयोगी द्विसंयोगी आदि अंगनिका वर्णन। प्रत्येक त्रिसंयोगी, द्विसंयोगी आदि अंगलीन का गणित शास्त्रानुसार विधान। गुण स्थानों में मूलभाव। उत्तर भावों के अंग स्थान गत पदगत भेद से दो प्रकार। स्थानों की परस्पर संयोगी की अपेक्षा गुण्य गुणाकार क्षेयादि विधान से जैसे जिसे जितने प्रत्येक अंग और पर संयोगी में द्विसंयोगी आदि का भेद। गुण्य गुणाकार क्षेपका प्रमाण। पदगत अंग के दो भेदों (१) जाति मदजनव पदों का वर्णन। इन दोनों भेदों के स्वरूपादि का कथन। सर्व

पद भंग के दो भेद। उनके स्वरूपादि का वर्णन। तीन सौ त्रेसठ कुवाद के भेदों का वर्णन।

(८) आठवां त्रिकरण चूलिका नामा अधिकार—पृ० १२०६ से पृ० १२१६ तक।

मंगलाचरण करके कारणनिका प्रयोजन। अधकरण का वर्णन। उसके कालादि का वर्णन और वहां संभव से सब परिणाम, प्रथम समय संबंधी परिणाम। समय समय प्रतिवृद्ध रूप परिणाम वा द्वितीयादि समय संबंधी परिणाम व संबंधी परिणामों से खंड रचना कारि अनुकृष्ट विधान। खंडनि का वर्णन। अंक संदृष्टि व अर्थ अपेक्षा परिणामों का वर्णन समय समय प्रतिवृद्धि रूप परिणाम द्वितीयादि समय संबंधी परिणाम अनिवृत्ति करण में भेद नहीं इस लिये कालादि का वर्णन।

(९) नवमां कर्म स्थिति अधिकार—पृ० १२१७ से पृ० १२५४ तक।

नमस्कार पूर्वक प्रतिज्ञा करके अबाधा के लक्षण का व स्थिति अनुसार उसके काल का, वा उदीरणा अपेक्षा आबाधा काल का वर्णन है। कर्म स्थिति में निषेकनि का वर्णन प्रथमादि गुण हानि के प्रथमादि निषेकों वर्णन है। स्थिति रचना में द्रव्य, स्थिति गुण हानि, नाना गुण हानि, अन्योन्याभ्यस्त इनके स्वरूपादि का वर्णन। मिथ्यात्व कर्म की नाना गुण हानि अन्योन्याभ्यस्त जानने का विधान। 'अंत धरणं गुण गुणियं' इत्यादि करण सूत्रों द्वारा गुणकार रूप पंक्ति के जोड़ देने का विधान। गुण हानि दो गुण हानि के प्रमाण का वर्णन। विशेष जो चय उसके प्रमाण का वर्णन। अंक दृष्टि व अर्थ अपेक्षा। मिथ्यात्ववत् अन्य कर्मों की रचना अंक संदृष्टि अपेक्षा त्रिकोण यंत्र, इस यंत्र का प्रयोजन। निरंतर सांत रूप स्थिति के भेद स्वरूपादि का वर्णन। स्थितिबंध का कारण। स्थिति के भेद। अनुकृष्टि रचना। आयु कर्म का विधान। खंडो की समानता असमानतादि के अनेक कथन। अनुभाग बंध का कारण। अनुभागाध्यवसाय स्थानों का वर्णन। इन सब का प्रमाण। मूलग्रंथकर्त्ता के किये हुए ग्रंथ की संपूर्णता होते हुए ग्रंथ के हेतु का चामुंड राय राजा के आशीर्वाद का उसके द्वारा बनाए हुए चैत्यालय वा जिन बिंब का वीर मार्तंड राजा को आशीर्वाद का वर्णन है। फिर संस्कृत टीकाकार अपने गुरु का वा ग्रंथ होने के समाचार कहत है, उसका वर्णन।

---

(३) संदृष्टि अधिकार (पृ० १२५५ से पृ० तक)

(१) संदृष्टि चूलिका—पृ० १२२५ से पृ० १४४४ तक।

संदृष्टि अधिकार में प्रथम मंगलाचरण, देश प्रकार का कारण, प्रकृति बंधाय पसरण, स्थिति बंधाय पसरण, स्थिति कांडक. अनुभाग कांडक, गुणश्रेणी कालि इत्यादि। कई संज्ञाओं का स्वरूप वर्णन करके प्रथमोपशम सम्यक्त्व होने का विधान। प्रथमोपशम सम्यक्त होने के योग्य जीविका, पंचलब्धियों के नामादिक कह कर उनके स्वरूप का वर्णन। प्रायोग्यता लब्धि में जिस प्रकार स्थिति घटती है और वहां चार गति अपेक्षा प्रकृति बंधायसरण होता है उसका, स्थिति अनुभाग प्रदेश बंध का वर्णन है। करणलब्धिका कथन विषय तीन करणानि का नाम कान्नादिक कह उनके स्वरूप का वर्णन। अधःकरण में स्थिति बंधा पसरणादिक आवश्यक होता है उनका वर्णन। अपूर्व करण में चार चार आवश्यक तिनमें गुण श्रेणी निर्जरा का कथन। आकर्षण किया हुआ द्रव्य को जैसे उपरितन स्थिति गुण श्रेणी आयाम उदयावली में दिया है उसका वर्णन है। उत्कर्षण और अवकर्षण किया हुआ द्रव्य का विक्षेप और अति स्थापना का विशेष वर्णन। गुण संक्रमण जहां संभवै उसका वर्णन। स्थिति कांडक अनुभाग कांडक के स्वरूप प्रमाणादिक। स्थिति अनुभाग कांड कोत्करण काल का वर्णन—स्थिति अनुभाग सत्व घटाने का वर्णन। अनिवृति करण में स्थिति कांडकादि विधान। अंतर करण करने का और प्रथम स्थिति का वर्णन। अंतर करण का कालपूर्ण हुए पीछे प्रथम स्थिति काल का वर्णन। अंतरा याम काल प्राप्त हुए उपशम सम्यक्त्व होने का वर्णन। उपशम सम्यक्त्व का विधान। प्रथमोप सम्यक्त्व में मरण के अभाव का वर्णन। सासादन होने का कारण। उपशम सम्यक्त्व का आरंभ व निष्ठापन में जो जो उपयोग योग्य लेश्या उनका और उपशम सम्यक्त्व के काल स्वरूपादि का वर्णन है। क्षायिक सम्यक्त्व के विधानादि का वर्णन। स्थिति कांडादिक का वर्णन। मिथ्यात्व मिश्र मोहनी सम्यक्त्व मोहिनी विषैं स्थिति घटाने का कारण। संक्रमण होने का विधान वर्णन करके सम्यक्त्व मोहनी को आठ वर्ष प्रमाणास्थिति रहे अनेक क्रिया विशेष होने का वर्णन। गुण श्रेणी स्थिति कांडकादिक में विशेष हो उसका वर्णन। कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि होने का व वहां मरण होते हुए लेश्या वा उपजने व कृतकृत्या वेदक हुए पीछे जो क्रिया हों उनका वर्णन। क्षायिक सम्यक्त्व के विधान विषैं संभव सें तेतीस स्थानों में अल्प बहुत्व का वर्णन। क्षायिक सम्यक्त्व के स्वरूप का वा मुक्त होनि इत्यादि वर्णन है।

(२) लब्धिसार चूलिका—पृ० १४४५ से १६२४

चरित्र लब्धिका स्वरूप और भेदों का कथन। देश चरित्र का कथन। वेदक सम्यक्त्व सहित देश चरित्र जो ग्रहे उसे दो कारणों का वर्णन। एकांत वृद्धि देश संयत के स्वरूपादि। अधः प्रवृत्त देश संयत का वर्णन। स्वरूप काला-

दिक । देश संयम में काल के अलपत्व और बहुत्व का विवरण । जघन्य उत्कृष्ट देश संयम जिसके हो उसका वर्णन । देश संयम में स्पर्द्धक व अविभाग प्रतिच्छेद स्थाननिका, उनके पतिपात, प्रतिपाद्य पान अनुभव रूप तीन प्रकारों का वर्णन । सकल चरित्र का वर्णन । उसके क्षापाक्षमिक औपशामिक क्षायिक तीन भेदों का वर्णन । संकल संयत स्पर्द्धक का अविभाग प्रतिच्छेदों का कथन कर प्रतिपातादि का वर्णन । उपशम चरित्र का वर्णन । उपशम श्रेणी चढ़ने में द्वितीयोपशम सम्यक्त्वी को अवस्था । चारित्र मोह कर्म के उपशम करने में आठ अधिकारों का वर्णन । तोन करण का विधान बंधा पसरणादिक का रूप । उपशांत कषाय से पड़ने की विधि । उपशम श्रेणी चढ़ने वाले बारह तरह के जीवों की विशेष क्रियाओं का वर्णन ।

(२) क्षायिक चरित्र, पृ० १६२५ से १९०४ तक

चरित्र मोह की क्षपणा (नास करने) का विधान । अधः प्रवृत्त करण का वर्णन । अपूर्व करण का स्वरूप । गुण श्रेणी का स्वरूप । गुण संक्रम का स्वरूप । स्थिति खंडन का स्वरूप । अनिवृत्ति करण का स्वरूप । स्थिति बंधाय सरण का क्रम । स्थिति सत्त्वा प्रसरण का क्रम । क्षपणा का स्वरूप । देशघाति करण का स्वरूप । अंतकरण का स्वरूप । अंतकरण का स्वरूप । संक्रमण का स्वरूप । अपगत वेदी को क्रिया का स्वरूप । अनुभाग कांड के घात होने पर जो अवस्था हो उसका कथन । कृष्टि क्रिया सहित अपूर्व कर्ण क्रिया होने में यति वृषभाचार्य को सम्मति । बादर कृष्टि करण का कथन । पार्श्व कृष्टि का कथन । कृष्टि वेदना का कथन । संक्रमण द्रव्य का विधान । अनु समय अपवर्तन की प्रवृत्ति का कथन । स्वस्थान परस्थान गोपुच्छ रचना का विधान । दूसरा विधान । क्षीण कषाय नामा बारहवें गुण स्थान का स्वरूप । पुरुष वेद सहित श्रेणी चढ़ने वाले का स्वरूप । स्त्रीवेद सहित चढ़े जीवों के भेदों का वर्णन । नपुंसक वेद सहित चढ़े जीवों का कथन । क्षीण कषाय गुण स्थान के अंत समय का कथन । सयोग केवली गुण स्थान का वर्णन । चार घातियों के क्षय से चार गुणों का प्रगट होना । दुःख का लक्षण । इन्द्रिय जनित सुख का लक्षण केवली के इन्द्रिय जनित सुख दुःख नहीं होने में हेतु । दूसरा हेतु केवली के आहार मार्गणा होने में कारण । समुद्घात में कार्य विधान । समुद्घात क्रिया के समेटने का क्रम । बादर योगों का सूक्ष्म रूप परिणयन होने को अवस्था । अयोग केवली का कथन । चौदहवें गुण स्थान के अंत समय से पहले में तथा अंत समय में पचासी प्रकृतियों का (कर्मों का) नाश करने का कथन । ऊर्ध्व लोक के ऊपर मोक्ष स्थान का स्वरूप । इष्ट प्रार्थना । ग्रंथकर्त्ता को प्रशस्ति । अंत मंगल ।

No. 429(*b*). Moksha Mārga Prakāśa, by Todara Malajī of Jaipura. Substance—Country-made paper. Leaves—588. Size—$13\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—11. Extent—9,702 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Śri Jaina Mandira, (Bara) Bārābankī (Oudh).

Beginning—श्रों नमः सिद्धेभ्यः ॥ अथ मोक्षमार्ग प्रकाश नामशास्त्र लिख्यते ॥

दोहा ॥ मंगल मय मंगल करन वीत राग विज्ञान ।
नमो ताहि जाते भये अरहे तादि महान ॥ १ ॥
करि मंगल करिहों महा ग्रन्थ करन को काज ।
जाते मिलै समाज सब पावे निज पद राज ॥ २ ॥

अथ मोक्षमार्ग प्रकाशक नाम शास्त्र का उदय होय है । तहां प्रथम मंगल करिये है ॥ णमो अरहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्व साहूणं ॥ ३ ॥ यह प्राकृत भाषामय नमस्कार मंत्र ॥ सो महामंगल स्वरूप है ॥ बहुरि या का संस्कृत ऐसा होई ॥ नमो हितेभ्यः नमः सिद्धेभ्यः ॥ नमः आचार्येभ्यः ॥ नमः उपाध्यायेभ्यः नमो लोके सर्व साधुभ्यः ॥ बहुरि याका अर्थ ऐसा है ॥ नमस्कार अर्हंतन के निमित्त ॥ नमस्कार आचार्यन के अर्थ ॥ नमस्कार उपाध्यायन के अर्थ ॥ नमस्कार साधुनि के अर्थ ॥ ऐसा या विषय नमस्कार किया ।

End—प्रश्न-जो कोई सम्यक्ति जोवन की भो मर्थ ई गलांन आदि पाइ कर है ॥ अर केई मिथ्या दृष्टोन कै न पाइए है ॥ तातैंणिसंकता दिक अंग सम्यक कैसे कहो हो ॥ ताका उत्तर ॥ जैसे मनुष्य सरीर के हस्त पादादि अंग कहिए है तहां कोई मनुष्य ऐसा भो कोई ताकै हस्त पादादि विषय कोई न होई ॥ तहां वाके मुष सरीर तौ कहिए ॥ परन्तु जिन अंकनि बिना वह सोभायमान सकल कार्य्यकारी न होई ॥ तहां वाके मुष सरीर तो कहिये परंतु तिन अंगनि बिना वह सोभायमान सकल कार्य्य कारी न होय ॥ तैसे सम्यक के णिस्संकि तादि अंग कहिये है तहां कोई सम्यकी ऐसा भो तोय ॥ जाके निस्संकतत्त्वादि विषैं कोई अंक न होई ॥ तहां वाकै सम्यक तो कहिये परन्तु तिन अंकन विना वह निर्मल सकल कार्य्य कारी न होय ॥ बहुरि जैसे वांदरे कै हस्त पादादि अंग हो है । परन्तु जैसे मनुष्य के होय तैसे नहिं होई हैं कैसे मिथ्या दृष्टोन के भो विवहार रुपणिस्संकतादि अंक हो है । परंतु जैसे निश्चय । को सापेक्षा लियै सम्यको कै होई तैसे न होय है । बहुरि सम्यक्त विषे पचोस मत कहे है । आठ संकादिक मन । आठ पद । षट अनायतन । इति

Subject—प्रथम अधिकार (पीठिका)

(१) पृ० १ से पृ २० तक—मंगलाचरण

अरहंतादि को नमस्कार, नमस्कार किये जाने वाले सज्जनों का स्वरूप वर्णन। आचार्यों दिपदों की व्याख्या। पंचपरमेष्ठी पद की व्याख्या। २४ तीर्थंकरों को नमस्कार। अन्य विवादि को नमस्कार।

(२) पृ० २१ से पृ० ३८ तक विषय प्रवेश। सद् शास्त्रों की व्याख्या। श्रोता वक्तादि के गुण।

(३) पृ० ३९ से पृ० ४३ तक-उपस्थित ग्रंथ का सार्थकत्व। दूसरा अधिकार

संसार की अवस्था का निरूपण

(४) पृ० ४४ से पृ० ९० तक—कर्म बन्धन का निदान, जीव तथा कर्म सम्बन्ध का समय कर्मभेद, अनादि से धारा प्रवाह रूप द्रव्य कर्म व भाव कर्म की प्रकृति का वर्णन। नाम कर्म के उदय से शरीर होने का वर्णन। जीव तथा आत्मा का संबन्ध, जीव के चैतन्यादि गुणों का वर्णन। जीव की भिन्न भिन्न संज्ञाएं। चार प्रकार के कषाय का वर्णन। अनादि संसार संबंधी अघाति कर्मों के उदय के अनुसार आत्मा की अवस्था।

तीसरा अधिकार (संसार दुःख तथा मोक्ष सुख का नियम)

(५) पृ० ९१ से पृ० १४० तक—संसार के दुःखमय होने का वर्णन, दुःख का स्वरूप, उसका मूल कारण, इन्द्रियादि के सुख के मिथ्यात्व का वर्णन, दुःख का मूल कारण—इच्छा का होना। इच्छाओं की पूर्ति के लिये किये गये उपायों का मिथ्यात्व, दुःख तथा उसके कारणों के विनिष्ट होने का उपाय। संसार को छोड़ सिद्धि पद पाने का उपदेश।

चौथे अधिकार सेषष्ट अधिकार तक

(६) पृ० १४१ से पृ० १७० तक—संसारी दुःखों के जीव रूप मिथ्या दर्शन, मिथ्या ज्ञान तथा मिथ्या चरित्रों के स्वरूप का निरूपण। मिथ्या दर्शन के विशेषत्व का वर्णन। श्रद्धान को संसार के मोक्ष के बताए जाने का कारण अश्रद्धान का ही नाम मिथ्या दर्शन कथन। सब दुःखों का मुख्य कारण कर्म बन्धन का होना। मोक्ष की परिभाषा। संसारिक जीवन के मिथ्या दर्शन की प्रकृति के पाने का उपाय, मिथ्या दर्शन का स्वरूप, मिथ्या ज्ञान का स्वरूप। पदार्थों के इष्टानिष्ट न होने का कथन। जीव के राग-द्वेष का वर्णन।

सातवां अधिकार।

(७) पृ० १७१ से पृ० २५० तक—गृहीत मिथ्यात्वादिक का निरूपण। मिथ्या चरित्र की परिभाषा। इसी का विशेष वर्णन-ब्रह्म के अद्वैत को न मानते हुए

उस पर तर्क वितर्क। कर्त्ता का निषेध करते हुए वेदान्तियों के सृष्टि निरूपण तथा अन्य कितने ही कार्यों पर आक्षेप करते हुए कृष्णादि के चरित्रों की आलोचना। मायादि की कल्पना को मिथ्या ठहराना। मुसल्मान तथा हिन्दुओं के केवल एक ईश्वर पर वाले सिद्धान्त की समता दिखाते हुए उनका खंडन, वेदान्तियों द्वारा किए गये तत्त्वों के पंचीकरण को मिथ्या ठहराना। शाक्त तथा शैवों पर आक्षेप। वेद पूजकों के अनेक भेद पंथियों द्वारा अनेक मत समर्थन करने पर संपूर्ण को मिथ्या निश्चित कर केवल जैन धर्म ग्रंथों ही का वर्णन। वीतराग भाव की महिमा का वर्णन। अन्य मतों ग्रंथों तथा सिद्धान्तों के अनुसार ही जिन धर्म की प्राचीनता के सिद्ध होने का वर्णन। हिन्दुओं के सर्व प्राचीन ग्रंथ वेदों से भी जैन मत प्राचीन तम होने का प्रमाण। वेदों के सूत्रों के कृत्रिम होने का कथन। जिन तीर्थंकरों की उत्पत्ति इत्यादि पर किये गये कुछ आक्षेपों का स्वयं ही उपस्थित कर उनका उत्तर देना।

(८) पृ० २५१ से पृ० २७८ तक—जैन धर्म की दूसरी शाखा के मानने वाले श्वेताम्बरियों द्वारा भगवान के स्वरूप आदि पर किये हुए कुछ आक्षेपों के उत्तर। आहार विहार संबंधी कुछ समस्याएं। भगवान द्वारा किये हुए उपदेशों तथा इन्द्र कृत समवसरण के विषय में कुछ न समझ सकी जाने की भली बातों का संबोधन कराना। श्रावक शब्द की व्याख्या। श्वेताम्बर धर्म की शास्त्र कल्पना को मिथ्या ठहराना। मुनियों की याचना के सम्बन्ध में कुछ स्मरणीय बातें। गुरु तथा धर्म का स्वरूप। सम्यक् दृष्टि आदि के कहे हुए रूपों में से कुछ का मिथ्यात्व। श्वेताम्बर संप्रदायवालों पर कई आक्षेप श्वेताम्बर मत के सकारण त्याज्य होने का वर्णन।

यहां पर अन्य मत निरूपण समाप्त हुआ।

(९) पृ० २७९ से पृ० ३११ तक—गंगा इत्यादि तीर्थों पर किये जाने वाले पिंडादि का निषेध। सूर्यादि की पूजा का भ्रम बताना। जिन धर्मानुकूल की जाने वाली पूजा का महत्त्व। मिथ्या भेष धारण करने का निषेध, मुख्य भेष निरूपण, गुरु सेवन निषेध कुयुक्ति द्वारा गुरुओं को स्थापित करने वालों के मत का निरूपण। गुरु का मुख्य स्वरूप। कुधर्म का निरूपण।

मोक्षमार्ग प्रकाश—शास्त्र विषयक कुदेवादि निषेध वर्णन।

(१०) पृ० ३१२ से पृ० ३५० तक—जो जैन होकर भी इस धर्म में श्रद्धा नहीं रखते उनके विषय में कुछ वक्तव्य। ज्ञान की सद्भावना सदैव मानना। वर्णादिक रागादिक से आत्मा के भिन्न होने का कथन। शास्त्राध्यन। तपश्चरण इत्यादि के विषय में की गई कुछ शंकाओं के उत्तर। सम्यग्दृष्टि की सिद्धि के लिये

आध्यात्मिक शास्त्रों के अध्ययन की आवश्यकता आत्माचरण विषयक वृतादिक के साधनों का कथन। ज्ञान विना तप की असिद्धि का कथन। हिंसादि के त्याग का कथन। प्रतिज्ञा रूप वृत का कथन। वैराग्य व्याख्या। आत्मा के विषय में अनुभव करने का कथन। ध्यान की परिभाषा। पर द्रव्य-त्यागनोपदेश। पदार्थ सिद्धान्त कर मोक्ष में ध्यान लगाने का वर्णन। धर्मात्मा की परिभाषा, जिन आज्ञा मानना ही सच्चा श्रद्धान है। मिथ्या दृष्टि का वर्णन, उसकी पूर्ण व्याख्या।

(११) पृ० ३५१ से पृ० ३७७ तक—श्रद्धानी का लक्षण। किसी अभिप्राय विशेष को लेकर जो जैनी बन जावे उसके पापी होने के संबंध में शंका समाधान के साथ कुछ विचार धारा। विना समझे बूझे पूजा पाठ करने वालों के सम्बन्ध में कुछ कथन। इच्छा पूर्त्ति के लिये की जाने वाली भक्ति को रागरूप मानकर मोक्ष के लिये बाधक मानना और राग के उदय में भक्ति के न करने का उपदेश। मुनि का सच्चा लक्षण। मुनिभक्ति द्वारा शास्त्रभक्ति का निरूपण। जप तथा व्रत को ही मोक्ष मानने वालों की भूल और इस संबंध में कहे हुए जैन सिद्धान्त के ग्रंथों में कथित वृतादि पर जिज्ञासु की शंका और उसका समाधान। सिद्धपने इत्यादि की तुच्छता सिद्ध करते हुए वीतराग भाव ही की प्रशंसा करना।

(१२) पृ० ३७८ से पृ० ४४१ तक—केवल व्याकरणादि के ग्रंथों के अवलोकन में आयु को व्यतीत न करके तत्त्व ज्ञान की शिक्षा प्राप्त करने का उपदेश। प्रतिज्ञा के संबंध में कुछ उपदेश। प्राप्त पद के अनुसार ही क्रिया करने का उपदेश। चरित्र के (स. राग. वीतराग) दो भेदों का वर्णन॥ निश्चयन का निरूपण। व्यवहार के संबंध में कुछ कथन। निश्चय व्यवहार-मोक्ष मार्ग का निरूपण। तत्त्वज्ञ का अन्य क्रियाओं के अतिरिक्त भी सम्यक्त होने का कथन। सम्यक्त होने के प्रथम पंचलब्धि का कथन। क्षयोपशमादि पंच लब्धियों की व्याख्या। किसी के ख्यात चरित्र को पाकर भी मिथ्या दृष्टि होने और किसी के अंतर्मुहूर्त में ही कैवल्य ज्ञान हो सकने का कथन करते हुए परिणाम विगरने का ध्यान रखने का उपदेश। इस प्रकार यहां तक नाना प्रकार के मिथ्या दृष्टियों के कथन करने का उपदेश।

* जैन धर्मसहित अन्य धर्मावलंबी मिथ्या दृष्टि निरूपण पूर्ण *

(१३) पृ० ४८२ से पृ० ५१८ तक—मिथ्या दृष्टियों को मोक्ष का उपदेश। उपदेश का स्वरूप, उपदेश के चारों अनुयोगों का कथन। प्रथमानुयोग का प्रयोजन। इसी प्रकार अन्य तीनों अनुयोगों के प्रयोजनों का कथन। प्रथमानुयोग विषयक मूल कथा। अन्य तीनों प्रयोजनों के संबंध में कुछ कथा। इन अनुयोगों के

अनुसार उपदेश देने के प्रकारों का वर्णन। चारों अनुयोगों में दिये गये उपदेश, उपदेशों का जैन मतों से ही ग्रहण करने का विधान।

* मोक्षमार्ग विषय उपदेश स्वरूप प्रतिपादक नाम अधिकार पूर्ण *

(१४) पृ० ५११ से पृ० ५८८ तक—मोक्ष मार्ग के स्वरूप का कथन, मोक्ष से आत्म हित होने का कारण। शरीरादि के साथ वृथा मोह सिद्ध कर संसार को दुःख का हेतु सिद्ध करना। मोक्ष अवस्था के हितकारी होने का कथन, मोक्ष के उपाय करने का कथन, मोक्ष का उपाय काल लब्धि आप भवितव्य अनुसार बना है अथवा मोहादि का उपसमादि से बना है अथवा अपने पुरुषार्थ और उद्यम से बनता है। इस शंका का निवारण। मोक्ष के निमित्त क्रम से मोह के वध करने का कथन। उपदेश देने योग्य पुरुषों तथा उपदेशकों के कर्त्तव्य का कथन। मोक्ष का स्वरूप कथन। सम्यक् ज्ञान तथा ज्ञान चरित्र को एकी भाव हो को मोक्षमार्ग बतलाना। आत्मा का लक्षण। सम्यक् दर्शनादि का सच्चा लक्षण। 'तत्त्व' तथा 'अर्थ' को व्याख्या। सातों तत्त्वों के यथार्थ श्रद्धान के आधीन मोक्ष के न होने का वर्णन। अरहंतादि के श्रद्धान के सम्यक्त कथन। आत्म श्रद्धान का मुख्य लक्षण। सम्यक्त के भेद। दोनों भेदों का स्वरूप। पुनः सम्यक्त के दश भेदों का कथन। फिर सम्यक्त के तीन भेदों का कथन। उन के स्वरूप। संजोजन विसंजोजन का कथन। सम्यक्त के विरोध तथा अभाव में कहे गये वचनों के उत्तर देकर सात प्रकृतियों के उपसमादिक से सम्यक्ति के उत्पन्न होने का कथन। सम्यग्दर्शन के आठों अंगों का वर्णन। उनके नाम तथा स्वरूप का वर्णन। पुनः अंत में सम्यक्त विषयक पचास गुणों का केवल कथन।

इति ग्रंथ समाप्ति।

No. 429(*c*). Triloka Sāra, by Todara Mala of Jaipur. Substance—Country-made paper. Leaves—814. Size—13½ × 6 inches. Lines per page—11. Extent—13,431 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1901 Samvat or A.D. 1844. Place of deposit—Sri Jaina Mandīra (Bara), Bārābankī (Oudh).

Beginning—॥ ६० ॥ ओं नमः सिद्धेभ्यः ॥ अथ त्रिलोक सार नाम ग्रंथ की भाखा टीका लिषिये हैं ॥ दोहा—त्रिभुवन सार अपार गुन ज्ञापक नायक संत। त्रिभुवन हितकारी नमो श्री अरहंत महंत ॥ १ ॥ तीन भुवन के मुकुट मणि गुण अनन्त मय शुद्ध। नमो सिद्ध परमात्मा वीतराग अविरुद्ध ॥ २ ॥ तीन भुवन तिथि जानि के आप आप मय होय। परते भये विरक्त अति नमो महा मुनि

सोय ॥ ३ ॥ तीन भुवन मन्दिर विषैं चैत्य चैत्य ग्रह सार । तें सब बन्दौं भाव जुत सुभकारन सुखकार ॥ ४ ॥ तीन भुवन मन्दिर विषैं ग्ररथ प्रकासन हार । जैन बचन दीपक नमो ग्यान करन गुण धार ॥ ५ ॥ ऐसे मंगल रूप सब तिनके वन्दौं पांय । अब कछु रचना कहत हौं नाना विधि सुखराय ॥ ६ ॥ मंगलाचरन करि श्री मत् त्रिलोक सार नामा शास्त्र की भाषा टीका करिये है । इस ग्रंथ की संस्कृत टीका पूर्वे भई है सो वह संस्कृत गणितादिक के ज्ञान विना तिस विषैं प्रवेस होय सकता नहीं ॥ तातें स्तोक ज्ञान वालो कैं त्रिलोक के स्वरूप का ज्ञान होने के अर्थ । तिसही अर्थ कूं भाषा करि लिखिये हैं । जा मेरा कर्त्तव्य कछू है नाहीं । जा किछू क्षयोपसम ज्ञान के अनुसार तिस सास्त्र का अर्थ जान ॥ धर्मानुराग करि व्याख्या करें ॥

End—

कोई ऐसा जानैगा कै भगवान के तो इच्छा नाहीं । इच्छा विन कैसे डगि भरे ग्रोर कैसे उठे बेठे ॥ ताका उत्तर ॥ भगवान के इच्छा नाहीं इहां तो सत्य ॥ परंतु भगवान के सरीरादि चारि अघातिया कर्म वैठा रहै ताका निमित्त करि मनुष जन काय योग पाइये हैं । तासू भगवाण कै मनुका परेसा का चंचल पनो । वा वानी का खिसा ॥ वा सरीर का नेटना वर डग भरना संभवै है । यामैं दोष नाहीं ॥ ठोर ठोर ग्रंथन में कहा है । बहुरि मुनि अर्थ का श्रावक श्रावना । ग्रोर मनुष्य वा तिर्यंच भूमि में गमन करै है ॥ ग्रोर चारि जातिन के देव व विद्याधर ग्राकास में भगवाण के निकाद वाद्र राग मना करै हैं ॥ भावार्थ ॥ इन्द्रादिक केई देव निज भक्ति है ॥ तेतो भगवान के समीप भगवाण की सेवा करता जाइ है । पर देवां का वृंद कहिये समूह घनां ॥ ताते भगवाण ताईं पहुंचि सकै नाहीं ॥ ग्रोर कोई देव तो भगवान के ऊपर छत्र किया जाइ है ॥ केई देव चोपदार कीसी ना हाथां मैर तन मई छड़ी वा ग्रासा वा गुर्राछ इत्यादि रिप्या निमित्त विनय संयुक्त देवांकूं ग्रटो उठो करता चल्या जाय है केई देव स्तुति करता चला जाय है ॥ पर भगवान दिसा ईच्छं द्रष्टि करि हालता जाय है । इत्यादि ग्रनेक प्रकार मंगलीक कीयं विहार समै विषै वनै है । ताका वर्णन करना समर्थ हम नाहीं ॥ ग्रोर ग्रागे इन्द्रादिक देव समैा सरन ग्रगाऊं पूर्वोक्त वे है । ताविषैं भगवान जी स्थित करै है ग्रैसो विहार वर्णन जानना । ग्रैसे विहार सहित समोसरया का वर्णन संपूर्ण । ॐ नमः सिद्धेभ्यः संवत १९०१ ।

Subjeet—टीकाकार लिखित विषय ।

(१) पृ० १ से पृ० १० तक—भूमिका ।

(२) पृ० ११ से पृ० २४ तक—सूक्ष्म सूचनाकार विवक्षित विषय विभाग के अनुसार ॥

(३) पृ० २५ से पृ० ८२ तक—त्रिलोक सार का परिशिष्ट भाग—गणित ज्ञान रहित जीवों के निमित्त प्रयोजन मात्र शास्त्रोक्त गणित विधानों का कुछ वर्णन। मूल ग्रंथ में कथन किये गये नामों इत्यादि के समझने के लिये पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या। गणित के भेदोपभेद का सूक्ष्म वर्णन तथा पाठकों के व्याख्या के समझने में सहायक होने के अभिप्राय से अनेक उदाहरणों का समावेश।

(१) (मूल ग्रंथ प्रारंभ) लोक सामान्याधिकार।

(१) पृ० ८३ से पृ० २७५ तक—मूल शास्त्र का मंगलाचरण। पंच अधिकारों में विवर्णित विषयों की सूक्ष्म सूचनिका। सर्व आकाशों के अन्तर्गत लोकाकाश का वर्णन; लोक का स्वरूप तथा आकार। प्रसंगवश 'राजू' इत्यादि का वर्णन। उसके लौकिक मान के अंतर्गत संख्या मान के जघन्य संख्यातादिक इक्कीस भेदों का वर्णन। जघन्य परीत असंख्यात का ल्यावने को कुंडनिका क्षेत्र फल। सरसों प्रमाण बतलाने को खात क्षेत्रफल। सूची क्षेत्रफल सरसों का वेध इत्यादिकों का कारण करण सूत्र। श्रुत ज्ञानादिक के विषयों के प्रमाण का वर्णन। संख्या मान के विशेष ज्ञान के अर्थ सर्व आरवादि चौदह धाराओं का वर्णन। उनके स्थान, अनुक्रम और जिस धारा के स्थान के वर्णन में जिसका प्रमाण आवे उसका और सब स्थानों के प्रमाणों का वर्णन। उनमें द्विरूप वर्ग आदि तीन धारा है तिनके स्थाननि का विशेष वर्णन। द्विरूप वर्ग धारा का कथन के अनंतर अर्द्ध छेद वर्ग शलाका जानने के कारण सूत्र और द्विरूप घनाघन धारा विषयक अग्नि कायक जीवों का विशेषतया प्रमाण कथन। उपमा मान के पल्यादिक आठ भेदों का वर्णन। पल्य के रोमों की संख्या जानने के लिये सूक्ष्म खात फल करने के कारण सूत्र का और रोम अंगुलादिक के प्रमाण की उत्पत्ति के अनुक्रम का वर्णन। अक्षर संज्ञा से अंक जानने का भाषा में उक्तं च सूत्र वर्णन। सागरोपम को सार्थक बतलाने के लिये लवण समुद्र के क्षेत्र फलादि का वर्णन। सूच्यं गुलादिक का वर्णन। उनके तथा अर्ध छेदादि के विधान के जानने को करण सूत्र कहते हैं। लोक के व्यासादिक का और जहां जितना व्यास पाया उसका वर्णन। अधोलोक का आठ प्रकार का और ऊर्द्धलोक का पांच प्रकार का क्षेत्रफल वर्णन। लोक की परिधि का वर्णन। उसमें करणादिक जानने के कारण सूत्र। वात बलयनि का वर्णन है। उसी के अंतर्गत उनके करणादिक का और उनकी जहां जैसी मोटाई है उसका इनसे जितना स्थान रुका हुआ है उसका वर्णन। तनु वात वलय में सिद्ध के विराजने और अवगाहन का वर्णन। त्रसनाली के स्वरूप स्थान प्रमाणादिक का वर्णन। उसके अधो भाग में स्थित सात पृथिवियों का नाम वर्णन। प्रथम पृथ्वी के तीन भागों के नाम, मुटाई का प्रमाण, पहिले भाग में सोलह पृथिवियों के स्थित

होने तथा उनके नाम का और तीनों भागों के निवासी तथा छः पृथिवियों की मुटाई का वर्णन। पहिली पृथ्वी का तृतीय भाग और छः नीचे वाली पृथिवियों के अंतर्गत नारकियों के विल होने का वर्णन। उन पृथिवियों में पटल, विल, वहां के शीतोष्ण विलों और इन्द्रादिक विलों की संख्या का वर्णन। इन्द्र के विलों के और उनके समीपस्थ जो श्रेणी—वद्ध हैं उनके नामों का कथन। श्रेणीवद्धों की संख्या लगावने के कारण कुछ सूत्र। प्रकीर्णकों की संख्या। विलों का विस्तार और वाहुल्य और अंतराल का वर्णन। पृथ्वी के अंत इत्यादि पटलों अंतराल और विलों का तिर्यक अंतराल और आकारादि का वर्णन। वहां दुर्गन्धता का और उपजने के स्थान का और उन स्थानों के प्रमाण का वर्णन। उनके उपजने के स्वरूप का और वहां यदि उछलने के प्रमाण का और नवीन पुराण नारकियों का कर्तव्य कथन और उन विलों में कूट पर्वत नदी इत्यादि जो पाये जाते हैं उनका और वहां के नारकियों की प्रवृत्ति का और वाह्य दुःख साधन का, उनके दुःख का आहारादि का और तीर्थंकर सत्त्ववालों का जब दुःख निवारण होता है उसका और नारकियों के दुःख भेद तथा मरण का वर्णन। नारकियों के अवधि क्षेत्र का वर्णन। नारकी निकल कर जहां उपजें और जो पद न पावें और जो जीव जिस पृथ्वी में उपजें उसका और उनके क्लेशाधिक्य का वर्णन। नरकों के वर्णन के पश्चात् लोक का वर्णन समाप्त हुआ।

(२) भावनाधिकार पृ० २७६ से पृ० २९६

मंगलाचरण। भवन वासियों के कुल भेदों के नाम। उनके इन्द्रों के नाम। उनकी पारस्परिक ईर्ष्या का वर्णन। असुरादि के चिह्न। चैत्य वृक्षों के भेद। प्रतिमा मान स्तम्भादि। उनके भवनों की संख्या, स्वरूप तथा स्थानों का वर्णन। देवों के इन्द्रादिक दश भेद। उनके संभव का वर्णन। भवन वासियों में इन्द्रादिक दश भेदों का वर्णन। सेना की संख्या लाने को गुणकार रूप जो, स्थान तिनके जोड़ देने के कारण का सूत्र कथन। इन्द्र तथा अन्य देवों के प्रमाणादिक का वर्णन। भवन वासी केतरनि की आयु का वर्णन। भवन वासियों के कुल और उनकी देवी, उनके अंगरक्षकादि की आयु का विशेष वर्णन। उन कुलों में उश्वास तथा आहारादि का अनुक्रम और उनके शरीर की ऊंचाई का वर्णन।

(३) व्यंतर लोक का अधिकार। पृ० २९७ से पृ० ३१७ तक।

उनके प्रमाण का गर्भित मंगल कर उनके कुलों का, उन कुलों के भेदों का वर्ण का, चैत्य वृक्ष का और वहां की प्रतिमा तथा मान स्तम्भादि का वर्णन। उनके कुल भेदों में जो भेद हैं, उनका, कुलों के इन्द्रों की देवियों के प्रमाण का, और कुल भेदों में जो भेद हैं और उनमें जो इन्द्र और इन्द्रों की महादेवियां हैं उनके नामों का वर्णन। इन्द्रों के नाम कथनोपरान्त उनकी गणिका महत्तरियों के

नाम और सामानिकादि देवों की संख्या और अनीक के विशेष वर्णन। इन्द्रों के नगरनि का स्थान नाम आयाम का और तिनके कोटादि का वर्णन। गणकाओं के नगरनि का और कुल भेद अपेक्षा स्थानों का वर्णन। नीचोपपादापादिवान व्यंतरनिका स्थान। नाम तथा आयु का वर्णन। व्यंतरनि के रहने के बिलयों के भेद का, व्यंतरनि के सर्व क्षेत्र का, निलय जिस प्रकार पाये जाते हैं उनका, निलियों के व्यासादि का वा स्वरूप का और व्यंतरनि के आहारा उश्वास का वर्णन। तृतीयोधिकार पूर्ण हुआ।

(४) ज्योतिर्लोकाधिकार पृ० ३१८ से पृ० ४८० तक।

ज्योतिष्क निंबों का प्रमाण गर्भित मंगल करके ज्योतिष्कों के पांच भेद कह कर प्रसंग पाकर उनके आधार भूत कितने ही द्वीप तथा समुन्द्रों के नाम कह कर सर्व द्वीप समुद्रों को वलय व्यास सूची व्यास लाने क विधान तथा प्रमाण का और उनको वादर सूक्ष्म और वादर सूक्ष्म क्षेत्रफल लाने का, विधान प्रमाणादिक का जंबूद्वीप के समान औरों के खंड प्रमाण लाने का विधान, समुद्रों के रसादिक विशेष का और उनके विषै भाेग भूमि, कर्म भूमि क्षेत्र के विधान का कर्म भूमि विषै उत्कृष्ट अवगाहना लिये एकेन्द्रियादिक जीवों के प्रमाणादिक का आयु वा वेदों का वर्णन। इन प्रासांगिक वर्णनों के पश्चात ज्योतिष्कनि का स्थान का, तारानि का अंतराल का, निंबों के स्वरूप का, चौड़ाई मोटाई के प्रमाण का, किरणों के प्रमाण का, चन्द्रमा की वृद्धि हानि होने के विशेष निंबों के चलाने वाले देवों के प्रमाण का, गमन करने के विशेष का, जंबू द्वीपादि में उनके प्रमाण का वर्णन। प्रसंग वश राग के अर्द्ध छेद पड़ने के स्थान कह कर सर्व ज्योतिष्कनियों के प्रमाण का वर्णन। एक चन्द्रमा के परिवार के प्रमाण का अट्ठासी ग्रहों के नाम का, जंबू द्वीप के तारों को विभाग का, चन्द्रमा सूर्य का अंतराल व चार क्षेत्र का और दिन रात्रि के परिमाण के हानि के विधान का, उसमें ताप तम फैलने का, और सूर्य देखने का इत्यादि अनेक वर्णन है। इसके पश्चात् चन्द्रमा सूर्य ग्रहों के नक्षत्र भुक्ति लाने का विधान। अयन तिथि मासादिक का विधान नक्षत्रों के तारा आकारादिक का वर्णन। चन्द्रमादिक के आयु का और देवियों का वर्णन है।

(५) वैमानिक लोक का वर्णन पृ० ४८१ से पृ० ५४० तक।

मंगल करने के पश्चात् स्वर्गादिक के नाम का स्थान और वहां स्थिति विमानों की गणना, नाम स्थान और उनके विस्तारादि का प्रमाण, वर्ण आधार और इन्द्रियों का स्थान वा चिह्न इन्द्रियों का नगर आवासादिक और इन्द्रियों के स्वामीन्यादिक दोनों कारण। और नगरों में विशेष रचना। इन्द्रादिक की देवी आदि का प्रमाणादिक और इंद्र वा देवांगनाओं के उत्पन्न होने का स्थान। वैमानिकों के

प्रवीचार किया अवधि-ज्ञान, अंतराल और तहां उत्पन्न होने वाले जीव और उनकी आयु का वर्णन। लैाकान्तिक देवों का स्थान, कुलादिक और देवियों की आयु, देवों के शरीर उश्वास, आहारादिक का प्रमाण और स्वर्ग में आने जाने वाले जीव, एका भवतारी जीव, शलाका पुरुषों की आगति। देवों के उपजने रहने का विधान फिर सिद्धों के स्थान स्वरूपादि अनेक वर्णन हैं।

(६) मनुष्य तिर्यग्लोक का अधिकार। पृ० ५४१ से पृ० ८१४ तक।

मंगल पश्चात् पंच मेरुओं का स्थान कह कर भरतादि क्षेत्र और हिमवान आदि कुलाचल और कुलाचलों के ऊपर, द्रह, अहनि में कमल, कमलों के ऊपर भेद मंदिरों में परिवार सहित वसती देवी और द्रहों ते निकली गंगानदी और नदी के पड़ने के कुंड और नदियों का गमन और समुद्र में प्रवेश द्वारादिकों का स्वरूप स्थानादिक का वर्णन। क्षेत्र कुला शलाानि का प्रमाण। लाने का विधान कह कर मेरु गिरि और उसके वन और बनों में मंदरादिक तिनके प्रमाण स्वरूपादिक का वर्णन। परिवार सहित जंबू आदि दश वृक्षों का स्थान स्वरूपादि वर्णन। भोग भूमि तथा कर्म भूमि के विभाग और यमक गिरि और सीता, सीतोदा में वीसद्रह, और उनके निकट कांचन गिरि और दिग्गज पर्वत तथा गजदंत पर्वतों का वर्णन। विदेह क्षेत्र के दशों विभाग का और वक्षार गिरि विभंगा नदी देवारण्य वन तिनका वर्णन। विदेह क्षेत्र के गंगादिक उपसमुद्र और मागधादि तीन देव और तहां वर्षादिक प्रवृत्ति और तीर्थंकरादि होने की संख्या का वर्णन। प्रसंगवश चक्रवर्त्ति राजादिक, और तीर्थंकर की विभूति का वर्णन। विदेह देशों के नाम उनके षट खंड, विजयार्द्ध नदी तथा मंदिरों के स्थानादिक का वर्णन। विजयार्द्ध की श्रेणी में नगरादिक तथा म्लेच्छ खंड, विषै वृषभाचल होने का वर्णन। आर्य्य खंड में राजधानी के नगरों का वर्णन। भोग भूमि विषै तिष्ठते नाभि गिरिन का स्थान प्रमाणादिक और कुलाचलों के कूट और वनादिक का वर्णन। जंबूद्वीप के पर्वत, नदी की संख्या और उनकी वेदियों की संख्या का वर्णन। भरत ऐरावत विजयार्द्ध के कूट और गजदंतों के कूट और वक्षार गिरिन के कूटनिन का नाम, प्रमाण, स्थानादिक और उन कूटों के ऊपर वसने वालों के नामादि का वर्णन। पूर्व पश्चिम अपेक्षा मेरु आदि का व्यास वर्णन। धातुकी खंड पुष्करादि विषै मेरु भद्र शाल विदेह देश गजदंत हैं उनके व्यासादि का वर्णन। जंबूद्वीप विषै देव कुरु उत्तर कुरु और कुलाचल और क्षेत्र; भरत ऐरावत संबंधी विजयार्द्ध तिनका धनुः एक वाण जीवा वृत्त निष्कंभ चूलिका पार्श्व भुजा का प्रमाण। अनेक प्रकार जीवादि लाने के कारण सूत्रों का वर्णन। भरत ऐरावत क्षेत्र में कालादिक पलटनि होने का वर्णन। और वहां जैसी प्रवृत्ति होती है उसका वर्णन, इस भरत क्षेत्र में इस अवसर्पिणी काल में

चौदह कुलकर, चैवीस तोर्थंकर, बारह चक्रवर्त्ति, नव नारायण प्रति नारायण, वलभद्र और ११ रुद्र उनका नाम आयु आदिक का वर्णन। उन लोगों के होने का समय, तीर्थंकर का वेश वर्ण का दुखमा काल में शक और कल्की होता है उसका और आदि अंत के कल्कियों के कर्त्तव्य। दुखमा काल के अंत में धर्मादि नाश होने का कथन। दुखम दुखमा काल की प्रवृत्ति का और उसके अंत में प्रलय होने का वर्णन। दुख समय किन्ही युगल के बचने का और फिर दुखमा काल होवे उसके उसके अंत में चौदह कुलकरों और दुखम सुखमा काल विषैं तीर्थंकर चक्रवर्त्ति नारायण प्रति नारायण बलभद्र होते हैं उनके नामादिक का और जहां जैसा काल अवस्थित है और म्लेच्छ खंड में जैसे काल पलटता है उसका वर्णन। द्वीप तथा समुद्रों के अंत में चौगिरदा जो वेदी है उसका वर्णन। इस प्रकार जंबूद्वीप के वर्णन के पश्चात् लवण समुद्र का वर्णन है। वहां उसके अभ्यंतर पाताल हैं तिनका और उसके जल की ऊंचाई के बढ़ने घटने का वर्णन, उनके व्यास का, उसके जल का, चन्द्रमा सूर्य के अंतरालादिक का और पातालों के अंतराल का, उस समुद्र में वेलंधर नाग कुमार रहने हैं उनका और पर्वतादिक हैं उनमें देव रहते हैं तिनका और द्वीप है तिनमें वेलंधरन रहते हैं उनका, तीन द्वीप रहते हैं उनका उनमें रहने वाले मागधादि देवों का। द्वीपों में बसने वाली कुभोग भूमियों का, उनके स्थान नाम तथा प्रमाणादि का वर्णन है। घातकी खंड पुष्करार्द्ध का वर्णन। वहां चार इक्ष्वाकार पर्वतों का और वहां स्थित कुलाचलादिकों के प्रमाण कुलाचल क्षेत्रों के आकार और उन द्वीपों की परिधि का प्रमाण वर्णन कर कुलाचल क्षेत्रों के व्यास का, और विदेह देशादिक के आयाम का और कुरु वृक्ष तथा नदियों के गमन विशेष का वर्णन। मानुषोत्तर पर्वत के प्रमाणादिक का और उसके ऊपर कूट है जहां देवादि निवास करते हैं तिनका वर्णन। कुंडलगिरि, रुचक गिरि का स्थान प्रमाणादिक का और तिनके ऊपर कूट हैं उनका और उनपर बसे हुए जीवों का वर्णन। द्वीप तथा समुद्रों के स्वामियों का वर्णन। नंदीश्वर द्वीप में बावन पर्वत उनके ऊपर चैत्यालय, सोलहवा वड़ी तथा चौंसठ वनों का वर्णन। उनके स्थान तथा प्रमाणादिक का वर्णन। देवों द्वारा वहां होने वाले अष्टाह्निक पर्व का महोत्सव और चैत्यालयों के जघन्यादि प्रमाण का वर्णन। चैत्यालयों की अनेक रचनाओं का वर्णन। जिन बिंब के स्थल स्वरूप का वर्णन। अंत में मंगल कर के कर्त्ता का नाम सूचन करके पंच परम गुरु से अभीष्ट फल की प्रार्थना करके ग्रंथ समाप्त किया जाना। अंत में कई समाचार कह कर ग्रंथ को समाप्त करना। ग्रंथकर्ता का नामः—

इदि णेमिचंद मुणिणा अप्प सुदेणा भयणंदिवच्छेणा। रइयो तिलोय सारो खमंतु ते बहु सुदाइरिया॥

अर्थ—इस प्रकार करि अल्प श्रुत ज्ञान का धारी और अभयनंदि नामा सिद्धांत चक्रवर्तिकावत्स शिष्य ऐसा नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती आचार्य्य ताकरि यहु त्रिलोक सार नामा ग्रंथ रच्या है ताको बहु श्रुत धारक आचार्य्य हैं ते कहीं चूक भई होइ तहां क्षमा करो ।

No. 430. Śalihotra, by Trivikramaseta. Substance—Country-made paper. Leaves—40. Size—11 × 6 inches. Lines per page—20. Extent—600 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—1694 Samvat or A.D. 1637. Place of deposit—Plaṇḍitā Gaṇgā Sahāya Bājapai, Alīpore, Rāe Barelī.

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ सालिहोत्र अस्व वर्णन लिष्यते । दोहा ॥ जद्यपि पंडित मंडली मंडित सभा अनूप । बोल बोध तिन भाषहो कहै त्रिविक्रम भूप ॥ भानु तनै छाये हृदै नंदन तुमरे वंत । करि प्रणाम विनती करौं होहु प्रसन्न तुरत ॥ तुरंग देव पशु सब कहै तामे जो गुण दोष । ताहि प्रगट करि कहत हौं सुनहु संत तजि रोष ॥ चौपाई ॥ पोंठ पच्छवंत सब बाजो । चलहि व्योम-गंधर्व समाजो । तीनि लोक मंह जो कछु अहई सो तुव आसहु भिन्न न रहई । देषा सक्र वेग जुत वाहा । सालिहोत्र मुनि ते तब काहा । विनती मोर चित्त मह धरहू । वाहन होय तुरय सो करहू । जद्ध माहि पति दैत्य जुझारा । वारन ते नहि होय सभारा । मुनि विनती वासव कै राषी दया छांडि काटी हय पांखी ।

End—सम्वत्सरे निगम[४] नन्दु[९] रस[६] न्दु[१] सुके वैसाष शुक्ल दसमी सुतिथा व पूरि हम्मीर सेन । तनयेन गुणोज्वलेन श्रीमद् त्रिविक्रमसेन हयेपरोक्षा ।

दोहा ॥ जुग[४] नव[९] रस[६] ससि[१] वर्ष भृग । दशमी माधव मास । शुक्लपक्ष विक्रम कियो तुरप चिह्न परकास । त्रयविक्रम हम्मीर सुत हर प्रिय सेवक भूप । तुरप वंश सुष हेतु लगि भाष्यौ ग्रन्थ अनूप ॥

अस्व परीक्षाने भाषा त्रिविक्रम सेन विरचित विरचिते द्वैसो तितिध्यय ।

दोहा—महाराज अर्जुन नृपति । सालिहोत्र रुचिमान । पंडित रामदयाल सों सुधवायो हितजानि । तेहि गंगाप्रसाद पुनि अति हर्षाई । दोहा छप्पै चौमदो दीन्हो सुलभ बनाइ । सोम दशमि वदि क्वार रहन भवसु वसु सोस सवर्ष । नकल ताहि प्रति तें कियो वंसोधर जुत हर्ष । सोरठा ॥ रच्यौ त्रिविक्रम राय सालिहोत्र वरनन तुरय । असोदोय अध्याय दोहा सत्रह पंच सत । इति शालिहोत्र समाप्तः

Subject—

पृष्ठ १—राम स्तुति, अश्वों की पर विहोन होने को कथा ।

पृष्ठ २—अश्वदेश उनकी प्रकृति और जाति परीक्षा ।
पृष्ठ ३—अश्व शुभाशुभ लक्षण और अंग परीक्षा ।
पृष्ठ ४—घोड़ों की भैांरी का वर्णन ।
पृष्ठ ५—अश्व के रंगों का वर्णन ।
पृष्ठ ६—अश्व के तिल, बुंदा, नाद, स्वभाव की परीक्षा विधि ।
पृष्ठ ७—घोड़ों के उत्पात स्वेद गंध और अंगप्रमाण का वर्णन ।
पृष्ठ ८—अश्व की आयु और दंत परीक्षा का वर्णन ।
पृष्ठ ९-१०—अश्व की छः ऋतुओं में पोषण करने की विधि वर्णन ।
पृ० ११—घोड़े के शिर दर्द की परीक्षा और उसकी औषधो—नस्य औषधि,
पृ० १३—गर्भवती घोड़ी की परीक्षा का वर्णन ।
पृ० १४—वात पित्त कफादि उत्पत्ति और उनके प्रलेप का वर्णन ।
पृ० १५—घोड़ों के मुख और नेत्रों की चिकित्सा ।
पृ० १६— ,, तिमिर जल प्रवाह और रक्त आदि की चिकित्सा ।
पृ० १७— ,, नेत्र पटल और मुंजा नेत्र चिकित्सा ।
पृ० १८ ,, स्वांस, कास और सन्निपात रोग की चिकित्सा ।
पृ० १९— ,, घोड़े के कृमिरोग और कर्ण रोग की चिकित्सा
पृ० २०— ,, पित्तकास और श्लेषकास की ,,
पृ० २१— ,, त्रिदोष और व्रण रोग की ,,
पृ० २२ ,, पित्त दोष की ,,
पृ० २३ ,, व्रण रोग और पद रोग की ,,
पृ० २४ ,, वात, पित्त और कफज्वर की ,,
पांव लंग की ,,
पृ० २५—अतीसार रोग ,, ,,
पृ० २६—शूल ,, ,, ,,
पृ० २७—कृमि और मूत्र ,, ,,
पृ० २८—पथरी, कृत् और सोथ रोग ,, ,,
पृ० २९-३०—वात पित्त कफ अंड रोग की ,, ,,
पृ० ३१—वात पित्त कफ उदर रोग की ,, ,,
पृ० ३२—वातोत्कर्ष रोग की ,, ,
पृ० ३३—ग्रीवा रोग की
पृ० ३४—घोड़ों के उन्माद रोग की चिकित्सा
पृ० ३५— ,, अलंग
पृ० ३६ सोष त्रिदोस दयुन सोपत्रिरोख रोग

पृ॰ ३७—विषसाधविषं माध्यालय को चिकित्सा

पृ॰ ३८—४० नाम पते वात पित्तकफ के अन्य रोगों को चिकित्सा।

No. 431. Hanumāna Tīkā, by Tulasī. Substance—Country-made paper. Leaves—5. Size—7 × 4½ inches. Lines per page—20. Extent—60 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—M. Brajalāla, post Office Jagadīśpur, District Rāe Barelī.

Beginning—श्री गणेशायनमः हनुमन टीका लोषतेः॥ तुलसीकृत रामदूत को जैः॥ दोहा॥

बरनो आदी भवानी जग मग्रा सुष धाम।
क्रोपा करो जन जानो कै होई सोध्य सव काम॥ दोहा
वीर वषानो पवन सुत जनत सकल जहान।
धन्य धन्य अंजनी तनै संकट हरो हनुमान॥
जै जै हनुमान अणंगी। जै जै महावीर वजरंगी॥
जै जग वंदनी सील अगारा। जै कपीस जै पवन कुमारा॥
जै अदीवंत अमील अवीकारी। अरी मरदा जै जै गोरधारी॥
अंजनी वोद्र जग्र तुम्ह लीन्हा। जै जै सब देवन्ह कीन्हा॥
वाजी दुंदभी गगन गंभीरा। सुर मुनी हर्षे असुर मन पीरा॥
कंपे सींधु लंका संकाने। छुटी वंदी देवतन्ह जान्हेः
रीषी समुह नीकर चली आये। पवन तनै को पद सीर नयेः॥
वीर वर अनो स्तुती करी नाना। नीरमल नाम धारा हनुमानाः॥
सकल दीषै मीली असमत ठानाः। दीन्ह वताई लाल फल षाना॥
सुनि वचन कपी अति हरषाने। रवीरथ ग्रासी लाल फल जानेः॥
रथ समेती कपी कीन्ह आहाराः। सोर भय तहा अभै कारा

End—ये वंधन को केती वाता॥ नाम तुमार सकल सुष दाता॥
करो कोपा जै जै जगा सामी॥ वरन अनेग नमामी नमामी॥
भैाम परै अदी करैई ध्याना॥ धुप दीप नै वेदी सुजना॥
मांगल दायैक को ले लाये॥ सो नर तासु तुरात फल पाये॥
वह्म वीस्न सींभु सुरसारी॥ ईती सुदसा जै जैती गोशाई॥
अंजनी तनै नाप हनुमाना॥ सो तुलसी के कोपा नीधाना॥

दोहा—जै कपीस सुग्रीव जै अंगद हनुमान
राम लषन सीआ जानकी सदा करै कल्यान। ईति

हनुमान टोका संपुरणो सामप्तं राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

१६	२	१२	महा
६	१०	१४	वीर
८	१८	४	तीस

जुधंति पसु पक्षोणं पठंतो सुक सरोकांदत सुपनोद्यतां नच सुरान चपंडीता
अर्जुन ते कहा कोप्ण जो सलोका कोप्ण कोप्ण कोप्ण कोप्ण

Subject—

भवानी स्तुति, पवन सुत वंदना, हनूमान का बल प्रताप वर्णन। लंका जाने, सीता जो का धैर्य बंधाने राक्षसें को मारने, लंका को जलाने, रामचन्द्र के पास सीता का संदेश लेकर आने का वर्णन। इसके पश्चात् पुल बांधने में सहायता करना—युद्ध करना। सुषेन को गृह सहित लाना? सजीवन पर्वत सहित लाना, रामचन्द्र के साथ सदा रहना और उनमें भक्ति रखना, हनूमान के अन्य नाम, बल पराक्रम वर्णन, हनूमान से विनय करना, अंत में सब की जय जय

No. 432(*a*). Barwai Rāmāyana, by Tulasi Dāsa of Rājāpura (Bāndā). Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—14 × 5¾ inches. Lines per page—9. Extent—450 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rājāpustakālaya, Bhinagā (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ बरवै रामायण लिख्यते ॥ छंद बरवै ॥

गन नायक बर दायक देव मनाय।
विघ्न विनासन कसक न होहु सहाय ॥ १
श्री गुरु पद रज अम्बुज हृदय संभारि।
बरनन करौ राम जस कृपा सुधारि ॥ २
श्री रघुबर अंग सोभित अतुलित काम।
भगत चकोर पूर्ण विधु करौ प्रनाम ॥ ३ ॥
भरत भारती नायक छंद विधान।
वालमीक यह घट रहि करि गुनगान ॥ ४ ॥

End—यहि विधि अवध नारि नर प्रभु गुणगान ।
करहि देव सनिशि तुलसी जात न जान ॥ ३९३
भजन प्रभाव भक्ति बहु वरनेउ वेद ।
तुलसी गायो हरि जस निमि भव षेद ॥ ३९४
करन पुनीत हेतु निज वचन विवेक ।
तुलसी अवसेहु सेवत राषत टेक । ३९५ ॥
सीता राम लषन संग मुनि के साज ।
तुलसी चित्रकूट वस रघु रघुराज ॥ ३९६

इति श्री वरवै रामायण तुलसीदास कृत उत्तर काण्ड संपूरणम् शुभ मस्तु सिद्धिमस्तु ॥

No. 432(*b*). Barvai Rāmāyana, by Tulasi Dāsa of Rājāpura (Bandā). Substance—Country-made paper. Leaves—14. Size—$12\frac{1}{2} \times 5\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—21. Extent—440. Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1901 Samvat or A.D. 1841. Place of deposit—Bābu Padma Baksha Simha, Lavedpur, Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वरवै रामायण लीषते ॥ वरवै छंद लिषिते ॥

गन नायक वर दायक देव मनाय ।
विघ्न विनास प्रकासक होइ सहाय ॥ १
श्री गुरु पद रज अंबुज होदय समारि ।
वरनन करौं राम जस कृपा सुधारि ॥ २
श्री रघुवर अंग सोभित अतुलित काम ।
भगत चकोर पूर्ण विधु करौं प्रणाम ॥ ३
भरत भारती नायक छंद विधान ।
वालमीक यह घटि रहि करि गुनगान ॥ ४

End—यहि विधि अवध नारि नर प्रभु गुन गानि ।
करहि दिवस निसि तुलसी जात न जानि ॥ ३९३
भजन प्रभाव भक्ति वहु वरनेउ वेद ।
तुलसी गायो हरि जस मिटि भव खेद ॥ ३९४
करन पुनीत हेतु निज्ञ बचन विवेक ।
तुलसी ऐसेउ सेवत राखत टेक ॥ ३९५

सीता राम लषन संग मुनि के साज ।
तुलसी चित्रकूट बसि रघुवर राज ॥ ३९६ ॥

इति श्री वरवै रामायन तुलसीदास कृत उत्तर कांड संपुर्ण शुभ मस्तु संवत् १९०१ शाके १७६७ फाल्गुणं मासे शुक्ल पक्षे पंचमं तिथौ गुरुवासरे पुस्तको संपूर्ण सन् १२५२ श्री राम श्री देवि ।

No. 432(c). Barwai Rāmāyana, by Tulasī Dāsa of Rājāpura (Bānda). Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—11 × 5½ inches. Lines per page—9. Extent—80 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1909 Samvat or A. D. 1852. Place of deposit—Paṇḍita Śyāma Bihārī Miśra, Golāganja, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः

अथ वरवै रामायण तुलसिदास कृत लिख्यते ॥
केश मुकुत सखि मरकत मनि मय होत ।
हाथ लेत पुनि मुक्ता करत उदोत ॥ १
सम सुवरण सुषमा कर सुषद न थोर ॥
सीय अंग सषि कोमल कनक कठोर ॥ २ ॥
सिय मुख सरद कमल जिमि किमि कहि जात ।
निसि मलीन वह निस दिन यह विसात ॥ ३ ॥
वड़े नयन कट भृकुटी भाल विशाल ।
तुलसी मोहत मनहि मनोहर बाल ॥ ४ ॥
चंपक हरवा अंग मिलि अधिक सुहाइ ।
जानि परै सिय हियरे जव कुम्हलाइ ॥ ५ ॥

End—एकहि एक सिखावहि जप तनु आप ।
तुलसी राम प्रेम कर वाधक पाप ॥ २२
मरत कहत सब सत्र कहं सुमिरहु राम ।
तुलसी अब नहिं जपत समुझि परिनाम ॥ २३
तुलसी राम नाम जपु आलस छंडु ।
राम विमुख कलिकाल को भयो न भांडु ॥ २४ ॥
तुलसी राम नाम सम मंत्र न आन ।
जो पै चाहहु राम पुर तन अवसान ॥ २५
नाम भरोसो नाम वल नाम सनेहु ।
जन्म जन्म रघुनंदन तुलसिहि देहु ॥ २६

जन्म जन्म जहं जहं तनु तुलसिहि देहु ।
तहं तहं राम निबाहिब नाम सनेहु ॥ २७ ॥

इति श्री बरवै रामायण उत्तर काण्ड समाप्त ॥ तुलसीदास कृत लिषिते सिव शंकर मिसिर संवत् १९०९ ॥ राम

इति

No. 432(*d*). Bhanwaragītā, by Śri Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—6 × 4 inches. Lines per page—22. Extent—400 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1916 Sambat or A. D. 1859. Place of deposit—Paṇḍita Gayā Prasad, village Naipālapura, post office Sītāpur, tahsīl Sītāpur, district Sitapura.

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ श्री तुलसीदास कृत भंवर गीता लिष्यते ॥ राग जैत श्री ॥ नंद जू हैं ठाढ़ो दस स्यंदन जू को नगर अवध ते आयो यतनो कहि प्रति हारन हरि सों करि मेरा मन भायो ॥ महाराज व्रजराज आजु जांकतुव येक दुवारे ॥ अवध राज रघुवंस नृपति गुन कीरति पढ़त पुकारे ॥ जो कहि कहि काकुत्स्थ भूप गुन अरु इक्ष्वाकु बड़ाई । अज दलीप रघु दसरथ राजा शुभतल कीरति छाई अजहूं बहुत कहत गुन उन करुनासिंधु सदाई ॥ मैं अज्ञान अनूप भांति मेरी कछु कहत न आई । यह सुनि नंद अनंद मान दै ततछन मोहिं बोलायो । आयसु पाइ आइ अंतःपुर । दै असीस सिर नायो ॥

End—कहा भयो कपट जुवा जोहारी । समर धीर महावीर पंचपति क्यो देहैं मोहि हीन उघारो । राज समाज सभासद समरथ भीषम द्रोण धर्म धुरधारी ॥ अवला अनघ अनैासर अनुचित होत हेरि करिहैं रखवारी ॥ यो मन गुनत दुसासन दुरजन तमकि गह्यो तकि दुहु कर सारी । सकुचि गात जोवत कमठी ज्यों हहरी हृदय विकल भइ भारी ॥ अपतिन को विलोकि वल सकल आस विस्वास विसारी । हाथ उठाइ अनाथ नाथ सो पाहि पाहि प्रभु पाहि पुकारी ॥ तुलसी परषि प्रतीति प्रीत अति आरत पाल कृपाल मुरारी ॥ वसन वेष राष्यो विसेषि लषि विरदावलि मूरति नर नारी ॥ ६१ ॥ गह गह गगन दुंदुभी वाजी वरषि सुमन सुरगन गावत जस हरष मगन मुनि सजन समाजी ॥ सानुज संगन सचिव सो जो धन भय मुष मलिन षाइ षल षाजी ॥ लाज गाज जव वनि कुचाल कलि परो वजाइ कहं कहुं बाजी ॥ प्रीति प्रतीति द्रुपद तनया की भली भूरि भैभभरिन भाजी । कहि पारथ सारथी सराहत गई वहोरि गरीव नेवाजी सिथिल सनेह मुदित मनही मन वसन वीच बिच वधू बिराजी सभासिंधु जदुपति

जलमय जनु रमा प्रगट त्रिभुवन भरि भाजी ॥ जुग जुग जग साकेन्ह सब ही के समन कलेस कुसाज कुसाजो ॥ तुलसी को न होइ सुनि कोरति कृष्ण कृपाल भक्ति पथ राजो ॥ इति श्री तुलसीदास कृत भंवर गीत । समाप्तं ॥ संवत १९११ भाद्रमासे कृष्णपक्षे तिथै पष्ठं भृगुवासरे लिषतं कृष्णकुमार त्रिपाठी महमदपुर।

No. 432(*e*). Chhandāwalī Rāmāyana, by Tulasī Dāsa of Rājāpura (Bāndā). Substance—Old, country-made paper. Leaves—20. Size—11 × 5 inches. Lines per page—8. Extent—120 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1911 Saṃvat or A. D. 1854. Place of deposit—Paṇḍita Śyāma Bihārī Miśra, Golaganj, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः

अथ छंदावली रामायण तुलसीदास कृत

दोहा—दशकंधर घट कर्ष अघ मार धरा दुख होइ।
गई गगन गो देह धरि कहि सुरपति सों रोइ ॥ १

छंद चौपय्या—सुरपति गुरु बूझा सुरमति सूझा गे विधि लोक तुरंता ।
विधि सुर समझाये संग सिधाये जहं सोवत श्री कंता ॥
दशमुख को करणी बहु विधी वरणी धरणी जेहि विधि रोई ।
सुनि सारंग पानी भई नभ वानी विधि जाना नहिं कोई ॥
विधि वचन सुनाये सुर समुझाए तजहु सोच मन देवा ।
जो जन हितकारी प्रभु असुरारी करहि पार सोइ खेवा ॥
वानर गो पूछा तन धरि रोछा बसहु जाहु महि माही ।
अवधेश निकेता व्यूह समेता प्रभु आवत तुम पाहीं ॥ २

End—

नित प्रति सरित अन्हात बंधुन सहित प्रभु भोजन करैं ।
गज वाजि राज समाज लषि सब वन उपवन......फिरैं ॥
बैठे सभा मंह जाइ श्री रघुवोर दुख सब के हरैं ।
हरि न्याउ स्वान उलूक को लषि लोग सब विस्मय करैं ॥
मांडवी श्रुतिकीर्ति उर्मिला सबनि सुत द्वै द्वै जने ।
जानको के सुत जुगल जाये सबन मन आनन्द घने ॥
सनकादिक नारद मुनिवर सकल अवर्धाहिं आवहीं ।
लषि जाहि रघुवर के चरित सब विधिहि जाइ सुनावहीं ॥

एक बार कोउ महि देव कौ सुत सभा महं घायै मर्यो ॥
गुरु बूझि तप ते मारि सूद्रहि तबहि सो उठि जिय पर्यो ॥
यहि भांति राम चरित्र परम पवित्र नित नूतन करैं ।
कहि दास तुलसी सुनत सब के वचन मन पातक हरैं ॥

दोहा—सुनि सीता के जुगल सुत राम कीन्ह अनुमान ।
लोक सिखावन देन हित बोले श्री भगवान ॥

इति श्री उत्तर काण्ड संपूरनम् ॥ लिखिते शिवशंकर मिश्र संवत् १९११ वि० राम राम राम राम.........................

Subject—राक्षसों के बोझ से पृथ्वी का गौ रूप से देवलोक को जाना ब्रह्मा का विष्णु के पास ले जाना तथा अवतार के लिये आकाशवाणी होना और देवें को अवध में वानर व रीछ रूप में जन्म लेने को कहना छंद १—२

राम का अंशों सहित अवतार लेना और अवध में आनन्द होना छंद ३—४

राम का क्रीड़ा करना और यज्ञोपवीत व शिक्षा प्राप्त करना, विश्वामित्र के साथ ताड़का तथा सुबाहु वध करना, गौतम की पत्नी का उद्धार व जनकपुर आगमन और धनुष भंग तथा सीता का विवाह वर्णन और मार्ग में परशुराम मिलन वर्णन छंद ६—७

राम वन गमन, दशरथ का प्राण विसर्जन, राम का प्रयाग होकर चित्र-कूट जाना भरत से राम की भेंट वर्णन छंद ८—९

जयंत का सीता जी के चोंच मारना और राम का उसे ताड़न देना, विराध वध, सरभंग से भेंट, राम लखन सीता का पंचवटी जाना, सूपनेखा की नाक काट लेना, त्रिशिरा, खर दूषण वध, मारीच वध, सीता हरण गीध—रावण युद्ध, सबरी राम भेंट पंपासर पहुंचना और नारद से भेंट होना वर्णन छंद १०—११

राम से हनूमान और सुग्रीव से भेंट, वालि वध, सुग्रीव को राज देना और सीता को खोज कराना । छंद १२—१३

हनुमान का लंका में जाना सीता से भेंट तथा लंका जलाना, विभीषण के रावण का लात मारना और राम से मिलना । छंद १४—१५

राम लक्ष्मण व रावण, मेघनाद, कुंभकर्ण से युद्ध वर्णन विभीषण को राज देना व सीता से भेंट छंद १६—१७

राम का अयोध्या आना भरत से भेंट व राजगद्दी होना देवताओं का स्तुति करना, स्वान, उलूक, व ब्राह्मण बालक के न्याय की कथा वर्णन चारों भाइयों के दो दो पुत्र होना वर्णन । छंद १८—२२

इति

No. 432(*f*). Chhandāvalī Rāmāyaṇa, by Tulasi Dāsa of Rājāpura (Bāndā). Substance—Old paper. Leaves—16. Size—10½ × 5¼ inches. Lines per page—8. Extent—136 Anushṭup ślokas. Appearance—Loose and old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1909 Samvat or A.D. 1852. Place of deposit—Paṇḍita Śyāma Bihārī Miśra, Golāganj, Lucknow.

Beginning—श्रीमते रामानुजाय नमः । अथ छंदावली रामायन तुलसी दास कृत लिख्यते । दोहा ॥

दशकंधर घट कर्यो अघभार धरा दुःख होइ । गई गंगंन गो देह धरि कहि सुरपति सो रोइ । छंद चैापआ । सुरपति गुर बूझा सुरपति सूझा गे विधि लोक तुरंता ॥ विधि सुर समुझाये संग सिधाये जंह सोवत श्रीकंता ॥ दशमुष की करणी वहु विधि वरणी धरणी जेहि विधि रोई सुनि सारंगपानी भइ नभ वानी विधि जाना नहिं कोई ॥ विधि वचन सुनाये सुर समुझाये तजहु सोच मम देवा ॥ जो जन हितकारी प्रभु असुरारी करहि पार सोइ पेवा ॥ वानर गो पूछा तन धारि रीछ वसहु जाइ महि माही । अवधेश निकेता व्यूह समेता प्रभु आवत तुम पाही । दोहा । यहि विधि विबुध विवोधि गे गे सुर निज निज धाम । कछु काल वीते अवध प्रगट भये श्रीराम ॥ ३ ॥ शशि वदन छन्द ॥ जन हित-कारी प्रगट सुरारी । नरतन धारी छवि सुष कारी ॥ मृदु भुवकारी अरि दल हारी ॥ सुमुष निहारी वलि महतारी ॥ अवध विहारी भव भय हारी ॥ जपत पुरारी सब अघहारी ॥ अवध उघारी यह प्रण भारी ॥ तुलसी हितकारी शरण सभारी ॥ ४ ॥ हरि गीतका छंद ॥ संभारि शरण विचारि तुलसी राम जस गावत लियो ॥ त्रय ताप समन कलेश हरन को अेार नहिं जग मग वियो ॥ जेहि गाइ जमन किरात षल हरि पुर गये करि सुधि हियैा ॥ रघुवीर जस सुनि हिमत हरष्यो पुरो तिन अपनो कियो ॥

End—सिय सहित रघुकुलमनि विराजत सुभग सिंहासन परैं ॥ सुभ सुमन वरषहिं हिये हरषहि ब्रह्मादि सव जय जय करैं ॥ गहि छत्र चामर चमर असि धनुवीर तरकस के लये ॥ भरतादि अनुज विभीषनांगद हनूचित चरनन दये ॥ सुनि सिया श्री रघुवीर को अविवेक पुनि उर में धरै ॥ कह दास तुलसी जन्म को सुष लहि जलधि विन श्रम तरै ॥ दोहा । नित नव मंगल अवधपुर करहि सकल नर नारि ॥ लहहि चार फल अछत तन रघुवर रूप निहारि ॥ १९ ॥ छन्द । नित प्रत सरित अन्हात वंधुन सहित प्रभु भोजन करैं ॥ गज वाजि राज

समाज लषि सब देषि वन उपवन फिरै ॥ बैठे सभा मह जाइ श्री रघुवीर दुःख सब के हरै । हरि न्याउ स्वान उलूक को लषि लोग सब विस्मै करै ॥ मांडवी श्रुतिकीरति उरमिला सवनि सुत द्वै द्वै जने ॥ जानकी सुत जुगुल जाये सबन मन ग्रानंद घने ॥ सनकादि नारद ग्रादि मुनिवर सकल ग्रवधहिं ग्रावहो ॥ लषि जाहि रघुवर के चरित सब विधिहि जाइ सुनावहो । एक वार कोउ महि देव को सुत सभा मह ग्रायो मरो ॥ गुरु बूझि तपते मारि सूद्र हित वहि सो उठि जिय परो ॥ यहि भांति राम चरित्र परम पवित्र नित नूतन करै ॥ कहि दास तुलसी सुनत सब के बचन मन पातक टरै ॥ दोहा । सुनि सीता के जुगुल सुत राम कीन्ह ग्रनुमान ॥ लोक सिषावन देन हित बोले श्री भगवान ॥ इति श्री उत्तर काण्ड श्री गोसाईं तुलसीदास कृत छन्दावलि रामायनि समाप्त । शुभ मस्तु० संवत १९०९ लिखित वै वैशणवदास श्रीराम ।

Subject—दशशीस, घट कर्ण ग्रादि के पाप भार से पृथ्वी का दुःखी हो गो रूप धर इन्द्र के पास जाना, इन्द्र का वृहस्पति से परामर्श कर ब्रह्मा के पास जाना, ब्रह्मा का सान्त्वना दे क्षीरसागर में भगवान के पास जाना, राक्षसों की करनी भगवान से कहना, ग्राकाशवाणी का होना, ब्रह्मा का सबको समझाना, बानर भालु होकर पृथ्वी पर जन्म लेने के लिये देवताग्रों को ग्रादेश देना, भगवान का ग्रयोध्या में जन्म लेने का संवाद कहना, काल पाकर भगवान का ग्रयोध्या में जन्म लेना, बाल लीला वर्णन, ग्यारह वर्ष में उपनयन, विश्वामित्र का राम को मांगना, ताड़का वध, विश्वामित्र द्वारा ग्रस्त्र प्राप्ति, सुबाहु वध, मष-रक्षा, ग्रहिल्या तारण, मिथिला-गमन, धनुष-भंग, सीता-विवाह, ग्रयोध्या-गमन, मार्ग में परशुराम से भेंट, धनुष देकर वन-गमन पृ० ३—४ बालकांड

राजा दशरथ का मुकुर देखना ग्रौर बुढ़ापे का ग्राभास पाना, राम को युवराज पद देने का करना संकल्प, केकई का भरत के लिये राज-पद मांगना, रामचन्द्र को वनवास देना, सीताराम लक्ष्मण सहित वन-गमन, गंगा प्रयाग होकर चित्रकूट जाना, भरत का शोकाकुल होना, भरत का वन जाना, केवट से भेंट, भरत का राम से मिलना, पादुका पाना, पादुका लेकर वापस ग्राना ग्रौर नियम धर्म से रहना वर्णित है पृ० ४—५ ग्रयोध्याकांड ।

जयन्त का जानकी-स्पर्श, उसकी ग्रांखों का फोड़ा जाना, विराध-वध, सरभंग से भेंट, रामचन्द्र जी का पंचवटी जाना, सूर्पणखा का नाक कान विहीन होना, खरदूषण-त्रिसिरा-वध, रावण का मारीच के पास जाना, मारीच का स्वर्ण मृग बनना, मारीच वध, मारीच का शब्द सुन लक्ष्मण का राम के पास

जाना, रावण द्वारा सीता का हरा जाना, राम का दुखी होना, सीता को खोजना, गृद्ध से भेंट, उससे समाचार पाना, सेवरी से भेंट, पंपासर आना नारद से भेंट सुग्रीव का राम को देख कर विस्मय युक्त होना, हनुमान को भेद लेने के लिये उनके पास भेजना सूत्र रूप से वर्णन किया गया है पृ० ५—६ आरण्यकांड।

हनुमान का राम को ले जाकर सुग्रीव से मिलाना, सुग्रीव और राम की मित्रता का होना, सुग्रीव का कष्ट समाचार सुन कर राम का वालि के मारने का प्रण करना और सुग्रीव को राजा बनाना। सुग्रीव का सीता की खोज का प्रण करना, वालि का मारा जाना, सुग्रीव-तिलक, चौमासे का निवास, सुग्रीव का सीता की खोज के लिये बंदरों का भेजना, बंदरों का विवर प्रवेश एक स्त्री से भेंट, अदृश्य से समुद्र तीर आना सूत्र रूप से वर्णन किया गया है। पृ० ६—७ किष्किंधा कांड

हनुमान का सागर पार जाना, लंकिनी वध, हनुमान का छोटा रूप धर कर लंका में प्रवेश, सीता को खोजना, विभीषण से भेंट, हनुमान का सीता को देखना, रावण का आकर सीता को दुःख देना, हनुमान का मन में क्रोधित होना। मुद्रिका का सीता के आगे फेकना उसे देख सीता का हर्ष विस्मय युक्त होना, हनुमान का प्रगट होना, फल खाने की आज्ञा मांगना, बगीचे में फल खाना, उत्पात मचाना, रखवालों को मारना, मेघनाद द्वारा हनुमान का मारा जाना, रावण की सभा में पूंछ का तेल पट से बांधा जाना, उसके द्वारा लंका-दहन, राम का ससैन्य लंका-गमन समुद्र का पैर पड़ना, नल द्वारा सेतु-बंध मंदोदरी का रावण को समझाना, रावण की मंत्रणा, विभीषण को लात मारना, विभीषण का राम के पास आना, अंगद का रावण के पास आना, अंगद-पैज, लंका पर चढ़ाई, सूत्र रूप से वर्णन किया है। पृ० ७—१० सुन्दर कांड

राम और रावण की सेनाओं की लड़ाई, मेघनाद-वध, सुलोचना का सती होना, रावण का मारा जाना, जानकी का राम के पास आना, सैन्य समेत पुष्पक पर चढ़ अयोध्या प्रयाण, प्रयाग आना, हनुमान का भरत के पास भेजना संक्षेप में वर्णन किया गया है। पृ० १०—१३ लंकाकांड

भरत का हनुमान से राम आगमन को सूचना पाना, भरत का घर आकर समाचार देना, रामचन्द्र का भरत गुरु और प्रवासियों से भेंट, वशिष्ट और सुमंत्र द्वारा राज्याभिषेक का होना, भरतादिक भाइयों का अंगद हनुमान सहित सेवा का वर्णन, सब भाइयों के दो दो पुत्रों का होना, नारदादि का नित्य आना, अयोध्या का संवाद ब्रह्मा के पास जाकर कहना, रामचन्द्र का न्याय वर्णन, ब्राह्मण के मृतक पुत्र का सभा में आना, गुरु की आज्ञा से शूद्र असी को मारना ब्राह्मण के

मृतक पुत्र का जो उठना, सोता के दोनों पुत्रों का मिलना और लोक शिक्षा के लिये चरित्र करना। सूत्र रूप से वर्णन किया गया है। पृ० १३—१६ उत्तरकांड।

No. 432(*g*). Chhappaya Rāmāyaṇa, by Tulasī Dāsa of Rājāpura (Bāndā). Substance—Country-made paper. Leaves—16. Size—9½ × 4½ inches. Lines per page—9. Extent—134 Anushṭup ślokas. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1910 Samvat or A.D. 1853. Place of deposit—Paṇḍita Śyāma Bihārī Miśra, Golāganja, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः। अथ छप्पै रामायन लिख्यते। छन्द छप्पै॥ श्री गुरचरण सरोज वंदि गणनाथ मनावैा। जेहि प्रसाद शुभ होई राम सो विनय सुनावैा। आरत भंजन राम नाम मुनि साधुन गाई। सुमिरत गाढ़े नाथ होत सब ठैार सहाई। अवपति रघुपति अवध पति करैा नाम सोई जापना। दैार दैार श्री रामचन्द्र मम हरहु सोक संतापना॥ १॥ रहैा कपोती स्वपति समेत बैठि तरु पासा। गंगन उडे सांचा भूमि तल दैवैा प्रकासा। व्याध गहे करवान देखि लोचन जल मोचति पक्षी स्वमन महा सभीत देषि दंपति उर सोचित। दुष्ट दलन करुणायतन राषि लेहु सरनापना। दैार दैार श्री रामचन्द्र मम हरहु सोक संतापना॥ २॥ उठे ततछन मेघ वृष्टि जल अनल बुतानो। निकसि भुवंगम डसो बुद्धि व्याधो विकलानो॥ निकसो वाको तीर जाइ संचानहि मारो। अस्तुति करत कपोत नाथ प्रनतारत हारो। सो प्रभु वेगि दयाल हैा जिमि कपोत परदापना। दैार दैार श्री रामचन्द्र मम हरहु सोक संतापना॥ ३॥

End—गुरु अनुसासन पा सचिव साजि आरती बनाई। राम सिंहासन दोन्ह राज गुर मुनि समुदाई॥ भरत गहे कर क्षत्र चमर सियराम निहारो। मुदित जन्म फल पाइ मातु आरतो उतारो॥ विदा होय सब जयति करि भक्ति देहु रामापना। दैार दैार श्रीरामचन्द्र मम हरहु सोक संतापना॥ २९॥ छूटेउ बंदि सब देव विबुध कोटि तेतीस हरषि कह। अस्तुति करत वनाय पुहुप जयमाल हरषि गह। शंभु आप अस्तुति करत विविधि भांति सियरामा। पाय रजाय सब चले देव सब निज निज धामा॥ बिदा किये सब कै प्रभु देव जयति कह जापना। दैार दैार श्रीरामचन्द्र मम हरहु सोक संतापना॥ ३०॥ राम चरित अवगाह सिंधु कोउ पार न पावै। शुक सारद निगमादि नेति कहि निज मुष गावै। शंभु उमा सुनि भरद्वाज सुनि जागवलिक मुनि। काग भसुंडि सुनि गरुड़ मांगि कह तुलसीदास गुनि॥ कहे सुने रति राम यह येक राज मति थापना। दैार दैार श्रीरामचन्द्र मम हरहु सोक संतापना॥ ३१॥ इति श्री

तुलसीदास कृते कृष्णे रामायन उत्तर काण्ड समाप्त सतमो सुपानः ॥ रावण नासवान ॥ ३१ ॥ सो यकतीस कृष्णै हैं। सेठा । १ । रंग (२) फोक (३) पंथ। ४ । वधन । ५ । गौसी । ६ । संकट मोचनी रामायन पाठ करै तो रावण मरै सो मन है। चेतो तो सब काम सिद्धि होइ। वां तावरी करो तो पावो भव-सागर ते नर तन नाव है ॥ संव १९१० ॥ राम सोय।

Subject—गुरू चरण वंदना, कपोत के जोड़े को विपद, (वाज—व्याध श्रोर अग्नि से) उसका उद्धार, भगवान के अनेकों नामों की वंदना, ताड़का, सुबाहु का वध, मष को रखवाली, अहिल्या का शाप मोचन श्रोर वरदान, विदेह का प्रण रखना, धनुष-भंग, परशुराम का सरासन देना, सीता विवाह श्रोर अयोध्या गमन का संक्षेप में वर्णन किया है। पद० १—५ बालकाण्ड।

वन गमन, केवट का पद धोना, चित्रकूट वास, कोल भीलों को तारना, भरत को चरणपादुका देकर तुष्ट करना, भरत का विनय करके पलटना वर्णन किया है। पद० ६—अयोध्याकाण्ड।

जयंत का शरण आना, एक आंख का फोड़ना, विराध खर दूषण, कपटी मृग (मारीच) कवंध आदि का वध, गिद्ध की सुगति, सिवरी को भक्ति देना, वालि के भय से सुग्रीव का पर्वत पर वास करना संक्षेप में कहा है। पद० ७ आरण्यकाण्ड।

हनुमान का भगवान के पास जाना, सुग्रीव की मित्रता, वालि का वध, वर्षा ऋतु में निवास, सुग्रीव का राज देना, हनुमान को मुद्रिका देकर भेजना, हनुमान का प्रसन्न हो खोज करने जाना, वानरों के साथ वन, पर्वत, खोह, ताल आदि का खोज करते हुए समुद्र तीर जाना, संपाती से भेंट, संपाती का साक्षात होना, सीता का निशान बतलाना, समुद्र को देख कर सब का हहर कर विलाप करना, संक्षेप में कहा है। पद० ८—९ किस्किंधाकांड।

जामवंत की बात सुनकर हनुमान का प्रसन्न हो समुद्र नाघने के लिये जाना, सुरसा से भेंट, सिंघि का वध, मैनाक स्पर्श, समुद्र का पार होना। लंकिनी को मुष्टिका प्रहार, लंका में घर घर सीता का खोजना, निराश हो राम नाम जपना, विभीषण भेंट, विभीषण से युक्ति पूछ कर अशोक-वन में आना, पल्लव में छिपना, प्रगट होने की युक्ति विचारना, दशकंधर का स्त्रियों सहित आना, जानकी को डरवाना, जानकी द्वारा तिरस्कृत हो वापस जाना, सीता का व्याकुल हो आग मांगना, हनुमान का उसी समय मुद्रिका देना, सीता का उसे पाकर विस्मय हर्षयुत होना, हनुमान का प्रगट होना, जानकी से संदेसा कहना, सीता का व्याकुल होना, हनुमान द्वारा सान्त्वना पाना, हनुमान का वाग में जाना, फल खाना, वृक्ष तोड़ना, अक्षयकुमार आदि का मारा जाना, मेघनाद का आना,

उसके द्वारा हनुमान का बांधा जाना, पूंछ में तेल पट बांध अग्नि लगाना, लंका-दहन, विभीषण का घर जलने से बचना, हनुमान का समुद्र में कूद कर पूंछ बुझाना, सीता से चूड़ामणि ले विदा मांग कर रामचन्द्र के पास आना, मधुवन का फल खाना, बंदरों से भेंट, सीता का विरह राम से कहना, मारीच, सुबाहु, कवंध आदि की याद दिलाना, चूड़ामणि देना, रामचन्द्र का कटक समेत समुद्र के किनारे जाना, विभीषण-भेंट, उसे अभय करना, लंकेश बनाना, रामेश्वर-स्थापना का संक्षेप में वर्णन है—पद १०—१९—सुंदरकांड।

भालू और बंदरों की सेना सहित समुद्र पार जाना, अंगद का वसीठी होकर जाना, युद्ध, कंप अकंप, महोदर, अतिकाय, मेघनाद महिरावण, कुंभकरण, रावण आदि का वध सीता भेंट, देवताओं द्वारा रामचन्द्र जी की स्तुति, विभीषण का राज्य तिलक, पुष्पक पर चढ़ कर प्रयाग आना, हनुमान का भरत जी के पास भेजना, संक्षेप में वर्णन है—पद २०-२६ लंकाकांड।

हनुमान का भरत से संदेसा कहना, भरत का गुरु माता, मंत्री पुरवासी सब को खबर देना, रामचन्द्र का पुष्पक से उतरना, सब से भेंट करना, गुरु की आज्ञा से मंत्री का रामचन्द्र को सिंहासन पर बैठाना, भरत का चमर हाथ में लेना, माताओं की प्रसन्नता, देवताओं का स्तुति करना, कवि द्वारा रामचन्द्र की महिमा वर्णन कथा का उद्गम शंभु-उमा, भरद्वाज, याग्यवल्क, काग, गरुड़ द्वारा वर्णन कर संक्षेप में कथा समाप्त किया है—२७-३१ उत्तरकांड।

No. 432(*h*). Dohāwalī, by Tulasī Dāsa of Rājāpura. Substance—Country-made paper. Leaves—85. Size—$8\frac{3}{4}$ × $4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—7. Extent—740 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1249 Hijri or A.D. 1871. Place of deposit—Rājpustakālaya, Bhinagā (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः

दोहा ॥ राम नाम मनि दीप धरु जीह देहली द्वार।
तुलसी बाहिर भीतरौं जो चाहत उजियार ॥ १
रे २ गमित परमातमा सह अकार सिय रूप।
दाघ मिलि विधि जीव इव तुलसी वदत अनूप ॥ २
राम नाम को अंक निधि साधनता सब सून्य।
अंक रहित सब सून्य है अंक सहित दश गुन्य ॥ ३
जथा भूमि सब बीज मय नषत नेवास अकास।
राम नाम सब धर्म मय जाचक तुलसीदास ॥ ४

End—बैठि सिंघासन राम जू सुर बिमान बहु भीर ।
हरषित सुर बरषहि सुमन सो जय जय रघुबीर ॥ ९८
स्यामल गैार किशोर वर विहरत सरजू तीर ।
अस्वमेध कोटिन कियो सो जय जय रघुबीर ॥ ९९
यह साषी सिय राम जस सुमिरि करहु मनधीर ।
तुलसी बरनै कहां लगि सो जय जय रघुबीर ॥ १००
तुलसी चतुरे नरन ते बचै न उर की हेत ।
ज्यों शीशी रंग से भरी उपर देखाई देत ॥ १०१
इति श्रीराम चरित्रे दोहावली श्रीराम भक्ति संपादिनोनाम शप्तमो स्वर्ग ॥ सम्पूर्णम् शुभमस्तु मि: फागुण शुदी ११ सन १२४९ साल

No. 432(*i*). Dohāwali, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—49. Size—6 × 5 inches. Lines per page—22. Extent—750 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1856 Saṃvat or A.D 1799. Place of deposit—Ṭhākura Hanumāna Siṃhaji, village Vardaha, post office Kherīghāt, district Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ दोहावली लिप्यते ॥ दोहा ॥ राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार । तुलसी वाहर भीतर जो चाहे उजियार ॥ राम नाम को अंक निधि साधनता सब सुन्य । अंक रहित सब सुन्य है अंक सहित दस गुन्य । दुगुने तिगुने चैागुने पांच षष्ट अरु सात । आठो ते पुनि नैा गुने नैा के नव रहि जात ॥ नव के नव रहि जात तुलसी किये विचार । रामै राम जो जगत में नहीं द्वैत संसार ॥ जथा भूमि सब बीज मय नषत नेवास अकास । राम नाम सब धर्म मय जानत तुलसीदास ॥ तुलसी रघुबर परम निधि निसि दिन भजो निसंक आदि अंत प्रति पालिहै जैसे नव को अंक ॥ हरि सो हिय यों राषिये कोटि किये उपचार । मिटै न तुलसी अंक नव नव को लिषित पहार ॥

End—व्रह्मज्ञान जवही भयो तुलसी त्यागे व आठ । कैान बतावै रास भै सूध्र लाग रे काठ ॥ तुलसी तुम ज्यों कहत हो संगत ते सब होय । माझ उपरी राम सर ताहिन कस रस होय ॥ संगति भई तो का भयो अंग स्वभाव न जाहिं । फूल जंत्र यक डार मे पाता क्यों न बसाय ॥ ज्यों जल कंजै पत्र में ता धारी उर हार । तुलसी दास गनि गुन मुई तिन्हौ न पायो पार ॥ तुलसी राम प्रताप ते

मिटत करम की रेष। ज्यो हरदी जरदो तजे चूना रह्यो न सेस ॥ यक तै। जल के मध्य है एक वभ्म को छोर ये दोनें एक ठैार करु तुलसी करत मिहोर सप्त ताल सर बेधियो हत्य वालि महि वीर। द्यो राज सुग्रीव को जै जै जै रघुवीर ॥ बांध्यो सेत सिल तरगे तरगे कपि दल भोर कुटुम सहित रावन हत्यो जै जै जै रघुवीर ॥ इति श्री दोहावली तुलसी दास कृत समाप्तम सुभमस्तु दस्कत नीलकंठ कायस्थ धुंधा के संवत १८५६ भादो कृष्ण अष्टमयाम सुक्रवासरे।

Subject—श्री रामचन्द्र जी की महिमा ग्रैार उनका प्रेम वर्णन।

No. 432(*j*). Dohāwali, by Tulasī Dāsa of Rajāpura (Bāndā). Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—9 × 4½ inches. Lines per page—7. Extent—840 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1894 Samvat or A.D. 1837. Place of deposit—Paṇḍita Śyāma Bihāri Miśra, Golaganj, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥

ग्रथ दोहावली लिख्यते ॥ तुलसी दास कृत ॥

दोहा—राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहरो जो चाहै उजियार ॥ १
राम नाम को अंक निधि साधनता सब सुन्न।
अंक रहित सब सुन्न है अंक सहित दस गुन्न ॥ २
दुगुने तिगुने चैागुने पांच षष्ट ग्ररु सात।
ग्राठव ते पुनि नव गुने नैा के नैा रहि जात ॥ ३
नैा के नैा रहि जात हैं तुलसी कियो विचार।
रम्यो राम जो जगत में नाहि द्वैत संसार ॥ ४

End—तुलसी राम प्रताप तें मिटत कर्म को रेख।
ज्यों हरदो जरदी तजो चूनैा रहै न सेत ॥ ६१
एक तैा जल के मध्य है एक हैं नभ के ग्रोर।
ये दोनें एक ठवर करु तुलसी करत निहोर ॥ ६२
सप्त ताल सर बेधियो हत्यैा बालि महि वीर।
राज दियो सुग्रीव कहं जै जै जै रघुवीर ॥ ६३
बांध्यैा सेत सिलातरी उतरैा कपि दल वीर।
कुटुंब सहित रावण हतैा जै जै जै रघुवीर ॥ ६४ ॥

इति श्री दोहावली ॥ तुलसीदास कृत संपूरनम् ॥ संवत १८९४ ॥ शाके १७५९ ॥ चैत्र शुक्ल १५ लिषतंलाला कमोद सींघ कौंच के इति ॥

No. 432(*k*). Gītāwalī Rāmāyana, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—97. Size—6 × 12 inches. Lines per page—24. Extent—2,706 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1891 Samvat or A.D. 1834. Place of deposit—Paṇḍita Bhagwānadīnajī Miśra Vaidya, Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री गोसाईं तुलसी दास कृत गीतावली सातो कांड रामायण लिष्यते ॥ श्लोक ॥ नीलाम्बुजं स्यामलं कोमलांगं सीता समारोपित वाम भागं ॥ पाणौ महाशायक चारु चापं नमामि रामं रघुवंश नाथं ॥ राग असावरी ॥ आजु सुदिन सुभघरी सोहाई । रूप शील गुन धाम राम नृप भवन प्रगट भए आई ॥ अति पुनीत मधु मास लगन ग्रह वार जोग समुदाई । हरषवंत चर अचर भूमि तरु तन रुह पुलक जनाई ॥ २ बरषहिं विबुध निकर कुसुमावलि नभ दुंदभी बजाई । कौशिल्यादि मातु मन हरषित यह सुख बरनि न जाई । सुनि दशरथ सुत जन्म लियो सब गुरु जन विप्र बोलाई । वेद विहित करि कृपा परम सुचि आनंद उर न समाई । शदन वेद धुनि करत मधुर मुनि बहुविधि बाज बधाई । पुरवासिन प्रिय नाथ हेतु निज निज संपदा लुटाई ॥ मनि तोरन बहु केतु पताकनि पुरी रुचिर करि छाई ॥ मागध सुत द्वार बंदीजन जहं तहं करत बड़ाई ॥ सहज सिंगार किये बनिता चलि मंगल बिपुल बनाई ॥ गावैं देहिं असीस मुदित चिरंजोवो तनय सुखदाई ॥

End—राग रामकली ॥ रघुनाथ तिहारो चरित मनोहर गावत । सकल अवधवासी । अति ओदार अवतार मनुज वपु धरयो ब्रह्म अज अविनासी ॥ १ ॥ प्रथम ताड़िका हति सुबाहु बधि राष्यो द्विज हितकारी ॥ देषि दुषित अति सिला श्राप बस रघुपति विप्रनारि तारी ॥ २ ॥ सब भूपनि गर्व हरयो प्रभु भंज्यो शंभु चाप भारी । जनक सुता समेत आवत गृह परसराम अति मदहारो ॥ तात बचन तजि राज काज सुर चित्रकूट मुनि भेष धरयो ॥ एक नयन कीन्हो सुरपति सुत बधि विराध ऋषि शोक हरयो ॥ पंचवटी पावन राघो करि सूरनषा कुरूप कीन्हों ॥ षरदूषन संहार कपट मृग गीधराज कह गति दीन्हों ॥ हति कबंध सुग्रीव सषा करि टारयो ताल बालि मारयो ॥ बानर रीछ सहाय अनुज संग सिंधु बांधि जस विस्तारयो ॥ सकुल पुत्र दल सहित दसानन मारि अषिल सुर दुष टारयो ॥ परम

साधु जिय जानि विभीषण लंकापुरी तिलक सारो ॥ ७ ॥ सीता अरु लछिमन संग लीन्हे औरौ जिते दास आये ॥ नगर निकट विमान आवत सुनि नर नारी देषन आये ॥ ८ ॥ मिले भरत जननी गुरु परिजन चाहत परम अनंद भरे ॥ दुसह वियोग जनित संभूत दुख राम चरन देषत बिसरे ॥ ९ ब्रह्मादिक सुर नारदादि मुनि अस्तुति करत विमल वर बानी ॥ चौदह भुवन चराचर हरषित आये राम राजधानी ॥ १० ॥ देखि दिवस सुभ लगन सोधि गुरु महाराज अभिषेक कियो तुलसीदास तब जानि सुअौसर भक्ति दान वर मांगि लियो ॥ ११ ॥ इति श्री रामायण गीतावलि सातो कांड समाप्तः शुभ संवत् १८९१ वैसाष मासे कृष्ण पक्षे दसम्यां सनिवासरे इदं पुस्तकं लिषित संपूर्नम शुभम् रामायनमः ।

Subject—इस पुस्तक में श्री राम जी की लीला सातो कांडों में पृथक २ वर्णन की गई हैं । अर्थात्

श्री राम जी का जन्म, व्याह, ताड़का सुबाहु आदि का मारना मुनि के मख की रक्षा करना, गौतम नारी का उद्धार करना, भूपों के गर्व को दूर करना, परसराम का संवाद, अयोध्यापुरी जाना, फिर पिता वचन मान वन गवन करना, चित्रकूट में मुनि भेष धारण कर वास करना, जयंत की एक आंख फोड़ना, सुर्पणखा की नाक काटना, खरदूषन का संहारना, कपट मृग का वध करना, गृद्धराज को मुक्ति देना, कबंध को मारना, सुग्रीव से मित्रता करना, बालि को मारना, वानर और रीछों की सहायता से रावण का सवंश नाश करना, विभीषण को लंकापुरी का राज देना और फिर लक्ष्मण सीता सहित अयोध्या में वापस आना, नगर निवासियों का आनन्द आदि का वर्णन है ।

No. 432(*l*). Gitāwalī, by Tulasīdāsaji. Substance—Conntry-made paper. Size—13 × 6 inches. Lines per page—12. Extent—1 Anushṭup śloka. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Śiva Sahāi, village Ulara, post office Musāfirkhānā, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—हैं है लाल कबहिं बड़े बलिहारी मैया ॥ रामलषन भावते भारत रिपुदवन चारु चारै: मैया ॥ १ ॥ बाल विभूषन वसन मनोहर अंगति विरचि बनैहो । सोभा निरखि नेछावरि करि उरलाइ वारने जैहो ॥ २ ॥ छगन मगन अंगन खेलिहौ, मिलि ठुमुक ठुमुक कब धैहौ ॥ कल बल वचन तोतरे मंजुल कहि मा मोहि बुलैहौ ॥ ३ ॥ पुरजन सचिव राउरानी सब सखा सहेली ॥

लैलो लोचन लाहु सुफल लषि ललित मनोहर बेलो ॥ ४ ॥ जो सुषको लालसा रहै सिव सुक सनिकादि उदासी ॥ तुलसी तेहि सुष सिंधु कौसिला मगन प्रेम पुरवासी ॥ ५ ॥ ८ ॥

End—पृ० १२०—राग वसंत ॥ षेलत वसंत राजाधिराज । नभ कौतुक देषत सुर समाज । सोहै अनुज सषा रघुनाथ साथ । झोलिन अबीर पिचकारि हाथ । वाजहि मृदंग डफताल वेनु । छिरकहिं सुगंध परिमल परेनु । उत युवति यूथ जानकी संग । पहिरै पट भूषन सरस रंग । लिएं छरी वेत सोधे विभाग । चाचरि झूंमक कहै सरसराग । नूपुर किंकिनि धुनि अति सोहाइ । ललनागन जब जेहि धरहिं धाइ । लोचन अाजै फगुआ मनाइ । छांड़हि नचाइ हाहा कराइ । चढ़े खरन विदूषक स्वांग सजि । करैं फूटि निपटि गई लाज भागि । नरनारि परस्पर गारि देत । सुनहिं सतराम भाइन्ह समेत । वरषहिं प्रसून, वर विवुध वृंद । जय जय दिनकर कुल कुमुदचंद । ब्रह्मादि प्रसंसत अवधवास । गावत कल कीरति तुलसिदास ॥

No. 432(*m*). Gītāwali Rāmāyaṇa by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—400. Size—9 × 4½ inches. Lines per page—7. Extent—2,275 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Viśwanātha Siṃhaji, Raīsa and Talukedāra, Agaresar, post office Tirsundi, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः श्री जानकी विश्नु भोविजैजयत ॥ नीलांवुजं स्यामल कोमलांगं सीता समारोपित वामभागं ॥ पाणौ महासायक चारु चापं नमामि रामं रघुवंश नाथं ॥ राग असावरी ॥ आजु सुदिन सुभघरी सुहाई ॥ रूपशील गुनधाम राम नृप भवन प्रगट भे आई ॥ अति पुनीत मधु मास लगन ग्रह वार जोग समुदाई ॥ हरषवंत चर अचर भूमितरु तनरुह पुलक जनाई ॥ वरषहि विवुध निकर कुसुमावली नभ दुंदुभी वजाई ॥ कौसिल्यादि मातु मनहरषिहिं यह सुष वरनि न जाई ॥ सुनि दसरथ सुत जनम लिए सब गुरजन विप्र बुलाई ॥ वेद विहित करि क्रपा परम सुचि आनंद उर न समाई ॥ सदन वेद धुनि करत मुदित मुनि वहुविधि वाज वधाई ॥ पुरवासिन प्रियनाथ हेतु निज संपदा लुटाई ॥ मनि तोरन वहु केतु पताकनि पुरी रुचिर छवि छाई मागध सुत द्वार वंदि जन जहां तहां करत बड़ाई ॥ सहज सिंगार किए वनिता चलि मंगल विपुल बनाई ॥ गावहि देहि असीस मुदित ह्वै चोरंजीअौ तनै सुषदाई ॥ विथिन कुंकुम कीच अरगजा अगर अबीर उड़ाई ॥ नाचहि वर नर नारि प्रेम भर देह दशा विसराई ॥ अमित धेनु गजतुरंग वसन मनि जात रूप अधिकाई ॥ देत भूप अनुरूप जाहि जोइ सकल

सोधि ग्रह भाई ॥ सुषो भए सुर संत भूमि सुर षल गन मन मलिनाई ॥ सबहि सुमन विकसत रवि निकसत कुमुद विपिन विलषाई ॥ जो सुधि सुकीत सोकहते सोव विरंचि प्रभुताई ॥ सोइ सुष अवध उमगि रह्यौ दशदिशि कौन जतन कहौं गाई ॥ जेरघुवर चल चिंतक तिन्हको गति प्रगट दिषाई । अवदिल अमल अनूप इढ़ तुलसी दास कताई ॥ १ ॥ जयति श्री० ॥

End—वालक सिय के विहरत मुदीत मन दोउ भाई ॥ नाम लवकुश राम सीय अनुहरत सुंदरताई ॥ देत मुनि मुनिष सोक हरो पंचवटी पावन राघो करि सूपनेषा कुरुप कीन्हो ॥ षरदूषन संघारि कपट मृग गीधराज कह गति दीन्ही॥ हति कवेष सुग्रीव सषा करि भेदे ताल बालि मारयौ। वानर रीछ सहाई अनुज संग सींधु विधि जसु विस्तारयौ ॥ सकुल पुत्र दल सहीत दशानन मारो अखिल सुर दुष टारयौ ॥ परम साधु जोअजानि विभोषन लंकापुरी तीलक सारयौः। सीता अरु लछीमन संगलीन्हे का गिते दासंग प्रारा ॥ नागर निकट विमान आयो सब नर नारि देखन धाये शिव विरंच सुक नारदादी मुनि अस्तुती करत विमल वानी ॥ चैादह भुवन चराचर हरषीत आए राम राजधानी मीले भरत जननी गुर परितन चाहत परम अनंद भरे ॥ दुसह वियोग जनीत दारुनदुष रामचरन देखत विसरे ॥ वेदपुरान विचारि लगन सुभ महाराज अविवेक की वो तुलसीदास जोय जानि सुअवसर भगती दान ट्त्व मांगि लीवो ॥ इति पद गीतावली ॥

No. 432(*n*). Gītāwalī, by Tulāsi Dāsa. Substance-Country made paper. Leaves—230. Size—7 × 3½ inches. Lines per page—26. Extent—2,970 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1902 Samvat or A.D. 1845. Place of deposit—Ṭhākura Indrajītā Simha, village Atorar, post office Baondi, district Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः श्री जानकी वल्लभायनमः ॥ अथ गीतावली लिष्येत ॥ नीलांबुजं स्यामल कोमलांगं सीता समारोपित वाम भागं । पाणो महासायक चारु चापं नमामि रामं रघुवंस नाथमं ॥ राग असावरी ॥ आजु सुदिन सुभघरी सोहाई ॥ कहा कहौ अधिकाई ॥ रूप सील गुन धाम राम नृप भवन प्रगट भये आई ॥ अति पुनीत मधुमास लगन ग्रहवार जोग समुदाई ॥ हरष-वंत चर अचर भूमि सुर तन रुद पुलक जनाई ॥ वर्षहिं विवुध निकर कुसमावलि नभ दुंदुभी वजाई ॥ कौसिल्यादि मातु मन हरषित यह सुष वरनि न जाई । सुनि दसरथ सुत जन्म लियो सब गुर जन विप्र बोलाई । वेद विदित करि कृपा परम

सुचि आनंद उर न समाई ॥ सदन वेद धुनि करत मधुर मुनि बहुविधि बजत बधाई ॥ पुरवासिन प्रिय नाथ हेत निज निज संपदा लुटाई ॥ आदि ॥

End—राग रामकली ॥ रघुनाथ तुम्हारे चरित मनोहर गावत सकल अवध वासी ॥ अति उदार अवतार मनुज वपु धरेउ ब्रह्म सोइ अविनासी । प्रथम ताड़िका हति सुबाहु वधि मष राष्यो द्विज हितकारी । देषि दुषित अति सिला श्राप बस रघुपति बिप्र नारि तारी ॥ सब भूपन का गर्भ हर्‌यो हरि भंज्यो संभु चाप भारी ॥ जनक सुता समेत आवत गृह परसराम का मदहारी ॥ पिता वचन तजि राज काज सुर चित्रकूट मुनि देष धरगो ॥ एक नयन कीन्हो सुरपति सुत वधि विराध रिषि सोक हरगो॥ पंचवटी पावन करि राषो सुपनषा कुरूप कीन्हो॥ षरदूषन संघारि कपट मृग गीधराज कहं गति दीन्हो ॥ हति कवंध सुग्रीव सषा करि वधेउ ताल वालि मारगो ॥ वानर रीछ सहाइ अनुज संग सिंधु बांधि जु विस्तारगो ॥ सकुल पुत्र दल सहित दसानन मारि अषिल सुर दुष टारगो ॥ परा साधु जिय जानि विभीषन लंकापुरी तिलक सारयो ॥ सीता लषन संग लीन्हे प्रभु औरो जेते दास आये ॥ नगर निकट विमान आयो सब नर नारी देषन धाये । सिव विरंचि सुक नारदादि मुनि अस्तुति करत विमल बानी ॥ चैादह भुवन चराचर हरषित आये राम राजधानी । मिले भरत जननी गुरु परिजन चाहत परम अनंद भरे ॥ दुसह वियोग रोग दारुन दुष रामचन्द्र देषत विसरे ॥ वेद पुरान विचारि लगन सुभ महाराज अभिषेक कियो ॥ तुलसीदास जिय जानि सुअवसर भक्ति दान वर मांगि लियो ॥ इति श्रीराम गीतावल्या उत्तर कांड समाप्तमो सोपाण समस्त सुभं भूयात श्रीराम चंद्राय नमोनमः ॥ चैत्र मासे कृष्ण पक्षे भोमवासरे संवत् १९०२ ॥ लिष्येत मोहनलाल ग्रामवासी वासुरे के जा देषा सो लिषा मम दोष न दीयते ॥

No. 432(*o*). Rāma Gītāwalī, by Tulasī Dāsa of Rājāpura (Bāndā). Substance—Country-made paper. Leaves—43. Size—8 × 6 inches. Lines per page—36. Extent—900 Anushṭup ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Kaithī. Place of deposit—Paṇḍita Rāma Sundara Miśra, village Katgharī, post office Akaona (Baharāich).

Beginning—मागध सूत भाट नट जाचक जहं तहं करहिं बिचार ।
विप्र वधू सनमानि सुआसिनि जन परिजन पहिराइ ।
सनमानै अवनीस असीसत इष्ट महेस मनाइ ॥

अष्ट सिद्धि नवनिधि विभूति सब भूपति भवन कमाहीं ।
सभै सुराज राज दसरथ को लोकप सकल सिहाहीं ॥
को कहि सकै अवध वासिन को प्रेम प्रमोद उछाह ।
सारद सेस गनेस गिरीसहि अगम निगम अवगाह ॥
शिव विरंचि मुनि सिद्धि प्रसंसित बड़े भूप के भाग ।
तुलिसिदास प्रभु सोहिलो गावत उमगि उमगि अनुराग ॥

End—किंकिनी कनक कंज अवली मुद्दु मरकत सिखिन मध्य जनुजाइ ।
मानहु परम सोभित नमित मुख विकसित चहुंदिसि रहै लोभाइ ॥
भुज प्रलंब भूषन अनेक जुत वसन पीता सोभा अधिकाइ ।
जज्ञोपवीत विचित्र हेम मय मुक्तामाल उरसि मोहि भाइ ॥
अंबुद तडित वीच जनु सुरपति धनु निकट वलक पांति चलि आइ ।
कंबु कंठ चिबुक पर सुन्दर क्यो कहो दसनन को गुचोआइ ॥
कुंचित केस सुदेस वदन पर मधुपन को अवलो चलि आइ ॥
पदुम कोस..

No. 432(*p*). Rāma Gītāwalī, by Tulasī Dāsa of Rājāpura (Bāndā). Substance—Country-made paper. Leaves—80. Size—13½ × 6 inches. Lines per page—12. Extent—2,640 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1840 Samvat or A.D. 1783. Place of deposit—Rājapustakālaya, Bhinagā (Baharāich).

Beginning—श्री सीता रामायनमः ।
स्वामी स्वामिन के सहित वन्दौ तुलसीदास ।
करहु कृपा चित चरन ते कबहु न होइ उदास ॥
आसावरी—आज सुदिन सुभघरी सुहाई कहा कहीं अधिकाई ।
रूप सील गुन धाम राम नृप भवन प्रगट भये आई ॥ १
अति पुनीत मधुमास लगन ग्रह वार जोग समुदाई ।
हरषवंत चर अचर भूमि तरु त नर पुलक जनाई ॥ २
वरषहि विबुध निकर कुसुमावलि नभ दुंदुभी वजाई ।
कौसिल्यादि मातु सब हरषित यह सुख वरनि न जाई ॥ ३

End—शिव विरंचि शुक नारदादि मुनि अस्तुति करत विमल वानी ।
चौदह भुवन चराचर हरषित आए राम राजधानी ॥ ९ मिले भरत जननी गुरु पुर-

जन चाहत परमानन्द भरे। दुसह वियोग जनित दारुन दुख रामचरन देखत बिसरे ॥ वेद पुरान विचारि लगन शुभ महाराज अभिषेक कियो। तुलसीदास जिय जानि सुअवसर भक्तिदान तब मांगी लियो ॥ इति श्रीराम गीतावल्यां श्री गोस्वामी तुलसीदास कृत सम्पूरणम् शुभ मस्तु संवत १८४० माघ मासे कृष्ण पक्षे तिथि ४ बुधवार ॥

No. 132(q). Hanumāna Vāhuka, by Tulasī Dāsa of Rājapura (Bānda). Substance—Old country-made paper. Leaves—20. Size—7 × 4¼ inches. Lines per page—22. Extent—400 Anushṭup ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Śyama Behārī Paṇḍey, Nāgarī Prachārini Sabha, Kāśi.

Beginning—श्रीगणेशायनमः स्वर्ण सैल संकास कोटि रवि तरुण तेज तन उर विशाल। भुज दंड मंड नख वज्र तन गिंगल नयन भृकुटी कराल ॥ रसना दशनानन कपिश केश कर्कस लंगूर खल दल तम भान। कह तुलसीदास सो जासु उर वसहि मारुत मूरति विकट। संताप ताप तेहि पुरुष के सपनेहु नहिं आवत निकट ॥ सिंधु तरन सिय शोक हरन रवि वाल वरन तन उर विशाल। मूरति कराल कालहुक काल जनु गहन दहन × × ×
नहि संक वंक भुव × × × जातु धान
वलवान मान मद दवन पवन सुव। कह तुलसिदास सेवत सुलभ माकर लुत मूरति निकट ॥

End—पाइ होन पेट होन मुख होन वाहु होन सीस होन जन जानि सकल समीप होन भयो है। देव भूत पितर कर्म खल काल ग्रह मोहिय इन्ही वर मानिक से दई है ॥ हैां तो विन मोल होन विकानो वल रावरे हो तेरे आट नाम की ललाट सीख लई है। कुंभज के किंकर विकल वूड़े गो खुरन हाय हाय राम राइ ऐस कहि भई है ॥

वाहुक सुवाहु नीच लोचन मरीच मिलि पीडा है सुकेतु सो तो रोग जातुधान है। रामनाम जापि आगि कियो चाहैां सानुराग काल के दूत भूत कहा मेरे मान है ॥

सुमिरे सहाय राम लखन अखन दोऊ तिनके साके समूह जागत जहान है।

तुलसी समान ताड़िका संहारि मानी भर वधे वगद से कनाई वान वान है ॥

वाल पनै सुधे मत × × × ×

No. 432(*r*). Hanumāna Stuti (Hanumān Vahuk), by Goswāmī Tulasī Dāsjī. Substance—Country-made paper. Leaves—12. Size—5 × 8 inches. Lines per page—16. Extent—168 Anushṭup ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1932 Samvat or A.D. 1875. Place of deposit—Ṭhākura Jaivaksha Siṃha, village Mithaora, tahsil Kesarganj, post office Kesarganj, district Baharāich (Oudh).

Beginning—अथ हनुमान स्तुति लिष्यते ॥ सिंधु तरण सिय सोच हरण रवि वाल वरन तनु भुजा विशाल मूरति कराल कालहु को काल जनु । गहन दहन निर्दहन लंक निःसंक वंक भुव ॥ जातुधान वलवान मान मद दवन पवन सुव ॥ कह तुलसीदास सेवत सुलभ सेवक हित संतत निकट गुण गण तन मत सुमिरत जपत सनम सकल संकट विकट ॥ स्वरण सैल संक सकोटि रवि तरुन तेज घन । उर विसाल भुजदण्ड चंड नष वज्र वज्र तन ॥ पिंग नयन भृकुटी कराल रसना दसनान ॥ कपोस केस ककेस लंगूर षलदल भानन ॥ कह तुलसी दास वस जासु उर मारुत सुत मूरति विकट । संताप पाप तेहि पुरुष के सपनेहु नहि आवत निकट ॥ कवित्त ॥ पच मुष छः मुष भृगु मुष भट असुर सुर सर्व सरिस समरत्थ सूरो । वंकुरो वीर विरदैत विरदावली वेद वंदो वदत पैज पूरो ॥ जासु गुण गाथ रघुनाथ कह जासु वल विपुल जल भरित जग जलधि झूरो ॥ दन दूप दवन कै न तुलसी सहै पवन का पूत रजपूत पूरो ॥

End—काल को करालता करम को कठिनाई कैधैां पाप के प्रभाव को सुभाय वाय वावरे । वेदन कुभांति सो सही न जाति राति दिन सोई वांह गही ज्यों गही समीर डावरे ॥ लातन तुलसी तिहारो सो निहारि वारि सोचिये मलोन भो कुपीर ताप तावरे ॥ भूतन की आपनी पराई है कृपा निधान जानियत सव ही की रीति राम रावरे ॥ पाइ पीर पेट पीर वांह पीर मुष पीर जरजर सकल सरीर पीर मई है ॥ देव भूत पितर कर्म षल काह ग्रह मोहि परद वरिद मान कसी दई है ॥ हों तो विन मोल ही विकानो वलि वार होते षोट राम नाम को ललाट लिष लई है ॥ कुंभज के किंकर विकल वूड़े गोपुरनि हाय राम दूत ऐसी नई कहूं भई है ॥ वाहुक सुवाहु नोच लीच मरीच मिलि पोड़ा है सुकेत सुता रोग जातुधान है राम नाम जप जाग कियो चाहै सानुराग काल कैसे दूत भूत कहा मेरे मान है । सुमिरे सहाइ राम लषन आषर दोऊ जिनके साके समूह जानत जहान हैं ॥ तुलसी संभारत ताड़का संभारि भारि भट वेधे वगद से वनाई वान वान हैं ॥ इति

No. 432(s). Hanumāna Vahuk, by Tulasī Dāsa of Rājāpura. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size 6 × $3\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—14. Extent—245 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—1929 Samvat or A.D. 1872. Place of deposit—Paṇḍita Baijnāthajī, post office Govindapura, district Rae Barelī.

Beginning—श्री गणेशायनमः

श्री रघुवरहि प्रणाम करि सहित लषन हनुमान ।
राषि हृदय विस्वास दृढ़ पुनि पुनि करौ प्रणाम ॥ १
भोमवार ग्रादिक पढ़ै जो नर सहित सनेह ।
रुज संकट व्यापै नहीं बाढ़ै सुष धन गेह ॥ २ ॥
सुचि सनेम पढ़िहै सुजन निरुज गात वल धाम ।
ह्वै है रत तुलसी सपद जन पैहै सब ठाम ॥ छप्पै ॥
स्वर्ण सैल संकट सकोटि रवि तरुण तेज धन ।
उर विसाल भुज दण्ड चण्ड नष वज्र वज्र तन ॥
पिंग नयन भृकुटी कराल रसना दस ग्रानन ।
कपि सकेस कर कस लंगूर षल दल वल भानन ॥
कह तुलसिदास वसु जासु उर मारुत सुत मूरति विकट ।
संताप पाप तेहि पुरुष के सपनेहु नहि ग्रावत निकट ॥ १ ॥

End—ग्रसन वसन हीन विषै विषाद लीन हीन दीन दूवरो कहैया हाय हाय को । तुलसी ग्रनाथ को शनाथ कीन्हो रघुनाथ दीन्हौ फल चारि चाह ग्रापने सुभाय को ॥ नीच यहि वीच सुष पाय पाय भरु हाय छांडि हारि भजन विसारो मन काय को । ताते वर तोर तन निसि दिन देषियत मानो । फूटि फूटि निकसति हे लोन राम राम को ॥ ५२ । दोहा

वाहुक सीता राम कैा हणुमत सरनहि ग्राइ ।
तुलसी राम नेवाजेउ कर गहि कीन्ह सहाइ ॥
भज तरु पोढर रोग ग्रहि बरवस कीन्ह प्रबेस ।
विहंग राज वाहन तुरत काटै मिटै कलेस २ ॥
निज ग्रोगुन गुण राम को समुझै तुलसीदास ।
होइ भलो कलि कालहू उभै लोक ग्रनयास ॥ ३
वांहु पीर को नाम पुनि हरन पीर संसार ॥
प्रगट कियो मम इष्ट गुरु रहित समस्त विकार ॥ ४ ॥

वैाहुक पोरा वांहुक हरन करन सकल कल्यान।
तुलसो पठ नित नेम सो वावन कवित प्रमान ॥ ५

इति श्री वाहुक स्तोत्र गासाई तुलसीदास कृत समाप्तम् सम्वत १९२९

No. 432(*t*). Hanumāna Vāhuka, by Tulasī Dāsaji. Substance—Country-made paper. Leaves—Size—9½ × 4½ inches. Liues per page—7. Extent—125 Anushṭup ślokas. Appearance—Good. Prose or Verse—Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1878 Samvat or A.D. 1821. Place of deposit—Paṇḍita Bhawāni Miśrājī, village Uttar Gāwan, post office Aliganj Bāzār, district Sultānpur.

Beginning—श्री गनेशायनमह ॥ श्री महावोर जो सहाय ॥ कवित्त डंडक ॥ कमट को पोष्टटो जाको गाडि न को गाडै मांनो नाम कैसो भाजन जल निधि को जल भो ॥ जातधान पावन परावन को दुर्ग भयो महा मोन भास तामे मोन को सुथल भो ॥ कुंभकरन रावन पयोधिनाद इयन भो तुलसो प्रताप जाको प्रवल अनल भो ॥ भोषम कहत मेरे अनुमान हनोमांन सारिपे त्रीकाल को त्रिलोक महा वल भो ॥ १ ॥ दूत रमारवन के सपूत पवंन के तुं अंजनो के नंदन प्रताप भूरि भांन सो ॥ सोया सोक हरन दुरित दुषदरन सरन आये अवंनि लषन प्रोया प्रान सो ॥ दसमुष दुसह दरिद्र दरबे को भयो प्रगट त्रोलोक योक तुलसो नोधांन सो ॥ ग्यान गुनवंत वलवांन सेवा सावधान साहेब सुजांन उर आंन हनोमांन सो ॥२॥

End—संकट हर मंगल करन महावोर गुनगांन ॥ अक्षर पद सब लोन रहु सुष संपति कल्यान ॥ है तुलसो के येक गुन अगुनाधिक कह लो ॥ भलो भरोसो राम को रांम रोझवे जाग ॥ जह लघु तंह दोरघ कोहेउ दोरघ लघु को ठाउ ॥ अक्षर पद टूटै जहा छमिये सब कपि राउ ॥ महावोर को रंक ते लंकोनो को वल टूट ॥ तुलसोदास जो यहर्थ अति वांह विथा सब छूट ॥ इति श्री समस्त संपूरन कथा वाहुक तुलसोदास कृत जो प्रति देषा सो लोषा मम दोष न दोयते पंडित जंन सो विनतो मोरि टूट अक्षर वाचन जोरि दसषत रामदास कथिक के लोषे संवत १८७८ मोती जेठ सुदोय मंगरवार सन १२२८ सोतराम ॥

No. 432(*u*). Hanumāna Vāhuka, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size 7½ × 4 inches. Lines per page—7. Extent—170 Anushṭup ślokas. Appearance—Good. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1835 Samvat or A.D. 1778. Place of deposit—Paṇḍita

Bhāgīrathī Pandey, village Pīparpur, post office Pīparpur, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ पोथी हनुमान वाहुक ॥ तुलसीदास कृत ॥ छपै ॥ स्वर्न सदन संकास कोटि संकास कोटि रवि तरुन तेज घन ॥ उर वोसाल भूजदंड चंड नृष वज्र वज्र तन ॥ पींग नयन भ्रोकुटी कराल रसनारद ग्रानन ॥ कपिस केस कर्कसलगुर षल दल वल भानन ॥ कह तुलसीदास य शू जभजनव मारुति वोकट ॥ संना वाव वावरे ॥ वेदन कुभाति सो सहि न जात राति दोन सोइ ॥ वाह गहो जो गहो समीर डावरे ॥ लाएवतरु तुलसी तेहारे सो नीहारि वारि सी वी॰ ए मलान भवत पोहै तोहुन वरे ॥ भुतनो को ग्रापने को साथ ते वढ़ी हो ॥ वाह वेदन कहो न सहि जाति है ॥ ग्रवुषद ग्रनेक जंत्र मंत्र टोटकादि कोए वादि महा देवता मनाए ग्राघोकाति है ॥ करतार हरतार भरतार कर्म काल को है जंत्र जाल जो न मानत इतराति है ॥ वेदो तेरो तुलसो तु मेरो कहो रामहु तठोल ते हो महावोर पीग्ते पीरातू है ॥

End—सीता राम दयाल है सुमिरत नाम उदार ॥ तुलसी ताको सुलभ है सदा युक्ति को द्वार ॥ २ ॥ राम नाम जपते रहो सदा संत लवलीन ॥ तुलसी ते जान खुद है कबहो न होत मलि ॥ जन की पीर ॥ तुलसी को ग्रब राषोए शरन सुषद रघुवीर साहव सीताराम हैं जानत जन की पीर ॥ सो हरन संसै दलन सरन सुषदरन धरि ॥ तुलसो राष हरि पद गहो पाप न रहै सरीर × × × × × है तुलसी वह एक गुन ग्रैागुन नीधी वह लोग ॥ भरो भरोसा रावरो राम रो भवे जोग ॥ १ ॥ इति श्री हनुमान वाहुक श्री गोसाइ तुलसीदास कृत संपुन शुभमस्तु श्री शीकृस्क ॥ संमत ॥ १८३५ भादैां मासे वृस्त सतम्या सुक्रवासरे लेखीता चीतार्मान दारा ॥ × × × ×

Subject—वाहु पीड़ा निवारणार्थ हनुमान जी को प्रार्थना सम्बन्धी ४४ छन्द ग्रैार कुछ दोहे ।

No. 4?2(v). Hanumata Panchaka, by Tulasī Dāsa of Rājāpura. Substance—Country-made paper. Leaves—2. Size—$5\frac{1}{2} \times 3\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—11. Extent—62 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1918 Samvat or A.D. 1861. Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Siṃha Sengara, Raisa, village Kāṅthā, post office Kānthā, district Unāo.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ हनुमत पंचक तुलसी कृत लिष्यते। बालि का त्रास कुमंत्र कुसंगति व्याकुल देह दसा बिसराई। बैठि बिचार करौ गिरि ऊपर चित्त न आवत एक उपाई। मन मैं अनुमानि तुम्है रघुनायक भेंट भये ते मिटी दुचिताई। या विधि मोर कलेस हरौ हनुमान तुम्है सियराम दोहाई ॥ १ ॥ नाघि पयोध अबोधि मिया अरु मेटि बिभीषन की दुचिताई। फेरि हवा सुत आनि कहो सो समथ्थ बिदेह सुता कुशलाई। रावन के मद मर्दन को पुनि कीन्हो है हर्ष सुषो समुदाई ॥ या विधि ॥ २ ॥

End—आनेउ भैान सुखेन समेत गहे गिर द्रोन दुरे दुतिजाई। बिच कें पाथ चले अति आतुर पुष्प बिमान मनो हलकाई। आषधि पाइ प्रमोदित ह्वै तब बैद सुखेन सुकीन उपाई। याबिधि मोर कलेस० ॥ ४ ॥ रोग बियोग बिदारन को अरु भालु के अंक में अंक बढ़ाई। पुत्र पोउत्र सषा परिवार सुषो सब सागर सेत बंधाई। दारिद दंभ मिटै तुलसी हनुमान के पांच कवित्त पढ़ाई ॥ या विधि० ॥ ५ ॥ पांच कवित्त को पंच कहि पढ़ै सुनै नर कोइ। सुष संगति आनन्द बुधि दिन दिन दूनो होइ। इति तुलसीदास कृत हनुमंत पंचक संपूरन शुभमस्तु ॥ सं० १९१८ ॥

Subject—पांच कवित्तों में हनुमान जी की स्तुति की गई है।

No. 432(*w*). Jnanadīpikā Bhāshā, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—31. Size—8 × 5 inches. Lines per page—18. Extent—384 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of composition—Samvat 1631 or A.D. 1574. Date of manuscript—1873 Samvat or A.D. 1816. Place of deposit—Ṭhākura Daljīta Simha, village Jālima Simha Kā purwā, post office Kesaraganja, district Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः ॥ सुमिरत चरन गनेस के प्रथमहि सीस नवाय के। बुद्ध सिद्ध जाते लहैा भाषो ग्रंथ बनाइ। चो० ॥ नहिं उपजै नहिं होइ बिनासा। तिहू लोक जाकर परकासा ॥ जाकी लीला जगत भुलाना। नमो नमो ता प्रभु भगवाना ॥ दोहा ॥ सारद सुक नारद सुमिरि व्यास जनक के पाइ। ज्ञान दीपका रचत हैां। राम चरन चितु लाइ। चो० ॥ सुनि मुनि बिबिधि संस्कृतबानी। भाषा कीन्ह चहैां रुचि मानी ॥ हरिहि मिलन के मारग पाये ॥ देहिं बताय प्रगटबुध भाये। दो० ॥ ज्ञान दीपिका बरनि हैां भाषत जो तिहि पांच। उक्ति युक्ति सो ग्रंथ करि कथा पुरातन सांच ॥ अथ दीपक यथा ॥ दो० ॥

बुद्धि पात्र वाती उकत तत्व तेल को धार। ब्रह्म अग्नि करि लेसिये ज्ञान दीप उजियार ॥ संवत सोरह सै। गये इकतिस अधिक विचारि शुक्लपक्ष आषाढ़ को दुइज पुष्य गुरवार। तादिन उपजी दीपिका पांच ज्योति परवानं धर्म ज्ञान अहं ब्रह्म पुनि प्रभु स्वरूप विज्ञान ॥

End—दे।० ॥ मन में करियत छाेभ कछु कैते। परै खंभारु। यह विचार जन राषि मिर देत हरन करतारू। सुमति भूमि अरु कुमति धनु सर करनो सब मैार ॥ भोग निसाना ताकि करि करत काम तन चोट। यह विचारि नहिं आय सिर षिय सकल अभार। करम ओट दुख सुख जगत सब भुगवत करतार। वुद्धि हीन जड़ता अधिक कहिय पायको मोट। राम साधु को विरद सम टिक्यो दुहुन को ओट ॥ यह विचारि नहिं मानिये अवगुन ता मति हीन। विरद समुझि अरु सरन लषि छिमा करेहु सु प्रवीन ॥ सोरठा। मतिवंधू कुल देस जप तप विद्यावेद विधि। रहैं न इनको लेस नारि जो मुषहि लगाइये। कर्म सुभासुभ जानि, दिव्यना ताके कर गहे। जितहि टिकावति आनि, तितहिं वसै मन कामना ॥ इति श्री ज्ञान दीपिकायां श्री स्वामी तुलसीदास कृत श्रीति पुराननु मते सिक्ष्यामार्ग वर्ननो नाम पंचमोध्याय ॥ ५ ॥ सोरठा। श्री गुरुचरन प्रसाद पोथी लिषि पूरन कियो राम सहाइ सदाय श्री रघुवीर प्रतापते संपूर्ण जेष्ट वदि ५ भृगुवासरे संवत १८७३ श्री दर्व्योनमः ॥ राम राम राम ॥

Subject—पृ० १—४ तक—ईश्वर प्रार्थना। आदि दीपक की परिभाषा। धर्म मार्ग, अधर्म मार्ग, सुबुद्धि, कुबुद्धि, यमराज आदि का वर्णन। अर्थात् राम वशिष्ट, श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर का संवाद वर्णन किया गया है। पृ०—५—१० तक—ज्ञान मार्ग जो प्रवोधचन्द्र के मतानुसार है। इसमें काम क्रोध लोभ मोह तप क्षमा हिंसा आदि का अलग अलग वर्णन किया गया है। पृ० ११—१४ तक—श्री शंकराचार्य मतानुसार ब्रह्म और माया का निर्णय वर्णन है। पृ० १५—२४ तक भागवत, रामायण मतानुसार श्री रामचन्द्र जी व श्री कृष्ण के स्वरूप वय सहित ध्यानपूर्वक वर्णन किया है। पृ० २५—३१ तक—श्रुति पुरान मतानुसार शिक्षा मार्ग का वर्णन है। इसमें वताया गया है कि मनुष्य का क्या धर्म है और उसे क्या करना चाहिये ॥

No. 432(*x*). Maṅgala Rāmāyaṇa (Jānkī Maṅgal), by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—16. Size—6 × 12 inches. Lines per page—16. Extent—256 Anushṭup ślokās. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1861 Samvat or A. D. 1804.

Place of deposit—Pandita Bhagwān Dīnajī Miśra, Vaidya, Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मंगल रामायण लिष्यते ॥ गुर गनपति गौरि गिरायति ॥ सारद सेष सुकवि श्रुति संत सरल मति ॥ हाथ जोरि करि विनय सबहिं सिर नावउ ॥ सो रघुवीर विवाह जथा मति गावउ ॥ सुभ दिन रचेउ सुमंगल मंगलदायक ॥ सुनत श्रवन हिय वसहिं सिया रघुनायक ॥ देस सुहावन पावन वेद वषानइ ॥ भूमि तिलकसम तिरहुति त्रिभुवन जानइ ॥ तहं वसै जनक नगर नृप परम उजागर ॥ सिया लली तहं प्रगटी सब सुष सागर ॥ जनक नाम तेहि नगर वसै नरनायक ॥ सवगुन रूप निधान न पटतर लायक ॥ भये न ह्वै हैं हेन जनक सम नल मै ॥ सीय सुता भइ जासु सकल मंगल मै ॥

End—जनि छोह छांड़ब विनय सुनि रघुवीर वहु विनती करी ॥ मिलि भेटि सहित सनेह वहुरि विदेह उर धीरज धरी ॥ सो समय कहत न वनै कछु सब भुवन भरि करुना रही ॥ तब कीन्ह कैासलपति पयान निसान वाजे गहगही ॥ मंगल ॥ तहहिं मिले भृगुनाथ हाथ फरसा लिये । डाटत आंषि देषाइ कोप दारुन किये ॥ राम कीन्ह परितोष रोष रिसि परिहरे ॥ चले सैांपि सारंग सुफल लोचन करे ॥ रघुवर भुजवल देषि उछाह वरातिन ॥ मुदित राउ लषि सन्मुष विधि सव भांतिन ॥ यहि विधि घाहि सकल सुत जग जस छायउ ॥ मग लोगन सुष देत अवध पति आयउ होहिं सुमंगल सगुन सुमन सुर वरषहिं । नगर कुलाहल भयउ नारि नर हरषहिं ॥ इति श्री मंगल रामायण स्वामी तुलसीदास कृत समाप्त सुभमस्तु ॥ संवत् १८६१ श्रावनि मासे कृष्णपक्षे तिथैा चतुर्थ्यां रविवासरे ॥ दसषत वेनी वकस के मंगल रामचरित्र श्रावनि वदि तिथि चैाथ कहं आदित पार पवित्र ॥ ससि रस वसु ससि अंकये सोई संवत जानु रामचरित्र अदभुत रतन करसि सदा मन ध्यानु ॥ राम लषन जय जानकी सहित भरत अरिहंत । सुमिरत मंगल सर्वदा जै पवनज हनुमंत ॥ श्री जानकी वल्लभो जयति ॥

Subject—श्री जानकी जी का जनक जी के यहां जन्म व व्याह व महाराजा दशरथ की वरात व भृगुनाथ का आना व श्री राम जी का भृगुपति का संतोष करना आदि का वर्णन ।

No. 432(*y*). Kavitāvalī, by Goswāmī Tulasī Dāsa of Rājāpura, Bāndā. Substance—Old, country-made paper. Leaves—58. Size—11 × 5½ inches. Lines per page—10. Extent—1,160 Anushṭup ślokās. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1889 Samvat or A. D. 1832. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhinga Rāja (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ग्रथ कवितावली रामायण कथा तुलसी कृत लिख्यते। चन्द्रकला पर्य्याय दुमिला छंद॥ अवधेस के द्वार सकार गई सुत गोद में भूपति लै निकसै। अवलोकिहुं सोच विमोचन को ठगि सी रहि जो न ठगे धृग से॥ तुलसी मन रंजन रंजित अंजन नैन सुखंजन जातक से। शसनी शशि मे सम सील उयै नव नील सरोरुह से विगसे॥ १

End—चाहैं न अनंग अरिये कै अंग मागिने को दियोई पै जानिये स्वभाव सिद्धि वानि सो। वारि बुंद चारि त्रिपुरारि पर डारि ये तो देत फल चारि लेत सेवा सांची मानिये॥ तुलसी भरोसो भवेस भोरानाथ के तो कोटिक कलेस करो मरै धारि सानिसो। दारिद दमन दुष दोष दाह समन सो लोक तिहुं नाहीं इजे रमन भवानि सो॥ १५५ इति श्री रामायण कवितावली गोसाईं तुलसीदास कृत उत्तर कांड समाप्त शुभमस्तु॥ मिति आषाढ़ मासे कृष्णपक्षे सप्तम्यां चंद-वासरे समत १८८९ सन १२४० साल दः गंगाप्रसाद कायस्थ मु० टिकुइया ग्राम।

No. 432(z). Kavitta Rāmāyaṇa, by Tulasī Dāsa of Rajapura (Bāṇdā). Substance—Old' country-made paper. Leaves —57. Size—$8\frac{1}{4} \times 5$ inches. Lines per page—22. Extent—1,232 Anushṭup ślokās. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1850 Saṃvat or A. D. 1793. Place of deposit—Bābū Padma Baksha Siṃha, Lavedpur, Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनम:॥ श्री जानकी रवन चरन कमलेभ्यो नमः॥ अवधेस के द्वार सकार गई सुत गोद कै भूपति लै निकसे। अवलोकिहैं सोच विमोचन कों ठगि सी रही जे न ठगे धिग से॥ तुलसी मन रंजन रंजित अंजन नैन सुखंजन जातक से। सजनी ससि में सम सील उयै नव नील सरोरुह से विगसे॥ १॥ पगनूपुर ओ पहुंची कर कंजन मंजु बनी वन माल हिए। नव नील कलेवर पीत झगा झलकैं पुलकै नृप गोद लिए॥ अरविंद से आनन रूपमयंद अनंदित लोचन भृंग पिये। मन में न वसे अस वालक जो तुलसी जग में फल कौन जिए॥ २॥

End—चाहै न अनंग अरिसकै अंग मागने को दियोई पै जानि सुभाव सिद्धि वानी सो। वारि बुंद चारि त्रिपुरारि पर डारिये तै देत फल चारि लेत सेवा सांची मानिसो॥ तुलसी भरोस नभवेस भोरानाथ को तै कोटिक कलेस करै वरै छार सानि सो दारिद दमन दुष दोप दाह समन सो लोक तिहुं नाहीं दूजो रमन भवानि सो॥ २९८

दोहा—राम वाम दिसि जानकी लषन दाहिने ओर।
ध्यान सकल कल्यान मय सुर तरु तुलसी तोर ॥ २९९

इति श्री कवित्त रामायन सम्पूर्णम् ॥

सुचिर्मासे शुक्ल पक्षे पंचम्या सनि वासरे पुस्तकं लिषित्वा गजराजस्य सम्वत् १८५० ॥

Subject—बालकांड वर्णन १ से २२ छंद तक
अयोध्या कांड वर्णन २३ से ४४ छंद तक
आरण्य कांड वर्णन छंद ४५ से ५० तक
किष्किन्धा कांड वर्णन छंद ५१ से ५२ तक
सुन्दर कांड वर्णन छंद ५३ से ९२ तक
लंका कांड वर्णन छंद ९३ से १४३ तक
उत्तर कांड वर्णन छंद १४४ से २९९ तक

इति

No. 432(*a*2). Kavitta Rāmāyana, by Tulasī Dāsajī. Substance—Old country-made paper. Leaves—228. Size—9 × 4⅓ inches. Lines per page—6. Extent—550 Anushṭup ślokās. Appearance—Ordinary and damaged. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1901 Samvat or A. D. 1844. Place of deposit—Thākura Viśwanātha Siṃha, Tāllukēdāra, village Agreser, post office Tirsundi, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री रामानुजाय नमः ॥ अथ कवित्त रामयण लिष्यते ॥ सवैया ॥ कवित्त ॥ अवधेश के द्वार सकार गई सुत गोद के भूपति लै निकसे। अवलोकि हैं। शोच विमोचन को चकि सो रही जो न चके धिक से ॥ तुलसी मन रंजन रंजित अंजन नयन सुखंजन जातक से। सजनी शशि में शमशील उयै नव नील सरोरुह से विकसे ॥ १ ॥ पग नेपुर औ पहुंची कर कंजनि मंजु बनी मणि माल हिये ॥ नवनील कलेवर पीत भगा झलकै पुलकै नृप गोद लिये ॥ अरविंद से आनन रूप मरंद अनन्दित लोचन भृंग पिये ॥ मन में न वसै अस बालक जौं तुलसी जग में फल कौन जिये ॥ २ ॥

End—देत संपदा समेत श्री निकेत याचकन भवनि भवूति भंग वृष भव हनु है ॥ नाम वाम वामदेव दाहिनो सदा अशंक संत अरधंगना अनंग को महतु है ॥ तुलसी महेश को प्रभाव भाव हू सुगम अगम निगम हू को जानिवो कहा कहै

कवि मुष शारदा लजानो जात गात श्वेत चंद जात रूप को लहतु है ॥ ३०० ॥ चाहे न अनंग अरि एको अंग आगने को दियोई पे जानिये सुभाव सिद्धि षांनि सों । वारि बुंद चार त्रिपुरारि पर डारियै तौ देत फल । चारिलेत सेवा सांचो मानि सो ॥ तुलसी भरे सन भवे शभोराना । थको तौ कोटिकलेश करो मरो द्वार सानि सो ॥ दारिद्‌दवन दो दाहक शमन शोक लोक तिहुं नाहि दूजो रवन भवानि सो ॥ ३०१ ॥ इति श्री कवित्त रामायण ॥ सम्वत् १९०१ ॥

No. 432(b2). Kavitta Rāmāyaṇa, by Tulasī Dāsa of Rājāpura (Bāṇda). Substance—Country-made paper. Leaves—15. Size—$11\frac{1}{4} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—9. Extent—304 Anushṭup ślokās. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Nāgarī Prachāriṇī Sabha, Benares.

Beginning—सिला सब सोहत सागर जैां बल वारि बढ़ै । करि कोप कहैं रघुबीर त्रिया सों कौतुक ही गढ़ कूदि चढ़ै ॥ चतुरंग चमू पल में दलिकै रन रावण राज के हाड़ गढ़ै ॥ ८९

घनाक्षरी—विपुल विशाल कपि भाल मानों काल बहु वेष धरे धावैं किरो करषा ।

लिए सिला सैल साल ताल औा तमाल तोरी तोप निधि विविध समाज हरषा ॥

दुग्गे दिग कुंजर कमठ कोल कलमलै डोलै धराधर धनु धरा धरु धरषा ॥

तुलसी तमकि चलै राघो को सपथ करैं को करै अटक कपि कटक अमरषा ॥ ९० ॥

End—सवैया । जाके विलोकत लोकप होत विसोक । लहैं सुरलोक सुरलोक सुगैारहि । सो कमला तजि चंचलता अरु कोटि कला रिझवे सिर मैारहि ॥ ताकैा कहाइ कहा तुलसी तुल जाहि मांगत कूकर कैारहि । जानकी जीवन को जनु है जरि जाहु सो जीह जो जांचिए अैारहि ॥ १६६

जड़ पंच मिले जेहि देहकरी करनी लघु धोंधरनी धर की । जन कैा कहु क्यैां करि है न संवार जो सार करै सचराचर को ॥ तुलसी कहु राम समान को आन जो सेवक जासु रमा घर की । जग में गति जाहि जगत्पति की परवाहि च ताहि कहा नर की ॥ १६७

जग जांचिय कोउ न जांचिय जो जिअ जा × × × × अपूर्ण ।

No. 432(*c*2). Krishṇa Gītāwālī, by Tulasī Dāsa of Rājāpura. Substance—Foolscap paper. Leaves—20. Size 7×4 inches. Lines per page—12. Extent—150 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Lālā Tulasī Rāma Agrawāla, Rāe Barelī.

Beginning—श्री गणेशाय नमः श्री कृष्ण गीतावली श्री कृष्णाय नमः

माता लै उछंग गोविंद मुख बार बार निरखै ।
पुलकित तनु आनंद घन छन छन मन हरखै ॥
पूछत तोतरात बात मातहिं यदुराई
अतिसै सुख जाते तोहि मोहि कहु समुझाई
देख तुव वदन कमल मन आनंद होई
कहै कौन सुर नर मुनि जानै काइ कोई
सुन्दर मुख मोहिं देखउ इच्छा अति मोरे
मम समान पुंन्य पुंज बालक नहिं तोरे
तुलसी प्रभु प्रेम विवश मनुज रूपधारी
बाल केलि लीला रस ब्रज जन हितकारी ॥ १

End—गह गह गगन दुन्दभी बाजी

वरषि सुमन सुरगण गावत यश हरष मगन मुनि सुजन समाजी
सानुज सगन ससचिव सुयोधन भये मुख मलिन खाइ खल बाजी
लाज गाज उन बिन कुचालि कलि परी बजाइ कहूं कहुं गाजी
प्रीति प्रतीति द्रुपद तनया की भली भूरी भय भरी न भाजी
कहि पारथ सारथिहिं सराहत गई वहोरि गरीब निवाजी
सिथिल सनेह मुदित मनहीं मन बसन बिच बीच वधू बिराजी
सभा सिंधु यदुपति जय मय जनु रमा प्रगट त्रिभुवन भरि भ्राजी
युग युग जग साके केशव के शमन कलेश कुसाज सुसाजी
तुलसी को न होइ सुनि कीरति कृष्ण कृपाल भक्ति पथ राजी । ६१
इति श्री राम गीतावल्यां कृष्ण चरितं समाप्तम्

Subject—१—श्री कृष्ण की वाल्यावस्था और यशोदा का प्रेम वर्णन ।

२—गोपियों का यशोदा से श्री कृष्ण की शिकायत वर्णन ।

३—श्री कृष्ण का गोपियों का उलहना झूंठा बताना, जशोदा का श्री कृष्ण की तरफ़दारी करना ।

४—दधि लीला का वर्णन
५—श्री कृष्ण की मुख शोभा वर्णन
६—श्री कृष्ण जन्म से ब्रज का आनन्द वर्णन
७—श्री कृष्ण का पर्वत उठाना वर्णन
८—श्री कृष्ण का गै चरावन वर्णन
९—श्री कृष्ण का गाना वर्णन, श्री कृष्ण शोभा वर्णन
१०—श्री कृष्ण का मधुवन जाने में वियोग वर्णन
११—कूबरी का स्नेह वर्णन
१२—श्री कृष्ण विरह में ब्रज दशा वर्णन
१३—ब्रजवासियों का ऊधै। से शिकायत वर्णन
१४—श्री कृष्ण पर विरह में दोषारोपण तथा गोप ग्वालों की प्रीति वर्णन
१५—मधुप दूत से गोपियों का श्री कृष्ण वियोग में निज दशा का वर्णन।
१६—ऊद्धव की शिक्षा गोपियों को।
१७—गोपियों का ऊद्धव को उलाहना देना
१८—श्री कृष्ण का ब्रज में लाने के विविध उपाय वर्णन।
१९—द्रौपदी के चीर हरन में उसकी श्री कृष्ण से पुकार वर्णन।
२०—श्री कृष्ण की कृपा का वर्णन, अर्जुन ओर द्रौपदी का प्रेम वर्णन

समाप्त

No. 432(*d*2). Rāmājyā, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—64. Size—9 × 4 inches. Lines per page—7. Extent—406 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of manuscript—1871 Samvat or A.D. 1814. Place of deposit—Śri Mān Mahārāja Bhagawān Baksha Siṃhajī, Rāja Amethī, district Sultāṇapura (Oudh).

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ बानि, विनायक, अम्ब, हर, रवि, गुरु, रमा, रमेश ॥ सुमिर करव सव काज सुभ मंगन देश विदेश ॥ १ ॥ गुरु सारद सिंधुर वदन ससि सुरसरि सुर गाइ ॥ सुमिरि करहु मंगल मुदित होइहि सुकृत सहाइ ॥ २ ॥ गिरा गोरि गुर गनम हरि मंगल मंगल मून ॥ सुमिरत करतल सिद्धि सब होइ ईस अनुकूल ॥ भरत भारती रिपु दवन गुरु गनेस बुधवार ॥ सुमिरत सुलभ सुधर्मफल विद्या विनय विचार ॥ ४ ॥ सुर गुरु हरि सिय राम गुर राऊ गिरा उर आनि। जो कछु करिय सो होइ सुभ पुलहि सुमंगल षानि ॥ ५ ॥ सुकृति सुमिरि गुर सारदा गनप लषन हनुमान ॥ करिय काज सुभसाज भल

निवहै नीक निदान ॥ ६ ॥ तुलसी तुलसी राम सिय सुमिरि लषन हनुमान ॥ काज विचारहु सो करहु दिन दिन प्रद कल्यान ॥ इति प्रथम सप्तक ॥

End—हनुमान सानुज भरत राम सिया उर ग्रानि । लषन सुमिरि तुलसी कहत सगुन विचारि बषानि ॥ जो जिहि काजहि ग्रनुसरै सो दोहा जब होइ ॥ सगुन समै सब सत्य फल कहब राम मत सोइ ॥ गुन विश्वास विचित्र मति सगुन मनोहर हार । तुलसी रघुवर भक्ति उर विलसति विमल विचार ॥ इति श्री तुलसीदास कृतं रामायण सामाज्ञा समाप्तं ग्रष्टोत्तर शत कमल फल मुष्टि तीनि परिमान । सप्त सप्त तजि शेष कैा राषहि सभ विलगान । प्रथम सर्ग जो शेष रहै दूजे सप्तक होइ । तीजे दोहा जानि के सगुन विचारब सोइ ॥ श्री रामाय नमः ॥ सम्बत् १८७१ ॥

Subject—(१) प्रथम सर्ग—(१) पृष्ट १—२ तक—प्रथम सप्तक वन्दना तथा दशरथ का ग्रंध मुनि को शाप देना, दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ करना ।

(२) पृ० २—३ तक—द्वितीय सप्तक । रामादि जन्म वर्णन ।

(३) पृ०३—४ तक—तृतीय सप्तक—चूड़ाकर्मादि के पश्चात राम का कैाशिक मुनि के साथ गमन, शिलातारन ।

(४) पृ० ५—६ तक—चतुर्थ सप्तक—सीय स्वयंवर वर्णन ।

(५) पृ० ६—७ तक पंचम सप्तक—राम विवाह वर्णन ।

(६) पृ० ७—८ षष्टम सप्तक—दशरथ ग्रवध गमन ।

(७) पृ० १० तक—सप्तम सप्तक—ग्रवध में बधाई ।

(२)—द्वितीय सर्ग ।

(१) पृ० ११—२० तक—सप्तक—विषय

(१)—राम वनवास ।

(२)—से (७) तक—बन के कार्य्य ।

मुनियों से मिलाप इत्यादि ।

(३) तृतीय सर्ग—२१—२९ तक—दंडकारण्य वास वर्णन ।

(४) चतुर्थ सर्ग—पृ० २९—३७ तक—

(५) पंचम सर्ग पृ० ३८—४७ तक—

(६) पृ० ४८ से पृ० ५७ तक—षष्टम् सर्ग—

(७) पृ० ५७—पृ० ६८ तक—सप्तम सर्ग ।

No. 432(*e*2). Tulasīdāsa Kṛit Sagunāwalī, by Tulāsīdāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—29. Size—8 × 4 inches. Lines per page—20. Extent—480 Anushṭup ślokas.

Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of composition —1655 Samvat or A.D. 1598. Date of manuscript—1906 Samvat or A.D. 1889. Place of deposit—Paṇḍita Rishi Rāma Dubey, Brāhmaṇa Tolā, post office Fakharpur, district Baharāich (Oudh).

Beginning—

१	२	३	४
५	६	७	०

No. 432(*f*2). Rāmājnā, by Goswāmī Tulāsī Dāsa of Rājapura. Substance—Country-made paper. Leaves—16. Lines per page—24. Extent—384 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1896 Samvat or A.D. 1839. Place of deposit—Rāja Kiśore Ṭhīkēdāra, Harachandapura, Rāe Barelī.

No. 432(*g*2). Tulāsīdāsa kē Saguna, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—10 × 6½ inches. Lines per page—22. Extent—668 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript —1879 Samvat or A.D. 1822. Place of deposit—Paṇḍita Ajodhyā Prasāda (Bhondū), Bārābānkī.

No. 432(*h*2). Saguna Mālā, by Goswāmī Tulāsī Dāsa of Rājāpura (Bāṇda). Substance—Country-made paper. Leaves —49. Size—9½ × 5 inches. Lines per page—10. Extent—500 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1856 Samvat or A.D. 1799. Place of deposit—Paṇḍita Kailāś Nāth Vājpaiyī, Asani, Fatehapura.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री जानकी वल्लभो विजयते ॥ बानि विनायक अंब रवि गुरु हरु रमा रमेस। सुमिरि करहु सब काज सुभ मंगल देस बिदेस ॥ १ ॥ गुर सर सइ सिंधुर वदन ससि सुरसरि सुरगाइ। सुमिरि चलहु मग मुदित मन होइहि सुकृत सहाइ ॥ २ ॥ गिरा गौरि गुर गणप हनु मंगल मंगल

मूल । सुमिरत करतल सिद्ध सब होइ ईसु अनुकूल ॥ ३ ॥ भरत भारती रिपुदवनु गुरु गनेस बुध बारु । सुमिरत सुलभ सुधरम फल विद्या विनय विचारु ॥ ४ ॥ सुर गुर गुर सिय रामुगन राइ गिरा उर आनि । जो कछु करिय सो होइ सुभ खुलहि सुमंगल खानि ॥ ५ ॥ सुक सुमिरि गुरु सारदा गनपुलषन हनुमान । काज विचारेहु जो करहु दिन दिन बड़ कल्यान ॥ ६ ॥

End—हनूमान सानुज भरत राम सीय उर आनि । लषनु सुमिरि तुलसी कहत सगुन विचारु वखानि ॥ ५ ॥ जो जेहि काजहि अनुहरइ सो दोहा जव होइ । सगुन समय सब सत्य फल कहब राम गति गोइ ॥ ६ ॥ गुन विश्वास विचित्र भनि सगुन मनोहर हारु । तुलसी रघुवर भगत उर विलसत विमल विचारु ॥ ७ ॥

इति श्री तुलसीदास कृतैा सगुण मालायाः सप्तमः सर्गः ॥ ७ ॥ सुभमस्तु ॥ संवत १८५६ ॥ आश्वने शुक्ल पक्षे द्वादसी गुरु वासरे लोषोतं राम वकस कायथ सोनारपुरा मध्ये ॥

सर्ग							सप्तक							दोहा						
१	२	३	४	५	६	७	१	२	३	४	५	६	७	१	२	३	*४	५	६	७

दोहा—कमल बीज सत अष्ट गनि तीन पुष्टि कर लेव ।
पुनि गुनि दिन गुनि धातु गुनि सगुन सत्य कहि देव ॥

इति ।

Subject—प्रथम सप्तक—देवों को स्तुति आदि वर्णन । पृ०—१
द्वितीय सप्तक—दशरथ राज सुख कथन, पुत्र जन्म वर्णन पृ० २—३
(३) राम आदि भाइयों को बाल कोडा, अहिल्या तारण पृ० ३—४
(४) सीय स्वयंवर वर्णन
(५) विवाह वर्णन } पृ० ४—५,
(७) अवध आनंद वर्णन पृ० ६ ।

(१) राम वन गमन वर्णन, ग्रामवासियों से सम्मिलन, प्रेमभाव वर्णन । (२) सुमंत्र विलास, दशरथ स्वर्गगमन वर्णन पृ० ७—१० । (३) नय चरित्र वर्णन । (४) भरत का पितृ कर्म करना । राम के पास जाना ओर लोटना, (५) चित्रकूट में साधु समाज वर्णन । (६) राम का पंचवटी वास । (७) मुनि यज्ञ, गृद्ध भेट कथन, पृ० १०—१३ । (१) दंडक वर्णन । सूर्पणखा को नाक काटना, राक्षस वध वर्णन । (२) मारीच मृगरूप गमन । (३) सीता हरण, राम विलाप, गृद्ध युद्ध-तरन ।

(४) चारोवंधु का स्मरण फल। पृ० १४—१६। (५) राम हनुमान भेंट और सुग्रीव मिलन। (६) बालि वध, सीय शोधार्थ सेना, (७) सीयशोधन पृ० १७—१९। (१) रामअवतार वर्णन। (२) संस्कार वर्णन चारो वंधु के। (३) राम के कारण अवध आनंद कथन। सीता जन्म, राम महिमा कथन। पृ० २०—२२। (५) विश्वामित्र का राम लक्ष्मण को प्राप्त करना। (६) मख रक्षा अहिल्या तारण। जनकपुर गमन। (७) धनुष भंग पृ० २३—२४ (१) राम नाम महिमा कथन। (२) हनुमान का लंका में जाना। (३) हनुमान सीता संवाद। (४) हनुमान भरत, शत्रुहन प्रशंसा वर्णन आदि। (५) अक्षवध, लंका-दहन, पृ० २५—२८, (६) विभीषण-राम भेंट। (७) रावण रावण युद्ध। इति पंचम सर्ग। (१) राक्षस-वध, सीताराम-भेंट, अवध गमन। (२) राम लक्ष्मण का माता गुरु आदि से भेंट। (३) भालु, कपि, राक्षसों की बिदाई—पृ० २९—३२। (४) अयोध्या में राजसुख वर्णन। (५) मृत बालक का जीवन वर्णन। (६) सीय त्याग, राम यज्ञ वर्णन। (७) लव कुश जन्म, सभा में यश-वर्णन, सीता का भूमि प्रवेश कथन—पृ० ३२-३६। (१) राम-राज्य सुख वर्णन (२) ग्रहों का फल। (३) रामपंचायतन-वर्णन (४) रामराज में कर्म-फल वर्णन। (५) बुरे भाग्य का फलना। (६) मंथरा और केकई का वर्णन, दुष्टता कथन। (७) सब देवों की प्रार्थना। चक्र व विधि सगनौती कथन। पृ० ३७—४२ तक।

इति।

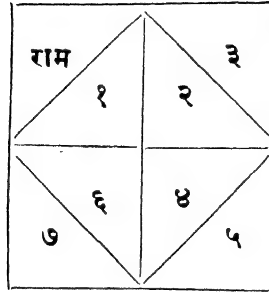
No. 432(*i*2). Rāma Śalākā, by Goswāmī Tulasī Dāsa of Rājāpura. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—4½ × 4 inches. Lines per page—20. Extent—400 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1265 Fasli or A.D. 1848. Place of deposit—Pāṇḍita Ajodhyā Prasāda Miśra, Kālail, post office Chilwaliyā, district Baharāich.

NOTE—(1) शेष सब विवरण No. 422 (j) (1) पर लिखा गया है।

No. 432(*j*2). Rāma Śalākā, by Goswāmī Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—40. Size—8½ × 6 inches. Lines per page—18. Extent—405 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāmanātha Lāla, Kāśī.

No. 432(*l*2). Rāma Śalākā, by Goswāmi Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—58. Size—8 × 4 inches. Lines per page—14. Extent--406 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1910 Samvat or A.D. 1853. Place of deposit--Paṇḍitā Lālatā Prasāda, village Paṇḍitapurwā, post office Sisaiyā, district Baharāich (Oudh).

Beginning—



No. 432(*m*2). Rāma Mukātāwalī, by Goswāmi Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—58. Size—7 × 5 inches. Lines per page—14. Extent--254 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character--Nāgarī. Date of manuscript—1726 Samvat or A.D. 1669. Place of deposit—Paṇḍita Govinda Rāmājī, village Amahat Purawā Gajādhar Towārī, post office Sultāṇpur, district Sultāṇpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री मते रामानुजायनमः अथ राम मुक्तावली लिष्यते । सोरठा । बुझि देषि सब कोय ॥ राम नाम सम मंत्र नहिं ॥ बुधजन लेहु विलोय ॥ निर्गुण शगुन विचारि कै ॥ दोहा ॥ रूप कहैा निर्गुण कर सुनहु शंत मन माह । निगम कहै तेहि छाह जा सोहहि सबर्त्रा नाह ॥ २ ॥ चैापाई ॥ आषर मधुर मनोहर दोऊ ॥ वरन विलोचन जन जिय जोऊ ॥ प्रथमहि निर्गुण रूप अनूपा । केवल जोतिन दूसर रूपा ॥ नहिं तव पांच तत्त्व गुन तीनी ॥ नहिं तव शिष्टि विधाता कीन्हीं ॥ नहि तव इन्दु तरनि परगासा । नहि तव पावक नीर निवासा ॥ नहि तव नषत रजनि उजिआरा ॥ नहिं तव येकैा सकल पसारा ॥ नहिं तव वारिज सुत परवेसा । नहिं तव विस्नुन देव महेसा ॥ नहिं तव गननायक न सुरेसू । नहि तव गुरु सिष कर उपदेसू ॥ देव तरनि नहि रवि सुत भयऊ इंदु सुता नहि संगम कियऊ ॥ नहिं तब परसठि तीरथ पूजा । नहिं तव देव दनुज नहिं

दूजा ॥ दोहा ॥ तुलसी कहा विसेषते तब कछु कित्तम नाहि । निर्गुण रूप अरूप हरि रहहि निरंतर माहि ॥ ३ ॥

End—जब देषा कलि सब कर नाचा । तब मै पवन तनै यह जाचा ॥ कासीपुरी संभु अस्थाना । तहं मोहि आइ मिले हनुमाना ॥ का मागहु तुम राम सेवक । जाको विभै देव के देवक ॥ तब मैं कहा सुनहु सुरनायक । करहु क्रिपा मोपर सुखदायक ॥ सो पथ कहहु जो रामहि पावैा । विनु प्रियास भवत्रास नसावैा ॥ तब अस हुकुम पवन सुत दीन्हा । वेद पुरान सास्त्र मत चीन्हा ॥ करहु राम मुक्तावलिजाई । सो सुनि पढ़ि नर पाय पराई ॥ तबहि राम मुक्तावलि भयऊ ॥ जब मोहि पवन सुवन वल दयऊ ॥ जोई मंत्र विरंचि हरि संभु रहे लवलाय । सोई राम मुक्तावली निगम कहो जेहि गाइ ॥ ४३ ॥ ऐसो नाम बुध देषिहैा ग्रंथन कह कहु होय ॥ पवन तनै की राधना पायो सकल विलोय ॥ ४४ ॥ जो पढ़ै दिन अेा राति । चित दै के बहु भांति ॥ बह सुनि नार जो कोय । सो राम पद कह होय ॥ मुनि है जो हिय धरि ध्यान । सो पावै पद निर्वान ॥ ताकह कलुष जो होय । तेहि अंग रहै न सोय ॥ × × × × × दो० ॥ सब पुरान कर जीव यह कलि यो जो इतिहास । निगुन सगुन जो अजपा प्रगटेउ तुलसीदास ॥ ७५ ॥ इति श्री राम मुक्तावली श्री गोसाईं तुलसीदास क्रित चरित्र सिव मानसे संपूर्न सुभमस्तु शिद्धिरस्तु ॥ मिति अगहन सुदि जन्मराति मंगलवार । लिषित भवानी बकस पंडित जो प्रति देषा सो लिषा मम दोषो न दीयते ॥ सुभस्थाने डोगर सुनार के पुरवा ।

Subject—(१) पृ० १—७ तक सृष्टि निरूपण (२) पृ० ८—१० तक—भृगु द्वारा त्रिदेव परीक्षा । (३) पृ० ११—१३ तक—राम भेंट के साधन, सगुण, निर्गुण वर्णन । (४) पृ० १४—१५ तक—नवधा भक्ति वर्णन । (५) पृ० १६—२३ तक—कलयुग में रामनाम महिमा । (६) पृ० २४—३६ तक—तीन प्रकार के पुरुषों के लक्षण । (७) पृ० ३७—४६ तक—शास्त्र मत शरीर का रूपक नगर के साथ सादृश्य, अजपा जाप के भेद । (८) पृ० ४७—५४ तक नाम जपने का नियम, फल । (९) पृ० ५४—कलियुग में उत्पन्न हुए नृपों में निर्वाण पदाधिकारी । (१०) ग्रंथ—पाठ—महात्म्य, पृ० ५७ तक पृ० ५८ में रामनाम महिमा के दो कवित्त ॥

No. 432(*u*2). Rāma Muktāwalī, by Tulasi Dāsajī. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—9 × 7 inches. Lines per page—24. Extent—300 Anushṭup ślokas. Appearance--Old. Character--Nāgarī. Date of manuscript--1884

Samvat or A. D. 1827. Place of deposit--Paṇḍita Maṇgala-deva, village Rewalī, post office Baharāich. district Baharāich (Oudh).

No. 432(o2). Rāmāyaṇa (Bālakāṇḍa), by Goswāmi Tulasī Dāsa. Substance--Country-made paper. Leaves--864. Size--8 × 6½ inches. Lines per page--17. Extent—7,344 Anushṭup ślokas. Appearance--New. Character--Nāgarī. Date of manuscript--1903 Samvat or A.D. 1846. Place of deposit—Ṭhākura Bindhyābakhsha Siṃhajī, village Tikarā, post office Dhanaulī, district Bārābaṇkī (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः गुरुनारायणाय अतुलित बलधामं स्वर्ण शैलाव देहं दनुजवन कृशानं ज्ञाननामाग्र गण्यं सकल गुणनिधानं वानराणांधीशं रघुपति वरदूतं श्रात जातं नमामि ॥ १ ॥ मनोजवं मारुततुल्य वेगं जितेन्द्रिय बुद्धिमतां वरेष्टं ॥ वातात्मजं वानर यूथ मुख्यं श्री रामदूतं शरणं प्रपद्यं ॥ २ ॥ उल्लिंघ सिंधो सलिलं सलीलयः शोकं वन्हि जनकात्मजाया ॥ अदायते नैव ददाह लंका नमामितं प्राजलि राजनेयम् ॥ ३ ॥ गोः पदं कृतवारोशं मसको कृत राक्षसं ॥ रामायन महं माला रत्नं वन्दे निलात्मजं ॥ ४ ॥ वीर हनुमते नमः ॥ श्रीगणेशाय-नमः श्रीगुरुशरण ॥ वर्णान मर्थ संघानां रसानां छंदसामपि ॥ मंगलानांच क र्त्तारौ वन्दे वाणी विनायकै ॥ भवानी शंकरो वन्दे श्रद्धा विश्वास रूपिणो ॥ जिह्वा विना न पश्यंति सिद्धि स्वांतस्थमीश्वरे ॥ २ ॥ वंदे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकर रुपिणं ॥ जामाशितो हि वक्रोपि चन्द्रः सर्वत्र वन्दिते ॥ ३ ॥ सीताराम गुणग्राम पुण्यारण्य विहारिणै, वन्दे विशुद्ध विज्ञानैा कवीश्वर कपीश्वरैा ॥४ ॥

End—सोरठा—भ श्वरि सुखधाम अतिसुख अति निर्मल सुख शिवपुरी तहां देव विश्राम सो महिमा वरनैा कहा ॥ दोहा ॥ कहे सुने समुझै सकल सो प्रभु गुनगण गान । सीता पति रघुकुल तिलक सदा करहि कल्यान ॥ सोरठा—सिय रघुबीर विवाह जो सप्रेम गावहिं सुनहिं ॥ तेन कह सदा उछाह मंगलयेतन रामजस ॥ दोहा ॥ कठिन काल कलिमल अमित, साधन कछैा न होइ ॥ ऐह विचार विश्वास करि सुमिरहि बुध जन सोइ ॥ सोरठा—मनहरि पद अनुराग करहि त्याग नाना कपट । महामोह निसु जागु, सोवत वीते काल बहु ॥ इति श्री रामचरित्रे कलिकलुषविध्वंसने विमल वैराग्य संपादिनो तुलसीकृत वालकांड रामायण संपूर्ण शुभमस्तु कल्याण मस्तु मिति पैाषमासे कृष्णपक्षे पंचम्यां सोम वासरे संवत १९०३ शाके १७६८ ॥ दसखत अजीत सिंह ॥ वास टिकरा ॥ पठनार्थ बलदेव बक्श सिंह ॥

Subject—(१) पृ० १—१७७ तक—हनूमान जी की वंदना, वाणी तथा विनायक की वंदना, भवानी शंकर की वंदना, गुरु की वंदना, कवीश्वर तथा कपीश्वर की वंदना, सीता की वंदना, रामायण की प्रस्तावना। गणेशजी की वंदना, तथा महिमा नारायण, शिव, गुरु के कमल चरण की वंदना, चरणरज की बड़ाई पद नख की शक्ति का वर्णन। सज्जन विनय, साधु चरित विसदता तथा उसके फल। खल वंदना, संगति का प्रभाव, देव दनुजादि सभी की बंदना। विविध विरान वर्णन के साथ ग्रन्थचतुष्ठय भक्त तथा अभक्त जनों का स्थान। कविकी दीनता स्वमुखते, व्यास इत्यादि कवि जन की वंदना, कविता का वास्तविक रूप। चारों वेदों को वंदना, विप्र, सारद सरितादि वंदना, कथा का फल, अवधपुरी की वंदना, राम के माता पिता की बंदना, भरत हनुमानादि रामायण के अन्यपात्रों की वंदना। रामनाम महिमा, रामायण की कथा प्रथम किसने किससे कही, रामायण की कथा अपने गुरु से सुनने का वर्णन। राम गुणानुवाद विषदना, रामायण निर्माण काल। संवत सोरह सै इकतीसा। करत कथा हरि पद धरि सीसा। भौम नौमी वार मधु मासा॥ अवधपुरी यह चरित प्रकासा॥ इस ग्रंथ के रामचरित मानस नाम रखने का कारण, कथा की विषदता का वर्णन, त्रिविधि श्रोता वर्णन, सूक्ष्म में कथाओं की गणना, शंकर विप्र की कथा, कलयुग की दशा उसमें वर्णाश्रमादि की दुर्व्यवस्था का वर्णन, कलयुग के गुण वर्णन, हनूमान तथा तुलसीदास जी का मिलन, भारद्वाज, याज्ञवल्क संवाद, शिव तथा सती का संवाद, पारवती का जन्म, षट मुख जन्म, त्रिपुरा दनुज जन्म, गणेश का जन्म, रामसर शिव पारवती का संवाद, रामचंद्र के भजन की महिमा, राम के अवतारादि लेने का वर्णन।

(२) पृ० १७८—६५० तक—जालंधर की कथा, नारद मोह वर्णन, मनुसत्तरूपा की तपस्या, भानुप्रताप की कथा, मंदोदरी का जन्म, देवासुर संग्राम, रावण-जन्म, रावण लंका प्रवेश, मेघनाद तपस्या, अहिरावन का जन्म, इन्द्र-मेघनाद संवाद, मेघनाद का विवाह, राजादलीप की कथा, राजारघु की कथा, राजाअज की कथा, रावन-नारद संवाद, मनुसत्तरूपा का जन्म, सुमंत-मेघनाद (संग्राम) नेमाहित की कथा, दशरथ-कौशल्या का विवाह। सुमंत का विवाह, दशरथ-खरदूषण का संग्राम, केकई-सुमित्रा का विवाह, जानकी का जन्म, रावन चरित्र, वालि-सुग्रीव का जन्म, अंबरीष की कथा, लोमपाद राजा की कथा, श्रीरामचन्द्रजी की कथा जन्म, रघुवंशियों का वंश वर्णन, विश्वामित्र की कथा, ताड़ुका की कथा, सोनभद्र नदी की कथा, परशुराम का जन्म, गैतम-इन्द्र संवाद, राजानहुष की कथा, भस्मासुर की कथा,

अंजनी तपस्या, अंजनी विवाह, महावीर जन्म, महावीर-कुंभज संवाद, बलि-वावन संवाद, राजसागर का विवाह।

(३) पृ० ६५१—६८४ तक—सगर को यज्ञ, अश्वभाम का राज्य, दलीप का राज्य, भागीरथ को कथा, नारद-ब्रह्मा का संवाद, रावन की कथा, गंगा जी की चारो धाराओं की कथा, जनक-विश्वामित्र संवाद। कुलकारी की कथा, परशु-राम संवाद, जनक तपस्या, धनुहा की कथा, श्रीरामजानुकी विवाह।

No. 432(*p*2). Rāmāyaṇa (Kishkindhākāṇda), by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—60. Size—10 × 5 inches. Lines per page—10. Extent—600 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1880 Samvat or A.D. 1823. Place of deposit—Pāṇḍita Bisambhara Nātha Pāthaka, village Tikariyā Pura Gangadhar, post office Gauriganj (Sultāṇpur).

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः श्री गुरुभ्यांनमः ॥ अथ किष्किंधा कांड प्रारंभ ॥ श्री गुरुचरण सरोज रज निजमन मुकुर सुधारि बरणौ रघुपती विमल जस जे दायक फल चारी ॥ चौपाई ॥ सुनहुं उमव विनिधी गुण-धामा। पंपासार ते चले श्री रामाः। अनुज समेत तहां चली आये। जहां प्रकशिक मुनि ध्यान लगाये ॥ पूछा मुनहि नया पद माथा। जदपि सब जानत रघुनाथा ॥ सुनो प्रीय वचन मुनीस प्रवीना। भाग्य सराहि हरीष अति कीना ॥ कर जोरी तब प्रीति दोढाई ॥ प्रेम मोद न हृदय समाई ॥ तदपि सुनौ तुम्ह कुल देवा ॥ राम चहहि निज सुजस गवावा ॥ मुनि सौ कह प्रभु तुम को अहहुं ॥ कठिन तपस्या केहि नित करहूं ॥ सुनत वचन मुनि भये सुषारी ॥ नयन खोलि प्रभु निकट निहारी ॥

दोहा ॥

नील जलज तन जटा शीर कटी तुनीर मुनी चिरा।
अरुण नयन शर चाप कर हरण भक्त भये भीरा ॥

End—दोहाः—भव भेषज रघुनाथ जस सुनत जे नर नारि ॥ तिन कर सकल मनोरथ सिद्धि करहि तृपुरारि ॥ नील तत तन श्याम कोम कोटि सोभा अधिक ॥ सुनत तासु गुण ग्राम। जासु नाम षग अघ वधिक ॥ ५२ ॥ इति श्री रामचरित्र मानसे सकल कलिकलुष विध्वंसने ॥ × × × ॥ चतुर्थ कांड सोपान किष्किधा कांड सोपान ॥ संवत १८८० शाके १७४५ आश्विनि शुक्ल पक्ष सप्तमी ॥ लिषितं रामचन्द्र रघुनाथ श्री पढ़ेरपुरकर।

Subject—तुलसी कृत रामायण एक कांड । विषय उसी के अनुसार है ।

No. 432(*q*2). Rāmāyaṇa, Uttar, Sundar and Kishkindhā Kandas, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—300. Size—9 × 6 inches. Lines per page—15. Extent—1,650 Anushṭup ślokās. Incomplete. Appearance—Old. Character—Kaithī. Date of manuscript—1855 Samvat or A.D. 1798. Place of deposit—Paṇḍitā Sambhunāthajī, village Bāboorī, post office Aliganja Bazar, Sultāṇpura (Oudh).

Beginning—आरण्यकांड पृ० ४३ अन्तिमः—

छन्द—कपि संगन सैन संघारी निशि नारी सीतहिं आनी हैः त्रैलोक पावन सु सुर मुनि नारद आदि वखानी है ? जास कहत गावत सुनत समुझत प्रभु पदन समाई हैः रघुवीर पथ पंथीराज मधुकर दास तुलसी गाई हैः भै। भेषज रघुनाथ जस कहहि सुनहि नर नारि ॥ तिन्ह कर सुफल मनोरथ सिद्धि करहिं त्रिपुरारी ॥ दोहाः बुधी वीसाष राषी उर मानस कहा सभग्यानः तुलसी सो नार अकृत तनमा यहो पद नीर मानः इती श्री माह पाथी किष्किंधा कांड रामाएन कीत गोसाई तुलसीदास जी कथ संपुरनंग सुभमस्तु समायतः जो परती देषा सो लीषा मम दोषो न दीयते पंडीत जन सन वीनतीः मोरी टुटल अछर वाचव सभजोरी सन १२०६ संवतः १८५५

End—उत्तर कांड—प्रथम पृष्टः—श्री गनेसाग्रोपनमह भवानी जीय सहाइः पोथी उत्तर कांड लीषाः दोहाः श्री गुरुचरन सरोजः रजनीज मन मुकुर सुधारीः वरनो रघुपती वीमल जस, जो दाएेक फलचारीः चैापाईः—सीता लषन सहित भगवाना ॥ चले सकल सुरसाजि वेयाना ॥ पहुप वेयान तहा चली आया ॥ दंडक वन जहां परम सुहावा ॥ जहां करी मुनन्हि केर संतोषा । चला-वेवान तहाते चोषा ॥ अंतरीछ सो चला उड़ाइ ॥ अंजावलीपुर पहुंचे आइ ॥ अंजावली देषा हनुमाना ॥ जनम भुमी माता असथाना ॥ जाइ द्वार ठाढ़ प्रभु भयेउः ॥ हनुमान तब भीतर गयेउः ॥

Subject—(१) आरण्यकांड—८६ पृष्ट ।

(२) सुन्दरकांड—१३० पृष्ट

(३) उत्तरकांड—८४ पृष्ट

No. 432(*r*2). Rāmāyaṇa Uttara Kāṇḍa, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—150. Size—9 ×

4½ inches. Lines per page—8. Extent—862 Anushṭup ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1837 Samvat or A.D. 1780. Place of deposit—Paṇḍitā Bhawānī Bakhśa, village Ulara, post office Musāfirakhānā, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—आदि के पृष्ट नष्ट हो गये हैं।

× × × ×

× × × ×

पृ० १४—यह संशय प्रभु देइ चुकाई। आजु सैानक सरहेहु गोशाई॥ दो०॥ भरत अनुज के वचन सुनि लोन्ह शुचि कर सांसु॥ विरह दवा के धूम हिय उमगिनयन बह आंसु॥ सोरठा॥ तिमि पर पंवहि जोशु दून कहेउ कछु वचन हठि सिय मनसा पिय सोऊ सो तुम्हो करनोय अव॥ ६१॥

End—छन्द—पक्ष तानि समय चुकानि गगन ब्रह्म वानी भई॥ द्वापर परितोखे मुनि मन पोखे तव तुम कुवि भार पलई॥ प्रभु मनु सेवा पूयिसु देवा गति पावन तव तोहि दई॥ गुसार महानम प्रभु जो आतम नियकर पोरि प्रसंसकई॥ पूनिक मज्जन पाय निखंडन गगन जो बानी ब्रह्म भई॥ फल चारि दाता अभिष्ट अधाना मज्जन सरजू पुन्यलई॥ कवि मुदित वधावा तुलसी गावा मन अति मोद अनन्द भरे॥ यह चरित यो गावहि हरिपद पावहि युगल लोक परलोक करै॥ दो०॥ तुलसीदास सतसंग करु यै चाहसि सुख लोक॥ रसना राम कहहु निति यै यह चहसि विसोक॥ १८५॥ इति लवकुसी संपूर्ण संवत् १८३७॥ वोधई कायस्थ लिखित॥

Subject—लंका विजय के पश्चात् प्रवध आगमन होने पर श्री सीता जी का वनोवास होना, लवकुशजन्म, अश्वमेध यज्ञ। अश्व का लवकुश द्वारा वंधन, लवकुश और रामदल से युद्ध।

No. 432(s2). Uttara Kāṇda (Rāmāyaṇa), by Goswāmī Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—107. Size—10½ × 6½ inches. Lines per page—28. Extent—1,498 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1897 Samvat or A.D. 1840. Place of deposit—Śaṅkara Prasāda, post office Chāndapura, district Rāe Barelī.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ उत्तर काण्ड लिख्यते॥ श्लोक॥ केको कंठाभनीलं सुरवर विलसद्विप्रयादाभ्र चिन्हं॥ शोभाढ्यं पीतवस्त्र

सरसिज नयनं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ पाणौनाराच चापं कपि निकर युतं बंधुता सेव्य मानं ॥ नैामीड्यं जानकीशं रघुवर मनिशं पुष्पकारूढ़ रामं ॥ १ ॥ कौशलेंद्र पद्द कंज मंजुलोकोमलाब्जमहेस वंदितै ॥ जानकी कर सरोज ललितै चिन्तकस्य मनभृङ्गणैा ॥ कुंद इंदु वर गैार सुन्दरं ॥ अंविका पतिमभोष्ठ सिद्धिदं ॥ कारुणोक कलकंज लोचनं नैामिशंकर मनंग मोचनं । दोहा ॥ रहा एक दिन अवधिकर ॥ अति आरत पुर लोग ॥ जहं तहं सोचहिं नारि नर ॥ कृशतन राम वियोग ॥ दोहा ॥ शकुन होंहि सुन्दर सकल ॥ मन प्रसन्न सबकेर ॥ प्रभु आगमन जनावजनु ॥ नगर रम्य चहुंफेर ॥ दोहा ॥ कैाशिल्यादि मातु सब ॥ मन अनंद अस होई । आये प्रभु सिय अनुज युत ॥ कहन चहत असकोई ॥

End—सुंदर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर प्रोति जो ॥ सो एक राम अकाम हित निर्वाण पद सम आन को ॥ जाको कृपा लवलेश तें मतिमंद तुलसी दास हूं ॥ पायैा परम विश्राम राम समान प्रभु नाहीं कहूं ॥ दोहा ॥ मोसम दीन न दीन हित तुम समान रघुवीर ॥ अस विचारि रघुवंश मणि हरहु विषम भव-भीर ॥ दोहा ॥ कामहि नारि पियारि जिमि लोभहि प्रिय जिमि दाम ॥ ऐसे होइ के लागहुं तुलसी के मन राम ॥ इति श्री रामचरित मानसे सकल कलिकलुष ॥ विध्वंसने विमल वैराग्य संम्पादिनो नाम सप्त सोपान शुभ मस्तु सिद्धिरस्तु ग्रंथ ॥ उत्तरकांड ससकृत अक्षर मोतोन प्रति मिलाय कै सोधि के लोषा ॥ दसषत लोकनाथ गुरु शिववकस दास कायस्थ कै पुत्र ॥ गाधिनगर ॥ श्री शुभ संमत १८९७ भाद्र शुक्ल ३ ।

No. 432(*t*2). Sākhī Goswāmī Tulasī Dāsa kī, by Tulasī Dasa. Substance--Country-made paper. Leaves--126. Size --9 × 5 inches. Lines per page--8. Extent--630 Anushṭup ślokas. Appearance--Old. Character--Nāgarī. Date of manuscript--1868 Samvat or A. D. 1811. Place of deposit--Paṇḍitā Govinda Rāmajī, Purwa Gajādhara Tewarī, village Amahat, district Sultānpura.

Beginning—श्री गनेसायनमः ॥ श्रीमते रामानुजाय नम : ॥ राम सीता अथ मन को परिकर्न लिष्यते साषो गोसांई तुलसीदास जी की ॥ दोहा ॥ तुलसी मन पूरवहि सानि सिवासर ध्यावे ॥ पछिम दिसि आवै नहीं कैसे थिति पावै ॥ १ ॥ पछिम वसै जु प्रान पति हरन अनंत अघत्रास ॥ तुलसी ताहि विसारि मन पूरब करै प्रकास ॥ २ ॥ षिन नैनो षिन नासिका षिन स्रवनो चलि जाय ॥ षिन तुलसी रसना लुबुधि सकल स्वाद रस षाय ॥

End—मह देषै वांबु समजोइ ॥ वीचे वसै ज्यैा भुभ्रंगा जोइ ॥ तुलसी बिना भगति निहिकाम ॥ तहा न राचै येकैा जाम ॥ १७ ॥ सदां उदासी नाही नेह ॥ कहा ग्रेह कहा दिग्य देह ॥ तुलसी राम भजि रहै सो न्यारा ॥ त्यागै कोकट प्रपंच पसारा ॥ १८ ॥ तुलसी ग्रैसा सती जब होइ जनी जनन का संगी सोइ ॥ मनुवा ग्राहि ह्वै ग्रसवार पहुंचै वेगि मोछि दरवार ॥१९॥ इति श्री सती जनको परिकरण संपूरन ॥ मिति पूस सुदि ॥ ४ ॥ संवत् १८६८ ।

Subject—(१) पृ० १—२८ तक १३० छन्दें में—मनका प्रकरण ।
(२) पृ० २९—४४ तक—७३ छन्दें में—योगका प्रकरण ।
(३) पृ० ४५—५२ तक—३७ छंदें में—साखी प्रकरण ।
(४) पृ० ५३—७२ तक—१०३ छन्दें में—गुरु प्रकरण ।
(५) पृ० ७३—८८ तक—७६ छन्दें में—सुमिरण प्रकरण ।
(६) पृ० ७७—९० तक—१३ छन्दें में—ज्ञान प्रकरण ।
(७) पृ० ९१—१०३ तक—६१ छन्दें में—परचैा प्रकरण ।
(८) पृ० १०४—११३ तक—५३ छन्दें में—चेतावनी प्रकरण ।
(९) पृ० ११४—१२१ तक—३७ छन्दें में—सत्संग प्रकरण ।
(१०) पृ० १२२—१२६ तक—१९ छन्दें में—सतीजन प्रकरण ।

No. 432(*u*2). Saptāka, by Tulsasī Dāsa. Substance--Country-made paper. Leaves--48. Size--7 × 5½ inches. Lines per page--14. Extent--504 Anushṭup ślokas. Incomplete. Appearance--Old. Character--Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍitā Raghunandana Prasādajī, village Tilawaya, post office Suratganja, district Bārābaṇkī (Oudh).

Beginning—ग्रथ तृतीय सप्तक ॥ भूप भवन भाइन्ह सहित रघुवर बाल विनोद ॥ सुमिरत सब कल्यान जग पग पग मंगल मोद ॥ १ ॥ करन वेध्र चूड़ा कर कन श्री रघुवीर उवीत ॥ समय सुफल कल्यान मय मंजुल मंगल गीत ॥ २ ॥ भरत शत्रुसूदन लषन सहित सुमिरु रघुनाथ ॥ करहु सुमिरि सुजस बड़ मिलहि सु मंगल साथ ॥ ३ ॥ मुनि मषपाल कृपाल प्रभु चरन कमल उर ग्रानि ॥ तजहु सोच संकट मिटहि सत्य सगुन जय जानि ॥ ४ ॥ राम लषन कैासिक सहित सुरहु करहु पयान ॥ लच्छि लाभ जय जगत जसु मंगल सगुन प्रमान ॥ ५ ॥ हानि मीचु दारिद दुरित ग्रादि ग्रंत गत वीच ॥ राम विमुष ग्रघ ग्रापने गयो निसाचर नीच ॥ ६ ॥ सिला शाप मोचन चरन सुमिरहु तुलसी दास ॥ तजहु सोच संकट मिटहिं पुजहि मन की ग्रास ॥ ७ ॥ इति तृतीय सप्तक समाप्त ॥

End—सुधा सिन्धु सुर तरु सुमन सुफल सुहावन बात ॥ तुलसी सीतापति भक्ति सगुन सुमंगल तात ॥ १ ॥ सिद्ध समागम संपदा सदन सपीस सुवास ॥ सीतानाथ प्रसाद सुभ सगुन सुमंगल वास ॥ २ ॥ कौशिल्या कल्यान मय सुमिरि बार तप नाम ॥ सगुन सुमंगल काज क्रियाकरी असि राम ॥ ३ ॥ सुवन लषन रिपु सुदन पावहि पति पद प्रेम ॥ सुमिरि सुमित्रा नाम जग जोति अलेहि सुनाम

× × × × ×

राम वाम दित जानुको लषण दाहिनो वोर ॥ ध्यान सकल कल्यान मय तुलसी सुरतरु तोर ॥ ७ ॥

Subject—(१) पृ० १ नष्ट। पृ० २—८ तक—प्रथम सर्ग। प्रथम सप्तक और द्वितीय सप्तक नष्ट। तीसरा सप्तक—राजा दशरथ का शिकार को जाना तथा उनको शाप लगना, पुत्र यज्ञ तथा राम जन्म। चौथा सप्तक—कर्णवेध चूण कर्मादि संस्कार, मुनि मख रक्षा, सिला शाप मोचन। पंचम सप्तक—सिया स्वयंवर तथा विवाह। षष्ट सप्तक—विवाह के पश्चात् अवध आगमन। सप्तम सप्तक—राजप्रासाद तथा नगर में प्रसन्नता।

(२) पृ० ८—१५ तक—द्वितीय सर्ग। प्रथम सप्तक—राम वन गमन, द्वितीय सप्तक—अवध में शोक तथा मार्ग निवासियों का दर्शनों से मुग्ध होना। तृतीय सप्तक—भरत शत्रुहन आगमन, राजा का दाह संस्कार, षष्ट सप्तक—मंदाकिनी पर निवास, सीता को वस्त्र प्राप्त होना। काक-कुचाल, विराध-वध, सरभंग देह त्याग तथा मुनियों से मिलन। सप्तम-सप्तक—राम पंचवटी निवास।

(३) पृ० १६—२२ तक—तृतीय सर्ग। प्रथम सप्तक—दंडक वन निवास, सूर्पणखा कुकृत्य, खरदूषण वध, द्वितीय सप्तक-सूर्पणखा को रावण से शिकायत। तृतीय सप्तक—सीताहरण। चतुर्थ सप्तक पंचम सप्तक—सुग्रीव मिलाप तथा बालि वध। षष्ट तथा सप्तम सप्तक—सीता को हनुमान का मुद्रिका देना और उनकी सुधि लाना।

(४) पृ० २३—३० तक—चतुर्थ सर्ग। राम जन्मादि तथा राम बाल केलि वर्णन—राजा का दान देना चारो भाइयों के नाम जपने के फल। मुनि मख रक्षा करने का वर्णन। धनुष भंग तथा विवाह।

(५) पृ० ३१—३८ तक—पंचम सर्ग-राम नामादि के कुछ-पुत्रादि उत्पत्ति-फलों का वर्णन। सुरसा कपि संवाद, त्रिजटा स्वप्न, हनुमान का मुद्रा डालना, रावन का बाग विनाश। चारों भाइयों के स्मरण के पृथक पृथक फल। लंका दहन, हनुमान का राम के पास पहुंचना, युद्ध का वर्णन तथा कुछ कुफलों का वर्णन।

(६) पृ० ३९—४५ तक—षष्ट सर्ग। राक्षसों का नष्ट होना, बन्दरों का जीवित करना, सीता को राम के पास लाना। सीता को अग्नि परीक्षा, राम का

जानकी को अनुराग दिखाना। राज्याभिषेक। सुरों का प्रसन्नता प्रकाश। विभीषण को राज्य देना। राम के दर्वाजे पर मृतक बालक के ब्राह्मण पिता का आगमन, बालक का जीवित होना। रामराज्य का सुख। सीता को कलंक, सीता का परित्याग, राम का पछताना, वाल्मीकि आश्रम में लवकुश का जन्म।

(७) पृ० ४६—४८—सप्तम सर्ग। प्रथम तथा द्वि० स०-राम इत्यादि रामायण के पात्रों के स्मरण के फल। शेष पांच सप्तक लुप्त हो गये हैं।

No. 432(*v*2). Sata Pancha Chaupāī, by Tulasī Dāsa of Rājāpura. Substance—New paper. Leaves—10. Size—7 × 5 inches. Lines per page—12. Extent—105 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Place of deposit—Lālā Tulasī Rāma Nigama, Rāe Barelī.

Beginning—श्री जानकी वल्लभायनमः ॥ अथ सतपंच चैापाई लिष्यते ॥ संभू मनु सतिरूप दरस समे बालकांड दोहा। नील सरोरुह नील मनि नील नीरधर स्याम। लाजै तन सोभा निरषि कोटि कोटि सत काम ॥ चैापाई ॥ सरद मयंक वदन छवि सीवा, चारु कपोल चिवुक दर ग्रीवा। अधर अरुन सुंदर रद नासा, विधुकर निकर विनिंदित हासा। नै। अम्बुज अंम्बक छवि नीके, चितवन ललित भावती जी के, भृकुटी मनोज चाप छवि हारी, तिलक ललाट पटल दुतिकारी, कुंडल मकर मकुट सिर भ्राजा, कुटिल केस जनु मधुप समाजा, उर श्रीवत्स रुचिर वनमाला, पदिक हार भूषन मनि जाला,

End—ललित कपोल मनोहर नासा सकल सुषद ससिकर सम हासा ९९
नीलकंज लोचन भी मोचन भ्राजत माल तिलक गैारोचन १००
बिकट भृकुटी सम श्रवन सोहाये कुंचित कच मेचक छबि छाये १०१
पीत झीन भूंगुली तन सोही किलकनि चितवनि भावत मोही १०२
नृप रासि नृप अजिर विहारी नाचत निज प्रतिविम्ब निहारी १०३
मोसन करै विविधि विधि कीडा वरनत चरित होत मोहि वीडा १०४
किलकत मोहि धरन जव धावें चलैां भागि तव पूप देषावैं १०५

दोहा ॥ आवत निकट हंसै प्रभु भाजत रुदन कराहिं
जाहुं समीप गहन पद फिरि फिरि चितै पराहिं
सतपंच चैापाई मनोहर जानि जो नर उर धरै
दारुन अविद्या पंच जनित विकार श्री रघुवर हरै इति
सतपंच चैापाई संपूरन सुभमस्तु श्री सीताराम श्रीराम श्रीराम।

Subject—श्री सीताराम की नख शिख वर्णन ।

मुख शोभा वर्णन पृ० १—२ तक

कपोल ,,

चिवुक ,,

ग्रीवा ,,

अधर ,,

दंत ,,

नासा ,,

भृकुटी ,,

तिलक ,,

कुंडल ,,

केश ,,

उर ,,

कंधा ,,

बाहु ,,

कर भुज दंडा ,,

कटि ,,

पद ,,

नैन ,,

शोभा वर्णन ,,

शंभु मनु सतरूप समय

अथ जन्म समय—

राम लक्ष्मण को छवि वर्णन नख शिख—२—३ तक

जनकपुर देखने के समय राम लक्ष्मण को नख शिख को शोभा वर्णन पृ० ३-५। विवाह समय को शोभा वर्णन पृ० ५—६। तक कोहबर समय की शोभा पृ० ६—७। भरत मिलाप समय शोभा पृ० ७। शिव मिलाप समय को शोभा पृ० ७। विभीषण मिलाप समय पृ० ८। लंकाकांड कुंभकर्ण वचन उत्तरकांड भरत मिलाप समय पृ० ८—१० तक काकभुसंडि दरस समय। शत पंच चौपाई पढ़ने से अविद्या और पंच विकारों से रहित होना।

No. 432(*w*2). Surajapurāna, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—17. Size—14 × 4 inches. Lines per page—16. Extent—170 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1875 Samvat or A.D. 1818. Place of deposit—Paṇḍita Rāma Autāra,

village Panḍitapurwā, post office Rasiyā, district Baharāich (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीसूर्यायनमः अथ सूर्य कथा लिख्यते ॥ दोहा ॥ एक शमय गिरिजा सहित संभु रहे कैलास । उपजी अति अनुराग दृढ़ सूर्य कथा प्रगास ॥ दोहा ॥ आदि भवानी संकरहि पूछे प्रेम दिढ़ाइ । सूर्य प्रताप जो काज है सो मोहि कहो बुझाइ ॥ दोहा ॥ श्री सूर्य की महिमा संकरहि वर्णे लीन्ह । कोटिन विप्र जिवांइ के दान सो वरन कै दीन्ह ॥ दो० ॥ प्रथमै सूर्य मनाइ कै सिंधु कीन्ह प्रनाम । अरघ दीन्ह कर जोरि कै वर्णय लाग्यो नाम ॥ चो० ॥ श्री सूर्य देवता सुमिरों तुम्हहो । सुमिरत ग्यान बुद्धि दे मोही ॥ जोति स्वरूप आदित बलवाना । तेज प्रताप तुम्ह अग्नि समाना । तुम्ह आदित परमेश्वर स्वामी । अलष निरंजन अंतरजामी ॥ वरणि न जाइ जोति कर लीला धरम धुरंधर परम सुसीला ॥ जोतिकला चहुंओर विराजे जगमग कानन कुंडल छाजै । स्वेत बरन छवि तुरंग सवारी ग्यान निधान धर्म व्रतधारी ॥ परम पुनीत आदित अविनासी । अछे अजीत सब घट घट वासी ॥

End—दक्षिण दिसि है कासी प्रयागा तहवां बहइ सरस्वती गंगा । दो० ॥ दक्षिण दिसि पुनीति है सुनहु उमा मनलाइ । आगिल अर्थ जस होइ है तस मैं कहो बुझाइ ॥ कलो के वीते वीत सब जाई । मानुष का तन मानुष पाई । तब अवतार प्रभु लेहैं अकलंकी । मानुस तन होइहि जिमि पंकी । दक्षिण दिसि तब उदइहहि जाई ॥ अति हित कथा कहैं समुझाई ॥ धर्म कथा होइहिं दिनराती । नेम धर्म करि है बहु भांती ॥ विप्र बवाइ आप तव षइ हैं निस दिन कथा सूर्य की गइ है ॥ दक्षिण दिसि रवि लेई निवासा । धर्म कथा तहं होइ प्रकासा । मिथ्या वचन कोउ नहिं भषि हैं । निस दिन टेक सूर्य पर रषि है । धर्म विचार सूर्य तब करि हैं । द्वादस कला जोति तहं उइ है ॥ दोहा ॥ द्वादस कला होइ उइहि रवि तहं जाइ ॥ जन्म जन्म को पातक हत्या कहत सुनत सब जाइ । सोरठा ॥ उमासंभु के संपदा यह भपावे । सूर्य को पढ़े सुनै मन लावे । पावै पद निर्माण इति श्री सूर्यपुराण लिषितं बस्तीराम मिश्रस्म शुभं भूयात संवत १८७५ समै पोष १५ दिन भृगुवासरे ॥ राम राम राम राम राम ।

Subject—सूर्य की कथा और उसकी महिमा मय उदाहरण यथा-सूर्य भगवान का व्रत करने से अंधे को नेत्र, कोढ़ी को सुन्दर काया, निर्धन को धन और बिना पुत्र वाले का पुत्र प्राप्ति होती है ।

No. 432(x2). Surajapurāna, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves 22. Size—7 × 4½ inches. Lines per page—20. Extent—275 Anushṭup ślokas. Appearance—

Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1906 Samvat or A.D. 1899. Place ot deposit—Hazārī Lāla, post office Rahua, district Rāe Barelī.

Beginning—श्रों श्रीगणेशायनमः ॥ श्रों श्री सुरुज जी सहाये नमः श्री हनुमान जी सहाये नमः ॥ श्री सुरसती जी सहाये नमः श्री तेतीस कोटी देवता जो सहाये नमः ॥ श्री गुरु जी सहाये नमः ॥ श्री सुरुज पुरान लीषते ॥ दोहा ॥ वंदों चरननि उर धरी भगति प्रेम लवलीन । महिमा अगम अपार है साहेब ग्यान प्रवीन ॥ वंदों चरन जोरी कर श्रीपती गौरी गनेस । तुलसीदास करी वरनो वरानैा कथा दिनेस ॥ चौपाई ॥ श्री सुरुज देवता सुमिरैा ताही । सुमीरत ग्यान बुधी देह मोही ॥ जोती सरूप आदीत बलवाना ॥ तेज प्रताप न अंगीनी समाना ॥ तुम आदीन प्रमेस्वर स्यामी ॥ अलष नीरंजन अंत्रजामी ॥ दरनीन जाइ जोति के लीला ॥ धरम धुरंधर प्रम सीसीला ॥ जोतिकला चहुंवोर विराजै ॥ जगमग कानन कुंडल छाजै ॥ नील वरन छवी तुरंग असवारी ॥ ग्यान नीधान धरम व्रतधारी ॥ प्रेम पुनीत आदीत प्रवीनासी ॥ अजै अनादी सकल घटवासी ॥

End—अथवा पीपर वटतर गायैा । व्रत करै रविनाम कहायो । रोग सकल तन के सब जाही ॥ तेज मान रवि प्रवेश कराही ॥ पुत्र पउत्र संपदा ते पावही ॥ सो विसेष करी स्तुती अस गावही ॥ दिन दिन भगती करै अधीकाई ॥ तेहि पर आदित रहहि सहाई ॥ सुर दुरलभ जग विविधी भोग करी ॥ अंत अवस्था सुर मुनी तन धरी ॥ रीषी पुरवास ताही कर होई ॥ रवि के भगती जानै जो कोई ॥ दोहा ॥ येह इतिहास पुनित अती ऊमहि कहा समुझाई । व्रत कीये नामहि लीये सो रीषी लोकहि जाई ॥ इति श्री पदुम पुराने ॥ श्री सुरुज महातमे ॥ उमा महेस संवादे पुजा पाठ असथाने वरनैा नाम दवादसमा अध्याय ॥ १२ ॥ इति श्री सुरुज महातमे मेहा पुराने ॥ सुरुजा व्रत विधान वरनो नाम ॥ दवादस ॥ मा अध्याये ॥ इति श्री सुरुज पुरान संपुरन समप्त ॥ सुभ मस्तु ॥ रामा राम राम सदसहइ लीषतं गंगादिन । तेवारि जो प्रति देष सो लिषा ॥ संवत १९०६ महीने कुआर सुकल पक्षा तीथी १ पंचीमी ॥ दिन सुकवर

No. 432(y2). Surajapurāṇa, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—52. Size 9 × 6 inches. Lines per page—8. Extent—25 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1907 Samvat or A.D. 1850. Place of deposit—Śrimati Mahantā Lakshaman Dāsī, Kuti Bābā Jhāmadāsajī, post office Keśaraganja, district Sultāṇpur.

No. 432(*z*2). Surajapurāna, by Tulasī Dāsa. Substance--Country-made paper. Leaves--25. Size--9 × 8 inches. Lines per page--28. Extent--270 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character--Nāgarī. Date of manuscript--1925 Samvat or A.D. 1868. Place of deposit--Ṭhākura Rāmdaura, village Mithaurā, post office Keśarganja, district Baharāich (Oudh).

No. 432(*a*3). Tulasi Satsaī, by Tulaśī Dāsajī Goswāmī. Substance—Country-made paper. Leaves – 31. Size—14 × 6 inches. Lines per page—50. Extent—902 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1830 Samvat or A. D. 1779. Place of deposit—Rāma Śhaṇkara Bājpaī, village Bahorī ka Bājpai kā Purawā, post office Sisaia, district Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशाय नमः॥ नमो नमो श्री राम प्रभु परमातम परधाम। जेहि सुमिरत सिध होत हैं तुलसी जनमन काम॥ १॥ राम वाम दिसि जानकी लखन दाहिनी ओर। ध्यान सकल कल्यान कर तुलसी सुर तरु तोर॥ २॥ परम पुरुष परधाम वर जापर अपर न आन। तुलसी सो समुझत सुनत राम सोई निर्बान॥ ३॥ सकल सुषद गुन जासु सो राम कामना हीन। सकल काम प्रद सर्व हित तुलसी कहहिं प्रवीन॥ ४॥ जाके रोम रोम प्रति अमित अमित ब्रह्मन्ड। सो देषत तुलसी प्रगट अमल सु अचल प्रचंड॥ ५॥ जगत जननि श्री जानकी जनक राम सुभ रूप। जासु कृपा आति अघ हरनि करनि विवेक अनूप॥ ६ तात मातु पर जासु के तासु न लेस कलेस। ते तुलसी तजि जात किमि तजि घर जन परदेस॥ ७॥ पिता विवेक निधान वर मातु दया जुत नेह। तासु सुवन किमि पाइ है अनत अटन तजि गेह॥ ८॥ बुद्धि विमै गति हीन सिसु सुपथ कुपथ गत जान। जननि जनक तेहि किमि तजें तुलसी सरिस अजान॥ ९॥ मात तात सिय राम रुष बुधि विवेक परमान। हरत अषिल अघ तरुन तर तव तुलसी कछु जान॥ १०॥ जिन ने उदभव वर विभवब्रह्मादिक संसार। सुगति तासु तिनकी कृपा तुलसी वदहि विचार॥

End—पीत सगाई सकल विधि वनिज उपाय अनेक। कल वल छल कलि मल मलिन डहकत एकहि एक॥ दंभ सहित कलि धर्म सब छल समेत व्योहार। स्वारथ सहित सनेह सब रुचि अनुहरत अचार॥ धातु वंधो निरुपाधि वर सद गुरु लाभ सुमीत। दंभ दरस कलि काल मह पोथिन सुनष सुनीति॥ फोरहि मूरख सिल सदन लागे अटुक पहार। कायर कूर कपूत कलि घर घर सरिस उहार॥

जो जगदीस तौ अति भलो ज्यों महीस तौं भाग। जन्म जन्म तुलसी चाहत राम चरन अनुराग ॥ का भाषा का संस्कृत विभव चाहिये सांच। काम जो आवे कामरो काले करिय कमाच ॥ वरन विसद मुक्ता सरिस अर्थ सूत्र सम तूल। सतसैइया जगवर विसद गुन सोभा सुख मूल ॥ वर माला वाला समति उर धारै जुत नेह। सुख सोभा सरसाय नित लहै राम पति गेह ॥ भूप कहहि लघु गुनिन कहं गुनी कहैं लघु भूप। महि गिरि गत दोऊ लखत जिमि तुलसी स्व स्वरूप ॥ दोहा ॥ चारु विचारु चलु परि हरि वाद विवाद। सुकृत सीम स्वारथ अवधि परमारथ मरजाद ॥ इति श्री मद्गोस्वाई तुलसी दास विरचितायां सप्त शतिकायां राजनीति प्रस्ताव वरननो नाम सप्तम, सर्गः लिखतं कालिका प्रसाद कायस्थ संवत १८३६ गुंजौली मध्ये ॥ श्री राम श्री राम श्री राम

Subject—राम की महिमा संत लक्षण राज नीति आदि के ७०० दोहे।

No. 432(*b* 3). Dohāwalī "Tulsī Satsaī", by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made old paper. Leaves—106. Size—10 × 5 inches. Lines per page—8. Extent—931 Anushṭup ślokas. Appearance—Very nice. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1893 Samvat or A. D. 1836. Place of deposit—Ṭhākura Vishwanātha Siṃha Tālukedāra, village Agesar, post office-Tirsundī, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री गोसाई तुलसी दास जी कृत दोहावली सतसई लिष्यते ॥ गुर गनपति गिरजा रोषै ॥ गौरा कपीश अहीस ॥ वंदि वरन दोहावली। कृपा करहु अज ईस ॥ १ ॥ आइ सकल सद्गुन सुमतिः ॥ बैठहु उर स्थान ॥ करहु दया मति विमल हैः ॥ कहौं गुन गान ॥ २ ॥ तासु सुजस को कहि सकेः जेहि उर राम निवास ॥ तेहि हनुमंतहि नाई सीरः ॥ भाषा ललित प्रकास ॥ ३ ॥ संसकीर्त के अर्थ को तुलसी शक संजोग ॥ यम वारा भाया वोना ॥ हरि हे न लाग भोग ॥ ४ ॥ का भाषा का संसकृत ॥ प्रेम चाहिये सांचः ॥ काम जो आये कामरो ॥ काले करै कू मांच ॥ ५ ॥ मंगल मनि मर्जाद मनिः ॥ सकल धर्म मनि धीर ॥ लाल हयमनि भूप आनद मनि रघुवीर ॥ ६ ॥ × ×

End—तुलसी वीरही वापुरी अपने भवन मझार पंथ नीहारै राम की पल पल वारंवार ॥ ६९६ ॥ कब मिलि हौ कब भेंटि हौ कब देषौं वोई पाई ॥ जिन पाइन्ह ते वीछुरे वहु दीन गए वीहाई ॥ ६९७ ॥ जीय में जीकर लगि रही नीस वासर नीत सोई ॥ राम मीलन के कारने रही पपीहा होई ॥ ६९८ ॥ ज्यौं मछली जल कों चहै चातक घन को प्यास ॥ त्यों वीर हारि दरस कौं तलपि तरसाई

॥ ६९९ ॥ छुतो नेह कागद होय हुतो लषा यन टांक ॥ श्रांच धगे उघ सो सुवस से हुंउ कैसो श्रांक ॥ ७०० ॥ इति श्री राम दोहावली सतसई ग्रन्थ समाप्त ॥ शंवत ॥ १८९३ ॥ माघा ॥

× × × × × ×

No. 432(*c* 3). Vinaya Patrikā, by Goswāmi Tulasīdās of Rājāpura. Substance—Old paper. Leaves—280. Size—8 × 6 inches. Lines per page—11. Extent—1,950 Anushṭup ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Nāgarī Prachārīnī Sabhā, Kāśī.

Beginning—······ म चरण रति ॥ तुलसीदास प्रभुहरै भेद मति ॥ ७ ॥ देव बड़े दाता बड़े शंकर बड़े भोरे । किये दूरि दुःख सवनि के जिन जिन कर जोरे । सेवा सुमिरण, पूजिवो पाता खता थारे । गाउं बसो बामदेव मैं कबहूं न नहोरे ॥ अधि भैातिक वाधा भई ते किंकर हैं तेरे । वेगि विलोकन वरजिये करतूति कठोरे ॥ तुलसी दनि हंध्यैा चहै सठ शाक महोरे ॥ ८ ॥

End—कह्यो विन रहिना परत कहे राम रसना रटत ॥ तुम से सुसाहिब की वोट जाइ खोटो खरैा कालकी कर्म की हू सासति सहत ॥ विचार सार पैयत हू न कछू सकल बड़ाई सब कहो ते लहत ॥ नाथ की महिमा सुनि समुझि अपनी वोर हेरि हारि हृदय दहत । पषन सुसेवकन सुतीयन प्रभु श्राप मा बापु तुही साची तुलसी कहत ॥ मेरी तो थारो है सुधरैगी विगरैऊं वलि राम रावरे सो रही राचरी चहत ॥ २६६ ॥

दीनवंधु दूरि कियो दीन कें दूसरो शरण । श्रापको भलो है सब श्रापनो कैा कोऊ—

Subject—इस ग्रंथ में राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सीता, हनुमान, शिव, पार्वती, शारद, आदि देवताओं की पाप मोचनार्थ श्रैार रक्षार्थ स्तुति प्रार्थना की गयी है । यह ग्रंथ छप चुका है ।

No. 432(*d* 3). Vistāra Rāmāyaṇ (Bāla Kāṇḍa), by Tulasīdāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—197. Size—8 × 6 inches. Lines per page—48. Extent—7,056 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1925 Samvat or A. D. 1868. Place of deposit—Viśwanātha Library, Maheśwara Siṃhajī, Rais, village Dikawliyā, post office Biswāṇ, district Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेसायनमः अथ बालकांड लिष्यते। श्लोक॥ वरणानामर्थ संघानां छंदसामपि मंगलानांच कर्तारौ वंदे वाणी विनयकौ॥ भवानी संकरौ वंदे श्रद्धा विश्वासरुपिणौ याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तः स्थमीश्वरम्॥ वंदे बोधमयं नित्यं गुरुं संकर रुपिणौ यमा श्रितोहि वक्रोपि चंद्रः सर्वत्र वंदिते सीता राम गुणग्रामं पुण्यारन्य विहारिणौ॥ उद्भव स्थिति संहार कारिणी क्लेस हारिणी॥ सर्वस्त्रेय करी सीता नतोहं रामवल्लभां॥ नाना पुराण निगमागम संमतं यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोपि॥ स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा भाषा निबंध मति मंजुल मातनोति॥ सोरठा॥ जेहि सुमिरत सिधिहोइ गननायक करिवर वदन॥ करहु अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभगुन सदन। मूक होइ बाचालु पंगु चढ़े गिरिवर गहन॥ जासु कृपा सुदयाल द्रवौ सकल कलिमल दहन॥ नील सरोरुह स्याम तरुण अरुण वारिज नयन॥ करहु सो मम उर धाम सदा क्षीरसागर सयन॥

End—वामदेव रघुकुल गुरु ग्यानी। बहुरि गाधिसुत कथा वषानी॥ सुनि मुनि सुजस मनहि मनुराऊ। वरनत आपन पुन्य प्रभाऊ। बहुरे लोग रजायसु पाई। सुतन समेत नृपति गृह आई॥ जहं तहं राम सुजस सबगावा। सुजस पुनीत लोक तिहुछावा॥ आये राम व्याहि घर जवते। वसै अनंद अवधपुर तवते॥ प्रभु विवाह जसभयो उछाहू। सकहि न वरनि गिरा अहिराऊ॥ कविकुल जीवन पावन वानी। राम सिया सब मंगल खानी॥ तेहिते मैं कछु कहा वषानी। करन पुनीत हेत निजवानी॥ छंद॥ निज गिरा पावन करन कारन राम जस तुलसी कहा। रघुवीर चरित अपार वारिध पार कवि कैसे लहा॥ उपवीत व्याह उछाह मंगल सुनि सो सादर गावहीं॥ वैदेहि राम प्रसाद ते नर सर्वदा सुष पावहीं॥ सोरठा॥ सिय रघुवीर विवाह जे स प्रेम गावहिं सुनहिं तिनकह सदा उछाह मंगलायतन राम जस॥ इति श्री राम चरित्रे सकल कलि कलषु विध्वंसने विमल वैराग संपादिनो नाम प्रथमो सोपान समाप्त सुभंभूयात इति श्री मोहन लाल शुक्ल गोधनी अस्थान संवत १९२५ मार्ग मासे कृश्न पक्षे तिथौ एकादस्याम भैामवासरे॥

No. 434. Swarodaya, by Udaya Chanda Chaube of Agrā. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—7 × 5 inches. Lines per page—17. Extent—270 Anushṭup ślokas. Incomplete. Appearance—Old and damaged. Character—Nāgarī. Date of composition—1830 Samvat or A.D. 1773. Date of manuscript—1834 Samvat or A. D. 1777. Place of

deposit—Paṇḍit Badarī Nāthaji Bhaṭṭa, Professor, Lucknow University, Lucknow.

Beginning—कहत हैां सुनि चित्तदै गिरिजा, सहो ॥ ८२ पहिले………
नके सात दिन सूझै न भोहैं जानि हो। पांच दिन………हि लै नदो से तारिका रामा
…………दिन तीन तना सांझ सूझै एक दिन रसना रहो ॥ यह काल चक्र विचार
के सु………पै शिवा सों मैं कहो ॥ ८३ यह परम………म गुप्त मारग दियै। तोहि
बताइ कै। चारैा पदारथ कैां प्रगट जो कल्प वृक्ष……जाइकै ॥ यह सुनत गिरिजा
अति मुदित ह्वै जोरि कर अस्तुति करो। असान वि…………कैा संभु के चरनन
परी ॥ ग्रंथ स्वरोदय कियो मैं कछु संक्षेप बनाइ। सकल सुकवि विनतो करैां लीजै
तोहि अपनाइ ॥ ८५ (अप) नोहो यह जा (निकै)………यहै विचारि। भूलो होंउ
जहां (तहां) लीजो सुकवि सुधारि ॥ ८६

End—जेठे पीतंबर दास। बहु गुनन कीन्ह प्रकास ॥
सुत जासु नंद किसोर। गुन लसत जिनमें कोरि ॥ २०२
तिनके सुदूलह राइ। हरि भक्त सुद्ध सुभाइ ॥
भए जासु दैालत राय। जग में लसत अभिराम ॥
लघु खेमचंद विलास। पुनि नाम व T लाल ॥
गुन लसत जिनमें वृद्ध। अेा जगत मांझ प्रसिद्ध ॥
जाके सुद्दै सुत जान। छोटो खरग मनि मान ॥
जेठो उदै है चंद। जिन कियो है यह छंद ॥

संवत् १८३४ ज्येष्ट कृष्ण एकादसो ११ चन्द्र वासरै लिषो छ राम ॥ मिश्र उदैचंद जो लिषावित ॥ परोपकारार्थम् ॥ श्रो स्तुम् श्री शुभम ॥ श्रो ॥ इति

Subject—ग्रंथ बहुत ही अपूर्ण अेार दोमक का खाया हुआ है १८ पृष्ट में केवल ३ पृष्ट शेष हैं।

No.435(*a*). Rasa Chandrodaya, by Udai Nātha (Kavīndra). Substance—Country-made paper. Leaves—19. Size—10 × 6 inches. Lines per page—50. Extent—832 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of maunscript—1913 Samvat or A. D. 1856. Place of deposit—Paṇḍita Awadheṣajī Pāṇde, village Khambhariha Pandenkī, post office Barhapurā, district Baharāich (Oudh).

Beginning—अथ धीरा ज्येष्टा को उदाहरण ॥ दोऊ एक ठैार जहां बैठी हैं जलजमुषी प्यारो तहां आयो धीरताई तकि नेह को। नेह सरसाई निरसाई

न छपाई छपै समताई सुलह को। कहुक ज्यों मेह को भनत कवींद्र रंग भेद हो मैं अंग द्युति एक रंग देषि परे दुहुन को॥ देह को पोरो सारो है के लाल एक वहराई पहिराई लाल सारो लाल सारो जासो नेह को॥ अथ अधीरा जेस्टा कनिष्टा॥ दोऊ सिर साजैं राजै चित्रित महल मध्य वाग को बनक जहां जोहै जोहै जाल सों॥ भनत कवीन्द्र तहां कामहू ते अभिराम आये सरसाये स्याम सुषमा विशाल सों॥ लाल वारो वेदी वाल वारो अलमेटे पट घूंघट के लागे ते उचटि परी भाल सों॥ आरसी संवारि कै निहारि देन लागो यक नेह लागो तो लगि लपटि लागो लाल सों॥ धोरा अधीरा॥ धीरज अधीरज को नीरज नयन दोऊ एक ठौर बैठो आयो तितही रंगीनो है॥ पंचमो वसन्त की हैं सुमन गुलाबो यह ईश पै चढायवे कह्यो अबहीं नवीनो है॥ भनत कवीन्द्र कंत ऐसो मत कीनो है जोरि अंक अंक सों मरोरि कुच प्यारे लाल तो लैां वाल दूजो को अरि रस लीनो है॥

End—अथ साक्षाद्दर्शनं॥ यथा॥ केसरि की पोरि भाल गरे धरे गुंज माल लाल कर लकुट मुकुट सीस सोह्यो है॥ पीत पट फेंटा कटि पेंठा को को कसेरी जहां निकसै री तहां ऐसो भांति मोह्यो है॥ भनत कवीन्द्र गेह आंगन सोहात है न देषे बिना आंगन में औरै रंग रोह्यो है॥ काहू सो कहैं। तो हैां मैं लोक में न लहैां वाहि टोना डारि सांवरे ढोटैाना मन मोह्यो है॥ पीतम के पट में लिख्यो चित्र निहारि छको तिय मोद मढ़ाये॥ ता पल मे पल लागत ही सपने सुष तो अपने पिय पाये। बाल के आनंद बाढ़त ही परतीत भई कछु लाल के आये॥ यों एक बार सितासित में बढ़ी जाति बिहार बिचार के न्हाये॥ शरद मयंक यो कलंक भरो पिय बिन दरद करद समदेत हिय हूलकै॥ सैाति को सहेली बाय पाय कै अकेली आय बिरह दवारो वारि देति फूंकि फूलि कै॥ सुष के समाज साज दुषदाई लेष राज तापे ताप ताय तन अतन अतूलि के॥ ऐसो पोर भीर समय आयो नाह वीर तीर के लै कैान वोर भोरे भाव तेसा भूलि के॥

इतो श्री कवि कुल कुमदानंद वर्धने श्री गोपीजन वल्लभ रहस्ये उदयनाथ (कवीन्द्र) विरचिते काव्य चन्द्रोदय समाप्तः

Subject—नायक नायका भेद और हाव भाव वर्णन।

No. 435(*b*). Rasa Chandrodaya, by Ravīndra Udai Nātha of Bānapura. Substance—Country-made paper. Lines—11. Size—9 × 6½ inches. Lines per page—18. Extent—225 Anushṭup ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Navanihāla Simha Seṇgāra, Kantha, Unāo.

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ दुलह कवि के पिता कविन्द कवि कालिदासात्मज कृतो रस चन्द्रोदय ॥ लिष्यते ॥ मंगलाचरन वानी को ॥ कवित्त ग्रंथ परिपूरन के तूरन विघनहार मुकता के चूरन जवाहिर जुवान के। परा अपरा के वैषरो मध्यमाके प्रतिमा के भेद संधी अनुबंधी कवितान के ॥ भनत कविद दि प्रति नये जये कढ़े न्यारे न्यारे पुनि होइ रस के विधान के। वानी के वरन जुग परेते चतुर मुष होत हैं चतुर मुख वानी के समान के ॥ १

End-अथ भावो अस्थान भाव संका संकेता अनुसयना लक्षन ॥ दोहा ॥ जाके थान अभाव की संका उर सरसाइ। सो अनुसयना दूसरी कहत सकल कविराइ ॥ ६७ ॥ कवित्त ॥ बीच करि वल्लि को मालती औ मल्लिका की एला को लवंग को अनेक क्यारी न्यारी है। चंपक को चन्दन को मौलसिरी वृंदन की वलित लतानि मों मिलित साख सारी है ॥ भनत कविंदा मति षेद करै मृग नैनी तेरे हेत लीनी हम षवरि अगारी है। गह गही गुलवारी सुन्दर सुमन वारी तेरे सासुरे में सुनी कैधौ फुलवारी है ॥ ६८ ॥

No. 436. Sagun Vilāsa, by Udai Nātha of (Naimishāra) Sītāpura. Substance--Country-made paper. Leaves—13. Size--6 × 4 inches. Lines per page--26. Extent--270 Anushṭup ślokas. Appearance--Old. Character--Nāgarī. Date of composition--1841 Samvat or A. D. 1884. Date of manuscript—Samvat 1924 or A. D. 1867. Place of deposit —Thakura Rāma Siṃha, village Raghunāthapura, post office Biswāṇ, district Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सगुनावली लिष्यते ॥ चौ० ॥ गुर पद सुमिरौं दोउ कर जोरी। देव बुद्धि में करौं निहोरी ॥ दो० ॥ जगत जननि गिरजहि सुमिरि वार वार सिर नाइ। राघहु प्रन जन जानिकै जेहिते संसय जाइ ॥ सिद्धि सदन गणपति चरण जो ध्यावै मन लाइ। फल चारिउ नर लहे सो अपदा कोटि नसाइ ॥ अमल सरोरुह गुरु चरन ध्याइय सब तजि काम। राम दाहिने होहिं जेहि नित प्रति हित जेहि नाम ॥ नौमी हरहि करौ सिर नाई मंगल रूप सुमंगल दाई ॥ करहु सिद्धि शिव सगुन विलासा निज जन जानि पुरवहु ममआसा ॥ पुनि सुमिरौं मैं हरि सिर नाई ॥ करु आपन संत सुषदाई। गति लप अलष वरनि नहिं जाई। हर सारद नारद नहिं पाई ॥ फन सहस्र जानहिं नहिं भेवा। अमित प्रभाव अंत गुन देवा। द्रौपदी आरत वेत पुकारी। वसन वाढ़ि प्रभु तुरत उवारी ॥

End—राहु वलो जाइ सरस स्थाई प्रतिकूल । लोग करै पुनि नीक है वाम अंग मों सूल ॥ केतु कला चंचल वसै तुव मन अस्थिर नाहि पुरहि वेध मालिक मरस केहि विधि संसै जाहि ॥ जोगिन वल वड़देव है भू वल वलहि समान । जतन करहु रचि सुभट सब सुनु प्रच्छक दै कान ॥ नगन काल के मुषहि मों प्रच्छक रचना साजु । वेध विचारि होम करु तबतव पूरन काजु सिद्धि सयाने समुझि ले भ्राता घायल तोर होइ पराजय रिपु सयन छूटि जाय एक घोर ॥ विश्नु ध्यान जेहि करहिं नर जे कारज हित होइ । उदयनाथ हरि भक्ति विन सुष नहिं पावै कोइ ॥ इति श्री उदयनाथ विरिचितायां सगुन विलास समाप्त ॥ श्री संवत् १९२४ शाके १७८९ कातिक मासे कृष्ण पक्षे, तिथैा चतुर्थ यां गुरु वासरे लिष्यते इदं पुस्तकं वल्दव पंडित पैदापुर ग्रामे निवासितः राम राम राम "सगुन विलास पोथी लिषो सब सगुनन का सारु ताहि विचारिय परषिये सगुन अगुन विस्तार ॥ सगुन अगुन विस्तार जानि पोथी में लिजै जैसा निकसै हाल जानि पुनि तैसा किजै । कह पंडित सुविचार जानि मन में निज कोथी । सगुनन का सब सार नाम सगुनन को पोथी ॥

Subject—इस पुस्तक में कार्य के सिद्धि होने न होने के प्रश्नोत्तर हैं ॥

No. 437. Alif Nāmā, by Bajhana Śāha, Bārābaṇkī. Substance—English paper. Leaves—7. Size—$8\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—20. Extent—85 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Persian. Place of deposit—Chetana Śāha Sāhiba, Awaliyāpur, post office Safdarganj, Bārābankī (Oudh).

Beginning—अलिफ एक बहुरंगो सांई । हर घट में वासो परछाई ॥ जहं देखते तहै रूप है न्यारा । ऐसा है बहुरंगो प्यारा । बुझन कहैं तो क्या कहैं कुछ नहीं कहने की वात ! समुद समायों बुंद में अचिरज बड़ा दिखात ॥ वे बिनु गुरु कोइ भेद न पावे । धरती से अकास लों धावै ॥ पहिले प्रीति गुरु से कीजै । प्रेम नगर में तव पद दीजै ॥ बिनु गुरु वजहन लेत है जो कोई बसन रंगाइ ॥ यो निज कर तुम जानियो दोउ ग्रोट से जाइ ॥ ते तब जाग तिरावनि अइहै । जब यह बैरिन दुविधा जैहै ॥ यही तो मन में कपट की हाटी । जिन सब खेल किया है माटी ॥ जामन के मन ही में रहे । श्रोर तै तें का बंधं तार ॥ बुझहन माह अवही मिले तनिक न लागै वार । से सावित है ध्यान जो लागे ॥ आपुहि आप भरम सब भागै ॥ अजप जाप तू जपरे भाइ ॥ छूटि जाहि दर्पन की काई ॥ बुझहन कहैं तूं जाप कर वैठि रहु ध्यान लगाइ ॥ सुरति निरति दोऊ रखैा बिरथा सांस न जाहि ॥ जीम

जुगत मैं ग्रौर बतैहैां । जो तोहीं ग्रकला करि पैहों ॥ ग्रवहीं वह संगी नहिं छूटै दिन दिन दुपहर पड़ा लूटै ॥ कहने को तो पांच हैं हैं वह पूरे तीस । इनहीं कारन ना मिलै ग्रबहो लों जगदीस ॥ हे हदभर यह भूल है तेरी ॥ एकौ बात न माने मेरी ॥ ग्रब तक तू ऐसा हो जाता ॥ जैसे कोइ भला मदमाता ॥ कहां गई वह बुधि तेरी कहां गया था चेत ॥ ऐसो काया पाय के हरि सों किया न हेत ॥ खे खाविंद का कहीं है न्यारा ॥ मूंदि देखि तैं दसहु दुग्रारा ॥ सुनि परिहै ग्रनहद का वाजा ॥ परजा से होइ जैहो राजा ॥ सभो तार तन में वजैं मन में मचे हैं राग । बुभ्फहन जाको सुनि परैं वाके वड़े हैं भाग ॥ दाल दया जो मन में राखे । प्रेम का रस कैसे ना चाखे ॥ विनु मधु पिये होइ मतवारा ॥ निस वासर बु करै नजारा ॥ बुभ्फहन जगत में ग्राइ के करिये ना तू मान ॥ दया धर्म नहिं छांड़िये जब लग घट मां प्रान ॥ ज़ाल ज़ौ फल जब लों नहि ग्रावै । कितनैां चहै कोइ मन भटकावै ॥ हिरदैं लगि न प्रेम को गांसो ॥ कैसे कै मिलहि कहो ग्रविनासी ॥ जब लों तन नाहीं जरै ग्रै मन नाहीं मरि जाइ ॥ बुभ्फहन मूरति स्याम की तब लैां कहा दिखाइ ॥ रे रियाज़ मैं ऐसा खोला ॥ जैसन कुछ मंसूर था बोला ॥ सो सब सुनै रहै तू पोरा ॥ ग्रानि परी मति लै गये चोरा ॥ लाज का काजर तैं ग्रपने नैनन नहिं डारे धोइ ॥ बुभ्फहन कैहै कैसे भला दरस पिया का लेइ ॥ ज़े ज़र देख जु भूला रहिये ॥ सबहो वैस ग्रकारथ जैहै ॥ प्रेम बटो का मद पिउ चोखा ॥ मिटि जैहै मन का सब धोखा ॥ हों मे क्या काहि ग्राये हियां कियो का ग्राइ ॥ झूठी माया देखि के कै सो रहे भुलाइ ॥ सीन सहज का सीख लै लटका । काहे फिरत है इत उत भटका ॥ सोचन कर ग्रवही हे सवेरा ॥ तिरकुटी कोट करि दे डेरा ।

End—फ़े फरमान तलब का ऐहै । का मुख लैकर वहां को जैहै ॥ वा दिन का कछु सोच न कीने ॥ हरि का नाम कबहु नहिं लीने ॥ ग्रागे तो कबहूं ना सुने सो ग्रबहू कहत हैं टेर ॥ इक दिन फिर पछिताइगा जो चिरियां चुनि हैं खेत ॥ काफ कैान तेरा है झूठा ॥ ग्रैार ढंग से ऊहै ग्रनूठा ॥ सुनत रहे साधुन की वानी ॥ तिहूं पै ग्रबलैं भये न ग्यानी ॥ जो मति का हीना भयो तो वाको कैान हवाल । ग्रागे का सोचत नहीं ग्रो पीछे को पछतात ॥ काफ़ करम उन बड़ा है कीना । मानुष जनम जो ऐसा दीना ॥ ग्रापु छिपाना तोइ उघारा ॥ यो तो मन मे सोच गंवारा ॥ वाको बदला एक है जो मैं देहुं बताइ ॥ हरि हेरा जो चाहिये पहिले ग्रापु हिराइ ॥ लाम लोभ को छोड़ि दै वातें ॥ जो मैं कहैां सीख लै घातैं ॥ ऐसा लागत पिया जु तेरा । जैसा चांद को चहत चकोरा ॥ जो तू प्रेम के रंग में तन मन लेत रंगाइ ॥ देखि तो पहिले जोर में लाभ किधर को जाइ ॥ मीम मुहब्बत चाहिये मन में । घर में रहे चहै रहै

वन में ॥ गले पड़े जो प्रेम की फांसी ॥ कहां का अजुध्या कहां की कासी ॥ जाके हिरदै राजत है बुझहन प्रेम का वान ॥ छूट जाइ सब तर मां आइ जाइ सब ग्यान ॥ नून नहीं दूजा कोइ जग में। आपुहि आप रहत है सब में ॥ हित चित से सुनि ले यह बैना ॥ खुलि जैहैं तेरे हिया के नैना ॥ बुझहन कहैं तू बुझि ले अबहीं है यह बूझ ॥ यक दिन याही बूझ से होइ जइहै सब सूझ ॥ वाउ वही इक यार है तेरा ॥ तिहि का गलिन किया नहि फेरा ॥ दुरजन थे सो मौत बनाए ॥ समझा नहिं मोरे समझाये ॥ मैं तो कहौं चतुर है तू है बड़ा नदान ॥ कितनौं मैं समुझावत रहौं किहे न एको कान ॥ हे हादी ऐसा तू पावे । उनहूं से न अपना नेह लगाये ॥ देही सोच है मोहे कारी । देखो कहां गति होइ तिहारी ॥ हियां के हारे हार हैं हियहि के जीते जीत। बुझहन कहैं तू मान ले करि साहब सों प्रीति ॥ ये यारी हरि से अब करना । ये अक्षर हिरदै विच धरना । वनत वनत वनि जैहै ऐसा ॥ कोई दिन मंसूर था जैसा ।

बुझहन अक्षर ऐसे कहे साधुन के हथियार ।

बिरहा के मैदान में पति के राखन हार ॥

(१) पृ० १ से पृ० ३ तक —ईश्वर के हर घट में रहने का वर्णन, गुरु महिमा, अजपा जाप का महत्व, ५ इन्द्रियां और उनके पंचीकरण हो कर पूरे ३० हो जाने के कारण ईश्वर भजन में विघ्न होने का वर्णन, उत्तम मानवी काया पाकर ईश्वर भजन न करने पर घृणा । ईश्वर का अपने ही में होने का वर्णन । दया की महत्ता । मान का खंडन । बिना मन मारे ईश्वर मिलने का कथन । प्रिय दर्शन का मार्ग । झूठी माया में भूलने का वर्णन । त्रिकुटी में ध्यान रखने का आदेश ।

(४) पृ० ३ से पृ० ६ तक—संसार के माया में भूलने का वर्णन । साधु के लिये संतोष का उपदेश । किसी से न मांगने और आसन पर दृढ़ रहने का वर्णन । नबी का नाम लेने का उपदेश । अली का ध्यान रखने का वर्णन । घट के अन्दर अवस्थित हरनगर ॥ जाने का मार्ग । गुप्त और प्रकाश में उसी के प्रकाश का वर्णन । प्रेम नगर की गहरी नदी का वर्णन । पूज्य और पूजक का एका कथन । प्रेम मार्ग की कठिनाइयां जुआ में साहब के नाम जीतने का उपदेश ।

(५) पृ० ६ से पृ० ७ तक । मृत्यु के दिन का ध्यान रखने का ध्यान । अग्रशोची होने का उपदेश । ईश्वर के साथ कृतज्ञता प्रगट करने का उपदेश । लोभ परित्याग का वर्णन । घर वन कहीं रहे उसमें प्रेम रखने का उपदेश । अयोध्या काशी इत्यादि का ईश्वर प्रेम के सन्मुख तुच्छ दिखाना । 'एक वही' का उपदेश देकर भजन मे प्रवृत्त होने का वर्णन । ईश्वर भक्ति से 'मंसुर' के सदृश होने का उपदेश ।—ग्रन्थ की बड़ाई

No. 438. Mānasa Śankāwalī, by Bandana Pāṭhaka of Mirzāpura. Substance—Country-made paper. Leaves—30. Size—15 × 7 inches. Lines per page—28. Extent—1,339 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Written in prose and verse both. Character—Nāgarī. Date of composition—1906 Samvat or A.D. 1849. Date of manuscript—1951 Samvat or A.D. 1894. Place of deposit—Santan, village Aria, post office Piparī, district Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री जानकी वल्लभो विजयते ॥ मानस संकावली लिष्यते ॥ दोहा ॥ श्री सीता श्री राम पद पदुम वंदि त्रय भ्रात ॥ धाम नाम लीला ललित श्री हनुमत अवदात ॥ श्री गिरजा पति पुत्र के वंदो पद अभिराम । तुलसी तुलसी दास पद करि कै बिबिध प्रनाम ॥ श्री रामानुज मत प्रवल धारक तारक जीव । तुलाराम श्री गुरु चरण बंदो बकता सीव ॥ श्री सीतावल्लभ रसिक हरीदास त्रय भाव ॥ जुक्त सदा माल भगत बसत महल्ल नत पाव ॥ श्री मद्राम गुलाम के सिष्य सो चैापई दास । तासु सिष्य बंदन नमत श्री मिरजापुर बास । शिव प्रसाद पाठक विमल तासुत वेनोराम । तासु पुत्र लक्ष्मण लसत तासुत बंदन नाम । श्री काशी पति ईश्वरी नारायण नृप राज । तेहि के शुभग सनेह ते प्रगट ग्रंथ द्विज-राज ॥ श्रीमानस संका सकल रही विश्व में छाइ । ताके उत्तर वोध हित ग्रंथो-द्भव सुष पाइ ॥

End—पुनः संका तीनि इती सूक्ष्म तीन कांड मे धरि एक वाल कांड मे एक अरन्य में १ लंका में यामे का हेतु है ॥ उत्तर यह तीनि इती अनेक रामायन में अनेक रीति से हैं ॥ ताते सिद्धार्थ सूच्छम इति ३ देके इन्हने भी उनको मत दिढ़ राष्यो ग्रैार आपनो कांड कर्म तो विलक्षण ही कियो सो तो स्पष्ट ही ग्रंथ में है ताते ग्रंथकार को सर्व मत रक्षक दृष्टि ग्रैार श्री गोसाईं तुलसी दास जी को अगाध आशय है ग्रैार ग्रंथ श्री मद्राम चरित्र मानस भी अगाध है ॥ मै स्वमति अनुकूल कह्यो है समुझि लेनो सन्देह नहीं है । इति श्री मानस संकावली समाधान जुक्त श्री मानसी बंदन पाठक कृत समाप्त ॥ संवत् रस नभ अंक शशि ऋतु वसंत मधुमास । शुक्लपक्ष नैामी सुतिथि संकावली प्रकाश ॥ श्लोक ॥ संकावली सुभग मानस मान दात्री श्री रामचंद्र पद पंकज भक्ति गाम्या ॥ श्री विश्वनाथ परि तोष कृते सुरम्या व्यक्ती कृता बिमल बंदन पाठकेन । वाराणसी संस्कृते कमुद्रा यन्त्रानिक जने मुद्रितोयं शिला शर्म्मे मन्नालाल ने शर्मणाय श्री संवत् १९५१ आषाढ़ मासे कृष्ण पक्षे अमावस्यांम भोमवासरे लिषी समाप्ते संकावली । वाल कांड में ३० ॥ अयोध्या में ॥ १० ॥ आरन्य में ॥ ९ ॥ किष्किंधा में ११ ॥

सुन्दर में ६ ॥ लंका में १७ ॥ सर्व कांड को समिष्ठो १०४ ॥ नाम चतुर्गुन पंच-युत दुगुनो वस करि लेषु । तुलसी या संसार में दुइ अक्षर करि लेषु ॥ सुत कलत्र धन धाम तन मानस जस जगवंध । रामचरण ये सात में नेह करत जे अंध ॥

Subject—इस ग्रंथ में रामायण के सब कांडें को मुख्य शंकाओं को समाधान है अंत में निर्माण और लिपि संवत है ॥

No. 439. Līlāwatī, by Bilochana Rāma. Substance—Country-made paper. Leaves—77. Size—$10\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—8. Extent—513 Anushṭup ślokas. Appearance—Good. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1891 Samvat or A.D. 1834. Place of deposit.—Ṭhākura Viśwa Nātha Simha Sāhiba, Talukédāra, village Agresar, post office Tirsandī, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ लोलावतो लोष्यते ॥ दोहा ॥ विघ्न हरन सब सुष करन हरन सकल अघलेस ॥ सुष संपति दायक सदा सोद्धो नाम गनेस ॥ १ ॥ जुक्ति उक्ति मन मे बढ़ै स्वर पति रसना बैठि । सुरनर मुनि सुमिरन करत कहनि हिये मे पैठि ॥ २ ॥ देहु बुद्धि कीजै कृपा गुन प्रताप है भूर । ताते बरनि कहौं कछु करि नामा दस्तूर । इहां बरनो गनपति कृपा सीष्य संबाद के अर्थ को लेषन की मरजाद ॥ ४ ॥ गुरु सों पूछो शिष्य नै धरि चरनन पर सीस । अब निहि साव अनेक वोधि मोहि कहो जगदीस ॥ ५ ॥ है हिसाब दीरघ दुनो मोहि लगत है गुढ ॥ जा नर है संसार मे वोना गुरु सब मूढ ॥ ६ ॥ + × × ×

End—गुरु बाचा ॥ येक सेर को येक कर दूजैा तिगुनैा लष तासु त्रीगुन करि तोसरैा तीगुनैा चोथ बोसेठा ॥ १०३ ॥ वार वार मन के करै आगे पाछे देइ जेतिक नोवा होये तोतरो तैाल करेइ ॥ १०४ ॥ ग्रैसे लेषे बहुत है कहत वढ़त विस्तार, ताते संछेपहि कहे चारो षंड वोचार ॥ १०५ ॥ इतने लेषे पाइ कै सुरजन वहै सुजान । गुनवंतो सो कहाइ है मजोलिस बैठ नोदान ॥ १०७ ॥ इति श्री मति विरचिते अथर्वन भेड वरननो नाम चतुर्थ षंड ॥ ४ ॥ संपुर्ण समाप्तं श्री संवत १८९१ मासानाम मासोत्तमे मे मासे कुआर मासे कोसुन पछे पंच आंग सनीवारे समाप्तं छ छं ०

Subject—

(१) पृ० १ से १२ तक, प्रथम खंड तौलखंडो-विधि वर्णन ।

(२) पृ० १३ से २७ तक, द्वितोय खंड-नाप विधो वर्णन ।

(३) पृ० २८ से ५६ तक, तृतोय खंड, गिन्तो वर्णन ।

(४) पृ० ५७ से पृ० ७७ तक, चतुर्थ खंड, अथर्बन खंड ।

No. 440(*a*). Bhaktāmar Charitra, by Vinodī Lāla of Śahjādapur. Substance—Country-made paper. Leaves—444. Size—10½ × 6½ inches. Lines per page—14. Extent—5,439 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of composition—1746 Samvat or A. D. 1689. Date of manuscript—1883 Samvat or A.D. 1826. Place of deposit—Jaina Mandira (Barā), Bārābaṇkī (Oudh).

Beginning—श्री वीतराग जो सहाय ॥ अथ भक्तामर चरित्र भाषा लिख्यते ॥

दोहरा—ओंकार अर्द्ध सबिन्दु है बन्दैां मन वच काय ।
नमो नमो पुनरपि नमो वहु विधि सीस नवाय ॥ १ ॥
जामै गर्भित तीन पद महामंत्र नवकार ।
ताकों प्रनऊ प्रथम ही मुक्ति भुक्ति दातार ॥ २ ॥
मुनि जन जाके ध्यान तें पावैं पद निर्वान ।
चोर अंजना ने जप्यो लह्यो अमर पद थान ॥ ३ ॥
शिव दायक लायक सकल नाय क जिन मत माहिं ।
तीस पांच अक्षर विमल मुहि बिसरत है नांहिं ॥ ४ ॥
भव-भंजन तारन तरन सिद्धि बधू उर माल ।
अब चैाबीस जिनंद पद बंदैां नम्रत भाल ॥ ५ ॥

चैापाई—श्री रिशदेम्बर जिन राज पाइ । वन्दैां मन वच क्रम सिर नाइ ॥
वन्दैां अजित नाथ दूसरे । अजित जोति भवसागर तरे ॥ ६ ॥
वन्दैां संभव नाथ जिनंद । भव दुख हरन करन सुखकंद ॥
अभिनंदन वन्दैां जिन राय । आनन्द चन्द परम सुखदाय ॥
सुमति नाथ सुमति दातार । बन्दैां कुमति कुगति हर मार ॥ ७ ॥
वन्दैां पद्मा प्रभु जिन तोहि । पद्मासन बैठे शिव मोहि ॥ ८ ॥

× × × × ×

End—कीनो कथा विचित्र बनाय । भक्तामर स्तवन गुन गाय ॥
श्री आदिनाथ की स्तुति गुनभरी । मान तुंग मुनिवर की करी ॥
ताकी कथा संपूरन भई । भाषा बंद चोपई ठई ॥
दोहा छन्द अरिल्ल बनायो । कछु कुंडलिया सोरठा लायो ॥
संवत् सहत्र से सैताल । सावन सुदी दुतिया रविवार ॥

शुभ दिन कथा संपूरण करी । प्रथम जिनेन्द्र तनी गुन भरो ॥
जो यह पढ़ै सुनै चितलाय । सो नर सुख भुंजै सिव जाय ॥
जो मिथ्या तो निंदै कोय । अपने पल को पावै सोय ॥
जोरि कथा कवि दई असीस । षट दर्शन वृद्धै जगदीस ॥
श्री जिन वर तुम्हें होहु सहाय । आदि नाथ मंगल सुखदाय ॥

दोहरा—सकल कथा पूरन भई, बानी विमल विमाल ।
विश्व भूषन प्रति देखिके, रचो विनोदी लाल ॥
पढ़त सुनत आनंद बढ़ै, ज्यों दुतिया को चंद ।
पुन्य बढ़ै पातिग घटै, उपजै परम अनंद ॥
कही विनोदी लाल, सारद गुरु परतापतें ।
पूरन भई रसाल, अदभुत कथा सुहावनी ॥

इति श्री प्रथम जिनेन्द्र भूषणे श्री भक्तामर महाचरित्रे भाषा लाल विनोदी कृत चौपाई बंद संपूर्ण । संवत् १८८३ शुभ भूयात् ॥

Subject—(१) पृ० १ से पृ० ९ तक, वन्दनायें—जैन धर्मानुसार तीर्थंकरादि की स्तुतियां, कवि विनयोक्ति, कवि तथा उसके समय के नृप का सूक्ष्म परिचयः—

(१) कौशल देश मध्य शुभथान । शाहिज़ादपुर नगर प्रधान ॥
गंगा तीर वसै शुभ ठौर । पटतर नहीं तासु पर और ॥
वसै महाजन बहु विधि लोग । अपने धर्म लीन संभोग ॥
श्रावक लोग वसैं जहं घने । जैन धर्म रत सत आपने ॥
चैत्यालय जिन वर के तीन । चित्र विचित्र रचित प्रवीन ॥
धर्म ध्यान सब विधि सो करै । जती वृती को अति आदरै ॥

(२) नौरंग साहि वली को राज । पातसाह सब हित सिरताज ॥
सुख निधान सक बंध नरेस । दिल्ली पति तप तेज दिनेस
अपने मत में सम्यक वंत । शील शिरोमणि निज तिय कंत
दीप दीप है जाको आन । रहै साह अरु संका मान ॥
साहिजहां के वर फरजिन्द । दिन दिन तेज बढ़ै ज्यों चंद ॥
भयो चकत्ता ऊस उदोत । सिह वली वन जैसे होत ।

दो०—तप जप मंत्र तुरंग गन । ते त्यागो बुधिवान ॥
भुज बल साहस वेष बल । तखत लियो सुलतान ॥
छत्र धरयो सिर आपने, फेरी चहुंदिश आन ॥
आलम गीर महावली, नौरंग शाहि सुजान ॥

(अरिल्ल) जाके राज सुचैन सकल हम पायो। ईति भीति नहीं होइ सुजिन गुन गायौ ॥

लाल विनोदी नाम सारदाबर दियौ। निस दिन देय असीस साहि जुग जुग जियौ ॥

(सोरठा) सुखी प्रजा सब कोय, नौरंग सह के राज में।
जो कोई दुःखित होय, सो सब अपने कर्म तें ॥

(३) तं पुर लाल विनोदी रहै। जैनधर्म की चर्चा कहै ॥
अगरवाल जैनी शुभवंस। गर्ग गोत्र प्रगट्यो सर हंस ॥

ग्रन्थ निर्माण हेतु इत्यादि चतुष्ठय वर्णन, कथा संवंध वर्णन:—प्रथमहि मान तुंग मुनि भये। भक्तामर रचना करिगये ॥

× × × × ×

मूल संघ भट्टारक दक्ष। विश्व भूषन मुनिवर परतक्ष ॥
ताकी अद्भुत टीका करी। बिगत कथा सब की विस्तरी ॥
श्लोक बद्ध तिन संस्कृत करी। कसै करि समुझै नर नरी ॥
ताको अब मैं भाषा करूं। पंडित लोग हंसन ते डरूं ॥

(२) पृ० १० से पृ० ८६ तक—प्रथम कथा।

उज्जैनी के राजा सिंधु सुजान का निपुत्री होकर खेद प्रकाशित करना, मंत्री का सान्त्वना देना, राजा तथा उसकी रानी रत्नावली का वन में सैर को जाना, वहां पर एक हाल के बालक का प्राप्त होना, राजा का मंत्री की सम्मति से उस अज्ञात गर्भोत्पन्न को निज बालक प्रसिद्धि कर देना और उसे अपने पुत्र ही की भांति पालना, उसका विवाहादि करना, सिंधु की रानी का गर्भ-स्थित होना, उससे सिंधुल का जन्म, सिंधुल का परिपोषण और विवाहादि वर्णन सिंधुल के दो पुत्र शुभचन्द्र तथा भरत का उत्पन्न होना, राजा सिंधु का मुनिवृत धारण करना और मुंज को राजनीति का उपदेश देकर गद्दी का स्वामित्व प्रदान करना। एक दिन एक तेली के गाड़े हुए कुदाल को किसी योधा का न उखाड़ सकना, सिंधुल द्वारा उसका उखाड़ा जाना, सिंधुल का पुनः कुदाल गाड़ कर सिंहनाद करते हुए उसे उखाड़ने की ललकार देना, किसी से न उखड़ सकना, राजकुमारों द्वारा उसका उखाड़ा जाना, राजा मंजु का द्वेष करके उनके मारने की चेष्टा, मंत्री की सम्मति से राजकुमारों का राज्य से निकल कर विरक्त होना, शुभचन्द्र का मुनि होना। भर्तृहरि की सिद्धियों में लिप्त होना, दोनों का सम्मेलन, बड़े भाई का छोटे को उपदेश

मंजु का सिंधुल से भी द्वेषकरा के मंथा कराना, मंजु का पश्चाताप, भोजोत्पत्ति, राज-काज वर्णन, मंजु का विरक्त होना, कालिदास की कथा, धनंजय वर्णन, ब्रह्मचर्य्यादि वर्णन, ब्रह्मचारियों के आचार विचार भोज राजा की सभा में मान तुंग जैन मुनि का आगमन, सभा में पंडितों द्वारा मुनि का मान-भंग, कालिदासादि पंडितों की हार, भोज का मुनि वृत लेकर जैन-धर्म साधन करना।

(३) पृ० ८७ से पृ० ११४ तक—भक्तामर स्तवन माहात्म्य, कथा संबंध का व्यौरा, जुगल काव्य का कथन फल वर्णन, एक सेठ होने की कथा।

(४) पृ० ११५ से पृ० १२४ तक—"ॐ नमो अनंतोहि जिणांणं" मंत्र संबंधी कथा।

(५) पृ० २५ से पृ० १३१ तक—"ऊं ह्रीं अर्हंनमो कुछ बुधिणं" मंत्र संबंधी चौथी कथा।

(६) पृ० १३१ से पृ० १४० तक—त्वत्संस्तवेन—इत्यादि काव्य संबंधी कथा।

(७) पृ० १४१ से पृ० १४७ तक "ऊंनमोपदानु सारीन" मंत्र संबंधी मंत्र के फल का उदाहरण द्वारा समझाया जाना, उसकी सिद्धि से एक नृपति की मनोवांछा पूर्ण होना॥

(८) पृ० १४८ से पृ० १५३ तक—आस्तां स्तवन की कथा।

(९) पृ० १५४ से पृ० १६० तक—नात्यद्भुतं काव्य की कथा।

(१०) पृ० १६१ से पृ० १७० तक—"ओं ह्रांरायो स्वयं बुधाणं" संबंधी कथा।

(११) पृ० १७१ से पृ० १७८ तक—'ऊं ह्रां नमो यज्ञेय बुधानं' संबंधी कथा गुणशेखर का उदाहरण।

(१२) पृ० १७९ से पृ० १८७ तक—'ऊं ह्रीं णयो नोहिय बुधाणं' मंत्र का महत्व प्रकाशन संबंधी कथा।

(१३) पृ० १८८ से पृ० १९४ तक—चित्रं किमि त्रज दिते का वृत्तान्त कल्याणी रानी की कथा।

(१४) पृ० १९५ से २०६ तक—ऊं ह्रीं नमो चोदास पवीने की कथा।

(१५) पृ० २०७ से पृ० २१४ तक—"ओंह्रों नमो अष्टानि मित्त महामित्त महा निमित्त कुमलोणं" की कथा फल सहित।

(१६) पृ० २१५ से पृ० २२४ तक—रति भद्र की कथा। उसके मूर्ख से पंडित होने का वर्णन

(१७) पृ० २२५ से २३४ तक—ऊं ह्रीं अरहनमो परधान ॥ ऊं ह्रीं नमो बीजा हरीणां संबंधो कथा।

(१८) पृ० २३५—२४६ तक "ऊं ह्रीं नमो चारणो सो धरणै"—मंत्र संबंधो फल को संसिद्धि के हेत उदाहरण रूप विष्णु दास की कथा।

(१९) पृ० २४७ से पृ० २५४ तक। 'ओं ह्रीं अरहन मेय' मंत्र सम्बन्धो ब्रत कथा फल वर्णन। श्रीधर का उदाहरण।

(२०) पृ० २५५ से पृ० २६२ तक—"ओं ह्रीं नमो जिनतवानं" इत्यादि मंत्र संबंधी महीचन्द्र को कथा।

(२१) पृ० २६३ से पृ० २७२ तक—"ओं ह्रीं नमो जिनत वानं" इत्यादि मंत्र संबन्धी कथा।

(२२) पृ० २७३ से पृ० २७९ तक— धन मित्र को कथा।

(२३) पृ० २८० से पृ० २८७ तक—ऊं ह्रीं नमो तत्र तवाणं महा मंत्र संबंधी कथा।

(२४) पृ० २८८ से पृ० २९४ तक—ऊं ह्रीं अई नमो महा तवानं ॥ मंत्र संबंधी कथा।

(२५) पृ० २९५ से पृ० ३०२ तक ऊं ह्रीं अई नमो घोर तमानं ॥ मंत्र संबंधी कथा। इस मंत्र द्वारा जय सेना रानी के व्याधि—हरण की कथा।

(२६) पृ० ३०३ से पृ० ३१० तक—ऊं ह्रीं अई नमो घोर गुणाणं इत्यादि मंत्र संबंधी कथा का वर्णन।

(२७) पृ० ३११ से पृ० ३१९ तक—ऊं ह्रीं अई नमो घोर गुनवंभ पारीनं मंत्र संबंधो कथा।

(२८) पृ० ३२० से पृ० ३२८ तक—ऊं ह्रीं अई नमो मोषादों इत्यादि मंत्रो को कथा।

(२९) पृ० ३२९ से ३३७ तक—ऊं ह्रीं नमो विधो साई पत्ताणं मंत्र के महत्त्व संबंधी कथा।

(३०) पृ० ३३८ से पृ० ३४६ तक— ऊं ह्रीं सवोहि पत्ताणं संबंधी कथा।

(३१) पृ० ३४७ से पृ० ३५५ तक—ऊं ह्रीं नमो वचवल्लीने संबंधी कथा।

(३२) पृ० ३५६ से पृ० ३६४ तक—ऊं ह्रीं नमो वय वल्लीणं। महामंत्र संबंधी देवराज की कथा।

(३३) ऊं ह्रीं नमो वीर सयोणं मंत्र संबंधी, दावानल उपसम होने की कथा पृ० ३६५ से ३७२ तक।

(३४) पृ० ३७३ से पृ० ३८४ तक—एक सती की कहानी जिसने जैन धर्म संबंधी मंत्र बल के प्रभाव से संपूर्ण लोगों को अपने धर्म का परिचय दिला कर और पति को रोग मुक्त कर जैन धर्म की महत्ता दिखाई गई है।

(३५) पृ० ३८५ से पृ० ३९५ तक—ऊं ह्रीं नमो सयि चोणं 'ऊं ह्रीं मुभरस वोणं नामक मंत्र संबंधी कहानी, गुन वर्मा का सुर पद पाना।

(३६) पृ० ३९६ से पृ० ४०० तक—ऊं ह्रीं नमो अमिस वोणं मंत्र संबंधी कथा।

(३७) पृ० ४०१ से पृ० ४२४ तक—ऊं ह्रीं नमो आइमी न महा नाणं ॥ मंत्र संबंधी हंसराज की कथा। राजा हंसराज की कलावती के साथ भोग विलासादि का वर्णन।

(३८) पृ० ४२५ से पृ० ४३४ तक—ऊं ह्रीं नमो तढ़ मानं मंत्र संबंधी कथा।

(३९) पृ० ४३५ से पृ० ४८२ तक—ऊं ह्रीं अ नमो सर्वं सिधा इत्यादि मंत्रों से संबंध रखने वाली गाथाओं के वर्णनों द्वारा जैन सिद्धान्तों को अटल बनाकर मान तुंग कालिदास को पराजित करना, राजा भोज का रनवास सहित जैन धर्म की दीक्षा लेना। इस ग्रंथ के पठन पाठन का फल।

निज सम्राट वंश परिचयः—

ओरंग साहि बली के राज। पायौ कवि जन परम समाज ॥
× × × ×
वाढ़ौ साहि चकत्ता वंश। तिमिर लंग सम प्रगटौ हंस ॥
× × × ×
तिनके तखत वखत परचंड। बब्बर शाहि भये परचंड
× × × ×
ता सुत साहि हमाऊं भयो। जिनके राज दुख सब गयो ॥
तिनके साहि अकबर भये। नाम लेत दुख दारिद गये ॥
× × × ×
तिनके जहांगीर जग जए। साहि सलेम नूरदी भये ॥
हिन्दू पति प्रगटयो जगमांहि। ताकी उपमा दीजे काहि ॥
तिनके साहि जहां सुलतान। भए तेज जिमि ऊगत भान ॥
हठ को धनी हठीलो साह। भयो किसान सांनि जगमांहि ॥
तिनके तखत वखत के जोर। बैठो ओरंग सहि मरोरि ॥
× × × ×

आलम गोर कहावै सोय । जाहि कारम आलम को होय ॥
अपने जोर छत्र सिरधरै । इक छत राज विधाता करै ॥
× × × ×
जाके राज परम सुख पाय । करी कथा हम जिन गुन गाय ॥

(४०) पृ० ४४२ से ४४४ तक । कथा निर्माणादि विषयक कथन शाहि-
ज़ादपुर सहर मझार । रहै सदा जिनके आधार ॥
काष्टा संघ मादि जिन सनो । माथुर गछ्डजागर घनो ॥
पुष्कर गुन गनमै सार । जैन धर्म को परम अगार
कुमार सेनो मुनि कीनी आय । प्रगटयो अव का धर्म सहाय ॥
वैश्य वंश मे उदित महा । जैन धर्म करुनालय लहा ॥
तापर ज्ञाति महा गंभीर । अगरवाल गुन आगरधीर ॥
गर्ग गोत्र उत्तम गुन सार । अष्टादस गोतनि सरदार ॥
× × × ×
मिथ्या मत को नासन हार । प्रगटयो कुल को परम श्रंगार
मंडल को परपोता भलो । पारस पोता को जसु चलो ॥
दुगाहो मल को सुत गुन धाम । लाल विनोदो मेरा नाम ॥

ग्रन्थ समाप्ति कालः—
संवत् सत्रह से सैताल । सावन सुदि द्वितोया रविवार ॥
शुभ दिन कथा संपूरन करी । प्रथम जिनेन्द्र तनी गुनभरी ॥
पठन पाठन का फल—ग्रन्थ समाप्ति ।

No. 440(*b*). Vishnu Kumāra kī Kathā, by Vinodī Lāla. Substance—Country-made paper. Leaves—22. Size—$12\frac{1}{2} \times 8$ inches. Lines per page—22. Extent—635 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1955 Samvat or A.D. 1898. Place of deposit—Srī Jaina Mandira (Barā), Barābaṇkī (Oudh).

Beginning—ॐ नमः सिद्धोय ॥ अथ विष्णु कुमार की कथा

वात्सल्य अंग धारक कथा लिख्यते ॥ (अरिल्ल छंद) ॥ प्रथमहि प्रथम जिनेन्द्र चरण । चित लाइये । पंच महाव्रत धरन सुताहि मनाइये ॥ प्रथम महामुनी भेष सुधर्म धुरंधरो प्रथम धरम परकासन प्रथम तोर्थंकरों ॥ १ ॥ (गोत छंद) गुरु चरन वंदा सुधर्म केरे कथा अनुपम विस्तरों ॥ २ ॥ प्रथम तोर्थंकर सुमिर मन सारदा हिरदै धरो ॥ उपसर्ग पाये सात से मुनि आनि

जिनहू नै वार को । तुम सुनौ भवि जन एक चित दै कथा विष्णु कुमार को ॥ २ ॥ दोहा ॥ वंदौं विष्णु कुमार मुनि मुनि उपसर्ग निवारि । वात्सल्य अंग की कथा सुनहू भाविक जन सार ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ अब यह जंबूद्वीप मझार । भरथ क्षेत्र सोभित सिंगार ॥ देस अवन्ती उत्तिम ठौर । तेहि समान देस नहिं और ॥ ४ ॥ वहां नगर उज्जैन समान । अवनी विषै न दीसै आन ॥ वन उपवन रंजित चहुं ओर का शोभा बरनै तिहि ठौर ॥ ५ ॥

End—नाक कान मुख धूआं भरो । ताको सबन कियो उपचरो । पशु कज्जल अरु सुरस अहार । बहु विधि पुन्य उपावन सार ॥ ९८ ॥ तब देवन मिलि पूजौं पांई । विष्णु कुमार भूमि मै आई ॥ विनती कोय अनूपम दिये । करि प्रनाम सुर निज पुर गये ॥ ९९ ॥ विष्णु कुमार गये निज धाम ॥ सबन सुरन को करि सनमान ॥ फेरि जाय दीक्षा आदरी । इहि सो मुनि अपनो तप करी ॥ २०० ॥ सावन सुदि पून्यो तिथि तनी । कथा विचित्र अनूपम बनी ॥ वात्सल्य अंग कथा यह करो । कथा कोस सम जो कछु लही ॥ २०१॥

× × × × × ×

इति श्री विष्णु कुमार मुनि कथा संपूर्ण ॥ चैत्र मासे शुक्ल पक्षे तिथौ ३ भृगुवासरे संवत् १९५५ ॥

Subject—(१) पृ० १ से पृ० ११ तक—उज्जयनी के राजा सिवाराम के चारो मंत्रियों की धूर्तता से एक जैन मुनि का अविनय होना—जिसने कितने ही ब्राह्मणों को अपने जैन मत के प्रभाव से हरा दिया था । मुनि के तप से उन चारों का कीला जाना, राजा को यह सब ज्ञात होना और उनको प्राण दंड की आज्ञा दिया जाना, मुनि का उनके प्राण बचाना और राजा से किसी अन्य दंड की प्रार्थना करना, राजा द्वारा उन को देश निकाला दिया जाना ।

(२) पृ० १२ से पृ० २२ तक—चारों ब्राह्मण मंत्रियों का निकल कर हस्तनागपुर के राजा पदुम के यहां पहुंचना और एक विशेष ढंग से उसके शत्रु को उसकी शरण में लाने के उपलक्ष्य में सात दिन का राज्य पाना । वहां पर उन्ही मुनिवर का (जिनसे इन लोगों का प्रथम विरोध था) पुनः यज्ञ द्वारा श्रद्धा न करना और विष्णु कुमार की सहायता से कष्ट से मुक्त होना । विष्णुकुमार का वामन रूप धारण कर के वलि मंत्री को (उन चारों ब्राह्मणों में मुख्य) को छलना । मुनिके प्रभाव से प्रभावान्वित होकर उन चारों का श्रावक व्रत धारण करना । विष्णु कुमार का प्रस्थान । कथा फल वर्णन । ग्रंथकार का परिचयः—विष्णु कुमार मुनिंद को कीनो कथा रसाल । सुनैं भव्य गन भाव सों कहै विनोदी लाल ॥

No. 441. Satī Vilāsa Bīranjī (wife of Sāhabadīnā) of Newādā (Benares). Substance—Country-made paper. Leaves—6. Size—10½ × 6 inches. Lines per page—21. Extent—903 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of composition—1905 Samvat or A.D. 1848. Place of deposit—Śrīmān Bābū Bhagwān Bakhsha Siṃhajī, Rājā of Amethī, Rājā Amethī, district Sultānpur (Oudh).

Beginning——अथ सती विलास लिख्यते ॥

दोहा सब कर पालक जवन प्रभु अज अनीह निर्वान ॥ वन्दौं तिन के पद कमल जापर अपर न आन ॥ गणपति सेस महेस विधि चंद सूर द्विज व्यास ॥ संत सती सारद सिवा पूजवहु मन की आस ॥ × × × × जीव विन जस देह मलीन वा नीर विना सर सूषित वैसे ॥ ज्ञान विहीन जती क्षिति मै हरि भक्ति विना नररूप अनैसे । चंद मलीन पियूष विना ब्रह्मज्ञान विना कुल ब्राह्मन कैसे ॥ नारि विरञ्चि विचारिक है पिय भक्ति विना तिय सोहत कैसे ॥ ३ ॥ × × × × सूर्यवंस में रघुभये रघुवंसो श्री राम ॥ ता सुत द्वै लवकुस भये क्षिपित पूरन काम ॥ क्षिपितवंस उदित भये दुर्गवंस महाराज । तिलक जुक्त सुभ सोभिजै सत्य धर्म कर साज ॥ अमरसिंह तेहि वंस में रामचन्द्र कर दास ॥ जोग जतन जप तप किये पुत्र होइ की आस ॥ सेवत वंस गोपाल के तेहि सुत साहिब दीन । सो प्रभुतक विचारि के रहत ब्रह्म मो लीन ॥ अब भापौं माईक अत्रस कासी सुभ अस्थान ॥ जाके दरसन हेत हित देव करहिं प्रस्थान ॥ विमलवंस रघुवंस के बसै बघालिस डीह । ग्राम निवादा में विदित ममपितु सीतल सीह ॥ चौ० ॥ जिले जवनपुर में गडवारा ॥ दुर्गवंस तहं वसहि वोदारा ॥ तहाँ ज्ञान अनुभव हम पाये ॥ सो कहि प्रगट ग्रन्थ में गाये ॥वान मुन्य अरु अंक मिलाई ॥ तापर चंद देतु पुनि ॥ अंक रीति संवत विख्याता ॥ जाति लेव इहि विधि बुध वाता ॥ × × सावन सिति पून्यौं जब आई ॥ तब मेरे मन हुलसत भाई ॥ जाये धर्म पतिव्रत केरा ॥ जेहते करु सब धर्म वसेरा ॥ × × × × ×

End—दुर्ग वंस अवतंस मोहि पिय भक्ति बता येव ॥ यह छिन उपजेव ज्ञान कंत सेवा मन लायेव ॥ अनुभव आतम जगे सतोसत्त ध्रुव ऐह भाषी ॥ दिन प्रति करु कल्यान सप्त गौरो पति साषी ॥ षोड़स वर्ष की उमरि मै किमि भाषौ मैं भक्ति पिय । ऐहते सवनर जानिये येह कीनो कृत्त संभु त्रिय ॥ सवैया ॥ सोय

सतो पद वंदि सोहावनि पार्वति जे पिय संग सिधाए। पारवती जुत दंपति के पद वंदें कृपा करि होहु सहाए॥ कोटि करो विनती रिषि नारिको कीरति जासु सिया वर गाये॥ नारि विरञ्जियि अर्ज ऐहो ऐह ग्रंथ पढ़े नर वाँछित पाये॥

× × × ×

भादें तिथि भगवान की तादिन ते दुइ अवर॥ सत विलास भाषा क्रिया सकल धर्म को टवर॥ × × ×

इति।

Subject--(१) पृ० १—१८ तक—प्रथम विलासः तिय भक्ति, देश धर्म शास्त्र मत वर्णन। (२) पृ० १९—२८ तक—द्वितीय विलास ज्ञान समुद्र नास केत वर्णन। (३) पृ० २९—३८ तक—तृतीय विलास, उपपुराण मतसे पति पूजन विधान वर्णन। (४) पृ० ३८—५०तक चतुर्थ विलासः शास्त्र मतसे शब्द ब्रह्मज्ञान देश आदि का वर्णन। (५) पृ० ५१—६२ तक—पंचम विलासः गोपी उपदेश वर्णन। (६) पृ० ६२—७३ तक—षष्ट विलास विष्णु दिव संवामें गृही धर्म वर्णन। (७) पृ० ७३—८६ तक—सप्तम विलासः गृही धर्म प्रताप वर्णन।

No. 442. Bāraha Kharī, y Viṣṇudāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—6. Size—9 × 6 inches. Lines per page—20. Extent—165 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of composition—1851 Samvat or A.D. 1794. Place of deposit—Paṇḍita Krishṇa Kumāra, post office Bahādurgaṇja, Rāe Barelī.

Beginning—अथ विष्णुदास जी को बारह षरो लिष्यते॥ दोहा॥ पहले गणपति ध्याइये पीछे कीजे काज। विघन हरन मंगल करन राषत जनकी लाज॥ गणपति को सिर नाइके करो कीरतन रंग। राम भजो मुष बावरे काटे जम के फंद॥ संवत अट्ठारह सै इकावना सामन सुदि तिथि तृज। विष्णुदास बारह षरी कही देवता बूझ॥ कही देवता बूझि विस्व भर भगवत नाम उधारै। अरतिस अच्छर बरनन कीन्हो हिरदे भयो उज्यारै॥ गुरु कैा ध्यान धरैा मन माही माया भई अपारा। विष्णुदास द्विज दसम बषाने सुनिके भये निस्तारा

End—जितनी जनकी उक्ति थी उतनी कही बनाइ। नाम कथा सागर बड़ा किस पर पैरैा जाइ॥ किस पर पैरो जाय समद दर कूकरो मकरो बनाई। गुरु कृपा लदा चरन सो बेड़ा पड़ा बनाई॥ विष्णुदास उम्मर—को बासी जिन ये कीरति गाई। ढंढो राम गुरु को किरपा सो जग विचि सोभा पाई॥ इति विष्णुदास की बारह षरी भई समाप्त॥

Subject—पृ० १—गणपति स्तुति, निर्माण काल और गुरु महिमा वर्णन, वसुदेव देवकी विवाह तथा आकाशवाणी का होना। पृष्ट २—कंस का डर जाना और देवकी को दुख देना, वसुदेव का पुत्र देने की शपथ करना और देवकी को लेकर घर आना।

पृ० ३—संतान उत्पन्न होने पर कंस को दे देना, वसुदेव और देवकी का बंदी होना, कृष्ण जन्म, कृष्ण को नंद गृह ले जाना यमुना का बढ़ना, वसुदेव की उस समय की दशा का वर्णन पृ० ४—वसुदेव का लौट कर वापिस आना, कृष्ण का पालने में झूलना, पूतना वध, गौ चराने की लीला का वर्णन।

पृ० ५—काली दमन, गोपियों की उस समय की भयभीत दशा का वर्णन। कंस वध वर्णन।

पृ० ६—कृष्ण विनय के पद और ग्रन्थ समाप्ति।

No. 443. Durgā Śtaka, by Vishṇudutta Mahāpātra. Substance—Country-made paper. Leaves—50. Size—8 by 5 inches. Lines per page—10. Extent—360 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Mahābīra Siṃhajī Talukédāra, village and post office Kothara Kalāṅ, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ दुर्गा शतकम्॥ कवित्त ध्यान॥ हीरन के खंभा जगमगि रहे मंदिर मैं धूपन के बास आस पास बगरे रहैं॥ मोतिन की झालरैं झपकि रहीं चहुंओर बादलान तासु के वितान पसरे रहै॥ सब देव मंडल मुनीस सीस पानि जोरे विद्रुम के पलिका जरावन जरे रहैं॥ बैठी तहां देवी विध्यवा सिनी चरन आगे मुकुट दिगीसन के लटके परे रहै॥ १॥ पुनः॥ कनक को मन्दिर सिंहासन रुचिर तामें बैठी जगदंबा गान किन्नर करे रहैं॥ नाचै देवतान की बधूटी भूरि भाव भरी बाजत मृदंग ताल नौबति भरे रहै॥ संकर रमेस बंस चवर डोलावै दोउ छत्र लीन्हे कर मै निसाकर खरे रहैं॥ सासन को जोवै पाक सासन हमेसे जासु आसन के नीचे पंकजासन परे रहै॥

× × × ×

End—जज्ञ धूम तोम व्योम धावत जलद ऐसे चहुओर फैलत नगारे की घहर है॥ विप्रन के मंडल जपत सिद्ध मंत्र जामें घंटा की घनक जामें आठौ पहर है॥ रुचिर दुकानन में पावन विविध वस्तु उत्तर दिशा में पुन्य गंगा की लहर है। चहल पहल होत महल महल बीच राजत विचित्र जगदंबा को सहर है॥

तैंहो सप्त सागर कमठ शेष नाग तैहीं तहीं मेरु दिग्गज कुबेर मघवान है। तैही नव कानन पवित्र सृष्टिवर तैही तैहीं पुरी ग्राम तीनो पावत प्रधान है ॥ तैही गुप्त तीरथ प्रयाग में त्रिवेनी तैही तैहीं जप तप जोग संजम विधान है। तैही भूमि पावक सलिल व्योम मारुत है तैहो देवी सूरज मयंक जगुमान है ॥ इति श्री दुर्गाशतके पुण्य स्तोत्रे महापात्र विष्णुदत्त कृतो वागादि वर्णनो नाम दशमं दशक ॥ इति दुर्गा शतक सम्पूर्णम् ॥

Subject—(१) पृ० १—६ तक—प्रथम दशक, ध्यानवर्णन, (२) पृ० ६—९ तक—द्वितीय दशक, प्रभाव वर्णन; (३) पृ० १०—१५ तक—तृतीय दशक—पद, मुख, ग्रीवा, कर, भृकुटी बर्णन। (४) पृ० १६—२० तक --चतुर्थ दशक—दया दृष्टि वर्णन (५) पृ० २०—२५ तक—पंचम दशक, महिमा वर्णन (६) पृ० २५-३० तक--षष्ट दशक—स्तुति वर्णन। (७) पृ० ३०—३४ तक—सप्तम दशक, घंटा त्रिशूल वर्णन। (८) पृ० ३४—३९ तक अष्टम दशक—खड्गादि वर्णन। (९) पृ० ३९—४५ तक—नवम दशक, मदिरादि वर्णन। (१०) पृ० ४५—५० तक—दशम दशक--वाटिकादि वर्णन।

Note—यह पुस्तक सन् १९०६ ई० में मिरज़ा पुर निवसी रामधनञ्जय द्विवेदी के नाम से प्रकाशित हो चुकी है।

No. 444. Bhakti Ratānāwalī (Tékā), by Parama Hans Vishnu Purījī. Substance--Countrymade paper. Leaves--100. Size—13 × 6 inches. Lines per page--22. Extent—2,300 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character--Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Bhagawāndīnajī Miśra, Vaidya, Baharāich.

Beginning—दशमे श्री शुक वाक्य ॥ श्री कृष्ण सर्वोत्किष्ट हैं ॥ कैसे हैं विवरूप त विश्वरूप हैं ॥ वालोक निवास जाकैां। अंतरात्मा तें वा भक्तन को निवास हैं जाविषे ॥ श्री कृष्ण भाव स्पष्ट कहिये हैं ॥ श्री देवकी विषे है जन्म प्रसिद्धि जाकी ॥ व रक्त में जन्म नहीं हैं ॥ श्रेष्ट यादव है सभा सेवक रूप जाकें ॥ चारि भुजतें वा भुज रूप अर्जुनादिक तें दुष्ट दैत्यादिक कैां वध करिके ॥ अधर्म को दूर करत हैं ॥ ऐसे समर्थ को मेरो विघ्न वारन के तैां कहैं ॥ कछु नहि है विलास चातुरी ॥ लावण्यादिक विनाहूं सम्बन्ध मात्र तें ॥ स्थावर जंगम जे वृन्द्रावन के वृक्ष लता तृण ॥ पक्षि के दुख हारी हैं ॥ प्रेमाधीन कहिए हैं सुन्दर हास्य की शोभा हैं जाविषै ॥ ऐसो जो भुष तातें गोपियन के कामदेव कों वृद्धि करत हैं ॥ काम वृद्धि को हेतु श्री कृष्ण विषे काम हैं। सो परमानन्द दाइक होइ ॥

End—कर्त्ता ग्रंथन ग्रंथ जो अपनो कर्म ताको भगवान को समर्पत हैं। हे भगवान हे लक्ष्मीकांत ये चांचल्य बिषै अथवा सकल को विषय अथवा परमार्थ के निरूपण विषै तुम मोको तत्पर करो ॥ तहां बुद्धि के विभव तुल्य जो मेरे यत्न तिन करि भगवान तुम भक्तन सहित प्रसन्न होहु ॥ अपने ग्रंथ विषै सकल संपति की योग्यता कहैं हैं ॥ भक्ति है प्रयोजन जिनको ऐसे जे साधू तिनको आदर पठन चिंतव की आग्रह या ग्रंथ विषे आयहिं ते होइगो ॥ अरु युक्ति के विचार विषे हैं स्वाभाव जिनको ऐसे भक्तिहीन अस शब्दिक तिनको तो आदर होइगो ॥ मेरे श्रम को देषिकै कैसो है श्रम नाना प्रकारन के श्लोक को सम्बन्ध तें एकत्र लिखत ऐसी हैं। जो कोई ए अनन्य की कृति हैं ऐसो जानि के निंदा करत है तिनको मैं याचत हैा ए मैं रिकृति को वारं वार देषि के पोछे दुखन कोह्यो जो भक्ति की महिमा जान पर निंदा की वासना रहेगी तैा दुखन देवै ॥ ये ग्रंथ बारंबार देखत भगवान भक्ति उपजैगी। तब पर निन्दादि दुर्वासना कहां उपजै आदि।

Subject—पुस्तक प्राचीन है परन्तु इसमें आदि का एक और अंत का एक पृष्ट नहीं है जिससे संवत आदि का पता नहीं चलता शेष पुस्तक पूर्ण है। पृ० १—३१ तक श्री कृष्ण की भक्ति का वर्णन है इसमें नारद जी, सूत जी, विष्णुपुरी, शुकदेव जी, कपिल देव की माता व कपिल जी आदि व ध्रुव प्रह्लाद आदि की भक्ति का वर्णन किया है। पृ० ३२—५२ तक आकाशवाणी नारद प्रति। भगवान की भक्ति करना और विषय भोग को त्यागना आदि का वर्णन है ॥ पृ० ५३—६२ तक क्षुधा, तृष्णा, क्रोध, लोभ, मोह, आदि से भक्त को दूर रहना उचित है इसी पर व्याख्या की गई है ॥ पृ०—६३—७३ तक हरिकीर्तन में तत्पर रहना सब दुखों का छुड़ाना है क्योंकि श्री भगवान् के पद से गंगाजी ने प्रगट होकर संसार के पापों को दूर किया आदि वर्णन है। पृ० ७४—८४ तक जरासंध वध आदि की कथा वर्णन है ॥ पृ० ८५—९० तक श्री भगवान सांसारिक किसी वस्तु की इच्छा नहीं करते और सब से दूर रहकर संसार का पालन करते और दुःख हरते श्री राम वानर रीछ आदि के साथ रहे और उनकी भक्ति देख उनको अपनाया आदि वर्णन किया है ॥ पृ० ९१—१०० तक श्री कृष्ण भगवान की महिमा का वर्णन किया है भक्ति और शत्रुरूप से जो उनको ध्यावते हैं सो सब उनको प्राप्त करते हैं और स्मरण मात्र से कृतार्थ होते हैं इसी प्रकार नारद आदि के वाक्य वर्णन किये गये हैं। फिर ग्रंथकार ने अन्त में अपनी प्रार्थना श्री भगवान कृष्ण जी से की है।

No. 445(*a*). Ānanda Raghunandana Nātaka, by Viśva Nātha Siṃha of Rewā. Substance—Country-made paper,

Leaves—67. Size—13 × 6½ inches. Lines per page—13. Extent—1,750 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Written in prose and verse. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhingā, Baharāich.

No. 445(*b*). Ananda Raghunandan Nāṭākā, by Maharaja Viśwanātha Siṃhajī of Rewā. Substance—Country-made paper. Leaves—172. Size—14 × 7 inches. Lines per page—11. Extent—2,247 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Written in prose and verse. Character—Nāgarī. Place of deposit—Lālā Sukhi Lālā Rāma Prasāda Kaserā, Bāzāra, Nawābganj, Bārābankī.

Beginning—श्रीगणेशायनमः॥ अथ आनन्द रघुनन्दमं नाम नाटक ॥ छंद शिखा ॥ प्रशरण शरण शरण दश मुख मुख दलन दलि है ॥ अकरन करन करन धनु शर प्रण उधरत रन चलि चलि है ॥ सद मन सदय सद कर कर जनन जनन पर रति है ॥ जस जग गनत गुण गण गण गणप ग्रहिय पशुपति हैं ॥ १ मृद पदु पदम पदुम महियन मन ग्रलि ग्रलि रहि रमि रमि है ॥ चख चल चलनि करति बरवस सुबय वयन ग्रमि ग्रमि है ॥ ग्रति मद मर्दन सर सर सत रस पति तन है ॥ जय जय जपन विबुध बुध छन छन मम पति पति त्रिभुवन है ॥

End—सूत्रधारः प्रबंयः ॥ जय जय रघुनन्द करुणा कर हे ॥ ताड़का तनुभंजन खल दल गंजन हे ॥ पिनाक खंडन जन रंजन हे ॥ सोता विवाहन सुखाव गाहन हे ॥ सैाशोल्यैा दार्यादि कुन भाजन हे ॥ १ ॥ रे ई सनि रेरे सनि सानिन्ति पटयप्य मगरे सामम्य मम्यय्य घप मधनि धच पाथो द्रिग दिग थोपि गदि गदि गति कत कत कत कथं तक थंतक नंग नंग नंग नंग नंग नंग नंग नंग तथुम थैया ॥ १ ॥ श्री रघुनन्दनः ॥ मागु मागु ॥ सूत्र धारः ॥ भजन ॥ छूटै मन मलीनता सारी कामादिक मिटि जाहीं ॥ होय विवेक नसै दुख सिगरे गहैा अप ममवाहीं ॥ ग्रति निर्मल चित है प्रभुपद में लगै सहित द्रग भावै। परम प्रेमरघुनाथ आप को विश्वनाथ ग्रप पावै ॥ १ ॥ जोलैा कोरति चलै तिहारी तो लैांचलै नाथ यह नाटक ॥ सुनि सब होहिं सुखारी ॥ जो यह करै लहै धन धामहु ग्रंत सुगति तिहि होवै ॥ विश्वनाथ को प्रगट रहियतन सुभग तिहारो जोवै ॥ १ ॥ श्री रघुनन्दन दनः तथा सूत्रधारः प्रणम्य सहर्षं निःक्रान्तः ॥ इति श्री मन्महाराजा धिराज बैाघवेश श्री महाराज विश्वनाथ सिंह जूदेव कृत आनन्द रघुनन्द नाथ के सप्तमाङ्कः ॥ समाप्तम् ॥ गुरुदत्त लेषित संवत १९१६ ॥

Subject—(१) पृ० १—२ तक-नान्दी, सूत्रधार प्रवेश, मारिष से सूत्रधार के नाटक खेलने की आज्ञा और उसका निषेध, सूत्रधार का मारिष से गुप्त वाणी का कथन करना, परिपार्श्वक प्रवेश, उसको नट से नाटक खेलने की प्रार्थना, उसका निषेध पुनः परियाश्वंक का स्मरण दिलाना कि तुझको—तेरे ही कथन के अनुसार अभिवाणी का आशिर्वाद मिल चुका है कि तुझे एक अपूर्व नाटक मिलेगा—इति प्रस्तावना (२) पृ० २—३ तक—सूत्रधार को एक चोठी मिलना उसका उसे पढ़ना, उसी में कवि का परिचय इस प्रकारः—श्री जै सिंह भुवाल विधिपति सुत विसुनाथ सिंह जेहि नाऊ सो नाटक आनन्द रघुनन्द भाषा रचि है आउ पढाऊ ॥—इति निः कांतः ॥ शिष्य प्रवेश, नट का गुरु को देख कर उससे पूजन की तय्यारी के लिये कहना, गुरु शोभा वर्णन, गुरु प्रवेश, प्रणाम पश्चात् गुरु की चिट्ठी आने का उनसे कथन और अपना नाटक पढ़ने की इच्छा प्रगट करना, गुरु की स्वीकृति। नट का कथन कि आप के प्रसाद से मुझपर नाटक आगया।

(३) पृ० ४—७ तक—नेपथ्य में कोलाहल, गुरु का ईश्वरावतार होने का सन्देह, अपराजिता नाम नगरी को गुरु का जाना। विष्कम्भकः—महाराज का आगमन, सूत्र मागदादि का वन्दन पाठ, नट का नटी से पुरहुत तथा दैत्यों का युद्ध बता कर कच्चे सूत पर चढ़ के आकाश गमन, वहां से उसके अंगों का गिरना, नटी का सती होना, पुनः नटका आ जाना, लोगों का आश्चर्य चकित होना, नट का नटी को पुनः बुलाना और उसका महलों से निकलना। विदूषक का नटी से हास्य।

(४) पृ० २—१० तक—नृत्य होना, महाराज का कौशिल्या के महलों में जाना, रानियों को उपदेश, कुमारों का महलों से दरबार में बुलाना, मंत्री से राजकुमारों के विवाह की बातचीत, गुरु आगमन, राजा का गुरु से कथन कि विश्वामित्र ऋषि आनेवाले हैं और यह भी सुना है कि वे दोनों राजकुमारों को मांगेंगे। गुरु का वहां कुमारों के भेजने का उपदेश ऋष्यागमन, कुमारों का मांगना, राजा का कुमारों को दे देना, मार्ग पूरा करके उस राक्षसी के वन में पहुंचना—जो ऋषि का मख भंग करती थी, धनुष बाण चढ़ाना, गुरु से शंका करना कि स्त्री को मारने से कुल को कलंक होगा ऋषि का कहना कि ऐसी पापिनियों (भृगु की स्त्री और मंथरा को) मुरारी और नगारि ने मार कर यश लिया है। बहुत से राक्षसों का वध।

(५) पृ० २०—३३ तक मुनि का सीलकेतु नृप की कन्या के स्वयंबर में राजकुमारों सहित जाना, सहस्रकर तथा दिशशिरका वादाविवाद दिक

शिर का आकाशवाणी श्रवण करके भाग जाना, धनुष टूटना जयमाल पहनना, महराज अपराजित के चिट्ठी जाना, उनका गद्गद् होकर पढ़ना और महिज्ञा से अपने पुत्र का विवाह होना सुनकर बरात सजा कर जाना।

(६) पृ० ३४—४५ तक नियमानुसार विवाह का होना, मंत्री का राजा से पुत्र की विदा की प्रार्थना इस हेतु कि हर धनु भंग सुन रेणुकेय आ रहे हैं। गौतम के शिष्य का आगमन, राजा से बंग भाषा में मुनि का संवाद पहुंचना, रेणुकेय का आगमन, उनके भूषणादि का वर्णन, रेणुकेय का क्रोध, डील धराधर से वादाबाद, रेणुकेय का उनको अवतार समझ तपस्या को चला जाना, राजकुमारों का अपने नगर को आ जाना, माताओं का हर्ष—

इति प्रथमोऽङ्कः।

(७) पृ० ४५—५१ तक आदि कवि के शिष्य का क्षीरवती तथा कालिंद जा द्वारा सुना हुआ संवाद सुनाना कि 'राजा' का देवलोक हो गया, इस पर मुनि का हर्ष शोक प्रगट करना, राजकुमारों का आदि कवि के आश्रम पर आना, उनके ठहरने को स्थान बनाना। अपराजिता की कथा पूछना, मुनि का उनकी प्रसन्नता का कथन करना।

(८) पृ० ५२—५९ तक डहडह जगकारी का घर आना, डील धराधर का बन प्रवेश सुन कर शोक, दासी की ठोक पीट, कुशला मिलाप, अपने और सफ़ाई देना कि डील धराधर के बन भेजे जाने में मेरा दोष नहीं है, डहडह जगकारी का डील धराधर के पास चला जाना। काग का महिज्ञा को चोंच मारना, सींक के बाण द्वारा उसको एक आंख फोड़ देना, सेना देखकर विस्मय करना, बड़े भाई से कहना कि यदि आज्ञा हो तो अभी इन दोनों भाइयों को पकड़ लाऊं। सब का आगमन, पिता मरण सुन कर रोदन। गुरु का समझाना, उनको पादुका देकर विदा करना।

इति द्वितीयाङ्कः।

(९) पृ० ६०—६९ तक मैत्र बरुण का गुरु को सूचित करना कि डील धराधर (तुम्हारे इष्ट देव) आवत हैं। डील धराधर का आगमन मुनि का अर्घ्य पाद द्वारा सत्कार करना, उनको मराठी भाषा में पंचवटी पर निवास करना कथन, हितकारी से वार्तालाप। डहडह जगकारी की कथा सुनाना, (दीर्घनखी) एक स्त्री का आगमन विवाह प्रस्ताव दीर्घनखी के नाक कान भंग करना, रासभ प्रवेशः, हितकारी रासभ युद्ध रासभ तथा अन्य राक्षसों का मारा जाना, मैत्रा वरुण का प्रवेश तथा बन्दना।

(१०) पृ० ७०—८१ तक दिशशिर का मंत्री से सगर्व कैलाशादि उठा लाने का वार्तालाप, दीर्घनखी का रोते हुए पहुंचना, सब कथा कहना, दिशशिर का सोच करना, मंत्री का उनकी स्त्री के हरण को सम्मति देना, डौल धराधर को महिजा ने मृग देखकर उसके मार लाने का कथन, उनका गमन, डौल धराधर २ का शब्द सुनकर महिजा द्वारा हितकारी का भेजा जाना, महिजा हरण, जटायु युद्ध, जटायु परम गति, डौल धराधर का महिजा के वियोग में व्यथित होना। अनुरागिनी मिलाप, सुगलकंठ आश्रम को गमन।

इति तृतीयाङ्क।

(११) पृ० ८२—९३ तक सुगलकंठ और उसके मंत्री चेतामल्ल से मिलाप, महिजा संदेश कथन, वासिव (सुगलकंठ का अग्रज) वध, भुजभूषण को युवराज पद, वासिव का सुख भोग, हितकारी का वर्षा व्यतीत होने और शरद ऋतु आ जाने पर खेद प्रगट करना कि, सुगलकंठ ने अभी तक महिजा मिलाप का कोई पयत्न नहीं किया, सुगलकंठ का देश विदेशों को बानरों को भेजना, द्राविड़ देश को एक पर्वत की गुहा निवासिनी स्वयं प्रकाशिनी तपस्वी तथा एक गृद्ध द्वारा बानरों का समाचार हितकारी को ज्ञात होना, गृद्ध द्वारा बनाई हुई राक्षस पुरी को चेतामल्ल का पहुंचना। गृद्ध का आज्ञा लेकर चलना।

इति चतुर्थाङ्कः।

(१२) पृ० ९४—१०६ तक चेतामल्ल का राक्षसपुरी में पहुंचना महिजा का समाचार लेना वाटिका विनाश, दिशशिर के पुत्र नयन का मारा जाना, चेतामल्ल का पकड़ा जाना, राक्षसपुरी दहन, चेतामल्ल का सम्पूर्ण समाचार हितकारी को आकर सुनाना उनका दिया चूड़ामणि हितकारी को देना। राक्षसपुरी को ससैन्य गमन। दिशशिर के लघुभ्राता (भयानक) का दिशशिर से आ मिलना। हितकारी का भयानक से समुद्र पार करने की सम्मति लेना, समुद्र का स्वरूप धारण करके आना, सेतु बाँधना, शिवलिंग स्थापन।

इति पंचमाङ्कः।

(१३) पृ० १०७—१५१ तक राक्षसपुरी में बानर दल की चढ़ाई से हाहाकार, दिशशिर के यहां भुजभूषण का पहुंच कर उसे समझाना, उसका क्रोध करना, पद रोपण, संवाद, भयानक द्वारा राक्षसपुरी के प्रत्येक द्वार पर कौन कौन राक्षस स्थित हैं इसकी सूचना हितकारी को देना। कौन योद्धा किससे लड़ा इसका वर्णन, डौल धराधर के शक्ति बाण लगना। चेता मल्ल का औषधि लाना और डहडह जयकारी का समाचार सुनाना। डौल धराधर का सचेत होना, पुनः युद्ध, घट कर्ण तथा घननाद योद्धाओं का विनाश,

दिशसिर का मरण, महिजा-मिलाप, भयानक को राज-तिलक, अवधि में दोही दिन रह जाने का स्मरण कर अवध को चलने का विचार, भयानक का एक विमान देकर सुकंठ चेतामल्ल और भुज भूषणादि सहित अवध को चलना। हितकारी का यह कह कर कि मुझे याज्ञवल्क्य के शिष्य के आश्रम में कुछ विलम्ब होगा सो तुम जाकर डहडहकारी को सूचित करो।

इति षष्टमोङ्कः।

(१४) पृ॰ १५२—१७२ तक हितकारी के न आने पर डहडहकारी का शोक, चेतामल्ल का उनके आने का समाचार सुनाना। हितकारी का आगमन होते हुए विमानादि के शब्दों को सुनकर अवधवासियों का आश्चर्यान्वित होना और मेघादि शब्द को उत्प्रेक्षा करना, चेतामल्ल का उन्हे समझाना, हितकारी तथा डहडह जयकारी का मिलाप, मैत्रावरुनि आगमन और उनका आशिर्वाद देकर विदा होना, अप्सराओं का नृत्य गान और उनका नाम नायक भेदानुसार करना, गौरांग नर्तकियों का अंगरेज़ी गान, फ़ारसी गान, अर्बी तथा तुर्कियों का गान, मरुदेशी वारवधुओं का गान, गानेवाली स्त्रियों को विदा कर हितकारी ने सब भाइयों को कार्य्य सपुर्द किया, स्वधुनी ब्रह्म कुंडजा सम्वाद, भरत वाक्य-नाटक समाप्त। इति सप्तमोङ्कः।

No. 446(*a*). Bhāva Panchāśikā, by Vrinda Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—32. Size—6 × 4½ inches. Lines per page—8. Extent—260 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of composition—1343 Samvat or A.D. 1686. Place of deposit—Paṇḍita Ramadevajī, village Baburīgām, post office Dhanaulī, district Bārābankī.

Beginning—अथ भावप्रकाश पंचाशिका लिख्यते।

दोहा—अद्भुत अमित अनन्त अति अगम अपार अमूप। व्यापक दृश्य अदृश्य मय जय जय ज्योति सरूप ॥१॥ कवि लोगन के भाव सुनि। कछुक भयो चितचाव। करो भाव पंचाशिका वृन्द सुकवि धरि भाव ॥२॥ भाव सहित शोभा लहै, पूजा जप तप मित्र। याते वृन्द विचारि कै, कीने भाव कवित्त ॥३॥ बाजत ताल मृदंग उपंग महाधुनि तीनहु लोक छई है। वृन्द कहै सुर किन्नर भूत पिशाच पढ़ै जस उक्ति नई है। नाचत गौरि को हेत लिये सित कंठ हिये अनुराग मई है। चारिहु ओर धराधर ऊपर मेघ विना जल वृष्टि भई है ॥४॥

दोहा—हरि तोको पायन धरो, यह कछु और प्रसङ्ग ।
हर ह्वै मैं राखों सदा, सिर पर तोकों गङ्ग ॥

End—चित उदास न कोमल हास उसास भरै मुख छीने रहै रत । छीन सखीन के संगन बैठन देखिये दीन कहै न सुनैवत ॥ वृन्द कहै यह भाव कहा अति निन्दित है विधि को अपने मत याको न रोग न पीको वियोग न योग कलेश को ऐसो दसकत १०८ ॥ दोहा—करिहैंगे दिन चारि में पिय परदेस पयान । सुनत भई ऐसी दसा समुझहु भाव समान ॥

प्रानपती के पयान समै अति काम डरी महरी हिय में धन । क्यों जिय धीरज कों धरि है रु कहा करिहैं उपचार सँजोजन ॥ × × × × । यों तकि शंक नईक भई उनि सौंपि दियो मन मोहन को मन ॥ दोहा । तिय मन दोनों पीय कों जब ही कियो पयान । अब उर कहा जु मोहि कों समुझहु बुद्धि निधान ॥१११॥ कोने कवित्त मंजूस बराबरि तामें जवाहर भाव भरे हैं । स्वच्छ सुदेश सुलच्छन पेखि महा निरदोष खरे सुधरे हैं ॥ ताके दुराव कों ताला दयो समुझे बुद्धिवान दुराव धरे हैं । वृन्द कहै पुनि ताके प्रकाश कों कूची समाये दोहा करे हैं ॥११२॥

दोहा—विभाव पंचासिका वृन्द सुभाव विचारि ।
भूल चूक कवि कुल सबै लीजै समुझि सुधारि ॥

Subject—(१) पृ० १—३ तक—ज्योतिःस्वरूप परमात्मा की वन्दना । भाव पंचासिका के निर्माण का कारण । ग्रंथ निर्माण कालः—सत्रह से तैतालीस सुदि, फागुन मंगल वार । चौथि भाव पंचाशिका, प्रगटी अवनि उदार ॥ शिव जी के नृत्य से बिना बादल जल बरसने का कारण । गंगाजी की बंदना ।

(२) पृ० ४—७ तक—आनन्द सम्मोहिता नायका वर्णन । मानिनी नायकान्तर्गत शिवजी के शिर पर गंगा को देखकर पारवती का मान करना । रूप गर्विता का वर्णन । कुम्भज मुनि का विरही जनों की वेदना न जानने का कारण । नर, सुर, असुर, पयोनिधि, शेष और समुद्र को कोसने वाली छत पर पड़ी विरहिणी नायिका का वर्णन और उसका इन लोगों को कोसने का कारण 'चंद्रमा' को जो विरहियों को अत्यन्त दुखदाई है—उत्पन्न करना । विरहिणी नायका का विरहावस्था में कोकिलों को कूजने, भ्रमरों को गुंजारने और चंद्रमा को, निरद्वन्दता के साथ आलोकित होने की आज्ञा देने का कारण ।

(३) पृ० ८—११ तक—रोहिणी का अपने पति चन्द्रमा के पास से राजकुमार की मृगया के भय से भागने पर उसे न पहिचान कर परिरंभन में आपत्ति

करना। पिय के हिय को छोड़ कर पीठ से आलिंगन करने वाली नायिका का वर्णन सकारण। वियोगिनी नायिका का कोकिलों के साथ केवल इसलिये कूकना कि यह मेरे कलरव से लज्जित होकर चुप हो जांय और मुझे विरह वेदना न हो।

(४) पृ० १२—१६ तक—भूत सुरति संगोपना नायका का वर्णन। इस सवैया के उत्तर में दो दोहों द्वारा सत और असत पक्षों का निरूपण। अन्य सुरति दुःखिता नायिका का वर्णन इसके अंतर्गत कवि के बचन तथा नायिका के विषाद का वर्णन। विरहिणी नायका का सकल शीतोपचार परित्याग पश्चात भी शीत करधारी चन्द्रमा का सेवन करना और उसका कारण किसी प्रोषितपतिका नायिका का बिना पति के मिले ही उन्हें जाने को कहना इसका कारण यह कि जिससे हिय से लगते ही कहीं प्राण पखेरू न उड़ जायं।

(५) पृ० १७—२० तक—वचन विदग्धा नायिका का वर्णन। संयोगावस्था के सम्पूर्ण सुखों के तिलांजलि देने पर भी वियोगिनी नायिका के मलयानिल पान का कारण (भुजंगों के विषयुक्त वायु के सेवन से वियोगावस्था में शरीर त्याग का प्रयत्न)। न्याय का पक्ष लेते हुए सत्य का निर्वाह करने वाले मनुष्य का हरि के हिय की सकल संपति पाने के अधिकारी होने का वर्णन। पति आगम सगुन प्रदर्शनकारी काग को भोजन देते समय करवलय के गिर जाने की आशंका अथवा इस भय से कि वलय के शब्द से कहीं काग उड़ न जाय, भीतर चुपचाप भोजन रख देने वाली आगतपतिका नायिका का वर्णन। मुग्धा नायिका तथा शठनायक का सम्मिलित वर्णन। प्रोषित-पतिका नायिका का टीका निकालने का वर्णन।

(६) पृ० २०—२२ तक—अपनी प्रेयसी का पत्र पढ़कर नायक को विषाद तथा हर्ष एक साथ होने का कारण। स्वभाव से ही विशालाक्षी नायिका के कजरारे नेत्र होने के कारण उसका प्रीतम से मिलने के लिये काजल के न लगाने और हृदय में अंतर पड़ जाने की आशंका अथवा उर में मदन गति होने के कारण हार न पहिनने का वर्णन। हरि-ललना के स्वरूप पर उत्प्रेक्षा। प्यासे विरही का पानी की खोज में जाने पर तालाब सूखने पर जल और जलज के अभाव में उसको मोद होने का कारण, ऊष के जलने पर नायिका को सफलता पाने का वर्णन। आगतपतिका नायिका का वर्णन—चेरी का बधाई मांगना और नायिका का उसे गाली देकर मारकर निकाल देने का कारण। प्रीतम के अपराध से क्रोधित होने वाली नायिका का वर्णन। क्रियाचतुर नायिका तथा नायका का वर्णन। वचन चतुरता—सखी के वचन नायिका से—सखी के वचन कुचों पर किये हुए नखक्षतों का गोपन करना।

(७) पृ० २३—२५ तक—सौत स्वरूप धारिणी नायिका का पति को अपने में अनुरक्त देखकर प्रेम प्रकाशित करने का वर्णन। सुरति संगोपना नायिका का वर्णन। चन्द्रमा के प्रकाशित होने पर चक्रवाक के पृथक पृथक न होने का वर्णन। केलि मंदिर में रति समय मुखचंद्र के छिपाने के चातुर्य्य का धारण। प्रौढ़ा नायका का वर्णन। रूपगर्विता नायका का वर्णन वचन चतुर नायिका का वर्णन। एक दिन राम के मृगया से लौटते समय सीता को अहिल्या के तरने का स्मरण होने पर चरण छूने का वर्णन।

(८) पृ० ३०—३२ तक—दूती द्वारा अपने मुख को चन्द्रमा की उपमा दिया जाना सुनकर रोष प्रगट करने का वर्णन। सीता द्वारा राम को महीपति कहे जाने के निषेद का कारण। प्रीतम के पत्र में अहि, शिवादि का चित्र लिखकर भेजने का कारण, चित्र द्वारा पत्री भेजकर अंबरादि मांगना। पिय गमन पर नायिका के शोक प्रकाशित न करने का कारण। भाव पंचाशिका का विषय।

No. 446(*b*). Vrinda Satāsaī, by Vrinda Kavi of Jodhapur Rāja. Substance—Country-made paper. Leaves—40. Size —$9\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{4}$ inches. Lines per page—36. Extent—720 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of composition—1761 Samvat or A. D. 1704. Date of manuscript—1905 Samvat or A. D, 1848. Place of deposit—Ṭhākura Guruprasāda Siṃha, village Guthawa, Baharāich.

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ वृन्द सतसई लिष्यते ॥ दोहा—श्री गुरुनाथ प्रभावतें होत मनोरथ सिद्ध। घनतें ज्यों तरु बेलि दल फूल फलन की बृद्धि ॥ १ ॥ किये वृन्द प्रस्तार के दोहा सुगम बनाय। उक्ति अर्थ दृष्टान्त करि दृढ़ कै दिये बताय ॥ २ ॥ भाव सरस समुझत सबै भले लगैं इहि भाय। जैसे अवसर की कही वानी सुनत सुहाय ॥ ३ ॥ नीको पै फीको लगै बिन अवसर की बात। जैसे बरनत युद्ध में रस शृंगार न सुहात ॥ ४ ॥ फीको पै नीको लगै कहिए समय विचार। सब को मन हरषित करै ज्यों विवाह में गारि ॥ ५ ॥

End—बड़ेन की सम्पति सकल लघु विलसंत अनन्त। दधिजल घन घन जल धरा धर जल जग विलसन्त ७०१ जेहि जेतो निहिचै तितो देत दई पहुंचाय। सक्कर सोरे के मिलै जैसे सक्कर आय ॥ २ ॥ जिय सन्तोष विचरिए। रे होय जु लिख्यो नसीब। खल गुर कांच कथीर सों मानत रलो गरीब ॥ ३ ॥ जथा जोग सब मिलत हैं जो विधि लिख्यो अंकूर। खल गुर भोग गंवारनी रानी

पान कपूर ॥ ४ ॥ मर्मसार दोहानि को सुनत होय मन मोद । प्रगट भई यह सत-सई भाषा वृन्द विनोद ॥ ७०५ ॥ इति श्री वृन्द सतसई संपूर्ण समाप्तम् ॥ संवत् १९०५ श्रावण कृष्ण अष्टम्यां ८ ॥ १ ॥

Subject.—नीति के फुटकर दोहे ७०५ हैं ।

No. 447. Pancha Kalyankapūjā, by Vrindābana of Kaśī. Substance—Country-made paper. Leaves—250. Size—$9\frac{1}{2} \times 4\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—9. Extent—1,970 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Śrī Jaina Mandīra (Barā), Bārābankī (Oudh).

Beginning—ओं नमः सिद्धेभ्यः ॥ ओं नमो नेकांत वादिने जिनाय ॥ दोहा ॥ वन्दों पांचों पदम गुरु सुर गुरु वंदत जास । विघ्नहरण मंगल करन पूरन परम प्रकाश ॥ चौवोसैा जिनपति नेमा नमो शारदा माय । शिव मग साधक साधु नमि रच्यो पाठ सुखादय ॥ जै जिनंद सुखकंद नमस्ते ॥ जय जिनंद जित कंद नमस्ते ॥ जय जिनंदवर बोध नमस्ते ॥ जय जिनन्द जित क्रोध नमस्ते ॥ १ ॥ पाप ताप हर इन्दु नमस्ते । अर्हवरन जुत विंदु नमस्ते ॥ शिष्टाचार विशिष्ठ नमस्ते इष्ट मिष्ट उत्कृष्ट नमस्ते ॥ २ ॥ पर्म धर्म वर शर्म नमस्ते । मर्म भर्म धन धर्म नमस्ते ॥ हग विशाल वर भाल नमस्ते हृदि दयाल गुन माल नमस्ते ॥ शुद्ध बुद्धि वर वृद्ध नमस्ते । वोतराग विज्ञान नमस्ते ॥ विद्विलास धृत ध्यान नमस्ते ॥ ४ ॥ स्वच्छ गुणां बुधिरत्न नमस्ते । सत्व हितंकर यत्न नमस्ते ॥ कुनय करि मृगराज नमस्ते । मिथ्या खगवर वाज नमस्ते ॥ ५ ॥

End—श्री वोर जिनेसा नमित सुरेसा नाग नरेसा भगति भरा । वृन्दा-वन ध्यावै विघन नसावै छित पावै शिव शर्म वरा ॥ ७ ॥ महार्घं आशोर्वाद ॥ दोहरा छंद ॥ श्री सनमति के जुगल पद जो पूजैं धरि प्रोति । वृन्दावन सो चतुर नर लहै मुकत नवनोत ॥ सुनिये जिनराज तिलोक धनो । तुम में जितने गुन हैं तितनो ॥ कहि कौन सकै मुख सों सब हो । ति पूजत हैं गह अर्घमें यही ॥ १ ॥ रिषभदेव को आदि अंत श्री वरधमान जिनवर सुखकार तिनके चरण कमल कैां पूजे जो प्रानो गुनमाल उचार ॥ ताके पुत्र मित्र धन जोवन सुख समाज गुण मिले अपार । सुर पद भोग भोग यको है अनुक्रम लहै मोक्ष पद सार ॥ २ ॥

इति श्री वरधमान चौबीसो प्रथक २ पंच कल्यानक पूजा वृन्दाबन कृत सम्पूर्ण ॥ २४ ॥

Subject—(१) पृ० १—१८ तक—मंगलाचरण । नमस्कार, समुच्चय चैाबीसी जिन पूजा कथन । आदिनाथ पूजा वर्णन ।

(२) पृ० १८—४०, तक—श्री अजितनाथ पूजा वर्णन । श्री संभवनाथ जी पूजा का वर्णन श्री अभिनंदननाथ पूजा वर्णन ।

(३) पृ० ४१—८० तक—सुमतिनाथ पूजा वर्णन । श्री पद्म प्रभु की पूजा का वर्णन । श्री सुपार्श्वनाथ पूजा वर्णन ।

(४) पृ० ८१—१११ तक—श्री चन्द्रप्रभू पूजा वर्णन । पुष्पदन्त जिनेश्वर की पूजा का वर्णन । श्री शीतलनाथ जी की पूजा का वर्णन ।

(५) पृ० ११२—१४० तक—श्रेयांशनाथ पूजा वर्णन । श्री वास पूजा और जिन पूजा वर्णन । श्री विमलनाथ पूजा वर्णन ।

(६) पृ० १४१—१८० तक—श्री अनंतनाथ जी की पूजा का वर्णन । श्री धर्मनाथ की पूजा का वर्णन । श्री शांतिनाथ पूजा का वर्णन । श्री कुंतनाथ जी की पूजा वर्णन ।

(७) पृ० १८१—२१२ तक—श्री अरहनाथ जी की पूजा का वर्णन । श्री मल्लिनाथ जी की पूजा का वर्णन मुनि सुव्रतनाथ पूजा का वर्णन । श्री नेमीनाथ जी की पूजा का वर्णन ।

(८) पृ० २१३—पृ० तक—श्री नेमनाथ जी की पूजा का वर्णन श्री पार्श्वनाथ पूजा कथन । श्री वर्द्धमान जी जिन पूजा वर्णन पूजा का फल, कवि का नाम, जनम तथा सहायका दिन नाम :— काशी जी के काशीनाथ नन्दूजी अनंतराम । मूलचंद आढ़त सुराम आदि जासियो दो । सजन अनेक तहां धर्म चंद जी को नंद वृन्दावन अग्रवाल गोल गोति वान्दियौ ।

No. 448. Dhyāna Mañjarī, by Vrindābana Śaraṇadeva. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—10 × 5 inches. Lines per page—30. Extent—83 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript —1972 Samvat or A. D. 1915. Place of deposit—Nimbārka Pustakālaya Bābā Mādhava Dāsajī Mahanta, Nāna Pārā, Baharāich.

Beginning—श्री सर्वेश्वरो जयति ॥ श्रीमद्भगवते निम्बार्काचार्याय नमोनमः श्री वृन्दावन शरण देवजू कृत ध्यान मंजरी लिख्यते ॥ रोला छन्द ॥ श्री गुरुचरण सरोज हरन भव मंगलकारी । वन्दन करि धरि ध्यान ध्यान

बरनैा पिय प्यारी ॥१॥ रहि फल भारन फूल भूल तह बेलि कहुं रित । मंजु कुंज अलि पुंज गुंज सुनिये जितही तित ॥२॥ आवत धीर समीर तीर जमुना जल परसै ॥ अमल कमल मकरंद सकल दिसि सुमन न बरसै ॥ कोक कारिका पढ़त रहत जित पिक सुक कारी ॥ दम्पति तेहि अनुसार करत क्रीड़ा सुख कारी ॥ कुसुम सैन पर परम चैन पावैं मिलि दोऊ ॥ बैठे करत बिनोद मोद भरि औरन कोऊ ॥

दोहा—प्रथमहि प्यारी को करत सिख नख बरनन चार ।
जाहि सुनत मोहि देइगें पिय रिझि अपनो हार ॥

End—लाल बजाय बेनु बीन लै बाल बजावत । मिले करत दोउ गान तान सों तान मिलावत ॥ रीझ परस्पर पुनि निसंक ह्वै लेत अंक भरि ॥ प्रेम विवस ह्वै जात मधुर अति अधर पान करि ॥ देखि परस्पर रूप होत दुगनित दोउ मोहन ॥ याही ते दिन रैन कबहुं छूटत नहिं गोहन ॥ करत विविध शृंगार अलौकिक कहत न आवै । तदपि सुमति अनुसार भक्त कहि कै सचु पावै ॥ ताते सिखनख ध्यान कह्यो मैं रसिक जनन हित । कंठ पाठ करि राख यहि सुमिरन करिहों नित ॥ दोहा ॥ हाव भाव लावन्य अति अगिनित गिने न जाहि । निरखत सचु पावै सखो दुरि दुरि कुंजन माहि ॥ ज्ञानहु को यह ज्ञान है ध्यान रसिक जन प्रान । पान करैं जो पान यह सो न छुवै कछु आन ॥ श्री वृन्दावन धाम रुचि श्यामा श्याम सुअंग । जन्म जन्म वृन्दावनहिं दीजो निज जन संग ॥ इति श्री वृन्दावन शरण देव जू कृता ध्यान मंजरी समाप्ता ॥

Subject—श्री कृष्ण का ध्यान ।

No. 449. Jyotisha Chakra of Vyāsadeva. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—11 × 5½ inches. Lines per page—30. Extent—280 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1894 Samvat or A. D. 1837. Place of deposit—Bhaiyā Mahipāla Simhajī, village Payāgapura, post office Payāgapura, district Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ ज्योतिष चक्र लिष्यते ॥ नाम गनन्याग्रह तिथि जान । संगति वेद करब परिमान बसु । ८ । गुन । ३ । गन । ७ । हित करिये तंत्र । ताते जनिये गर्भ का अंत ॥ विषम पुत्र सम जानु कुमारी । सुन्न रहे तेहि मृतक वषानी ॥ रवि गुरु भौम पुत्र उतपन्या सोमे सुक्र बुध भै कन्या ॥ भोरे भारे सनि जो आवै । अगम जनाइ कै जीव नसावै ॥ इति कन्या पुत्र जन्म ॥

कट पति हस्त कीजे परमान। चाकर चूकर त्रिगुन बयान, एक छांड़ि जो बसु ते हरै। कहै व्यास ऐसे गृह करै॥ तादा नृपति नपुंसक तसकर। भोग विचक्षन अभै दलिद्र धनाढ्य॥ तिथि कर दून वार सम लेव सहित नक्षत्र एक करि लेव तीन के भागे रहे हुलास जल थल चंदा वसे अकास। थले वसै पड़गे लोहा तीनि लोक मह जोगिन वसे कहै व्यास अैसे जुभ्मि करै।

End—चूल्हा चक्र—

ईसान ३	पूरब ३	अग्गिन ३	सू ३ म ५	श २
उत्तर ३	मध्य ३	दक्षिन ३	सू ३	वृ० १
वाइव ३	पछ्छ ३	नैरित्य ३	रा ४ वू ७	च २ क १

जावत भात भुकतानी दिवसेधि सुने च संख्या नथा वही ३ भूता ५। गुना ३। अब्धि ४। सेताव ७। नैन २। पृथ्वी १। इन्दु १। क्रमात करै हानि मुभे सुष्पंच कथितं चक्रं कर भूषनं पिंडे न वा ९। कं ९। गर्क्ष। नम्र।२। अग्नि ३। नट ८। नाग ८। नागै ८। गुन तर्क। विभाजिते नाग। २॥ नगांक। ७॥ ९॥ सूर्ज १२॥ नगाछे १७। तिथ्या १५। ऋ २७॥ बभानुभिः १२०॥ इति धुजादि ग्राम भुवेदा पंचकः १।४ ४।४।४।४।३।३। कलरते अर्क मातः। इति ग्रह प्रवेस॥

१	४	४	४	४	४	३	३
अ	म	शु	श्री	व	अ	शु	शु

लिषा संवत १८९४ मुन्नू शुक्ल॥ आगे का पृष्ठ फट गया है।

Subject—इस पुस्तक में कन्या पुत्र जन्म। जोगिनी चक्र, विंशोत्तरी। सप्त दिवस का विचार भूमि चक्र दिकसूल चक्र महामारी भूमि चक्र, क्षित्रपाजी भूमि चक्र, निरामय भूमि चक्र, गोरी भूमि चक्र। जीव नरजीव खेल चक्र जय विजय भूमि चक्र। वार काल अष्टे दिसा प्रमान। शनिकाल चक्र डाक जीव निर्जीव विचार, शिकार विचार, सूर्य काल विचार, नाड़ी चक्र, संघत चक्र, सप्त सलाका चक्र, अकाल सुकाल चक्र, दिन घटी घातां, जीव पक्ष मृत्यु पक्ष। घोर काला चक्र, सर्वतोभद्र चक्र, दुर्गफल। दसा राहु चक्र,

जाई स्थायी विचार चक्र अनुरूप। पंच स्वरा चक्र। सर्व दिशा वायु सुरभिक्ष दुर्भिक्ष भूमि कंप विचार। संक्रांति विचार। अमावस रिक्ष वास का विचार, कूप चक्र। नेवर चक्र। चूल्हा चक्र, कर भूषन चक्र, ध्वजादि ग्राम चक्र ग्रह प्रवेस चक्र अंत में केवल लेखक का नाम और संवत है शेष पृष्ट फट गये हैं।

No. 450. Sevaka Banī, by Vyasa Miśra of Gokula (Muttra). Substance—Country made paper. Leaves—182. Size—$5\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—6. Extent—575 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1843 Samvat or A. D. 1786. Place of deposit—Paṇḍita Śyama Bihārījī Miśra, Golāganj, Lucknow.

Beginning—अथ श्री सेवक बानी लिख्यते ॥

तृपदो छंद ॥ राग धनासिरी ॥ श्री हरिवंश चन्द्र शुभनाम ॥ सब सुख प्रेम रस धाम ॥ जाम घटी विसरै नहीं। यह जुपरौं मुहि सहज स्वभाव ॥ श्री हरिवंश नाम रस चाव ॥ नाम सुदृढ़ भव रतन कौं नाम रटत आई सब सोहि ॥ दुहु सुबुद्धि कृपा करि मोहि ॥ पोइ सुमन माला रचौ ॥ नित्य जुकंठ सु पहिरैं तास ॥ जस बरनौं हरिवंश बिलास ॥

श्री हरिवंशहिं गाइहैं ॥ श्री बृन्दावन वैभव जितो। बरनत बुद्धि प्रमाते कितो ॥ तितो सबै हरिवंश को। सखी सखा क्यो कहैं विवेर ॥ तो मेरे मन को अवसेर ॥ टेरि सकल प्रभुता कहैं ॥

End—काहे कों डरति भामिनो हैं जुकहति निज बात। नैकु बदन सनमुख करैं छिन छिन कलप सिरात ॥ ५ ॥ वे चितवत विधु बदन तन तू निज चरन निहारति ॥ वे मृदु चिबुक प्रलोवहीं तू कर सो कर टारति ॥ ६ ॥ वचन अधीन सदा रहै रूप समुद्र अगाध। प्रान रवन सैां कन करति बिनु आगत अपराध ॥७॥ चितयैा कृपा करि भामिनो लोने कंठ लगाइ। सुखसागर पूरित भए देखत हियैा सिराइ ॥८॥ सेवक सरन सदा रहै अनत नहीं बिश्राम। बानो श्री हरिवंश को कै हरिवंशहि नाम ॥ ९ ॥ इति श्री सेवक वानी संपूरण ॥ शुभ संवत १८४३ मिती माह सुदी २ ॥ इति ॥

Subject—

हरिवंश नाम महिमा वर्णन। छं० १--१० तक।

भक्त का उपदेश वर्णन। छं० ११—१४ तक।

हित हरिवंश की केलि वर्णन। छं० १५—१७ तक।

हरिवंश का यश वर्णन। छं० १८—२५ तक।

हरिवंश नाम प्रताप वर्णन। छं० २६--३५ तक।

हरिवंश की वाणी की महत्ता वर्णन। पृ० ३६--४३ तक।

हित हरिवंश की प्रशंसा कथन। पृ० ४४—५४ तक।

हरिवंश के शरण में सुख की प्राप्ति। छं० ५५—५८ तक।

हरिवंश स्तुति। छं० ५९--७३ तक।

हरिवंश का सौंदर्य वर्णन। छं० ७४--८२ तक।

हरिवंश क्रीड़ा व महिमा वर्णन। छं० ८३—९५ तक।

हरिवंश जी का प्रेम वर्णन। छं० ९६—१०५ तक।

हरिवंश की कृपा वर्णन। छं० १०६—११५ तक।

हरिवंश के भजन से ही सम्पूर्ण फल मिल सकते हैं। छं० ११६—१२४ तक।

श्याम श्यामा मिलन वर्णन। छं० १२५—१४० तक।

राधाकृष्ण विहार वर्णन व स्तुति कथन व सर्व फलदाता वर्णन। छं० १४१—१६४ तक।

सेवक वाणी का प्रभाव व महिमा वर्णन। छं० १६५--१८० तक। इति।

APPENDIX III

Extracts from the works of unknown Authors

APPENDIX III

No. 451. Ārjā of 20 leaves on Astrology. Deposited with Gaṅgāprasāda Pāṇde of Asókapura, Post Office Paṭṭi, District Pratapagaḍha (Oudh)

No. 452. Ashṭāvakr edānta kī Bhāshā of 15 leaves. Dated in Samvat 1920 or A. D. 1863. Deposited with Thākura Raṇadhīra Siṁhajī Jamīdār, Village Khūpura, Post Talab Baksi, District Lucknow.

Beginning :—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ अष्टावक्र वेदान्त की भाषा लिष्यते ॥ दोहा ॥ ज्ञान प्रकाशहि कहौं प्रभु मुक्ति केहि विधि जानि । पुनि वैराग्यहि मा कहो तत्व लहैं सव ज्ञानि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ श्री गुरुवाच । जो तहि तात मुक्ति की इच्छा । विषवत विषय जानहर इच्छा ॥ क्षमा आर्जव सत संतोष । इन पंचामृत पावै मोष ॥ २ ॥ दोहा ॥ पृथिवी वायुरु जल नहीं अगिनि अकासहि नांहि । इनकौ साक्षी रूप है तू चेतन घन मांहि ॥ ३ ॥

End :—दोहा ॥ कहा प्रवृत्ति निवृत्ति पुनि बंध मुक्त कछु नाहि । निर्विभाग कूटस्थ ह्वै अचल सदा अप मांहि ॥ १२ ॥ कहां शास्त्र उपदेश हैं गुरु शिष्य कोऊ नांहि । पुरुषारथ कासैां कहैं निर उपाधि शिव मांहि ॥ १३ ॥ एक कहां अरु द्वैत है पूरन है नांहि कठोर । कहौं कहां लौ वात यह मा तें कछु न भौर ॥ १४ ॥ इति विंश प्रकरणं ॥ २० ॥ इति श्री अष्टावक्रा संपूर्ण ॥ ४ ॥

No. 453. As'vamedha Chapoṭikā of 5 leaves Dated in Samvat 1934 or A. D. 1877. Deposited with Umāśankara Dube of Hardoi.

Beginning :—अश्वमेध का करैं मनोरथ घर में परे सनाका हैं। वातन में हां पर करैया खरचैया न टका काहैं । अश्वमेध का घोड़ा पकड़ैया हम भी बड़े लड़ाका हैं। अश्वमेध को यज्ञ नहीं यह मेटति वेद की शाका हैं । अश्वमेध कहि सबहिं व कावैं वंधा चहित रूपा का हैं। रामानन्दो तिलकु लगावैं करते काम्रु दगा का हैं। राम चन्द्रमा दोषु लगावैं ऐसे वड़े कजा कहै पाते यज्ञ अश्वमेध नहि यह मेटत वेद कि शाका है । प्रथमैं यज्ञ राम ने कीन्हौं जिनको अब तक शाका है दूसरि यज्ञ पांडवन कीन्ही लीन्हैं कृष्ण पिनाका है । तीसरि फिरि जनमेजय कीन्ही तवते भयो मनाका हैं। तातें यह अश्वमेध यज्ञ नहिं मेटत वेद का शाका है।

No. 454. Atariyādeva kī Kathā or a prayer to the deity of intermittent fever. Dated in Samvat 1883 or A. D. 1826. Deposited with Paṇḍita Madhusūdanajī Vaidya, Village Old Sītāpur, post office Sītāpur (Oudh).

No. 455(*a*). Aushadhi-Saṅgraha of 135 leaves on medicines. Deposited with Paṇḍita Rādhorāma, of Āmamaū, Post Office Gaḍavārā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

No. 455(*b*). Aushadhi-Saṅgraha of 318 leaves. Deposited with Bābū Rudranārāyaṇa, of Pratāpagaḍha (Oudh).

No. 456. Aushadhiyā̃ on medicines. Four leaves. Deposited with Paṇḍita Rāmaprasāda Pāṇḍe of Ghurahā, Post Office Mādhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

No. 457(*a*). Aushadhiyā̃-ki-Pustaka. Leaves—20. Deposited with Paṇḍita Gorelāla Gopālaprasāda Upādhyāya, Village Sirasāganja, District Mainapurī.

Beginning :—अथ चांदी मारन विधि ।

एक चांदी को पत्र सोधि लेइ टूका टूका करिकै एक कुलिया मा रषि लेइ उस कुलिया में चित्ररा का रस भरि देइ बजन पैसा भरि चांदी तौ पैसा भरि पाउ भर चाँदी तौ पाउ भरि रस देइ औ नौसादर दुइ मासे भरि देइ तब कुलिहया मोटा ते संपुट करै तब गाइठा में धरि कै दुइ प्रकार को आंच देइ शीतल परै तब निकारि लेइ भस्म होइहि ॥

End :—योगेश्वर चूर्णम् ॥ पारा पै० एक ताव को हरताल पै० १ ईंगुर पैसा १ सोना माषो पैसा भरि मुरदाशंष पै० १ लैांग पै० १ जावित्री पै० १ मिरचि पै० १ सोंठि पैसा १ पोपरि कै मूल सों षाइ सन्निपात जाइ ॥ अफीम सों षाइ कफ मिटै लहसुन सो षाइ तौ सर्व वायु जाइ ॥ इति योगेश्वर चूर्णम् ।

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक—लुप्त ।

(२) पृ० ७ से पृ० २२ तक—चांदी, अमुक, सुवर्ण तथा राँगा मारने की विधि, गर्भ होने की विधि, योनि संकोचन विधि, अंजन विधि, अंड-वृद्धि चिकित्सा, पुष्टि की दवाई ।

(३) पृ० २३ से पृ० ४० तक—धातु पुष्टि की औषधि, प्रमेह स्तंभन की दवा, लवङ्गादि चूर्ण, गर्भ जाने की बत्ती, प्रसूति दवा, धन्वन्तरि मत, योगेश्वर चूर्ण ।

No. 457(*b*). Aushadhiyo-ki-Pustaka on medicines. Leaves-41. Deposited with Paṇḍita Tārāchanda Munīma, Shop Murlīdhara Mahādevaprasāda, Village Sirasāganja, District Mainapurī.

No. 457(*c*). Aushadhiyō-ki-Pustaka. Leaves—13. Deposited with Paṇḍita Gorelāla Gopālaprasāda Upādhyāya, Village Sirasāganja, District Mainapurī.

Beginning :—अथ रस ॥ ग्रानि दीपक के विधि ॥ सेंधव टंक ४ लौंग टंक ४ जायफर टंक ४ विष टंक २ सोहागा टंक ४ निबू कागदी के रस से षरल करै पहर ४ गोली बनावै चना प्रमान नित षाइ क्षुधा लागै ॥ अथ साधारन तामस्म के विधि ॥ पारा टंक १ गंधक टंक १ सज्जी टंक १ निबुआ के रस ते षरल करै पहर २ गोली बाँधै रती १ नित षाय क्षुधा लागै ॥ मृगांग के विधि ॥ सोने के पत्र बनावै फिर ताता के के तेलमा बुझावै बार ७ सहुड़ के दूध मा बुझावै बार ७ फिर सीसा तोला एक भाँग तोला १ स्वर्न तोला १ औटावै कचनार तर ऊपर घरिया मे धरै गंधक तोला ४ पारा तोला ४ तर ऊपर धरै आँच देइ पहर ४ चारि सोना भरै ॥

End :—संषिया सुमिल मारने की विधि ।

सुमिल संषिया १ भा सुमिल थैली मा डारिकै तै आटा के भीतर भरै तै ठंढी लगावै ॥ आय सुआटा लवदे वाड़ा ते तेहमा सुमिल डारि कै फिरि आटा कै ठंडो देय फिरि गारि जाय तेहि के अधो पान के साथ षाइ चाउर ४ ताई जूड़ी जाइ परमेह जाइ गाई के दूध मा षाय रत्ती १ परमेह के दाष जाय बंद होय भा गोला एक दिन राषि के फेरै ॥

Subject :—पृ० १ से पृ० १४ तक—क्षुधा लगने की औषधि । सोना और हरतार मारने की विधि । ज्वरांकुश बनाने की विधि, भैरव रस की विधि । रस साधारण की विधि, आनन्द भैरव की विधि, पारा मारने की विधि ।

(२) पृ० १५ से पृ० २६ तक—तामा मारने की विधि, ब्रह्म गोली बनाने की विधि, ब्रह्म गोली लघु बनाने की विधि, भूत छोड़ने की विधि, राँगा मारने की विधि, पैसा मारने की विधि, सोसी मारने की विधि, संखिया सुमिल मारने की विधि ।

No. 458. Ava-Pada. Leaves—21. Dated in Samvat 1874 or A.D. 1817. Deposited with Paṇḍita Rāmakumārajī of Chilabilārangītapura, Post Office Mādhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

चंद्रावती को चंड विक्रम गहैा तब निज पानि ।
रूपवती को लहि तब गहा शीघ्र पैरुष जानि ॥
निज निज भवन में सुगति केली सुचि मुदित दिन रैन ।
राज भार समर्पि सचिहि रहेउ सुचित सुखैन ॥
यह कही कथा वैताल परिगो निपट संसै भवन ।
यह दुनो नाना के सुतन्ह ते भए नाता कवन ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० २ तक—खंडित ।

(२) पृ० ३ से पृ० १२ तक—ग्रंथ निर्माण कारण व ग्रंथ रचना काल—

लोचन वसु मुनि भू वरष , माघ शुक्ल शशिवार ।
तिथि वसंत की पंचमी , भयेउ ग्रंथ अवतार ॥

प्रतिष्ठानपुर के राजा का वन में जाकर साधू को तप करते देखना और भय खाकर तप भंग करने को वेश्याएं भेजना ।

(३) पृ० १३ से पृ० १६ तक—खंडित ।

(४) पृ० १७ से पृ० ४० तक—राजा विक्रम और तेली की कथा, प्रेत-तेली का बारम्बार कोई न कोई कथा राजा को सुनाना । इस प्रकार संग्रावती की कथा वर्णन करना ।

(५) पृ० ४१ से पृ० ४६ तक—खंडित ।

(६) पृ० ४७ से ,, ५७ तक—चौथी कथा ।

(७) पृ० ५८ से ,, ६० तक—पांचवीं कथा ।

(८) पृ० ६१ से ,, ७६ तक—छठवीं कथा ।

(९) पृ० ७७ से ,, १७२ तक—सातवीं कथा से चौबीसवीं कथा तक । शेष खंडित ।

No. 461. Bhagavadgītā-ki-Bālabodhanī-Ṭīkā. Leaves—176. Dated in Samvat 1867 or A. D. 1810. Deposited with Ṭhākura Vrajabhūshaṇasiṃha, Village Jhukavārā, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ श्री परात्पर गुरु स्वरूपायः निर्विकाराय नित्य शुद्ध बुद्धि चिदानंद बोध स्वरूपायः ॥ श्री वासुदेवाय नमः ॥ श्लोक ॥ श्री भगवद्गीते गोधंनो जानामिव अन्वयं लोकानां चाहितार्थि सु कृतं भाषा च टिप्पनं ॥ १ ॥ एक समै दयन करिकै पृथ्वी भाराक्रान्त अति व्याकुल होत भई तब ब्रह्मा इन्द्र आदि देकै समस्त देवता नारद मुनि सहित गमन करत भये जहां श्री भगवान क्षीर सागर निवासी वहां जाय के प्राप्त होत भये तब ब्रह्मा वेदरिचा वेद

मंत्र अंग सहित अन्य नाना प्रकार अत्यन्त उच्चैस्वर करिकै अति आर्तवंत हो के मुनि देवता सहित ब्रह्मा स्तुति करत भये ॥ तव श्री परमात्मा देवतनि के निमित्त-अपने भक्त की रक्षा के हेत अति आर्त जानिके स्तुति सुनि कै तहां ए शब्द प्रगट भयो, भो ब्रह्मा किमार्थ आगतः तव ब्रह्मा पृथ्वी का सब वृतांत कहत भये तव श्री भगवान सर्वज्ञः सर्व जानते थे पुनः शब्द उपजत भया श्रो ब्रह्मा शृणु मृत्यु लोक के विषे जादव कुल मथुरा स्थान देवकी के ग्रह हम आनि कै औतरेंगे। ×

× × × ×

× × × ×

End :—

यथाक्षार समुद्रेषु पकाशी वेतु सर्वथा।
तथा धेनु मने केन क्षीर मेकंतु पकतः ॥ १ ॥

तथा देह मनेकेन आत्मास कापि कथ्यते एवं ज्ञान मनेकेन विवेका मेक उच्यते ॥ २ ॥ अंतः शुद्धि न श्रद्धांति धास भुद्र शुद्धता तृष्णा मगभ्रमंमन संकल्पो नैव शाम्यते ॥ ३ ॥ आदो व्यास कृतं ग्रंथ मूलं सप्त शतं तथा तुलसी आचार्य कंप्रोक्तं श्लोकै षट सहस्रकं ॥ ४ ॥ कृष्ण वृक्ष समुत्पन्नं गीता नाम हरीतकीरे नरा किन्नर वदन्ति किलोमल विरचने ॥ ५ ॥ श्री भगवद् गीता मध्ये अष्टादश अध्याय विषै श्री भगवान अर्जुन प्रति ज्ञान सार जोग सार क्रिया कर्म सार भक्ति सार सर्व शास्त्र चार वेदकैा दोहन यथा प्रकार कहत भये हैं ते श्री परमात्मा अखंड परम ब्रह्म वक्ता श्राता अभय प्रति मंगल दातु सुभ कल्याण मस्तु संवत् १८६७ साके १७३१ ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० २५ तक—प्रथम अध्याय। अर्जुन का उभय पक्ष की सेवा देखकर विषाद उत्पन्न होने का वर्णन।

(२) पृ० २५ से ६४ तक— द्वितीय अध्याय।
ब्रह्मज्ञान तथा आत्म बोध।

(३) पृ० ६४ से पृ० ८८ तक—तृतीय अध्याय।
कर्मयोग वर्णन।

(४) पृ० ८८ से पृ० १०७ तक—चतुर्थ अध्याय।
सन्यास कर्म निर्णय, ज्ञान निर्णय, ब्रह्म निर्णय, यज्ञ निर्णय।

(५) पृ० १०७ से पृ० १२२ तक—पंचम अध्याय।
ध्यान योग व ज्ञान साधन विधि।

(६) पृ० १२२ से पृ० १४५ तक—षष्ट अध्याय।
कर्म व ज्ञान न्याय, साधन विधि, योग न्याय, पूर्वक संस्कार न्याय, योग की अधोमई तथा अंतरात्मा की धारणा।

(७) पृ० १४६ से पृ० १५९ तक— सप्तम अध्याय।

विभूति ज्ञान, विधिन्याय तथा देवता उपासना विधि।

(८) पृ० १६० पृ० १७२ तक—अष्टम अध्याय।

उत्तरायण व दक्षिणायणे सूर्य की गति, ब्रह्म अहोरात्रि, कल्प संख्या प्रमाण

(९) पृ० १७३ से पृ० १९३ तक—नवम अध्याय।

परमात्मा की योग शक्ति, ब्रह्म स्वरूप, मुक्ति साधन लक्षण, प्रकृति-पुरुष संबंध।

(१०) पृ० १९४ से पृ० २१० तक—दसवाँ अध्याय।

विभूति ज्ञान, अध्यात्म विद्या और सर्व विषय, एक ब्रह्म।

(११) पृ० २११ से पृ० २३७ तक—ग्यारहवाँ अध्याय।

विराट रूप दर्शन।

(१२) पृ० २३८ से पृ० २४९ तक—बारहवाँ अध्याय।

विश्वरूपी परमात्मा, ब्रह्म अक्षर स्वरूपी भगवान की उपासना, सगुण निर्गुण उपासना।

(१३) पृ० २५० से पृ० २७० तक—तेरहवाँ अध्याय।

प्रकृति-पुरुष निरूपण, सृष्ट्युत्पत्ति तथा कारण बीजरूप सांख्य ज्ञानादि वर्णन।

(१४) पृ० २७१ से पृ० २८१ तक—चौदहवाँ अध्याय।

त्रिगुण निर्णय, गुणातीत से गुण साधने का विधान।

(१५) पृ० २८२ से पृ० २९३ तक—पन्द्रहवाँ अध्याय।

अक्षय वृक्ष व वैराट तरु निर्णय, निर्गुण स्वरूप कथन।

(१६) पृ० २९४ से पृ० ३०४ तक सोलहवाँ अध्याय।

दैव तथा आसुरी ज्ञान मार्ग। संत असंत के लक्षण। शास्त्र प्रमाण कार्याकार्य वर्णन।

(१७) पृ० ३०५ से पृ० ३१७ तक—सत्रहवाँ अध्याय।

त्रिगुण की श्रद्धा, दान, यज्ञ, जप-तप, साधन न्याय सत सुमार्ग और अज्ञान अविवेक दोनों का न्याय, त्रिविधि ब्राह्मण और ओंकार विधिन्याय का वर्णन।

(१८) पृ० ३१८ से पृ० ३५२ तक—अठारहवाँ अध्याय।

ज्ञानसार, योग सार, क्रिया सार, कर्म साधन तथा भक्ति सार वर्णन।

No. 462. Bhagavāna ke Daśau Avatāra. Leaves—8. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning:—अथ भगवान रामचन्द्र के दसौ औतार लिष्यते ।

दे।०—श्री पति गौरि गनेश को सुमिरत बारमबार । नारायन के चरित पुनि बरनौ दस औतार ॥ चौ० ॥ मच्छ रूपधरि वेद लै आयो । पाइ बिरंचि मुदित मन भायो । बरनन करत जो जस मुष चारी जे राधावर कुंज विहारी ॥ १ ॥ दूसर तन धरि कूरुम बनिकै । मथेउ सिंधु कर मंदिर धरि कै ॥ लीन्हेउ चैादह रतन निषारी । जै राधावर कुंज बिहारी ॥ २ ॥ शूकर रूप धरेउ बनवारी । दैतन का तुम हतेउ मुरारी । लै धरनी पुनि आपुरुवारी जे राधाकुंजविहारी ॥ ३ ॥ नर-सिंघ होइ जन राषेउ ताही । परगट भयो हरि षंभा माहों । निकसत डारेउ बोदर विदारी ॥ जैराधा वरकुंज विहारी ॥ ४ ॥ श्रीपति बावन रूप बनायो । बलि के द्वारे जांचन आयैा । भेटे वन के देव भिषारी जैराधावर कुंज विहारी ॥ ५ ॥

End:—परसु राम होइ जगत जसुकीन्हा । पिर्थवी जीति दुजन का दीन्हा ॥ दूसर कोई न भयो धनुधारी ॥ जै राधावर कुंज विहारी ॥ ६ ॥ रामरूप होइ वहुत जस कीन्हा रावन कुलहि मारि जसु लीन्हा । दीनबन्धु प्रभु असुर संहारी ॥ जै राधावर कुजंविहारी ॥ ७ ॥ पर ब्रह्म औतरे गुसाई । नन्द सुवनभे कुंवर कन्हाई । जाकोध्यावत बृज की नारी जैराधावर कुंज विहारी ॥ ८ ॥ जगन्नाथ जगदीस कहायो । बोध रूपधरि मैान पुजायो ॥ सुरमुनि अस्तुति करत तुम्हारी । जैराधावर कुंज विहारी ॥ ९ ॥

× × × × × × × × ×

प्रात समय जे पढ़ै नरनारी । घटै पाप तन तेज प्रचारी ॥ जै राधावर कुंज विहारी । × × × × × × × ×

दे।० । पढ़ै सुनै चित्त लायकै मन विच धो करि ध्यान । ताके सकल मनोरथ सिद्ध करैं भगवान ।

Subject:—दस अवतारों का वर्णन ॥

No. 463. Bhajana-Sangraha. Leaves—12. Deposited with Paṇḍita Satyanārāyaṇa Tripaṭhī of Bāṇḍā, Post Office Gaḍavārā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री राम जी ॥

राम की ध्वजा फहरानी अब देखो राम की ध्वजा फहरानी-टेक॰
ढरकत ढ़ाल फरकत नेजा गरद उड़ी असमानी ॥
लछमन वीर वालि सुत अगंद हनूमान अगवानी ॥ १ ॥
कहत मन्दोदरि सुन पिया रावण त्रिभुवन पति सो ठानी ।
जा सागर का गर्भ करत है तापर शिला तिरानी ॥ २ ॥

तिरिया जाति बुद्धि की ओछी उनहूं को करति बड़ाई।
ध्रुव मंडल से पकरि मंगाऊं वे तपसी दोऊ भाई ॥ ३ ॥
जरत अग्नि में कूदि परत हैं कोट गिनै नहिं खाई ॥ ४ ॥
मेघ नाद से पुत्र हमारे कुंभ कर्ण बल भाई।
एक वेर सन्मुख ह्वै लड़िहैं युग युग हेत बड़ाई ॥ ५ ॥
कहत मंदोदरि सुनु पिय रावण तू मेरो एक न मानो।
रैनि को स्वप्न ऐसो भयो है सो कि लंक जराई ॥ ६ ॥
अग्र के स्वामी गढ़ लंका घेरी अजहूं न चेतो अभिमानो ॥ ७ ॥

End:—

राम जन्म सुनि अपने पति सों हंसि ढाढ़िन यो बोली हो।
जाहु कंत राजा दशरथ को दान कोठरी खोली हो॥ टेक ॥
तुमको देइं अंग को वागो और दक्षिणा भरि झोली हो।
हमको लीजो नख शिख को गहनो पटरसुधा को चोलो हो ॥ १ ॥
साज सहित इक घोड़ा लीजो गैया दूध अचोई हो।
सहज अमारी हाथी लीजो, हथिनी अधिक अमोली हो ॥ २ ॥
लीजो कन्त कहार समेत इक, हमन चढ़न को डोली हो।
सोलह वर्ष को सुन्दरि लीजो, टहल करन को गोरी हो ॥ ३ ॥
सेज सहित एक पलंगा लीजो, और पानन को ढोली हो।
बीरी करि करि हमहिं खवावै लीजो सुघर तमोली हो ॥ ४ ॥
जन्म जन्म काहू के आगे बहुरिन माडो बोलो हो।
जन गोविंद रघुवीर यांचि के भये हैं अयाचक ढोली हो ॥ ५ ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० १६ तक-रावण तुलसी संवाद (अग्र व तुलसी), रामचरण महिमा (तुलसी), जगदीश-विजय (माधोदास), राम का सौन्दर्य वर्णन (रामसेवक), धनुष-भंग (तुलसी), राम की शोभा (हरि आनंद), लंका विजय के पश्चात राम का अवध में आगमन (रामानन्द), विजय-राम (तुलसी), कृष्ण-विनय (चन्द्रसखी), दाऊ की शिकायत माता से (सूर), गीता की महिमा (हृषीकेश), नाम महिमा (नामदेव), राम की भक्तवत्सलता का वर्णन (सेवादास), चौकी हनुमान जी की (बालानन्द)।

(२) पृ० १७ से पृ० २४ तक—कृष्ण का भोजन करना (परमानन्द), युगल मूर्ति भोजन (सेवासखी), सीता राम भोजन (तुलसी) श्याम श्यामा पांशा खेलने का वर्णन (परमानन्द), शयन एवं विलास (नरहरि), विनय (सूर), कपि की चौकी (तुलसी), राम जन्मोत्सव (कमलानन्द), राम जन्मोत्सव में ढाढिन का हक मांगना (गोविन्द)।

No. 464. Bharatamilāpa. Leaves—10. Deposited with Mahanta Mohanadāsa. (The bcok was found with) Svāmī Pītāmvarādāsa, Village Sonāmaū, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—अथ भरत मिलाप प्रारंभः ॥ दोहा ॥
सुरस चरन मनि वहू , मन में बहुत उछाह ।
राम कथा कछु गावैां, जाको गुन ओगाह ॥ १ ॥
चैापाई ॥ रामचंद्र वन को याना : राजा दशरथ वहु पछताना ॥
रामचंद्र छांड़ा स्थाना , दैारे नगर सकल परिधाना ॥
रोवैं सकल नगर नरनारी, राम लछुमन विन अधिउजारी ॥
रवि रांच केकई पत्र लिषावा, दूत हाथ नैहार पठावा ॥
जाय दूत भरत के पासा, अवधपुरी कर भयो निरासा ॥
चोष दूत विदा नव भयेउ, अंतर वास जोजन शत गयेउ ॥
जहां भरत सत्रहन यह गयेउ, जाय दूत दंडवत कयेउ ॥
कहिये दूत अवध कुसलाई, कैसे कैाशिल्या पुरराई ॥
घर घर राज नीति ठकुराई, कैसे राम लछुमन दोउ भाई ॥
तिनके पुत्र भयेअनुरागी, विधि का लिषे भये वैरागी ॥

End:—चवदह वरष राम नहिं आई, असकहि लोगन बोध कराई ॥
कैाशिल्या पै गे दोउ भाई, भरथहि देषि कैाशिल्या धाई ॥
सुत निकट परे मूर्छाई । हाथ उठाइ अंक मह लाई ॥
नारि पकरि बहु विधि समझाई । नहि आये लछिमन रघुराई ॥
तव पादुक सिर लीन वड़ाई । राम लषन सीता दुष पाई ॥
वाद विधाता सेज वनाई । हमहु रहवपुर वाहर जाई ॥
वन कुस सिज्या परी षुदाई । वैस आसन प्रभु मन लाई ॥
आगे पादुका धरि सिर नाई ।............................... ॥
निस दिन पूजन ताको करहीं, अवधि अधार अगोचर रहहीं ॥
दोहा :—भरथ मिलाप कथा, सरदा सों कवि गाई ।
जो नर सुनहि जो गावहि, जन्म जन्म अघ जाई ॥
इति श्री भरत मिलाप संपूर्णम् ।

Subject:—पृष्ठ १ से पृ० २० तक—भरत के पास दूत का जाना, भरत का संदेह, कुशल पूछना, अवध आगमन तथा अत्यन्त विषाद करना, केकई का उपालंभ, कैाशिल्या तथा गुरु इत्यादि का भरत को प्रबोध, भरत का वन में राम के पास जाना, लक्ष्मण का सन्देह, राम का निश्चय, भरत-मिलाप, भरतादि

द्वारा राम को लौटाने का प्रयास, उनका न लौटना और चरण पादुका देकर भरत को राज-काज के लिये अयोध्या लौटाना।

No. 465(*a*). Bhūgola. Leaves—29. Deposited with Rājā Avadheśasiṁha. Raīsa and Tāllukedāra of Kālākānkara, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री मते रामानुजाय नमः ॥ अथ भूगोल लिष्यते भाषा कथयामि। पहिले आकाश उपजा। आकाश से वायु उत्पन्न हुआ। वायु से तेज भा। तेज से जल भा। जलसे ब्रह्मांड भा। सो ब्रह्मांड ईस्वर की कृपा ते फूटि आधा भा। ब्रह्मांड के मध्य में जल विव.व विष्णु उत्पन्न भा। ता परमेश्वर के नाभी कमल में वह्मा उत्पन्न भे। वह्मा ने पृथ्वी का घटन कीन ऊंचाइ ४९ कोटि जोजन को प्रमाण है। ताके मध्य में सुमेर पर्वत है। चैारासी लक्ष योजन ऊंचा तोक सोरह हजार जोजन पृथ्वी में जाहिरा ॥ वीस हजार जोजन मध्य में चकला। जव का दाना जैसा तैसा मध्य में मोटा। तल्ला भाग पतला सुमेरु पर्व है

× × × × × × × × ×

Middle :—आकाश प्रमाण

नौ पद्म अड़तालिश निषर्व ओनहत्तरि अर्बुद सतावन कोठि पैंतालिश लाष पंचावन हजार पांच सै जोजन आकाश प्रमाण है।

ग्रह नक्षत्र विचार।

भूमि लोक शो त्रिंस लक्ष जोजन सूर्य्य लोक। वहत्तरि हजार जोजन विस्तार। सूर्य्य लोक से उपर लक्ष जोजन चन्द्र लोक। अठासी हजार जोजन विस्तार। चन्द्र लोक से लक्ष जोजन विस्तार मंगल लोक है। मंगल लोक से एक लक्ष जोजन ऊपर तिरसठ हजार जोजन विस्तार शुक्र लोक है।

× × × × × + × × +

End :—कलजुग व्यवस्था

चार लाख वतिस हजार कलयुग प्रमाण। मानुष्य प्रमाण हस्त ॥ ३ ॥ सूर्य्य पर्व एक हज़ार। चन्द्र पर्व दु हज़ार। तीर्थ गंगाजी। देवी चामुंडा ॥ पाप। १८। पुन्य। २। स्त्री प्रसूतिवार ॥ २१ ॥ मानुष्यावर्ल। १२०। वीज वोवनवार ॥ १ ॥ छेदन। १। आण अन्न मह। राजा शालि वाहन। ताके पुत्र। कुमार। ताके पुत्र ईर्ष्यु। ताके पुत्र वह्मा × × × × × × ×

चारिउ वरन तुरुक ठकुराई। छोटी वस्तु महंगी। वड़ी वस्तु सस्ती। धर्म करने वाले दुषी। पापी लोभी लंपट चुगुल इनसो सव सों प्रीति ऐसा कलजुग में परमेश्वर की भक्ति युक्त मनुष्यन का वाधा थोर होवै। परिणाम में धर्म सदा सहाय है ॥

इति कलजुग वरननं भूगोल संपूर्णम् ॥ मिती चैत नवम्यां। रविवासरे।

Subject :—(१) पृ० १ से ५ तक पृथ्वी इत्यादि की उत्पत्ति पृथ्वी के नव खंड सप्त द्वीप।

(२) पृ० ६ से ९ तक पाताले कूर्म विचार, पृथ्वी का कूर्म, पृथ्वी के आठ पर्वत, चौदह जमो के नाम।

(३) पृ० १० से १५ तक आकाश प्रमाण ग्रह नक्षत्र विचार ईश्वर के स्थान का निरूपण।

(४) पृ० १६ से पृ० १९ तक वंशावली देश विचार।

(५) पृ० २० से २७ तक सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलयुग की व्यवस्था।

No. 465(*b*). Bhūgol-Purāṇa. Leaves—7. Deposited with B. Rāma Manohara Bichpuriyā, Purānī-Bastī, Katni Murwārā, District Jabbalpur (C. P).

Beginning :—भोगोल पुरान लिषा हैं॥

तंयदि यदि ऐसा एक ब्रह्मांड नोरा वरंनं॥ ब्रह्मांड विस्न सिवया तपो यथा॥ आकास ते वायु उतपंनि वाइ ते तेज उतपंति तेजते॥ ब्रह्मांड फुटि कुट की भये॥ ता जल मधे विष्णु रहे हे॥ विष्णु के नाभि कमल के विषे ब्रह्मा रहे हे॥ सो ब्रह्मांड वांट कोय हैं॥ पंचास कोटी जो जन उचो हैं॥ सोरह सहस्र जो जन धरती मधें गडो हैं॥ वीस सहस्र जोजंन उपर विस्तार हैं॥ सरवा के अलंकार सुमेरु। पर्वतु है॥ ता सुमेर पर्वत को अस्ट श्रृंग हेमा वती श्रंग लील श्रंग मालि वंती श्रंग जाम वंती श्रंग॥ नष निधि श्रंग॥ उच्च माल श्रंग॥ महो श्रंग॥ एवं अस्ट श्रंग हें॥ ऐक ऐक श्रंग कितनो अंतर हे ऐक ऐक लक्ष जो जंन आपस मधें कुस्यांमष अंतर है॥

× × × ×

End.—कोंन कोंन राजा भये॥ राजा सारि वाहन॥ १॥ राजा साक्तिकुमार राजा हरिब्रह्मा॥ ३॥ राजा आईष॥ ४॥ राजा प्रहस्त॥ ५॥ राजा ईंद्र॥ ६॥ राजा धर्जजात॥ ७॥ राजा महोपालु॥ ८॥ राजा गंध्रव सेनि॥ ९॥ राजा बिक्रमाजीत॥ १०॥ राजा महोफलु॥ ११॥ राजा चित्रक॥ १२॥ राजा हरिपु॥ १३॥ राजा विक्रमा चक्र॥ १४॥ राजाभोज॥ १५॥ ता उपरांत नमवंता ईती पतसाही कोंन कोंन॥ गोरीस्यवुदीन॥ १॥ अलावुदीन॥ २॥ नसीर उदीन॥ ३॥ लोह ठाय मैहे मूद॥ ४॥ बडो महमूद॥ ५॥ सूर्ज साही॥ ६॥ तिमिर लिंग पात साही॥ ७॥ बवर साही॥ ८॥ हिमाउ साहि॥ ९॥ अकबर साहि॥ १०॥ जहांगीर॥ ११॥ साहि जिहा॥ १२॥ औरंगजेब॥ १३॥ श्री वेद व्यास भासितं भोगोल पुरान समाप्तं॥ ॥

Subject :—भूगोल का संक्षिप्त वर्णन।

No. 465 (*c*). Bhūgola Pramāṇa. Leaves—7. Deposited with Thākura Chandrikā Baksa Siṁhaji Jamīdār, Village Khānīpura, Post Office Tālāba Baksī, District Lucknow.

Beginning :—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पृथवी भूगोल प्रमाण लिख्यते । यथा आकाशते वायु उत्पन्न वायु ते तेज उत्पन्न पानी पृथवी अण्ड उत्पन्न ब्रह्माण्ड काटि व्दि खंण्ड भये तेहि जल मध्ये विश्नु रहत है विश्नु की नाभि कमल मध्य ब्रह्मा उत्पन्न भये सो ब्रह्मा उवाच किये है पचास कोटि योजन पृथ्वी प्रमाण है पृथ्वी मध्ये सुमेरु परवत है चौरासी योजन उच्च है सोरह योजन पृथ्वी मध्य गड़ो है विस सहस्र योजन विंव विस्तार है सेर वाकी आकार सुमेरु है ता सुमेरुके अष्ट स्त्रंग हैं कवन कवन श्रृंग है हेमवंत श्रंग १ नील श्रंग २ श्वेत श्रंग ३ उच्च श्रंग ४ मालिवंत श्रंग ५ गंध मदन श्रंग ६ महा श्रंग ७ एवं अष्टा गति पर्वत ऐक ऐक श्रंग कीतना अन्तर है अपना ते ऐक ऐक लक्ष योजन अंतर है ता सुमेर मध्ये पर्वत सुवर्ण मय है आकाश मंदिर है वैदुर्य मणि मुक्ता मय है महा गण गंधर्व पक्ष मुनि परि जात है मालि मान राजा बैठे हैं वैकुंठ महा पुरुष प्रधान प्रदायक है इति सुमेर विषे श्रंग है ।

End :—एक लक्ष योजन १००००० बृहस्पति लोक है अट्ठासी सहस्र योजन ८८००० वृहस्पति लोक को विंव विस्तार है वृहस्पति मंडल को परि एक लक्ष योजन १००००० बुध मंडल है तीस सहस्र योजन ३०००० बुध मंडल को विंव विस्तार है बुध मंडल परि एक लक्ष योजन १००००० शनि मंडल है अट्ठासी सहस्र योजन ८८००० शनि मंडल को विंव विस्तार है शनि मंडल ऊपर येक लक्ष योजन १००,००० राहु मंडल है अठासी सहस्र योजन ८८००० राहु मंडल को विंव विस्तार है राहु मंडल ऊपर ऐक लक्ष योजन १००००० केतु मंडल है येक सहस्र योजन १००० विंव विस्तार है केतु मंडल को शनि मंडल कृश्न वर्ण है ताते राहु नाहो दृषि परत है केतु मंडल ऊपर ऐक लक्ष योजन १००००० सप्त ऋषिन को मंडल है भिन्न भिन्न साती ऐक ऐक लक्ष योजन १,००,००० अपना अपना मां अंतर है तीस सहस्र योजन ३०,००० विंव विस्तार है सप्त ऋषि मंडल को । राम राम कृश्न राम राम कृश्न राम राम ।

Subject :—आकाश, वायु, तेज, पानी आदि की उत्पत्ति, ब्रह्मांड ब्रह्मा, पृथ्वी आदि की उत्पत्ति पृथ्वी में सुमेरु पर्वत और उसके श्रृंगों के नाम व जंबू वृक्ष आदि का वर्णन, पृथ्वी खंड, द्वीप, सप्त द्वीप प्रमाण, सात समुद्र पृथ्वी के रक्ष पालक, अमरावती का विस्तार, यमपुरी, यम नाम, कुवेर पुरी, कुवेर नाम, सूर्य लोक, चंद्र लोक, नक्षत्र लोक, उनका विस्तार विम्ब विस्तार, दूरी आदि आदि वर्णित हैं ।

No. 466. Bihārīsatasaī-kī-Tīka. Leaves—150. Deposited with Bābū Jayamaṅgalarāya, B.A., L.T., Gajīpura City.

Beginning:—सारे जगत के नास करन वारे नगरवन। सो विज तो एक॥ अनेक जगे वर सने अोट सभ जुरिकै इकडे हो के एक साथ ही वरसननै लगै॥ जब श्री गिरधनै गिरको करपै धारन करिके सुरपत जो है इन्द्र ताको गर्व अत्यंत हर्ष सो हरगै ये गिरधरनाव भयो। इहां काकलिंग अलंकार है। काकलिंग सामर्थता। इहां सामर्थता दिखाई॥ १२॥

दोहा। डिगत पांव डिगलात गिर लाषि सभ विज्ञ वेहाल।
दंप किसोरी दरसिकै परे लजाने लाल॥ १३॥

इहां सात्युक भाव है श्री राधा जी के दरसतै भयो वह सषी सषी सो कह्यौ। प्रिया दरस सात्विक भयो कर कंपित इह हेत गिरन गिरै व्रज जन डरत। लषि हरि लाजत चेत। जब निरषी सातुक क्रिया द्रिया अंग के मांहिं। तव सुलजाने हरिषरे मति सुप्रोत लगि जाहिं॥

End:—अेार ग्यानि को पाप न लगै जो करै लोक सिंघार गीता में यह वचन है यहै अर्थ निर्धार। वारत्ना। यह वात ठीक है राजा प्राक्रम हीन कैां दवावे रोग देह वलहीन को दवावे। पाप ग्यान वल हीन कैां दवावै ग्यानी को नहीं यह दीपका अलंकार है। उपमा अरु उपमेयको इक पद लागे अभनै। इत दीपक सो दवाव पद लग्यो सवही थल मांनि॥ ६४२॥

दोहा—वड़े न हुजे गुनन विनु विरद वडाई पाय।
कहत धतूरे सों कनिक गहनों गढ्यौ न जाय॥ ६४३॥

यह प्रस्ताविक है नालायक को बड़ाई कोई करै सो वृथा इहा कहनैां यह भाव की वड़ाई पायके वड़े नहीं होत। काहू विरद नै वड़ाई करी झूठो तुम पसे पैसे पोर गुन को रहे न।

Subject:—श्रृंगार रस वर्णन तथा अलंकार।

बिहारी के दोहों पर अलंकार सहित व्रज भाषा मिश्रित टीका गद्य में की गई है। किसी किसी दोहे की टीका पद्य में भी है।

No. 467. Charachā-Sphuṭika. Leaves—41. Deposited with Śrī Jaina Mandira, Kaṭara Medanipura, Post Office Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—अथ महावीर पुरान से चरचा स्फटिक लिष्यते॥
प्रथम कृष्ण धरि नर्क लहंत। दूजे नीलहि थावर जंत॥
तीजे कपोल जानि तिर जंच, चैाथे पीत मनुष्य पद संच॥ १॥

पंचम पद्म स्वर्ग गति लहै। षष्टम शुक्ल भव्य सिवगहै।
षषट लेस्या भेद विचार, सुनहु भव्य मिथ्या व निवार ॥ २ ॥
आरत रुद्र न त्यागै कदा, धर्म विवर्जित कोधो सदा।
दया रहित परपंचो होइ, लेस्या कृष्ण जासु अंग गोप ॥ ३ ॥
मंद बुद्धि परमादो गुणै। निष्ठुर वचन भनै वह घणै।
है परपंचो कामी घोर। लेस्या नील तासु को ओर ॥ ४ ॥
सोक करै अरु दुष्ट सुभाव। पर निंदा निज थुतिउ चराव।
इच्छा जुद्ध कु गुरु को सेव। यह कपोल धनो को भेव ॥ ५ ॥

End :—उत्सर्पिता उपजै फिर आय।
वृक्ष रूप क्रम-क्रम चढ़ि जाय ॥
जेहि प्रकार कालहि घट जान।
तेहि समान बढ़तो उनमान ॥
॥ दोहा ॥
या विधि जिन मुष कमल रुचि,
ज्ञान पियुषहि पोय।
वस्यो मोह मिथ्यात्व विष,
गौतम विप्र सुधोय ॥
काल लब्धि को निकट लहि,
भाव संवेग बढ़ाय।
विश्व भोग तन लक्ष्मो,
भयो विरक्त सुभाय ॥
संपूर्ण।

Subject :—जैन धर्म के आचरणों पर उपदेश :—

(१) पृ० १ से पृ० १२ तक—षट लेस्या वर्णन, प्रत्येक लेस्या का लक्षण तथा उदाहरण, भव्याभव्य वर्णन, गुण स्थान भेद कथन, स्त्री देह में निगोद वर्णन, अनादि मिथ्यात्व कथन, पचोस दूषण वर्णन। मिश्रित गुण स्थान, वृत गुण स्थान, अवृत गुण स्थान, सत्तावन प्रकृति विधि, बारह कृत कथन, पंच अनोवृत।

(२) पृ० १२ से पृ० ३७ तक—चार शिष्या वृत कथन। द्वादश तप, सामयिक प्रतिमा वर्णन, दश प्रकार सम्यक्त वर्णन। सम्यक्त महात्म्य, मूल गुण वर्णन, श्री महावीर जी के भावांतर वर्णन, त्रयपल्य वर्णन।

(३) पृ० ३८ से पृ० ८२ तक—ग्यारह प्रतिमाओं का वर्णन, प्रतिमाओं के अनुसार उनके धारण करने वालों के पद। पात्रों के अनुसार दान-विधान। सम्यक् दर्शन-कथन। अष्टाङ्ग सम्यक् ज्ञान कथन। त्रयोदश चरित्र कथन,

(श्रावकधर्म)—मुनिधर्म वर्णन, चार प्रकार के ध्यान का वर्णन, उनके भेदोपभेद, तत्त्व निरूपण, अनाहत मंत्र, प्रणव मंत्र, चंद्र रेखा मंत्र, अन्य मंत्र, रूपस्थादि ध्यान वर्णन। सर्पिणी तथा उत्सर्पिणी कथन। ग्रंथ समाप्ति ॥

No. 468. Chaudaha-Vidhāna. Leaves—9. Dated in Samvat 1892 or A. D. 1835. Deposited with Radhāvallabha, Village Khairābāda, Post Office Rajepura, District Unnāva (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः अथ चौदह विधान लिख्यते ॥ प्रेम को प्रकाश कैसा आनंद को कंद जैसा। आनंद को कंद कैसा जैसा श्री मदन है ॥ श्री जू को सदन कैसा अमल कमल जैसा कैसा है कमल उदित जैसा मदन है उदित मदन कैसो मोहन स्वरूप जैसो मोहन सरूप कैसो तुम को कदन है तमको कदन कैसा सोभै सुधाधरि जैसा सुधाधरि कैसा जैसे प्यारो को वदन है ॥ १ ॥ द्वै विधान ॥ सत्या सत्य मान जैसा पुन्य पाप जान तैसे संत औ असंत ऐसे धनी निधन सों। उदै और अस्त दषि गुनी निरगुनी देष ज्यों विशेषहु सो सब त्योंहीं नाना गन सों ॥ सुभा सुभ सुष दुष अमल ज्यों ज्यों कलुष सनमुष त्यों विमुष सो है प्रभुजन सों ॥ सीतल तपत राजै मिलन बिछोह छाजै तैसही बिराजै मिलो सापो भूत मनसों ॥ तृतीय विधान ॥ अति रस रसै प्रिया प्रीतम बिलोकि अल छल बल न्यारे न्यारे करै देषि भगनो ॥ चक्रवाक जल तीर सुषद सरोवर चोर निसाकर बात जुदे कोने पीर नगनी मीन जल करै केल अमृत अधिक मेल वंछी बिछोर नट हारे दुष दगनी ॥ चंद्रमा चकोर दुह थोर फोर हारे भोर मन मोर आत्मा को त्योंहो माया ठगनी ॥ ३ ॥

End :—द्वादस विधान। छांह, घन, तम, भौर, कुह, मषतूल, चोर, छांह, कांह, पुंछ मोर, काजर, जमन जल, कारे, भारे, महा, मत्त, रैन, भीने, मैन, श्रांत, मृद, निरदोष, रुचि, प्रकृति, कलित कल, विषो घटा, पुंज, गुंज, भर, पर, डर, कुंज, सुमिल, भुयग भुज, नौ रविके मंडल, फनी, वन, निस, पङ्क, नभ, तार, स्याम, पच्छ, सर, दीह, सुद्ध, स्वच्छ, सोहै चांचपल॥ प्रतिय दस विधान॥ मृग, मीन; हय, नट, कंज, अलि, वान, भट, ग्राह, दीप, उडिचठ, षंजन, चकोर हैं ॥ सिसु, अन, उच, नतु, सुद, मत्त, सिछ, चंद, चित, चोर हैं ॥ भीत, चीत, सिंधु, वन, पुहे, स्याम, पंच रत, विषो, जात, नभगेत, चाहैं चहुंओर हैं ॥ थल, केल, रिस, रस, रवि, मैन, मधु, अलि, कूप, नेह, तेज, फंसि, नेहो, मैन जोर हैं ॥ चतुर दस विधान ॥ चक्र तूंबा, तान, गिर, कुंभ, नारियल, लट्टू, मठ, गुछा, गेंद, भव, कंज, तपी है। सर, वोनो, हेम, हरू, सुधा, गज, पक्ष वर, चित्र, चपा, काम, स्वभ, राव, ध्यान, जपी है ॥ निस, रूप, वित, वक्र,

भरें, मोती, लता, चक्र, रति, मधु, केल, विष, लक्ष, स्वता, पर्यो, हैं ॥ सिसु, प्रेम, पुष्ट, शृंग, जग्य, मत्त, रस, रत्त मोह, गंध गोल, नाग, मूद्े, सिद्धि, पर्यो हैं ॥
१४ विधान संज्ञा संपूर्ण समाप्तः सम्वत १८९२ वि० ॥

Subject :—रस आदि कवित्त पृथक पृथक वर्णन ॥

No. 469. Chitrakūta Mahātma. Leaves—10. Deposited with Mahanta Mohanadāsa, (the book was found with) Bābā Pitāmvaradāsa, Village Saunāmaū, Post Office Pariyāvā, District Prātāpagadha (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशाय नमः।

दोहा :—प्रथम गुरुन के चरन रज, वंदैां वारहि वार।
जा सुमिरे प्रभु पाइये, उतरैा नर भव पार ॥ १ ॥
चरन सरन गुरु देव के, जब लगि आयो नाहिं।
मवनि विपिनि निज माधुरी, क्यैां परसै मन माहिं ॥ २ ॥
चित्र कूट गुन कहन के।, कीनों मन उछाह।
जनक नंदनी कृपा विनु, कैसे होइ निवाह ॥ ३ ॥
एक आश विश्वास गहि, करनि कथा मति मोरि।
चित्र कूट निज धाम के।, काहु न पायो ओर ॥ ४ ॥
महा अगम दुर्लभ कठिन, चित्र कूट निज भैान।
जनक नंदनी कृपा विनु, कहि धैां पावै कैान ॥ ५ ॥
सव प्रकार गुन हीन हैां, यहै सोच मन मोहि।
जनक नंदनी कृपा विनु, जो कछु होइ सो होइ ॥ ६ ॥

End :—प्रगट भई जिहि ठैार तें, गुप्त गोदावरि गंग।
मानैां गिरि तनु धारिकै, वैठो आनि अनंग ॥ १०० ॥
गंगा मज्जन करत जे, ते वड़भागी लोग।
वन के वासो संत जे, हैं सव दरसन जोग ॥ १ ॥
माथे तिलक विराजहो, गर तुलसी की माल।
राम चरन में रति रहै, परै न दुजे ख्याल ॥ २ ॥
पंगु चहत गिरि वर चढ्यो, कैसे पावहुं पार।
कृपा होइ रघुवीर की, सहजहि चढ़ै पहार ॥ ३ ॥
जो गावै सोखै सुनै, चित्र कूट सु विलास।
राम कृपा ता संत की, रघुवर पुजवै आस ॥ ४ ॥

इति श्री चित्रकूट महात्म्य संपूर्ण शुभ मस्तु ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ३ तक—मंगलाचरण, चित्रकूट की महत्ता तथा फल, उसकी प्राप्ति के उपाय, जनकनंदिनी के चरणों की महत्ता, कवि का दैन्य आदि। (२) पृ० ४ से पृ० १६ तक—चित्रकूट की विशदता का वर्णन उसके वन सरितादि की शोभा, चित्रकूट-स्थित राम के आवास का वर्णन। चित्रकूट के वन का तप के लिये उपयुक्त होने तथा भक्ति करने का फल। (३) पृ० १७ से पृ० १९ तक—संसार की निस्सारता तथा उसके परित्याग का कथन, भक्ति महात्म्य, चित्रकूट की भक्ति का कथन, चित्रकूट महात्म्य के पठन-पाठन का फल।

No. 470. Dānalīlā Leaves—5. Deposited with Paṇḍita Rāmasvarūpa Sarma. Paṇḍita-ka-Puravā, Mauja Bhadhu, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ दान लीला लिष्यते ॥ दोहा ॥

एक समय श्री राधिका, सब मिलि कीन्ह विचार।
हिल मिल चलिये जमुन तट, हरि संग करहिं विहार ॥
दही मटुकिया सीस पै , चली सकल व्रज वाल ॥
जब देखिहै यह वेष मो , तब छेरिहैं नंदलाल ॥
पंथ हमारो रोकि कै , हंसि के कहैं मुरारि।
हाथ लकुट द्वादश तिलक , महिमा अमित अपार ॥
जब कहि है मन हरष युत , दान देहु व्रज नारि।
तव हम हरि सों झगरि हैं, वातन विविध प्रकार ॥

End :—

अरुन नयन हुइ गये , सुनत उपजो रिस भारी।
तनक दही के काज हास , तुम करत हमारी ॥

सुनहु सषा देषत कहा , दधि लूटहु वरजोरि।
सीस मटुकिया फोरि कै जू लेहु हार उर तोरि ॥
ऐसा को जग माहिं हार छुइ सकै हमारो।
दही मटुकिया फेरि किते फिरि वचै विचारो ॥
सो मन अपने समुझि के, छोड़हु गैन हमारि।
मोहन सासु रिसाई है। जो घर में देव वताई ॥
इति श्री दान लीला समाप्त शुभम् ॥

Subject :—कृष्ण दानलीला वर्णन।

No. 471. Daśa-Avatāra. Leaves—2. Deposited with Paṇḍita Bhāgīrathīprasāda of Usakā, Post Office Kaudhaura, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—प्रथमै लीन्ह मीन अवतारा।
उदधी पै दृढ़ संषा सुर मारा॥
सुक सारद नारद उठि धाए।
ब्रह्मा वेद चारि मुख गाए।
दुसरे कमठ रूप अवतारा।
जोगष वान मथु कोटिक मारा॥
सहस मुष तव हरि गुन गाए।
पुरंदर पुर में भरमा आये॥ २॥
End :—नवरें बद्ध रूप अवतारा।
परसोत्तम पुर में जै जै कारा॥
षसिला मा मगहा सुर मारा।
जैाग पत के कीन्ह उवारा॥ ९॥
दसएं अकलंक अवतारा।
गहा सँभारि जहं जै जै कारा॥
प्रजा विनासी सगहो मारा॥
भरथ षंड के भार उतारा॥ १०॥
दस अवतार को भारती गैये।
सुर भक्त प्रेम फल पैये॥
सात सुकृत परिवेद वनाये।
इति श्री दसै अवतार संपूरण॥
Subject :—दश औतार वर्णन।

No. 472. (*a*). Dharma-Samvāda. Leaves—32. Dated in Samvat 1901 or A. D. 1844. Deposited with Vaidya Rāma-bhūshaṇa, Village Kāmatāpūra, Post Office Etaujā, District Lucknow (Oudh).

Beginning :— ओं श्रीगणेशायनमः॥ अथ धर्म संवाद लिखते॥ ओं-द्वापर विषे कथा होत भई नगर हस्तिनापुर दिल्ली के निकट ता विषे गुरा कोल पुछत भई। ओ राजा जनमेजय राजा परीछितदा वेटा पांडव दा पोत्रा॥ हे वैश्यम्पायन जी॥ राजा धर्म और पुत्र युधुष्टिर इसका मिलाप क्यों कर होइ है॥ सो तुम कृपा करके कहो॥ वैश्यम्पायनवाच॥ राजा का वचन सुनकर श्री व्यास देव जी का शिष्य जु है वैशंपायन सो कथा कहता भया॥ हे राजा तू सुन एक समय जु है देवता अरु इन्द्र अरु विनायक अरु सरस्वती अरु गंगा जी अरु जमना जी अरु गंधर्व अरु वन स्पतीई सब एकत्र बैठे थे तहां जाइ प्रापति

भई आई। नारद जो जु है रिषी जाइ करके नमस्कार करते भईया ॥ अरु वचन करणेलागो ॥ नारदो वाच ॥ नारद जी कहते हैं जुदेवता के बीच शंकर जो का नाम है अरु ब्रह्मा विश्नु महादेव हैं तो मृत्यु लोक विषे राजा युधिष्ठिर है। धर्म धर्म का पुत्र है जिसके त्रलोक विषे कीरति गावती है ॥ सो एसा राजा न कोई हुआ है और न आगे होइगा ॥

End :—पतीतो वाच। हेराजा जो मै सति कहिया है मेरे ताई दोष नाहीं देणा ॥ मेरे ताई दोष नाहीं देणा ॥ असाढ़ मैं कातिक मैं सावन में वैसाख मैं असनान दान करै हे राजा जी पंपी है ॥ जुधिष्ठिरोवाच ॥ हे पतीत तू जो है सो मेरा देह है मै जहां सों पावै आखि ॥ मेरा जो गुन था गइया पर मैं सुफला होइया ॥ तेरा दरसण करके ॥ अरु तो अतिथ देव है तेरा चंडाल का रूप मेरे घर विषे आइया है हे पतीत इकेता तू इंद्र है इकता ब्रह्मा है अथवा विश्नु है तू जो है चांडाल का रूप धार करे मेरा पिता आया है ॥ धरमो वाच ॥ हे पुत्र नाम धन है सवना शास्त्र व जानने वाला है हे राजा मैं तेरा पिता है अरु तू पुत्र है हे राजा तू सति जानु हे राजा तू साधु है तेरा जन्म धन है तेरा वंस धन है तेरा कुल धन है तेरा जस मैं सुखिया सो स्वर्ग विषे तैं तेरा दरसन करने तेरे घर विषे आया हैा ॥ जिस अर्थ जोग पुन करदा है सो देवता तेरे घर विषे आया हैां ॥ जुधिष्ठिरोवाच ॥ आजु मेरा जन्म सुफल है आजु मेरी तपस्या सुफल है आज मेरा जन्म भी धनं है तेरा दरसन कीता है मै पाप ते मुक्ति होइया है और जि ने लोभ कर्म है तिना ते मुक्ति होइया है ॥ धर्मो वाच ॥ हे राजा जी तेरी आरबल वहुत होवै। हे पांडव पुत्र तू चिरंजीव होइ है संवाद करके अरु राजा धर्म देवलोक विषे प्रापति भया धर्म करके सत्रु भी दुर होता है ॥ धर्म करके ग्रह भी दुर हो जाता है जिथ्थे धर्म उथ्थे दया है ॥ इति श्री धर्म संवाद संपूर्ण शुभम् मिती चैत्र सुदी तेरस संबत १९०१ विक्रमी जै राम राम राम राम राम राम राम राम ॥ वि०

Subject :—नारद वैशंपायन का संवाद, धर्मराज युधिष्ठिर की महिमा का वर्णन ॥ ॥

No. 472 (*b*). Dharmasambāda. Leaves—32. Dated in Samvat 1767 or A. D. 1710. Deposited with Paṇḍitā Rāmanātha Misra, Village Imaliyā, Post Office Sadārapura, District Sitāpur (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अर्थ धर्म संवाद लिष्यते ॐ द्वापर विषे कथा होती भई नगर जा है हस्तिनापूर दीली के पास ते विषे गुण काल

पूछता भई। ॐ राजा जन्मेजय राजा परीछित का बेटा पांडवा दा पोत्रा है वैशंपायन जी। राजा धर्म अरु पुत्र युधिष्टिर इसका मिलाप क्यों कर होइ है सो तुम कृपा करके कहो॥ वैशंपायन उवाच। राजा का वचन सुनि कर श्री व्यासदेव जी का शिष्य जु हैं वैशंपायन सो कहत भया कथा। हे राजा तू सुन॥ एक समै जु है देवता अरु इंद्र अरु मुनीश्वर अरु ब्रह्मा अरु रिष्य अरु विश्नु अरु सूरज अरु चंद्रमा अरु विनायक अरु सरस्वती अरु गंगा जी अरु गंधर्व अरु वनस्पती ई सब एकत्र बैठे थे तहां जाइ प्रापति भई आ॥ नारदा जी जु है रिषी जाइ करिके नमस्कार करते भइया॥ अरु वचन करणे लागो॥ नारदो वाच॥ नारद जी कहते हैं जु देवता के बीच शंकर जी का नाम है अरु ब्रह्मा विश्नु महादेव है तौ मृत्युलोक विषे राजा युधिष्टिर है धर्म धर्म का पुत्र है जिसका त्रिलोक विषे कीरत गावती है सो ऐसा राजा ना कोइ होइहा ग्रैार न होईगा॥

End :—जुधिष्टिरो वाच॥ हे ग्रतीत तू जो है मेरा देह है मै जहां सो ग्रावैनाणि॥ मेरा जोगु वथा गइया॥ पै मैं सुफला होइया॥ तेरा दरसन करके ग्ररु तो ग्रनिथ देव है तेरा चंडाल का रूप मेरे घर विषै ग्राइया हो हे ग्रतीत इकेता तू इंद्र है इकेता तू ब्रह्मा है ग्रथवा विश्नु है जो तू है चंडाल का रूप धार कर मेरा पिता ग्राया है॥ धर्मो वाच॥ हे पुत्र नाम धन है सब ना शास्त्र नू जानने वाला है हे राजा मैं तेरा पिता है ग्ररु तू पुत्र है हे राजा तू सति जान हे राजा तू साच है तेरा जन्म धन्य है तेरा वंस धन्य है तेरा कुल धन्य है तेरा जस मैं सुणि यां सो स्वरग विषै मैं तेरा दरसण करणे तेरे घर विषे ग्राया हो जिस ग्रर्थ जोग पुन्य करदा है सो देवता तेरे घर विषे ग्राया है। जुधिष्टिरो वाच॥ ग्राज मेरा जन्म सुफल है ग्राज मेरी तपस्या सुफल है ग्राज मेरा जन्म भी धन है तेरा दरसन कीना है मै पाप ते मुकि होइया ग्रैार जितने लोभ कर्म है तिना से मुक्ति होइया है॥ धर्मोवाच॥ हे राजा जी तेरी ग्रारवल बहुत होवै। हे पांडव पुत्र तू चिरंजीव हुइ है। संवाद करके ग्ररु राजा धर्म देव लोक विषे जाइ प्रापति भया॥ धर्म करके सत्रु भी दूर होता है जिथ्थे धर्म उथ्थे दया है॥ इति श्री धर्म संवाद संपूर्णम् शुभ मस्तु लिषतं वनवारी लाल पाठक पैतेपुर निवासी संवत् १७६७ वि०॥ राम राम राम राम राम राम राम॥ श्री शंकर की जैय होय॥

Subject :—महाराज युधिष्ठिर ग्रैार धर्म का संवाद॥

No. 472(*c*). Dharmasamvāda. Leaves—30. Dated in Samvat 1772 or A. D. 1715. Deposited with Rāyalāla, Village Ramuāpura, Post Office Dhauraharā, District Kherī (Oudh)

Beginning :—ॐ श्री गणेशायनमः ॥ अथ धर्म संवाद लिष्यते श्री द्वारापुर विषै कथा होत भई ॥ नगर जो है हस्तिनापुर दिलो के पास ता विषै एक समय पूछता भई । औ राजा जनमेजय राजा परीक्षत का बेटा पांडवां दा पौत्रा है वैशंपायन जी राजा धर्म अरु पुत्र युधिष्टिर इनका मिलाप क्यों कर होइ है ॥ सो तुम कृपा करके कहो ॥ वैशंपायन उवाच ॥ राजा का वचन सुनि करि श्री व्यासदेव जी का शिष्य जु है वैशंपायन सो कथा कहत भया ॥ हे राजा तू सुन । एक समय जो है देवता अरु इंद्र अरु मुनीश्वर अरु ब्रह्मा अरु रिष्य अरु विश्नु अरु सूरज अरु चंद्रमा अरु विनायक अरु सरस्वती अरु गंगा जी अरु जमुना जी अरु गंधर्व अरु वनस्पती ई सब एकत्र बैठे थे तहां जाय प्रापति भई या नारद जी जो है रिषी जाइ करके नमस्कार करते भये अरु वचन करने लागो। नारदोवाच ॥ नारद जी कहते हैं जो देवता के बीच शंकर जी का नाम है अरु ब्रह्मा विष्णु महादेव हैं तौ मृत्यु लोक विषै राजा जुधिष्टिर है धर्म धर्म का पुत्र है जिसका त्रैलोक विषै कीरत गावती है सो ऐसा राजा न कोई हुआ है न कोई होवेगा ॥

End :—युधिष्टिरो वाच । हे अतीत तू जो है सो मेरा देह है मैं जु हौं सो आवै जाणि ॥ मेरा जो गर्व था गया । पर मैं सुफल होइया तेरा दरसन करके अरु तो अतिथ देव है तेरा चंडाल का रूप है मेरे घर विषै आया है हे अतीत इकेता तू इंद्र है इकेता ब्रह्मा है अथवा विश्नु है तू जो है चंडाल का रूप धार कर मेरा पिता आया है ॥ धर्मोवाच ॥ हे पुत्र नाम धन है धन है सब ना शास्त्र जानने वाला है हे राजा मैं तेरा पिता अरु तू पुत्र है हे राजा तू सत जान हे राजा तू साध है तेरा जन्म धन है तेरा बंस धन है तेरा कुल धन है तेरा जस मैं सुणि या सो स्वर्ग विषै मैं तेरा दरसन करने तेरे घर विषै आया हौं ॥ जिस अर्थ जोग प्रन कर रहा है सो देवता तेरे घर विषै आया है जुधिष्टरोवाच ॥ आज मेरा जन्म सुफल है आज मेरी तपस्या सुफल है आज मेरा जन्म भी धन है तेरा दरशन कीता है मैं पाप ते मुक्त हुआ हूं और जितने लोभ कम हैं तिनाते मुक्त हुआ है । धर्मोवाच ॥ हे राजा जो तेरी आरबल बहुत होवै हे पांडव पुत्र तू चिरंजीव हुइ है ॥ संवाद करके अरु राजा धर्म देव लोक विषै जाइ प्रापति भया । धर्म करके सत्र भी दूर होता है धर्म करके ग्रह भी दूर होता है जिथे धर्म उथे दया है ॥ इति श्री धर्म संवाद संपूर्णम् फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे द्वादस्याम संवत १८७२ वि० ॥

Subject :—महाराज युधिष्ठिर और धर्म का संवाद ॥

No. 472(d). Dharmasaṁvāda. Leaves—30. Deposited with Mannīlāla Gaṅgāputra Tivārī, Village Misarikhā, District Sītāpur (Oudh).

Beginning:—ओं श्री गणेशायनमः ॥ अथ धर्म संवाद लिख्यते ॥ जं द्वापुर विषे कथा होत भई। नगर जु है हस्तिना पुर दिल्ली के पास ति विषे गुर काल पूछत भई। अो राजा जनमेजय राजा परीछित दा वेटा ॥ पांडवा दा पोत्रा ॥ हे वैशंपायन जो राजा धर्म अरु पुत्र युधिष्टिर इस का मिलाप क्यों कर होई है ॥ सो तुम कृपा करके कहु ॥ वैशंपायन उवाच ॥ राजा का वचन सुनि करि श्रीव्यास देव जी का शिष्य जु है वैशंपायन सो कथा कहत भया ॥ हे राजा तू सुन ॥ एक समै जु है देवता अरु इंद्र अरु मुनीश्वर अरु ब्रह्मा अरु रिष्य अरु विश्नु अरु सूरज अरु चंद्रमा अरु विनायक अरु सरस्वती अरु गंगा जी ॥ अरु जमुना जी ॥ अरु गंधर्व, अरु वनस्पती ॥ ई सब एकत्र वेठे थे तहां जाइ प्रापति भईआ ॥ नारद जी जु है रिषी। जाइ करके नमस्कार करते भइया ॥ अरु वचन कहणे लागो। नारदो वाच ॥ नारद जी कहते है जु देवता के बीच शंकर जी का नाम है। अरु ब्रह्मा विश्नु महादेव है तो मर्त्य लोक विषे राजा जुधिष्टर है। धर्म धर्म का पुत्र है। जिसका त्रिलोक विषे कीरति गावती है। सो असा राजा न कोई आगे होइआ है। न कोई होवेगा। कैसा है राजा जुधिष्टर। सत्यवादी है।

End:—जुधिष्टिर वाच ॥ हे अतीत तू जो है सो मेरा देह है मै जहां सो आवै जाणि। मेरा जो पुन्न था गइया ॥ पर मै सुफला होइआ तेरा दरसन करके ॥ अरु तो अतिथ देव है ॥ तेरा चंडाल का रूप मेरे घर विषे आइया है। हे अतीत इकेता तूं इंद्र है ॥ इकेता ब्रह्मा है अथवा विश्नु है। तू जो है चंडाल का रूप धार कर मेरा पिता आया है ॥ धर्मो वाच ॥ हे पुत्र नाम धन है धन है ॥ सबना शास्त्र तू जानने वाला है। हे राजा मै तेरा पिता है अरु तू पुत्र है। हे राजा तू सत जान। हे राजा तू साध है तेरा जन्म धन है। तेरा बंस धन है। तेरा कुल धन है तेरा राज समै सुणियासो स्वरग विषे मै तेरा दरसण करणे तेरे घर विषे आया हो। जिस अर्थ जोग प्रन करदा है सो देवता तेरे घर विषे आया है॥ जुधिष्टिरो-वाच॥ आज तेरा जन्म सुफल है। आज तेरी तपस्या सुफल है। आज तेरा जन्म भी धन है। तेरा दरसन कीता है। मै पाप ते मुक्त होइया ॥ और जितने लोभ कर्म है। तिना ते मुक्ति होइया। धर्मो वाच ॥ हे राजा जो तेरी आरवल बहुत होवै। हे पांडव पुत्र तू चिरंजीव होइ है। संवाद करके अरु राजा धर्म देव लोक विषे जाइ प्रापित भया। धर्म करके सत्रु भी दूर होता है ॥ धर्म करके ग्रह भी दूर होता है। जिथे धर्म उथ दया। इति

Subject:—धर्म उपदेश।

No. 472(*e*). Dharmasaṁvāda. Leaves—21. Dated in Samvat 1897 or A. D. 1840. Deposited with Ṭhākura Vijayaba-

hādura Simha of Saitāpura, Post Office Gadavārā, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ अथ धर्म संवाद कथा मध्यदेश भाषा टीका लिख्यते ॥ जन्मेजय उवाच ॥ जन्मेजय नामा राजा वैशम्पायन ऋषि के पास पूछते थे द्वापर युग विषे उत्पन्न हुवे हस्तिनापुर विषे महा बलवंत जन्मेजाय नामा गुरु वैशम्पायन ऋषि के पास पूछते हैं ॥ १ ॥

जन्मेजय उवाच ॥ द्वापरे च समुत्पन्नै नगरे हस्तिनापुरे । गुरुं पृच्छति राजा जन्मे जयो महाबलः ॥ १ ॥ कथं विना गुरुयेण धर्म राजा युधिष्ठिरः एव सर्व प्रकारेण कथमस्व महामुने ॥ २ ॥

अंग रूपेण विनादेह रूप विना ॥ धर्मराजा जो है युधिष्ठिर ते किस तरह से पूछते थे सर्व प्रकार सें हे महामुने अहो वंशंपायन ऋषि विस्तार पूर्वक मेरे पास कहो ॥

॥ २ ॥

End:—देवलोकों गतोधर्म पांडभात्श्चिरजि विनः
धर्मेण हन्यते व्याधिर्द्धर्मेण हन्यते ग्रहः ॥ ११८ ॥
धर्मेण हन्यते शत्रु यतोधर्मस्ततो जयः
यः पठेद्धर्म संवादं श्रणुयाद्वा समाहितः ॥
सर्वे पाप विनि मुक्तः परमं समाप्नुयात ॥ ११९ ॥

धर्मराज देव लोके गत्याः स्वर्ग लोक को जाते थे पांडव चिरजीव होइ धर्म से ग्रह शांत होवे धर्म सेः शत्रु वस होति है जहां धर्म होता है तहां जय होता है जो मनुष्य धर्म संवाद का पाठ करता है सो मनुष्य जो मनुष्य सुनता है सर्व पाप विनिर्मुक्तो सर्व पाप से मुक्त होइ के परम पद को प्राप्त होता है ॥ मनमें निश्चय करके कथा को श्रवण करे संपूर्ण तद फल होता है ॥

इति धर्म संवाद सत्य तिलकं कथायाः भाषा टीका समाप्ताः संवत् १८९७ शाके १७६२ चैत्रमासे षष्टायां तिथौ बुधवासरे प्रथम प्रहरे द्वादमारे चतुर्थ प्रहरे लिषितं शुभम् समा समा समा समाप्तम् समाप्तम् ।

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० १८ तक— प्रस्तावना, धर्म का चांडाल रूप धारण करना । हस्तिनापुर आना व चांडाल और भीम संवाद, चांडाल शब्द की व्याख्या, भीम का आश्चर्यान्वित होकर युधिष्ठिर को संवाद देना ।

(२) पृ० १९ से पृ० २६ तक– युधिष्ठिर के सन्मुख चांडाल द्वारा पुनः चांडाल शब्द की व्याख्या और जीवन का मूल तत्व समझाना ।

(३) पृ० २६ से पृ० ४२ तक—धर्म की व्याख्या और महत्वादि का वर्णन।

No. 473. Dohāsāra. Leaves—21. Dated in Samvat 1913 or A.D. 1856. Deposited with Bābū Sudarsánasimha Raīsa and Tāllukedāra of Sujākhara, Post Office Lakshmīkāntaganja, District Pratāpagadha (Oudh).

श्री गणेशायनमः ॥ अथ दोहा सार ॥

Beginning:— ॥ दोहा ॥

नयन निकट कज्जल बसै, पै दरपन दरसाय।
त्यों साधुन सत संग विनु, नाहिन और उपाय ॥ १ ॥
सबहीं घठ में राम है, ज्यों गिरि सुत में ज्योति।
ज्ञान गुरु चकमक बिना, कैसे परगट होति ॥ २ ॥
है हिय में पैयत नहीं, करियत बहुत उपाइ।
जैसे अपनी देह की, छांह गही नहि जाइ ॥ ३ ॥
करि घूंघट जग मोहई, बहुतक लाए लोग।
दरसन जिन्हैं देषाइयो, जेते दरसन जोग ॥ ४ ॥
अलष एक वहुवेष धरि, घट घट रह्यो समाइ।
साधनि प्रगट्यो अधिक अति, ताते लष्यो न जाइ ॥ ५ ॥
घट घट में राधारमन, यामें नहीं विवेक।
जैसी फूटी आरसी, पड पंड मुख एक ॥ ६ ॥
जब सूझ्यो तब अंध तै, जब अंधे तब सूझ।
इतक भये न उत्त के, बाव सूम को बूझ ॥ ७ ॥
राम नाम को लेस नहि, रह्यो विषय लपटाइ।
घास चरै पसु आप मुख, गुर गुजियायें पाइ ॥ ८ ॥

End:—घरी बजै घरियार की, तू कछु सधु भयो चित्त।
आयु घटै जीवन घसै, यह समुझावै नित्त ॥
बहुत घटी थोरी रही, ताही मांझ घटाइ।
वाकी इतनो पर कहा, को काहू के जाइ ॥
हम परदेशी पाहुने, दिन दिन औरै गांव।
मर मुजु जानै आपुनो, हू है कौने ठांव ॥
कहि काल्हू कैसी बनै, काल धरो सिर केस।
ना जानो कह मारि है, का घर का परदेस ॥

दाम संचि लै लक्षिमी, उदै अखिलैं राज।
मूसन जो निज मरन है, तौ पकै नहिं काज ॥
क्यों घूटै इहि लाज परि, कित कुरङ्ग अकुलाइ।
ज्यों ज्यों सुरभि सगौर चहै, त्यों त्यों उरझति जाइ ॥
जुमला गुड़ी उडावतो, मनकी करती डोरि ॥
चाई लहरि जु प्रेम की, कित जमला कित डोरि ॥

इति दोहासार समाप्तम् शुभ मस्तु दशपत् गोपाल लाल कायस्थ संमत् १९१३ सन् १८६३ ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० ८ तक—शान्ति सम्बन्धी दोहे। (तुलसीदास जी के बनाये हुए)। शान्त्य-भाव, जेष्ठा। लगन। नेत्र। प्रेम लगन भाव। बिहारी रहीम, ग्रहमद कुतुब, रसलीन, कबीर, जानिल, तुलाराम, संमन आदि कवियों की कविताएं।

(२) पृ० ९ से पृ० ४० तक—अङ्ग भाव (कटि) रोमावली, कुच, अलक, तिलक, संग भाव, नप भाव, दूती के वचन नायिका से सखी वचन नायिका के प्रति, रसनके भाव, नायिका भाव, नैन विरह भाव, साधारण विरह भाव, मिलन भाव, मन प्रकृति भाव, सज्जन एवं दुर्जन भाव, शठ भाव, कपट भाव, शिक्षा भाव, ज्ञान भाव, प्रस्ताव भाव, स्फुट भाव, मन शिकार भाव, हास्य भाव, चातक, चकोर, भ्रमर, पतङ्ग, चन्द्रोदय, मन विश्वास एवं गुढ़ भाव।

(३) पृ० ४० से पृ० ४२ तक—धोबोला भाव, विरोध भाव, वैराग्य भाव।

No. 474. Drashṭāntasāra-ke-doha. Leaves—12. Dated in Samvat 1891 or A.D. 1834. Deposited with Pṇḍita Lakshmīkānta Kothīval of Basu āpura, Post Office Lakshmīkāntaganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning.—श्री गनेसायनमा ॥ अथ दृष्टान्त सार के दोहा लिष्यते॥

जो जाको अति प्रिय लगै। सो तिहि करतु वषान।
जैसे विष कों विषभषी। भाषत अमृत समान ॥ १ ॥
कहा होत उद्यम किये। जो प्रभु नहि अनुकूल।
जैसे निपजे खेत को। सलभ करत निरमूल ॥ २ ॥
जाही ते कछु पाइयत। ताको करियत आस।
पाली सरवर पर गये। कैसे मिटत पियास ॥ ३ ॥
जो जाको होइ के रहै। सो तिहि पुजवत आस।
स्वात बूंद विनु सकल घन। चात्रक मरत पियास ॥ ४ ॥

रस अनरस समुझै नहीं। पढ़ै प्रेम को गाथ।
बिच्छू मंत्र न जानहीं। सर्पहि डारत हाथ ॥ ५ ॥

End:—जहां वसै गुनवंत नर। तासों सोभा होति।
जहां धरै दीपकु तहां। निश्चय करै उद्योति ॥१०४॥
भले बुरे को एक सो। मूढ़न के परतीत।
गुंजा सम तैालत कनक। सुना पना की रीति ॥१०५॥
सेवक साहिव कै वढ़ै। वढ़ै वढ़ाई चोज।
जेता ऊंचै जल वढ़ै। तेता वढ़ै सरोज ॥१०६॥
धनी होत निरधन कहूं। निरधन तै धनवान।
वड़ी होत निसि सिसिर रितु। ज्यों ग्रीषम दिनमान ॥१०७॥
जहां सनेही सो रहत। भ्रमत भ्रमत मनु आइ।
फिरत कटोरी मंत्र की। चोर हिये ठहराइ ॥१०८॥

इति श्री दृष्टान्त सार के दोहरा संपूर्न ॥ अगहन सुदी ५ संवत् १८९१ ॥
॥ मुकाम इन्दरगढ़ ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० २४ तक—दृष्टान्त संबंधी १०८ दोहों का संग्रह ॥

No. 475. Dvādaśa Rāśi Vichāra. Leaves—8. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—श्रीमते रामानुजाय नमः अथ वृहस्पति कांड द्वादश रासि को विचारु। मेखरासि गुरु जाता ॥ पारवती पूछै महादेव कहै ॥ समै को लछन मेख रासि गुरु ॥ वर्षा होइगो दिन ४९ ॥ आसाढ़ दिन ११ ॥ श्रावन दिन १८ ॥ भाद्र दिन १२ ॥ अस्वन दिन ५५ कातिक ३ एवं वर्षा उचिते माघ विक्रि होइगी दिन ३५ वखन महंगे होइगे बैसाख जेष्ठ असाढ़ श्रावण भाद्रपद असनो का कार्तिक चना दाम ५ पसेरी लोन दाम—५ पैतालिस दाम ५ पसेरी जोड़ रहो १६ दाम ५ पसेरी इति मेख रासि गुरु लक्षण समाप्तं। अथ वृष रासि गुरु लक्षणमाह यदि पूछे पार्वती कहै महादेव कहै समै के लक्षन वरखा होइगी दिन ६३ आसाढ़ दिन ५ श्रावन दिन २५ भादों दिन १५ अस्वनदिन ८ कार्तिक दिन ३ पैाखदिन ४ एवं वरखा उच्यते ॥ समै मालव के देसा होइगो असोहनो होगा वाखनु महघा होइगो अस्वन मो विको होइगी मजीठ टंक ३ तीनि पसेरा होइगी कपास सैतिस दाम ३१ पसेरी गजगज टंक ३ गज होइगो हरदो टंक ३ अपसरे हींग और वस्तु सरवस्त होइगी।

End:—अथ कुंभ रासि गुरु उच्यते। यदि पूछति पारवती कहै महादेव समै को लक्षनु वरखा होइगी दिन ५५ आसाढ़ दिन ९ श्रावन दिन २५ भाद्रदिन ५

आस्वन दिन ५ कार्तिक दिन ५ पूष दिन ३ मंनु महतो होइगो गोहू दाम १५ पसेरी १५ टेलु टंक सेर। कांसो तांबो मस्तो होइगो सोनो मासो १ गजो टंक एकइ होयगो इति कुंभरासि गुरुमाह। अथ मोन रासि गुरु उच्यते यदि पूछति पारवती कहै महादेव समै को लक्षनु वरखा होइगो दिन ४५ आसाढ़ दिन १० श्रावन दिन २५ भाद्र दिन २ आस्वन दिन ३ कातिक दिन ५ पूष दिन १५ इति वरखा। खंड खंड के लोग डोलेंगे उत्तर देस नरपति परैंगे मन सासतु छाड़ैंगे। वहुत लोग सन्तुष्ठ हैंगे। मनको दुकाल होइगो। उत्तर देस परजा गिरहिगे मोन मै हनुमन नाटक को मतो करतु है। तेहि ते सुख देखतही बनै कहूं देखन होइ न सुना होइ।

इति वृहस्पति कांड समाप्तं ॥ १२ ॥

श्रीमते रामानुजायनम :

No. 476. Ekādaśī Mahāphala. Leaves—12. Deposited with Lāla Gajādhara Prasāda, Village Kuraḍihā, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—अथ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री स्याम चरण दास जो सहाय ॥

श्री गुरु गनेश जी को सिर नाऊं। तो इकादशी चरित सुनाऊं ॥
सावधान है सुनियो भाई। कहै सुनै जो मुक्ति दिवाई ॥
रुकमांगद राज प्रघटाई। ऐसो व्यास जगत में आई ॥
सूरज वंशी राजा भयो। मनों धर्म कल ऊपर छायो ॥
पंचा नगरी तासु दुहाई। घटा धोर हर पर्भ सुहाई ॥
सुषी लोग सब दीषे जामैं। दुष दालिद्र आवै नहिं जामैं ॥
परजा सुषी धर्म सब करेई। आनंद मंगल सबदिन सरेई ॥
एक समय वसंत रितु आई। सो राजा कों अति लगो सुहाई ॥
रानी सहित वाग में गये। फूले तरुवर देषे नये ॥
× × × ×
× × × ×

End:—चलि के अवधे सुर गये, जहं बैठे देव अलेष।
कपट बांहि गहि लई नारायन, करि ब्राह्मण को भेष ॥
एक पुत्र विनु जग अंधियारो, डूबे राज तुम्हार।
गया पिंड को भरिहै राजा, को करै पित्र को काज ॥
छांड़ि विप्र मेरी बांहि, धर्म कित नार लगावै।
मांगि दच्छिना लेउ, जोर तेरे मन भावै ॥

देखो सत्य डिगाम के, ह्यांन दूजो भाव।
तब प्रभु धरो चतुर्भुज मूरति, दरसन दये अघाय ॥
जो जा कथा सुनै अरु गावै, नरक लोक नहिं जाय।
धनि रानी अमरावती, धनि रुकमांगद राव ॥
क्यों न अजुध्या तरैई, जहं रुक्मांगद राज।
इकदशी प्रताप तें, पायो बैकुंठ को वास ॥

अथ इकादसी महाफल ॥

Subject:—पृ॰ १ से पृ॰ २३ तक—एकादशी महाफल। मंगलाचरण। सूर्यवंशी राजा रुक्मांगद के राज्य का सुख वैभव वर्णन। राजा का सपत्नीक वसन्त ऋतु में अपनी वाटिका में जाकर सुखानुभव करना। रानी का माली को सब पुष्पों को राजप्रसाद में पहुंचाने की आज्ञा। माली का एक भी पुष्प न लेजाकर, चोरी की कथा सुनाना। राजा का क्रोधित होकर उसे दंड देने की आज्ञा। दूसरे दिन माली का एक स्त्री द्वारा पुष्पों की चोरी की सूचना देना। दूसरे दिन राजा का रंभा को जा पकड़ना और उसका सब समाचार सुनना। एक रजक-स्त्री के एकादशी को अनशन व्रत (क्रोध से) करने के पुण्य से रंभा का विमान स्वर्ग पर चढ़ जाना देखकर उक्त व्रत पर राजा की श्रद्धा। सब प्रजा सहित राजा का व्रत करना। सुर, देव तथा यम का प्रलाप। मोहिनी का व्रत भंग करने का प्रण करके राजा के राज्य में आना और उसका छलना। एकादशी व्रत का माहिनी द्वारा निषेध। राजा का परिताप, मोहिनी का उसके पुत्र का शीश मांगना। पुत्र का प्रसन्नता-पूर्वक स्वीकृति देना। भगवान का विप्र वेश में प्रवेश। राजा का सत्य से न डिगना। भगवान का प्रसन्न होकर चतुर्भुज रूप दिखाना। राजा की प्रशंसा। एकादशी कथा श्रवण फल।

No. 477. Gaṇeśavrata-Kathā. Leaves—14. Dated in Samvat 1870 or A. D. 1813. Deposited with Seṭha Maganirāma Saudāgara, District Kherīlakhīmapura (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ दे॰ ॥ वंदि चरण अरविंद के हरिहर गिरजहिं मनु लाइ। सैल सुता सुत की कथा कहैां सुनैा चितु लाई ॥ दे॰ ॥ राम कृष्ण भ्रातन सहित श्री पुर कामिनि निज धाम। बुद्धि बढ़ावत सकल मिलि पुनि पुनि करौं प्रणाम ॥ कथा कहैा गणनाथ की पार उतारैा वोर। बुद्धि हीन निज जानि कै सुमिरैां तनय समीर ॥ जुधिष्टरैा वाच ॥ चो॰ ॥ सुनहु कृष्ण देवन के देवा। निगम सेष विधि पाव न भेवा ॥ ऐसे प्रभु तुम दीन

दयाला। सदा करहु दासन प्रतिपाला॥ विपत हमारि विलोकहु स्वामी। कृपा सिंधु तुम अंतर जामी॥ छल कीन्हो जुर जोधन राजा। जीति लियो महि राज समाजा॥ अनुज समेत जुवति संग जाये। कानन फिरत दुसह दुष पाये। तेहित प्रभु विनवैा करजोरी। केहि विधि पाउब राज बहोरी॥ श्री कृष्णोवाच॥ कृष्ण कहा सुनु वचन नरेशा। तुव हित लागि कहौं उपदेशा॥ पूजहु गणपति कहं चित लाई। जेहि पूजें सब दुख मिटि जाई॥ विघन हरन है जाकर नामा। तेहि पूजें पैहैा विश्रामा॥ दोहा॥ कृष्ण वचन सुनि धर्म सुत बोले पद सिर नाइ। गणपति को है नाथ मोहि कहिये कथा बुझाय।

End:—दोहा॥ यहि विधि द्वादस मास की कही भूप मनु लाइ। विधि सो पूजहु गणपतिहिं सर्व संकट मिटि जाइ। चैा०॥ यह सुनि धर्म तनय सिर नावा। हरि पद की रज नेत्र लगावा॥ जेहि विधि कहेउ कृष्ण वृत रीती तेहि विधि राजा कीन्ह सप्रीती॥ गणपति की भइ कृपा अपारा। मारि सत्रु कीन्हा संहारा॥ सुष सो राजु मही पर कीन्हा। सब गणपति की दया लषि लीन्हा॥ जो गणेश को वृत चित लावे। मन वांछित फल सो नर पावे॥ रिद्धि सिद्धि धन धेनु अपारा। धरनि धाम सुष संपति दारा॥ नारी पुरुष करै व्रत कोई। सकल सिद्धि फल पावै सोई। जो यह कथा सुनै जो गावै अंत काल सुर पुर सुष पावै। इति श्री भविष्योत्तर पुराणे अंश कृते भाषा विरचिते कृष्ण जुधिष्ठर संवादे हर गैारी सुत गणेश व्रत समाप्त सुभ मस्तु आश्विन मासे कृष्ण पक्षे तिथैा चैाथि लिषतं पोस्तक श्री पाल मिश्र संकल दी… संवत १८७० वि०॥ श्री राम राम राम सीताराम॥ श्री गणेशायनमः सदा गंगा जी की जैय हो॥ श्री कृष्णायनमः॥

Subject:—गणेश जी की उत्पत्ति, महिमा और व्रत फल वर्णन।

No. 478. (*a*) Garbhagītā. Leaves—32. Dated in Samvat 1767 or A.D. 1710. Deposited with Paṇḍita Rāmanātha Miśra, Village Imaliyā, Post Office Sadārapur, District Sītapur (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ उं नमो भगवते वासुदेवाय॥ अथ गर्भगीता लिष्यते॥ अर्जुनोवाच॥ ॐ अर्जुन श्री कृष्ण भगवान पास पूछता है॥ श्री कृष्ण जी उत्तर देता हैं श्री कृष्ण जी की आज्ञा है जो कोई गर्भ गीता का पाठ सुनै प्रेम सहित तिनके निकट जम किंकर आवे नहीं वचन है श्री कृष्ण भगवान जी का श्री अर्जुन संवाद करते हैं पुन्य पाप विचारते हैं जो कोई इहु वचन पाठ सुनै कमावै अरु रहते रहै तो मुक्ति होइगा॥ श्लोक॥ गर्भवासं जरा मृत्यु किमर्थः भ्रमते नरः किमर्थं रहिते जन्म कथं कस्य जनार्दन॥ टीका॥ अर्जुन पूछता है श्री कृष्ण जी गर्भ के विषे जो प्रानी दोष ते आवता है तब उसको जरा

मृत्यु का दोष लागता है अरु यह कौन अर्थ है तिस अर्थ ते जन्म रहत होइ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ श्री कृष्ण जी कहता है हे अर्जुन यह जो मानुष है सो अंध मूढ़ है संसार भी प्रीति करति नाल वहुत प्रीति है आठ पहर उसही प्रीति नाल लोभ रहत है ॥

End:—श्री भगवानुवाच ॥ हे अर्जुन गुरु के वचनो ते विमुष है सो कुत्ते को वरावर है कोई गुरु के वचनो को मानता नाहीं सो वैसनो नाहीं ॥ जगत पर धोपो चंद है जो कोई गुरु के धर्म ते विमुष है सो मेरा भगत नाहीं ॥ हे अर्जुन जो कोई गुरु मुष होइ कर राम नाम सिमरेगा सप्त गोत्र औ एकत्रसैा पितरों तारेगा ॥ औ जो मेरा भगत नित प्रति करेगा सो वैकुंठ जायगा ॥ हे अर्जुन अधोगत मनुष्य को शरीर को कूकर भी नाही खाती है ॥ और पितरों को पिंड भी श्राद्ध विषे ना पावै ॥ जो उस पुरुष को स्वर्ग लोक के कर्म किया होई तैा भी स्वर्ग ना पावै ॥ हे अर्जुन ब्राह्मण क्षत्री वैश्य सूद्र अरु होर लोक भी गुरु देषिया विना सो वार धार जन्म पावेगी ॥ हे अर्जुन भगत बारंवार न ते ऊपर हैं प्रधान अरु केशव नारायण तैंतिस कोटि देवता के ऊपर प्रधान है अरु सवना व्रता के ऊपर हर दिन एकादशी प्रधान है मइ ना में वहुत निष्काम है मेरा निवास इना में है ॥ अदीषत मानुष कुछ पुन करैगा ता पशु की जूनि मैं पावता है जो कुछ दान पुन करै सो जोनि में आवता है ॥ अर्जुनुवाच ॥ हे श्री कृष्ण भगवान जी गुरु जी देष्या कैसा होता है तिसका फल कृपा करके कहो ॥ अरु ताविषे उत्तम कैान है और गुरु कैसो वाक्य जगत को करी है अरु सेवा पूजा का फल कैान है अरु वैसनो भगति की क्रिरिया जगत रहत कैसी होती है ॥ उसमें भिन्न भिन्न दुर्मति कैान है ॥ श्री भगवानुवाच ॥ धन्य तेरी ज्ञान रूप को है औ वैसनो धर्म तेरा तुमको भावना है ॥ अरु देषीया दो अक्षर है अरु जे हरि हरि सदा जपीये ॥ हे अर्जुन वैसनो अस नाम करिके ॐ नमोनारायणाय ॥ श्री मंत्र एक मन होइ कर जपे सो मेरा भगत है ॥ सो वंकुठ को प्राप्त होता है ॥ सो मेरा भगत जानना अरु साधु भगत छोड़ कर मनुष के गर्भ वास होता है हे अर्जुन मनुष की देह में साढ़े तीन करोड़ रोमावली हैं तव लग नरक में जाता है इह गीता गर्भ है ॥ इति श्री भगवत गीता सूप निषत्स ब्रह्म विद्यायां जोग सास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन संवादे गर्भ गीता संपूर्णम् लिषतं वनवारी लाल पाठक पैतेपुर निवासी असाढ़ वदी ३ सवत् १७६७ वि०

Subject.—गर्भ, जन्म, मरण, सुख दुख आदि वर्णन ॥

No. 478 (*b*). Garbhagīta. Leaves—32. Dated in Samvat 1872 or A.D. 1815. Deposited with Vaidya Rāmabhuṣaṇa, Village Kāmatāpura, Post Office Etaujā, District Lucknow (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ श्रों नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अर्थ गर्भ गीता लिष्यते ॥ अर्जुनुवाच ॥ श्रों अर्जुन श्री कृष्ण भगवान पास पूछता है ॥ श्री कृष्ण जी उत्तर देता भया कि श्री कृष्ण जी को आज्ञा है जो कोई इस गर्भ गीता का पाठ सुनै प्रीत लाइके तिनके निकट जम किंकर आवै नाही वचन है श्री कृष्ण जी का श्री कृष्ण अर्जुन संवाद करते हैं पुन्य पाप विचारते हैं जो कोई इहु वचन पाठ सुनै कमावैं अरु रहते रहै सो मुक्ति होइगा ॥ अर्जुन वाच सलोक ॥ गर्भ वासं जरा मृत्यु किमंर्थः भ्रमते नरः किमंर्थे रहिते जन्म कथ कस्य जनार्दन ॥ टीका ॥ अर्जुन पूछता है श्री कृष्ण जी गर्भ के विषे जो प्रानी दोष ते आवता है। तब उसको जरा मृत्यु का दोष लागता है अरु वह कौन अर्थ है। तिस अर्थ ते जन्म रहत होइ ॥ श्री भगवानु वाच ॥ श्री कृष्ण जी कहता है हे अर्जुन इह जो मानुष सो अंध मूढ़ है संसार भी प्रीति करत नाल बहुत प्रीति है अठ पहर उस ही प्रती नाल लोभ रहत है ॥

End :—हे अर्जुन ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र अरु होर लोक भी गुरु गुरु देषिया विना सो बार बार जन्म पावेगी ह अर्जुन भगत बारं बार न ते ऊपर है प्रधान अरु केशव नारायण तैतीस कोटि देवता के ऊपर प्रधान है अरु सब बृता के ऊपर हरि दिन एकादशी प्रधान है मैं इनमें बहुत निष्काम है ॥ मेरा निवास इसमें है अदीषत मानुष कछु पुन करैगा तापसु की जूनि मै पावता है ॥ जो कुछ दान पुन करे सो जोति मैं आवता है अर्जुन वाचा ॥ है श्री कृष्ण जी भगवान जो गुरु जी देष्या कैसा होता है ॥ तिसका फल कृपा करके कहो श्रौर जाप विषे उत्तम कौन है श्रौर गुरु कैसो वाक्य जगत को करो है अरु सेवा पुजा का फल कौन है अरु वैष्णव भगत की करिषा जगत रहत कैसो होती है उससे भिन्न भिन्न दुर्मत कौन है श्री भगवानु वाच ॥ हे अर्जुन धन्य तेरी ग्यान रूप को अरु वेश्नव धर्म तेरा तुमको भावता है ॥ अरु देषिया दे। अक्षर है अरु जे हरि हरि सदा जपिये हे अर्जुन वैश्नों असनान करिके ॐ नमो नारायणाय श्री मंत्र एक मन होकर जपै ॥ सो मेरा भगत है ॥ सो वैकुंठ को प्राप्त होता है। सो मेरा भगत जानता है अरु साधु भगत छोड़ के मनुष के गर्भ वास होता है हे अर्जुन मानुष की देह में साढ़े ३ करोड़ रामावली हैं ॥ तत लग नरक में जाता है यह गीता गर्भ है ॥ इति श्री भगवत गीता सुपनिषं ब्रह्म विद्यायां जोग शास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन संवादे गर्भ गीता सपूर्ण समाप्तम शुभ्म लिषतं पं० देवाराम श्रावण शुक्का सप्तमी संवत् १८७२ वि० ॥

Subject :—श्री कृष्ण जी का अर्जुन को ज्ञान उपदेश वर्णन ॥

No. 478 (*c*). Garbhagīta. Leaves—32. Deposited with Paṇḍita Mannilālajī Gaṅgāputra Tivārī, Village Misrikhā, District Sītāpur (Oudh).

Beginning :—ओं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ गर्भ गीता लिष्यते ॥ अर्जुनवाच ॥ ओं अर्जुन श्री कृष्ण भगवान पास पूछता है ॥ श्री कृष्ण जी उत्तर देता है ॥ श्री कृष्ण जी के आज्ञा है ॥ जो कोई इस गर्भ गीता को पाठ सुनै प्रीत लाय के तिसके निकट जम किंकर आवै नाहीं ॥ वचन है श्री कृष्ण जी का ॥ श्री कृष्ण अर्जुन संवाद करते हैं ॥ पुन्य पाप विचारते है जो कोई यहु वचन पाठ सुनै कमावै अरु रहते रहै सो मुक्ति होयगा ॥ अर्जुन वाच ॥ सलोक ॥ गर्भ वासं जरा मृत्यु किमर्थं भ्रमते नरः ॥ किमर्थं रहितं जन्म कथंकस्य जनार्दन ॥ १ ॥ टीका ॥ अर्जुन पूछता है श्री कृष्ण जी गर्भ के विषै जो प्रानी दोष ते आवता है तब उसको जरा मृत्यु का दोष लागता है ॥ और उह कौन अर्थ है ॥ तिस अर्थ ते जन्म रहत होई ॥ श्री भगवानोवाच ॥ श्री कृष्ण जी कहता है ॥ हे अर्जुन इह जो मनुष्य है सो अंध मूढ़ है ॥ संसार भी प्रीति करति नाल बहुत प्रीत है ॥ अठ पहर उसही प्रीत नाल लोभ रहत है ॥ जैसे इहु कर्म किया है । अरु आसा भी करते है कि यांचि तब है ॥ जो इहु कर्म किया है अर इहु करोंगे । अरु और भागते क्या मागते है । लक्ष्मीराज और जीवना बहुत मागते है अरु इना करमो करके गरभ विषे आवता है ॥

End :—भगवानोवाच ॥ हे अर्जुन जो गुरु के वचनों से विमुष है ॥ सो कुत्ते की बराबर है ॥ अरु जो कोई गुरु के वचन को मानता नाहीं सो वैसनो नाहीं ॥ जगत पर धोपोचंद है । जो कोई गुरु को धर्म ते विमुष है सो मेरा भगत नाहीं ॥ हे अर्जुन जो कोई गुरु मुष होइकर राम नाम सिमरेगा सप्त गोत्र और एकोतर सौ पितरो तारेगा ॥ और मेरी भक्ति नित प्रति करेगा । सो वैकुंठ जायगा । हे अर्जुन अधोगत मनुष्य को शरीर को कूकर भी नाही पाती हैं ॥ और पितरों को पिंड भी श्राद्ध विषे ना पावै । जो उस पुरुष की स्वर्ग लोक के कर्म किया होय तो भी स्वर्ग ना पावै । हे अर्जुन ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र अरु और लोक भी गुरु देषिया विना सो वार वार जन्म पावेगा ॥ हे अर्जुन भगत वारंवार नते उपरे है प्रधान । अरु केशव नारायण तैंतीस कोटी देवता के ऊपर प्रधान है । अरु सवजा व्रता के ऊपर हरि दिन एकादशी प्रधान है ॥ मैहना मै बहुत निष्काम है ॥ मेरा निवास इना में है । अदीषत मानुष कछु पुन करेगा । तौ पसू की जोन में पावता है ॥ जो कुछ दान पुन करै सो जोनि मैं आता है ॥ अर्जुनवाच ॥ हे श्री कृष्ण भगवान जो गुरु जो देष्या कैसा होता है ॥ तिसका फल कृपा करके कहो अरु जो विषे उत्तम कौन है । अरु गुरु कैसो वाक्य जगत को करी है ॥ अरु सेवा पूजा का फल कौन है ॥ अरु वैश्नोभगत की करिया जगत रहत कैसी होती है ॥ उससे भिन्न भिन्न दुमति कौन है ॥ श्री भगवानोवाच ॥ हे अर्जुन धन तेरो ज्ञान रूप को अरु वैश्नो धर्म तेरा तुमको भावना है अरु

देषोया दो अक्षर है। यह जे हरि हरि सदा जपिये। हे अर्जुन वैश्नो अपना करिके ओं नमो नारायणाय श्री मंत्र एक मन होइ कर जपे सो मेरा भगत है॥ सो वैकुंठ को प्रापत होता है सो मेरा भगत जानना॥ यह साधू भगत छोड़ के मनुष के गर्भ वास होना है॥ हे अर्जुन मनुष का देह में। साढे तीन करोड़ रोमावली है तब लग नरक में जाता है॥ इह गीता गर्भ है॥ श्री इति भगवत गीता सुपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन संवादे गर्भ गीता संपूर्णम् शुभम्।

Subject :—गर्भवास पाकर कौन दुख और कौन सुख भोगता है, कौन किस कर्म से नरक व मोक्ष प्राप्त करता है, आदि प्रश्न श्री कृष्ण जी ने अर्जुन को समझाया है।

No. 479. Garuḍa-Purāṇa. Leaves—75. Deposited with Lālā Gaṅgotrī Prasāda, Village Ālhāpura, Post Office Pariyāvā, District Prātāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः गरुड़ जी श्री भगवान जी सों पूछत भये श्रीभगवत के प्रसाद करिकै तीन्यौं लोक बैकुंठ आदि दै सचर अचर जीव संपूर्ण देखे उत्तम स्थान मध्यम स्थान अधम स्थान ए मैंने संपूर्ण देषे कछू देषन की अभिलाषा रही नहीं॥ १ ॥ पाताल तै लैके सप्त लोक पर्यंत संपूर्ण देषे—जम लोक को दर्सन कीनौं नहीं॥ श्लोक॥

भगवत प्रशादात् वैकुंठ त्रैलोयां सचराचरं मयाविलोकितं।
मयाविलोकितं सर्वं उत्तम अधम मधिमा॥ पातालात् सप्तंर्यंतः पुरमास्यं
विना प्रभो भूर्लोक्त सर्वं लोकानां प्रचुरः सर्व जंतस्॥

पृष्ट—१५०

End :—

एक तो हरि कौ नाम भागीरथी कही मैं गंगा जी कौ नाम और विप्र संसार में ये तीनि वस्त सार हैं ये तीन्यो वात तरण तारण हैं॥ १५॥ मंगलं भगवान विष्णु मंगलं गरुड़ध्वजं मंगलं पुंडरी काक्षं मंगलाय तनो हरि॥ १६॥

× × × ×

जिनके लक्ष्मी नारायण दमोदर हृदैमें विराजे हैं तिन पुरुषन को सदा जै हैं सदा लाभ्य है तिनको कबहु हारि आवै नहीं सदा जनारदन सहाय रहत हैं॥ १८॥ या कथा के सुनैते पुस्तक की पूजा कीजे भेट अभाग्ये गउदान दीजै मुद्रका दीजे अथवा वीरी पुस्तक की पूजा कीजै॥ १९॥ जे प्राणी भगवत् भाव सौ सुनै गरुड़ पुराण की कथा सुनै तिनकी आयु बृधै जम लोक मार्ग को देष नहीं नर्क में पैर नहीं सर्व पापन ते छूटै नित्यानंद होय॥ २०॥

सूत जी...

Subject :—

(१) पृ० १ से पृ० ५ तक——प्रथम अध्याय-गरुड़ भगवान संवाद; वृषोत्सर्ग वर्णन।

(२) पृ० ८ से पृ० १४ तक——द्वितीय अध्याय जीवित क्रिया विधि अर्थात् जीवन काल में धर्म, दाता पूजनादि का विधान।

(३) पृ० १४ से पृ० १९ तक——तृतीय अध्याय। प्रेत वाक्य वर्णन, पिंड-दान। एकादशाह, त्रयोदशाह आदि कर्मों के दिन निश्चय करने की विधि।

(४) पृ० २० से २८ तक——चतुर्थ अध्याय। प्रेतों की यममार्ग पुरी का वर्णन। यमदूत तथा प्राणियों का वार्तालाप तथा प्राणियों के कृत कर्मों का दिग्दर्शन।

(५) पृ० २९ से पृ० ३४ तक—पंचम अध्याय। ग्यारहवें दिन के पिंडदान का फल तथा शैयादान का विधान। त्रयोदशाह की विधि, नरकों के नाम और पाप कर्मों के अनुसार उनकी प्राप्ति का कथन।

(६) पृ० ३५ से पृ० ३९ तक—षष्टमोध्याय। पाप तथा कर्मानुसार फल की प्राप्ति (यमलोक वर्णन)।

(७) पृ० ४० से पृ० ४६ तक—सप्तमोध्यायः। प्रेत का निवास स्थान, प्रेत लोकान्तर प्रेत के जाने का स्थान तथा उनके कर्मभोगों का वर्णन। प्रेत योनि प्राप्ति का कारण तथा उनके भोजनादि का कथन।

(८) पृ० ४७ से पृ० ५१ तक—अष्टमोध्यायः। कलियुग में नियत सौ वर्ष पूरी भी आयु न होने का कारण। अवस्था भेद वर्णन। पांच वर्ष तक की अवस्था के पापों में फंसने-भोगने का विधान। गर्भ तथा गर्भ से बाहर आते ही मरने वाले जीव की अन्त्येष्टि का विधान।

(९) पृ० ५२ से पृ० ५७ तक—नवमोध्यायः। घट कर्म सपिंडी कर्म तथा वर्ष दिन तक पिंड दान करने का वर्णन। स्त्री के सती होने का फल।

(१०) पृ० ५८ से पृ० ६४ तक—दशमोध्याय। मनुष्य की क्रिया का कथन तथा उसके संबंध में परलोक सुख वर्णन। वक्रवाहु का आख्यान (राजा के प्रति प्रेत की स्तुति)।

(११) पृ० ६५ से पृ० ६९ तक—एकादशमोध्याय। उक्त आख्यानांतर्गत प्रेत श्राद्ध वर्णन।

(१२) पृ० ७० से पृ० ७३ तक—द्वादशमोध्याय। दान महात्म्य वर्णन।

(१३) पृ० ७४ से पृ० ७८ तक—त्रयोदशमोध्यायः। शरीर भेद वर्णन।

(१४) पृ० ७९ से पृ० ८७ तक—चतुर्दशमोध्यायः। जीव उत्पत्ति वर्णन।

(१५) पृ० ८८ से पृ० ९४ तक—पंचदशमोध्यायः । यम लोक वर्णन ।

(१६) पृ० ९५ से पृ० १०० तक—षष्टदशयाध्यायः । धर्म अधर्म के लक्षण तथा पिंड प्रधान वर्णन ।

(१७) पृ० १०१ से पृ० १०४ तक—सप्त दशमोध्यायः । शैयादान की महिमा का वर्णन ।

(१८) पृ० १०५ से पृ० १११ तक—अष्ट दशमोध्यायः । दाह संस्कार विधान तथा सूतक लगने का कथन । श्राद्ध-दानादि कथन तथा मिस्रति ।

(१९) पृ० १११ से पृ० ११८ तक—नवदशमोध्याय वर्णन । अनशन व्रत वर्णन तथा घट दान का नियम और दान दिये जाने वालों की गणना । दान किसको दिया जाय, दानग्राही का लक्षण ।

(२०) पृ० ११९ से १२३ तक—एको विंसतिमोध्यायः । कैसा फलदान करने तथा कैसा तीर्थ करने से मोक्ष होता है । किस प्रकार का दान करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है ।

(२१) पृ० १२३ से पृ० १२७ तक—द्वाविंसति अध्यायः । सुतक निर्णय, चारों वर्णों में किस प्रकार सूतक लगता है (शुद्धाशुद्ध वर्णन) ।

(२२) पृ० १२८ से १३६ तक—त्रिसंमोध्यायः । (मोक्ष वर्णन) अकाल मृत्यु तथा अन्य प्रकार की मृत्युओं का वर्णन ।

(२३) पृ० १३६ से १३९ तक —चतुर्विसतिमोध्याय । वत्स विधि वर्णन ।

(२४) पृ० १४० से पृ० १४५ तक—पंच विंसतिमोध्यायः । सुकृत करने वाले के फलादि का वर्णन । पापियों की योनि प्राप्ति का विधान ।

(२५) पृ० १४५ से पृ०........तक—वैतरणी नदी के विस्तारादि का वर्णन । गोदान विधि, गरुड़ पुराण श्रवण विधि ॥

No. 480. Garuḍapurāṇa-Bhāsā. Leaves—72. Dated in Samvat 1924 or A. D. 1867. Deposited with Paṇḍita Murlīdhara Dube, Village Laharapura, District Sītāpur (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः॥ अथ गरुड़ पुराण लिष्यते ॥ श्री भगवान सोई संसार विषे वृक्ष रूपी सदा विराजते हैं कैसा तावृक्ष को धर्म मूल है वेद स्कंद पुराण शाखा है कृतफूल है मोक्ष फल है असो वृक्ष स्वरूपी भगवान है तिनके चरणारविन्द की सदा जय रहो ॥ हे वैकुंठ नाथ तुम्हारे प्रसाद कहे ते कृपा ते

तोनो लोक देषे हैं। उत्तम स्थान भुर्लोक, भुवलोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक, सत्य लोक, अधमलोक अतल वितल सुतल तलातल रसातल महातल पाताल मध्यम मनुष्य लोक ते सब देषे हैं॥ पृथ्वी ते ऊपर सत्य लोक तांई है प्रभु मैं सर्व लोक देषे एक मय पुरी विना सो मनुष्य लोक के प्रचुर कइ भांति यमलोक को जाते हैं॥ मनुष्य देह सर्व योनि में श्रेष्ट है भुक्ति युक्ति को दाता है पुन्य आत्मा जोव है जिन मनुष्य देह पाई है सो मनुष्य समान न भूत न प्राणी कोई न हुवो न कोई होनहार हो। गायंति देवता मनुष्य जन्म की महिमा गावत हैं अनेक जन्म के पुन्य के प्रभाव करिके मनुष्य देह पाई है ते धन्य हैं सो फल स्वर्ग लोक को दाता है और मोक्ष को देनहारा है ऐसो मनुष्य देह है॥

End :—हे गरुड़ जैसे धर्म की जीत है पाप जीते नहीं। सत्य की जीत है असत्य जीते नहीं। क्षमा की जीत है क्रोध की जीत नहीं जैसे विष्णु भगवान की सदा जीत रहे असुरन की सदा हार है उनको सदा लभ्य है निश्चै करिके। एक तो हरिगंगा भागीरथी ब्राह्मण ये तीन वस्तु संसार विषै सार हैं। जिनके मन में पुंडरीकाक्ष भगवान को नाम है सो मनुष्य सदा पवित्र है। मंगल रूपी भगवान को नाम है जिनके मन में पुंडरीकाक्ष श्री गरुड़ध्वज बसे हैं उनके सदा मंगल हैं सूत जी सैानकादिकान सूं कहत हैं ऐसो वचन श्री भगवान को वचन सुनि के गरुड़ जी के मन में बहुत हरष उपज्यो तब तीन प्रदक्षिणा कीनी। गरुड़ जी ने भगवान की वानी सुनि के गरुड़ जी को ज्ञान बहुत उपजो या कथा को सुनि के ऐसो यह प्रेम की कथा श्रवण करै जिनको यम लोक को भय कबहुं व्यापे नहीं श्री भगवान गरुड़ को संवाद है यों कथा सूत जी ने नैमिषारन विषे ८८००० हजार रिषीश्वरन को शैानिकादिकन को सुनावत हैं या कथा को चितु लाय के हेत करिके सुनी जाके सर्व पाप जात रहैं। और दया उपजै धर्म करिके जय रहै सहस्र अश्वमेधयज्ञां की बराबर पुन्य है और सेवक रैा वाजपेय यज्ञां की बराबर जज्ञां की फल है करवाने वालों की और कथा के सुनने मात्र करिके संपूर्ण धर्म करि दिया उन मनुष्यों ने निश्चय करिके सत्य जानियो इति श्री गरुण पुराणे प्रेत कल्पे अष्टादशके साहस्त्रं संहितायां उत्तर खंडे कृष्ण वैनतेय संवाद जन्म देष सूचनो नाम चतुर त्रिशोध्याय संवत् १९४७ पोष सुदी चतुदस्याम शुभम् या इदं पुस्तकं दृष्टवाताद्दशं लिष्येत मया यदि शुद्धम शुद्ध वा ममदोषो मदीयते॥ लिषा भरणीधर पंडित

Subject :—गरुड़पुराण भाषा (मनुष्य के मरने पर क्या होता है या उसकी गति किन कर्मों से क्या होनी चाहिये)

No. 481. Garudapurāṇa-Saṭīka. Leaves—84. Deposited with Paṇḍita Mahāvīra Pāṇḍe, Village Sagarāmapura, Post Office Madhauganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ गरुड़ पुराण सटीक लिष्यते ॥ श्री गरुड़ोवाच ॥ धर्म दृढ़ वद्ध मूलो वेद स्कंध पुराण शाखाढ्य कृत कुसुमो मोक्ष फलो मधुसूदन पादयो जनयति ॥ १ ॥ तार्क्ष्य उवाच ॥ भगवत् प्रसादाद्वैकुंठं त्रैलोक्यं सचराचरम् मया विलोकितं सर्वं मुत मध्यमध्यम् ॥ २ ॥ भूर्लोकात सप्त पर्यंत पुरं याम्य विना प्रभो भूर्लोकात्सर्वं लोकानां प्रचुर सर्व जंतुषु ॥ ३ ॥

टीका ॥ श्री भगवान सोई संसार विषै वृक्ष सरूपी सदा विराजैं हैं कैसो ता वृक्ष को धर्म मूल है वेद स्कंद है पुराण शाखा है कत फूल है मोक्ष फल है ऐसो वृक्ष स्वरूपी भगवान है तिनके चरणारविंद की सदा जय रहै ॥ १ ॥ हे वैकुंठनाथ तुम्हारे प्रसाद कहेते कृपाते तीनों लोक के देषे हैं—उत्तम स्थान भूर्लोक १ भुवर्लोक २ स्वर्ग लोक ३ महर्लोक ४ जन लोक ५ तपलोक ६ सत्यलोक ७ अधम । नीचे के लोक अतल १ वितल २ सुतल ३ तलातल ४ रसातल ५ महातल ६ पाताल ७ मध्यम ८ मनुष्य लोक ते सर्व देषे हैं ॥ २ ॥ पृथ्वी ते ऊपर सत्यलोक ताई हे प्रभु मैं सर्व लोक देषे एक यमपुरी विना सो मनुष्य लोक के प्रचुरः कइ भाँति यम लोक कूं जात हैं ॥ ३ ॥

End :—अपवित्रेपवित्रेवा सर्वावस्थांगतो पिवा यस्मरेत् पुंडरी काक्षं सवाह्याभ्यं तरशुचि ॥ ३७ ॥ मंगलं भगवान विष्णुं मंगलं गरुड़ध्वजं मंगलं पुंडरी काक्षं मंगलाय तनो हरी ॥ ३८ ॥ श्री सूत उवाच : ॥ इति विष्णु वच श्रुत्त्वागरुड़ो हस्ट मानसः तं विष्णु त्रिर्पारिक्रम्य ज्ञान वान सम जायनः ॥ ३९ ॥ यस्य मरण मात्रेण धर्म जयच दायानि भगवान गरुण पाख्याने कथा पापहरा परा ॥ ४० ॥ अस्वमेध सहस्राणि वाजपेय शतानिच कथा श्रवण मात्रेण सर्व धर्म कता निते ॥ ४१ ॥ इति

टीका.—मंगल भगवान को नाम है जिनके मन से पुंडरीकाक्ष श्री गरुड़ध्वज वसे हैं उनके सदा मंगल है ॥ ३८ ॥ जिनके मन में पुंडरीकाक्ष भगवान को नाम हैं सो मनुष्य सदा पवित्र है ॥ सूत जी सैानकादिकन सूं कहत हैं ऐसा वचन श्री भगवान कैा सुनि गरुड़ जी के मन में वहुत हरष उपज्यैा तव तीनि प्रदक्षिणा कीन्हीं गरुड़ जी को भगवान की वाणी सुनिकै गरुड़ जी के ज्ञान वहुत उपज्यैा या कथा कूं सुणि कै ॥ ३९ ॥ ऐसी यह प्रेत की कथा श्रवण करै तिनकैा यमलोक कैा भय कवहूं व्यापै नहीं । श्री भगवान गरुड़ कैा संवाद है । जो कथा सूत जी ने नैमषारण्य विषैं अठासी सहस्र ऋषि स्वरन कूं शौनकादिकन कूं

सुणावत हैं या कथा कूं चित लायकैं हेत करके सुणै जाके सब पाप जात रहैं और दया उपजै धर्म करिकै जय रहै जय होय ॥ ४० ॥ सहस्र अश्वमेध यज्ञों की बराबर पुन्य है और सैकरों वाजपेय यज्ञों की बराबर फल है—करवाने वाले कूं, और कथा के सुनने मात्र करिकैं संपूर्ण धर्म कर दिया उन मनुष्यों ने निश्चै करिकै सच जानिये ॥ इति श्री गरुण पुराणे प्रेत कल्पे टीकायाँ अष्टादशेक सहस्रं संहितायां उत्तर षंड कृष्ण वैनतेय संवादे जन्म देव सूचनो नाम् चड स्त्रिशोध्याय ॥ ३४ ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ७ तक—प्रथम अध्याय।
व्रतोत्सर्ग करने का आदेश, उसका फल और करने के अधिकारी।

(२) पृ० ७ से पृ० १६ तक—द्वितीय अध्याय।

दानादि क्रिया जो अपने हाथ से अथवा सबंधियों के हाथ से कराई जाय; चेत में अथवा अचेत में कराई जाय उसका फल। उत्सर्ग विधि, पिंड दान विधान, यमलोक के मार्ग में पड़ने वाले पुर। मार्ग में पितृ का पश्चात्ताप।

(३) पृ० १६ से पृ० २१ तक—तृतीय अध्याय।

मासिक श्राद्ध का फल, शौरिपुरादि पितृ के विश्राम स्थल, उनकी भयंकरता तथा उससे विमुक्त होने के लिये त्रिपक्षादि क्रियाओं का विधान।

(४) पृ० २१ से पृ० २५ तक—चतुर्थ अध्याय।

वैतरणी इत्यादि के दुख तथा उनसे विमुक्त होने के उपाय।

(५) पृ० २६ से पृ० २९ तक—पंचमोध्याय।

दान के पदार्थों का वर्णन; बड़े-बड़े इक्कीस नरकों के नाम; पापों की परिभाषा, और उनके लिये पिंडादि विधान।

(६) पृ० ३० से पृ० ३२ तक—षष्टमोध्यायः।
प्रेत कथन, चित्रगुप्त के मंदिर का वर्णन, शुभाशुभ कर्म फल।

(७) पृ० ३३ से पृ० ४१ तक—सप्तमोध्याय संस्थापन)
प्रेत वास वर्णन अथवा उनके द्वारा अनेक प्रकार की पीड़ाएं तथा प्रेत योनि पाने का कारण।

(८) पृ० ४१ से पृ० ४६ तक—अष्टमोध्याय।

प्रेतों के लक्षण, उनकी मुक्ति का विधान, नारायण वलि का फल व विधान।

(९) पृ० ४७ से पृ० ५० तक—नवमोध्यायः।
मनुष्य के भिन्न कर्मों के कारण अल्प अथवा अधिक होने का कारण।

(१०) पृ० ५१ से पृ० ५३—दशमोऽध्यायः ।
मृतक के लिये पुराण विधान ।

(११) पृ० ५४ से पृ० ५९ तक—एकादशमोऽध्यायः ।
दीप दानादि विधान । पुत्र निर्णय ।

(१२) पृ० ५९ से पृ० ६७ तक—द्वादशमोऽध्यायः ।
सपिंडि सति महिमा ।

(१३) पृ० ६८ से पृ० ७१ तक—त्रयोदशोऽध्यायः ।
ऊर्द्ध देह क्रिया, वज्रवाहन राजा का आख्यान ।

(१४) पृ० ७१ से पृ० ७७ तक— चतुर्दशमोऽध्यायः ।
ऊर्द्ध क्रिया का विधान, प्रेति योनि पाने का कारण ।

(१५) पृ० ७८ से पृ० ८२ तक—पंचदशमोऽध्यायः ।
कपिला दान तथा यज्ञोपवीत धारण फल; मृत्यु के समय के दान ।

(१६) पृ० ८२ से पृ० ८६ तक— षष्टदशमोऽध्यायः ।
विविध दानों के विविध फल, शरीर वर्णन ।

(१७) पृ० ८७ से पृ० ८९ तक—सप्तदशमोऽध्यायः ।
शुभपुराण वर्णन ।

(१८) पृ० ९० से पृ० ९३ तक—अष्टदशमोऽध्यायः ।
शरीर विपत्ति वर्णन ।

(१९) पृ० ९४ से पृ० ९८ तक—एकोनविंशोऽध्यायः ।
स्त्री के गर्भ का वर्णन, शरीर वर्णन ।

(२०) पृ० ९९ से पृ० १०२ तक—विंशोऽध्यायः ।
जंतोत्पत्ति लक्षण ।

(२१) पृ० १०२ से पृ० १०७ तक—एकविंशोऽध्यायः ।
यमपुरी, पुण्य वर्णन ।

(२२) पृ० १०८ से १११ तक—द्वाविंशोऽध्यायः ।
यम मार्ग कथन ।

(२३) पृ० १११ से पृ० ११६ तक—त्रय विंशोऽध्यायः ।
शय्यादान कथन ।

(२४) पृ० ११७ से १२१ तक—चतुर्विंशोऽध्यायः ।
सपिंडी कारण ।

(२५) पृ० १२२ से पृ० १२९ तक—पंचविंशोध्यायः।
श्राद्ध विधान, प्रेत पंचक दोष, मृतक वार्ता वर्णन।

(२६) पृ० १३० से पृ० १३४ तक—षटविंशोध्यायः।
पितृ निर्णय वर्णन।

(२७) पृ० १३४ से पृ० १३८ तक—सप्तविंशोध्यायः।
शालिग्राम महिमा वर्णन।

(२८) पृ० १३८ से पृ० १४१ तक—अष्टविंशोध्यायः।
कुंभदान महात्म्य, तथा कुंभदानादि पात्र वर्णन।

(२९) पृ० १४१ से पृ० १४५ तक—एकोनत्रिंशोध्यायः।
नारायण वलि विधि कथन।

(३०) पृ० १४५ से पृ० १४९ तक—त्रिंशोध्यायः।
नारायण वलि त्रयोदश पदादि का वर्णन।

(३१) पृ० १४९ से पृ० १५१ तक—एकत्रिंशोध्यायः।
वृषोत्सर्ग विधि।

(३२) पृ० १५२ से पृ० १५७ तक—द्वात्रिंशोध्यायः।
वृत्ति सूतक वर्णन।

(३३) पृ० १५७ से पृ० १६१ तक—त्रतिंशोध्यायः।
वैतरणीदान विधि।

(३४) पृ० १६१ से पृ० १६८ तक—चतुस्त्रिंशोध्यायः।
कृष्ण वैनतेय संवाद, जन्मदेव सूचन।

No. 482. Ghoḍoṅ kā Ilāja. Leaves—90. Deposited with Paṇḍita Rāghavarāma, Teacher, Primary School, Āmāmaū, Post Office Gaḍavārā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—

पृष्ठ ५

चार वरस की उम्र तक घोड़े से काम न लेना चाहिये क्योंकि उस समय काम कराने से जवानी में अच्छा काम नहीं कर सकते। सिर्फ लगाम का उनको अभ्यास कराना चाहिये।

दूसरा अध्याय

जिन्स और कुम्मेत का बयान॥ जिनके नाम नीचे लिखे जाते हैं वे घोड़े असली होते हैं—जैसे मगरवी, ताज़ी, अरबी, खुरासानी, इराकी, यमन, तुर्क,

तातार, खुतन, अदन, चीन, मा चीन, तुरान, कावली, काशमीरी, ईरानी और मराथन और जो हिंद में हैं वे ये हैं—काठियावाड़, भोटिया, रंगपुर, घोड़ा घाट, जहां कि छोटी खूंटी का होता है और इसकी ये आदतें हैं कि जब तक तुमें खबर्दार न करले तब तक न कानों को दबाये न दांतों से काटे न पुश्तंग मारै ॥

End :—

॥ तेईसवां नुकता ॥

जो घोड़ा मुंह जोरी करे उसका इलाज ॥ चिरचिरे को जला फिर इमली का पानी मिला दहाने को पांच छे बार बुझावे ॥ दूसरी ॥ लकड़ी का बाल मंगा कर हठीके होवे उन्हें गुलाव में पीस कर फिर उसी गुलाब में दहाने को सात बार बुझावे फिर उसी लगाम को लगावे ॥

॥ चौबीसवां नुकता ॥

जो घोड़ा दो पैरों से खड़ा हो जावे उसका इलाज ॥ सवार को चाहिये कि तर कपड़ा अपने पास रक्खे जब घोड़ा खड़ा होवे तब पानी कान में निचोड़ देवै ॥ दो चार दफा ऐसा करने से आदत छूट जाती है ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ४ तक—प्रथम अध्याय शुरू।

(२) पृ० ५ से पृ० ३८ तक—जिन्स तथा कुम्मत की पहिचान, अन्य रंगों के घोड़ों की पहिचान, घोड़ों के सौन्दर्य की पहिचान, शकलों की पहिचान, दोषों की पहिचान आदि।

(३) पृ० ३९ से पृ० ८६ तक—बीमारी के भेदों का बयान, बीमारियों की पहिचान; वात, पित्त और वायु की पहिचान; मूत्र परीक्षा, आंख की बीमारी तथा उनका इलाज, मुख सम्बन्धी रोगों का इलाज, कोलास बीमारी का इलाज, सुफी और सीना बंद आदि का इलाज, पेल बंद नाम और बिनाम का इलाज।

(४) पृ० ८७ से पृ० १२२ तक—किरम का इलाज, पट्ठे फड़कना; ताप करने, वीर हड्डी, इन्दमाल, वजरहड्डी, जानुप, हड्डी, मेतड़े, पुश्तक और चक्रवल का इलाज, बैजा और काने का इलाज, रसौली, सुम सम्बन्धी औषधियां—खुर्दगाह, कमर व पीठ के रोगों तथा सूजनों का इलाज, लिंग व दुम संबंधी रोगों की औषधियां, खुजली वगैरह अन्य प्रकार के इलाज नाक, दांत और जबान सम्बन्धी रोगों के इलाज, कुरकुरी का इलाज, तप का इलाज।

(५) पृ० १२३ से पृ० १७० तक—दुआ और ताबीज घोड़ों के बांधने, छोड़ने और खिलाने पिलाने सम्बन्धी कुछ आदेश। हाजमे आदि के चूरन व मसाले, कुछ जुलाब और दस्त बंद करने के नुसखे। बच्चे लेने और हमल कायम करने की तरकीब, आख्ता करने की तरकीब, मरहम बनाना।

(६) पृ० १७१ से पृ० १८० तक—दलालों की बोली और हिकमत।

(७) पृ० १८० से पृ०............तक—लुप्त।

No. 483. Gītā Gadyānuvāda. Leaves—96. Deposited with Paṇḍita Durgā Prasāda Tivāri, Bandha (Varīpāl).

Beginning:—चौपुत्र ॥ सोई तनै महारथो पांडवनको तरफ़ के हैं अरु हमारो कोइ कहै ते तुम सुनहु ॥ संजय उवाच ॥ तव संजय रोषो सुर राज धृत राष्ट्र जुसैां कहत हैं ॥ कै सुनैा हो राजा कैारोवन का स्यान्या विषैं सब दल ग्यारा छोहनी जुरत भये ॥ छत्र धारो मुकट वंद राजा जर जोधनको तरफ़ जुरैहैं कुर छेत्र विषै ॥ तिनमें महारथो कहो जत है ॥ ते तुम सुनहु ॥ तव राजा जर जोधन अरु राजा दुस्सासन श्रौर भग दंत राजा श्रौर राजा करन श्रौर राजा कोरत अरु राजा वरम अरु राजा संल। अरु राजा भोषम पितामह अरु दैाना चारज गुरु सो इतने महारथी जर जोधन की तरफ़ भये ॥

End:—रात वादो काहूसैां हेत वेरु न करै वन तप॥ साचैा बोलै जाके वोले श्रौर कैा काज होइ अपुन पढ़ै श्रौर पै पढ़ावै सो वन रूप तप कहावे॥ अथ मान तप॥ मन प्रसन्न इन्द्रो वस्य॥ सत्य वादो मोजसैा रहिजै तासैा मान तप कहावै॥ राजसी कहियतु है॥ श्रद्धा कोनै फल कैाऊन वांछो ये सातु कभाव तप कहिये॥ अपने तपको बड़ाई करै दंभ लालची सुताकैा राजसो तप कहिये॥ अथ तामसो तपु॥ हठ धर्म कोजै श्रौर कैा दुख होइ अपने सरीर कैा सुख होइ सो तामसो तप कहावै अथ तीनि भांति के दान क ... . इति॥

No. 484. Grahaṇo-kī-Pothī. From Samvat 1927 to Samvat 2012. Leaves—32. Dated in Samvat 1928 or A. D. 1871, Samvat 1931 or A. D. 1874. Deposited with Paṇḍita Badrīprasāda, Village Navīnagara, Post Office Laharapura, District Sītāpur (Oudh).

Beginning:—श्रो गणेशायनमः॥ श्रो पार ब्रह्मर्णाचदानंदायनमः॥ सर्य चन्द्र ग्रहण लिख्यते। संवत् १९२९ वि० से संवत् २०१२ वि० तक॥

चंद्र ग्रहण

संवत् १९२९ शाके १७९४ वैसाष १५ वुधे ५८।५६।१०८ चक्र ३२ वाराविः १।१०।११।४५ गः ५७।२८ चंद्र ७।१०।११।४५।८।३४।३९। राहु १।२१।११।२८ व्य. ११।१९।००।१७ भुज १०।५९।४३ शर १७।१६६० चं।

वि० ११। १६। कु २९। ११ मा. ख. २०। १३ ग्रास २। ५७ स्पर्श। ५६। १० मोक्ष १। ४ चउ ४। द. ग्राउ. २। ५७। ५। ५४

सूर्य ग्रहण

संवत् १९२९ वि० शाके १७९४ ज्येष्ट ३० गुरौ ४। ४उ. १२३ चक्र ३२ रवि: १। ३३। ३५३। ५७। १३ चद्र। १।२३। ३। ५३।७४। ३। २१॥ राहु १। २० २७। ४। व्यः २। ३६। ४९ लंबन ३। ३१। सू. स्पष्ट शरद। २४ द. सू. वि. १०। २४ चं वि. १०। ३ मा. ख १०। १३। ग्रास ३। ४९ स्पर्श ५८। ३९ मोक्ष. २। ४० व उ. ३। २४ उत्त प्राशा. ४। ४४। ४। १६

End :—

सूर्य ग्रहण

संवत् २० १२ साके १८७७ आषास्य ३० सि० मो० ११। ३८उ. २३। ३९ च रविः २। ४ ।४२। ५२ गतिः। ५७। २ चं. २। ४। ४२। ५२ गट। ५। २ रा.। ८। ३। ९। ६॥ व्य. गु.। ६। २। ३। २। ४६ वि भोग। ६९। ९ लं. २। ३५ सू. स्य. ८ शर ५। १३ यान्य सू. वि० १०। २१ चं. वि. ११। ३१ मा. स्य. १। ५७ ग्रा. ५। ४४ स्थि. २। १६ स्प.। ५। ५१ मोक्ष १२। ३९. व. उ २। ५८ उत्त ग्रा. ५। ३६॥

चंद्र ग्रहण

संवत २०१२ शाके १८७७ कार्तिक १५ भौमे. ३९। १८ उ २५. १ चक्र ३९ रविः ७। ७ ३१। ४६। ५६.। ५५ चं. १। १३। १०। ५६ ग. ८४९। ४७ राहु ७। २४। ३२। २५ स्यः १७। १८। ३८। २० भुज ११। २१। ३९। शर १७। ५१ या. चं. ११। २९ कुं २९। २३ मा. २०। २६ या. २। ३५ स्थि २। १७ स्प. ३७। २१। मोक्ष ४१। ५५ वल. १। ३७ उ. ग्रा. शां २। ५॥

इति ग्रहणावली संपूर्णम् समाप्तः लिषतं हरदोई निवासी पंडित झासोराम सं० १९३१ वि.।

Subject :—संवत् १९२९ वि० से सम्वत् २०१२ तक के सूर्य ग्रोर चंद्र ग्रहण वर्णन।

No. 485. Grahaṇo kī-Pustaka. From Samvat 19-9 to Samvat 2012. Leaves—40. Dated in Samvat 1928 or A. D. 1871—Samvat 1934 or A. D. 1877. Deposited with Paṇḍita Gaṅgāviṣṇu Jyotishī, Village Banthara, District Unnāva (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः । श्री पार ब्रम्ह सच्चिदा नंदायनमः । सूर्य चन्द्र ग्रहण लिख्यते ॥ चन्द्र ग्रहण संवत् १९२९ शाके १७९४ वैसाष १५ बुधे ५९ । ५८ · । १०८ चक्र ३२ ता रवि १ । १० । ११ । ४५ ग. ५७ । २७ चन्द्र ७ । १० । ११ । २७ ॥ ८३४ । २९ राहु । १ । २१ । ११ । २८ · व्य. । ११ । १९ । ०० । २७ भु. १० । ५९ । ४३ शर १७ । १६ । द · चं · वि · ११ । १६ कु · २९ । ११ म · खं · २० । १३ ग्रास ३ । ४९ स्पर्श ५८ । ३९ मोक्ष २ । ४७ वं ८ ३ । २४ उत्त याशां २ । ५७ । ५ । ५४ ।

सूर्य ग्रहण संवत् १९२९ शाके १७९४ जेष्ठ कृष्ण ३० गुरो ४ । ४८ १२३ चक्र ३२ रविः १ । २३ । ३५३५७ । १३ चं · १ । २३ । ३ । ५३ । ७४ । ३ । २१ रा. १ । २० । २७ । ४ व्यय २ । ३६ । ४९ । लंबन ३ । २१ अ स्पष्टशर ६ । ३४ द. सु वि १० । २४ चं · वि · १० । ३८ मा. ख १०८ । २३ । ग्रास ३ । ४९ स्पर्श ५८ । ३९ मोक्ष २ । ४७ व. ८ ३ । २४ उत्त ४ । ४४ ४ । १६

End :—(चंद्र ग्रहण) संवत २०११ वि · शाके १८७६ अषाढ़ १५ बुधे । ३४ । ८२ चक्र ३९ रवि २ । २९ । २६ । १४ गतिः ५७ । चं · ८ । २९ । २६ । १४ गति ७७९ । ५३ रा । ८ । २१ । ७ । ४७ व्यगुः ६ । ८ । १८ । २७ शर १३ । २ यामा चं० वी १० । ३२ । कुं २८८४४ मा खं १८ । ३८ मा० ५ । ३६ स्थि · ३ । २० स्प० ५६ । ५८ मो० ३ । २८ च०८१ । १ द · आशां ४ । १८ ग्रस्तास्तम् ॥

(चंद्र सूर्य ग्रहण)

सं० २०१२ शाके १८७७ अषाढ़ ३० सोमे ११ । ३८८ · २३ । ३९ चं० वि. २ । ४ । ४२ । ५२ । ग · ८५० । २ रा · ८ । ३ । ९ । ६ । व्यगु ॥ ६ । १ । ३ । २ । ४६ त्रि भोन ६९ लं · ९ । २ । ३५ सु · स्प · ८ शर ५ । १३ याम्य सु वि · १० । ११ चं · वि · ११ । ३१ मा · खं · १० । ५७ मा · ५ । ४४ स्थि · २ । २६ स्प ५ । ५१ मो · १२ । ३९ व ८ २ । ५८ उत्त · आ. ५ । ३६ ॥

(चंद्र ग्रहण)

सं० २०१२ शाके १८७७ कार्तिक १५ भोमे ३९ । १८ ८ · २५ । १ चक्र ३९ रवि ७ । ७ । ३१० । ४६ । ५६० । ५५ चं · १ । १२ । १० । ५६ ग · प ४९ । ४७ राहु ७ । २४ । ३२ । २५ व्य · १७ । १८ । ३८ । २० भुज ११ । २१ । ३९ । शर १७ । ५१ या चं वि ११ । २९ । कुं · २३ मा · २० । २६ मा २ । ३५ स्थिर २ । १७ स्प · ३७ । २१ मो० ४१ । ५५ बु · ल · १ । ३७ उ · आशां २ । ५ ॥ इति श्री लोकोपकारार्थ कृत ग्रहणा वलो समाप्त मिती माघ सुदी १५ सं · १९३४ वि० ।

Subject :—संवत् १९२९ से संवत् २०१२ वि तक सूर्य ग्रहण वर्णन ॥

No. 486. Haratāla Śodhana. Leaves—8. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—हरतार लेइ तावकी पांच पल सूत एक पल एहि विधि घालु। खल डारि घसि कलो करै एक पहर ज्यों श्रति बरराइ॥ ता पाछे नीवो के पान नीर काढ़ि कै छान॥ वास सो खरै यहि भांति बारह पहर जाइ जब बोति। बहुरि सुषै के सीसी भरै। मुद्रा कै पुनि सुषन धरै। यंत्र वालुका में सो धरै। श्रागि पहर द्वै मदी करै पुनि चढ़तो चढ़तो देइ श्रागि। सोह पहर रैन दिन जागि श्राठ पहर जो छो वैन का मसे सीसी सीतल होइ। तब सीसो देखिये उतारि सातु पासे डरि लागै नारि। लीजै फोरि कहरी फारि फिरि वाही रस खल बहोरि षरलै फेरि पाछिली मर जाद। संख्या तैसो कही है श्रादि।

End :—याको है पन्द्रह की श्रांग पुनि श्रौषधि उडि लागै नारि। बहुरि षलकै ग्यारह जाय ग्यारह यह श्रांगि दे काम। इहि विधि पहर व भागी चोदह सीसी वैसोइ। एहि विधि तार तन सिंघ जो होइ चोदह दिन तंदूल भरि खाइ नासै कुष्ट बुरो बताई। तीन्यो ज्वर तेह संव्यपात॥ श्रपस्मार छिन लागै जात श्रौर वात चोरासी जाइ खाय ते सब नासै तेते। जे सुभ कर्म होइ ते तने। सबे स्वेत हार के विश्रनै जो तर्आर वैठै हरतार तो नीचे टूटै करतार॥१॥ लैहसार तार टंक चालीस। धात्रो गंधक मासे २० दोऊ बांटि जु रत कै धरै। घृत सांनि कै चदिया करै। चुपरि लुहेडा धरिये मांहि दस पल घृत में लिये ताहि। श्रागो धरो द्वै मदो करै पुनि उताकै सीसो भरै। जावरातो दोसै हरतार तब उतरि कै पानी घालु। ताल केरिया नाम याके खाये बाढ़ै काम तेह सन्य चोरासी वा श्रौर वेगैर रक्त विकार॥२॥ श्रथराग विधि महा-रागु भरियै श्रैसे साभानि को बरनो तैसे। रागु षरिया देइ चढ़ाइ॥ तामें दै ऊजवाइनि श्राइ। ढाख लकरिय हारैा सो पहर द्वै मै भस्म जो होइ। ऐसी भांति मंगल जानि ऐसेई षविलो की छाकांटि २ के खपरा घालि उजल मांहि होइ गो वंगु या खाये वनिता सो रंगु। राग पत्र कीजै पातरै। सोय व चिथरन मोलै धरै पुरत परन लै वेढै श्रैसे गेद करै राग पल ५ चिथारा पल १० ।

Subject :—हड़ताल के शोधने की विधि।

No. 487. Hastarekhāvichāra. Leaves—3. Deposited with Rāmaprasāda Murāū, Village Purāviśrāmadāsa, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री मते रामानुजायनमः

श्रथां तः से प्रवक्ष्यामि हस्त रेषा विचारणं॥ दक्षिणे पुरुष स्यैव वामे वाम करस्तथा॥ १॥ शिवो क्तंतत्र सामुद्रं कर रेषा शुभा सु शुभं स्त्री पुरुषो वापि

सामुद्रिक लक्षणं जथा ॥ २ ॥ जस्य मीन समा रेषा करम सिद्धि श्च जायते धनाढ्यस्तु सविज्ञैयो बहु पुत्रै न शंशयः ॥ ३ ॥ तुला ग्राम तथा वज्रं कर मध्ये च दृश्यते तस्य वनिज्य सिद्धिस्या त्पुरुषस्य न शंसयः ॥ ४ ॥ पद्म चांपादि खड्गंच अष्ट कोणादि स्त्रियो पुरुषो वापि धनाढ्यस्य सुखी नरः ॥ ५ ॥ शंख चक्र ध्वजा कारो गदा कारोच दृश्यते सर्व विद्या प्रदानेन बुद्धिमान नसे भवेत् ॥ ६ ॥

सात आदि अरु अंत दस, इतन शंख लषाय।
राजा कहिये दास को, चलै निशान बजाय ॥ १ ॥

एक सोप धन वंत नर, चारों ताही जानि।
चारहु ते जो अधिक है, महा तेज सी मानि ॥ २ ॥

पहुंचा रेखा एक राजा गति जानिए।
पहुंचा रेखा दोय वकता वषानिए।
पहुंचा रेखा तीन महा सुषधाम है।
पहुंचा रेखा चारि दरिद्री नाम है ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

हरिअर नष जा पुरुष को, सो पापी जिय जानि ॥
सदा दुखी वह नर रहै, सामुद्रिक मत मानि ॥ ४ ॥

जासु पुरुष को सुरुष नष, तेजवंत सो होइ।
महा दुखी सो जानिए, असित रंग नष कोइ ॥ ५ ॥

× × × ×
× × × ×

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० २ तक—संस्कृत में हस्तरेखा का फलाफल वर्णन।

(२) पृ० २ से ३ तक—हिन्दी भाषा में उक्त विषय का पद्यानुवाद।

(३) पृ० ३ से ४ तक—संस्कृत में कन्या तथा स्त्री की हस्तरेखाओं के फलाफल का वर्णन।

(४) पृ० ५ में—मणिबंध नामक हस्तचित्र।

No. 488. Hitopadeśa. Leaves—54. Deposited with Rāmagopāla Vaidya Muraū of Alīkātāla, Post Office Pariyavā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—

दोहा—भावी मिटै न भाव की, कारन कहेन पाय।
नील कंठ नागे फिरैं, अहि सोवत हरि आय ॥

विद्या वित ग्रह ग्रायुवल, मरन जन्मये पांच ।
गर्भमये विधि लिषत है, नर नारिन के सांच ।
ग्रनहोनो होनो नहीं, होना होय रहै न ।
यह चिंता विष दूर वढ़गो........दूषये....न ।

॥ चैापाई ॥

जो कारज को ग्रातम होई । यहि विधि वचन कहैगो सोई ॥
ग्ररजन करत ग्रायु ग्रलसाई । ताको संपति रहै न आई ॥
येद चाक्रगत रथनहिं होई । पुरुषा रथ धन लहै न कोई ॥
पूर्व जन्म कियो सो धर्मा । सोई भाग्य कहावे कर्मा ॥
ताते भाग्य चही ग्रनुकूल । जतन करो पुरुषारथ मूल ॥
ज्यों माटी करता कर लेइ । कीन्हें चहे सोइ करि देई ॥
यह उपषान लोग सब गावें । जैसा करै सोतैसा पावें ॥

॥ दोहा ॥

भाग्य भरोसे मंद कह, पुरुषारथ तजरोष ।
जतनकिहे जैा ना मिलै, ता ये है निज दोष ॥

End:— पृष्ठ—१०८

राजा कही कथा यह कैसी । वायस कहो सुनैा है जैसी ॥
कहुं येक वन पन्नग रहै । मंद विसर्प नाम तेहि कहै ॥
सो ग्रसक्त भपु ठेठि न सकै । परयो ताल तोरहि सव तकै ॥
देषि दूरि दादुर कह्यो । क्यों सरिवर ग्रव सन तुम गह्यो ॥
कहो सांपु सुनि दादुर जैसे । मंद भाग मेरो यह है.... ॥
पुनि दादुर सादर ह्वै कहो । कहो कहां मनमें तुम गहो ॥
वृथा कहन पन्नग तव लई । जो ग्रपने सुभाव ते भई ॥
वसै ब्रह्म पुर कैाड़िय नाम । ब्राह्मन ब्रह्म तेज को धाम ॥
बोस वर्ष को वाको वालक । मद काटा सब गुन को पालक ॥
तद्धन मुये किये द्विज सोक । ग्राये सुनि सब वंधन लोक ॥

रन में दुष मे दुभिष में,
राज दुग्रार मसान ।
वाढ़ै वैर विरोध में,
टिकै सो बंधु ममान ॥

Subject :—

(१) पृ० १ से पृ० २ तक—लुप्त।

(२) पृ० ३ से पृ० ६ तक राजा का विष्णु शर्मा से अपने पुत्र के मूर्खत्व को समझाकर उसके विद्याध्ययन संबंधी प्रस्ताव को रखना। विष्णु शर्मा की स्वीकृति तथा बालक को विभिन्न कथाओं का सुनाना। राजनीति की कथा सुनाने की प्रतिज्ञा।

(३) पृ० ६ से पृ० ३८ तक मित्र लाभ की कथा। वायस, कपोत, मृग तथा चूहे की मित्रता के लाभ की कथा।

(४) पृ० ३८ से पृ० ६८ तक—सुहृद् भेद। वृषभराज तथा मृगराज की कथा।

(५) पृ० ६८ से पृ० ९६ तक—विग्रह की कथा, तृतीय प्रबन्धः—चित्रवर्ण मोर तथा राजहंस की कथा।

(६) पृ० ९७ से पृ० १०८ तक—संधि कथा वर्णन (अपूर्ण)।

(७) पृ० १०९ से आगे—लुप्त।

No. 489. Horī. Leaves—20. Deposited with Paṇḍita Lakshmīkānta Koṭhīvāla of Basuāpura, Post Office Lakshmīkāntaganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :— होरी ॥

साधि चलौ तुम म्हामरो जग होरी मचि रही है भारो ॥
किम पाषंड लये कर मै डफ है। वड़ह्व वड़की तारो ॥
त्रिगुन तार तमूरा साजे आस तिसुना गलधारी ॥
पाप पुन्य दोउत पिचकारी छोड़त हैं वारी वारी ॥
जे नल सन मुष होकर पेलै तिनकौ छोंट लगी कारी ॥
लोभ मोह अभिमान भरे लै गंगा ऊपर ढारी।
राजापरजा जोगी तपसो मीजि रही सवहा सारी ॥
कुबुधि गुनाल डार मुष मोड़ौ काम कला पुटरी मारी ॥
जुग जुग पेलन यैां चलि आई काहू सैां नाहीं हारी ॥
जड़ चेतन दो रूप सम्हारे एक कनक दूजे नारी ॥
पांच पचीस लयै संग अवला हंसि हंसि गावत है गारी ॥
चुनुरा नल दै फगुआ छूटै मूरष कैा लागत प्यारी ॥
चरनदास सुषदेव कहत हैं निरगुन ग्यान गली न्यारी ॥

End :— ॥ होरी ॥

होरी पेलत कुंज बिहारी हो हो विहारी ॥
सघन कुंज वन सोवट केट छुरि आई ब्रजनारी ॥

हंसि मुसिक्यात कहत प्रीतम सैां खेलहु फाग खिलाड़ी ॥
खिलाड़ कहावत भारी ॥ चोवा चंदन अतर अरगजा ॥
कुम कुम केसर गारो अबीर गुलाल लिये भर झोरी ॥
कर कंचन पिच कारिरी बले सनमुष बनवारी ॥
तकि पैार चोट करत कुम कुम की भिजवत अंगरंग सारी ॥
मानहु जलद घटा भर भादैां वरसत अति सुष कारी ॥
संग सब गोप कुमारी ॥
ब्रह्मा नंद मगन मनमें हंसि राधः जुगति विचारी ॥
गहि किन लेहु वेगि मन मोहन भाज नहिं जाहि मुरारी ॥
करैा बस मैं हितकारी॥ छनकर कपट गहे नंद मदन ल्याई झुंड मझारी॥
येंदो सिर दृग अंजन आजैा निरंजन मांग सम्हारी ॥ नचावत दै दै तारी ॥ फगुआ लेउ कहत हरि हंसि हंसि जो मन आस तुम्हारी ॥ दरस वरस चाहत हरि अंतर कोविद आस तुमारी कहु कवहुं मति न्यारी ॥

Subject :—

पृ० १ से ४० तक—विविध सन्तों द्वारा रची गई होलियों का संग्रह ।

No. 490. Hridaya Prakāśa. Leaves—16. Dated in Samvat 1779 or A. D. 1722. Place of deposit B. Rāma Manohara Bichpuriyā, Purānī Bastī, Katni Murwārā, Jubbulpore (C. P.).

Beginning :—श्री जुगल कीशोरराय नमः श्री हिदे प्रकाश ग्रंथ लिषिते ॥

दोहा—उदं साहि के सुतभए ॥ प्रेम चंद आनंद ॥
तिनके भुप भागोत हुव ॥ तिनका चंपति नंद ॥ १ ॥
चंपति संपति जक्त की ॥ लीन्हें दीन्हे दांन ।
गाहैं दाहैं मुलक सव ॥ माहनि सुकरि आंन ॥ २ ॥
चंपत के छत्र शालउव ॥ तागुन अपरं पार ॥
मारन कलि अग्यांन कैां ॥ भयो ज्युं बुध अवतार ॥ ३ ॥
प्रान नाथ सनाथ कीय ॥ छत्र शाल सुत जान ॥
हिर्दे हिर्दे शाहै कें ॥ दीन्ही भक्ति निदान ॥ ४ ॥
अथ सत गुरु श्री देव चंद वरनंन ॥ दोहा ॥
उमर कोट जह नगर है ॥ दिसा पश्चिम सुभ धाम ॥
दया धरम अति नरन कें ॥ संत लेत विसराम ॥ ५ ॥
का यथ कुल में प्रगट हुव मत्तू महता जानि ॥
श्री देव चंद तिनके भए ॥ धाम वासना आनि ॥ ६ ॥

End :—वेद कहत बुध ग्यान कूं , देषत लगत भयान ।
अति गभीर गहरो कह्यो , काहूतें नहीं जान ।। २५२ ॥
यह समया लों कहत हैं, सब पर पकड़ इष्ट ।
विसद भाव तातें कहैं । सब के बोधक ईष्ट ।। २५३ ॥
अद्वैता कहते दूसरे । दूसर सोहन और ।
ज्याकूं जैसा ग्यान है । ताकों बल तिहि ठौर ॥ २५४ ॥
× × × ×
संवत सत्रे से सहि । प्रगट उनाशी शाल ।
वसंत पंचमी माघ की , पूर्न ग्रंथ कृपाल ॥ २५६ ॥
माया पुरी मुकाम हे , सब विधि अधिक अनूप ॥
ताही में दस दिसन के , बसत पर्म का भूप ।। २५७ ॥
संपूरन शुभ मस्तु रचो लिख्यो जो गृंथ बनाई ॥
प्रेम नेम श्री कृष्ण पग श्री हरदेस गुन गाई ॥ २५८ ॥
गर्थ सपूरन ॥ श्री श्री श्री वावा वेनीदास के चेला ।
श्री श्री श्री वावा लालदास ॥ तिनके चरन रज श्री वावा
स्याम दास कृपा तिनको ॥ लोषतं गर्व संपुरन समा पतम ।। २५९ ॥

Subject:—सृष्टि निरुपण तथा आत्म ज्ञान का उपदेश ।।

No. 491. Indrajāla. Leaves—12. Deposited with Ṭhākura Badrīsiṁha, Jamīdāra, Village Khānipura, Post Office Tālābabaksī, District Lucknow.

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ इन्द्र जाल लिष्यतेः असुनी नक्षत्र पाइ सुनु बार बारहि बारपोगमन जो अंगुल लाऊ कलार घर धरि आऊ । तुरत विनिसि मह जाय ७ अंगुल जो द्वादस जान । करि लेहु सुजान प्रमाण ॥ पटवा के घर धरि आवे तव पटवा रुधिर जाइ । कह इन्द्रजाल सुनु भाइ सुनि लेहु कविन को राइ । भरनी नक्षेत्र करील अंगुल पक कोल घर न ऊका बीच मध्य भलाई । तव नऊका पार न जाइ । यह गुप्त मंत्र विचित्र सुनु रापु अपने चित्त कतिका नक्षत्र मद नाई । जम्बू की लकडी लायू, केतिकौ करै उपाइ । नहिं ताव आवै सुद्ध कछु न लागे हाथ ॥

End :—प्राषाढ़ नक्षत्र कह जम्वक बांदा लाइ । कटिबांधै नर अपने गुल्म ववासीर जाइ । अब सुनु श्रवन नक्षत्र कह वर वस बांदा मित्र बांझ पियन कह दीजिये गर्भ धरै सुनु चित ॥ ३९ ॥ सुनुहु धनिष्ठा कर अब भेवा । मुनि सन विहंसि कहहि हरिदेवा जव कर बांदा बहु सुभ भाषा । बृहतो शिव गृजासन मन भाषा वाधै हाथ धनी पुनि होई । जानै चतुर मनुष्य जो कोई । और रोहणी

कर भेद वतावैा। सुनु मुनि तुम सन कछुन दुरावै ॥ महुवा कर वादा लै आवै शिउ रात्री कह आनि जगावै ॥ कटि वांधो स्त्री लै जवहो। स्रभ न होय सुनहु मुनि तवहो ॥ दोहा ॥ उत्रा नक्षत्रहि आनिये। पीपर वांदा सोय।

लै वांधै कह आनि नर रक्षा मोहन होय ॥ अनुराधा

No. 492. Indrajāla (Mantrāvalī). Leaves—43. Deposited with Paṇḍita Vindheśvarī Prasāda Miśra, Teacher, Saṁskṛita Pāṭhaśāla, Village Goṇḍa, Post Office Mādhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:- श्रो गनेस जो सहाये श्रो सरस्वतो जो सहाये श्रो कालो जो सहाये। श्रो पोथो इन्द्र जाल मंत्रा वलो लिख्यते ॥ मंत्र जपने को विधि ॥ इन्द्र मन्त्रों को जव कोई मनुष्य किया चाहे तो उसको चाहिये कि पहिले अपना बन्दोवस्त इस तरह से करे कि जहां मंत्र जपे उस स्थान में दूसरे मनुष्य को न आने दे और अपने चारों तरफ धूप दीपक और अतर मीठा रक्खे फूल पान और इस मंत्र को पढ़के अपने ऊपर फूंकले और तीन लकीर पैंचले और जव तक मंत्र को जपे आसन से न उठे और न किसूसे वोले और न उस कुंड लकीर से वाहर निकले फिर मंत्र का जव जप पूरा हो जाये उस वक्त जो वोर वोले तो उसका उत्तर देना चाहिये।

मंत्र

हाथ वसे हनुमंत भैरों वसे लिलार जो हनुमत टीका करे मोहै जग संसार ॥ जो आवे मारमार करंता सो दीपे पांयन सेता हनुमंत वीर पंजादे रहे महम्मदा वोर छाती तोड़े उगनो आ वी मारत्त समंत करे नारायन सोंघ वोर प्रगट साजे भैरों वीर कों आनकोरती रहे जो हमारे ऊपर घाव घाले उलट हनुमंत वीर उसी को मारे जल वांधु थल वांधु वांधु अंतर तायामन वांधु तन वांधु वांधु कुटुम और काआ चेत चेतरे प्रानी हनुमंत वीर आया ताइ तरफ सवाई तपे लोहा कच पड़े धाइ लाल चक चको असमान छाया। हांक ललकार हनुमंत को अगिनि पानी हो जाय महाराजाधिराज वाव साहिव सत्य के पुत धर्म के नाती तुम्हारा ही आसरा है

End :— ॥ राज वसी करनम् ॥

ओं नमो भास्कराय त्रैलोक्य तमने अमुके महीपते मम वस्यं कुरु कुरु स्वाहा

॥ विधि ॥

कूल के पुष्प रविवार को लाये इस मंत्र को पढ़िके पुष्प को राजा को सवावे तो वसी होये ॥ इति ॥

श्री पोथी इन्द्रजाल संपूरन समाप्त जो पत्र में देषा सो लिषा मम दोष न दीजिये पंडित जन सो विनती मोर टूटल अच्छर लंव ममजोरीः दसषत दे देयाल-दास का मोकाम कलकत्ता जान बजार करी स्कूल स्ट्रीट ११ नंबर दोकान के मालिक पंचमराम कुरमी ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ९ तक—मंत्र जपने की विधि। बला से बचने का मंत्र और उसकी तरकीब। वीर सिद्ध करने का मंत्र तथा उसकी विधि। चौकी मोहमदा वीर की और उसकी तरकीब। इस चौकी के उपयोग। चौकी सोक वीर, विधि तथा उपयोग सहित।

(२) पृ० ९ से पृ० १८ तक—वीरों का जंजीरा, विधि तथा उपयोग सहित। भैरों की चौकी। जिन्नों तथा नबियों की हाजरात। नाहर, चोर तथा बिच्छू आदि बांधने का मंत्र। मुठी पीर की चौकी। चौकी हनुमन्त वीर, डाँकिनी आदि बकराने (तलगने) का मंत्र। मंत्र सर्व सुख दाता। सर्वोपरि मंत्र-तंत्र। मंत्र देह रक्षा का। मंत्र इन्द्रजाल।

(३) पृ० १९ से पृ० ४० तक—रसायन का मंत्र। ऋद्धि सिद्धि का मंत्र पृथ्वी में धरा धन दीखने का मंत्र, पृथ्वी खोदने का मंत्र तथा तरकीब। मंत्र देह रक्षा का जाप। मार्ग में सांप, चोर, नाहर से बचने का मंत्र। मार्ग बाघ के बांध देने का मंत्र, आफत टलने का मंत्र। दृग बंधन का मंत्र। मेघ स्तंभन मंत्र। उद्यम प्राप्त होने का मंत्र। दरिद्रता नाश करने का मंत्र। रोजी प्राप्ति का मंत्र। किये कराये के उतारने का मंत्र। रक्षा मंत्र। समस्त पीड़ा का मंत्र। दांतों के कीड़ों का मंत्र। नेत्र की फूली कटने का मंत्र। नेत्र की रोशनी करने का मंत्र। नेत्र दुखने का मंत्र। नेत्र रोग का मंत्र। पेट की पीड़ा का मंत्र। डाढ़ की पीड़ा का मंत्र। प्लीहा का मंत्र, पसली पीड़ा का मंत्र। गर्भ स्तंभन मंत्र। ववासीर का मंत्र। अन्न पचने का मंत्र। आधा सीसी का मंत्र। जहर उतरने का मंत्र। नगरा का मंत्र। विच्छू का, बावले कुत्ते काटने का मंत्र। गाय भैंस के कीड़ों का मंत्र। सांप काटने का मंत्र। मार्ग में आराम पाने का मंत्र।

(४) पृ० ४१ से पृ० ६४ तक—पशु का कीड़ा झाड़ने का मंत्र, पैर थकने का मंत्र। शत्रु मुख बंधन मंत्र। सर्व मोहनी मंत्र। सुई छेदने का मंत्र। ववासीर फूटने का मंत्र। बाजीगर के तमाशे का मंत्र। कढ़ाही बांधने का मंत्र। हांड़ी में आग न लगने का मंत्र। तुपक बांधने का मंत्र। तलवार बांधने का मंत्र। घर बांधने का मंत्र। घाव पुरने का मंत्र। अनी बांधने का मंत्र। भानमती के अन्य खेल। अग्नि बुझाने का मंत्र। जंत्र मंत्र और तंत्र तीनों के दूर करने की तरकीब। रोजी मिलने तथा धन की वृद्धि होने का मंत्र। रोजी व धन बढ़ने का मंत्र। वृद्धि कारक मंत्र। लक्ष्मीजी का मंत्र। कमच्छा का मंत्र। कुबेर का मंत्र (ध्यान

सहित) । मनसा सिद्ध करने का मंत्र । व्यापार सिद्ध करने का मंत्र या व्यापार के द्वारा धन प्राप्ति का मंत्र। उपद्रव नाशक मंत्र। उपद्रव नाशक मंत्र छंट कारिणी । सहदेई कल्प मंत्र । विद्या का मंत्र । पढ़ी हुई विद्या न भूलने का मंत्र । मंत्र उच्छिष्ट गणपति । स्वप्न में कृष्ण का मंत्र। कुश्ती जीतने का मंत्र । कीर्तिवीर्य्य का मंत्र । रुद्र का मंत्र । गणपति का मंत्र । कर्ण पिशाचिनी का मंत्र ।

(५) पृ० ६४ से पृ० ८६ तक—अष्ट गंध की विधि । दस मंत्र संस्कार । वटुक मंत्र । सरस्वती मंत्र । जुवा वदी का सर्वोपरि मंत्र । बगला मुखी मंत्र । (न्यास, ध्यान तथा मंत्र सहित) । ज्वालामुखी का मंत्र । महालक्ष्मी का मंत्र । नजर का मंत्र । मूठ थामने का मंत्र । भूतादिक दोष निवारण मंत्र । गंडा बनाने का मंत्र । परियों का खलल दूर करने का मंत्र । किये कराये की रक्षा का मंत्र । भूतादिक दोष निवारण का अन्य मंत्र । ज्वर मंत्र । नकसीर थामने का मंत्र । आंख दुखने का मंत्र । सर्प काटे का मंत्र । मृगी का मंत्र । दांत के कीड़े का मंत्र । आधा सीसी का मंत्र । बनवासी की रक्षा का मंत्र । जादू उतारने का मंत्र । राज वशीकरण ।

No. 493. Indrajāla-Vidyā. Leaves 22. Deposited with Paṇḍita Bhālachandrajī Miśra of Śitalanaṭolā, Post Office Malīhābāda, District Lucknow.

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ अथ इन्द्रजाल विद्या लिष्यते ॥ दोहा ॥ इन्द्रजाल विद्या कहौं सुनियों चतुर सुजान । मारन मोहन वसि करन और उचाटन जान ॥ १ ॥

चतुर होइ सो करै नर करै सो चूकै नाहि । चूकि जाइ तौफेरि नहि वचै न याही ताही ॥ २ ॥ चैापाई ॥ विद्या इन्द्रजाल की करै धीरज धरै नयन में डरै ॥ मारन मोहन सवै करावै । अपुहि आप वचै औ वचावै ॥ फेरि उड़न विद्या उड़ि चलै । कोइक फूल अन रितु में फलै: वसी करन उचाटन जानै ॥ कोई पैठ पतालहि पावै । कोई आधे सर्ग उठावै ॥ कोई करै दिवाना सोई । सव काने देषै कोई वाग वगीचा देषै ॥ कोई जाइ उर्वसी पेषै ॥ कोई जल ऊपर जो धावै । कोई अनरिक्त फल जो पावै ॥

End:—अथ स्त्री को नंगी करने की विधि ॥ जो कोई स्त्री मान करै जव तव ऐसी विधि कीजै ॥ आदित वार शनिचर हो वे कच्चे डोरा लीजै । चिर चिरैाटा लगा लगावै संगत करै जो जदही ॥ तव डोरा में गांठ लई दै जै वेर लडै जो तवही ॥ यह डोरा को धूप देइ कर आग्नि महि परचावै ॥ यह डोरा रास्ता मे डारै जव वह कामिनि जावै ॥ लहंग नघत छूटि परै जव कोटि जतन

कर वाधै ॥ वह नहीं वधै वधाये कवहूं सवद गुरू का साधै लैाटि फेरि जाइ डोरा के लहगा वांधि जो पावै ॥ ऐसा जतन दूजे से न कहिये पाप जाइ कर धावै ॥ मंत्र भूत्त प्रेत क हनुमंता चलवंता गात कंधा माथे वज्रइक कोटो यलो हाकी लठी सूने की घानी हफ फिरै हनुमंत वृत ग्रो भीम मार भूत मार प्रेत मार डाकनी साकनी मार वड़ा वीर मसान मार पाताल मार जो न मारै तो माता अंजनी दूध पिया हराम करै अथवा कलाहल अपनी कपाट पूजाली जै अपानी अलध्याय न अंग ध की ॥ इति इन्द्रजाल ॥

Subject :—मारन विधि, अन्य मारन विधि, मारनविधि मंत्र, मोहन मंत्र, उच्चाटन मंत्र, वशीकरन मंत्र, काल भैरव इन्द्रजाल, रिद्धि सिद्धि विधि, कोठी फारन विधि, अलोप अंजन, दीवाना करने की विधि, वैारी के दवा देना, स्त्री को जुवतइकंगी, दरियाव भोतर पैठने की विधि, पानी में नाव थमने की विधि, मर्द वशीकरन, स्त्री के नंगी करने की विधि ॥

No. 494. Jantramantra. Leaves—11. Deposited with Paṇḍita Ramākānta 'Prakāśa', Village Baṇḍā Gaḍavārā, District Pratāpagaḍh (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ ॐ ह्रीं ह्रौं ह्रां ह्रीं ह्रः ॥ वा वा दि नि ॥ सरस्वती मम बुद्धि प्रकास कुरु कुरु स्वाहा ॥ अनेन मंत्रेण सहस्र जाप्यं करोति ॥ तद सांस होम ॥ दसास त पहा दसांस मार्यसा ॥ सर्व सिद्धि भवति ॥ जरामृतु मनि भवति वण वाधस्य प्रतिमः भवतिमः भवति प्रति दिनः अष्टोत्तर १८ ॥ भाप्यं कुरु इति सरस्वती मंत्रः ॐ भुर्भुवः क्लीं क्लीं सो सो फट स्वाहा ॥ आसन उपदेश मंत्र ॥ कृष्णायनमः ॐ ह्रीं ह्रीं मय श्चंद्रमा मे सुध मन कृते भ्यः पापायः रन्जितांभ्यः स्वाह ॥ जप्य अपोत्तर सत ध्रों ध्रों ध्रो ध्रो ततः नमः नामः स्वाहा तीनि वेर पढ़ै चारों दिसा ताकै वाऊ प्रवेस होइगा ॥

End :—सात सरिसो तेरह राइ नैा सय योगिनि देषि डेराय चंदा दे चंदा देषि मुष धोवै सूर्य्य अस्त करैा गरास जो जो मोका चित्त–वैसो सो पावै आस सभा वइठि कै वोलै दाव जिहि मारो–नरसींह कै थाप जोगनी माता ईश्वर उवाच मेरी भक्ति गुरु की पाय सरणा ॥ देवी सहाय ॥ अगर चंदन कस्तूरी गैारोचन चूर कपूर सो भोजपत्र पर लिष मनोरथ पूर्ण होय ॥

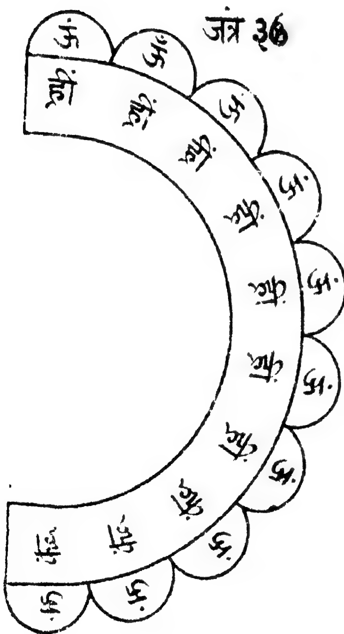
× × ×
× × ×

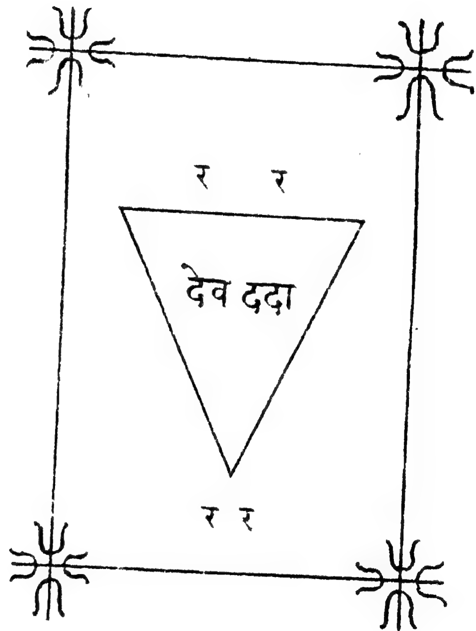
Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ९ तक—सरस्वती मंत्र, जगद्वाक मंत्र, जंत्र (बालक के गले में बांधने के लिये) गर्भस्तंभन, स्त्री वशीकरण, पंद्रहा जंत्र।

(२) पृ० १० से पृ० २२ तक—आंख का मंत्र, अर्ध कपारी का मंत्र, अर्जुन दस नाम, गौ को व्याधि का मंत्र, उच्चाटन विधि, पिशाच मंत्र, गर्भस्तंभन।

No. 495. Jantrāvali. Leaves—33. Deposited with Paṇḍita Vindheśvarīprasāda, Teacher, Saṁskṛita Pāthaśālā, Village Gauḍā, Post Office Mādhoganja, District Prātapagaḍha (Oudh).

Beginning :—





मूल नक्षत्र रविवार को इस जंत्र को भोजपत्र में अष्टगंध सो लिख के स्त्री के बाएं हाथ में बाँध दे तो गर्भ स्थित रहे गर्भ नहीं गिरे पुत्र होय।

इस जंत्र को कागपंख से मेढ़े के रुधिर से मसान के कोयले से मुरदे के कफ़न पर लिखे वा मसान के बांस पर लिखे।

विधि—पूरव को पुश्त करके चौराहे के राह में सात अंगुर नीचे गाड़दे तो दोनों मित्र में लड़ाई होगी। उच्चाटन होगा।

End :—

जंत्र १२३

७६	७३	२	८
७	३	८०	७९
८२	७७	९	१
४	६	७८	८१

इस जंत्र के माली बाग़ में गाड़े तो बाग सूष जावे।

जंत्र १२४

५९	६६	२	८
७	३	६३	९२
६५	६०	९	१
४	६	६१	६४

जंत्र वकरी के दूध में लिषे जव पुष नक्षत्र होये तो वह बकरा नाचै।

इति श्री पोथी इन्द्र जाल चैाथा भाग जंत्रा वलो सम्पूरन भई जो पत्र में देषा सो लिषा मम दोप न दीजिये पंडित जन सो बिनती मोर टूटा अक्षर लेव सब जोरी सन् १३०१ साल महीना वैसाष वदी मोकाम कलकत्ताः जान बजार प्रोत-मार बाबू के कोठी का दरवाजा के सामने दोकान है दोकान के मालिक पंचम-रामजु दसषत दयाल दास का सम्पूरन।

Subject :—

(१) पृ० १ से पृ० २० तक—लुप्त।

(२) पृ० २१ से पृ० ३२ तक—राज सभा में मान पाने, सर्व कार्य के सिद्ध होने, कुत्ता भोंकने, भट्टी फोड़ने, ढोल फोड़ने, भूत भगाने, दूकान का व्यवहार वढ़ाने, विक्री वढ़ाने, सर्व मनोरथ सिद्ध होने, ताप बंद होने, सम्पूर्ण कार्य सिद्धार्थ, ऊंट ही ऊंट दिखाई देने, सर्व काम सिद्ध होने, स्वप्न में भूत देखने, धावरा रोग जाने, स्वप्न में वन्दर ही वन्दर देखने, सर्व काज सिद्ध होने, गया पशु लैाटाने, धावरा रोग जाने, कमान का रोदा न चढ़ने, सर्प न आने, तथा भय न होने के लिये मंत्र॥

(३) पृ० ३३ से पृ० तक—मनोवांछा सिद्ध होने, भूत वाधा न होने, बोध होने, हनुमान देव को प्रसन्न करने, वचन सिद्ध होने, बुद्धि अधिक होने, मन चीता कारज होने, शत्रु के यहां क्लेश कराने, काली देवी को प्रसन्न करने, सर्व कारज सिद्धि होने, विद्या बुद्धि होने, डर न लगने, अंबिका देवी के प्रसन्न होने, शत्रु का चित्त उच्चाटन होने, चक्रवर्त्ती वश में करने, नजर लगने, भूख बहुत होने, कामना जागने, पाई वस्तु पाने, ज्वर जाने, मनोकामना सिद्ध होने, प्रेत का भय

न होने, वड़क वायु जाने, मनचोता कारज होने, सर्व कामना सिद्ध होने, बुद्धि नष्ट करने, अति सुख प्राप्त होने तथा भूतादिक दोष दूर करने के लिये जंत्र ॥

(४) पृ० ५१ से पृ० ६६ तक—ऋद्धि-सिद्धि होने, वृक्ष में फल अधिक आने, बैरी को कष्ट न देने, शत्रु से विजय पाने, आपस में लड़ाई कराने, स्मशान जागने, मनुष्य को मस्त करने, वैरी को हानि पहुंचाने, आपस में क्लेश कराने, चूहों के कपड़े न फाड़ने, स्त्री के पुत्र होने, भूत-भय विनाश होने, सब देवताओं के प्रसन्न करने, कुए में जोतने, सभा में सन्मान पाने, शत्रु के शरीर में दुख करने, सर्प न आने, सर्व कार्य की सिद्धि, अधिक भोजन करने, बाग में फूल बहुत आने, विच्छू उतारने, भूत प्रेतादिक का भय न होने; किसी तरह की बाधा न होने, बाग सुखाने, तथा बकरा नचाने के लिये मंत्र ।

No. 496. Jogaṇīdiśāvichāra. Leaves—4. Deposited with Paṇḍita Rāmaprasāda Pāṇḍe of Ghuraha, Post Office Mādho-ganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—अथ जोगनी दसा कौ विचार ॥

जन्म नक्षत्र ते आदि दै । अस्वन ते गुन लेय ।
त्रै लोचन हैं सिभ के । ते इकत्र करि लेय ॥
तामैं अष्टम भाग हर । बांकी लेइ विचार ।
सेष अंस बांकी वचै । दसा लेइ ठहराइ ॥१॥
एक अंस को मंगला । जुगल पिंगला जान ।
बानि अंस धन्या रहै । चारिहु भ्रमरी मान ॥
पंचम नीको भद्रका । षष्टम उलका जान ॥
सप्त अंस सिघा रहै । अष्टम संकट आन ॥
अष्ट दशा छत्तीस लैं । अवध द्वार अनुमान ॥
अपने अपने फल करै । अंतर दसा प्रमान ॥

End:— ॥ चन्द्रमा कौ वासौ ॥

पंचम जन्म तोसरो सीस ॥ षष्ठम नमौ गनि ग्रै पीठ ॥ अष्ट सातौ दसौ एकादस हृदै गनोजै ॥ दूजो चौथौ हस्त निवास ॥ येहि विधि गनौं चन्द्र कौ वास ॥ अथ फल ॥ माथे चंद्रमा दर्व वढ़ावै । हिरदै चंद्रमा महा सुष पावै ॥ पाइन कर कर पीठ निरास । हस्त चन्द्रमा पुजवै आस ॥

× × × ×

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ८ तक—जोगनी दशा विचार एवम् चन्द्रमा का वास ॥ चक्र ॥

No. 497. Jyotisha Leaves—46. Deposited with Paṇḍita Bāsudeva of Kamāsa, Post Office Mādhauganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :— ॥ छंद गीतिका ॥

अज मीन घटिका तीनि के पल जानियै । इकतालिसा वृष कुंभ वेद वषानियै । पल होत तेरह शालिशा———मिथुन मकरहि वान वेदहि दंहु वल ये जानियै

कर्क धन सर वया हि स सहो ये करि मानियै ॥
सिंह अलि मैं पांच घटि पैतालिसैा पल होत है ।
कन्यका अरु तुला पांचै पैतिसैा पल कहत हैं ।
यह भुक्ति वेद वषानि भाषत छंद है यह गीतिका ।
गनक लोग विचारिहैं मन मानि ऐसो रीतिका ॥

× × × ×

चन्द्र मित्र रवि बुध कहे और सकल समभाव ।
शत्रु कोऊ इनके नहीं ऐसो कह्यो प्रभाव ॥२॥
मंगल के यह मित्र हैं, सूर्य्य चन्द्र गुरु पूर ॥
शुक्र सनिश्चर सम करै, बुधहि शत्रु कह क्रूर ॥३॥
बुध कैा मित्र वषानियै, सूर्य्य शुक्र दुइ जानि ।
मंगर अरु शनि समहि, चन्द्रहि शत्रु वषानि ॥४॥

End :— ॥ भाषा कवित्त ॥

चन्द्र से शेषित तीनि नक्षत्र दिवाकर रिक्षन एक न नीको ।
दुइ वंचे भ्रम पंथ करै अन शून्य वचे सव सिद्धि अनीको ॥
वैरी मुंड कर रुंड करै कर वालक खंभ जदा कदली को ।
यह चक्र विलोकि कै दवर करै मघवानहि रच्छत ताहि घरी को ॥

॥ इति डाक चक्रम् ॥

॥ दोहा ॥

रवि नक्षत्र को आदि दै शसि नक्षत्र लैा भोग ।
भाग भागियै सात कैा कहिये आडर जोग ॥
वचै तीनि क्षा भ्रम करय जुग्मे शात कलेश ।
वान (५) वेद (४) ससि (१) जो वचै तव कीजो परवेश ॥

॥ इति दवर चक्रम् ॥

× × × ×

॥ इति सुत चक्र चक्रम् ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ९ तक—राशि मेलनम्, द्वादश राशयः। लग्न मुक्ति प्रमाण, लग्न प्रमाण, राशीश, राशीस चक्र, उच्च ग्रह जानना, चन्द्रबल, व्यर्थानि, सिद्धि-योग, चन्द्रवास फलम्, भद्रा, ककैच योग, जमघंट, वर्जानि, वर्णप्रीतिः। नाड़ी दोषः। योनि दोष और शत्रु, बुध पंचक, रविबल, गुरुबल, (विवाह प्रकरण)।

(२) पृ० १० से पृ० २२ तक—वधू प्रवेश, द्विरागमन, गर्भाधान, सीमन्त पुसनकर्म, प्रसूतास्नान, नाम करण, निष्कासन अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, व्रतबन्ध, विद्यारंभः, हल प्रवाह, बीजोप्तिः, भूमिशयन, पाटः सूर्य क्षौत द्वार चक्रम्, कूपचक्र, सेवा या प्रवास विचार, राशि राशिके भीतर, द्वार विचार, नवान्नम्, शस्य रोपणाकर्ण मर्दन, चूलिका परिधानम, पंचक रोगोस्नान, सर्वांक यात्रा, दिगशूलम्, तत्काल यात्रा, तत्काल चन्द्रविचार, नक्षत्र के उत्तम, मध्यम तथा नष्ट होने का विचार, एक मासे पंच वार फलम, शुक्रोदय फल, हुताशन फल, ग्राम वास फल, मूल वृक्ष फल।

(३) पृ० २२ से पृ० ४० तक—वार पृविक्ति, अंगन्यास मूल विचार, मूल वृति विचार, शुक्रोदय फल, हुतासन फल, संक्रांति फल, रोहिणी चक्र नर चक्रम्, गोचर फल, नित्य क्षौरः राज्याभिषेकः, भैषज्य कर्म, नरवाहन, गृहदानम्, गुरु विचार, पंचमी फल, पूर्णमास्यांफलम्, राशिग्रह योगफल ग्रहोदय राशि फल, नक्षत्र गुरु फल, एकराशौ ग्रह भुक्तिः, होम विचार, वर्षा नक्षत्र के वाहन, स्त्री पुरुषो नपुंसक जोग विचार, वर्षाज्ञान, गर्भज्ञान, छींक विचार, दिग-शूलेन वारणम्। कंडा रखने का विचार।

(४) पृ० ४० से पृ० ५८ तक—जातक भाषा, लग्न का रंग, लग्न प्रमाण जानना, राशि तत्व, लग्न उदय ज्ञान, राशिनाम, क्रूर ग्रह, उच्च ग्रह, नीच ग्रह, ग्रहबल, नैसंग्रह बल, सूर्यादि ग्रह स्वरूप, चन्द्र फल, भौमफल, बुधफल, गुरुफल, शुक्रफल, शनिफल, शनिद्वार जानना, राहु फल, कौन ग्रह किस उमर में क्या फल देता है। गर्भ विचार, भवन द्वार जानना, दीपक भेद, यात्रा लग्न विचार।

(५) पृ० ५९ से पृ० ६४ तक—शकुनं ग्रामादिशि, सम्वत् फल, काक फल, काक वाक्य परीक्षा, त्रिडंडी चक्र।

(६) पृ० ६४ से पृ० ९२ तक—शिवा मुहूर्त, कोटादि संबंधी ४३ चक्र, अन्य विचार, ग्राम सुप्त जाग्रत विचार, कोट जाति विचार, मोट बन्धा चक्र, डाक चक्र, द्वार चक्र, सप्त चन्द्र चक्र।

No. 498. Kakaharā-me-Śrīmahādevaji-ka-Vyāha. Leaves—2. Dated in Samvat 1925 or A.D. 1868. Deposited with Paṇḍita Rājārāma, Village Narahā, District Sītāpur (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ ककहरा में श्री महादेव जी का विवाह बरननं ॥ गनपति सुमिरि ककहरा कीजे चौंतिस अक्षर पर कहि दीजै ॥ कहत ककेहरा एक सुदेसा । गिरिजा व्याहन चले महेशा ॥ पाव लगायेडमरू लीने भांग धतूर पजाना कीने ॥ गले सहस सपुले सिर गंगा ॥ भूषन भसम लगाये अंगा ॥ घर नाहि दूसर भूत बराती । चले चबात विजया की पाती ॥ नाम एक ईसहिं सुन राजा । करत निहाल गाल के बाजा ॥ चन्द्र लिलाट जटा छिटकारे ॥ लोचन तीन लोक उजियारे ॥ छांड़े गृह कैलास सोहाये । व्याहन बैल महेश मंगाये ॥ जतन न कीन्ह बेल को बानो । सोने सींग मढ़ावो आनी ॥ झालरि नाग मोतिन की माला । धनी बैल जो शंकर पाला ॥ नाथ हाथ अपने पहिराये । कंचन से पुर लीन मढ़ाये ॥ टेरत भूत भिआवन बानो । बैल चढ़े आवै शिव दानो । ठाढ़े सुर मुनि देषि तमासा डीगंबर बाघंबर पासा ॥ डेकित बैल चलावे हूकी का बरनो साभा हर जू की ॥ ढोल नफीर भेरि बह डंका । बैल चढ़े आवैं शिव बंका ॥ नांहर व्याल बेल विष भक्षन । चले हिमंचल थान ततक्षन ॥

End :—माने सोच सषा जनि कोई । करम लिषा तरु पावा सोई ॥ अबहिं बरात द्वारहिं आई । बिजुका बैल बाघ गरराई ॥ राजत गिरिजा देषि तमासा । सषिन सोच हिमवान हुलासा ॥ लगे पांव हिमवान पषारे । मोतिन चैाक आनि बैठारे ॥ वारिकै मानिक कीन्ह निछावरि । संकर गैारि दीन्ह सत भांवरि ॥ सो संपति शिव दीन्ह लुटाई । अचल कीन्ह हिमिवानहि जाई ॥ षबरि भई देवन सब जाना । गैारी व्याह कीन्ह हिमवाना ॥ सो संपति शिव जग के दानो । चरन टेकि लै दीन्ह भवानी ॥ हरषे देव सुमन वर्षाये । ब्रह्मा बिश्नु तमासे आये ॥ दो० ॥ क्षेम कुशल रचना रचो शिव गैारी की आस । मुक्ति दान मोहि दीजिये प्रभु तुम्हारा मैं दास ॥ इति श्री ककहरा शिव गैारी व्याह संपूर्ण संवत् १९२५ मिती जेष्ट वदी पंचमी शिवायनमः ॥

Subject :—शिवजी का विवाह वर्णन ॥

No. 499. Kālachakra. Leaves—4. Deposited with Paṇḍita Vāsudevasahāya of Kamāsa, Post Office Madhauganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥

मेष रासि जैा जन्म होइ ॥ रवि क्षेत्र जसवंत होइ ॥ क्रोध वंत होइ ॥ विसे वोस मित्र होइ ॥ सुन्दर वंत होइ ॥ चपल होइ ॥ सिप्टान भोगो होइ ॥ कष्ट वर्षे ६ ॥ १५ ॥ ३१ ॥ ३५ ॥ ६७ ॥ ७५ ॥ जेष्ट मासे शुक्ल पक्षे मंगर वासरे तिथि पंचमो ५३ र्द्ध पहरे प्रान त्यज्येत् ॥ १ ॥ वृष राशिजै ा जन्म होइ ॥ मिसत भाग वंत होइ ॥ कष्टमास ॥ १२ ॥ १७ ॥ ३४ ॥ ५३ ॥ १०० ॥ अषाढ़े मासे कृष्ण पक्षे चित्रा नक्षत्रे सतमी तिथि शुक्र वासरे प्रथम प्रहरे प्रान त्यज्येत् ॥ मिथुन राशि जैा जन्म होइ ॥ कष्ट मासे वर्षे ॥ ४ ॥ १० ॥ १४ ॥ १८ ॥ जीवै वर्ष ८६ ॥ श्रावण मासे कृष्ण पक्षे अश्वनी नक्षत्रे एकादशी गुरु वासरे प्रथम प्रहरे प्राण त्यज्येत् ३ ॥

End :—उत्तर षाढ़ दिन ४ मास ८ वर्ष १४ वर्ष ८० ते जीवै १०० राजा हाथ मृत्यु ॥ श्रवण दिन ३ मास ३ वर्ष ४९ ते जीवै वर्ष ८० रोग हाथ मृत्यु ॥ धनिष्ठा दिन १२ मास १ वर्ष ३० ते जीवै वर्ष १०१ लोह हाथ मृत्यु ॥ शत भिषा दिन १४ मास ९ वर्ष ४० वर्ष ५० ते जीवै वर्ष ३ ते जीवै वर्ष ३५ विष हाथ मृत्यु ॥ उत्तर भाद्र पद दिन ४ मास २ वर्ष ९ वर्ष ११ वर्ष १५ ते जीवै वर्ष ६० सुख मृत्यु—

॥ इति काल चक्रं ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ५ तक—जन्म राशि के हिसाव से कष्टादि पड़ने ग्रोर मृत्यु दिवस का परिचय। (जन्म-राशिक ग्रायुः वलं)

(२) पृ० ५ से पृ० ८ तक—जन्म के नक्षत्र से ग्रवस्था की सीमा निर्धारित करना।

No. 500. Kalikāla-Varṇana. Leaves—7. Deposited with Paṇḍita Vishṇubharose, Village Belāmaū, Post Office Aja-gaina, District Unnāva (Oudh).

Beginning :—देव मंदिर दिया न वाती गोर न पै उजियाला। भूम देव विप्रन को देष्यों कोड़ी देत कसाला। रांड़न के भोजन को सिनी ऊपर पान मसाला। साधुन को नहीं चून नून बुकों रूठै देव दिवाला। चतुर नरन को वद सूरत की कूरन के घर वाला। मूरष वैठे मैाज उड़ावै पर वीनन पग छाला। भूपति कृपा करत नीचन पै कर ग्रनीत प्रत पाला। जवर जोर कल काल जाल को गुन को चलै न चाला॥ मुसलमान भोता पति सुमिरै हिंदू मुप कह ताला। मुसलमान मैासी कर टेरैं हिंदू जातक साला॥ दोम दोम कर जात मदारन दाव कांष मैं लाला॥ पूजत प्रेत गुरैया वावा छाड़े देव विसाला॥ ग्रधरम प्रगट भयो

भूतल मैं धसि गौ धरम पताला ॥ ३ ॥ निजपति मुच्छ तुच्छ करि जारत उपपति हित प्रति पाला। विधवा दृगन कोर भर काजर अंग आभरन जाला। मुलकट कंचुक कसत भुजन पर उर पर वर वन माला। अधरम धरम प्रगट भयो भूतल धंसि गयो धरम पताला ॥ ४ ॥

End:—एकै साहु एकरि रिनिया का लूठ लेत घर साला। एकै रिनियां वांध पाेटरी देत साहु का वाला ॥ जोर जोर पंचन को ल्यावत मानत वात न आला। अधरम प्रगट भयो भूतल में धसिगौ धरम पताला ॥ १ ॥ पर सुष देष सुनत सिर काटत पुत्र सोग सो साला। औरन को दुष देष देष सुष मनौ प्रगट भयो लाला ॥ ऐसो कुमति भई लोगन की चलत कपट को चाला। अधरम धरम प्रगट भयो भूतल धंसि गयो धरम पताला ॥ २ ॥ लपट झपट घर घर षट पट कर वरत कपट की ज्वाला। मारन उलट पलट षट पट कर विकट प्रगट कल काला ॥ दुर्जन चटक मटक अति चटकत सुरजन षटक उताला। अधरम धरम प्रगट भयो भूतल धंसिगयो धरम पताला ॥ ४ ॥ संन्यासी राषै दुज दासी नित प्रति वेद उचाला। एकहि ब्रह्म सकल घट पूरन यामें पाप न झाला। धर्म शास्त्र में थापी दासी भोगत सब घर वाला। अधरम धरम प्रगट भयो भूतल धंसि गयो धरम पताला ॥ त्याग करव अंगुर दाषन को गुलर पै हित पाला। पर निंदा पर पूरत पंडित मंडित करत कुचाला। पुन्न पाट की वात न वोलत दिये रहत मुष ताला अधरम धरम प्रगट भयो भूतल धंसि गयो धरम पताला ॥ ६ ॥

Subject:—कलिकाल को दशा का वर्णन ॥

No. 501. Kathā-Saṅgraha. Leaves—72. Deposited with Paṇḍita Rāmaratna Śukla, Village Dariyābāda, District Unnāva (Oudh).

Beginning:—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ कथा संग्रह लिष्यते। पहिलो कथा एक साहूकार पोतड़ों का रज्जा समय के फेर में पड़ अपना धन सब खो वैठा और लगा निपट दुख पाने और उपासा रहने निदान उसके जी में यह सोच आया कि जो मै किसी महा पुरुष या सिद्धि के पास जाऊं तो यह दुख मिटै क्यों कि सुना भी है कि साधू के दर्शन से व्याधा जाती है यह विचार कर एक जोगी के पास गया। यह उससे कुछ कहने न पाया कि उसने अपने जोग से इसका मनोर्थ जान कर के कहा ॥ दोहा ॥ सुख दुख प्रति दिन संग है मेटि सकै नहिं कोय। जैसे छाया देह की न्यारी नेकन होय ॥ यह उत्तम उत्तर पाय वह विचारा धीर धर अपने घर आया ॥

(२) कथा। एक अंधा वैरागो काशी के बीच मणिकर्णिक घाट पर बैठा ग्रहण में दही पेड़े खा रहाथा कि देखकर किसी पंडित ने पूछा सूरदास जी यह क्या करते हो बोला महाराज दही पेड़े खाता हूं कहा ग्रहण में उत्तर दिया बाबा मेरे गुरु दया से सदाही ग्रहण है यह सुन कर पडित हंस कर चुप हो रहा॥

End:—एक बूढ़ा बटोही ग्रीषम की रितु में तपन की प्रचंड किरणों से निपट कष्ट पाकर लाठी टेकता चला जाता था मार्ग में एक युवा अश्वा रूढ आ निकला बूढ़े को देख कर उसे दया हुई बोला अजी मैं युवा पुरुष हूं शीत घाम सब सह सक्ता हूं तुम बूढ़ा पन के कारण बहुत थके अब इस घोडे पर चढ़ो मैं पीछे पीछे चला जाऊगां उसकी इस करुणा बानी से मगनं हो बूढ़ा इसके घोड़े पर चढ़ा और युवा पीछे पीछे चलने लगा वह बहुत दूर न गयाथा कि युवा ने पुकार कर कहा कि अरे बूढ़े निर्लज घोड़े पर से उतर क्या तूने अपना घोड़ा पाया है जो सारा दिन उस पर आरूढ़ चला जाता है बूढ़ा लज्जित होकर उतर पड़ा और धीरे धीरे चलने लगा थोडी दूर गया था कि इसका कष्ट देख कर फिर उसके जी में दया आई और बहुत सी विनती कर उसे फिर घोड़े पर चढ़ाया थोडी दूर आते उसे फिर उसी भांति उतारा निदान तीन चार बार उसे इस प्रकार उतारने चढ़ाने मे उसने पूछा बाबा तुम्हारे पिता का नाम क्या बोला सैय्यद हुव्वों उसने पूछा तुम्हारी महतारी का नाम क्या बीबी जोरा पर वह कुल वंती नहीं उसको ब्याह करने से हमारे कुल में कलंक लगा यह सुनते ही बूढे ने कहा हां बाबा अब मैं समझा कि चढ़ावे हुव्वा और उतारे जोरा अब आप सिधारिये मैं गिरते पड़ते चला जाऊगां॥

Subject:—एक सौ कथाओं का संग्रह जिसमें हंसी आदि का वर्णन है॥

No. 602. Kavitāvalī-Aragajā. Leaves—13. Deposited with Sudarśanasiṁha Raīsa and Tāllukedāra of Sujākhara, Post Office Lakshmīkāntaganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ कवित्त॥
नभते सुर सुमन झरै किन्नरादि गान करै मान तान मोद भरै सर वस सिंगार भो। सरभो त्रिलोकन को सोकन को हर निहार सत्य सिंधु सत्य निराधार के अधार भो॥ दोष दुसह दर निहार चार दान दीनन को दंपति जुग चरन सरन को न पतित पार भो। माधो मधुमास सुकुल पच्छ सुच्छ नौमी तिथि आली बलिराम स्याम स्यामा अवतार भो॥ १॥

बाजत बधाई सुखदाई दुहु राज द्वार,
अवध नगर जनको नगर जै जै जयकार भो।
ब्रोक ब्रोक भो विसोक संतन मन परम तोष,
निकसि भजो राम रोष जल थल उजियार भो ॥
होन लागे राग रंग भक्ति ग्यान को प्रसंग,
देवन्ह अतिवार भयो हरन धरनि भार भो।
माधो मधु मास सुकुल पच्छ सुच्छ नैामी तिथि,
आली बलिराम स्याम श्यामा अैातार भयैा ॥२॥

End :—खेलत हैं फागु भरो लाल के सोहाग वाल,
फेंकै करसों गुलाल अंग लाज षोवतो।
कान्ह लै अवीर भोर टारि रंगो वाको चीर,
सुन्दर उरोज ढांपि अंचल सों गोवतो ॥
ताको कुच कारो भारो षासो पिचकारी लगो,
सिसकि समेटि (समेटि) सखो वाको छवि जोहतो ॥
मानो वक्र तुंड सुंड गंग तीर कुंड पैठि,
धार झुंड झुंड पूजि शंभु शिषा धोवतो ॥

खेलत हैं फागु स्याम स्यामा अनुराग भरे,
डफ करतार बेंस मृदंग सो रह्यो है छाइ।
गावत राग धूंधुरि मचावै ग्वाल झमकै,
झमकि भूमि काम रति को लजाइ ॥
घूंघुटि उघारि कान्ह कर सो गुलाल मल्यैा,
बाल मुष इन्दु लगे सोभा सषि दरसाइ।
अधर को विहाइ मेघ कारे अलगाइ मानो,
भैाम विच दैके कंज चंद सों मिल्यो है जाइ ॥

ग्वाल के जाये कहां पाये इत माम ये तो,
गर्भ तो वहाये पो कहावत अहोर हहो हो ॥
जाति के छुपाये पांति नाहीं मिलति रावरो,
बावरो भये कहै लोन्है हाथ लट्ठी हो ॥
जानो बूझो बात को का करत हो सयानो।
करैा वूसा पानो पो चलावो यार भट्ठी हो।

Subject :—(१)पृ० १ से पृ० १२ तक-राम अवतार एवं कृष्णावतार, सीता राम की शोभा देखकर मोह, युगुल मूर्ति की महत्ता, व्याज स्तुति, रामरूपवर्णन

(प्रेमसखी द्वारा) दीनता स्तुति (अवधविहारी) । कृष्ण की शोभा (तोष) ॥ विरह वर्णन (तोष) । कोमलता (प्रेमसखी) । गंगा की प्रशंसा जड़ता, महावीर युद्ध वर्णन । अङ्गद पदारोपण । छन (तोष) । रावण मन्दोदरी संवाद । महारानी जी के दर्बार का वर्णन (भूषण) । रावण अङ्गद संवाद । शिवराज प्रशंसा (भूषण) । चंद्रिका महत्व (निधान कवि) । नैन प्रशंसा (सर्वेस कवि) । गाजीपुरी स्थान की प्रशंसा । भगवानी की बुराई (गोकुल) । राम बिम्हराने का रूपक द्वारा फल चढ़ाई । नायिका की शोभा । "महेश" की ठकुराइन (गौरी की प्रशंसा) । (२) पृ० १३ से पृ०........तक विरह वर्णन (भूषण) । गुजरी का संयोग वर्णन, रघुवीर का बल वर्णन । मुद्रिका पात । लंका दाह । जैसिंह राजा का आखेट । चौकवी, चौदिसा, स्तुति, भरत हनुमान संवाद (संजीवनी लाते समय हनुमान कवि द्वारा) ।

No. 503. Kavitta. Leaves—5. Deposited with Pandita Ramākānta Śūkla of Puravāgarībadāsa, Post Office Gadavārā, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning :—कवित्त ॥

कासी मैं वास करौ जुग चारि लौं , द्वारिका जाइकै देह जरावौं ।
वाँहि चढ़ाय डिगंमर ह्वै सवरी भव सुधाकौ छाहिनी ल्यावौं ॥
ब्रह्म भनै मुष एकै जपौ कर कंचन कोटि सुमेर लुटावौ ।
पाउ सौं बाँधिकै जूझि मरै हरिनाम भजै विनापार न पावौ ॥
सीताराम जानतु हौ सीताराम मानतु हौं ।
सीताराम पूजति हौं जपत सीताराम हौं ।
सीताराम ही कौ प्रभु सीताराम कौ प्रनाम ।
सीताराम ही के ध्यान धरै अभिराम हौं ॥
श्रीपति सुजान सीताराम मैं बसत प्रान
नाम सीताराम जू कौ लेत आठौ जाम हौं ।
मेरे जान सीताराम कामना कल पतरु
सीताराम जू को सौंह सीताराम कौ गुलामहौं ॥
तिसना विलासिन के बसना बसैयो ।
रसना रिजाजिन स्वाद बदना गनै रहौ ।
कहत प्रजेस मद मोह मतवारिन के ।
मद कौ कहन करि ममिता ह्वै रहौ ॥
क्रोध लोभ मोह ज्यों दुरास अति आरत के ।
तजि कै प्रवास घनै सुपनि सनै रहौ ।

मेरे तन मेरे मन मेरे धन मेरे धाम ।
मेरे राम मेरे हियो सदन बने रहैा ॥३॥

End:—सहज मैं सोले जंग जुरै परवी लेरन ।
राजत कुबोले किनै कुाउनसहत है ।
झूठ नाहीं बोले ठैार-ठैार नाहीं डोलै ।
भलो मुख सो लै सदा जस कैा चहत है ॥
सुनै रागरंग रंग वाँधन सुरंग कवि ।
कवि पंडितन संग लैय चरचा चहत है ।
आनंद उछाह सदारहत चित चाह जामे
इतने सुभाव जासो ठाकुर कहत है ॥१॥
छप्पै
केहरि त्रन नहिं चरहि सूर रन छिन नहिं संकहि ।
सतीमन फिर पहत कहि दानि करि होइ रंकहि ॥
गुर नहिं गोपहि मंत्र जंत्र नहिं चलहि मरन पर ।
इम्रत अमर नहिं तजहि अधम नहि पावहि सुरपुर ॥
जह कर्म रेष विचलय चलय सतरतन जह गुनगनहि ।
लघुताल जाल संकहि रमल नहिं मराल कंकर चुनहिं ॥

Subject:—

(१) पृ० १ से पृ० १० तक-ब्रह्म, प्रजेष्टा, तुलसी, आदि कवियों के शान्तिरस एवं नीति संबंधी कुछ कवित्त ।

No. 504 (a). Kavitta-Saṅgraha. Leāves—15. Deposited with Paṇḍita Satyanārayāṇa Tripāṭhi of Bandā, Post Office Gaḍavārā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :— ॥ कवित्त ॥
गोरे गोरे गाल पै गुनाव दार नाग सो हैं
बिजली झमाकदार दोनों कान झलकै ।
वेंदी भाल माथ हू पै करत सिंगार गोरी,
मथवा के मोती जस चन्द्रमा से लरकैं ॥
नाक हू की नथिया बुनाक में झमाक करे ।
झुलनी की मोती गोरी ओठ वापै झलकैं ।
इतना बयान करि गटई के ऊपर की,
ओैर हू बयान कछु अंग अंग फरकैं ॥१॥

॥ सवैया ॥

नाम वड़ो धन धाम वड़ो जस कीरत हू जग में प्रगटी है।
द्वार अनेक गयंद झुमे उपमा कछु इन्द्र से नाहिं घटी है॥
सुख साज अनेकन पाय मनोहर फूले रहैं मन ही मन में है।
तुलसी जग जीवन भक्ति विना जस सुन्दरि नारि की नाक कटी है॥

End :—

तात का सोच न मात का सोच, न सोच पिता सुरधाम गये को।
सोय हरै को तो सोच नहीं, नहिं सोच हमैं वन माहिं रहे को॥
वन्धु विछोह को सोच नहीं, नहिं सोच जटायु के पंख जरे को।
केवल सोच वही तुलसी, एक दास विभीषण वांह गहे को॥
सुगन्ध लगाय के ऊवि मरौ, प्रिय जानत हौ तनकी सुकुमारी।
हार चमेली का नीक लगे, प्रिय लाज करौं पहिरौं तन सारी॥
और अभूषण क्या वरनो, प्रिय लागत पांय महावर भारी॥
मेरे सुभाव का जाने नहीं, रसखान कपूर मुलायम ताड़ी॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १० तक—नायिका की शोभा वर्णन, भक्ति विना मनुष्य की दशा, धनुष यज्ञ, राम एवं सीता के सुयोग का वर्णन, राम का देखकर सीता का प्रेम और सखियों का परिहास। माखन लीला। राम मल्लाह संवाद।

(२) पृ० १० से पृ० १३ तक—लुप्त॥

(३) पृ० १४ से पृ० ३० तक—उपदेश, धनुषयज्ञ, 'वात' का महत्त्व। समस्या पूर्ति "तरवा के तरे लैां" "दाह बुतात नहीं"। 'र' कार और 'म' कार का महत्व। "स्वप्नदर्शन" समस्या "वजरमार गजर वजायो है" "नारि हंसै तो भंसैना" "झुननी केहि कारण काढ़ि धरयो है" 'झुननो यहि कारन काढ़ि धरयो है" "लक्ष्मण को शक्ति लगने पर राम का मनस्ताप" सुकुमारता का वर्णन।

No. 504(B). Kavittasaṅgraha. Leaves—40. Deposited with Paṇḍita Ramākānta Tripāṭhī, Village Baṇḍa, Post Office Gaḍavara, District Pratapagaḍha (Oudh).

Beginning:—धामन दे धुरवा त्रिविध पवन आवन दै कंजन में ललित लतान का। कूकन दै कोकिला पुकारन दै चात्रकन वोलन दै सजनी सुभाय मुखान को॥ दामिनी जाति कातरी जामिनी में जागन दै वरसत दै इन्द्र झुमड़ि घटान को। आयो मन भावन सा रस वरसावन मो सावन में गावन देहुगो वनतान को॥१॥

पावस प्रबल पीउ पीवै न रटत जीव, दसहू दिसान के संदेस अव आयरी। मोहन बताता मन कैसे कठिन करौ, अवधि बितीत भई आली बरस आयरी ।। मोरन को सोर सुनि कोकिलान की रटन दिन, पपीहा की टेर सुनि मदन जगायरी ।। वृंदा आई बरसात गगन गहरात, बैरी आये बादर विदेसी क्यों न आयरी ॥४॥

End :—विधि ने बड़ाई दई जाहि लषि आवे कोऊ। ताको तू दया करि मया के रस हरियो। धन दीजो जस लिजो जीवन यही है सुख, दैके सवै दुख दीनन के हरियो ॥ चिन्ता मनि कहै जो ये गांठ कैा न दीजो जाइ, ...तोऊ एक उपकार करियो। आपने कहेते जो आगऊे को भलो होइ तो, जीभ के हलाइबे को काहिली न करिये ॥

कवित्त :—चोप कर विरंचि रूप रासि कैसो कोक कीक....... ....

....

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० २५ तक—विप्रलम्भ शृङ्गार संबंधी कवित्त।

(२) पृ० २६ से पृ० ५० तक—संयोग शृङ्गार के कवित्त, तथा दोनों प्रकार के सम्मिलित छन्द, विविध नायिका भेद सम्बन्धी कुछ छंद।

(३) पृ० ५० से पृ० ८० तक—ऋतु संबन्धी छन्द। विविध छन्द (गंगाजी की प्रशंसा तथा वीर रस के कुछ छंद)।

No. 505. Kavittasāra by Manirāma. Leaves—25. Deposited with Umāshankar Dube, Research Agent, District Hardoi.

Beginning :—श्री गणेशायनमः

गोकुल के गामी तुम स्वामी सत्यभामा जी के अन्तर के जामी तुम मिटैहो दुख धाइ कै। तुम तो रघुवीर धीर जानैा सबही की पीर भीर परे चोरहूं बहाइ दीन्हों आनि कै। कहत मनीराम गज ग्राहिसों उवार लीन्हों अलष निरंजन अब तेरो जस गाइकै। नंद के कुमार नेक हेरो प्रभु मेरी बार ऐसे ही वितैहो की चितैहो चित्त लाइकै। जैसो करो तू करो के कलेस में जैसो करो गति गोतम नारि की। गीध यैा व्याध की जैसो करो फिरि जैसो करो सधना वो चमार की मेरिय बार अबार कहां अवतार न हो अपने प्रतिपालकी। तारि हो नाहिं जो मोहि कहूं उड़ि कीरति जैहै दसो अवतार की।

End :—मेघ नहिं मानत ए विरह के नगाड़े देत लेहैं बुलयाइ यहां पवन विचारे को। न्यारे करि मोरिये न कीव मदन साक्के लिखतो संदेस मैं तो नन्द

के दुलारे को। कहै पद्मुमाकर कोकिला की केती हकीक़त कोयल बंधवाइ लैहै पंख उखारे को। प्यारे को कैस्पो समीप करि पावतो तै। पीय २ करतो पपीहा दै मारे को। सवैया—ससुरे को तुम कौन पयान हमैं कल कैसे परै नित प्यारी। चैन परै न घरी पल एक रहै निस वासर याद तुम्हारी। प्रान पियारी तुम्हारे लिये बदनामी भई पर यारी न छारी। भाखत गंग प्रसाद कहैं तुम प्रीत लगाइ के कीन्ह तयारी।

Subject :—(१) किसी आर्त्त मनुष्य का भगवान से अपनी दशा सुधारने के लिये प्रार्थना।

(२) जप, तप, व्रत आदि से रहित मनुष्य का ईश्वर की शरणा आना।

(३) जनक जी के धनुष भंग का प्रसंग।

(४) नैमिषारण्य महात्म्य पर कवित्त।

(५) अयोध्या महात्म्य वर्णन

(६) सीताहरण, राम विरह, लक्ष्मण शक्ति

(७) नायिका का विरह वर्णन। किसी पुरुष का स्त्री के प्रति प्रेम।

No. 506. Kerala—Praśnadivākara. Leaves—2. Deposited with Paṇḍita Śivamaṅgalaprasāda Miśra of Udayapura, Post Office Aṭhehā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—पंचाङ्ग के लाभ खर्च एकत्र करे एक कम करके आठ का भाग दे, एक बचे ते। लाभ, दे। में सुख तीन में क्लेश चार में रोग, पांच में शोक तथापि वाद छे में आदर सात में जीत आठ में हानि॥

प्रश्न कर्त्ता मुकद्दमा में हार जीत का प्रश्न करे ते। यदि आते समय दाहिनी ओर वैठ कर पूछै ते। जीत वायें हार और सन्मुख सला होनी चाहिये॥ अमुक वस्तु खरीदने से लाभ होगा या हानि (उत्तर) नाम अक्षर में ३ से गुणा करे वस्तु नाम अक्षर जोड़े एक और मिलावै दे। पर भाग देवे एक में लाभ दे। तथा शून्य में हानि होयगी॥

End :—अमुक बात में मंदी या सस्ती उत्तर—महीना की संक्राति दिन तिथि के अंक जुक्त करि ३ पर भाग दे शेष एक मध्यम भाव दे। सस्ती शून्य महंगी होना चाहिये॥

संक्रांत	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
अंक	३	२२	२३	२५	१९	१७	२२	१२	१६	१९	२३	२५
दिन	र	चं	मं	बु	गु	भृ	श					
अंक	२१	१५	१३	२	१३	१४	०					
तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अंक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तिथि	१३	१४	३०	१५								
अंक	१३	१४	३०	१५								

इति प्रश्न दिवाकर समाप्तम् ।

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ३ तक—

बारहों राषि के वार्षिक लाभ हानि का विचार । मुकद्दमें, क्रय विक्रय में लाभ हानि । गर्भ विचार प्रश्न । मास की मंहगी सस्तो का हाल ।

No. 507. Kerala—Praśnasaṅgraha. Leaves—4. Deposited with Paṇḍita Śivamaṅgala Miśra, Village Udayapura, Post Office Aṭhehā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—

ओ३म्

हे	द	ज	ब	अ
वा	ज़	ह	तो	ये
नो	दी	जो	वी	ई
धो	ज़ो	हो	ती	क

अ—जिस बात को निस्बत विचार करने हो और हैरान हो, रोजगार की उन्नति के लिये परदा ग़ैब से वसीला होगा ।

ब—एक आदमी की बेवफाई का ख्याल करके दिल में परेशान हो, अब खराब दिन निकल गये दिल का विचार पूरा होगा।

ज—तरक्की रोज़गार आय व्यय का ख्याल लगा है बांदियों से भय है, नेकी का बदला बदी से मिलता है दो तीन महीने में फायदा होगा।

End :—

हो—दुनिया दारी के कामों में तुमको तकलीफ उठाना पड़ता है शत्रुओं व कर्ज़ख्वाहों ने नाक में दम कर दिया है सब काम १ साल के अन्दर अन्दर दुरुस्ती पर आजायेंगे।

तो—जिस कार्य्य के लिये कोशिश करते हो तुरन्त मुराद पूरी होगी और कोई मनुष्य तुम्हारी मदद करेगा।

क–जिस तरफ यात्रा करने का इरादा रखते हो वहां पर रोज कार में लाभ और हर तरह से आराम पाओगे परन्तु नशीली वस्तुओं से परहेज़ रक्खो।

Subject :—

(१) पृ० १ से पृ० ७ तक—बीस अक्षरों का एक कोष्ठ तथा उसमें अंकित प्रत्येक अक्षर का फल।

No. 508. Khela. Leaves—2. Dated in Samvat 1933 or A. D. 1876. Deposited with Paṇḍita Vindhesvarī Prasāda Miśra, Teacher, Sanskrit Pathaśāla, Village Gaṇḍā, Post Office Mādhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥

१—बनत बनि आवत सखी। मोहन मदन गुपाल।
मोर मुकुट लखि थकि रहीं। कमल लिये कर लाल॥
२—चित में चम्पा को विटप। फूल्यो अति हर षाय।
मन भावन मैं पैठि कै। गुथो माल बनाय॥
३—ऋतु बंसत आय सखी। कोकिल कहत सुनाय।
फूल्यो टेसू सघन वन। देषत मन अरु भाय॥
४—मोहन मूरति सांवरी। लाल लकुट ले हाथ।
फूल विराजत सेवती। कुंजमाल के साथ॥
५—फूलन लागी केतकी। सुंदर सुखद सुवास।
चहुं ओर गुंजत मधुप। नेकु न छाजत वास॥

६—मोहन मूरति श्याम की। निरखि निरखि दर मैन।
नरगस को निरखन लगो। सुमन भ्रवन को नैन॥

End :—२८—लालन के माथे बनो। पंक सो समनो पाग।
मोही सब व्रज की वधू। गुल सोसन के राग॥
२९—गुल बंसत फूलन लग्यो। देखति सखिन समेत।
मानहुं शोभा ते भरी। सखि सोभा वहि देत॥
३०—गुल सब्बो ले हाथ में। सुंघत नन्द किशोर।
तरुण अरुण वारिज नयन। चितवति र........॥
३१—गुलदावदी सघन वन। घेरि आय चहुं वोर।
नन्द लाल को निरखि कै। हरषि रहेव मन मोर॥

श्री दसरथायनमः श्री राधा कृष्णायनमः श्री शिव श्री संवत् १९३३ सन् १२८३ मिती वैषाख वदी ९ वार मंगर॥

Subject :—

(१) पृ० १ से पृ० ४ तक—इकत्तीस दोहों में से प्रत्येक दोहे में राधा तथा कृष्ण का संबंध स्थापित रखते हुए एक एक पुष्प का वर्णन।

No. 509. Lekhā Pahāḍā. Leaves—44 Deposited with Gosvāmījī, C/o Paṇḍita Badrī Nāth Bhatta, Husainganj, Lucknow.

Beginning :—

एक दंतं महाकायं नमो करस पानये।
सिद्धन्तु सर्वे कार जाने तुं प्रसाद गनेश्वर॥

१	११	२१	३१	४१	५१
२	१२	२२	३२	४२	५२
३	१३	२३	३३	४३	५३
४	१४	२४	३४	४४	५४
५	१५	२५	३५	४५	५५
६	१६	२६	३६	४६	५६
७	१७	२७	३७	४७	५७
८	१८	२८	३८	४८	५८
९	१९	२९	३९	४९	५९
१०	२०	३०	४०	५०	६०
५५	१५५	२५५	३५५	४५५	५५५
१/५	३/५	५/५	७/५	९/५	११/५

Middle :—तुलसी टेरत कहत हैं सुनोयो संत सुजान ।
हेम दान गज दानते बड़ो दान सन मान ॥

११	११	१२१	२१	२१	४४१	३१	३१	९६१	४१	४१	१६८१
१२	१२	१४४	२२	२२	४८४	३२	३२	१०२४	४२	४२	१७८५
१३	१३	१६९	२३	२३	५२९	३३	३३	१०८९	४३	४३	१८४९
१४	१४	१९६	२४	२४	५७६	३४	३४	११५६	४४	४४	१९३६
१५	१५	२२५	२५	२५	६२५	३५	३५	१२२५	४५	४५	२०२५
१६	१६	२५६	२६	२६	६७६	३६	३६	१२९६	४६	४६	२११६
१७	१७	२८९	२७	२७	७२९	३७	३७	१३६९	४७	४७	२२०९
१८	१८	३२४	२८	२८	७८४	३८	३८	१४४४	४८	४८	२३०४
१९	१९	३६१	२९	२९	८४१	३९	३९	१५२१	४९	४९	२४०१
२०	२०	४००	३०	३०	९००	४०	४०	१६००	५०	५०	२५००
२४८५			६५८५			१२६८५			२०७८५		
४९/३५			१३१/३५			१५३/३५			४१५/३५		

End :—इतनैनि मिलि लंका विग्रहो । सोरह लाख रामपै रहे १६००००० ३२२८४९५०१४४ एक एक कंगुरापै इतने इतने बैठे ॥ नो डबरा एक एक डबरा में नो नो भैंसि एक एक भैंसि पै नो नो बगुला एक एक बगुला के मांहों में नो नो माछरी डबरा ९ भैंसि ८१ बगुला ७२९ मछरी ६५६१ सुवा एक फुवामेंते बोल्यो परे रूखके सुवा तुम कितेक हो ॥ हम सु हमहो हमतें दुने आगे हमतें ग्रोढ़े पाछैं तू आवै पूरे सो है जाहि ॥

रूखके २२ दुने ४४ आगे आोढ़े ३३ पाछे वह एक मिल्यो पूरे सो भये १०० ॥

इति

Subject :—प्रारंभमें गिनती एका, ग्यारह, एक ईसा, एक तीसा के दस दस पहाड़े का वर्णन पृ० १९ से ३० तक सवाया, ड्योढ़ा, ढय्या, हूंठा, ढौंचा का वर्णन पृ० ३१ से ४२ तक बड़ा ग्यारह ग्रैार बड़ा एका के भिन्न भिन्न पहाड़े पृ० ४३ से ५४ तक पैाना, छटांक व सेर को लिखावट का वर्णन, आना पाई का वर्णन पृ० ५५—५८ तक चार के १६ करे वर्णन, पानी को बूंदें, वाल, सुई, काजर, लंका युद्ध डाबरमें भैंस बगुलादि ग्रैार वृक्ष पर तोतों का गणित संबंधी मैाखिक वर्णन पृ० ५९—६२ तक ।

इति

No. 510. Mahādeva Vivāha. Leaves—9. Dated in Samvat 1893 or A. D. 1836. Deposited with Umāśankara Dubey, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—अथ महादेव विवाह लिख्यते ।

चौ०—कहत ककहरा नगर सदेसा । गिरिजा ब्याहन चले महेसा ॥
साथ लागइ डमरू सुर कीन्हा । भांग धतूर खजाना लीन्हा ॥
गरे नाग सिर पै सुर गंगा । भूषन भस्म चढ़ाये अंगा ॥
घर नहि दूसर भूप बराती । चले चवाति विजै की पाती ॥
नाम लेतु ईसुर अस राजा । करत निहाल गाल के बाजा ॥
चन्द लिलार जटा फटकारे । लोचन तीनि लोक उजियारे ॥
छाड़ा गिरि कैलाश सुहावा । वाहन बैल महेश मंगावा ॥
जात न कही बैल की बानी । सोने सींग मढ़े दो आनी ॥
झक झालरि गज मोतिन माला । धन्य बैल लिउ संकर पाला ॥
नाथ हाथ अपने पहिराई । कंचनसे पुर देत मढ़ाई ॥
टेरैं भूत भिहावन बानी । चला मस्त योगी शिवदानी ॥

End :—

थमो बरात द्वार पै आई । बिजुका बैल बाघु गरराई ॥
खबरि भई सिवसंकर आये । सब सखिअन मिलि मंगल गाये ॥
धांवति चली देषन सहेली । पारवती का छोड़ अकेली ॥
नारि चढ़ीं धौरहरा ऊंचे । छवि सरूप नैन भे नीचे ॥
पाछेक काहु हेवंचल कीन्हा । गौरा रूप डिगंवर लीन्हा ॥
फांसी दै तुम तजहु भवानी । सखिनसोच गौरा मुसक्यानी ॥
मन मा सोच करौ जनि कोई । कर्म लिषा वरु पावा सोई ॥
लेलोक पांउ हेमवान पुकारो ॥ मोतिन चौक तहां बैठारो ॥
वइ मोतिन को करैं निछावरी ॥ संकर गौरा फिरैं सत भांवरि ॥
हरषे देव फूल बरषाये ॥ ब्रह्मा विष्णु तमासे आये ॥

दो०—छकित करैं सब आरती ॥ छकित भयो कैलास ॥
मुक्ति दान अबदीजिये । हरि चरनन को आस ॥

इति श्री महादेव विवाह सम्पूर्ण समापितं सुभमस्तु ॥

Subject :—

(१) विवाह के लिये गमन करते समय महादेव जी के वेश और साथ की सामग्रियों का वर्णन ।

(२) महादेव जी के वाहन की शोभा का वर्णन ।

(३) हिमांचल नगरी के वासियों का बारात देखने के लिये शीघ्रतापूर्वक आना । युवतियों का शंकरजी के स्वरूप को देखकर शोच करना ।

(४) पार्वती की प्रसन्नता। स्त्रियों का समझाना॥

(५) शिव पार्वती का विवाह संस्कार। ब्रह्मा विष्णु आदि देवों का बारात देखने के लिये आगमन।

(६) देवताओं द्वारा आकाश से पुष्प वृष्टि।

No. 511. Mahūrtavichāra. Leaves—12. Deposited with Rāmaprasāda Murāū, Village Viśramadāsa-kā-Puravā, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्रीगणेशायनमः करण भगण दोषम् वार संक्रांति दोषं कुतिथि कुलिक दो मया मद्धि दोषम् राहु केत्वादि दोषं हरति सकल दोषं चन्द्रमा सन्मुखस्यात्॥ १॥ मघा विशाखा कृत्तिका। अहि शिव भरणी मूल। स्वान सर्प इनमा डसै। मानहुं जम हना त्रिसूल॥ २॥ रामनाम घर भोग विलासा। सोता शोक करै वनवासा॥ अछिमन लक्ष जोति गृह आवे। हनूमान कछु खबरि जनावे॥ नौमी प्रतिपदा शनि सोम प्रतिकाल श्रवण घट तुला लग्न परवत जाइये॥ पंचक सोम पंचमी गुरु दिन मध्यान्ह काल ते रासि मीना तिकके दक्षिण बराइये। षष्ठी भृगुभान भौम भूत पुष्य रोहिणी संध्या धन में षहरि पश्चिम न जाइये॥ द्वैज दिन रवि शशिच भौम मकर निशार्द्ध मकर कुंभ कन्या नहिं उत्तर सिधारिये॥

End :—जो कोई पौर्णिमा को भूमि कंपै वा दिन में तारा टूटै उल्का पात व वज्र घात होय वा चंद्र सूर्य ग्रसै वा केतु उदय होय इन्द्र धनुष कढ़ै तो सब वस्तु महंगी होय ग्रहण में अवश्य। इत्युत्पाताः॥ बुधः शुक्र समीपस्थः करोति कार्यं वा महां॥ नयो इंतर्गतो भानुः समुद्र मार्ग शोष येत्॥ बुधे तिजा बुध शुक्र समीप होइ तो पृथ्वी भर में जल वर्षै मह जोतिन के बीच में सूर्य आनि परै तो समुद्र के जल को भी सोष लेइ॥

Subject :—पृ० १ से पृ० ९ तक—सर्प काटने का विचार, मात्रा विचार लग्न प्रमानम्, नक्षत्र विचार, भद्रा वर्णन,

(२) १० से पृ० १८ तक—विवाह विचार, होम कर्मवयग्नि विचार,

(३ पृ० १९ से पृ० २४ तक—यात्रा तिथि विचार, उत्पात विचार।

No. 512. Manihārina-Bhesha-kī-Pothī. Leaves—5. Deposited with Paṇḍita Mathurāprasāda Miśra, Village and Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ मनहरिन भेष को पोथी लिख्यते ॥

एक समै व्रज चंद नंद सुत मन में यहै विचारी ।
करिके भेष विसाति नारि को छलिये राधा प्यारी ॥
कौनषाप को लहगा पहिरे अरुन जरकसी सारी ।
अंगिया लाल श्याम मंडन की अति छवि देत सो न्यारी ॥
मोतिन को पहिरे नक बे भालरदार बनाई ।
मानों विरचि विरंचि आपकी गहने की सुघराई ॥
कानन करन फूल अति सोहै माथे बीज जराऊ ।
ता ऊपर अति लसत वंदनी मोतिन माँग भराऊ ॥
कंठ लसत दुलरो वो तिलरी गज मुकन को हारा ।
मानों जुगल सुमेरु के ऊपर धसी गंग की धारा ॥
गरे हेवाल माल कंचन की अरु पहिरे पग वारी ।
मानों काम आपने ऊपर रुचि रुचि विविधि सवारी ॥

End :—

अरस परस घुंघरुन लों करिके............. ।
लखि के पदम कहन अस लागे ऐसे भेष बनायो ॥
विरजा सखी सदन ते चंचल छिन भर रही न साती ।
हाथ पकरि मनहारिन जू के जाइथ खोलिन छाती ॥
षसिके परे तुरतहि दोऊ उलटे लगे मंजीरा ।
दाँत अंगुरिया दई राधिका धन्य धन्य बलवीरा ॥
मेरे काज लाज तजि मोहन एतो परिश्रम कीन्हों ।
नारि भेष धरि आये मोहन बड़ो बड़प्पन दीन्हों ॥
जाको जपत शेष अज शंकर सुर मुनि जिते बड़ेरे ।
ते मोहन तुम बने फिरत हो व्रज बनितन के चेरे ॥
तुम तो तीन लोक के स्वामी श्री पति अंतर जामी ।
ताप तीनि हत होत हो श्री कृष्ण गहण के गामी ॥
आनंद कंदन के नंद नंदन जगवंदन गुन रासी ।
जाको ध्यान धरत सुर नर मुनि जोगी जन सन्यासी ॥

× × × ×

× × × ×

इति श्री मनिहारिन भेष की पोथी संपूर्ण ।

Subject :—श्री कृष्ण का मनिहारिन भेष में राधा को छलना । स्त्री वेष-धारी कृष्ण के नख-शिख का वर्णन । विरजा सखी द्वारा वृषभान-भवन में

पहुंचना और राधिका से मिलना तथा राधा के प्रश्न पर अपना पूरा पता बताना। विविध अलंकारों से राधा को विभूषित कर प्रेमालाप करना। विरजा सखी द्वारा छातियों पर बांधे मंजीरों का खोंचा जाना। कृष्ण का कपट रूप प्रगट होना तथा राधा द्वारा कृष्ण की विनती और नवलकुंज में मिलने का वादा। कृष्ण का घर आकर भोजन कर शयन करना।

No. 513. A collection of Manohara-Kahānī. Leaves—72. Dated in Samvat 1939. Deposited with Ṭhākura Śivasimha, Village Vikramapura, Post Office Oyala, District Kherī (Oudh).

Beginning :—श्रीगणेशायनमः अथ मनोहर कहानी लिष्यते ॥ कहानी ॥ एक साहूकार पोतड़ों का रज्जा समय के फेर में पड़ अपना धन सब खो बैठा। और लगा निपट दुख पाने और उपासा रहने। निदान उसके जी में यह सोच आया कि जो मैं किसी महा पुरुष या सिद्ध के पास जाऊं तो यह दुष मिटै क्योंकि सुना भी है कि एक साध के दर्शन से व्याध जाती है यह विचार चला चला एक जोगी के पास गया यह उससे कुछ कहने न पाया कि उसने अपने जोग से इसका मनोर्थ जान कर कहा ॥ दो० ॥ सुष दुष प्रतिदिन संग हैं मेटि सकै नहिं कोय जैसे छाया देह की न्यारी नेक न होय। यह उत्तम उत्तर पा वह विचारा धीर्य धर अपने घर आया ॥ १ ॥ एक अंधा वैरागी काशी के बीच मणिकर्णिका घाट पर वैठा ग्रहण में दही पेड़े खा रहा था कि देखकर किसी पंडित ने पूछा सूरदास जी यह क्या करते हो बोला महाराज दही पेड़े खाता हूं कहा ग्रहण में—उत्तर दिया मेरे गुरु की दया से सदा ही ग्रहण है। यह सुन पंडित हंसकर चुप हो रहा ॥ २ ॥

End :—एक बूढ़ा बटोही ग्रीष्म की रितु में तपन की प्रचंड किरणों से निपट कष्ट पाकर लाठीटेकता चला जाता था। मारग में एक युवा अश्वारूढ़ आ निकला बूढ़े का देखकर उसे दया हुई बोला अजी मैं युवा पुरुष हूं शीत घाम सब सह सक्ता हूं तुम बूढ़ा पन के कारण बहुत थके अब इस घोडे पर चढ़ो मैं पीछे पीछे चला आऊंगा उसकी इस करुणा वाणी से मगन बूढ़ा उसके घोड़े पर चढ़ा और युवा पीछे पीछे पैदल जाने लगा वह बहुत दूर न गया था कि युवा ने पुकार कर कहा अरे बूढ़े निलज्ज घोडे पर उतर क्या तू ने अपना घोड़ा पाया है जो सारा दिन उस पर आरूढ़ चला जाता है बूढ़ा लज्जित होकर उतर पड़ा और धीर धीरे चलने लगा थोड़ी दूर गया था कि इसका कष्ट देष फिर उसके जी मे दया आई और बहुतसी विनती कर इसे फिर घोडे पर चढ़ाया थोड़ी दूर

जाते उसे फिर उसी भांति उतारा निदान दो तीन वार उसे इस प्रकार चढाने उतारने से बुढे ने पूछा वावा तुम्हारे पिता का नाम क्या है वोला सैयद हब्बो पूछा तुम्हारो महतारी का नाम क्या उसने कहा वीवी जोरा पर वह कुलवती नहीं उसको व्याह करने से हमारे कुलमें कलंक लगा यह सुनतेही वूढे ने कहा हां वावा अव मैं समझा कि चढावें हब्बो और उतारे जोरा अव आप सिधारिये मैं गिरते पडते चला जाऊंगा ॥ इति मनोहर कहानियां संपूर्ण समाप्तः लिखतं गिरधारी लाल वैश्य वजाज गंज टेना ॥ संवत १९३९ भाद्र पद कृष्ण पक्षे अष्टमयाम् ।

Subject :—१०० मनोहर कहानियों का संग्रह ।

No. 514. Mantra. Leaves—4. Deposited with Paṇḍita Rāmasvarūpa Miśra of Arjunapura, Post Office Antu, District Pratapagaḍha (Oudh).

Beginning :—॥ श्रीराम ॥

ऊं नमो आदेश गुरु को डाकिनी सिहारी किन्नैं मारी ।
यती हनूमान ने मारी कहाँ जाय दुवकी किनो ने देखी ।

यती हनूमान ने देखी सातवें पाताल गई सातवे पाताल से कौन पकड़ लाया, यती हनूमन्त पकड़ लाया यती हनुमन्त वीर पकड़ लाय के एक ताल दे एक कोठा तोड़ा दो ताल दे दो कोठे तोड़े तीन ताल दे तीन कोठे तोड़े चार ताल दे चार कोठे तोड़े पाँच ताल दे पाँच कोठे तोड़े छः ताल दे छः कोठे तोड़े सातवाँ कोठा खोल देखे तो कौन-कौन खड़े हैं । डाकिनी सिहारी भूत प्रेत ले यती हनुमंत तेरे झाडे से चले । ऊं नमो आदेश गुरु को गुरु की शक्ति मेरी भुक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचः ॥

End :—उक्त मन्त्र को १००० सहस्र वार जप करै गुगल के औगुल तुर्रे के फूल की ७०० शत आहुती करै दो और मैनफल की राख की रुई में मिलाकर वाती वनालो यह वाती तेल भरे दीपक में जलाकर उस दीपक की पुजा करो तदनन्तर आठ या दस वर्ष की अवस्था उत्तम वर्ण देवगण वाले पवित्र वालक (लड़का तथा लड़की) को दीपक के सन्मुख विठलाकर आप भी पवित्रता से मन्त्र के जप के संकल्प का जल मैनफल पर डालदो और दीपक के सन्मुख इस मन्त्र को लिख के निम्न लिखित यंत्र की पूजा करो तथा वालक की हथेली में वह दिखाकर मैनफल की राख तेल में मिलाके वालक की हथेली पर लगादो और पूजित यंत्र उसके गले में दक्षिण हस्थ में वाँधकर उससे कहो कि तू अपनी हथेली में देखताजा फिर उससे जो पूछो वह अपनी हथेली में देखकर जो कुछ कहै सो

सत्य जानो ।

॥ यन्त्र ॥

१	८	३	८
५	६	३	६
७	२	९	२
७	४	५	४

यह विधि उड्डीश में लिखी हैं।

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ७ तक—हनूमान का मंत्र, दो यन्त्र, मन्त्र से प्रथम सन्ध्या की माति कान्यासादि । मंत्र-सिद्धि करने की विधि ।

No. 515. Mantraprayoga-Saṅgraha. Leaves—14. Deposited with Paṇḍita Śiva Kaṇṭha Dube, Village Deudārapura, District Kherī (Lakhimapura) (Oudh).

Beginning :—श्रो गणेशायनमः ॥ अथ मंत्र प्रयोग संग्रह लिष्यते ॥ मंत्र आपनो देह रक्षा को । ॐ नमो लोह का लोढ़ा जहां डाकी कूड़ी हमारा पिंड पैठा ईश्वर कूंचो ब्रह्मा ताला हमारा पिंड का श्री हनुवंत रखवाला ॥ या मंत्र को पढ़ि के कहीं रहो कुछ चिंता याकी देह में नहीं उपजे। सत्त सदी है ॥ बवासीर को मंत्र ॥ उमता उमती चल चल स्वाहा ॥ लाल सूत में तीन गांठ देकर २१ मंत्र पढ़ के पांव के अंगुठा सों बांधे ॥ दस रोग का गंडा ॥ परवत ऊपर परवत श्रौर परवत ऊपर फटिक सिला फटिक सिला पर अंजनी जिन जाया हनुवंत नेहला टेहला काख की काख लाइ ॥ पीछे की अदीठ कान की कनफेड़ रान की भद कंठ की कंठ माला। घुटने का डहरू डाढ़ को डढ़सूल पेट की तापतिल्ली फोया इतने को दूर करे ॥ मम मंत नावर के माता अंजनी का दूध पिया हुआ हराम मेरी भक्ति गुरु की शक्ति पूरो मंत्र ईश्वरो वाचा ॥ सत्य नामा आदेश गुरु का विधि ॥ सात शनीश्चर हनुमान का पूजन धूप दीप नैवेद्य आदि करे १०८ प्रति दिन जाप स्त्री पास नहीं जाय फिर होली दिवाली ग्रहन में १०८ जापकर बला अदीठ कनफेड़ भद कंठमाला डाढ़ सूल राख से झाड़ै डहरू के आक के ताप तिल्ली छुरी से मांड़े हनुमान का प्रसाद बटवा दिया करे ॥

End :—किये कराये उतारिवा को मंत्र ॥ ॐ नमो आदेश गुरु कोऊ अपर केश विकट भेष पंभति प्रहलाद राषे पाताल राषे पाव देवी जंघा राषे कालका मस्तक राषे महादेव यह पिंड प्राण को छेदे तो देव दानाव भूत प्रेत डंकणी

संकखी गंडलोय ते जती एक पहर वा द्वै पहर सांझ को सवारा का किया को कराया को उलटि वाही पिंड पर परे इस पिंड को रक्षा श्री नरसिंह जी करै ॥ सब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा ॥ कोड़नगरा को मंत्र ॥ ॐ नमो आदेश गुरू को जादि नगरा ते चली रागी सहस कोटि लाष ब्यारि कोटि काली कावरी सब एक उन्हार मंदिर मांहि घर करै प्रजा ने वहुत सतावै ॥ दुहाई जती हनुमंत की हमारी गली में आवै तो लंका से कोट समुद्र सी पाई जै कीड़ा मगरे रहे तो जती हनुवंत वीर की दुहाई शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ॥ विधि ॥ तिल काले पर ७ मंत्र पढ़ि कोड नगरा पै नाषि जै दिन ७ तथा १४ कोड़ नगरो जाय ॥ ताप तिल्ली को मंत्र ॥ ॐ नमो हुतास परवत जहां सुरह गाय सुरह गाय के पेट में वच्छा वच्छा का पेट में तिल्ली तिल्ली दवा दवा तिल्ली कटे सर कड़ा वढे फोया कटे हरो फुरो। आठ अंका करके छुरी के फलरा सों झाड़ दीजै सरक डा बढै छुरी को छोह कटै ॥

Subject :—हर प्रकार के रोगों के मंत्र और वशीकरण आदि मंत्र का वर्णन।

No. 516 (*a*). Mantra-Saṅgraha. Leaves—16. Deposited with Bābā Jhabbūdāsa of Bādaśāhanagara, Post Office Lucknow (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अपनी देह रक्षा को मंत्र ॥ ॐ नमो लोह का लोढ़ा जहां डाको कूंड़ो हमारा पिंड पैठा ईश्वर कूंची बह्मा ताला हमारा पिंड का श्री हनुमंत रखवाला ॥ या मंत्र को पढ़ि के कहीं रहो कुछ चिंता वाकी देह नहीं उपजै सत्त सही ॥ ववासीर को मंत्र। उमती उमती चल चल स्वाहा लाल सूत में तीन गांठ देकर २१ मंत्र पढ़ के पांव के अंगुठा से वांधे ॥ दस रोग का मंत्र ॥ पर वत ऊपर पर वत और परवत ऊपर फटक सिला फटक सिला पर अंजनी जिन जाया हनुमंत नेह ला टेहला कारव की करव लाई। पीछे को अदीठ, कान की कनफेड़ रान की वद कंठ का कंठ माला छुटरने का डहरू डाढ़ा की डढ़ सूल पेट की ताप तिल्ली फोया इतने को दूर करै भसमंत नावरझे माता अजनी का दूध पिया हुआ हराम मेरी भक्ति गुरू की शक्ति पुरो मंत्र ईश्वरोवाचः सत्य नामा आदेश गुरू का। विधि। सात शनिश्चर हनुमान का पूजन धूप दो नई वेद्यादि करे १०८ प्रति दिन जाप स्त्री पास नहो जाय फिर होली यादिवाली ग्रहण में १०८ जाप का खला अदीठ कनफेड़ वद गंड माला डाढ़-सल राष से झड़े डहरू को आक से ताप तिल्ली को छुरी से झाड़े हनुमान का परशाद वटवा दिया करै ॥

End :—सभा मोहिनी ॥ काल्ह मुष धो करूं सलाम। मेरी आंखों में सुरमा वसे जो देषे सो पांव पड़े। दोहाई जैा सुल आजम दस्तगीर की छू विधि। सवालाष गेहूं पै १२५००० मंत्र पढ़के वांको आटा करावै घी षांड मिलाय हलवा वनावै फिर जैा सुल आजम दस्तगीर की उसपै नियाज दिलाकै आपहो षाय जब किसी सभा मे जाय सुरमा पर सात वार मंत्र पढ़कर लगाय जाय सब सभा वस में होय ॥ सभा मोहनी सिन्दूर। हथेली तो हनुमान बसे भैरों बसे कपाल नारसिंह की मोहनी मोहै सब संसार ॥ मोहन रे मोहनता वीर सब वीरन में तेरे शिर सब की दृष्टि वांधि दे मोहि तेल सिंदुर चढ़ावो तोहि तेल सिन्दूर कहां ते आया कै लाल परबत से आया कौन लाया अजनी का हनुमंत गौरी का गणेश काला गोरा तोतला तीनो बसे कपाल बुरा तेल सिन्दूर का दुसमन गया पताल दुहाई का मियां सिन्दूर की हमे देषि शीतल होइ जाइ हमारी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचः सत्यनाम आदेश गुरू को। विधि ॥ सात शनिश्चर वा रविवार दीपक ८ तेल करके लोवान देवे मिठाई भोग धरै १०८ जप फूल पात करके पूजा करै सिद्ध हो जाय तो पाछे जहां जाय सिन्दूर पै सात वार मंत्र पढ़ माथे पै लगाया जाय राजा गुस्सा हो जाय दंड देवे को बुलावै तो देखते ही शीतल हो जाय जिस सभा में जाय वहां के सब मनुष्य आदर भाव करें अरु प्रीति से सन्मान करै ॥

Subject :—हर प्रकार के ३०० मंत्र कार्य रोग आदि के वर्णन ॥

No. 516 (*b*). Mantra-Saṅgraha. Leaves—10. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning:—आसमेनो पास मोहनी मस्तक मोहनी जन्म सभा कै जिह्वा बांधैमोहनी मन मोहनी तराह्वाथी हनुमंत विराजै कपाले भैरा श्री श्री सिंदूर की दृष्टि देपु पताले ॥ १ ॥ आगो ॥ तुमही से माता तुमही से पिता तुमही हस्त रहंती रे अगिन पा पानी परंती कार शाय सोता सोता राम राज्ञाय सर सुवर अगिनि सो बला रक्षया करै गुरु गोरख अवधूत मेरो भगती गुरु की सकती फुरो मंत्र इश्वरोवाचा ॥ २ ॥ धूल धूली में रोवायु चंद्र खुवद सूर्य ॐ ठकायरू देह पानी पानी पढ़ते प्रानी हैात उच्चाट लागु ३॥ देखंत के चसूला गुचलंत के पगला गुरु हन्ता के पाटल गुमारंता के हस्त लागु लागु नल गु कहक राजा श्री त्रिपुरारी कोटि अज्ञा वेगी लागु ॥ कंवरू देस कमख्या दोनो जंह बसे असमाइल जोगी असमाइल जोगी जोगी वाही वाड़ी न फूल हंसे न विगसे न फूल सुखै न कुमिलाइ जो सुंघे फूल की वास सो आवै हमरे पास ॥

End :—मंत्र सांप मारक। उत्तर दिसि कारी बादरी त्यहि मध्य ठाठ काल पुरुष एक हाथ चक्र एक हाथ गदा मारो सत खंड लाइ। गदा मारो सत पाल लाइ औ हर २ निर्विष शिवाज्ञा। अन्यच। थिर पवन जिहि विस नासै तेहि देखि थरहर कांपै संसर्जो आख विसमो रूदिष्ट टै नहीं विश॥ एहि मंत्र फुसलै बालु गाढ़ै माख तत्काल निर्विष होइ॥ जव बंधन मारै क मंत्रः॥ जटा ऊपर का गार है॥ ॐ नमः शिवाय शिव विचित्र सा पुनः कागा भीटे पनिया परै पोठे ॐ नमः शिवाय विचित्रां आग्याल हरि जगावै क मंत्र छव मास को परो डंक कापा को करार गये न तो निम छोरि काग आत गिध उड़इ सर वाहर पठावहि ठावनो नाच मारी वहाक छंडा न कै पड़ो उठी ठोटो भइ लागु पर महसर उड़ै खंड कहा डगरिनव पंजरन्ह ला कठी काइरै हाकदे था वैनो मापो गिनि उंग उठै विहास पिरे सात समुद्र माझे पड़ो कविप वाढ़ै जोवधरा आमंत्री रहि हि जगावै जागिनि पाखतो जागु २ परमेश्वर उड़रे डंक॥

No. 617 (*a*). Mantra-kī-Pustaka. Leaves—5. Deposited with Mahanta Santadāsa of Maujā Sagarâmapura, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॐ पश्चिम देसते चलो हनुमंत वीर मृत लोकहि सो संसार भिक्षा पहिरे हे बजरंग बंदर छूटे भूरे अंगक्ति सैन पवन को पूत वे बांधे कलजुगकपूत श्री राम पर वोरा पावो देव सुत सव वांधि मंगाये अलु करै अलुबाधु छलुकरै छलु वांधु वलु करै गुदि दे पाउ देषो हनुमंत देव तेरे या मंत्र को या शक्ति गाइ कंगरि आरै नै नारी वहत्तरि कोठाते वांधि महं कारि अपने हे वालेन करै तो वहिन भांजी को सज्जा पांउ धरे राजा रामचन्द्र कहरि जान।

End :—मन्त्र पान का।

ॐ कामरु देस कामभा देवी तिनने भेजे चारि पान पहिलो पान रातो माता दुजो पान विरह को माता तीजो पान औरो अउर चउथो पान मिलावैइ जोड़ा जो कोउ पाइ हमारो पान सो आवै हमारे पास न राति कल न दिन सुख फिर फिर देषै हमारो मुख काली गुदरी काली राति जाइ वैठि अमुक को पाट सोवत होइ जगाइ ल्याउ वैठ होइ चटपटी लाउ ठाढ़ होइ चलाइ ल्याउ न अवै मुख रुधिर की छार दोहाइ ईश्वर महादेव की दोहाइ नइनुआ जोगी को दोहाई इस मैला जोगी को।

Subject :—हनुमान का मंत्र, ब्रह्मराक्षस छुड़ाने का मंत्र, चोर जानने का मंत्र, मोहन मंत्र, कार्य सिद्धि का मंत्र, ओले उतारने के दो मंत्र, वाघ मारने का मंत्र, गोला का मंत्र, विक्षिप्त का मंत्र, वशीकरण फूल का मंत्र।

No. 517 (*b*). Mantro-ki-Pustaka. Leaves—4. Deposited with Pandita Vindheśvariprasāda Miśra, Teacher, Sanskrita Pāṭhaśālā, Village Gaṇḍā, Post Office Mādhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ आपको देह रक्षा को मंत्र ॥ ओ० नमो लोह को कोठा जहांड़ा को कुठो हमारा पिंड पैठा ईश्वर कुंची ब्रह्मा ताहमा हमारा पिंड का श्री हनुमन्त रखवाना या मंत्र का पढ़िके कहीं रहे शुद्ध चित देह में नहीं उपजै । सब्य सही ॥

॥ ववासीर को मंत्र ॥

उमती उमती चल चल स्वाहा ।

लालसूत में तीन गांठ देकर २१ मंत्र पढ़िके पांव के अंगुठे बांधै ।

दश रोग को झाड़ना

परवत उपर परवत और परवत ऊपर फटिक सिला फटिक शिलापै अंजनी जन जाया हनुमन्त नेहूं लाट हला कोख को कंखलाई पोछे को पटो ठकान को कन फिर रान को मद कंठ को कंठ माल घुटरने का डमरू डाढ़ को डाढ़ शूलपेट को तापतिल्ली को या इतने का दूर करे भस्मन्तनातर मुभ्क माताअंजनी का दूध पिया हुआ हराम मेरो भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच सत्यनाम आदेश गुरू का ।

End :—॥ वैरो जेर करवे को मंत्र ॥

ओं नमो वलो या वलो उसका चस्मा कुलुफ उसका वाजू कुलुफ दुशमन को जेर हमको खेर ॥

॥ विधि ॥

२१ दिन पूजा हनुमान जो कै करै मंगल से १०८ जप करै जप करै धूप दीप नैवेद्य करके मंगल को मंगल १०८ जप करै वृत राखै जहां वैरी बैठा होय रत को चुकटी पै ३ या ७ वार मंत्र पढ़के वैरो को तरफ फूंकै ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ५ तक—अपनी देह रक्षा का मंत्र और उसकी विधि । ताप-तिल्ली का मंत्र । उसकी सिद्धि की विधि, डाढ़ के दर्द क मंत्र । गर्भ रक्षा का मंत्र ।

(२) पृ० ५ से पृ० ८ तक—नेत्र की पीड़ा का मंत्र । डमरू पसली व वायु का मंत्र । उसको सिद्धि करने की विधि तथा प्रयोग । विष उतारने का मंत्र । सभा मोहनी मंत्र ।

No. 518. Motī-Binaule-kā-Jhagaḍā. Leaves—8. Dated in Samvat 1933 or A.D. 1876. Deposited with Paṇḍita Devatādīna Miśra, Village Sulatānapura, Post Office Thānā, District Unnāva (Oudh).

Beginning:—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ मोती बिनौले का झगड़ा लिष्यते ॥ ख्याल ॥ वड़े वड़ाई कभी न करते छोटे मुख से कहै वचन । अपने मन में सभी वड़े हैं मोती विनौले लगे लड़न ॥ रहूं सिंध के बीच समुन्दर सोप दोप हो रही आला । पड़ी वूंद स्वाती की मोती नित प्रति हुआ निरआला ॥ चातुर ने करी चाह वड़ी हिकमत से मुझको निकाला ॥ दिया जौहरी हाथ दलहर जद विस का मैंने टाला ॥ चातुर के मन वसा तुरत मगवा मुझ को डाला ॥ सोने का किया साथ यार मुखड़े पर रहता रखवाला ॥ ऐसो धरन से रहूं तुझे क्या कहूं तू आजा मेरी सरन । अपने मनमें सबी वड़े हैं मोती विनौले लगे लड़न ॥ ख्याल ॥ जवाव विनौला ॥ कहै विनौला सुन भाई मोती क्यों करता है वड़ाई । फूलों में सिरदार फूल मेरो दुनियां में हैं उजलाई ॥ दो दो बांधत शस्त्र पहनते वस्त्र कहलाते सिपाई । सब के कूं ढकूं अदव में रखूं लोग क्या लुगाई ॥ सव के सारे काज लाज मैं रखूं शरम भलमनसाई । क्या गरीब क्या तालेवर में छई रही मेरी अवाई ॥ ऐसो धरन से रहूं तुझ से क्या कहू तू आजा मेरी सरन अपने में सवी वड़े हैं मोती विनौले लगे लड़न ॥

End :—ख्याल जवाव मोती का ॥ कहै जो मोती सुनरे विनौले मैं अनमोल वड़ा सिरदार । क्या वजीर क्या राजा बादसाहि वेठे गले में माला हार । जोड़ो ज्योति जगमगी कच हरी भरा हुआ सारा दरवार । पैसे के दो सेर विनौले मंगा कूड़े रखवा दिये द्वार ॥ मै कहता हूं सुन वे विनौले अव भी तू होजा लाचार ॥ जिद तू अपनी छोड़ दे हमसे नहीं तो मारूंगा पैजार ॥ जिद अपनी को छोड़ विनौले आजा तू तो मेरी सरन । अपने मन में सवी वड़े हैं मोती विनौले लगे लड़न ॥ जवाव विनौले का ॥ कहै विनौला सुन वे मोती चुपका रहो तू मुरगी के । नंगी खड़ी करदे औरत कपड़े छीन लेवे तन के ॥ मोती के वाले कानों में हाथों में गजरे सोने के । देख तो वे अच्छी लगे हैं विना विनौले कपड़े के । जव तक तुम पर आव है मोती तव तक तुम हो रुपये के । जव पानी ढल जाय तुम्हारा फिर नहिं कोई मतलव के ॥ वड़ो महीं तुझ में टकलाया चमकता था विस दिन । अपने मनमें सभी वड़े हैं मोती विनौले लगे लड़न ॥ ऐसी धरन से रहूं तुझसे क्या कहूं तू आजा मेरी शरन । अपने मन में सभी वड़े हैं मोती विनौले लगे लड़न ॥ इति श्री मोती विनौले का झगड़ा संपूर्ण समाप्तः संवत् १९३३ कार दशहरा ॥ श्री शंकराय नमः ॥

Subject :—मोती मैार बिनौले को अपनी अपनी बड़ाई का वर्णन

No. 519. Mushṭikapraśna. Leaves—2. Dated in Samvat 1784 or A.D. 1827. Deposited with Paṇḍita Śivakanṭha Dube, Village Devadārapura, District Kherī (Lakhīmapura) (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मुष्टिक प्रश्न लिष्यते ॥ लग्न को केन्द्री बृहस्पति तथा शुक्र होय तो जीव चिंता कहिये ॥ मं. बृ. कुंभ, सिंह इन ऊपर केंद्री कुल चक्रे होय तो धातु चिंता कहिये ॥ मं. ३ कुं ११ कं. ६ म. १० इनमो कोई लग्न होय अरु बुध तथा शनि वक्री होय तो मूल चिंता कहिये ॥ ३ बृ ॥ २ ध. ८ तु. ७ मि. १२ ॥ कु ४ ॥ चं. बृ. शु. सो जो इनकी दृष्टि होय अथवा स्थित होय तो जीव चिंता कहिये ॥ ४ बुध लग्न थे ५ अरु ९ ॥ ५ । शुक्र की दृष्टि होय अरु ॥ ६ ॥ शुक्र होय तो मूल चिंता कहिये ॥ चंद्रमा केंद्रि बुध होय कं सूर्य की दृष्टी होय तो गुंज मूल वतैये ॥ चंद्रमा की केन्द्र शुक्र देषत होय तो फल चनका कहिये कपासु पन्नादिक कहिये ॥ ७ ॥ बुध ॥७॥ तथा बृहस्पति होय तो मिर्च फल तथा धातु स्याह पीत होय ॥ ८ ॥ शुक्र चंद्रमा तथा शनि । ७ । वे होय लग्न ते तो जायफल धातु शूल श्रुति कहिये ॥ शुक्र चंद्रमा शनिश्चर जो ७ वे होय तौनि वस्तु होय धातु मूल मृतिक ॥ १० बुध ॥ मं. ॥रा.॥ श. ११ तथा ९ होय तो सुगंध को फूल कहिए ११ ॥ बु. । बृ. शु. जो ये पांचो होय तथा ॥ १० ॥ स्थान को देषतो होय तो केला को फल कहिये ॥

End :—१२ ॥ राहु के० बु० शु० जो ६ होय तथा स्थान को देषत होय तो करुवो फल कहिये । शु. बृ. मं. जो छठो होय तो तीन वर्ण को वस्तु कहिये ॥ बृ ३ श. १० बु० होय तो पाटंवर वस्त्र लग्न कुं. चे. श. देषति होय तो फल मूल कृश्न सुपेद होय १६ चंद्रमा मे. बु. जो १० वारहे होय तो रक्त स्वेत पीत वस्त्र होय ॥ १७ । मं. रा. केंद्र लग्न को देषत होय तो धैालोय धूत्र धुवां सरोपो वस्त्र होय ॥ चंद्रमा केंद्री होय तो स्वेत वस्त्र होय । चंद्रमा मवन शुक्र होय तो रूपे को मुद्रा कहिये ॥ बुद्ध केंद्री होय तथा केंद्री को देषति होय तो फल मूल तृण मद्दा हरो वस्तु होय ॥ बृ. ७।९ तो रक्त जुक्त स्ववर्ण युक्त वस्त्र जीर्ण होय सूर्य ४।१० होय तथा लग्न १।७ लग्न को देषत होय तो मुक्ता फल जुक्त वस्त्र होय ॥ जो केतु होय तो विद्रुम होय मंगल केन्द्री को देषति होय तो लाल विद्रुम होय ॥ केंद्री शनि होय तो लोहा कार होय राहु केंद्री होय तो संषाकार होय ॥ बुध ३।५ । होय राहु सूर्य की दृष्टि होय तो सव गुण तथा देषति होय तो स्वेत कृश्न जानिये ॥ मंगल शुक्र ९।५ होय तो मृतिका कहिये सूर्य केंद्री होय बुध ९

होय ५ मंगल होय तौ मूढ़ो में फल कहिये ॥ बुध ५।६ चंद्रमा शुक्र देषत होय तौ थाली को फल कहिये ॥ सूर्य ६ मंगल ९ होय तौ तिल मसुरी रक्त कारो करवुर कहिये ॥ शु क ११ होय तौ गेहूं जौ कहिये ॥ इति श्री मुष्टिक प्रश्न समाप्तम् शुभंभूयात ॥ लिषतं भोलानाथ त्रिपाठी स्वपठनार्थं नेरी के बीच संवत् १७८४ चैत शुक्ल नैामी ॥

Subject :—ज्योतिष द्वारा मुष्टिक वर्णन ॥

No. 520. Nāḍī Parikshā. Leaves—50. Deposited with Paṇḍita Jagannāth Bājapeī, Village Mākhī, Post Office Nevaṭanī, District Unnāva (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नाड़ी परिक्षा लिष्यते ॥ दे।० ॥ शुभमन सरस्वती सुमिरिये शुद्ध चित्त हित आनि । प्रगट परिक्षा जीव की लहियो चतुर सुजान ॥ चो० ॥ पित्त वाति पुनि श्लेष्म जानि । देषैा धमनी राह पिछानि कटुक तिक्त पुनि उष्ण कैा पानो । स्निग्धरक्ष त द्रुण विधि जानो ॥ काऊ मूल सम चंचल नाड़ी । पित्त प्रकोपै चलै उघाड़ी ॥ दूध दही विस्वा गुड़ षाय । तिसमें ऐसा भाव जणाय ॥ प्रात समै पुनि पाणी पीवै । तिसकी नाड़ी पित्त घर धीवै । षीर षरबूजा संपूर्ण शालीं । मिष्ठ ष्यार मल पित्त पषाली पीत संषिनी षाय सनि पाती । वात वस्तु षायी होय षाती ॥ चलती चलती फुलिंग ज्यों कूदै । कारे नाज षांधा जिन्हि लूंदै ॥ सैाफ सजी धनियां भषियां ॥ मिस्री गर्रा सब लीजे भषियां ॥ पित नाड़ी इन कफ घर तासै । तो जाणि ज्यों वैद उलासै ॥ हंस सरी अहि ज्यों जब आवै । फिर पीछे पित के घर जावै ॥ पाणी सरदी मरदी षैसी । कफ नारीडा लक्षण कैसी ॥ वटेट अति मंद धमणी जाणी । वात प्रकोपै सीतल पाणी ॥ सीघ्र चलै पुनि सीतल उपजावै । वात पित्त का भेद लषावै ॥ मृष प्रकोपै चंचल ह्वै चालै ॥ रक्त उष्म कों जानैा सभांलै ॥

End :—चतुर्थ ज्वर को नमस्वार । वृंदात ॥ पत्र अगथिया के ग्रहो रमको दे नमस्वार । जुर चतुर्थ ना रहै भाष्यो वृन्द संभार ॥ पुनः । अपुव कंटाली मूल लै रवि नहिं उगै सूर । गुगल धूप दे बांधिये त्रतीय ज्वर जाय पंभूर ॥ पुनः ॥ दूधक मूल जो संग्रहो बुध रवि दिन के वार कंठ वांधो धूप दै त्रतीय ज्वर जाय निरधार ॥ पुनः एकान्तरादिक को गंगा या उतरे कूले अपुच नाम सो मृत तस्मैति लोक कंद धातु मुंचत्ये कादिक ज्वर अविधि ॥ काला तिल अरु पाणी इनै मंत्रसो मंत्र नित्य ज्वर के नामे वाहिर जाय तिलको होमो कीजै पाणी की धारा चैागिर्द दइ दीजै कही जै मुषिष्टूं तीमैं नित्य ज्वर जाय । जानि इमि

फहि करि उठि घरि आवै फिर पीड़ा ने चाऊँ नहीं ॥ इति नित्य ज्वर जाय ॥ मस्तक पीड़ा छिद्र छिक ये ज सीत ज्वर जोइ ॥ सीत ज्वर को चूर्ण सन्निपात कलिकात ॥ चौ० ॥ पीपल मूल अौ पीपल पिता । सुनि च०यक टांक करि मिता ॥ पांच टांक भांगगो जाणै । सौल टांक चिरायता आणै ॥ गुड़ पुराणों साढ़ा पांच वोस सिर साटी लेनी । का पोस टांक तीन चूर्ण ले प्रातें ज्वरं सीता गन रहै इण भांते ॥

Subject :—वैद्यक वर्णन ॥

No. 521. Nakshatra Prakāśa. Leaves—15. Dated in 1883 or A. D. 1826. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—श्रावणी श्रवण वाहरी मही तुलंती जोय । श्रावण पहली पंचमा जो नहीं उठे व्याल । लुजा जे पोल भाल बैठू जासैा मोसाली । श्रावण पहिली पंचमी कै वादल कै वीज । कोग काढ़ो रची कणा राषो भातर वीज । चोथि नवमी चोदश्या जै संकरण पडाइ । दरभणी जे भा भली छत्रा भंग कराइ । जेठी अर्ध अमावस्या रवि आछे तो जोई । वोजे शशिहर उगसे स्यानो कहसी मोह । नुत्तर तो उत्तम समो माधै मध्यम काल जो शशि दक्षिण आथवै तैारी खड्ड काल । श्रावण वदी एकादसी तेती रोहिणि होइ । तेतो समैा परषि जे विरला जाण कोइ । कृतिका तार क्टिवरो रोहिणी तार सुकाल तते आव मृगासिर तो पड़ै हहाहर काल । जेठ सुदिया निर्जला जेती घटो का का होई साते भामज दोजियेड वरता फल होई । वेनु वरतो वरसै अपार क्यारी वचतो अति वनशार । पंचे पंचम नृपिरिवाई । छत्थो मा मेहज थाई ।

End:—आदि भरणी असलेष मघा तिहुं उगाथों रस तिभि पा । सात नक्षत्रा का कड़ो । जै सिर वे सैभांण । शर साथै अरधो करै । योन वृह असराल । पून्यो गल्यो परि बागलैां ॥ गलोज पंचक मूल । पूर्वाषाढ़ धेडू कसो तो निपजै सातू त । चैत वोता वैशाष जहु सो । तिथि नषित्र आरई रै भोसो तिथि तो पर्वत दासै । नक्षित्र वधै तो पाल विणासे । तिथिवार होइस समतुला तो पृथ्वी फूलै सो वन फूला अथवेल सूर सात दिवस वरसै जुधन जल अति होर जु पूर । मोग बुलातो सो हो गया तू क्यों सूतो नाह । पार भरभे छै मछली छवि सू अनुराधा ॥॥

No. 522. Nāmarāsi Lakshaṇa. Leaves—20. Deposited with Paṇḍita Vāsudeva Pānde, Village Kamāsa, Post Office, Mādhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—दया गुरु की ॥ अथ लिख्यते नाम रासी के लक्षण ॥ मेष रासो पुरुष को अच्छी सुरती होयगी ॥ महीना भादौं का अच्छा शुभ होयगा ॥ वार आदित को सुभ होयगा ॥ कंवर में पीर होयगी ॥ ताको इलाज ॥ गुलाब और आसकंद ॥ व काली मिरच ॥ व सोंठि ॥ सब को बराबर करिके पीसि के ॥ गोली बनावै गरम पानी ले षाइ तौ आराम होयेगा ॥ जो चन्द्रमा देषै तो वह महीना षुसी में बीतेगा ॥ देही पतरी होयगी ॥षरच बेकदर करेगा ॥ लोहु एकबार गिरेगा ॥

स्त्री वृष रासि होय तो पहिले स्त्री मर जायगी ॥ दुसरी स्त्री के लरिका होयगा ॥ लरिका नव होंयगे ॥ लरकी पांच होंयगी इतनी संतान होयगी ॥ तीस में लरिका दोय जीवेगा ॥ लरिकी दोय जीवेगी ॥ और सब आखिर हो जावैंगे। तीस में एक लरिका तालेश्वर वहुत होयगा ॥ और बड़े आदमी के पास जाय तौ दाहिने बैठे तौ बड़ी पदवी पावेगा ॥ अलप बरस ग्यारा ॥ ११ ॥ में होयगी ॥ अलफ बरष ॥ १५ ॥ में होयगी ॥ ऊंचा से गिरेगा ॥ बरस बीस ॥ २० ॥ में उपद्रौ उतारन होयगा ॥ बरस चालीस में अलफ भारी होयगी ॥ आगे उमरि बरस नवे ॥ ९० ॥ जीवेगा ॥ जंत्र राषै तो षुसी होयगा ॥

End :—४४३ ऐ सकुन धर्म नहीं थांप पण धर्मन नीहानी थसे। बीच में विरोध उपजसे ले माटे तुसा बध रहे जो बीज का मामला भथ से विचारि काम कर जो अहनी पुंजा करजो दुख टल से तील (तिला) इन्द्री ऊपर छे: ऐसकुन तु काम धों पानी से गई वस्तु आवसे पाछी एक मास येक बरस मारहोछे व्यापार माल भथ से राजा श्री सनमान थसे तुमन मा संतोष राखे जे ये निशानी ये निशानी तारी इन्द्री ऊपर तीलछे ॥ प्रश्नावली समाप्त ॥ गुरुदया ॥

Subject :—

(१) पृ० १ से पृ० ३ तक—मेष राशि के पुरुष तथा स्त्री के लक्षण। कमर की पीड़ा की औषधि व उनके पास रखने के लिये एक यंत्र।
(२) पृ० ३ „ „ ६ „—वृषराशि के पुरुष तथा स्त्री के लक्षण व यंत्र।
(३) पृ० ६ „ „ ९ „—मिथुन राशि के पुरुष „ „ „ „ ।
(४) पृ० ९ „ „ १० „—कर्क राशि के पुरुष का लक्षण, औषधि व यंत्र।
(५) पृ० १० „ „ १२ „—सिंह राशि के पुरुष तथा स्त्रीके लक्षण तथा यंत्र।
(६) पृ० १२ „ „ १३ „—कन्या „ „ „ „ औषधि ।
(७) पृ० १४ „ „ १६ „—तुला „ „ „ „ „ ।
(८) पृ० १६ „ „ १७ „—वृश्चिक „ „ „ „ „ ।
(९) पृ० १७ „ „ १९ „—धन „ „ „ „ „ ।

(१०) पृ० १९ से पृ० २० तक—मकर राशि के पुरुष तथा स्त्री के लक्षण तथा यंत्र।
(११) पृ० २१ „ „ २२ „ —कुंभ „ „ „ „ „ ।
(१२) पृ० २३ „ „ २४ „ —मीन „ „ „ „ „ ।
(१३) पृ० २५ „ „ ४० „—शकुनावली फल सहित ।

No. 523. Onāmāsī, Bārahakhaḍī, Pañchapāṭi, Dhāturūpa and Laghuchānakya Rājnīti. Leaves—18. Deposited with Gosvāmiji, C/o Paṇḍit Badrī Nāthji Bhatta, Husainganj, Lucknow.

Beginning :—सिद्धि श्री गणेशायनमः ॥
ॐ नामा सीधं ॥ ग्र ग्रा इ ई उ ऊ रि री ले लै ए ऐ
ओ ग्राऊ ग्रंगह ॥ का खा गा घं ना ॥ च छा जा झं ञ ॥
टा ठा डा ढं णा ॥ त था दा धं ना ॥ पा फा बा भं मा ॥
जा रे ला वा सं पे सा हा ॥ लं क्षो पा ॥
क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः ।
ख खा खि खी खु खू खे खै खो खौ खं खः ।
ग गा गि गी गु गू गे गै गो गौ गं गः ।
घ घा घि घी घु घू घे घै घो घौ घं घः ।

Middle:—
पठकः पाठकश्चैव ये चान्ये शास्त्र चिन्तका: ।
सर्वे व्यसनिनो मूर्खा यः क्रिया यात्सपंडितः ॥ ७ ॥
परोप देशे कुशला दृश्यन्ते बहुवो नरा ।
स्वभाव ननु वर्तते सहस्त्रे ष्वपि दुर्लभा : ॥ ८ ॥
हतं ज्ञानं क्रिया हीनं हता अज्ञानिनो नरा ।
हतं निर्नायक सैन्यं अभर्तार स्त्रियो हता ॥ ९ ॥
केचिद् ज्ञानतो नष्टा केचिन्नष्टा प्रमादत : ।
केचित् ज्ञानावलेपेन केचिन्नष्टै स्तु नाशिका ॥ १० ॥
अप्रिय वचन दारिद्रै प्रिय वचनाढ्यौ स्वदार पति तुष्टे ।
परि परिवाद निवृत्तै क्वचित्क्वचिन्मंडिता वसुधा ॥ ११ ॥
इति लघु चाणक्ये राज नीति शास्त्रे द्वितीयो ध्यायः ॥ १२ ॥

End :—
पंचैतान्यपि सृज्यंते गर्भस्थस्यैव देहिन ;
आयु कर्म च वित्तं च विद्या निधननेव च ॥ ७

लिखिता चित्र गुप्ते ललाटे क्षर मालिका ।
तां दैवोपि न शक्नोति उल्लिपथ्य लिखितं पुनः ॥ ८ ॥
भावितव्य यथा येन नासै भवति चान्यथा ।
नीयते तेन मार्गेण सुखं वा तत्र गच्छति ॥ ९ ॥
स तत्र बद्धा रज्वेव वलादवैन नीयते ः ।
संसार विष वृक्षस्य द्वे फले अमृतोपमे ॥ १० ॥
काव्यामृत रसास्वादः संगमः सज्जने सहः ।
वने रने शत्रु जल अग्नि मध्ये महार्णवे पर्वत मस्तकेवा ।
सुप्तं प्रमत्तं विषयस्थितं वा रक्षानि पुन्यानि पुराकृतानि ॥ ११ ॥
इति लघुचा नाइके राज नीति शास्त्रे अष्टमो ध्याय समाप्ता ः ॥

इति

Subject :—पृ० १—२—ओनम तथा बारह खड़ी संपूर्ण

पृ० ३ से ५ तक—सिद्धों वरनाकी प्रथम पाटी संध्ये सूत्र वर्णन द्वितीय से पंचम पाटी तक वर्णन ।

पृ० ५—६—धातु रूप वर्णन ।

पृ० ७—१८ तक—प्रार्थना राजनीति शास्त्र प्रथम अध्याय से षष्ट अध्याय तक भिन्न भिन्न विषयोंपर श्लोक वर्णन ।

इति

No. 524. Padamāvata. Leaves—144. Deposited with Paṇḍita Krishṇa Vihārī Miśra, Model House, Amīnābāda Park, Lucknow.

Beginning :—नहीं होता ये सव कहते हैं अकसर । गजांलो जो कुम का सेहरां सुनकर ॥ तमासा कर उधर से वाग कूं जामे । गुलो गुंचे के साथ इस दिल कु बैलामे ॥ हमरी षातर अबके साल गुलसन । भरे हैं कैसे ये फूलों से दामन ॥ दिले आस्क से वो देता निसा है । जहां लाला है श्रैार आवेर वा ॥ गुले चंपा षिलाया वन षिला है । तेरी चंपा कलो से खुसनुमा है ॥ गुलों के वीच मैनू सैरो राना । रखा हो मुत्तसिल चुं जाममीना ॥ है सपे सवज पर गुंचे नमूदार । तेरे तोते के जैसे सुरख मिनकार ॥ वहा चेहरे को कर गुल के मुकाविल । कि जामें फूल इसके गुल अनादिल ॥ चिरागे गुल नहो क्यो कर भला गुल । तेरे आगे है गुल चुं समै काकुल अगर न रगसे तू आंखे लड़ावे ॥ उस नजरों में वही मिल के आवे ॥ गरज़ सव माहरू आने फिसू वाज । चमन के वस फमेथी नुक्ते परदाज ॥ नसो आसा ज़ुवाने मसल हतकार । ना कहती थी सबुन वज़ुज

गुल जार ॥ लवे हर सोले पो वुरसोष अंगेज । न रहता जुज हरफ़ गुल मानिंद ॥ गुल रेज़ पदम भी चाहती थी ऊनको प्यार । हुई तैयार हकसत पास षातर ॥

End:—पदम की रषके उसमें षास पोसाक। फिरे वेताव करके चुस्त चालाक। चले दिल्ली का जान वाद ले तंग। षजाहर सूले ले किन परदे में जंग ॥ ये सोहरत दी सबी सहरो नगर। पदम राजी है श्राती है साह घर में ॥ रतन से हाथ उठाकर वादले जान। हुआ चाहै सह के घर मुसलमान ॥ वई सुरत जा हिन्दुस्तान में आये। औार उसका षास डोला साथ लाये ॥ रषी पोसाक उसमें थी मुयस्सर। भमर कुरवान होते जिसके ऊपर ॥ हजारों गिर्द डोले उसके वाहम ॥ कि हैं इसमें परस्ता राम हमदम ॥ वई सुरत गरज वो फौज मक्कार ॥ फरोदाई लवदरया चूं हकवार ॥ षवर जल्दी से सुलतान को सुनाई ॥ कि पदमावत हुजूरी में है आई ॥ हमे इसके मुद्द स वसही भरती। पसन्न आदाव है ये अर्ज करती ॥ मैं कुफरे काफरों से हूं गुरेजां। करूं तलकीन तरीके दोने इमान ॥ रतन का कीजिये रुखसत कदोदम। कुछ उससे हमको कहना है कहे हम ॥ मुझे कहना है जो कुछ कह सुनाऊं। फिर वंदगी में सह की आऊं ॥ गुलामाने वफा जो सथ आये। उसे जो लामे वैसे ही जामै ॥ यकीन पेसाही सुन के साह कु आया। न पैराहुन मै फिर फूला समाया ॥ कहाले जाओ जल्दी से रतन कू। दिषादो जाके उस रसके चमन कू। मेरी जान वसे यही कहियो वसद सैाक। कवेहद हारे मिलने का है वस जैाक ॥ हिदायत की खुदाने तुझको जाना। कि तू होने का आई है मुसलमान ॥

Subject :—रानी पदमावती का हाल वर्णन ॥

No. 525. Panchānga Darpaṇa. Leaves—10. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning:—दोहा (इस दोहे को रचयिता ने पुनः शुद्ध करके लिखा है)।

(बिन सताब्द को अब्द में द्वादश भाग जो लेइ। सेष माहिं भू हीन करि)
बिन सताब्द को अब्द में लै द्वादस का भाग। येक हीन यदि भाद्र तक जन्म बृहस्पति लाग ॥ १ ॥ सात जोरि संवत् विषे लै वारह के भाग। जन्म समय सब जनन के हुहैा बृहस्पति लाग ॥ सन्ह ७८ जोरि कै सन ईस्वी बखानु। सन् ५७ जोग ते सम्वत् विक्रम मानु। हुइसन हिजरी फसली जानु। हिजरी मोहर्रम से मानु। आदि कुवार वदी से मानु। प्रारंभित फसली को चालु। इस्वी सन पंचवमासी ५८२ घटै हिजरी सन सुद्ध तवै प्रगटै तिमि संवत षट वंतालिस ६३९ हीं। हरिये हिजरी कहिये तबहीं। हिजरी सन में १० घूरि करै। फसली सन यों हिये मांझ धरे फसली सन को बहु चालु चलो। चहिये अपनो सवमें सुभलो।

End :—

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	सरोर पोड़ा १५ व०	अग्नि दुःख धन नाश	निरोगी २०	देह दुख १४ धन	बहु कोप ९ पुत्र पोड़ा	शत्रुनाश ३६ मे लाभ	दुष्ट स्त्री ४१ संतति थोड़ो	नेष्ट ५७ अग्रे श्रेष्ठ	दुर्बुधि ३६ से श्रेष्ठ	दुः कर्मी ४/२१ श्रेष्ठ ४२	राज मैत्री ३२ पु० सु०	दुष्ट सुभाव २८
चन्द्र	कांति सुख २७ राजस	बहु संपत्ति २७	कीर्त्ति-वान ५ लाभ	सुभोगी २२ पुत्र	बहु पुत्र ६ कलेश	अल्प जोवो ७ उच्चत्व	स्त्री २ रुपवती सुपुत्र १५	नेष्ट ६ कलेशित	धर्म्मबुद्धि २०	अति कीर्त्ति ४२	धनवान २० श्रेष्ठ	काना व रोगी ३०
मंगल शनि राहु केतु	रक्त को प० पु० मे	दुख प्राप्त धनना १२	दुष्ट बुद्धि १३	बहु दुख मातृ पोड़ा ८	संतति होन मातृ पोडा ५	शत्रुनाश २४ सुख	दुष्ट स्त्री संतति थोड़ो २७	नेष्ट २२	पितृनाश १४ वर्ष	सत्र भोति २७	धनदः ४५	हानिद ७५
बुध	कांतिदः १० वर्षे	धनदायी २६ सुख	धनदायी २२ भ्रातृ पाडा	पुत्र लाभ २२	मातृ हानि २६	सत्रु ते मृत्यु २१	स्त्री दाता १९	द्रव्यहा १४	मातृदः १९	द्रव्यभृ १९	धन लाभ ७५	स्त्री हानि ७५
बह-स्पति	विसेष बुद्धि ८	धनदः ३९	मित्र समागम २०	बंधु तनय लाभ १२	मामा के परिष्ट ७	सत्रु म० ४०	स्त्री लाभ १२	महाव्या-धि ३१	पिश्य-रिष्ट १५	द्रयोर्धन १५	द्रयोधेन १५	व्यय कृत १५
शुक्र	परदा-रमा १७	धन लाभ दः ६०	तीर्थ दाता ४	बंधु सौख्यदा ५	लाभ कृत ६	सत्र मृति प्रद ४१	स्त्री लाभ १४	पराक्रमः १५	लक्ष्मी प्रदः १५	बहु सौख्यं ४	बहु सैाख्य ४	धन ५

Subject:—किसी का ग्रह बताने के हेतु उसका गत वर्ष और जन्म संवत् ज्ञात करना।

(२) उपर्युक्त संवत् और वर्ष ज्ञात होने पर पंचांग दर्पण चक्र द्वारा उसका फलादिक बतलाना

(३) नक्षत्रादि की घड़ी, वार तिथि आदि जानकर कुंडली के कौन २ ग्रह किस राशि में हैं उसको बतलाना।

(४) बृहस्पति १३ महीना शनि २॥ वर्ष, राहु-केतु १॥ वर्ष एक राशि पर रहते हैं। राहु केतु का सदा वक्री रहना।

(५) मस्तक रेखा तथा कर रेखाओं को देखकर जन्म कुंडली के ग्रह बनाना।

(६) पंचांग दर्पण चक्र

No. 526. Panchayajñavidhi. Leaves—4. Deposited with Thākura Badrīnātha Siṁha, Village Kharauhi, Post Office Mānadhātā, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ अथ पंच यज्ञ विधि॥ गोग्रास। सुरभिर्माता सुरभिः पिता सुरभिः पितृ तारिणो॥ गोग्रास श्मयादत्तं सुरभे प्रति गृह्यताम्॥ १॥

× × × ×

प्रथम चक्र बनावै जिसका द्वारा पूर्व राखै ऐसा चार कूट वाला चक्र करे। उस चक्र के पूर्वादि दिशा ईशान्यादि विदिशा कल्पना करे प्रथम ईशान दिशा में कांस्य पात्र राखै तिसमें जल जल में॥ ॐ ब्राह्मणे स्वाहा॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा × × × इन मंत्रों से तीन जगह जुदा जुदा अन्न धरे ×

× × × आदि॥

End:— × × ×

× × × ×

इन मंत्रों से अग्नि में पंच आहुति करै॥ अग्निविसर्जन करे॥ ॐ गच्छ रागच्छ सुर श्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर॥ यत्र ब्रह्मा दयो देवा स्तत्र गच्छ हुताशन॥ इति हुत यज्ञ पंचम्॥

इति पंच यज्ञ विधि समाप्त॥

Subject:—पृ० १ से पृ० ८ तक—गोग्रास, हस्तकारं, अतिथि पूजन, अप सव्यम्, स्वान बलि और वैश्वदेव कर्म विधि।

No. 527. Philanāmā. Leaves—144. Dated in Samvat 1939 or A. D. 1882. Deposited with Mahārājā Library, Pratāpagadha (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ अथ अध्याय पहिलो। हाथी को होसियार करना वा दौराना। दवाई॥ मदार के कोपल, पलाक्ष के जरि। कंदइल के जरि रु के पाती इन सब चीजों को मिलाय के के तथा ठंडा के के पिलावै तो हाथी मस्त हो जावै थोरे दिन में॥१॥

दूसरो दवा॥२॥

कतोरा पैसा भर॥२५॥ पहिले हाथी को नहवाइ के कतोरा पोसि के पांच दफा चक्की दहिने हास से फेरै और एक नांद में चार सेर पानी डाले और तीन पाव मैदा के दुइ रोटी बनावै और दवा रोटी में डालि के पकावै और आधी राति का पिलावै और सोने न देवै और सेवेरे फेरने को पूरव तरफ लेजाइ और पानी में न जाने पावै तो मस्त हो जावै॥२॥

End:—एक से एक कुवां के पानी एक से एक पेड़ के पत्ती गोहूं के आध सेर कच्चा भूसी एक वरतन में डालि के पिलावै धार नागा न करै करनो वदफा हो जावै अगर कछु पिलाया होइ तो इग्यारह अंडे मुरगी के पोसि के यो एक चुटकी भर दिया करै तो करनो व असरन करै यो जायज होवै तमाम शुद॥

इति *

मि० पूस वदी १२ सन १२२९ फ० मुताविक पहिलो १ जनवरी सन १८८२ इसवी रोज रविवार मुकाम लखनौऊ मे लिषा गया॥

द० इन्द्रजीत सिंह समवन्स साकोन गोंड़ा पास के जैस प्रति पाया वैसा लिषा शायद कछु भूल चूक होय तो चतुरो सुधारि लिजिएगा॥ और माफ करिये॥

Subject:—हाथियों के अनेक रोगों को खिलाने तथा लगाने की औषधियां।

पृ० १—३० हाथी को मस्त करना, होसियार करना, दौराना धारन वा पाचन की दवा।

पृ० ३०—३६ अनेक तरह के जुलाव।

पृ० ३६—४० पेचिस व वाई आदि की दवाइयां।

पृ० ४०—४६ जहरवाद आदि की दवाइयां।

पृ० ४६—५२ रस का हन व आमासय आदि को दवा।

पृ० ५२—५८ विस्तर, नस्त वा काश्वत वगैरः को दवा।

पृ० ५८—६४ दांत, नाखून, ढूढावा, लड़का आदि को दवाइयां।

पृ० ६४—७२ पलका, नाखूना, जाला, फूला, सफेदी, आदि आंख की बीमारियों की दवा।

पृ० ७२—८२ तक—मरहम घाव, छाजन, वमनी, नासूर आदि की दवा।

पृ० ८२—८४ पीठ, कपोल आदि की सूजन की दवा।

पृ० ८४—९२ कांडी वाछोंव वा तल वांस और की दवा।

पृ० ९२—९४ रस मैाली वा खुर वा मत्तो या चमड़े का सख्त होजाना।

पृ० ९४—१०२ अगिन वाव वा वाई।

पृ० १०२—१०४ वाल वढाना, वाल सफेद करना।

पृ० १०४—११२ ज्वर व ललारी आदि की दवा वासा वाव व खोरह की दवा।

पृ० ११२—१४४ धोरज धरना हाथ का और फुटकर दवाइयां।

No. 528. Pīyūsha-Pravāha. Leaves—190. Deposited with Paṇḍita Bhagavatīprasāda Triguṇāyata of Taradahā, Post Office Paṭṭī, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—अथ कुनक सूजन गटई के भीतर होति है तीने के पहिचान यह है—कि पानी पियत की पानी नकुरा की राह से वहत है और कवै कवै गटई गोड़मा रगरत है और गटई छुअइ नाहीं देत कवै कवै सूजन ऊपर ऊपर देखाई देत है वहुधा ई रोग कनार के पाछे होत है॥ इलाज कपड़ा के गद्दी वनाइ के गरम पानी मा भेइ के वाँधै॥ अथवा वजरी औरोठी वरावरि कूटि के पोटनी वनाइ के के॥ अथवा नीम सेंके पाती मकोई के पाती पीसि के अमिल तास का गूदा मिलाइ के गरम गरम लगावै॥ अथवा यह दवा लगावै कि पाका नरम होइ के फूटि जाय पिआज पीसि के तूतिया मिलाइ के लगावै॥ अथवाँ भैंसा का गोवर नमक साँभरि आदमी का पेसाव मा चुरै के लगावै॥ अथवाँ मँन फल मैथी आमा हरदी घी कुआरी का गूभा वरावरि पीसि के लगावै॥

End :—वरगद कर नरम पात महुआ कर वोकला जामुनि कर वोकला लोध हर्रा के छालो हरदी सव वरावरि पीसि के महीन लेप करै तो गरमी रोग जाय॥ अथवाँ॥ जंगी हर्रे ८ पैसा भरि खैर सपेद १ पैसा भरि नीला-थोथा १ पैसा भरि सव महीन पीस १०० नेवुआ के रस मा खरल करै और १ रती भरि के गोली बनाइ नित एक गोली दहिउ के साथ खाय तौ गरमी रोग जाय॥ अथवां॥ नीला थोथा १ भाग खैर २ भाग मुरदा संख २ भाग सुपारी

के राखी २ भाग सब महीन पीसि के गरमी मा बुरकावै ता गरमी रोग अच्छा होय ॥ अथवा ॥ पारा १ टंक खैर सार १ टंक अकर कढ़ा २ टंक सहत ३ टंक सब महीन पीसि के ७ गोली बनाइ के १ गोली रोज जल के साथ खाइ तौ सब प्रकार की गरमी जाइ ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ५२—खंडित ।

(२) पृ० ५३ से पृ० १२० तक—घोड़ों की चिकित्सा—गले की सूजन, तालू की सूजन जीभ के दाने, लगाम की रगड़ आदि, खांसी, ढांसी, दम, शूल, अथ कुरकुरी, २१ प्रकार की कुरकुरी का लक्षण, सदावर्त शूल, अतरांवत शूल, रक्त प्रेत शूल, काम दुःख शूल, सहावरण शूल, पाता वरण शूल, भूमिवरक शूल, कासावरत शूल, सुल्कावर्त शूल, कलाकार लहग शूल, कसावर्त शूल, प्रसव-रत शूल, अजीर्ण शूल, सर्वकाम शूल, उदार्ण शूल, अंजन शूल, मायांवरत शूल, लीद बंद होने, पेट से कुरकुर आवाज आने, पेट में पड़ी जोंक, पेट की सूजन, कम पानी पीने, पेशाब में खून आने, बहुत पेशाब आने, गुमनाम, पीठ, की सूजन। तंग की सूजन, घोड़े को तंग, बेरहड्डी जोगीरा, जानुआ, दामिनी, चकाबरि, पुस्तक, कफगीरा, उदव करन वाड, गज चरण, सुम की पुतरी से पानी बहने, रस उतारने, सुम भैार होने, भनक बाई, अहरवाद, अंडे की सूजन, आगिन-बाई, देह की गुत्थी, रक्त पित्ती, ज्वर, सन्निपात ज्वर, वात ज्वर, पित्त ज्वर, कफ ज्वर, सोग ज्वर, लंधान ज्वर, घोड़े के ज्वर, जाड़े के बाद की औषधि, मस्तो से झरने को दवा, चांदनी मारने, बाल काले या लाल करने की तरकीब, सितारा मिटाने की तरकीब, झोला मारने तथा सांप काटने के इलाज ।

(३) पृ० १२१ से पृ० १३७ तक——ऊंटों की बीमारियां। खारिश की दवा, ऊंट के लिये हाजमे का मसाला, दौड़ाने का मसाला, लद्दू ऊंट के निरोग रहने की औषधि, कपाली, मुंह के छाले तथा खांसी का इलाज, बंगली, सूजन, अफरा पेट का दर्द, पेट का गहराना, पेशाब बन्द होने, जानुआं, झोला, पीछे वाले पैर की सूजन, सरदी से जकड़ने, ऊंट के मरने, ताव खाने, खाते-पीते भी दुबला होने, बाई, कांपने, रस्सी तुड़ाने, मिट्टी खाने, चोट लगने, नासूर, कीड़ा, जख्म, खारिस्त, छिटो तथा किलनी के लक्षण और औषधियां ।

(४) पृ० १३८ से पृ० २१३ तक—हाथी की चिकित्सा। हाथी के सदा निरोग रहने, धारन सुखदेव, हाजमा, धारन भोजन, धारन अजीर्ण, मोटे होने, दौड़ने तथा तेज चलने, ढल का रोग, फूली, माड़ा, जाला, नाखूना, कोइली जवन, अजीर्ण, कै कराने, मरोड़, पेट के कीड़े और आंव गिरने का इलाज। जुलाब, दस्त बंद करने, पिछले अंग के दाहिने बायें खिंचने, जानुआं, पैर

की कड़ी सूजन, छाजन, नाखून गिरने, रग उतरने, मिट्टी खाने, जहरबाद, गले का जहरबाद, अग्निवात, बाई जकड़ने, ताथ खाने, चमड़ा कड़ा होने, जख्म होने, नासूर, तालू, थूथन और पीठ की सूजन, पीठ का जख्म, मस्ती आदि की औषधियां। हाथी लड़ाने की विधि, दांत साफ करने, दांत फडने दांत टूटने, कीड़ा पड़ने, सड़ने, आदि का इलाज।

(५) पृ० २१४ से पृ० २२० तक—बैल तथा भैंस की चिकित्सा रोगों का लक्षण तथा इलाज, जुआं पड़ने, कंधे की सूजन, पलान आदि से हुई सूजन, तरवोस, वाघो, डंगराने, गर्भवती होने, दूध बढ़ाने की औषधि तथा गऊ की साधारण बीमारियों में पूजा का विधान।

(६) पृ० २२१ पृष्ट २२३ तक—बकरी और भेड़ की दवा। बूढ़े, मुंह सड़ जाने, पेट फूलने, जख्म होने आदि की दवायें।

(७) पृष्ठ २२४ से पृष्ठ २२७ तक—कुत्ते बिल्ली की दवा। सरदी की बीमारी, ऐसे जख्म की दवा जो चाटने की जगह पर न हो। किलने लगने आदि के इलाज॥

(८) पृ० २२८ से पृ० २५० तक—चिड़ियों की दवा॥ सामिष और निरामिष भोजी चिड़ियों का इलाज। सरदी, सिरदर्द, आंख के रोग, फूली, जाला, पानी बहना, पलक की फुन्सी, पलक की खुजली, आंख का नासूर, नाखून तथा पंजा फटने, नाखून टेढ़ा होने, पंजे के मस्से, मुह तथा कंठ के रोग, मुंह की सूजन, सरदी से तालू खुजलाना, गर्मी की खांसी, सिर में गर्मी चढ़ने, दाना न पचने, वमन में कीड़े गिरने, कलेजे पर सूजन होने, अन्दर में कीड़े पड़ने बवासीर, पांव की गांठ की सूजन, करीच के जूं, देह पर बाल खड़े होने, खारिश तथा सूजन की दवा।

(९) पृष्ठ २५१ से पृ० २६७ तक—मुर्गे की दवा। कबूतर, बटेर आदि की दवायें।

सोप रोग, दीवाना होने, ताकत कम होने, अंदधाव, लड़ाई का घाव। कबूतर के रोग, सोप की दवा। बटेर का जुलाब। तोते की दवा, कम बोलने और सरदी की दवा। बुलबुल की दवा, ज्यादा लड़ने की शक्ति होने की दवा। जर्रा, बाज़ तथा शिकरा का इलाज। गुलाल चश्म की दवा, शिकरा की दवा, परिवाल कच्ची करने, मुंह से तामा गिरने का इलाज। स्याह चश्म की दवा जरई या तितरमुती का इलाज। तीतर की दवा।

(१०) पृ० २६८ से पृ० ३८० तक—आदमी का इलाज। ज्वर लक्षण, औषधि, सर्व ज्वर चूर्ण, सर्व ज्वर रस, तिजारी की दवा, चौथिया ज्वर

की दवा, सर्व सन्निपात लक्षण; संधिक लक्षण, भग्नेत्र ज्वर का लक्षण, श्रान्तिक सन्निपात, चित्त-भ्रम सन्निपात, कंट कञ्ज, प्रलाप, सन्निपात, शो गाङ्ग सन्निपात, प्रमिन्यास सन्निपात, जिह्वक सन्निपात, रुगादाह सन्निपात, तंद्रिक सन्निपात, करनक सन्निपात आदि की औषधियां और लक्षण। सर्वसन्निपात की दवा, सर्व सन्निपात पर रस तथा काढ़ा; सन्निपात की गोली, काम ज्वर, अजीर्ण ज्वर। ज्वर, के दस उपद्रव—तृषा, खांसी, स्वांस, हिचकी, वमन, अतिसार, अरुचि, धद्धकोष्ट, अफरा तथा मूर्छा की औषधियां । संतत आदि—सर्व विषम, ज्वर, ज्वर का यत्न, ज्वरारि रस, विषम ज्वर पर अंजन, विषम ज्वर पर लक्षादि तैल, अतिसार रोग की उत्पत्ति तथा लक्षण, वात के अतिसार का लक्षण तथा औषधि, रक्तातिसार, गुदा पाक, आमातिसार के लक्षण, सर्व संग्रहणी का यत्न, पांडु रोग की उत्पत्ति, लक्षण तथा यत्न, मृगी रोग की उत्पत्ति; लक्षण और यत्न, वात की औषधि, अमृत गुटका; पित्त तथा कफ, की उत्पत्ति और यत्न। पिलही रोग, सुजाक तथा उसके भेद, पथरी, प्रमेह, गर्मी, विसर्प आदि रोगों के यत्न

(११) पृ० ३८१ से पृ०..................लुप्त ॥

No. 529. Pothī-Praśna. Leaves—27. Dated in Samvat 1848 or A. D. 1791. Deposited with Paṇḍita Śyāmasundara Pāṇde of Brāhmaṇapura, Post Office Paṭṭī, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning.—श्री रामचन्द्राहि पूछहु ।

१—विवाह होइगा अवसि के घर वैठ ॥

२—वस्तु गई पै घर के मानुष के भेद सैां ॥

३—झगड़ा जिनि करहु निह फल है ॥

४—धरने जिनि जाहु निह फल है ॥

५—गांउ गया आवत है धन सहित ॥

६—मित्र करहु मिताई भल होइह ॥

७—गई वस्तु पैवेहु भेद लगाये रहहु ॥

८—राजा राज पावैगा किछु दिन मा ॥

९—संतति एक होइह भागीवंत ॥

१०—विद्या पावहु गे पढ़े के वहुत दिन महनत करहु ॥

End:—गंगेवहि पूछहु ।

१—पारा कर्म जम करहु जवून है ॥

२—चैापाय लिहे हानि है जिनि लेहु ॥

३—रोगिया बाह्मन जिवाये नीक होइ है ॥
४—अर्थ रोजिगार किहे प्राप्त होइ है ॥
५—व्यापार जिनि करहु मूर गा हानि है ॥
६—यात्रा सुफल होइह करहु ॥
७—चाकर राषहु सुदरैन रहिं है ॥
८—वेष्या लावहु आनंद होइ है ॥
९—चोरी ते बड़ा दुःख होइह जनि जाहु ॥
१०—षेती करहु लहना होइहि ॥
इति पोथी प्रसन्य के सम्पूर्णम् सुभ समाप्त ॥
जो प्रति देषा सो प्रति लिषा दोस मम न दीयते ॥
मिति सावन बदी १३ वार बुधवार संवत् १८४८ सन ११९८

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० २० तक—प्रश्न कोष्ठ।

(२) पृष्ठ २१ से पृष्ठ ५४ तक—प्रश्नों के उत्तर। गई वस्तु पाने, संग्राम करने, खानी करने, चिंता करने, गांव चलने, बंदी बांधने, रोगी अच्छा होने, बगीचा लगाने, रोजगार करने ऋण लेने, नौकर रखने, उधार देने, तीर्थ करने, राजा के राज पाने, अर्थ प्राप्त होने, विद्या पढ़ने, यात्रा करने, संतति होने आदि प्रश्नों के उत्तर ॥

No. 530. Pothī Ramalasaguna. Leaves—9. Deposited with Paṇḍita Syāmasundara Pānde of Brāhmaṇapura, Post Office Paṭṭi, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गनेस आय नेमः ॥ अथ पोथी रमल सगेन ॥१११॥ येह सगुन अच्छा है जो काम चाहोगे सो होयगा झगरा मा है व्यवपार मा लाभ होयगा तेरे दिन अच्छे हैं गे ॥ काम मनोरथ सो होयगा—तेरी दाहिनी भुजा पर तिल है ॥ सो देष लेना ॥ ११२ ॥ येह सगुन मध्यम है ॥ दूसरे काम विचार के करना ॥ कुल देव की पुजा करो ॥ तुम्हारी स्त्री झूठ वोलती है ॥ सो विचार लेना ॥

॥ ११३ ॥ येह सगुन का फल सुनो ॥ स्थान लाभ होइगा ॥ चित्त की चिंता मिटैगी ॥ तेरे दिन बुरे है सो गए ॥ अब तेरे दिन अच्छे हैं ॥ तुम विश्वास मानो ॥ तेरे दाहिने भुजा पर तिल है ॥ सो देष लेना ॥

End :—॥ ४४२ ॥ येह सगुन किछु धरम करना तव काम सिद्धि होगा याजुतें दिन निवत गए हैं विचारि कें करना अब अच्छा होगा तुम्हारे सरीर में षुसी नाहीं होत है ॥

४४१ ॥ ऐह सगुन भाव से वड़ा है ग्रह है मध्यम है दिसा सिवज है जलदी नहीं छोड़ेगो काम विचारि के करना गुरु देवता के पुजा करहु ताके वलते भल हैगा ॥ ४४३ ॥ ऐह सगुन से आपुस में विगार है काम नहीं करना जे काम विचारे है सो वह सिद्धि न होए गुरु नारायन का पूजा करना ॥ तेरी इन्द्री पर तिल है सो देष लेना ॥

Subject :—पृ० १ से पृ० १८ तक—रमल के पासों के अंकों के अनुसार प्रश्नों का उत्तर ॥

No. 531. Pothī-Sarvaguṇa. Leaves—21. Dated in Samvat 1874 or A. D. 1817. Deposited with Paṇḍita Panchamarāma Pāṭhaka of Rāmapura-gadhaulī, Post Office Sagarāmagaḍha, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—पोथी सर्व गुण की

श्री पै जो भो ताकी विधि—जा ठैार होइ ता ठैार अपने आप पाकि लगावे नीको होइ ॥

दूजी विधि—कोरे वसने में कचूर मेलै तव मथै जव मिलि जाइ तव तहां लेप करै तत्काल नीको होइ ॥

छाया वे जाइ ताकी विधि ॥ श्री वैद को तेल करुआ सेर एक लै अवटैा षाले वाको फेरि उतारै दुरि होइ तव ऊपर ते हरताल मेलै टाँक दुई तव हाँडो मुंदे भलि कै वाफ वाहेर न जाइ तव ऊपर ते सेकु करै ता छेक के पेडे पानी डारै सयरो कै उतारै तव वासन में करै तव तेल हाथ मो लगावै क्षना जो जाइ जहाँ विधंक होइ तहां पोछे पानी काढ़ै तव लेपु करै—

End :—

धातु करण वहु वल धरण, मोहि पूछे जो कोइ ।
पय समान तिहुं लोक में, श्रोर न श्रौषधि होइ ॥ १ ॥
रति के समै जो पय पियै, घटै न वल तेहि अंग ।
विरहिन को रति रुचि मिटै, चैागुन वढ़ै अनंग ॥

॥ धातु वंध ॥

मारो लोहा टाक दश लोठि सम लीजिए मिश्री उजे समान सो चूरण कीजिये दिवस एकैस प्रात उठि षाइ पैहै हि वीज न वेगि धातु नहि जाइ है ॥ इति सर्वगुण ग्रंथः समाप्तः संवत् १८७४ भाद्र मासे कृष्ण पक्षे चतुर्दश्यां, वुध वासरे समाप्ति मिदमागम् ।

Subject :—विविध रोगों की औषधियां।

(१) पृ० १ से पृ० ८ तक—स्त्री पैजै भैंता की विधि, छाया न जाइ ताको विधि, पसीना न आवै ताको विधि, अंग सुवास होइ ताको विधि, कोढ़ी की विधि, गुल्म जाने की विधि, अग्नि दीपिका, त्रिफलादि चूर्ण, शंख चूर्ण, स्तंभन विधि, विदारी कंद, गर्भ रहने की विधि, स्त्री के दूध न होइ ताको विधि, गर्भ न होय ताको विधि, प्रति सुत के दश मूत्र, स्त्री कपरा लोहू व छैता की विधि, देवदारु पुरिया, स्त्री की पुष्टि विधि, ऋतु होने की विधि, गर्भ होने की विधि, स्त्री के सोहाग, वाल स्याह विधि।

(२) पृ० ९ व १० लुप्त। पृ० ११ से पृ० २२ तक—सेहुआ विधि, खाज, इन्द्री जुलाब, शिरोक्ति, आंख की बरौनी जमने की चिकित्सा, तिमिरेका, ज्वरांकुश तिजराका, सम ज्वर अंतरिया के, माथे की पीड़ा, नासूर की औषधि, रतौंद विधि, फीनहि विधि, हलीविधि, विशूचिका, पेट पीड़ा, देह गंध, दांत जमने के समय की चिकित्सा, बालक की प्यास, मृगी, तिजरा नहरुआ, ज्वरदग्ध, ज्वर साक की विधि, कलेजे की पीड़ा, मस्तक की पीड़ा, कुत्ता काटे की दवा बीछी मारे की दवा, सांप काटे की दवा, रक्त विकार, वशीकरण, केशनाशन, ज्वर-रक्ति अतिसार आमातिसार, मंगलाष्टक लेप, सन्निपात, दाह की औषधि, मूत्र-कृच्छ्र, पंच सम चूर्ण, पुष्टि की औषधि, शूल गज केशरि गुटका, छर्दि की औषधि, कुष्ट की औषधि।

(३) पृ० २३ से पृ० ३२ तकः—तांवा मारण विधि, गंधक शोधन, विदुंक साद की औषधि, कुवति कारण औषधि, अर्द्धकपारी की औषधि, वायु व्यथा, तेज मंद के थोरो दिन की फुला; बहुमूत्र की औषधि, दुवर की औषधि, थंभन की विधि, बीछी उतरै ताको विधि, वाघ बांधनो होइ ताको विधि, मरद होइ ताको विधि, मुख सुवास होइ ताको विधि, पुरुष दोष विधि, गर्भ में मरा बालक होइ ताको विधि, शाकादि सर्व विद्या की विधि, दांत उगने में बालक को दुख होवै उसकी विधि।

(४) पृ० ३३ से पृ० ४२ तक—दूध वहुत होने की विधि, काया कल्प की विधि, खड्ग न लगै ताको विधि, जुआ जीतै ताको विधि, चोर के नाम निकालने की विधि, अनाज वहुत खाय ताको विधि, ववासीर जाने की विधि, मंदभैन की विधि, मोहन मंत्र, क्षुधासागर की विधि, भूख का चूर्ण, मदन मोद के खर विधि, प्रमेह का यत्न, मूत्रकृच्छ, रोम विधि, रोम सातन, प्रलेप विधि, घाव का इलाज, स्तंभन विधि, धातु वेध।

No. 532. Praśnachaura. Leaves—3. Dated in Samvat 1945 or A. D. 1888. Deposited with Paṇḍitā Rāmakaraṇa Pāṇḍe of Puresanātha, Post Office Paṭṭī, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ प्रश्न चैारः ॥१॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ १२ ॥ १० दिन वली जानव ॥ दिन सूं लग्ने रात्रि चैार जानव ॥ दिवा चैार ॥ ६ ॥ ७ ॥ ५ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ११ दुतीसरो डंड चेतनो लग्न में दिवा चैार जानव ॥ लग्न चैाथि वीति होइ ता परै दिन चढ़े जानव ॥ मित्र ॥ सू० च ० ॥ वृ ॥ मं० ॥ मित्र ॥ चंद्र को शुक्र ॥ बु० ॥ शु० ॥ शत्रु शुक्र को ॥ च ० । सू० सत्रुनि के सूमं शत्रुपास मा जानव ॥

End :—अथ वस्तु मिलन को परीक्षा ॥ अंध नेत्र धनिष्ठा पुष्य ॥ रोहिनी ॥ पूर्व भाद्र पद ॥ विष्णुषा ॥ उत्रा फाल्गुणी ॥ रेवती इति ॥ अंधा क्षमा जाइतो वस्तु जल्दी मिलै ॥ अथ मंदाक्षं ॥ आरद्रा ॥ मघा पूर्व भाद्र पद ॥ चित्रा ॥ ज्येष्ठा ॥ अभजित् ॥ भरनी ॥ इन नक्षत्र मा जाइ तैा दूरि सुनि परै बड़ी मसक्ति सों मिलै ॥ अथ दिव्य लोचनं ॥ स्वांती पुनर्वस् ॥ श्रवण ॥ कृतिका ॥ उत्रमांपद मूल ॥ पूर्वाका इनमा जाइ तैा ना मिलै ॥ इति मध्याक्षं नक्षत्रम् समाप्तमसंवत् १९४५ के मि० फा० व० १४ श्री रामदास मिश्र ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ३ तक—चोरी के समय का विचार, दिशा का विचार, जिस स्थान में वस्तु रक्खी हो उसका विचार चोर की जाति तथा वर्ण का विचार, स्वामी से चोर का संबंध विचार (२) पृ० ४ से पृ० ६ तक—चोर के नाम का तथा उसके निवास का विचार, वस्तु मिलने की परीक्षा ।

No. 533. Praśna Phala. Leaves—64. Deposited with Nāgarī Prachāriṇi Sabhā, Kāśi and Paṇḍit Durgā Prasāda Baudha, Post Barīpal, District Unnāva.

Beginning :—

चिंता मिटै को प्रश्न	उधार देवो को प्रश्न
१ वह राजहि पूछैा	१ आत्म ऋषिहि पूछैा
२ नर वाहेन पूछैा	२ अगस्त ऋषिहि पूछैा
३ भागीरथहि पूछैा	३ प्रहलादिहि पूछैा
४ स्वामि कार्तिके पूछैा	४ बल हनै पूछैा
५ राजा सगरै पूछैा	५ श्री भगवानहि पूछैा
६ वरयोधाहि पूछैा	६ मारी चहि पूछैा

७ चित्रांगदहि पूछौ	७ वशिष्टहि पूछौ
८ हरि चन्द्रहि पूछौ	८ पुलस्तहि पूछौ
९ चन्द्रोदादिहि पूछौ	९ पुलद नाहै पूछौ
१० रोहिताक्षहि पूछौ	१० पाने वहै पूछौ

Subject :—चिन्ता मिटने, उधार देने जुआ खेलने, गढ़ घेरने, साथ चलने, पानी बरसने, चाकरी मिलने, नाउं चढ़ना का प्रश्न—पृ० १-४ तक। बन्दी छूटै, डेरा भय, ग्रह स्थापन, आपदा प्रश्न, मित्र मिलै, चैापाय लेनेका, विवाह संतान, यात्रा, पढ़ना, रोज़गार, भेद करना, खेती करना, बीज बोना, नष्ट वस्तु प्राप्त, रोगी प्रश्न पृ० ८—१२ तक, घर धराई का प्रश्न, गांउ चलैका प्रश्न, औषधि करना, परिचय करना, द्रोह करना, गह गठेका प्रश्न, तीर्थ करना घर रहना, घोड़ा लेना, आगम, चोरी, सगाई, अहेर, व्योहार प्रश्न—पृ० १३ से १९ तक। गंगा, भीम सेन, हनूमान, युधिष्ठिर, राजा सगर, पुलाली, नर पोष, चित्रांगद, सुग्रीव, चन्द्रोदय, अर्जुन कथन वर्णन–पृ० २० से ३१ तक। वासुदेव, लक्ष्मण, नल, आत्म ऋषि, हरिश्चन्द्र, बलना, नरवान, भगवान, मारीच, अंगद, उपंत्र, रावन, सहस्रार्जुन, नल, रामचन्द्र, वलि, वशिष्ट अगस्त, पुलहन, जामवन्त वर्णन पृ० ३२ से ५५ तक। भागीरथी, नकुल, स्वामिकार्तिक, रोहितास, प्रहलाद, आनेय सहदेव, वक्ष, सुग्रीव, शत्रुघन और कुंभ करण का वर्णन पृ० ५५ से ६४ तक

End:—कुंभ करण उवाच०

१ घोरा मति लेहु लाभु ना होना।
२ यहि गांव बसै लाभ होई
३ बीज बए लाभु थोड़ा है कष्ट बड़ा है।
४ आगुम आई चिंता मति करौ
५ मित्र करौ लाभु होई
६ रोजि गारमौ लाभ होई
७ नष्ट वस्तु पै हो चिन्ता मति करौ
८ संतान का फल होई चिन्ता मति करौ
९ विद्या पढ़ौ अपढ़िहै
१० व्योहरे ते फल थोड़ा है कष्ट है।

इति

No. 534. Praśna-Sabhākāraja. Leaves—20. Dated in Samvat 1872 or A. D. 1815. Deposited with Rājā Avadhdeśa-siṁha, Raīsa and Tāllukedāra of Kālākā̃kara, District Pratapa-gaḍha (Oudh).

श्री राम जी

Beginning :—सहाःये श्री हनुमान जी सहाय

श्री अस्तुती

श्री रामचन्द्र क्रिपाल भजुमन हरन भै भो दारुनं ।
नव कंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुनं ॥
भजि दीन वंधु दिनेस दानो भुवन दंुदु निकंदुनं ।
रघुवीर आनंद कंद कोसल चंद दसरथ नंदनं ॥
भगु हेतु दीन दयाल देखु कृपाल अदबुद सुंदरः-भूत छुडावै के प्रश्न ।

१ मारीच	२ वन्दीनाह	३ भगवान	४ पुलस्ती	५ अरजुन
६ हनुमान	७ मारीच	८ अगस्त	९ सहस्रारजन	१० अरजुन

॥ अगस्त उवाच ॥

End :—१—इस घर सो लाभ नहीं है ।

(२) अधार दीजे मिलैगा विग्रह म ।
(३) ग्रह छुटेगा वडो जार सो ।
(४) जुवा में हारोगे धोरा ।
(५) भूत वड़े दिक् सो छुटेगा ।
(६) भै डर मो संका वड़ा है ।
(७) सगाई करो मरोगे जल्दी सें ।
(८) परचै कीजे लाभ होइगा ।
(९) मंत्र सिखावो विरोध माने ।
(१०) गाँव चलने को भला है ।

इति श्री पोथी प्रश्न सभ काराज के सु पुरनः सुभ मस्तुः श्रीरस्तु । लिखतं रामसुख ब्राह्मण संवत् १८७२ वैसाख वदी ५ सनी वासरे ।

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १६ तक—स्तुति, प्रश्न-चक्र, भूत छुड़ाने का चक्र और प्रश्न, मिताई करने का प्रश्न। पशु खरीदने का प्रश्न। परदेश से आने का प्रश्न। व्यौपार, सगाई, मैन्डर, साथ चलना, बंदमुक्त, नष्ट वस्तु प्राप्त, रोगी निरोग, खेती, वीज बोवन, सुवास, आपदा, साथ करना, बसा, चाकरी, नाम मढ़ै जुआ खेलना, ग्रह लेना, व्याह करना, संतान, यात्रा, वालकोत्पत्ति, रोजगार, चित्त चिंता, उधार देना, शिकार, घर रहने, ग्राम चलने का परिचय, दोहाई देना, ग्रहवी ग्रह, तीर्थ यात्रा, नवीनग्रह प्रवेश, चोरी करने तथा घोड़ा खरीदने के प्रश्न चक्र।

(२) पृ १६ से पृ० ४० तक—उपरोक्त चक्रों के फलाफल।

No. 535. Premabodha. Leaves—144. Dated in Samvat 1750 or A. D. 1693. Deposited with Paṇḍita Gopālaprasāda Upādhyāya of Sirasāganja, District Mainapurī, U. P.

Beginning :—

मन मनसा जब प्रेम को धारै। चंचल गति बहु सकल विसारै॥
चित में प्रेम बसे जब आइ। तन मन को सब सुधि विसराइ॥
प्रेम अगिनि जा घट महिं जागै। कुमादक अग ता तन ते भागै॥
प्रवाह प्रेम को जेहि घट वहै। अज्ञान फूँस कहँ नाहीं रहै॥
जोग वैराग सन्यास को। चंचल गति अवगाहि।
प्रेम अगनि के जरत ही। होय सबनि को दाह॥
प्रेम पवन जिहि घटहि वहाई। अग्यान पान ज्यों सब उठि जाई॥
प्रेम भानु जेहि घटहिं प्रकासै। अज्ञान तिमिर छिन माहि विनासै॥
प्रेम प्रतीत जावे मन आवै। × × × ॥
जिसु तन प्रेम बसे है आइ। दुष सुष मन के गए हिराइ॥
प्रेम पिपासा जिन मुष पाय। सहज तिया गति मो मन नहिं थाय॥

End :—

पोथी पूरन सत गुरु करी। दास दुआरे पूरी परी॥
अरध सहस्र चौपई यामें। षोडस अधिक दोहरा तामें॥
सोरठा झूलना वाहर नाहीं। ज्यों पात फूल फल तरवर माहिं॥
प्रेमवोध पोथी को नाम। पढ़त सुनत रहै सुष विश्राम॥
प्रेम महोदधि वैठि कै, जो कोइ गोता लेइ।
हरि रतन अमोलक हाथ तिसु, सहजे सत गुरु देइ॥
पोथी पूरन भई। जो देषा सो लिषा॥
भूल चूक वकसि लेनो। वाह गुरुजी॥ वाह गुरुजी॥

Subject :—(१) पृ० १..............नष्ट ॥

(२) पृ० २ से पृ० १२ तक—प्रेम का वर्णन, ग्रंथ प्रतिज्ञा ।
(३) ,, १२ से ,, २० तक—कबीर जी को परचो ।
(४) ,, २० से ,, ३० तक—धन्ने जी को परचो ।
(५) ,, ३० से ,, ३७ तक—त्रिलोचन जी को परचो ।
(६) ,, ३७ से ,, ५७ तक—परचो नामदेव जी को ।
(७) ,, ५७ से ,, ६७ तक—जैदेव जी को परचो ।
(८) ,, ६८ से ,, ८१ तक—रैदास जी को ,,
(९) ,, ८२ से ,, १०० तक—मीरा जी को ,,
(१०) ,, १०० से ,, ११५ तक—करमीबाई को ,,
(११) ,, ११५ से ,, १५० तक—पीपे जी को ,,
(१२) ,, १५० से ,, १६२ तक—सैन जी को ,,
(१३) ,, १६२ से ,, १८३ तक—सधने जी को ,,
(१४) ,, १८३ से ,, १९७ तक—वाल्मीक जी को ,,
(१५) ,, १९७ से ,, २१७ तक—सुखदेव जी को ,,
(१६) ,, २१७ से ,, २३० तक—वधिक जी को ,,
(१७) ,, २३० से ,, २५० तक—ध्रुव जी को ,,
(१८) ,, २५० से ,, २८८ तक—प्रह्लाद जी को ,,

ग्रंथ निर्माण काल ।

संवत् सत्रह से पंचास । सुकल एकादस मगसर मास
पोथी पूरन सत गुरु करी । दास दुआर पूरो परी ॥

ग्रंथ के विवर्णित छन्दों की संख्या

No. 536. Prem-Prabodha Prem-Parachayī. Leaves—104. Dated in Saṃvat 1780 or A. D. 1723. Deposited with Ananda-Bhavana Pustakālaya, Visavā̃, District Sītāpur (Oudh).

Beginning:—दो० ॥ ओं० नमो परमातमा पूरि रहो सब अंग । आदि मध्य पुनि अंत एकता को जगत तरंग ॥ सोरठा ॥ प्रतिम प्रेम प्रेमायो पुरो त्रिकुटो जेन्ह रची वहु विधि रचना थापो । पेले प्रेमी होय करि । ॥ चौ० ॥ प्रेम रुप धरि जग मंह पेले ॥ चारि प्रेम प्रेमी को मेले ॥ प्रेम वचन कछु कहन न आवै । उपजे प्रेम तब प्रीतम पावै ॥ प्रथम हिये को करु अकेला । किया प्रगास प्रेम को वेला ॥ पुरुष प्रकीत्री रुप धरि आयो भीतर सुत्र प्रेम का पायो ॥ प्रतिम प्रेमी पुरुष प्रक्रीत्री । प्रेम तहां सुभ्रतामह वेत्री ॥ दो० ॥ पार व्रह्म अपरंपरा आतम

अज अको निरवान ॥ प्रतिम प्रेमो होईकै पेले परम निधानु ॥ मैं चाहैं लिषैं प्रेम को वाता । आसुभरी कागज गरिजाता ॥ प्रेम वचन कछु लगें उचारैं । तरको करेजा आदि पुकारैं । प्रेम को सुरति जवै मन आवैं । तन मन सकल विसरि तव जावै ॥ प्रेम को ध्यान कान जव परै । मन पाथर ओला जिमि गरै ॥ प्रेम उचर रसना जव आवै । गद गद होइ कछु कहन न आवै ॥

End :—दियो उठाय मांतु यहुं जाये । रोम कमन अधर फटिकाये । रोदन करत मुष वात न आवै । माता देषि वहुत दुष पावै ॥ कहै माता मुझ किने दुषाया । मुष सिर चूमि छाती लैआवा ॥ धुअले होइ कोरे कहही अ आना । मंत्रेह को कहैा सव वषाना ॥ सुनत वचन ते न वरिसा भाषी । जउं की तेउं सव सुत सो भाषो ॥ दो० ॥ रेसुत कोई वासना तुझलै आई यहि ठैार । विना भगती भगवान को आदर होत न तोर ॥ वासना राजधर आई उपजाना ॥ विन भगती न पइहै ऊंच स्थाना ॥ तैं भगती न करी हरि को चितलाई । नहीं तनमें होई हरि कोरत नाई । विन हरि भगती अव हों जो कोई । तीसु दुहू लोकन आदर होई ॥ जो मान महत्व वड़ोआ चाहैं । तों हरि चरना चित अपना लावैं ॥ माता उपदेश ध्रुव चित आया । होई दिढ़ता वैराग जनावा ध्रुव कहत है मातु सो मैं हरि भगती करेऊं जो पदवी कीने न पाइया मैं ग्रोही को लेउं ॥ कही माता को ग्रह को त्यागा हरि की भगती को मनु अनुरागा । फिरत फिरत वाग महिं आया । तहं सप्त रिषि को दरसन पाया । अपूर्ण (आगे पृष्ट नही हैं)

Subject :—भगवान को प्रेम भक्ति उदाहरण स्वरूप ध्रुव की कथा । कबोर, रैदास, नामदेव, आदि की परचई ।

No. 537 (*a*). Putanāvidhāna. Leaves—5. Deposited with Paṇḍita Vasudeva Sahāya of Kamāsa, Post Office Mādhauganja, District Pratapagaḍha (Oudh)

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पुतना विधान लिष्यते ॥ प्रथम मास गर्भ रक्षा कमलं कुरइया तगर समभांग गृहीत्वा शोतल जलेन पिष्ठा पिवेत्

× × ×

जातानां प्रथम वर्षे लक्षण' ॥ ग्रोवा पृष्ठि टेढ़ी होइ लार आवे आत्र में उद्वेग होइ आहार के अनिष्टा होइ ॥ धावनी ग्रही नाम तस्य प्रतोकारः सद्यः वालकं गृहीत्त्वा मजोठ धवई का फूल लेंघि हरताल चन्दन जल सैं वांटि कै लेपन करव ततो मुंचित पूतना ॥ अथ द्वितीय रात्ति के कास होइ । वहुत गात्र शोष होई भी धनो नाम ग्रही ते के ग्रहते एते लक्षण होइ ॥ अथोपचारः ॥ चिचिरा उरई पिपरामूर

चिरायता चारि चोज़ छेरी के दूध में पीसि के लेप करव पाछे ते दूध देइ वकरा के सींग रोम उरिद समेत तो मुंचित पूतना ॥

End :—॥ अथ एकादश वर्षकम् ॥

दक्षिणा नाम राक्षसी तेके ग्रहे ते एते लक्षण होई नेत्र रोग होई अनेक प्रकार के गात्र में उद्वेग होई निष्ठुर वचन बोलै कवहूं कै पेलै तस्य प्रतीकारः ॥

कोदइ लावा चवरा पुरी मासु उसेइ कै मछरी कमल के फूल केसरि त्रि रात्रि वलि देव स्नान पंच गव्य पंच पल्लव धूप मृग श्रंग रोम कै ततो मुंचति पूतना ॥

अथ द्वादश वर्षकम् ॥

वायसी नाम महाक्षमी तेके ग्रेह ते एते लक्षण होइ ॥ मुष लाल होइ सर्व गात्र शिथिल होई मुष सुषाई ॥ तस्य प्रतीकारः ॥ रक्त माल्य गंध फूल कै वलि देई अनुक मणी पूर्ववत न तो मुंचति पूतना ॥ इति श्री पूतना विधान वाल तंत्रे वाल चिकित्सा भाषा समाप्तः ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक—प्रथम मास गर्भ रक्षा, द्वितीय मास से दसवें मास तक गर्भ रक्षा का विधान। जातक के प्रथम वर्ष का लक्षण (प्रथम दश रात्रि तक, पुनः प्रथम मास से लेकर बारहवें मास तक)।

(२) पृ० ६ से पृ० ९ तक—प्रथम वर्ष से लेकर दशवें वर्ष तक पूतना से बालक की रक्षा का विधान ॥

No. 537 (*b*). Pūtanāvidhāna Saṅgraha. Leaves—8. Dated in Samvat 1942 or A. D. 1885. Deposited with Paṇḍita Rāmaprasāda Pāṇde of Ghurahā, Post Office Mādhoganj, District Pratapagaḍha (Oudh).

Beginning :— × × × नाम सो बालकु कों आनि ग्रसै ताके लछन ॥ वार वार भुंभाइ दाहिनै पांव कँपै वार बार दूध डारै रा तौ मुख होइ ॥ ताकी विधि ॥ षीर मुगौ‍नी मदिरा दक्षिण दिशा में डारि आवे तौ वालकु नीकौ होइ ॥ तीसरे मास की पोतना ॥ रुद्र नाम आन ग्रसै ताके लछन ॥ रोवै वहुत स्वांस चलै रकत नेत्र होइ चितै कै हंसै ताको विधि ॥ उरद उसोये सेंदुर चंदन मिसुरी मदरी वासम में धरै दछिन दिशा डार आवै तौ वालक नीको होय ॥

End :—नवई वर्ष भोग नाम पूतना आनि ग्रसै ताके लछन ॥ जुर छिरद होय रकत विकार हाथ पाँव डारै और पटके माथो पिराय नींद न आवै राव पेसाव होय नीद रात के होय ताको उपचार चाउर खिचरी दही रोटी कवा

को पंखी मदरा वरा उरद के कोरा कारे वसन में धरे सब वस्तें रात के पीपर तरे धर आवे तो बालक नीको होय ॥ इति पूतना विधान संपूरन ॥ मिती कुवार वदी ३ रविवार संवत् १९४२ द० हरप्रसाद माझे छानी ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १६ तक—१ मास लेकर १० वर्ष तक के बालक पर बाधायें करनेवाली पूतनाओं के लक्षण और उनसे सुरक्षित रखने के उपाय।

No. 538. Rādhānāma-Mādhurī. Leaves—4. Dated in Samvat 1873. Deposited with Rāmasvarūpa Śukla, Post Office Bisavā̃, District Sītāpur (Oudh).

Beginning :—श्री राधा रमन जो सहाय ॥ अथ राधा नाम माधुरी लिष्यते । वृन्दावन रानी श्री राधा । मोहन मन मानी श्री राधा ॥ जय नित्य विहारनि श्री राधा । बृज सुष विस्तारनि श्री राधा ॥ कीरति को कन्या श्री राधा । सबही विधि धन्या श्री राधा । जय रास विलासिन श्री राधा । नित कुंज विहारनि श्री राधा ॥ हरि उन वनमाला श्री राधा । श्री दामा अनुजा श्री राधा । वृष दिन मनि तनुजा श्री राधा । रसिकन की स्वामिनि श्री राधा । करुणानिधे नामनि श्री राधा । बंसी वट वासिन श्री राधा । संगति प्रकासिन श्री राधा । गोपी सवों मणि श्री राधा । जय स्याम सजीवन श्री राधा । आनंद रस पीवनि श्रीराधा । आनंद रसायनि श्री राधा । पीतम सुष दायनि श्री राधा ॥ अनुराग सुवेली श्री राधा ॥ सैाभाग्य नवेली श्री राधा । सरसीरुह लोचन श्री राधा । हरि विरह विमोचन श्री राधा । वृन्दावन वासनि श्री राधा । श्री कृष्ण उपासनि श्री राधा । श्रंगार सुधानिधि श्री राधा । प्रेमावधि सब विधि श्री राधा । ललितादिक प्यारी श्री राधा ॥

End :—जग वंदन वंदित श्री राधा । निसि जाग रसाजित श्री राधा ॥ सुष सेज विराजति श्री राधा । वृज चंद चकोरी श्री राधा । वृषभान किसोरी श्री राधा । वृज मोहन मोहनि श्री राधा । अभिलाषन दोहनि श्री राधा । वृन्दावन सोभा श्री राधा ॥ क्रीड़ा तरु गोभा श्री राधा । अति सुघर स्वरूपनि श्री राधा । माधुरी अनपनि श्री राधा । श्री कृष्ण कर्षन श्री राधा । आनंद घन वर्षनि श्री राधा । दिव्यांशु केशी श्री राधा । अति मंजुल केशी श्री राधा । अभिसार प्रपन्ना श्री राधा । अत्यंत प्रसंन्ना श्री राधा । कल केलि परावधि श्री राधा । रस रीति रही सुधि श्री राधा । इति श्री राधा नाम माधुरी संपूर्णम् संवत १८७३ वि० लिषतं वजलाल ब्राह्मण पाठनार्थ महारानी श्री लक्ष्मी जी ॥

Subject:—यह छोटी पुस्तक आदि, अंत, मध्य में सम्पूर्ण हो गई इसलिये इसकी व्याख्या नहीं की गई।

No. 539. Rādhā Svāmī. Leaves—41. Deposited with Umāśaṅkar Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—शब्द दूसरा—घट कपट दूर कर भाई ॥ टेक ॥ सरधा भाव चरन में राखो प्रीत प्रतीत बढ़ाई ॥ १ ॥ मुंह के कहे काज नहिं होगा-जब लग मन में प्रेम न आई । बाचक सूर कहे अपने को बिन रन देखे करत बड़ाई ॥ ३ ॥ वैरी सनमुख होत कदाचित ऐसे भागें खोज न पाई । छाया तिमिर बुद्धि पर ऐसी अपनी गति को बूझ न लाई ॥ ५ ॥ जैसे मूसा बिल का सूरा बिल्ली का भय चिंतन समाई बिल में बैठे बातें मारें बिल्ली को हम मार गिराई । बिल्ली बिल पर आन पुकारी । आश्रो सूरमां बड़े सिपाही ॥ ८ ॥ सुनकर म्याउं क्याउं घबराये इक इक भागे खबर न पाई । ऐसे ज्ञानी वाचक जगमें निज वैराग की करत बड़ाई ॥ १० ॥ भाग ही न माया बूझे मन जानें हम त्याग कराई । धन वालों को ढूंढत डोलें काहू के उपदेश समाई ॥ जो संभोग बने कहीं ऐसा विषय परायत होता जाई । ते भोगें पूरे बन कहवें मन का धर्म सुनाई अथवा प्रारब्ध सिर डालें तरह २ की बात बनाई ।

End: —सुरत सम्वाद

प्रश्न १ ला—अब सूरत पूछे स्वामी से भेद कहो तुम अपना मोसे बास तुम्हारा कौन लोक में यहां आये तुम कौन मैाज में ॥ २ ॥ देश तुम्हारा कितनी दूर खोजे सुरत न पावे मूर ॥ ३ ॥ मैं बिछड़ी तुमसे कहो कैसे । देश पराये आई जैसे ॥ ४ ॥ मेरा हाल मिल कर गाश्रो । देश आपना मोहिं लिखाश्रो ॥ ५ ॥ मन तन संग पड़ी मैं कबसे । दुख पाये बहुतक मैं जब से ॥ ६ ॥ क्यों भूली मैं देश तुम्हारा आप पड़ी परदेश निहारा ॥ ७ ॥ पाताल बसोकि मृत्यु लोक में स्वर्ग बसो कि ब्रह्म लोक में ॥ ८ ॥ विष्णु लोक वैकुंठ धाम में इन्द्र पुरी या शिव मुकाम में ॥ ९ ॥ कृष्ण लोक या राम लोक में । चार खान चर अचर शोक में ॥ १० ॥ क्यों मोहि डाला काल लोक में । अति भर मायाहर्ष सोगमें ॥ १२ ॥ अब क्यों आये मोहि चितावन रूप धरा तुम अति मन भावन । मैं दासी तुम चरन निहारे भेद देव तुम अपने सारे ।

उत्तर अंग पहिला—तब हंस शब्द स्वामी बोले तो सुरत तुम मैं कहूं खोले जो तू पूछे भेद हमारा । कहूं सभी अब कर विस्तारा ।

Subject :—शब्द द्वितीय—शारीरिक कपट आदि दूर करके प्रेम करने का उपदेश । झूठी बातें बनानेवाले बैरागियों और सन्यासियों का अधः पतन । संसारिक लोग दुनियां के सभी कामों को तो आवश्यक समझते हैं परन्तु वे भक्ति मार्ग से विमुख रहते हैं ।

शब्द तृतीय—प्रेम के सन्मुख विद्या की गौणता। केवल पुस्तकों का ज्ञाता होने से ही अनुभव नहीं प्राप्त हो सकता। प्रेम ही से सब कुछ अनुभव होता है। विद्या के बलवानों का अभिमानी होना।

वचन पचीसवां। शब्द पहिला १—वेदान्त मत को असिद्ध करना और राधा के विश्वास पर दृढ़ता।

शब्द दूसरा—वेदान्त और ज्ञान आदि का भ्रम। सुरत शब्द में प्रेम।

शब्द तीसरा—जाग्रत सुषुप्ति और तुरीय अवस्था का दुख सुख।

वचन छब्बीसवां—प्रश्न १—सुरत और स्वामी का परस्पर वार्तालाप, एक दूसरे के अस्तित्व के सम्बंध में।

No. 540. Rājulapachīsī. Leaves—16. Deposited with Paṇḍita Rāmasvarūpa Miśra of Paṇḍitakā-Puravā, Village Bandhū, Post Office Sagarāmagaḍha, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—॥ अथ राजुल पचीसी लिषते ॥

प्रथमहिं सुमिरौं जादौं राई। पुरि सारद मनाइ स्यौ जीववे ॥ वंदौ अपने गुर के पाइ। राजमती जू के गुन गाइस्यो जीव वे ॥ गाऊं मंगल राजुल पचीसी। नेमि जिन व्याहन चले देषि पसुवनि दया ऊपजी छोड़ि सब वन को चले ॥ गिरनारि गढ़ पट जाइ के प्रभु जैन दच्छा अदरी ॥ राजुल तप कर जोरि विनवें बाप सौ विन्ती करी ॥ १ ॥ नावे वे मुझ्झ गिर नारि पठाऊ। मैं मुष देषों नाथ दा दीववे ॥ वा वे वे मुझ्झ गिर नारि पठाऊ। मैं वा वे वे मझु हिऊं माहा चावा ॥ अपने पीय के साथ दा जीव वे। हुवाऊं माहा साथ दा संसार सकाल असार है ॥ पिय पुत्र भाई बहिन यह सब मोह का जाल है। यह जानि असरन सरन सकल वा वे जहे गनीहथ कथदा। छिन कमैं छिन जाइगा हुवाई माहा साथ दा। ववये यह संसार असार तातें रहिए। मैान गहि जीववे ॥ वावे वेचहु गति दुःख अपार ॥२॥

End :—माइरी वह घर मेरा नाहिं ॥ काया घर मेरा संग है जीव वे ॥ माइरी इन सब लोगन महि कोइन मेरा अंग है जीव वे। कोइ न मेरा अंग वा वे ॥ मेरा परिवार और हैं जीव वे ॥ छिमा माता पिता धीरज रत पिया सिर मैार है। भाई विवेक सुवहि करुन ना सुमति मेरि सहेलिरी ॥ संग मन मन कुटंबु रेता ॥ तुकैया कहै जु अकेलीया ॥ माइरी लुं चुकराऊ। अव मैली निह है सोह दी जीव वे ॥ वैठि नगर वन माहिं के जिनहु पिय मोहिदी जीववे ॥ संगरि षोडस कलह करनी द्वादस अंग अंग भूपन। अष्ट कर्म निज वेठी माला............ ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १६ तक—नेमिनाथ का विवाह के समय पशुओं पर दया करके विवाह का विचार छोड़कर बीच ही से चला जाना। उनकी मनोनीता स्त्री का उनपर मोहित होकर उन्हीं के पास जाकर तप करने की इच्छा प्रगट करना, पिता से संसार की असारता और मोक्षादि के विषय में समझा कर गिरिनार पर भेजने को प्रार्थना करना, पिता का विरोध, पुत्री का समर्थन, पिता का माता से आज्ञा लेने के विषय में प्रस्ताव, पुत्री का माता से विदा मांगना, माता का विरोध, पुत्री का अपने प्रस्ताव का समर्थन। शेष लुप्त।

No. 541. Rāmachandra-kī-Bārāmāsī. Leaves—9. Dated in Samvat 1928 or A. D. 1871. Deposited with Thākura Gayādina Simha of Noharahasanapura, Post Office Rakhahā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गनेसायनमः ॥ श्री पोथो रामचन्द्र की वारह मासी लिष्यते ॥

चेत हिरना लषो हरी नै चांप लै ठाढ़े भए ॥ तुम रहो लछन जानको ढिग आपु मारन कैा चले ॥ वन वोच हिरना फिरत भाजत रूप छिपि छिपि जात है ॥ ताने सरासन वान रघुवर छलो छल करि जात हैं ॥

दे।० ॥ कहो मातु श्री जानको, सुनु लछिमन वलवीर।
हिरना ने कछु छल किया, देष्यो प्रभु रन धीर ॥ १ ॥
वैसाष वन वन फिरत लछिमन राम का षोजन चले ॥

दसकंघ मन मह प विचारि अव ते। छल वल है भलो लैकै उसासे लछन श्री राम कैा कहं पाइ हों ॥ वन वोच सूनो जानुको मन कौन विधि समुझाई हां ॥

दे।० ॥ उतते आवत हरि मिले, लछिमन वन मैं लोन।
सूनो छोड़ो जानुको, अहो तात कह कोन ॥

End :—फागुन में सव जग फागु पेलै लंक में षरभर परो ॥ एक इन्द्रजीत वलवान जाधा राम सन मुष सो लरैा ॥ भट भोर लच्छन तोर तानै वरनो सो वरनो मिलै। मति मंद है दसकंध कैा सुत षेंच सकी हनि दई ॥ हनूमान जव सजीवन लाय तात कैा जीवन भयो ॥ वह सक्ति सुरपुर कैां सिधारी सीस ढूंढ़त भयैा ॥ भुज वीस वोल्यो गरजि कै मैं सवहिं अव मैं मारि हों ॥ हनुमान अरु नल नील अंगद छार मैं करि डारिहों ॥ रघुवीर ने जव तीर तानैा छोड़ि रावन पै दयैा ॥ श्री राम के परताप तै वह असुर सुरपुर कैा गयो ॥

दे।० ॥ असुर मारि सीता लई, भगतन कैा सुष दीन।
तुलसीदास प कहत है, राज विभीषन दीन ॥

इति श्री वारह मासो संपूरन समाप्तम् शुभ मस्तु संवत् १९२८ मास भादों सीता सुदो १२ ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १८ तक—रामचन्द्र जी के वनवास का हरण से रावण वध तक का द्वादश मास के संबंध से वर्णन।

No. 542. Rāmagītā-kī-Tīkā. Leaves—14. Deposited with Thākura Brajabhūshana Siṁha, Village Jhukavārā, Post Office Pariyavā̃, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अध्यात्म रामायण। उत्तर कांड में शंकर जी के प्रश्न पर तिकी मैं उत्तर कांड में श्री लक्ष्मण जो के प्रश्न पर श्री राम जी ने आप दया करके रामगीता कही ॥ अथ श्री राम गीतायाँ टीका लिख्यते। तत् सीताजी के त्यागते उपरान्त श्री रघुत्तम मूल प्रथम श्लोक।

ततो जगन्मंगलात्मना विधाय रामायन कीर्ति मुत्तमम्। चचार पूर्वा चरितं रघुत्तमो राजर्षि वर्य्यै रपि सेमितं जथा ॥ १ ॥ टीकायाँ। मुंज है जो श्री राम तिन, अपनी मंगल मूर्ति करके रामायण नाम को कीर्ति कही अवस्य कैसा है उत्तम है काहेते जो शंकर जी और वाल्मीकादिक को कहत हैं तिसि कीर्ति को जगत में फैलाय करकै दास मणि कीर्ति को पढ़त हैं सुनते ही अनायास मुक्ति हो जायगी फिरि भी अपने वंश में वड़े जे सगर दलीप रघु तिन करिकैं चरित्र कहिये किये जो कर्म कैसे कर्म प्रजा पालन कथा श्रवण संध्या वंदन आदि गुरु भक्ति पूर्वक तिन कर्म को आप भी सावधान होकर कहत भये कैसे जैसे मौनिराज ऋषियों में श्रेष्ट हैं जिस भाँति तिन्होने जिस भाँति किये आप भी करते भये।

End :—याँ अब श्री रामचंद्र जी गीता के पाठ का फल कहते हैं। हे लक्ष्मण यह जो विज्ञान है इसको जो कोई श्रद्धा करिकै पाठ करै और गुरु जो पढ़ावन हार है तिस विषैं पहिले भक्ति करै कि मुझ पर गुरु ने वड़ा अनुग्रह किया जो मैं राम गीतार्थ तत्व को जाना। यासों भावना गुरु भक्ति कही है तिसकर युक्त होकर पढ़ै यह मैं नियम है या पर श्रुतिः यस्य देवे पराभक्ति यथा देवे तथा गुरौ तस्यैति कथिताह्य थाः प्रकासं ते महात्मकः इति श्रुति। × × × × इति श्री अध्यात्म रामायणे उमा महेश्वर संवादे उत्तर कांडे श्लोक टीकायाँ राम गीता नामो पंचमोऽध्यायः ॥

दो०ः—भाषा टीका यह करि राम वाक्य अनुसार।
ज्यों का त्यों ही वाक्य पढ़ि लिख्यों अर्थ सुविचार ॥
अति दुर्गम है संस्कृत कैसे जाणी जाय।
याते भासा कर दई टीका सुगम से पाय ॥

सुभ संवत् १९२४। वसंत रितु माघ मासे कृष्ण पक्षे तृतीया मंगल वासरे लिषतं × × × लिखो (भा) स्याम दास विष्णु प्रीति अर्थ ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० १७ तक—प्रस्तावना, वर्णाश्रम धर्म का वर्णन, तत्वज्ञानोत्पत्ति रीति, आत्म ज्ञान, कर्म भेद, कर्म विधान, माया निरूपण, समुच्चयवादी कथन, तत्वदर्शी का रहन, वाक्यार्थ निरूपण, स्थूल तथा सूक्ष्म शरीर का वर्णन और गुणात्मिका बुद्धि की अवस्थाओं का वर्णन।

(२) पृ० १७ से पृ० २८ तक—जगत त्याग का आदेश, अध्यास, ब्रह्म निरूपण, अविद्या-विनाश विधि, ब्रह्म की सर्व व्यापकता, उपराम विधि, समाधि से पूर्व की अवस्थाएं, विलायत का विधान, जीवन मुक्ति के लक्षण, राम गीता के पाठ का फल।

No. 543. Ramala. Leaves—16. Deposited with Paṇḍita Bhāgīrathīprasāda of Usakā, Post Office Kanḍhaura, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—पृष्ठ २ ॥

११३ ॥ यह सगुन अच्छा है कुटुंब वृद्धि मंगल होइगा ॥ प्रश्न ॥ अर्थ लाभ होयगा कोई संग होइगा मित्र मिलै पुत्र फल होइगा आज से महीना तीनि मे वहुत अच्छा होइगा अपने इष्ट और गुरू की पूजा करना मन का मनोरथ होइगा निकासी तुम्हारी स्त्री के पेट पर तिल है देषि लेना ॥

११४ ॥ यह सगुन अच्छा है कुछ वड़ा लाभ होइगा कुल देवता पूजा करौ धन लाभ होइगा सत्रुन सो मिलाप होइगा जहिते—तुम्हारो मिलाप वीच रहै सो मिलैगा धन लाभ होइगा चिंता मिटैगी निसानी तुम्हारे अंगपर तिलहै देषि लेना ॥

End:—पृष्ठ १६ ॥

४४१ ॥ यह सगुन धर्म सो सिद्धि होइगा पर यतन करना काम निरफल उचटि गया है धन की हानि वहुत भई है दूसरा काम विचारना नाहीं में अच्छा है निसानी तुम्हारे सिर का सुप नाहीं हैं।

४४२ ॥ यह सगुन का फल सुनैा कामना ही होयगी धन हानि होइगा ॥ पुत्र सों विरोध होइगा ॥ तुमको जीव का वड़ा जोखिम है तातै सवाधान रहना दूसरा काम करोगे तिससे भला होइगा सो विचार कै करना ग्रह की पूजा करना तिसमैं कलेस मिटेगा निसानी तेरी इन्द्री परतिल है देषि लेना।

४४३ ॥ यह सगुन काफल × × ×

Subject:—१,२,३, तथा ४ के अङ्कों से बनी (११३ से ४४२ तक) संख्याओं के पासे द्वारा प्राप्त फलाफल का वर्णन।

No. 544. Ramala Praśna. Leaves—9. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—श्री मते रामानुजाय नमः।

घनंतर संसार के कारन जानिवे के कारन रमल प्रश्न करी सो नारायन सिद्ध करै नीक व विकार जानन जोग शुद्ध चित्त सो कै कहै पाति ४ बुंदन की करै द्वै की तरह देइ जो एकु रहै तेहि की कुंडली करे जो द्वै रहं तो मंद करै पाइ करै येही तरह ते चार पाति बूंदन की करै इन चारिउ से गनती नीरै तीन एक ठउ करै मोर सकल देखै यह सकल देखे पहिली सकल ०।।। दूसरी सकल ।०।० तीसरी सकल ०।०। चउथी सकल ।।।। पचइ सकल ००।० सकल छठि ०॥० सकल सतइ ।।।० सकल अठइ ।०॥ सकल नवइ ॥०। सकल दसइ ००॥ सकल ग्यरहा ॥०० सकल बारही ०००। सकल तेरहो ०।०० सकल १४ ।००० सकल १५ ।००। सकल १६, ०००० सकल १०, ०।।। श्री भगुवानुवाच ॥ धनतर तेरे दिन नीक आये जो कछु तुम चहव सो सव भल होइ अउ जहां कउनो काज के जाव सो सिद्धि होइ मन आनन्द होइ लूटि मिले नाहो तो कछु परा पावै। पुत्र सुख देखै ॥ सबते सनेह अधिक होइ। अस्थान छुटै पहिले की जगह में दुख है जह छुटे सुख होइ ॥

End :—०।०० श्री भगवानुवाच जानुको नाराग की कृपा है सर्व काज प्राप्ति होइं देव के धनके विदेस भला है मने कामनु सुफल होइ दुसमन जेर होइ सकल कामना सफल होइ। ००० श्री भगवानुवाच यह प्रश्न भली है सर्व कारज तोर भलाइ मा मिलि उठे। विदेस सुफल नीक सायति है अनंद होइ।००। श्री भगवानुवाच यह प्रश्न सुभ है। नारायन मधिम ते उत्तम करै सकल कामना सुफल हाइ सत्रु छय होइ ०००० श्री भगवानुवाच यह प्रश्न भली है सब कारज सुफल होइ। जेहि विधि चाहसि सोइ होइ विदेस भला होइ ताप सहित घर आवै कन्या व पुत्र का सुफल होइ कुछ चहसि सो होय।

सकल १५—रोजी मिलै सुखु अनाश्रित होय। परमेश्वर की कृपा।

Subject :—शुभ नाम फल वर्णन।

No. 545(*a*). Ramalasāra Praśnāvalī. Leaves—8. Deposited with Late Paṇḍita Baijanātha, Village Śirakhorē, Post Office Gaḍavārā, District Prātāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रमलसार प्रश्नावली ॥ इसके देषने की यह रीति है कि एक पांसा काठ का बनाइले और उसमें संख्या के एक से लेकर चार तक अंक लिखे ॥१॥२॥३॥४॥ और पहिले प्रश्न पूछने वाला अपने मनमें विचार ले जिस मनोर्थ के लिये डाले तब तीन वार पांसे को फेंके जब उस्में जो अंक तीनि वार मे पड़े उन अंकों को क्रम से जोड़ ले जैसा प्रश्न का उत्तर आवै उसको समझ लेइ ॥

१११—अहो पूछनहार पुरुष सकुन उत्तम है ॥ तुम्हारा कारज सिद्ध होयगा ॥ सब कामना सिद्धि होयगी और इस ग्राम में ही अर्थ पावेगा और तुमको व्योपार में लाभ होयगी । यही चित में चढ़ैगा परंतु श्री गुरुदेव की पूजा करना अवश्य कार्य होगा ॥

End :—३२३ ॥ उत्तम तुमको अर्थ लाभ सौभाग्य मिलेगा और तुम्हारे वैरी का नाश होगा और धन धान्य की वृद्धि होयगी ॥ इष्ट मित्र से लाभ होगा और तुम्हारे दुष नाश होगा परन्तु तुम श्री सत्यनारायण की पूजन करना ॥ सकुन तुमको सामान्य है ॥ ३२४ ॥ उत्तम तुमको षेती में अर्थात् व्यापार में बहुत लाभ होगी और मनो कामना पूर्ण होगी और धन सुष मिलेगा और तुमको मार्ग में भय होगा और चिन्ता दूर होगी परंतु हनुमान जी का पूजन करना शुभ है ॥

Subject :—१११ से ३२४ के अङ्कों का (पासों द्वारा) फल ।

No. 545(*b*). Ramalasārapraśnavāli. Leaves—24. Dated in Samvat 1936. Deposited with Pandita Śivaratana Paude, Village Rāmanagara, Post Office Misarikha, District Sītāpur (Oudh).

Beginning :—अथ रमल सार लिष्यते । इस रमल सार प्रश्नावली के देखने की यह रीति है कि एक पांसा काठ का बनावे उसमें संख्या के एक से लेकर चार तक अंक लिखै १-२-३-४ प्रथम प्रश्न पूछने वाला अपने मनमें विचार लेवे जिस मनोरथ के लिये ड़ारै तब तीनि वार पांसे को फेंके तब उसमें जो अंक तीन वार में परै उन अंकों को क्रम से जोड़ ले जैसा प्रश्न का उत्तर आवै उसको समझ ले ॥ इति ॥

१११ अहो पूछन हार पुरुष सकुन उत्तम है सो तुम्हारो कारज सिद्धि होइगो और इस ग्राम में ही अर्थ पावेगा ॥ और तुमको व्यापार में लाभ होयगा यही चित्त में चढ़ेगा परंतु श्री गुरु देव की पूजा करना अवश्य कार्य होगा ॥ ११२ ॥ मध्यम इस काम के करने में लाभ नहीं और चिंता बहुत होगी

मत करना जो सपने में असुभ देखै तो व्योपार में लाभ नहीं होय इस काम को छोड़ और कुछ करना ॥ ११३ ॥ उत्तम तुमको ठिकाना अच्छा मिलेगा और चिंता दूर होगी विघ्न मिटेगा सुख होगा और कल्याण मंगल होयगा और बड़ाई सुनोगे जो गवन करौ तो सिद्ध होगा ये काम अवश्य करना चाहिये ।

End:—४३३ तुम्हारे मन में चिंता है सो काम मत करना तुमको दुख होगा धीरज धर और पुण्य करे तो नारायण को कृपा होगी सगुन मध्यम है ॥ ४३४ ॥ तुम्हारे शरीर में क्लेश है अथवा भाई बंधु से मन मिल रहते हो और जो मन में काम विचारा है सो होगा और सर्व कामना पूर्ण होगी सगुन उत्तम है ॥ ४४१ ॥ तुमको फल प्राप्त होगा और कोई उपाय करे डरे मत बड़ा लाभ होगा जो तुमने विचारा है सो मनोरथ सिद्धि होगा सगुन उत्तम है ॥ ४४२ ॥ उस काम के करने में तुमको सुख न मिलेगा और चिंता वहुत है और राय का डर है परंतु इसमें लाभ है देर से होगो श्री शिव जी के मंदिर में एक दीपक का प्रकाश सगुन तुझ को मध्यम है ॥ ४४३ यह काम अशुभ है और इसमें चिंता होगी काम विगाड़ होगा सो जो तुम नवग्रह पूजा अथवा धर्म करौ तो बड़ा कल्याण लाभ होगा ॥ यह सगुन मध्यम है ॥ ४४४ तुमको व्योपार में लाभ होगा और मन में चिंता होगी अर्थात् खेद पाओगे कुछ दिन पीछे तुमको सुखदाई फल मिलेगा और सकल कामना सिद्धि होगी परन्तु श्री राम नाम की गोली बना कर जल में डाल अथवा जीवों को चुगावे तो महा सुखदाई फल मिलेगा यह सगुन तुमको महा श्रेष्ट है ॥ इति श्री रमलसार प्रश्नावली संपूर्ण समाप्तः संवत १९३६ लिषतं वेनीराम तिवारी जेठ मासे कृष्ण पक्षे ११ दशी ॥ श्री राम श्री राम श्री राम ॥

Subject :—शुभ अशुभ प्रश्न विचार ।

No. 546. Ramalasaguna. Leaves—8. Deposited with Paṇḍita Bhāgīrathīprasāda of Usakā, Post Office Kauḍhaur, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रमल सगुन लिष्यते ॥ १११ ॥ यह सगुन से जीत होगा ॥ मन चीता है सो पावेगा ॥ सगुन में जीता है नवा वेपार होगा ॥ वेपार में लाभ होयगा तुम्हारे दिन अच्छा है मनको मनोरथ सुफल होयगा ॥ निसानी तेरी भुजा पर तिल है जान लेना ॥ ११२ ॥ यह सगुन मध्यम है दुसरा काम चेते हो यह काम सुगम नहीं है एक महीना तुमको पीनस मन जाता है ॥

End :—पृष्ट १६ ॥

३१४ ॥ यह सगुन से तेरा कल्यान होगा मंगल होगा धन लाभ होगा ॥ तथा अवर काम सब सिद्ध होगा मन में चिन्ता करना मनते उपकार है तेरा भला होगा निसानी तेरे बाबा के धन गड़ा है घर में तेरे सो देषि लेना ॥

३२१ ॥ यह सगुन से मन में चिंता है दिन मध्यम है यह काम सिद्धि नहीं होइगा तेसो तुम दुरो करना यह काम करोगे तो अजस होइगा घर में कलेस होइगा ॥ एक महीने तक चिंता होगा अवकास पीछे होगा ॥ कोई बात की उताइली होगी ॥ परमान लोभ होगी निसानी कोई तेरे संतान नहीं हैं ॥

Subject: —पृ० १ से पृ० १६ तक १,२,३,४ अंकों से बनी संख्याओं के अनुसार फल-कथन।

No. 547. Ramalā-Sākunvantī. Leaves—32. Deposited with Paṇḍita Chandrikāprasāda Bhatta of Sakaraulī. Post Office Mohanagañja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रमल शकुनवन्ती लिख्यते ॥ १११—शकुन उत्तम है ॥ उछाह काम संतति लाभ होइ ॥ वाँछित फल होइ ॥ चिंतव्य मनोरथ सिद्धि होइ ॥ चिंता मिटैगी ॥ धन सिद्धि होइ ॥ दान पुन्य करना ॥ शकुन अच्छा है ॥ फल उत्तम है ॥ महा लक्ष्मी की कृपा है ॥ पाठ करना ॥ तंदुल दान करना ॥ घर की पीड़ा जायगी ॥ सपना होत है ॥ पर मालुम परता नहीं ॥ हाथ मध्ये निशानी तिल की है ॥ इति श्री प्रथम ॥ शकुन संपूर्णः ॥ श्री रामायनमः ॥ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ११२—शकुन मध्यम है ॥ सत्य चलना ॥ अनेक कारज करता कष्ट होत है ॥ ए काम करता विघ्न होइ ॥ जीव के दुष उपजै ॥ तुमार दुशमन तुम पर ईरषा करता है। उसे वो काम नहीं होता ॥ ये काम करता दुख उपजै ॥ हृदय मधे वड़ी चिंता है ॥ शरीर मधे कोई गुप्त पीड़ा है ॥ संतान विरोध है ॥ पन ग्रह शान्ति करना ॥ शुभ होगा ॥ विश्वास रखना ॥ देव वचन सत्य है ६ ६ ६ ६ ६ ६

End :—४४३ ॥ सगुन उत्तम है।

अर्जुनोवाच ॥ तेरे सरीर पीड़ मिटै ॥ घरमा मंगल काम होइ विरोध मिटै ॥ तेरी भाग्य उदय है ॥ सज्जन मीलै ॥ सुष होइ ॥ जो उदास होत है ॥ महावीर की पूजा करवाना ॥ उदासी मीटै ॥ कीर्ति मिष्टान्न मिलै ॥ तुमार सेर बढ़ै ॥ शरीर की वायु को उपद्रव ॥ सो मिटै ॥ सुषेतो लहै ॥ ४४४ ॥ शगुन उत्तम है।

धर्मराज वाच ॥ परमेश्वर की कृपा सो कार्य सीधी ॥ धीरज रखना ॥ तुमार भाग्य उदय आगे वहुत है ॥ आप पराक्रम प्राप्ती होयगा ॥ तुमरे घरमा सब कुशल है ॥ गयो धन मीलै ॥ उदासी चिंता वहुत है ॥ गनपति पूजा करो ॥ आनंद होई ॥ पुत्र लाभ ॥ सज्जन मीलै ॥ तुमारि इंद्री तिल है सो जानव ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० १८ तक—१११, ११२, ११३, ११४, १२१, १२२, १२३, १२४, १३१, १३२, १३३, १३४, १४१, १४२, १४३, १४४, संख्याओं के फल।

(२) पृ० १८ से पृ० ३३ तक—२१२, २१३, २१४, २२१, २२२, २२३, २२४, २३१, २३२, २३३, २३४, २४१, २४२, २४३, २४४ संख्याओं के फल।

(३) पृ० ३३ से पृ० ४८ तक—३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४ संख्याओं के फल।

(४) पृ० ४९ से पृ० ६४ तक—४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४ संख्याओं के फल।

No. 548. Ramalāsāraphālanāmā. Leaves—13. Deposited with Tārāchanda Munima, C/o Messrs. Mahādevaprasāda Murlīdhara, Sirasāganja, Mainapurī.

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ श्री रामचन्द्रायनमः ॥ रमल सार फाल नामा शहनशाह फरास ने नैपोलियन बोनापार्ट ने फ्रेंचनामवर अज़ीम उल्सान बहादुर ने फिरंच जबान में निहायत मेहनत से तैयार किया इसके बगैर वह कोई काम न करता था ॥ हमने इसका तर्जुमा हिन्दी जबान में किया इसमें अपने प्रश्न का सचा जवाब मिलता है ॥ सवाल से जवाब निकालने का कायदा ॥ इसमें कुल मतलब देने वाले सोलह सवाल हैं वह नीचे लिखे जायंगे उनमें से कोई सवाल करे तो ईश्वर की तरफ ध्यान करके मन में राम नाम कहता हुआ चार सतरों में बिन्दियां अनगिनती देता जाय मगर गिने नहीं × × × × × × ×

End:—जवा बात तो (b)

: दोस्तों में खुशी के साथ दिन गुज़रेंगे।
⁚ आज का दिन अच्छा नहीं है ॥
⁖ वाज़ या फ़त यक़ीनो नहीं।
⁝ इस औरत के एक लड़का होगा ॥
⁝ जोड़ी दार साहब दौलत मिलेगा।
⁖ उस सखस के साथ ब्याह करने से बेशक तुम्हारी शादमानी का ज़माना आयेगा।
⁖ इस सखस को तुमसे मोहब्बत तो बहुत है मगर छुपाता है।
⁖ वे अंदेशा सफर करो।

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक—मूल ग्रंथ के निर्माण तथा उसके अनुवाद का संक्षिप्त परिचय। सवाल से जवाब निकालने का क़ायदा, मनहूस तारीख़ों की सूची, सोलह प्रश्न तथा उनके जवाबों का नक़शा।

(२) पृ० ७ से पृ० २५ तक—अलिफ़ (الف) की तख़्ती से लेकर तो (ط) की तख़्ती तक जवाबात।

No. 549. Rambhāśuka Samvāda. Leaves—22. Deposited with Umaśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—तीर्थ तीर्थ विषे निर्मल ब्रह्म वृन्द ब्राह्मण लोग रहते हैं तिनके समूह में वेदान्त की चर्चा होती है, तिस वाद विवाद में आत्म बोध होता है और उस बोध में ईश्वर का साक्षात हो जाता है ॥ ३ ॥ रम्भा कहने लगी कि हे मुनिराज ? घर २ में चलने वाली हेमलता स्वर्ण के समान सुन्दरी स्त्री फिरती है तिसके मुख पूर्ण चन्द्रमा के समान हैं तहां मुखरूप चन्द्रमा पर दो नेत्र मछलियों की तरह जा दीखते हैं तिन पर कामदेव का प्रचार होता है ॥ ४ ॥ शुकदेव जी कहते भये कि हे रम्भा तूने तुच्छ स्त्रियों की क्या बड़ाई करी। देखो जगह २ मुनियों के बैठने की भूमि है तहां वेदी २ के ऊपर सिद्ध और गन्धर्व लोगों की सभा होती है वहां सभा २ में किन्नर किन्नरियों का गायन होता है और गीत २ में रामचन्द्र के गुण गण गाये जाते हैं ॥ ५ ॥ रम्भा कहती भयी कि हे ऋषिवर ! जिस स्त्री के स्थन बड़े कठोर हैं जिसके देह में चन्दन लगाया हुआ है। चलायमान आंखों वाली जवान सुन्दर सुभाव वाली ऐसी नारी जिसने प्रेम से आलिंगन नहीं करी उस नर का जीना व्यर्थ हुआ।

End :—शुक मुनि कहने लगे कि हे रम्भा अपवित्र देह वाली पतित स्वभाव वाली देह से प्रगल्भा वाली बनकर लोभ सहित सुभाव वाली झूठ बोलती हुई ऐसी नारी का भोग जिस मनुष्य ने किया उसका जीवन व्यर्थ है। रम्भा बोली हे मुने पतला और त्रिवली युक्त पेट वाली हंस सरीषे चाल वाली मद से भरी भई सुन्दरता व सैाभाग्य से युक्त अधिक चञ्चल ऐसी मनोहर स्त्री जिसने इच्छापूर्वक रमणसमय में नहीं भोगी है उस मनुष्य का जीवना व्यर्थ है ॥ ३६ ॥ शुकदेव मुनि कहते भये हे रम्भे संसार में सद्भाव और ईश्वर की भक्ति से रहित चित्त को चुराने वाली हृदय में दया नहीं रखने वाली ऐसी पापिनी का भोग जिसके योगाभ्यास छोड़के आलिंगन करी उस नर का जीवन व्यर्थ गया। रम्भा कहने लगी कि जिस मनुष्य में पुरुषपना नहीं है तो बहुत अच्छी सेज बनाई तो क्या सुन्दर स्त्री है तो क्या वसन्तु ऋतु है क्या भया पूर्णमासी रात्री विषे चन्द्रमा खिल रहा है तो क्या भया अर्थात् जिसने स्त्री संग नहीं किया

उसका पुरुषार्थ व ऐश्वर्य्य वृथा है। शुक मुनि कहने लगे कि हे रम्भे जो विष्णु भगवान के चरणों में मन नहीं लगा तो सुरूप शरीर, यौवन, वाली स्त्री, सुमेरु समान धन होने से क्या भया।

Subject:—(१) शुक मुनि द्वारा अपने पक्ष की पुष्टि में तीर्थों की महिमा, वेदान्त की चर्चा और ईश्वर के साक्षात्कार आदि का कथन।

(२) रम्भा का स्त्रियों की उपमा हेमलता और चन्द्रमा, मछली इत्यादि से देकर उनकी शोभा वर्णन करना।

(३) शुकमुनि द्वारा स्थान २ पर रामचन्द्र की भक्ति की महिमा दिखलाना।

(४) रम्भा का यह कथन कि जिसने सब प्रकार सुन्दर स्त्रियों का उपयोग नहीं किया उसका जीवन व्यर्थ व्यतीत हुआ।

(५) शुक मुनि का पुनः ईश्वर के ध्यान को ही जीवन की सार्थकता सिद्ध करना।

(६) रम्भा का पुनः विषयोपभोग की महत्ता सिद्ध करना।

(७) शुकदेव जी द्वारा श्री कृष्ण भगवान का ध्यान ही सच्चा आनन्द बतलाया जाना।

(८) रम्भा का पुनः अपना पक्ष समर्थन।

(९) श्रीकृष्ण की भक्ति पर शुकदेव जी की अटल निष्ठा और यह दिखलाना कि विषय सुख क्षणिक और नाशवान हैं।

No. 550. Rasanirūpaṇa. Leaves—21. Deposited with Paṇḍita Sṛipati Lālajī Dube, Village Bamaraulikatāra, Post Office Khāsa, District Agra.

Beginning:—श्री राम। प्रथम रस रूपी ईश्वर है तिनको प्रणाम करना। वेद रस रूपी भगवान को कहत हैं। भगवान सब रस के कारन हैं॥ भगवान सर्व रस के कारण हैं। काहे तें कि सर्व भूत प्रानी के अंतः करन में बैठके सब जीवन के मन को तृगुण मय अष्ट दल कमल पर फेरत हैं। जब जैसे जैसे दलन पर मन जात है तब तैसी अभिलाष याहि उपजत है। पुन सो अभिलाष जब स्थिरी भूत होत है तब वाहि स्थायी भाव कहत हैं। पुनि सोई स्थायी भाव जब इन्द्रियन द्वार ह्वै के बाहर प्रगट होय कै अपने कर्मन को करतु है तब वाहि रस कहतु है॥ अर्थात् सर्व रस के कारन ईश्वर है। इति वस्तु निर्देशो पुरुष निर्देशः॥

End:—नायिका नायक के निकट आवै तब उत्तम प्रकार से बैठै ताहि स्थिति कला कहिये। सो स्थिति कला दोय प्रकार की कहिये॥ छवि स्थिति

१ रस स्थिति २ छवि स्थिति ल० । नायक के सन्मुख विनय पूर्वक बैठे ताहि छवि स्थति कहिए । रस स्थिति ल० ॥ नायक के वाम भाग विषय अपने हाथ ते नायक कौ हाथ पकर कै अथवा अपनी भुजा कौ नायक के स्कंध विषय रष कै बैठि ताहि रस स्थिति कहिए ॥ २ ॥ अथ घूंघट कला ल० नायक के सन्मुष जब आवै तब प्रथम घूंघट युक्त अधो मुषी होयकै बैठि ताहि घूघट कला कहिये ॥ ३ ॥ घूंघट उद्घाटन कला ल० ॥ जब अपने मुष के देषवे की रुचि नायक को जानै तब शनैः शनैः मुष को उघारै प्रथम नेत्र उघारै पुनः आधो वदन उघारै या प्रकार ताहि घूंघट उद्घाटन कला कहिए ॥ ४ ॥ लज्जाकला ल० जब मुष उघारै तब लज्जा युक्त नीची दृष्टि रषै ऊंची दृष्टि न करै ताहि लज्जा कला कहिए ॥ ५ ॥.

Subject :—पृ० १ से पृ० १० तक—वस्तु निर्देष, पुरुष निर्देश, प्रकृति निर्देष, रस निर्देश, रस सामग्री, आलम्बन, अनुसंचारी या व्यभिचारी भाव, भावों का वर्णन, सात्विक भाव, भाव निर्देश, भावाभास, रस भेद वर्णन।

(२) पृ० ११ से २४ तक—श्रंगार रस वर्णन, श्रंगार रस की प्रशंसा—(प्रथम तथा द्वितीय प्रकरण) नायिका भेद वर्णन, विषयालम्बन, विषयालम्बन के अधिकारी तथा अधिकारियों के भेद, नायक तथा नायिका भेद, नायक के गुण तथा गुणादि के भेद, नायक के ४८ भेदों का वर्णन, पुनः उनके तीन तीन भेद, प्रत्येक के दस-दस भेद करके १४४० भेदों का वर्णन।

(३) पृ० २४ से ४२ तक नायिका के गुण, नायिका के भेद (२४०० भेद), उद्दीपन विभाव, उद्दीपन के भेदों के भेद, मनोविकार लक्षण, अंग गुणादि वर्णन। वयः संधिनी नायिका वर्णन, नायिका के अन्य भेद, नायिकाओं की कलाएं और उनके भेद आदि॥

No. 551. Ravikathā. Leaves—39. Deposited with Paṇḍita Rāmasvarūpa of Paṇḍita-kā-Puravā, Post Office Sagarāmagaḍha, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—अथ रवि कथा लिष्यते।

रिसह नाह विनऊं जिनंद। जा प्रसाद चितु होइ अनंद॥
विनऊं अजित विनासै पापु। दुख दालिद्र हरै संतापु॥
संभव नाथ तनी थुति करौ। जा-प्रसाद वहु पुतरि तरौ॥
आचि नंद तुम सेवहु वर वीर। जा प्रसाद आरोग्य सरीर॥
सुमति देव जिन पदम सुपास। वहु विधि नवन करो प्रविलास॥
चंदा प्रभु जी विनऊ तोहि। हरै कलंक देहि जसु मोहि॥
सुन दल सीतल सेवा करौ। पुनि श्री आंस स्वामी मन धरौ॥

End :—

इहि रवि कथा को वहु छेव । लायो सभा के जिन वर देव ॥
जिहि भवियन को कुगी योद भाऊं । करि सिधि सिव पुरी को राउ ॥
मोह हलाल जिहि त्रस कीयो । राग द्वेष तजि संजम लीयो ॥
अजर अमर निर्मल होइ रह्यो । सोनरु देव गोठि कूं जयो ॥
एर दिन ढ़ढो रच्यो पुरानु । जाको बुधि मैं कियो वषानु ॥
अधिक हीन जो अक्षर होइ । वहुरि संवारो गुनियर लोय ॥

× × × ×

× × × ×

वामानंदनि पार्श्व जिनि, निस दिन सुमिरौ सोइ
इन्दु तनै सुष भोगि कै, पावै मोक्ष सु होइ ॥

इति रवि कथा समाप्ता शुभं भवतु मंगलं ददातु ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १० तक—मंगलाचरण, ग्रंथ निर्माण प्रतिज्ञा, कथा आरंभ, बनारस के राजा जैपाल का वर्णन, उसके राज्य में रहनेवाले कोटिध्वज का वर्णन, कोटिध्वज का ऐश्वर्य तथा दान इत्यादि का वर्णन, उनको स्त्री को सात पुत्र होने का वर्णन तथा उनके पुत्र रवि की कथा। सबसे छोटे पुत्र गुनधर की महत्ता, कथा श्रवण फल।

(२) पृ० १० से पृ० ३५ तक—कथा की निंदा करने वालों को कुफल, मुनीश्वरों का आगमन तथा धर्म फल वर्णन। मतिसागर की गुनसुंदरी को मुनि का रवि व्रत का उपदेश, रवि व्रत का फल, अपने घर आकर पुत्रों को बुलाकर व्रत की महत्ता सुनाना और उनकी बुराई करना, गुनसुंदरी का दुःखित होना मतिसागर की लक्ष्मी का विनाश, गुणधर का पिता को समझाना, अपने पेट भरने के लिये बाहर जाने का कथन, जाग ग्रहण, सप्त व्यसन वर्णन, अन्य शिक्षाएं गुणधर का अयोध्या पहुंचना, वहां के सेठ बलभद्र से भेंट, सेठ का गुणधर को भंडारी नियुक्त करना, वाणिज्यार्थ उसे धन देना।

(३) पृ० ३६ से पृ० ४० तक—मतिसागर का दुखित होकर पारियान्या मुनि के पास जाना और अपने भविष्य के संबंध में पूछना, मुनि का दुख दूर होने और पुत्र का पुनः लाभ सहित लौटने का कथन। पारसनाथजिनेन्द्र के सेवन की आज्ञा, आज्ञा पालन पर उसको अतुल धन होना।

(४) पृ० ४० से पृ० ७८ तक—गुणधर का भूखा होना, अपार संपत्ति की प्राप्ति होना, भिन्न २ प्रकार के दुखों में फंसना, राजा की प्रसन्नता और उसके

साथ राजकुमारी का पाणिग्रहण, बहुत दहेज मिलना, कुछ दिन बाद अपने कुटुम्ब से मिलने की इच्छा प्रगट करना, पार्श्वनाथ की पूजा का फल, कवि परिचय।

अग्रवारे यै कीयो वषानु। जननी नगर पैाहि नगर ठांव।
गगह गौत्तु मन्न कैा पुतु। भाउ भगति कप व्रत संजुक्त॥
जवहि यह करम सध्यैा करन मति भई। तव यह धर्म कथा निर्मई॥

No. 552. Śāguna Navaudiśā-ko. Leaves—11. Deposited with Paṇḍita Śāligrāma Dīkshita of Jāmū, Post Office Saṇḍilā, District Hardoi.

Beginning :—रवि उत्तर दशा फलं ॥दे।०॥ रवि ग्रह में ग्रहन को कहो जो हुतो सुभाउ पंडित पंडित हो इनहिं जो समुझि कं पेतु वनाउ ॥ चैा० ॥ वाइव सोमवार को वोढै ॥ जो सुभ भाषा वेनहिं जोले कोई जाति न कारजु करै ॥ यो कीजै सो निर्मूल परै ॥ व्याहन गये जा दैजो पावे ॥ मूठो लावतु हाथहि आवे ॥ मो दुलहिनि वै सगरो कहिवो ॥ प्रेतु पाइकै चुप किन रहिवो। जो पै व्याहे आवत होई ॥ दुलहिन सं झ वांझ कहि वोई ॥ पैम सगुन गौन कह करै ॥ एक जनैा लंवन कै परै ॥ कै पंडो भूलेगो कोइ ॥ आइमिलै कै विछुरनु होई ॥ पैडे पूछे सगुन अपार ॥ कहिवो कोऊ कहिकै उपकार गये ते पालो परै सिकार। जो पावे तो लोषरि सियार॥ चलु रगु बिगरै साई॥ तिय पशु परिपु बधुं मरै कोई॥ आगो लगै एकै घस जरें वादस होइ मो बूंदो परै॥ दे।० ॥ अपने ग्रह शशिवार को कहो पहै निवंधु ॥ सुगम समुझि जो नाचलै सो जग मे पंधु॥ चैा० ॥ सोमवार घर आवे बुध॥ सुभ भाषा है कछु कवि रुद्र ॥ क्षत्री ब्राह्मन को काजु न होई॥ जो पै करै अलपु कहि बोई ॥

चैा०—नान्हें तुरिक काज नहिं करहो ॥ वहुतु न होइ न पालो परहो ॥ रगु चालु अवल कुगर रातो। मछरी मांस गाउ अवही तो॥ आवे गायहि नान्हों कोइ॥ कै सिकार नान्हे को होइ॥ जो विगरै तो नान्हो मरै। पानी पवन आग फुनि वरै॥

End :—दे।०—सैारे विगरे जानि यह कागु अकासहि केतु। केतु काजु कोना कहो क्षत्री द्विजु को होय॥ चैा०—किस हूपे तजो होइ फेकार॥ असुभ में सुभ सुभ में वेकार॥ हाकिम चढ़ै गाउ भाजो चहै॥ ऐसे सगुन फेरि कै रहै। पोसि लहै जो कहऊ चलावे॥ ऐसे सगुन जिये फिरि आवै॥ जूझसि कारकैा वोरन के रंग। कै स्याम कुम इतु शनि के रंग॥ शनि घर रवि अवल कै वषाने॥ शनि घर सोमु आगे ते जानै॥ लीला हरो चालु मो अवरसु। पो तह चढु

हावो एक है पसु ॥ शनि के घर में मंगल आवै। कारो कुम इतु चोर बोलावैं। शनि घर बुधुनी लोपै हारो। सुरषा अकमर सुमठि हाथरो ॥ पीलु चोछ ली लो फुनि कहै सिकार गये सूकर को गहै। जो शनिघर वोहफै आवै। तो पै अवल गुरंगु बतावे। केतु अकास सुभाषा होई। सभी द्विजु करै काजु न होई ॥ सूद तुरिकु को कारज भलो। गाउ मनि पाल आवै चलो ॥ नान्हो मूठ धरे कछु आवै ॥ सूद तुरुकि पहुनोइ मिलावै ॥ करतु परै ऊपर फक फको। जूझहि इह लराइ होइ-मेढा मास मास कहि वोई। कै लाहू दंपिये के पैसा। कै कछु बात सगुन है ऐसा। विगरै तोर केत को धाम। क्षत्रिय ब्राह्मन करै न काम। उहइ बहु करार मइराही ॥ लसि करि आनि तहा ठहराही। विगरै सुधरै ह्वै है कूच आगे अब फकार कै सूचु। इति सगुन नवो दिशा का समाप्तं—

Subject:—रवि-उत्तर दिशा के फल का वर्णन करते हुए सोमवार के दिवस का शकुन कहता है कि इस समय में कोई जाति शुभ कार्य न करे, व्याहादि कार्य न करे क्योंकि ये उस समय निर्मूल हो जाते हैं। सोमवार को घर में बृहस्पति के आने पर भी कोई शुभ काम ब्राह्मण या क्षत्रिय को न करना चाहिये। सोमवार के घर बुध के जाने पर सब कार्य करना चाहिये। इसमें कार्य की सिद्धि होती है।

पूर्व राहु के घर बृहस्पति के जाने पर जिस कार्य का विचार किया जावे वह पूरा होता है। परन्तु राहु के घर शुक्र के जाने पर केवल क्षत्री और ब्राह्मण आदि के कार्य सिद्ध होते हैं। ईशान दिशा—राहु के घर शनि के जाने पर क्षत्रिय ब्राह्मण आदि का कार्य नहीं सिद्ध होता तुरुकों आदि नीच जातियों का कार्य बनता है।

जब चन्द्रमा शनि के गृह में आवे उस समय सब जातियों को अपना २ कार्य करना चाहिये; पुत्रोत्पत्ति, कहीं से शुभदायक समाचार आना ये सब बातें इस काल में प्राप्त होती है।

आग्नेय—शुक्र के घर आग्नेय—विचार इस काल में ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य ये कार्य न करें परन्तु शूद्र और तुर्क आदि जातियां अपने अपने धर्म का अनुसरण करें।

दक्षिण—बृहस्पति, भृगु और भौम की एकता में किसी को शुभ कार्य न करना चाहिये। इसमें घर की सम्पत्ति नष्ट होती है। गोत्र और समाज में झगड़ा होना, बुरे ग्राम में आगमन इत्यादि बातें संभव होती हैं॥

नैऋत्य—बुध के घर मंगल के जाने पर चोरों को अपने कार्य में सिद्धि प्राप्ति होती है।

पश्चिम—भौम के घर चन्द्रमा के आने पर शूद्र आदि निम्नजातियों को सफलता होती है।

वायव्य—सोमवार के घर सूर्य के आने पर कोई अच्छा शब्द सुनने में आता है। ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य आदिकों के घर पाहुने आते हैं।

No. 553. Sagunautī. Leaves—5. Deposited with Paṇḍita Vindheśvarīprasāda Miśra, Teacher, Sanskṛita-Pāthaśālā, Village Gauḍā, Post Office Madhoganja, District Pratapagaḍha (Oudh).

Beginning:—अथ सगुनौटी लिख्यते ॥

॥१११॥ यह सगुन अच्छा है जो काम चाहोगे सो पावोगे झगरा मिटैगा व्यापार में लाभ होयगा ॥ तेरा दिन अब अच्छा आवैगा मनोरथ सुफल होगा निस्सन्देह तेरे दाहिने भुजा पर तिल है सो देषि लेना ॥

॥११२॥ यह सगुन मध्यम है दुश्मन तुमको लषै है चित्त में को काम नहीं होगा उवही दिन तुमार समाचार है फूल छै देवी का पूजा करो चिंता चित्त की मिटैगी तुम्हारी स्त्री झूठ बोलती है सो विचारि लेना ॥

॥११३॥ यह सगुन का फल सुभ स्थान लाभ होगा चिन्ता चित्त की मिटैगी पुत्र प सुफल होगी दिन तुमारे बुरा रहा है सो गये अब तेरा अच्छा है तुम विश्वास मानो तेरे दाहिने अङ्ग पर तिल है सो देष लेना ॥

End:—

॥४४१॥ यह सगुन से भाई की चिन्ता है मद्धिम है दिन अच्छा है धीरज रषना ॥

॥४४२॥ यह सगुन बेकार है धन हानि होगी भय होगा काम विचारि के करना तुमै सुष नहीं है सोच है सो विचारि लेना ॥

॥४४३॥ यह सगुन अच्छा है सोच मिटैगी धन प्राप्ति होगी पुत्र लाभ होगा। तेरी छाती पर तिल है देषि लेना ॥

॥४४४॥ येह सगुन से काम नहीं होगा आपुस में विरोध होगा तेरे जी में चिन्ता है दूसरा काम करो तो बड़ी षुसी होगी तेरी स्त्री पर तिल है सो विचारि लेना ॥

॥ इति सगुनौटी संपूर्णम् ॥

Subject:—(१) पृ० १ से लेकर १० तक—१११ आदि १, २, ३, ४, के अंकों से बनी हुई तीन अंकों वाली संख्याओं के अनुसार सगुनों के फलों का वर्णन।

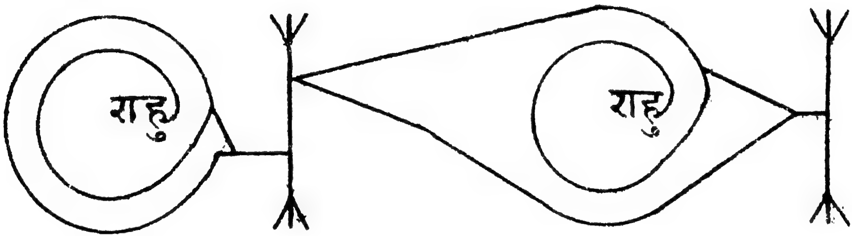
No. 554. Sagunavatī. Leaves—26. Deposited with Paṇḍita Bhagavanādatta of Benīpura, Post Office Madhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—अथ आधा सीसी कर यंत्र





आधा सीसी कर जंत्र ॥ * ॥

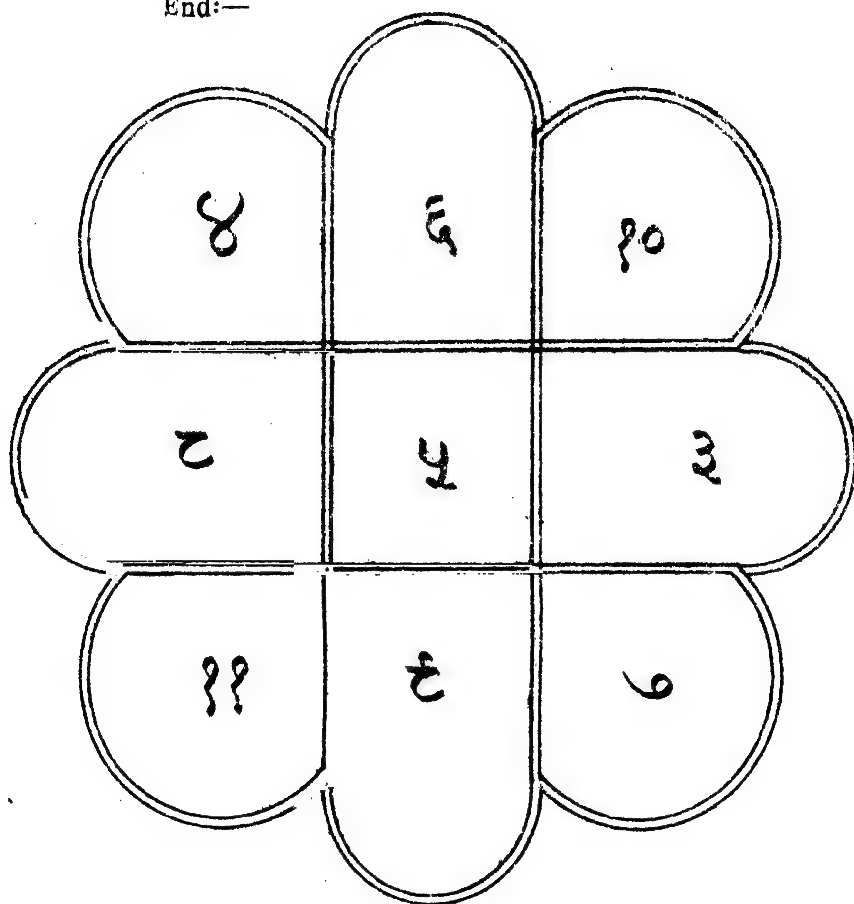


१	८	४	५
१	८	७	१२
८	१०	३	६
७	१२	१३	६

टाढ़ी की पेटी जंत्र लिषितं
लिषि कै दिषावै गर्भ षंडित होइ

....

End:—



चारि ४ दश १० कोइ आगम पावै ॥ = ॥
आठ ८ पांच ५ फल मांगे पावै ॥ = ॥
तीन ३ एगारह ११ भूजै राज ॥ = ॥
नै। ९ छा ६ सतरह १७ होइ अकाज ॥ = ॥
इति सगुन वता सिद्धि: ॥ = ॥ ॥ =

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक लुप्त ।

(२) पृ० ७ से पृ० २० तक—गर्भ मोक्ष, वोसा जंत्र, आधा सोसा का यंत्र, गर्भ खंडन, इंद्रियदृढ़ करण, झगड़े में जीतने, गऊ रोम नाश, वशीकरण तथा संग्राम विजय करने के यंत्र ।

(३) पृ० २१ से पृ० ३० तक--लुप्त।

(४) पृ० ३१ से पृ० ४३ तक—आकर्षण, लक्ष्मी लाभ, सर्व कार्य सिद्धि, राजा वशीकरण, राज सम्मान, वशीकरण, वोसा मंत्र, पुत्र होने, वंध्या प्रसव करण, काक प्रश्न, सर्व सिद्धि ज्वर नाश, पाप मोचन। अन्तरा करण तथा उसी के अन्य दो मन्त्र।

(५) पृ० ४३ से पृ० ५२ तक—बंदी मोक्ष, तिजारी, प्रजा मोहन कामिनी वशीकरण, जुआ जीतने, शत्रु नाशन, भूत-प्रेत विनाशन, संग्राम में गरुड़ वेग प्राप्त करने, राजद्वारा सम्पूर्ण वशीकरण, सर्वकार्य सिद्ध करने, मृगी रोग नाशन, सर्वकार्य सिद्ध करने, तिजारी दूर करने, सगुनवती तथा सगुनवती सिद्धि यन्त्र।

No. 555. Śakuna-Kuśaguna Parīkshā. Leaves—4. Deposited with Paṇḍita Gunnā Village Bahurājapura, Post Office Puravā, District Unnāva (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ अथ शकुन कुशकुन परीक्षा लिख्यते जो मनुष्य अपने घर से किसी कार्य को चले। उसको मार्ग में पानी से भरा हुआ वर्तन मिलै अथवा निरधुंध अथवा धुंआ से रहित अग्नी मिलै अथवा मछली की डलिया लिये आगे से लिये आता हो अथवा कोई रोटी लिये आगे से आता हो वा दूध आगे से लिये आता हो अथवा दही से मटकी भरी वा और किसी वर्तन से भरा दही लिये आता हो ये शगुन शुभ हैं। जिस काम को जाता होय वह अवश्य सिद्धि होय॥ और किंतु रोगी के निवृतार्थ दूत वैद्य को बुलाने जावै तो ये शगुन अच्छ हैं और येही शगुन जो वैद्य को मिलैं तो शुभ हैं रोगी अच्छा होय॥ जो मनुष्य किसी कार्य को घर से निकले मार्ग में कन्या अथवा सर्व श्रृंगार से भूषित पतिव्रता स्त्री मिले वा ब्राह्मण स्नान किए हुए मिलै वा किसी राजा का दर्शन मिलै वा गुरू मिले वा पान आगे से भरा लाता होय वा अन्न भरा आता होय तो ये शगुन शुभ है सिद्धि के दाता हैं कार्य वेग सिद्धि होय॥

End:—जो चिड़िया हरे पेड़ से उड़ के धरती पर आय के अथवा किसी खेत में आयक दाना चुगे अथवा कृमि चुगने लगे अथवा धरती में अथवा पेड़ वा पत्थर में चोंच घिसने लगे अथवा अच्छे प्रकार वैठी होय आनंदित होय उत्तर पूरव वा पश्चिम को मुह किये वैठी होय और हरे वृक्ष पर अथवा फूले हुए वृक्ष पर वैठी होय और दाहिनी ओर मिले अथवा हरे पेड़ पर से उड़के दूसरे फूले हुए पेड़ पर जा बैठे। और पत्तो फूलादि खाने लगे तो यह शगुन अच्छे हैं मन के चीते कार्य सिद्धि होय हैं॥ और जो बटोही घर से चले और जंगल में पहुंचे और महारी का जोड़ा लड़ता मिले अथवा वेरी वा बबूल के पेड़ पर बैठा होय अथवा जवासे के खेत में ज़मीन पर वैठा होय अथवा ज़र्रा खाता

देखे वा पांच चार इकठी होके लड़ती देखे अथवा सामने से उड़ जावे और कोल्हू आदि पर जा बैठे अथवा चिल्लाती हुई आकाश को उड़ती चली जावे और फिर दृष्टि न आवै यह शगुन खोटे हैं जो बटोही ऐसे शगुन पाय आगे जायगो तो दंगा फ़िसाद होगो कार्य बिगड़ जायगो और जो घर को लौटेगो तो शुभ है ॥ जो ऐसे कुशगुन होंय और घर को ना लौट सके तो वहीं ठहर कर देवता को पूजै अथवा सूर्य नारायण को जल चढ़ावै गुरु मंत्र का जप करैं और श्रद्धानुसार दान करे तो कुशगुन का प्रभाव जाता रहै तो कार्य भी सिद्धि होगा ॥

Subject:—देश परदेश यात्रा आदि में जो शुभ शकुन तथा अपशकुन आदि होते हैं उनका वर्णन ॥

No. 556. Samantasāra-Vachanāvali. Leaves—73.—Dated in Samvat 1953 or A.D. 1896. Deposited with Paṇḍita Santaprasādaji Śārmā, Village Mirjā-kā-Bāga, Post Office Pratāpagaḍha, District Pratapāgaḍha (Oudh).

Beginning.—श्री सीतारामाय नमः अथ विचित्र वचन श्री राम भक्तन के असंख्य जीव मोह माया की निद्रा में सूते पड़े हैं कोई पुरुष इस निद्रा ते जाग है तो जागा है तिसके हृदै में परमेश्वर के भजन रूपी खेत जमा है तिस परम भजन रूपी खेत का फल श्री रामदरशन है पर भजन रूपी खेत पर रक्षा भली भांति चाहिये जैसे अनाज के खेत के ऊपर राखो राखते हैं जिससे पशु न खाय जावे ऐसे ही भजन का खेत भी रक्षा लायक है भोग रूपी पशु अहंकार रूप चोर संकल्प रूपी पक्षी दंभ रूपी शूकर प्रयोजन रूपी हरिन इन सब दुष्टन से रक्षा किया चाहिये और जिन्होंने रक्षा नहीं किया तिनका खेत उजड़ जाता है ॥ १ ॥

End:—साईं साथ प्यार इतना कर जितना सुष चाहता हो और पाप इतना करो जितनी नरक की आंच सहने की शक्ति होय विश्व में विस्तार इतना कर जितने दिन रहना होय ॥ ९४ ॥ जितना है तितना कहु जेता कहु तेता कर मन अपने को बंधन में राख जो राखेगा तो मन तुझको बांध के चाहे जहां पटकेगा ॥ ९५ ॥ जो मन को जीता तो प्रभु के समीप रहेगा। जो मन न जीता तो सदा प्रभु से दूर रहेगा ॥ ९६ ॥ मन का कहा न मानना रोके रहना बड़ा वैरी है एकांत वास सदा संत संग भोजन लघु दान जागृत करत रहना तब इन रहस्य वचन का स्वाद होयगा पंडित वाचक ज्ञानी विरागहीन न इहन देना मन में मनन करना सदा २ ॥ ९७ ॥

इति श्री सर्व श्रुति स्मृति संहिता संत समेतसार। श्री बचनावली श्री युगलानन्य शरण ने लिखि दिया। शुभ मस्तु॥ मिति आसाढ़ बदी ९ सम्वत् १९५३

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ३० तक—भजन रूपी खेती की रक्षा का आदेश। परमेश्वर के करन कारन होने का वर्णन। ईश्वर की रचना की महत्ता। हृदय के शुद्ध होने का उपाय, मनुष्य के उपकारी ४ पदार्थ, भक्तों की पहिचान, भगवान को क्या पसन्द है। सूरमा, गरीबी, उत्तम पुरुष, फ़क़ीर, निश्चयवान, विद्वान, संत, और प्रभुप्रिय के लक्षण। सत्संग की आवश्यकता, जीव और परमेश्वर के मध्य के पांच परदों का वर्णन। गुरुमत का रूप, मोह-बंध से हानि, स्थूल तथा सूक्ष्म कुटुम्ब का विवरण। सूक्ष्म कुटुम्ब का स्वरूप परम संतों के पांच चिन्ह। पांच प्रकार का मांस और चार प्रकार की निद्रा के त्याग का कथन। जिज्ञासुओं के तीन उत्तम लक्षण। जीवों की आयु का नाश होने के पांच कारण, साधु सुकृति का फल, सावधानी से रहने का उपदेश, मोक्षप्रद दस 'स' कार, पांच दुर्लभ पदार्थ। जीवन का मूल्य, कामादिक की प्रबलता, मन तथा इन्द्रियादिक की प्रचंडता, संत का रहस्य।

(२) पृ० ३१ से पृ० १०० तक—माया का वृक्ष, धीरज, संतोष, विराग तथा सेवकाई का स्वरूप, सधन की कथा, बंधन से छूटने का उपाय। कर्म मिथ्या चेष्टा है। शुकदेव का आख्यान, गुरुमुख का स्वरूप। सत्संग की महिमा, मन-रोग के वैद्य संत हैं। संतोचित प्रभु की विनतियां, अभक्तों के दंड का विधान। संतराम का संबंध। माया के त्याग का वर्णन। ब्रह्म की प्राप्ति का विधान। परमेश्वर तथा जीव का स्वरूप। गुरुमुख और मनमुख का लक्षण, विषय त्याग। जिज्ञासु के दस लक्षण। रामरूपी अशरफी के ग्रहण का उपदेश, संतों के वचनों का महात्म्य, चौरासी का कष्ट। भक्ति संबंधी कुछ उपदेश, जगत के मिथ्यात्व का वर्णन। भक्त अभक्तों की परीक्षा, माया का स्वरूप, ज्ञान तथा ध्यान का स्वरूप, भजन का स्वरूप, प्रारब्ध।

(३) पृ० १०१ से पृ० १४६ तक—संतो की प्रतीति, प्रीति, भाई अर्जुन जी की साखी, इन्हीं की दूसरी साखी। तीसरी साखी। दर्शनादिक की साखी। शूरमा का लक्षण, साखी, खत्री का आख्यान। विवेक तथा अविवेक, मनुष्य के षट्-लक्षण, विचार पदार्थ, शुद्ध बुद्धि का लक्षण। शरणागत के मुख्य चिन्ह। मन के भेदी, कुछ उपदेश। प्रतिमान के मान के आगे पड़ने वाले तीन परदे। पापियों की प्रीति के छै पदार्थ। संसार की आठ उत्तम वस्तुएं। साखियां। धर्म का तत्व, फकीरी क्या है। संतों के ग्रहण करने योग्य बालकों के चार गुण, स्नानादि ग्रहणीय गुण। मन को जीतने का उपाय।

No. 557. Samarasāra. Leaves—18. Dated in Samvat 1793 or A.D. 1736. Deposited with Paṇḍita Rāmasvarūpa Miśra of

Paṇḍita-kā-Purava, Maujā Bhaddhū, Post Office Sagarāma gaḍha, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—परमात्मानम् प्रणम्य ॥
सकल सृष्टि प्रभु पोषक रजन पालक सुष दाइ ।
जै दायक अति अबल के हूजै सरन सहाइ ॥ १ ॥
दीन सहाई सुरपति सैनापति सिरताज ।
चित को चिंता मेटि कै कीजै सिद्धि सुकाज ॥ २ ॥

× × × × ×
× × × × ×

ताकी राह विचार को कटपय देत दिषाइ ।
इन चो वरगनि सुमिरि जो निरषै ध्यानु लगाइ ॥ ६ ॥
कट दस दस हल प सरहै य वरग वसु निरधारु ।
प्रति अक्षर तिन ठैार मत क्रम तें अंक विचारु ॥ ७ ॥

End:—पहुंचा छीन न देषई, हाथु धरे सिर जोइ ।
ताका डर नहिं मीच को रस मासनि लैां होइ ॥ १३५ ॥
माथे पर अंजुलि जवै कदली सुमन समान ।
आभा लाल धराइ तैा भै नहि रंच प्रमान ॥ १३६ ॥
अंबु सलिल में जो तिरै तैा न मरै नरु सोइ ।
जो भाषत है नेमु करि देव मुनी सब कोइ ॥ १३७ ॥
चिन्ह आयु निज क य लखि निहचै करैन ठानु ।
मुख्य देह के सगुन हैं इन सम आन न जानु ॥ १३८ ॥

इति श्री समर सार समाप्तं ॥ शुभ मस्तु ॥ सम्वत् १८२६ कार्तिक वदी सप्तमी शनि वासरे ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० ८ तक-मंगलाचरण, गुरु स्थान कथनः—
मिश्र अजोध्या नगर के , जगत गुरु घनस्याम ।
विद्या के सागर महा , ज्यैां गनपति मतिधाम ॥
तिनही को परसादु लहि , ज्योतिष अगम अगाध ।
"समरसार" भाषा करैां , छमियो बुध अपराध ॥

ग्रन्थ निर्माण काल—

गुन निधि परवत सीतकर , अब संवत सुष सारु ।
ज्येष्ठ असित तिथि तीज रवि , भयो ग्रन्थ औतारु ॥

संख्याज्ञान, जय पराजय, चिंता, वरण स्वर, राशि स्वामी, ग्रह स्वर राशि स्वरभ स्वरज्ञानम् । द्वादश वार्षिक, स्वर वार्षिक, स्वर चयन, स्वरपद स्वर मास, स्वर प्रथन, स्वर कथनम्, ऋतु स्वर वर्णन ।

(२) पृ० ८ से पृ० १६ तक—मात्रा स्वर, जीव स्वर, पिंड स्वर, जोग स्वर, अंतरोदय, भू-बल, रविहत दिशा, चन्द्रहत दिशा, केतुहत दिशा, राहु बल, जोगिनी बल, जोगिनी नाम । राहु युत जोगिनी बलम् ।

(३) पृ० १७ से पृ० ३६ तक—काल कथनम्, तत्कालज्ञानम्, दिन व्यतीत ज्ञानम्. वार प्रवृत्ति, होरा, प्रहर लक्षण, लगन प्रमाण, वास्तु सूनं, सकाल, राहु कलानळं, तात्कालिक, जीव पक्ष कथनम्, नाम ज्ञानाय शकुनत पशु चक्र, हंसचारु, दलपति फलं, स्वास फल वाह प्रमाण कथनम्, स्वरबलं, रतिविधि, छूतक्रीड़ा, समेर पोषधानि, कोट चक्रम्, सर्वतोभद्र चक्रम्, साध्यासाधक, मद्रा श्रार पुत्र संबंधी प्रश्न ।

No. 558. Sāmudrika. Leaves—10. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning:—नाभी लक्षण नाभी गंभीरी वाढुरी सदा होइ धनवन्त । सुन्दर नाभी पुरुष की दुख देषावै अंत ।

अथ हस्त रेखा लक्षण

अब सुनु कहैं हस्त की रेखा । जैसा भाउ जहा मै देखा । ज्याइ ज्याद रेखा होइ हाथा । वहुतै बनी जब लै तेहि साथा । मंछरूप रेखा देषरावै । पावै शोधि हाथ जह लावै । फुटन्हे रूप जो रेखा होई । ता कहं चोर कहै सब कोई । कै शशी कै आंकुस रेखा होइ सुर श्रौ धनवन्त देषा । चैाम्टी रेखा जहो होइ । महा सुरीवा कहिये सोई । दो०—तिलटी रेखा हाथ में हिन्दुहि तुरक कराइ । जोई तुरुक के हाथ में निश्चै धाइ सो आइ । अथ पुरुष लक्षण वर्णन—कोमली मुरती अंग सों । व'कट भोंह विशाल सो लोचन लाल चगहो । थोर काम कला वहुत सुख पावइ । शील व'त गुन वंत सो चतुर कहावइ । रूपवन्त प्रति चतुर विनोद रागरस गीत अरथ सों हेतु रहे चीत प्रेम व'श । लहु भोजन लहु रोष दान दीन भावइ । कामीनी पतर सलाइ सो रूप रिझावई । अति लहु अति न विशाल शोभ धाम अंग होइ । मधु बानी मधु भोजन सुन्दर रूपते ही ।

End:—अथ अंग प्रमाण लक्षण—वावन अंगुल अंग पुरुष जो जानिये सो वावन श्रौतार देव करि मानिये । राजपुत्र जो होई जैा वलो पावन फेरे ।

चारी बीस अंगुल पुरुष जानु दुष्ट सो हाइ । मन कपटी अप रचार थो भेद न पावे कोइ । नवे अंगुल पुरुष जो लहिये । तीस वर्ष आवेदा कहिये । सो

अंगुल का होइ प्रवाना। अधिक वष होइ अनुमाना। सा अंगुल ऊपर जो गनै। अंगुल साथ वरष दश मनै। होइ दहोतरी सैकी काया। तौहु चाहि अधिक वढ़ि आसा। सात वष ताको अधिकाई। अंगुल पाछे लेहु गनाई। बोसा सै तजी ऊपर वढ़ै। होइ चिरंजी आगम पढ़ै।

हिरदै लक्षण—दोउ अश्यन नर भारी होइ। महा धनाटी पुर्ष है सोइ वांह दोस अश्यन है भारी। मिलै नारि तेहि प्रेम पियारो। हृदै समान अरुन जो होई। सेवा करै जगत सव कोई। दुर्वल हिया दालिद का भाउ। मोटा हो आवरष सै आउ।

Subject :—(१) नाभि लक्षण।
२—हस्त रेखा लक्षण।
३—पुरुष की चार जातियों के लक्षण।
४—चित्रिनी स्त्री लक्षण।
५—हस्तिनी लक्षण।
६—नख लक्षण तथा चरण की उंगलियों के लक्षण।
७—जानु लक्षण, पंजर लक्षण।
८—इंद्रिय लक्षण।
९—अंग प्रमाण लक्षण।
१०—हृदय लक्षण।

No. 559. Saṅgraha. Leaves—6. Deposited with Thākura Bidriprasāda, Village Kharauhī, Post Office Mānadhātā, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning :—अव तो मिलनो कठिन है। पांवन पड़ी जंजीर।
परवस प्यारे हम भई। काउ करै ततवीर॥ १॥
मित्र तुम्हारे मिलन को। चाहत है चित नित।
तन नहिं मिल्यो तो का भयो। मन मिलि आवत नित्त॥ २॥
सोरठा:—प्यारे तुम जिन जानियो। हम सन प्रीति गई।
अमर वेल ज्यों वक्ष पर। वाढ़त नित्त नई॥ ३॥
तुम विछुरत छिन मो मरैं। कहा जियैं विनु तोहिं।
तव मूरति मन मों वसै। वही जियावत मोहि॥ ४॥

End :—सांचो कहैा हमसों मनमोहन, काके कहे तुम प्रीति तजी है।
आंखिन देखि विना नहिं चैन सो, प्रीति की रीति कहां विसरी है॥
का कहैां मोही सों चूक भई, तुमरे चित की जो चाह घटी है।
मै कपटी कि भैा तू कपटी कि तैा, वह कपटी ज्यहि ऐसी ठटी है॥ १॥

फीकी लगै अति नीको सु फूल यथा सुचि सुभ्र सुगंध विना ।
तन मांहि पोसाक न सोहत है दीग्र वंदो यथा कटि बंध विना ॥
वीर सरीर न सोहत है भुज तंडव उन्नत कंध विना ।
कविता वनिता नहिं सोहत यें वर भूषण छंद प्रवंध विना ॥ २ ॥

Subject:—पृ० १ से पृ० ४ तक--पत्र संबंधी दोहे ।
पृ० ४ से पृ० १२ तक—पत्र तथा विदाह संबंधी दोहे ।

No. 560 (*a*). Sāragita. Leaves-20. Deposited with Pandita Mannilāa Gaṅgaputra Tivāri, Village Misrikhā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः अथ सार गीता लिख्यते ॥ अर्जुन उवाच, अर्जुन श्री कृष्ण भगवान जो सो प्रश्न करे है कि परमेश्वर जो उंकार का महातम ग्रैार ग्रसथान । तिसके सुणने की मेरे वांछा है ॥ तुम कृपा करके निरूपण करहु ॥ श्री भगवान वाच ॥ हे अर्जुन तुके वहुत वडा प्रश्न किया है ॥ अब उोंकार का महातम विस्तार कर कहता हैां तूं श्रवण करो । एहि गीता सार हैं । ब्रह्मा विष्णु महेश्वर एहु इसके रष्या करने हारा है । ग्रैार ग्रगन वायु सूरज एहु इसके देवता है ॥ गायत्री जगत्रो त्रिष्ट एहु तीनें इसके छंद हैं ॥ ग्रैार ग्रगन ग्रस्थान है तहां चारों वेद हैं । रिग्वेद । युजर्वेद । सामवेद । ग्रथर्वण वेद ॥ चारों वेद कारन हैं । ग्रभ इनका उतपति कह हैां । उोंकार ते इनके उत्तपत्ति है रिग्वेद का नील वरण । युजर्वेद का पीत वरण है । साम वेद का स्वेत वरण है । ग्रथर्वण का रक्त वरण है । उोंकार नाम ग्रखर सक्त है ग्ररु मकार के लोक है । ग्रोंकार ग्रखर परम रुप है ग्ररु इसुर वेद कमल विखे वसे हैं । पृथ्वी ग्रग्नि रिग्वेद है ग्ररु वह्मा भुवलोक एहो चारो मकार ग्रखर के साथ है ॥

End:—सर्व सास्त्र मयी गीता । सर्व धर्म मयो दयः । सर्व तीर्थ मयो गंगा ॥ सर्व देव मयो हरि जो कोई इसका इक सलोक एक चरण आधा चरण पाठ करे है सो संसार के अंध कूप ते मुक्ति होइ श्री कृष्ण भगवान जी के पवित्र वचन है । वचनें ते भला फल सार गीता कीनी है । रे मनुषो तिस फल को तुम क्यें नहीं खाते पापें के अग्यानो को वरेचन करन हारी है ॥ वारंवार भली भांति सदा सर्वदा गीता का पाठ कीजे । अथवा श्रवण कीजे ॥ ग्रैार शास्त्र का विस्तार श्री कृष्ण के निमित्त कीजे ॥ कमल नाभ जो है श्री कृष्ण कृपा निधान । श्री नारायण जी तिनकी मुष कमल ते निकसी है । ग्ररु श्री मुष वाक्य है । गंगा, गीता, गायत्री, गुरु, गोविंद । इन पंचो राग करै । सो पुनर्जन्म को न पावै ॥ जो कोई दस सार गीता का यथा शक्ति ग्रभ्यास करन न जाणै

अरु पाठ मात्र करै सो भी विश्नु के विद्मान जाइ प्राप्त होइ। इसके आगे क्या कहो। इति श्री भगवद्गीता ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन संवादे सार गीता सम्पूर्ण है।

Subject:—ओंकार का महत्व, रूप, स्थान आदि जानने के प्रश्न श्री कृष्ण जी ने अर्जुन को समझाया है॥

No. 560 (*b*). Sāragita. Leaves—21. Dated in Samvat 1767 or A.D. 1710. Deposited with Paṇḍita Rāmanātha Miśra, Village Imaliyā, Post Office Sadārapura, District Sitāpur (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ अथ सार गीता लिष्यते॥ अर्जुन उवाच॥ अर्जुन श्री कृष्ण भगवान जी से प्रश्न करे है कि हे परमेश्वर जी उंकार का महातम रूप स्थान तिसके सुणने को मेरे बांच्छा है तुम कृपा करके निरूपण करहु॥ श्री भगवानुवाच हे अर्जुन तू के बहुत भला प्रश्न किया है अब ओंकार का महातम विस्तार कर कहता हूं॥ तू श्रवण करो यहि गीता सार है ब्रह्मा, विश्नु, महेश्वर यह इसके रष्या करने हारा है॥ श्रोर अगन वायु सूरज यह इसके देवता हैं॥ गायत्री जगत्री त्रिष्टम् यह तीनों इसके छंद हैं श्रोर अगन अस्थान है तहां चारोवेद हैं॥ रिगवेद, यजुर्वेद, सामवेद. अथर्वण वेद॥ चारो वेद कारन॥ अब इनका उतपति कहहैं॥ ओंकार ते इनको उतपति है रिगवेद का नील बरण है यजुर्वेद का पति वरण है। सामवेद का स्वेत वरण है अथर्वण का रक्त वरण है ओंकार नाम अषर सक्त है अरु मकार के लोक हैं ओंकार अषर परम रूप है अरु इस हृदे कमल विषे वसे है पृथ्वी अग्नि रिगवेद है अरु ब्रह्मा भुव लोक ये चारों अकार अषर के साथ है॥

End:—जो कोई एक वार सार गीता के अर्ध जल विषै असना न करि के पाठ करै सो संसार के अंध कूपते मुक्ति होइ॥ समस्ततोत्रों ते उत्तम है श्रोर जिस को वेदांती है अरु अखिला का दाती है अरु श्री नारायण मई है सर्व सास्त्र मई गीता सर्व धर्म मयोद्या॥ सर्व तीर्थ मयो गंगा सर्व देव मयो हरि॥ सो जो कोई इसका एक स्लोक एक चरण आधा चरण पाठ करे है अरु श्री नारायण जी का ध्यान धरे है सो संसार के अंध कूप ते मुक्ति हो॥ श्री कृष्ण भगवान जी के अमृत वचन हैं॥ वचनो ते भला फल सार गीता की ती है रे मनुषो तिष फल को तुम क्यों नहीं खाते॥ पापों के अज्ञान को वरेचन करन हारो है वारंवार भली भांति सदा सर्वदा गीता का पाठ कीजे अथवा श्रवण कीजे श्रोर सास्त्र का विस्तार श्री कृष्ण को निमित्त कीजे॥ कमल नाभ जो है श्री कृष्ण कृपा निधान श्री नारायण जी तिन की मुष कमल ते निकसी है अरु

श्री मुष वाक्य है गंगा गीता गायत्री गुरू गोविंद इन्ह पंचो राग करे सो पुनर्जन्म को न पावैं जो कोई इस सार गीता का जथा शक्ति अभ्यास करन न जाऐ अरु पाठ मात्र करै जो भी विश्नु के विदमान जाइ प्रापति होइ ॥ १ ॥ इसके आगे क्या कहें ॥ इति श्री भगवत गीता (सार गीता सूष निषत्सु ब्रह्म विद्यायां जोग शास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन संवादे सार गीता संपूर्णम् लिषतं वन वारी पाठक पैतेपुर निवासी जेष्ट शुक्ल दशमी संवत् १७६७ वि० राम राम राम राम राम ॥

Subject:—भगवद्गीता का सार ॥

No. 560(*c*). Srīsāragīta. Leaves—21. Dated in Samvat 1872 or A.D. 1815. Deposited with Vaidya Rāmabhūshana, Village Kāmatāpura, Post Office Etaujā, District Lucknow (Oudh).

Beginning:—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ सार गीता लिष्येत ॥ अरजुन उवाच अरजुन श्री कृष्ण भगवान जी को प्रश्न करै है कि हे परमेश्वर जो ओंकार का महातम और रूप और असथान तिस के सुनबे की मेरे वांछा है तुम कृपा करके निरूपण करहु । श्री भगवानु वाच ॥ हे अरजुन तुमने बहुत भला प्रश्न किया है अब ओंकार का महातम विसतार कर कहता हूं ॥ तूं श्रवण करो ॥ एही गीता सार है ॥ ब्रह्मा विश्नु महेश्वर ये इसके रष्या करने हारा हैं और अगन वायु सूरज यह इसके देवता है ॥ गायत्री जगत्री त्रिष्टप यह तीनों इसके छंद हैं और अगन असथान हैं तहां चारो वेद हैं ॥ रिग्वेद ॥ जुजुर्वेद ॥ अथर्वण वेद ॥ चारों वेदों कारन है ॥ इनका उतपत कह हैं रिग्वेद का नील वरण है जुजुर वेद का पीत वरण हैं ॥ सामवेद का स्वेत वरण है अर्थवण का रक्त वरण है ऊंकार नाम अषर सक्त है अरु मकार के लोक है ओंकार अषर परम रूप है और इस हृदै कमल विषे बसे हैं ॥

End:—सर्व सास्त्र मयी गीता सर्व धर्म मयो दयः सर्व तीर्थ मयो गंगा सर्व देव मयो हरिः ॥ जो कोई इसका इक स्लोक एक चरण आधा पाठ करै है अरु श्री नारायण जी का ध्यान करै सो संसार के अंध कूप ते मुक्ति होई । श्री कृष्ण भगवान जी के अमृत वचन हैं ॥ वचनों ते भला सार गीता को ती है रे मत पोति सफल को तुम क्यों नहीं रवाते ॥ पापों के अग्यान को वरेचन कर नहारी है ॥ वार वार भली भांति सदा सर्वदा गीता का पाठ कीजै ॥ अथवा श्रवण कीजै ॥ और सास्त्र का विस्तार श्री कृष्ण के निमित्त कीजै कमल नाभ जो है श्री कृष्ण श्री कृष्ण निधान श्री नारायण जी तिनको मुष कमल ते निकसी है अरु श्री मुष वाक्य हैं ॥ गंगा गीता गायत्री गुरु गोविंद इहु पांचों राग करै ॥ सो पुनर्जन्म को न पावै जो कोई इस सार गीता का जथा शक्ति अभ्यास करन न जावै अरु

पाठ मत्र करै सो भी विश्नु के विद्यमान जाई प्रापति होई है इसके आगे क्या कहों इति श्री भगवतीत्म सपनिवत्सु व्रह्म विद्या या योग शास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन संवादे सार गीता संपुर्णम समाप्तम शुभम् लिषतं देवी राम शर्मा माघ शुक्ल पंचमी संवत् १८२७ वि० ॥

Subject:—अर्जुन का श्री कृष्ण भगवान से ओंकार का महात्म्य, रूप और स्थान पूछना और श्री कृष्ण भगवान का तीनो प्रश्नों के उत्तर अर्जुन को समझाना ॥

No. 561 Sārgaṅgadhara Saṃhitā. Leaves—137. Deposited with Rāmagopāla Murāī, Vaidya, of Alikātāla, Post Office Pariyāvā̃, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—

होय कोल को करष जु अक्ष । जानि पान मानिक पर तक्ष ॥
किंचित यानक कुर तर लेषे । सिंदुक षोड़श कापिच देषे ॥
कवल ग्रह मुंदर वर जाना । हंस चरन सो वरन वषाना ॥
और विराल्प इहि को मानै । इतने नाम कर्ष को जानै ॥ १० ॥
दोय कर्ष को पैसा लेष । नाऊ सुक्त अष्टका येक ॥
दाय सुक्त को टका सो जानो । वेल षोड़सो मूढ़ वषानो ॥ ११ ॥
पट फ्लुंज चातुर्थ क ले उ । अष्ट टका को नाउ कहेऊ ॥
टका होय को प्रसरित नाउ । दूजो प्रसरित जानो लाउ ॥ १२ ॥
चार टका को नाम कहि आन । जलव कुंडव सुताको जान ।
अष्ट मान तासो कहत अर्ध सराव कमान ॥ १३ ॥
कहत सुरावक यह मानिका अहप कहिये येष ।
आह टका को नाउ कहि बुध जन जानि विशेष ॥ १४ ॥

End:—

पृष्ठ २७३ व २७४

अच्छी पय त्रिफला रस ल्याय । सुरमा को तातो करवाय ॥
सात-सात वेरहि बुझाय, आजे नेत्र रोग सब जाय ॥
नेत्रन दोष मिटो जब होय, तव जल में भिजवै पुनिसोय ॥
फेरि नेत्रन को डारे धोय । यह जो दोष कछू पुनि होय ॥
धोकै प्राव चाकर चार । बेहर लगै न होय विकार ॥

=०=

त्रफला मधु घृत घमरानोर । सोठ मूत्र गोधी रहि छीर ॥
सलाका रागा को तपवाय । इन सब में लीजै तपवाय ॥

यहै सलाका आंजै जाय। नेत्र रोग सब नीको होय ॥

× × × × ×

× × × × ×

Subject:—(१) पृ० १ से ४ तक—लुप्त।

(२) पृ० ५ से १७ तक—अध्याय ३। कुछ पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या तथा रोगी परीक्षा अथवा रोग परीक्षा। नाड़ी परीक्षा।

(३) पृ० १७ से पृ० २० तक—अध्याय चौथा, दीपन-पाचन।

(४) पृ० २१ से २९ तक—पांचवां अध्याय। शरीर भेद, सप्त धातु, सप्त त्वचा, कलादस कथन।

(५) पृ० ३० से पृ० ३४ तक—छठवां अध्याय। आहार पाक कथन।

(६) पृ० ३५ से पृ० ४४ तक—सातवां अध्याय। पित्त से चौबीस रोग। दांतों की जड़ के तेरह रोगों का वर्णन। कर्णमूल के पांच रोग। चौरानवे नेत्र रोग। संध्य के नौ रोग, सुयेज-पुत्तरी के तेरह रोग, कलि तिल के पचास रोग। नाससात रोग। आठ दुष्ट रोग। स्त्री नाम रोग। योनि रोग बीस, गर्भ के आठ रोग, वालक के बारह रोग। (रोग विष उपविषं वर्णन)

प्रथम खंड

(७) पृ० ४४ से पृ० ५० तक—पुट पाक कल्प अध्याय, ९। सुरस पुटपाक तुंडल जल। तोतुर पाक। दाड़िम पुटपाक, रूसा पुट पाक।

(८) पृ० ५० से पृ० ७२ तक—वात ज्वर पर गुडच्यादि, नवांद्र, कासम जाता, कट फलादि, पर्पटादि, बीज पुरादि, मुनि आदि, लघु लक्ष्यादि, अरवध, गुरचादि, दसमल सन्निपात आंभयाद सन्निपात अष्टादश मूल कथन, कटु फलादि, गदाध का जीर्ण ज्वर, बृहतो, क्षुद्रादि शीत ज्वर, सुस्तादि शीतज्वर गुवादि तृतीय ज्वर, चतु भद्रिका, त्रिफलादि, रक्तापंचक, महारक्तादि क्वाथ, हरीत क्वाथ, वीरतरुपाद, पलादि, दारावद्रा, नीत्रा दाघ, ब्रह्म दाघ पंचक, वरु नाह, अमर गुजार, तेल लघु मजिष्टादि, पथ विषंड, वासादि, पटोलाद, प्रमथ्या, जूष, पान कल्पना, जलपान विधि, क्षीरपान, खिचड़ी, अन्नज वागु, विलेपी, अलगुन माड—

(९) पृ० ७२ से पृ० ७३ तक—दसवां अध्याय ॥

फाट कल्पना, मधुप फाट, असतार, लघु मधुक पाठ, मथफाटक, खर्जुराद माघ, मसुराद माघ, (जब सत्य मथ)

(१०) पृ० ७४ से पृ० ७६ तक—ग्यारहवां आध्याय ॥

हिम कल्पना, अमृतादि हिम, नीलान्य लाद हिम, धनादि हिम,

(११) पृ० ७६ से पृ० ८० तक—बारहवां अध्याय।

पिपली वर्धमान, रसोनकल्क।

(१२) पृ० ८० से पृ० १०१ तक—तेरहवाँ अध्याय ।

चूरन कल्क, मधु पिघली, ऊषकादि चूर्ण, त्रिपुषन चूर्ण, षटुक चूर्ण, त्रिसुगंध चतुर्जात चूरन, जीवनी, पंचलवन, लघु सुदर्शन चूर्ण, सुंठ्यादि चूर्ण, हरत क्याद चूर्ण, गंगाधर चूर्ण, कवित्तारका चूर्ण, वृहच्छाडि माष्टक, लवणाध चूर्ण, महा-धने चूर्ण, नारायण चूर्ण, पंचसम चूर्ण, लघुनारायण लवणमशादि चूर्ण, पाठादि चूर्ण, अजमोदादि चूर्ण, हिंगादि चूर्ण, जवान षांड़ चूर्ण, ताली साद चूर्ण, शीत बलादि चूर्ण, लवण भास्कर, पंचागरिष्ठ, अश्वगंधादि, करभद्द, वर्धमान पोपर,

(१३) पृ० १०२ से पृ० १४० तक—पाग कल्पन, चौदहवाँ अध्याय । गुटिका, बहुसंजोग गुन, गुनाद गुटिका, संजीवन, वेषध, जथारक, सूरन पिंड़ो । मंडर वटिका, बंदोक गुटिका जोगराज गुग्गुल, कैसोगद गुग्गुल, त्रिफला गुगर, गोछुरादि गुगर, त्रिफलादि मोदक, कचनार गुग्गुल (पकाधिकार)—जुलाब पाक, सेवती पाक, गोषरू पाक, करेछ पाक, शुंठो पाग, जायफर पाग, गुगर पाक, कसरुवा पाक, जीरा पाग, अभिमादि पाक, कामदेव गुटिका, चोब चोनो पाग, पोपर पाग, सुपारी पाक, अद्रक पाक, अमृत पाक, दाड़िमा पाक, हरदो पाक, नारियल पाक, कुचला पाक, भिलवा पाक, हरंदो पाक गोषरू पाक, कुमड़ा पाग, करेछ पाक, पिघलो पाक ।

(१४) पृ० १४१ से १४६ तक—पन्द्रहवाँ अध्याय, अवलेह कल्पना, कंटका अवलेह, च्यवन प्राश अवलेह, कूष्मांड अवलेह, अरत हरितकादि अवलेह, कट जाता अवलेह ।

(१५) पृ० १४७ से पृ० १५८ तक—सोलहवाँ अध्याय, घिउ कल्पना, क्षोर षटपलघृत, चगेरो घृत, मसुरादि घृत, कामदेव घृत, पान कल्पना, अमृतादि घृत, महा सकघृत, कासो साह तैल, जातो फल घृत, प्रदघृत, त्रिफलादि घृत, मयूरघृत, त्रिफलादि घृत, पंचन घृत ।

(१६) पृ० १५६ से पृ० १६६ तक सत्रहवाँ अध्याय । तैल कल्पना—लक्षादि तैल, नारायण तैल, बाला तेल, प्रसारिणी तैल, माषादि तैल, सतावर तैल, कोसोसादि तैल, विडावल तैल (अर्क) । मिरचादि तैल, नोम बोज तैल, मधु जाष्टां तैल । कुरजाद तैल, दारुनोल तैल, भ्रंगराज तैल, हरमेदादि तैल, करनमूल हिंगतैल, ाित्वादि तैल, क्षार तैल, विहादि तैल, ब्राह्मी तैल, कुष्टादि तैल, वज तेल, करवोरादि तैल,

(१७) पृ० १६७ से पृ० १७५ तक—अठारहवाँ अध्याय, संधान आसव अरिष्ट कल्पन—संधाव, कल्प, वाती, आसव, उसीर आसव, पोपरा सव, लोह आसव कुरजारिष्ट, विढंग अरिष्ट, देवदास अरिष्ट, षदिसादिरिष्ट, अमृतारिष्ट बबूरारिष्ट, हारिष्ट, ऐहितकारिष्ट, । दशमूलारिष्ट,

(१८) पृ० १७६ से पृ० १८६ तक—उन्नीसवां अध्याय, धातु सोधन क्षर कल्पना, धात सोधन मारन बिधि, सोना मारन विधि, रूपामारन विधि, ताम्र मारन विधि, जस्ता मारन, सीसा मारन, राग मारन, लोह मारन, उप धातु, (सोनाभाषी रूपा माखी, अभ्रक सुरमादि) मारन विधि। सुरमा, मनसिल हरताल, पारासोधन विधि, धात निरजीव करण, हीरामास वेत ऋतु मारन, मणि मारन, सर्व रत्न मारन, शिलाजित सोधन, मंडूर करण,

(१९) पृ० १८७ से पृ० २१५ तक—बीसवां अध्याय। पारा मारण, ज्वरां कुश रस, शीत ज्वरारि रस, जुरंघी गुटिका, लोक नाथ रस, मृगांग पोटली रस, हेम पोटली रस, महा ज्वराकुंश रस, सोचकारनो रस, पंच वक्रो रस, उन्मंता रस, इच्छाभेदी रस, अग्रका रस, सुज वत्ती रस, हंस पोटली रस, त्रिवक्र रस, महातालेश्वर रस, कुष्ट कुठोरा नाम रस, उदयादित्योरसः। वन्हिरस, विद्याधर रस, शूल गज केसरी, अग्नि हंडी रस, अजीर्ण कंटकारी रस, मंथान भैरवरस, वातनाम्न रस, कनक सुंदरी रस, सन्निपात भैरव रस, ग्रहनी कपाट रस, वज्र ग्रहनी कपाट रस, मदन (कामदेव) रस, कंदर्थ सुन्दरी रस, लोक रसायन।

मध्यम खन्ड समाप्त

(२०) पृ० २१५ से पृ० २१९ तक—इक्कीसवां अध्याय, स्नेह कल्पना,

(२१) „ २२० „ „ २२४ „—बाइसवां अध्याय स्वेद विधि कल्कनाम अध्यायः—स्वेद विधि, दुवस्वेद।

(२२) „ २२४ „ „ २२८ „—तेइसवां अध्याय—वमन विधि

(२३) „ २२८ „ „ २३३ „—चैाबिसवां अध्याय—विरेचन विधि।

(२४) „ २३३ „ „ २३९ „—पचीसवां अध्याय—नास बिधि।

(२५) „ २४० „ „ २४२ „—छब्बीसवां अध्याय—धूम्रपान विधि।

(२६) „ २४३ „ „ २५६ „—सत्ताइसवां अध्याय—गंडूष करणं। अश्चोतन, पिठी, कल्क, चर्ण, अवलेह।

(२७) „ २४७ „ „ २५६ तक—अट्ठाइसवां अध्याय, लेपन विधि, विष हरण। लेय, हांथी दांत वार के लेय, कर्णव्रण।

(२८) „ २५७ „ „ २६१ „—उन्तीसवां अध्याय, ठधिर मोक्षन।

(२९) „ २६२ „ „ २७४ „—तीसवां अध्याय, नेत्र प्रसाद कर्म, तर्पन विधि, पुटपाक, अंजन, वत्तीसेवन, लेपनी वत्ती, रोपनी रस क्रिया, लेहनी रस क्रिया, मृदुचूर्ण अंजन, नेत्र काम प्रसाद चूर्ण, मृता प्रसाद चूर्ण,

(३०) „ ३७५ „ „ „—लुप्त

No. 562. Sārasaṅgraha. Leaves-44. Deposited with Rājā Avadheśasimha Raīsa and Tallukedara of Kālākākara, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री गनेस जो सहाइ ॥ श्री सरस्वती सहाय ॥ सीसा लाय तामें गगु । उत्तम हो इनपर ई भांग ॥ यह कैसे के जानै चंतु वेला ॥ थाली जवै संतु ॥ यपश लेले इनो वागु इह जानै तष्टो को भागु चौथे हिसा सोसा परै ॥ तो भोखे को तोरा करै ॥ अब कहिहैं तिन कि मरजादो जरइं हरइं जैसो खादो ॥ कुंदन कैसा अंस वखनि पुनि सीसे गठी जानि ॥ ३० ॥ कहुं तरके चोवन अंस । चारि आगरै चालिस कंस लोह । तान्यु पुचा चालीस । और रंग जान अवतोस तष्टो छयालीस गाने कही चैसाला सर्गोल को मानो । अढतालीस जुष पर सनो ॥ पारो सतरो मेंक जुगार ॥ नोयत तेज मरजाद कही । रस रतनागर तें करी सही ॥ वाषर एक निकुतम हई । एक स्वानि सुनि लाजै सोई ॥ ३३ ॥

End:—सूखो खेर पापरो आनि । चूनो जीरो हरद वखानि ॥ पांचो करष करष पर वानि । कडु वो तेल चारि पल आनि ओषद वांठि मेलि जै माहा । पर रततार उठै जेर जहां ॥ जिते वरन चोतारो तनै । सात घोस में भागे घने ॥

इति मल्हम मंजिष्टादि

पुर वो पुगी फल चारि । थो और आमरे छालि जानियो । और वांटि लै वट के पान । पल पल सोरो शाष सुजान ॥ चूनो सोप वैरया ॥ ....

Subject:—(१) रंगों का वर्णन, बूटियों के नाम, शोधन विधि, पारा शोधन विधि, स्वर्ण मक्षि का शोधन विधि, नेनियां भुमल शोधन विधि, फिटकरी शोधन, सुरमा शोधन, पपरा शोधन, औषधि नाम। अनशोधे धातु से औगुन, धातुओं के गुण गगन तथा इंगुरादि गुण अठारह कष्टों की औषधि, शंख द्राव काढ़न विधि—पृ० १—२९ तक।

(२) महासंख द्राव, तांबे धोवनी, वंग विधि, सारमारन की विधि, शीशा मारण की विधि, हरताल विधि, कांति रस विधि कनक सुंदरी रस, मुनि वल्लभ रस, कुसुम भवगंभ—पृ० २९—४८ तक।

(३) संखिया हरताल विधि, कनक खपरिया विधि, कुटोरस विधि, घिटो विधि गंधक, हेम रस विधि रूप राज विधि, इंगुर मारन विधि. नागेश्वर रस विधि—पृ० ४८—६५ तक।

(४) वागेश्वर रस विधि, महिमंडल रस विधि, क्षीरद वर्द्धमान रस कंचन रस विधि, संपुट, सालरस, रघुपति कल्यान कामेश्वर गुटका, मदन पाग गुटका, कुष्ट केहरी, वसुधा निधि। शुद्ध धनो विधि मंजिष्टादि मरहम आदि वर्णन—पृ० ६६—८७ तक।

No. 563. Śatasamvatsara-Phala. Leaves—30. Dated in Samvat 1769 or A.D. 1712. Date of manuscript—Samvat 1769 or A.D. 1712. Deposited with Umāśaṅkara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—सम्वत् १७६९ विक्रम नाम सम्वत्सरे चन्द्र स्वामी मेह घणा। समैाभलैा घृत तेल सुऊगा। लोक सुषी। समैा भलैा। चैत्र वैशाष मुहंगा जेष्ठ भूमि कंप भजमेरि राजप लक्ष्मी। उपद्रव। तलरी माटी उपरि हो हसी लोक छोजसी म्लेछउजेड देसहो दुराज गरज सी॥ असाढ़ दुकाल श्रावण सुकाल भादव मेघ घणा ऊपर मास सर्वे भला इति ६९ फलं॥ संवत् १७७० वर्षे वृष नाम संवत्सरे मंगल स्वामी दुर्भक्ष होसी। राजपीड़ा। भन भल्प मार वारि दुर-भक्ष। रैारव वरती लोक भसत होसी। पूर्व सुकाल। मध्य देसि मडो वरि में वाडिरैा दुकाल। भाप मै भाप लागसी चैत्र वैसाष मंदु। ज्येष्ठ भसाढ़ श्रावणि फरको भादवे वर्षा मंद। भासोज लोक २ छजसी भुषा धान मणये रोजी २१ लक्ष्मी प्रजा कष्ट। कार्ती मार्गशिर भलैा पोस माह फागुल फरका इति ७० फलं संवत् १७७१ वर्षे चित्र भानु नाम संवत्सरे बुधस्वामी। लोक सुषी मेघ घणा सजल होसी। भनसस्ता। जे भन लेशो तहिनै टोटो। मास ४ उत्तरांति सुकाल। चैत्र वैशाष मंदो।

End:—सम्वत् १८८० वर्षे राक्षस नाम संवत्सरे। चन्द्र स्वामी। सर्व जनसी। भनघणा नदी फूसी मालवै दुकाल। चैत्रादि मास उयोची। भसाढ़ श्रावण फरका। भादवादि मास ४ मध्यम मार्ग शिर रस कस सुऊगा पोस माह महाजन पीड़ा। फागुण छुटसी राजविरोध घणा। मारू देस मजसी। चित्र कोट राजपट्ट सी रुंडमुंड मेदिनी मुनुष्या मनुष्य लागसी। चैत्र वैशाष मंदा ज्येष्ठ विग्रह। असाढ़ मेघ भल्प। श्रावणी सुरकि। भादवारै पाछिलै पाषि किंचित् वर्षा सर्वत्र होसी। मार्ग सिर पोस मंद। माह॥ फागुण महगाई। इति १०० फलं॥ श्रीः॥

इति सो संवछरी फलं सम्पूर्ण समाप्तं श्री रस्तु॥ शुभं भवतु॥ श्रीः॥ संवत् १९३९ मिती वैशाष सुदी ३॥

No. 564. Śāvara Mantra Śastra. Leaves—43. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—श्री गणेशायनमः। भादमंत्रः॥ गुरु सत्य बिस्मिल्लाह। काफ ज्यें मो भावनकार भादि गुरु इष्टि करतार वेद न हरता वही एकी भाइ जुग चारि तीनि लोक चारि वेद पंच पांडव छव मारग सात समुद्र भठ वसु नवग्रह दश रावन ग्यारह रुद्र वारह रारि तेरह मोल चैादह भुवन पंद्रह तिथि चारि षाति चारि वर्षन पांचभूत चैारासी भात्मो लष जीव भनोनि

अष्ट कुली नागा तेंतीस कोटि देवता अकासु पतालु भूति मंडल राति दिन पहर घरी दंडु पलु जाम महा रघु साषो धरते हैा जा कछु फलाने के पिंड देवन होइ देवदानव भूत प्रेत राषा सुमुषी सुजानु की तारा वादिता देवा बाडीठो मूठी चषिनो भुषिनो मिलनो विडनो फोरी डिठोरो गाहिनी नाई का पोलाई अधौगो भूल वायु सूलनह सूरन हरवा उहरुवा दद्रू गरहु कर कत्तपित्ती मूत्र कृच्छ्र अठागह प्रमेह गोला फोटी बहरुआ अहो गार्धा सासी कुठी लुसे कुंवीरो मिरिमी त्रमन्न बाड हंरिया चुनवा घुरपेल गंडल कवाड चोट फेट फेदि ताकि ताला पालना पाष पोती लांध्या उलंघ्य वाट धाटक बाहर निसार पेसार सांभू सकार कवनहु प्रकार होहाड़ गुदवार चाम नारि अर्ध अंभ जहां हंसो दोहाई सुलैमान पैगम्बर को तुरंतु तुरंमविलाई यहो थोनि पाहिना लरिस बालाष पैगम्बर को वज्र छाप पवनेघ चैारासो सिद्ध ।

End :—मंत्र सांप को । भूलि मिलि कंत धरो मन्नाद्र वम्है विषभषा महादेव विषि वायर कत्ता विषा समपात रूल पेहि के विष सई चलि धंमं धंमं मुंके तत धावै जो मैं पाई सान सराई देउ वाघ गाठ बैठाइ वारह चन्द्रमा सोरह जीत जागता महादेव के दोहाई गैारा पार्वती लोहा चमारिनि के दोहाई यहं मंत्र पढ़िके जहां काटै तहा गोड़ तरके धूरि मंगे बुराके देव । मंत्र धंधना छुटावै क ॥ क्षुरंत वेवरी पसरंत विषा पसरहु चारिहु दिशा ॥ २ ॥

अग्नि बंधन मंत्रः अथ अग्नि ज्वर लंते पर जरै जरै महेस कथा भा ब्रह्मा विषनु महेस तीनो वले केदार तीनि चलते हो । चलैा आग लोहे परै तुषार मे से हाथ का वार जरै हनुमान जती कसेत वन जरै ॥१॥ कालो नागिनि किल किलंति पाकति अनुपं कंत अहो तेल मंतर से होउ पानी तीनि सरिस वते हराई हनुमंत था मैं स तेल कराही प तेल था मजाग्नि सीता सती को लाष दोहाई मंत्र ठोहुस बनाइ कपार पर छुरै वारन धरै ॥ मंत्र लगावै की युक्ति ॥ पिसान सवा सेर ते कर महादेव बनावै तोह यदि आवहि लिपर जाय ॥ अथ मारणम् ॥ यो छत्ता भेरण भभ में भस्म भादाय पक्ष पतरि पुविष्टा व लक्ष्मसराय छप संपुटे ।

Subject:—प्रथम प्रकाश-आदि मंत्र, आत्मफूक मंत्र, प्रेतादि प्रयोग, धनुष बंधन मंत्र, अग्नि स्तंभन, और तैल स्तंभन आदि मंत्रों का वर्णन ।

द्वितीय प्रकाश—ज्वर झाड़ने का प्रयोग, रतैाधी निवारण प्रयोग, दांत झाड़ने की विधि ।

तृतीया प्रकाश—गोमहिष्यादि दुग्ध वर्धनमंत्र, स्त्री गर्भधारण, गर्भरक्षा बाल रक्षा, और मक्षिका संजीवनी आदि प्रयोगों और मंत्रों का वर्णन है ।

चतुर्थ प्रकाश—विशोपशमन, कुक्कुर काटने पर मंत्र प्रयोग, बिच्छू मंत्र सर्प प्रयोग, शीर्ष, मुख, नेत्र, आदि झाड़ने के मंत्र ।

पंचम प्रकाश—मोहिनो प्रयोग, स्त्री वशीकरण, मारण प्रयोग, कटोरा चलाने के मंत्र।

षष्टम प्रकाश—ज्वर, अजीर्ण, शिर पीड़ा, कर्ण व्यथा, शिषा बंधन, मारण, वंशोत्पत्ति करण आदि मंत्रों का वर्णन।

No. 565. Siddhānta. Leaves—16. Deposited with Paṇḍita Rāmasvarūpa Śarma, Paṇdita-kā-puravā, Maujā Bhadhu, Post Office Pariyāvā̃, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning :—श्रीमते रामानुजाय नमः॥ अथ सिद्धांत लिष्यते॥

ऊँ अब जागे श्री गुरु राम नंद अवधूता।

सेल्ही सिंगी जग जंगोटा पत्र पांवड़ी दंडक छोटा॥

रोली रंडा चवर अडाने। दोनी अलष काम सहदानी॥

कुवजा कड़ा सुमरनो माला। भेष की लाज भगवान रखने वाला॥

साकरी संष गुदरी तू भी बाजे मोचंग मुरली भंगी अचला टोपी मोर कलंगो ये राषे साधू बहु रंगी॥ पांव सांकरी गोरष धंदा। साधू सूरति कर राषे बंधा॥ कडिया का दंड आडबंद अजरा॥ बटुवा सुई सुई का धागा। चोला षलगा सीवन लागा॥ घोला काला डोरा ये साधू का चोला। षट्ट कुदाडो फरसो गुपती। देषो घटघट नही छिपती॥

End :— ॥ चूला चेति मंत्र॥

ऊं सब्द का पात्र जंत्र का चूला। रसोई करै जानकी माई॥

सात समुद्र जल अठारे भाव नास, पत्ती लकड़ी आनो॥

सिध प्रधान ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवता जिनसो हित सनेह॥

रिधीजोरे अंत पुर नाथोउ दूरे गनेस जो उजंत आवे जर मरे सो वैकुंठ प्राप्त होय। मंथ पढ़ै चूला चेतावे। सो संत परमपद पावै॥

॥ इति चूला चेताने का मंत्र॥

ह्रो लक्ष्मी माई सत्त की सवाई। चढ़ै भंडार करै सहाई।

रिद्धि सिद्धि घटैतो राज रामचन्द्र की दुहाई॥

अन्न पूरना महादेव की पूरे गनेस। सिही आदि अंत की वानी॥

आकास देवी पाताल कूवा लक्ष्मी आइ भंडार किया॥

लक्ष्मी गई सुत्य के पास। हम रहे सधू के पास॥

सात समुन्द्र जल ले आवे। अठाराभार बनास पाती लकड़ी आनो॥ ब्रह्मापती अग्नी॥ पत्ती ले चेतानो॥ लक्ष्मो गई ब्रह्मा के पास आठ पहर चैांसठि घीर भंडार किया तीन लोक का उदर भरा। पढ़ि मंत्र भंडार चेताने। सो संत परंपद पावै।

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक—गुरु रामदास की पंच मात्रा।

(२) पृ० ७ से पृ० १५ तक—आभूषण मंत्र, श्री मंत्र, अलकी मंत्र, सनकादिक मंत्र, कूंची मंत्र।

(३) पृ० १६ से २४ तक—निरंजन तारक मंत्र। सिन्दूर चढ़ावन मंत्र। बैराग्य बीज मंत्र। अमर बीज मंत्र। ब्रह्म तारक मंत्र, जटा मंत्र।

(४) पृ० २४ से पृ० ३२ तक—भरथरी मंत्र, कामधेनु मंत्र, चूल्हा चेतने का मंत्र, लक्ष्मी मंत्र। भंडार चेतने का मंत्र।

No. 566. Śikshāśatārdha. Leaves—7. Dated in Samvat 1925 or A.D. 1868. Deposited with Paṇḍita Rājārāma, Village Narahā, District Sītāpur (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ अथ शिक्षा शतार्ध लिष्यते॥ दोहा॥ कहिये बात प्रमान की ज्यों को त्यों दरसाय। अन सोचे भाषै वचन फिरि पाछे पछिताय॥ करत अनीती दुष्ट नर रहत अडर जग माहिं॥ अवस दुर्दसा होति है अरु वाकी गति नाहिं॥ सुधरो कारज आप के करत भंग जो कोई। जितने वो कारज करै वाको एक न होय॥ जो घुट घुट बातें करे वाकी सब सुनि लेई। अशुभ बात को छांड़ि के शुभ मन में धरि देइ। आगौ पीछौ सोचिये वासो चतुर कहाय। बिन सोचे जो कोउ करै निश्चै धोषो खाय॥ निबल सहायक हुजिये जो वह सांचो होय। सबल ओर सब होत है धर्म न देषै कोय॥ प्राण जाय जाते रहै मिथ्या दीजे त्यागि। जो असत्य बोले मनुष्य लागै कुल को दाग॥ विपता काहु पै परै तब कीजै उपकार। कबहुं न कबहुं आपनो कारज देय सभांरि॥ कबहुं न मागै मित्र सो कछु वस्तु यह जान। जो जन मांगत है अवस छीन होत है मान॥ दुर्जन अप सो आप के षोटो जाय सुनाय। शब हंसि के सुनि लीजिये क्रोध शीघ्र मिटि जाय॥ नीच आयके जो संमुष पड़ि जाइ। तौ चुप के ह्वै बैठिये बल तुरंत घटि जाय॥ परनारी को देषिबो चतुरन को नहिं काम। तेज घटत सब अंग को पावत अपजस धाम॥ नीच और ओछेन को कबहुं न कीजै संग। वा संगति से आपनो होत प्रतिष्ठा भंग॥

End:—मीत प्रीत में कहत कछु राषो मन के माहिं। जैसे पानी दूध में मिलि के निकसत नाहिं॥ जो अप को शिक्षा कहै सुनिये कान लगाय। हेत ढूंढ के बात को अपने चित ठहराय॥ जो तुम जानौ मीत सों प्रीति किये दुख होय। तौ कबहूं मति कीजिये वाकी संगत कोय॥ ओछे जन की प्रीति को बरनन करौं बषानि। परत बबूला नीर में ताको प्रीतिहि जानि॥ जो अप सो रिपुता करै ताको मन मति देव। अपनो भेद नहिं दीजियो वाको मन हरि लेव॥

जो आयो या जगत में जीव धारि के देह। पालन सब को ईश वह करिके पित सम नेह ॥ जो आयो या जगत में झूठ न बोले कोय। झूठ पाप को मूल है ताको फल दुष होय ॥ प्रातहि उठि के ईश को धरो चित्त में ध्यान। धन कीरति अरु जस बढ़ै हिय सो उपजै ज्ञान ॥ सकल सृष्टि में आय के करै कोऊ उपकार। वाके मन प्रभु आ वसै होय नाम उद्धार ॥ मिथ्या को सांचो किये मिथ्या तेहि पछि-ताहि। जैसे घाव पुरे हुए तासु षोज ना जाय ॥ जैसो हो वैसो कहो मत कहो कछू बढ़ाय। जाते जन सत पाय ले भ्रम कहि नाहिं भुलाय। प्रभु में चित लगाय के करै पुन्य अरु दाम। यही दान फल दान है जग में हो जस मान ॥ काहू सो लड़िवों नहीं आषिन राषै लाज ॥ बनै आप सो ते कछू करि दीजै पर काज ॥ परसु काज को जो करै यही वाक्य दृढ़ मान। दिन दिन प्रति संपति बढ़ै हो सहाय भगवान। मित्र जानि के मित्र सों कहै मित्र कछु आय भलो बुरो जो हो कछु राषै वाह छिपाय ॥ काहू सो बैर न करो राषो सब सों प्रीति। उत्तम जन जो जगत में उनकी यह है रीति ॥ पंडित पद पाके करै जो अधरम की बात। ताकी उपमा यो लषो दीप आंधरे हाथ ॥ इति शिक्षा सतार्ध समाप्त शुभ मस्तु मिती माघ बदी १३ संवत् १९२५ ॥ श्री शिवायनमः ॥

Subject :—५० शिक्षापद दोहे।

No. 567. Śodhaka-Paṭala. Leaves—36. Deposited with Bābū Tribenīprasāda, Sub-Court Inspector, Devariyā, Gorak-hapura.

Beginning:—अथ सोधक पटलभाषा विधि गुण उपार्जन यत्नः लक्षण जो हाड़ निकलवाना होय अथवा पानी निकलवाना होय अथवा देवता भुत जो चीज जमीन से निकलवाना होय ताकी विधि ॥ मंजू का वाधा केरा के हाठ चौती कोड़ी सादो कौड़ी दश गंडा ॥

॥ विधि ॥ कोल के पांच ईटा पांच पोर के पांच खूंटा खपेरा के पांच पत्ता पीपर के सेमर के वर पीपरि गभारी पाकड़ी पांच खूंटा करके सेन्दुर गुण लोहा हरदी तीन वस्तु जनेऊ खरूआ नरियर कपूर ॥

End :—प्रथम ॥ १ ॥ गर्भ के महीना जानने कीरी प्रश्न लगने से शुक्र जितनी राशि पर है उतना महीना गर्भ के स्थित जानो। और ग्यारहवें दशवें भाव में है तो पंचम भाव से रखना ॥ १ ॥ गर्भ का कुशल जानना। यदि पंचम भाव का स्वामी तथा शुभ ग्रह पंचम भाव को न देखता है अथवा ना युक्त है और पाप ग्रह देखता है वा युक्त है तो गर्भ का पतन कहना अन्यथा नहीं ॥ २ ॥

प्रश्नकर्ता को चाहिये कि प्रथम मकान गिन वावे फिर ४ उसमें जोड़ लेना ताके पंच गुना कर लेना फिर २५ बढ़ाकर लेना ताके ५ का भाग देना ओ लब्धो आवे उसमें एक युक्त करना उतना हो प्रमाण जानना ॥

Subject:—पृ० १ से ६ तक—ज्योतिष ग्रंथ ग्रहण से फलित तथा तंत्र का ज्ञान हाड़ पैार द्रव्य इत्यादि भूगर्भ का हाल जानना। ६—११ तक—जल साधन दूत परीक्षा, मकान परीक्षा, मकान शकुन परीक्षा, भय का ज्ञान, अग्नि भय ज्ञान, भय की शांति के उपाय, यंत्र चालीसा, बहु यंत्र। पृ० ११—१४ तक—द्रव्य निकलवाने की विधि बादशाही अथवा बलिदानी द्रव्य की शांति का उपाय, यंत्र बीसा, यंत्र तीसा, यंत्र चालीसा, यंत्र पचासा, यंत्र ७० । २० । ९० । १०० । ११० यंत्र २२ । ४२ । ३८ । ३६ । ४६ । ३४ । ७२ । ५२ । (इन यंत्रों से अनेक प्रकार के भय की शांति होती है । यंत्र पटलका समूह १३,२०० यंत्र कपूर के राम नाम के अंका प्रश्न करने की विधि वर्णन आठ प्रकार के मंत्रों का समूह । दोष शांति के मंत्र नक्षत्र परीक्षा तिथि परीक्षा दिन परीक्षा, तथा शुभा शुभ फल देखना पाप ग्रह चक्र, पाप ग्रह से फल निकालने की विधि ।

अंक जानने की विधि अनेक प्रकार की बीमारियों की शांति के यत्न, यंत्र चक्र, गर्भ का महीना जानने की विधि—

No. 568. Subhākhita-Dohā. Leaves—28. Dated in Samvat 1917 or A.D. 1860. Deposited with Lālā Prabhūdayāla of Ālamanagara, Post Office Lucknow (Oudh).

Beginning:—अथ सुभाषित दोहा लिष्यते ॥ अलप थकी फल दे घना उत्तम पुरुष सुभाय । दूध भरै तृण को चरै ज्यों गोकुल की गाय ॥ जेता का लेता करै मध्यम नर सनमान । घटै वल नहि रंचहू धरा कोयरै धान ॥ दीजै जेता ना मिलै जघन पुरुष की वान । जैसे फूटे घट धरो मिलै अलप पवथान ॥ भला किये करि है बुरा दुरजन सहज सुभाय । पय पाएं विष देत है फणो महा दुषदाय ॥ सहै निरादर दुर वचन दन्डमार अपमान । चोर चुगुल पर दार रत लोभ वार अज्ञान ॥ अमर हरि सेवा मानुष की कहावात ॥ जो नर शील संतोष जुत करै न पर को घात ॥ अगनि चोर भूपति विपति हरत रहै धनवान । निरधन नींद न शंकले मानै काकौ हान ॥ एक चरण जो नित पढ़ै तो काढ़ै अज्ञान ॥ पनिहारी को नेज ज्यों सहज कटै पाषान ॥ पतिव्रता सत पुरुष को वड़ो रीति नहि जाय । भूष सहै दारिद सहै करै न हीन उपाय ॥

End:—विद्या दिये कुशिष्य को करै सुगुरु अपकार । लाष कढ़ायो आनजा पेसे के अधिकार ॥ ना जाने कुल शील के ना कोजे विश्वास । तात

मात जाते दुखी ताहि न रखिये पास ॥ गणिका जोगी भूमि पति बानर श्रहि मांजार । इनते राखे मित्रता परै प्राण उर भार ॥ पट पनहो बहु क्षीर जो पोषधि बीज श्रहार । ज्यों लाभै त्यों लोजिये कीजै दुष परिहार ॥ नृपति निपुन क्यों न प्रजा की हान ॥ धन कमाय अन्याय का वृष दश थिरता पाय । रहे कदा षोड्स बरस ता समूल नस जाय ॥ गाड़ी जो तरु उदधि बन कद कूप गिरराज । दुर विष में ना जोवका जो वा करै इलाज ॥ जाते कुल शोभा लहै सा सपूत वर एक । भार वहे के टूं चरे गरधव भए अनेक ॥ दूध रहित घंटा सहित गाय मोल क्या पाय । त्यों मूरष आठो पाकर नाहि सुघर हो जाय ॥ कोकिल प्यारो वैन ते पति अनुगामी नार । नर वर विद्या जुत सुघर तप वर छमा विचार ॥ दूर बसत नर दूत गुण भूपति देत मिलाय । ढाक दूप राजि केतकी वास प्रगट हुइ जाय ॥ इति श्री सुभाषित दोहों का संग्रह संपूर्ण ॥ लिषा वैद्यनाथ त्रिपाठी संवत १९०५ वि० फालगुण फुन्हाई दुइज ॥

राम राम राम राम राम राम राम ॥

Subject :—शिक्षाप्रद दोहे ॥

No. 569. Sukabahatrī. Leaves—87. Dated in Samvat 1931. Deposited with Paṇḍit Rāmanārāyaṇadattaji Śastrī, Village Jñanapuratera, Post Office Lakhīmapura, District Kherī (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शुक बहत्तरी (शुक प्रभावती संवाद) लिष्यते ॥ प्रणम्य शारदां देवीं दिव्य ज्ञान समन्वितां ॥ मन चित विनो-दार्थे क्रियते शुक बहत्तरोम ॥ १ ॥ एक पृथ्वी के विषे चन्द्र कला नाम नगर है । वहां राजा विक्रमसेन राज करता था तहां हरदत्त नाम सेठो वसता ताको सुर सुंदरी स्त्री ताको पुत्र मदन ताको रतनसेन की बेटी प्रभावती से व्याह किया सो रूप लावण्य युक्ता से व्याह किया मदनसेन आसक्त हुआ दमभर जुदा न होता पिता मन में चिंता करता पुत्र व्यापार नहीं करता स्त्री से आसक्त रहता है इससे क्षय रोग होगा यह समझकर चिंता करने लग्यो इस हेतु में जो बात प्रगट भई सो कहते हैं ॥ चित्त दे सुनो एक विदेशी ब्राह्मण विक्रम नाम का था सो वह गंधर्व पर्वत को गयो उस पर्वत पर एक सिद्ध महातपस्वी तप करते देखा जाके दंडवत कियो तब सिद्धि ने बहुत आगत स्वागत किया तब ब्राह्मण ने कहा एक वस्तु जो अपूर्व हो सो दीजिये किस वास्ते कि जो पृथ्वी अटन रहते है । कथा वार्ता बिन चित लगता नहीं और जो देखे रिषीश्वर के पास से भी नहीं पाऊं

तो कहां से पाऊंगा जो रिषि की सेवा करै तैा विहतर है सो निरफल नहीं। ॥ श्लोक ॥ अमोघा वासरे विद्युत् अमोघं निशि गर्जितं अमोघा च सतां वाणी अमोघं सिद्ध दर्शनम्। आगे श्रौर ऐसा ब्राह्मण ने कहा तव सिद्धि ने ध्यान किया उस समय एक सुवा एक सारो सिद्धि के दृष्टि आई उन दोनों को जन्मान्तर की वातें जानवे में आई कि ये दोनों गंधर्व हैं कोई रिषोश्वर के साप से सुवा योनि पाई है श्रौर रिषोश्वर अनुग्रह किया जो पृथ्वी के विषै मनुष्य भाषा किया प्रभावती आगे रात्रि को उपदेश करै प्राव वह सुवा गंध मादन पर्वत पर जायगा तव शरीर को छोड़ेगा फिर गंधर्व हो जावेगा अब शुक अपना शरीर वेचै मुहर ५०० को तैा या ब्राह्मण को दिवावे तैा पाप ते छूटै ऐसे सुवा सुवतीं को देवरिषि ने कहा कि अरे शुक तू इस ब्राह्मण के संग जा श्रौर मुहरों का दान कर तेरा भला होगा इतना शुक सुन हाथ पर जा बैठा तव रिषि ने उस ब्राह्मण से कहा अय ब्राह्मण तू इसे ले जा जो कोई तुझे ५०० मुहर दे उसे दीजो मेरी आज्ञा से तेरा भला होगा ऐसा कहा तो ब्राह्मण उस सुवा को ले आज्ञा मांग चला ॥

End :—प्रभावती अपने पति सो बोली कि हे स्वामी तुम्हारे गये पीछे एक घड़ी मोको विरह उपज्यो तव एक दूती आई श्रौर मोको प्रवोधो तव मेरे भी मन में यह आई कि श्रौर पुरुष से भोग कीजे यह विचार कर सिंगार कर मैं चलीता समय सारी ने रोका बुरा लगा सो मैंने मार दई ता पीछे सुक सों पूछी शुक ने ७२ दिन कथा कह दिन विताये श्रौर धर्म राख लिया मैं शुक के प्रताप सों रही ये कही तव मदन सेन सुक से कही कि सुक तुम सों चतुर कोई नहीं श्रौर तुम्हारे ही प्रताप सों मोको पती प्राप्त भई इस तरह कह तव वे शुक वोला मदन सेन तुम अपने पिता पास जाकर मोको आज्ञा मांगो सो मै घर जाऊं क्योंकि मैं गंधर्व हूं रिषोश्वर के श्राप से शुक भया हूं तव मदनसेन पिंजरा ले सेठ के पास गया श्रौर पिंजरा दे के सव हाल कहा तव सेठ ने सुक से कहा कि उदास क्यों हो शुक ने कहा कि तुम्हारे पास रह कर कोई उदास न होगा अव मुझे आज्ञा दो आज्ञा पा विदा भया पर्वत को गया देह छोड़ गंधर्व भया श्रौर स्त्री पुरुष दोनों स्वर्ग में भोग करने लगे यहां मदनसेन श्रौर प्रभावती भोग करने लगे। इति श्री शुक वहत्तरी अर्थात शुक प्रभावती संवाद संपूर्ण समाप्तः लिषतं ख्यालीराम गिरि संवत् १९३१ भाद्र मासे कृष्ण पक्षे दशम्याम (श्री राम राम राम)

Subject :—(शुक श्रौर प्रभावती संवाद) चन्द्रकला नगरी का राजा विक्रमसेन था। वहां हरदत्त नाम का एक सेठ रहता था। जिसके कि सुरसुन्दरी नाम की स्त्री श्रौर मदनसेन एक पुत्र था। मदनसेन को रतनसेन की बेटी प्रभावती व्याही थी। जब कि मदनसेन देशाटन के लिये गया था प्रभावती पर

पुरुष से सम्भोग करने के लिये रवाना हुई परन्तु सारो ने उसे मना किया। उसको प्रभावती ने मार दिया फिर शुक से आज्ञा मांगी शुक नहीं न कर अपनी बुद्धिमानी से उसे प्रति दिन एक एक किस्सा सुना कर सान्त्वना देता रहा इस प्रकार ७२ दिन व्यतीत हो गए। ७२ वें दिन प्रभावती का पति आ गया। प्रभावती ने शुक की बड़ाई करते हुए सब वृतांत सुनाया। मदनसेन भी बहुत प्रसन्न हुआ। शुक ने मदनसेन से कहा कि आप मुझे अपने पिता से आज्ञा दिला दीजिये तो मैं अपने लोक चला जाऊं। मैं गन्धर्व हूं ऋषीश्वर के श्राप से शुक हुआ था और अब समय खतम हो गया है। इस पर मदनसेन ने अपने पिता से सब हाल कह सुनाया और पिता ने शुक को छोड़ दिया। शुक पर्वत में जा देह छोड़ गंधर्व हुआ और स्वर्गलोक में अपनी स्त्री के साथ भोग विलास करने लगा। यहां प्रभावती और मदनसेन भी अपने दिन आनन्द से काटने लगे।

इसमें ७२ कथाएं अलग २ दी हुई हैं।

No. 570. Svargārohiṇī. Leaves—26. Deposited with Munshī Śivadhārī Lāla, Maujā Mamarejapura, Post Office Benīganja, District Hardoi.

Beginning:—श्री गणेशायनमः। श्री गुरु चरण कमलेभ्योनमः अथ स्वर्गारोहिणि लिख्यते। चौ० ॥ पारवती सुत सुमिरै ताही। ग्यान बुद्धिवर दीजै मोही। सुमिरि सारदहि सुमति विचारो। करतु कृपा जन तुव बलिहारो। निशदिन मैं तुव चरण मनावै। आज्ञा कर पन्डव गुण गावै। अठारह पर्व भारत के भयऊ। तापर अंत कथा यह ठयऊ। इसकर नाम सुनहु चित लाई। स्वर्गारोहिणि अति प्रिय भाई। सुनिये अमृत कथा प्रिय बानी। जिसमें मुक्ति मुक्ति की खानी। गुरु गोविंद के लागौ पाया। चितै सुदृष्टि करतु कछु दाया। द्वापर अंत आइ नियराना। तब अस पांडव कीन्ह पयाना। सोइ कथा मैं वरनि सुनावै। अब तो कछु गोमिंद जस गावै। राम नाम कलि नर्क नसावन सब के ऊपर है जग तारन। संख चक्र धर सारंगपानी। सुमिरा देव रमापति जानि।

End:—जब लगि राज्य जोग्य होइ जनमें दो पुत्र तुम्हार।
तब लगि राज लेहु तुम मानहु कहा हमार ॥ १७ चौपाई ॥
सुनि के परीछित रोवन लागे। दरे जन्म मम करम अभागे ॥
मैं नहिं जानौ राज को भेवा। बिन मह्लाहु अधबिच सेवा ॥
सुनु राजा मैं कछु नहिं आनौ ॥ कह लगि अपनौ कर्म बखानौ ॥
तुम मोरे तात निरंजन देवा। ना जानौ जग आर को भेवा ॥
कह मोहिं छांड़ि के चले भुवारा। कहा पाप तुम करो चंडारा ॥

दो०—कहै परोछित तात यह सुनु सात दोप के राज। राज पाट धन धरतो मोरे कौने काज। १८॥ चो०—राजा कहै भीम सुनु भाई तुम लै पाट देउ बैठाई। भीम कुंवार को पाट प्रधाना लै कान्या सिंगासन आना।

Subje t:—१—अयोध्या मथुरा काशी आदि की महिमा—गंगा महात्म्य। वैशंपायन का जनमेजय के यहां आगमन।

२—वैशम्पायन का पांडवों की कथा जनमेजय को सुनाना—महाभारत का युद्ध, युधिष्ठिर का राज सिंहासन पर बैठना।

३—युधिष्ठिर का भाइयों के मारे जाने पर पश्चात्ताप। कृष्ण के पास पांचों भाइयों का आगमन।

४—कृष्ण का पाण्डवों को उपदेश—कलि कथा।

५—केदार यात्रा के लिये कृष्ण का पांडवों को उपदेश, परीक्षित को राज्य कार्य सोंपकर पांचों भाइयों की यात्रा।

No. 571. Svarodaya. Leaves—6. Dated in Samvat 1917 or A. D. 1860. Deposited with Thākura Brajabhūshaṇa Siṁha of Jhukavārā, Post Office Pariyavā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री रामायनमः॥ नाभी के ठिकाने कंद है तहां ते सकल नाड़ी उपजति है यहो राम के मध्ये २१,६०० तिनको नाड़ी॥ ७२,०००॥ तिन विषे दश उर्ध्व॥ दश अद्ध॥ दो दो तिरीछे है॥ ऐसी नाड़ी चौविस श्रेष्ट है तिनके श्रेष्ट १०॥ ऊर्ध्व॥ अर्द्ध॥ १॥ तिन विषे तिनकी ब्रह्म मार्ग की ववरि है। एक इडा नाड़ी वाम, नाड़ी चंद्र की है। दूसर पिंगला नाड़ी सूर्य की है तीसर सरस्वती सुषमना हय॥ मध्य नाड़ी अग्नि की है॥ क्षण वाम क्षण दक्षिण है॥

End:—पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश॥ १५०॥ १२०॥ ९०॥ ६०॥ ३०॥ यह श्वास की मर्य्यादा है॥ एक स्वर की नाड़ी पंच घरी प्रमाण है॥ एक नाड़ी पंच तत्त्व वरत हैं॥ इति स्वरोदयमतम्॥ लिष्यतं लाला सीताराम माघ सुदी १॥ संवत् १९१७॥ श्री चित्रकूट सीतापुर ग्रामे॥ ....

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० २ तक—नाड़ी का वर्णन। चन्द्र कर्म, सूर्य कर्म, पक्ष विचार, वार विचार, संक्रान्ति विचार।

(२) पृ० ३ से पृ० ५ तक—पुनः वार विचार, स्वविचार, युद्ध विचार, पंच तत्त्व भेद।

(३) पृ० ५ से पृ० ६ तक—मैथुन विचार, तत्त्व विचार, प्रश्न विचार।

(४) पृ० ६ से पृ० ९ तक—पुन: तत्त्व विचार, धातु विचार, रोग संबंधी प्रश्नों का विचार। काल-ज्ञान विचार।

(५) पृ० ९ से ११ तक—नाड़ी-प्रवाहनादि किया का वर्णन। अष्ट दल प्रमाण। तत्त्व भेद।

No. 572. Tikārīrajya-kā-Itihāsa. Leaves—39. Deposited with Mannūlāla Pustakālaya, Gaya.

Beginning:—श्री मतेरामानुजायनम् ॥

॥ दोहा ॥

सुमिर सरीर कुमार पद। श्री गुरु पद युग कंज।
परम भागवत नृपति की। कहौं चरित अति मंजु ॥ १ ॥
मिथिला अवधि अवासते। प्रकटे निर्मल इन्दु।
कीकट अमल अवास में। वस्यो अमिय रस स्यंद ॥ २ ॥
सिव हर रजधानी वड़ी। तिरहुत देस पुनीत।
मातृ पक्ष में प्रगट भये। जनु ध्रुव जई सुनीत ॥ ३ ॥
माता मुद हरषित भये। राधा मोहन साहि।
जैथर वंशी धन्य मैं। ध्रुव सम नाती जाहि ॥ ४ ॥
दिये दान द्विज पोलि कै। रतन खजाने खोलि।
किये निछावर गुनिन को। भूषन वसन अमोल ॥ ५ ॥

End:—परम पुनीत कार्तिक मास जिस्मे श्री वैकुंठ का खुला दरवाजा रहता है श्री सीताराम जी के ध्यान मेरे मन को मग्न करके अपनी माता श्री मन्महारानी इन्द्रजीत कुंवरि साहिब से कहा माता जू मैं श्री सीताराम जी के नित्य पारषद हूं प्रभु आज्ञा ते श्री महाराज हित नारायण सिंह जी वहादुर का परलोक बनाने के लिये पृथ्वी तल में अवतार धारण किया था सिवाय उनके परलोक बनाने के हम अपने माता पिता के और हजूर के घर लोक नहीं बना सके अब मैं श्री सीताराम जी के धाम में जाता हूं।

\+ × ×

Subject:—पृ० १ से पृ० १० तक—मंगलाचरण, राजकुमार रामकृष्ण का जन्म, उनकी जन्मकुंडली तथा नामकरणादि संस्कारों का वर्णन, श्रीकान्तजी से विद्या पढ़ना और गुरु मंत्र लेना तथा तत्त्वज्ञान का श्रीगणेश।

(२) पृ० १० से पृ० २३ तक—कुमार का सीता कुंड को गमन, श्री राघवदासजी परमहंस से भेंट तथा प्रश्नोत्तर। कुमार का युक्तिपूर्वक प्रश्नोत्तर में अपनी योग्यता प्रकाशित करना, गुरु का संक्षेप में ज्ञान प्रदान कर घर को लौटा देना।

(३) पृ० २४ से पृ० ३६ तक—कुमार का टिकारी आना और महारानी की ओर से दीवानी करना, राजा हित नारायणसिंह का उन्हें दत्तक पुत्र मान लेना

ग्रैार युवराज को प्रार्थना पर उन्हें धर्मोपदेश देना; माली के सदृश राजा के सात धर्म; मन्त्री ग्रैार राजा के पारस्परिक व्यवहार तथा उक्त पदाधिकारियों के लक्षण।

(४) पृ० ३७ से पृ० ७८ तक—राजनीति सम्बन्धी प्रश्नोत्तर, राजा का मंत्रियों की बुद्धि की परीक्षा लेना, अठारह प्रकार के व्यवहार का वर्णन। पंच वर्ग का चिन्तन, सरकारी खिलग्रत प्राप्त होना, महाराज का प्रजा ग्रैार ग्रपने छोटे दामाद को उपदेश देना।

No. 573(*a*). Vaidyaka. Leaves—120. Deposited with Paṇḍita Dīnanātha Miśra of Fatehpura Chaurāsī, Post Office Saphīpura, District Unnāva (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ अथ सप्त धातु सोधव मारणं माह॥ प्रथम धातु नां संख्या माह॥ स्वर्ण शैष्मंच ताम्रंच रंगं यशद मेव च शीसं लोहं च सप्त धते तवः कथिता बुधैः॥ सोना, रूपा, तांवा, रांगा, जस्ता, सीसा, लोहा॥ अथ शोधनं च। एक तोला सोने का केटक वेधी पत्र ग्राठ करै येही भांति रुपे का ग्रैार सवकूं गरम करै पहिले तिल के तेल मा बुझावै वार ३ पुन। गाई के माठा मा बुझावे वार तीन। कुरथी के काढ़ा मा बुझावे वार तीन पुनः गोमूत्र मा बुझावे वार तीन तब सातै धातु सुद्ध होय॥ अथ मारण माहा। पारा टंक १ गंधक शुद्ध टंक २ इन दोनों की कजरी करै पीछे गदी के रस ते घंटै घरी व तब सोधा सेना का चूर्ण टंक तीन सूं कजरी मा मिलावे निबुग्रा के रस मा मिलाइ कै एक घरी घोटै जब गाढ़ा हो जाइ तव एक टिकरी वनाइ कै घामैं मा सुषाय डारै तव सराब संपुट मैं राषि के सेधैा सो मूंदि कै कपरैाटी करै गज पुट ग्रांच तरे देह तैा भस्म होइ॥

End:—ग्रथ वाजी करण। कामेश्वर चूर्ण॥ गोषरू, कंवाच २। ककही के वीज १। शतारी १। विदारी कंद का चर्ण २। खीरा के वीज २ ग्रसगंध २ रूसे के जरि का वकला १२ मूसरी गुरिच कै मैदा रक्त चंदन तज पत्रज इलाइची पीपरि ग्रांवरा लवंग नाग केसरि यह सब ग्रधेला भरि सब का चूर्ण करै। वरि ग्रारा के जड़ के काढ़ा की सात भावना देइ। सेमर के काढ़ा की सात भावना देइ फेरि कुस कास सिरसा के जरि के काढ़ा कर सात भावना देइकै झुरै डारै फेरि समान चीनी डारि कै ग्रधेला भरि रोज खाय ऊपर से गाय का दूध एक पाव पीवै तैा राति की वड़ी शक्ति होय। मूत्रकृच्छ मूत्रा घात प्रमेह जाय। हय तुल्य परा क्रम होय॥ गत वीर्य की ग्रैाषधि॥ चिकनी सुपारी दक्षिणी दस टका भरि गाय का दूध ८० टका भरि गोघृत ४ टका भरि खांड

५० टका भरि गुजराती इलायची गुलसकरी की जरि का वकला वरी धारा के जड़ को वकलो पीपरी जावत्री सूंठि सुगंध वाला मोथा त्रिफला वंश लोचन शतावरी केवांच के वीच छुहारा तोपुर मगरैला वेर का गूदो जटा मासी सौफ असगंध लवंग ये सव टका टका भरि कपूर रसा, सैदुर वंग नागेश्वर अभ्रक यह सव एक एक पैसा भरि प्रथम सुपारी वारीक कतर कर के मदाग्नि ते पाक करै जव वारीक खोहा होइ घी मह डारै कढ़ारै उतारि के शक्कर मिलावे फेरि काष्टादि मिलावे तव एक घोहा वासन मा मिलावे प्रातःकाल एक पैसा भरि पाय तो वहुत पुष्टि होय वीर पराक्रम होय ॥

Subject:—वैद्यक वर्णन ॥

No. 573(*b*). Vaidyaka. Leaves—30. Deposited with Paṇḍita Śitalāprasāda Dīkshita, Village Sikari, Post Office Tambaura, District Sitāpur (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अरष इनाइ का गुन ॥ अरष इनाइ तोले १ अरष करुणा नारई का मासे ३ । अरष मिर्च का मासे ४ अरष पोपरि का मासे १ इनको मिलाइ पीवे उन्माद नासै ॥ भ्रमा जुर नासे उढेग नासे सुक्र-जुर जाइ । प्रमेह नासे, संनिपात नासै, छाती का सूल नासै विषमज्वर नासे । पेट का सूल नासै । भूष होइ अग्नि पुलै, सोथा नासे, येते रोग नासै । अरष सौफ का गुन ॥ अरष सौफ का तोले १ दाष तोला १ ताके बीज निकारि डारै इनको मिलाइ पीवे तव मल की झरि जाइ । पेट का सूल जाइ अरष सौंफ का तोला १ सहत तोला १ पीवे अतिसार जाइ छर्द नासे भूष लागै अग्नि पुलै संनिपात नासै पसाव पुलै दालि चाउर पथ करै ॥ अरष जीरा का अरष जीरा तोला १ मिर्च मासे ६ । अरष मिर्च का मासे ३ । इनको मिलाय पीवे लय जुर नासै गर्मी नासे परमेह नासै येते रोग नासै पट वयाला मनै ।

End:—अथ तेल महातम । तिल का तेल सेर ४ । आमा हरदी पाव सेर सिंघिया जहर टंक २० सफेदा घुघुची टंक २० लौंग की जर पाव भर गुमा की जर पाव से ठठोना मदार की जर पाव सेर सिंमोटा की जर पाव सेर इरानी की जर आध पाव कलेर की जर आध पाव सुरवारी की जड़ पाव सेर वाइ मुइकी आध पाव अजमाइन आध पाव इन सव को तेल में औटे जव पाकि तव उतारि लेइ जितनो वह तेल होइ उतनो रेड़ी का तेल लेइ तितनो महुआ को तेल लेइ । तीनौ को मिलावे जासु देइ तव लगावे जो कमर वाइ से रहि गई हो सो नीक होइ जाको पीठि कूवर निकरि आया होई सो नीक होई जाको कमर टेढ़ी हो गई हो सो नीक होइ । षाज वाई जाय और पेगन वाई जाय रषिन

वाइ जाइ। नरो टेढो हो गई होइ सो नीक होइ चोरंन वाइ जाइ गठिया वाइ जाइ प्रसूत जाइ सेधि सेधि की वाई जाइ झोला वाइ जाइ सर्व अंग वाइ जाइ येते रोग जाइ।

Subject :—अतित रोग ग्रैार उनकी ग्रोषधियां, अर्क तथा चटनी के गुण ग्रैार उनके बनाने की विधि।

No. 574. Vaidyaka-Pharāsīsa. Leaves—20. Dated in Samvat 1840 or A. D. 1783. Deposited with Paṇḍita Śivadulāre, Village Varanāpura, Post Office Visvā, District Sītāpur (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वैद्यक फरासोस ग्रंथ लिष्यते ॥ प्रथम नमस्कार के दोहा ॥ प्रथम गवरि गनेस सरस्वति आग्या पाऊं हैां अधोन मति हीन वरनि करि सके कहा लैा तुम गुन अपरंपार ॥ व्याप रहे त्रिभुवन जहां लों फरासीस ने विचार के भेद कहे ताके भेद सुनो। गुरु आग्या विन कछु न होइ चारि रितु प्रगट करि कहे अब सुनो जिमि के सब भेद ॥ अथ रितु विचार वरन ॥ शरीर में चार कोठा है। एक कोठा में अग्नि है तहां ते क्षुधा लगत है प्रथम जल को कोठा ताके में रग है सो ऊपर को चलो। दूसरे कोठा में अन्न रहत है। तिसरे में जाय के भस्म होत है। चैाथे में मल वंधत है। दो नोचे को चले एक दाहिनी तरफ़ एक वाईं तरफ नीचे की पवन की तरफ आई। वाईं तरफ के वाईं के रग में चार अंकुर फूटे। एक नोचे को एक वाईं तरफ एक दाहिनी तरफ़ एक ऊपर को चली दाहिनी तरफ की वाईं रग में ते चारि अंकुर फूटे। एक नीचे को गई एक वाईं तरफ गई एक ऊपर को गई। दो रगें तिन में ते दो दो फूटी दो दाहिनी को दो वाईं को ॥

End:—अथ सीत ते गरमी जुर। तरे पेसाव कांसे के सो रंग होय तामें सरवत के सो रंग मिल्यो होय तैा सीति ते गरमी विकार जानिये ॥ ताके लछन॥ पेट में दर्द होय नीचे के आधे अंग पसीना आवे ॥ छाती में दर्द होय सिर दुषे रुचक होय हाथ पांव जरे आंषो सुरुष होय अतीसार होय स्वांस होय कफ डारै पेट में दरद होय छाती भरी रहे। उचक हाड़ फूटन होय ॥ अथ मल ते वाय ॥ पेसाव को तेल कैसो रंग होय तामें भूरो रंग मिलो होय तैा मल ते वाय विकार जानिये ॥ ताके लछन ॥ भ्रम होय सिर दुषे षांसी अफरा होय माथे पसीना आवे उचक होय ॥ अथ सित ते मल जुर जो पेसाव कांसे कैसो रंग होय तामें तेल कैसो रंग मिल्यो होय तैा सीत तै मल विकार जानियो ॥ ताके लछन ॥ मल वंद होय पेट में सूल होय हाथ पांव में जलन होय जुर होय हाड़ फूटन हाथ तैा

मल ते शुक्र जानिये ॥ अथ शुक्र ते मल जुर ॥ जो पेशाब के रूपे के सो रंग होय तैा मेलने केसो रंग मिलो होय तैा शुक्र ते मल विकार जानिये ॥ ताके लक्षन ॥ अब लोहू वैठे उचक होय नल चढ़ि जाय चल हिन होय हाड़ जुर होइ चित्त भ्रम होय ॥ जितना पाया उतना लिषा पुस्तक विच पाया । लेखक रामनाथ शुक्ल संवत् १८४० वि० पुस्तक अति उत्तम वैठक जानिवे के लिये है ॥

Subject :—रोगों के नाम, उत्पन्न होने के चिन्ह श्रोर लक्षण आदि ।

No. 575. Vaidyakasāra-Saṅgraha. Leaves—31. Dated in Samvat 1891 or A.D. 1834. Deposited with Paṇḍita Tārāchanda Munīma, C/o Messrs. Murlīdhara-Mahādevaprasāda, Sirasāgañja, Mainapuri.

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वैद्यक सार संग्रह लिष्यते ॥

दो०—गज मुष मोदक सुभग अति, एक रदन जग वन्द ।
भाल बाल विधु अतुल से, सुमिरैां गिरिजानंद ॥

क्रिया पाठ पागनो ॥ सोंठि टंक १० पीपर टंक १० जीरा टंक २ तज पत्र टंक १५ धना टंक १५ नागर मोथा टंक १५ नागकेसर टंक १० इन्द्र जव टंक १० मोचरस टंक १० लाल मषाना टंक १० सेत मूसरी टंक १० स्याह मूसरी टंक १० दालचिनी मुहरेठी टंक १० लोध टंक १० लाइची वड़ी टंक ५ लोंग टंक ५ कवावचीनी मस्तंगी टंक ५ वंस लोचन टंक ५ सालम मिश्री टंक ५ छुहारे टंक ५ गिरी २० वादाम १० लोध टंक १० लाइची बड़ी टंक ५ लोंग टंक ५ कवाव चीनी मस्तंगी टंक ५ वंसलोचन टंक ५ सालम मिश्री टंक ५ छुहारे टंक ५ गिरी २० वादाम १० दाने पोस्त टंक २० दाख टंक १० चिरैांजी टंक २० अकर करा टंक २ मिरच टंक ५ गोषरू टंक १० सहत टंक २० गिलोय टंक ५ करेष के वीक टंक ५ कैांच के वीच टंक ५ उसीर सत टंक २० सतावर टंक २० सेमर का मूसरा टंक २० मषाने टंक १५ षांड़ ८ सेर घी गाय का सेर १० ता पीछे वाठा के छोलि कतरा कर वीजा निकारि डारे तव पाग उतारि लेइ तव सिराये पाछे श्रोषधि डारे मिलाय के तव कोरी हांड़ी मिलाय दे तव कोरी हांड़ी में कपूर लगाइ तामें राखै तव सकारे सांझ षाइ ज्वर क्षई आम वात जाय महावल करे ॥ इति पाठा पाग ॥

End:—श्रोषधि स्वेत दाग ॥ कुटकी पल १ वड़ी पल हड १ तालीस पल १ वावची पल १ वांटि बासी जल में गोली करे वासी पानी में लगावे स्वेतदाग जाइ ॥

षाने को ॥ कुटकी पल ४ हरैपल २ वहेरापल २ जायफर २५ हरज वा पल १ वासो पानी सों पीस गोलो वांधै चना प्रमान नित्य षाइ ॥ वासे पानी में चना का रोटो पथ्य अलोनी दाग जाइ ॥ लेप पुननेवा की जड़ १ अफोम १ सोंठि १ देवदारु १ वाट गोली मूल सों लेप करै ॥ ऊपर तमाषू के पात वांधे ॥ इति ॥ वैद्यक सार संग्रह ग्रंथ समाप्तं ॥ मिः पौष शुक्ल पक्ष तिथि सप्तमयां भौम वासरे संवत् १८९१ समाप्तं ॥

Subject :—पृ० १ से पृ० १० तक—मंगलाचरण, काढ़ा पित्तज्वर, गर्मी का इलाज,फूली तथा धुंध का अंजन। धातु क्षीण की दवा, क्रिया सार की दवा खांसी की सदर कफ की। कसीसादि घृत, मूत्र स्तंभ, घाव का मरहम। श्त कुष्ट की औषधि, नेत्र संबंधी रोगों की औषधियां, पुष्टि कर्त्ता गुटका, लवंगादि चूर्ण, सग्री चिकित्सा। रक्तातीसर औषधि, अग्नि मुष चूर्ण।

(२) पृ० १० से पृ० ३६—नेत्रों का लेप, सतावार तैल, नारायण तैल, गर्मी को पुष्टि कर्त्ता औषधि। दन्त रसना तथा नेत्र संबधी चिकित्सा। ज्वर। प्रसुत कार्य उपचार। कुक्कु रस तथा क्रियाएं व गुटका। ज्वर लक्षण। काल ज्ञान परीक्षाएं (३) पृ० ३७ से पृ० ६२ तक—तांवेश्वर, गर्भास्थिति। कूष्मांड पाक, मूसलापार गुण। वज्रक्षार विधि, कूकर काटने की दवा, भगंदर की दवा, प्रदर तथा स्तंभन उपचार, वद की औषधि, जवाषार विधि, धातु पुष्ट की औषधि, कूष्मांड घृत, कचनार गुग्गलं, पथ्यादि गुग्गल, शुंठि पाक, नारि के लिये पाक, सौभाग्य सुंठि, धान्य काष्ट, सन्निपात उपचार, दाद आदि की औषधि, धातुओं का शोधना, औषधि कुष्ट,

No. 576. Vaidyaka-Saṅgraha. Leaves—112. Deposited with Paṇḍita Durgādīnajī Dīkshita, Village Sikārī, Post Office Tambaura, District Sītāpur (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ अथ कान की दवा वकुरी के फूल की मैदा दुइ रत्ती कान में डारै। तो अराम होइ कान का वहव वंद होइ ॥ वांसे की घुन मैदा कै कै दुइ रत्ती कान मे डारै तो कान का चिलकवो मिटै औ वहव वंद होइ। औ जो कान में फुरिया होइ तो कौड़ी की भसम डेढ रत्ती गंगोलिया के रस में मासा भरे में घोरि कै डारै ॥ तो आराम होइ। ५ सफेदी घुघची पैसा भरि करु तेल में जारि के बनाइ घोटि कै कान मां दुइ रत्ती डारै वाई कै कै वहति होइ व चिलकति होइ वा पिराति होइ तो अराम होइ रोज ३, ४ में। गगन धूरि दुइ रत्ती कान में डारै तो कान वहब मिटै फुरिया होइ तो अच्छो होइ जाइ ३। ४ रोज मां ॥ लोल की पत्ती कनेर के फूल सफेद पियाज सफेद इनके अर्क सम कै के छकरो कै दुध के साथ कान में डारै तो वहव व पीरा मिटै ॥

End:—ईंगुर विधि ईंगुर लै आवै जितना चहै पीसि कै मैदा करै लोहे की कटोरी में मैदा धरै कागदी नीबू का रस एक वासन मां निचोरै तो कटोरी में डारै जेहि मा मैदा बूड़ि रहै कटोरी मेते इतना डारै लोहे की तिगुडिया तेहि पर कटोरी धरै तरे कोइना की आंच देइ जैसे दिया की जोति तैसी अगिन करै जब नीबू को रसु जरि जाइ तो औरु डारै इहि भांति चारि पहर आंच देइ। खिचरी की भांति एक होइ एक अंगुसी लोहे की तेहिते मैदा चलावै॥ जोनु उबराइ तोनु तोन औरु मा धरै जो पाछिह जाइ तो ऊपर ते डारि कै पकावै उबारु और सब पकै एक करै जो चारि पहर मा न पकै तो भोर हुई फेरि यहि भांति से आंच देइ तिगोडिया के आस पास बंद करै पवन न लागै जब ईंगुर तैयार होइ तब मेरगम मिलावै जावत्री लैांग इलायची जायफर ककाहा केवांच के बिया दाल चिनी ताल मखाने उटंगन के बीज मस्तगी कबाच चीनी ये सब मस मैदा करै सहत में सानै गोली झरबेरिया के बेर की मैातादि ईंगुर तैयार कर दुइ रत्ती गोली प्रति डारै जब ईंगुर अगिन पर ते उतारै तनिक नसोदर डारि देइ इलाज सांझ सबेरे खाइ बूढते जवान होई कामी बिना नारि न रहै १० नारि से भोग करै देहो मोटा लिंग मोटा होइ। भूष बहुत लगै नामर्द से मर्द होइ।

Subject:—वैद्यक, रोग औषधि नाड़ी परीक्षा आदि।

No. 577. Vandīmochana-Kathā. Leaves—14. Deposited with Paṇḍita Nakachhedarāma Miśra, Village Dhanaurā, Post Office Gaḍavārābājāra, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्रीराम जी॥ स्वामी वैजनाथ जी सहाई। श्री पोथी वन्दी-मोचन कथा। स्तुति॥

श्री आदि भवानी कल्यानी श्री सुर संधारिनी नामा जी॥
तीनि भुवन जेहि भ्रमता है कन्या सो वरदाई वम्माजी॥
सो वर दायिनी त्रिभुवन दाता सिद्धि करें मम काम जी॥
आदि कुमारी सिंह असवारी जाहि भजे था रामजी॥
महिमा वन्दी अगम अपारा मुख से वरनी न जाय जी॥

॥ चैापाई॥

गाढ़ परे जहं मोहं का वन्दी। काज कैलाश घे छन्दी॥
निश्चय होउ सहाय जी। नारद मुनि से कहै वम्माजी॥
वन्दी माई सुमिरैां तोही। सुमिरत गाढ़ छुड़ावहु मोहीं॥
नाम तुम्हार है वन्दी माई। आपन जन पर होहु सहाई॥

तीनि लोक लेत जब नामा । धन लक्ष्मी देहीं सो बम्मा ॥
तीनि लोक ठनाह सिरजवही । नाम धारई वन्दी तवही ॥
सुर गन्धर्व नाग मुनि देवा । सकल करी वन्दी के सेवा ॥
महिमा वन्दी के अगम अपारा । गाढ़ परे तहं करे उचारा ॥
जो वन्दी पर पूर धरे जो ध्याना । खाइ के पुरविल सेके आना ॥
गायना जी ध्यान शील गुणवानी । वन्दी देवता आदि भवानी ॥

End:—

॥ चौपाई ॥

रक्त बीज असुरन के राजा । तुरितै आये तहं सहित समाजा ॥
चहुं दिशि घेरि उन बांधा । वर्णि न जाइ देइ दल वाधा ॥
लागे होन तहां रन भारी । भोरहि असुर पर चली बयारी ॥
तब वन्दी त्रिशूल चलाई । लाख सेना मारि गिराई ॥
बूंद एक रुधीर महि परई । कोटिन्ह वीर तहां पैतरही ॥
इहि विधि लरत बहुत दिन बीता । तीन भुवन तब भये भीता ॥
जुद्ध देषि वसुधा अकुलानी । सेना असुर कछु वरनि न जानी ॥

× × × ×

× × × ×

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० ८ तक—मंगलाचरण, वंदी देवी का महत्त्व । कथापाठ का फल । श्रवण का फल । कमलापति राजा का निपुत्री होना । शिवजी का काशी को वन्दी देवी के पूजन का आदेश और राजा का सपत्नी जाकर वन्दी को पूजना और वर पाना ।

(२) पृ० ८ से पृ० १२ तक—वन्दी के समाज का वर्णन । वन्दी की महिमा । वन्दी का पूजन विधान । पूजा का फल । वन्दी के विविध रूप और अधिकार ।

(३) पृ० १२ से पृ० १६ तक—स्तुति । ब्राह्मण भोजनादि । राजा के दो पुत्रों का होना । राजा का उत्सव करना । राजा का पुत्र तथा रानी के साथ वन्दी के दर्शनों को आना । जोगनी, भूत, पिशाचादि का गाना बजाना । वन्दी का पूर्व इतिहास । अहिरावण का राम को ले जाकर बलिदान करने का विचार । राम का वन्दी का स्मरण और देवी का पाताल जाना ।

(४) पृ० १७ से पृ० १८ तक—वन्दीका राम से अपनी स्तुति सुनकर प्रसन्न होना । वन्दी के प्रताप से हनुमान का आ जाना, युद्ध करना और राम का छूट जाना ।

(५) पृ० १९ से पृ० २८ तक—वन्दी की शोभा वर्णन, उनकी स्तुति। देवताओं का असुरों से तंग आकर वन्दी की वन्दना करना। देवी के समाज और असुरों का युद्ध। देवी की विजय। देवों की स्तुति।

No. 578. Vedānta-ke-Praśna. Leaves—6. Deposited with Babu Rām Manohar Bichpuriyā, Purani Basti, Katni-Murwārā, District Jubbulpur (C.P).

Beginning :--श्री परमात्मने नमः॥ अथ वेदांत के प्रश्न लिष्यते॥ श्री वेदांत मधे असें कहो है॥ जो कछु दृष्ट विषे॥ देषीयत है॥ अरु कानन विषे सुनियत है॥ अरु जो कछु चित विषे मन विषें॥ ध्यान कीजियत है॥ अरु सब्द मात्र वस्तु मात्र जो है॥ सो सब तोनो काल मिथ्या है॥ अरु स्वप्न है॥ याकी साक्षि॥ दृश्य ते श्रूयते यद्य तत्समर्पितः वानरैः सद् असत्प्रने वतत्सर्वं यथा स्वप्न मनोर्थ॥१॥ वेदान्त विषें असा ये कहो है की जो कछु मन चित्त विषे॥ सब्द मात्र वस्त मात्र सो सब चिदनंद ब्रह्म है॥ याकि साक्षि॥ अस्ति भांति ते वानरैः शदाः तत्तत्स्वतस्ब्रह्म सच्चिदानंद मव्य यं॥ २॥ अब या प्रश्न का अर्थ असे प्रकार सो॥ विचार के लोजे॥ जो पहले तो सब मिथ्या कहो फेर वाही सो सच्चिदानंद ब्रह्म कह्यौ॥ अरु असत मिथा कवहूं सत न होइ॥ और सत ब्रह्म कवहूं मिथ्या न होई॥ यह तो प्रगादि विरुद्ध है॥ तातें ए दोउ वचन वेदांत के सत करने॥ अरु विधि मुष करके विव्रस्थान करने॥

End :—श्री आत्म वोध मधे ऐसे कहो है॥ जो तीनि प्रकार की सृष्टि है॥ एक तो जोव की॥ एक ईश्वर की॥ एक ब्रह्म की॥ तामे ऐसो कहो है॥ जीव सिष्ट है सो स्वप्न है॥ अरु ईश्वरी सिष्ट है सो चैादा लाेक ब्रह्मांड प्रकृति आदि लो॥ अरु जो ब्रह्म की सष्टि है सो सच्चिदानंद रूप है॥ ब्रह्म समान है॥ उकंच आत्म वोधे॥ त्रिधा सृष्टि॥ पुरा प्रोक्ता जोव ईश्वरी ब्रह्मनिस्तथास्वप्न जोव सिष्टिः स्यात जाग्रति ईश्वरी संताः ब्रह्म नितगता प्रोक्ताः सच्चिदानंद लक्षंन इति विचित्या वस्तुत्वः॥ ज्ञात्वा चेन्नि भिवो भवेत॥ ३२॥

अब या प्रश्न को अर्थ ऐसे प्रकार सों जी लीजै॥ जो जीव सिष्ट तो स्वप्न तें कहो॥ अरु ईश्वरी सिष्ट प्रकृति के आदि लोलय करि सब संसार कहो॥ अरु ब्रम्ह कि सिष्टि तद गत ब्रह्म समान है॥

लिषिते संपूर्ण परसन॥

Subject :—वेदान्त सम्बन्धी कुछ प्रश्न और उनके उत्तर॥

No. 579. Vidhavā-Vivāha Khaṇḍana. Leaves—10. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—श्री गणेशायनमः श्री हरिः ओं । प्रियवाचक वृन्द । आज जिस निन्दित कर्म के कोलाहल को सुनकर महात्मा सज्जन सनातन धर्मी भाइयों का चित्त व्याकुल हो जाता है और जिसकी असिद्धता दिखलाने के लिये लेखनी हाथ में लेनी पड़ी है वही विधवा विवाह शब्द और विधवा विवाह विषय खंडन मेरे सामने है और जिससे समस्त हिन्दु सन्तानों का प्रकटित संबन्ध है लेख लिखते हुये लेखनी कांपती है । शरीर में रोमांच हो रहा है । कारण यह है कि विधवा शब्द के साथ विवाह शब्द का योग कैसे और क्यों कर हो सका हैं यही एक बड़े आश्चार्य की तो बात हैं जिस पर विधवा-विवाह यह कैसा कलुषित और अनमेल सम्बन्ध है । हा !

जिस कुरीति को प्राचीन ऋषि मुनियों ने पाशविक धर्म कहकर महापाप बतलाया है और जिसे व्यभिचार तथा दुराचार से तुलना की है हाय ! उसी कुरीति को आज कुछ अज्ञानी काम पीड़ित व्यभिचारियों ने भारतवर्ष के पुनरुद्धार का एक मात्र शुद्धो पाय तथा अव्यर्थ महौषधालय समझ रक्खा है ।

End :—मंत्र—उदोर्ष्व नार्यभिजोवलोकं गता सुषेत मुपशेष एहि हस्त ग्राभस्य दिधि षोस्तवेदं पत्युर्जे नित्वंमभि सम्बभूथ ॥ यजु० ॥

अब देखिये इस उपरोक्त मंत्र के द्वारा कैसा अर्थ का अनर्थ बतलाकर स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके अनुजायी तथा विधवा विवाह के पक्षपाती लोगों ने भ्रमात्मक भावार्थ निकाला है कि हे नारी ! तू इस मरे हुए पति के साथ जो लेट रही है उठ । और जोते हुये मनुष्यों के भीड़ के सन्मुख आ ! और किसी विधवा का हाथ पकड़ने वाले तथा पुनर्विवाह की इच्छा करने वाले पति की पत्नी हो बस अब क्या अर्थ हो गया यजुर्वेद की एक श्रुति के द्वारा खुल्लम खुल्ला कपोल कल्पित अर्थ करके विधवा विवाह का प्रमाण सब के सामने वेदोक्त दिखला दी । इसी प्रकार स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने भी इसी से मिलता जुलता भावार्थ कर दिखाया है परन्तु है यह बात बड़ी हंसी के योग्य देखिये जो शेङ् स्वप्ने धातु के मध्यम पुरुष का एक वचनान्त पद है उसे सप्तम्यान्त पद मानकर मन माना कपोल कल्पित अर्थ लिख मारा है यहां तो व्याकरण शास्त्र की टांग ही तोड़ दी गई है ।

Subject :—

पृष्ठ १—'विधवा' शब्द के साथ 'विवाह' शब्द का योग अनुपयुक्त है ।

पृष्ठ २—प्राचीन ऋषि मुनियों के मत के प्रतिकूल है ।

पृष्ठ ३—विधवा बिवाह अप्रामाणिक और अन्याय है।

,, ४—मंत्रों का उलटा अर्थ।

,, ५—विवाह, कामवासना के तृप्त्यर्थ नहीं वरञ्च सम्पूर्ण संस्कारों में एक संस्कार समझकर किया जाता है। और सभी संस्कार एक बार होते हैं इसलिये विवाह संस्कार भी एक ही बार होना चाहिये (यहां पर विधवा विवाह असिद्ध होता है)।

पृष्ठ ६—ईश्वरचन्द्र विद्यासागर तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा अर्थ का अनर्थ।

पृष्ठ ७—विधवा विवाह के कारण सामाजिक कुरीतियां।

पृष्ठ ८—रोग रोकने से और बढ़ता है, उसके मूल को ही नाश करने के उपाय सच्चे हैं। अतएव कुरीतियों के ही निवारण से वास्तविक मन्तव्य सिद्ध हो सक्ता है। अन्यथा विधवा विवाह आदि मिथ्योपचारों से व्यभिचारों की केवल वृद्धि होगी।

पृष्ठ ९—भारत की प्राचीन सामजिक व्यवस्थाओं का ही पालन करने से उन्नति हो सकती है।

पृष्ट १०—मनु, पाराशर आदि स्मृतियों, शास्त्रों, काव्यों, ऐतिहासिक ग्रन्थों से कहीं भी विधवा विवाह प्रामाणिक नहीं सिद्ध किया गया है।

No. 580. Vṛindāvana-Bhāshya. Leaves—32. Dated in Samvat 1890. Deposited with Ṭhākura Rāmapāla Siṁha, Village Datagava, Post Office Baratāla, District Sītāpur (Oudh).

Beginning :—राग विहार ॥ रास में नृत्य करतत्र नवारी। मुदित मनोहर रंग वढ़ावत संग वृषभान दुलारी। मोर मुकुट मकरंद विराजत नाक बुलाक सुतारी ॥ कर मुरलो कर काछनी कटि काछे अलकैं घूंघर वाली ॥ राधाजू के शीश चंन्द्रिका नीलाम्बर जर तारी ॥ ताधीना ताधीना धीन धाना वसत पषावज ताल वाल वोन गति न्यारी ॥ ठनन ठनन नन नूपुर की धुनि झनन झनन झनकारी ॥ थेई थई थई नाचत दोऊ मिलि विहंसि विहंसि मुसकारी ॥ चरन दास रख देव दया सें सो पावे दरश मुरारी ॥ (चरन दास कृत)

राग कल्यान ॥ आज संभारत नाहिन गोरी ॥ फूली फिरत मत्त करणी ज्यों सुरति समुद्रके कोरे। आलस वलित अरुण धूसर मुष प्रगट करत मुष चोरी ॥ पिय पर करुण अमीरस वरषत अधर अरुणता थोरी ॥ वांधत भृंग उरज अंबुज पर अलकनि बुद्धि किशोरी। संगम किरचि किरचि कंचुकि वद सिथिल भई कटि

थोरी ॥ देत असीस निरषि युवती जिनके प्रीत न थोरी ॥ जै श्री हत आजु हरिवंश विपिनि भूतल पर संतति अविचल जोरी ॥ २ ॥ (हित हरि वंश कृत)

End :—येह जा छदन्द की छाये नी रचना वचन अनेक । वनै न श्याम शरीर विन विधि भ्रम्यो वर्ष लग एक ॥ प्रीति डोरि खैचे जवहिं यो नहिं आयो जाय । तवहिं बुद्धि वल आपनी अस छंदवनि रच्यो वनाइ ॥ भादों की कारी निशा जन्म भयो रस जोग चोरीह्नु सो मन रुचै लाल रस गोरस को भोग ॥ सखिन खिलौना करि रचो प्राण भावतो कंथ भोजन सुविधि करावहि रचै कौतुक रचित अनंत ॥ चौपर सुविध खिलावहिं झिगड़ावहिं रचि चोंज झलक जो आवत लाल के देखो वदन जुमतक मनोज ॥ दग आलस आलस जुम न पालस फूलति वैन । धवल महल जाइ के सखि तहां करावत सैन ॥ पनउव्वा सौरभ के भोजन धरि रस पान । चरण पलोटत रूप हित अति को उझावत वा श्याम ॥ श्री हरि वंस प्रसाद वल वर्णौ विविध पलाग वृन्दावन हित वर्णन सुख भाने जुगल सुहाग ॥ (हित हरिवंश)

रेखता ॥ चल देखिये प्यारो पनघट पै भीर छाई ॥ टेक ॥ विछिया जड़ाऊ गहना सुन्दर सुनार लाई । पहुंची जड़ी रतन से दीखत है मन लुभाई । चल देख दुलरी है पास उसके सोभा कही न जाई । सुन्दर जड़ाऊ आरसी देखन को मुख वनाई । चल देखियो है भांति भांति नग भी कहां तक कहूं मैं गाई । ऐसी सुनारिन नैनन देखी कभी न भाई ॥ चल दे० ॥ विधना ने सोच कर के विधि से उसे वनाई ॥ कहता है अव हजारी राधा है नग को भाई ॥ इति श्री रहस वृन्दावन अर्थात् वृन्दावन भाष्य समाप्त: लिखा रामचरन संवत् १८९० वि० चैत्र शुक्ल १ ॥ (हजारी कृत)

Subject :—नागलीला, ब्राह्मण लीला, जोगीलीला मनिहारिन लीला, चुरिहारिन लीला, विसातिन लीला, मालिन लीला,

No. 581. Vyavahāra-Darśana. Leaves—110. Dated in Samvat 1904 or A. D. 1847. Deposited with Thākura Haribakhshasimha Raisa, Village Kuthariyā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री मते रामानुजायनम: ॥ जयत: ॥ श्री रामचन्द्रजी यति कमल भूस्तस्य पत्नी च शुभं ॥

जयति श्री भक्त राजी विमल मतिकर : ॥ श्री प्रिया दास ईश जयति श्री धूमकेतु प्रचुर नरवर चाउ ज्ञान तामि सुहारी ॥ जयति श्री याज्ञ वलक्यो

जयति मनुनृपः शुद्ध धर्म प्रचारो ॥ १ ॥ अथमनु याज्ञ वलक्या धनु सारेण व्यवहार पादो निरूप्यते ॥ व्यवहारान्नृप : पश्येद्विद्वद्भिः ब्राह्मणै सह ॥ धर्म शास्त्रानुसारेण क्रोध लोभ विवर्जित ॥ १ ॥

राज्याभिषेक जुक्त जो है राजा तोंका प्रजा पालन धर्म बिना दुष्ट के दंड दोन्हे नहीं ह्वै सकै ग्रोर दुष्ट सुष्ठ बिना व्यवहार देषे नहीं जानि परै तेहिते पंडितन का लैके राजा रोज रोज । व्यवहार देषै व्यवहार कान कहावै को दुई वादी बाद करत हैं तोनेमा जो झूंठ कहत है तोने का निरनै करके जैान साच कहत है तोन का स्थापन करव सो व्यवहार धर्म शास्त्र के अनुसारते क्रोध लोंते विवार्जित ह्वै कै राजा देषे इहां क्रोध ते विवार्जित ह्वै कै राजा देषे इहां क्रोध ते विवर्जित कहिनते हिते मत्सर मदई ग्राइगे ग्रोलैा मते विवर्जित कहिन तेहि ते काम मोह यहो ग्राइगै ॥ १ ॥

End :—जो राजा की मरज़ी के अनुसार तें पंडित लोग अन्यथा नियाउ करै तो पंडित राजा दोहुन का दंड चाहो ग्रो राजा ग्रापन दंड वरुनाय देइ देया संकल्प कैकै ब्राह्मन का दै राषै ग्रोर जोने वादी का न्याय ज्ञान कैके सुद्ध ह्वै गाहै ग्रो वाके रि न्याउ कै उजर करै हे तो वाको फिरि न्याय क कै हराय कै इन दंड लेइ जो असुद्ध देषि परै तो फेरि शुद्ध कै देई ग्रो जो कैानो राजा के नियाउ दूसरे राजा के यहां जाय ते वहो राजा नियाउ देषै ग्रो जो राजा अन्याय कै कै जो कहू दंड लेइ तो जेतो द्रव्य होइ तेकर तीस गुना द्रव्यन का संकल्प कै ब्राह्मन का देइ ग्रो जैसो दंड लोन्हेसि होइ तेकर वहोरि देइ ।

मिती पूस बदी १३ भोमिकास. सं० १९०४ के साल ।

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १६ तक—व्यौहार दरशन का प्रकरण—वादी के ग्रागे प्रतिवादी से उत्तर लेने का वर्णन ।

(२) पृ० १५ से २४ तक—प्रार्थना पर प्रार्थना सुनने का प्रकरण। दुष्ट साक्षी का लक्षण ।

(३) पृ० २४ से पृ० ३६ तक—लेख साख भोग्य दिव्य का प्रकरण वहुत दिनी भुक्ति जो न खुली हो उसका प्रकरण ॥

(४) पृ० ३६ से ६० तक—ग्रहण पाती का हाल न खुना हो तो उसका वर्णन। एक स्थान का न्याय दूसरे स्थान पर सुनने का वर्णन। पिता, पुत्र, स्वामो, चाकर इत्यादि के अपराध का वर्णन । रूपा, सोना, गाय,। भैंस (खोई वस्तु)

को कोऊ पावे उसका वर्णन। हांडा पावे उसका वर्णन। ऋण दान का प्रकरण। जामनि का प्रकरण। रास बैठाने का वर्णन।

(५) पृ० ६१ से पृ० ११८ तक—गहन वर्णन वैपाना का प्रकरण साषी का प्रकरण। व्यभचार में साष का प्रकरण, कूट साषी का प्रकरण। लेष का प्रकरण। दिव्य का प्रकरण। हिस्सा का प्रकरण।

(६) पृ० ११९ से पृ० १४० तक—बारह प्रकार के पुत्रों का वर्णन। गुरु चेले के हिस्से का वर्णन। संसृष्टि विभाग का प्रकरण। जो हिस्से के अधिकारी नहीं हैं। उनका वर्णन। स्त्री धन का प्रकरण। तिलक चढ़ाके अन्य स्थान में काम करे उसका कथन। कन्या का धन भाई पावे उसका वर्णन। सीमा विभाग किसान और अहिर का प्रकरण। किसी को चीज कोई बेचे उसका वर्णन। दान दे के लौटा ले उसका वर्णन।

(७) पृ० १४० से पृ० १८० तक—मोल लेके वहोरै उसका प्रकरण, सेवा चाकरी करके, अंगीकार करके न करै तो उसका प्रकरण। जो संमति करके न करै तो उसका प्रकरण। राजा के सब जातियों के धर्म्मों के पालन का वर्णन। बाजी लगाइ के जुवारी और चिड़िया इत्यादि की लड़ाई का वर्णन। मार पीट तथा दंगा फसाद और साहस का प्रकरण।

(८) पृ० १८० से २१० तक—साहस के तुल्य जो अपराध है उसका प्रकरण। वैद्य का प्रकरण। राजा की आज्ञा बिना कैदी को छोड़ दे उसका वर्णन। अच्छी वस्तु में बुरी वस्तु मिला कर बेचे उसका वर्णन। बाजार भाव का कथन। जङ्गम स्थावर बिकने का विवरण। साझे में उद्यम करै इसका वर्णन। चोरी का प्रकरण। गर्भपात कराने का वर्णन। स्त्री संग्रहण का प्रकरण।

(९) पृ० २१० से पृ० २२० तक—स्त्री पुरुष के विरोध का प्रकरण। राजा किसी को कुछ दे और लिखने वाला और कुछ लिख दे उसका वर्णन। छूत सामग्री खिलाने का वर्णन। सवारी में धक्का लगने का वर्णन। जो कोई राजा के शत्रु की बड़ाई करै उसका वर्णन। राजा की निंदा करै उसका वर्णन। राजा का भंडार काटे उसका वर्णन। ज्योतिषी राजा को बुरे ग्रह बतला कर उसकी शान्ति का यत्न करै उसका वर्णन। न्याय में अन्यथा करे उसका वर्णन।

No. 582 (*a*). Yantravālī. Leaves—20. Deposited with Paṇḍita Bhagavānadatta of Benīpura, Post Office Mādhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥
जेनहृतं गृहं क्षेत्रं कलत्र धन पुत्रकं ।
उच्चाटन वध कुयात् दुष्ट दंडो विधीयते ॥

× × × × ×

१०	२	८
४	७	९
६	११	३

यह यंत्र लाषवार कागद ऊपर लिखि कै एक ठैार नदो मा कि तलाव मा वटोरि कै डारि देइ लाष जव पूजै तव पूर्ण हुति करै जव से पत्र लिषै तव लहि चाउर गोहु वृत न पाइ ॥ २० ॥ मंत्र ताज १००००० ॥

॥ ऊं ह्रौं शिवायनमः ॥ इ यंत्र गोरोचन से लिषै ॥

End:—

अ॰ आ॰ औ॰ औ॰ स्वाहा	६६६	४४६	११९७	२२२२	४४८
	१४६३	३०७४	५०६	४४८०	५५५४
	३११२	६६४०	२२३०	५५७१	५५४४
	४४४१	५७४	१७४	४२४	४४४

तीनि पुरुष का नाम लिपि कै पिछवारे नेई कं तरे गाड़ै तो उच्चाटन होइ ॥ मेहावर से लिखि कै दुश्मन के पछवारे गाड़ि देइ तो काम सिद्धि होइ ॥ मांस से लिषै पीपर पत्र पर जर जाइ कागद पर लिखै वाहे वांधै तिजारी जाइ एक हाथै पानी भरै पीपर पत्र पर यंत्र लिखै चारि वार धोवै वाही पानी से मुख छाटा मारै भूत भागै भोज पत्र मेहावर तके राम लिखै पेट वचै गर्भ रहै पानी सों लिषै ई पियाई छुइ सिर दुप जाइ ॥

Subject:—(१) पृ॰ १ से पृ॰ १४ तक—वोसा मंत्र, पन्द्रह का मंत्र, भूत लगने का यंत्र, सर्व दुःख निवारण यन्त्र, मोहन यंत्र, कार्य सिद्धि मंत्र, मूस निवारण यंत्र, टोना निवारण यंत्र, अरि विजय मंत्र, सकल सिद्धि यंत्र, बुद्धि होने का मंत्र, मोहन यंत्र, वशोकरण सर्व सिद्धि तथा मोह जाल यंत्र ।

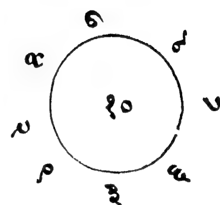
(२) पृ॰ १५ से पृ॰ ४० तक—आधा सोसो, शंका छूटने, प्रेत नाशक, बालक जिलाने, बहु भोग करने, स्त्री पुरुष वशोकरण, बांझ के बालक होने,

स्त्री वशीकरण, गर्भ रहने का, राजा वशीकरण, कर्ण व्याधि निवारण, मृगी नाशक, वशीकरण, बालक रोदन, उच्चाटन, वशीकरण, दुश्मन का मूड़ नेत्र बंद होइ। दुश्मन का उच्चाटन होइ। अन्तिम मंत्र और उसका फल।

No. 582(*b*). Yantrāvaligrantha. Leaves—8. Deposited with Paṇḍita Gunnā, Village Bahurājapura, Post Office Puravā, District Unnāva (Oudh).

Beginning:—अथ यंत्रा वली ग्रंथ लिष्यते ॥

यह यंत्र वोसा का इतवार के दिन केसर से भोज पत्र पर लिखे और तांवे में मढाय कर पगड़ी में राखै तो दुश्मन का जोर अपने उपर नहीं चले ॥ (१)



यह यंत्र इतवार के दिन गोरोचन से भोजपत्र पर लिखै और वोमार घोड़े के गले में बांधे तो सात दिन में अच्छा होय ॥ (२)

दः	क्षीः	कः	भः
छः	सः	गः	रः
थः	धः	चः	कः

यह यंत्र इतवार के दिन गोरोचन से लिखे भोजपत्र पर और दाहिने हाथ में वांधे स्त्री वस्य होय चार मास के भीतर परन्तु स्त्री को रोज दिखाया जाय ॥ (३)

कः	प्रः	जः	रः
छः	टः	कः	जः
सः	धः	ठः	वः

यह यंत्र जिसके लड़का मर मर जाते हों उसके गले में वांध दे तै। लड़का जीते रहें परन्तु इतवार को मर जाते हों तो उसका मंत्र है ॥ (४)

ह्रौंः	ह्रौंः	ह्रौंः	ह्रौंः
ह्रौंः	ह्रौंः	ह्रौंः	ह्रौंः
ह्रौंः	ह्रौंः	ह्रौंः	ह्रौंः
ह्रौंः	ह्रौंः	ह्रौंः	ह्रौंः

End:—चार प्रकार के १५ के यंत्र की विधि। जिस मनुष्य का जैसा मिजाज हो सो उसी प्रकार के यंत्र का सेवन करै और मेषादि १२ रासि चार प्रकार के मिजाज पर वांटी गई है सो अपनी रासि मिला कर मिजाज पहिचाने॥

(१) खाकी

८	१	६	वृष
३	५	७	कन्या
४	९	२	मकर

(२) वादी

८	३	४	मिथुन
१	५	९	तुला
६	७	२	कुंभ

(३) आवी

२	७	६	कर्क
९	५	१	वृश्चिक
४	३	८	मीन

(४) अतशी

४	९	२	धन
३	५	७	मेष
८	१	६	सिंह

अपूर्ण॥

Subject:—यंत्र वर्णन॥

No. 583. Yntra-Vidhi. Leaves—2. Deposited with Bābu Rām Manohar Bichpuriyā Purānī, Basti, Katni Murwārā, District Jubbulpur (C.P.).

॥ श्रीगनेस जू॥

॥ दोहा॥ नेत्र ग्रहा श्रुतिवार सर, गुन रस ससि वसु जान।
नो कोठा के जंत्र को यह विधि भर वुध वान॥

८	१	६
३	५	७
४	९	२

॥ दोहा ॥ दिग सर नग द्रग वसु सिव तेरा ग्रह तिथि श्रुति रस सिगार ।
दिग सर गुन नग ब्रह्म मनु रवि घर जंत्र सम्हार ॥ १ ॥

१४	१	१२	७
११	८	१३	२
५	१०	३	१६
४	१५	६	८

End:— जंत्र २५०

३	४	५४	५३	१४	१३	५९	६०
२	१	५५	५६	१६	१५	५८	५७
३१	३२	४२	४१	१८	१७	३९	४०
३०	२९	४३	४४	१९	२०	३८	३७
५१	५२	६	५	६२	६१	११	१२
५०	४९	७	८	६३	६४	१०	९
४७	४८	२६	२५	३४	३३	२३	२४
४६	४५	२७	२८	३५	३६	२२	२१

Subject:—कुछ जंत्र और उनकी विधि ।

No. 584. Yuddha-Dīpaka. Leaves—7. Deposited with Mannulāla Pustakālaya, Gaya.

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ अथ गुद्ध दीपक प्रद्योतते ॥

दो०—मुरे विंदु युग सेन जिमि, जुरे तार फिर सेर।
फुरे शक्ति नाशक कुरे, जुरे धरे हो हेर ॥१॥

हते वृद्ध मते सेष युग फालक मते अशेष।
दहन दहन युगहा अनुज वातनु तजे न लेष ॥२॥

दछ सोषे लषि सिन्धु ढिग मरे योग कर जानि।
हरषे कोशप सार कर करे दौड़ जुग मानि ॥३॥

भ्रू सहाय हर करि युगल योग कंभु भू नाधु।
उद्भव अद्भुत लखि रुचिर पर गुरु रहे अगाधु ॥४॥

परतम चिंतक जह मे चिन्तक दुह समीप।
मे अन्धक लषि शुद्ध मति गे वंचक भ्रम लीप ॥५॥

End:—

निगम मास सारंग रट, स्वांती घट एक बुन्द।
हो चाहत विन कारन अव गृह चलि एमा हो सद ॥ ११५ ॥

कपि ले मंदिर वस इहां नयन पुरदा वार०।
सखा इते उत पितु वचन भरत सनेह समार ॥ ११६ ॥

लूट न वहुत शमा जमा आगेय पाछे पाए।
कपि इच्छा अति काल हर वह अपमान जनाए ॥ ११७ ॥

द्विज भुज तेज भु पुस्य मुनि भेत्र ग्रु राम रजाए।
शत उत्तर वश दश लशे दीपक युद्ध शहाए।

इति श्री युद्धे अभि प्राए पोपक समाप्तः ॥

॥ शुभं भूयात् ॥

Subject:—सिन्धु तरण से लङ्का के युद्ध तक रामायण का सूक्ष्म वर्णन।

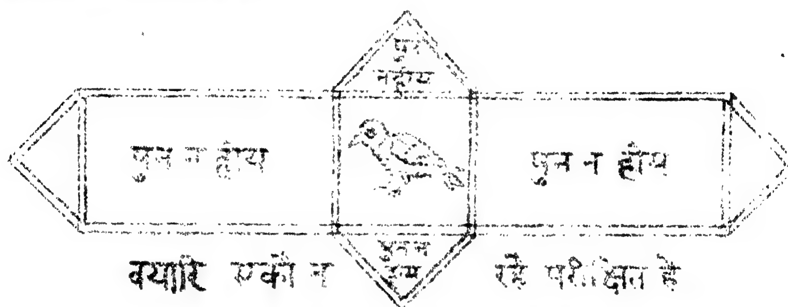
No. 585. (Unknown.) Leaves—153. Place of Deposit Jairāmasiṁha, Village Harīpura, Post Office Manadhāta, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning:—श्री रामजी ॥ श्री गणेशायनमः ॥ तप गरमी का इलाज ॥ कमल गटा कै गुदा पांच मासे ॥ अवरा मासे ४ मुनक्का मासे ४ धनिया मासे २ सपेद जीरा मासे २ षस मासे २ कुलफे का बीज मासे २ दालचिनी मासे २ संदल मासे २ सब का आध सेर पानी में अवटावे जब तब सोर गरम पीवै

॥ पुनः ॥ पीत पापरा तोला भरि मुनक्का तोला भरि दोनों भिगोइ राषै विहनि छानि कै पीवै ॥ पुनः ॥ ककरो को बोम्रा मासे दुइ ॥ षोरा का विम्रा मासे दुइ ॥ कासनी मासे चारि ॥ सौंफ मासे तीनि ॥ सब को पीसि के दोइ पैसा भरि पीम्रै ॥ चीनी मिलाइ कै पीम्रै ॥

End:— ॥ मूत्रातिसार को इलाज ॥

मुरई के वोकलाइ के बुकनो ﾉ१ चीनी सेर ﾉ१। तोषुर ﾉ– वड़ी इलायची के दाना ﾉ– स्याह मूसरि ﾉ– म्रसगंध नागोरी ﾉ पुराव दुइ पैसा भरि चूरन कै दुम्रै जून षाइ जल से वा गाइ के दूध के साथ वा म्राइसेह— × ×
× × × × ×
× × × × ×
गोहन में कवनौ वयारि षाङ्क वोगेन्ह (वगैरह ?) होयत इहै जंत्र नगारा पर लिपिके म्रतवार मंगर के वजाइ देय



Subject:—पृ० १ से पृ० ५० तक—तापों की चिकित्सा, म्रठारह प्रकार के शूल व सन्निपात की म्रौषधियां, बुखार के म्रन्य भेदों की चिकित्सा, दस्त तथा म्रांव म्रादि की म्रौषधियां, कुपच म्रादि की म्रौषधियां।

(२) पृ० ५१ से पृ० १४० तक—शीतला, वायु, म्रादि की म्रौषधियां, सुपारी पाग, पुष्टि का माजून, बहुमूत्र, गर्मी, तथा सूजाक की म्रौषधियां, मांडा फुली का इलाज, प्रमेह का इलाज, स्तंभन का इलाज, पीनस तथा मुंह के फफोलों की म्रौषधियां, शरीर के दर्द की म्रौषधि।

(३) पृ० १४१ से पृ० २०० तक—कुष्ट, कान से कम सुनने, पांडु, पेट संबंधी, जलन, खुजली, शीतला पेट में घाव, कुत्ता काटने म्रादि की म्रौषधियां। वम्हीवटी के गुण म्रांव, सिर दर्द, दशमूल म्रादि की तरकीब।

(४) पृ० २०१ से पृ० २८० तक—रांगा मारने की विधि, गर्भ रहने, नमर्दी, पुष्टई, सर्व प्रकार के सापों की म्रौषधि, शीत वायु, पित्त वायु, खांसी, बुखार म्रादि

की औषधियां, लाक्षादि तैल, सुदर्शन चूर्ण, आंव गिरने की औषधि। पेट सबन्धी रोगों का इलाज, सुरमा बनाने की विधि, वशीकरण मंत्र, बवासीर का मंत्र, सूजाक व चिनंग की औषधियां,

(५) पृ० २८१ से पृ० ३०६ तक—रक्तविकार संबंधी औषधियां, जुलाब, घाव, आंख, की औषधियां, अंजन बनाना, पन्द्रह रुद्र हजारा जंत्र। कुछ अन्य मंत्र।

No. 586. (Unknown.) Leaves—134. Deposited with Rāmaprasāda Murau, Village Puravāviśrāmadāsa, Post Office Pariyavā, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning:—अथ समुद्र फल के गुणनें अनूपाण सो षाइ ॥ ताकी छेरी के मूत क पुट ७ ॥ गोमूत्र के ७७ ॥ घांवरे के रस के पुट ३ ॥ निगुंडी के रस के पुट ३ ॥ धतूरे के रस के १ ॥ पुट मांजी को पुट १ ॥ तव रोज सत्ताइस २७ सिद्धि होइ ॥ ताको अनूपान षाने वने ॥ मूठी सों षाइ तो असथंमनु होइ ॥ छेरी के मूत सों अंजनु करै तो फूली जाइ वात मिट जाइ ॥ छेरी के मूत सो नासु दीजै तो आधा सीसा जाइ औ षाइ तो षई जाइ ॥ ४ ॥ छेरी के मूत सों षाइ तो मृगी जाइ ॥ ५ ॥ वा रतौंद जाइ वा कपाल शूल जाइ। छेरी के मूत सों अंजनु करे तो गदन निकसै ॥ छेरी को छाछ सो षाइ तो कहिलो जाइ ॥ घामरे के रस सों षाइ तो पित असलेषम जाय ॥ वा काननि वहिरैा सुनै औार वायु गोला जाइ ॥ नीवू के रस सों षाइ तो हड़ फूटन जाइ ॥

× × × ×

× × × ×

End:—औषधि धातु पुष्ट की ॥ सेमर की छालि ॥ २५ ॥ मिश्री दोनैां ॥ २५ ॥ ताल मषाने ॥ १२ ॥ मिघोर २५ कोंच के वीज तेज वल २५ उटंगन के बीज २५ अकरकरा २५ वहरै को वकुलो २५ लहसोर २५ गूलरि को छालि २५ गुषरू २५ वह्मंडा २५ संषा हूली २५ दूधी २५ मिर्चे १२ पीपरि १२ षांड १ घीउ ३॥। दूध ३ वजफरो २५ ॥ ॥ अथ जुलाव ॥ सोंठि २५ निसोत २५ सनाइ २५ नोंन सोधो २५ पानी सोंटिकीया वांधे ॥ घाम में सेकै टिकिया दुवे २५ इलाजु सोज अगता वंद कैा ॥ कसाइ का ॥ छुहारे ५। मिश्री ५। पाषान भेद ५। दान इलायची गुजराती के १। १२ ॥ रूप रसु तेरे वदुव ॥ इकठो ॥ जुदी जुदी पीसै ॥ आधुसेर गाइ के दूध सों तोरा १ भरिषाइ ॥ षुराक दूध चावर, मिश्री डारि षाइ ॥ इलाजु दूसरो ॥ अमिलो चीयको आटो)१। मोचरस २५ दारु हरदी २५ मैदा लकरी २५ गोषरू २५ सुरवारे वी.............................

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० २..........लुप्त।

(२) पृ० ३ से पृ० ५४ तक—समुद्र फल और मूढ़ी के गुण तथा अनुपान, नाड़ी विचार, ज्वर का लक्षण, कुछ काढ़ों के नुसखे, नाना प्रकार के चूर्ण, कई प्रकार के तेलों के बनाने की विधि, खाज, दद्रु आदि चर्म रोग विनाशक औषधियां, कुछ रस तथा धातु विकार एवं धातु नष्ट संबन्धी औषधियां।

(३) पृ० ५५ से १३५ तक—पुष्टि कारक औषधियां, नामर्दी दूर करने तथा ताकत बढ़ाने वाली औषधियां, मरहम, पाग, स्वरभेद औषधियां, मोतियाबिन्द आदि नेत्र विकार संबन्धी औषधियां, घोड़ों तथा बैलों का इलाज, बुलबुल आदि दो चार पक्षियों का इलाज।

(४) पृ० १३६ से पृ० २०० तक,—प्रमेह की औषधियां, सिव आदि के शोधने तथा तांबे आदि के मारने की विधि, कुछ रस, सुस्ती का लेप, वन्धेज का इलाज, गर्भ सम्बन्धी इलाज, कुष्ठ की औषधि, शीतला का इलाज, धातु विकार तथा प्रसूत वायु आदि की औषधियां, कुछ लाभकारी चूर्ण तथा पुष्टि की औषधियां, इन्द्री जुलाब,

(५) पृ० २०१ से पृ० २४४ तक—ज्वरादि की व्याधि दूर करने के जंत्र गर्मी आदि का इलाज, चौदह विद्याओं, बारह आभूषणों सोलह श्रृंगारों के नाम, सांप काटने का मंत्र, संग्रहणीकोत नामक रोगों तथा कुछ अन्य रोगों की औषधियां।

(६) पृ० २४५ से पृ० २६८ तक—श्वास का इलाज, अजवाइन का अर्क, पीनस आदि का इलाज, विविध रोगों की औषधियां।

(७) पृ० २६९ से पृ०..............तक लुप्त।

I–INDEX OF AUTHORS

The figures refer to the serial numbers given in Appendices I and II.

I

J

K

L

M

II—INDEX OF BOOKS

The figures refer to the serial numbers given in Appendices I, II and III.

A

B

L

M

N